

॥ श्रीः ॥

शालग्रामनिघण्टुभूषणम्.

अथात्

बृहन्निघण्टुरत्नाकरान्तर्गतौ

सप्तमाष्टमभागौ ७-८

(वैद्यकोपयुक्तसमन्तपदाधनामगुणकोश)

श्रीमायुरवैश्यवशोद्भवमुरादावादस्थकविकुलकुमुद
कलानिधिश्रीशालिग्रामवैश्यवर्यविरचितौ ।

सोऽयं प्रथ

खेमराज श्रीकृष्णदासश्रेष्ठिना
मुम्बय्यां

(खानाडी ७ बी गली खानाटा डेन,)

स्वकीये "श्रीविद्देश्वर" (स्टीम्) यन्त्रालये
मुद्रयित्वा प्रथमं गित ।

१५५ १९२९ सा १८३४

आय पु मुद्रणाधिकारः राननियमानुसारेण
मुद्रणात्प्राप्यतामना सन्ति ।

लाला गालिग्रामजी वैश्य



मुरादाबादवास्तव्य कम्पातनणान्तर ।
आनुवंदतमुद्गर्वा गालिग्रामो जयत्ययम् ॥ ॥

स्वमराज श्रीकृष्णदास श्रीदेवदेव "स्टीम प्रेम-वन्दन"

धन्यवादाः ।

भयन्तु भूयासो मय्यभूतये विश्वकर्त्रे महीपसे परमेश्वराय प्रणामा । येन भगवता विविध जग-
तिसृक्षता प्रथमतः सृष्टिकमानुसारेण महदादिपृथिव्यन्तो महान्तरां स्वात्मनि विकाशमानीयत ।

अस्मिंश्च सर्वे तत्तद्भौतिकनिकाया सर्वे प्राणिनस्तस्यैव परमेशितु सकेतमनुवर्तमाना
यथानुत्कल्पितवृत्तयो विचरन्तीति स्वाभाविक सृष्टिसौन्दर्यमेतत् । तत्रापि सृष्टिक्रमपरा-
काष्ठाभूताया पृथिव्यामस्मदादिजीवानां पुरोक्तपरमेश्वरेणैव पृथिवीनिकायात्ममाकलयता
विशेषतः कौतुकनैत्र विविधवृक्ष-रुता-सस्य-जलरत्न-धातु-प्रभृतयः पदार्था असृज्यन्त
तदनु प्राणिनः । इति सृष्ट्युपक्रमे पुराणेषु शोभ्यते सर्वतः । अयं च प्रकृत तत्र विमृश्यते ।

इह पृथिव्या जन्ममानानां नानाजीवानां निजपारपरीकानन्तजन्मोपाजितविविधदुष्कृ-
तपरिणतानेकव्याधिपरिपीडितकठेवराणां पारनायैकार्यसमुद्भवानां नानाविधवृक्ष-रुता-
सस्य-जल-रत्न-धातु-प्रभृतीनां पदार्थानां यथोचितोपयोगार्थं परमकारुणिकैरात्रेय-
दत्त-शक्र-धन्वतरि-दिवोदास-सुभुत-चरक-वाग्मट-प्रभृतिभिर्महानुभावैरायुर्वेदशास्त्रं स्व
स्वानुभवानुगमानुसारेणोपवृत्तमासीत् । यतः परावरदृशां महर्षीणां बुद्धिबैभवेन
प्रसिद्धिं गतेष्व आयुर्वेदग्रन्थेष्व औपधीना गुणदोषान्विज्ञाय वैद्यजना रोगिणा रोगान्यथो-
चितौषधप्रयोगण निर्मूल्योपकुर्वन्ति समन्ततः । तथापि तत्तन्महर्षिस्वस्वबुद्धिविनिर्मिताना-
मनेकप्रयत्नानामप्ययनाध्यापने कालातिक्रममन्वीक्षमाणैः परमकारुणिकैः श्रीममुरादाबाद-
नगरनिवासिभिः श्रीमन्नाथुरवैद्यवशावतसथ्रीलालाशालिग्रामसुगृहीतनामत्रैरस्मत्परममित्रैः
केवलं परोपकाराय निजमतिप्रयत्नानेनायुर्वेदमहोदधिं विनिर्मय्य सकलौषधिगुणगणप्रति-
मण्डितोऽयं “शालिग्रामनिघण्टुभूषण” नामा नवीनो ग्रन्थो विनिर्मितः ।

अस्मिन् “शालिग्रामनिघण्टुभूषण” ग्रन्थे प्रोक्तमहाशयैर्विविधदेशभाषाप्रचारिततत्त-
दौषधीनां नामानि-तत्तदौषधीनां गुणाश्च सविस्तरं प्रत्यपाद्यन्तः । येन च कृत्वा प्रायश्चैव
ग्रन्थ-संस्कृत-हिन्दी-यांगी-माहाराष्ट्री-गौर्जरी-फार्णाटकी-द्राविडी-तामिली-औत्कली
इन्डिश-लैटिन्-फारसी-आरबी-भाषानिविष्टौषधीनामतया सर्वतः सचरता सर्वदेशीयानां
जनानां परमोपयोगीति को नानुमन्येतनाम सद्दयः सारासारविषेकनिपुणो जनः ।

अयं ग्रन्थश्च तैरुदारबुद्ध्या सर्वलोकोपकृत्यर्थं प्रकाशनार्थं मत्समीपे प्राहीयतः ।
स च मया तेभ्यः सादरं स्वीकृत्य स्वीकीये “श्रीवेङ्कटेश्वर” मुद्रालये मुद्रयित्वा
प्रकाशमानीयतात्तस्यैव द्वितीयावृत्तिभूषणपरिश्रमेण सम्यक्पारिशोध्य विदुषां मुदे पुनर्मुद्रिता ।

अतएतादृशप्रयत्ननिर्माणपरिश्रमपरिक्रिष्टबुद्धिबैभवानां नानाविधग्रन्थनिर्माणजन्यातिनिम-
ल्यशोभामुरीकृतविबुधजनमनसां श्रीमतां श्रीलालाशालिग्रामनामधेयानां यावन्तो धन्य-
वादा देयास्ते सर्वथा रवेर्दीपदानमिवति मन्ये ।

विबुधगणमेमाभिलाषी-

खेमराज-श्रीकृष्णदास,

“श्रीवेङ्कटेश्वर” (स्टीम्) यन्त्रालयाध्यक्षः-मुबई



भूमिका ।



देखो इस असारसतारमें उस निराकार निर्विकार परब्रह्म परमेश्वरने साकार रूप धारण कर चार वेद, पद शास्त्र और अष्टादश पुराण अपने हृदयसे प्रगट किये, उनमेंसे अथर्वणवेदका सार लेकर अत्यन्त अनुपम और अद्वितीय, प्राणियोंके कष्टका हरनेवाला और दीर्घायु करनेवाला आयुर्वेद निकाला, जिसमें एक लक्ष श्लोक और सहस्रअध्यायमें नियत करके आयुर्वेदसहिता नाम रक्खा और प्रजाके रचनेसे पहिले ब्रह्माके हृदयमें उसका प्रकाश किया ब्रह्माने उसके आठ भाग किये, फिरभी कठिन समझ कर कोष और निघण्टुको मुख्य रक्खा, और सम्पूर्ण कर्मोंमें चतुर छुट्टिविंशारद और अग्रगामी जानकर दक्षप्रजापतिको सर्वांगसहित आयुर्वेदका उपदेश किया, दक्षने स्वर्गीय वैद्य, मार्तण्डके समान प्रचण्ड शक्तिवाले महाविद्वान् देवताओंमें श्रेष्ठ अश्विनीकुमारोंको आयुर्वेदसहिता विस्तारपूर्वक पढ़ाई, जिसके प्रभावसे अश्विनीकुमार तैंतीसकोटि देवताओंके पूर्ण वैद्य हुए, ब्रह्माका मस्तक जोड़ा, देवताओंको अंग जोड़ ग्रन्थरहित किया, इन्द्रकी भुजाका कष्ट हरा, चन्द्रमाको सुखी करा, इन्द्र अश्विनीकुमारोंके इन अद्भुत कर्मोंको देख उत्साहपूर्वक आयुर्वेद पढ़नेके लिये अश्विनीकुमारोंसे प्रार्थना करने लगा जब सत्यसिन्धु इन्द्रने इसप्रकार प्रार्थना की तब वैद्यशिरोमणि अश्विनीकुमारोंने जिसप्रकार आप पढ़ाया उसीप्रकार आयुर्वेदसहिता विस्तारसहित देवराज इन्द्रको पढ़ाई, इन्द्रने ऋषियोंमें प्रधान अत्रियको पढ़ाया उस समय लोग उत्तमरीतिसे आहार विहार करतेथे, इसलिये उनको कोई रोग नहीं होताथा, उनकी आयुभी पूर्ण होतीथी, और शरीरमें बलभी अधिकहोताथा, पश्चात् कुछ कालोपरान्त समयके हेरफेरसे मनुष्योंकी बुद्धिभी विपरीत होगई, उससे रोग और क्लेशादिक अधिक बढ़ने लगे, उस समय करुणानिधान परोपकारी चढे चढे ऋषि मनुष्योंको रोगोंसे दुःखी देख मनमें अत्यन्त दुःखी हो हिमालयपर्वतकी ओरको चले, वहाँ देवयोगसे बहुतसे ऋषिलोग एकत्र थे, भारद्वाज, आगिरा, मरीचि, भृगु, भार्गव, पुलस्त्य, अगस्त्य, असित, वसिष्ठ,

पराशर, हारीत, गौतम, साख्य, मैत्रेय, च्यवन, जमदग्नि, गर्ग, काश्यप, कश्यप, नारद, मार्कण्डेय कपिल, वामदेव, कौण्डिन्य, शाण्डिल्य, शाकुनेय, शौनक, आश्वलायन, साकृत्य, विश्वामित्र, परीक्षक, देवल, गालव, धौम्य, काम्य, कात्यायन, काकायन, वैजवाप, कुशिक, वादरायण, हिरण्याक्ष, लौगाक्षी, शरलोमा, गोभिल वैखानस, और वालखिल्यादिक अनेक महापि-
लोगये, वह ब्रह्मर्षि, ब्रह्मजानी, यमनियमके समुद्र और होमाधिके समान
प्रकाशमान, तपस्तेजःपुज आनन्दपूर्वक सब मुनिपुंगव यह चर्चा कर रहेये
कि मनुष्यका धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष इस चतुर्वर्गके साधनका मूल यह
शरीर है, यदि यह शरीर अच्छाई तो यह चतुर्वर्ग साधसक्ताई और जो यह
शरीरही रोगग्रस्त है तो कदापि नहीं साधसक्ता ।

रोगाः कार्श्यकरावलक्ष्यकरादेहस्य चेष्टाहराः ।

दृष्ट्यादीन्द्रियशक्तिसक्षयकरा सर्वाङ्गपीडाकराः ॥

धर्मार्थाखिलकाममुक्तिपुमहाविघ्नस्वरूपावलात् ।

प्राणानाशुहरन्ति सन्ति यदि ते सौख्यकुतः प्राणिनाम् ॥

तत्तेषां प्रशमायकश्च न विधिश्चिन्त्यो भवद्भिर्बुधैः ।

योग्यैरित्यभिधाय संसदिभिरद्वाजं मुनिर्तेऽब्रुवन् ॥

अर्थ-रोग मनुष्योंके देहको दुर्बल करते हैं, बलका क्षय करते हैं, शरीरकी
चेष्टाको विनाश करते हैं, नेत्रादिक इन्द्रियोंकी शक्तिको हरण करते हैं, सब
अंगोंमें पीडाको उत्पन्न करते हैं, धर्म, अर्थ, अखिल काम, और मोक्षके
लिमे तो महाविघ्नकारी हैं, अधिक यत्नेपर यलात्कार शीघ्रही प्राणोंको
हरलेते हैं, जब इसप्रकारके रोग शरीरमें सदा विद्यमान हैं तो फिर प्राणियोंके
प्राणोंकी कुशल कहा ? इसकारण तुम सब रोगोंके प्रयत्नमें तत्पर और
पूर्ण विद्वान् एकत्रित हुए हो तो रोगोंके दूर करनेका कोई उपाय विचारो ।
इसप्रकार भागदाजके वचनोंको सुनकर सब ऋषि अत्यन्त हर्षित होकर
उच्चरवरसे जयजय शब्दकर, साध्वनि करने लगे और भारद्वाजजीसे
चोटे कि, हे भगवान् ! आपही इस कार्य करनेके योग्य हैं, इसकारण तुम
परिश्रम करके इन्द्रके पास जाकर प्रार्थना करो, और विधिपूर्वक
आयुर्वेदकी पढ़ो, जिससे प्रजाके लोग रोगरहित हों, भयसे दृष्ट इसप्रकार
जब सब मुनियोंने विनम्रदुक्त प्रार्थना की, तब उनकी आज्ञानुसार मुनि-
पुंगव भारद्वाज इन्द्रलोककी गये, इन्द्रकी आशीर्वादसे स्तुति करी, और

सब ऋषियोंके वचन देवराजसे कहे, फिर कहा हे इन्द्र ! सब प्राणियोंके प्राण रहनेके लिये महाभयानक रोग सत्तारमें उत्पन्न हुयेहैं, उनके दूर होनेका कोई उपाय बताओ, इन्द्रने परम चतुर भारद्वाजको आयुर्वेद पढाया, जिसके प्रभावसे रोगरहित हो प्राणी एक सहस्रवर्ष जीयें, भारद्वाजने थोड़ेही दिनमें आयुर्वेद पढ उसके आशयको जानालिया, इसी आयुर्वेदके प्रभावसे भारद्वाज मुनि रोगोंसे छूट दीर्घायु हुए, और अनेक मुनियोंको रोगरहित कर पूर्णायु किया, पश्चात् आत्रेयमुनिनेभी इन्द्रहींसे आयुर्वेद पढा और अपने नामकी आत्रेयसहिता रच अग्निवेश, भेड, जातुकर्ण्य, पराशर, क्षीरपाणि और हारीतको पढाई, इन उन्होंने अपने अपने नामकी सहिता निर्माण कीं, और अग्निवेशादिक छहों शिष्योंने अत्रिचन्दनको अपनी अपनी सहिता सुनाई, और आत्रेयने अत्यन्त आनन्दित होकर आशीर्वाद दिया, वह छहों सहिता आजतक सत्तारमें प्रसिद्ध हैं, और अत्यन्त उपयोगी हैं परन्तु इनमें सबसे प्रधान अग्निवेशकृत तत्र उत्कृष्टतासे सबके मनको आकर्षण करनेवाला हुआ, किसी समय चरकमुनिने उन सब तत्रोंको एकत्र करके संस्कार किया और अपने नामसे नवीन सहिता रचकर प्रचार की, जो आजतक चरकके नामसे विख्यात है, अग्निवेशकृत तत्र जो कि चरकका संस्कार किया हुआ है उसमें शल्यादिक अष्टागमयी नवीन सहिता आठ भागोंमें विभाग की गई, उस सहितामें खनिज, उद्भिज्ज, प्राणिवाची द्रव्योंको तीनभागोंमें विभाग करके, फिर प्राणियोंके जरा युजादिकोंको चारभागोंमें विभाग करके, उद्भिज्जोंको वनस्पतिवृक्ष वीरुध औषधियोंको चारभागोंमें विभाग किया, फिर उन उद्भिद् द्रव्योंको जीवनादिक पचाशगणोंमें विभाग किया, इसकी भाषा प्राकृत नहीं है, प्राचीन होनेसे बिपरचनाप्रणालीशोधन नहीं की गई है, इसलिये अत्यन्त गड़बड़ है, इसके सिद्धकल्प दो स्थान सत्रह अध्यायोंसे सयोजना करके पञ्चनदपुरवामी दृढवलने सम्पूर्ण किया इस सहिताके सिद्धस्थानकी पहिली समाप्तिमें लिखा है -

“अखण्डार्थदृढबलोजातःपञ्चनदेपुरे ।

कृत्वाबहुभ्यस्तंत्रेभ्यो विशेषाच्चबलोच्चयम् ॥

सप्तदशौपधाध्यायैः सिद्धकल्पैरपूरयत् ।”

अर्थ-इस सहिताके सम्पूर्ण करनेकेलिये दृढवल पञ्चनदपुरमें उत्पन्न हुआ उसने अनेक ग्रन्थोंका अनुसन्धान करके सत्रह अध्यायोंमें सिद्धकल्पको पूर्ण

किया । सुश्रुतसंहिता—इसीप्रकार सुश्रुतसंहिता शल्यतंत्रके उपदेशसे प्रधान अष्टांगमयी धन्वन्तरिसम्प्रदायकी पहिली और चरकसंहितासे पिछली है, इसमें काशीराजरूप धारणकिये हुए भगवान् धन्वन्तरि वक्ता, और विश्वामित्र महर्षिपुत्रसुश्रुत श्रोता, और परम्परासायनिक सिद्धनागार्जुन सस्कारकर्ता हैं, सूत्रादिपञ्चस्थानात्मक पूर्व तंत्रमें चिकित्सा किये हुए रोग, रसायन, बाजीकरणतंत्रोंके साथ चिकित्सक शल्यतंत्रको प्रधानतासे वर्णन किया है। कल्पमें चिकित्सक विषतंत्रको चिकित्सा स्थानमें रसायन, बाजीकरणतंत्र वर्णन किये हैं, उत्तरतंत्रमें शालाक्यकायचिकित्सा, कौमार, भृत्य, भूतविद्या वर्णन की है।

एक समय सुश्रुताचार्य पिता विश्वामित्रकी आज्ञा पाकर अपने सहगामी मुनिकुमारोंके साथ काशीको गये, जहां वानप्रस्थ आश्रममें स्थित, देवताओंमें श्रेष्ठ, अनेक मुनि जिनकी स्तुति कर रहे, उन सर्वानन्ददायक धन्वन्तरि काशीनरेश दिवोदासको विनयपूर्वक सुश्रुतादिक सब ऋषिपुत्रोंने नमस्कार किया, अनन्तकीर्त्तिस्वरूपद्रव्यवाले दिवोदास उन ऋषिपुत्रोंको समीप खड़ा देखकर बोले कि, हे ऋषियो ! तुम कुशलपूर्वक हो ? किसकारण आगमन हुआ, तब उन सब ऋषिकुमारोंने सुश्रुतद्वारा उत्तर दिया, कि हे भगवन् ! रोगोंसे भयभीत हाहाकार करते और मरते हुए प्राणियोंको देखकर हमारे चित्तमें अत्यन्त खेद उत्पन्न हुआ है, इसलिये आपके पास रोगोंको दूर करनेका उपाय पूछनेको हम आये हैं, तो आप कृपा करके हम सबको आयुर्वेद अध्ययन कराओ तब काशीनरेशने सुश्रुतादि ऋषिपुत्रोंके वचन स्वीकार कर उनको आयुर्वेद पढ़ाना आरम्भ किया, उस व्याख्याकी वह मुनिनन्दन परमानन्दपूर्वक पढ़ने लगे अपने कार्यको सिद्ध करके चलते समय काशीराजकी आशीर्वाद दिया कि, जयहो, जयहो, आपकी सदा जयहो, यह कह सब अपने अपने आश्रमपर आये और उन मुनिपुत्रादिकोंमें प्रथम सुश्रुतने अपना पेसा स्फुट तंत्र रचा, जोकि एकसौ बीस १२० अध्यायमें सम्पूर्ण हुआ, और ऋषिपुत्रोंनेही पृथक् पृथक् अपने तंत्र रचे, सुश्रुतके रचे हुए तंत्रको बहुत लोगोंने सुना, इसीकारण उसका नाम सुश्रुत सत्तारमें प्रसिद्ध हुआ, परन्तु हमको यह बड़ा भारी सन्देह है कि सुश्रुत नामके दो आचार्य हुए हैं एक सुश्रुत, दूसरा वृद्धसुश्रुत, इनमें यह निश्चय नहीं होमक्ता कि प्रसिद्ध सुश्रुतसंहिताका कर्त्ता कौन है ? जय योद्धोंने प्रयत्न होकर बाद विवादसे पण्डिताका तिरस्कार करके वैदिक क्रियाका लोप

करनेका प्रारम्भ किया, उस बौद्धसग्राम समयमेंही (विक्रमके सवत्से एक हजार १००० वर्ष पहिले) ससारमें प्रसिद्ध परम रासायनिक बौद्धपालक सिद्धनागाज्जुन मुश्रुतनाम तत्रको सस्कारमुखसे सूत्रादिपञ्चकस्थानोंमें अर्थ वशसे विभाग करके विस्तारपूर्वक स्पष्ट व्याख्या कर शेष उत्तर तत्रमें शेष अर्थोंको प्रगट करके एक नवीन संहिताको रचा । वह मुश्रुतसंहिता ससारमें प्रचलितहै, यह उल्वणाचार्यका मतहै इसकी भाषा प्राचीनहै, रचनारीति यथाभागानुकूलहै, इसमें शरीरास्थिमालाकी प्रगटता, रोगोंका निश्चय, और प्रणचिकित्सादिके ज्ञानका वर्णन है, इस लिये श्रेष्ठकोटिकी अधिरूढताका अतिनिर्विकल्प स्वीकार करना चाहिये इसका मूढगर्भ अश्मरी प्रकरण अत्यन्त प्रशंसा करने योग्य है, अधिक क्या ? बड़े बड़े विदेशीय वैद्योंने मूढ गर्भादिक प्रकरणकी समालोचना करके विस्मयपूर्वक प्रशंसा की है

वाग्भटसंहिता—कुठ कालोपरान्त चिकित्सकोंमें परमोत्तम धन्वन्तरिके समान भूमण्डलमें वाग्भट भिषक उत्पन्न हुआ, यह महाराजाधिपति सत्यसिन्धु परमज्ञानी राजा युधिष्ठिर पाण्डुकुलभूषणकी सभामें सर्व रोगनाशक महाश्रेष्ठ एक वैद्य था उसने जगतके उपकारार्थ आयुर्वेदके अनेक ग्रन्थ निर्माण किये, उनमें अष्टागहृदयसंहिता सब ससारमें प्रसिद्ध हुई और वही वाग्भटाभिधानसे भूमण्डलमें सूर्यके समान प्रकाशमान है । चरकसुश्रुतादि अनेक ग्रन्थोंको मयकर ससारके हितार्थ बड़े प्रयत्नसे इस सुखसञ्चारिणी संहिताका सग्रह किया । इस संहितामें और इसकी औपधियोंमें उन्होंने ऐसी अपूर्व चातुर्यता प्रगट कीहै । वह और ग्रन्थोंमें नहीं दिखाई देती, जो बात चरकसुश्रुतमें बीस पच्चीस श्लोकोंसे वर्णन की है वह बात इस संहिताके तीनही चार श्लोकोंमें दर्शा दीहै, सत्य तो यह है कि, इन्होंने सब ससारके उपकारके लिये आयुर्वेदका उद्धार किया इसीलिये इस वाग्भटसंहिताकी वृहन्नयीमें वैद्योंने गणना कर रखी है । यथा—

सुश्रुतो न श्रुतो येन वाग्भटो नैव वाग्भटः ।

नाधीतश्चरको येन स वैद्यो यमकिङ्करः ॥

अर्थ—जिस वैद्यने सुश्रुत सुना नहीं, वाग्भट कण्ठाग्र किया नहीं और चरक पढ़ा नहीं वह वैद्य नहीं है, वह साक्षात् यमका दूत है । इसीलिये वृहन्नयीपाठक वैद्योंका अत्यन्त गौरव और सत्कार होवाहै, और जो अठारह १८ संहिताहैं वह बीरही और युगोंके निमित्त हैं, परन्तु अष्टागहृदयसंहिता केवल कलियुगहीके लिये निर्मित हुईहै । यथा—

अत्रिः कृतयुगे चैव त्रेतायां चरको मतः ।

द्वापरे सुश्रुतः प्रोक्तः कलौ वाग्भटसहिता ॥

अर्थ—सत्ययुगके लिये अत्रिसहिता रचीगई थी, त्रेताके लिये चरकसहिता निर्माण कीगई, द्वापरके लिये सुश्रुत, और कलियुगके लिये वाग्भटसहिता यनीहै । और जो किसीके चित्तमें सदेह हो कि, वह अठारह सहिता कौनसी हैं जो और और युगोंके लिये निर्माण की गई है, इसलिये उनके नामभी लिखे देताहू वह अठारह सहिताओंके नाम हारीतसहितामें इसप्रकार हैं—

हारीतसुश्रुतपराशरभोजभेडभृगुअग्निवेशचरकाश्र्यव-
नोऽप्यगस्तिः । वाराहवाग्भटनारायणनारसिंहाआ-
त्रेयकात्रिशशिनःशिवभास्करौच ॥ सन्त्यष्टादशशि-
क्षाधन्वन्तरेर्वाग्भटवह्निष्कृत्य ॥

अर्थ—हारीत, सुश्रुत, पराशर, भोज, भेड, भृगु, अग्निवेश, चरक, च्यवन, अगस्ति, वाराह, वाग्भट, नारायण, नारसिंह, आत्रेय, अत्रि, चन्द्रमा, शिव और सूर्य इनमेंसे वाग्भटको छोडकर अठारह सहिता आयुर्वेदकी वर्णन कीहै । इस सहिताका जिसप्रकार प्रचार हुआ सो विस्तारमहित लिखताहू, अत्रिस-हिता पञ्चनदादि प्रदेशमें प्रसिद्धहै, अत्रिमुनिकृत चरकादिकके समान प्राची नहै, यह सहिता न बहुत शक्तिसे न बहुत विस्तृतहै, यही आदिमें प्रामाणिक और स्मृतिसहिताकार थी, वाग्भटसहिताका वृत्तान्त वाग्भटसहितामें इसप्रकार लिखा है कि, वाग्भटसहितादि आत्रेयसम्प्रदाय और धन्वन्तरिसम्प्रदायके अनेक चिकित्सावर्तोंसे आदिमेंही स्वयसगृहीत अष्टागद्वयसमूहसे लेकर वाग्भटाचार्यने रचीहै । जैसा उसमें लिखाहै—

अष्टांगवेद्यकमहोदधिमन्थनेन

योऽष्टांगसग्रहमहामृतराशिराप्तः ।

तस्मादनल्पफलमल्पसमुद्यमानां

प्रीत्यर्थमेतदुदितपृथगेवतत्रम् ॥ वा.र ४०अ

अर्थ—अष्टांगवेद्यक समुद्रके अथनेसे नो अष्टागसंग्रह यद्ये अमृतकी राशि प्राप्त हुई, उससे अल्प उद्यम करनेवालोंके लिये यह अनल्प फल तत्र पृथक् ही कहा

है, इसीप्रकार यह अलंकारादि सहित अपने नामसे अनेक शास्त्रोंको रचता हुआ ऐसा सुना जाता है कि, यह आदिमें ब्राह्मणधर्मावलम्बी निरन्तर वैदिकाचारका अनुष्ठान करता था, उसके उपरान्त किसीसमय इसने बौद्धधर्मके तत्त्वको जाननेके लिये किसी बौद्धाचार्यको गुरु किया, इसप्रकार बहुतकालतक निश्चलचित्त होकर उसके अनुसार वर्तता रहा और उस धर्मके परम रहस्यको प्राप्त करके उसमें बड़ी श्रद्धा करता रहा, फिर वह अपने गुरुके पास आया उस धर्मके अनुरागको धारण करता हुआ उसके गुरुने देखकर उसे उसी धर्मके अवलम्बनके लिये उपदेश दिया, इसप्रकार दक्षिणके पण्डितोंका कथन है और बहुतलोग इस वाग्भट्टको अमरसिंहकृत कहते हैं, परन्तु काश्मीरराजतरंगिणीकी सवालोल्लेखनासे यही विदित होता है कि, सिंहगुप्तसुत परबौद्ध वाग्भट्टाचार्य काश्मीरनरपति जयसिंहके प्रजापालन समयमें (संवत् विक्रम १२५३ शके ११९८) में वर्तमान था, तथा विजयनगराधिपति बुक्कराजके समयमें माधवने अपने ग्रन्थमें वाग्भट्टका उद्धार किया है इसको भी ९०० नौसी वर्ष बीते, इसके उपरान्त उसी समयमें वाग्भट्टने अपनी सहिता रची बहुतसे वैद्योंका यह मत है, कोई वैद्यलोग यह कहते हैं वाग्भट्टसहिता बहुत प्राचीन है चरक, सुश्रुतसे पीछेकी रची अनुमान की जाती है, उसमें सब प्रकारकी चिकित्साओंके अग समान हैं इसके सुष्टियोग रोगलक्षणादिक और इसकी भाषाप्रणाली अत्यन्त शुद्ध और परम प्रशंसनीय है, वाग्भट्टका जन्म लोचनके कर्मकारसे कहते हैं, कोई उसको धन्वन्तरी कहते हैं, कोई उसको सशुद्रके मयनेसे उत्पन्न हुआ एक रत्न कहते हैं, कोई उसको कलियुगका प्रवान बुद्ध गौतमम्हावि कहते हैं, अपने रचे-हुए अष्टागहृदयसमूहमें उसने सिन्धुदेशमें अपना उत्पन्न होना लिखा है, । जैसे कि—

“भिषगवरो वाग्भट्ट इत्यभून्मे पितामहो नाम धरोऽस्मि यस्य ।
सुतोऽभवत्तस्य च सिंहगुप्तस्तस्याप्यहं सिन्धुपुजातजन्मा ॥”

अर्थ—मेरे पितामह वाग्भट्ट वैद्यवर हुए जिनका मैं नाम धारण कर रहा हूँ (मेने भी वही वाग्भट्ट नाम अपना रखा है) उनके पुत्र सिंहगुप्त हुए और मैं भी उसी अनुपम विद्यालयासिन्धुमें उत्पन्न हुआ ।

अरुणदत्त वैद्यवर मृगाकदत्तका पुत्र वैद्यवशमें उत्पन्न हुआ, उसने सुप्रसिद्धा वाग्भट्टसहिताकी सर्वाङ्गसुन्दरी नाम टीका निर्माण की ।

हेमाद्रि बड़ा प्रसिद्ध ग्रन्थकार है, उसने वाग्भटसंहिताके सूत्रस्थानकी आयुर्वेदरसायनटीका रची, चतुर्वर्गचिन्तामणिनामक स्मृतिसंग्रहभी उसीका कहते हैं ।

भावप्रकाश—वैद्यवर लटकमिश्रके पुत्र श्रीमान् भावमिश्रकृत है, यह बहुत विस्तारयुक्त, रोगोंका निश्चय करनेवाला चिकित्साका संग्रह है, अनेक प्राचीन संहितासंग्रहकोष, निघण्टुकी समालोचना और अपनी कल्पनासे रोगोंके लक्षण, चिकित्सा, पथ्य, द्रव्यगुण, रसवीर्यविपाक, जारण, मारण, शोधनादिकोंका संग्रह करके लिखा है, इन भावमिश्रने वैदेशिक घृष्टंगीज व ईरानसे लाये हुए उपदशरोग विशेष अन्तर लक्षण सम्पन्न फिरंग रोगोंको अपने ग्रन्थमें चिकित्सासहित वर्णन किया है और नवीन चोचचीनी, छुहारे इत्यादि बहुत वैदेशिक द्रव्य गुणसहित उसमें मिलाये हैं, उसमें उपदशनाशक चोचचीनी मूल चीनदेशसे और भारतखण्डके गोवा प्रदेशमें तीन सौ ३०० वर्षसे अधिक पहिले सन् १५९६ में लाया, यह बुइलसन् साहेबका मत है ।

भावमिश्रका प्रादुर्भाव उस कालमें वा उसके उपरान्त हुआ, इस भावप्रकाशसंग्रहको वैद्यलोग सब देशोंमें अधिक मानते हैं और इसीको आयुर्वेदका मुख्य ग्रन्थ जानते हैं, इसीसे यह भावप्रकाश सब सत्तारमें प्रसिद्ध है ।

माधवनिदान—माधवकरका रचा हुआ है, इसमें माधवकर्त्ता अनेक प्रकारके प्राचीन तन्त्र, वैद्यकसंहितादिकोंसे, कहीं आदर्शके उद्धारसे, कहीं अपनी रची हुई भाषासे, कहीं सारसंग्रहसे और कहीं पर्यायके अनुक्रमसे संग्रह करके अनेक रोगोंके निदानका लक्षण लिखकर भारतवासी चिकित्सकोंके पढ़नेके लिये बड़ा उपकार सिद्ध किया है यह ग्रन्थ माधवाचार्यकृत है, ऐसा बहुत विद्वानोंका मत है परन्तु वह ठीक नहीं जानपड़ता, क्योंकि माधवकर ऐसी उपाधिवाला अत्यन्त प्राचीन वैद्यजातीय ग्रन्थकार था, सत्तारमें ऐसी प्रसिद्धि है, दूसरा चक्रपाणिदत्तने माधवनिदानके रोगोंकी अनुक्रमणिकाके अनुसार अपने ग्रन्थको निर्माण किया यह माधवकर चक्रपाणिसे पहिले था ऐसा ज्ञात होता है, और यह चक्रपाणि बारह सौ १२०० सन् १२०० में गौड राजपूतकी पाठशालाके अध्यक्ष होनेको अपने ग्रन्थमें लिखता है और यह भी है कि माधवकर अपने ग्रन्थके उपसंहारमें जो वृद्ध भोज गोविन्द पातञ्जलि वृत्तिकारके समयमें सातवीं शताब्दीमें वर्तमान था, उसके रचे हुए सूक्तिरुणामृत नामक ग्रन्थके मुक्तावलिंकार गोविन्दसे पीछे गुरुको स्वीकार करके अपने आपको उसके समान समपानुसार, वा उसके पीछे हम ग्रन्थको अनुपम

प्रतिपादन करता है, उसका निदान आठवीं शताब्दीमें अरबी भाषाम अनुवाद हुआ और "एदान" नामरक्खा, यह ग्रन्थ अरबी भाषामें प्रसिद्ध है यह पहिले तत्त्वाविद् उइलसनसाहेबका मत है ।

व्याख्यामधुकोप-माधवनिदानकी टीका-वैद्यवर श्रीविजयरक्षित श्रीकण्ठ दत्तने रचा है (श्रीकण्ठवृन्दकृत सिद्धयोगका टीकाकारभी है, वह टीका कुसु-मावली नामसे प्रसिद्ध है) इसकी भाषा ५० दत्तराम चौबेने अच्छी की है ।

शार्ङ्गधरसमग्र-प्रसिद्ध शार्ङ्गधरपद्धतिकार शार्ङ्गधरवैद्यकृत है, यह ग्रन्थ न अति साक्षित न अति विस्तृत है, हमारे देशके विद्यार्थी लोग इस ग्रन्थको अधिक पढ़ते हैं, यह ग्रन्थकार विश्वप्रकाशकृत महेश्वरसे पीछे हुआ, इसकी प्रसिद्ध सस्कृतव्याख्या आढमछी है और उसीके अनुसार इसका भाषानुवाद पण्डित दत्तराम चौबेने किया है ।

रसेन्द्रसारसमग्र-प्रमाणिक रसग्रथ गोपालभट्टने रचा है, इसमें रसोंका जारण मारण शोधनादिसहित रोगोंके सम्पूर्ण प्रकारके रसघटित योग संग्रह किये हैं, इस ग्रन्थको देखकर हमारे देशके अनेक वैद्य अपने अपने ग्रन्थोंमें समग्र करते हैं यह ग्रन्थकार विक्रमकी तेरहवीं शताब्दीमें वर्तमान था, इसकी भाषाटीका मुरादाबादनिवासी शंकरलाल जैनने की है ।

रसेन्द्रचिन्तामणि-राधाविनोदकाव्यके रचयिता रामचन्द्र कविवरका निर्माण किया हुआ यह रसग्रन्थ है, परन्तु यह ग्रन्थ सब रसग्रन्थोंसे प्राचीन है, ऐसा वैद्योंके मुखसे सुननेमें आया है, इस ग्रन्थमें रसोंका जारण मारणा दिक विधिपूर्वक वर्णन किया है, रसपारिजात ग्रन्थभी रामचन्द्रकाही रचा हुआ है । और एक रसेन्द्रचिन्तामणि दुष्टनाथकृत भी है, उसमें भी रसोंके बनानेकी क्रिया अच्छी रीतिसे लिखी है, और प्राचीन भी है, परन्तु इस देशमें उसका प्रचार नहीं, बल्किदेशमें अधिक प्रचार है ।

चक्रदत्तसमग्र-चक्रपाणिदचविरचित रोगोंकी चिकित्साका समग्र है, इसमें माधवकरप्रणीत रोगोंका निदान, ग्रन्थानुसार रोगोंका अनुक्रम और ज्वरा-दिक रोगोंकी चिकित्सा कही है, उसमें रोगोंके तत्पणीत सिद्ध योग हैं, वह परम दृष्ट फल हैं, इसप्रकार यह समग्र सर्वत्र सत्कारपूर्वक ग्रहण किया हुआ सत्कारके हितको सिद्ध करनेवाला है, चक्रपाणि वीरभूमि देशवासी प्रसिद्ध रोघवलनाम दत्तकुलमें उत्पन्न नारायणदत्तका पुत्र, और नरदत्तका शिष्यया

वह विद्याकुलसम्पन्न वैद्यभानुदत्तके अन्तरंगभावसे उसके पीछे गौडगाउँपकी पाकशालाका अध्यक्ष हुआ, उसका प्रादुर्भाव सातसौ पचास ७५० वर्षका अनुमान जान पड़ता है, यह भी सुननेमें आया कि, उसकी जन्मभूमिमें उसका स्थापन किया हुआ चक्रपाणीश्वर शिवालय है, इस कारणसे उसका धर्म शैव जान पड़ता है ।

“गौडाधिनाथरमवत्यधिकारिपात्र
नारायणस्यतनय सुनयोऽन्तरङ्गात् ॥
भानोरनुप्रथितरोध्रवलीकुलीनः
श्रीचक्रपाणिरिद्वकर्तृपदाधिकारी ॥
यः सिद्धयोगलिखिताधिकसिद्धयोगान्
तत्रैव निक्षिपतिकेवलमुद्धरेद्वा” ॥

अर्थ—गौडाधिनाथकी रसोईके अधिकारियोंमें पात्र नारायणका पुत्र नीतिमान् भानुदत्तके अन्तरंगसे प्रसिद्ध रोध्रवली कुलीन श्रीचक्रपाणि कर्त्ता पदका अधिकारी जो सिद्धयोग लिखित अधिक सिद्ध योगोंका उनमेंही केवल उद्धार कर्त्ता है

सिद्धयोग—वृन्दकुण्डकृत अत्यन्त प्रमाणिक चिकित्सा ग्रन्थ है, उसकी कुसुमावली नाम टीका श्रीकण्ठकृत है, जिसे चक्रपाणिने अपने ग्रन्थमें इस ग्रन्थका समुल्लेखन किया है, इससे यह चक्रपाणिसे पहिला सम्पन्ना चाहिये ।

रसकौमुदी—वैद्य माधवकृत है, माधवने इसमें रसादिक दृष्ट फल औषधि योंको अनेक रस ग्रन्थोंसे लेकर अपने रचे हुए ग्रन्थमें समायोजना करके चिकित्सा औषधसमूह किया, और बहुत गोगोंमें अनेक योग स्वयमेव स्थापना किये, यह ग्रन्थकार निदानका कर्त्ता माधवकर नाम वृद्धपरम्परासे सुनाजाता है परन्तु इस ग्रन्थको किसी और माधव नाम वैद्यने प्रसिद्ध किया यदि यह बात सत्यभी हो तो भी इसको कोई शीघ्र सिद्ध नहीं कर सक्ता, क्योंकि माधवकरके समयमें अहिषेन प्रयोग, रसादिकोंका जारण मारण आदिका प्रथम प्रचार न था ।

रसरत्नाकर—नित्यनाथकृत बड़ा रसोंका समूह है, उसने रसाका जारण मारणादिक इस ग्रन्थमें विस्तारपूर्वक दर्शाकर अपने रचे हुए और समूह किये हुए मूल औषधादिक बहुत सन्निवेश किये हैं, नित्यनाथ बङ्गदेशवासी न था, परन्तु पश्चिम देशमें उत्पन्न हुआ, ऐसा अनुमान किया जाता है,

अलौकिक देखकर मैंने इसका हिन्दीभाषामें टीका की जो जगत्में सर्वसाधारण मनुष्योंके लिये उपयोगी हो ।

योगचिन्तामणि—श्रीहर्षसूत्रकृत है, इसमें सिद्ध चिकित्सा उपयोगी बहुतसे योग हैं उसका समय ग्यारहवीं ११०० अथवा साठे ग्यारहवीं ११५० संवत् विक्रममें रचा गया, यह राजतरंगिणीमें लिखा है, और इसकी भाषाटीका माथुरीमञ्जूषा नाम पण्डित दत्तराम चौबेने निर्माण की है ।

योगतरंगिणी—वैद्यक रसोंका ग्रन्थ अत्यन्त प्रामाणिक त्रिमल्लभट्टकृत है, यह ग्रन्थ हमारे देशमें अधिक प्रचलित है, इसका भाषानुवाद पण्डित उवालाप्रसादमिश्र मुरादाबादनिवासीने किया है, इनहीं त्रिमल्लभट्टकें बनाये हुए वैद्यचन्द्रोदय, रसदर्पण, योगचन्द्रिका, द्रव्यगुणशतकादि और भी ग्रन्थ हैं, इसी द्रव्यगुणशतककी भाषाटीका मैंने लिखी है ।

वैद्यामृत और वैद्यवृन्द—भिषक् नारायणकृत रसग्रन्थ है, यह ग्रन्थ नवीन होनेके कारण अधिक प्रचलित नहीं है, यह ग्रन्थकार संवत् १८५० में विद्यमान था ।

वैद्यजीवन—वैद्यवर ओलिम्प्यराजकृत है, परन्तु बहुत प्राचीन नहीं है, उसने इसमें काव्यकरणके छलसे चिकित्साके उपकारी औषध अनुपानादिका उपदेश किया है ।

सारकौमुदी—आनन्दवर्मकृत अर्वाचीन वैद्यकसंग्रह एक सौ पचास १५० वर्षके लगभगमें रचागया है इस ग्रन्थका बङ्गदेशमें अधिक प्रचार है ।

मैपज्यरत्नावली—१०० सौ वर्षसे अधिक पहिले गोविन्ददाससेनने रची है, हमारे देशमें इस ग्रन्थकी अधिक प्रतिष्ठा नहीं है ।

वैद्यरहस्य—वैद्यवर विद्यापतिप्रणीत, यह ग्रन्थ आज कलके सब नवीन ग्रन्थोंसे उत्तम है, इसमें अत्युत्तम प्रयोग हैं, इस कविके बनाये और भी चिकित्साक्षनादि अच्छे अच्छे ग्रन्थ हैं ।

चिकित्सासारसंग्रह—भिषग्वर क्षेमशर्माआचार्यकृत सर्वोपयोगी है, इन्होंने सब रोगोंका उपाय बहुत अच्छी रीतिसे लिखा है ।

हारीतसहिता—महर्षि आश्रेय और हारीत मुनिके सवादमें रची गई है, ऐसा प्राचीन वैद्याने लिखा है, परन्तु हमको यह वह ग्रन्थ निश्चय नहीं होता, क्योंकि इसमें बहुतसे प्रयोग और श्लोक अशुद्ध दिखाई देते हैं, हमारी समझमें तो किसी वैद्यने नवीन कल्पना की है ।

प्रयोगामृत—यह अत्यन्त विस्तृत चिकित्साग्रन्थ नृसिंहधन्वन्तरिशिष्य वैद्य विन्तामणिकृत है, यह ग्रन्थकार श्रीरघुसमाजके अन्तर्गत नीरोल ग्राममें १०० वर्षसे अधिक पहिले उत्पन्न हुआ ।

नाडीप्रकाश—नाडीके जाननेका ग्रन्थ क्षत्रियगोत्रज आनन्दसेनके वंशमें उत्पन्न शङ्करसेनने रचा है, वैद्यविनोद और रसशङ्कर ग्रन्थभी उसी कविकृत हैं ।

अर्कप्रकाश—यह चिकित्सासंग्रह रावणकृत है, परन्तु इसको रावणकृत होनेमें सन्देह है क्योंकि, इस ग्रन्थमें नवीन औषधि बहुत लिखी हैं जैसे कि, गुलदाउदी, गुलान, इससे रावणकृत नहीं जान पड़ता, किसी नवीन वैद्यने अपना नाम रावण रखलिया अथवा रावणके नामसे रच दिया है, इसका भाषानुवाद मैंने किया है ।

चिकित्साक्रमवल्ली—यह अर्वाचीन ग्रन्थ काशीनाथद्विवेदीप्रणीत है, अमीनक विरोध प्रसिद्धि नहीं पाई, कविता और प्रयोग अत्यन्त उत्तम हैं ।

निघण्टुरत्नाकर—यह नवीन ग्रन्थ विष्णु वामुदेव गोडबोलेकृत है, पण्टु गणेश रामचन्द्र शास्त्रीदाचार्य, भास्करानन्दशास्त्री तामनकर, कृष्णशास्त्री महायज्ञ, तथा विश्वनाथ विनायक पाटीलकी सहायतासे रचा गया है और यह ग्रन्थ एक लाख श्लोकोंमें समाप्त हुआ है, अकारादिकोष, द्रव्यगुणदोष, शारीरिक अष्टविध परीक्षा निदानमदित चिकित्सा, धातुशोधनमारणविधि, यत्राध्याय, पुटविधि, और अजीर्णमज्जी इत्यादि विषयोंसे परिपूर्ण है, इसमें अनेक औषधि द्वीपान्तरकी लाई हुई लिखी गई हैं, तथा यूनानी औषधियोंका नाम गुणदोष, संस्कृत और मराठी भाषामें लिखे हैं, इसमें नाना प्रकारके विषय अमेजी और फारसीमें लेकर सम्मिश्रित विषय हैं, आज कल इस ग्रन्थके समान दूसरा ग्रन्थ विदित नहीं होता, किमी ग्रन्थमें केवल चिकित्सा ही है, किमीमें रोगोंके लक्षण, किसीमें निदानमदित चिकित्सा, किसीमें धातुशोधन मारण, किसीमें परिभाषा, किसीमें निघण्टु, किसीमें मानव रिभाषा, किसीमें नाडीविज्ञान, किसीमें फोष, किसीमें पाकप्रणाली, किसीमें पट्यावयव, किसीमें चर्या और किसीमें धार्मिकचिकित्सा है परन्तु इसको तो सम्पूर्ण विषयोंमें विस्तृत रचा दिया है, जो विषय कहीं नहीं पाये जाते यह सब इस ग्रन्थमें विद्यमान है इसलिये विष्णु वामुदेव गोडबोलेको हम बारबार धन्यवाद देते हैं कि, निम्न अनेक ग्रन्थोंकी संग्रह करके यह निघण्टुरत्नाकर निर्माण किया, अब हम सूर्यवंशीय श्रीरघुगजधूपण रामचन्द्रसुनु लवंग शूद्रामणि सेठ हसराज करमणीको धन्यवाद देते हैं कि, मित्रोंने अपनी

सहायतासे इस ग्रन्थको प्रकाशित किया, ग्रन्थकारने यह निघण्टुरत्नाकर सवत् १९२४ में रचाथा यह विष्णु वासुदेव गोडबोले पावसग्रामनिवासी जिले रत्नागिरिकेथे ।

अमरकोष—अमरसिंहकृतहै, अमरसिंह वा अमरदेव विक्रमादित्यके समयमें हुआ, ऐसा निश्चय होताहै, परन्तु विक्रमादित्य तीन हुए, न जानिये यह अमरसिंह किसके समयमें हुआ, इसमें अनेक मत दिखाई देतेहैं, उइल फोर्ड साहिबके मतसे नौ ९ विक्रमादित्यहैं, उन सबने शालिवाहनादिकसे युद्ध किया, (विद्याकल्पद्रुममें) परमाधुनिक ऐतिहासिक रहस्यकी अनुसन्धि करनेवालोंने कारण प्रदर्शनपूर्वक किसी समय यह सन् ५६ ई० प्रथम विक्रमादित्य नरपतिकी सभामें नवरत्नये ।

धन्वन्तरिःक्षपणकामरसिंहशकुन्तेतालभट्टघटकपर्परकालिदासाः । ख्यातोवराहमिहिरोनृपतेःसभायारत्नानि वैवररुचिर्नवविक्रमस्य ॥

(काव्यसंग्रह)

अर्थ—धन्वन्तरि, क्षपणक, अमरसिंह, शकु, वेतालभट्ट, घटकपर्पर, कालिदास, वराहमिहिर और वररुचि राजा विक्रमकी सभामें यह नवरत्न थे ।

धारातगराजपति दूसरे बृद्ध भोजकी सभामें किसी समय सन् १००५ ई० में अन्यतम भोजकी सभाम उसी प्रकारके रत्नोंमें अन्यतम होनेसे स्थापन किया, परन्तु इन तीनों कल्पोंमें कौनसा कल्प मुख्यहै, यह निश्चय नहीं होसक्ता, हमें तो सत्र प्रवृत्तकरनेवाले विक्रमादित्यके सत्र तीनमें था, ऐसा विश्वासहै, अमरसिंह बौद्धमतवलम्बी था, यह बात सब सत्तारमें प्रसिद्धहै, उसका कोष प्राचीन रीतिसे छन्दोबद्ध सन कोषोंमें श्रेष्ठ होनेसे सन जगत्में आदर किया गयाहै, वह इसको स्वर्गादिक वर्गोंमें विभाग करके बीच बीचमें वर्णानुक्रमकी रीतिसे रचताहुआ ।

अमरकोषके प्रचलित टीकाकारोंमें—

मधुरेश प्राचीनहै, आकेशालिवाहनके ६०० वर्षमें उत्पन्न हुआ, वह किसी सुसलमान वीरकी सहायतासे सदा शास्त्रका आन्दोलन करताथा, यह उइलसन्साहिबका मत है, वही कवि शब्दरत्नावलीका रचनेवाला था ।

क्षीरस्वामी—कादम्बरिपति ललितादित्यके राज्यसमयमें उत्पन्न हुआथा,

जयापीडनाम कोई राजा इसीसे शब्दविद्याको पदकर अन्तमें छलित्तादित्य पण्डित ऐसी प्रसिद्धिको प्राप्त हुआ सन् ७०५। ७११ राजतरंगिणी ।

रायमुकुट—(सन् १४३०) में हुआया, राजतरंगिणी ।

गौरागमलिका पुत्र भरतमलिक बहुत प्राचीन ग्रन्थकार और टीकाकार है यह वर्द्धमान देशके पातिल पण्डिताममें कुशीन वैद्यवशमें एकसी पचाश १५० वर्षके लगभग पहिले उत्पन्न हुआया, यह कवि प्रसिद्ध शाब्दिककार कोट्यासका रचनेवाला और रघुवश आदि काव्य कुमारसम्भवादिका टीकाकार है, उसकी रची हुई अमरकोषकी टीकासे उसकी कीर्ति भारतमें चिरकालतक स्थित रहेगी

घन्वन्तरनिघण्टुभी—अमरसिंहकृत अमरकोषके सदृश प्रमाणोंसे पैसाही पायाजाताहै वह ६०० छःसौ वर्ष पहिला है ।

हेमचन्द्राभिधान—अभिधानचिन्तामणिके नामसे प्रसिद्ध है, उत्तमरीतिसे विशेष करके दो भागोंमें विभाग करके हेमचन्द्राचार्यने रचा है, उसमें पहिला स्वर्गादिक छे भागोंमें विभाग किया है, शब्दाकी श्रेणीका विभाग अन्ततः क्रमसे किया है, दूसरा नानार्थपटित है, परन्तु हेमचन्द्र अवतरणिकामें अपने अभिधानके केवल प्रथमभागकी शब्दरचनामणालीको वर्णन करके दूसरेका कुछ वृत्तान्त नहीं लिखा और पहिलेके समान दूसरे भागकी टीका भी नहीं जान पटती, इससे दूसरे भागको हेमचन्द्रकृत होनेमें बंध लोग सन्देह करतेहैं कि, महेश्वरकृतनानार्थवर्ण इसमें मिलादियाहै, “विद्वान् लोग ऐसी तर्कना करतेहैं”

हेमचन्द्र वा हेमाचार्ययाति—प्राचीन जैनगन्यलेखक और जैनधर्मावलम्बी था, यह सवत् १२३० में हुआ और पाटलीपुत्र नगरनिवासी था, इसने अपने जीवनके पहिलेभागको नानाशास्त्रकी रचनासे व्यतीतकरके अन्तिमअवस्थामें गुजरातदेशकी ओर जाकर वहां जैनधर्मकी समालोचनासे बड़ी प्रतिष्ठा पाई, और वहां मकृतिसहित राजत्व और जैनधर्मको प्रदण किया, मुनाजाताहै कि, जैनधर्मावलम्बी हेमाचार्य यातिने उसीसमयमें राजपूत नरपाति गुणमर पालकोभी जैनधर्ममें ही दीक्षित करलिया, इसप्रकार प्रोत्साहित, जैसा कि यह हलायुध गुरु लक्ष्मणमेनकी ममामें था (सवत् १२९०) ऐसा उल्लमन् साहित्यका मत है ।

गन्दमाला—राभेश्वरशर्माकृत अतिसंक्षिप्त अभिधानसंग्रहहै, अमरकोषकी अपभ्रूत धंगमापामें कहीगईहै, यह मेदिनीकोपमें पाईहई यह उल्लमन् साहित्यका मत है ।

नाममाला—धनञ्जयकृत है, उसमें श्रेणीविभागके असङ्गात होनेसे यह प्राचीन अनुमान कीजाती है, महर्षि जैनधर्मावलम्बी मानतुगाचार्यका शिष्य धनञ्जय विक्रमकी दशवीं शताब्दीमें वर्तमान था, वैद्यलोगोंने ऐसा लिखा है ।

भूरीप्रयोग—दामोदरदत्तके पुत्र प्रसिद्ध सुपन्न व्याकरणकार पञ्जनाभदत्तने रची है और तीनभागोंमें विभाग की है, पञ्जनाभ मेदिनीकारके पीछे हुआ, स्वयं अपने ग्रन्थमें मेदिनीके उल्लेखसे प्रमाण किया है ।

शब्दरत्नावली—मूँसेखाँ नाम किसी सुसलमान वीरके आश्रयसे अमरटीका कार मथुरेशने अमरकोषकी प्रणालीसे रची है, उसमें शब्दोंके भिन्न रूप पाठ किये गये हैं ।

जटाधरकोष—चट्टग्रामनिवासी जटाधरने रचा है, जटाधरने अमरकोष विना देखे जटाधरकोष निर्माण किया, यह बहुत प्राचीन अनुमान नहीं किया जाता ।

अभिधानरत्नमाला—इलायुधकृत है, यह संक्षिप्त कोष स्वर्ग, भू, नरक, वारि, मिश्र नाम पाँचभागोंमें विभाग की गई है, इलायुध भट्ट भास्करका शिष्य केरलदेशीय ब्राह्मण अति प्राचीन बौद्ध धर्मका अवलम्बन करनेवाला विक्रमकी द्वादश शताब्दीमें वर्तमान था, उसके कोषमें उद्भिज्ज द्रव्य खनिजद्रव्योंकी मनोरमसूची बग भाषासे व्याख्यान की गई, ऐसा सुना जाता है कि, इलायुध लक्ष्मणनरेशकी सभामें पण्डित था ।

शब्दचन्द्रिका—नाम, द्रव्य, गुणादिके कोष यह चक्रपाणिदत्तका रचा हुआ प्रसिद्ध है, यह उद्भिज्ज, खनिज, प्राणी, पृथ्वापृथ्वादिकोंके कार्योंपयोगी होनेके समूहसे सर्वत्र प्रशसनीय है, इसके द्रव्योंके नाम बग भाषामें कहे हैं, यह बगदेशीके रहनेवाले थे ।

विश्वप्रकाश—यह कोष बहुत प्राचीन है, जब कान्यकुब्जमें विद्याके उत्साहका अत्यन्त समादर था, तब महेश्वरने सन् १०६६ में समग्र किया, उस समय शाके १०३३ थे, महेश्वर गाविपुरनिवासी साहसिक नरपति चिकित्साधिकारी श्रीकृष्णके वशमें उत्पन्न हुआ, ऐसा पहिले तत्त्वके जाननेवाले, उल्लेख सन् साहब का मत है ।

अजयपालकृतसंग्रह—संक्षिप्त है, परन्तु बहुत प्रमाणोंसे बड़ा है, अजयपाल मेदिनीकारके पीछे हुआ और जैनमतअवलम्बी था यहभी उल्लेख सन् साहबका मत है ।

धरणीकोष—कान्यकुब्जदेशके ब्राह्मण धरणीधरने निर्माण किया है, यह मल्लिनाथसे पहिले हुआ, यह उल्लेख सन् साहबका मत है ।

कि, पहिला कहा हुआ धन्वन्तरिनिघण्टुही कदाचित् काशीराजकृत 'राजनिघण्टु' हो, "धन्वन्तरिः क्षणकामरसिंहशकु" इस श्लोकके आधारसे ज्ञात होता है कि, विक्रमादित्यकी सभामें जो नव रत्न थे उनहींमें एक धन्वन्तरिजी भी थे आश्चर्य नहीं कि जो इन्होंनेही धन्वन्तरिनामक निघण्टु रचा हो विक्रमकी सभाके नौओं रत्न महाविद्वान् थे उनके रचे हुए ग्रन्थोंका आजतक अधिक प्रचार है, इसलिये यहभी कहा जासکتा है कि, धन्वन्तरिनिघण्टु इनहीं धन्वन्तरिजीका रचा हुआ है ।

धन्वन्तरिके बनाये दो निघण्टु, तीसरा नरहरिपाडितकृत निघण्टुचूडामणि कि, जिसको राजनिघण्टु भी कहते हैं, चौथा काशीराज (कि जिनको धन्वन्तरिका अवतार कहते हैं) कृत राजनिघण्टु है, नरहरिरचित निघण्टुको लोग अवतक नहीं जानते, पंडित शंकरदास शास्त्रीने लिखा है कि, एक जगह उसका भी पता लगता है परन्तु राजनिघण्टु नाम राजनिघण्टु नहीं है इस निघण्टुका कर्त्ता अपने मंगलाचरणमें लिखता है ।

प्रारम्भभैषजहितायनिघण्टुराज . ।

और समाप्तिम भी ऐसा लिखा है ।

इति काश्मीरमण्डलप्रसिद्धवसतिश्रीमठसिद्धगुहाक्षास्थानस्थितश्रीनन्दिस्फोटाप्रसिद्धमहिमानन्दश्रीसोमानन्दाचार्यवशोद्भवचतुर्दशविद्याविनोदपरिणतसमागमद्विजैराग्ययोग्यश्रीपरमहंसजगद्विज्ञानतिमिरमार्तण्डश्रीचण्डेश्वरापरनामधेयश्रीराजराजेन्द्रगिरिश्रीपादपद्मसर्वशास्त्रमकरन्दामोदमुदितसद्वैद्यविद्याविशारददासविशारदमानसहतादिधुरन्धरनानाधनाद्रहणसत्त्वगुणसहजश्रीमदीश्वरसूरिसुश्रीमदमृतेशानन्दचरणारविन्दमकरन्दानन्दोदितश्रीनरहरिपाण्डितविरचिते निघण्टुराजापरपर्यायवत्पभिधानचूडामणौचैकार्थाद्यभिधानस्त्रयोविंशो वर्गः ॥

इससे ज्ञात हुआ कि, ग्रन्थकर्त्ताने इस निघण्टुके दो नाम रखे हैं, एक निघण्टुराज, और दूसरा चूडामणि, दो वास्तविक नामोंके रहते हुएभी न जानिये कि, फिर किसने इसका तीसरा नाम राजनिघण्टु रख दिया ? ।

इसप्रकार चार निघण्टु हुए पाँचवाँ नाम निघण्टु ज्ञातहोता है निघण्टुप्रकाशमें लिखा है कि, चन्द चन्दनकृत गणनिघण्टु है जिसको मदनादिनिघण्टु भी कहते हैं, यह अभी कहीं छपा नहीं है, और मदननिघण्टु मदनपाल राजाका बनाया हुआ उपगया है, इसका दूसरा नाम मदनादिनिघण्टुभी है, परन्तु गणनिघण्टु भोजराजनिघण्टु और शेषराननिघण्टु दशवाँ शताब्दीमें वर्त्तमान थे

यह प्रमाण पाया जाता है इन तीनों निघण्टुओंका आज तक कहीं पाया नहीं लगता, और मदनपालनिघण्टु तो सर्वत्र प्रसिद्ध विस्तृत और प्रशसनीय है, यह निघण्टु मदनपालनरेशके विनोदार्थ किसी वयने निर्माण किया था ऐसा निश्चय होता है, विद्यार्थियोंमें इसका अधिक प्रचार है, क्योंकि इसका नाम, द्रव्य, गुण विस्तारपूर्वक वर्णन किये हैं ।

इसप्रकार सात निघण्टु प्रमाणित हुए आठवा चौपदेव "हृदयदीप" निघण्टु है, नवा मुद्रलकृत "द्रव्यरत्नाकर" दशवा केयदेवकृत "केयदेवग्लानार निघण्टु" ग्यारहवा "केशवकृत सिद्धमन्त्र" यह चारों निघण्टु अभी कहीं उपे नहीं हैं, केवल विश्वनाथसेनकृत पद्याप्ययनिघण्टु उपाई, और चंडे खोजके एक त्रिमल्लमठविरचित "द्रव्यगुणसत्तल्लोकी" निघण्टु मुझको मिला मैंने वैद्यजनोंके हितार्थ उसका भाषानुवाद किया है ।

राजवल्लभीमद्रव्यगुण—यह पद्मोत्तम ग्रन्थ वैद्यवर राजवल्लभकृत है, परन्तु श्रीनासपणदास ऋषिगजने विस्तारपूर्वक व्याख्या करके ११ ग्रन्थका सत्कार किया है, राजवल्लभ वैद्य परम्परासे सुनते आते हैं कि, सम्वत् १७६० सप्तहरी साठमे वर्त्तमानया, यह ग्रन्थ ठ. परिच्छेदामें अत्यन्त श्रेष्ठ श्रेणीसे विभाग किया हुआ वैद्यांको उपयोगी है, इस ग्रन्थका नामही सुना जाता था परन्तु कहीं देरानमें नहीं आता था, मैंने अपने मित्रके पास देगदेशांतरामें राजवल्लभके शिष्य पद्म भेजे पानु कहींसे प्राप्त न हुआ, बहुतदिन पश्चात् कच्छसे एक मेरे मित्रने भलीभाँति रोज करके इसग्रन्थकी एक गति मेरे पास भेजी थास्त्वमें यह सक्षिप्त ग्रन्थ जैसा सुना था वैसाही मिलता, मैंने अत्यंत हर्षसाहित भाषानुवाद करके वैश्यवशावतम श्रेष्ठ खेमराज श्रीकृष्णदासको समर्पण किया ।

निघण्टुग्रमह—जुनागढ तिरागी वैद्यशरोमणि रतुनापजी इन्द्रजी उपनाम कतामठविरचित है, अनेक ग्रन्थका समूह किया हुआ तो है परन्तु आज गड़के समयमें यह निघण्टु नव निघण्टुओंका शिर्मार है इसकी प्रणाली अत्यन्त रितिनिघण्टुकी सदृश है, यह शके १८१५ में रचा गया है ।

वैद्यग्रन्थसिद्धि—याम् टमेशान्द्रवृत्त नवीन कोषोंमें बहुत उत्तम है ।

जब इन भाषीन ग्रन्थोंको मैंने देखा, तो विचार किया कि देखो गृन्थों पर कैसे कैसे सिद्धान्त और सुदिमान् हुए, कि सिद्धान्तों पर अनुपम ग्रन्थ निर्माण किये हैं, परन्तु सब वैद्योंन वैद्यमें कोष और निघण्टुकीं गुरुय समझा, कि वैद्यकी मूल यही दो हैं, उन वैद्योंको समझ और गुणन जानकर

वारम्बार धन्यवाद देता हूँ, जो महादुस्तर रोगरूपी समुद्रसे तारनेके लिये यह अद्भुत नौका बनागये, परन्तु आजकल विद्याकी न्यूनतासे पठन पाठन काठिन होगया, लोगोंने भाषानुवाद कियाभी परन्तु उससे किसीका काय ठीक ठीक सिद्ध न हुआ, और ठीक ठीक औपधियोंके नाम भी समझने दुर्लभ होगये, और संस्कृतनामोंका चालचलन छूट गया, पसारियोंकी दूकानपर जो वह औषधि होतीभी है तोभी कहदेतेहैं कि हमारी दूकानपर नहीं हैं, क्योंकि वह लोग उनकी भाषा तो जानतेही नहीं, लोग हार मान, यूनानी और अंग्रेजी औषधि करने लगे, उनकी यह दशा देख मेरे चित्तमें अत्यन्त खेद उत्पन्न हुआ कि, ऐसी ऐसी भारी नौका बूझा आलस्यरूपी वाग्धिमें डूबीजाती है इनक वचानेका कोई उपाय होना चाहिये । यह विचार मैंने उसीसमय ऊपर लिखे हुए ग्रन्थोंकी सहायतासे और अपनी बुद्धिसे "शालिग्रामौषधशब्दसागरनाम अकारादिक्रमसे एक नवीन कोष रचा" जिसमें प्रथम संस्कृत नाम, उसके आगे हिन्दीभाषाका नाम, जब यह पूर्ण होगया, तो फिर चित्तमें विचार किया कि, कोषका प्रचार तो होगया, परन्तु सत्ता रके उपकारके लिये एक निघण्टु और निर्माण करना चाहिये, क्योंकि बिना निघण्टु औषधियोंके नाम, गुण, दोष, नहीं जाने जाते यथा—

निघण्टुनाविनावैद्योविद्वान्व्याकरणविना ।

अनभ्यासेन धानुष्कस्त्रयोहास्यस्य भाजनम् ॥ १ ॥

वैद्येन पूर्वज्ञातव्याद्रव्यनामगुणागुणा ।

तदायत्तं हि भैषज्ययज्ज्ञाने स्यात्क्रियाक्रम ॥ २ ॥

अर्थ—विना निघण्टुके वैद्य, बिना व्याकरण विद्वान् (पण्डित) और बिना अभ्यास धनुष चलानेवाला (तीरन्दाज) यह तीनों मनुष्य अपनी हँसी करानेगाले हैं ॥ १ ॥ इसलिये प्रथम वैद्यको औषधियोंका गुण अवगुण विचारना चाहिये, क्योंकि उनही द्रव्योंके आधीन सब औषधादिकका बनाना है, और घुद्धिके आश्रयसे सम्पूर्ण क्रिया कर्म जानेजाते हैं ॥ २ ॥

ऐसा विचार करके मैंने यह "शालिग्रामनिघण्टुभूषण" नाम नवीन निघण्टु निर्माण किया है, इस निघण्टुमें सब निघण्टुओंका सार और नवीन नवीन औषधि जिनका आज कल अधिक प्रचार है, जैसे कि, अकरकरा, गोरा, सत्वगिलोय, सनाप, कालादाना, चाय, सालमामिश्री, कलमीआम,

नामपाती, अनन्नास, पिस्ता, बादाम, छुहारा, आलूबुखारा, मानु, मधुदण्डी, रेवटचीनी, तमाखु, ईसफलगोल, भिण्डी, फूट, अडखरधूजा, शकाकन्दी, छुईपाँ, सलजम, बैला, चैवेली, मोतिया, हारमिंगार, गुलाब, महँदी, समुद्रसोख, पोदीना, सफरी, विहारीनिम्बू, मषा, बाजरा, महुआ और कालाजीरी इत्यादि अनुसन्धान करके उसमें लिखे । फिर उनके नाम, गुण-गुणका विचार और लक्षण लिखे, पच्चीस वर्गोंमें यह ग्रन्थ पूर्ण किया है, प्रथम कर्पूरादि वर्गमें ओषधियोंके नाम, और ब्राकट (कोष्ठ) में अनेक कोष निघण्टुओंसे उनके पर्याय, फिर प्रत्येक ओषधिका प्रसिद्ध संस्कृत नाम, पश्चात् हिन्दी, बगला, महाराष्ट्री, गुजराती, कर्णाटकी, तैलङ्गी, अंग्रेजी लैटिन, फारसी, अरबी, और कहीं कहीं ओत्तली, द्राविडी, तुसाई, ब्रह्मी, पंजाबी, तुर्की, फरहंगी, और यूनानी आदि भाषाओंमें नाम लिखे, फिर अनेक ग्रन्थोंसे उनके गुण, दोष, लक्षण, भेद, परीक्षा, स्वरूप और विवरण लिखा है, किसी किसी ओषधिकी मात्रा, व्यवहार, अनुपान, उत्पत्ति, शोधन और सेवन करनेकी भी विधि लिखी है ।

प्रथम कर्पूरादिवर्गमें सम्पूर्ण सुगन्धित द्रव्योंका विस्तारपूर्वक वर्णन ॥ १ ॥
दूसरे दरीतक्यादिवर्गमें, हरडमे आदि लेकर चूकपर्यंत ओषधियोंका वर्णन ॥ २ ॥

तीसरे गुडूच्यादिवर्गमें नागवल्ली, बिल्व, गम्भारी, पाटला, शालिपर्णी आदिका वर्णन ॥ ३ ॥

चौथे पुष्पवर्गमें चम्पा, चैवेली, मान्त्री, माधुरी और केतकी, इत्यादि पुष्पोंका धारण, सुगन्ध, औषाका वर्णन ॥ ४ ॥

पञ्चम फलवर्गमें आम, जामुनप्रभृति फलोंका वर्णन ॥ ५ ॥

छठे वटानिवर्गमें बड़, पीपल, पाकुर इत्यादि बड़े बड़े शाखीपुष्पोंका विस्तारसहित वर्णन ॥ ६ ॥

सातवें धातुपद्यातुवर्गमें सुवर्ण, चांदी, ताँबे इत्यादिसे लेकर शिलाजीत पर्यंतका वर्णन ॥ ७ ॥

आठवें रत्नोपपत्तवर्गमें वज्र, विट्टम, वैदूर्य, नीलमाण आदिका वर्णन ॥ ८ ॥

नवम विषवर्गमें मंत्रप्रकारके विषोंका विस्तारयुक्त वर्णन ॥ ९ ॥

दशवें धान्यवर्गमें शालिआदि अनेक प्रकारके उत्तमोत्तम धान्योंका वर्णन ॥ १० ॥

ग्यारहवें शाकवर्गमें वथुवा, कुल्हा, चूका, मरसा, चौलाई, पालक आदिका वर्णन ॥ ११ ॥

बारहवें वारिवर्गमें नदी, कूप, तडाग, वर्षा आदि सब प्रकारके पानीका वर्णन ॥ १२ ॥

तेरहवें दुग्धवर्गमें गाय, भैंस, बकरी इत्यादि सब प्रकारके दूधका वर्णन ॥ १३ ॥

चौदहवें दधिवर्गमें सब प्रकारके दधिका विस्तारसहित वर्णन ॥ १४ ॥

पन्द्रहवें तक्रवर्गमें सब प्रकारकी ऊँठ, भेड़का सम्पूर्ण वर्णन किया है ॥ १५ ॥

सोलहवें नवनीतवर्गमें मक्खन (नैनीधी) का भलीभाँति वर्णन किया है ॥ १६ ॥

सत्रहवें घृतवर्गमें सबप्रकारके घृतोंका भिन्न भिन्न वर्णन किया है ॥ १७ ॥

अठारहवें मृत्रवर्गमें, मनुष्य, हाथी, घोडा, बकरी आदिके मूत्रोंका सम्पूर्ण वर्णन ॥ १८ ॥

उन्नीसवें तैलवर्गमें तिल, सग्सों, लाही, इत्यादिके तैलका वर्णन ॥ १९ ॥

बीसवें अर्कवर्गमें सब ओषधियोंके अर्कोंके गुण दोष ॥ २० ॥

इक्कीसवें इक्षुवर्गमें सब प्रकारकी ईखोंका वर्णन ॥ २१ ॥

बाईसवें सन्धानवर्गमें सब प्रकारकी कौजी, अचार, सिरका मदिरा (शराव) आसवप्रभृतिका वर्णन ॥ २२ ॥

तेईसवें सख्यावर्गमें त्रिफला, त्रिकुटा, पञ्चवर्गादि औषधियोंका वर्णन ॥ २३ ॥

॥ इति पूर्वाह्न ॥

अथ उत्तरार्द्ध ।



चौथीसवें (प्रथम अनुपादि वर्ग) में अनुपदेश जागन देश और माधारण देशके लक्षण, ब्राह्मणभेद, क्षत्रियभेद, वैश्यभेद, शूद्रभेद इन चार क्षेत्राम उत्पन्न होनेवाली ओषधियोंके गुण, उन चार क्षेत्रोंके देवता, फिर पार्थिव, आप्य, तेजस, वायव्य, आन्तरिक्ष यह पांच प्रकारके क्षेत्रोंका वर्णन करके फिर उन पांचोंक्षेत्रोंमें उत्पन्नहोनेवाले द्रव्यके गुण, फिर उन क्षेत्रोंके देवता, फिर वृक्षोंकी उत्पत्ति, और ब्राह्मणादिक भेद, उनके देनेकी विधि, चारप्रकार से ओषधियोंका निर्णय, जगम, पार्थिव, औद्रिज्य द्रव्योंके पांच भेद, वृक्षोंकी स्त्री, पुरुष, नपुंसक जाति और उनके गुण, फिर वृक्षोंकी क्षुधा, पिपासा और निद्राका वर्णन, वृक्षादिकामें पञ्चमहाभूतात्मकत्व, फिर उन वृक्षोंके उपकारका वर्णन फिर उनके गर्भ और सन्तान होनेका वर्णन करके अभिन्यादि सत्ताईस २७ नक्षत्रवाले वृक्ष और जन्मनक्षत्रके वृक्षाका ओषधम त्यागना, फिर विंध्याचल और हिमालयकी ओषधियोंके गुण, ओषधियोंके छानेमें सुहृत्तका विचार, उनके उखाडनेकी विधि, मन, और समय, दृष्ट ओषधियोंका त्यागन, और श्रेष्ठ ओषधियोंके रखनेकी विधि, स्वभावमें हितकारी ओषधियोंका वर्णन, उनकी परीक्षा, उपयोगविरुद्ध ओषधि लेनेमें सकोश, प्रतिनिधि द्रव्यान्तर्गत पदार्थ, फिर मधुगादि रसोंका वर्णन, वीर्य, विपाक, प्रभाव, शक्ति इत्यादिका वर्णन ।

पच्चीसवें (दूसरे मिश्रवर्गमें) उत्थानकालनिर्णयादि-शाय पाँच और मल मार्गकी स्वच्छ रखनेके गुण, सुर्योदयमें पहले जलपीनेके गुण, नागिकासे जल पीनेके गुण, दहीन करनेकी विधि, दहीनमें वृक्षोंका निषेध, दहीन करनेके समय दिशाका निर्णय, किन किन रोगियोंको दहीनका निषेध, जिह्वाको घिसनेके गुण, चक्षुधावनविधि, गण्डूष (उल्ला) करनेका गुण, मुरामसालनगुण, अधन लगानेका गुण, किस किस रोगीको अधन न लगाना चाहिये, करीसे घाल स्वच्छ करनेका गुण, पगटी शिपर बांधनेके गुण, इमधु (दाटी मूत्र सौरभर्म और नख) कटानेके गुण, नाभके घाल उखाडनेके दोष, मातृकाल उठकर क्या देखना चाहिये, भगिने तापनेके गुण, भुर्ष और हिमकी सेवनके गुण, ओसके गुण, ब्रह्मके गुण, छत्री

लगानेके गुण, दृष्टिक गुण, आतपके गुण, छायाके गुण, लाठी धारणके गुण, व्यायाम (कसरत) करनेके गुण, अंगमर्दनके गुण, शरीर विसर्जनेके गुण, मार्ग चलनेके गुण, अत्यन्त भ्रमण करनेके गुण, पादुका धारण करनेके गुण, नगे पाव फिरनेके दोष, हाथी इत्यादिपर बैठनेके गुण, पाँव धोनेके गुण, पूर्व दिशाकी पवन (पूर्वाई) के गुण, अग्निकोणकी पवनके गुण, दक्षिण दिशाकी (दक्षिणी) पवनके गुण, नैऋत कोणकी पवनके गुण, पश्चिम दिशाकी (पछाहिया) पवनके गुण, वायव्यकोणकी पवनके गुण, उत्तर दिशाकी (पहाडी) पवनके गुण, ईशानकोणकी पवनके गुण, नीहारादि संयुक्त पवनके गुण, बबूलेके गुण, खजूरेके पखेकी पवनके गुण, ताड़, केला, वास, खस, मोरपख, बाल, बल्ल, और फूलोंके पखेकी पवनके गुण, ऋतुविशेषसे वायुके गुण, अभ्यग (पाँवोंमें तेल) मलनेके गुण, अभ्यग वाजित मनुष्य अवगाहनयुक्त तेलके गुण, तैलमर्दनकी विधि, शिरसे तेल मलनेके गुण, कानमें तेल डालनेके गुण, उबटन करनेके गुण, मुखमलेपके गुण, स्नानके गुण, गर्मजलसे स्नान करनेके गुण, आवले आदि शरीरसे मलकर स्नानकरनेके गुण, स्नानवाजित रोगी, किसरोगमें स्नान करना नहीं चाहिये, शरीरमार्जनके गुण, वस्त्र धारण करनेकी विधि, रत्नाभरण धारणके गुण, शुरु और देवतादिकके पूजनकी विधि, दर्पण देखनेके गुण, अनुलेपनके गुण, पुष्पादिधारण गुण, भोजनकी आदिमें लवणादि पदार्थ भक्षणके गुण, क्रमसे अन्नादिकोंके गुणोंकी विशेषता, आहार करनेके गुण, आहार करनेके समय दिशाका निर्णय, भोजनादि करनेका परिमाण, आचमनके गुण, भाजनक अन्तमें कर्तव्यता, भोजनके अन्तम शयनादिकके गुण, पान, सुपारी, इलायची आदि खानक गुण, अध्ययनादिकके गुण, बुद्धिके गुण, तत्काल प्राणकारक पट्टक, तत्काल प्राणहारक पट्टक, आयुके भेदसे स्त्रियोंकी बाल्यादि सप्ता, घालास्त्रीससर्गगुण, मैथुनकालनिर्णय, सन्तानोत्पत्तिनिर्णय, सुखपूर्वक सोने और उत्तम भोजनके गुण, पृथ्वी और खाटपर सोनेके गुण, चादनिके गुण, अन्धकारके गुण, मैथुनके गुण, निद्राके गुण, रात्रिमें जागने और दिनमें सोनेके गुण, हेमन्त, शिशिकृत्य, वसंतकृत्य, ग्रीष्मकृत्य, वर्षाकृत्य, शरत्कृत्य ॥

॥ इति उत्तरार्द्ध समाप्त ॥

परिशिष्टमें, मातृफल, समुद्रफल, रेवट्चर्निमि आदिलेकर अण्ड खरबूजेतक नवीन नवीन ओषधियोंका विस्तारपूर्वक वर्णन लिखा है ।

जिन जिन ग्रन्थोंसे यह निघण्डुसूचण समझ किया है उनके चित्र एक एक अक्षरसे लिखे हैं, अब वैद्यजनोंके जाननेके लिये उन ग्रन्थोंके पूरे नामभी लिखता हूँ ।

नि० २० निघण्डुखनाकर
रा० नि० राजनिघण्डु
म० नि० मदनपालनिघण्डु
म० वि० मदनविनोद
रा० व० राजवल्लभ
ग० नि० गणनिघण्डु
सो० नि० सोढलनिघण्डु
आ० सं० आश्रयसहिता
च० नि० चट्टिकानिघण्डु
भै० चि० भैषज्यचिन्तामणि
सु० स० सुश्रुतसहिता
च० स० चरकसहिता ।

भा० प्र० भावप्रकाश
वे० नि० वैद्यकनिघण्डु
ध० नि० धन्वंतरिनिघण्डु
वि० ति० भा० विकारतिमिरभास्वर
के० दे० केपदेव
नि० चू० निघण्डुचूडामणि
लकेश० अर्कप्रकाश
ड० मि० दहनमिश्र
२० च० रसचन्द्रिका
२० स० गमेन्द्रसारसमग्र
नि० स० निघण्डुसमग्र

और जिस परिश्रमसे पृष्ठोंके चित्र एकत्र किये मेरा ही जी जानता है, मेरी इच्छा तो यह थी कि, जिस जिस पृष्ठमें द्रव्योंके नाम गुण हैं, वही २ पृष्ठोंके चित्रभी होने चाहिये, परन्तु चित्रोंके बनानेमें विलम्ब होनेके कारण चित्र पकड़ी जगद लगाये गये हैं ।

अब सब आयुर्वेदरसरसिकोंसे मेरी यह प्रार्थना है कि, इस परिश्रमका ध्यान कर कि, मैंने इस ग्रन्थके लिये कितना परिश्रम किया, इस बातको वैद्यलोग ही परिचानगे, सैकड़ों पुस्तकें देश देशान्तरोंसे ससृत, भ्रमेभी, भरयी, फारसी, गुजराती, महाराष्टी, बंगाली इत्यादियों में आई, उनमेंसे एक एक शब्द छूट छूटकर निकाला तब यह ग्रन्थ रचागया, जब यह ग्रन्थ पूरा हुआ तो "शालिग्रामनिघण्डुसूचण" इसका नाम रखला । और वैद्यजनोंके दिशार्थ इस निघण्डुको श्रीमात्र वैद्यगुरुदिशार, सकलगुणमाण्डागार, परमोदार, गोमाद्यणदिगकारी, मत्पत्रतपारी, सर्वविद्याविमृषित, श्रीमद्रत्ना

कासन्निकट मुम्बईपत्तननिवासी श्रीयुतश्रेष्ठिखेमराज श्रीकृष्णदासजीको पूर्णप्रतापी जानकर मैंने यह "शालिग्रामनिघण्टुभूषण" उनको समर्पण किया, और उनको कोटिशः वन्यवाद है कि, जिन्होंने अपना धन व्यय करके इस "शालिग्रामनिघण्टुभूषण" को अपने जगद्विख्यात "श्रीवेंकटेश्वर" (स्टीम्) यशालयमें मुद्रितकरके मेरा नाम प्रसिद्ध किया, मेरे परिश्रमको देखकर गुणीजन अवश्य मेरे गुणकी स्लाघा करेंगे, यह मुझे पूर्ण विश्वास है, और दुष्टजन अपना नीचपना पगट करेंहीगे, यहभी मुझे दृढ आशा है, जब सज्जनोंकी कृपादृष्टि मेरे ऊपर है तो दुर्जन मेरा क्या करसक्ते हैं ।

इति प्रथमावृत्ति भूमिका ।

वि० सन् १९९३
आपादपूर्णमाया भगौ ।

आपका कृपाभिलाषी—
आयुर्वेदोद्धारक-शालिग्रामवैश्य,
मुरादाबाद

श्रीः ।

द्वितीयवारकी भूमिका.

औपधिशाल आयुर्वेदशास्त्र ग्रन्थ अंग और वैद्यकशास्त्र प्रथम आवश्यकीय विषय है क्योंकि सम्पूर्ण क्रियाकर्मोंकी मूल चिकित्साई और चिकित्साकी मूल औपधिशाल अर्थात् निष्पत्ति इसी कारण सर्वत्र लिखाई कि—“विना निष्पत्तिके वैद्य नहीं होता है” जो वैद्य केवल रोगकेही ज्ञानको जानतेई औपधिकल्पको नहीं जानते उनकी सत्तारमें कदापि प्रतिष्ठा नहीं होती । और न वह वैद्यके योग्यही कहे जासके हैं । हमारे पूर्वज महीषासने संसारके उपकारके लिये अनेक प्रकारके औपधिशालके ग्रन्थ निर्माण किये । अनुमान आठगो वष पूर्व उन समस्त आर्यग्रन्थोंके पढ़नेका इस देशमें अधिकतासे प्रचार था पश्चात् बारबार मुसलमानवशाहोंके चढ़नेपर सब विद्याओंकी अवनातिके साथ आयुर्वेदीय चिकित्साकी भी अवनाति होती गई और आयुर्वेदीय चिकित्साकी अवनाति होनेसे सम्पूर्ण औपधिशालके ग्रन्थोंके पठन पाठन और औपधिशिक्षाका एकमात्र प्रचार उठसा गया । यदातक आयुर्वेदाय चिकित्साकी दुर्दशा हुई कि, आजतक भी हमारे देशकी उत्पन्न हुई और हमारी प्रकृतिके अनुकूल सुलभ औपधिय भी हमको ठीक ठीक प्राप्त नहीं होती । बड़े कष्टका विषयई कि—पूनाजी और डाउदरी विदेशी औपधि होनेपर भी भारतके प्रत्येक प्रदेश, जिले, कसबे और गांवोंमें सुगमतासे प्राप्त होजातीई और आयुर्वेदीय औपधिय हमारी कदलानेपर भी हमको ठीक ठीक किसी म्यानपर भी नहीं मिलती । यदि किसी पतागति पूछते ई कि, तुम्हारे पास अमुक औपधि ई ? तब प्रथम तो वह नहीं कहतेई और जो यही विशेष खोज करनेसे एक दो मिल भी गई तो गली, सडी वषोंकी पडाईई देंगी ।

इत्यादि उपर्युक्त आयुर्वेदीय चिकित्साकी जो दुर्दशा हुई उगकी बारबार लिखनकी यहा आवश्यकता नहींई किन्तु इतना अवश्य कहेंगे कि, आयुर्वेदीय चिकित्साकी इसप्रकार अवनाति होनेपर तुम्हारी वडापि उन्नति नहीं होगी । क्योंकि यह बात अच्छे प्रकारमें सिद्ध होचुकी ई कि, हमारे लिये हमारेही देशकी औपधि साम्य होगतीई ।

उपर्युक्त सम्पूर्ण दुर्दशाका केवल अविद्याका प्रभाव देखपटताई यद्यपि इस नवीन जगत्में आविष्कारमें कुछ कुछ आयुर्वेदीय चिकित्सा और

औपधिशस्त्रकी उन्नति हुई है किन्तु जितनी उन्नतिकी आवश्यकता है उसका सोलहवा भाग नहीं है । यद्यपि अनेक स्थानोंमें चरक, सुश्रुत, वाग्भट, भावप्रकाश, हारीत, अत्रि, यन्वन्तरि आदि ग्रन्थोंमें निघण्टुखंड छप-चुका है तथा मदनपाल, राजनिघण्टु, घन्वतरिनिघण्टु, शौटलनिघण्टु, निघण्टुशिरोमणि आदि कितनेक निघण्टुके स्वतंत्र ग्रन्थ भी छपचुके हैं किन्तु ऐसा ग्रंथ कहीं भी नहीं छपा कि, जिस एकही ग्रन्थसे सम्पूर्ण औपधियोंके गुण दोष लक्षण परीक्षा विवरणादि पूरी पहचान मालूम होजाय । इसी अभावको दूर करनेके लिये प्रायः सम्पूर्ण अर्वाचीन और प्राचीन द्रव्य गुण, कोष और निघण्टुओंका सार लेकर लाला शालिग्रामजीने यह "शालिग्रामनिघण्टुभूषण" निर्माण करा है । इस इकले ग्रन्थसेही समस्त आयुर्वेदीय औपधियोंका अच्छे प्रकारसे अनुभव हो सकता है । यद्यपि लालाजीने इस ग्रन्थको सर्वांगसुन्दर और सम्पूर्ण विषयोंसे परिपूर्ण लिखा है किन्तु उनकी इच्छानुसार इसमें कितनी एक त्रुटि रह गई थीं सो अबकीवार लालाजीकी आज्ञानुसार वह सब त्रुटिया पूर्ण कर दी गई हैं ।

इस आवृत्तिमें वनप्ता, आलू, गोभी, फूलगोभी, पत्रगोभी, गाठगोभी, गुलेबनप्ता, झाऊ, झिल, देशीवादाम आदि अनुमान २०-२५ अर्वाचीन औपधियोंके गुण दोष, विवरण आदि सस्कृत श्लोक और भाषा बनाकर लिख दी गई हैं । पहली बारमें सम्पूर्ण औपधियोंके विवरण विस्तारपूर्वक नहीं लिखे गये थे सो अबकीवार अनुमान ३००-४०० औपधियोंके विशेष विवरण परिवर्द्धित कर दिये गये हैं । इसके अतिरिक्त २०० चित्र औपधियोंके बढा दिये हैं । तथा अकारादि क्रमकी वगला, मराठी और गुजगती यह तीन अनुक्रमणिका पाठकोंके सुभीतेके लिये विशेष लगा दी गई हैं । इसमें प्रमादके वश अथवा अल्पज्ञतासे जो त्रुटि रह गई हों उनको पाठक महाशय क्षमा करें अथवा पत्रद्वारा लिखकर भेज देंगे तो आगामी आवृत्तिमें ठीक कर दी जायेंगी ।

इति द्वितीयावृत्तिभूमिका ।

तारीख-४-४-१९०४

मवदीय-वृषाकाक्षी-

वैद्य-शंकरलाल हरिश्चक्र,
"आयुर्वेदोद्धारक-कार्यालय"

मुगदा नाद

तीसरीवारकी भूमिका.

पाठक महाशयोंकी गुणप्राप्तिनासे इसका तीसरा संस्करणभी शीघ्र होगया । शीघ्रताके कारण अवकीवार कोई विशेष परिवर्तन नहीं किया जासका, तथापि प्राहकोंके सतोषार्थ इस बार भी कुछ न कुछ अवश्य नवीन सशोधन कियागयाहै । पहले और दूसरे संस्करणोंमें वनीपधियोंके सब चित्र ग्रन्थकी आदिमें एकत्र लगाये गयेये, प्रत्येक औपधिके चित्रकी अलग अलग दृष्टनेमें तब बहुत देरलगतीथी । अन्तीवार इसी दिफाउको दूर कर नेके लिये प्रत्येक औपधिका चित्र उसके विवरणके साथ यथास्थानमें लगादियागयाहै तथा दूसरे संस्करणकी अशुद्धियोंकाभी यथासाध्य सशोधन कियागयाहै ।

तागीख १ मई सन् १९१२

भयदीप-रूपारंक्षी-
 बैद्य-गुरुलाल हरिशकर
 "आयुर्वेदोदात्त-शार्ङ्गोदय"
 मुगदाबाद U P

श्रीः ।

आयुर्वेदोद्धारक वनौषधालय.

हमने सर्वसाधारणके सुभीतेके लिये बहुतसा द्रव्य खर्च करके बड़े परिश्रमसे अनेक देश, वन, पर्वत और जगलकी बहुतसी दिव्य और दुष्प्राप्य वनौषधियोंको मँगाकर अपने औषधालयमें रखीहैं जैसे—ब्रह्मी, शखपुष्पी, शिर्षालगी, पातालगरुडी, देवदाली, अपराजिता, विद्युक्ताता, अशोक, मुँइआमला, विदारीकद, वाराहीकद, मूर्वा, कालाभांगरा, कालाघटूरा इत्यादि सब प्रकारकी हरी और सूखी औषधि मिलसक्तीहैं। जिस किसी महाशयको किसी जडी बूटीकी आवश्यकता हो उसका खुलासा नाम देश-भाषामें अथवा सस्कृतभाषामें लिखभेजे तो औषधि तत्काल भेजदीजायगी। किन्तु यह अच्छे प्रकारसे स्मरण रहै कि, एक रुपयेसे कम मूल्यकी कोईभी वनौषधि नहीं भेजीजाती।

इसके अतिरिक्त इस औषधालयमें प्रायः सब प्रकारके रोगोंकी शास्त्रोक्त विधिसे बनाई हुई और लालाशालिग्रामजी तथा हमारी बारबार परीक्षा की-हुई औषधियाँ भी विक्रीके लिये सदैव तैयार रहती हैं। जैसे—रस, धातु, सुवर्ण, रौप्य, ताम्र, वग, अभ्रक, हरिताल, नाग, लोह, मङ्गर, मौक्तिक, प्रवाल, मकरध्वज, चन्द्रोदय, स्वर्णसिन्दूरप्रभृति रसायन तथा चूर्ण, गुटिका, बटी, अवलेह, पाक, मोदक, आसव, आिष्ट, पाचन, कपाप, तेल, घृत, गूगल आदि समस्त औषधिय उचित मूल्यसे मिलसक्तीहैं। अधिक माल मँगानेवालोंको और वैद्यलोगको विशेष कमीशन दियाजाताहै। आध आनेका टिकट भेजकर औषधान्त्यके नियम और सूचीपत्र मँगाकर देखो।

पता—वैद्य—शङ्करलाल हरिशकर

आयुर्वेदोद्धारक-औषधालय

मुरादाबाद नृ पी

शत शत प्रशंसापत्रप्राप्त

अग्नी प्रकाशक यान गेमोकी द्दमाप औरि ।

महा नारायण तैल

नारायण नाम महच्च तैल वातामये वेद्यवरण योज्यम् ।
नारायणोक्तं सुरवृहणार्थं नारायण तेन वदन्ति तज्ज्ञा ॥

इस तैलके सेवन करनेसे सम्पूर्ण शरीरकी पीडा, लकवा, आधेनरीका
रहजाना, एक हाथका रहजाना, एक पावका रहजाना, निरन्तर शरीरका
कापना, घीवाका रहजाना, टोडीका जवटजाना, कमरकी पीडा, संधिवात
(जोड़ोंकी पीडा) कुचगपन, ललापन, निन्हाकी जटता, हाथ पावका
कापना, जिरकी पीडा, घुटनोंकी पीडा, अर्दितरोग, पुरानीसे पुरानी गुग्ग
(वरम) चोटकी पीडा और सब प्रकारके वात रोग नष्ट होते हैं । जो वात
रोग किसी औषधिसे आरोग्यनहीं होते वह इससे निश्चय आरोग्य होजाते हैं ।
मू० २० चोटेकी सीसीका २) रु० डा० म० ॥) आ०

हमारा महानारायण तैल सिर्फ इती देशमें प्रसिद्ध है ऐसा नहीं बल्कि
इसका प्रचार सम्पूर्ण हिन्दोस्थान, आगाम, बर्मा, सीप्पोन और आफ्रिका
आदिदेशोंमें भी दिनोदिन घटता जाता है । हमारे पास हजारों सार्थकिकट
मौजूद हैं ।

TAI LIA SHANKEE LEE HAFI SHANKEE
ATCPVEDOI HAKAN
Lodrai Ha
S. PADALAT U P

पता—बैद्य राधवल्लभ हरिश्चन्द्र
आधुनिक—औषधालय,
मुम्बईवाड मू पी

श्रीः ।
शालिग्रामनिघण्टुकी-
विषयानुक्रमणिका ।



| विषय | पृष्ठांक | विषय | पृष्ठांक |
|-------------------------------|----------|-------------------|----------|
| कर्पूरादिषर्गः । | | चन्दनलक्षणम् | १६ |
| यपूरनामानि | १ | चन्दनगुणा | " |
| कर्पूरगुणा | २ | चन्दनभेदा | १८ |
| कर्पूरलक्षणम् | ३ | षेष्टचन्दनगुणा | " |
| पोतास-भीमसेनी-धरास-कर्पूरगुणा | ४ | मुक्तादिचन्दनगुणा | " |
| शंकरावास-कर्पूरगुणा | " | शम्बरचन्दननामानि | " |
| हिमकर्पूरगुणा | ५ | शम्बरचन्दनगुणा | १९ |
| उदयभास्वरकर्पूरगुणा | " | पीतचन्दननामानि | " |
| पणकपर्पूरगुणा | " | पीतचन्दनगुणा | " |
| चीनकर्पूरनामानि | " | रक्तचन्दननामानि | " |
| चीनकर्पूरगुणा | ६ | रक्तचन्दनगुणा | २० |
| कस्तूरीनामानि | " | पतंगनामानि | " |
| कस्तूरीभेदा | ७ | पतंगगुणा | २१ |
| कस्तूरीपञ्चभेदा | " | बधिरनामानि | " |
| कस्तूरीपरीक्षा | ८ | बधिरचन्दनगुणा | २२ |
| कस्तूरिकामृगलक्षणम् | ९ | हरिचन्दननामानि | " |
| दुष्टकस्तूरीलक्षणम् | " | हरिचन्दनगुणा | " |
| दुष्टकस्तूरीपरीक्षा | " | भगरुनामानि | २३ |
| कस्तूरीगुणा | १० | भगरुगुणा | २४ |
| गन्धमार्जारवीर्यम् | ११ | कृष्णागरुनामानि | " |
| लताकस्तूरीगुणा | " | कृष्णागरुगुणा | " |
| कुङ्कुमनामानि | १२ | वाष्ठागरुगुणा | " |
| कुङ्कुमभेदा | १३ | दाह्यगरुनामानि | २५ |
| कुङ्कुमलक्षणम् | " | दाह्यगरुगुणा | " |
| कुङ्कुमगुणा | १४ | मङ्गलागरुनामानि | " |
| वृणकुङ्कुमनामानि | १५ | मङ्गलागरुगुणा | " |
| वृणकुङ्कुमगुणा | " | देवदारुनामानि | " |
| चन्दननामानि | " | देवदारुगुणा | २६ |
| | | देवदारुभेदा | " |

| विषय | पृष्ठां | विषय | पृष्ठां |
|---------------------------|---------|-----------------|---------|
| स्निग्धगुणा | २६ | जातीरग्वैरगुणा | ४३ |
| याष्ठदागुणा | २७ | जातीपरानामानि | " |
| घाढानामानि | " | जातीपत्रीगुणा | ४८ |
| घाढागुणा | " | स्पृष्टानामानि | ४९ |
| खरगनामानि | " | स्पृष्टगुणा | " |
| खरलगुणा | २८ | सुस्त्रीगानानि | ५० |
| तगरनामानि | २९ | सु-मेलगुणा | " ५१ |
| तगरगुणा | " | दिविधेनागुणा | " ५२ |
| पद्मनामानि | ३० | वद्वोलनामानि | " |
| पद्मगुणा | ३१ | वकोलगुणा | ५३ |
| गुग्गुलुनामानि | " | नागकेसरनामानि | ५४ |
| गुग्गुलो मकारभेदकक्षलगुणा | ३२ | नागवेसरगुणा | " |
| गुग्गुलुगुणा | ३३ | रघुगुलुगुणा | ५५ |
| गुग्गुलोपति | ३४ | दाहसितगुणा | ५६ |
| गुग्गुलोपरीक्षा | " | रघुगुलुगुणा | ५७ |
| भस्मसोधनविधि | " | मेनपवनामानि | ५८ |
| गंधराजगुग्गुलुनामानि | ३५ | मेनपवगुणा | " |
| गंधराजगुग्गुलुगुणा | ३६ | सा-सपत्रनामानि | ५९ |
| भूमिजगुग्गुलुनामानि | " | सादीसपत्रगुणा | ६० |
| भूमिजगुग्गुलुगुणा | " | जटामांसीनामानि | ६१ |
| राजनामानि | " | गंधमांसीनामानि | " |
| राजगुणा | ३७ | आयागमांसीनामानि | " |
| राजतैलगुणा | ३८ | जटामांसीगुणा | ६२ |
| र-पुननामानि | " | गन्धमांसीगुणा | ६३ |
| र-पुनगुणा | ३९ | भारागमांसीगुणा | " |
| श्रीयासनामानि | ४० | मिषंगुणामानि | ६४ |
| श्रीयासगुणा | ४१ | मिषगुणा | ६५ |
| श्रीयासगुणा | " | मिषगुणा | ६६ |
| श्रीयासगुणा | ४२ | भस्मगुण-मिषगुणा | ६७ |
| सिंहगुणा | " | उशीरनामानि | " |
| सिंहगुणा | ४३ | उशीरगुणा | ६८ |
| सुपगनामानि | ४४ | गोरोचनामानि | " |
| सुपगगुणा | " | गोरोचनागुणा | ६९ |
| सुपगगुणा | ४५ | मसनामानि | " |
| सुपगगुणा | ४६ | मसगुणा | ७० |
| जातीरगुणा | " | मसगुणा | ७१ |
| जातीरगुणा | ४७ | मसगुणा | ७२ |
| जातीरगुणा | " | मसगुणा | ७३ |
| जातीरगुणा | ४८ | मसगुणा | ७४ |
| जातीरगुणा | " | मसगुणा | ७५ |
| जातीरगुणा | ४९ | मसगुणा | ७६ |
| जातीरगुणा | " | मसगुणा | ७७ |
| जातीरगुणा | ५० | मसगुणा | ७८ |
| जातीरगुणा | " | मसगुणा | ७९ |
| जातीरगुणा | ५१ | मसगुणा | ८० |
| जातीरगुणा | " | मसगुणा | ८१ |
| जातीरगुणा | ५२ | मसगुणा | ८२ |
| जातीरगुणा | " | मसगुणा | ८३ |
| जातीरगुणा | ५३ | मसगुणा | ८४ |
| जातीरगुणा | " | मसगुणा | ८५ |
| जातीरगुणा | ५४ | मसगुणा | ८६ |
| जातीरगुणा | " | मसगुणा | ८७ |
| जातीरगुणा | ५५ | मसगुणा | ८८ |
| जातीरगुणा | " | मसगुणा | ८९ |
| जातीरगुणा | ५६ | मसगुणा | ९० |
| जातीरगुणा | " | मसगुणा | ९१ |
| जातीरगुणा | ५७ | मसगुणा | ९२ |
| जातीरगुणा | " | मसगुणा | ९३ |
| जातीरगुणा | ५८ | मसगुणा | ९४ |
| जातीरगुणा | " | मसगुणा | ९५ |
| जातीरगुणा | ५९ | मसगुणा | ९६ |
| जातीरगुणा | " | मसगुणा | ९७ |
| जातीरगुणा | ६० | मसगुणा | ९८ |
| जातीरगुणा | " | मसगुणा | ९९ |
| जातीरगुणा | ६१ | मसगुणा | १०० |

| विषय | पृष्ठांक | विषय | पृष्ठांक |
|----------------------|----------|---------------------------------|----------|
| नखशुद्धि | ७० | सुरागुणा | ८६ |
| द्विविधनखगुणा | ७१ | लामज्जकनामानि | ८७ |
| नखगुणा | " | श्रेष्ठलामज्जकलक्षणम् | ८७ |
| व्याघ्रनखगुणा | " | लामज्जकगुणा | ८७ |
| द्विविधनखगुणा | " | स्पृक्षानामानि | ८८ |
| वालकनामानि | ७२ | स्पृक्षागुणा | ८८ |
| वालकगुणा | " | एलावालुकनामानि | ८९ |
| मुस्तकनामानि | ७३ | एलावालुकगुणा | ८९ |
| नागरमुस्तकनामानि | " | प्रपौण्डरीकनामानि | ९० |
| भद्रमुस्तकनामानि | ७४ | प्रपौण्डरीगुणा | ९१ |
| श्रेष्ठमुस्तकलक्षणम् | " | पपटीनामानि | ९१ |
| श्रेष्ठमुस्तकशुद्धि | " | पपटीगुणा | ९२ |
| भद्रमुस्तकगुणा | ७५ | नलिकानामानि | " |
| मुस्तकगुणा | " | नलिकागुणा | ९३ |
| नागरमुस्तकगुणा | " | पुदिनानामानि | " |
| भद्रमुस्तकगुणा | " | पुदिनागुणा | ९४ |
| कवचकमुस्तकनामानि | ७६ | हरीतक्यादिवर्गः । | |
| कवचकमुस्तकगुणा | " | | |
| शैलेयनामानि | ७७ | हरीतकीनामानि | ९५ |
| शैलेयगुणा | " | हरीतकीमत्तधा | ९७ |
| रेणुकानामानि | ७८ | सातंकेपृथक्पृथक्लक्षण | " |
| रेणुकागुणा | " | जन्मस्थान | " |
| ग्रन्थिपणनामानि | ७९ | सातंकेभिन्नभिन्नप्रयोग | " |
| ग्रन्थिपर्णलक्षणम् | " | दोमरारकीचैतकीहरइकास्वरूप | ९८ |
| ग्रन्थिपणगुणा | " | सर्वप्ररारकीहरइकेरेचनगुण | " |
| स्थौणैयकनामानि | ८० | चैतकीहरइकेरेचनगुण | " |
| स्थौणैयकगुणा | " | विमयाहरइमीमशशा | ९९ |
| चोरकनामानि | " | हरीतकीगुणा | " |
| चोरकगुणा | ८१ | हरीतक्या पञ्चरत्नावस्थितिनिर्णय | १०१ |
| कुष्ठनामानि | " | श्रेष्ठहरीतकीलक्षणम् | " |
| कुष्ठगुणा | " | चर्वितादिहरीतकीगुणा | " |
| चूर्णनामानि | ८३ | भक्तान्वितहरीतकीगुणा | १०२ |
| चूर्णगुणा | " | मुक्तोपरिखेचितहरीतकीगुणा | " |
| गन्धपलाशीनामानि | ८४ | हरीतक्याविशेषगुणाः | " |
| गन्धपलाशीगुणा | ८५ | ऋतुहरीतकीगुणा | " |
| सुरानामानि | ८६ | हरीतक्या श्रेष्ठगुणत्वम् | " |

| विषय | पृष्ठांश | विषय | पृष्ठांश |
|--------------------------|----------|----------------------|----------|
| अपद्रव्यपुक्तदरीतर्ही | १०३ | रक्तचित्रगुणा | १३५ |
| दरीतर्हीस्यननिषेध | " | वृष्णचित्रगुणा | " |
| दरीतर्हीशब्दस्यनिष्पत्ति | १०४ | शतपुष्पानामानि | १३६ |
| दरीतर्हीषोजगुणा | " | शतपुष्पागुणा | " १३७ |
| विभीतर्हीनामानि | " | शतपुष्पाशक्ति | " |
| विभीतर्हीगुणा | १०५ | मधुरिषानामानि | " |
| आमलर्हीनामानि | १०७ | मधुरिषागुणा | १३८ |
| आमलर्हीगुणा | १०८ | मधुरिषाजलगुणा | १३९ |
| शुष्कामलर्हीगुणा | " | मधिकानामानि | " |
| शुष्कामलर्हीमज्जागुणा | १०९ | मधिरागुणा | १४० |
| शुष्कीनामानि | " | चन्द्रशान्नामानि | १४१ |
| शुष्कीगुणा | ११० | चन्द्रशूरगुणा | १४२ |
| आर्द्रवनामानि | १११ | यवानीनामानि | " |
| आर्द्रवगुणा | ११२ | यवानीगुणा | १४३ |
| द्रव्यगुणा | ११३ | अजमोदानामानि | १४४ |
| निषेध | " | अजमोदागुणा | १४५ |
| मरिचनामानि | ११४ | पारसीनामोदानामानि | १४६ |
| सितमरिचनामानि | " | पारसीनामोदागुणा | " |
| मरिचगुणा | ११५ | सुरासानीपयानीनामानि | " |
| सितमरिचगुणा | " | सुरासानीपयानीगुणा | १४७ |
| अन्येष्वमरिचगुणा | " | साधारणजीरणांशनामानि | १४८ |
| पिप्पलीनामानि | ११६ | गौरजीरणांशनामानि | १४९ |
| पिप्पलीगुणा | ११७ | खामाजीरणांशगुणा | " |
| पिप्पलीगुणांशनामानि | ११८ | श्वेतजीरणांशगुणा | " |
| पिप्पलीगुणागुणा | ११९ | कृष्णजीरणांशनामानि | १५० |
| अयिषानामानि | " | कृष्णजीरणांशगुणा | १५१ |
| अयिषागुणा | १२० | पीतजीरणांशगुणा | " |
| गजपिप्पलीनामानि | १२१ | टिगिषजीरणांशगुणा | " |
| गजपिप्पलीगुणा | " | रघुपुत्रीरणांशनामानि | १५२ |
| खट्वीपिप्पलीनामानि | १२२ | रघुपुत्रीरणांशगुणा | " |
| खट्वीपिप्पलीगुणा | " | विश्विषाजीरणांशगुणा | १५३ |
| यनपिप्पलीनामानि | " | अरुणजीरणांशनामानि | " |
| यनपिप्पलीगुणा | १२३ | अरुणजीरणांशगुणा | " |
| मर्कटविषागुणा | " | ध्यायनामानि | १५४ |
| विषागुणा | " | ध्यायगुणा | १५५ |
| रसायननामानि | " | दिकुनामानि | " |
| विषगुणा | १२४ | दिग्गुणा | १५६ |

| विषय | पृष्ठांक | विषय | पृष्ठांक |
|-------------------------|----------|-------------------------------|----------|
| हिंगुशोधनविधि | १४७ | ऋषभकनामानि | १६४ |
| हिंगुपत्रीनामानि | १४८ | ऋषभकगुणा | १७ |
| हिंगुपत्रीगुणा | १४ | जीवकषभकगुणा | १६५ |
| नाडीहिंगुनामानि | १४९ | जीवरूपभकस्वरूपम् | १७ |
| नाडीहिंगुगुणा | १४९ | मेदानामानि | १७ |
| वचानामानि | १५० | मेदागुणा | १७ |
| पारसीकवचानामानि | १५० | मेदालक्षणम् | १६६ |
| वचागुणा | १५१ | महामेदानामानि | १७ |
| शुक्रवचागुणा | १५१ | महामेदागुणा | १७ |
| महाभरीवचागुणा | १५१ | महामेदामेदागुणा | १७ |
| वचाद्रुतगुणा | १५२ | महामेदालक्षणम् | १६७ |
| कुलिजननामानि | १५२ | ऋद्धिनामानि | १७ |
| कुलिजनगुणा | १५३ | ऋद्धिगुणा | १७ |
| चोपचीन्युत्पत्तिलक्षणम् | १५३ | वृद्धिनामानि | १६८ |
| चोपचीनीगुणा | १५४ | वृद्धिगुणा | १७ |
| निषेध | १५५ | ऋद्धिवृद्ध्युत्पत्तिलक्षणम् | १७ |
| चोपचीनीलक्षणम् | १५५ | काकोलीनामानि | १७ |
| आकारकरभनामानि | १५५ | काकोलीगुणा | १७ |
| आकारकरभगुणा | १५६ | क्षीरकाकोलीनामानि | १६९ |
| हृषुषानामानि | १५६ | क्षीरकाकोलीगुणा | १७ |
| हृषुषगुणा | १५६ | द्विविधकाकोलीगुणा | १७ |
| स्वल्पहृषुषगुणा | १५७ | काकोलीक्षीरकाकोलीरूपोत्पत्ति- | |
| विडगनामानि | १५७ | लक्षणम् | १७० |
| विडगगुणा | १५७ | अष्टवर्गनामानि | १७ |
| शुम्भुरनामानि | १५८ | अष्टवर्गगुणा | १७ |
| शुम्भुरगुणा | १५८ | एतस्यप्रतिनिधीनाह | १७१ |
| वशरोचननामानि | १५९ | यष्टीमधुनामानि | १७ |
| वशरोचनगुणा | १६० | यष्टीमधुगुणा | १७२ |
| तद्यक्षीरनामानि | १६० | जलयष्टवगुणा | १७३ |
| तद्यक्षीरगुणा | १६१ | वम्पिष्ठनामानि | १७ |
| समुद्रफेननामानि | १६२ | वम्पिष्ठगुणा | १७४ |
| समुद्रफेनगुणा | १६२ | आरग्वधनामानि | १७५ |
| | | आरग्वधगुणा | १७६ |
| अष्टवर्गः । | | आरग्वधफलगुणा | १७ |
| जीवधनामानि | १६३ | अस्पपत्रगुणा | १७ |
| जीवधगुणा | १६३ | आरग्वधपुष्पगुणा | १७ |
| जीवरूपम् | १६४ | आरग्वधमज्जागुणा | १७७ |

| विषय | पृष्ठांक | विषय | पृष्ठांक |
|-----------------------|----------|------------------------|----------|
| भारुपधनल्लगुणा | १७७ | यदृक्पद्मनामानि | १७७ |
| यणिकारगुणा | " | यदृक्फलगुणा | १७८ |
| यदृक्कानामानि | " | भोगीनामानि | १७९ |
| यदृक्कगुणा | १७९ | भोगीगुणा | " |
| यदृक्कशोधनविधि | " | भोगीपद्मगुणा | १८० |
| स्थिरतिक्तनामानि | " | वापाणभेदनामानि | " |
| नेपालनिम्बनामानि | १८० | वापाणभेदगुणा | १८१ |
| भुनिम्बगुणा | " | सुद्रवापाणभेदगुणा | " |
| नेपालनिम्बगुणा | १८१ | धातवीनामानि | " |
| पुटननामानि | " | धातवीगुणा | १८२ |
| पुटनगुणा | १८२ | मनिष्ठानामानि | १८३ |
| श्वेतपुटनगुणा | " | मजिष्ठगुणा | १८४ |
| कुटनपुष्पगुणा | " | मजिष्ठरायगुणा | १८५ |
| पुटनशिशिराक्षगुणा | १८३ | कुसुम्भनामानि | " |
| अन्यशारवगुणा | " | कुसुम्भगुणा | १८६ |
| इन्द्रययनामानि | " | कुसुम्भपुष्पगुणा | " |
| इन्द्रययगुणा | " | कुसुम्भपद्मरायगुणा | " |
| मदनपल्लनामानि | १८४ | कुसुम्भर्षाजगुणा | १८७ |
| मदनपल्लगुणा | १८५ | कुसुम्भतैलगुणा | " |
| रत्ननामानि | १८६ | लाक्षानामानि | " |
| रत्नवापःप्रसारभेदा... | १८७ | लाक्षगुणा | १८८ |
| रत्नगुणा | " | भालकयगुणा | " |
| नागुलीनामानि | १८८ | हृदिनामानि | १८९ |
| नागुलीगुणा | १८९ | हृदिगुणा | १९० |
| माक्षिकानामानि | १९० | यदृक्हृदिनामानि | " |
| माक्षिकागुणा | " | यदृक्हृदिगुणा | १९१ |
| तैजोयसीनामानि | " | यनहृदिनामानि | " |
| तैजोयसीगुणा | १९१ | यनहृदिगुणा | १९२ |
| अपोतिमर्षानामानि | " | दाहहृदिनामानि | " |
| महाअपोतिमर्षानामानि | १९२ | दाहहृदिगुणा | १९३ |
| अपोतिमर्षगुणा | " | दाह्यापथोदयलक्षणनामानि | " |
| पुष्पस्मृत्तनामानि | १९३ | अस्यायगुणा | १९४ |
| पुष्पस्मृत्तगुणा | १९४ | अस्यागुणा | " |
| अणुर्षादीनामानि | " | अणुर्षाशोधनविधि | " |
| अणुर्षादीगुणा | १९५ | आतृर्षानामानि | १९६ |
| अणुर्षादीगुणा | १९६ | आतृर्षागुणा | १९७ |
| अणुर्षादीगुणा | " | आतृर्षादीगुणा | " |
| अणुर्षादीगुणा | १९७ | आतृर्षादीगुणा | " |

| विषय | पृष्ठांक | विषय | पृष्ठांक |
|----------------------|----------|-------------------|----------|
| चक्रमर्दनामानि | २१७ | सैन्धवगुणा | २३९ |
| चक्रमर्दगुणा | " | साम्भारीलवणनामानि | " |
| अतिविषानामानि | २१९ | साम्भारीलवणगुणा | २४० |
| अतिविषगुणा | " | समुद्रलवणनामानि | " |
| अतिविषाप्रकारभेदा | २२० | समुद्रलवणगुणा | " |
| लोध्रनामानि | " | विङ्गलवणनामानि | २४१ |
| लोध्रगुणा | २२१ | विङ्गलवणगुणा | २४२ |
| भङ्गातकनामानि | २२२ | सौवचललवणनामानि | " |
| भङ्गातकगुणा | " | सौवचललवणगुणा | २४३ |
| भङ्गातकफलगुणा | २२३ | काचलवणनामानि | " |
| पञ्चभङ्गातकगुणा | " | काचलवणगुणा | २४४ |
| अस्पफलत्वगुणा | " | औद्भिदननामानि | " |
| अस्पमज्जागुणा | २२४ | औद्भिदगुणा | " |
| अस्पवृन्तगुणा | " | औपरलवणनामानि | " |
| भङ्गातकशोधनविधि | " | औपरलवणगुणा | २४५ |
| नदीभङ्गातकनामानि | " | रोमकलवणगुणा | " |
| नदीभङ्गातकगुणा | २२५ | द्रौणीलवणनामानि | " |
| विजयानामानि | " | द्रौणीलवणगुणा | " |
| गङ्गानामानि | " | नरसारनामानि | " |
| भङ्गागुणा | " | नरसारगुणा | २४६ |
| गङ्गागुणा | २२६ | अस्यमस्तुतकरणम् | " |
| भगोत्पत्ति | " | अस्यशोधनविधि | २४७ |
| राससफलनामानि | २२९ | सूर्यक्षारनामानि | " |
| राससफलगुणा | २३० | सूर्यक्षारगुणा | " |
| अहिकेननामानि | २३१ | सूर्यक्षारगुणा | २४८ |
| अहिकेनगुणा | " | लवणक्षारगुणा | " |
| राससप्रस्रनामानि | २३२ | चणकाम्भगुणा | " |
| खसत्यसगुणा | २३३ | शुक्रगुणा | " |
| यवक्षारनामानि | " | | |
| यवक्षारगुणा | २३४ | | |
| स्वर्जिवाक्षारनामानि | " | | |
| स्वर्जिवाक्षारगुणा | २३५ | | |
| टङ्गणक्षारनामानि | " | | |
| टङ्गणक्षारगुणा | २३६ | | |
| भवेतटङ्गणगुणा | २३७ | | |
| टङ्गणशोधनविधि | " | | |
| सैन्धवनामानि | २३८ | | |

गुह्युच्चादिवर्गः ।

| | |
|-----------------------|-----|
| गुह्युच्चा उत्पत्ति | २४९ |
| गुह्युच्चीनामानि | २५० |
| वन्दगुह्युच्चीनामानि | २५१ |
| गुह्युच्चीगुणा | " |
| गुह्युच्चीपत्रशाकगुणा | २५२ |
| गुह्युच्चीसत्त्वगुणा | " |
| वन्दगुह्युच्चीगुणा | २५३ |

| विषय | पृष्ठाङ्कः | विषय | पृष्ठाङ्कः |
|-----------------------------|------------|--------------------------|------------|
| गिरीपथे सत्त्वयनानिर्णयविधि | ३५३ | भस्मिन् यनामानि | ३६८ |
| तागवादीनामानि | १ | धुद्राभिमन्थनामानि | " |
| सासूळगुणा | ३५४ | भस्मिन्मन्थगुणा | ३६९ |
| श्रीयादीपणगुणा | ३५५ | धुद्राभिमन्थगुणा | " |
| भस्मवादीपणगुणा | " | तनोमन्थगुणा | ३७० |
| सातर्खापणगुणा | " | स्पोनायनामानि | " |
| सौण्यपणगुणा | " | स्पोनायभेदनामानि | " |
| माद्वयोद्वाधाभरापणगुणा | " | स्पोनायगुणा | ३७१ |
| आग्नेयोद्वाधपोट्टुलीपणगुणा | ३५६ | भस्मयामिद्वयगुणा | " |
| द्विस्तर्खापणगुणा | " | स्पोनायतत्त्वगुणा | ३७२ |
| तर्खापणगुणा | " | द्विगुणधुद्राभिमन्थगुणा | १ |
| द्विगुणधुद्राभिमन्थगुणा | " | शालिग्रामीनामानि | १ |
| पणस्पर्शिरादिगुणा | ३५७ | शालिग्रामीगुणा | ३७३ |
| पणस्पर्शिरादिपट्टगुणा | " | पृथिव्यापणगुणा | ३७४ |
| पणस्पर्शिरादिपट्टगुणा | " | पृथिव्यापणगुणा | ३७५ |
| पणभक्षणनिषेध | ३५८ | शालिग्रामीपृथिव्यापणगुणा | १ |
| चित्तनामानि | ३५९ | पृथिव्यापणगुणा | १ |
| चित्तगुणा | " | पृथिव्यापणगुणा | ३७६ |
| भवेत्तपस्यगुणा | ३६० | पृथिव्यापणगुणा | ३७७ |
| चिन्मयगुणा | " | धुद्राभिमन्थगुणा | १ |
| चित्तमन्त्राभयगुणा | " | अथपृथिव्यापणगुणा | १ |
| चित्तपेयगुणा | " | पृथिव्यापणगुणा | १ |
| यानिगुणा | " | शालिग्रामीनामानि | " |
| पञ्चपिन्दवत्त्वदोषोक्ति | " | शालिग्रामीगुणा | ३७८ |
| गम्भारीनामानि | ३६१ | शालिग्रामीगुणा | ३७९ |
| गम्भारीगुणा | ३६२ | अथशालिग्रामीगुणा | ३८० |
| गम्भारीपणगुणा | " | गोक्षुरनामानि | " |
| भविष्यगम्भारीगुणा | " | धुद्राभिमन्थगुणा | " |
| गम्भारीपुण्यगुणा | " | द्विगुणधुद्राभिमन्थगुणा | ३८१ |
| गम्भारीपुण्यगुणा | ३६३ | गोक्षुराभिमन्थगुणा | ३८२ |
| पाटलानामानि | ३६४ | गोक्षुराभिमन्थगुणा | " |
| अथपाटलाभिमन्थगुणा | " | गोक्षुराभिमन्थगुणा | " |
| पाटलागुणा | ३६५ | गोक्षुराभिमन्थगुणा | " |
| अथपाटलाभिमन्थगुणा | ३६६ | गोक्षुराभिमन्थगुणा | " |
| भूमिपाटलागुणा | ३६७ | गोक्षुराभिमन्थगुणा | " |
| धुद्राभिमन्थगुणा | " | गोक्षुराभिमन्थगुणा | " |
| गोक्षुराभिमन्थगुणा | " | गोक्षुराभिमन्थगुणा | " |

| विषय | पृष्ठांक | विषय | पृष्ठांक |
|---------------------|----------|------------------------|----------|
| बृहज्जीवतीनामानि | २८५ | अस्थिसंहारगुणा | २०३ |
| बृहज्जीवतीगुणा | " | कलिकारीनामानि | २०५ |
| स्वर्णजीवन्तीनामानि | " | कलिकारीगुणा | २०६ |
| स्वर्णजीवन्तीगुणा | २८६ | करवीरनामानि | २०७ |
| तिक्तजीवन्तीनामानि | " | श्वेतादिकरवीरगुणा | २०८ |
| तिक्तजीवन्तीगुणा | " | रक्तकरवीरनामानि | " |
| विषमुष्टिगुणा | २८७ | धन्तूरनामानि | २०९ |
| सुद्वर्णनामानि | " | धन्तूरगुणा | २१० |
| सुद्वर्णगुणा | " | कृष्णधन्तूरनामानि | २११ |
| मापवर्णनामानि | २८८ | राजधन्तूरनामानि | " |
| मापवर्णगुणा | २८९ | चासकनामानि | २१२ |
| परण्डनामानि | २९० | चासकगुणा | २१४ |
| रक्तैरण्डनामानि | " | पपेटनामानि | " |
| स्पृष्टैरण्डनामानि | २९१ | पपेटगुणा | २१५ |
| द्विविधैरण्डगुणा | " | निम्बनामानि | २१६ |
| परण्डपत्रगुणा | " | निम्बगुणा | २१७ |
| परण्डफलगुणा | २९२ | निम्बकोमलपल्लवगुणा | २१८ |
| परण्डमज्जागुणा | " | निम्बसामान्यपत्रगुणा | " |
| परण्डमूलगुणा | " | निम्बजीर्णपत्रगुणा | " |
| परण्डपुष्पगुणा | " | निम्बपुष्पगुणा | " |
| श्वेतैरण्डगुणा | " | निम्बसूक्ष्मशाखादिगुणा | " |
| रक्तैरण्डगुणा | २९३ | निम्बपक्कफलगुणा | २१० |
| परण्डतेलगुणा | २९४ | निम्बशीजम्बमज्जागुणा | " |
| भयनामानि | २९५ | निम्बतैलगुणा | " |
| श्वेताकिनामानि | २९६ | निम्बपत्रागुणा | " |
| भयगुणा | " | महानिम्बनामानि | २२० |
| भयक्षीरगुणा | २९७ | महानिम्बगुणा | " |
| भयमूलस्पर्शगुणा | " | वृद्धयनामानि | २२१ |
| द्विविधाफलगुणा | " | वेड्यगुणा | " |
| स्तुहीनामानि | २९८ | पारिभद्रनामानि | २२२ |
| स्तुहीगुणा | २९९ | पारिभद्रगुणा | " |
| स्तुहीदुग्धगुणा | ३०० | काथनारनामानि | |
| स्तुहीपत्रगुणा | " | कोविदारनामानि | ३०३ |
| सातलनामानि | ३०१ | काथनारगुणा | ३०४ |
| सातलगुणा | ३०२ | श्वेतसाधनारगुणा | ३२५ |
| अस्थिसंहारीनामानि | ३०३ | कोविदारगुणा | " |

| विषय | पृष्ठांक | विषय | पृष्ठांक |
|---------------------|----------|---------------------|----------|
| पतिव्याधनायुगा | ३३५ | यपिचक्षुनामानि | ३४३ |
| व्याधनायुगा | " | यपिचक्षुगुणा | ३४४ |
| शोभाञ्जनानामानि | ३३६ | यपिचक्षुर्वायुगा | " |
| अथतसिष्टना० | " | रूपयपिचक्षुगुणा | " |
| रक्तशिष्टना० | " | मासरोहिर्णानामानि | ३४५ |
| शोभाञ्जनगुणा | " | मासरोहिर्णगुणा | " |
| अथतसिष्टगुणा | ३३७ | रोहिर्णगुणा | ३४६ |
| रक्तशिष्टगुणा | " | द्विविधरोहिर्णगुणा | " |
| शिष्टशीतगुणा | ३३८ | चिह्नकगुणा | " |
| शिष्टगुणगुणा | " | देवगुणा | " |
| शिष्टगुणगुणा | " | येतसनामानि | ३४७ |
| शिष्टगुणगुणा | " | जलयेतसनामानि | " |
| भयराजितानामानि | ३३९ | येतसगुणा | " |
| नीलापरानिताना० | " | जलयेतसगुणा | ३४८ |
| भयराजितायुगा | ३३० | द्विविधयतरगुणा | " |
| कृष्णगोर्वाणिशायुगा | " | पृथक्कगुणा | " |
| सिद्धयारनामानि | ३३१ | पृथक्कजनेत्रगुणा | " |
| नीलसिद्धयारना० | " | द्विजलनामगुणाश्च | ३५० |
| सिद्धयारगुणा | ३३२ | अयोधनामानि | " |
| रत्नगानिर्मुण्डगुणा | ३३३ | महोदगुणा | " |
| भरणयनिर्मुण्डगुणा | " | बलानामानि | ३५१ |
| पुटजनामानि | ३३४ | बलगुणा | " |
| पटनगुणा | ३३५ | बलादीनगुणा | ३५३ |
| पटननामानि | " | महाबलनामानि | " |
| करनगुणा | ३३६ | महाबलगुणा | ३५४ |
| करनतेजगुणा | ३३८ | भक्तिबलनामानि | " |
| मागधरागुणा | " | भक्तिबलगुणा | ३५५ |
| मृतवरागुणा | " | विकिर्षणगुणा | " |
| शुक्लवरागुणा | " | नागवराजानामानि | " |
| द्वितिवरागुणा | ३३९ | नागवरागुणा | ३५६ |
| द्वितिवराधपयगुणा | " | नागवराकलगुणा | " |
| मन्दककलनामानि | " | द्विभागपयगुणा | " |
| मन्दककलगुणा | ३४० | मनुविधपयगुणा | ३५७ |
| गुणानामानि | " | छन्दनामानि | " |
| अथगुणानामानि | ३४१ | छन्दनागुणा | ३५८ |
| गुणागुणा | " | सर्वपद्वीनानगुणाश्च | " |
| विशेषगुणागुणा | ३४२ | सर्वोत्तमायुगि | " |

| विषय | पृष्ठांक | विषय | पृष्ठांक |
|----------------------|----------|----------------------|----------|
| वनकार्पासीना० | ३५२ | इक्षुदभांगुणा | ३७३ |
| कालाजनीना० | " | गोमूत्रिकाटणनामानि | " |
| कार्पासीगुणा | ३६० | गोमूत्रिकाटणगुणा | " |
| वनकार्पासीगुणा | " | शिल्पिकाटणनामानि | ३७४ |
| कालाजनीगुणा | " | शिल्पिकाटणगुणा | " |
| वशनामानि | ३६१ | निःश्रेणिकानामानि | " |
| वशगुणा | ३६२ | निःश्रेणिकागुणा | " |
| वशकरीरगुणा | " | जरडीटणनामानि | " |
| वशवगुणा | " | जरडीटणगुणा | " |
| द्विविधवशगुणा | ३६३ | मञ्जरटणनामानि | " |
| नलनामानि | " | मञ्जरटणगुणा | " |
| देवनलनामानि | " | तृणाख्यनामानि | ३७५ |
| नलगुणा | ३६४ | तृणाख्यगुणा | " |
| देवनलगुणा | ३६५ | वशपत्रीटणनामानि | " |
| भद्रमुञ्जमुञ्जनामानि | " | वशपत्रीटणगुणा | " |
| द्विविधमुञ्जगुणा | " | मन्यानकटणनामानि | " |
| काशनामानि | ३६६ | मन्यानकटणगुणा | " |
| काशगुणा | ३६७ | पल्लिवाहटणनामगुणाश्च | " |
| गुन्द्रनामानि | " | लवणटणनामानि | " |
| गुन्द्रगुणा | " | लवणटणगुणा | ३७६ |
| एरकानामानि | ३६८ | पण्यन्धाटणनामानि | " |
| एरकागुणा | " | पण्यन्धाटणगुणा | " |
| कुसुदभनामानि | " | गुण्डटणनामानि | " |
| द्विविधदभगुणा | ३६९ | सगुण्डनामानि | " |
| कट्टणनामानि | " | वृत्तगुण्डगुणा | " |
| वट्टणगुणा | ३७० | चण्डिकाटणनामानि | ४७७ |
| दीर्घरोहिपनामानि | ३७१ | चण्डिकाटणगुणा | " |
| दीर्घरोहिपगुणा | " | गुण्डासिनीटणनामानि | " |
| भूस्त्रणनामानि | " | गुण्डासिनीटणगुणा | " |
| भूस्त्रणगुणा | " | शलीटणनामानि | " |
| सुगन्धभूस्त्रणनामानि | ३७२ | शलीटणगुणा | " |
| सुगन्धभूस्त्रणगुणा | " | नीलदूधानामानि | ३७८ |
| यलवजाटणनामानि | ३७३ | श्वेतदूधानामानि | " |
| यलवजाटणगुणा | " | गण्डदूधानामानि | " |
| ऊपणटणनामानि | " | सामान्यदूवागुणा | ३७९ |
| ऊपणटणगुणा | " | नीलदूवागुणा | " |
| इक्षुदभनामानि | " | | |

| विषय | पृष्ठांक | विषय | पृष्ठांक |
|------------------------|----------|-------------------|----------|
| भेदद्वयगुणा | ३८० | जपयादधीनतैलगुणा | ४०० |
| गण्टद्वयगुणा | " | इन्द्रवाकणीनामानि | " |
| विदारीनामानि | ३८१ | महद्रवाकणीनामानि | ४०१ |
| क्षीरविदारीनामानि | " | एन्द्रवाकणीगुणा | ४०२ |
| विदारीचन्दगुणा | ३८२ | महद्रवाकणीगुणा | " |
| क्षीरविदारीगुणा | ३८३ | स्वयम्परीनामानि | ४०३ |
| मुसलीनामानि | ३८४ | स्वयम्परीगुणा | " |
| मुसलीगुणा | " | पृष्णाधीननामानि | " |
| गतायदीमहारातायदीनामानि | ३८५ | कृष्णाधीनगुणा | ४०४ |
| गतायदीगुणा | ३८६ | मीरिगुणा | " |
| महाशक्तायरीगुणा | ३८७ | मीरिगुणा | ४०५ |
| द्विषिभरातायरीगुणा | ३८८ | महानीनामानि | " |
| गतायर्षद्वयगुणा | " | महानीगुणा | ४०६ |
| भयगंधानामानि | " | शरपुष्पागुणा | " |
| भयगंधगुणा | ३८९ | शरपुष्पागुणा | " |
| पाठागुणा | ३९० | शरपुष्पागुणा | ४०७ |
| पाठागुणा | ३९१ | शरपुष्पागुणा | " |
| छुपुपाठागुणा | " | शरपुष्पागुणा | ४०८ |
| त्रिपुष्पागुणा | ३९२ | शरपुष्पागुणा | " |
| पृष्णाधिविपुष्पागुणा | ३९३ | शरपुष्पागुणा | ४०९ |
| भेदत्रिपुष्पागुणा | " | यथायनामानि | " |
| रत्नात्रिपुष्पागुणा | " | यथायनागुणा | ४१० |
| स्वामान्यविपुष्पागुणा | " | मुष्णीनामानि | ४११ |
| भयमविपुष्पागुणा | ३९४ | महामुष्णीनामानि | " |
| भेदविपुष्पागुणा | " | मुष्णीगुणा | ४१२ |
| रत्नाविपुष्पागुणा | " | महाभयनिपागुणा | " |
| रत्नीनामानि | ३९५ | भयनागनामानि | ४१३ |
| दतीगुणा | ३९६ | भयनागगुणा | ४१४ |
| मृददतीनामानि | ३९७ | रत्नाभयनागनामानि | ४१५ |
| मृददतीगुणा | " | रत्नाभयनागगुणा | " |
| मृददतीगुणा | ३९८ | द्विषिभयनागगुणा | ४१६ |
| भयदतीनामानि | " | योविषादनामानि | " |
| भयदतीगुणा | " | योविषादगुणा | ४१७ |
| जपयागनामानि | " | योविषादगुणा | ४१८ |
| जपयागगुणा | ३९९ | योविषादगुणा | " |
| जपयागगुणा | " | योविषादगुणा | ४१९ |

| विषय | पृष्ठांक | विषय | पृष्ठांक |
|------------------------|----------|-------------------|----------|
| अस्यदण्डादिगुणा | ४१९ | त्रायमाणगुणा | ४३६ |
| एलीय रुनामानि | ४२० | यधतिक्तानामानि | " |
| गलीयकगुणा | " | यधतिक्तागुणा | ४३७ |
| धुद्रकेतकीनामानि | " | लिगिनीनामानि | ४३८ |
| धुद्रकेतकीगुणा | ४२१ | लिगिनीगुणा | " |
| पाण्डुफलीनामानि | " | मूर्वानामानि | ४३९ |
| पाण्डुफलीगुणा | " | मूर्वागुणा | " |
| पनसीनामानि | ४२२ | काक्माचीनामानि | ४४० |
| पनसीगुणा | " | काक्माचीगुणा | ४४१ |
| गगाटीनामानि | " | काक्जधानामानि | ४४२ |
| गगाटीगुणा | " | काकजधानगुणा | ४४३ |
| श्वेतपुनधानामानि | " | काकनासानामानि | " |
| रक्तपुननवाना० | ४२३ | काकनासागुणा | ४४४ |
| नीलपुननवाना० | " | नागपुष्पीनामानि | " |
| श्वेतपुननवागुणा | ४२४ | नागपुष्पीगुणा | ४४५ |
| रक्तपुननवागुणा | ४२५ | मेघभृगीनामानि | " |
| नीलपुननवागुणा | " | मेघभृगीगुणा | " |
| पुननवापत्रशाकगुणा | " | हृत्पदादीनामानि | ४४६ |
| प्रसारणीनामानि | ४२७ | हृत्पदादीगुणा | ४४७ |
| प्रसारणीगुणा | " | सोमलवानामानि | " |
| शारिवानामानि | ४२९ | सोमलतागुणा | " |
| कृष्णशारिवाना० | " | आकाशवल्लीनामानि | ४४८ |
| श्वेतशारिवागुणा | ४३० | आकाशवल्लीगुणा | ४४९ |
| कृष्णशारिवागुणा | " | पातालगरुडीनामानि | " |
| द्विविधशारिवागुणा | " | पातालगरुडीगुणा | ४५० |
| केशराज, भृङ्गराजनामानि | ४३१ | घदानामानि | " |
| पीतभृङ्गराजना० | " | घदागुणा | ४५१ |
| नीलभृङ्गराजना० | " | यटपत्रीनामानि | ४५२ |
| भृङ्गराजगुणा | ४३२ | यटपत्रीगुणा | " |
| शणपुष्पीनामानि | ४३३ | मत्स्याक्षीनामानि | " |
| शणनामानि | " | मत्स्याक्षीगुणा | " |
| शणपुष्पीगुणा | ४३४ | सर्पाक्षीनामानि | ४५३ |
| सुद्रशणपुष्पीगुणा | ४३५ | सर्पाक्षीगुणा | " |
| महाश्वेतागुणा | " | शखपुष्पीनामानि | " |
| शणगुणा | " | शखपुष्पीगुणा | ४५४ |
| शणपौजगुणा | " | श्वेतशखपुष्पीगुणा | ४५५ |
| त्रायमाणनामानि | " | अर्कपुष्पीनामानि | " |

| विषय | पृष्ठा | विषय | पृष्ठा |
|---------------------|--------|-------------------|--------|
| भक्त्युपनिषद् | ४०६ | मोतिदानामानि | ४३१ |
| लज्जालुतामानि | " | मोतिदानुगा | " |
| लज्जालुगुणा | ४०७ | नामदमनानामानि | ४३४ |
| विपरीतलज्जालुतामानि | " | नामदमनानुगा | ४३५ |
| विपरीतलज्जालुगुणा | " | लिङ्गनानामानि | ४३६ |
| भक्त्युपनामानि | ४०८ | लिङ्गनानुगा | " |
| भक्त्युपागुणा | " | पञ्चदशनामानि | ४३७ |
| दुग्धधानामानि | " | पञ्चदशनुगा | " |
| दुग्धधनीना० | " | सुदशननामानि | ४३८ |
| नागाधुनीना० | " | सुदशनगुणा | " |
| दुग्धधनगुणा | ४१० | आयुष्यनामानि | " |
| दुग्धधनेनीगुणा | " | आयुष्यनीगुणा | ४३९ |
| नागाधुनीगुणा | " | वृद्धदायकनीगुणा | ४४० |
| भूम्यामनीनामानि | ४१० | मयूरशिखानामानि | " |
| भूम्यामनीगुणा | ४११ | मयूरशिखानुगा | " |
| भ्रातृनामानि | " | पुष्पवर्गः । | ४४१ |
| मण्डूकपर्णीनामानि | ४१२ | पुष्पनामानि | ४४१ |
| भ्रातृगुणा | " | पुष्पधनानामानि | " |
| मण्डूकपर्णीगुणा | ४१४ | पुष्पधारणगुणा | ४४२ |
| मण्डूकपर्णवर्गगुणा | " | पुष्पद्रव्यगुणा | " |
| द्रोणपुष्पीनामानि | " | जातीनामानि | " |
| द्रोणपुष्पीगुणा | " | जातीगुणा | ४४३ |
| द्रोणपुष्पीवर्गगुणा | ४१५ | रत्नजातीगुणा | " |
| आर्द्रावर्षभनामानि | " | रत्नजातीनामानि | ४४४ |
| आर्द्रावर्षभगुणा | ४१६ | रत्नजातीगुणा | " |
| मन्त्रसुवर्षभगुणा | " | रत्नजातीगुणा | ४४५ |
| आर्द्रावर्षभगुणा | ४१७ | पाषाणनामानि | ४४५ |
| पाषाणवर्षभनामानि | " | पाषाणीगुणा | " |
| पाषाणवर्षभगुणा | ४१८ | मणिगुणा | ४४६ |
| पाषाणवर्षभगुणा | ४१९ | मुद्रागुणा | " |
| मातृपुष्पीनामानि | " | मन्त्रादीनामानि | ४४७ |
| मातृपुष्पीगुणा | ४२० | मन्त्रादीनागुणा | " |
| मातृपुष्पीवर्गगुणा | " | पृथिवीनामानि | ४४८ |
| देवदत्तगुणा | " | द्वितीयपृथिवीगुणा | ४४९ |
| पृथिवीनामानि | ४२१ | मातृपुष्पीनामानि | " |
| पृथिवीगुणा | ४२२ | मातृपुष्पीगुणा | " |
| पृथिवीवर्गगुणा | " | मातृपुष्पीनामानि | ४५० |

| विषय | पृष्ठांक | विषय | पृष्ठांक |
|--------------------------|----------|-------------------------------|----------|
| मालतीगुणा | ४९० | किंकिरातगुणा | ५०७ |
| तरुणीशतपत्रीकुब्जकनामानि | " | केतकीनामानि | ५०८ |
| शतपत्रीगुणा | ४९२ | सुवर्णनेत्रकीनामानि | " |
| तरुणीगुणा | " | केतकीसुवर्णकेतकीगुणा | ५०९ |
| रक्तकुब्जकगुणा | " | अशोकनामानि | ५१० |
| कुब्जकगुणा | ४९३ | अशोकगुणा | " |
| चम्पकनामानि | " | पुन्नागनामानि | ५११ |
| चम्पककलियानामानि | ४९४ | पुन्नागगुणा | ५१२ |
| चम्पकगुणा | " | सैरेयकनामानि | ५१३ |
| चम्पकपुष्पगुणा | " | कुरण्टनामानि | " |
| चम्पकभेदा | ४९५ | नीलक्षिण्टी (आर्तगल) नामानि | " |
| श्वेतादिचम्पकगुणा | ४९६ | कुरवकनामानि | " |
| बकुलगुणा | ४९७ | सैरेयकगुणा | ५१४ |
| बकुलपुष्पगुणा | " | कुरण्टकगुणा | ५१५ |
| बकुलफलगुणा | ४९८ | आर्तगलगुणा | " |
| वृद्धबकुलनामानि | " | नीलक्षिण्टीगुणा | " |
| वृद्धबकुलगुणा | ४९९ | कुरवकगुणा | " |
| मुचुकुन्दनामानि | ५०० | बन्धूकनामानि | ५१६ |
| मुचुकुन्दगुणा | " | बन्धूकगुणा | " |
| कुन्दनामानि | ५०१ | सिद्धेश्वरनामानि | ५१७ |
| कुन्दगुणा | " | सिद्धेश्वरगुणा | " |
| तिलकनामानि | ५०२ | शङ्खोदरीनामानि | " |
| तिलकगुणा | " | शङ्खोदरीगुणा | ५१८ |
| वदम्बनामानि | ५०३ | झण्डूकनामानि | " |
| धाराकदम्बनामानि | " | झण्डूकगुणा | " |
| भूमिवदम्बनामानि | " | सिन्दूरपुष्पीनामानि | " |
| वदम्बगुणा | ५०४ | सिन्दूरपुष्पीगुणा | " |
| राजवदम्बगुणा | " | म्राजक्तनामानि | ५२० |
| धाराकदम्बगुणा | ५०५ | हारमृगातरुणा | " |
| धूलिकदम्बगुणा | " | जपापुष्पनामानि | " |
| वदम्बिकागुणा | " | जपापुष्पगुणा | ५२१ |
| भूमिवदम्बगुणा | " | घृतभर्जितजपापुष्पगुणा | " |
| द्विविधवदम्बगुणा | ५०६ | अगस्त्यनामानि | ५२२ |
| वर्णिशरनामानि | " | अगस्त्यगुणा | " |
| वर्णिशरगुणा | " | अस्यपुष्पगुणा | ५२३ |
| किंकिरातनामानि | " | अस्यपत्रगुणा | " |
| | | अम्पशिम्बीगुणा | " |

| विषय | पृष्ठांक | विषय | पृष्ठांक |
|---------------------------|----------|--------------------|----------|
| सुखसौख्यनामानि | ५२४ | पद्मनाभनामानि | ५२८ |
| कृष्णसुखसौख्यनामानि | " | मृणालगुणा | " |
| सुखसौगुणा | " | पद्मरन्ध्रनामानि | ५३१ |
| मरुत्तनामानि | ५३५ | शालग्रगुणा | " |
| मरुत्तगुणा | ५३६ | शमुदनामानि | ५४० |
| दमननामानि | ५३७ | शमुदगुणा | " |
| दमनगुणा | ५३८ | शमुदशीतगुणा | ५४१ |
| यनदमनगुणा | " | शपलनामानि | " |
| नमिदमनगुणा | " | शपलगुणा | " |
| भजकनाम | ५३० | रक्तकुमुदनामानि | " |
| खिन्नजनामानि | " | शरपलनामानि | " |
| कृष्णजयनामानि | " | शरपलनागुणा | " |
| वपरीनामानि | " | स्वच्छवर्धनामानि | ५४२ |
| यनवपरीनामानि | " | स्वच्छवर्धनागुणा | " |
| अर्जुनखितानर-कृष्णानपगुणा | ५३० | फलपत्रः । | |
| यनवर्धनागुणा | ५३१ | | |
| भयपङ्कजनामानि | " | आश्रयनामा | ५४३ |
| श्वेतारमलनामानि | ५३३ | आश्रयगुणा | ५४४ |
| रक्तारमलनामानि | " | शालग्रगुणा | " |
| नीलगुणमलनामानि | " | आश्रयगुणा | ५४५ |
| नीलोत्पलनामानि | " | पद्माश्रयगुणा | " |
| वमलगुणा | ५३३ | शुभपद्माश्रयगुणा | ५४६ |
| श्वेतपद्मगुणा | ५३४ | शुभिमपद्माश्रयगुणा | " |
| स्वयम्भुगुणा | " | आश्रयगुणा | " |
| नीलगुणमलगुणा | " | शोभिताश्रयगुणा | ५४७ |
| नीलोत्पलगुणा | " | शमन्तिश्रयगुणा | " |
| वर्धनामानि | " | आश्रयगुणा | " |
| वर्धनागुणा | ५३५ | आश्रयगुणा | " |
| पद्मवर्धनामानि | " | आश्रयगुणा | " |
| वर्धनागुणा | ५३६ | अतिगुणश्रयगुणा | ५४८ |
| पद्मवर्धनामानि | " | शुभपद्माश्रयगुणा | " |
| वर्धनागुणा | ५३७ | शुभपद्माश्रयगुणा | " |
| मरुत्तपद्मगुणा | ५३८ | शुभपद्माश्रयगुणा | " |
| वर्धनागुणा | " | आश्रयगुणा | ५४९ |
| | | आश्रयगुणा | " |

| विषय | पृष्ठांक | विषय | पृष्ठांक |
|---------------------|----------|-----------------------|----------|
| आम्रान्तस्त्वगुणा | ५४० | नारिकेलपुष्पगुणा | ५६७ |
| आम्रमूलगुणा | " | नारिकेलपुष्पजलगुणा | ५६८ |
| आम्रपल्लवगुणा | " | नारिकेलताडीगुणा | " |
| राजाम्रनामानि | " | नारिकेलफलतैलगुणा | " |
| आम्रातकनामानि | ५५० | मधुनारिकेलगुणा | " |
| आम्रातकफलगुणा | ५५१ | ग्राम्यखजूरीनामानि | ५६९ |
| कोशाम्रनामानि | ५५२ | पिण्डखजूरीकानामानि | " |
| कोशाम्रगुणा | " | छोहारनामानि | " |
| कोशाम्राऽपक्वफलगुणा | ५५३ | त्रिविधखजूरीगुणा | ५७० |
| कोशाम्रपक्वफलगुणा | " | खजूरीताडीगुणा | ५७१ |
| कोशाम्रमज्जागुणा | " | खजूरादिमस्तकगुणा | " |
| कोशाम्रवैलगुणा | " | पिण्डखजूरीगुणा | " |
| दाडिमनामानि | ५५४ | सुलेमानिखजूरीनामानि | ५७२ |
| दाडिमगुणा | ५५५ | सुलेमानिखजूरीगुणा | " |
| दाडिमपुष्पादिगुणा | ५५७ | बदामनामानि | " |
| कालीनामानि | " | बदामगुणा | ५७३ |
| कदलीसाधारणफलगुणा | ५५८ | बदामतैलगुणा | " |
| कोमलकदलीफलगुणा | ५५९ | सेवफलनामानि | ५७४ |
| मध्यमकदलीफलगुणा | " | सेवफलगुणा | " |
| अपक्वकदलीफलगुणा | " | अमृतफलगुणा | " |
| पक्वकदलीफलगुणा | " | पेरुफलनामानि | ५७५ |
| सामान्यकदलीफलगुणा | ५६० | पेरुफलगुणा | ५७६ |
| कदलीपुष्पगुणा | ५६१ | नागरगनामानि | " |
| कदलीमाचलगुणा | " | नागरगफलगुणा | ५७७ |
| कदलीजलगुणा | " | बीजपूरनामानि | ५७८ |
| कदलीकन्दगुणा | ५६२ | बीजपूरफलगुणा | ५७९ |
| कदलीसारगुणा | " | अनुपूरत्वे अनुपानगुणा | ५८१ |
| आरण्यकदलीगुणा | " | वनबीजपूरगुणा | " |
| काष्ठकदलीगुणा | ५६३ | मधुरमातुलुगुणा | " |
| सुवर्णकदलीगुणा | " | निम्बूनामानि | " |
| महान्द्रकदलीगुणा | " | जम्बीरनामानि | ५८२ |
| कृष्णकदलीफलगुणा | ५६४ | निम्बूगुणा | ५८३ |
| नारिकेलनामानि | " | जम्बीरगुणा | ५८४ |
| नारिकेलसाधारणगुणा | ५६५ | निम्बाकगुणा | ५८५ |
| कोमलनारिकेलगुणा | ५६६ | वरुणगुणा | " |
| पक्वनारिकेलगुणा | " | निम्बूसाधारणगुणा | " |
| शुष्कनारिकेलगुणा | " | सुहृजम्बीरगुणा | " |
| नारिकेलजलगुणा | ५६७ | मधुकुक्कुटिगुणा | " |

[illegible]

| विषय | पृष्ठ क्र | विषय | पृष्ठांक |
|--------------------|-----------|-----------------------|----------|
| वदररक्षणानि गुणानि | ६२३ | कतकगुणा | ११ |
| हस्तिबोलिगुणा | ६२५ | द्राक्षानामानि | ६४३ |
| राजवदरगुणा | " | कपिलद्राक्षाना० | " |
| भूषदरीगुणा | " | वाकलीद्राक्षाना० | " |
| वदरफलमज्जागुणा | " | वाकलीद्राक्षगुणा | ६४४ |
| वदरस्य पत्रगुणा | ६२६ | गोस्तनीद्राक्षानामानि | ६४६ |
| विस्फुटनामानि | " | छुद्राक्षगुणा | " |
| विस्फुटगुणा | ६२७ | मण्डपीनामानि | ६४७ |
| मियालनामानि | ६२८ | मण्डपीगुणा | " |
| मियालगुणा | " | काजूतकनामानि | " |
| मियालमूलादिगुणा | ६२९ | काजूतकगुणा | ६४८ |
| राजादननामानि | " | जम्बूनामानि | " |
| राजादनगुणा | ६३० | महाजम्बूना० | " |
| आलुप्यनामानि | ६३१ | क्षुद्रजम्बूना० | ६४९ |
| आलुप्यगुणा | " | कायजम्बूना० | " |
| लवनीफलनामानि | ६३२ | भूमिजम्बूना० | " |
| लवनीफलगुणा | " | जम्बूगुणा | " |
| अननासनामानि | ६३३ | राजजम्बूगुणा | ६५० |
| अननासगुणा | " | जलजम्बूगुणा | " |
| निकोचकनामानि | ६३४ | क्षुद्रजम्बूगुणा | ६५१ |
| निकोचकगुणा | " | जम्बूफलमज्जागुणा | " |
| अजिरनामानि | " | वटादिचर्ग । | |
| अजिरगुणा | " | | |
| परुषरनामानि | ६३५ | घटनामानि | " |
| परुषकफलगुणा | ६३६ | उटगुणा | ६५२ |
| अस्य त्वग्गुणा | ६३७ | अश्वत्थानामानि | ६५३ |
| सुतनामानि | " | अश्वत्थगुणा | ६५४ |
| तूतगुणा | ६३८ | पारिशपिप्पलनामानि | " |
| पारेवतनामानि | ६३९ | पारिशपिप्पलगुणा | ६५५ |
| पारेवतगुणा | " | नदीवृक्षनामानि | ६५६ |
| महापारेवतगुणा | " | शुक्षना० | " |
| श्लेष्मातकनामानि | ६४० | शुक्षगुणा | ६५७ |
| भृशुंदारनामानि | " | उदुम्बरनामानि | " |
| श्लेष्मातकगुणा | ६४१ | उदुम्बरगुणा | ६५८ |
| भृशुंदारगुणा | " | उदुम्बरनामानि | ६५९ |
| पतयनामानि | ६४२ | नदीदुम्बरगुणा | " |
| | | राशोदुम्बरनामानि | " |

| विषय | पृष्ठांक | विषय | पृष्ठांक |
|------------------|----------|--------------------------|----------|
| मिष्टनिम्बगुणा | ५८६ | मुषाकगुणा | ६०८ |
| मधुककटीगुणा | " | पक्षपूगफलगुणा | " |
| जम्बीरपत्रगुणा | " | शुष्कफलगुणा | " |
| तिन्तिहीनामानी | " | अपक्षपूगफलगुणा | " |
| तिन्तिहीफलगुणा | ५८७ | पुगस्पन्नालमप्पादिभेदमाह | " |
| भालूकनामानी | ५८९ | तालनामानी | ६११ |
| भालूकगुणा | ५९० | श्रीतालनामानी | " |
| भण्डनामानी | ५९१ | हिन्तालनामानी | " |
| भण्डगुणा | " | हिन्तालकलगुणा | ६१२ |
| वृक्षाम्बुनामानी | ५९२ | तालगुणा | " |
| वृक्षाम्बुगुणा | " | अस्यामफलगुणा | " |
| अम्बुवेतसनामानी | ५९३ | अस्य पक्षफलगुणा | ६१३ |
| अम्बुवेतसफलगुणा | " | अस्याद्विजगुणा | " |
| पनसनामानी | ५९४ | अस्य फलमजगुणा | " |
| पनसफलगुणा | ५९५ | तालफलोद्भवजगुणा | " |
| लकुचनामानी | ५९६ | तालमण्डिकागुणा | " |
| लकुचगुणा | ५९७ | तालमलम्बगुणा | ६१४ |
| तिन्दुकनामानी | " | तालपत्रगुणा | " |
| तिन्दुकगुणा | ५९८ | तालपुतवागुणा | " |
| काकतिन्दुकनामानी | ५९९ | तालमूलगुणा | " |
| काकतिन्दुकगुणा | ६०० | श्रीतालगुणा | " |
| कारस्करनामानी | " | हिन्तालगुणा | ६१५ |
| कारस्करगुणा | ६०१ | कपित्थफलनामानी | " |
| मधूकनामानी | ६०२ | कपित्थफलसाधारणगुणा | ६१६ |
| मधूकगुणा | ६०३ | अपक्षकपित्थफलगुणा | " |
| मधूकत्वगुणा | ६०४ | पक्षकपित्थफलगुणा | " |
| मधूकत्वगुणा | " | कमलगनामानी | ६१७ |
| मधूकसारगुणा | " | कमलगगुणा | ६१८ |
| जलमधूकगुणा | " | लवलीकटनामानी | " |
| पीलुनामानी | " | लवलीकगुणा | ६१९ |
| महापीलुनामानी | " | प्राचीनामलगनामानी | " |
| पीलुगुणा | ६०५ | प्राचीनामलगुणा | ६२० |
| वृद्धपीलुगुणा | " | यरमहनामानी | " |
| अश्वरोटनामानी | ६०६ | यरमहगुणा | ६२१ |
| अश्वरोटगुणा | " | यदूरीनामानी | ६२२ |
| गुवाकनामानी | ६०७ | यदूरीगुणा | " |

| विषय | पृष्ठ १क | विषय | पृष्ठाक |
|---------------------|----------|-----------------------|---------|
| चदरलक्षणानि गुणाश्च | ६२३ | कतकगुणा | ३३ |
| हस्तिकोलिगुणा | ६२५ | द्राक्षानामानि | ६४३ |
| राजचदरगुणा | " | कपिलद्राक्षाना० | " |
| भूचदरीगुणा | " | वाकलीद्राक्षाना० | " |
| चदरफलमज्जागुणा | " | काकलीद्राक्षगुणा | ६४४ |
| चदरस्य पत्रगुणा | ६२६ | गोस्तनीद्राक्षानामानि | ६४६ |
| विरुद्धतनामानि | " | लघुद्राक्षगुणा | " |
| विक्कूतगुणा | ६२७ | मण्डपीनामानि | ६४७ |
| मियालनामानि | ६२८ | मण्डपीगुणा | " |
| मियालगुणा | " | काजूतकनामानि | " |
| मियालमूलादिगुणा | ६२९ | चाजूतकगुणा | ६४८ |
| राजादननामानि | " | जम्बूनामानि | " |
| राजादनगुणा | ६३० | महाजम्बूना० | " |
| भाट्टप्यनामानि | ६३१ | क्षुद्रजम्बूना० | ६४९ |
| भाट्टप्यगुणा | " | वाक्जम्बूना० | " |
| लवनीफलनामानि | ६३२ | भूमिजम्बूना० | " |
| लवनीफलगुणा | " | जम्बूगुणा | " |
| अननासनामानि | ६३३ | राजजम्बूगुणा | ६५० |
| अननासगुणा | " | जलजम्बूगुणा | " |
| निकोचकनामानि | ६३४ | क्षुद्रजम्बूगुणा | ६५१ |
| निकोचकगुणा | " | जम्बूफलमज्जागुणा | " |
| अजिरनामानि | " | | |
| अजिरगुणा | " | वटादिवर्गः । | |
| परूपयनामानि | ६५५ | वटनामानि | " |
| परूपकफलगुणा | ६३६ | उटगुणा | ६५२ |
| अस्य त्वगुणा | ६३७ | जगत्पनामानि | ६५३ |
| सुतनामानि | " | अरत्पयगुणा | ६५४ |
| सुतगुणा | ६३८ | पारिशपिप्पलनामानि | " |
| पारेवतनामानि | ६३९ | पारिशपिप्पलगुणा | ६५५ |
| पारेवतगुणा | " | नन्दीवृक्षनामानि | ६५६ |
| महापारेवतगुणा | " | पूक्षन० | " |
| श्लेष्मातकनामानि | ६४० | पूक्षगुणा | ६५७ |
| भूयसुदारनामानि | " | टडुम्बरनामानि | " |
| श्लेष्मातकगुणा | ६४१ | वटुम्बरगुणा | ६५८ |
| भूयसुदारगुणा | " | नगदुम्बरनामानि | ६५९ |
| यस्यनामानि | ६४२ | नगदुम्बरगुणा | " |
| | | तामोदुम्बरिवनामानि | " |

| विषय | पृष्ठांक | विषय | पृष्ठांक |
|------------------|----------|------------------------|----------|
| मिष्टनिम्बूगुणा | ५८६ | शुषाकगुणा | ६०८ |
| मधुककटीगुणा | " | पञ्चपूगफलगुणा | " |
| जम्बीरपत्रगुणा | " | शुष्कफलगुणा | " |
| तिन्तिडीनामानि | " | अपञ्चपूगफलगुणा | " |
| तिन्तिडीफलगुणा | ५८७ | पूगस्थपालमध्यादिभेदमाह | " |
| आलूकनामानि | ५८९ | तालनामानि | ६११ |
| आलूकगुणा | ५९० | श्रीतालनामानि | " |
| भण्डनामानि | ५९१ | हितालनामानि | " |
| भण्डगुणा | " | हिन्तालफलगुणा | ६१२ |
| वृक्षाम्लनामानि | ५९२ | तालगुणा | " |
| वृक्षाम्लगुणा | " | अस्पामफलगुणा | " |
| अम्लवेतसनामानि | ५९३ | अस्य पकफलगुणा | ६१३ |
| अम्लवेतसफलगुणा | " | अस्याद्रफलर्षाजगुणा | " |
| पनसनामानि | ५९४ | अस्य फलमत्रागुणा | " |
| पनसफलगुणा | ५९५ | तालफलोल्लवजलगुणा | " |
| लकुचनामानि | ५९६ | तालमण्डिकागुणा | " |
| लकुचगुणा | ५९७ | तालमलम्बगुणा | ६१४ |
| तिन्दुकनामानि | " | तालपत्रगुणा | " |
| तिन्दुकगुणा | ५९८ | तालवृत्तयापुगुणा | " |
| काकतिन्दुकनामानि | ५९९ | तालमूलगुणा | " |
| काकतिन्दुकगुणा | ६०० | श्रीतालगुणा | " |
| कार्दूरकरनामानि | " | हिन्तालगुणा | ६१५ |
| कार्दूरगुणा | ६०१ | वपित्थफलनामानि | " |
| मधूकनामानि | ६०२ | वपित्थफलसामारणगुणा | ६१६ |
| मधूकगुणा | ६०३ | अपञ्चवपित्थफलगुणा | " |
| मधूरसगुणा | ६०४ | पञ्चवपित्थफलगुणा | " |
| मधूरुतैलगुणा | " | वमरगनामानि | ६१७ |
| मधूकसारगुणा | " | वमरगगुणा | ६१८ |
| जलमधूरुगुणा | " | एवलीफलनामानि | " |
| पीलुनामानि | " | एवलीफलगुणा | ६१९ |
| महापीलुनामानि | " | प्राचीनामलकनामानि | " |
| पीलुगुणा | ६०५ | प्राचीनामलकगुणा | ६२० |
| शहरपीलुगुणा | " | वरमहेवनामानि | " |
| अखरोटनामानि | ६०६ | वरमहेवगुणा | ६२१ |
| अखरोटगुणा | " | बदरीनामानि | ६२२ |
| शुगरनामानि | ६०७ | बदरीफलनामानि | " |

| विषय | पृष्ठ क्र | विषय | पृष्ठ क्र |
|--------------------|-----------|-----------------------|-----------|
| चदरक्षणाणि गुणाश्च | ६२३ | कतकगुणा | ११ |
| हस्तिकोलिगुणा | ६२५ | द्राक्षानामानि | ६४३ |
| राजवदरगुणा | ११ | कपिलद्राक्षाना० | ११ |
| भूवदरीगुणा | ११ | काकलीद्राक्षाना० | ११ |
| चदरफलमज्जागुणा | ११ | काकलीद्राक्षागुणा | ६४४ |
| चदरस्य पत्रगुणा | ६२६ | गोस्तनीद्राक्षानामानि | ६४६ |
| विष द्रुतनामानि | ११ | लघुद्राक्षागुणा | ११ |
| विष द्रुतगुणा | ६२७ | मण्डपीनामानि | ६४७ |
| प्रियालनामानि | ६२८ | मण्डपीगुणा | ११ |
| प्रियालगुणा | ११ | वाज्रतकनामानि | ११ |
| प्रियालमूलादिगुणा | ६२९ | वाज्रतकगुणा | ६४८ |
| राजादननामानि | ११ | जम्बूनामानि | ११ |
| राजादनगुणा | ६३० | महाजम्बूना० | ११ |
| आतृप्यनामानि | ६३१ | क्षुद्रजम्बूना० | ६४९ |
| आतृप्यगुणा | ११ | कावजम्बूना० | १ |
| लवनीफलनामानि | ६३२ | भूमिजम्बूना० | १ |
| लवनीफलगुणा | ११ | जम्बूगुणा | ११ |
| अननासनामानि | ६३३ | राजजम्बूगुणा | ६५० |
| अननासगुणा | ११ | जलजम्बूगुणा | ११ |
| निक्षोचकनामानि | ६३४ | क्षुद्रजम्बूगुणा | ६५१ |
| निकोचकगुणा | ११ | जम्बूफलमज्जागुणा | ११ |
| अजिरनामानि | ११ | | |
| अजिरगुणा | ११ | | |
| परुषकनामानि | ६३५ | वटादिवर्गः । | |
| परुषरुफलगुणा | ६३६ | घटनामानि | ११ |
| अस्य त्वगुणा | ६३७ | रटगुणा | ६५२ |
| सुतनामानि | ११ | वदथनामानि | ६५३ |
| तृप्तगुणा | ६३८ | अरत्यगुणा | ६५४ |
| पारेषतनामानि | ६३९ | पारिशिपिपलनामानि | ११ |
| पारेषतगुणा | १ | पारिशिपिपलगुणा | ६५५ |
| महापारेषतगुणा | ११ | नन्दीवृक्षनामानि | ६५६ |
| श्लेष्मातकनामानि | ६४० | श्लक्षणा० | ११ |
| भूरुवुदारनामानि | ११ | श्लक्षगुणा | ६५७ |
| श्लेष्मातकगुणा | ६४१ | तदुम्बरनामानि | १ |
| भूरुवुदारगुणा | ११ | तदुम्बरगुणा | ६५८ |
| पतकनामानि | ६४२ | तदुम्बरनामानि | ६५९ |
| | | नशुदुम्बरगुणा | ११ |
| | | तदुम्बरविव नानि | ११ |

| विषय | पृष्ठा | विषय | पृष्ठा |
|---------------------|--------|-----------------------|--------|
| काष्ठोदुम्बरिकागुणा | ६६० | श्वेतरोहितकगुणा | " |
| शिरीषनामानि | ६६१ | वर्चुरनामानि | ६७६ |
| शिरोपगुणा | ६६२ | वर्चुरगुणा | ६७७ |
| शिशपानामानि | " | वर्चुरफलगुणा | ६७८ |
| श्वेतशिशपानामानि | ६६३ | वर्चुरनियासगुणा | " |
| कपिलशिशपाना० | " | अरिष्टरुनामानि | " |
| शिशपागुणा | " | अरिष्टरुगुणा | ६७९ |
| श्वेतशिशपागुणा | ६६४ | पुत्रजीवनामानि | " |
| कपिलशिशपागुणा | " | पुत्रजीवगुणा | ६८० |
| त्रिभिधशिशपागुणा | " | इशुदीनामानि | " |
| खालनामानि | ६६५ | इशुदीगुणा | ६८१ |
| खालगुणा | " | इशुदीफलमज्जागुणा | ६८२ |
| शालभेद | ६६६ | जिह्मिनीनामानि | " |
| शालगुणा | " | जिह्मिनीगुणा | " |
| शल्लकीनामानि | ६६७ | तमालनामानि | ६८३ |
| शल्लकीगुणा | " | तमालगुणा | " |
| अञ्जुननामानि | ६६८ | तूर्णीनामानि | " |
| अञ्जुनगुणा | ६६९ | तूर्णीगुणा | ६८४ |
| असननामानि | ६७० | भूजपत्रनामानि | " |
| असनगुणा | " | भूजपत्रगुणा | ६८५ |
| असनपुष्पगुणा | " | पलाशनामानि | " |
| रादिरनामानि | ६७१ | पलाशगुणा | ६८६ |
| श्वेतखदिरना० | " | पलाशनियासगुणा | ६८८ |
| खदिरगुणा | ६७२ | हस्तिवर्णरक्षाशनामानि | ६८९ |
| श्वेतखदिरगुणा | " | हस्तिवर्णपलाशगुणा | " |
| रादिरनियासादिगुणा | " | शाल्मलीनामानि | " |
| रादिरसारनामानि | " | मोचरसनामानि | " |
| खदिरसारगुणा | ६७३ | शाल्मलीगुणा | ६९० |
| विट्खदिरनामानि | " | शाल्मलीपुष्पशाकगुणा | ६९१ |
| विट्पदिरगुणा | " | मोचरसगुणा | " |
| शस्य निषासगुणा | ६७४ | मूटशाल्मलीनामानि | " |
| लपुगदिरगुणा | " | मूटशाल्मलीगुणा | ६९२ |
| घल्गलनिषासगुणा | " | धवनामानि | " |
| रोहितवनामानि | ६७५ | धवगुणा | ६९३ |
| श्वेतरोहितरनामानि | " | धन्वगुणा | " |
| | | धन्वननामानि | " |

| विषय | पृष्ठांक | विषय | पृष्ठांक |
|--------------------------|----------|-----------------------------|----------|
| धन्वगुणा | ६९३ | अशुद्धस्वणस्पदोषा | ७११ |
| करीरनामानि | ६९४ | स्वणस्योत्पत्ति | ७१२ |
| करीरगुणा | " | रूप्यकनामानि | " |
| शाखोटनामानि | ६९६ | रौप्यपरीक्षा | ७१३ |
| शाखोटगुणा | " | रौप्यगुणा | " |
| शाखनामानि | " | अशोधितरौप्यगुणा | ७१४ |
| शाखगुणा | ६९७ | रौप्यस्योत्पत्ति | " |
| वरुणनामानि | ६९८ | ताम्रनामानि | " |
| वरुणगुणा | " | उत्कृष्टताम्रस्य लक्षणम् | ७१५ |
| कटभीनामानि | ७०० | दूषितताम्रस्य लक्षणम् | " |
| श्वेतकटभीनामानि | " | ताम्रगुणा | " |
| कटभीगुणा | " | असम्पृक्तमारितताम्रस्य दोषा | ७१६ |
| सुष्ककनामानि | ७०१ | ताम्रोत्पत्ति | " |
| सुष्कगुणा | " | रंगनामानि | " |
| अम्बुशिरीषिकानामानि | ७०२ | रंगगुणा | ७१७ |
| अम्बुशिरीषिकागुणा | ७०३ | अशोधितवर्गदोषा | " |
| शमीनामानि | " | चक्रस्य प्रकारभेदा | ७१८ |
| शमीगुणा | ७०४ | श्रेष्ठवर्गस्य लक्षणम् | " |
| सप्तपर्णनामानि | " | सीसकनामानि | " |
| सप्तपर्णगुणा | ७०५ | सीसकगुणा | ७१९ |
| तिनिशनामानि | " | नागस्य प्रकारभेदा | " |
| तिनिशगुणा | ७०६ | अशोधितवर्गनामदोषा | ७२० |
| हरिद्रुनामानि | " | नामोत्पत्ति | " |
| हरिद्रुगुणा | ७०७ | जसदनामानि | " |
| रुद्राक्षनामानि | " | जसदगुणा | " |
| रुद्राक्षगुणा | " | कान्तलोहनामानि | " |
| भादनामानि | ७०८ | कृष्णलोहनामानि | ७२१ |
| भादगुणा | " | धान्तलोहगुणा | " |
| साजडनामानि | " | धान्तलोहस्य लक्षणम् | " |
| साजडगुणा | ७०९ | सर्वविधशुद्धलोहस्य गुणा | ७२२ |
| ढोलसमुद्रिकागुणा | " | अशोधितलोहस्य दोषा | " |
| | | लोहस्य स्वाभाविकदोषा | " |
| धातूपधातुवर्गः । | | मुण्डलोहगुणा | " |
| सुवर्णनामानि | ७०० | लोहस्योत्पत्ति | ७२३ |
| सुवर्णगुणा | ७१० | लोहसेविन कायाणि | " |
| सुवर्णपरीक्षा | " | मण्डूरनामानि | " |
| असम्पृक्तमारितस्वर्णगुणा | ७११ | मण्डूरलक्षणगुणा | " |

| विषय | पृष्ठांक | विषय | पृष्ठांक |
|------------------------------|----------|------------------------------|----------|
| सर्वविधमण्डूरप्रकारभेदा | ७२३ | मारिताम्रकगुणा | ७४१ |
| कास्पनामानि | ७२४ | अम्रस्य जातिवर्णभेदा | " |
| कास्पगुणा | " | चतुर्विधाभ्रस्य नामलक्षणगुणा | ७४२ |
| पित्तलनामानि | ७२५ | अशोधिताभ्रदोषा | ७४३ |
| पित्तलगुणा | " | अम्रवोत्पत्ति | " |
| पारदनामानि | ७२६ | अक्षेपय्यम् | " |
| पारदगुणा | ७२७ | गन्धकनामानि | " |
| पारदे पथ्यानि | ७२८ | गन्धकगुणा | ७४४ |
| पारददोषा | " | अशुद्धगन्धकदोषा | " |
| अशोधितपारददोषा | ७२९ | गन्धकस्य प्रकारभेदा | ७४५ |
| पारदस्योत्पत्तिजातिलक्षणानि | " | श्वेतगन्धकलक्षणम् | " |
| पारदमशंस | ७३० | गन्धकस्योत्पत्ति | ७४६ |
| हिगुलनामानि | " | सिन्दूरनामानि | " |
| हिगुलगुणा | ७३१ | सिन्दूरगुणा | " |
| हिगुलभेदलक्षणम् | " | सिन्दूरस्य स्वरूपम् | " |
| हिगुलोत्पत्ति | ७३२ | मनशिलानामानि | ७४७ |
| स्रोतोजनानामानि | " | मनशिलागुणा | " |
| सौवीराजननामानि | " | अशोधितमनशिलादोषा | " |
| स्रोतोऽञ्जनगुणा | ७३३ | हरितालमनशिलयोभेदा | " |
| भ्रष्टस्रोतोऽञ्जनस्य लक्षणम् | " | हरितालनामानि | " |
| सौवीराजनगुणा | " | हरितालगुणा | ७४८ |
| पुष्पाजननामानि | " | अशुद्धहरितालदोषा | " |
| पुष्पाजनगुणा | ७३४ | हरितालस्य प्रकारभेदा | ७४९ |
| तुर्यकनामानि | " | हरितालभस्मानुपानम् | ७५० |
| तुर्यकगुणा | ७३५ | हरितालभक्षणप्रमाणम् | " |
| खपरनामानि | ७३६ | हरितालप्रयोगः | " |
| खपरगुणा | " | हरितालादीनामुत्पत्ति | ७५१ |
| अशोधितखपरदोषा | ७३७ | वासीसनामानि | " |
| स्वर्णमाक्षिकनामानि | " | पुष्पवासीसनामानि | " |
| तारमाक्षिकनामानि | " | वासीसगुणा | ७५२ |
| स्वर्णमाक्षिकगुणा | " | वासीसलक्षणम् | " |
| अशुद्धमाक्षिकदोषा | ७३८ | गैरिकनामानि | ७५३ |
| तारमाक्षिकगुणा | ७३९ | सुवर्णगैरिकनामानि | " |
| योदारनामानि | " | पाषाणगैरिकनामानि | " |
| योदारगुणा | " | गैरिकगुणा | " |
| योदारोत्पत्तिलक्षणम् | ७४० | सुवर्णगैरिकगुणा | ७५४ |
| अम्रकनामानि | " | द्विविधगैरिकगुणा | " |

| विषय | पृष्ठांक | विषय | पृष्ठांक |
|---------------------------|----------|-----------------------|----------|
| खटीनामानि | ५७४ | अन्यच्च शिलाजतुगुणा | ७७० |
| खटीगुणा | ७५५ | अशुद्धशिलाजतुदोषा | " |
| कपदकनामानि | " | रत्नोपरत्नवर्गः । | |
| कपदकगुणा | " | | |
| कपदकभेदा | ७५६ | अथ रत्नस्य निरुक्ति | ७७० |
| शुक्तिनामानि | " | रत्नाना निरूपणम् | ७७१ |
| जलशुक्तिनामानि | ७५७ | रत्नगुणा | " |
| शुक्तिगुणा | " | हीरगुणा | ७७२ |
| जलशुक्तिगुणा | ७५८ | हीरकगुणा | " |
| गणनामानि | " | हीरकभेदलक्षणगुणा | " |
| शखस्य प्रकारभेदा | ७५९ | हीरकगुणा | ७७३ |
| श्रेष्ठशखलक्षणम् | ७६० | अशुद्धहीरकदोषा | ७७४ |
| कुमिशेषनामगुणाश्च | " | माणिक्यनामानि | " |
| शुद्धशखनामानि | " | माणिक्यगुणा | ७७५ |
| शुद्धशखगुणा | " | माणिक्यभेदवर्णाश्च | " |
| कंकुष्ठनामानि | " | बहुमूल्यमाणिक्यगुणा | " |
| कंकुष्ठगुणा | ७६१ | अथ तोल | ७७६ |
| कंकुष्ठोत्पत्तिलक्षणम् | " | अथम् ह्यम् | " |
| शखजीरकनामानि | ७६२ | रत्नपरीक्षा | ७७७ |
| शखजीरकगुणा | " | माणिक्यगुणा | ७७८ |
| स्फटीनामानि | " | मौक्तिकनामानि | ७७९ |
| स्फटीगुणा | ७६३ | मौक्तिकगुणा | " |
| सुम्बवनामानि गुणाश्च | " | मौक्तिकोत्पत्ति | ७८० |
| राजावतगुणा | " | गजमौक्तिकम् | " |
| सौराष्ट्रीनामानि | ७६४ | वराहमौक्तिकम् | " |
| सौराष्ट्रीगुणा | " | वैष्णवमौक्तिकम् | ७८१ |
| वालुकानामानि | " | मत्स्यमौक्तिकम् | " |
| वालुकागुणा | ७६५ | दुर्गमौक्तिकम् | " |
| वदमनामानि | " | शंखमौक्तिकम् | ७८२ |
| कृष्णमृत्तनामानि | " | सर्पजमौक्तिकम् | " |
| पद्मगुणा | ७६६ | लक्षणम् | " |
| कृष्णमृदगुणा | " | शुक्तिमौक्तिकम् | ७८३ |
| बोलनामानि | ७६७ | मौक्तिकपरीक्षा | " |
| बोलगुणा | " | प्रवालनामानि | ७८४ |
| शिलाजतुनामानि | ७६८ | प्रवालगुणा | " |
| अस्योत्पत्तिलक्षण गुणाश्च | " | प्रवालमजरीगुणा | ७८५ |
| श्रेष्ठशिलाजतुलक्षणम् | ७६९ | प्रवालोत्पत्तिलक्षणम् | " |

| विषय | पृष्ठांक | विषय | पृष्ठांक |
|-------------------------|----------|----------------------------|----------|
| मरकतनामानि | ७८६ | अथ प्रदीपनस्य स्वरूपम् | ८०० |
| मरकतगुणा | " | अथ खौराष्ट्रीयस्वरूपम् | " |
| मरकतमणिष | " | अथ शुगिवस्य स्वरूपम् | " |
| पुष्परागनामानि | ७८७ | अथ कालकूटस्य स्वरूपम् | " |
| पुष्परागगुणा | " | अथ ह्यागद्वयस्य स्वरूपम् | " |
| पुष्परागलक्षणम् | ७८८ | अथ ब्रह्मपुत्रस्य स्वरूपम् | ८०१ |
| नीलमणिनामानि | " | विषम्य वर्णभेदा | " |
| नीलगुणा | ७८९ | स्थावरविषम्य दशप्रकारा | " |
| नीलस्य वर्णभेदा | " | स्थावरविषम्य भक्षणदोषा | ८०३ |
| गोमेदनामानि | " | जंगमविषम्य स्वरूपम् | " |
| गोमेदयगुणा | ७९० | जंगमविषम्य पाण्डशप्रकारा | " |
| गोमेदपरीक्षा | " | जंगमविषम्य भक्षणदोषा | " |
| वैदूर्यनामानि | ७९१ | शोधितविषगुणा | " |
| वैदूर्यगुणा | ८०३ | अथ विषसेवनप्रकार | ८०३ |
| उत्तमवैदूर्यलक्षणम् | " | विषमात्राप्रमाणम् | " |
| वैक्रातनामानि | " | विषसेजनम पय्यपदार्थ | ८०४ |
| वैक्रातगुणा | ७९३ | मात्राधिकभक्षणस्य परिक्षा | " |
| सूर्यकान्तनामानि | " | विषको उत्तारना | ८०५ |
| सूर्यकान्तगुणा | " | आतुपापाणनामानि | ८०६ |
| चन्द्रकान्तनामानि | ८०४ | आतुपापाणगुणा | " |
| चन्द्रकान्तोद्भवजलगुणा | " | अथ उपविषनामानि | ८०७ |
| चन्द्रकान्तस्य स्वरूपम् | " | धान्यवर्गः । | " |
| स्फटिकनामानि | ७९५ | धान्यनामानि | " |
| स्फटिकगुणा | " | धान्यभेदा | " |
| पेरोजनामानि | " | शालिधान्यनामानि | ८०८ |
| पेरोजगुणा | ७९६ | शालिधान्यलक्षणम् | ८०९ |
| काचनामानि | " | शालिधान्यगुणा | " |
| काचगुणा | " | रक्तशालिगुणा | ८१० |
| दुग्धपापाणनामानि | " | महाशालिधान्यगुणा | " |
| दुग्धपापाणगुणा | ७९७ | तेषां गुणा | ८११ |
| विषवर्गः | ७९७ | ग्रीहिधान्यलक्षणम् | ८१२ |
| विषनामानि | " | षष्टिलक्षण नामानि च | ८१३ |
| घट्टनाभविषगुणा | ७९८ | षष्टिगुणा | ८१४ |
| विषस्य प्रकारभेदा | ७९९ | यवनामानि | ८१५ |
| अथ घट्टनाभस्य स्वरूपम् | " | यारस्य प्रकारभेदा | ८१६ |
| अथ हारिद्रस्य स्वरूपम् | " | यवगुणा | " |
| अथ सक्नुषस्य स्वरूपम् | ८०० | गोधूमनामानि | ८१७ |

| विषय | पृष्ठांक | विषय | पृष्ठांक |
|------------------|----------|------------------------|----------|
| गोधूमगुणा | ८१८ | भृष्टचणकगुणा | ८३६ |
| अपि च लक्षणगुणा | " | कृष्णचणकगुणा | " |
| यावनालनामानि | ८१० | चणकस्य पत्रशार्ङ्गगुणा | " |
| धवलपायनालनामानि | " | आदकीनामानि | ८३७ |
| तुवरपावनालनामानि | " | आदकीगुणा | " |
| यावनालगुणा | ८२० | श्वेतादकीगुणा | ८३८ |
| धवलपायनालगुणा | ८२१ | रक्तादकीगुणा | " |
| शारदपायनालगुणा | " | कृष्णादकीगुणा | ८३९ |
| साजकनामानि | " | कलायनामानि | " |
| साजकगुणा | " | कलायगुणा | ८४० |
| शमीधान्यनामानि | ८२२ | त्रिपुटनामानि | " |
| शमीधान्यगुणा | " | त्रिपुटगुणा | ८४१ |
| सुङ्गनामानि | " | कुलित्यनामानि | ८४२ |
| सुङ्गगुणा | ८२३ | कुलित्यगुणा | " |
| कृष्णसुङ्गनामानि | ८२४ | तिलनामानि | ८४३ |
| कृष्णसुङ्गगुणा | " | तिलगुणा | ८४४ |
| हरिन्सुङ्गनामानि | ८२५ | तिलपिण्यावगुणा | ८४५ |
| हरिन्सुङ्गगुणा | " | भतसीनामानि | " |
| धूसरसुङ्गगुणा | " | भतसीगुणा | ८४६ |
| मकुष्ठनामानि | " | सपपनामानि | ८४७ |
| मकुष्ठगुणा | ८२६ | गौरसर्पपनामानि | " |
| अस्य सूपगुणा | " | सर्पपगुणा | ८४८ |
| मापनामानि | " | सिद्धापगुणा | ८४९ |
| मापगुणा | ८२७ | सर्पपशाकगुणा | " |
| राजमापनामानि | ८२८ | राजिकानामानि | " |
| राजमापगुणा | ८२९ | राजसर्पपनामानि | " |
| अस्य सूपगुणा | ८३० | राजिकागुणा | ८५० |
| निम्पावनामानि | " | राजसर्पपगुणा | ८५१ |
| निम्पावगुणा | ८३१ | राजिषापत्रशाकगुणा | " |
| रक्तनिम्पावगुणा | ८३२ | अथ दृणधान्यनामानि | " |
| नदीनिम्पावगुणा | " | दृणधान्यगुणा | " |
| मसूरनामानि | " | वगुनामानि | ८५३ |
| मसूरगुणा | ८३३ | केशुनीगुणा | " |
| चणकनामानि | ८३४ | खनिवनामानि | ८५३ |
| चणकगुणा | " | खनिवगुणा | " |
| | | नीवारनामानि | ८५४ |
| | | नीवारगुणा | " |

| विषय | पृष्ठांक | विषय | पृष्ठांक |
|-------------------------------|----------|----------------------|----------|
| वरकनामानि | ८५५ | वज्रदण्डगुणा | ८७७ |
| वरकगुणा | " | पालंक्षपनामानि | " |
| नर्तकनामानि | " | पालंक्षगुणा | ८७१ |
| नर्तकगुणा | ८५६ | गुणञ्जरनामानि | ८७३ |
| श्यामाकनामानि | " | कुणञ्जरगुणा | " |
| श्यामाकगुणा | " | उपोदकीनामानि | " |
| कोट्टवनामानि | ८५७ | उपोदकीगुणा | ८७३ |
| कोट्टवगुणा | " | सहस्रमूलीनामानि | ८७४ |
| वटिधान्यनामानि | ८५८ | सहस्रमूलीगुणा | " |
| वटिधान्यगुणा | ८५९ | चचुनामानि | " |
| गवेषुक्रानामगुणाश्च | ८६० | महाचचुनामानि | ८७५ |
| वरटानामानि | " | क्षुद्रचचुनामानि | " |
| वरटगुणा | " | चचुगुणा | ८७५ |
| चारवनामगुणाश्च | " | महाचचुगुणा | " |
| वेषुयवगुणा | " | क्षुद्रचचुगुणा | " |
| यजनालगुणा | ८६१ | चचुबीजगुणा | ८७६ |
| मृतनपुत्रानादिभेदेन धान्यगुणा | " | नाडीकनामानि | " |
| शाकवर्ग, ८६१ | | नाडीवगुणा | " |
| शारदोषा | ८६२ | नाडीशाकपट्टशाकनामानि | " |
| तत्रादी धान्तूकशाकनामानि | " | नाडीशाकगुणा | ८७७ |
| धान्तूकगुणा | ८६३ | वलम्बीनामानि | " |
| चिह्नीगुणा | ८६४ | वलम्बीगुणा | ८७८ |
| लोणीयहल्लोणीनामानि | " | हिलमोचिकानामानि | " |
| लोणीगुणा | ८६५ | हिलमोचिकागुणा | " |
| घोर्लिकगुणा | " | सुनिषण्णनामानि | " |
| क्षुद्रघोर्लिकागुणा | ८६६ | सुनिषण्णवगुणा | ८७९ |
| चुरुनामानि | " | सुनिषण्णबीजगुणा | " |
| चुरगुणा | ८६७ | मूलवस्थ पत्रशाकगुणा | ८८० |
| मारिपनामानि | " | चम्पकपत्रशाकगुणा | " |
| मारिपगुणा | ८६८ | मुक्कपत्रशाकगुणा | " |
| तण्डुलीपनामानि | " | वरलीनामानि | " |
| कक्षटनामानि | ८६९ | वरलीगुणा | " |
| तण्डुलीपगुणा | " | शतपुष्पापत्रशाकगुणा | ८८१ |
| भस्य पत्रगुणा | ८७० | मेथिकापत्रशाकगुणा | " |
| तण्डुलीपमूलगुणा | " | राजिवापत्रशाकगुणा | " |
| | | सर्षपपत्रशाकगुणा | " |

| विषय | पृष्ठांक | विषय | पृष्ठांक |
|------------------------|----------|--------------------|----------|
| शिशुपत्रशाकगुणा | ८८२ | कर्कटीनामानि | ८९३ |
| दधुपत्रशाकगुणा | " | कर्कटीगुणा | " |
| कासमर्दनामानि | " | भरण्यकर्कटीगुणा | ८९५ |
| कासमर्दपत्रगुणा | ८८३ | तिक्तकर्कटीगुणा | " |
| कौसुम्भशाकगुणा | " | चीनाकर्कटीगुणा | " |
| वर्षाभृशाकगुणा | " | सर्वकर्कटीगुणा | ८९६ |
| गोजिह्वाशाकगुणा | ८८४ | त्रपुपनामानि | " |
| पटोलपत्रगुणा | " | त्रपुपगुणा | ८९७ |
| शुद्धचीपत्रशाकगुणा | " | चिभिटनामानि | ८९८ |
| पपटशाकगुणा | " | मृगेर्षारुनामानि | " |
| सेहुण्डपत्रशाकगुणा | " | चिभिटगुणा | ८९९ |
| यवानीपत्रशाकगुणा | " | चिभिटपुष्पगुणा | " |
| द्रोणपुष्पीपत्रशाकगुणा | ८८५ | मृगाक्षीगुणा | ९०० |
| मृणकपत्रशाकगुणा | " | खर्बूजनामानि | " |
| कलायपत्रशाकगुणा | " | खर्बूजगुणा | ९०१ |
| पुष्पशाकम् | ८८५ | वालिङ्गनामानि | ९०२ |
| भगस्तिपुष्पगुणा | " | कालिङ्गगुणा | ९०३ |
| जीवतीपुष्पशाकगुणा | " | कोशातकीनामानि | ९०४ |
| कदलीपुष्पगुणा | ८८६ | कोशातकीगुणा | ९०५ |
| शिशुपुष्पगुणा | " | महाकोशातकीनामानि | " |
| शाल्मलीपुष्पशाकगुणा | " | महाकोशातकीगुणा | ९०६ |
| वरणपुष्पगुणा | " | तिक्तकोशातकीनामानि | " |
| मधुकपुष्पगुणा | " | तिक्तकोशातकीगुणा | ९०७ |
| कोविदारदिपुष्पशाकगुणा | ८८७ | विचिण्डनामानि | ९०८ |
| फलशाकम् | ८८७ | विचिण्डगुणा | ९०९ |
| कूष्माण्डनामानि | " | पटोलनामानि | " |
| कूष्माण्डकगुणा | " | पटोलगुणा | " |
| पीतकूष्माण्डनामानि | ८८९ | राजपटोलीनामानि | ९१० |
| पीतकूष्माण्डगुणा | ८९० | तिक्तपटोलनामानि | " |
| कूष्माण्डनामगुणाश्च | " | तिक्तपटोलगुणा | ९११ |
| भलाबुनामानि | " | बिम्बीनामानि | ९१२ |
| भलानुगुणा | ८९१ | बिम्बीगुणा | ९१३ |
| वडुतुम्बीनामानि | " | तिक्तबिम्बीनामा | ९१४ |
| वडुतुम्बीगुणा | ९९२ | तिक्तबिम्बीगुणा | " |
| वडुतुम्बीपर्णगुणा | " | वर्षाटकीनामानि | ९१५ |
| | | वर्षाटकीगुणा | " |
| | | वारवेङ्गनामानि | ९१६ |

| विषय | पृष्ठा | विषय | पृष्ठा |
|-----------------------|--------|------------------|--------|
| कारवेष्टीनामानि | ०१७ | मूलकगुणा | १२७ |
| कारवेष्टगुणा | " | चाणक्यमूलकगुणा | " |
| दिण्डिशानामानिगुणाश्च | ०१७ | गजरनामानि | ०२८ |
| पिण्डारगुणा | " | गृध्रननामानि | ०३० |
| भिण्डानामानि | " | पिण्डमूलनामानि | " |
| भिण्डागुणा | ०३० | गर्जरगुणा | " |
| घाताकुनामानि | " | गृध्रनगुणा | ०४० |
| घाताकुगुणा | ०३१ | पिण्डमूलगुणा | " |
| गोराणीनामानि | ०३३ | सूरणनामानि | " |
| गोराणीगुणा | " | सूरणगुणा | ०४१ |
| हरिननिष्पादीनामानि | ०३४ | वनसूरणनामानि | ०४२ |
| शुभ्रनिष्पादीनामानि | " | वनसूरणगुणा | " |
| द्विविधनिष्पादीगुणा | " | रक्तालुनामानि | " |
| शिम्बीनामानि | ०३५ | पिण्डालुनामानि | " |
| कोलशिम्बीनामानि | " | रक्तालुगुणा | ०४३ |
| द्विविधशिम्बीगुणा | ०३६ | आलुगुणा | " |
| कोलशिम्बीगुणा | " | गनकर्णालुनामानि | " |
| दधिपुष्पीनामानि | " | गजरुणालुगुणा | ०४५ |
| दधिपुष्पीगुणा | ०३७ | मुक्तालुनामानि | " |
| सौभाग्यनशिम्बीगुणा | " | मुक्तालुगुणा | " |
| डोहिरानामगुणाश्च | ०३८ | वाक्तालुनामानि | ०४७ |
| मुनिशिम्बीगुणा | " | वाक्तालुगुणा | " |
| शृंगाटननामानि | " | काण्डालुनामानि | " |
| शृंगाटनगुणा | ०३९ | फाटालुगुणा | " |
| अथ नालशाकम् | ०३९ | पानीयालुनामानि | " |
| खर्पनालगुणा | " | पानीयालुगुणा | " |
| शूरणनालगुणा | " | नीलालुनामानि | ०४६ |
| अथ कन्दशाकम् | " | नीलालुगुणा | " |
| रसोननामानि | " | शुभ्रालुनामानि | " |
| रसोनगुणा | ०३१ | शुभ्रालुगुणा | " |
| पलाण्डुनामानि | ०३३ | दक्षिणन्दनामानि | " |
| रानपलाण्डुनामानि | " | दक्षिणन्दगुणा | " |
| पलाण्डुगुणा | ०३४ | घोरानन्दनामानि | ०४९ |
| राजपलाण्डुगुणा | " | घोरानन्दगुणा | " |
| पलाण्डुर्बीजगुणा | ०३५ | वाराहवन्दनामानि | " |
| मूलकनामानि | " | वाराहगुणा | ०४८ |
| चाणक्यमूलकनामानि | " | विष्णुवन्दनामानि | ०४९ |
| | | विष्णुवन्दगुणा | " |

| विषय | पृष्ठांक | विषय | पृष्ठांक |
|-----------------------|----------|--------------------------------|----------|
| धरणीकन्दनामानि | ९४९ | अथ वारिवर्गः । | ९५९ |
| धरणीकन्दगुणा | ९५० | जलनामानि | " |
| नाकुलीकन्दनामानि | " | जलगुणा | ९६० |
| गन्धनाकुलीनामानि | " | धारवादिचतुर्विधजलस्य लक्षणम् | ९६५ |
| द्विविधनाकुलीकन्दगुणा | " | अथ करवा | " |
| मालाकन्दनामानि | " | गुणा | " |
| मालाकन्दगुणा | ९५१ | अथ तौषारलक्षण गुणाश्च | ९६६ |
| विदारिकन्दनामानि | " | अथ हिमजललक्षणम् | ९६७ |
| विदारिकन्दगुणा | " | हिमजलगुणा | " |
| क्षीरविदारीनामानि | " | अथ भौमजलम् | ९६८ |
| क्षीरविदारीगुणा | " | अथाष्टविध जलम् | " |
| चण्डालकन्दनामानि | ९५२ | नदीजलम् | " |
| चण्डालकन्दगुणा | " | अथ गगाजलगुणा | " |
| तैलकन्दनामानि | " | यमुनाजलगुणा | ९७० |
| तैलकन्दगुणा | " | नर्मदाजलगुणा | " |
| त्रिपर्णनामानि | ९५३ | गोदावरीजलगुणा | " |
| त्रिपर्णगुणा | " | कावेरीनदीजलगुणा | " |
| लक्ष्मणकन्दनामानि | " | कृष्णवेणीजलगुणा | " |
| लक्ष्मणकन्दगुणा | " | औद्भिदभूमिगुणा | ९७३ |
| हस्तजोडिनामगुणा | " | औद्भिदजललक्षण गुणाश्च | ९७५ |
| गुच्छकन्दनामानि | " | अथ प्रस्रवणजलस्य लक्षण गुणाश्च | " |
| गुच्छकन्दगुणा | ९५४ | अथ चौण्डस्य लक्षण गुणाश्च | " |
| मानकन्दनामानि | " | अथ कौषाम्पलक्षण गुणाश्च | ९७५ |
| मानकन्दगुणा | " | तडागजलस्य लक्षण गुणाश्च | " |
| श्यालुनामानि | " | सारसलक्षण गुणाश्च | " |
| वाष्पलुनामानि | " | वाय्वलक्षण गुणाश्च | ९७६ |
| सर्वविधश्यालुगुणा | " | पाल्वलस्य लक्षण गुणाश्च | " |
| राजालादिगुणा | ९५५ | विकिरस्य लक्षण गुणाश्च | " |
| वसेरुनामानि | " | वेदारस्य लक्षण गुणाश्च | " |
| द्विविधवसेरुगुणा | ९५६ | वृष्टिजललक्षण गुणाश्च | ९७७ |
| केमुकनामानि | " | क्षारजलगुणा | " |
| केमुकगुणा | ९५७ | समुद्रजलगुणा | " |
| शालमलीकन्दनामानि | " | सद्यन्तुसम्बन्धीयजलगुणा | " |
| शालमलीकन्दगुणा | " | घाषिजलगुणा | " |
| यदलीकन्दगुणा | " | शारदीयजलगुणा | " |
| अथ सस्येदजशावनामानि | ९५८ | हिमन्तिकजलगुणा | ९७८ |
| सस्येदजगुणा | " | शैशिरजलगुणा | " |

| विषय | पृष्ठांक | विषय | पृष्ठांक |
|---------------------------------|----------|---------------------------------|----------|
| वासतिवाजलगुणा | ९७८ | उद्गोदुग्धगुणा | ९९६ |
| मैम्भिकजलगुणा | " | हस्तिनीदुग्धगुणा | " |
| अथ ऋतुपररवे जलगुणा | " | गदभीदुग्धगुणा | " |
| पापोदक० | ९७९ | स्त्रीदुग्धगुणा | ९९७ |
| रोगोदक० | ९८० | अथ दुग्धस्य सात्त्वासात्त्वविधि | १ |
| अशक्त० | " | अथ धारोष्णादिदुग्धगुणा | ९९८ |
| आरोग्योदक० | ९८१ | प्रभातादिभवदुग्धगुणा | " |
| जलग्रहणकाल० | " | समयविशेषे दुग्धसेवनगुणा | ९९९ |
| शीतलगुणा | " | अथ निन्दितदुग्धम् | १००० |
| उष्णोदकलक्षण गुणाश्च | ९८२ | अथ क्षीरसात्त्वम् | १ |
| ऋतुभेदे उष्णजलभेदे | ९८३ | पुंमुपितक्षीरगुणा | १००३ |
| पयुपितजलगुणा | " | अथ पीपुषविलोदक्षीरसात्त्वम् | |
| शुद्धशीतजलगुणा | | पिण्डमोरटातां लक्षणानि | |
| उष्णजलनिषेध | ९८४ | गुणाश्च | |
| शीतलजलनिषेध | ९८५ | क्षीरस्य तानि रागुणा | |
| अधालपजलपानविषया | १ | दण्डाहतक्षीरगुणा | १००३ |
| अथ जलपानविधि | " | गोदुग्धाभिभवपेनगुणा | " |
| अथ जलपानावश्यकता | ९८७ | अथ दधिर्वर्ग | " |
| अथ प्रगस्तजलगुणा | | साधारणदधिगुणा | १००४ |
| अथ निन्दितजलम् | ९८८ | अथ दधिभेदा | १००५ |
| अथ दुष्टजलनिर्दोषीकरणम् | १ | अथ मन्दादीनां लक्षणानि | " |
| सुधाचितजलगुणा | ९८९ | गुणाश्च | " |
| अथ पीतजलपाकविधि | १ | गन्धदधिगुणा | १००६ |
| अथ दुग्धवर्ग | ९८९ | महिषोदधिगुणा | १००७ |
| दुग्धगुणा | ९९० | छागदधिगुणा | " |
| गोदुग्धगुणा | ९९१ | नायिकदधिगुणा | १००८ |
| अथ वर्णविशेषे गुणविशेषा | ९९२ | हस्तिनीदधिगुणा | " |
| अथ घर्मेनीगोदुग्धगुणा | १ | अश्वीदधिगुणा | १००९ |
| अथ देशविशेषे गुणविशेषा | १ | गदभीदधिगुणा | " |
| अथ आहारविशेषे गुणविशेषा | १ | उद्गोदधिगुणा | |
| अथावस्थाविशेषगुणा | ९९३ | मातृपादधिगुणा | १०१० |
| गोदुग्धानां प्रशस्ताप्रशस्तभेदा | " | वार्षिकदधिगुणा | " |
| गोदुग्धग्रहणकालनिषय | " | शारदीयदधिगुणा | " |
| महिषदुग्धगुणा | ९९४ | हेमन्तदधिगुणा | " |
| छागदुग्धगुणा | ९९५ | गोशरदधिगुणा | " |
| मेघदुग्धगुणा | " | वासतिदधिगुणा | " |
| मृतीदुग्धगुणा | १ | मैम्भिकदधिगुणा | १०११ |
| अग्नौदुग्धगुणा | ९९६ | | |

| विषय | पृष्ठांक | विषय | पृष्ठांक |
|-------------------------------|----------|-------------------|----------|
| पक्कदुग्धभेदधियुगा | १०११ | उष्ट्रीनवनीतगुणा | १०२४ |
| निःसारधियुगा | " | स्त्रीनवनीतगुणा | " |
| गालितदधियुगा | " | दुग्धजातनवनीतगुणा | " |
| खितायुक्तदधियुगा | " | नवीननवनीतगुणा | " |
| गुहयुक्तदधियुगा | १०१२ | प्राचीननवनीतगुणा | " |
| दधिभक्षणनिषिद्धता | " | घृतवर्गः | १०२५ |
| अक्रमदधिभक्षणदोषा | " | घृतगुणा | " |
| त्रिकह्वादियुक्तदधियुगा | " | गव्यघृतगुणा | १०२७ |
| सहस्यमस्तुनश्चलक्षणानिगुणाश्च | १०१३ | माहिषघृतगुणा | १०२८ |
| दधिकृन्धिकलक्षण गुणाश्च | " | छागीघृतगुणा | " |
| तक्रवर्गः | १०१३ | मेघाघृतगुणा | " |
| तक्रभेद | १०१४ | हस्तिनीघृतगुणा | १०२९ |
| तैषा गुणा | " | अश्वीघृतगुणा | " |
| अथ पक्कापक्वतक्रगुणा | १०१७ | गर्दभीघृतगुणा | १०३० |
| अथ द्रोणविशेषे व्याधिविशेष च | " | गरुडशफपशुघृतगुणा | " |
| तक्रविशेषा | " | उष्ट्रीघृतगुणा | " |
| अथ तक्रसेवननिमित्तानि | १०१८ | स्त्रीघृतगुणा | " |
| अथ रोगविशेषे तक्रनिषेध | " | हिरण्यवीनघृतगुणा | १०३१ |
| अथ गव्यादीनां तक्राणां विशि- | " | दुग्धोद्भवघृतगुणा | " |
| ष्टागुणा | " | शतधीतघृतगुणा | " |
| गोतक्रगुणा | " | नूतनघृतगुणा | " |
| महिषीतक्रगुणा | १०१९ | पुराणाघृतम् | " |
| छागीतक्रगुणा | " | नूतनघृतविषया | १०३२ |
| आचिरतक्रगुणा | " | मूत्रवर्गः | १०३२ |
| हस्तिनीतक्रगुणा | " | गोमूत्रगुणा | १०३३ |
| अश्वीतक्रगुणा | " | छागीमूत्रगुणा | १०३४ |
| उष्ट्रीतक्रगुणा | १०२० | आतिविकमूत्रगुणा | " |
| गर्दभीतक्रगुणा | " | माहिषमूत्रगुणा | " |
| स्त्रीतक्रगुणा | " | गजमूत्रगुणा | " |
| नवनीतवर्गः | १०२० | अश्वीमूत्रगुणा | १०३५ |
| साधारणनवनीतगुणा | १०२१ | गर्दभीमूत्रगुणा | " |
| गव्यनवनीतगुणा | १०२२ | गोमूत्रगुणा | " |
| महिषीनवनीतगुणा | " | मानुषमूत्रगुणा | " |
| छागीनवनीतगुणा | १०२३ | मूत्रविशेषगुणा | १०२६ |
| आचिरनवनीतगुणा | " | तैलवर्गः | १०३७ |
| हस्तिनीनवनीतगुणा | " | तिलतैलगुणा | १०३८ |
| अश्वीनवनीतगुणा | " | खपपतैलगुणा | १०४० |
| गर्दभीनवनीतगुणा | " | रानिकातैलगुणा | १०४१ |

| विषय | पृष्ठांक | विषय | पृष्ठांक |
|--------------------|----------|-------------------------|----------|
| नुवरीतैलगुणा | १०८१ | अर्कवर्गः | १०५१ |
| अतसीतैलगुणा | " | हरीतकपर्कगुणा | १०५२ |
| कुसुमभैतैलगुणा | १०८२ | विभीतकपर्कगुणा | " |
| गोधूमादितैलगुणा | १०८३ | आमलकपर्कगुणा | " |
| गरुडतैलगुणा | " | नारकपर्कगुणा | " |
| चरित्रतैलगुणा | १०८४ | आद्रवाङ्गगुणा | " |
| इगुदतैलगुणा | १०८५ | पिप्पल्यवैगुणा | " |
| तिम्पतैलगुणा | " | मरीचाङ्गगुणा | " |
| शिशुतैलगुणा | " | पिप्पलीमूलाङ्गगुणा | " |
| ज्योतिष्मतीतैलगुणा | " | चव्याङ्गगुणा | " |
| विभीतकतैलगुणा | १०८६ | गजपिप्पल्यङ्गगुणा | १०५३ |
| हरीतकीतैलगुणा | " | चित्रकाङ्गगुणा | " |
| वोगाक्षतैलगुणा | " | यवान्यङ्गगुणा | " |
| कपूरतैलगुणा | " | अजमोदाङ्गगुणा | " |
| वपुषादितैलगुणा | १०८७ | पारसीकयवान्यङ्गगुणा | " |
| भद्रातकतैलगुणा | " | जंरवाङ्गगुणा | " |
| त्रिभूतैलगुणा | " | कृष्णजोरकाङ्गगुणा | " |
| देवदासतैलगुणा | " | कारवोजोरकाङ्गगुणा | " |
| रालतैलगुणा | " | धायकाङ्गगुणा | " |
| आम्रतैलगुणा | १०८८ | शतपुष्पाङ्गगुणा | १०५४ |
| मधूकतैलगुणा | " | मिथेयाङ्गगुणा | " |
| वदातैलगुणा | " | ज्वालामरिचाङ्गगुणा | " |
| अफोरातैलगुणा | " | मेयिकाङ्गगुणा | " |
| वतीतैलगुणा | " | सनमैधिकाङ्गगुणा | " |
| पुत्रजीयकतैलगुणा | " | चन्द्रसूराङ्गगुणा | " |
| आयमाणतैलगुणा | १०४९ | हिमवाङ्गगुणा | " |
| शरिर्नातैलगुणा | " | वचाङ्गगुणा | " |
| गुग्गुतैलगुणा | " | पारसीकवचाङ्गगुणा | " |
| वपित्ततैलगुणा | " | कुष्ठिभनाङ्गगुणा | १०५५ |
| खसखसतैलगुणा | " | स्फुल्लग्रनियचकाङ्गगुणा | " |
| नारिकेलतैलगुणा | " | दीपातरपत्राङ्गगुणा | " |
| पीलुतैलगुणा | " | हपुषाङ्गगुणा | " |
| शिशपादितैलगुणा | १०५० | कुट्टहपुषाङ्गगुणा | " |
| पृथ्वीवादितैलगुणा | " | विहङ्गाङ्गगुणा | " |
| अषगाहनपुक्ततैलगुणा | " | सुम्पुशेरङ्गगुणा | " |
| शिरचितैलमदनगुणा | १०५१ | धमलोचनाङ्गगुणा | " |
| मणतैलपूरणगुणा | " | समुद्रफनाङ्गगुणा | " |
| मदने तैलगुणा | " | जीवकाङ्गगुणा | १०५६ |
| | | कृष्णभङ्गाङ्गगुणा | " |
| | | मेदाङ्गगुणा | " |

| विषय | पृष्ठांक | विषय | पृष्ठांक |
|-------------------|----------|-------------------|----------|
| महामेदावगुणा | १०५५ | बृहत्पत्रार्थगुणा | १०६० |
| काकोल्यवगुणा | " | भल्लातकावगुणा | " |
| क्षीरकाकोल्यवगुणा | " | गुहृच्यवगुणा | " |
| क्रुद्रचवगुणा | " | विल्वार्थगुणा | " |
| वृद्धचवगुणा | १०५६ | काश्यपवगुणा | १०६१ |
| मधुकावगुणा | " | पाटलावगुणा | " |
| जलमधुपट्टचक्रगुणा | १०५७ | अमिमन्थावगुणा | " |
| कापिल्लार्थगुणा | " | शोनावगुणा | " |
| आरग्वधावगुणा | " | शालपण्यवगुणा | " |
| भूनिम्बावगुणा | " | पृश्निपण्यवगुणा | " |
| वत्सावगुणा | " | बृहत्पत्रार्थगुणा | " |
| मदनफलवगुणा | " | श्वेतकण्टकावगुणा | " |
| रास्नावगुणा | " | कण्टकावगुणा | १०६२ |
| नागभिन्नार्थगुणा | " | गोक्षुरार्थगुणा | " |
| माचिरावगुणा | " | जीवन्त्यवगुणा | " |
| तेजस्विन्यवगुणा | १०५८ | सुद्वपण्यवगुणा | " |
| ज्योतिष्मत्यवगुणा | " | मापपण्यवगुणा | " |
| कुष्ठावगुणा | " | श्वेतरण्डावगुणा | " |
| पौष्करावगुणा | " | रक्तरण्डावगुणा | " |
| क्षीरिण्यवगुणा | " | मन्दावगुणा | " |
| भृगवगुणा | " | अवयवगुणा | " |
| कड्ढावगुणा | " | वश्यवगुणा | १०६३ |
| भागवगुणा | " | सातलार्थगुणा | " |
| पापाणभेद्यवगुणा | १०५९ | लागल्यवगुणा | " |
| धातव्यवगुणा | " | श्वेतकरवीरावगुणा | " |
| समझावगुणा | " | रक्तकरवीरावगुणा | " |
| कुसुम्भावगुणा | " | धनूरबीजावगुणा | " |
| लाक्षावगुणा | " | घासावगुणा | " |
| हरिद्रावगुणा | " | पपटार्थगुणा | " |
| आरण्यहरिद्रावगुणा | " | निम्बावगुणा | " |
| कपूरहरिद्रावगुणा | " | महानिम्बावगुणा | १०६४ |
| दारुहरिद्रावगुणा | " | पारिमद्रावगुणा | " |
| रसाक्षनावगुणा | १०६० | वाचनारावगुणा | " |
| अवन्गुजावगुणा | " | कोविदारवगुणा | " |
| चक्रमद्गावगुणा | " | रक्तशोभाजनावगुणा | " |
| अतिविषावगुणा | " | श्वेतशोभाजनावगुणा | " |
| लोभावगुणा | " | गिष्ठजावगुणा | " |
| | | गिरिवर्ण्यवगुणा | " |
| | | सिन्धुवायवगुणा | " |

| विषय | पृष्ठं | विषय | पृष्ठं |
|------------------------|--------|-----------------------|--------|
| निर्गुणद्वयकगुणा | १०६४ | वाचमाच्यवर्गगुणा | १०६५ |
| कुटुम्भार्थगुणा | १०६५ | काचनासाधर्गगुणा | " |
| वरजाकगुणा | " | प्राज्ञघातगुणा | " |
| धृतकरजाकगुणा | " | नागादायगुणा | " |
| गुजाकगुणा | " | भेषमृग्यवर्गगुणा | " |
| श्वेतगुभाकगुणा | " | हृत्पयवगुणा | " |
| रक्तगुजाकगुणा | " | सोमवह्म्यवर्गगुणा | " |
| शुक्राशिम्यवर्गगुणा | " | शावागधल्लयवर्गगुणा | १ |
| मोक्षरोहिण्यवर्गगुणा | " | पातागगददायगुणा | १०७० |
| चिलह्वारगुणा | " | वदाकार्यगुणा | " |
| श्वेतसावगुणा | १०६६ | वटपत्राकगुणा | " |
| जलश्वेतमात्रगुणा | " | हिगुपम्परगुणा | " |
| हिजलार्थगुणा | " | घशपम्परगुणा | " |
| अकोटावगुणा | " | मत्स्यादयवगुणा | " |
| बलावर्गगुणा | " | सपाक्ष्यवर्गगुणा | " |
| अतिथगार्थगुणा | " | अल्पपुष्पवर्गगुणा | " |
| लक्ष्मणामूर्तिवर्गगुणा | " | अकपुष्पावर्गगुणा | " |
| स्वर्णवह्म्यवर्गगुणा | " | लज्जालुवाकगुणा | १०७१ |
| वापाक्ष्यगुणा | " | अलम्बुपावर्गगुणा | " |
| वशावर्गगुणा | १०६७ | दुग्धिवार्गगुणा | " |
| नटाकगुणा | " | प्राक्ष्यवर्गगुणा | " |
| पादवर्गगुणा | " | ब्राह्मणकृष्णवर्गगुणा | " |
| शस्त्राकगुणा | " | द्रोणपुष्पगुणा | " |
| दुराभाकगुणा | " | स्यमुत्पवर्गगुणा | " |
| मुदघर्गगुणा | " | वग्भ्यावर्गगुणा | " |
| अपामार्गगुणा | " | भाक्किटकावर्गगुणा | १०७२ |
| रक्तापामार्गगुणा | " | देवदान्यवर्गगुणा | " |
| कोविलाक्षार्थगुणा | " | धन्वावर्गगुणा | " |
| गच्छिषहारीवर्गगुणा | १०६८ | गोजिह्वावर्गगुणा | " |
| कुमार्यवर्गगुणा | " | नागपुष्पवर्गगुणा | " |
| पुननवर्गगुणा | " | बिल्वतयर्गगुणा | " |
| रक्तपुननवर्गगुणा | " | टिक्तपुष्पगुणा | " |
| मसार्णवर्गगुणा | " | कुङ्कुमावर्गगुणा | " |
| शास्त्रिवर्गगुणा | " | सुदर्भतावर्गगुणा | १०७३ |
| भृगराजावर्गगुणा | " | मधुयर्ग | १०७४ |
| शणपुष्पवर्गगुणा | " | मधुनामानि | " |
| सायवर्गगुणा | " | मधुनामावर्गगुणा | " |
| सूर्यवर्गगुणा | " | | |

| विषय | पृष्ठाक | विषय | पृष्ठाक |
|-------------------------------|---------|------------------------------|---------|
| मधुजातिभेदा | १०७५ | नूतनगुडगुणा | १०८५ |
| नवपुराणमधुगुणा | १०७६ | खण्डनामानि | १०८७ |
| पद्मापद्ममधुगुणा | १०७७ | खण्डगुणा | " |
| मधुन शीतस्वगुणाधिक्यम् | " | गुडखण्डगुणा | १०८८ |
| सिक्त्यकनामानि | " | शर्करानामानि | " |
| सिक्त्यकगुणा | " | शर्करागुणा | १०८९ |
| इक्षुवर्गः | १०७८ | लसीकादीनामुत्तरोत्तरनिर्मला- | |
| इक्षुनामानि | | दीनागुडवत्त्वमाह | १०९० |
| इक्षुसाधारणगुणा | १०७९ | याचना २ शर्करानामानिगुणाश्च | " |
| सितेक्षुगुणा | " | यवासशर्करागुणा | १०९१ |
| कृष्णेक्षुगुणा | " | मधुशर्करागुणा | " |
| रक्तेक्षुगुणा | " | पुष्पशर्करागुणा | १०९२ |
| पौण्ड्रकमीरुक्तयोर्गुणा | १०८० | सन्धानवर्गः | १०९२ |
| कोशकारगुणा | " | काजिकनामानि | " |
| का तारेक्षुगुणा | " | काजिकलक्षणगुणाश्च | " |
| दीपपोरवशक्तयोगुणा | " | काजिकविशेषगुणा | १०९३ |
| शतपोरकगुणा | " | तुपोदकलक्षणगुणाश्च | १०९४ |
| मनोगुमागुणा | १०८१ | सौवीरनामानि | " |
| तापसेक्षुगुणा | " | सौवीरलक्षणगुणाश्च | १०९५ |
| वाण्डेक्षुगुणा | " | भारनाललक्षणगुणाश्च | " |
| सूचीपत्रनैपालीदीर्घपत्रनीलपो- | | भारनालकगुणा | " |
| राणां गुणा | " | धान्याम्ललक्षणगुणाश्च | १०९६ |
| इक्षुमूलादिगुणा | " | शिण्डाकीलक्षणगुणाश्च | " |
| बालयुवावृद्धेक्षुगुणा | " | शुक्ललक्षण गुणाश्च | " |
| दत्तनिर्षीदितेक्षुरसगुणा | १०८२ | सन्धानलक्षणगुणाश्च | " |
| यन्त्रनिर्षीदितेक्षुरसगुणा | " | मद्यनामानि | १०९७ |
| पशुपितेक्षुरसगुणा | १०८३ | साधारणमदिरागुणा | " |
| इक्षुपक्षरसगुणा | " | भरिष्टलक्षणगुणाश्च | १०९९ |
| इक्षुविशेषगुणा | " | सुरालक्षणगुणाश्च | " |
| इक्षुरसविकाराणां गुणा | " | सारणीलक्षणगुणाश्च | " |
| फाणितलक्षणगुणाश्च | १०८४ | सीधुरलक्षणगुणाश्च | ११०० |
| मात्स्यहीलक्षणगुणाश्च | " | गौडीमदिरागुणा | ११०१ |
| गुडनामानि | " | माध्वीकमद्यगुणा | " |
| गुडलक्षणम् | " | पैटीमद्यगुणा | ११०२ |
| गुडगुणा | १०८५ | इक्षुभवमद्यगुणा | " |
| पुगतनगुडगुणा | " | सर्ववृक्षभवमद्यगुणा | " |

| विषय | पृष्ठाङ्क | विषय | पृष्ठाङ्क |
|-------------------------|-----------|------------------------|-----------|
| द्राक्षामद्यगुणा | ११०० | अधोपघिपात्रयम् | १११० |
| राजूरमद्यगुणा | ११०१ | चतुरूपणम् | " |
| तालमद्यगुणा | " | चतुर्जातरम् | " |
| आम्रवटक्षणा गुणाश्च | " | उदुचतुर्जातरम् | ११११ |
| सुराम्रमद्यगुणा | " | चातुर्भद्रयम् | " |
| गुड्रासवद्यगुणा | ११०२ | चतुर्वीजम् | " |
| मध्यासवद्यगुणा | " | चातुर्विधगण | " |
| द्राक्षामद्यगुणा | " | पलाचतुष्टयम् | " |
| शकरासवद्यगुणा | " | फट्टमयिचतुष्टयम् | १११५ |
| जाम्बयासवद्यगुणा | " | पञ्चकोलम् | " |
| मैरेयमद्यगुणा | ११०५ | द्वितीयपञ्चकोलम् | " |
| नवीनमद्यगुणा | " | पञ्चावक् | १११६ |
| मार्चानमद्यगुणा | " | पञ्चपद्मवा | " |
| विधियुक्तमद्यपानगुणा | " | पञ्चांगम् | १११७ |
| सुराम्रपागविधि | ११०६ | निम्बपञ्चांगम् | " |
| अयमद्याना गन्धनाशनोपायः | " | अस्पृष्टगुणा | " |
| सूर्यावर्गः | ११०७ | शात्पञ्चयम् | १११८ |
| शारययम् | " | लघणपञ्चकम् | " |
| लघणत्रयम् | " | लघुपञ्चमूलम् | " |
| त्रिषट् | ११०८ | महापञ्चमूलम् | " |
| चतुष्टयम् | " | मध्यमपञ्चमूलम् | १११९ |
| त्रिकला | " | बालात्पञ्चमूलम् | " |
| त्रिकलागुणा | " | जीवनपञ्चमूलम् | " |
| मधुरात्रिषट् | ११०९ | वृणपञ्चमूलम् | ११२० |
| सुगंधत्रिषट् | " | गोधुमादिपञ्चमूलम् | " |
| सुगंधत्रिषट्गुणा | " | पञ्चमहाविषाणि | ११२१ |
| विस्तुगधि | १११० | पञ्चोपविषाणि | " |
| मधुरत्रयम् | " | पञ्चगव्यम् | " |
| विषमम् | ११११ | पञ्चमादिपम् | " |
| त्रिषट्पिष्टा | " | सुगन्धपञ्चकम् | ११२२ |
| त्रिस्तिता | १११२ | अमृतपञ्चकम् | " |
| त्रिषट्कम् | " | द्वितीयपञ्चगव्यपञ्चकम् | " |
| नग्नपञ्चकम् | " | पञ्चगव्यम् | ११२३ |
| वष्टवारीयम् | " | पञ्चसमम् | " |
| प्रिलोहम् | १११३ | द्वितीयपञ्चसमम् | " |
| अम्रनत्रयम् | " | पञ्चांगहरे | " |

| विषय | पृष्ठाक | विषय | पृष्ठाक |
|---------------------|---------|-----------------------------------|---------|
| पञ्चभृगम् | ११२३ | उत्तरार्द्ध । | |
| पञ्चभूवम् | " | मंगलाचरण | ११३३ |
| पञ्चबीजम् | ११२४ | अनूपादिवर्गः | ११३३ |
| पञ्चसिद्धौषधी | " | अनूपदेशमालक्षण | " |
| पञ्चरत्नानि | " | जांगलदेशकालक्षण | ११३४ |
| पञ्चसूत्राणा | " | साधारणदेशकालक्षण | ११३५ |
| पञ्चपित्तानि | ११२५ | अथक्षेत्रभेदा | " |
| औषधीपञ्चामृतम् | " | ब्राह्मक्षेत्रकालक्षण | ११३६ |
| पञ्चामृतम् | " | क्षेत्रक्षेत्र | " |
| पद्मरसा | " | वैष्णवक्षेत्र | " |
| क्षारपट्टकम् | " | शुद्धक्षेत्र | " |
| पद्मपणम् | ११२६ | चतुर्विधक्षेत्रोद्भवद्रव्यगुणा | ११३७ |
| सुगन्धपट्टकम् | " | पार्थिवक्षेत्र | " |
| महासुगन्धपट्टकम् | " | आप्यक्षेत्र | " |
| प्राणकरपट्टकम् | " | तैजसक्षेत्र | ११३८ |
| सप्तोषधियाणि | ११२७ | वायवीयक्षेत्र | " |
| प्राणहरपट्टकम् | " | आन्तरिक्षक्षेत्र | " |
| शरीरस्थसप्तधातव | " | पञ्चविधक्षेत्रोद्भवद्रव्यगुणा | " |
| सुवर्णादिसप्तधातव | " | पञ्चक्षेत्राके देवता | ११३९ |
| शरीरस्थधातुद्भवधातव | ११२८ | वृक्षोत्पत्ति | " |
| सप्तोषधातव | " | वृक्षावे ब्राह्मणादि भेद | " |
| सप्तसन्तर्पणम् | " | तल्लक्षणाणि | " |
| सप्तविधकृषि | " | ब्राह्मणादि वृक्षाको योजनेकी | |
| सप्तोपरत्नानि | ११२९ | विधि | ११४० |
| अष्टधातव | " | अथौषधिनिर्णयश्चतुर्विध | " |
| अष्टविधचिकित्सा | ११३० | तच्चतुर्विध यथा | " |
| अष्टगथा | " | जगमद्रव्य | " |
| अष्टवर्गा | " | पार्थिवद्रव्य | ११४१ |
| अष्टवर्गप्रतिनिधय | ११३१ | औद्भिद्रव्यम् | " |
| अष्टमगलपुत्रम् | " | अथ वृक्षादीनां पुस्तवादिव्ययनम् | ११४२ |
| नवधातव | " | वृक्षादीनां क्षुत्पिपासादिव्ययनम् | " |
| नवरत्नानि | " | वृक्षादीनापञ्चभूतात्मकत्वव्ययं | ११४३ |
| क्षारदशत्रयम् | " | वृक्षादीनापरापयार | " |
| दशागधूष | ११३२ | अथनक्षत्रवृक्षा | ११४५ |
| दशामूलम् | " | औषधिलेनेममुद्भूतविचार | ११४६ |
| दशभूषम् | " | औषधिलेनेत्रीविधि | " |
| | | औषधिग्रहणमंत्र | ११४७ |

| विषय | पृष्ठ | विषय | पृष्ठ |
|--------------------------------|-------|------------------------|-------|
| औषधिउत्पादनेकी विधि | ११४७ | जिह्वालेखनगुणा | ११७६ |
| दुष्टऔषधि | " | चक्षुर्धावनविधि | " |
| औषधसंग्रह अथवा रखनेकीविधि | ११४८ | गण्डरूपगुणा | " |
| द्रव्यलक्षण | ११५० | मुखमदालनगुणा | ११७७ |
| स्वभावसंश्लेष | ११५१ | भजनधारणगुणमाह | " |
| स्वभावसंश्लेष | ११५२ | वंकतीगुणा | " |
| उपयोगविरुद्ध | " | उष्णीषधारणगुणा | " |
| औषधिलेनेम सङ्केत | ११५४ | रमधुनस्तादिच्छदनगुणा | ११७८ |
| प्रतिनिधि | " | मभासदृष्ट्या | " |
| द्रव्यातनंतपदार्थ | ११५७ | अग्निसेवनगुणा | " |
| मधुररसवाचर्णन | ११५९ | धूमदिनगुणा | " |
| अम्लरसवाचर्णन | ११६० | शिशिरगुणा | ११७९ |
| लवणरसवाचर्णन | ११६१ | कुम्भटिगुणा | " |
| तिक्तरसवाचर्णन | " | छत्रगुणमाह | " |
| कटुस्वभावर्णन | ११६२ | वृष्टिगुणमाह | " |
| तपायस्वभावर्णन | ११६३ | भातपगुणमाह | " |
| अथद्रव्यरस | ११६४ | छायागुणमाह | " |
| मिश्रितगुणरे ६३ भेद | ११६५ | यष्टिधारणगुणमाह | ११८० |
| रत्नाके ६३ भेदजाननेकेलिये यत्र | ११६६ | व्यायामगुणा | " |
| मिश्रगुण | ११६७ | भयमर्दनगुणानाह | ११८१ |
| परस्परविरुद्धरस | " | शरीरपथनगुणानाह | " |
| अथगुणा | " | पथभ्रमणगुणानाह | " |
| अथगुणप्रस्तावादीपनादयोगुणा | १६८ | अतिभ्रमणगुणा | ११८३ |
| अथवीथ | ११७१ | पादुयाधारणगुणा | " |
| उष्णशीतवीथपागुणमाह | " | अधारणेनोपोषया | " |
| रसानांवीथभेदमाह | ११७२ | हस्त्यादिगमनगुणा | " |
| अथविषा | " | विभ्रामगुणा | ११८४ |
| प्रभाव | ११७३ | पादमदालनगुणा | " |
| मिश्रवर्गः | ११७३ | प्राग्धातुगुणमाह | " |
| पादमार्गमार्गाणांशौचगुणा | ११७४ | आग्नेयपवनगुणा | " |
| उष्णपातगुणा | " | दक्षिणमादकगुणा | ११८५ |
| माधिरपाजलपातगुणा | " | नेत्ररूपमादकगुणा | " |
| दन्तपादनविधि | ११७५ | पश्चिमपवनगुणा | " |
| निषिद्धपा | " | वायव्यपवनगुणा | ११८६ |
| दन्तपादनेन्दुनिगध | " | उत्तरपातगुणा | " |
| दन्तराष्ट्रपयहागनिषिद्धता | " | पेशानपातगुणा | " |
| | | नोदारादिस्तुम्भपातगुणा | ११८७ |

| विषय | पृष्ठांक | विषय | पृष्ठांक |
|---------------------------------|----------|-------------------------------|----------|
| विश्ववायुगुणा | ११८७ | भोजनान्तेउपवेशनादिगुणा | ११९६ |
| व्यजनानिलगुणा | " | ताम्बूलगुणा | " |
| सालपत्रवायुगुणा | " | पूगफलगुणा | ११९७ |
| वशव्यजनवायुगुणा | " | ताम्बूलपत्रगुणा | " |
| उगीरमूलादिव्यजनगुणा | ११८८ | पणमूलादिगुणा | " |
| घालव्यजनवायुगुणा | " | चूर्णगुणा | " |
| मयूरपक्षादिनिर्मितव्यजनवायुगुणा | " | शखचूर्णगुणा | ११९८ |
| ऋतुविशेषे वायुगुणा | " | खदिरगुणा | " |
| अभ्यगगुणा | ११८९ | परागुणा | " |
| पादाम्भगगुणा | " | लवणगुणा | " |
| अभ्यगवर्जितजना | " | जातीफलगुणा | " |
| अवगाहनयुक्ततैलगुणा | " | जातीकोपगुणा | " |
| तैलमर्दनविधि | ११९० | कर्पूरगुणा | " |
| शिरसितैलमदनगुणा | " | पूगस्यबालमध्यादिभेदेनगुणमाह | " |
| घणतैलपूरणगुणा | " | ताम्बूलभक्षणनिषिद्धता | ११९० |
| उद्धर्तनगुणा | " | ताम्बूलस्यानुपयोगगुणा | " |
| मुखमलेपगुणा | ११९१ | अध्ययनादिगुणा | " |
| अथस्नानगुणमाह | " | बुद्धिगुणमाह | " |
| उष्णाम्बुनाम्नानगुणमाह | " | सद्योमासादिगुणा | " |
| द्रव्यविशेषेणस्नानगुणमाह | ११९२ | पूतिमासादिगुणा | १२०० |
| स्नानस्यविशेषगुणमाह | " | वयोभेदेनारीणाबालादिवयनम् | " |
| स्नाननिषिद्धजना | " | बालादिस्त्रीससर्गगुणा | " |
| शरीरमाजनगुणा | " | बालादिभेदेमैथुनकालनिणय | " |
| वस्त्रधारणगुणा | " | मैथुननिषिद्धता | " |
| रत्नाभरणधारणगुणा | ११९३ | मैथुनकालनिणय | १२०१ |
| गुवादेरचनगुणा | " | अतिमैथुनगुणा | " |
| दपणगुणा | " | सन्तानोत्पत्तिकालनिर्दिष्टमाह | " |
| अनुलेपनगुणा | ११९४ | मुखशय्यासनगुणा | " |
| पुष्पादिधारणगुणा | " | भूमिशय्यागुणा | " |
| भोजनादौलवणाद्रव्यादिभक्षणगुणा | " | खट्वापटशय्ययोगगुणमाह | १२०२ |
| क्रमादन्नादीनागुणाधिक्यमाह | ११९५ | ज्योत्स्नागुणा | " |
| आहारगुणा | " | अध्वजारगुणा | " |
| आहारेदिङ्गनिणय | " | मैथुनगुणा | " |
| भक्षणविषयेअन्नादीनापरिमाणमाह | " | अतिमैथुनगुणा | " |
| आचमनगुणा | " | मैथुनारणगुणा | " |
| भोजनातेकन्यता | ११९६ | परिमितमैथुनगुणा | " |

| विषय | पृष्ठांश | विषय | पृष्ठांश |
|-------------------------------|----------|----------------------|----------|
| निद्रागुणा | १२०२ | उष्ट्ररुद्रगुणा | १२१५ |
| रात्रिजागरणद्विवास्वप्नयोगुणा | १२०३ | नक्षत्रजयनामानि | " |
| हेमन्तशिशिरकृत्यानि | " | नक्षत्रजयगुणा | १२२६ |
| वसन्तकृत्यम् | १२०५ | अधपुष्पीनामानि | " |
| ग्रीष्मकृत्यम् | १२०६ | अधपुष्पीगुणा | १२२७ |
| वर्षाकृत्यम् | " | दण्डोत्पलनामानि | " |
| शरत्कृत्यम् | १२०७ | त्रिविधदण्डोत्पलगुणा | " |
| अथ ग्रन्थस्तुर्वगवर्णनम् | १२०८ | रुदन्तीनामानि | १२२८ |
| परिशिष्टभाग | १२१२ | रुदन्तीगुणा | " |
| मायाफलनामानि | " | चिरपोडानामानि | " |
| मायाफलगुणा | " | चिरपोडागुणा | १२२९ |
| समुद्रफलनामानि | १२१३ | कुण्डिनानामानि | " |
| समुद्रफलगुणा | " | कुण्डिवागुणा | " |
| प्रह्लादहीनामानि | १२१४ | कुम्भिकानामानि | १२३० |
| प्रह्लादगुणा | " | कुम्भिकगुणा | " |
| रवटर्चीनीनामानि | १२१५ | शैवालनामानि | १२३१ |
| रवटर्चीनीगुणा | " | शैवालगुणा | " |
| चादनामानि | १२१६ | अत्यम्लपर्णनामानि | " |
| चादगुणा | १२१७ | अत्यम्लपर्णगुणा | १२३२ |
| तमासुनामानि | " | मगशत्रनामानि | " |
| तमासुगुणा | १२१८ | मराग्नगुणा | " |
| ईषद्गोलनामानि | " | मयादघदीनामानि | १२३३ |
| ईषद्गोलगुणा | " | मयादघदीगुणा | " |
| सुधामालीनामानि | १२१९ | सिद्धनामानि | १२३४ |
| सुधामालीगुणा | " | सिद्धगुणा | " |
| रक्तमरिचनामानि | " | अथर्चरनामानि | " |
| रक्तमरिचगुणा | १२२१ | अथर्चरगुणा | १२३५ |
| घनकुलत्पनामानि | " | वयारीनामानि | " |
| घनकुलत्पगुणा | " | वयारीगुणा | " |
| महाराष्ट्रीनामानि | १२२२ | भारिनामानि | १२३६ |
| महाराष्ट्रीगुणा | " | भारिगुणा | " |
| गीटमारीनामानि | १२२३ | अमररुद्रनामानि | १२३७ |
| गीटमारीगुणा | " | अमररुद्रगुणा | " |
| मयैन्द्रनामानि | " | अमगधानामानि | १२३८ |
| खपयैन्द्रगुणा | १२२४ | अमगधानगुणा | " |
| उष्ट्ररुद्रनामानि | " | वृद्धनामानि | " |
| | | वृद्धगुणा | " |

| विषय | पृष्ठांक | विषय | पृष्ठांक |
|----------------------|----------|--------------------------|----------|
| द्विविधवृद्धदारुगुणा | १२३९ | क्षुद्रवादात्मनामगुणाश्च | १२४८ |
| समुद्रशोषगुणा | " | काम्बोजीनामगुणाश्च | " |
| समुद्रपुष्पगुणा | " | निर्विषीनामानि | १२४९ |
| फजिकानामगुणाश्च | १२४० | अस्यागुणा | " |
| वेष्टतरुनामानि | " | नागजिह्वानामगुणाश्च | १२५० |
| वेष्टतरुगुणा | " | माकन्डीनामानि | " |
| चर्वटनामानि | १२४१ | अस्यागुणा | १२५१ |
| ककटगुणा | " | सुष्ठुपुष्पनामगुणाश्च | " |
| किंकिणीनामानि | १२४२ | आखराणीनामगुणाश्च | १२५२ |
| किंकिणीगुणा | " | प्रायुकनामगुणाश्च | " |
| गोरक्षीनामानि | १२४३ | राजाट्टिनामगुणाश्च | १२५३ |
| गोरक्षीगुणा | " | अस्यागुणा | " |
| पातालतुम्बीनामानि | " | सप्तपुत्रीनामानि | " |
| भूतुम्बीगुणा | १२४४ | अस्यागुणा | १२५४ |
| हेरषनामानि | " | वनपत्तानामानि | " |
| हेरषगुणा | " | अस्यागुणा | " |
| वृश्चिकानामानि | १२४५ | शालुकनामगुणाश्च | १२५५ |
| वृश्चिकागुणा | " | अस्यागुणा | " |
| नुवरनामानि | " | पुष्पगोभीनामानि | " |
| नुवरगुणा | १२४६ | अस्यागुणा | " |
| गरण्डचिभिडनामानि | " | पुवगोभीगुणा | १२५६ |
| गरण्डचिभिडगुणा | १२४७ | अस्यागोभीगुणा | " |

इति



श्रीः ।

शालिग्रामनिघण्टुधूपणकी अकरादिक्रमसे हिन्दी- अनुक्रमणिका ।



| विषय | पृष्ठार | विषय | पृष्ठांक |
|-----------------|----------|-------------|----------|
| अकरकरा | १५५ | अपराजिता | ३३९ |
| अकरोट | ६०६ | अपामार्ग | ४१३ |
| अगर | ३३ | अफीम | २३१ |
| अगस्तिषा | ५२३ | अधर | ७४० |
| अगेपु | .. ३६८ | अमरचेल | ४४८ |
| अग्निदमन | ५२८ | अमरुद | ५७४ |
| अक्षो | २५० | अमलतास | १७५ |
| अगरापन | २५५ | अमलवृक्ष | ५९३ |
| अंगुर | ६४३ | अमृतफल .. | ५३४ |
| अजरुणशाल | ६६६ | अम्बाडा | ५५० |
| अजघा (म) घन | १३२ | अम्लघाटीपान | ३५५ |
| अजमोद | १३३ | अरणी | २६७ |
| अचन | .. ७३३ | अरण्ट | ३९१ |
| अर्जर | ६३४ | अरु | ३७० |
| अट्टला | ३१३ | अरदर | ८३७ |
| अट्टहर | ८३७ | अरिमेद | ६३३ |
| अण्ट | २९३ | अरिष्टर | ६३८ |
| अण्ट गरवृजा | १३४६ | अकपुष्पी | ४५५ |
| अतिचला | ३५४ | अयचम | १०५१ |
| अतीस | ३१९ | अर्जक | ५३९ |
| आयम्लपर्णी | १३३१ | अर्जुन | ६६८ |
| अवगग | .. १११ | अलम्बुषा | ४०८ |
| अनन्तमूल | ४३० | अल्मी | ८४१ |
| अनघाग | ६३ | अष्टावृ | ८९० |
| अनार | ५१४ | अषरफ | ७४० |
| आरूपादिगम | ११३३ | अशाख | ५१० |
| आशाहली | ४५५-१३२६ | अश्वपण | ६६५ |
| अन्नदशकी सुपारी | ६०८ | | |

| विषय | पृष्ठांक | विषय | पृष्ठांक |
|--------------|----------|---------|----------|
| असगंध | ३८८ | उदुम्बर | ६५७ |
| असन | ६७० | उपजाती | ४८४ |
| असवरग | ८८ | उपविष | ८०७ |
| अष्टवर्ग | १७० | उपोदवी | ८७२ |
| आक | २९६ | उशीर | ६६ |
| आकाशवेल | ४४८ | ऊख | १०७८ |
| आकाशमासी | ६१ | ऊखलू ठण | ३७३ |
| आयूपायण | ८०६ | ऊटकटीरा | १२३४ |
| आतसीसीसा | ७९३ | ऊट्टि | १६७ |
| आदित्यपत्रा | ४६७ | ऊबभक | १६४ |
| आदित्यभक्ता | ४६५ | एकवीर | ११३४ |
| आम | ५४३ | एकांगी | ८६ |
| आमडा | ५५० | एनोना | ६३३ |
| आमला | १०७ | एरकाटण | ३६७ |
| अम्बिया हलदी | २१० | एरण्ड | २९१ |
| आरग्वध | १७५ | एरवारु | ८९३ |
| आरी | १३३६ | एला | ४९ |
| आलुवी | ९४३ | एलुभा | ८१ |
| आलू | ९४३ | एलुवा | ४३० |
| आलू बुखारा | ५८९ | ओखराणी | १३५३ |
| आसन | ६७० | ओगा | ४१३ |
| इगुदी | ७३० | ओट | ५०१ |
| इन्द्रजी | १८३ | ओडहुल | ५२० |
| इन्द्रायन | ४०३ | ओल | ९४० |
| इमली | ५८६ | ओझिदनोन | २४४ |
| इलायची | ४९ | ओपाहुली | १३३६ |
| इम्पात | ७२१ | ओपरनोन | ३४४ |
| इक्षुदभ | ३७३ | कऊच | ३४३ |
| इक्षुग | १०७८ | कवही | ८०३ |
| इक्षुबिमार | १०८३ | कफरादा | ४७७ |
| इर | १०७८ | कहिया | ८५४ |
| ईश्वरलिंगी | ४३८ | कवोडा | ०१५ |
| इसबगोल | १२१८ | ककुष्ठ | ७६० |
| उटगण | ८३८ | कडोए | ७२ |
| उदद | ८२६ | कगुनी | ८५३ |
| उदयभास्वरचूर | ५ | कधी | ३५४ |

| विषय | पृष्ठाङ्क | विषय | पृष्ठाङ्क |
|---------------|-----------|--------------------|-----------|
| उचनार | ३३३ | यग्या | ६७३ |
| वचाराया | ८०० | यदारी | ७७३ |
| वचियानोन | ३४३ | यग्यविन्द | ९७३ |
| वचुर | ८३ | यहू | ८०० |
| वचुर भेद | ३११ | यदूम | ७०३ |
| वअ | ७९७ | यनरधतुरा | ३११ |
| वश्रट शाव | ८६९ | यनेर | ३०७ |
| वज्जुमा | ३३५ | यतार इय | १०८० |
| कटर्भा | ७०० | यन्यारी | १०३५ |
| कटसरमा | ५१३ | यन्द | १०८८ |
| कटदर | ५०४ | यन्दगिलोय | ३५३ |
| कटाई | ३७५ | यन्दुर्गा | ०१३ |
| कटीधान्य | ८५८ | यन्नार्नाबू | ७८१ |
| कटीछानोन | ३४१ | कपदक | ७७ |
| कटुकी | १७३ | कपास | ३७८ |
| कट्टी | २७८ | कपिरथ | ६१७ |
| कट्टिया | ३७८ | कपिलप्रासा | ६४३ |
| कट्टकल | १०७ | कपिलशिखपा | ६६३ |
| कटपाडर | ३६५ | कपुर | १ |
| कठपुद्गला | ४०६ | कपुर कचरी | ८४ |
| कठिनी | ७५४ | कपुर हलदी | ३१० |
| कटूमर | ६५० | कमरन | ६१३ |
| कटेल | ७९४ | कमठ | ७३१ |
| कटुवीरकडी | ८०७ | कमलगन्द | ७३० |
| कटुवीरवन्दूरी | ०१४ | कमरवी जाल | ७३८ |
| कटुवीजीयन्वी | ३८३ | कमलग्ने नवीन पत्ते | ७३७ |
| कटुवीजुम्बी | ८०१ | कमलग्नेश्वर | ५३६ |
| कटुवीतोरे | ००६ | कमलग्नेहा | ७३३ |
| कटुवेपरवल | ०१० | कमलग्नेहा घर | ७३७ |
| कटसरमा | ७१३ | कमलग्नी | ५३८ |
| कण्टकारी | ३०८ | कम्बोट | ११४० |
| कण्टाई | ६३६ | कमली | ८८० |
| कण्टाफल | ५०४ | कमल्ला | १३० |
| कण्टासु | ९३० | कमल्ल | ०३६ |
| कणगुगर | ३७ | कमल्लम | ४३० |
| कसकस | ६४३ | कमल्लाम | ६०४ |
| कसण | ३७० | | |

| विषय | पृष्ठांक | विषय | पृष्ठांक |
|----------------|----------|------------|----------|
| करेला | ९१६ | काकमाची | ४६० |
| करोडा | ६३० | काकोली | १३७ |
| करञ्ज | ३३५ | कागजी नौबू | ५८१ |
| करञ्जुवा | ३-९ | काइगुनी | ८५२ |
| कत्तरिनिगुण्डी | ६३३ | काचलवण | २४३ |
| कदम | ७६५ | काजृतक | ६४७ |
| ककटशिगी | १९६ | काश्चनार | ३३३ |
| कर्णिकार | १७७-५०६ | काश्चनी | ३३५ |
| कर्पूर हलदी | ११० | काँच | ७०६ |
| कर्पूरादि वर्ग | १ | काठ अमला | १३४२ |
| कर | ८६० | काण्डेधु | १०८० |
| कलइ | ७१६ | कायफल | १०८ |
| कलगा | ५०३ | कालकूट | ८०० |
| कलगाघास | १३५३ | काला केला | ५६४ |
| कलपती हींग | १४८ | कालागन्ना | १०७९ |
| कलमी आम | ५५० | काला गूलर | ६५० |
| कलमी शाक | ८७७ | काळाचदन | १८ |
| कलम्पक | १८ | काळाचीता | १३५ |
| कलाप | ८३८ | कालाजीरा | १४० |
| कलिंग | ९०३ | कालाजीरी | १४३ |
| कलिहारी | ३०५ | कालाञ्जनी | ३५० |
| कल्लार | ५४० | कालादाना | ४०३ |
| कवायचीनि | ५३ | कालाधतूरा | ३११ |
| कवीला | १७३ | कालानिशोष | ३९३ |
| ककैया | ४४० | कालानान | २४३ |
| कसीस | ७५० | कालासीसम | ६६३ |
| कसूम | २०६ | कालासुरमा | ७३३ |
| कसेरू | ९५५ | कालासुमर | ६९० |
| कसौदी | ८८३ | कार्लिंग | ००३ |
| कस्तूरी | ६ | कालीभगर | ३४ |
| कस्सा | ८४० | कालीवनर | ३०७ |
| काँस | ६७९ | कालीवपास | ३५८ |
| काँसी | ७२४ | कालीसुरसी | ५३४ |
| काकजया | ४४३ | कालीदास | ६४३ |
| काकडाशिगी | १०६ | कालीमदी | ७६५ |
| काकतेदू | ५०० | कालीमिरच | ११४ |
| कायनासा | ४४३ | कालीमुसली | ३८४ |

विषय

पृष्ठांक

गुडया

८३८

गुडकी रौंद

१०८४

गुडहर (ल)

१०८७

गुडूच्यादिषण

५३०

गुडेहर

३४९

गुणद्वय

४४३

गुणदासिनीवृण

३७६

गुदयरोसा

३७६

गुन्द्रपट्टर

३०

गुर्भीहूँ

३६७

गुलतुरा

८००

गुलतोरा

५१७

गुलदुपहरिया

"

गुलपरी

"

गुलवनपला

"

गुलसकरी

१०५४

गुलाब

३५५

गुहागरीमुपारी

४००

गुगरी

६०८

गुगल

४०

गुमा

३१

गुलर

४६४

गुजुनिया

६५३

गुडी

५१३

गुडी

०४७

गुडी

७५३

गुडी

८१७

गुडी

५४७

गुडी

३८०

गुजिया

४३३

गुदपट्टर

३६७

गुडी

३६७

गुधूम

८१७

गुपीचदन

७६४

गुभी

४३३

गुमा

४६४

गुम्वरण

३३३

विषय

पृष्ठांक

गोमेदमणि

७८१

गोररइमली

१३५३

गोररगवदी

८००

गोररमुण्डी

४११

गोरणी

०२३

गोरेश्वन

६८

गोरेश्व

८८०

गोरमिरच

११४

गोरमली

०३५

गोरसप

८४३

गोरसाग

११

गोरियापासाई

४१०

गोरिसर

"

गोरेश्वन

६८

गुन्न

९३०

ग्रन्थिपणं

७१

ग्वारपडा

४१८

ग्वारपी कली

०३३

घनवहडा

१७१

घागदी

४३३

घियातोख

००४

घीहुयार

४१८

घुडपां

९४३

घुंफरुमोतिया

४८५

घुपुची

१४३

घृतवरना

११०

घृतपग

१०१५

घापा

७६०

घोडावरन

१३८

घोनापथ

१५०

घरघर

३१०

घवोतरा

७८५

घघेडा

००८

घघू

८३०

घण्टालय दू

०५३

घणव

८१४

घणिपाइय

१३३

| विषय | पृष्ठांक | विषय | पृष्ठांक |
|-----------------|----------|-------------|----------|
| चनक्याव | ५३ | चुम्बक | ७६३ |
| चने | ८३४ | चूक | २४८ |
| चनेकापार | ३४८ | चूका | ८६६ |
| चनेकाशाक | ८३६ | चूणहार | ४३९ |
| चन्दनसफेद | १५ | चैना | ८५३ |
| चन्दापुरीसुपारी | ६०८ | चोव | १९४ |
| चन्द्रकात्मणि | ७९४ | चोरक | ८० |
| चन्द्रस | ४० | चोवचीनी | १५३ |
| चन्द्रसूर | १३१ | चौदली | ३४१ |
| चमरियासेम | ९३६ | चौपतिया | ८७८ |
| चम्पइरेला, | ५६४ | चौरा | ८२८ |
| चम्पा | ४९३ | चौलाई | ८६८ |
| चम्पापुरीसुपारी | ६०८ | चौहाड जोडा | २४२ |
| चम्बेली | ४८२-४८४ | छतिवन | ७०४ |
| चरेली | ४६३ | छतौना | ९५८ |
| चवरा | ८३६ | छरीला | ७७ |
| चव्य | ११० | छिफनी | ४७६ |
| चौदी | ७१२ | छिरहटा | ४५० |
| चावल | ८०८ | छिलहिण्ड | ४५० |
| चावक | ८६० | छुईसई | ४५६ |
| चाह | १०१२ | छुयारीभजमोद | १३६ |
| चाधु | १०२१ | छुहारा | ५६९ |
| चित्रय | १३३ | छोकरा | ७०३ |
| चिरचिदा | ४१३ | छोटावचूर | ८४ |
| चिरपोटन | १०२८ | छोटाविरासता | १२५० |
| चिरमिटी | ३४१ | छोटागोखरू | २८० |
| चिरायता | १७९ | छोटाजवासा | ४९ |
| चिह्न | ३४६ | छोटीभरनी | ३६८ |
| चिल्लीगाव | ८६४ | छोटीइलायची | ५० |
| चिरांजी | ६२८ | छोटीमडाई | २७७ |
| चीठ | २७ | छोटीगौच | ३४४ |
| चीता | १२३ | छोटीजामुन | ६५१ |
| चीना | ८५२ | छोटीमुण्डी | ४११ |
| चीनावरुई | ८०५ | छोटा | ८०४ |
| चीनाभेद | ८५५ | जगमविष | ८०३ |
| चिनिपावपूर | ५ | जंगगीगाजर | ९३७ |
| चीनीयवा | ५२ | जंगगीसुरण | ९४३ |

| विषय | पृष्ठांक | विषय | पृष्ठांक |
|---------------|----------|------------|----------|
| जगदीहलदी | २११ | जी | ८१५ |
| जटामासी | ६१ | ज्वार | ८१० |
| जनुका | ०२ | झङ्गेर | ६३५ |
| जमालगोटा | ३०८ | झाऊगृक्ष | १२५३ |
| जमीकन्द | ०४० | झिपनी | ००६ |
| जम्भीरीनौवू | ५८२ | झिल | १३३४ |
| जवापुष्प | ५२० | झुनझुनिया | ४३३ |
| जरहोदण | ३७४ | झुझी | ३४६ |
| जल | ०५९ | झिण्टा शार | ०१९ |
| जलकुम्भी | १२३० | टङ्ग | ३७० |
| जलचोंगाई | ८६० | टाटा | १५० |
| जलजामुन | ६५० | टेसू | ६८७ |
| जलनोली | १३३० | डाम | ३६८ |
| जलपीपल | ४७१ | डावडा | ३७४ |
| जठपुष्प | १३५१ | डियामाली | १४८ |
| जलमहुवा | ६०८ | डोटी | २८३-२८६ |
| जलमुन्दी | १७३ | डाक | ६८५ |
| जलगत | ३६७ | दादीन | ७०३ |
| जलसिरस | ८०३ | दण | ३५० |
| जलसीप | ७-७ | दंडस | ९१९ |
| जवादिस्त्रुरी | ११ | दोडसमुद्र | ७०३ |
| जवापार | ३३३ | तक्रपण | १०१३ |
| जवानी | १३६-२३५ | तगर | २० |
| जवासा | ४०० | तद्गारी | ३४६ |
| जस्त | ७२० | तज | ७५ |
| जातीपुष्प | ४८३ | तमाखू | १३१७ |
| जाफर | ५२० | तमाठ | ६८३ |
| जामुन | ६६९ | तरबून | ९०३ |
| जायफल | ६७ | तवरक | १३४५ |
| जायित्री | ४३ | तयागोर | ६० |
| जिंगनी | ६८३ | ताल | ६११ |
| जिपापोठा | ६७० | तापनेमु | १०८१ |
| जीरा | १३८ | तापा | ७१४ |
| जीयक | १६३ | ताम्बूट | ३५३ |
| जीवतो | २८३ | ताय | ६११ |
| झुझी | ४८३ | तालमराना | ४१६ |
| जटीमय | १७१ | तालीएवर | ५० |

| विषय | पृष्ठांक | विषय | पृष्ठांक |
|---------------|----------|----------------|----------|
| तितलौआ | ८९१ | थुनेर | ८० |
| तितलौकी | ८९१ | थूहर | २९८ |
| तिथारीकाद्वेल | ३०३ | दण्डोत्पल | १०२७ |
| तिनस | ७०५ | दधियार | ८५५ |
| तिनमुना | ७०४ | दधिवर्ग | १००३ |
| तिरच्छ | ६०५ | दन्ती | ३०५ |
| तिरीफल | ३९५ | दवनपापड़ा | ३१४ |
| तिल | ८४३ | दवना | ५२७ |
| तिलक | ५०२ | दक्षिणीमिरच | ११४ |
| तिलवन | १२३७ | दास | ६४३ |
| तिर्ली | ८४३ | ठाडिम | ७५४ |
| तिसी | ८४५ | दाभ | ३६८ |
| तिमी | ८७३ | दारुदलदी | २१२ |
| तीसरीसनपुष्पी | ४३३ | दालचीनी | ७५ |
| तुन | ६८४ | दाहागर | ३५ |
| तुवर | १२४५ | दीर्घरोरिष | ३६३ |
| तु'बुफ | १५८ | दुग्धफनी | ४५८ |
| तुम्बा | ८९० | दुग्धवग | ९८९ |
| तुरजवीन | १०१ | डुद्धी | ४७९ |
| तुलसी | ५२४ | दुपहरिया | ५१६ |
| तुत | ६३७ | दुग्धन्धलैर | ६७३ |
| तुतिपा | ७३४ | डुलह | ४०९ |
| तुणधान | ८५१ | दूधबिदारी | ३८१-३७१ |
| तुणाव्य | ३५५ | दूधिया | ४५९ |
| तेजपात | ५८ | दूधो | ४५९ |
| तेजबल | १९० | दूधोरलव | ८५९ |
| तेजाम'ध | २७० | दूध | ३७८ |
| सदू | ५७७ | दूसरा लज्जालू | ४५७ |
| ते'बन्द | ९५२-९३८ | दूसरा सौताप | २७० |
| तेलघग | १०३७ | दूसरी सनपुष्पी | ४३३ |
| तापी | ८०० | दंवदार | २५ |
| तोर | ८३७ | देवदाली | ४७० |
| तोख | ९०४ | देसीबादाम | १०४८ |
| तुणरेशर | १५ | दोना | ५२७ |
| तुशारपतुण | ३७५ | दोडा | २७४ |
| घायमाण | ४३५ | दोणीलवण | २४५ |
| मिषपणीव'द | ९५३-९३८ | धतूरा | ३०९ |

| विषय | पृष्ठांक | विषय | पृष्ठांक |
|--------------------|----------|--------------------|----------|
| धनियो | १४४ | नवीन प्रार्थान पान | ३५६ |
| धन्वद्वयुक्ष | ६९३ | नाई | १८८ |
| धन्वग्रयुक्ष | ६९३ | नाकुछिगनी | २५०-४३६ |
| धमासा | ४०८ | नाकुछिगनी | १८८ |
| धरणीकिन्द | ०४० | नागवेशर | ५४ |
| धव | ६९३ | नागचम्पा | ४०५ |
| धवादेवे फल | ३०१ | नागदीन | ४३४ |
| धातुउपधातुघने | ५८९ | नागपुष्पी | ४४४ |
| धान्य | ८०३ | नागरपान | ३५३ |
| धावघने | " | नागरमोषा | ७३ |
| धामिन | ६०३ | नागाजुनी | ४०० |
| धायवेफल | ३०१ | नाटीयागय | ८३६ |
| धागकदम्ब | ५०३ | नाटीहिगु | १४८ |
| धावाड | ३०१ | नारिपा | ५६४ |
| धूपसरल | ३३ | नारगी | ५३६ |
| धुलिउदम्ब | ५०५ | नारराय | ०३० |
| धुतरभूग | ८३४ | नासपानी | ५३४ |
| धी | ६०३ | निगुण्डी | ३३३ |
| नकुछिगनी | ४३६ | निगिपी | १३४१ |
| नकुलपन्द | १८८ | निमलीफल | ६४३ |
| नरा | ६० | निम्पाय | ८३१ |
| नरी | ६० | निम्पागी | ०३४ |
| नडीगुण्ड | ६४०-६५० | नि भणोरुण | ३३४ |
| नदीजामन | ६५० | निगोय | ३०३ |
| नदीभद्रातय | ३३५ | निगारे | ६४० |
| नगरचुग | ८३ | नाप | ५८१ |
| नमावादी | ३५८ | नीम | ३१६ |
| नगर | ३६४ | नीगरमल | ५३३ |
| नगरा | ३४० | नीलया नृक्ष | ४०४ |
| नरिपा | ५६४ | नीलमणि | ५८८ |
| नार | ८०५ | नीलमाला | ३३१ |
| नर | ३६३ | नीलयाया | ७१४ |
| नरिपा | ०३ | नीलपट | ०४६ |
| नपदा | ८६३ | नीलपिपाय | ३३० |
| ननीताग | १८३० | नीलपिपाया | ४१४ |
| नपमाद | ३४५ | नीलीपुष | ३३८ |
| ननीन प्रार्थान पान | ८६३ | नीलीपाँड | ४३१ |

| विषय | पृष्ठांक | विषय | पृष्ठांक |
|----------------------|----------|-------------|----------|
| नीलेकुमुद | ५४० | पवारी | ०३ |
| नीलेफूलकी कटसरैया | ५१३ | पसरन | ४३७ |
| नीलोत्पल | ५४० | पाखर | ६५६ |
| नीवारधान | ८५४ | पाखानभेद | २०० |
| नेत्रवाला | ७२ | पौंगानोन | २४० |
| नेनुआ | ९०५ | पाटली | ४२१ |
| नेपालनीम | १८० | पाठा | ३०० |
| नेचारी | ४८७ | पाढ | ३९० |
| नैलवत ग्रामकी सुपारी | ६० | पाढर | २६५ |
| नोनियाका शाक | ८६४ | पाढल | २६५ |
| नोसाढर | २४५ | पाण्डुफली | ४२१ |
| पटमण | ४३४ | पातालगरुडी | ४४० |
| पटुभाशाव | ८७६ | पातालतांवी | १२४३ |
| पट्टर | ३६७ | पान | २५३ |
| पडानीलोथ | २२० | पानी | ०५० |
| पण्यन्धादृण | ३७६ | पानीभामला | ६१० |
| पतग | २० | पानीपाल | ०४५ |
| पतालभामरा | ४६० | पौपपसारी | ६४३ |
| पतिजिया | ६७७ | पारसीरभजमोद | १३६ |
| पत्रज | ५८ | पारसीरवच | १५० |
| पत्थरका फूल | ७७ | पारा | ७३६ |
| पद्माप | ३० | पारिखपीपल | ६५४ |
| पनिडी | ९१ | पारेयत | ६३० |
| पनिलर | ३०१ | पालकराशाक | ८७० |
| पनसी | ४२३ | पिठघन | २७४ |
| पनिखिगा | ४७१ | पिठौनी | २७४ |
| पन्ना | ७८३ | पिण्डरगजूर | ५६० |
| पपरियावत्या | ६७१ | पिण्डमूल | ०३० |
| पपरी | ०१ | पिण्डार | ०१० |
| पमार | २१७ | पिण्डाल | ०४३ |
| परवल | ०१० | पितौजिया | ६५० |
| परूपा | ६३५ | पित्तपापहा | ३१४ |
| पर्णवपूर | ५ | पियावाँसा | ५१३ |
| पलाण्डु | ०२३ | पियामाल | ६७० |
| पलास | ६८५ | पिलरन | ६५६ |
| पनिघाददृण | ३५५ | पिम्ता | ६३४ |
| पघाड | २१७ | पीतमन्दन | १० |

| विषय | पृष्ठांक | विषय | पृष्ठांक |
|-------------------|----------|-------------|----------|
| पीठल | ७३५ | पोईसाशाव | ८३२ |
| पीपरामूल | १३८ | पोटकुलीपान | २५६ |
| पीपल | ११६ | पोद्दीना | ९३ |
| पीपत्रकाभृदा | ६५३ | पोस्त | २३० |
| पीलाबेल | ५६३ | पोस्तपेटोटे | २३० |
| पीलागेरू | ७५३ | पोद्दरमूल | १०३ |
| पीलाचन्दन | १० | पोद्दा | १०५ |
| पीलाभागरा | ४३१ | पोद्दियेर | ६३३ |
| पीलीचनार | ३३५ | पोद्दवहर | १०३ |
| पीलीचनेर | ३०३ | प्याज | ९३३ |
| पीलीचिक्की | ५०८ | प्रदीपन | ८०० |
| पीलीचमेली | ४८३ | प्रपोण्टरीक | ९० |
| पीलीजातो | ४८३ | प्रसारणी | ४३७ |
| पीलीजीवन्ती | २८५ | प्रियम | ६४ |
| पीलीजुही | ४८८ | फर्डी | १३४० |
| पीलेकृष्ण भागरा | ४३१ | फर्डीचिरो | ७९३ |
| पीलेकृष्ण घटनरीया | ५१३ | फर्डीमणि | ७०८ |
| पीलू | ६०४ | फणनी | ४३३ |
| पुरासात्र | ७८७ | फर्डीद | ४०३ |
| पुरडरीक | ९० | फर्गहा | ७३१ |
| पुरनरा | ४३३ | फर्गहद | ३३१ |
| पुररा | ८९१ | फर्गह | ६४९ |
| पुरागपुष्प | ५११ | फर्गहा | ५४३ |
| पुरानपान | ३५५ | फर्गहा | ८८३ |
| पुरी | ८८ | फर्गहा | १०८५ |
| पुरा | ४८१ | फर्गहा | ६३५ |
| पुरनवालीछ | ७५१ | फर्गहा | ७०८ |
| पुरनरा | ४८१ | फर्गहा | ८०० |
| पुरनरा | ४८१ | फर्गहा | १३५५ |
| पुरनरा | १०९३ | फर्गहा | ६४ |
| पुरनरा | ८८५ | फर्गहा | ९५९ |
| पुरनरा | ७३३ | फर्गहा | ७३० |
| पुरनरा | ३३० | फर्गहा | १३५ |
| पुरनरा | १५ | फर्गहा | १५५ |
| पुरनरा | २३५ | फर्गहा | ३० |
| पुरनरा | ८८३ | फर्गहा | १३० |
| पुरनरा | ६३३ | फर्गहा | ४९६ |

| विषय | पृष्ठांक | विषय | पृष्ठांक |
|--------------|----------|--------------------|----------|
| वधौला | ५४० | वनडङ्कदी | २८८ |
| वग | ७१६ | वनङ्कडी | ८९५ |
| वच | १४९ | वनकदली | ५६३ |
| वच्छनाभ | ७२८ | वनकपास | ३५९ |
| वज्रदंती | १२४५ | वनकुलसी | १३२१ |
| वज्रवल्ली | ३०३ | वनकुलसी | ५३९ |
| वडादिवर्ग | ६५१ | वनदौना | ५२८ |
| वड | ६५१ | वननिगुण्डी | ३३३ |
| वटपत्री | ४५३ | वनपीपल | १३३ |
| वडहर | ५०६ | वनवधुआ | ८६३ |
| वडीभण्ड | २९२ | वनविजोरा | ५८१ |
| वडीजम्भीरी | ५८२ | वनवेला | ४८५ |
| वडाजलघेत | ३४० | वनमोगरा | ४८५ |
| वडानल | ३६३ | वनमोतिया | ४८५ |
| वडानील | ४०५ | वनहलदी | ३११ |
| वडापील | ६०८ | वनहुला | ४९८ |
| वडावधुआ | ८६३ | वन्दा | ४५० |
| वडावत | ३६९ | वन्दाल | ४७०-४५० |
| वडीइन्द्रायण | ४०३ | वधूक | ५१६ |
| वडीइलायची | ४९ | वचूर | ६७६ |
| वडीघटेरी | ३७७ | वमनेटी | १९० |
| वडीकदम्प | ५०३ | वचूला | ५४० |
| वडीगगेरन | ३५३ | वरना | ६९८ |
| वडीजीवन्ती | ३८५ | वरवरचन्दन | ३१ |
| वडीदन्ती | ३०८ | वरबरी | ५३० |
| वडी नौनिया | ८६८ | वरवेल | १३४० |
| वडीमालवागनी | १०३ | वरवेल | ४८५ |
| वडीगुण्डी | ४११ | वरसग | ३३१ |
| वडीगुली | ९७ | वरहण्टा | ३७७ |
| वडीमृपाकर्ण | ४८० | उग्ली | ८६३ |
| वडीमोलेसरी | ४०० | वरियारी | ३५३ |
| वडीगतावर | ८५ | वगुगग्रामकी मुपारी | ६०८ |
| वडर | ५९६ | वगचतुष्टय | ३५७ |
| वणखर्ण | ४३ | वल्लीपादिर | ६०८ |
| वणसनाभ | ५७८ | वल्लीपादल | ३६७ |
| वधुगा | ८६३ | वल्लीपटिमधु | १७१ |
| वदाम | ५३३ | वडिजावण | ३७३ |

| विषय | पृष्ठांक | विषय | पृष्ठांक |
|-------------|----------|--------------|----------|
| बहवार | ६४ | विहारिनी | ५८१ |
| बहेडा | १०३ | बामिकन्द | ३५३ |
| बाकुची | ३१७ | बिजाबोग | ७७७ |
| बाकुचीभिद् | ३१६ | बोरण | ६६ |
| बाजरा | ८०१ | बोरतर | १३१० |
| बाँझर-रोहा | ४६७ | बोह | ७३४ |
| बाँझरगम्मा | ४६७ | बुरा | १०८७ |
| बाढाम | ७३७ | बृत्तगुण्ड | ३०१ |
| बाढा | ४०० | बृद्धि | १६८ |
| बापपिटग | १७७ | बृद्धिका | १६८ |
| बागहीयन्द | १४७ | बृद्धती | ३३७ |
| बागिजग | १७० | बृद्धतीभिद् | ३३७ |
| बागिरी | ४८५ | बेद्वन्दन | १८ |
| बागछड | ६३ | बेदभंतीग | ११ |
| बागमलीरा | ८०६ | बर | ६३३ |
| बावधी | ३१० | बेगीगापट | ६३३ |
| बाढ | ७६४ | बाटफ | ३७० |
| बास | ३६१ | बेगतर | १३४० |
| बासकेवाउल | ८६० | बद्धिपार्षाण | ६७६ |
| बासन्ती | ४८७ | बेरातमणि | ७१७ |
| बाँसा | ३१३ | बेगुन | ९३०-९८५ |
| बाम्बुर | १३ | बेन | ३४७ |
| बिजपत | ६३६ | बेइयमणि | ७०१ |
| बिलयाबाह | १३४५ | बेदा | ७१० |
| बिजममर | २३७ | बो | ७६३ |
| बिजपा | ३३५ | बो-रिरी | ४०३ |
| बिजोग | १३८ | बलदण्डी | १३३३ |
| बिडियामरना | ३४१ | बलदण्डी | १०० |
| बिजरीग | ३८१ | बलपुत्रिष | ८११ |
| बिधारा | १३३१ | बलमण्डी | ४६३ |
| बिपरीवरजान् | ३५३ | बलमण्डी | ४६६ |
| बिजरीग | १७१-३८३ | बर्मा | ४६३ |
| बिष | ३०७ | बार्मी | ४६३ |
| बिषगपरा | १३३ | बोहिधान | ८१३ |
| बिषग | ७३७ | बग | ३३१ |
| बिषीपिट | ८०३ | भग | ३३१ |
| बिषीपिट | १५० | भटपडा | ३३३ |

| विषय | पृष्ठांक | विषय | पृष्ठांक |
|-------------|----------|-------------------|----------|
| भटवासू | ८३१ | मगरेला | १४२ |
| भटेउर | ८३१ | मगलाशुद्ध | २४ |
| भण्टा | ९३० | मछेली | ४५३ |
| भद्रदन्ती | ३९८ | मज्जरतुण | ३७८ |
| भद्रमोथा | ७४ | मजीठ | ३०३ |
| भक्ष्यफल | ५९१ | मटर | ८३८ |
| भल्लातक | ३३३ | मडुवा (चीनाभेद) | ८५५ |
| भर्साडा | ५३० | मण्डूर | ७२३ |
| भोंगरा | ४३३ | मण्डूकपर्णा | ४६३ |
| भारंगी | १९० | मत्स्यण्डी | १०८४ |
| भिण्डी | ०१० | मदिरा | १०९७ |
| भीरुवड्ड | १०८० | मधुपाषाण्डी | ५८६ |
| भिवालीवन्द | ०४७ | मधुवर्ग | १०७३ |
| भिलपाकट्ट | ८८९ | मधुशर्करा | १०९० |
| भिलावे | ३३३ | मनोगुप्ता | १०८१ |
| भुईआमला | ४६० | मन्यानकतुण | ३५५ |
| भुईवदम | ५०५ | मन्दार | ३०५ |
| भुईगणसा | ४६० | मयूरशिखा | ४८० |
| भुईचम्पा | ४०८ | मरसा | ८६७-८५१ |
| भुईजासुन | ६४० | मरिच | ११८ |
| भुईपाठर | ३३७ | मरुआ | ५३५ |
| भुत्तुर | ८०८ | मरेठी | १३३३ |
| भूमिमृगगल | ३६ | मवटीपीपल | १२३ |
| भूस्तुण | ३७१ | मयांदवेल् | १३३ |
| भूरिछरीला | ७७ | मझिरा | ४८६ |
| भेरजद | १८० | मपवन | ३८८ |
| भस्त्रियागल | ३१ | मसी | ४४३ |
| भस्त्रियावद | ९५६ | मसीना | ८६५ |
| भोजपत्र | ६८८ | मसूर | ८३३ |
| भमरछात्री | १३३६ | महेंडी | १३३५ |
| भमरद | ५३८ | महाकरज | ३३८ |
| भमरतडुआ | ६०० | महाचचु | ८७० |
| भकोप | ४४० | महापारवत | ६३० |
| भफा | ८६० | महाभरीवच | १५१ |
| भरामली | ५१८ | महामुण्डी | ४११ |
| भगान | १३३२ | महामेदा | १६६ |
| | | महागर | ३०८ |

| विषय | पृष्ठांक | विषय | पृष्ठांक |
|-------------|----------|------------|----------|
| महागालिधान | ८१० | मुलैडी | १३१ |
| महासतावर | ३८७ | मुल्तमौडी | ११ |
| महिषरन्द | ७४६ | मुल्तदाना | १३ |
| महुआ | ६०२ | मुल्तर | ७३ |
| महेन्द्रगली | ५६३ | मृग | ८३३ |
| माइमू | १३५० | मृगगली | ६१७ |
| मानकल | १३१३ | मृगा | ७८४ |
| माड | ७०८ | मृज | ३६५ |
| माणिक | ७७४ | मृचधर्म | १०७३ |
| माधवी | ४८० | मृषा | ४३० |
| मानवन्द | ७५४ | मृली | ९३५ |
| मालकांगनी | १०१ | मृपली | ३८४ |
| मालती | ४०० | मृषारानी | १७८ |
| मालाकद | १५० | मृणाल | ५१८ |
| मावपणी | ३८८ | मऊदी | ३३१ |
| माखरोहिणी | ३४० | मेडाशिणी | ४४५ |
| मिटी | ७६५ | मेधी | ११० |
| मिरचरानी | ११४ | महा | १६५ |
| मिरचदाल | १३१० | महनी | ११३५ |
| मिरचियाग | ३७१ | मनव | १८४ |
| मिश्रयग | ११७३ | मनशिख | ७१७ |
| मिश्री | १०८८ | मोइसा | १०० |
| मीडानभीरी | ५८६ | मोगा | ७०१ |
| मीडानी | ५८१ | मंगरा | ४८५ |
| मीडानीम | ३३१ | मोचरस | ६९१ |
| मीडाविनी | ५८१ | माड | ८३५ |
| मीडाविष | ७०८ | मोपिषा | ४८५ |
| मुका | ७५१ | मोखी | ७७० |
| मुगल | ७४४ | माखीरी खीष | ७०६ |
| मुगवन | ३८५ | मोषा | ७३ |
| मुगगर भण | ५१ | मोषाद्वारा | ११० |
| मुग्दणी | ३०७ | मोग | १०७ |
| मुग्दु | ५८० | मोरजिग | १८५ |
| मुग्दलोद | ७३ | माणमीमुगा | १०७ |
| मुग्दी | ४११ | मोषा | ७०१ |
| मुग्दशिग | ७३५ | मोषा | १८५ |
| मुग | ८६ | मीगिरी | ४०२ |

| विषय | पृष्ठांक | विषय | पृष्ठांक |
|--------------|----------|--------------|----------|
| यवारी | ९३ | रुई | ३५८ |
| यवासशर्करा | १०९० | रुदन्ती | १२२८ |
| यष्टिमधु | १७१ | रुद्राक्ष | ७०७ |
| यावनाल | ८१९ | रूपा | ७१२ |
| यावनालशर्करा | १०९० | रूपामाँखी | ७३९ |
| रक्तभाक | ३९६ | रुसा | ३१३ |
| रक्तयनेर | ३०८ | रगणी | २७८ |
| रक्तचन्दन | १९ | रेणुग | ७८ |
| रक्तचिचिटा | ४१५ | रेता | ७६४ |
| रक्तशालिधान | ८१० | रेवटचीनी | १२१५ |
| रक्तसरसा | ८५९ | रेवटी | ७६४ |
| रक्तरण्ड | ३९३ | रेहगवाँ | २४४ |
| रतनजोत | ६९८ | रोटमुपारी | ६०८ |
| रत्नालू | ९४३ | रोमवल्गण | २५५ |
| रत्नोपरब्रवग | ७७० | रोहिपट्टण | ३७१ |
| रन्ध्रवश | ३६१ | रोहिपट्टणबडे | ३७१ |
| रसाञ्जन | ३१३ | रोहिपसीधिया | ३७१ |
| रसीत | ३१३ | रोहिणी | ३४६ |
| रहसनी | १८६ | रोहितक | ६७० |
| राद | ८४९ | रोहिडा | ६७७ |
| राँग | ७१६ | रघुगडा | २७७ |
| राजइदम्भ | ५०४ | रघुगैर | ६७५ |
| राजजामन | ६५० | रघुपाठ | ३९१ |
| राजधतुग | ३११ | रज्जावती | ४५६ |
| राजपगोली | ९१० | रज्जाल | ४५६ |
| राजपलाण्डु | ९३३ | रटगण | ५१८ |
| राजान्न | ५६० | रटजीग | ४१३ |
| राजान | ३०७ | रतायस्वगी | १३ |
| राजाद | ९४० | रवण | ३४० |
| रामचना | १३३१ | रवणवृण | ३७५ |
| रामतोछ | ८९० | रानीफर | ६३३ |
| रामचवुर | ५०६ | रवलीफल | ६१८ |
| रामवास (न) | ४२१ | रुभेग (डा) | ६४७ |
| रामसर | ६५ | रसीका | १०९० |
| रामसन | १८६ | रहमुन | ९०० |
| रा | २६ | रहमुनिया | ७०० |
| राघ | १८६ | रहमणा | ३५३-०५३ |
| राहना | १८६ | रहई | ८४० |
| रीडा | ६७८ | रहग | ३०७ |

| विषय | पृष्ठांक | विषय | पृष्ठांक |
|-----------------|----------|------------|----------|
| लोमजव | ८७ | भारतचन्द्र | ०५३ |
| लाणा | १३३८ | भयराशमकपुर | ५ |
| लाट | ७३५ | भक्त | ७५८ |
| लाटभरण्ड | २०३ | भक्तनीरव | ७६३ |
| लाहभार | ३०५ | भक्तनी | ४३७ |
| लाहइलापची | ४० | भक्तपुष्पी | ४५३ |
| लाहइम | १०५ | भक्तान् | १५५ |
| लाहभागा | ४१५ | भक्तान् | ४५३ |
| लाहबनेर | ३०८ | भक्तिया | ८०६ |
| लाहबमल | ५३३ | भक्त | ४३३ |
| लाहभुमुद | ५४१ | भक्तपुष्पी | ४३३ |
| लाहचडन | १० | भक्त | ४३३ |
| लाहचिचिंग | ४१ | भक्तपुष्पी | १०८० |
| लाहचोडा | १३३ | भक्तपुष्पी | ८११ |
| लाहचोडा | ८३० | भक्तपुष्पी | १० |
| लाहचिचिंग | ३०३ | भक्त | १०८८ |
| लाहपेडा | ८८० | भक्त | ५५३ |
| लाहपान | ०३० | भक्त | ८६३ |
| लाहपानी नदसरेवा | ५३३ | भक्त | ८६३ |
| लाहचिचिंग | ८३६ | भक्त | ६५६ |
| लाहमरिच | ८३१ | भक्त | ३०१ |
| लाहभुमा | ५३८ | भक्त | ८३३ |
| लाहभुमा | ६५५ | भक्त | ६३० |
| लाहभुमा | ३३६ | भक्त | ८५८ |
| लाहभुमा | ३८३ | भक्त | ६५० |
| लाहभुमा | ६८० | भक्त | १५३ |
| लाहभुमा | ४०५ | भक्त | ८१३ |
| लाहभुमा | ८३३ | भक्त | ७५६ |
| लाहभुमा | ३३० | भक्त | ७६८ |
| लाहभुमा | ३५८ | भक्त | ४३ |
| लाहभुमा | ८५ | भक्त | १०३ |
| लाहभुमा | ८३८ | भक्त | ४८ |
| लाहभुमा | ८३१ | भक्त | ५३ |
| लाहभुमा | ३३३ | भक्त | १०३ |
| लाहभुमा | ७३३ | भक्त | १५ |
| लाहभुमा | ८३० | भक्त | ३३३ |
| लाहभुमा | ८०० | भक्त | १३३ |
| लाहभुमा | ४३ | भक्त | १० |
| लाहभुमा | ८६३ | भक्त | ३३ |

| विषय | पृष्ठाङ्क | विषय | पृष्ठाङ्क |
|-----------------|-----------|------------------|-----------|
| शोमद्वारा | ८०६ | सफेद कमल | ५३२ |
| श्यामतमाल | ६८२ | सफेदकीवर | ७०२ |
| श्यामपनिलर | ३०२ | सफेदकुडा | १८२ |
| श्याममुसली | ३८५-३७५ | सफेदकोयल | ३२९ |
| श्योनार | २७० | सफेदरंग | ६७१ |
| श्रीरघुचन्दन | १६ | सफेदगन्धे | १०७० |
| श्रीताल | ६११ | सफेदचम्पा | ४९६ |
| श्रीवाटीपान | ३५५ | सफेदचाटली | ३४१ |
| श्रीवास | ४० | सफेदजीरा | १३९ |
| श्वेतचन्दन | ३३५ | सफेदग्वार | ८१० |
| श्वेतकडुआ | ७०० | सफेददूध | ३७८ |
| श्वेतफनेर | ३०८ | सफेद निसोत | ३०३ |
| श्वेतशुआ | ३४१ | सफेदपाठल | २६५ |
| श्वेतपनिलर | ३०३ | सफेदफूलकीचटसरैया | ५१३ |
| श्वेतवच | १५१ | सफेदबृहती | २७७ |
| श्वेतमन्दाग | १५१ | सफेदमरिच | ११४ |
| श्वेतमरिच | ११४ | सफेदमुशली | ३८४ |
| षडधन्य | ३३५ | सफेदरुहेडा | ६७५-६५५ |
| सस्वेदजशार | ९५८ | सफेदशराहुली | ४५५ |
| सकुक्कुचिप | ८०० | सफेदमरसा | ८४७ |
| सलुआ | ६६२ | सफेदसहैजना | ३२६ |
| सरपावग | ११०७ | सफेदसारिंग | ४२० |
| सगजराहत | ७६२ | सफेदसीसम | ६६३ |
| सजी | २३४ | सफेदसुरमा | ७०३ |
| सतघन | ७०४ | सफेदमुहागा | २३७ |
| सतपुतीतोरह | १२५३ | सफेदगरपुला | ४०६ |
| सतावरि | ३८६ | समा | ८५६ |
| सतोना | ७०४ | समी | ७०३ |
| सत्पानाशीकट्टरी | १९४ | समुद्रदेशकपान | २५६ |
| सदागुगय | ४०० | समुद्रफल | १२१३ |
| सन | ४०३ | समुद्रफूल | १२३० |
| सनाय | ४०३ | समुद्रफेन | १६३ |
| सन्धानग | १००२ | समुद्रलीन | २४० |
| सफरी | ५५५ | समुद्रगोष | १२२० |
| सफुरियाह्माण्ड | ८८० | सम्पता | ३६५ |
| सफेदभरण्ड | ३०३ | सम्पत्ता | ४१६ |
| सफेदतार | ३०६ | सरचाज | ८६० |
| सफेददलायची | ५० | सर | २७ |
| सफेददरी | २८० | सरलराग | ४० |
| सफेदवनर | ३०७ | | |

| विषय | पृष्ठ | विषय | पृष्ठ |
|-------------|-------|----------------|---------|
| सरलकारस | ४० | सिन्दूरिया | ५१८ |
| सरनिर्णाम | ४० | सिरपासी | ८३८ |
| सरसा | ८४३ | सिरस | ६६१ |
| सरखटो | ६५३ | सिंगारस | ४१ |
| सरियन | ३७३ | सिन्धिमालुन | १३४ |
| सरीफा | ६ | सिमार | १३३१ |
| सर्पाही | ४५३ | सिहर | ३३१ |
| सर्पिणी | ४५३ | सिद्धीपर्व | ३३३ |
| सलगम | ०३० | सीताफल | ६३१ |
| सहजमुली | ८३४ | सीप | ७०६ |
| सहजना | ७३६ | सीतम | ६६३ |
| सद्वत | ६३७ | सीमा | ७३९ |
| सददेह | ३७३ | सुभराजम | ०३७ |
| सहोदा | ६०६ | सुपदिन्दु | १८ |
| सम्मान | ३३१ | सुगंधनदामासी | ६१ |
| सम्मानवर्धन | ७८ | सुगंधमिपु | ६६ |
| साह | ६६७ | सुगंधभरण | ३३३ |
| सागपन | ६०६ | सुगंधपाणि | ३३ |
| सागीन | ६०६ | सुदयेन | १७८ |
| सानद | ७०८ | सुपारी | ६०३ |
| साठ | ४२३ | सुपर्ण | ७३० |
| साडीधान | ८१४ | मुलतापम्पा | ४०५ |
| सातगा | २०१ | सुमेरानीपञ्चूर | ७३३ |
| सातसीपान | ३७७ | मुदागा | ३३७ |
| सापसीपानी | ९५८ | सुपीपञ्चादिर्ग | १०८१ |
| साभरणी | ३०९ | सुरन | ९४० |
| साज | ६६७ | सुपचान्तमणि | ७९३ |
| साहद | ६६७ | सुपचार | ३४३ |
| सालपणी | ३७३ | सुदूरिया | ५१८ |
| सामगिमी | १३१९ | सुंध | ८० |
| सामसा | ४३० | सुध | ९३४ |
| सारलोप | ३३० | सुध | ९३४-१३० |
| सासन | ३४३ | सुध | ९० |
| सिगरफ | ७३० | सुध | ९० |
| सिद्धिपाणि | ७६३ | सुध | ९३४ |
| सिनाद | ०३८ | सुध | ९० |
| सिद्धा | १३३३ | सुध | ९३४ |
| सिद्धारार | ७३० | सुध | ९३४ |
| सिद्ध | ७६६ | सुध | ९३४ |

| विषय | पृष्ठांक | विषय | पृष्ठांक |
|----------------|----------|-----------------|----------|
| सोचलनोन | २४२ | हस्तीकन्द | ९४६ |
| सोचली | ४६५ | हस्तीवर्णपलास | ६८९ |
| साठ | १०८ | हाऊषेर | १५६ |
| सांधियाट्टण | ३७० | हारभृगार | ५३० |
| सोना | ७१० | हरफारेवडी | ६१८ |
| सोनापाठा | ७१० | हारिद्रिकविष | ७२९ |
| सोनैया | ४७० | हालाहल | ८०० |
| सोमवल्ली | ४४७ | हालो | १३१ |
| सोमलता | ४४७ | हिगु | १४५ |
| सोया | १२७ | हिगुणा | ४०८ |
| सोरठकीमट्टी | ८६४ | हिगुपत्री | १४८ |
| सोरा | २४७ | हिगुल | ७३१ |
| सोनशुही | ४८८ | हिगोट | ६८० |
| साफ | १२७ | हिजल | ३५० |
| सौराष्ट्रिकविष | ८०० | हिन्ताल | ६११ |
| सौराष्ट्री | ७६४ | हिमकपूर | ५ |
| सोबीराअन | ७३२ | हिरीजी | ७१३ |
| स्यलकमलिनी | ५४३ | हिलमोचिका | ८७८ |
| स्यावरविष | ९०२ | हींग | १४५ |
| स्योणोपक | ८० | हीरा | ८७३ |
| स्निग्धदेवदारु | २६ | हीराबोल | ७६७ |
| स्नेहक्षार | २४७ | हुलहुल | ८६५ |
| स्वर्णवल्ली | ३५८ | हुलहुल | ८७८ |
| हड़जोडा | ३०३ | हरम्ब | १२४४ |
| हड़फाडेवडी | ६१८ | व्हेसणियापान | २५६ |
| हड़सहारी | ३०३ | क्षारकाकोली | १७१ |
| हड़मा | ५२३ | क्षारविदारी | ९५१ |
| हरड | ९५ | क्षीरा | ८९६ |
| हरवाइचन्द्रा | १०३ | क्षुद्रकेतकी | ४२० |
| हरिचन्दन | २२ | क्षुद्रचु | ८७१ |
| हरिताल | ७४७ | क्षुद्रजम्बू | ६५१ |
| हरीतक्याविषा | ९५ | क्षुद्रपाटल | २६७ |
| हरीदूप | ३७७ | क्षुद्रपापाणभेद | २०१ |
| हलदियावृक्ष | ७०६ | क्षुद्रवादाम | १२४८ |
| हलदू | ७०६ | क्षुद्रबहती | २७७ |
| हलदी | २०९ | क्षुद्रशख | ७६० |
| हसपदी | ४४६ | क्षुद्र | ७६० |
| हस्तजोडी | ९५३ | | |

इति शालिग्रामनिघण्टुकीअकारादि हिन्दी अनुक्रमणिका समाप्ता ।

श्री. ।

शालिग्रामनिघण्टुभूषणान्तर्गत- वंगभाषावैशब्दोकीअकारादि- अनुक्रमणिका

| विषय | पृष्ठ | विषय | पृष्ठ |
|---------------------------|-------|---------------------------|-------|
| अक्षनादि-निमुन-भांगोदि | २०० | भातुपापान | ८०६ |
| अनोरोग | १५५ | भांगोदि वेपारा | ६३४ |
| अगर | २३ | भातद्वय | ३१० |
| अजयणगाल | ६६६ | भातगुपथर | ७०३ |
| अजगन्धा | १२३७ | भाता | ६३१ |
| अजुनगाल | ६६८ | भादा | १०० |
| अददर, भाटदि | ८३७ | भापाद्र | ४१३ |
| अत्यन्तपर्णा | १२३१ | भापिंग | ३३१ |
| अतिषणा | २५४ | भाभ | ५४३ |
| अनतमूद, श्यामलता, बलपण्डि | | भामभान | ३१० |
| इत्यादि | ५२० | भामग | ७५० |
| अनघान | ६२३ | भाग | १०५ |
| अनुपादिपगं | ११३३ | भाभि | १२३६ |
| अपराजिता, नीलअपराजिता | ३२१ | भादय | ७८० |
| अप | ७४० | भाएवरी, धुनारगुंठ वपा, हा | |
| अम्बुशिरीषा | ७०३ | पाधिरी | ३४३ |
| अर्धेपुर्वी | ४५५ | भाल | १३५० |
| अगिये | १००१ | भागेरुलता भागामेरे | ४४८ |
| अल्लुपा | ४०८ | हड्ड गरीपाना | ४३० |
| अभगंधा | ३८८ | हड्डन | १८३ |
| अभरा, भागधगा | ६५३ | हड्डभूषण | ३६१ |
| अभरा | ५१० | हड्डगाल | १२९८ |
| भा, पुगि | १०३० | उरीपान | ८०५ |
| भांगद, धोला भांगद, भांगोद | ३५० | उर्वीगरी वना | ४३० |
| भांग | ३२६ | उरुद | १२३५ |
| भांगरा | ३०० | उरुद | ३०१ |
| भांगोद | ६२६ | उरुद | ११३ |

| विषय | पृष्ठांक | विषय | पृष्ठांक |
|--------------------------------|----------|----------------------------|----------|
| ऋषभ | १६४ | कागुनी, कांगनिधान | ८५२ |
| एकवीर | १२३४ | वाच | ८०० |
| एकांगी | ८३ | काचडायास, पानिसिगा | ४७१ |
| एछाइच, घटणलाइच | ५०४९ | काधन, सफेदकाचन | ३२२ |
| एलघालुका | ८९ | काजृतक | ६४७ |
| एलियो | ४२० | काट आमला | १२४१ |
| ओल | ९४० | काटविष, अमृतविष | ७९९ |
| ओपड | १३५२ | काटाकरझ | ३३९ |
| कइकी | १७७ | काटाल | ५९४ |
| कइभी, खेतकइभी | ७०० | कादा, माटी, कांलमाटी | ७६६ |
| कटराशिम | ९२६ | कामराज्ञा | ६१७ |
| कटतराइ, तितपल्ला तेदवे डुरुकी | ९१४ | काम्बोइ | १२४८ |
| कडि | ७५६ | कायफल, कायशाल | १९७ |
| कण्टवारी | २७८ | कापास, घनकापास, कालिकर्पा- | |
| कयारी | १२३५ | सिक्किनी | ३५९ |
| कदमगाछ, किलिकदम | ५०३ | कालकासुन्दा | ८८२ |
| कदलीफन्द | ९५७ | कालतेवडी | ३९३ |
| कमलगुडि गुण्डारोचनी | १७३ | कालालोण | २४३ |
| कयेद्गाछ | ६१५ | कालेजीरे | १४० |
| करवचनुन | २४३ | कांसा | ७२४ |
| करमूचा | ६२० | कासालु | ९४५ |
| करवी लाळकरवी | ३०७ | कासालु | ९५४ |
| करली | ८८० | किंकिणी | १२४३ |
| करील, कचरा | ६९४ | किंकिरात | ५०६ |
| कपूर | १ | किसमिस | ६४३ |
| कळमी | ८७८ | कीटमारी .. | १२२३ |
| कला | ५५७ | कुकुम | १२ |
| काकडाशिगी | १९६ | कुसुराँका, कुसुरमुता | ४७७ |
| कावडुमर | ६५९ | कुच, सादाकुच | ३४१ |
| काँवरोर | ४७० | कुचुले | ६०० |
| काँवरोरभेद | ४७० | कुड | ८२ |
| याकला | ५२ | कुडाचिगाल | १८१ |
| वाकुड | ८९३-८९० | कुडचि, कुरचि | ३३५ |
| कांकुड, घटवांकुड .. | ८०२ | कुन्ड | ५०१ |
| यावोली | १६८ | कुन्ड गोटी | ० |
| वागदीलेयु, जामीरलेयु, पातीलेयु | | कुमडागाछ | ८८७ |
| कमधारेयु | ५८१ | | |

(०८) शालिग्रामनिष्पद्भूषणोत्तरगणशब्दोंकी भकारादे अनुक्रमणिका ।

| विषय | पृष्ठांश | विषय | पृष्ठांश |
|-------------------------------|----------|-----------------------------|----------|
| कुरण्डिका | १३३९ | गणित. भागमत्त, छोटीगणिती | १६५ |
| कुरगाछ, कुरन, कुर - | | गंधार | ७५३ |
| गाल, गदह, शिवाङ्क | ६३३ | गंधनाहरी | ९५० |
| कुरावन | १५३ | गन्धोणा | ८३ |
| कुराव, गडाव | ८५३ | गंधमादल, गंधोपाही, गंधपावु- | |
| कुरिया खाडा, कुरेखांडा, | | छिपा | ५३७ |
| कुरावमदन इत्यादि | ४१६ | गन्धरम, घोळ, हिराबोळ, तुन | |
| कुरेखाभाजी | ८८० | गारापी | ७६७ |
| कुरा | २६८ | गम | ८१३ |
| कुरमुपरा, फळ | ३०६ | गमोडिनावग | ३३४ |
| कुरणवूह | ७१३ | गामडी | ४२३ |
| कैडगाछ, कैडपयषा | ०५६ | गामर | ०५९ |
| कैडडा, नालवाड | ५५३ | गामतदू | ५१३ |
| कैडपादुडी | ३ | गाम्भारी, गाम्बर | ३६३ |
| कैडपादुडी | ४५३ | गिरिमारी | ७१३ |
| ग, मापड/गाव, मापडातदू | ६०० | गुगाळ | ३१ |
| कैसागाल, सागाविया | ५०८ | गुगाळ | ०५३ |
| कैगुर | ००७ | गुड | १०८४ |
| कैरोपाव | ३६६ | गुणद्वय | ३३३ |
| कैरोपाव | ८५३ | गुणदासिनी | ३३३ |
| कोळवन्दू | ९५३ | गुड | ३६३ |
| कुरियाभाडी, चालादि | ७०४ | गुये शम्भा, विद्रुपदेर | ६३३ |
| कुरेवर | ६३३ | गुणव | २५३ |
| कुरेवरगाळ, पानगीकुरेवरगाळ | ६३३ | ग्रन्थिपत्रभेद | ८० |
| कुरेवरगाळ, कुरेवर, नालवूडमरा- | | गोपातेन्ता | १३५५ |
| गकुपी | ५३० | गोभी | १३५५ |
| कुरमुन, कुरमुना | ००० | गोमृषिकावृण | ३३३ |
| काट | १०८३ | गोमदू | ७८९ |
| कावर | ७३६ | गोपातेन्ता | ४०९ |
| काटीमुन | ३५५ | गोरग, गुट्टे, पानछाडी | ३५४ |
| कास्वावा | ४०५ | गोरगी | १३४६ |
| कास्वानोपोषण | १३६ | गोरगी | ०३३ |
| कासूर, विष्ट कासूर, छोहाण | ५६३ | गोरगी | ३८ |
| कासारि कासाव | ८४० | गोरगी | ३८० |
| कासूरगाव | ०५३ | कासाव | ७०३ |
| कासूरिगाव | १३३ | कासाव | १०३५ |
| कासूरगाव | ६०४ | कासाव | ४१८ |
| कासेडा, कासेराग | ७९ | | |

| विषय | पृष्ठांक | विषय | पृष्ठांक |
|-----------------------------|----------|------------------------------|----------|
| घोडा निम विशेष | ३२१ | जाती, चामिली, स्वर्णजाती | ४८३ |
| घोल | १०१४ | जामगाछ, बडजाम, क्षुद्रजाम, | |
| घोपकलताविशेष | ९०४ | घनजाम | ६४८ |
| चङ्गाछ | ११९-४७० | जायफल | ४५ |
| चणिकादण | ३७७ | जिगिनी | ६८२ |
| चण्डालकन्द | ९५२ | जियापुता, पुतजिया | ६७९ |
| चन्द्रकान्त | ७९४ | जीवई, जीवानी, जीवन्ती | २८३ |
| चन्दन | १६ | जीवक | १६३ |
| चाकुन्दा, एडाचि | २१५ | जीरे, सादाजीरे | १३८ |
| चाकुले, चाकुलिया | २७४ | जुई, स्वर्ण जुई | ४८८ |
| चापा | ४२४ | जैपाल | ३९८ |
| चामालु, चुमडिभालु | ९४७ | जैत्री, जयित्री | ४७ |
| चामिली | ४८४ | जोयार, जानार, श्वेतजनार, | |
| चाखते | ५९१ | कालजनार, लालजनार .. | ८१९ |
| चाह | १२१६ | झण्डू, स्थूलपुष्पा, झण्डूक | ५१८ |
| चिचिझा | ९०८ | झलई | १२५१ |
| चितेगाछ, राट्ट, चिते, चिता, | १२३ | झाङ्गाछ | १२५२ |
| चिनी, मिछरी | १०८७ | झाटि, फुलझाटि, पीतझाटि, | |
| चिने | ८५२ | नील झाटि, लालझाटि | ५१३ |
| चिरता, चिराता, नेपालेनिम्ब | १८० | झिंगा | ९०६ |
| चिरपोटा | १२२८ | झिनुक, शामुक | ७५६ |
| चिरीजी, पिपाळ .. | ६२८ | झिल्ल | १२३४ |
| चीड | २७ | डापिनतेल, नयनीतपोटी, गन्ध | |
| चीना विशेष | ८५३ | चिरोजा | ४१ |
| चुरा पालङ्ग | ८६६ | टावात्रेयु | ५७८ |
| चचको | ८७५ | ढहरकरञ्ज, नाटा फरञ्ज इत्यादि | ३३५ |
| चोरक | ८० | ढानेपोगा, ढानहुनी | १२२७ |
| चोरहुल | १२३६ | ढेओ, मान्दार | ५९६ |
| छगलहुरी | १२३४ | तगर पाडुवा | २९ |
| छागलदाँडी, घामानदाँडी | १२१४ | तवशीर | १६० |
| छातशुड | ९५७ | तमाकू | १२१७ |
| छातिमगाछ | ९५८ | तरमुज चेलना | ००० |
| छोलागाछ | ८३४ | तामां | ७१५ |
| जटामासी | ६१ | तामालगाछ | ६८३ |
| जपाकुलेर गाछ | ५२० | ताल, श्रीताल, हेन्ताल | ६११ |
| जरणी वृण | ३७४ | तालमूली | ३८४ |
| जर | ९५९ | तालीसपत्र | ५९ |

| विषय | पृष्ठार | विषय | पृष्ठार |
|--------------------------------|---------|---------------------|---------|
| वित्वायरोह, वित्वायदो | ४६० | धने | ३४४ |
| वित्वायदु | ८९१ | धर्माणन्द . | ९४१ |
| विनाश, सादन, जादुगाय | ७०५ | धनुरा | ३०१ |
| विष्णु पुष्पवृक्ष | ५०३ | धनुष, वनधनुष | ३११ |
| विष्णुगाय | ८४३ | धाइफूल | ३०३ |
| मुक्तिपा | ७३४ | धावपागाय | ६१३ |
| मुषर | १०४५ | धानुकासीस | ७०३ |
| मुष्कर, नेपालधने | १५८ | धुनो | ३० |
| मुलर्मा | ५३४ | मखीग-धदम्प, छोटीगगी | ३९ |
| मुँत | ६३७ | मनी, मासन | १०२१ |
| मुणाक्यवण | ३७५ | मन्दीवृक्ष | ६५९ |
| सेजपाता, सेजपत्र | ५८ | मन्तर | ८५६ |
| सेजपत्र | १९० | मन्, यदनल | ३६३-०३ |
| सेवर्दी | ३१२ | मटिगा | ०३ |
| सत्तुल | ५८६ | मागुली, माधनागुली | ९५० |
| सालाकुण | ०१३ | मागुलीगद | १८८ |
| सेल | १०३८ | मागदना | ४३४ |
| सेलरन्द | ९८३ | मागजिहा | १२५० |
| सोपनीनी | १५३ | मागपुष्पी | ४४५ |
| षेण्ड, अमलपत्र | ५०३ | मागभर | ५३ |
| दर | १००४ | मारगागु | ५३६ |
| दत्तीगाय | ३९५ | मारियर | ५६४ |
| दस्ता | ७३० | निमगाय | ३१६ |
| दाकिम, दाकिम | ५५४ | निषिरी | १३४९ |
| दादिसाय | ४३३ | निमगाय | ६४३ |
| दादशिनी | ५५ | निशाद | ३४५ |
| दाददरिद्रा | ३१३ | निमिदा, निमनिमिदा | ३३३ |
| दुध | ००० | निभेजिपावण | ३३४ |
| दुधि, दुग्धा, दुदेल, शीख, गिरह | ४४८ | नीलकण्ठी | ४०४ |
| दुसलभा | ४०९ | नीलगम्भी | ४०४ |
| दूषो, नीलदूषा, छादादूषा, | | नीलमणि | ४८८ |
| गददूषा | ३३८ | नीलादु | ९४६ |
| देवदाद | ३५ | नेगादी | ४८३ |
| देरापनीन | ११३३ | गोद | ३३३ |
| दोना, दना | ५३३ | गोद | ३३३ |
| दोगपुष्पी (वलपुष्पी) | ४६४ | | ५३३ |
| दोगलपुष्पी | ३३५ | | १० |

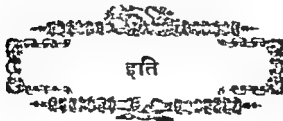
| विषय | पृष्ठांक | विषय | पृष्ठांक |
|-----------------------------|----------|-----------------------------|----------|
| पञ्चवीचि | ५३७ | पुदिना | ९३ |
| पञ्चरेगडो | ५३९ | पुन्नागगाछ, राजचम्पक | ५१० |
| पञ्चरेडाटा | ५३८ | पुष्करमूल | १९३ |
| पनसी | ४२२ | पुष्पाजन | ७३३ |
| पर्यटी | ९२ | पुष्पराग | ७८७ |
| पलतालता | ९१० | पेयाज, लालपेयाज | ९३३ |
| पला, मुगा | ७८४ | पेयारा | ६३४ |
| पलाशगाछ | ६८५ | पेरु, अमृतफल | ७७५ |
| पल्लिवाहवृण | ३७५ | पेरोज | ७९५ |
| पाकुडगाछ | ६७६ | पेस्तागाछ | ६३४ |
| पाडशाक, कोसदारशाक, नालेत | ८७६ | पोस्तदाना | २३२ |
| पाङ्गुफली | ४२१ | पोस्तदानागाछ, पोस्तटेंडिगा- | |
| पाणीफल, शिपादे | ९२८ | कसी | २२९ |
| पाताळतुम्बी | १०४३ | प्रपौण्डरीक | ९० |
| पाथरचुरी, हिमसागर, पाथरकुचा | २०० | फजी, फजिका, पसा, भाजात्री, | |
| पान | २५३ | अपराजिता | १२४० |
| पाना, टोकापाना | १२३० | फटकिरी | ७६२ |
| पान्ना | ७८६ | फटिह | ७९५ |
| पानीभांवला | ६१९ | फणरी | ४३२ |
| पानीपाडु | ९४५ | फलसा | ६३६ |
| पारसी | १३६ | फलशाकविशेष | ९१५ |
| पारा | ७२६ | फल, फूलरस्त, गोलापजलमभृ- | |
| पाहल, घण्टापाहल | २६४ | तिवामधु | ४८३ |
| पार्वतीमृत्तिकाविशेष | ७६१ | फोणालु | ९४५ |
| प्राजक्त, पारिजात, हारशिगार | ५२० | वइचगाछ | ६३६ |
| पारेघत | ६३९ | वव | ५३२ |
| पाळतेमान्दार | ३२३ | वडुलगाछ | ४९७ |
| पालशाक | ८७० | वच, सुराणीवच, श्वेतवच | १९४ |
| पिडिंगशाक | ८८ | वट | ६५१ |
| रितल, वांचपितल | ७२५ | वढवरेला, उच्छे, छोटला उच्छे | ९१६ |
| पिपु | ११६ | वढणुनी, छुदेणुनी, वनणुनी | ८६४ |
| पिपुलमूल | ११९ | वढपाथरकुचि | ४६२ |
| पियाशाक | ८७० | वढनीळ | ४०५ |
| प्रियंगु, गन्धप्रियंगु | ६४ | वनकुलपी | ८४३ |
| पीतपुष्पसेहेला | ३५३ | वनजीरे | १४३ |
| पीडुगाछ | ६०४ | वननील, खादवननील | ४०६ |
| पुरशाक | ८७३ | वनधेतुपा | ८७३ |
| | | वनमृग | ८२५ |

| विषय | पृष्ठांश | विषय | पृष्ठांश |
|----------------------------|----------|-----------------------------|----------|
| यनयवानी | १२३ | गुनगुण्ड | ३७६ |
| यनशण्ड, जनशन, शोणोरगाळ | ४३४ | गुडि | ३६८ |
| यनदलद | ३११ | गुददन्ती | ३९७ |
| ययदा, ययदा | १०३ | वेगुनगाळ | १२० |
| व्यापुष्ट नितवेगुन | ३७६ | वेदेल | ३५३ |
| व्याणारमूल, वेणारमूल, वीर- | | वेप, वयसा, जळगत | ३४३ |
| णमूलगाळ | ६६ | यनुपा, वेतोराय | ८६३ |
| वयवटीयलाय, वीरा | ८७८ | यलपुत्रगाळ, महिरागुले- | |
| वरुणगाळ | ६०८ | गाळ | ६८६ |
| वजरी, खानय | ८९१ | वेद, विल | ३१५ |
| वयवजावण | ३३३ | वेदगत | १३४० |
| यलाडुसुर, यला, यलगायनभा | | वेदय | ७०३ |
| दुनिया इत्यादि | ४३५ | योदानिम्ब, मदानिम्ब | ३३० |
| यशपचीवण | ३७७ | योदार, गगसाय | ७३९ |
| यशलोचन, यांसवायर | १०५ | योरा वयवटी | ७५३ |
| यमुपार, यालसागाळ, योहरी | ६४० | ग्रहीगाळ | ५६३ |
| यामळ, छोटयायळ | ३१३ | भटजीपद | ३८७ |
| चौदुतामदर, महार, तेमोशमद | ८३० | भिण्ड | ११५ |
| यातपुग | १३४६ | भीमराजगुरुदे | ५३३ |
| यापुमिगुलेगाळ | ७१६ | भुदभायगा | ४६० |
| बादाम | ५३३ | भुदपुगदा, प्रतभुदपुगदा, या- | |
| यांश, परगाळ, मान्ददा | ४५० | भुदपुगद | ३८३ |
| यानप्ता | १३७४ | भुनिपय | ६८४ |
| याउरवुली | ७३० | भुनण | ३३३ |
| यायलागाळ | ६७६ | भमगाडी | १३३६ |
| यामुगहाडी | १०० | भग | ३३३ |
| यान्न, गंधपाय | ७३ | भेराण्डा, शादानीडी, यादव | |
| यापी | ७६४ | राण्डा वदभेराण्डा | ३३३ |
| यांश | ३६३ | मयाय | ८०० |
| यिपुटी | १३४० | मगामा | १३३० |
| यिहनु | ३४३ | मत्तरवण | ३३४ |
| यिहण | १५३ | मजिण | ३०३ |
| यिजतराळ, यीगाळ, यिहदर | १३३८ | मंजी | ६४३ |
| यिहरीपद | १५१-१८३ | मंजी | ६४३ |
| यिगानि मुमदा | ८८५ | मंजी | ६४३ |
| यिहरी, यिहरीपती | ३८६ | मंजी | ६४३ |
| यिहरीगाळ | ३०३ | मंजी | ६४३ |
| यिहरी | १५३ | मंजी | ६४३ |

| विषय | पृष्ठांक | विषय | पृष्ठांक |
|---|----------|-----------------------------|----------|
| मनछाल | ७४७ | मृगनाभि | ६ |
| मनसागाछ, सिजवृक्ष | २९८ | मेडाशिगे, गाडलशिगे, छाग, | |
| मयनाकौटा | १८४ | लघेदे | ४४५ |
| मयूरशिखा | ४८० | मेथी | १२९ |
| मरिच, गोलमरिच, सादामरिच | ११४ | मेदा | १६५ |
| मरुवा | ५३५ | मेदी | १०२५ |
| मसिना, तिखी | ८४५ | मोइया | १९० |
| महादा, अम्लकुटा (चुवा) | ५०३ | मोटा केलेजीरे | १४१ |
| महामेदा | १६६ | मोम | १०७७ |
| महाराष्ट्री | १०२३ | मौल, मैडल, मौया, जलमैडल | ६०२ |
| माइफल | १२१३ | मौरी | १२७ |
| मापना | १०२१ | यव | ८१५-१३३ |
| माड | ७०८ | यवाक्षार | २३३ |
| माणिक्य | ७७४ | यवानी, योयान् | १३२ |
| माधवी | ८८९ | यवासा | ४०० |
| माधवीलता | ४८९ | यवेची, श्वेतवेना | ४३७ |
| मानवन्द | ९७४ | यष्टिमधु | १७१ |
| मालती | ४८० | यशङ्कुसुर | ६५७ |
| मालावन्द | ९७० | रक्तचन्दन | १० |
| मापवलाप | ८२६ | रसवत | २१३ |
| मापाणी | २८८ | रसुन | ९३० |
| मिश्रवग | ११७३ | राइसपे, काळसप, राजसर्पा, | |
| मुक्ता | ७७० | राइसरिया | ८४२ |
| मुखाडु | ४ | राग, वैग | ७१६ |
| मुग | २ | राङ्गा आपागु | ४१५ |
| मुगानि | २८७ | राजगाव | १०५३ |
| मुञ्जवन्द | ५०० | राजशिम्बिरा | ८३१ |
| मुज, रामगर, खरपत | १६५ | रामरूप | ३७० |
| मुढिरी, मुण्डी, छुलवुडि घट- धूलडुडी | ४११ | रामरास | ४२० |
| मुत | १०२२ | राम्रा | १८६ |
| मुता (धा) नागरमुता, माद- लामुता | ७३ | रापालशगा, रापालताडु, कुन्द- | |
| मुगमासी | ८६ | रुक्मीवटमावाल | ४०२ |
| मुग्ग | ०२५ | रिठेगाळ | ६७८ |
| मुमुरिगण | ८२२ | रुदन्ती | १०२८ |
| मुग्ग, मुगा, मुरदर, शोचमुजी योटाचक्रत्यादि | ४३० | रुद्राक्ष | ७०७ |
| | | रूप | ७१३ |
| | | रेउचीनी | १०१५ |
| | | रेणु | ७८ |
| | | रोथा, रयना, नयना, वाटर | ६७० |

| विषय | पृष्ठांक | विषय | पृष्ठांक |
|----------------------------------|------------|--------------------------------|----------|
| रोहिणी मांसरोहिणी | ३५५ | शिष्टिद्व | ४०० |
| रामचंद्र, भाळ | १३१९ | शिशुगात्र, सादाशिशुगात्र | ६६६ |
| रत्नाकरटी, घटरत्नाकरटी | १९३ | शुंउ | १०९ |
| रत्नपावन् | ९५३ | शुपारी | ६०३ |
| रत्नग | ४३ | शुभाद्र | ९४६ |
| रत्नगवण | ३७५ | शुष्का | १३६ |
| रत्नग | ९३० | शुभोदय | ६३३ |
| रत्नग लज्जायती | ४५६ | शोभोदा, शोदा | ६५६ |
| रत्न, वद्व | ८९० | शोभोपाय | ३३३१ |
| रत्नपिण्डाद्रु, गोलाभाद्रु, शुभ- | | शेमुनगात्र | ६९६ |
| दिभाद्र | ९४३ | शेमुगात्र | ९३५ |
| रत्ना | ३०३ | शेज | ३६ |
| रत्नराष्ट्र, पाटिपाटोप | ३३० | श्वेतपीठनटस्थाय | ८६३ |
| रत्न, तिरया, इषात | गालालोद३२० | श्वेतगात्रायय | ४३३ |
| रत्नपीठ | ७९३ | श्वेतनयन | ४९६ |
| शंगानु | ००४ | श्वेतोददी | ३२४ |
| शराङ्गली, शान्तली | ४०३ | श्वेतसुरमा, नीलासुरमा, नीलायन- | |
| शरतोदरी | ५१० | राष्ट्रशुभा | ७३३ |
| शरी, माम, भादा, गंधशरी | ८४ | संग्रहायन | ११०३ |
| शतमरी | ३८६ | सुषालयन | ३५३ |
| शरङ, शाण्डिशय | ६६७ | सपिने | ३३६ |
| शभा | ८९६ | संशानयन | १०१३ |
| शोडशुधाला | ७०३ | समुद्रयन | १३३३ |
| शोड, शोड | ७१८ | समुद्रवेना | १६६ |
| शोभाधान | ८५५ | सरगात्र, तापिनतीनेरगात्र | ३८ |
| शोभागात्र, शाण्ड | ६६५ | सरिवा खर्च, अनराध | ८४३ |
| शोभाधान, शाण्डानी | ३३३ | सर्वविधमाधु | ९५४ |
| शोभमतीकद | ०५३ | सर्वदेव | १३३३ |
| शोभाधान, शाण्ड | ८०८ | सरासी | ४५३ |
| शोभवल्ली, शृङ्गशुभ | ४०८ | सहस्रमरी | ८२४ |
| शोभल्लिगिनी | ४३८ | शान्त | ७०८ |
| शिमूल, शिमूलेश्वरा | ६०० | शान्तिगात्र, शान्तिमारी | ३३४ |
| शिरगोष्टा | ७५६ | शान्तपुत्रा | १००३ |
| शिरपपात्र | ६६१ | शान्तयन | ३४० |
| शिरपपात्र | १३४ | शान्तियन | १०१ |
| शिरपपात्र | ७१८ | शिरिद्र, शोभ शान्त | ३३५ |
| शिरागात्र | ४१ | शिरुद्र | ७३१ |

| विषय | पृष्ठांक. | विषय | पृष्ठांक |
|--|-----------|-------------------------------|----------|
| खिदूरपुष्पी | ५१८ | हपुषा | १५६ |
| सीसा | ७१८ | हलुद् | २०९ |
| सुगन्धभूतण | ३७२ | हरिताल | ७४७ |
| सुदशन | ४७८ | हरितकी | ९५ |
| सुधामूली | १२१९ | हस्तिकन्द | ९४६ |
| सुपुणीशाक | ८७८ | हस्तिघोषा | ९०५ |
| सूर्यस्वार | २४७ | हस्तिजोड़ी | ९५३ |
| सेड | ५७४ | हाड़भांगा | ३०३ |
| सेउती | ४९० | हाकुच, सोमराल | ३१५ |
| सेतपापडा | ३१४ | हॉजुटी | ४७६ |
| सैधवलवण | २३९ | हालिम | १३१ |
| सोनचौका | ४९४ | हिंगु | १४५ |
| सोना | ७१० | हिंगुविशेष | १४८ |
| सोना, सोनाळु | १७५-२७१ | हिंगुल | ७३० |
| सोनामुखी, सोनापाता | ४०३ | हिशेशाक | ६७८ |
| सोमळता | ४४७ | हिरे | ७७७ |
| सोहागा | ३३५ | हुडहुटे, जनगलते | ४६५ |
| सौराष्ट्रदेशीयमृत्तिमाविशेष | ७६४ | हेलाकुल, नालिकुल, श्वेतशुन्दि | ५४० |
| स्फटिक | ७९५ | हेरम्ब | १३४४ |
| स्वर्णजीवन्ती | २८५ | क्षीरमागोली | १६९ |
| स्वर्णचल्ली | ३५८ | क्षीरणी राजणी | ६२९ |
| स्वर्णमाक्षिक, तारमाक्षिक, सौम्य- माक्षिक | ७३७ | क्षीरविदारी | ०५१ |
| स्वर्णक्षीरी, शोणाखिरुह (चोक) | १९४ | क्षुदेनटे | ८६९ |
| स्पर्कपत्र | ५४३ | क्षेत्पापडा | ३१४ |
| | | त्रिपर्णावन्द | ९५३ |



श्री: ।

शालिग्रामनिघण्टुभूषणांतील मराठीशब्दांची अकारादि अनुक्रमणिका



| विषय | पृष्ठाव | विषय | पृष्ठाव |
|----------------|---------|---------------|---------|
| आहाराद्वय | १५५ | आंघाटा, आंघार | ५५५ |
| आक्रोश | ६०६ | आंध्र | २१० |
| आगर | ३३ | आमसो, कापसो | ५१३ |
| आगस्ता, हदगा | ५३३ | आपन | ३०८ |
| आमादा | ४१३ | आय, धन्यास | १३३६ |
| आक्रोशीकृता | ३०० | आळ | १३५५ |
| आजगर्जना | ६६६ | आळी | १११ |
| आजमादा | १३४ | आगपद | १८८ |
| आजार | ६३४ | आस | ३८८ |
| आहूटसा | ३१३ | आहारा | १११ |
| आतिथ्य | ३१० | आहारागोष्ट | १३१० |
| आनास | ६३३ | आहारा | ३३३ |
| आनुपादिता | ११३३ | आहारा | ११३४ |
| आन, आय, आनी | ३३१ | आहारा | ८३६ |
| आपणमु, आहारादी | १० | आहारा, आनी | ५५५ |
| आभा | ३३० | आहारा | ४३८ |
| आय | १०५३ | आहारा | ३०६ |
| आहारागोष्ट | ९५३ | आहारागोष्ट | ३५५ |
| आहारा | ६५५ | आहारा | ६५५ |
| आहारा | ५१० | आहारा | १३३ |
| आहारा | १३३४ | आहारा | १०३ |
| आहारागोष्ट | ४४८ | आहारा | ११३ |
| आहारा, विषय | १३५५ | आहारा | ११५ |
| आहारागोष्ट | ८६६ | आहारा | ८६ |
| आहारा | १०३ | आहारा | १०३ |
| आहारा | ५५३ | आहारा | १०३ |

| विषय | पृष्ठांक | विषय | पृष्ठांक |
|-----------------------------|----------|---------------------------|----------|
| भांटीच झाड | ५९१ | वाकटेंभुणीं | ५९९ |
| भावा | १३० | काकडाशिंगी | १९६ |
| भोसारी | १२२७ | काकडी | ८९३ |
| कहुष्ठ | ७६० | काकोली | १६८ |
| बकीळ | ५१ | काग | ८५० |
| कचरा, फुरड्या | ०५५ | कागदालिबु, इडलिबु, मीठाइड | |
| कचोरा, नरकचोरा, काचरी | ८३ | लिबु सापरलिबु | ५८१ |
| चडवेवाल, श्वेतपावटे, तावडे- | | वागाचझाड | ४५३ |
| पावट | ८३० | वाच | ७९६ |
| कडभोपळा | ८९१ | काजरा, कारस्कार, कुचला | ६०० |
| कडमडवली, भांगटवेर | १०३१ | काजूचेंझाड | ६४७ |
| कडयानिम्य | ३२१ | काटली, वटोली | ९१५ |
| कट्या | ८५९ | कटिबुबुक, तावडाधमासा | ४०९ |
| कडांचफल, कडया, | २०६ | काटोत्रा | १९४ |
| कडुजिरे | १४३ | काडवेर | ३०३ |
| कडुदोडकी, दीवाळी, कडुशि- | | कादा, पातीचाकादा | ९३३ |
| शळी | ९०७ | कानफोडी | १२६७ |
| कडुतोंदली | ९१४ | कापशी, कापूस, सरकी, का- | |
| कडुनिम्य | ३१६ | जीकापशी | -५८ |
| कडुपडवण | ९१० | कापूर | १ |
| कडूर | ३०७ | कापूरकचरी | ८५ |
| कधार | १२३५ | काण, क्षुद्रकल्ली | ९१६ |
| कधील | ७१६ | काळाडम्बर, बोरवाडा | ६५९ |
| कदलीरूढ | ९५७ | काळानुडा, सफेदनुडा | १८१ |
| कपिला | १७३ | काळाला | ६६ |
| कचटी | ७५५ | काळापोळ, ण्णयावोळ | ४२० |
| कविड | ६१४ | काळाशिसवा | ६६३ |
| कमल | ५३१ | काळामुरमा | ७३२ |
| कमलाश | ५७ | काळीमुसळी | ३८४ |
| कमळाचड (द) ट (उ) | ५३८ | काळेझाड | ६४३ |
| कमरदी | ६३० | कासाळू | ९४५ |
| कमर | ६१७ | कांसे | ७३४ |
| कमळी | ८८० | काशळु | ०५४ |
| कलसापरी | ७३६ | विस्माणीभावा, सुरवडीचावेर | १३६ |
| कलिंगडू | ० | कियादत | १७० |
| कलजीजीरे | १४१ | किरणजणी | ३७० |
| कसद | ३६६ | किटामार | १००३ |
| कस्तुरी | ६ | कुशूरवदा | ६७७ |

(૧૦૮) ગાલિપ્રામનિગ્ધુભૂષણોક્તમરાઠીગદ્યાચી અક્ષરાદિ અનુક્રમણિકા ।

| વિષય | પૃષ્ઠાંશ | વિષય | પૃષ્ઠાંશ |
|----------------------------|----------|------------------------------|----------|
| કુટકી | ૧૭૭ | ગઝોના | ૨૮ |
| કુડયાવાકહા | ૧૭૪૧ | ગધપ | ૭૪૨ |
| કુઠા | ૩૧૪ | ગધનાકુલી | ૬૫૦ |
| કુઠ્ઠાચેંશીન | ૧૮૩ | ગરબોટિગાલુન | ૩૩૧ |
| કુળનીર | ૮૭૨ | ગદ્દા | ૧૪ |
| કુન્દ | ૫૦૧ | ગદ્દાપાટાગાગરમાણે, પોદગુપ્તન | ૮૧૦ |
| કુંભાગીલાલ ય પત્ર | ૧૦૭ | ગાંગરી ગાંઢધામન | ૩૫૫ |
| કુમ્ભા કુમ્ભા | ૪૬૪ | ગાગર | ૨૩૮ |
| કુરદુ | ૮૭૮ | ગુમ્મુલ | ૩૧ |
| કુરપિટવા | ૧૩૩૦ | ગુમ્મુલદ | ૦૭૩ |
| કુલીની ભાગી | ૩૪૪ | ગુજા-માદાપત્ર | ૧૪૧ |
| કુલીય | ૮૪૭ | ગુજલુણ | ૩૩૭ |
| કુહિલોચર્વાન | ૩૪૪ | ગુજલસિનોતુન | ૩૩૭ |
| કૃષ્ણપ્રિયા | ૩૪૩ | ગુલબેલ | ૨૪૧ |
| કૃષ્ણચાંત | ૪૦૩ | ગુલાણીગુલ, શામસી, પોદગામી | ૪૦૦ |
| કેલ | ૫૫૭ | ગુરી ગુપ્તનીલી | ૪૦૪ |
| કેશ | ૧૭ | ગડ | ૧૦૮૪ |
| કોશી | ૦૧૬ | ગઠ | ૧૮૪ |
| કોરકડ, કોરપાટા | ૪૧૮ | ગાગળાપાલી | ૩૩૧ |
| કોરલ, ગાલનદુશ | ૩૩૪ | ગોહમાદરી | ૨૩૩ |
| કાલિયગ | ૦૪૩ | ગોદાગરખેડા | ૬૧૦ |
| કોટિજન | ૧૫૨ | ગોદાસુરન | ૦૪૦ |
| કોમાલ | ૫૫૩ | ગોદી ડહાંગ | ૫૧૩ |
| કોમ | ૦૧ | ગોદીપોદરી | ૦૩૬ |
| કોદાઝા | ૮૮૩ | ગોદેતગર | ૩૩ |
| ગાદગાંગલ, આપાંચીશામ | ૦૧૫ | ગોદેશામ | ૫૧૦ |
| લક્ષ્મીનાથ, જગમોડ્યા | ૩૦૫ | ગોર્ધાપદન | ૭૧૪ |
| ગદ્દ | ૭૦૪ | ગોર્ધા | ૧૩૫૫ |
| ગાગર | ૦૦૦ | ગોમુલ કુળ | ૩૩૩ |
| ગાલસા | ૩૩૩ | ગોમલિગાલુન | ૩૩૩ |
| ગાલદિર્મીટા | ૩૮ | ગોમરમલિ | ૭૮૦ |
| ગિરદો | ૬૩૧ | ગોરમલિન | ૧૩૫૧ |
| ગુરુપાંચ, તામળાંગ, ગુરુતામ | ૪૦૪ | ગોરોચન | ૬૮ |
| ગોળ | ૪૦૪ | ગોપારંજન મળ (ગોંડવા) | ૦૩૩ |
| ગુરુગામીધાલ, ગુરમાન | ૧૧૬ | ગેવદા | ૦૩૪ |
| ગેર, માંડગાંર | ૬૩૧ | ધટ્ટી/ગોંડરી/તરલકલા/રમલપુ | ૫૩૩ |
| ગેરામાલાદ, નારજામ ગોંડાતેર | ૬૩૧ | મોઝ | ૮૧૫ |
| ગાંધીનાદિપર, ધર્મિનાદેર | ૬૩૧ | | |

| विषय | पृष्ठांक | विषय | पृष्ठांक |
|-------------------------|----------|-----------------------|----------|
| चवणी निम्ब, कहुनिम्ब | ३२६ | जीवन्ती | २८३ |
| चण्डालकन्द | ९५२ | जिरे, पाढरे जीरे | १३८ |
| चणिकातृण | ३७७ | जेष्ठमघ | १७१ |
| चन्द्रकान्तमणि | ७९४ | जैपाल | ३९८ |
| चन्दन | १६ | जोंधळे, ज्वारी | ८१९ |
| चमेली | ४८४ | झरेर | १२५१ |
| चवळचा | ९३६ | झाबू | १२५३ |
| चाकवत, चिविल, चाकवताची | | झेंडू मखमाळ | ५१८ |
| भाजी | ८६२ | डरकांकडी | ९१९ |
| चापडा करज | ३३५ | टांकाळा तरोटा | २१६ |
| चाफा | ४९४ | टेट | २७० |
| चारोळी, चारवृक्षबीज | ६२८ | टभुणीं | ५९७ |
| चद्दा | १२१६ | डालिंब | ५५५ |
| चिरपहमाती गारा | ७६६ | डिकेमाली | १४८ |
| चिच | ५८६ | डुकरकन्द | ९४७ |
| चिफळी | १२४९ | तवफीर | १६० |
| चिवूड | ८९९ | तवसे | ८९६ |
| चिरपोटाणी | १२२९ | तमालपत्र | ५८ |
| चिरफळ | १५८ | तम्बाकू | १२१७ |
| चित्रक, चित्रकरक्त | १२३ | ताक | १०१४-४३४ |
| चीड | २७ | ताड, वाटेताड, काळाताड | ६११ |
| चुका | ५९३ | तांडुळजा, चवळाई | ८६८ |
| चोपचीनी | १५३ | तानघडीचेझाड | १२५० |
| चोपडाकरज, धाढेराकरजवाळा | ३३५ | तानीचावेल, भूप पाड | ४५० |
| चोरक | ८९ | ताबडाभोपळा | ८८९ |
| जटामासी | ६१ | ताबे | ७१४ |
| जय, जी | ८१५ | तिवस | ७०६ |
| जयापार | २३३ | तिळक वृक्ष | ५०२ |
| जवस, भळसी | ८४५ | तीमर | १२४५ |
| जरणी तृण | ३७४ | वीळ | ८४३ |
| जळपिप्पळी | ४७१ | ट्रर्टी फटकी | ७६२ |
| जलमढपी | १२३० | हव | ६३७ |
| जळसिरसी | ७०२ | सुरी | ८३७ |
| जस्त | ७२० | तुळसी | ५२४ |
| जापपत्री | ६७ | वृष | १०२५ |
| जापपळ | ४५ | तृणाख्यतृण | ३७५ |
| जासवद | ५२० | तेजबळ | १०० |
| जीवय | १६३ | | |

| विषय | पृष्ठांश | विषय | पृष्ठांश |
|--------------------------------|----------|-------------------------|----------|
| सैतयनन्द | १५३ | धापटी | १०१ |
| सैतयादेवनास | ३५ | धोया | १०५ |
| सैत | १०३८ | धोबा, रागाधोबा | १११ |
| सौर | ८९६ | नगना, पापनन | १९ |
| भुणर | ७९ | गन्दीपुस | १५६ |
| योगेण | २३१ | नगनागर | २४९ |
| थोळताद, सैत, पियळी, आर | २८१ | नर, वेरनन थोर देउमण | ३६३ |
| थोरजाभूळ, नदीजाभूळ | ६४९ | नरिषा | ९३ |
| थोरदोगरी | २९८ | तादगिणिनी | ४३१ |
| थाननाग | ४३४ | नागरीगद | १५५ |
| थोरदन्ती | ३०७ | नागरीगर, तांबटा नागरीगर | ५४ |
| थोरनीली | ४०५ | नागगुर्बी | ११४३ |
| थोर गनुळ | ४९८ | नागदगणी | ४३३ |
| थोरचेम, गत | ३४३ | नागगुर्बी | १४४ |
| थोरटीरा धेन्नीटे .. | ४९ | नागरी | १५३ |
| थोरगमी, गुगमी | ७०१ | नागरी | ८०० |
| थोरगैतरापली | ४४४ | नागरीगाण | ८०६ |
| थोर थोमरली | ४४३ | नागरीगुळपा | १८९ |
| दगरीनागुली, रीपगुली | ७३७ | नारिळा, तारळ | ५१४ |
| दगदग | ७३ | नारिण | ७३६ |
| दगगा | ५३३ | निषदुग पतापतिगुणमिराही | २०८ |
| दही | १००४ | निषदुगपतिपदा विदुग गता | १४३ |
| नागदुन्द | २३३ | निषिरी | १०१० |
| नागचीनी | ५५ | निषदुगापभर | २०१ |
| दगुली, दिग्गुली | १०४४ | निगुर्बी | ३४३ |
| दुग्गाधोपळा | ८०० | निगोतर, नर | १०१ |
| दुग्गाधोपळा | ५१६ | नि भजिगुली | १४३ |
| दुग्गा | ११० | नीलनलि | २८८ |
| दुग्गा गी, सैत, दगरी, गेदुगुली | ३३ | नीलगु | १४६ |
| दुग्गागी, गुग्गागुली | ४३० | नरग | १०५ |
| दुग्गागुळ | ५०६ | नगरी | १८३ |
| दुग्गागुळ | ८५४ | नरग | ३० |
| दुग्गागुळ | २४९ | नरगधुन | १०१ |
| दुग्गागुळ | १४४ | पदगद, निगगाद | ५१९ |
| दुग्गागुळ | १०८ | पदगद | ३० |
| दुग्गागुळ | १५९ | पदग | १११ |
| दुग्गागुळ | ११३ | पदग | १११ |

| विषय | पृष्ठांक | विषय | पृष्ठांक |
|--------------------------|----------|--------------------------|----------|
| पपटी | ९१ | पुण्ढरीकवृक्ष | ९० |
| पळस | ६८५ | पुदिना | ९३ |
| पल्लिवादिवृण | ३७५ | पुष्करमूल | १९३ |
| पहाडमूल | ३९० | पुष्कराज | ७८७ |
| पाचूरत्न | ७८५ | पुत्रजीवकवृक्ष | ६७९ |
| पाढाफाकुलाचे निखोतर | ९३ | पेरुपाढरे, पेरुतापडे | ५७५ |
| पाढरफळी | ४२१ | पेरोज | ५७५ |
| पांढराकादा | ९३३ | पोकळयाचीभाजी, माठाचीभाजी | ८६७ |
| पाढरीळसूण | ० | पोपया | १२४६ |
| पाढरीलदानजुइ | ४८८-४८३ | पोकळे | ७८३ |
| पांढरेठप्पल | ५४० | पोस्त | २२९ |
| पाणभांबळे | ६१९ | प्रसारणी | ४२७ |
| पाणगवत, लह्या | ३६७ | प्राजक्त, पारिजात | ५२० |
| पाणी | ९५९ | फटिक | ७८५ |
| पाणीगवत, पाण्यानीळलह्या | ३६७ | फणशी | ४२२ |
| पाथरी | ११८८-४७३ | फणस | ५९४ |
| पादेळोण | २४२ | फांजी | १२४० |
| पानरा, पारिंगा | ३२३ | फाळसा | ६३४ |
| पानीपाळु | ९४५ | फांडाळु | ९४५ |
| पारसापिंपळ, भेड, मजेरघुस | ६५४ | यकानिम्ब | ३२० |
| पारा | ७२६ | बकुली, घगोळे | ४९७ |
| पारेरत | ६३९ | बचनाग | ७९८ |
| पायस, पौद्दशाक | ८७० | बटाफळ, इक्षुकणस | ५९६ |
| पापाणभेद | २०० | बड | ६५१ |
| पिडीसागर, खडीसागर | १०८८ | बडवती | ४५२ |
| पितळ, खोनपितळ | ७२५ | बडीखोक | १२७ |
| पितळेबसीड, पुष्पाञ्जन | ७३३ | बदामगोडे, बदामकड्ड | ५७३ |
| पित्तपापट, | ३१४ | बनप्सा | १२५४ |
| पिपरीवृक्ष | ६५६ | बरखवोढी, बोदयरा | ४११ |
| पिंपळ | ६५३ | बस्या | ८५५ |
| पिंपळमूल | ११८ | बल्लवजाटण | ३७३ |
| पिंपळी | ११६ | बरापवीटण | ३७५ |
| पिवळावोरटा, तांबडाकोरंटा | ५१३ | बशलोचन | १५९ |
| पिस्ते | ६३४ | बहेरा, धाटागवृक्ष | १०४ |
| पिठचण | २०४ | पाळुभा | ७०० |
| पोनये | ४८९ | पागडपार | २४३ |
| | | पांगे | ९३० |

| विषय | पृष्ठांक | विषय | पृष्ठांक |
|---------------------------------------|----------|--------------------------------------|----------|
| वायेटी | १०४२ | भांग, गांगा | ३३५ |
| वाजरी | ८२३ | भांडुडी | ३५३ |
| वाजवटोली | ४६७ | भारंगी | १९९ |
| वाटाने | ८३९ | भुरंगोदळा, येद्विष्ठाचेर | ३८१ |
| वादांगुळ, वामरुख | ६५० | भुरंगोड, बळंबी | ९५८ |
| वाभुळ, वावुळ, वीकर, वाभ- लीचा गोंद | ६७६ | भुरमुगाच्याभेगा | ६४३ |
| वापवरणा | ६९८ | भुवण | १३१ |
| वाळतशीप | १२७ | भुयभापळी | ४६० |
| वाळा | ७३ | भुजव | ६८४ |
| वाळू | ७६४ | भेडे, रातभेडे | ९१९ |
| वापली | २१५ | भायर, शेळपट्टे, भोंवरी, गा- घर्णी | ३४० |
| वापघिडंग | १५७ | मका | ८५९ |
| वाढवा, वाढवपाच्या शेंगा | १७५ | मगाणे | १३३२ |
| विणवती, भायकर, वांसुची | ३५४ | मजखण | ३७४ |
| विपरा | ४१६ | मंजिष | ३०१ |
| विट्टणेण | ३४१ | मटव्या | ८३६ |
| विदारीकंद | ९५१ | माण्यारी | ५५३ |
| विचला, विचवपाचा गोंद | ६७० | मघ | १०७७ |
| विषदोडी | ३८६ | मध | १०३१ |
| विणुफळ | ९४९ | मनशील | ७४३ |
| वीरकर | ५८० | मंथानफळण | ३४६ |
| वृगगुण्डवण | ३०६ | मयूरशिखा | ४८० |
| वृद्धि | १६८ | मय्यादाळता | १३१३ |
| वृद्धनीवली | २८५ | मराठी | १३३३ |
| वाटण्ड, वांढर येळण्ड | १५० | मरुवा | ८३७ |
| वेळली | ७० | मदाभेदा | ११६ |
| वेळवृता | ३८५ | मदाहुंग | ५३८ |
| वेळवूर | १३४० | मावा | ४३३ |
| वेळवीभाभी | ८७६ | माट | ८७८ |
| वेणु, वेणळवेणु, मरीणवेणु | ३६१ | माणव | ७३४ |
| वेणवपाकळ | ६३६ | माथु | ७३८ |
| वेणवपान | ७९१ | मानवपद | ९५४ |
| वेरोगेमाट, वेद, वापवीर, एणुवाट | ६३३ | मायवन्न | १३१३ |
| वेळ | ७६७ | मायगुळ, मांणी | १३५० |
| वेळपण्टी | १०१४ | मापाहु | ८६३ |
| माढी | ३६३ | माळदोनी | १७ |
| मनरपण्टी | १३७० | माळनी | ४९० |

| विषय | पृष्ठांक | विषय | पृष्ठांक |
|------------------------------------|----------|------------------------------------|----------|
| मालाकन्द | ९५० | राजगिरा | १०५३ |
| मिरवेलीचे मूळ, घवळ | ११९ | रानउडीढ | २८८ |
| मिरे, पाठरी मिरे | ११४ | रानकासविन्दा | ८८२ |
| मिश्रवर्ग | ११७३ | रानकुळीथ | १२२१ |
| मीठ | २४० | रानकुळस | ५२९ |
| मुसाळु | ०४४ | रानमृग | २८७ |
| मुगुसवेळ, नार, सापसद | १८८ | रामफळ | ६३२ |
| मुचकन्द | ५०० | रामवास | ४२० |
| मुखुट | १२३४ | राले | ३७ |
| मुखदारीशिप | ७३९ | राल्याचे झाड | ६६५ |
| मुला | ९३५ | रिंगणी, भुहरिंगणी, लघुरिंगणी | २७७ |
| मूत, मूत्र | १०३३ | रिठा | ६७८ |
| मण्डफली, केपडान्पाशेगा | ४४४ | रुइ | २९५ |
| मेण | १०५७ | रुदती | १२२८ |
| मेथी | १२९ | रुद्राक्ष | ७०७ |
| मेदा | १६५ | रुपे | ७१२ |
| मेदी | १२२६ | रेणुकबीज | ७८ |
| मोक्षपा | १०२६ | रेवाचीनी | १२१५ |
| मोह, मोव | ८८२ | रोहिणी, मासरोहिणी | ३४५ |
| मोकडी, मोखावृक्ष | ७०१ | रोहिय, मुगन्धरोहियतृण | ३७० |
| मोगरी, रानमोगरी, साडइमो- गरा | ४८५ | लघुइडलिंबु, साखरलिंबु | ५८१ |
| मोठेपेर | ६२३ | लघुइन्द्रवण, मवडळ, थोरकाज- टळ | ४०१ |
| मोत्यांचीशिप, नदींतीलशिप | ७१६ | लघुकावळी, वामोनी | ४४० |
| मोती | ७७९ | लघुफुरणिहवा | १२०९ |
| मोथे, नागरमोथे, भद्रमोथे | ७३ | लघुचबु, थोरचबु | ८०४ |
| मोरचूत | ७३४ | लघुचिवणा, हिवरहटी, थोर- चिवणा | ३५३ |
| मोरवेळ | १२१ | लघुतालीसपत्र | ५८ |
| मोळ | ३६५ | लघुदन्ती | ३९५ |
| मोहरी, रायी | ८४९ | लघुदभ, थोरदभ | ३६८ |
| मोहाचावृक्ष, मोहवृक्ष, जल- मोहा | ६०३ | लघुदुधी, थोरदुधी | ४५८ |
| यवेची, टीटयी | ४३६ | लघुपीलु, थोरपीलु, चिवलेचा वृक्ष | ६०४ |
| रक्तचन्दन | २० | लघुसत्तावर, शतमूली, भाल- वळी | ३८५ |
| रक्तपाटळ | २६५ | लवंग | ४३ |
| रक्तरोहिणा | ६५१ | लवणतृण | ३०५ |
| रताळे, गोडेरताळे | ९४३ | लक्ष्मणाश्व | ९५३ |
| रांसजन | २१३ | लाग | २८७ |
| रागजम्बू, धूलिजम्बू, घळ यभूमि | ५०३ | | |

| विषय | पृष्ठांश | विषय | पृष्ठांश |
|------------------------|----------|------------------------------|----------|
| लोक, लोक | ८४० | बौद्ध | ७४१ |
| लजाश्रु, लजरी, संसारणी | ८५६ | बौद्ध | १३३१ |
| लामज, पिपळा पाळा | ८३ | बौद्धी राज हलद | २११ |
| लाल भपाटा | ४१५ | बैत उपलक्षरी, कृष्ण उपलक्षरी | ४१० |
| लाल मिरची | १३१० | बैतकायली | ४४४ |
| लाट रताळ | ९४३ | बैतकेयदा, वितपी | ५०८ |
| लाट लाजाळ | ४४६ | बैतक्यपक | ४५६ |
| लोकट, पोराद, तिले | ७३० | बैतक्यधारा | १३३१ |
| लोणी | १०३१ | समपाषाण | ११०३ |
| लोथ | ३३१ | सज्जीगर | ३३४ |
| शुग | ७१८ | सजाप | १३३४ |
| शंगड | ८७४ | सधापन | १०९३ |
| शंकासूर, धाऊरीगुल | ५१० | सधजा, मया | ७३७ |
| शंकादुली, शंकोनी | ४७३ | समुद्रक | १३१३ |
| शहाजिर | १४० | समुद्रकेन | १६३ |
| शाहदुल, धुसकाद | ६६३ | समवेगवार | ३३ |
| शान्मर्दी चन्द | ९५३ | समगाडी | ११ |
| शिगाद | ९३८ | सगटे, लहात गागर | ३८० |
| शिवारक | ६३१ | सपली | ४८१ |
| शिंदी, गजरी | ५६८ | सग विधिभाळ | ९५४ |
| शिवगिरी, बाहुपनी | ४३ | सगद | १९६ |
| शिवगोळा | ७९६ | सगर | १०८३ |
| शिवगोडी | ४६१ | सग | ६०६ |
| शिवम, शेत शिवम | ८४३ | सगगाग | ३३१ |
| शिवरी | ६६१ | सगपनी | १३५३ |
| शिवली | ९०४ | सगरी, शगरी शगरीपा दीग | ६८६ |
| शिवगोळा | ३३४ | सगरी कर्पाळ | ८५६ |
| शिवगोळ | ३६८ | सगरी मीन, सगरी लीग | ३३१ |
| शिवगस | ४३ | सगरी | ६६८ |
| शिव | ७३८ | सगरी | ३३ |
| शिवगोळा | ३६३ | सगरी | १३१० |
| शुभाप | ९५६ | सगरी | ३५४ |
| शुभाप | ६३३ | सगरी | ८०० |
| शेगट, शेगसा | ३३६ | सगरी | ७४१ |
| शेगरी, शेगरी, शेगरी | ६३३ | सगरी, शिवगरी, शिवगरी | ७३३ |
| शेगरी | ५३८ | सगरी | ३३४ |

| विषय | पृष्ठांक | विषय | पृष्ठांक |
|-----------------------------|----------|----------------------|----------|
| सीताफल | ६३१ | हरवेली | २८५ |
| सुठ | १०९ | हरभरे | ८३४ |
| सुदशन | ४७८ | हर्तकी, बाल हरडी | ८५ |
| सुपारी | ६०७ | हरीक | ८५७ |
| सूर्यकान्तमणि | ७९३ | हळद | २०९ |
| सूर्यफल | ४६५ | हळदीचा वृक्ष | ७०६ |
| शदिलोण | २०८ | हस्तजोडी | ९५३ |
| खानगेरु, ताचे गेरु, डुर सुई | ७५३ | हस्तिवन्द | ९४६ |
| खानवेर | ३५८ | हिंग | १४५ |
| खानचाफा | ४९४ | हिंगणवेट | ६८० |
| खानामुखी | ४६९-४०३ | हिंगुळ | ७३० |
| खोन | ७०९ | हिरवा बदाम | १२४८ |
| खामल, शरिया | ८०६ | हिरवेमूग, पिंखळे मूग | ८२३ |
| खामलता | ४४७ | हिरा | ७७२ |
| खारा | २४७ | हिराकस, श्वेतनीळी | ७५१ |
| ख्यागीसार | २०४ | हिलमोचिका | ८७८ |
| खलकमहिनी | ५४२ | होश | १५६ |
| खृष्णा, गंगोना, वापूरी शाब | ८८ | क्षीरकाकोळी | १६९ |
| खुटिक | ८९५ | क्षीरविदारी | ९५१ |
| खशागुगुळ, गुगुळ | २१ | खुद्रबदाम | १२४८ |
| खरताळ | ७४७ | खायमाण | ४३५ |
| | | खिपर्णी बंद | ९५३ |

इति ।



शालिग्रामनिघण्टुभूषणने-
गुजरातीशब्दोनीअकारादि-
अनुक्रमणिका

| विषय | पृष्ठांक | विषय | पृष्ठांक |
|------------------|----------|--------|----------|
| अपल्लव | १५५ | भय | १०५१ |
| अगोद | ६०६ | भयभी | १५३ |
| अगणित | ५३३ | भयभुषा | १५८ |
| अगस्त्यस्नानोपाय | ३०० | भयभू | ८५५ |
| अगर | ३३ | भयभूषो | १३३ |
| अपेक्षा | ४५२ | भयभू | ३१६ |
| अपेक्षा | ४१३ | भयभूषा | १३५३ |
| अपेक्षा | ३१० | भयभूषा | १८८ |
| अनन्तगण | ६६६ | भयभूषा | १३५४ |
| अनन्ता | १३३ | भयभूषा | ६३० |
| अनन्त | ६३५ | भयभूषा | १११ |
| अनन्त | ३८८ | भयभूषा | ५५३ |
| अनन्त | १२६ | भयभूषा | १०३ |
| अनन्त | ३८८ | भयभूषा | ५८६ |
| अनन्त | ३८३ | भयभूषा | ३१० |
| अनन्त | ३११ | भयभूषा | ५५० |
| अनन्त | ६३३ | भयभूषा | ५१० |
| अनन्त | १३३ | भयभूषा | ५१० |
| अनन्त | ३३३ | भयभूषा | ६३ |
| अनन्त | ३३३ | भयभूषा | १८३ |
| अनन्त | ३३० | भयभूषा | ५८३ |
| अनन्त | ५५० | भयभूषा | ६५० |
| अनन्त | ५८३ | भयभूषा | ३०३ |
| अनन्त | ५६३ | भयभूषा | ८१६ |
| अनन्त | ५५३ | भयभूषा | १३५४ |
| अनन्त | ३६३ | भयभूषा | १३१८ |
| अनन्त | ३१३ | भयभूषा | ६५३ |
| अनन्त | ३३३ | भयभूषा | ५३३ |
| अनन्त | ६३८ | भयभूषा | ३३३ |

| विषय | पृष्ठांक | विषय | पृष्ठांक |
|--------------------|----------|---------------------------|----------|
| ऊधाहुली | १२२६ | करपटा | १२४१ |
| ऊपलटण | ३७३ | करमदी, करमध | ६३० |
| ऊद्धि | १६७ | करलीनोभाजी | ८८० |
| ऊपभक | १६४ | करियातु | १७९ |
| एकलकटो | १२३५ | कलह, कथीर, सरिपारी | ७१६ |
| एखरो | ४१६ | कलधी | ८४२ |
| एलचीकागदी | ४२ | कलम्बी | ८७७ |
| एलवालुक | ८९ | कलीजीजीह | १४२ |
| एलियो, शकोतरिएलियो | ८२० | कसांजण | ७३३ |
| ओटफल, करमल | ५९१ | कसेह | ९५५ |
| ओटिंगण | ८७८ | कस्तुरी | ६ |
| ओलिया | ८३० | काकच, तेनाफलकाकचिया | ३३९ |
| ओपरलवण | ३४४ | काकटिंवरवो | ५९९ |
| एचूर | ८३ | काकडाशिगी | १९६ |
| कचौरा | ८३ | काकडी | ८९३ |
| कटालोयोर | २९८ | काकनासा | ४४३ |
| कटुवीरा | १२२१ | काकोली | १३७ |
| कटोली | ९१५ | काग | ८५२ |
| कटवापटोल | ९१० | कागदीलिङ्ग | ५८१ |
| कटवीखरखोदी | २८३ | काच | ८०० |
| कटवीधोली | ९१४ | काजुयलिया | ६४७ |
| कटपो | ६६८ | कांटा, भरोलियो | ५१३ |
| कटोबुधला | १८१ | कारेला, कटवावेला | ९१६ |
| कटु | १७७ | कासादरी | ८८२ |
| कटो | ३८४ | कायफल | १९८ |
| कणेक्षर | ८७२ | कालाजीरी, कटवीजीरी | १४३ |
| कणेर | ३०७ | कालीपाट | ३९० |
| कथार | १२३५ | कालीमूसली, पादरीमूसली | ३८४ |
| कदम्प, कलम्प | ५०३ | कालोपालो मोध्यतावालजिनां- | |
| कपरीवाली घेल्य | ४३० | गीणमूर | ६६ |
| कपीलो | १७३ | गामढो | ६७९ |
| कपुर | १ | गाला | ९४५ |
| कपुरवाचरी | ८४ | गामु | ७३४ |
| कमरकरपाटामीठायेछे | ६१७ | गष्टा | ९५४ |
| कमल | ५३१ | विदुद, शेषगुदर | ३८ |
| कमलपावढी | ५३७ | गीदामारी | १२२३ |
| करज, चरणसे | ३३५ | कुपुदयन्प | ४७० |

| विषय | पृष्ठांश | विषय | पृष्ठांश |
|-------------------------|----------|----------------------|----------|
| पूठ, उपलेट | ८१ | गुरसाणीमजमा | १११ |
| पुन | ५०१ | गोडा, बम्भोह | ११४ |
| पुमाधियो | ३१७ | गोदियो, गोरह | १११ |
| पुमार | ४१८ | गोरवेदप | १११ |
| कुयो | ४५४ | गोरसार पायो | १११ |
| कुरिगन | १५१ | गजवीपर | १११ |
| कुसुमानायी | ८६० | बाधय | ७४१ |
| कुसुम्यो, करह | ३०६ | गरणी | १११ |
| कृष्णबीज | ४०३ | गरमर | ११५० |
| कृष्णविपुला | ३१३ | गरमारो, गरमाटोनी गोड | ११५ |
| कितपी | ४३० | गलवा | १०६ |
| कियहो | ५०८ | गली | ४०४ |
| केर | ६०४ | गला | ३४५ |
| केरप | ५५३ | गानर | ११० |
| केसर | १३ | गारा | ७६६ |
| कोकम | ५०३ | गुगुल | ३१ |
| कोकदवा | ४३३ | गुगुलद | १५४ |
| कोठ, कोठ, कोटपट्टी | ६१५ | गुगुलम | १०६ |
| कोडी | ७५५ | गुगुलमिनीयन | १३६ |
| कोदुरी | ८५३ | गुगुल | ६४० |
| कोपी | ३५६ | गुगुल | १३१ |
| कोटपन्ध | १५३ | गुगुल | ३८० |
| कोगम | ५५३ | गुगुलपन्ध | ७६४ |
| कोपी | ३४३ | गुगुल | १३५५ |
| गान्दरी, गान्दूर, गान्द | ५६१ | गुगुल | १३१ |
| गडी | ७५४ | गुगुलमोषवज्जुनीआंगु | ७८५ |
| गणाय | ३८६ | गुगुलपन्ध, गान्दपन्ध | ६८ |
| गारलोडी | ३१३ | गुगुल | १०८४ |
| गारलाय | ४६१ | गुगुल | ८१७ |
| गारलेर | ६८५ | गुगुल | ६४ |
| गामरी | १३५४ | गुगुल | १११ |
| गामगमी | १३३१ | गुगुल | १५५ |
| गाम, गामगम्य | ६१० | गुगुल | १३१ |
| गामो भावली | १०८० | गुगुल | १०६ |
| गाम | ११० | गुगुल | ५३ |
| गामविपुला | ६०४ | गुगुल | १०१ |
| गामगम्य | ७३ | गुगुल | ३४१ |
| गामगो | | | |

| विषय | प्रष्ठांक | विषय | प्रष्ठांक |
|----------------------------|-----------|---------------------------|-----------|
| चण्या | ८३४ | झिरय | १२३३ |
| चंद्रकान्त | ७९४ | झुमरुकांकढवातेकढवी घीसोढी | ९०६ |
| चन्द्रस, जनाजन, गन्धवेरिजो | ४० | झुमखडा | १२५३ |
| चवक | ११९ | झेरकोचला | ६०० |
| चवेली | ४८२ | टङ्गणपाडिपो टकणधुलियो | २३५ |
| चम्पाकाटी, चम्पोवाचनार | ३२३ | ठाको, चील | ८६२ |
| चमेहय भारतु भरण | १३३१ | टिंवरवो | ५०७ |
| चा | १३१६ | टेंढडम्बरो | ६५९ |
| चारोली | ६३८ | डमरो | ५३७ |
| चिभडो, राजगरां, कोठीवा | ८९९ | टाभो | ८६७ |
| चिवो | १३३ | डिकामारी | १४८ |
| चीणो | ८५२ | डुगली | ९३३ |
| चुकोवाटीभाजी | ८६६ | डधियो, बछनाग | ३०५ |
| चोपचीनी | १५३ | ढोल | १८४ |
| चोला | ८३८ | तगर | २९ |
| छास, घोलयु | १०१४ | तज | ५५ |
| छिगडियो, बछनाग | ७९८ | तटबुच | ९०३ |
| छुछराजगरीनी भाजी | ८७५ | तवरीर | १६० |
| छुचारीभजमोह, घरमाणी दीनची | १३६ | तवरिया | १३४५ |
| जव | ८१५ | तमारु | १२१७ |
| जयखार | २२३ | तमाल | ६८३ |
| जवाखी | ४०९ | तमालपत्र | ५८ |
| जरणीवृण | ३७४ | तठ | ८४३ |
| जलकुम्भी | १२३० | तलवर्णा | १३३७ |
| जसत | ७२० | तलिया, शकरटेटी | ९०० |
| जाइफल | ४५ | ताजलजो | ८६८ |
| जाती, स्वणजाती | ४८३ | ताड, श्रीवाड, हेन्ताल | ६११ |
| जाधिवी | ४७ | तारुसपत्र | ५९ |
| जामफल | ५७५ | ताखलि | ८९६ |
| जायफल | ४५ | तिलगवृक्ष | ५०२ |
| जारटय | ८१९ | तुम्भरु | १५८ |
| जामुस | ५३० | तुरडालय | ८२७ |
| जीयव | १६३ | तुरीयाघीसोढी | ९०४-९०५ |
| जुगजिगरी, पीलीशुद | ४८७ | तुगसी | ७३४ |
| जेडीमधनोमूल, जेडीमधनोगीरो | १७१ | ठणाग्यठण | ३५ |
| झरेर | १२५१ | तंजवल | १९० |
| झाडू | १३५३ | तण | १०३७ |
| झिपडो | ४१५ | तेलण | ९७३ |

(१२०) शालिग्रामानिपट्टवृषणनेपुनरातीपन्नेनी भवारादि अनुक्रमणिका ।

| विषय | पृष्ठांक | विषय | पृष्ठांक |
|------------------------------|----------|---------------------|----------|
| धुनेर | ८० | नागपुरी | ४४४ |
| धोरदादिलियो, चटार्ली, हातलो, | | नागबन्ना | ४५ |
| तरभारी | २०८ | नागर कन्पपा | ३५३ |
| दधि | १०३३ | नागर मोघ | ७१ |
| दरभ, दाभ | ३६८ | नागली | ८५५ |
| दादम | ५५५ | नाना भागिया | १३३० |
| दांत दटले नेपाटना मृष्ट | ३१५ | नारंगी लिपु | ५३६ |
| दाय | १०१३ | नारंगी भाता | ८५६ |
| दादणी | १०५ | नारली | ३६४ |
| दादहलदर | ३३३ | नारलीपर | ५६४ |
| दुध | ९८९ | निमंली | ६१३ |
| दुधियोपाणो | ७१६ | निगिपी | १३५९ |
| दुधीपु | ८१० | नि भगिपावुन | ३३४ |
| दुधेली मोटी, धोरबुधी | ४५८ | मीगम, पानुनन | ३८८ |
| दुपदाग | ३५ | मीगपु | १४६ |
| डोनी हयन | २४९ | मेनर | ३४३ |
| धवरे | ३०९ | मपाली | १०८ |
| भमाखो | ४०८ | मवरी | ४८३ |
| धरणीपद | ९६९ | महोली | ११० |
| भरात | ३४३ | मजख | ५५४ |
| धाना, पोपपीर | १४४ | मन्थप सुन | १३६ |
| भागदी | ६१३ | मनवानु, शाकरपोद्ग | ८८१ |
| भावणी | २०१ | पाग | ३० |
| भामन | ६३० | मन्थमृष्ट | ७६ |
| भो, छोलीभो, धोलीभो, मङ्गना | १३८ | मन्थ सुनलेद | ३६ |
| भोला कानो निगतर | ३५३ | मन्थमृष्ट | ५३१ |
| भोला मिडी | ९१३ | मन्थली | ६३३ |
| भोली पददी, नाना पददी | ३१० | मन्थली | १३३८ |
| भोली मन्थो, नाग मन्थो, सु- | | मन्थली | ७८४ |
| तान मन्थो | ६५५ | मन्थली लिपि, तरभारी | ९३ |
| नागली, सावमतना नगर | ६१ | मन्थली | १३३८-१३ |
| मन्थली | ६५६ | मन्थली सुन | १०१ |
| नगर | ३६५ | मन्थली | १३४ |
| मन्थली | ३०३ | मन्थली | ३३३ |
| मन्थली | ४६६ | मन्थली | ६३३ |
| मन्थली, मन्थली | १८८-१५० | मन्थली | ६३३ |
| मन्थली | ५५ | मन्थली | ६३३ |
| मन्थली | ५५५ | मन्थली | ६३३ |
| मन्थली | ११३ | मन्थली | ६३३ |

| विषय | पृष्ठांक | विषय | पृष्ठांक |
|------------------------|----------|----------------------------|----------|
| पान्य धाढाही | ३८ | वणरुक्पास, हिरवडीक कपशिया | ३५९ |
| पारस पीपलो | ६५४ | वदाम मीठी, वदाम कडवी | ५७२ |
| पारेवत | ६३९ | वधारणी | १४५ |
| पारो | ७३६ | वनप्ता | १२५४ |
| पाळखनी भाजी | ८७० | वन हलदर | २११ |
| पाषाण भेद | २०० | वन्यो | ८५५ |
| पीतपापटो, खडि सलियो | ३१४ | वपोरियो | ५१६ |
| पीत मूली | १२१५ | वरघा | ८५५ |
| पीतल | ७२५ | वरधारा | १२३८ |
| पीपरी मूलना गठोढा | ११८ | वरशोली | ४९८ |
| पीपय | ६५६ | वरियालि | १२७ |
| पीपलो | ६५३ | वरुणो | ६९८ |
| पीलियो | ७६० | वलदाणा सिरेडा | ३५३ |
| पीलुडी | ४४० | वल्वजतण | ३७३ |
| पीरोजो | ७९५ | वशपत्रीतण | ३७५ |
| पुखराज | ७८७ | वशलोचन, वशकपूर | १५९ |
| पुन्नाग, वरपुन्नाग | ५११ | वाघाटी | १३०३ |
| पुन्नीवक | ६८० | वाजरो | ८२१ |
| पृष्टपर्णी | २७४ | वांझ कण्डोलो | ४६७ |
| पोकर मूल | १९३ | वादाम नीली | १३४२ |
| पोधी | ८७३ | वादो | ४५० |
| पोषणा | ५४० | वापुगा | ७०० |
| पोषया | १३४६ | वावची | ३१५ |
| प्रशारणी घेल (नारी) | ४२७ | वावची नावी | ३१५ |
| फग वेलानो कन्द, भोकोलु | ३८२ | वावर्दोग | १५७ |
| फाग्य | १३०१ | वावल | ६७६ |
| फाटक मणि | ७९५ | वाराहीचन्द, मुभरिया, शालि- | |
| फुग्यमीद डानीवली | ९५७ | घणावेक्ष्य | ९४७ |
| फुल | ४८१ | वालछह | ६१ |
| फोडालु | ९४५ | वालो | ७३ |
| फोदिनो | ९३ | वालोल | ९२४ |
| वकान्य | ३३० | वाश | ३६१ |
| वगदीसार | २४३ | विवलो | ६०६ |
| वज्रदन्ती | १३४० | विहलवण | ३४१ |
| वटपची | ६५३ | विदारी चन्द | ९५१ |
| वटी | ८५४ | विलो, विलु | ३५० |
| वट | ६५१ | विष्णुचन्द | ७४९ |
| वटागर मीठ | ३४० | वीजोद विषु | ५४८ |

| विषय | पृष्ठांक | विषय | पृष्ठांक |
|----------------------------|----------|-----------------------------|----------|
| घाया, हीरादण्ड | ६७० | मन शिखा | ७४० |
| घुलि | १६८ | मवाली, मावड | ६८३ |
| घृतघण | ३३६ | मराठी | ७०१ |
| घेईमोरिंगणी | २७८ | मराजादण्ड | १२३३ |
| घडा | १०४ | मराथो | ७३५ |
| मेवडीभोग्य | ४९० | मरी लीला, भोलापरी | ११४ |
| वेत्य, डोटार, जंगलीचिगळयो, | | मरठी | १२१३ |
| चतमोगरो | ४८५ | मसूर | ८१३ |
| वेत्यतय | १३६० | महामेवा | १६६ |
| पोडीमजमोड | १३४ | महुडो, गळमहुडो | १०३ |
| पोदारपांफरो | ७३९ | मागग | १०३० |
| पोलखरी | ४९७ | मांडपी | ६४३ |
| महादण्ड | १३१४ | मांड, भलिमांड | ७८८ |
| माळी | ४६३ | गणपय, पुष्टी | ७३४ |
| भद्रसुभा | ३६५ | माधवीछटा | ४३० |
| भमर छाल | १२३७ | मानववन्द | १५४ |
| भांग, गांगो, चरख | २३५ | माममयो | १३५३ |
| भांगरो | ४३३ | माया | १३३३ |
| भांगरी | १९९ | माल्यांगणी | १०१ |
| मिळामो | ३३३ | माळती | ४९० |
| भाडा | ९१० | माळावन्द | ९९० |
| भैरभांगडा | ४६० | मिळरानी अमिळरानी छलमिया | ७०० |
| भुरखोड | ८८३ | मिज | १०३३ |
| भूगुल | ३३१ | मिळरंग | ११३३ |
| भोगवच | ६८४ | मिळीभारत | ४९९ |
| भोवापरी | ४६४ | मिड | ३४० |
| मला | ८६० | मुपमड | ५१८ |
| मगानी | १३३३ | मुपासु | ४४४ |
| मगलीडा, काळावडी | ८३३ | मुपवन्द | ५०० |
| ममरवग | ३३४ | मुंदी, मोरगमुंदी, वास्पोकडा | |
| मगीड | ३०३ | रमूनाड | ४३३ |
| मडर | ८३८ | गुतर | १०३३ |
| मडाना | ८३८ | गुपी | ४३३ |
| मड | ८३५ | गुडा, गुमारपी, मोरपी | २३५ |
| मडरगणी, भारदोमरगि | ४४९ | गुजा | ५१८ |
| मगचारी | ५५३ | मरी | १३३ |
| मड | १८०१ | मेरा | १६० |
| मगवचकण | १३५ | मेरी | १३३५ |

| विषय | पृष्ठांक | विषय | पृष्ठांक |
|----------------------------------|----------|----------------------------|----------|
| मोटीगल्ली | ४०५ | लकुच | ५९६ |
| मोटीखरखोढी वृणधारनी | २८५ | लवणवृण | ३७५ |
| मोटी बोरडी, नानीबोरडी | ६३३ | लवीग | ४३ |
| मोटीपलची, पलचा | ४९ | लखण | ९३० |
| मोटो छीवडो | ३२१ | लक्ष्मणाकन्द | ९५३ |
| मोती | ७७९ | लाल | २०७ |
| मोती खोंप | ७५६ | विद्धि पीपल | ११६ |
| मोरमासी | ८६ | छिपडो | ३१६ |
| मोरशिया | ४८० | छीनुपानु | ७८६ |
| रगतरोहिणी | ६७५ | लुणीशिणी, लुणीमोटी | ८६४ |
| रतनजोत | ३९८ | लोडु, मोडु, गजवेल्य | ७२१ |
| रतवेलियो | ४७१ | लोदर, पठाणी लोदर | २२० |
| रताजळी | १९ | शख | ७७८ |
| रताळु, शकरकन्द, श्वेताळु | ९४३ | शरजीर | ७६२ |
| रखती | २१३ | शंखवेल्य-आरुपुफुटामाणा भग- | |
| राद | ८४९ | लिंगी | ४३८ |
| राजगरो | १२५३ | शखावळी | ४५३ |
| राज जांबु, रावणा, वेलवोया जांबु, | | शखाळु | ९५४ |
| दुगरिया जांबु | ६५० | शण | ४३३ |
| राढारडी, घाछडी | २८३ | शतावरी, एकलकडो, शायवायुघा | ३८६ |
| राताळुलना पाडल श्वेतपांडर | | शयन्य | २६२ |
| काकच | २६५ | शरघवो | ३२६ |
| रानतुलसी भेद | ५३९ | शरपुला | ४०६ |
| रामफल | ६३१ | शररोप | ८४७ |
| रामबायल | ५०६ | शाकनुजीर | १३८ |
| रायचम्पो | ४२४ | शायर | १०८८ |
| रायण | ६३९ | शाम | ६९६ |
| राळ | ३७ | शामीर | १४० |
| राशगडी | ५१७ | शामो | ८५६ |
| राखना | १८६ | शालपर्णी | २७३ |
| रिंगना | ९२० | शालेन्ड, धूपेडो | ६६७ |
| रिगामणि | ४५६ | शाल्मलीवन्द | ९५७ |
| रपु | ७१२ | शाल्य, चोरपा | ८०८ |
| रद्राक्ष | ७०७ | शिगोदा | ९२८ |
| रखडो | १२४३ | शिवलिंगी | ४२८ |
| रेती, वेलु | ७६४ | शिरीष, शेरशडो | ६६१ |
| नेण्य | ३४७ | शिलिंगा वृण | ३७४ |
| रोहिपवृण | ३७१ | शिलीजीव | ७६८ |

(१२४) शालिग्रामनिष्ठभूषणनेत्रगतीशब्दोनी भकारादि भनुक्रमणिका ।

| विषय. | पृष्ठांक | विषय | पृष्ठांक |
|----------------------------|----------|-----------------------|----------|
| शिवम | ६६३ | सुगन्ध | ११ |
| शिवमर्मा | ८३४ | सुगन्धवील | ८३ |
| शीमाष्टी, दान शय्यगार | ५३० | सुगन्धमृग | १३३ |
| शोभ | ७१० | सुदयन | ४५८ |
| शुण्डप | ११० | सुधान्तरी | १३१९ |
| शुबानी भाजी, सुवानागा | १२६ | सुरभी | ७३३ |
| सुभ्रातु | ९४६ | सुरागार | २४३ |
| शंख | ६३७ | सुरगमुग्दी | ४१५ |
| शेदरणी | १३३७ | सुरण | ९४० |
| शेष | ५३४ | सोनामारी दामाणी | ७३३ |
| शेवती मुद्राच मोशमीमुद्राच | ४०० | सोनु | ७१० |
| शेवाङ्ग, छीङ्ग | १३३१ | सोमपट्टी | ४४३-३१८ |
| शेमलानुमुद्र, मोचरख | ६९० | स्यनरणी | ४३० |
| शेरडी | १०७८ | स्यनरिनी | ४४३ |
| शेलाख | ४१ | सूफा | ८८ |
| शोणपी | ४३१ | सुरटिक | ७१७ |
| शोपारी | ६०७ | सुपुषा | १५६ |
| शोमल, शोमलगात्र, शोमिणी | ८०६ | सर्मा | ७७९ |
| शतपापग | ११०३ | सरद, दिवस | ९५ |
| शेषल | ३४३ | सरिताङ्ग | ७४३ |
| शताप | १३३४ | सरसु | ७८ |
| शोधनपग | १००३ | सर्दर | ३०९ |
| शोधेशरी | ५१३ | सर्दरणी | ७८६ |
| शमपा | ७३४ | सर्गिण | ९४६ |
| शमदरणीन | १६३ | सर्गिणी | ९४६ |
| शमर पत्र | १३१३ | संगरान, पानी डांडरिनी | ४४६ |
| शरण देवदार | ३३ | साह शानका | ३०३ |
| शरद्वी | ३५३ | सिगडो | ७३३ |
| शानक | ७७८ | सिगडो | ७३३ |
| शानगात्र | ३३४ | सिग | ७३३ |
| शान्दी | ४३३ | सिगमोषिका | ८७८ |
| शान्ति | ३०३ | सिगमोषी | ७३३ |
| शान | ६३५ | सिगमोषी | १३३ |
| शान्दीदा | ६३३ | सिगमोषी | ९३३ |
| शान्दी | ३४६ | सिगमोषी | ९३३ |
| शान्दी | ५१८ | सिगमोषी | ९३३ |
| शान्दी | ३३८ | सिगमोषी | ९३३ |

A

| | |
|-------------------------------|------|
| Acacia Catechu | 671 |
| Acacia Arabic | 676 |
| Acacia Peneta | 1236 |
| Acacia tree | 676 |
| Aconitum | 219 |
| Aconite leaved Kidney bean | 828 |
| Aconite | 798 |
| Acuteangled Cucumber | 904 |
| Aahatoda vasica | 313 |
| Albizzia lebeck | 661 |
| Alangium lamarchu | 350 |
| Alhagimanrorum | 420 |
| Aloe americana | 120 |
| Alexandrain sena | 479 |
| Alstonia scholaris | 704 |
| Almond | 1248 |
| Amaranthus tricolor | 867 |
| Amaranthus polygo noides | 872 |
| Amarphophallus pamcul atus | 940 |
| Ammonim Chloridum | 245 |
| Andrographis pamculata | 436 |
| Andropogon Nordoides | 368 |
| Andropogon Citratus | 371 |
| Andropogon Muricatum | 66 |
| Andropogon Muricatus | 72 |
| Andro graphus Pamculata | 436 |
| Anthocephalus Cadumba | 503 |
| A nut which clears water | 642 |
| Apium Graculens | 134 |
| Apple | 574 |
| A Racemosus | 396 |
| Artumia Maritima | 136 |
| Artumia Vulgaris | 474 |

| | |
|--------------------------|------|
| Artocarpus Intergrifolia | 594 |
| Artocarpus Lucoocha | 596 |
| Arrow Root | 161 |
| Asiatic Grewia | 635 |
| Avicunia tomentosa | 1245 |

B

| | |
|------------------------|------|
| Babreng | 157 |
| Bamboo Cane | |
| Banhenia Variegata | 322 |
| Banyan Tree | 651 |
| Banduc Nut | 339 |
| Barleria Prionilis | 513 |
| Barbedoesaloe | 418 |
| Beringtonia Acutangula | 1213 |
| Black Seeded dolichos | 924 |
| Black Pepper | 114 |
| Black Carway seed | 140 |
| Black Halebore | 177 |
| Black Jack | 736 |
| Black wood sisso Tree | 663 |
| Blepharis Edulis | 879 |
| Bladdered Dook | 866 |
| Bell Metal | 721 |
| Berberis Aristata | 213 |
| Betal leaf | 253 |
| Betal Nut Palm | 185 |
| Bishops weed seed | 132 |
| Bead Tree | 341 |
| Bitter Luffa | 906 |
| Blumca Odorate | 477 |
| Bitter Barley | 815 |
| Prisdela Montana | 1234 |
| Bringle | 920 |
| Borax Baborate of soda | 235 |
| Bottle Gourd | 891 |
| Boswellia Therifera | 667 |

| | | | |
|-----------------------|------|------------------------|------|
| Brass | 725 | Cassampelos Pareira | 320 |
| Bristly Luffa | 470 | Citrus Acaia | 375 |
| Bryonia Laciniata | 438 | China Root | 154 |
| Browia spicata | 1243 | Chinese Dolichos | 528 |
| Brickentab Birthwort | 1223 | Chickling Vetch | 540 |
| Bulb Onion | 733 | Chirata | 170 |
| Buty Rum | 802 | Cinnamon Bark | 55 |
| Bushy Gardenia | 185 | Clarified Butter | 1025 |
| Buchanania Latifolia | 607 | Claro-dendron Serratum | 199 |
| Butter Milk whey | 1014 | Clethra Ternata | 329 |
| Byophtum Senatioum | 1251 | Clematis Triflora | 434 |
| C | | | |
| Cabbage Rose | 470 | Cloves | 43 |
| Campbor | 2 | Clustered Hiplor | 452 |
| Cano | 347 | Cocculus Villosus | 470 |
| Canavalia | 924 | Cocculus Cardiflorus | 270 |
| Caper | 694 | Cocoanut Palm | 164 |
| Carbonate of Soda | 234 | Colera Boe Bentin | 1020 |
| Carbonate of Potash | 233 | Conarion Creva | 171 |
| Carbonate of soda | 244 | Common Swal | 553 |
| Carabola | 618 | Common Fix seed | 515 |
| Careya Arborea | 197 | Common Rue | 1273 |
| Carey Tree | 700 | Colewort | 402 |
| Carrot Root | 930 | Copper | 714 |
| Cashew Nut | 647 | Coriander | 124 |
| Cass | | Corthalia Aculeata | 575 |
| Caster oil plant | 291 | Cotton Lin | 311 |
| Cassipoua Pulcherrima | 517 | Couch | 761 |
| Catechu | 612 | Cover | 783 |
| Catsire | 782 | Cowpea | 243 |
| Cattle Fish bone | 162 | Coxbala | 30 |
| Cauliflower | 1253 | Croton Buxburghi | 671 |
| Celastrus Decidua | 25 | Croton C. 1 | 1224 |
| Celastrus Cordata | 480 | Crop Cyathus | 574 |
| Celastrus Indica | 714 | Croton | 515 |
| Celastrus Panchburgi | 112 | Croton | 515 |
| Cherry Tree | 540 | Croton | 515 |

| | | | |
|---------------------------|------|-------------------------|------|
| Cucumber | 893 | F | |
| Cucumber | 896 | | |
| Cumin seed | 139 | Fegonia Arabisa | 408 |
| Curdled Milk | 994 | Fenel seed | 128 |
| Custard apple | 631 | Fennugreek | 129 |
| Cyamopsis Psoralioides | 923 | Ferula Narthex | 145 |
| Cyperus Rotundus | 75 | Ficus Viranco | 656 |
| D | | Field pea | 822 |
| Date Palm | 569 | Fig Tree | 616 |
| Delil | 680 | Five leaved Chaste Tree | 328 |
| Delphinium Denudatum | 1249 | Flacourta Catappracta | 602 |
| Desmodium Gangeticum | 272 | Flax Hemp | 429 |
| Dikamallegrum | 148 | Flower | 467 |
| Dill seed | 126 | French Mary Gold | 502 |
| Downy Branch Buten | 685 | Flugea Cencopyrus | 427 |
| Diamond | 772 | Folia Malabathy | 58 |
| Dioscorea Sativa | 917 | Four Leaved Cassia | 1221 |
| Drygiuger | 109 | G | |
| E | | Gallant | 1212 |
| Eagle wood | 21 | Gallstone Bijoor | 68 |
| Ebony | 597 | Gamboge Thistle | 194 |
| Echintes Caryophyllata | 490 | Garlic Root | 930 |
| Elephant grass | 367 | Garuga Pinnata | 1241 |
| Elephantopus scabar | 473 | Garcinia | 691 |
| Elloopa Tree | 602 | Ginger Root | 111 |
| Emble Myrobalan | 108 | Gmelina Arbores | 262 |
| Emerald | 786 | Gold | 710 |
| Indian Bellium | 32 | Gigantic swallow wort | 296 |
| Eugenia Jambolan | 649 | Glass | 797 |
| Eucalyptus Ferox | 1232 | Grangea Madrass Patana | 288 |
| Eupharbia Hirta | 159 | Grape Rasins | 643 |
| Euphorbia Orientalis | 1244 | Grain | 834 |
| Erythrina Indica | 322 | Great leaved Caledium | 834 |
| Euculent lacourtia | 215 | Great Milet | 819 |
| Evolvulus | 453 | Ground Nut Pea Nut | 640 |
| Extract of Indian Berbery | 214 | Greater Galangal | 161 |
| | | Gumcopal sandarack | 40 |

| | | | |
|---------------------------|------|------------------------|------|
| Gunterera Longifolia | 610 | Ipomoea Reniformis | 472 |
| Guava white Guava red | 574 | Ipomoea Rejman | 510 |
| Gymnema sylvestre | 113 | Ipomoea Biloba | 1233 |
| Gynandropsis Pentaphylla | 1237 | Ipomoea Digitata | 522 |
| Gyrardinia Heterophylla | 1211 | Iron Pyras | 737 |
| H | | Iris | 211 |
| Hairy Nardica | 977 | Irisagui Seed | 1214 |
| Hedychium spicatum | 64 | Ixora Parviflora | 457 |
| Henbane | 136 | J | |
| Hermaphrodite Amaranth | 562 | Jacquemontia | 711 |
| Henna | 1225 | Jasminum Flexile | 143 |
| Hibiscus I sculentus | 919 | Jasminum Gerardii | 483 |
| Hibiscus | 611 | Jasminum Sambar | 15 |
| Hipon orientale | 1250 | Jasminum Accuratum | 485 |
| Holarchena Antely sentina | 144 | Jasmine flowered Carna | 627 |
| Holostoma Rheodu | 155 | Jujub | 623 |
| Honey | 1073 | Justicia Procris | 314 |
| Hornbeam heart | 352 | K | |
| Horse Radish Tree | 326 | Katula Reclera | 175 |
| Hymenodactylon Laxiflorum | 1279 | Ket Tree Leaves | 627 |
| Hypoxis Orchoides | 344 | Glehnit | |
| I | | Kig Tree Leaves | Oppe |
| Indian Sarsaparilla | 450 | Kola | 627 |
| Indian Hemp | 325 | Kelvy Leaf | 627 |
| Indian Mallin | 324 | Kolan Bush Tree | 627 |
| Indian Tobacco | 353 | L | |
| Indian | 404 | Lal'ab Vulture | 231 |
| Indian Fern | 405 | Large Caribaea | 48 |
| Indian Penny Wort | 407 | Large Flowered Apple | 121 |
| Indian Nigelle | 670 | Leaf | 712 |
| Indian Cere Nigelle | 415 | Leaf | 112 |
| Indian Tobacco | 1217 | Leaf | 623 |
| Indian Nigelle Leaf | 1223 | Leaf | 423 |
| Indian Tree Tree | 615 | Leaf | 423 |
| Indian Tree Tree | 615 | Leaf | 423 |

| | | | |
|------------------------------|-----|-----------------------|-----|
| Lentil | 832 | Myrovallon Bellirica | 105 |
| Liquid Amber | 42 | Myristica Fragrans | 47 |
| Liquorice Root | 171 | | |
| Lesser Cardamom | 50 | N | |
| Litharge | 739 | | |
| Long leaved Pin ^e | 27 | Narrow Caved Sepistan | 640 |
| Long leaved Barlamin | 416 | Nabelea Cardifolia | 706 |
| Long Pepper | 116 | Nettedcus Tard apple | 632 |
| Long zedoary | 83 | Nimb Tree | 316 |
| Loranthus Longfolious | 450 | Niter Saltpeter | 247 |
| Lotus | 531 | Nut Meg | 46 |
| Luffa Pentandra | 905 | | |

M

| | | | |
|-----------------------------|------|-------------------------|------|
| Madder Root | 204 | Ocimum Gratissimum | 529 |
| Maiden Hair | 446 | Ochrocarpus Longifolium | 511 |
| Mango Ginger | 211 | Ochrocarpus Mesnaferrea | 54 |
| Mango Tree | 543 | Odina Wodier | 683 |
| Marking Nut | 222 | Oil | 1036 |
| Melia Azedarach | 319 | Onix | 790 |
| Milks Hedge Prickly Pear | 298 | Olibanum | 38 |
| Millet | 852 | Opium | 231 |
| Mimosa Sensitiva | 457 | Orange | 576 |
| Magnifying Glass | 793 | Origanum Vulgaris | 301 |
| Mollu Gohirsta | 1252 | Ornatt | 518 |
| Momordica Dioica Male | 467 | Orocyllum Indicum | 266 |
| Mucuna Monosperma | 926 | Officinal Carthamu | 206 |
| Mad Black Clay | 766 | Ougenia Dalbergia | 705 |
| Mercury | 728 | Ouster Shell | 751 |
| Mustard Seeds | 81 | Oval leaved Rose Bay | 333 |
| Mustard Tree of Scripture | 604 | Oval leaved Capia | 217 |
| Mulberries | 637 | Oval leaved Rose Bay | 181 |
| Musk Moscus | 7 | | |
| Murraya Kernigu | 321 | | |
| Muhelia Champaca | 494 | | |
| Myrta Balsa | 767 | | |
| Myrobalous Black Myrouclaus | 95 | | |
| | | P | |
| | | Pallatory Root | 155 |
| | | Palmyra Palm | 611 |
| | | Pancum Frumentacum | 856 |

[illegible]

U

| | |
|----------------------|------|
| Urea Sodium Chloride | 242 |
| Urina Lagopoides | 274 |
| Urine | 1032 |

V

| | |
|----------------------|------|
| Vanda Roxburghii | 136 |
| Valeriana Hardwickia | 27 |
| Veronia Cineria | 1227 |
| Vitis Quadrangularis | 303 |
| Vitis Pentaphylla | 1231 |
| Vitex Speciosa | 76 |

W

| | |
|-----------------------|-----|
| Walnut Belgaum Walnut | 606 |
| Water Melon | 902 |
| Water Caltrop | 928 |

| | |
|------------------|-----|
| Water | 92 |
| White Basil | 524 |
| Winter Cherry | 52 |
| Wheat | 817 |
| White goose foot | 167 |
| White gourd | 106 |
| Wolf Bare | 317 |
| Wood sandia | 11 |
| Wood Apple | 818 |
| Worm Wood | 327 |
| W | 312 |

Y

| | |
|-------------|----|
| Yellow Rain | 36 |
|-------------|----|

Z

| | |
|------------|-----|
| Zinc Oxide | 723 |
| Zinc | 720 |

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

शालिग्रामनिघण्टुभूषण ।

सप्तमअष्टमभाग ।

नत्वा सिद्धिविनायक च विविधा भाषाः समालोच्य ताः
आयुर्वेदमहोदधि विमलया बुद्ध्या विनिर्मथ्य वै ॥
शालिग्रामबुधेन केवलमिदं लोकोपकृत्यै कृतं
शालिग्रामनिघण्टुभूषणगतं सप्ताष्टमांशद्वयम् ॥ १ ॥

कर्पूरादिवर्गः ।

कर्पूरनामानि ।

ओषधीशश्चकर्पूर सोमसंज्ञ सिताभ्रकम् ।

शिला हिमांशुः शीतांशुश्चद्रभस्म निशापतिः ॥

अर्थ—ओषधीश, कर्पूर, सोमसंज्ञ, सिताभ्रक, शिला, हिमांशु, शीतांशु, चद्रभस्म, निशापति, (तरुसार, भस्माद्वय, रेणुसार, हनु, हिमाद्वय, वेधक, रेणुसारक, शीतमरीचि, भस्मवेधक, विधु, शीतमयूख, घनसार, चन्द्रसंज्ञ, जैवाटक, ग्लौ, कुमुदवान्धव, सिताभ्र, हिमवालुका, इन्दु, द्विजगज, नक्षत्रेश, निगीथिनीनाथ, यामिनीपति, शशधर, सोम, क्षपाकर, हिमाद्व, क्षपापति, सिताभ, शीत, घनमास्क, शीतकर, शशाङ्क, हिमवालुक, हिमकर, शीतप्रभ, शाम्भव, शुभ्रांशु, स्फटिकाभ्र, कारमिहिका, तागाभ्र, चन्द्रार्द्रक, चद्र, नाक-तुपार, गौर, कुमुद, शीतलरज, गिताद्व, स्फटिक, शशि और हिमोपल) ॥

हिन्दीभाषामें

कर्पूर

वगभाषामें

कर्पूर

महाराष्ट्रभाषामें

कापूर

गुर्जरभाषामें

कपूर, कपूर

कर्णाटकीभाषामें

कर्पूर

तेन्द्रीभाषामे
अग्नीभाषामे
हृदिभाषाम
पागीभाषामे
अर्घ्यभाषाम

रपुंगम्.

पुंगम्

Cup 100

पुंगम्.

Cup 100

कापु

कापु करतै

वपुर्भेद ।

पोतान, भीमगेन, मितपर, शङ्खावातमंत पांगु, रिध, अन्गार,
हिमवातुक, अतिका, मुपार, हिम, शीतल, पप्रिगत्य यद ११ भेद है ।

कपूरगुणा ।

सतित सुरभि शीत. कर्पूरो लघुलेखनः ।

तृष्णायां मुरगोपे च वैरस्य चापि पूजितः ॥ (सुभुत)

अर्थ-कर्पूर-कटुग, सुगंधि, शीतल, हल्का, स्पर्शन कदा दया,
मुरगोप और विगताको दू फन्नेवाला है ।

भगवत् ।

कर्पूर शीतलोत्प्यश्चक्षुष्योलेखनोलघु ।

सुरभिमंशुरस्तित. कफपित्तविपापह ॥

दाहतृष्णास्यवैरस्यमंदोदार्गन्ध्यनाशनः ।

आक्षेपशमनोनिद्राजननोषमंरुद्धन ।

वेदनाहारक कामशान्तिकृच्छुकमेदकृत् ॥

कर्पूरोद्विविधः प्रोक्त पञ्चापकप्रभेदत ॥

पञ्चात्कर्पूरत प्रादुर्गपकगुणवत्तरम् ॥ (भाष्यकार)

अर्थ-कर्पूर-शीतल, शीघ्रपनर, नेत्राको दियारी सेवन हल्का,
सुगंधि मधु और कटुका है कदा कटु, विष रिध दाह तृष्णा मुरगोप
विगता (ग्वादीविगता) मेरुगेन और दुर्गंधिका नाश करे ॥ दाह
और अरुण इन भेदोंमें कपूर दो प्रकारका है । एक कपूरग भगवत् (कपूर)
कर्पूर अतिशय गुण है ॥

प्रविण ।

कर्पूरोमधुरस्तित. शीतल. सुगंधिलघु ।

नेत्र्योलेखनकृदप्य कटु. प्रीतिकरोमृदु ॥

मदकारीचसंप्रोक्त कफदाहतृपापहः ।
 रक्तपित्तकण्ठरोग नेत्ररोगविपतथा ॥
 पित्तचमुखवैरस्यदौर्गन्ध्यमुदरतथा ।
 मूत्रकृच्छ्रप्रमेहश्चमलगन्धचनाशयेत् ॥
 सएवतूतन-स्निग्धस्तिक्तश्चोष्णश्चदाहकृत् ।
 सोपिजीर्णोदाहशोपनाशनःपरिकीर्तितः ॥
 सोपिधौतोगुणैःश्रेष्ठःप्रोक्तोवैद्यैःपुरातनैः ॥

(निघण्टुरत्नाकर)

अर्थ-गुण । कपूर-मधुर, कडुवा, शीतल, सुगन्धि, हलका, नेत्राको हितकारी, लेखन, शुक्रको उत्पन्न करनेवाला, चरपरा, प्रीतिकारक, मृदु और मद (नसा) करनेवाला है तथा कफ, दाह, पियास, रक्तपित्त, कण्ठरोग, नेत्ररोग, विप, पित्त, मुखकी विरसता, दुर्गन्ध, उदररोग, मूत्रकृच्छ्र, प्रमेह और मलकी दुर्गन्धको दूर करेहै वही नवीन कपूर, स्निग्ध, कडुवा, गरम और दाहजनक है । वही पुराना कपूर दाह और शोपनाशक है और धुलाहुआ कपूर गुणोंमें श्रेष्ठ है ॥

कपूरलक्षणम् ।

शिरोमध्यतलचेतिकर्पूरद्विविध स्मृतः ।
 शिरस्तम्भाग्रजमध्ये मध्यपर्णतलेतलम् ॥
 भास्वद्विदर्शपुलकशिरोजाततुमध्यमम् ।
 सामान्यपुलकस्वच्छतलेवर्णतुगौरवम् ॥
 स्तम्भगर्भस्थितश्रेष्ठस्तम्भबाह्येचमध्यमः ।
 स्वच्छमीपद्मरिद्राभंशुभंतन्मध्यजस्मृतम् ॥

सदृढशुभ्ररूक्षश्चपुलकवाह्यजवदेत् ॥ (राजनिघण्टु)

अर्थ-शिर, मध्य और तल इन भेदामे कपूर तीन प्रकारके हैं, स्तम्भके अग्रभागमें होनेवाला कर्पूर शिरसजक है, मध्यमें होनेवाला मध्यम है और पत्तोंके तले होनेवाला तलसजक कहलाताहै, प्रकाशवान् निर्मल फूलाहुआ शिर है, सामान्य फूलाहुआ स्वच्छ मध्यम है और तलेमें होनेवाला घूर्णस्वरूप

भार्गवे, स्वभक्तके गर्भमें स्थित रहूंग श्रेष्ठ है, स्वभक्तों का हृदय हीनता का लक्षण है, निर्मल और पुण्य हृदयोंके भक्तोंके लक्षण स्वभाव हीन कष्ट का लक्षण होनेवाला है, उदा, गणेश, राम और कृष्ण आदि का कष्ट महान्ता है ॥

/ अथिग ।

स्वच्छभृङ्गारपत्रलघुतरविशदतोलनसिक्तकंचे-
स्वादेशैत्यसुहृद्यं हलपरिमलामोदसौम्यत्वदायि ।
निःस्नेहदार्ढ्यपत्रशुभतरमिति चेद्वाजयोग्यप्रशस्तं
कर्पूरचान्यथाचेद्बहुतसमलस्फोटदायित्रणाय ॥

(ग० नि०)

अर्थ-स्वच्छ भोगोंके पत्रोंके समान, छोटे २ दुबरे बहुत हल्के और तौलमें बहुत गे स्वामें सिक्त हो, टूटने, लपटने प्रिय, जो अत्यंत सुगन्धिका प्रवाह देनेवाला, तेजस्वित, हर पत्रवाला ऐसा कष्ट भयंकर उग्रम गमाओंके योग्य है । हमने दुबरे प्रकाश का कष्ट विशेष कष्टोंके और पावनों उग्रम करनेवाला है ॥

पोताग भीमजैनी-वगैर का लक्षण ।

पोताश्रय स्वादुशीतोष्ण्यस्तिक-कटु स्मृत ।
तृद्धाहरकपित्तानां कफम्यचविनाशकः ॥
त्रयोप्यनेतुर्कृष्ण-पकापकनिभेदतः ।
द्विप्रकार-स्रवहिष्टः पलोतिगुणद स्मृत ॥

(निरनुगताव)

- अर्थ- (पोताग भीमजैनी और वगैर कष्ट) स्वादि और शीत, शुद्धता, तिक, कटु कषा कृष्ण, मार, ग्लानि और कष्टका नाग कष्ट है यह लक्षण कष्ट पक भी भयंकर इन भेदोंमें ही भवार्थ ॥ हमने पक कष्ट शुद्धमें अधिक है ॥

शुद्धताग का लक्षण ।

ईशानासकपरोभेदीगुप्योमदापदः ।
अतिशुभोन्मादवृषाश्रमनामरुमिभयान ।
स्वेदचेवांगदारधनाशयेदिति कीर्त्तिनः ॥ (नि० २०)

अर्थ-शकरावास कपूर-दस्तावर, वृष्य, मदनाशक और अत्यन्त शुभ्र है तथा उन्माद, पियास, श्रम, खाँसी, कृमि, क्षईरोग, पसीना और अगके दाहको दूर करेहै ॥

हिमकपूरगुणा ।

हिमकर्पूरकः शुभ्रोवृष्यः शीतोरसेकटुः ।

तृड्दाहमोहस्वेदानानाशकः परमोमत ॥ (नि० २०)

अर्थ-हिमकपूर-शुभ्र, वीर्यजनक, शीतल, रसमें चरपरा, तथा तृषा, दाह, मोह और पसीनेको दूर करेहै ॥

उदयभास्करोत्कर्पूरगुणा ।

कर्पूरोदयभास्करोनिगदितः पीतः सरः स्वच्छकः ।

सप्रोक्त कठिनः कटुः समुदितः स्याद्दीपकोग्नेर्लघुः ॥

श्रीदः पित्तकरः कफक्रिमिविषान्वातश्चनासाद्यति

लालास्रावगलग्रहौचशमयेज्जिह्वाजडत्वापहः ॥

(नि० २०)

अर्थ-उदयभास्कर कपूर-(एक सदल निर्दल दोनों प्रकारका) पीत, दस्तावर, निर्मल, कठिन, चरपरा, अग्निको दीपन करनेवाला, हल्का, लक्ष्मीदायक, पित्तकारक तथा कफ, कृमि, विष, वात, नाकसे पानी-गिरना, मुखसे लग गिरनी, गलग्रह और जिह्वाकी जडता इनको दूर करेहै ।

पणकपूरगुणा ।

पर्णकर्पूरकस्तिक्तः शुद्ध्युन्मादकरोमतः ।

मूत्रकृत्पीनसदाहनाशयेदितिकीर्तितः ॥ (नि० २०)

अर्थ-पानकपूर-कटवा, ओधक, उन्माद करनेवाला तथा मूत्र रोग, पीनस और दाहनिवारक है ॥

चीनकपूरनामानि ।

चीनकश्चीनकर्पूरः कृत्रिमो धवलः कटुः ।

मेघसारस्तुपारश्च द्वीपकर्पूरजः स्मृतः ॥

अर्थ-चीनक चीनकपूर, कृत्रिम, धवल, कटु, मेघमार, तुपार, द्वीपकर्पूरज ॥

| | | |
|-------------------|----------|--------|
| हिन्दीभाषामें | कस्तूरी | |
| बङ्गभाषामें | भृगनाभी | |
| महाराष्ट्रभाषामें | कस्तूरी | |
| गुर्जरभाषामें | कस्तूरी | |
| कर्णाटकीभाषामें | कस्तूरी | |
| तैलङ्गभाषामें | कास्तूरी | |
| अग्रेजीभाषामें | मस्क | Musk |
| लैटिन्भाषामें | मोस्कस् | Moscus |
| फारसीभाषामें | मुष्क | |
| अरबीभाषामें | मिस्क | |

कस्तूरीभेदा ।

कपिलापिङ्गलाकृष्णाकस्तूरीत्रिविधाक्रमात् ।

नेपालिकाचकाश्मीरेकामरूपेचजायते ॥ (रा० नि०)

कामरूपोद्भवाश्रेष्ठानैपालीमध्यमाभवेत् ।

काश्मीरदेशसम्भूताकस्तूरीह्यधमाभवेत् ॥ (भावप्र०)

अर्थ—कस्तूरी वर्णके भेदकरके तीनप्रकारकी है । जैसे कपिल वर्ण, पिङ्गलवर्ण और कृष्णवर्ण, तहा नेपालमें उत्पन्न होनेवाली कपिलवर्ण अर्थात् भूरेरगकी होतीहै, काश्मीरमें उत्पन्न होनेवाली पिङ्गलवर्णकी होतीहै और कामरूपदेशमें उत्पन्न होनेवाली काले रगकी होतीहै किन्तु भावमिश्रने नेपाल देशकी कस्तूरी नीले रगकी और काश्मीरकी कपिलरगकी लिखीहै । कामरूपदेशमें उत्पन्न होनेवाली श्रेष्ठ है, नेपालदेशमें उत्पन्न होनेवाली मध्यम है और काश्मीरमें उत्पन्न होनेवाली कस्तूरी अधम होतीहै ॥

कस्तूरीपथभेदा ।

साप्येकाखरिकाततश्चतिलकाज्ञेयाकुलित्थापरा

पिडान्यापिचनायिकेतिचपरायापचभेदाभिधा ॥

(रा० नि०)

अर्थ—खरिका, तिलका, कुलित्था, पिण्डा और नायिका इन भाति पाच प्रकारकी है ॥

चूर्णाकृतिस्तुखरिकातिलकातिलाभा
कौलित्यवीजसदृशाचकुलत्थकाच ।
स्थूलाततः कियदियकिलपिण्डकान्मा
तस्याश्चकिंचिदधिकायदिनायिकारण्या ॥

(स० नि०)

अर्थ—चूर्णके महान् गरिमा, तिलके महान् तिलका, पुष्पदीपके मंगलके
ममान् पुष्पा, पुष्पाकम्पूरीसे पुष्प मोटी पिण्डिका और पिण्डिकाग
विहित अधिक रघु नाविका कम्पूरी दोतीट ॥

गङ्गाधरप्रसादः ।

स्वादंतिक्तापिञ्जराकेतकीनाङ्गन्धघत्तलावयतोलनेन ।
यापुन्यस्तानिर्वैरुण्यमीयात्कस्तूरीमागजभोग्याप्रशस्ता ॥

(ग० सि०)

अपे-स्वाग्मे कटुसो, पीतगुणो, गेनरीय पञ्चमी समान सुगन्धिराणी
 तौग्मे हृत्ती और पानीम गेनरा विरपा रंग न पद्वे वद कटुती
 गताभारे गेनने योग्यद ॥

अद्विष्ट ।

यागन्धकेतकीनां हस्तिपिग्मिलैर्घणत पिश्रुराभा
स्वादेतिक्ताकटुर्शलघुगन्धतुलितामर्दिता निष्णान्यात ॥
दाहयानैतिबद्धाचिमिचिमिकुरुतेनमंगन्धादुताभे
सान्स्वरीप्रशस्ताग्मृगतनुजाराजतेगजमोन्धा ॥

(न० नि०)

अर्थ-जो जेतनीच वस्तुचि मरणा मधुनानी हो. तेमन हादिसींच मरणा
हो. त्यादुमि जेतनी मया चरदनी हो. सोसामे हादिसी मरुने पिचला
हो जेतना भागमे हादिसीच नही जे, तेमु मरुन वस्तुचि विम विम मरु
हो आर चमटा जेतनेच ममान मयाआर जो मरुने वस्तुचि मरुने वस्तुचि
हादिसीच भागमे सोसामे ॥

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

यात्वेनरनिनहरिणंभीणंनेगिणिपमदगन्पुना ।

कामातुरेचतरुणेकस्तूरीबहलपरिमलाभवति ॥

(रा० नि)

दुष्टकस्तूरीलक्षण ।

यास्निग्धाधूमगधावहतिविनिहितापीततांयावसौत-
निःशेषयानिविष्टाभवतिहुतवहेभस्मसादेवसद्यः ।

याचन्यस्तातुलायकिलयतिगुरुतांमर्दितारूक्षणच
ज्ञेयाकस्तूरिकेयखलकृतमतिभिःकृत्रिमानैवसेव्या ॥

(रा० नि०)

अपिच ।

शुद्धोवामलिनोस्तुवामृगमदःकिंजातमेतावता
कोप्यस्याऽनवधिश्रमत्कृतिनिधिःसौरभ्यएकोगुणः ।

येनासौस्मरमण्डनैकवसतिर्भालेकपोलेगले
दोर्मूलेकुचमण्डलेचकुरुतेसगकुरङ्गीदशाम् ॥

(रा० नि)

दुष्टकस्तूरीपरीक्षा ।

करतलजलमध्येस्थापनीयामहद्भिः

पुनरपितदवस्थचितनीयमुद्धर्त्तम् ।

यदिभवतिचरक्ततज्जलपीतवर्णं

नभवतिमृगनाभिः कृत्रिमोऽयविकारः ॥ (का०)

अर्थ-बालक, वृद्ध, क्षीण और रोगी मृगकी कस्तूरी मद्य गन्धवाली होती है । कामातुर और तरुण मृगकी कस्तूरी बहुत उज्ज्वल और अत्यन्त सुगन्धवाली होती है । जो कस्तूरी छूनेमें चिकनी हो और धुँयेँकेसी गन्ध आवे, वस्त्रमें रक्खनेसे वस्त्र पीतवर्ण होनाय, आगमें रखतेही तत्काल भस्म होजाय, तगज्में रक्खी हुई भारी हो, अर्थात् कम चट्टे और मलनेसे रूखी होजाय, उस कस्तूरीको बनावटी ममझकर भ्रम करना नहीं चाहिये शुद्ध व मलिन जातिकी कस्तूरी नपुंसक मृग और मृगी की होती है, इनके अतिरिक्त और कोई दूसरीकी पहिचान नहीं, इनमें केवल एक मुगवही बड़ा चमत्कृत गुण

है। जो कि यह नामका श्रृंगार मस्तक, कपाल पञ्च भुजा और वृणम
पदलभ मियाऊ लगाई जाती है। द्येर्डीमे जय गगन वर मुनिमादनर
उमम रम्भूरी पदो गृहेदे गीत उमका जय टाण व पीना होजाय तो
बोह रम्भूरी अमल नहीं है। दृष्टिम अर्थोष यनाकी विनाई ॥

चरुलीपदा ।

कस्तूरीछर्दिदोर्गन्ध्यरक्तपित्तकफापदा ॥ (ग० प०)

अर्थ-कस्तूरी छर्दि, दुग्ध रक्तपित्त और कफरक्त नाशक है ॥

भावित ।

कस्तूरिकाकटुस्तिक्तानागेष्णाशुकलागुरु ।

कफवातविपच्छर्दिशीतदोर्गन्ध्यशोषहृत् ॥ (भा० प्र०)

अर्थ-कस्तूरी-चर्मरि वदरी ग्रास्युन तम गुणनाक, भारी
तया वर वान, विष, छाँह, जीत दुग्धनाश और शोषनाश है ॥

अपरा ।

कस्तूरिकातुचुष्याकटीतिकागुंधिका ।

उष्णाशुकप्रदागुर्नीवृष्याक्षारारसायनी ॥

किलासकुष्ठमुखरुक्कपदोर्गन्ध्यनागिनी ।

अलक्ष्मीमलवाततृदछर्दिशोषविपापदा ॥

शीतक्षामगोगलनाशयेदितिरितीता ॥ (नि० गना०)

अर्थ-कस्तूरी-नैप्रासी दिकारी चर्मरि, चर्मरि, मुनीपन गम,
शुद्धार भारी दुग्ध, क्षार ग्रास्युन तथा विपाप बोध, मुनीपन
नप दुग्ध अलक्ष्मी मन वात दुग्ध छाँह आप, विष, रक्त और
शीतरी नाश करे ॥

विशेष । कस्तूरी दिग्दर्शी नाभिद होनी है। उम दिग्दर्शी आरका उत्तरी
नाभिरी कायेने है। उमकी कस्तूरीना नाभा वदन है। यह नाभा छाँह
तीन है। तथा पाय द्योतका होना है और उमकी आरका मोन होना है। उमकी
उत्तरी छाँह छाँह बाध होना है। उम मुन होना है, वर अगमो कस्तूरिका विष
होना है, अगमो आरुकी चर्मरि रक्तरी उम अलक्ष्मी नाशक कस्तूरी
विपाप है। शिरीमें मज्जा गुरुकी मज्जा विपाप है। शिरीमें विपाप
मज्जा विपाप है। शिरीमें कस्तूरी चर्मरि मज्जा विपाप है। शिरीमें

मटरके दानेके समान निकलतीहै, जिन हिरनोंकी नाभिसे कस्तूरी निकलती है, वह हिरन काश्मीर नेपाल और कामरूदेगमे होतेहैं ।

गन्धमार्जारवीर्यं (जवादिक्स्तूरी अर्थात्गोरासार व वेदभजीर)

मार्जारीवान्तिमाद्यतेचक्षुष्याकफवातजित् ॥

(मदनपालनि०)

अर्थ—गन्धमार्जारवीर्यं—वान्तिको उत्पन्न करे है, नेत्रोंको हितकारीहै और कफ वातको जीतेहै ॥

अपिच ।

गन्धमार्जारवीर्यं तु वीर्यकृत्कफवातहृत् ।

कण्डूकुष्ठहरनेत्र्यसुगन्धिस्वेदगधनुत् ॥

(भा० प्र०)

अर्थ—गन्धमार्जारवीर्यं—वीर्यको उत्पन्न करेहै, कफवातनाशक तथा कण्डू और कोढ़को दूर करेहै, नेत्रोंको हितकारी, सुगन्धित और पसीनेकी वासको हरेहै ॥

अन्यच्च ।

ओतूद्रवाक्स्तुरिकाचक्षुष्योष्णासुखावहा ॥

सुगधिकाचसुस्निग्धावातेशस्ताचवान्तिदा ॥

शुक्रवृद्धिकरीवृष्याअङ्गकांतिकरीमता ॥

कण्डूकिटिभकुष्ठञ्चघर्मगधविपतथा ॥

कण्ठरोगञ्चकुष्ठञ्चनाशयेदितिकीर्तिता ॥

(निघण्टुरत्नाकर)

अर्थ—गन्धमार्जारवीर्यं—नेत्रोंको हितकारी, गरम, सुखजनक, सुगन्धित, वात रोगम हितकारी, वान्तिदायक, वीर्यवर्द्धक, वृष्य, शरीरकी कान्ति बढ़ानेवाली, तथा कण्डू, किटिभ, कुष्ठ, पसीना, दुर्गन्ध, विप, कण्ठरोग और कोढ़का नाश करनेवाली है ।

एतावस्तूरीगुणा ।

लताक्स्तुरिकास्वादुर्वृष्याशीतालघु स्मृता ॥

नेत्र्यातिक्ताछेदनीचतीक्ष्णावस्तिविशोधिनी ॥

वस्तिरोगकफतृष्णांमुखरोगञ्चनाशयेत् ।

लालाघ्रावमिवातदोर्गन्धचमदजयेत् ॥

अलक्ष्मीनाशिनीप्रोक्ताभवेदेशेचक्षिणे ॥ नि० २०)

अर्थ-लताकस्तूरी (मुष्कदाना) स्वादिष्ट, वाष्पजनक, शीतल, दलशी, नेत्रोको हितकारी, कडवी, छेदक, तीक्ष्ण वस्त्रिपुटिकरनेवाली तथा वस्त्रिरोग, कफ, वृषा, मुखरोग, लालाघ्राव वान्ति, वात, दुर्गन्ध, मन् और अलक्ष्मीका नाश करनेवाली है ॥

अपिच ।

लताकस्तूरिकातिकाहृद्याशीतास्यगेगनुत् ॥ (राजसूय)

अर्थ-लताकस्तूरी (मुष्कदाना) कडवी, दृढरसो हितकारी, शीतल और मुखरोगनाशक है ॥

विवरण । लताकस्तूरीकी बेल दक्षिणदेशमें होतीहै, ऐमा निरालसलस्यम निरसाहै । किन्तु यहीं देखनेमें नहीं जाती, सम्यक्तम लताकस्तूरी और दक्षिणदेशजा कहते हैं । हिन्दी भाषामें लताकस्तूरी और मुष्कदाना कहते हैं । चक्र, गुर्जर, महागङ्गा, कर्णाटकादि देशमें लताकस्तूरीही नामसे मणिद्ध है । तैलद्र देशमें तालो कलमु कहतेहैं । तामिऴदेशमें कटेकस्तूरी कहते हैं । द्राविडदेशमें कस्तूरवेण्ड कहते हैं ।

व्यवहार-बीज मात्रा मात मागंकी ।

पुंश्रुमनामानि ।

काश्मीरजकुङ्कुमश्चाहिकशोणिताह्वयम् ॥

कुसुमात्मकसंकोचपीतनरक्तचदनम् ॥ (केचित्)

अर्थ-काश्मीरज, पुंकुम, चाहीक, शोणिताह्वय, कुसुमात्मक, गङ्गाज, पीतन, रक्तचन्दन, (पीतर, धम रक्तमन, गङ्गापिशुन, दग्निनन, रत्न, रज, दीपक, लोहित, मीभर, चन्दन, काश्मीरजम अमिणिग, वर, रक्त, पिशुन, पीर लोहित, चदन, चारु, काश्मीरजम चाहीक, वरचाहीक, अमिणिग, अरु, वरुमीर, रुनिर, शट, शोणिन, पुशुण, वरेष्य, अरुण, वाउपर, जायुड, यान्त, बडिशिल, केमर, गौर केमर, पीर, जय, रुभिर,) ॥

हिन्दीभाषामें

पेसर

चक्रभाषामें

पुशुम-पेसर

मराठीमें

केसर

| | | |
|-------------|---------------|----------------|
| गुजरातीमें | केसर | |
| कर्णाटकीमें | कुकुम | |
| तैलङ्गीमें | कुकुमपुव | |
| अग्नेजीमें | सेफ्रन् | Saffron |
| लैटिन्में | क्रोकमसेटिवस् | Crocus sativus |
| द्राविडीमें | कुकुमपूव | Cracistimata. |
| फारसीमें | लरकीमास | |
| अरबीमें | जाफरान | |

कुङ्कुमभेदाः ।

काश्मीरदेशजक्षेत्रे कुकुमं यद्भवेद्धितम् ।

सूक्ष्मकेशरमारक्तपद्मगन्धितदुत्तमम् ॥

बाह्यीकदेशसञ्जातकुङ्कुमपाण्डुरभवेत् ।

केतकीगन्धयुक्ततन्मध्यमसूक्ष्मकेशरम् ॥

कुङ्कुमपारसीकैयमधुगन्धितदीरितम् ।

ईषत्पाण्डुरवर्णतदधमस्थूलकेशरम् ॥ (भा० प्र०)

अर्थ—केशर तीन प्रकारकी है, काश्मीर देशमें उत्पन्न होनेवाली बाह्यीक (बुखारा) देशमें उत्पन्न होनेवाली और पारस (ईरान) देशमें उत्पन्न होनेवाली । जो केशर काश्मीरके खेतोंमें उत्पन्न होती है, वह सूक्ष्म केशरसे युक्त कुङ्कुम ललाई लिये और कमलकी सहस्र सुगन्धियुक्त होती है, यह सब केशरोंमें श्रेष्ठ है ॥ जो केशर बाह्यीक (बुखारा) देशमें उत्पन्न होती है, वह पीली और केतकीके पुष्पकी समान सुगन्धियुक्त होती है, और सूक्ष्मभी होती है यह मध्यम है ॥ जो केशर पारस (ईरान) देशमें उत्पन्न होती है, वह मधुकी गन्धयुक्त, कुङ्कुम पीली और बड़े केशवाली होती है, उसको अधमकेशर जानना ।

कुङ्कुमलक्षणम् ।

अव्यक्तरक्तिमामोदिमर्द्दनात्कर्णिकात्मकम् ।

स्थिररागंकरेलग्नभग्नकुङ्कुममुत्तमम् ॥

हीनमेवाग्निकाश्मीरगरपाण्डुरकेशरम् ॥ (द्रव्यचिह्न)

अर्थ-निमम अम्रगट लगी हो और मुगधवाली हो, तथा मग्नेमे कणिफाकी समान हाथमे लगकर उमका ग्ग म्थिर ग्दे, वह केशर उत्तम है और जो केशर अग्निके रंगकी समान, विषयुक्त पीने म्गकी केशरमे युक्तहो, वह हीन केशर समझनी ॥

कुड्मगुणा ।

कुड्मसुरभित्तकटूष्णकामवातकफकण्ठरुजाघ्नम् ।

मूर्च्छशूलविपदोपनाशनगेचनंचततुकान्तिकारकम् ॥

(गजनिपट्ट)

अर्थ-केशर-मुगधित, कडवी, चरपरी, गरम, गंचक, शरीरकी शोभा बढ़ानेवाली, तथा कास, वात, कठिना गग्नेकर्षादा और विषके विचारोंका नाश करे है ॥

अपिष ।

कुड्मकटुकस्निग्धशिरोरुग्व्रणजन्तुजित ।

तिक्तवमिहरवर्ण्यव्यङ्गदोषत्रयापहम् ॥ (भावप्रकाश)

अर्थ-केशर-चरपरी है, स्निग्ध है, तथा शिरोरोग, व्रण और कृमिनाशक है, कडवी है, वमनको हरे, शरीरके रंगको सुन्दर करे, व्यन्त्र भयांश सार और त्रिदोषका नाश करे है ॥

अपिष ।

कुड्म रेचकप्रोक्तकण्डूवैवर्ण्यनाशनम् ॥ (रा० व०)

अर्थ-केशर-रेचक अर्थात् म्लत बगनेवाली है, तथा खुनडी और विष-ताको दूरकरे है ॥

अपिष ।

कुड्मकटुकसिध्मशिरोरुग्व्रणजन्तुजित ।

उष्णहास्यकरवर्ण्यव्यङ्गदोषत्रयापहम् ॥ (मन्त्रविनोद)

अर्थ-केशर-चरपरी, गरम है, रंगकी बगनेवाली, वमनको उपात्र करनेवाली तथा सिध्मरोग, शिरोरोग, व्रण कृमि, व्यन्त्र और त्रिदोषनाशक है ।

अपिष ।

कुड्मतीक्ष्णमुष्णअप्रियंवर्ण्यसुगन्धिकम् ।

कटूष्णकफवानघ्नत्वग्दोषस्वेदपित्तजित ॥ (वैचित)

अर्थ—केशर—तीक्ष्ण, गरम, म्रिय, वर्णको उज्ज्वल करनेवाली, चरपरी, कफवातनाशक, त्वचाके रोग, पसीना और पित्तको दूर करे है ॥

सूखीहुई सुगन्धियुक्त गर्म केशर, देशी वैद्यक चिकित्साकी अपेक्षा ईरानी चिकित्सामें अधिक वर्त्तावमें आती है ।

तैलादि सुगन्ध और रंगके लिये अधिकतासे काममें लीजाती है । ईरान देशमें इसका व्यवहार अनेकप्रकारसे होताहै, आनन्दपूर्वक प्रसव करनेके लिये और प्रसवके उपरान्त जरोयुकी पीडाके लिये ईरानदेशकी स्त्री केशरकी गोलीयें अचलमें बाँध रखतीहैं ।

होमियोपैथिकके मतसे रजसवधीय रोगोंमें इसका प्रयोग देखा जाता है ।

मात्रा चार रत्तीकी ।

तृणकुङ्कुमनामानि ।

तृणकुङ्कुमतृणास्रगन्धितृणशोणितञ्चतृणपुष्पम् ।

गन्धाधिकंतृणोत्थतृणगौरलोहितञ्चनवसंज्ञम् ॥

अर्थ—तृणकुङ्कुम, तृणास्र, गन्धितृण, शोणित, तृणपुष्प, गन्धाधिक, तृणोत्थ, तृणगौर और लोहित ॥

अस्पृशुणा ।

तृणकुङ्कुमकटूष्णकफमारुतशोफनुत् ।

कण्डूतिपामाकुष्ठामदोषघ्नभास्कम्परम् ॥ (राजनिघण्टु)

अर्थ—तृणकेशर—चरपरी, गरम, तथा कफ, वात, सृजन, कण्डू, पामा, कोढ़ और आमकी दूर करेहै और दीप्ति करेहै ॥

चन्दननामानि ।

श्रीखडचन्द्रकान्तञ्चगोशीर्षभोगिवल्लभम् ।

भद्रसारमलयजगन्धसारञ्चचन्दनम् ॥

अर्थ—श्रीखण्ड, चन्द्रकान्त, गोशीर्ष, भोगिवल्लभ, भद्रसार, मलयज, गन्ध-सार, चन्दन, (भद्रश्री, एकाग, पटीर, वर्णक, भद्राश्रय, सेव्य, गन्धिण, ग्राम्य, मर्पष्ट, पीतसार, महार्ह, श्वेतचन्दन, तिलपर्ण, मगल्य, मलयोद्भव, गन्धराज, सुगन्ध, सर्पावास, शीतल, गन्धादय, पावन, शीतगन्ध, तैलपर्णिक, चन्द्रद्युति, भद्रश्रिप, शितहिम, सर्वप्रिय, गजयोग्य) ॥

(व)



चन्दन

(ग)



लालचन्दन

हिन्दीभाषाम द्राविडमे
 बंगला-मराठी-तेलुगूमें
 कर्णाटकीभाषामें
 गुजरातीभाषामें
 अंग्रेजीभाषामें
 लैटिनभाषामें
 फारसीभाषामें
 अरबीभाषामें

चन्दन
 चन्दन.
 गन्ध.
 सुषुप्त
 सेंटल वुड Santal wood
 सेंटेल्लम-आल्बम Santal m album
 मन्दल मुफेद
 मन्दले अरिय

चन्दनशालम् ।

स्वादेतिक्तकपेपीतछेदेरक्ततनोमितम् ।

ग्रंथिकांटरसयुक्तचन्दनश्रेष्ठमुच्यते ॥ (भा० प्र०)

अर्थ-स्वादमं कटुता हो, विमनेमें पीडाहो, तोडनेमें गाढ हो, गेरानेमें
 भेतहो, भांग गाढ तथा कोटर करके मयुक्त हो, ऐसा चन्दन श्रेष्ठ होता है ॥

चन्दनगुणा ।

चन्दनं शीतलरूक्षतिक्तमाढादनलघु ।

इद्यमर्ण्यविपश्लेष्मनृणापित्तान्वादहित ॥

(मदनमालाविष्णु)

अर्थ—चंदन—शीतल, रुक्ष, कडुवा, आनन्दजनक, हलका, हृदयको हितकारी, वर्णको उज्ज्वल करनेवाला तथा विष, कफ, वृषा, पित्तरक्त और दाहको दूर करे है ॥

अपिच ।

श्रीखण्डोयद्वितीयः स्यादतिशीतश्चतुक्तकः ।

दाहपित्तज्वरच्छर्दिमोहतृष्णाविनाशनः ॥

रक्तरुद्धमूत्रकृच्छ्रघ्नः कासांश्चैव विनाशयेत् ॥

(गणनिघण्टु)

अर्थ—दूसरे प्रकारका श्रीखण्ड चंदन, अत्यन्तशीतल, कडुवा, तथा दाह, पित्त, ज्वर, छर्दि, मोह और वृषाको दूर करे है ॥ तयारक्तरोग, मूत्रकृच्छ्र और खासीका विनाश करे है ॥



चंदन (सफेत)

अन्यथा ।

श्रीखण्डः कटुकस्तिक्तो वृष्य शीतकपायकः ।

कान्तिकृत्कामजनको हृद्यश्च सुरभिर्मतः ॥

आह्लादनोलघू रूक्ष पित्तभ्रान्तिज्वरापहः ।

छर्दितृक्कृमिसन्तापदाहश्रमविनाशनः ॥

मुखरोगरक्तदोषशोषश्चैव विनाशयेत् ॥ (निघण्टुरत्नाकर)

अर्थ-श्रीखण्ड चन्दन-चम्परा, कडवा, वीर्यजनक, शीतल, कपेला, वान्ति-
दायक, कामको उत्पन्न करनेवाला, हृदयको हितकारी, सुगन्धि, आशान्जनक,
हल्का, रूखा तथा पित्त, भ्रम, ज्वर, वान्ति, पियास, कृमि, सन्ताप, दाह,
भ्रम, मुरारोग, रुधिरविकार और शोषका नाश करे है ॥

चन्दनभेदाः ।

चन्दनद्विविधप्रोक्तवेष्टसुककडिसञ्ज्ञिकम् ।

वेष्टन्तुसार्द्रविस्फोटस्वयशुष्कतुसुककडि ॥

अर्थ-चन्दन, वेष्ट और सुकडि इन भेदोंसे दो प्रकारका है तदां गीला
और छिद्ररहित वेष्ट चन्दन है और स्वयं शुष्क सुकडि है ।

मलयाद्रिसमीपन्था-पर्वतावेष्टसञ्ज्ञिका ।

तज्ज्ञातचन्दनयत्तुवेष्टवाच्यकचिन्मतम् ॥ (नि० २०)

अर्थ-मलयाचल पर्वतके निकट जो पर्वत है, उनको वेष्ट कहते हैं उन
वेष्ट नामवाले पहाड़ोंमें चन्दन उत्पन्न होता है, इसी कारण किर्गये मतमें
वह चन्दन वेष्ट नामवाला कहलाता है ।

वेष्टचन्दनगुणाः ।

वेष्टचन्दनमतीवशीतलदाहपित्तशमनज्वरगपहम् ।

छर्दिमोहवृषिकुष्ठेमिरोत्कासरक्तशमनञ्चतित्तकम् ॥

(नि० २०)

अर्थ-वेष्ट चन्दन-अत्यन्त शीतल है तथा शर, पित्त, ज्वर, वमन, मोह,
वृषा, कुष्ठ, तिभिग्मेग, गांभी और रक्त रोगको दूर करे और पदवाह ।

सुककडिचन्दनगुणाः ।

सुककडिश्चन्दनतित्तकृच्छ्रपित्तासदाहनुत ।

शैत्यंसुगन्धिद्वार्द्रशुष्कलेपेनदन्यथा ॥ (नि० २०)

अर्थ-सुककडि चन्दन-कडवा तथा सुगन्ध, पित्तरक्त और दाहको दूरकर
है शीतल और सुगन्धिदायक है । यह गुण गीले चन्दनके है और गीले
चन्दनके गुण और प्रकारके है ।

शम्बरचन्दनगुणाः ।

कैगनमहलगन्धमल्लशम्बरचन्दनम् ॥

अर्थ—कैरात, वहलगन्ध, वल्य, शम्बर, चदन, (गंधकाष्ठ, कैरातक, शैलगन्ध) ।

शम्बरचन्दनगुणा ।

कैरातकशीतलतित्तकंचश्लेष्मानिलघ्नश्रमपित्तहारि ।
विस्फोटपामादिकनाशनचतृषापहन्तापविमोहनाशनम् ॥
(रा० नि०)

अर्थ—शम्बरचदन शीतल, कडवा, तथा कफ, वात, श्रम, पित्त, विस्फोटक, पामा, तृषा, ताप और मोहका नाश करे है ।

पीतचन्दननामानि ।

नारायणप्रिय पीत पीताभ हरिचन्दनम् ।
कालीयक पीतकाष्ठ जायक कान्तिदायकम् ॥

अर्थ—नारायणप्रिय, पीत, पीताभ, हरिचन्दन, कालीयक, पीतकाष्ठ, जायक, कान्तिदायक, (कालानुसार्य, जावक, कालेय, वर्णद, पीतगन्ध, पीतक, माधवप्रिय, कालेयक, कर्पूर, कालीय, हरिप्रिय, कालसार) हि० कलम्बक, पीलाचदन । व० कलम्बा । लैटिन्म० सेन्टेलम् ड्रव ।

अस्य गुणा ।

पीतश्चचदनशीतस्तित्त कान्तिकरोमतः ।
विचर्चिकाकुष्ठकण्डूकफदद्रुविपापहः ॥ (नि० र०)

अर्थ—पीलाचदन—शीतल, कडवा, कान्तिकारक तथा विचर्चिका, कुष्ठ, कण्डू, कफ, दद्रु, विष, रक्तपित्त, कृमि, व्यङ्ग, पित्त, तृषा, ज्वर और टाहको दूर करे है ।

रक्तचन्दननामानि ।

ताम्राभताम्रसारचरञ्जनरक्तचन्दनम् ।
रक्तसारताम्रसारंरक्तबीजकुचन्दनम् ॥ (नि० र०)

अर्थ—ताम्राभ, ताम्रसार, रञ्जन, रक्तचदन, रक्तसार, ताम्रसार, रक्तबीज, कुचन्दन, (क्षुद्रचन्दन, तिलपर्णी, पत्राङ्ग, कुमोद, रक्ताक्त, ताम्रवृक्ष, चदन, लोहित, लोहितचन्दन, ताम्रसारक, रक्ताङ्ग, क्षुद्रचदन, अर्कचदन, तिलपर्णिका, पत्रङ्ग, पत्राङ्ग, प्रवालफल, भास्करप्रिय, तिलपर्ण)

| | |
|----------------|--------------------------------------|
| हिन्दीभाषामं | लाल चंदन |
| बगभाषामं | रक्तचंदन |
| मराठीभाषामं | रक्तचन्दन |
| गुजरातीभाषामं | रतानली |
| कर्णाटकीभाषामं | रक्तचन्दन |
| तैलङ्गीभाषामं | रुग्मन्धपूचैव-रक्तचन्दनम् |
| तामिळीभाषामं | मेन् शाण्डनम् |
| अंग्रेजीभाषामं | रेडगाडलवुड Red sandal wood |
| लैटिन्भाषामं | टोकोपेरुमेन्टेलम् Tocaropus Mentalum |
| फारसीभाषामं | सदल मुख |
| अरबीभाषामं | सदलेअहमर |
| | अक्षयगुणा । |

रक्तचन्दनमतीवशीतलतित्तलक्षणगदानदोपनुत् ।

वातपित्तकफकाससंज्वरभ्रांतिजतुवमधुतृपापहम् ॥ (रा० नि०)

अर्थ-रक्तचंदन-अत्यन्त शीतल चट्टा, रक्तगोगनाशक, वात, पित्त, कफ कागज्वर भ्रान्ति, कृमि, वमन और तृपाहो नाश करे है ।

अपिच ।

रक्तपित्तहर्मस्यत्रक्षुण्णरक्तचन्दनम् ॥ (राजनिषण्डु)

अर्थ-रक्तचंदन-रक्तपित्तनाशक, घनकाय और नेत्रोंको हिमकारी है ।

अप्यस ।

रक्तशीतंगुरुम्यादुच्छर्दितृष्णासपित्तहृत् ।

तित्तनेत्रहितवृष्यज्जग्वणविषापहम् ॥ (भा० प्र०)

अर्थ-रक्त चंदन-शीतल, भारी म्याग्निष्ठ, रक्तपित्तनाशक, वमन निवारक तृष्णाको नाश करनेवाला, चट्टा नेत्रोंको हिमकारी, रीपजनक तथा अर अण और विषको दूर करे है ।

पतङ्गमायानि ।

पतङ्गरक्तसारश्चसुगन्धश्चनतथा ।

पट्टरञ्जकमाख्यातंपत्तरश्चरुचन्दनम् ॥ (मा० प्र०)

अर्थ-पट्टर, रक्तसार, सुगन्ध रक्त पट्टरश्चरु, पट्टर, रुचन्दन, (पट्टर,

रक्तकाष्ठ, सुरङ्गद, पत्राण्य, पट्टरङ्ग, भार्यावृक्ष, रक्तक, लोहितरङ्गकाष्ठ,
रोगकाष्ठ, पट्टरञ्जनक)

हिन्दी, कर्णाटकी, गुजराती, मराठी—पतङ्ग, पतङ्गवृक्ष ।

वगला— वकम काष्ठ ।

तैलझीमें— औकनु कट्टु ।

तामिलीमें— वट्टझी ।

इंग्रेजीमें— सेप्पनवुड् । Sappan wood

लैटिनमें— मिमालपिनियासेप्पन् । Coesalpinia Sappan

फारसी—अरबीमें— वकम ।

पतङ्गगुण ।

पत्राङ्गकटुकंरुक्षंमालशीततुगौल्यकम् ।

वातपित्तज्वरमचविस्फोटोन्मादभूतहृत् ॥ (राजनिवण्डु)

अर्थ—पतङ्ग—चरपङ्ग, रूखा, खट्टा, शीतल, गौल्य, तथा वात, पित्त,
ज्वर, विस्फोटक, उन्माद और भूतनाशक है ॥

अपिच ।

पत्राङ्गस्तिक्तक शीतोरुक्षोम्लोमधुरःकटुः ।

व्रणशुद्धिकरोवर्ण्यःसुगन्धिर्वातपित्तहृत् ॥

उन्मादज्वरविस्फोटमूत्रकृच्छ्रव्रणाजयेत् ।

कफाश्मरीरक्तदोषभूतबाधानिवारणः ॥ (निघण्टुरत्नाकर)

अर्थ—पतङ्ग—कडवा, शीतल, रुक्ष, अम्ल, मधुर, चरपरा, व्रणशोधक,
वर्ण कारक, सुगन्धि तथा वात, पित्त, उन्माद, ज्वर, विस्फोट, मूत्रकृच्छ्र,
व्रण, कफ, पयरी, रुधिरविकार और भूतनाशको दूर करे है ॥

अपिच ।

हरिचन्दनवद्वेद्यविशोपादाहनाशनम् ॥ (भा० प्र०)

अर्थ—पतङ्गके गुण और पीले चन्दनके गुण समान जानने किन्तु विशेष
कण्ठके दाहको दूर करे है ।

यथैरचन्दननामानि ।

वर्वरोत्थवर्वरकश्चेतवर्वरकतथा ।

शीतसुगन्धिपित्तारिःसुगभिश्चेतिसप्तधा ।

अर्थ-वर्धरोत्य, वर्धक, श्वेतवर्धक शीत, मुगन्धि, पित्ताग्नि भुरभि.
(वर्धरोद्रव)

वधरगुणा ।

वर्धरंशीतलतित्तकफमारुतपित्तजित् ।

कुष्ठकण्डूवणान्हन्तिविशेषाद्रक्तदोषजित् । (राजनिष्पद्)

अर्थ-वर्धचन्दन-शीतल, कडवा, तथा कटु वात, पित्त, कुष्ठ कण्डू
और प्रणनाशक है । विशेषकर रक्त विकारको दूर करेगा ।

हरिचन्दननामानि ।

हरिचन्दनंसुरार्हं हरिगन्धंचन्द्रचन्दनदिव्यम् ।

दिविजंचमहागन्धनन्दनजलोहितजनवसज्ञम् ॥

अर्थ-हरिचन्दन-सुरार्ह, हरिगन्ध, चन्द्रचन्दन दिव्य, दिविज महागन्ध,
नन्दनज, लोहितज ।

हरिचन्दनगुणा ।

हरिचन्दनतुदिव्यंतित्तहिमंतदिहदुर्लभमनुजैः ।

पित्तादोषविलेपिचन्दनवच्छ्रमहरचशोषहरम् ॥

(रा० नि०)

अर्थ-हरिचन्दन-दिव्य, कडवा, शीतल तथा पित्त, आग्नेय भ्रम
[वमन, मन्त्राग्नि, मेघोदोष] नाशक है ॥ और गामान्य चन्दनकी समान
भ्रम तथा शोषको दूरकरे है । यह चन्दन मनुष्योंको मित्रना दुर्लभ है ।

चन्दनानिसमानानिरसतोवीर्यतस्तथा ।

भिद्यन्तेकिन्तुगन्धेनतत्राद्यगुणवत्तरम् ॥ (राजनिष्पद्)

अर्थ-सर्वप्रकारको चन्दन सम और वीर्यम समान है । किन्तु आग्नेय
भ्रमात् श्रीरस चन्दन मय चन्दनोंकी अपेक्षा मुगन्धिम अधिक गुणवान् है ।

विशरण-चन्दनकी भक्त जाति है सर्वत्रचन्दन १ श्रीरसचन्दन २ शोष
चन्दन ३ सारचन्दन ४ वर्धचन्दन ५ वर्धरोद्रव ६ और हरिचन्दन ७ ।
इन मात्र जातिके चन्दनोंमें सर्वत्र चन्दन सर्वोत्कृष्ट है ।

अगरनामानि ।



अगरुकिमिजलोहराजार्हवशिकलघु ।

लोहारख्यजोङ्गकश्चापिकृष्णवर्णप्रसादनम् ॥ (भावप्रकाश)

अर्थ-अगरु, कृमिज, लोह, राजार्ह, वशिक, लघु, लोहारख्य, जोङ्गक
कृष्ण, वर्णप्रसादन, (कृमिज, अगरु, वङ्गक, पिच्छिल, भृङ्गज, पातक,
अनार्यक, अनार्यज, अमार, आग्निकाष्ठ, कृमिन्ध, काष्ठक, प्रवर, योगज)
हिन्दी, बगला, मराठी, गुजराती, कर्णाटकी, तामिली इत्यादि सब भाषाओंमें
“अगर” नामसेही प्रसिद्ध है ।

तेलङ्गीभाषामें
इंग्रेजीभाषामें
लैटिनभाषामें

हरुगुहचेद्रु ।

इगल्लुड ।

एकीलेरिया । एगेलोका ।

Eagle wood

Aquilaria

Agallochin

अरबीभाषामें
फारसीभाषामें

उदगरकी ।

कञ्जवेववा ।

अगुरुगुणा ।

अगुरुष्णकटुत्वव्यतिक्रान्तीक्ष्णचपित्तलम् ।

लघुकर्णाक्षिरोगघ्नशीतवातकफप्रणुत् ॥ (भावप्रकाश)

अर्थ-अगर-गरम चरुषी, त्वचाकी हितकारक, बड़वी, तीक्ष्ण, पित्तजनक, हल्की तथा कर्णरोग, नेत्ररोग, शीत, वात और कफनाशक है ।

अपिच ।

अगुरुस्तुसुगधि स्यादुष्णस्तिक्तकटु स्मृतः ।

स्निग्धोमगलदोरुच्योधूपयोग्यश्चपित्तल ॥

तीक्ष्णोवातकफोदन्तिकर्णनेत्ररुजापहः ॥

कृष्णनाशकर प्रोक्तोलेपेचोद्वर्त्तनेशुभः ॥ (नि० २०)

अर्थ-अगर-सुगधि, गरम तिक्त कटु, स्निग्ध, मगलदायक, रुचिकारी, घूपके योग्य, पित्तजनक तीक्ष्ण तथा वात कफ, कर्णरोग और कौटका नाश करे । लेप में और लगान में श्रेष्ठ है ।

अगरप्रभव स्नेह कृष्णागुरुसम स्मृतः ।

अर्थ-अगरका स्नेह कृष्णागुरुके समान गुणवान् है ।

कृष्णागरनामानि ।

कृष्णागरम्यादिसुकमगल्यनिश्चरूपकम् ॥

अर्थ-कृष्णागर-सुख, मगल्य, विश्वरूपक (काष्ठपुण्ड, अग्रा शूद्रा-शीर्ष, कालागर, बेज्य, कृष्णाग्रा, शूपाई, राज, मिश्रवर्ण, गंध, गन्धार्द्र, शीतमर्दिन, जोगक शूभिजात और अमृतक)

कृष्णागरगुणा ।

कृष्णागरुकटुष्णव्यतिक्रान्तेपेचशीतलम् ।

लोनि ॥ (गुरु)

अर्थ-कृष्णागर-कटु, उष्ण, रुच्यो
और किसी मरुत में शिरोपनाशक है ।

कृष्णागरगुणा ।

अर्थ-कृष्णागर, कटु, उष्ण, रुच्यो
और किसी मरुत में शिरोपनाशक है ।

दाहागरुनामानि ।

दाहागरुदहनागरुदाहककाष्ठवद्विकाष्ठश्च ।

धूपागरुतैलागरुपुरश्चपुरमथनवल्लभंचैव ॥

अर्थ-दाहागरु, दहनागरु, दाहककाष्ठ, वद्विकाष्ठ, धूपागरु, तैलागरु, पुर और पुरमथनवल्लभ ।

दाहागरुगुणा ।

दाहागरुकटुकोष्णकेशानांवर्द्धनश्चवर्ण्यश्च ।

अपनयतिकेशदोषानातनुतेसततश्चसौगन्ध्यम् ॥

(राजनिघण्टु)

अर्थ-दाहागरु-चरपरी, गरम, केशवर्द्धक, वर्णको उज्ज्वल करनेवाली, केशोंके दोषोंको हरनेवाली और निरन्तर सुगन्धिदायक है ।

मङ्गलागरुनामानि ।

मङ्गल्यामल्लिकागन्धमङ्गलागरुवाचका ॥

अर्थ-मङ्गल्या, मल्लिका, गन्धमङ्गला और जितने अगरके नामहैं, सन इसके भी जानने ।

मङ्गलागरुगुणा ।

मङ्गल्यागुरुशिशिरागन्धाढ्यायोगवाहिका ॥ (राजनिघण्टु)

अर्थ-मङ्गलागरु-शीतल, गन्धवाली और योगवाही है ।

विवरण । आसामके पहाड़ी जगल और प्रशांत सागरके टापुओंमें इसका वृक्ष होता है, शाखा कभी सीधी उत्पन्न नहीं होती ।

अगर अनेक प्रकारकी होतीहै, उनमें काली अगरही उत्तम और वैद्यकमें कहीहुई औषधियोंके साथ व्यवहार कीजाती है, यह भारी होनेके कारण जलमें डूबजातीहै और नरम ऐसी होतीहै कि, दातामें रखकर खानेमें चिपट जाती है, इसको पीसकर जलानेसे सुगन्धि निकलतीहै, फागी अगरकी समान और अगरमें ऐसी सुगन्धि नहीं आती ॥

व्यवहार । इसका झाड़ग अनेक प्रकारके तेलमें व्यवहार किया जाताहै और इसको वृक्षका गोठ वातरोगमें लेप करनेके लिये विलायतके मनुष्य काम में लातेहैं ।

देवदारुनामानि ।

सुरदारुद्विकिलिभद्रदारुसुराह्वयम् ।

देवकाष्ठपित्तद्रुदेवदारुचमद्रवत् ॥

अर्थ—सुगन्धक, हृक्लिप्तिम, भद्रदारु, सुगन्धक, देवकाष्ठ, पित्तद्रु देवदारु, भद्रवत्, (शतपात्र, पारिमद्रक, पीतदारु, दारु, पृथिव्याष्ठ, कचपात्र, कितिम, दारु, शिख्यदारु, अमरदारु, शिवदारु, शाल्मल, मृत्तदारु, भद्रदारु, शत्रुमार, इन्द्रवृक्ष, सुराष्ट्र, दारुभद्र, इन्द्रदारु मन्तदारु, सुगन्धक, अष्टवृक्ष सुगन्धक, सुगन्धक और सुगन्धक)

हिन्दीभाषामें

देवदारु ।

बङ्गभाषामें

देवदारु ।

मराठीभाषामें

तेन्यादेवदारु ।

गुजरातीभाषामें

देवदारु ।

कर्णाटकीभाषामें

चोपडादेवदारु, काष्ठदेवदारु ।

तैलुगुभाषामें

देवदारुचेडा ।

लटिनभाषामें

सिड्गुदेवदारु (Cedrus Deodara)

फारसीभाषामें

देवदारु ।

अरबीभाषामें

शरर तुलजीन ।

उर्दूभाषामें

पाइनसदीपोर ।

देवदारुगुण ।

देवदारुलघुस्निग्धतित्तोष्णकटुपाकिच ।

विवन्धाध्मानशोधामतन्द्राद्विह्वलज्वरसजित् ॥

प्रमेहपीनमश्लेष्मकासकण्डूस्मीरनुत् ॥ (भायनराग)

अर्थ—देवदारु-लघुका शिख्य कटुता, गरम, पानमें चरपरा, तथा विषम अवाग शोथ, आम, तन्द्रा दुर्बला, उग्र, स्तम्भित, प्रमेह पीनता, कटु ग्रांथी पण्ड और शक्ताश कर्मेगादि ।

देवदारुभद्र ।

देवदारुद्विधाज्ञेयतत्राद्यस्निग्धदारुकम् ।

द्वितीयकाष्ठदारुस्याद्ययोर्नामान्यभेदतः ॥ (निरुक्तगताकर)

अर्थ—देवदारु दो प्रकारका है, पहिला शिख्य और दूसरा भद्रदारु ।

शिख्यदारुगुण ।

स्निग्धदारु कटु पाकेस्निग्धोष्णस्तिक्तरोल ।

कफवातप्रमेहार्शोमलस्तम्भामदोषहा ॥

ज्वराध्मानश्वासकासशोथकण्डूविनाशकः ।

हिकांतंद्रारक्तदोषपीनसचैवनाशयेत् ॥ (निघण्टुरत्नाकर)

अर्थ—स्निग्धदेवदारु—पचनेमें चरपरा, चिकना, गरम, कड़वा, हलका तथा कफ, वात, प्रमेह, बवासीर, मलस्तम्भ, आमदोष, ज्वर, अफारा, श्वास, खासी, सूजन, खुजली, हिचकी, तन्द्रा, रुधिर विकार और पीनसको दूर करेहै ।

काष्ठदारुगुणा ।

देवकाष्ठमतचोष्णंतितरूक्षंकफापहम् ।

वातंचभूतबाधांचलेपाद्वचङ्गविनाशनम् ॥ (रा०नि०)

अर्थ—काष्ठदारु—गरम, कड़वा, रूखा, तथा कफ, वातरोग और भूतना-
धाको दूर करेहै । इसका लेप करनेसे व्यङ्ग (झाई) दोष दूर होताहै ।

विवरण—बड़ा वृक्ष होताहै, इसकी दो जाति हैं एकमें तेलके समान चिक-
नाईसी होतीहै, दूसरेमें रूखापन होताहै ॥ (व्यवहारगुणचक्र)

चीडानामानि ।

चीडाचदारुगन्धागन्धवधूर्गंधमादनीतरुणी ।

ताराचभूतमारीमङ्गल्याख्याकपाटिनीग्रहजित् ॥

(राजनिघट्ट)

अर्थ—चीडा—दारुगन्धा, गन्धवधू, गन्धमादनी, तरुणी, तारा, भूतमारी,
मङ्गल्या, कपाटिनी, ग्रहजित् ।

चीडागुणा ।

चीडाकटुष्णाकासघ्नीकफजिहीपनीपरा ।

अत्यन्तसेवितासातुपित्तदोषश्रमापहा ॥ (राजनिघण्टु)

अर्थ—चीड—गरम, कासनाशक, चरपरी, कफको दूर करे, अग्निको दीपन
करे, इसका अत्यन्त सेवन करनेसे पित्त और श्रम दूर होताहै ।

सरलनामानि ।

सरलपूतिकाष्ठमनोज्ञोधूपवृक्षक ।

अर्थ—सरल, पूतिकाष्ठ, मनोज्ञ, धूपवृक्षक, (पीतदु धूपवृक्षक पीतदारु,

मददाह, धूपशुभ, पीत, शिथिलदाहसह, शिथिल, मरिचपत्रक, पीतपुत्र,
मुग्धमिददाह)

हिन्दीभाषामें

धूपसगल ।

बङ्गभाषामें

सरलगाह, तार्पित्तर्गगाह, सरलपात्र ।

कर्णाटकीभाषामें

सगलदेवदारविशेष ।

तैलङ्गीभाषामें

सरलदेवदार चेट्टु ।

तामिळभाषामें

सरलदेवदारी ।

गुजरातीभाषामें

सरलदेवदार ।

मराठीभाषामें

सरलदेवदार ।

इंग्रेजीभाषामें

लोग लिपु पाईन । Long leaved pine

लैटिनभाषामें

पाईनग-लैंगिपोरिया । Pinus longifolia

सरलपुष्पा ।

सरलोमधुरस्तित्त कटुपाकरसोलषु ।

स्निग्धोष्णः कर्णकण्ठाक्षिगेगरक्षोदर स्मृत ॥

कफानिलम्बेददाहकासमूर्च्छात्रिणापदः ॥ (भा० ५०)

अर्थ-सरल-मधुर, तिक्त, पाक और रसमें कटु इत्यादि, शिथिल, उष्ण तथा कर्णरोग, कण्ठरोग, त्रेप्ररोग पक्ष पाक पर्वणा, दाह, वात, मूर्च्छा और प्रशक्ती दूर करे ।

मदित्त ।

सरल कटुतिकोष्ण कफवानविनाशन ।

त्वग्दोषशोफकण्ठूतित्रणम कोष्ठशुद्धिदः ॥ (ग० नि०)

अर्थ-सरल-ज्वरपा, कटुता, गरम, यह वात नाशक, तथा त्वग्दोष रोग सुखन कटु और त्रिणा नाश करे । और कोष्ठरोग शुद्ध करे ।

मदित्त ।

सरल कटुतिकोष्णोश्न श्लेष्मानिलापदः ।

भूतदोषापहोक्तोलिप्तोद्गेषुसुकातिदः ॥ (रचित)

अर्थ-सरल-ज्वरपा, कटुता, गरम, तथा त्वग्दोष रोग सुखन कटु और त्रिणा नाश करे । इसका शरीरमें त्वग्दोष रोगों को दूर करे ।

अपिच ।

सरलोमधुरस्तिक्तोरसेपाकेकटुर्लघुः ।

स्निग्धश्चोष्णः कर्णनेत्रकण्ठरोगविनाशनः ॥

कफं वातञ्च यूकाञ्च कासस्वेदं व्रणतथा ।

रक्षोबाधामलक्ष्मीचनाशयेदितिकीर्तितः ॥ (रा० नि०)

अर्थ—सरल—मधुर, कडवा, रसमें तथा पाकमें चरपरा, हलका, स्निग्ध, गरम तथा कर्णरोग, नेत्ररोग, कण्ठरोग, कफ, वात, जूँ, खासी, पसीना, घाव, राक्षसबाधा और अलक्ष्मीका नाश करेहै।

विवरण । इसका बड़ा वृक्ष हिमालयमें होताहै, उसके भीतरसे गोदकी समान रस निकलताहै, उसको चद्ररस कहतेहैं ।

तगरनामानि ।

कालानुसार्यतगरंकुटिललघुपनतम् ।

अपरपिण्डतगरदण्डहस्तिचवर्हणम् ॥ (भा० प्र०)

अर्थ—कालानुसार्य, तगर, कुटिल, लघुप, नत । (जिह्वा, दीपन, काला नुसारिवा, वक्र, कुञ्चिन, चक्र, शठ, महोरग, दीपन, तगर, पादिक, विनम्र नहुपारख्य, दीन) दूसरा पिण्डतगर होताहै, उसके नाम यह हैं । पिण्ड तगर, दण्ड, हस्ति, वर्हण, (दण्डहस्त, पिण्डीतगरक, पार्थिव, राजहर्षण, कालानुसारक, क्षन)

हिन्दीभाषाम

तगर ।

बङ्गभाषामें

तगरपादुका ।

मराठीभाषामें

गोडेतगर ।

गुजरातीभाषामें

तगर ।

कर्णाटकीभाषामें

तगर ।

तैलङ्गीभाषामें

गन्धितगरणु चेद्रु, नदिवर्द्धनचेद्रु ।

उत

पाणिपलग ।

नेपालीभाषामें

चम्मा ।

लैटिनभाषामें वेलिरीआना ।

हार्डविकिआई । *Vreleriana Hardwickei*

अरबीभाषामें

अशारुन ।

तगरगुणा ।

तगरद्वयमुष्णं स्यात्स्वादुस्निग्धलघुस्मृतम् ।

| | |
|--------------|--|
| मगदीभाषाम | मृन्मयगुग्गुलु गुग्गुलु । |
| कण्टिकीभाषाम | इडवोन् । |
| तेलद्वीभाषाम | गुगिलमुचेरुमहिषासी । |
| इमेजीभाषाम | इडियन डेन्चम ॥ Inhar Dallah |
| लैटिनभाषामें | वालमयेदिन्डन एवम गुडिआई । वालम गोदेडागुडुन् Walums Raxburghu B Makk d |
| पागमीभाषामें | वाणजडुगान । |
| अरबीभाषामें | मुष्किलेअर्जक गुग्गुलो मयारमेवदसल्लगुगा । |

महिषाक्षोमहानीलकुमुद पद्मइत्यपि ।
 हिरण्यःपञ्चमोक्षेयोगुग्गुलो पञ्चजातयः ॥
 भृङ्गाक्षेनसवर्णस्तुमहिषाक्षइतिस्मृतः ।
 महानीलस्तुविज्ञेय स्वनामसमलक्षणः ।
 कुमुद कुमुदाभःस्यात्पद्मोमाणिक्यसन्निभः ।
 हिरण्याक्षस्तुहेमाभःपचानार्लिङ्गमीरितम् ॥
 महिषाक्षोमहानीलोगजेन्द्राणांहितावुभौ ।
 इयानाकुमुदःपद्मःस्वस्त्यारोग्यकरोपरौ ॥
 विशंपेणमनुप्याणांकनकःपरिकीर्तितः ।
 कदाचिन्महिषाक्षश्चमतःकश्चिन्मृणामपि ॥ (भावप्रकाश)

अर्थ-महिषाक्ष महानील, कुमुद, पद्म, और हिरण्य इन भद्रोंमें गुग्गुलु पांच प्रकारका है । उनमें महिषाक्ष गुग्गुलु-भोंके रंगरी समान कोपले और क्षयनरे गहरा वर्णवाला होता है । महानीलगुग्गुलु-अत्यन्त नीले रंगका होता है । कुमुद गुग्गुलु-कुमुदके पत्रकी समान वर्णवाला होता है । पद्मगुग्गुलु-माणिक्यरत्नके समान सफेद रंगका होता है । हिरण्याक्षगुग्गुलु-हेमके समान रंगवाला होता है । महिषाक्ष और महानील गुग्गुलु दवाधियोंके लिये हितकारी है, पोटोंकी आरोग्य करनेवाला कुमुद और पद्मगुग्गुलु है और मनुष्याके लिये हिरण्याक्ष गुग्गुलु अत्यन्त उपकारी है । कोई कोई ऐसाभी कहते हैं कि, मनुष्याके लिये यही पदार्थ महिषाक्ष गुग्गुलुभी हितकारी है ।

श्रीः ।

शालिग्रामनिघण्टुकी- विषयानुक्रमणिका ।



| विषय | पृष्ठांक | विषय | पृष्ठांक |
|-------------------------------|----------|-------------------|----------|
| कर्पूरादिषर्गः । | | चन्दनलक्षणम् | १६ |
| कर्पूरनामानि | १ | चन्दनगुणा | ११ |
| कर्पूरगुणा | २ | चन्दनभेदा | १८ |
| कर्पूरलक्षणम् | ३ | वेष्टचन्दनगुणा | ११ |
| पोतास-भीमसेनी-वरास-कर्पूरगुणा | ४ | सुष्मादिचन्दनगुणा | ११ |
| शकरावास-कर्पूरगुणा | ११ | शम्बरचन्दननामानि | ११ |
| हिमकर्पूरगुणा | ५ | शम्बरचन्दनगुणा | १९ |
| उदयभास्करकर्पूरगुणा | ११ | पीतचन्दननामानि | ११ |
| पर्णकर्पूरगुणा | ११ | पीतचन्दनगुणा | ११ |
| चीनकर्पूरनामानि | ११ | रक्तचन्दननामानि | ११ |
| चीनकर्पूरगुणा | ६ | रक्तचन्दनगुणा | २० |
| कस्तूरीनामानि | ११ | पतंगनामानि | ११ |
| कस्तूरीभेदा | ७ | पतंगगुणा | २१ |
| कस्तूरीपंचभेदा | ११ | शम्बरनामानि | ११ |
| कस्तूरीपरीक्षा | ८ | शम्बरचन्दनगुणा | २२ |
| कस्तूरिकाभृगलक्षणम् | ९ | हरिचन्दननामानि | ११ |
| दुष्टकस्तूरीलक्षणम् | ११ | हरिचन्दनगुणा | ११ |
| दुष्टकस्तूरीपरीक्षा | ११ | भगरनामानि | २३ |
| कस्तूरीगुणा | १० | भगरगुणा | २४ |
| गन्धमार्जारर्षाप्यम् | ११ | कृष्णागरनामानि | ११ |
| एतावकस्तूरीगुणा | ११ | कृष्णागरगुणा | ११ |
| कुङ्कुमनामानि | १२ | काष्ठागरगुणा | ११ |
| कुङ्कुमभेदा | १३ | दाहागरनामानि | २५ |
| कुङ्कुमलक्षणम् | ११ | दाहागरगुणा | ११ |
| कुङ्कुमगुणा | १४ | मङ्गलागरनामानि | ११ |
| वर्णकुङ्कुमनामानि | १५ | मङ्गलागरगुणा | ११ |
| वर्णकुङ्कुमगुणा | ११ | देवदारुनामानि | ११ |
| वर्णद्वयनामानि | ११ | देवदारुगुणा | २६ |
| | | देवदारुभेदा | ११ |

| विषय | पृष्ठं | विषय | पृष्ठं |
|-----------------------|--------|----------------------|--------|
| मित्राध्यायगुणा | २१ | जातीरउठैलगुणा | ४३ |
| ग्राह्यागुणा | २३ | जातीपरीनामानि | " |
| बोदानामानि | " | जातीपरीगुणा | ४८ |
| बोदागुणा | " | स्युद्धनामानि | ४९ |
| खरलनामानि | " | स्युद्धगुणा | " |
| खरलगुणा | २८ | सुसंयतनामानि | ५० |
| तगरनामानि | ३० | सुसंयतगुणा | ५३ |
| तगरगुणा | " | द्विधिधेलागुणा | ५३ |
| पक्षपनामानि | ३० | कट्टोदनामानि | " |
| पक्षपगुणा | ३१ | कट्टोदगुणा | ५३ |
| गुग्गुलुनामानि | " | नागेश्वरनामानि | ५४ |
| गुग्गुलो मकरभेदरसगुणा | ३३ | मागकुरगुणा | " |
| गुग्गुलुगुणा | ३३ | स्वचगुदगुदनामानि | ५५ |
| गुग्गुलोपतिः | ३४ | दादयितागुणा | ५६ |
| गुग्गुलुपरीक्षा | " | स्वचगुदगुणा | ५७ |
| भस्मपरीधनविधि | " | मेजपत्रनामानि | ५८ |
| गंधराजगुग्गुलुनामानि | ३५ | मेजपत्रगुणा | " |
| गंधराजगुग्गुलुगुणा | ३६ | कालीछपनामानि | ५९ |
| भूमितगुग्गुलुनामानि | " | कालीछपगुणा | ६० |
| भूमितगुग्गुलुगुणा | " | नद्यामोर्छनामानि | ६१ |
| रालनामानि | " | गंधमांसीनामानि | " |
| रालगुणा | ३७ | भाषागमांसीनामानि | " |
| रालोदगुणा | ३८ | गंधमांसीगुणा | ६२ |
| बुग्गुदनामानि | " | गंधमांसीगुणा | ६३ |
| बुग्गुदगुणा | ३९ | भाषागमांसीगुणा | " |
| शंखातनामानि | ४० | मिषागमांसीगुणा | ६४ |
| शंखातगुणा | ४१ | मिषागुणा | ६५ |
| शंखातमागुणा | " | मन्त्रगुग्गुलुनामानि | ६६ |
| सिद्धनामानि | ४२ | उत्तारनामानि | " |
| सिद्धगुणा | " | उत्तारगुणा | ६७ |
| सुषुप्तनामानि | ४३ | गारापननामानि | ६८ |
| सुषुप्तगुणा | ४४ | गारापनगुणा | " |
| सुषुप्तमागुणा | " | मन्त्रगुग्गुलुनामानि | ६९ |
| जार्जनामानि | ४५ | मन्त्रगुग्गुलुगुणा | ७० |
| जार्जनागुणा | " | मन्त्रगुग्गुलुनामानि | ७१ |

| विषय | पृष्ठांक | विषय | पृष्ठांक |
|----------------------|----------|-----------------------------|----------|
| नखशुद्धि | ७० | मुरागुणा | ८६ |
| द्विविधनखगुणा | ७१ | लामजकनामानि | ८७ |
| नखगुणा | " | श्रेष्ठलामजकलक्षणम् | ८७ |
| ध्याग्रनखगुणा | " | लामजकगुणा | ८७ |
| द्विविधनखगुणा | " | स्पृक्षानामानि | ८८ |
| वालकनामानि | ७३ | स्पृक्षागुणा | ८८ |
| वालकगुणा | " | पलावालुकनामानि | ८९ |
| मुस्तकनामानि | ७३ | पलावालुकगुणा | ८९ |
| नागरमुस्तकनामानि | " | मपौण्डरीकनामानि | ९० |
| भद्रमुस्तकनामानि | ७४ | मपौण्डरीगुणा | ९१ |
| श्रेष्ठमुस्तकलक्षणम् | " | पपंटीनामानि | ९१ |
| श्रेष्ठमुस्तकशुद्धि | " | पपंटीगुणा | ९२ |
| भद्रमुस्तकगुणा | ७५ | नलिकानामानि | " |
| मुस्तकगुणा | " | नलिकागुणा | ९३ |
| नागरमुस्तकगुणा | " | मुदिनानामानि | " |
| भद्रमुस्तकगुणा | " | मुदिनागुणा | ९४ |
| वैतकमुस्तकनामानि | ७६ | हरीतक्यादिवर्गः । | |
| कवर्तकमुस्तकगुणा | " | | |
| शैलेयनामानि | ७७ | हरीतकीनामानि | ९५ |
| शैलेयगुणा | " | हरीतकीसमधा | ९७ |
| रेणुवानामानि | ७८ | सातारैपृथक्पृथक्लक्षण | " |
| रेणुगुणा | " | जम्भान | " |
| ग्रन्थिपणनामानि | ७९ | सातारैभिन्नभिन्नप्रयोग | " |
| ग्रन्थिपणलक्षणम् | " | नोमराररचितरीहरदकास्वरूप | ९८ |
| ग्रन्थिपर्णगुणा | " | सर्वप्रारररीहरदारेरेचनगुण | " |
| स्पीणेयनामानि | ८० | चेतकीहरदारेरेचनगुण | " |
| स्पीणेयकगुणा | " | विजयाहरदारीमगना | ९९ |
| चोरकनामानि | " | हरीतकीगुणा | " |
| चोरकगुणा | ८१ | हरीतक्या पचरसावस्थितिनिर्णय | १०१ |
| कुष्ठनामानि | ८२ | श्रेष्ठहरीतकीलक्षणम् | " |
| कुष्ठगुणा | " | चर्वितानिहरीतकीगुणा | " |
| कचूरनामानि | ८३ | भक्तान्यतहरीतकीगुणा | १०३ |
| कचूरगुणा | " | मुक्तोपरिष्ठेचितहरीतकीगुणा | " |
| गंधपलाशीनामानि | ८४ | हरीतक्याविरोपगुणा | " |
| गंधपलाशीगुणा | ८५ | मनुहरीतकीगुणा | " |
| मुरानामानि | ८६ | हरीतक्या श्रेष्ठगुणायम् | " |

| विषय | पृष्ठांक | विषय | पृष्ठांक |
|-------------------------|----------|-------------------------------|----------|
| हिंगुशोधनविधि | १४७ | ऋषभवनामानि | १६४ |
| हिंगुपत्रीनामानि | १४८ | ऋषभकगुणा | " |
| हिंगुपत्रीगुणा | " | जीवकपर्भकगुणा | १६५ |
| नाडीहिंगुनामानि | " | जीवरूपभकस्वरूपम् | " |
| नाडीहिंगुगुणा | १४९ | मेदानामानि | " |
| चक्षानामानि | " | मेदागुणा | " |
| पारस्तीकचक्षानामानि | १५० | मेदालक्षणम् | १६६ |
| चक्षागुणा | " | महामेदानामानि | " |
| शुक्लचक्षागुणा | १५१ | महामेदागुणा | " |
| महाभरीवक्षागुणा | " | महामेदामेदागुणा | " |
| वचाद्रुतगुणा | " | महामेदालक्षणम् | १६७ |
| कुलिञ्जननामानि | १५२ | ऋद्धिनामानि | " |
| कुलिञ्जनगुणा | " | ऋद्धिगुणा | " |
| चोपचीन्युत्पत्तिलक्षणम् | १५३ | वृद्धिनामानि | १६८ |
| चोपचीनीगुणा | १५४ | वृद्धिगुणा | " |
| निषेध | १५५ | ऋद्धिवृद्ध्युत्पत्तिलक्षणम् | " |
| चोपचीनीलक्षणम् | " | वाकोलीनामानि | " |
| भाकारवर्भनामानि | " | काकोलीगुणा | " |
| भाकारवर्भगुणा | १५६ | क्षीरवाकोलीनामानि | १६९ |
| हृषुपानामानि | " | क्षीरवाकोलीगुणा | " |
| हृषुपागुणा | " | द्विविधवाकोलीगुणा | " |
| स्वल्पहृषुपागुणा | " | वाकोलीक्षीरवाकोल्योरुत्पत्ति- | |
| चिद्वगनामानि | १५७ | लक्षणम् | १७० |
| चिद्वगगुणा | " | अष्टवर्गनामानि | " |
| तुम्बुरुनामानि | १५८ | अष्टवर्गगुणा | " |
| तुम्बुरुगुणा | " | एतस्त्वपत्तिनिर्धानाह | १७१ |
| यशलोचननामानि | १५९ | यष्टीमधुनामानि | " |
| यशलोचनगुणा | १६० | यष्टीमधुगुणा | १७२ |
| तवक्षीरनामानि | " | जम्पिपल्लवगुणा | १७३ |
| तवक्षीरगुणा | १६१ | रम्पिपल्लनामानि | " |
| समुद्रफननामानि | १६२ | रम्पिपल्लगुणा | १७४ |
| समुद्रफेनगुणा | " | भारग्यधनामानि | १७५ |
| अष्टवर्ग । | | भारग्यधगुणा | १७६ |
| जीयवनामानि | १६३ | भारग्यधपञ्चगुणा | " |
| जीयवगुणा | " | अभ्यपत्रगुणा | " |
| जीयवस्वरूपम् | १६४ | भारग्यधपुष्पगुणा | " |
| | | भारग्यधमज्जागुणा | १७७ |

| विषय | पृष्ठान | विषय | पृष्ठान |
|-------------------|---------|-----------------------|---------|
| भास्वपयगुणा | १३३ | कद्वयनामानि | १३३ |
| फणिपयगुणा | " | कद्वयगुणा | १३४ |
| यद्वयनामानि | " | भोगीनामानि | १३५ |
| कद्वयगुणा | १३५ | भोगीगुणा | " |
| यद्वयभोगीयगुणा | " | भोगीयगुणा | २०० |
| चिरतिननामानि | " | पाषाणभोगनामानि | " |
| नेपालनिम्बनामानि | १८० | पाषाणभेदगुणा | २०१ |
| भूतिगुणा | " | सुदृढपाषाणभेदगुणा | " |
| नेपालनिम्बगुणा | १८१ | धातवीनामानि | " |
| सुदृढनामानि | " | धातवीगुणा | २०२ |
| सुदृढगुणा | १८२ | मणिषानामानि | २०३ |
| भेदसुदृढगुणा | " | मणिषागुणा | २०४ |
| सुदृढपुष्पगुणा | " | मणिषायादगुणा | २०५ |
| सुदृढशिखीयागुणा | १८३ | सुसुम्भनामानि | " |
| अपक्षयगुणा | " | सुसुम्भगुणा | २०६ |
| इन्द्रपयनामानि | " | सुसुम्भपुष्पगुणा | " |
| इन्द्रपयगुणा | " | सुसुम्भपयगुणा | " |
| मदनकलनामानि | १८४ | सुसुम्भवीरगुणा | २०७ |
| मदनकलगुणा | १८५ | सुसुम्भवेदगुणा | " |
| राक्षसानामानि | १८६ | हासनामानि | " |
| राक्षसापामरभेदा | १८७ | हासगुणा | २०८ |
| राक्षसगुणा | " | हासकगुणा | " |
| नाकुलीनामानि | १८८ | दक्षिणनामानि | २०९ |
| नाकुलीगुणा | १८९ | दक्षिणगुणा | २१० |
| माषिकानामानि | १९० | पर्यटदक्षिणनामानि | " |
| माषिकागुणा | " | पर्यटदक्षिणगुणा | २११ |
| तेजोपतीनामानि | " | यनदक्षिणनामानि | " |
| तेजोपतीगुणा | १९१ | यनदक्षिणगुणा | २१२ |
| उपातिपतीनामानि | " | दाददक्षिणनामानि | " |
| महाउपातिपतीनामानि | १९२ | दाददक्षिणगुणा | २१३ |
| उपातिपतीगुणा | " | दादीपाषाणदरगाजननामानि | " |
| पुष्पगुणा | १९३ | अव्यापकगुणा | २१४ |
| पुष्पकगुणा | १९४ | अव्यापकगुणा | " |
| स्वर्णशीरीनामानि | " | स्वर्णशीरीगुणा | " |
| स्वर्णशीरीगुणा | १९५ | बाहुलीनामानि | २१५ |
| अव्यापकगुणा | १९६ | बाहुलीगुणा | " |
| प्रकटगुणा | " | बाहुलीयगुणा | " |
| प्रकटगुणा | १९७ | बाहुलीयगुणा | " |

| विषय | पृष्ठांक | विषय | पृष्ठांक |
|----------------------|----------|-------------------|----------|
| चक्रमर्चनामानि | २१७ | सैन्धवगुणा | २३९ |
| चक्रमदगुणा | " | साम्भारीलवणनामानि | " |
| अतिविषानामानि | २१९ | साम्भारीलवणगुणा | २४० |
| अतिविषागुणा | " | समुद्रलवणनामानि | " |
| भतिविषाप्रकारभेदा | २२० | समुद्रलवणगुणा | " |
| लोधनामानि | " | विह्वलवणनामानि | २४१ |
| लोधगुणा | २२१ | विह्वलवणगुणा | २४२ |
| भल्लातकनामानि | २२२ | सौवचललवणनामानि | " |
| भल्लातकगुणा | " | सौवचललवणगुणा | २४३ |
| भल्लातकफलगुणा | २२३ | काचलवणनामानि | " |
| पद्मभल्लातकगुणा | " | काचलवणगुणा | २४४ |
| अस्यफलत्वगुणा | " | औद्भिदनामानि | " |
| अस्यमज्जागुणा | २२४ | औद्भिदगुणा | " |
| अस्यवृन्तगुणा | " | औपरलवणनामानि | " |
| भल्लातकशोधनविधि | " | औपरलवणगुणा | २४५ |
| नदीभल्लातकनामानि | " | रोमकलवणगुणा | " |
| नदीभल्लातकगुणा | २२५ | द्रोणीलवणनामानि | " |
| विजयनामानि | " | द्रोणीलवणगुणा | " |
| गञ्जानामानि | " | नरसारनामानि | " |
| भङ्गागुणा | " | नरसारगुणा | २४६ |
| गञ्जागुणा | २२६ | अस्यप्रस्तुतकरणम् | " |
| भगोत्पत्ति | " | अस्यशोधनविधि | २४७ |
| खाखसफलनामानि | २२९ | सूर्यक्षारनामानि | " |
| खाखसफलगुणा | २३० | सूर्यक्षारगुणा | " |
| अदिकेननामानि | २३१ | सूर्यक्षारगुणा | २४८ |
| अदिकेनगुणा | " | लवणक्षारगुणा | " |
| रामरसनामानि | २३२ | चणकाम्लगुणा | " |
| रसखसगुणा | २३३ | शुक्रगुणा | " |
| मयक्षारनामानि | " | | |
| मयक्षारगुणा | २३४ | | |
| स्वर्जिवाक्षारनामानि | " | | |
| स्वर्जिवाक्षारगुणा | २३५ | | |
| टङ्गणक्षारनामानि | " | | |
| टङ्गणक्षारगुणा | २३६ | | |
| प्रेतटङ्गणगुणा | २३७ | | |
| टङ्गणशोधनविधि | " | | |
| सैन्धवनामानि | २३८ | | |

गुह्युच्चादिवर्गः ।

| | |
|-----------------------|-----|
| गुह्युच्चा उत्पत्ति | २४९ |
| गुह्युच्चीनामानि | २५० |
| यद्गुह्युच्चीनामानि | २५१ |
| गुह्युच्चीगुणा | " |
| गुह्युच्चीपत्रभाजगुणा | २५३ |
| गुह्युच्चीसत्त्वगुणा | " |
| यद्गुह्युच्चीगुणा | २५५ |

| विषय | पृष्ठांक | विषय | पृष्ठांक |
|---------------------|----------|-------------------------|----------|
| वृद्धजीवतीनामानि | २८५ | भस्त्रिषहसहारगुणा | २०३ |
| वृद्धजीवन्तीगुणा | " | कलिकारीनामानि | २०५ |
| स्वर्णजीवन्तीनामानि | " | कलिकारीगुणा | २०६ |
| स्वर्णजीवन्तीगुणा | २८६ | करवीरनामानि | २०७ |
| तिक्तजीवन्तीनामानि | " | श्वेतादिवर्षीरगुणा | २०८ |
| तिक्तजीवन्तीगुणा | " | रक्तकरवीरनामानि | " |
| चिपमुष्टिगुणा | २८७ | धत्तूरनामानि | २०९ |
| सुद्वर्णनामानि | " | धत्तूरगुणा | २१० |
| सुद्वर्णगुणा | " | कृष्णधत्तूरनामानि | २११ |
| मापपर्णीनामानि | २८८ | राजधत्तूरनामानि | " |
| मापपर्णीगुणा | २८९ | वासवनामानि | २१३ |
| परण्डनामानि | २९० | वासवगुणा | २१४ |
| रक्तैरण्डनामानि | " | पपेटनामानि | " |
| स्थूलैरण्डनामानि | २९१ | पपेटगुणा | २१५ |
| द्विविधैरण्डगुणा | " | निम्बनामानि | २१६ |
| परण्डपत्रगुणा | " | निम्बगुणा | २१७ |
| परण्डफलगुणा | २९२ | निम्बकोमलपल्लवगुणा | २१८ |
| परण्डमज्जागुणा | " | निम्बसामान्यपत्रगुणा | " |
| परण्डमूलगुणा | " | निम्बजीर्णपत्रगुणा | " |
| परण्डपुष्पगुणा | " | निम्बपुष्पगुणा | " |
| श्वेतैरण्डगुणा | " | निम्बसूक्ष्मशारदादिगुणा | " |
| रक्तैरण्डगुणा | २९३ | निम्बपक्षफलगुणा | २१९ |
| परण्डतैलगुणा | २९४ | निम्बशीजस्यमज्जागुणा | " |
| भयनामानि | २९५ | निम्बतैलगुणा | " |
| श्वेतार्कनामानि | २९६ | निम्बपत्रागुणा | " |
| भयगुणा | " | महानिम्बनामानि | २२० |
| भक्षरीरगुणा | २९७ | महानिम्बगुणा | " |
| भयमूलस्वत्वगुणा | " | सैद्यनामानि | २२१ |
| द्विविधायगुणा | " | सैद्यगुणा | " |
| स्तुहीनामानि | २९८ | पारिभट्टनामानि | २२२ |
| स्तुहीगुणा | २९९ | पारिभट्टगुणा | " |
| स्तुहीदुग्धगुणा | ३०० | वाशनारनामानि | |
| स्तुदीपत्रगुणा | " | शोचिदारनामानि | ३२३ |
| मातलागुणा | ३०१ | वाशनारगुणा | ३२४ |
| सातलागुणा | ३०२ | श्वेतवाशनारगुणा | ३२५ |
| भस्त्रिषहसहारनामानि | ३०३ | शोचिदारगुणा | " |

[illegible]

| विषय | पृष्ठांक | विषय | पृष्ठांक |
|----------------------|----------|----------------------|----------|
| वनकार्पासीना० | ३५९ | इक्षुदभांगुणा | ३७३ |
| कालाश्रनीना० | " | गोमूत्रिकाटणनामानि | " |
| कार्पासीगुणा | ३६० | गोमूत्रिकाटणगुणा | " |
| घनकार्पासीगुणा | " | शिल्पिकाटणनामानि | ३७४ |
| कालाजनीगुणा | " | शिल्पिकाटणगुणा | " |
| वशनामानि | ३६१ | निश्रेणिकानामानि | " |
| वशगुणा | ३६२ | निश्रेणिकागुणा | " |
| वशरुरीरगुणा | " | जरडीटणनामानि | " |
| वशपत्रगुणा | " | जरडीटणगुणा | " |
| द्विविधवशगुणा | ३६३ | मञ्जरटणनामानि | " |
| नलनामानि | " | मञ्जरटणगुणा | " |
| देवनलनामानि | " | टणाख्यनामानि | ३७५ |
| नलगुणा | ३६४ | टणारयगुणा | " |
| देवनलगुणा | ३६५ | वशपत्रीटणनामानि | " |
| भद्रमुञ्जमुञ्जनामानि | " | वशपत्रीटणगुणा | " |
| द्विविधमुञ्जगुणा | " | मन्यानरटणनामानि | " |
| काशनामानि | ३६६ | मन्यानरटणगुणा | " |
| काशगुणा | ३६७ | पल्लिवाहटणनामगुणाश्च | " |
| शुद्धनामानि | " | लवणटणनामानि | " |
| शुद्धगुणा | " | लवणटणगुणा | ३७६ |
| परफानामानि | ३६८ | पण्यन्धाटणनामानि | " |
| परकागुणा | " | पण्यन्धाटणगुणा | " |
| कुशदभनामानि | " | शुण्डटणनामानि | " |
| द्विविधदभगुणा | ३६९ | तगुण्डनामानि | " |
| वृत्तगुणा | " | वृत्तगुण्डगुणा | " |
| वृत्तगुणा | ३७० | चण्डिकाटणनामानि | ४७७ |
| दीपरोहिपनामानि | ३७१ | चण्डिकाटणगुणा | " |
| दीपरोहिपगुणा | " | गुण्डाखिनीटणनामानि | " |
| भूस्तणनामानि | " | गुण्डाखिनीटणगुणा | " |
| भूस्तणगुणा | " | शलीटणनामानि | " |
| सुगन्धभूस्तणनामानि | ३७२ | शलीटणगुणा | " |
| सुगन्धभूस्तणगुणा | " | नीलदूधानामानि | ३७८ |
| यत्त्वजाटणनामानि | ३७३ | श्वेतदूधानामानि | " |
| यत्त्वजाटणगुणा | " | गण्डदूधानामानि | " |
| ऊषणटणनामानि | " | खामाघट्टगुणा | ३७९ |
| ऊषणटणगुणा | " | मीन्दूपागुणा | " |
| इक्षुदभांगनामानि | " | | |

| विषय | पृष्ठाङ्क | विषय | पृष्ठाङ्क |
|---------------------|-----------|-------------|-----------|
| शेषद्वयगुणा | २८० | जयराजगुणा | ४५५ |
| गण्डद्वयगुणा | | हृदयगुणा | ४५६ |
| विन्दारीनामानि | ३८१ | महेश्वरगुणा | ४५७ |
| क्षीरविन्दारीनामानि | " | हृदयगुणा | ४५८ |
| विन्दारीगुणा | ३८२ | महेश्वरगुणा | ४५९ |
| क्षीरविन्दारीगुणा | ३८३ | महेश्वरगुणा | ४६० |
| सुमतीनामानि | ३८४ | महेश्वरगुणा | ४६१ |
| सुसतीगुणा | | महेश्वरगुणा | ४६२ |
| महाराजगुणा | ३८५ | महेश्वरगुणा | ४६३ |
| शताक्षरीगुणा | ३८६ | महेश्वरगुणा | ४६४ |
| महाराजगुणा | ३८७ | महेश्वरगुणा | ४६५ |
| द्विषिष्यगुणा | ३८८ | महेश्वरगुणा | ४६६ |
| शताक्षरीगुणा | | महेश्वरगुणा | ४६७ |
| अभयगुणा | | महेश्वरगुणा | ४६८ |
| अभयगुणा | ३८९ | महेश्वरगुणा | ४६९ |
| पादनामानि | ३९० | महेश्वरगुणा | ४७० |
| पादागुणा | ३९१ | महेश्वरगुणा | ४७१ |
| उमुपादागुणा | | महेश्वरगुणा | ४७२ |
| विष्णुनामानि | ३९२ | महेश्वरगुणा | ४७३ |
| पुष्पविष्णुनामानि | ३९३ | महेश्वरगुणा | ४७४ |
| शेषविष्णुनामानि | " | महेश्वरगुणा | ४७५ |
| शेषविष्णुनामानि | " | महेश्वरगुणा | ४७६ |
| शामान्यविष्णुगुणा | " | महेश्वरगुणा | ४७७ |
| शामान्यविष्णुगुणा | ३९४ | महेश्वरगुणा | ४७८ |
| शेषविष्णुगुणा | " | महेश्वरगुणा | ४७९ |
| शेषविष्णुगुणा | " | महेश्वरगुणा | ४८० |
| शेषविष्णुगुणा | " | महेश्वरगुणा | ४८१ |
| शेषविष्णुगुणा | ३९५ | महेश्वरगुणा | ४८२ |
| शेषविष्णुगुणा | " | महेश्वरगुणा | ४८३ |
| शेषविष्णुगुणा | " | महेश्वरगुणा | ४८४ |
| शेषविष्णुगुणा | " | महेश्वरगुणा | ४८५ |
| शेषविष्णुगुणा | " | महेश्वरगुणा | ४८६ |
| शेषविष्णुगुणा | " | महेश्वरगुणा | ४८७ |
| शेषविष्णुगुणा | " | महेश्वरगुणा | ४८८ |
| शेषविष्णुगुणा | " | महेश्वरगुणा | ४८९ |
| शेषविष्णुगुणा | " | महेश्वरगुणा | ४९० |
| शेषविष्णुगुणा | " | महेश्वरगुणा | ४९१ |
| शेषविष्णुगुणा | " | महेश्वरगुणा | ४९२ |
| शेषविष्णुगुणा | " | महेश्वरगुणा | ४९३ |
| शेषविष्णुगुणा | " | महेश्वरगुणा | ४९४ |
| शेषविष्णुगुणा | " | महेश्वरगुणा | ४९५ |
| शेषविष्णुगुणा | " | महेश्वरगुणा | ४९६ |
| शेषविष्णुगुणा | " | महेश्वरगुणा | ४९७ |
| शेषविष्णुगुणा | " | महेश्वरगुणा | ४९८ |
| शेषविष्णुगुणा | " | महेश्वरगुणा | ४९९ |
| शेषविष्णुगुणा | " | महेश्वरगुणा | ५०० |

| विषय | पृष्ठांक | विषय | पृष्ठांक |
|------------------------|----------|--------------------|----------|
| अस्यदण्डादिगुणा | ४१९ | त्रायमाणगुणा | ४३६ |
| एलीयकनामानि | ४२० | यवतिक्तानामानि | " |
| एलीयकगुणा | " | यवतिक्तागुणा | ४३७ |
| क्षुद्रकेतकीनामानि | " | लिङ्गिनीनामानि | ४३८ |
| क्षुद्रकेतकीगुणा | ४२१ | लिङ्गिनीगुणा | " |
| पाण्डुपलीनामानि | " | मूर्वानामानि | ४३९ |
| पाण्डुफलीगुणा | " | मूर्वागुणा | " |
| पनसीनामानि | ४२२ | काकमार्वानामानि | ४४० |
| पनसीगुणा | " | काकमाखीगुणा | ४४१ |
| गंगाटीनामानि | " | काकजधानामानि | ४४२ |
| गंगाटीगुणा | " | काकजघागुणा | ४४३ |
| श्वेतपुनवानामानि | " | काकनासानामानि | " |
| रक्तपुनर्वधाना० | ४२३ | काकनासागुणा | ४४४ |
| नीलपुनर्वधाना० | " | नागपुष्पीनामानि | " |
| श्वेतपुनर्वधागुणा | ४२४ | नागपुष्पीगुणा | ४४५ |
| रक्तपुनर्वधागुणा | ४२६ | मेघशृङ्गानामानि | " |
| नीलपुनर्वधागुणा | " | मेघशृङ्गागुणा | " |
| पुनर्वधापत्रशाखगुणा | " | हस्तपादीनामानि | ४४६ |
| प्रसारणीनामानि | ४२७ | हस्तपादीगुणा | ४४७ |
| प्रसारणीगुणा | " | सोमलतानामानि | " |
| गारिधानामानि | ४२९ | सोमलतागुणा | " |
| कृष्णशारिवाना० | " | भारगुल्लीनामानि | ४४८ |
| श्वेतशारिवागुणा | ४३० | भावाश्वल्लीगुणा | ४४९ |
| कृष्णशारिवागुणा | " | पातालमरुद्दीनामानि | " |
| द्विविधशारिवागुणा | " | पातालमरुद्दीगुणा | ४५० |
| केशराज, भृङ्गराजनामानि | ४३१ | वदानामानि | " |
| पीतभृङ्गराजना० | " | वदागुणा | ४५१ |
| नीलभृङ्गराजना० | " | घटपत्रीनामानि | ४५२ |
| भृङ्गराजगुणा | ४३२ | घटपत्रीगुणा | " |
| शणपुष्पीनामानि | ४३३ | मत्स्यादीनामानि | " |
| शणनामानि | " | मत्स्याक्षीगुणा | " |
| शणपुष्पीगुणा | ४३४ | सर्पाक्षीनामानि | ४५३ |
| क्षुद्रशणपुष्पीगुणा | ४३५ | सर्पाक्षीगुणा | " |
| महावृक्षगुणा | " | शम्भुपुष्पीनामानि | " |
| शणगुणा | " | शम्भुपुष्पीगुणा | ४५४ |
| शणपत्रगुणा | " | श्वेतशखपुष्पीगुणा | ४५५ |
| त्रायमाणनामानि | " | भक्तपुष्पीनामानि | " |

| विषय | प्रमाण | विषय | प्रमाण |
|-----------------------|--------|---------------------|--------|
| श्वेतद्रवागुणा | ३८० | जयपादवीजतृणगुणा | ४०० |
| गण्डद्रवागुणा | " | इन्द्रवारुणीनामानि | " |
| विटारीनामानि | ३८१ | महन्द्रवारुणीनामानि | ४०१ |
| क्षीरविटारीनामानि | " | इन्द्रवारुणीगुणा | ४०२ |
| विटारीरन्दगुणा | ३८२ | महेन्द्रवारुणीगुणा | " |
| क्षीरविटारीगुणा | ३८३ | स्वर्णपत्रीनामानि | ४०३ |
| मुसलीनामानि | ३८४ | स्वर्णपत्रीगुणा | " |
| मुसलीगुणा | " | कृष्णबीजनामानि | " |
| गतावरीमहाशतावरीनामानि | ३८५ | कृष्णबीजगुणा | ४०४ |
| शतावरीगुणा | ३८६ | नीलिषानामानि | " |
| महाशतावरीगुणा | ३८७ | नीलिषागुणा | ४०५ |
| ट्टिविधशतावरीगुणा | ३८८ | महार्नलीनामानि | " |
| शतावपङ्कलगुणा | " | महार्नलीगुणा | ४०६ |
| अश्वगन्धानामानि | " | शरपुष्पानामानि | " |
| अश्वगन्धागुणा | ३८९ | श्वेतशरपुष्पानामानि | " |
| पाठानामानि | ३९० | कण्ठपुष्पनामानि | " |
| पाठागुणा | ३९१ | शरपुष्पागुणा | ४०७ |
| छुपाठागुणा | " | कण्ठपुष्पागुणा | ४०८ |
| त्रिवृत्रामानि | ३९२ | दुरालभानामानि | " |
| कृष्णत्रिवृत्रामानि | ३९३ | दुरालभागुणा | ४०९ |
| श्वेतत्रिवृत्रामानि | " | पषासनामानि | " |
| रक्तत्रिवृत्रामानि | " | ययासगुणा | ४१० |
| सामा यत्रिवृत्रागुणा | " | मुण्डीनामानि | ४११ |
| न्यामत्रिवृत्रागुणा | ३९४ | महामुण्डीनामानि | " |
| श्वेतत्रिवृत्रागुणा | " | मुण्डीगुणा | ४१२ |
| रक्तत्रिवृत्रागुणा | " | महाश्यानिषागुणा | " |
| दन्तीनामानि | ३९५ | अपामागनामानि | ४१३ |
| दन्तीगुणा | ३९६ | अपामागगुणा | ४१४ |
| सृष्टदन्तीनामानि | ३९७ | रक्तापामागनामानि | ४१५ |
| सृष्टदन्तीगुणा | " | रक्तापामागगुणा | " |
| सृष्टदन्तीबीजगुणा | ३९८ | द्विषिषापामागगुणा | ४१६ |
| भद्रदन्तीनामानि | " | बोविगुणानामानि | " |
| भद्रदन्तीगुणा | " | बोविगुणागुणा | ४१७ |
| पपपालनामानि | " | बोविगुणागुणा | ४१८ |
| जयपालगुणा | ३९९ | बोविगुणागुणा | " |
| पपपालबीजगोचनविधि | " | पृथ्वीमारीनामानि | " |
| | | पृथ्वीमारीगुणा | ४१९ |

| विषय | पृष्ठाङ्क | विषय | पृष्ठाङ्क |
|-------------------------|-----------|-------------------|-----------|
| अस्पृष्टादिगुणा | ४१९ | त्रायमाणगुणा | ४३६ |
| एलीयकनामानि | ४२० | यवतिक्तानामानि | " |
| एलीयगुणा | " | यवतिक्तागुणा | ४३७ |
| क्षुद्रकेतकीनामानि | " | लिङ्गिनीनामानि | ४३८ |
| क्षुद्रकेतकीगुणा | ४२१ | लिङ्गिनीगुणा | " |
| पाण्डुफलीनामानि | " | मृवानामानि | ४३९ |
| पाण्डुफलीगुणा | " | मृवागुणा | " |
| पनखीनामानि | ४२३ | काकमार्वानामानि | ४४० |
| पनखीगुणा | " | काकमार्वागुणा | ४४१ |
| गंगादीनामानि | " | काकजघानामानि | ४४२ |
| गंगादीगुणा | " | काकजघागुणा | ४४३ |
| श्वेतपुनवानामानि | " | काकनासानामानि | " |
| रक्तपुनवाना० | ४२३ | काकनासागुणा | ४४४ |
| नीलपुनवाना० | " | नागपुष्पीनामानि | " |
| श्वेतपुनर्वेद्यागुणा | ४२४ | नागपुष्पीगुणा | ४४५ |
| रक्तपुनर्वेद्यागुणा | ४२६ | मेघभृङ्गानामानि | " |
| नीलपुनर्वेद्यागुणा | " | मेघभृङ्गीगुणा | " |
| पुनर्वेद्यापत्रभावागुणा | " | हृत्पादीनामानि | ४४६ |
| मस्रारणीनामानि | ४२७ | हृत्पादीगुणा | ४४७ |
| मस्रारणीगुणा | " | सोमलतानामानि | " |
| गारुडानामानि | ४२९ | सोमलतागुणा | " |
| कृष्णशारिवाना० | " | आरुशाल्मीनामानि | ४४८ |
| श्वेतशारिवागुणा | ४३० | आवागवल्लीगुणा | ४४९ |
| कृष्णशारिवागुणा | " | पातालगरुडीनामानि | " |
| द्विविधशारिवागुणा | " | पातालगरुडीगुणा | ४५० |
| वैशराज, भृङ्गराजनामानि | ४३१ | वदानामानि | " |
| पीतभृङ्गराजना० | " | वदागुणा | ४५१ |
| नीलभृङ्गराजना० | " | घटपत्रीनामानि | ४५२ |
| भृङ्गराजगुणा | ४३२ | घटपत्रीगुणा | " |
| शणपुष्पीनामानि | ४३३ | मत्स्याशीनामानि | " |
| शणनामानि | " | मत्स्याशीगुणा | " |
| गणपुष्पीगुणा | ४३४ | सपाक्षीनामानि | ४५३ |
| क्षुद्रशणपुष्पीगुणा | ४३५ | सर्पाक्षीगुणा | " |
| महाश्वेतागुणा | " | शम्भुपुष्पीनामानि | " |
| भणगुणा | " | शम्भुपुष्पीगुणा | ४५४ |
| शणपत्रगुणा | " | श्वेतशणपुष्पीगुणा | ४५५ |
| त्रायमाणनामानि | " | श्वेतपुष्पीनामानि | " |

| विषय | पृष्ठांक | विषय | पृष्ठांक |
|--------------------------|----------|-----------------------------|----------|
| अकंपुष्पीगुणा | ४५६ | गोजिहानामानि | ४३१ |
| छज्जालुनामानि | " | गोजिद्रागुणा | " |
| छज्जालुगुणा | ४५७ | नागदमनीनामानि | ४३४ |
| विपरीतल ज्जालुनामानि | " | नागदमरीगुणा | ४३५ |
| विपरीतल ज्जालुगुणा | " | छिषनीनामानि | ४३६ |
| अलम्बुपानामानि | ४५८ | छिषनीगुणा | " |
| अलम्बुपगुणा | " | सुसुम्भनामानि | ४३७ |
| दुग्धिनामानि | " | सुसुम्भरगुणा | " |
| दुग्धपेनना० | " | सुदर्शननामानि | ४३८ |
| नागाजुनीना० | " | सुदर्शनगुणा | " |
| दुग्धिकागुणा | ४५९ | भारुक्कीनामानि | " |
| दुग्धकनीगुणा | " | भारुक्कीगुणा | ४३९ |
| नागाजुनीगुणा | " | पुद्गलातुक्कीगुणा | ४८० |
| भूम्यामल्लनीनामानि | ४६० | मयूरशिखानामानि | " |
| भूम्यामल्लनीगुणा | ४६१ | मयूरशिखागुणा | " |
| भ्राह्मीनामानि | " | पुष्पवर्गः । | ४८१ |
| मण्डूकपर्णीनामानि | ४६२ | पुष्पनामानि | ४८१ |
| भ्राह्मीगुणा | " | पुष्परत्ननामानि | " |
| मण्डूकपर्णीगुणा | ४६४ | पुष्पधारणगुणा | ४८२ |
| मण्डूकपर्णवर्गगुणा | " | पुष्पद्रव्यगुणा | " |
| द्रोणपुष्पीनामानि | " | जातीनामानि | " |
| द्रोणपुष्पीगुणा | " | जातीगुणा | ४८३ |
| द्रोणपुष्पीपत्रगुणा | ४६५ | स्वर्णजातीगुणा | " |
| भाद्रित्पभक्तानामानि | " | वपजातीनामानि | ४८४ |
| भाद्रित्पभक्तागुणा | ४६६ | वपजातीगुणा | " |
| भ्रतसुपर्वलागुणा | " | घाबिकांमन्त्रिनामुद्गनामानि | ४८५ |
| भाद्रित्पपत्रगुणा | ४६७ | घाबिकीगुणा | " |
| वर्षावर्षाट्टीनामानि | " | मत्तिकागुणा | ४८६ |
| वर्षावर्षाट्टीगुणा | ४६८ | सुद्रगुणा | " |
| वर्षावर्षाकौट्टीवर्गगुणा | ४६९ | नेपालीयनमन्त्रिनामानि | ४८७ |
| मार्गण्डिकानामानि | " | नेपालीयनमन्त्रिणागुणा | " |
| मार्गण्डिकागुणा | " | पूषिकांमन्त्रिनामानि | " |
| देवदालीनामानि | ४७० | दिग्विधपूषिकागुणा | ४८८ |
| देवदालीगुणा | " | माधवीनामानि | ४८९ |
| जलपिप्पलीनामानि | ४७१ | माधवीगुणा | " |
| जलपिप्पलीगुणा | ४७२ | मालवीनामानि | ४९० |

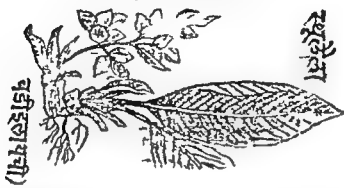
| विषय | पृष्ठांक | विषय | पृष्ठांक |
|--------------------------|----------|--------------------------------|----------|
| मालतीगुणा | ४९० | त्रिंक्षिप्तगुणा | ५०७ |
| तरुणीशतपत्रीकुब्जकनामानि | " | केतकीनामानि | ५०८ |
| शतपत्रीगुणा | ४९३ | सुवर्णकेतकीनामानि | " |
| तरुणीगुणा | " | केतकीसुवर्णकेतकीगुणा | ५०९ |
| रक्तकुब्जकगुणा | " | अशोकनामानि | ५१० |
| पुब्जकगुणा | ४९३ | अशोकगुणा | " |
| चम्पकनामानि | " | पुन्नागनामानि | ५११ |
| चम्पककलिकानामानि | ४९४ | पुन्नागगुणा | ५१२ |
| चम्पकगुणा | " | सैरेयकनामानि | ५१३ |
| चम्पकपुष्पगुणा | " | कुरण्टनामानि | " |
| चम्पकभेदा | ४९५ | नीलग्रिण्टी (भार्तगल) नामानि | " |
| श्वेतादिचम्पकगुणा | ४९६ | कुरव्वनामानि | " |
| बकुलगुणा | ४९७ | सैरेयकगुणा | ५१४ |
| बकुलगुणा | " | कुरण्टगुणा | ५१५ |
| बकुलपुष्पगुणा | " | भातगलगुणा | " |
| बकुलफलगुणा | ४९८ | नीलग्रिण्टीगुणा | " |
| वृद्धबकुलनामानि | " | कुरव्वगुणा | " |
| वृद्धबकुलगुणा | ४९० | बधूकनामानि | ५१६ |
| मुचुपुन्दनामानि | ५०० | बन्धूकगुणा | " |
| मुचुपुन्दगुणा | " | सिद्धेश्वरनामानि | ५१७ |
| कुन्दनामानि | ५०१ | सिद्धेश्वरगुणा | " |
| कुन्दगुणा | " | शखोदरीनामानि | " |
| तिलकनामानि | ५०२ | शखोदरीगुणा | ५१८ |
| तिलकगुणा | " | झण्डुकनामानि | " |
| वदम्बनामानि | ५०३ | झण्डुकगुणा | " |
| धाराकदम्बनामानि | " | सिन्दूरपुष्पीनामानि | " |
| भूमिकदम्बनामानि | " | सिन्दूरपुष्पगुणा | " |
| वदम्बगुणा | ५०४ | प्राजक्तनामानि | ५२० |
| राजकदम्बगुणा | " | हारगुणा | " |
| धाराकदम्बगुणा | ५०५ | जपापुष्पनामानि | " |
| धूलिरदम्बगुणा | " | जपापुष्पगुणा | ५२१ |
| वदम्बिकागुणा | " | घृतभिजितजपापुष्पगुणा | " |
| भूमिकदम्बगुणा | " | शगम्पनामानि | ५२२ |
| द्विविधवदम्बगुणा | ५०६ | शगम्पगुणा | " |
| वर्णिकारनामानि | " | अस्पृष्टगुणा | ५२३ |
| वर्णिकारगुणा | " | अस्पृष्टगुणा | " |
| विंक्षिप्तनामानि | " | अम्पशिर्षीगुणा | " |

| विषय | पृष्ठाव | विषय | पृष्ठाव |
|---------------------------------|---------|-------------------|---------|
| तुलसीनामानि | ५३४ | पद्मनालनामानि | ५३८ |
| वृष्णतुलसीनामानि | " | मृणालगुणा | " |
| तुलसीगुणा | " | पद्मरन्दनामानि | ५३९ |
| मरुज्वनामानि | ५३५ | शाल्वगुणा | " |
| मरुवयगुणा | ५३६ | शुमुदनामानि | ५४० |
| दमनयनामानि | ५३७ | शुमुदगुणा | " |
| दमनरगुणा | ५३८ | शुमुदशीजगुणा | ५४१ |
| यनदमनयगुणा | " | उरपलनामानि | " |
| अग्निदमनयगुणा | " | उरपलगुणा | " |
| अजेकनामानि | ५३९ | रक्तकुमुदनामानि | " |
| सितार्जरनामानि | " | उरपकिर्ननामानि | " |
| कृष्णार्जेवनामानि | " | उरपलिनीगुणा | " |
| पर्परीनामानि | " | रथपद्मिनीनामानि | ५४२ |
| घनधवरीनामानि | " | रथपद्मिनीगुणा | " |
| अर्जैव सितार्जर-वृष्णार्जेवगुणा | ५३० | | |
| घनधवरियागुणा | ५३१ | फलवर्ग । | |
| अथ पक्षजनामानि | " | भाद्रनामानि | ५४३ |
| श्वेतरमलनामानि | ५३३ | भाद्रपुष्पगुणा | ५४४ |
| रत्नरमलनामानि | " | बालतरुणाधगुणा | " |
| नीलवमलनामानि | " | भाद्रपेरीगुणा | ५४५ |
| नीलोत्पलनामानि | " | पक्षाधगुणा | " |
| कमलगुणा | ५३४ | शुशपक्षाधगुणा | ५४६ |
| श्वेतकमलगुणा | ५३४ | शृङ्गिणपक्षाधगुणा | " |
| रत्नरमलगुणा | " | भाद्ररसगुणा | " |
| नीलवमलगुणा | " | शोपिताधगुणा | ५४७ |
| नीलोत्पलगुणा | " | शाल्विन्द्राधगुणा | " |
| पद्मिनीनामानि | " | आम्नायत | " |
| पद्मिनीगुणा | ५३५ | भाद्रयतगुणा | " |
| पद्मसंवातगादिनामानि | " | भाद्रगुण्डगुणा | " |
| सवतिथागुणा | ५३६ | अतिशयाभक्षणगुणा | ५४८ |
| यार्गिनागुणा | " | मधुपुताधगुणा | " |
| पद्मेश्वरनामानि | " | मृतपुताधगुणा | " |
| पद्मेश्वरगुणा | " | दुग्धगुणाधगुणा | " |
| पद्मशीजनामानि | ५३७ | आम्नायिगुणा | " |
| पद्मशीजगुणा | " | आम्नायितेगुणा | ५४९ |
| मत्त रन्दपद्मधुगुणा | ५३८ | आम्नायिवादिगुणा | " |
| कमकिनीपद्मगुणा | " | | |

जायफलको पकाकर अर्क निकाल लिया जाता है इस अर्कसे हैजेकी पियास दूर होती है ।

जावित्रीकी माना साढेतीन ३॥ मासेकी है ।

स्थूलैलानामानि ।



एलास्थूलैलावहुलामालेयाताडकीफलम् ।

अर्थ—एला, स्थूलैला, वहुला, मालेया, ताडकीफल, (स्थूला, घृहेदेला, त्रिपुटा, निदिवोद्भवा, सुरभित्त्वक, महिला, कन्या—कुमारी, कुमारिका, पृथ्वी, गोपुटा, कायस्या, कान्ता, घृताची, भट्टेला, गर्भसम्भवा, इन्द्राणी, ऐन्द्री, दिव्यगन्धा, निष्कुटी, निष्कटि, चर्मसम्भवा, वाला, बलवती, एलीका सागरगामिनी, गन्धालीगर्भ और महला)

हिन्दीभाषामें

बडी इलायची, इलायची, पूर्वी इलायची, लालइलायची ।

वगभाषामें

एलाइच । वड इलाइच ।

मराठीभाषामें

थोखेला । वेल्दोडे ।

गुजरातीभाषामें

मोठी एलची । एलचा ।

कर्णाटकीभाषामें

परट्टलक्की ।

तेलुगुभाषामें

पेह एलक्कुट्ट । एलक्कुचेट्ट ।

तामिलीभाषामें

एलम् ।

इंग्रेजीभाषामें

लार्ज—कोडामोम । Large Cardamom

लेटिन्भाषामें

एमोम सुख्युलेटम् । Anomum Sukhulatam

फारसीभाषामें

हल् कग ।

अरबीभाषामें

काकले किवार ।

स्थूलैलागुणा ।

स्थूलैलारक्तपित्तघ्नीवमिशुकाशमजिद्धिमा ।

तृण्णारल्लासकण्डूघ्नीपित्तश्लेष्मामयापहा ॥ (ग० नि०)

अथ-बड़ीइलायची-रक्तपित्तनाशक, वमननिगण्डक, शूलनाशक, पथरीको दूर करनेवाली, शीतल तथा घृषा हृन्म, कण्डू, पित्त और कफरोगको हग्नेवाली है ।
अन्यथा ।

स्थूलैलारोचनीतीक्ष्णालघृष्णाकफवातजित् ।

सुगन्धिपाचिकाशीताग्निदीप्तिकरीमता ॥

अर्थ-बड़ी इलायची-रुचिकारक, तीक्ष्ण, हल्की, गन्म, कफवातनाशक, सुगन्धि, पाचक, शीतल और अग्नि दीपन करनेवाली है ।

अपिच ।

स्थूलैलाकटुकापाकेरसेचानलकृलघु ।

रूक्षोष्णाश्लेष्मपित्तास्रकण्डूश्वासतृपापहा ॥

हृल्लासविषवस्त्यास्यशिरोरुग्बमिकासनुत् ॥ (भा०)

अर्थ-बड़ीइलायची-पाक और रसमें चरपरी है । अग्निजनक है हल्की है, रूखी और गरम है तथा कफ, रक्त, पित्त, कण्डू, श्वास, घृषा, दृष्टास, विष, वन्तिरोग, मखरोग, शिरोरोग, वमन और कासका नाश करे है ॥

अन्यथा ।

स्थूलैलाकटुकारूक्षाकोष्ठबन्धतृदशूलनुत् । (कचित्)

अर्थ-बड़ी इलायची-चरपरी, रूखी तथा कोष्ठबन्धता, पिपास और शूलको निर्मल करे है ।

सुस्मैलानामानि ।



वय स्थातीक्ष्णगधाचमृद्स्मैलाद्राविडिमुटि ।

अर्थ-वयस्था, तीक्ष्णगन्धा, मृदुस्मैला, द्राविडि, मुटि, (उपकुक्षिता,

कोरगी, भृगपर्णिका, उपकुशिका, तुल्या, त्रिपुटा, क्षुद्रैला, त्रिपुटी, छर्दिका-
रिपु, त्वचिसुगन्धा, पुटिका, चन्द्रमम्बवा, कपोतवर्णी, दिवोद्भवा, चन्द्रवाला,
बहुला, निष्कुटि, कुनटी, गौरागी, गर्भारा, गन्धफलिका, सुगन्धि चन्द्रिका
और श्वेतैला)

हिन्दीभाषामें

छोटी इलायची, गुजराती इलायची, सफेद-
इलायची ।

बगभाषामें

छोटप्लाच-गुजराती एलाइच ।

मराठीभाषामें

बेलची ।

गुजरातीभाषामें

एलचीकागदी ।

तैलिगीभाषामें

एलाकु, चिल्लयालकुड-एल्लकप ।

द्राविडीभाषामें

एलोकुल्लकापु ।

इंग्रेजीभाषामें

जिलिसर, कार्डामोम् । *Shoeler, Cardamo*

लैटिन्भा०

इलेटरिया कार्डामोम *Eleteria, Cardamomam*

फारसीभाषामें

हैल, हिल, हाल ।

अरबीभाषामें

काकिलेसिगार ।

अस्यागुणा ।

एलासूक्ष्माकफश्वासकासाशोमूत्रकृच्छ्रहृत् ।

रसेतुकटुकाशीतालघ्वीवातहरामता ॥ (भावप्रकाश)

अर्थ-छोटी इलायची-कफ, कास, श्वास, बवासीर और मूत्रकृच्छ्र
रोगका नाशकरे है, रसमें चरपरीहै, शीतलहै, हलकीहै और वातविनाशकरै ।

अन्यथा ।

शुटिस्तिक्ताचशीताचरसेकट्टीलघुःस्मृता ।

सुगन्धिःपित्तलाचैवमुखमस्तकशोधिनी ॥

गर्भपातकरीरूक्षावातश्वासकफापहा ।

कासार्षक्षयविपरुग्वस्तिकठरुजहरेत् ।

मूत्राश्मरीव्रणकण्डूनाशयेदितिकीर्तिता ॥ (नि० २०)

अर्थ-गुजराती इलायची-कडवी, शीतल, रसमें चरपरी, हलकी,
सुगन्धी, पित्तजनक, मुख और मस्तकको शोधनेवाली है, गर्भको गिराने-
वाली है, रूखा है तथा वात, श्वास, रसासी, बवासीर, क्षयगोग, विषविकार,
वमिगोग, कण्ठरोग, मूत्रकृच्छ्र, पथरी, घाव, और खुजलीका नाशकरै ।

ट्टिपिधा एलागुणा ।

एलाद्वयंशीतलतित्तमुष्णंसुगंधिपित्ताक्तिकफापहारि ।

करोतिहृद्रोगमलार्तिवस्तिपुंस्त्वध्रमत्रस्थविरोगुणाढ्य ॥

(रा० नि०)

अर्थ—दोनों प्रकारकी इलायची—शीतल, चरमरी, गरम, सुगंधि, पित्त-
रोगको शांतिकर, कफका नाशकर, हृत्परोगको उत्पन्नकर, तथा मल,
वास्तिरोग, पुस्त्य (पुरुषता) नाशक है । इन दोनोंमें बड़ी इलायची अधिक
गुणवाली है ।

विवरण—छोटी इलायचीका क्षुप अदरककी समान होताहै, फूल सफेद,
और लाल इलायचीके सुगन्धकी समान होतेहैं । इसके बीज काले और
गसभरे होतेहैं ।

मात्रा बड़ी इलायचीकी १॥॥ मासे, छोटी इलायचीकी १ मासे ।

बृहत्संज्ञामानि ।



कट्ठोलक
अ-कट्ठोलक
अ-कट्ठोलक

ककोल, माधवोचित, कटुफल, काल, मरिच, कटुक, कोल, मागिच, माग-
योपित, कृतफल, टीपसम्भव और सुगन्धिफल)

| | |
|-----------------|---|
| हिन्दीभाषामें | शीतलचीनी-कवावचीनी, चिनीकवाव, ककोला । |
| वगभाषामें | काकला । |
| मराठीभाषामें | ककोळ, कापुरचीनी । |
| गुजरातीभाषामें | चणकनाव । |
| कर्णाटकीभाषामें | ककोलद्वय । |
| तैलिङ्गीभाषामें | कवाकचीनी । |
| इंग्रेजीभाषामें | क्युबेब पेपर । Cubeb Pepper |
| लैटिनभाषामें | क्यूबेबा ऑफिसिनेलिस । Cubeba, Officinalis |
| फारसीभाषामें | कवावह । |
| अरबीभाषामें | कवास, हेयुल, ऊरस, कवाया । |

अस्य गुणा ।

कंकोललघुतीक्ष्णोष्णतित्तहृद्यरुचिप्रदम् ।

आस्यदौर्गन्ध्यहृद्रोगकफवातामयाध्यहृत् ॥ (भा० प्र०)

अर्थ—शीतलचीनी—हल्की, तीक्ष्ण, गरम, चरपरी, हृदयको हितकारी,
रुचिदायक तथा मुखकी दुर्गन्धता, हृदयरोग, कफ, वात और नेत्ररोगको
दूर करेहै ।

अपिच ।

ककोलकटुकतित्तमुष्णदीपनपाचकम् ।

रुच्यंसुगन्धिहृद्यचलघुचकफनाशकम् ॥

मुखजाड्यवातरोगहृद्रोगचकृमीस्तथा ।

अन्धत्वमुखदौर्गन्ध्यमामचैवाग्निमांश्चकम् ॥

नाशयेदितिचप्रोक्तमृषिभि सूक्ष्मदर्शिभिः ।

एतेगुणास्तुसुवृहत्ककोलस्यसमीरिता ॥

अर्थ—शीतलचीनी—चरपरी, कडवी, गरम, दीपन, पाचन, रुचिकारी,
सुगन्धि, हृदयको हितकारी, हल्की, कफनाशक तथा मुखकी जडता,
वातरोग, हृदयरोग, कृमि, अन्धापन, मुखकी दुर्गन्धता और मदाग्निको
नाश करेहै, बड़ी शीतलचीनीके गुण इमीके समान जानने ।

द्विविधा एलागुणा ।

एलाद्वयं शीतल तित्तमुण्णं सुगंधिपित्तात्तिकफापहारी ।

करोति हृद्रोगमलार्तिवस्तिपुंस्त्वघ्नमत्रस्थविरो गुणाढ्यः ॥

(रा० नि०)

अर्थ—दोनों प्रकारकी इलायची—शीतल, चर्परी, गग्ग, मुगंधि, पित्त-
रोगको शांतिकर, कफका नाशकर, हृदयरोगको उत्पन्नकर, तथा मल
वस्तिरोग, पुंस्त्व (पुरुषता) नाशक है । इन दोनोंमें बड़ी इलायची अधिक
गुणवाली है ।

विवरण—छोटी इलायचीका धूप अदरककी समान होताहै, फूल सफेद,
और लाल इलायचीके सुगन्धकी समान होतेहैं । इसके बीज काले और
रमभरे होतेहैं ।

मात्रा बड़ी इलायचीकी १॥। मागे, छोटी इलायचीकी १ मागे ।

चट्टोएनामानि ।



कट्टोलकं कोपफलं कोलकतैलसाधनम् ।

अर्थ—कोला कोपफल बालक, तैलसाधन, (कट्टोल साधन)
पत्र, कोला साधन गन्धव्याज १॥। कट्टोलक तैल, कट्टोलक

कंकोल, माधवोचित, कटफल, काल, मरिच, कटुक, कोल, मागिच, माग-
घोषित, कृतफल, द्वीपसम्भव और सुगन्धिफल)

| | |
|-----------------|---|
| हिन्दीभाषामें | शीतलचीनी-कवावचीनी, चिनीकवाव, ककोला । |
| वगभाषामें | काकला । |
| मराठीभाषामें | ककोळ, कापुरचीनी । |
| गुजरातीभाषामें | चणकवाव । |
| कर्णाटकीभाषामें | ककोलद्वय । |
| तैलिङ्गीभाषामें | कवाकचीनी । |
| इंग्रेजीभाषामें | क्युबेब पैपर । Cubeb Pepper |
| लैटिनभाषामें | क्यूबेबा ऑफिसिनेलिस । Cubeba, Officinalis |
| फारसीभाषामें | कवावह । |
| अरबीभाषामें | कवास, हेबुल, ऊरस, कनावा । |

अस्य गुणाः ।

कंकोललघुतीक्ष्णोष्णतिक्तहृद्यरुचिप्रदम् ।

आस्यदौर्गन्ध्यहृद्रोगकफवातामयांध्यहृत् ॥ (भा० प्र०)

अर्थ-शीतलचीनी-हल्की, तीक्ष्ण, गरम, चरपरी, हृदयको हितकारी,
रुचिदायक तथा मुखकी दुर्गन्धता, हृदयरोग, कफ, वात और नेत्ररोगको
दूर करेह ।

अपिच ।

ककोलकटुकतिक्तमुष्णदीपनपाचकम् ।

रुच्यसुगन्धिहृद्यचलघुचकफनाशकम् ॥

मुखजाड्यवातरोगहृद्रोगचक्रीस्तथा ।

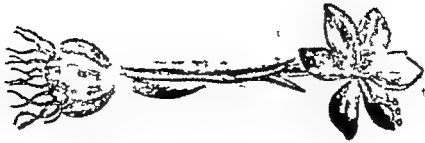
अन्धत्वमुखदौर्गन्ध्यमामचैवाग्निमांद्यकम् ॥

नाशयेदितिचप्रोक्तमृषिभि सूक्ष्मदर्शिभि ।

एतेगुणास्तुसुबृहत्ककोलस्यसमीरिता ॥

अर्थ-शीतलचीनी-चरपरी, कडवी, गरम, दीपन, पाचन, रुचिकारी,
सुगन्धि, हृदयको हितकारी, हल्की, कफनाशक तथा मुखकी जडता,
वातरोग, हृदयरोग, कृमि, अन्धापन, मुखकी दुर्गन्धता और मदाग्नि को
नाश करेह, यही शीतलचीनीके गुण इसीके समान जानने ।

नागकेशरनामानि ।



चाम्पेय.केसरोनागकेशर.कनकाह्वय ।

महोपधराजपुष्प.फलक.स्वरघातन ॥

अर्थ-चाम्पेय, केसर, नागकेशर, कनकाह्वय, महोपधरा राजपुष्प, फलक, स्वरघातन (केशर, काञ्चनाह्वय, सुवर्णाख्य, मुजङ्गाख्य, पटपटप्रिय, इमारय, पुष्परेचन, नागाख्य, सुवर्णाख्य, नागकेशर, केसरी त्रिञ्जल्क, नागत्रिञ्जल्क, नागीय, काञ्चन, सुवर्ण, हेमकिञ्जल्क रुचम, हेम, पिञ्जर, पणिक्केशर, पुन्नाग-केशर, नागपुष्प, नाग)

हिन्दी भाषामें

नागकेशर ।

वग भाषामें

नागेश्वर ।

मराठी भाषामें

नागकेशर । तावडा नागकेशर ।

गुजराती भाषामें

नागकेशर ।

कर्णाटकीभाषामें

नागकेशर ।

तैलिङ्गीभाषामें

नागकेशरगळ ।

तामिली भाषामें

नागल ।

वम्०

नागचम्प ।

लैटिनभाषामें

ओक्रोकार्पम लॉगिफोलियम मेसोफेरेया

Ocrocarpus longifolium Mesuoferea

झरबीभाषामें

नागमुष्क ।

भम्पगुणा ।

नागपुष्पंकपायोष्णरूक्षंलघ्वामपाचनम् ।

ज्वरकण्डूतृपास्वेदच्छर्दिहृल्लासनाशनम् ॥

दौर्गन्ध्यकुष्ठवीसर्पकफपित्तविषापहम् । (नायप्रकाश)

अर्थ-नागकेशर-वर्षेटी गरम, सूखी हल्की, आमपात्र तथा गर रुचनी पिपास परीना वमन उत्पत्ति, दुर्गन्ध नाश, शिरस रक्त पित्त और विषको हृत् करोई ।

अपिच ।

नागकेशरकंतिक्तं कपायचामपाचकम् ।

किञ्चिदुष्णं लघु रूक्षपित्तच्छर्दिकफापहम् ॥

खुडवातरक्त रुजवात कण्डूचहृदयथाम् ।

स्वेददौर्गन्ध्यविषतृदकुष्ठवीसर्पनाशनम् ॥

वस्तिपीडावातरक्त कण्ठमस्तकशूलनुत् । (नि० र०)

अर्थ—नागकेशर—कडवी, कपेली, आमपाचक, किञ्चित् गरम, रूखी, हलकी तथा पित्त, वान्ति, कफ, खुडवात, रुधिररोग, वात, कण्डू, हृदयकी पीडा, पसीना, दुर्गन्ध, विष, तृषा, कोढ़, विसर्प, वस्तिपीडा, वातरक्त, कण्ठरोग और मस्तकशूलका नाश करे है ।

अन्यथा ।

केसरविषवीसर्प रक्ताशौवमिकुष्ठहृत् ।

हृत्तासखुडदौर्गन्ध्यतृष्णापित्तबलासजित् ॥ (ग० नि०)

अर्थ—नागकेशर—विष, विसर्प, रक्तरोग, अर्श, वमन, कुष्ठ, हृत्तास, वातरक्त, दुर्गन्ध, तृषा, पित्त और कफको दूर करे है ।

पुन्नागवृक्षकी केशरको और नागचपाकी कलीको नागकेशर कहते हैं, इसकी दो जाति हैं, कोकण, गोवाकी ओरसे आती है ।

रत्नचगुडत्वदनामानि ।



भृङ्गवरांगरामेष्टविज्जुलत्वचमुत्कटम् ।

चोलगुडत्वचपत्रचोचंसुरभिवल्कलम् ॥

अर्ध-भृङ्ग, वगद्व, रामेष्ट, विज्जुल, त्वच, उत्कट, चोल, गुडत्वच, पत्र, चोच, सुरभिवल्कल (सतकट, त्वचपत्र, वरांगक, त्वचा, हृष, त्वक्, वल्कल, मुखशोधन, शकल, सिंदूर, वल्य, सुरस, कामवल्लभ, भृङ्गान्ध, वनप्रिय, लटपण, गन्धवल्कल, वर, शीत, त्वचपत्र, सिंदूर, रामवल्लभ, तनु-
त्वक् दारुमिता)

हिन्दीभाषामे

तज-चालचीनी ।

वगभाषामे

दारुचिनी ।

मराठीभाषामे

दालचिनी ।

गुजरातीभाषामे

तज ।

कर्णाटकीभाषामे

तज ।

तैलिङ्गीभाषामे

सनलियु । टाल्चीनी, सनाल लींगपुता ।

तामिलीभाषामे

कान्ता वर उपट्टाई ।

इंग्रजीभाषामे

सिन्नामल बार्क Cinnamon Bark

लैटिन्भाषामे

सिन्नामोमी कार्टेक्स । [छाल]

सिनामोम । जोफि मिलिम । [वृक्ष]

Cinnamomi Cortex C. officinalis Cinnomomum Cylindricum

फारसीभाषामे

दार्चिनी ।

अरबीभाषामे

सालीखा ।

ब्राजीलीभाषामे

मिडल्ल्यावो ।

सुताईभाषामे

ध्वाफ, ध्विन ।

शालिमितागुणा ।

उक्तादारुसितास्वादीतिकाचानिलपित्तघ्न ।

सुरभिःशुक्रलावण्यामुखशोषवृषापहा ॥ (भा० प्र०)

अर्ध-दालचीनी-म्यादिष्ट, कडवी, वात पित्तनाशक, शुगन्धि, शुक्रजना,
शरीरको शुद्ध करनेवाली तथा मुखशोथ और कृषाको हर्नेवाली है ।
अपिष्ट ।

त्वचंतुकटुकशीतकफकासविनाशनम् ।

शुक्राशमनचैवकण्ठशुद्धिकरलघु ॥ (राजनिघण्टु)

अर्थ-तज-चरपरी, शीतल, तथा कफ और खासीको दूर करे शुक्र और आमको शान्ति करे और हलकी है ।

अपिच ।

त्वचलघूष्णकटुकंस्वादुतिक्तं चरुक्षकम् ।

पित्तलकफवातघ्नं कण्ड्वामरुचिनाशनम् ॥

हृद्वस्तिरोगवातार्श कृमिपीनसशुक्रहृत् । (भा० प्र०)

अर्थ-तज-हलकी, गरम, चरपरी, स्वादिष्ठ, कडवी, रुखी, पित्तवर्द्धक, कफवातनाशक, तथा कण्डू, आम, अरुचि, वस्तिरोग, हृदयरोग, वातार्श, कृमि, पीनस और शुक्रको हरे है ॥

अन्यच्च ।

त्वक्कट्वीपित्तलास्वाद्भीकण्ठशुद्धिकरीलघुः ।

रूक्षातिक्तावस्तिशुद्धिकारिणी चोष्णदामता ॥

कफहिक्कावातकासकण्डूहृद्रोगनाशिनी ।

आमचवस्तिरोगश्च पीनसचविपतथा ॥

शुक्रचार्श कृमीश्चैव नाशयेदितिकीर्तिता ।

तनुत्वक्सुरभिस्तित्तास्वाद्भीवलकरीमता ॥

धातुवृद्धिकरीवातपित्ततृणमुखदोषनुत् ।

अर्थ-तज-चरपरी, पित्तको उत्पन्न करनेवाली, स्वादिष्ठ, कण्ठकी शुद्धि करनेवाली, हलकी, रुखी, कडवी, वस्तिशोधक, गरम तथा कफ, रुचकी, वात, खासी, खुजली, हृदयरोग, आम, वस्तिरोग, पीनस, विप, शुक्र, खासी और कृमिरोगका नाश करे । दालचीनी-मुगन्धि, कडवी, स्वादिष्ठ, बलकारक, धातुवर्धक, तथा वात, पित्त, तृण और मुखरोगको दूर करे ।

त्वचर्तलगुणा ।

वह्निमान्द्यानिलहरमाध्मानाक्षेपनाशनम् ।

वान्त्युत्क्लेशप्रशमनसग्राहिदशनार्तिहृत् ॥

त्वाचतैलरज सावितोयेक्षितनिमज्जति । (आ० स०)

अर्थ-तजका तेल-भट्ठाग्रि, वात, अफरा और आक्षेपका विनाशक है,

तथा चान्ति और उत्प्रेषको शान्ति करे है, ममाहीहै, दन्तरोगका दूर करे है, रक्तस्राव अर्थात् रुधिरके गिरनेमें इसको पानीमें डालकर लगाना चाहिये ।

विवरण—छोटा पेड़ होता है । मिहल, मलवार, कोचीन, चीन, सुमात्रा, वजाभा आदि देशोंमें अधिकतासे होती है, इसके पत्ते तमालपत्रकी समान होते हैं, पत्ताको मुखानेपर उनमेंसे लौंगकी समान सुगन्धि आती है । वृक्षकी डंडीके ऊपर सफेद फूल आता है, फूलमें गुलाबकी समान सुगन्धि आती है । फूल करंदिके समान होते हैं, इनमेंसे तेल निकलता है, इससे घृष्टोंका अर्क और इत्र बनाते हैं । मिहलद्वीपकी दालचीनी बहुत उत्तम होती है । वृक्षकी पतली छालकोही दालचीनी कहते हैं ।

तेजपत्रनामानि ।

तेजपत्र गन्धजात पत्रक पाकरञ्जनम् ।

अर्थ—तेजपत्र, गन्धजात, पत्रक, पाकरञ्जन, (पत्र, दलाद्वय राम, गोमेद, वमनाद्वय, गोमेदक, पत्रालय, छदुन, दल, पालाश, अंकुश, वात वापस, सुकुमारक, वस्त्र, तमालक, गोपन, वमन तमाल, सुगन्धिगन्ध, तमालपत्र, इष्टगन्ध, शीतरस, सुरस और रोमश)

| | |
|------------------|-------------------------------------|
| हिन्दी भाषामें | तेजपात । |
| बङ्ग भाषामें | तेजपाता । तेजपत्र । |
| मराठी भाषामें | तमालपत्र । मभास्पान । |
| गुजराती भाषामें | तमालपत्र । |
| कर्णाटकी भाषामें | पत्रक । |
| तैलिङ्गी भाषामें | आकुपत्री । |
| इंग्रेजी भाषामें | फोलिया मालावार्थी । Folia Malalathy |
| लैटिन् भाषामें | सितामोम टमाला । Cumamomum Tamaris |
| फारसी भाषामें | सादरम् । |
| बर्या भाषामें | माजिज । |

अस्पृश्या ।

पत्रमुष्णलघुश्लेष्मदह्यामाशौनिलापहम् ।

हृद्रोगपीनसचापित्रिदोषचैवनाशयेत् ॥ (नि० २०)

अर्थ—तेजपान—गरम, हल्का तथा तप्त उपकार्य चवासीर, वात हृदय रोग, पीनस और त्रिदोषनाशक है ॥

अपिच ।

पत्रकलघुतिकोष्णकफवातत्रिपापहम् ।

वस्तिकण्डूत्रिदोषप्रमुग्गमस्तकशोधनम् ॥ (राजनि०)

अर्थ-तेजपात-हलका, कडवा, गरम, वात, विष, वस्तिरोग, खुजली और त्रिदोषनाशक है, मुख और मस्तकगोधक है ।

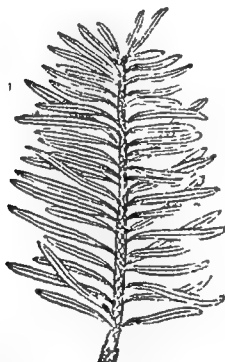
अन्यञ्च ।

पत्रकमधुरकिञ्चित्तीक्ष्णोष्णपिच्छिलंलघु ।

निहतिकफवाताशौहृद्यासारुचिपीनसान् ॥ (भावप्रकाश)

अर्थ-तमालपत्र (तेजपात)-मधुर, कुठेक तीक्ष्ण, गरम, पिच्छिल, हलका तथा कफ, वात, चवासीर, हृद्यास, अरुचि और पीनस रोगका नाशक है । तेजपत्र तजके पत्तोंकी समान होतेहैं, सुगन्धिके लिये मसालेमं डाले जातेहैं । मात्रा तीन ३ मासेकी है ।

तालीसपत्रनामानि ।



तालीसपत्रतालीसधात्रीपत्रशुकोदरम् ।

अपरग्रथिकापत्रपत्राढ्यतुलसीछदम् ॥ (मदनविनोद)

अर्थ-तालीसपत्र-तालीस, धात्रीपत्र, शुकोदर, ग्रथिकापत्र, पत्राढ्य तुलसीछद, (पत्राढ्य, अर्कग्रथ, करिपत्र, करिच्छद, नील, नीलाम्बर, ताल, तालीपत्र, तमाह्वय, तालीमपत्रक, तामलकीदल, मुखमोगहर, हय, मुपत्र अर्कवाह, करीपत्र, आमलकीपत्र और धनच्छद)

हिन्दीभाषामें

तालीमपत्र-तालिग्रपत्र ।

वगभाषामें

तालीशपत्र ।

| | |
|----------------|-------------------------------------|
| मगदीभाषामं | लघुतालीसपत्र । |
| कर्णाटकीभाषामं | तालीसपत्र । |
| तलिङ्गीभाषामं | तालीसपत्री । |
| गुजरातीभाषामं | तालीमपत्र । |
| वमु० | ताम्रठ । |
| द्राविडीभाषामं | पनिअल । |
| लैटिन्भाषामं | टेकसस् वेकेटा । <i>Tarus bacata</i> |
| फारसीभाषामं | जगनव । |
| अरबीभाषामं | तालीसफर । |

तालीसपत्रगुणा ।

तालीसलघुतीक्ष्णोष्णश्वासकासकफानिलान् ।

निहत्यरुचिगुल्मामवह्निमांघक्षयामयान् ॥ (भावप्रका-

अर्थ-तालीसपत्र-लघु, तीक्ष्ण, गरम तथा श्याम, खौमी, पक्व,
अरुचि, गुल्म, आम, मन्त्राग्नि और क्षयरोगका नाश करेई ।

अपिच ।

तालीसपत्रंतिक्तोष्णमधुरकफवातनुत ।

कासहिकाक्षयश्वासच्छर्दिदोषविनाशकृत् ॥ (राजनिघण्टु-

अर्थ-तालीसपत्र-कड़वे, गरम, मधुर, कफवातनाशक तथा खौमी, दुग्ध
क्षयरोग, श्वास और वमनरोगको दूर करेई ।

अथयश ।

तालीसपत्रमधुरतिक्तोष्णलघुस्मृतम् ॥

तीक्ष्णस्वर्यञ्चहृद्यञ्चाग्निदीप्तिकरमतम् ॥

श्वासकासकफवातक्षयगुल्मारुचीस्तथा ।

रक्तदोषं वर्मिचाममग्निमांघचनाशयेत् ।

मुखरोगश्चपित्तश्चनाशयेदितिकीर्तितम् ॥ (नि० २०)

अर्थ-तालीसपत्र, मधुर कड़वे, गरम, हल्के, तीक्ष्ण, स्पर्शो मेमालने-
रुचिप्रद, हृद्य, अग्नि दीपन कर्मेजाले तथा श्याम, खौमी, पक्व,
अरुचि, गुल्म, आम, मन्त्राग्नि, वात, आमदाय, अग्निमांघ,
मुखरोग, पित्तका नाश करेई ।

अत्यन्त बड़ा होताई देखनेमें अधिक तरंगान्तर भिन्न-
जाति के तरंगों की वरनीय तमामें जातेई ।

व्यवहारः

जटामासीनामानि ।

जटामासीजटीपेपीलोमशाजटिलामिसिः ।

मांसीतपस्विनीहिंसामिपिकाचक्रवर्तिनी ॥

अर्थ—जटामासी, जटी, पेपी, लोमशा, जटिला, मिसि, मासी, तपस्विनी, हिंसा, मिपिका, चक्रवर्तिनी, (नलद, वद्विनी, कृष्णजटा, किरातिनी, भूत-जटा, फल्पादी, पिशिता, पिशी, पेशी, पेशिनी, जटा, मासिनी, जटाला, नलदा, मेपी, तामसी, माता, अमृतजटा, जननी, जटावती, मृगभक्षा, जटामासी, मिसि, मिसी, मिसिका, मिपि)

गन्धमासीनामानि ।

द्वितीयागन्धमासीचकेशीभूतजटास्मृता ।

पिशाचीपूतनाचैवभूतकेशीच लोमशा ॥

जटालालघुमांसीचख्याताअकाभिधाह्वया ।

अर्थ—गन्धमासी, केशी, भूतजटा, पिशाची, पूतना, भूतकेशी, लोमशा, जटाला, लघुमासी, (पिशाचिका और श्वेतकेशी)

आकाशमासीनामानि ।



| | |
|-----------------|------------------------------|
| मगठीभाषामें | लघुतालीसपत्र । |
| कर्णाटकीभाषामें | तालीसपत्र । |
| तलिह्वीभाषामें | तालीसपत्री । |
| गुजगतीभाषामें | तालीसपत्र । |
| वमु० | ताम्बठ । |
| द्राविडीभाषामें | पनिअळ । |
| लॅटिनभाषामें | टेक्मम् वेकेग । Tazus lacata |
| फारसीभाषामें - | जरनव । |
| अरबीभाषामें | तालीसफर । |

तालीसपत्रगुणा ।

तालीसलघुतीक्ष्णोष्णंश्वासकासकफानिलान् ।

निहत्यरुचिगुल्मामवह्निर्माद्यक्षयामयान् ॥ (भायप्रकाश)

अर्थ-तालीसपत्र-लघु, तीक्ष्ण, गरम तथा श्वास, रसोत्ती, कफ, वात, अरुचि, गुल्म, आम, मदाग्नि और क्षयरोगका नाश करेह ।

अपिच ।

तालीसपत्रंतिक्तोष्णमधुरकफवातनुत् ।

कासहिक्काक्षयश्वासच्छर्दिदोषविनाशकृत् ॥ (राजनिघण्टु)

अर्थ-तालीसपत्र-कड़वे, गरम, मधुर कफवातनाशक तथा रसाती, क्षयकी क्षयरोग, श्वास और वमनरोगको दूर करेह ।

अन्यथा ।

तालीसपत्रमधुगतिक्तचोष्णलघुस्मृतम् ॥

तीक्ष्णस्वर्यञ्चहृद्यञ्चाग्निदीप्तिकरंमतम् ॥

श्वासकासकफवातक्षयगुल्मारुचीस्तथा ।

रक्तदोषं वमिचामग्निमाद्यंचनाशयेत् ।

मुखरोगञ्चपित्तञ्चनाशयेदितिकीर्तितम् ॥ (नि० १०)

अर्थ-तालीसपत्र मधुर कड़वे, गरम, हल्के, तीक्ष्ण, म्बरको मेंभालने-वाले द्रव्यको हितकारी, अग्नि दीप्त करनेवाले तथा श्वास, रसाती, कफ, वात, क्षय, गुल्म, अरुचि, रुधिरविक्षार, वान्ति, आमदाग, अग्निमाद्य, मुखरोग और पित्तका नाश करेह ।

निर्गन्ध-रूप अत्यन्त मृदा होताहै द्रव्यनेमें अग्नि तपपाउने में मिल-जाता है, इससे लहके सगते चौरकर चैकी मरनाम सगाये जानेह ।
प्यवहागपत्र ।

जटामांसीनामानि ।

जटामांसीजटीपेपीलोमशाजटिलामिसिः ।

मांसीतपस्विनीहिंसाभिपिकाचक्रवर्तिनी ॥

अर्थ—जटामासी, जटी, पेपी, लोमशा, जटिला, मिसि, मासी, तपस्विनी, हिंसा, मिपिका, चक्रवर्तिनी, (नलदा, वद्विनी, कृष्णजटा, किरातिनी, भूत-जटा, क्रव्यादी, पिशिता, पिशी, पेडी, पेशिनी, जटा, मासिनी, जटाला, नलदा, मेपी, तामसी, माता, अमृतजटा, जननी, जटावती, मृगभक्षा, जटामासी, मिसि, मिसी, मिसिका, मिपि)

गन्धमांसीनामानि ।

द्वितीयागन्धमांसीचकेशीभूतजटास्मृता ।

पिशाचीपूतनाचैवभूतकेशीच लोमशा ॥

जटालालघुमांसीचख्याताअकाभिधाह्वया ।

अर्थ—गन्धमासी, केशी, भूतजटा, पिशाची, पूतना, भूतकेशी, लोमशा, जटाला, लघुमासी, (पिशाचिका और श्वेतकेशी)

आकाशमांसीनामानि ।



आकाशमांसीसूक्ष्मान्यानिरालम्बास्वसम्भवा ।

सेवालीसूक्ष्मपत्रीचगौरीपर्वतवासिनी ॥ (राजनिघण्टु)

अर्थ-आकाशमांसी, सूक्ष्मजयामासी, निगलम्बा, रासम्भवा, सेवाली, सूक्ष्मपत्री, गौरी, पर्वतवासिनी ।

हिंदीभाषामें जयामासी, बालछड, कनुचर ।

बगभाषामें जयामासी ।

भराठीभाषामें जयामासी ।

गुजरातीभाषामें बालछड ।

फर्नाटकीभाषामें चटुलगन्धजयामासी आकाशजयामासी ।

तैलिंगीभाषामें जयामासी ।

इंग्रेजीभाषामें स्पिकुनाई Spikenard

लैटिनभाषामें नाटोंगेदेफिग जयामासी । Nonla ochyo

फारसीभाषामें सुबल ।

अरबीभाषामें सुबलुत्तीव ।

जयामांसीगुणा ।

मांसीतित्ताकपायाचमेध्याकांतिरुलप्रदा ।

स्वाद्दीहिमात्रिदोपान्नदाहवीसर्पकुष्ठनुत् ॥ (भा० प्र०)

अर्थ-बालछड, कढवी, कपेली, मेधाजनक, शान्तिकारक, मनदायक, स्वादिष्ट, शीतल, तथा त्रिदोष, रुधिरविकार, टाद, विसर्प और कुष्ठरोगको नष्ट करे ।

अधिक ।

सुरभिस्तुजयामांसीकपायाकटुशीतला ।

कफद्वद्रुतदाहप्रीपित्तप्रीमोदकांतिकृत् ॥ (ग० नि०)

अर्थ-जयामासी (बालछड)-कपेली, चण्णरी, शीतल, कफनाशक, भूतदाह और पित्तका नाशक, आनन्दको उत्पन्न करे, और कान्तिको प्रदानेवाली है ।

अन्यथा ।

अनुलेपनज्वरद्वृत्ततांचैवनाशयेत् । (गजपद्म)

अर्थ-द्वारा लेप करनेसे ज्वर और शीतलता हटती है ।

गन्धमांसीगुणा ।

गन्धमांसीतिक्तशीताकफकण्ठामयापहा ।

रक्तपित्तहरावर्ण्याविषभूतज्वरापहा ॥

अर्थ—गन्धमासी, कडवी, शीतल तथा कफ, कण्ठरोग, रक्त, पित्त, विष, भूत और ज्वरको दूर करेहै तथा वर्णको उज्ज्वल करेहै ॥

आकाशमांसीगुणा ।

अभ्रमांसीहिमाशोफव्रणनाडीरूजापहा ।

लूतागर्दभजालादिहारिणीवर्णकारिणी ॥ (राजनि०)

अर्थ—आकाशमासी—शीतल तथा सृजन और नाडीरोगनाशक है, लूता, गर्दभक, जालादिनिवारक और शरीरके रंगको उज्ज्वल करेहै ।

अन्यञ्च ।

जटामांसीतुतुवराशीतलाकांतिकारका ।

बल्याकङ्कीस्वादुतिक्ताकफांतर्दाहपित्तहा ॥

विसर्पकुष्ठत्वग्दोषभूतबाधाजरापहा ।

दाहत्रिदोषवातंचरक्तदोषविपहरेत् ॥

कृष्णासुगंधामांसीतुकेश्यासुरभित्तिका ।

वर्ण्याचशीतलाप्रोक्ताकफकण्ठरूजाहरा ॥

भूतवाधारक्तपित्तरक्षोबाधाज्वरापहा ।

विषवातहराचान्येगुणामांसीवदीरिताः ॥

आकाशमांसीवर्ण्यातुशीतलाव्रणशोथहा ।

जालगर्दभकलूताविस्फोटचमसूरिकाम् ॥

नाडीव्रणविसर्पादिनाशयेदितिकीर्तिता ॥

अर्थ—जटामासी (वाल्डड)—कपेली, शीतल, कान्तिकारक, घटकागक, चरपरी, स्वादिष्ट, कडवी तथा कफ, अन्तर्दाह, पित्त, विसर्प, कोढ़, त्वचाके रोग, जग, दाह, त्रिदोष, वात, रक्तविकार और विषका विनाश करेहै । सुगन्धजटामासी—केशोंको उज्ज्वल करनेवाली, सुगन्धि, कडवी, वर्णको सुन्दर करनेवाली, शीतल तथा कफ, कण्ठरोग, भूतवाधा, रक्तपित्त, राक्षस-

आकाशमांसीसूक्ष्मान्यानिरालम्बाखसम्भवा ।

सेवालीसूक्ष्मपत्रीचर्गौरीपर्वतवासिनी ॥ (राजनिवण्ड)

अर्थ-आकाशमासी, सूक्ष्मजटामागी, निगलम्बा, खसम्भवा, सेवाली, सूक्ष्मपत्री, गौरी, पर्वतवासिनी ।

हिंदीभाषामें जटामागी, बालछड, कनुचर ।

बंगभाषामें जटामागी ।

मराठीभाषामें जटामागी ।

गुजरातीभाषामें बालछड ।

फर्नाटकीभाषामें बटुलग्गजटामासी आकाशजटामांसी ।

तैलिंगीभाषामें जटामागी ।

इंग्रेजीभाषामें स्पिकनार्ड Spikenard

लैटिनभाषामें नार्डोस्तेकियु जटामासी । *Nardostachyo*

फारसीभाषामें मुयल ।

अरबीभाषामें मुबलुशीय ।

जटामांसीगुणा ।

मांसीतित्ताकपायाचमेध्याकांतिवलप्रदा ।

स्वाढीहिमात्रिदोपासदाहवीसर्पकुष्ठनुत् ॥ (भा० प्र०)

अर्थ-बालछड, कटवी, कपेली, मेधाजनक, कान्तिकारक, बलदायक, स्वादिष्ट, शीतल, तथा त्रिदोष, रुधिरविकार, दाह, विमर्ष और कुष्ठरोगको नष्ट करे ।

प्रयोज्य ।

सुरभिस्तुजटामांसीकपायाकटुशीतला ।

कफद्रुतदाहघ्नीपित्तघ्नीमोदकांतिकृत् ॥ (रा० नि०)

अर्थ-जटामागी (बालछड)-कपेली, चापरी, शीतल, कटनाशक, भूतदाह और पित्तका नाशक, आनन्दको उत्पन्न करे, और शक्ति का बढानेवाली है ।

प्रयोज्य ।

अनुलेपनज्वरद्रुततांचैवनाशयेत् । (राजवल्लभ)

अर्थ-इसका लेप गर्मते उग्र और शब्दा दूर होती है ।

गन्धमांसीगुणा ।

गन्धमांसीतिक्तशीताकफकण्ठामयापहा ।

रक्तपित्तहरावर्ण्याविपभूतज्वरापहा ॥

अर्थ—गन्धमासी, कडवी, शीतल तथा कफ, कण्ठरोग, रक्त, पित्त, विष, भूत और ज्वरको दूर करेहै तथा वर्णको उज्ज्वल करेहै ॥

आकाशमांसीगुणा ।

अभ्रमांसीहिमाशोफव्रणनाडीरूजापहा ।

लूतागर्दभजालादिहारिणीवर्णकारिणी ॥ (राजनि०)

अर्थ—आकाशमासी—शीतल तथा सूजन और नाडीरोगनाशक है, लूता, गर्दभक, जालादिनिवारक और शरीरके रंगको उज्ज्वल करेहै ।

अन्यच्च ।

जटामांसीतुतुवराशीतलाकांतिकारका ।

बल्याकट्टीस्वादुतिक्ताकफांतर्दाहपित्तहा ॥

विसर्पकुष्ठत्वग्दोषभूतबाधाजरापहा ।

दाहत्रिदोषवातंचरक्तदोषंविषहरेत् ॥

कृष्णासुगंधामांसीतुकेश्यामुरभितित्का ।

वर्ण्याचशीतलाप्रोक्ताकफकण्ठरूजाहरा ॥

भूतबाधारक्तपित्तरक्षोबाधाज्वरापहा ।

विषवातहराचान्येगुणामांसीवदीरिताः ॥

आकाशमांसीवर्ण्यातुशीतलाव्रणशोथहा ।

जालगर्दभकलूताविस्फोटचमसूरिकाम् ॥

नाडीव्रणविसर्पादिनाशयेदितिकीर्तिता ॥

अर्थ—जटामासी (वाल्डड)—कपेली, शीतल, कान्तिकारक, बलकारक, चरपरी, स्वादिष्ट, कडवी तथा कफ, अन्तर्दाह, पित्त, विसर्प, कोष्ठ, त्वचाके रोग, जरा, दाह, त्रिदोष, वात, रक्तविकार और विषका विनाश करेहै । सुगन्धजटामासी—केशोंको उज्ज्वल करनेवाली, सुगन्धि, कडवी, वर्णको सुन्दर करनेवाली, शीतल तथा कफ, कण्ठरोग, भूतबाधा, रक्तपित्त, राक्षस-

वाधा, ज्वर, विष और घादीका नाश करते हैं ॥ आमाशजयामांसी-शरीरके रंगको शोभायमान करनेवाली शीतल तथा ग्रण, शोथ, जालगदंभगो, लूता, विल्कोटक, मसूरिका (दीतलामाता) नादीग्रण (नासूर) और विसर्पादि अनेक रोगाको दूर करते हैं ।

विवरण-जयामांसी गुल्मजातिकी वनस्पति है, इसके पत्ते सरजीवनकी समान होते हैं, यह हिमालयके जगदम उत्पन्न होती है । इसकी जड़पर पूगर रंगके कैंपे जमे रहते हैं, पून् गुलाबी आमा और गुच्छाम लगते हैं ॥

व्यवहार-हँवांसे ढकी हुई जड़ बाजारमें जो जयामांसी अर्थात् पावछद विकती है वह कृत्रिम बनी हुई होती है इस कारण देख भालके काममें लाना उचित है । मात्रा चार ४ मासेकी है ।

यदुतदिनोत्ते जयामांसीका व्यवहार सुगन्धि तैलादिमें बनानेमें होता है और मागनेसि आदि अंग्रेज डाक्टरगण इसको भेलिग्न नामक इमेरी औषधिकी मुख्य गुणवाली समझते हैं, स्नाय्वादिनी दुपलतामें विगण उपकारी होनेसे यह यदुत औषधिका अनुपातमें दीजाती है, बचलाफ, उदरामय, श्वास, प्यासी मुच्छादिरोगमें इसका व्यवहार करते हैं । दण्डिदेशमें जयामांसीमें एक प्रकारका तेल निकालकर केशोंमें लगाया जाता है ।

प्रियगुनामांजि ।

प्रियगुःफालिनीश्यामागन्धफलागोवन्दनी ।

विष्वक्सेनाकृष्णपुष्पीकृशाङ्गीमहिलाह्वया ॥

अर्थ-प्रियङ्गु फलिनी, श्यामा, गन्धफला गोवन्दनी, विष्वक्सेना, कृष्णपुष्पी, कृशाङ्गी, महिलाह्वया, लता (कान्ता, गुन्दा, पाग्गभा, प्रियङ्गु, कट्ट गोवर्णा, भेटिनी, मियवली, पल्पिया गौरी, कृष्णा, पङ्गु, पंगुनी भगुग, गौरवली, शुभगा, पर्णभेटिनी, शुभा, पीता महन्त्या, प्रेयगा अङ्गनामिया बनिता, नाग्वल्भा)

ससृजभाषामें

दिर्न्वाभाषामें

वंगभाषामें

मराठीभाषामें

गुजरातीभाषामें

कर्णाटकीभाषामें

प्रियगु ।

पुष्पप्रियंगु प्रियंगु कृष्ण,

प्रियंगु, गन्धप्रियंगु ।

महन्त्या ।

पङ्गु ।

नौषङ्गु ।

तेलिङ्गीभाषाम्
तामिलीभाषाम्
वम्
लैटिनभाषाम्

प्रकण्णपुचेट्टु ।
प्रियगु ।
गडुली ।
गुनम्-महालिब् । Psunesma haleb

अस्यगुणा ।

प्रियगु शीतलातिक्तातुवरानिलपित्तहृत् ।

रक्तातिसारदौर्गन्ध्यस्वेददाहज्वरापहा ॥

गुल्मतृड्विपमेहघ्नीतद्वद्वन्धप्रियगुका ।

तत्फलमधुररूक्षकपायशीतलगुरु ॥

विवन्धाध्मानबलकृत्सग्राहीकफपित्तजित् । (भा० प्र०)

अर्थ-प्रियगु-शीतल, कडवा, कपेला तथा वात, पित्त, रक्तातिसार, दुर्गन्ध, पसीना, दाह, ज्वर, गुल्म, तृषा और प्रमेहको दूर करेहै, इसीके सदृश गन्धप्रियगुके गुण हैं ।

प्रियगुका फल-मधुर, कपाय, भारी, शीतल तथा विवन्ध, आध्मान और बलकारक है, मलरोधक तथा कफपित्तनाशक है ।

अपिच ।

प्रियगु शीतलोवातिदाहपित्तज्वरास्रजित् ।

मुखकांतिप्रजननोगात्रदौर्गन्ध्यनाशन. ॥ (मदनविनोद)

अर्थ-प्रियगु-शीतल है वान्ति, दाह, पित्त, ज्वर और रुधिरविकारको दूर करेहै तथा मुखकी शोभाको बढ़ावेहै और शरीरकी दुर्गन्धको हरेहै ।

अन्यच्च ।

गन्धप्रियगुस्तुवरस्तिक्तोवृष्यश्चशीतलः ।

केश्योवांतिभ्रांतिदाहपित्तरक्तरुजस्तथा ॥

ज्वरमोहस्वेदकुष्ठमुखजाड्यतृषा हरेत् ।

वातगुल्मविपमोहमेदचेवविनाशयेत् ॥

रक्तपित्तनाशयतिबीजमस्यकपायकम् ।

मधुरशीतलरूक्ष तुवर ग्राहक गुरु ॥

मलस्तम्भकरं वल्यपित्तप्रंकफनाशनम् ।

आध्मानकारकचैव मुनिभिः परिकीर्तितम् ॥

अन्यसुगन्धमिषदु ।

सुगन्धफलिनी शीता सुगन्धिः कुष्ठदाहनुत् ।

ज्वररक्तविकारश्चनाशयेदितिकीर्त्तिता ॥ (रा० नि०)

अर्थ-मिषदु-कपेला, कडवा, वीर्यजनक, शीतल, पेशाबो उज्ज्वल करनेवाला तथा वमन, वान्ति, दाह, पित्त, रक्तगण, ज्वर, मोह, पाणीना, कोढ़, मुखकी जड़ता, पियास, वात, गुल्म, विष, प्रमेह मेदगण और रक्त-पित्तका नाश करते हैं ॥

इसके धीज-कपेले, मधुर, शीतल, रुखे, माही, मलको स्तम्भन करने-वाले, यलकारक, पित्तका नाश करनेवाले कफको दूर करनेवाले और अफारेको करनेवाले हैं ।

सुगन्धमिषदु [दूमेरे प्रकारका मिषदु अर्थात् पुनर्मिषदु] शीतल, सुगन्धि तथा कोढ़, दाह, ज्वर और रुधिरके विकारोंको दूर करते हैं ।

वशीरुनामानि ।

रसम्



वीरणस्य तु मूलस्यादुशीरुनलदचतत् ।

अमृणालं च सेव्यं क्षसमगन्धिकमित्यपि ॥

अर्थ-वीरण (गौडर) घामकी जड़को उगीर अर्थात् गम करते हैं ।
 सं० उगीर नेत्रे, अमृणाल, सेव्य मिमगन्धिक (अमय अरुदाह, गन्धरास, ममजल, मृदुमय, अरुदाह इहकापय, उगीर, मृणाल, मृदुमय, अरुदाह, दाहनेहकापय इन्द्रगुप्त-उगीरके, पञ्चम, हरिनिप, बीर, वीरणा,

गणप्रिय, वीरतरु, शिशिर, शीतमूलक, वितानमूलक, दाहहरण, जलामोद, गन्धादय, सुगन्धिक, सुगन्धिमूलक, सुगन्धिमूल, कम्बु, वीरण, कटायन वीरतर, वीरभद्र, वीर और वट्टमूलक)

हिन्दीभाषामें

खस, वीरन, गोंडर ।

बगभाषामें

व्याणारमूल, वेणारमूल, वीरणमूल—खस ।

मगठीभाषामें

कालावाळा ।

गुजरातीभाषामें

कालीवालो मोथ्यतावालाजिनांगीणमूल ।

कर्णाटकीभाषामें

वालदेवस ।

तैलिङ्गीभाषामें

भवर्गुगट्टि, नल्ल वट्टिवेळु ।

तामिलीभाषामें

वेत्तेवे ।

बम्

खसखस ।

उत्त

विणा, गन्दविणा, बाधिवेरु ।

लैटिनभाषामें

अन्द्रोपागन मूरिकेटम् Andropogon Muricatum

उशीरगुणा ।

उशीरशीतलतिक्तदाहश्रमहरंपरम् ।

पित्तज्वरार्तिशमनजलसौगध्यदायकम् ॥ (रा० नि०)

अर्थ—खस—शीतल, कडवी तथा दाह, परिश्रम और पित्तज्वरकी शान्ति करे तथा जलको सुगन्धि करेहै ।

अपिच ।

उशीरस्वेददौर्गन्ध्यदाहपित्तास्ररोगजित् । (रा० व०)

अर्थ—खस—पसीना, दुर्गन्ध, दाह और रक्तपित्तको हरेहै ।

अन्यथा ।

उशीरस्वेदपित्तास्रदाहदौर्गन्ध्यनाशनम् ।

कृमत्तृष्णाविपध्वसित्तमधुरहिमम् ॥

अर्थ—खस—स्वेद, पित्त, रक्तविकार, दाह, दुर्गन्ध, कृम, तृष्णा और विषको दूर करे तथा कडवी, मधुर और शीतल है ।

अपिच ।

उशीरं पाचनशीतस्तम्भनलघुतिक्तकम् ।

मधुरज्वरहृद्धान्तिमदनुत्कफपित्तहृत् ॥

तृष्णास्रविषवीसर्पदाहकृच्छ्रवृणापहम् । (भावप्रकारा)

अर्थ-खम-पाचक, शीतल, स्तम्भन, हलकी, फडवी, मीठी तथा ज्वर वमन, मद, कफ, पित्त, वृषा, रुधिरदोष विष, बीतर्ष, दाह भूयःकृच्छ्र और प्रणरोगका नाश करेह ।

गाढरके भी गुण इमीय समान है ।

विवरण-यह गाढर घामकी जड़ है ।

गोरोचनानामानि ।

गोरोचनातुगोपित्तवन्दनीयामनोगमा ।

अर्थ-गोरोचना-गोपित्त, वन्दनीया मनोगमा (वन्द्या रोगनाशनि, शोभा, रुचिग, शोभना, शुभा, गौरा, रोचनी, पिप्ता, मद्रन्त्या मद्रत्ता शिवा, पीता, गीतमी, गव्या, चन्दनीया, काथनी, मेघ्या, श्यामा, गमा, मृतविद्राविणी, गोपित्तसम्भवा, पिंगला, नन्दिनी, पाथिनी, गोरुचि)

हिन्दीभाषामें

गोगेचन, गोलोचन ।

बगभाषामें

गोगेचना ।

मराठीभाषामें

गोरोचन ।

गुजरातीभाषामें

गोगेचन्दन गोगेचन ।

कर्णाटकीभाषामें

गोगेचन ।

तैलिंगीभाषामें

गोरोचनम् ।

इंग्रेजीभाषामें

गोलम्बोन पिप्पोर Gollatone Bijoer

लैटिनभाषामें

चोम्बोम । Bistarous

फारसीभाषामें

गपरोहन ।

अरबीभाषामें

हजकलबखर ।

गोरोचनागुणाः ।

गोरोचनाहिमातित्कानश्यामद्गलकान्तिदा ।

विपालक्ष्मीग्रहोन्मादगर्भत्वावज्ञतान्दत् ॥ (भा० प्र०)

अर्थ-गोगेचना-शीतल, कडवी, बड़ीविरण, मद्रन्चनक कानिदापय तथा विष, अल्क्ष्मी, ग्रह, उन्माद, गर्भमार, दाह और रक्तशोषनाशक है ।

अविष ।

गोरोचनाचरिशिगविषदोषहन्त्रीरूपाचपाचनकरीकृमिकुष्ठहन्त्री । भूतग्रहोपशमनं कुरुते च पथ्या शृङ्गारमद्गलकरीजनमोहिनीच ॥ (गजनिष्ठ)

अर्थ—गोरोचन—शीतल, विषदोषनाशक, रुचिकारी, पाचक, कृमि और कुष्ठको नष्ट करनेवाला, भृत्ग्रहको शान्ति करनेवाला, पथ्य, शृगार और मगलको करनेवाला तथा मनुष्योंको मोह करनेवाला है ।

अपिच ।

गोरोचनचातिशीतरुच्यमगलदायकम् ।

वशीकरकांतिकरवृष्यतित्तसमीरितम् ॥

पिशाचग्रहपीडाञ्चविपकुष्ठकृमीस्तथा ।

अलक्ष्म्युन्मादशमनंगर्भस्त्रावहरपरम् ॥

क्षतरक्तविकारञ्चनेत्ररोगञ्चनाशयेत् । (निघण्टुरत्नाकर)

अर्थ—गोरोचन—अत्यन्त शीतल, रुचिकारक, मगलदायक, वश करनेवाला, कान्तिकारक, वीर्यजनक, कडवा तथा पिशाचनाधा, ग्रहकी पीडा, विष-विनाश, कोढ़, कृमि, अलक्ष्मी, उन्माद, गर्भस्त्राव, क्षत, रक्तविकार और नेत्ररोगका नाश करेहै ।

गोरोचन—गायके मस्तकका पित्त होताहै, इसका रंग पीला होताहै यह अधिक व्यवहारमें आताहै, औषधिप्रयोगमें भी अधिकतासे लिया जाताहै इसका मस्तकमें तिलक लगानेसे वशीकरण होताहै । मात्रा दोरत्ती की ।

नखनामानि ।

नखव्याघ्रनखव्याघ्रायुधतच्चक्रकारकम् ।

नखस्वलपनखीप्रोक्ताहनुर्हृद्विलासिनी ॥ (भावप्र०)

अर्थ—नख, व्याघ्रनख, व्याघ्रायुध, चक्रकारक, (व्याडायुध, करज, कूटस्थ, नखाङ्क, नख्य, व्याघ्रनखी, चक्रलायक, चक्री, चक्रनख, घ्यनफल, दीपिनख, खपुग, व्याल्पाणिज, व्यालायुध, व्यालवल, व्यालखड्ग) दूसरा छोटा नख जिसको नखी कहतेहैं उसके पर्याय यह हैं हनु, हृद्विलासिनी [शुक्ति, शख, खुर, कोलदल व्यालायुध, शसनख, नखरी, करजाख्य, अपचखुर, नख, व्याघ्रनख, कररुद्ध, शिम्बी, शफ, चलकोशी, करज, हनु, नागहनु, पाणिज, घटरीवच, रूप्य, पण्यविलासिनी, सन्धिनाल, पाणिरुह] यह नाम साधारण नखके हैं ।

हिन्दीभाषामें

दोना नख, नख, नखी ।

बगभाषामें

नखी, गन्धद्रव्य, छोटनखी ।

| | |
|-----------------|------------------------|
| मराठीभाषामें | नखग, वाघनख । |
| गुजरातीभाषामें | नखला मावजना नग । |
| कर्णाटकीभाषामें | नख, वाघनख । |
| उत् | नख, वाघनग । |
| इंग्रेजीभाषामें | शेल । Shell |
| लैटिनभाषामें | हेलिकासम्पेग । |
| फारसीभाषामें | ताखुनपर्या, ग्राहकमग । |
| अरबीभाषामें | अनफारतिव, इकलित्लुहक । |
| | मनपखधेदाः । |

नखीपञ्चविधाज्ञेयागन्धार्थागन्धवत्परैः ।

क्वचिद्धरपत्राभा तथोत्पलदलामता ॥

क्वचिदश्वत्थुराकारागजकर्णसमापरा ।

वराहकर्णसकाशापञ्चमेपर्णिकीर्तिता ॥ (च० चि०)

अर्थ—गन्ध अर्धशाली और गन्धयुक्त, नखी पांच प्रकारकी होती है कोई धेरीके पत्तोंकी समान याई कमलके पत्तोंकी समान, कोई पांढर खुरकी आकारवाली, कोई शर्शपके कानकी समान और पाचवीं सुभग कानकी समान होती है ।

अस्पाशुस्त्रिधा ।

पञ्चपल्लवतोयेनगन्धानांक्षालनतथा ।

शोधनचापिसंस्कारोविशेषश्चात्रवक्ष्यते ॥

चण्डीगोमयतोयेनयदिवातिन्तिडीजले ।

नखसंस्कारगन्धेभिन्नाभेमृण्मयेनतु ॥

पुनरुद्धृत्यप्रक्षाल्यभर्जयित्वानिपेक्षयेत् ।

गुहपथ्याम्बुनाद्येवंशुध्यतेनावमशयः ॥ (च०)

अर्थ—पञ्चपल्लव (आमके पत्र जामुनके पत्ते, बेमारके पत्ते पिपरी के और घेरे के पत्र) के जलमें तथा गन्धोंके पुष्पमें इमली कांपन और मैमरा रसिनेप यही कानके भस्मके गोमयके जलमें अथवा इमली के पानीमें या जौपर्वीका जलमें करे और यदि उपरोक्त द्रव्य न मिले तो घेरेकी जलमें, सिंग सिंगलपर और पांखर गन्ध और हरदके जलमें भी इमलीका गुह होजायगा, इसमें गन्ध नष्ट है ।

द्विविधनखगुणा ।

नखद्रयग्रहश्लेष्मवातास्रज्वरकुष्ठहृत् ।

लघूष्णशुक्रलंवर्ण्यस्वादुव्रणविपापहम् ॥

अलक्ष्मीमुखदौर्गन्ध्यहृत्पाकरसयोःकटु । (भा०प्र०)

अर्थ—दोनों प्रकारके नख—ग्रहकी पीडाको दूर करे है तथा कफ, वात-रक्त, ज्वर, कोढ़, व्रण, विप, अलक्ष्मी और मुखकी दुर्गन्धताको नाश करेह, हलके, गरम, शुक्रजनक, वर्णको उज्ज्वल करनेवाले, स्वादिष्ठ तथा पाकमें और रसमें चरपरी है ।

नखगुणा ।

नख.स्वादूष्णकटुकोविपहन्तिप्रयोजितः ।

कुष्ठकण्डूव्रणघ्नश्चभूतविद्रावण.पर. ॥

अर्थ—नख—स्वादिष्ठ, गरम, चरपरा तथा कोढ़, कण्डू और व्रणको दूर करे है, तथा भूतविद्रावक है ।

व्याघ्रनखगुणा ।

व्याघ्रनखस्तुतिक्तोष्ण.कपाय.कफवातजित् ।

कुष्ठकण्डूव्रणघ्नश्चवर्ण्य सौगन्ध्यदःपर. ॥ (रा०नि०)

अर्थ—व्याघ्रनख—कटुवा, गरम, कपेला, कफ, वातनाशक तथा कोढ़, खुजली और घावको दूर करेह, शरीरको रंगको उज्ज्वल करेह और सुगन्धिदायक है ।

अपिच—द्विविधनखगुणा ।

नखसुगन्धिचोष्णंचकटुमेध्यश्चशुक्रलम् ।

लघुवर्ण्यस्वादुहृद्यकफवातविपप्रणुत् ॥

दौर्गन्ध्यस्वेदकुष्ठादिज्वरालक्ष्मीव्रणापहम् ।

मुखदौर्गन्ध्यकण्डूघ्नभूतग्रहनिवारणम् ॥

व्याघ्रस्यचनखस्तिक्तोवर्ण्यश्चोष्ण कपायक ।

सुगन्धि कुष्ठकण्डूतिकफवातग्रहाञ्जयेत् ॥

गुणास्त्वन्येतुनखवन्मुनिभि परिकीर्तिता । (नि०र०)

अर्थ-नख-गरम, मुगन्धि, चरपग, मेघाकान्क, शुक्रननर, हलरा, वर्णकारक, स्वादिष्ठ, हृदयको हितकारी तथा कफ वादी, विष, दुग्न्ध, परीना, कोट ज्वर, अलक्ष्मी, घाव मुखकी दुर्गन्धि, खुजली, भूतपाधा, ग्रहको पीडा वातरक्त और पित्तका नाश करेंगे । व्याघ्रनख-कडवा, वर्णको मुदर करनेवाला, उष्ण, कपेला, मुगन्धि तथा रोद खुजली रक्त, वात और ग्रहको पीडाको दूर करेंगे । शेष गुण नरक समान जानने ।

विवरण-नखद्रव्य नदीके जीवोंका नर होताई, यह मुगन्धि पदार्थ ई घूषम और मुगन्धि तैलादिकके बनानेमें पड़ताई । घोंठे हाथियोंके नर अनेक औषधियोंके प्रयोगमें लिये जातेई ऐसा चरकाचापने लिखाई ।

चाखनामानि ।

बालकवारिदवालहीवेरकेशनामकम् ।

कचामोदवरपिङ्गकुन्तलोवारिनामकम् ॥

अर्थ-बालक, वारिद, बाल हीवेर केशनामक, कचामोद, परपिङ्ग, कुन्तल, वारिनामक, (वारिद, उदीन्य, केशनामा अम्बुनामक, हीवेर, वारिद, केश, केडय, वज्र, ललनामिय, कुन्तलोदीर, हीवेरक, वारि, तोप, जल) और जितने नाम पानीके तथा केशोंकेई तो सब इसके भी जाते ।

हिन्दीभाषाम

मुगन्धवाला ।

बंगभाषामें

बाल्य, गन्धवाला ।

मराठीभाषाम

बाला ।

गुजरातीभाषामें

बाली ।

फर्ग्योकीभाषाम

बालद्वेक, सप्तमुष्टियाल ।

तैलिङ्गीभाषाम

वारिदेई ।

अक्षिणीभाषामें

केशवान् ।

यम्

बाल ।

लैटिनभाषामें

एन्डोगमोगल । Andro Pogon

म्यूरिनेम् (Muricata)

फार्सीभाषामें

बालाई ।

बाल्यगुण ।

बालकशीतलरुक्षलपुदीपनपाचनम् ।

श्लासारुचित्रीसर्पहृदोगामातिसारजिव ॥ (भा० ५०)

अर्थ—सुगन्धवाला—शीतल, रूखा, हलका, दीपन और पाचक है तथा हृत्पास (उवकाई), अरुचि, वीसर्प, हृदयरोग और आमामितिसारको दूर करे है ।

अपिच ।

वालक.शीतलस्तिक्त.केश्यःपाचनकृन्मधुः ।

दीपनोलघुरूक्षश्चकफपित्तवमीहरः ॥

तृपाकुप्रातिसारघ्नोज्वरश्वासारुचीहरः ।

व्रणवीसर्पहृद्रोगलालास्रावहरोमतः ॥

रक्तदोषंरक्तपित्तकण्डूदाहचनाशयेत् ॥ (नि०रत्ना०)

अर्थ—सुगन्धवाला—शीतल, कडवा, केशोंको सुन्दर करनेवाला, पाचक, मधुर, दीपन, हलका, रूखा तथा कफ, पित्त, वान्ति, तृपा, कोढ़, अतिमार, ज्वर, स्वास, अरुचि, व्रण, विसर्प, हृदयरोग, लालास्राव, रक्तविकार, रक्तपित्त, कण्डू और दाहका नाश करे है । मात्रा एक मासेकी ।

मुस्तकनामानि ।

मेघाख्यमुस्तकमुस्तवालेयपरिपेलवम् ।

अर्थ—मेघाख्य, मुस्तक, मुस्त, वालेय, परिपेलव, (कुरुविन्द, मेघनामा, मुस्त, अम्बुवाह, अम्बुभृत, तडित्वान्, वारिवाह, बलाहक, स्तनयित्नु, तोयद, तोयधर, अश्रुनामक, गाङ्गेय, भद्रमुस्तक, श्रीभद्रा, भद्रक, भद्रा, राजकमेरू, कसेरुक, कुरुविन्द)

नागरमुस्तकनामानि ।



नागरमोया

नागरमुस्तानादेयीवृषध्माक्षीकच्छरुहा ।

चूडालापिण्डमुस्ताचनागरोत्थाकलापिनी ॥

अर्थ-नागरमुस्ता, नादेयी, वृषध्माक्षी, कच्छरुहा, चूडाला, पिण्डमुस्ता
नागरोत्था, कलापिनी, (नागगटि घनमन्त्रवा, चत्राभा, निमिग गारुवे-
नरा, उन्नता, पूर्णकोपमज्ञा)

भद्रमुस्तगनामानि ।

गांगेयकुरुविल्वचभद्रमुस्तकुटग्रटम् ।

अर्थ-गांगेय कुरुविल्व, भद्रमुस्त कुटग्रट. (भद्रमुस्ता, भद्रमुस्तव
गुन्द्रा, कभोत्था वराही, ग्रन्थि, भद्रकाशी, वनेरु मोडेष्टा, कुरुविन्दारया,
मुगन्धिग्रन्थिला, हिमा, चल्पा, कच्छोला, अणोद, पारिद, भद्र.)

दिन्दीभापामे

मोथा, नागम्भोथा भद्रमोथा ।

वंगभापामे

मुताथा, नागम्भुता, मादलामुथा ।

मराठीभापाम

मोथे, नागरमाथे, भद्रमोथे ।

गुजगतीभापामे

मोथ्य, नागमोथ्य, भद्रमोथ्य ।

कर्णाटकीभापाम

मुम्ना नागरम्भुता, भद्रमुम्ना ।

तैलिंगीभापाम

तुगमुस्त (म्ता) गरुडतुग विक, तुगगुन्धिम ।

तामिळीभापाम

कोरय, मुददफा ।

द्राविडीभापाम

गम्भोदा ।

लटिनभापामे

साह्यगर्गे मेन्द्रस गाडपरस्परेन्दुगिम् ।

Cyprino oboia in Cyprusjertenuit-4

फारसीभापाम

शादकफी ।

अरबीभापाम

मुक्कजर्गिन ।

वेष्टमुस्तगदशम् ।

अनूपदेशेयजातमुस्तकतत्प्रशम्यते ।

तत्रापिमुनिभिः प्रोक्तवरनागरमुस्तकम् ॥ (भा० प०)

अर्थ-अनूपदेश (समन्वयान) में उत्पन्न होनेवाला मोथा मोठ होना
तोभी मुनियोंने नागम्भोथकाही उक्तम बदे है ।

गम्भुडिपेता ।

मुस्तकतुमनावधुण्णकाञ्जिकेनिदिनापितम् ।

पञ्चपलननोयेनस्त्रिप्रमानपञ्चोपितम् ॥

गुडाम्बुनासिच्यमानभर्जयेच्चूर्णयेत्ततः ।

आजशोभाञ्जनजलैर्भावयेच्चेतिशुद्ध्यति ॥

अर्थ—मोथेको लेकर तीन दिन काजीमें डाले, फिर पचपल्लवके जलमें भिजोकर धूपमें सुखावे, फिर गुडके जलसे सींचकर भूनकर उसका चूर्ण करे, बकरीका दूध और सेंजिनेके जलकी भावना देनेसे शुद्ध होताहै ॥

भद्रमुस्तकगुणा ।

मुस्तंकटुहिमग्राहितिकंदीपनपाचनम् ।

कपायकफपित्तास्रतृड्ज्वरारुचिजन्तुनुत् ॥ (भा०प्र०)

अर्थ—भद्रमोथा—चरपरा, शीतल, ग्राही, कडवा, दीपन, पाचक, कपेला तथा कफ, रक्तपित्त, तृषा ज्वर, अरुचि और कृमिगोगका नाश करे है ।

मुस्तकगुणा ।

क्षुद्रमुस्तातुकटुकामेध्याकान्तिप्रदाहिमा ।

सुगन्धिकातुतुवराकट्वीरक्तरुजापहा ॥

कफपित्तज्वरकृमिवाय्वतीसारनाशिनी ।

रक्तरुग्रणदाहघ्नीकण्डूमशूलघर्महा ॥ (निघण्टुरत्नाकर)

अर्थ—मोथा—चरपरा, मेध्य, कान्तिदायक, शीतल, सुगन्धि, कपेला तथा रुधिरविकार, कफ, पित्तज्वर, कृमि, वात, अतिसार, रक्तरोग, ग्रण, दाह, कण्डू, आम, शूल और पर्मीनको दूर करे है ।

नागरमुस्तकगुणा ।

तिक्तानागरमुस्ताकटुकपायाचशीतलाकफनुत् ॥

पित्तज्वरातिसारारुचितृष्णादाहनाशिनीश्रमहत् ॥

(राजनिघण्टु)

अर्थ—नागरमोथा—चरपरा, कपेला, शीतल, कफनाशक तथा पित्त, ज्वर, अतिमार, अरुचि, तृषा दाह और श्रमका नाश करेहै ।

अपिच भद्रमुस्तागुणा ।

भद्रमुस्तातुतुवराशीतातिक्ताचपाचका ।

कटुभिदीपनीग्राहीचाम्लपित्तकफापहा ॥

अतिसाररक्तदोषज्वरचैवविनाशयेत ।

अरुचिचतृपांचैवकृमीनपिविनाशयेत् ॥ (नि० २०)

अर्थ-भद्रमोथा-बपेला, शीतल, कटुवा, पानच, चरपरा, अमिदीपव, द्राही, अम्ल तथा पित्त, कफ अतिसार, रुधिरदोष, ज्वर, अरुचि, पित्तमात्र और कृमिगोत्रका नाश करे है ।

मोथेकी अनेक जाति है, कोई पानार्म होता है, कोई मोदीदण्डीराला और कोई छोटी डण्डीराला होता है । किन्तु सर्वप्रकारके मोथोंमें नागरमोथा उत्तम होता है ।

व्यवहार-नष्ट ।

माथा मादनीन ३॥ मासेकी ।

वैद्यतसुराकनामानि ।

कैवर्त्तीमुस्तकंवन्धुबुटनटंकुटन्नटम् ।

मितपुष्पदासपूग्वालेयपरिपेलवम् ॥

अर्थ-कैवर्त्तीमुस्तक, वन्धु, बुट, नट, बुटनट, शितपुष्प, दासपूर, बालेय, परिपेल, (कर्जनमुस्त, दशपूर, पुत्र, गोपूर, गोत्र, वैरही, दशपूर, दशपूर परिपेल, पाणिपूर कैवर्त्तीमुस्तक कैवर्त्तमुस्तक वनगम्भय, धान्य, शीतपुष्प, जीणपुष्पक)

अस्यगुणाः ।

वितुन्नकहिमतित्तकपायकट्टकातिदम् ।

कफपित्तान्वहीमर्षकुष्ठकण्डूविषप्रणुत् ॥ (भावनकार)

अर्थ-नेरदीमोथा-शीतल, कटुवा, बपेला, चरपरा, फान्तिगण तथा कफ रक्त पित्त रोगमें, फोड़ रुजनी और निषिक्तारको दूर करे है ।

अविण ।

परिपेलंकट्टपणचकफमारुतनाशनम् ।

व्रणदाहामशूलभक्तदोषहरपरम् ॥ (राजनिपण्)

अर्थ-कैवर्त्तीमोथा-चरपरा गरम चरपरातनाशक तथा व्रण, दाह, आम, शूल और रक्तविषाको दूर करे है ।

विरण-इमरी गुणजाति है इमरी जड़में गुणवि भाती है मंगुलप इमरी वैवर्त्तीमुस्तक कहते है, हिन्दीमें नेरदीमोथा पणतमें कैवर्त्तमुता, नेगुर्दीआमुथा, भगदीम, नेरदीमोथा, गुणनीमं कैवर्त्तमोथा कहते है ।

व्यवहार-नष्ट । माथा पत्र मासेकी ।

शैलेयनामानि ।

शैलाख्यशैलेयवृद्धसुभगंगिरिपुष्पकम् ।

अर्थ—शैलाख्य, शैलेय, वृद्ध, सुभग, गिरिपुष्पक (शीतशिव, शिलासन, शैलज, शीतल, शैल, कालानुसार्य, शिलेय, शैलक, कालानुसारिवा, अञ्जमपुष्प, गृह, शिलाभव, शिलापुष्प, शिलोद्भव, स्थविर, पलित, जीर्ण, कालानुमार्यक, शिलोत्प, शिलद्वे, शिलाप्रसन, शिलापुष्प)

हिन्दीभाषामें मृगच्छीला, पत्थरका फूल ।

बङ्गभाषामें शैलज ।

मराठीभाषामें दगडफूल ।

गुजरातीभाषामें पत्थरफूल ।

कर्णाटकीभाषामें कलहू, कलट्ट ।

तैलिङ्गीभाषामें शैलेयमने द्रव्यमु ।

लैटिनभाषामें पार्मेलिया परलेटा । परमेलिया बरकोरेटा

Parmelian perleeta P Porforata

फारसीभाषामें दहाल ।

अरबीभाषामें आशीना ।

अन्यगुणा ।

शैलेयशीतलहृदयकफपित्तहरलघु ।

कण्डूकुष्ठाश्मरीदाहविषहृद्दरक्तहृत् ॥ (भावप्रकाश)

अर्थ—छरीला—शीतल, हृदयको हितकारी, कफपित्तनाशक, हल्का तथा कण्डू (खुजली), कुष्ठ, पथरी, दाह, विष और गुदासे रक्त गिरनेका दूर करे है ।

अपिच ।

शैलेयशिशिरतित्तसुगन्धिकफपित्तजित् ।

दाहतृष्णावमिश्वासव्रणदोषविनाशनम् । (ग० नि०)

अर्थ—छरीला—शीतल, कडवा, सुगन्धि तथा कफ, पित्त, तृषा, वमन श्वास और व्रणदोषनाशक है ।

अन्य ।

शैलेयकटुकशीतसुगन्धिलघुहृदयकम् ।

रुच्यचकफपित्तघ्नदाहतृष्णावमिप्रणुत् ॥

श्वासव्रणंचकण्डूचकुष्ठाश्मरीविषज्वरान् ।

रक्तदोषं वातरोगरक्तार्शचैव नाशयेत् ॥ (निचण्डुरत्नाकर)

अर्थ-भूखिछीली-चरपरा, शीतल, मुगन्धि, हल्का, हृदयको हितकारी, रुचिकारी तथा कफ, पित्त, दाह, कृपा, यमन, आस, धाव, खुजली, कोर, पयरी, विष, ज्वर, रुधिरविकार, वातरोग और रक्त, यवासीरका नाश करे है। मात्रा छे ६ मासे की ।

रेणुकाकपिलाकान्तीहरणुर्भस्मगन्धिका ।

कृतान्ताराजपुत्रीचनन्दिनीखरनादिनी ॥

अर्थ-रेणुका, कपिला, कान्ती, हरेणु भस्मगन्धिका, कृतान्ता, राजपुत्री, नन्दिनी, खरनादिनी, (दिजा अर्भाष्टा, वग्गरी, वग्मुली, बरा, बान्ता, मदिला, हिमा, रेणु, हरेणुका, मुषाणिजा, पाण्डुपुत्री, शिशिरा, शाता, वृत्ता, हेमगन्धिनी, धर्मिणी, कपिलोमा, इमवती, पाण्डुपत्नी)

हिन्दीभाषामें गंभालूके बीज रेणुका ।

वगभाषामें रेणुक ।

मराठीभाषामें रेणुकबीज ।

गुजरातीभाषामें हरेणु ।

कर्णाटकीभाषामें रेणुका ।

तामिलीभाषामें वेष्टी ।

लैटिनभाषामें विरेक्सस्पेसोसा । *Virer Speciosa*

अस्य गुणा ।

रेणुकाकटुकापाकेतिक्तानुष्णाकटुर्लघु ।

पित्तलादीपनीमेध्यापाचनीगर्भपातिनी ॥

बलासवातवैकृत्यतृदकण्डूविषदाहनुत् । (भा० प्र०)

अर्थ-रेणुका पचनेमें चरपरी, कटवी, मिश्रित उष्ण, धारणी, दमवी, पिघवर्धक, अग्निमयीषक, मेधाजनक, पाचक, गर्भको गिरानकारी तथा कफ रात, विरजता तथा कण्डू विष और दाहका नाश करे है ।

अपिच ।

रेणुकातुक्कटुः शीतास्वर्जकण्डूतिहारिणी ।

तृष्णादाहविषघ्नीचमुखयमल्यकारिणी ॥ (सा० नि०)

अर्थ—रेणुका—चरपरी, शीतल तथा खर्बू, कण्डू, तृषा, दाह और विष-
नाशक है और मुखको विमल करेह ।

अन्यञ्च ।

रेणुकाकटुकाशीतामुखवैमल्यकारका ।

तिक्ताचपित्तलालघ्वीचाग्निमेधाकरीमता ॥

पाचनीगर्भपातस्यकारिणीदद्रुकण्डुहा ।

तृष्णादाहविषकुैव्यकफवातविनाशिनी ॥ (नि० र०)

अर्थ—रेणुका—चरपरी, शीतल, मुखको स्वच्छ करनेवाली, कडवी, हलकी,
पित्तजनक तथा अग्नि और मेधा इनको उत्पन्न करनेवाली, पाचक, गर्भको
पतन करनेवाली तथा दाह, खुजली, तृषा, दाह, विष, नपुसकता, कफ
और वातका विनाश करनेवाली है ।

अन्यञ्च ।

रेणुकाकफवातघ्नीदीपनीपित्तलालघुः । (रा० व०)

अर्थ—रेणुका—कफ वातनाशक, अग्निप्रदीपक, पित्तकारक और हलकी है ।
रेणुकाको कोई वैद्य निर्गुण्डी अर्थात् सभाजुके बीज कहते हैं, और कोई
मैंहदीके बीज कहते हैं । सो मैंहदीके बीजोंसे रेणुकामें बहुत अंतर है ।

ग्रन्थिपर्णनामानि ।

ग्रन्थिपर्णवर्हिपुष्पस्थौणेयग्रन्थिपर्णकम् ।

अर्थ—ग्रन्थिपर्ण, वर्हिपुष्प, स्थौणेय, ग्रन्थिपर्णक (शुक, कुङ्कु, वर्हिपुष्प,
वर्ह, शुकवर्ह, विगीर्णाख्य, म्वागमशुच्छक, वर्हि, शुकपुच्छ, शुकच्छद,
शुत्यक, वर्हिकुमुम, ग्रन्थिक, काकपुष्प, शुच्छक, नीलपुष्प, मुगन्ध, तैलपर्णक)

ग्रन्थिपर्णरक्षणम् ।

ग्रथिक पाण्डुर किञ्चित्कनिष्ठः सर्वसम्मत ।

उत्तमः कृष्णवर्णोऽयं स्थूलोऽतीवचनिन्दितः ॥ (ढ० मि०)

अर्थ—कुष्ठ पाण्डुरगका गठिवन कनिष्ठ होताहै, फाटे रंगका उत्तम होताहै
और स्थूल अत्यन्त निन्दित है ।

ग्रथिपर्णगुणाः ।

ग्रथिपर्णतिक्ततीक्ष्णकटूष्णदीपनलघु ।

कफवातविषवासकण्डूदोर्गन्ध्यनाशनम् ॥ (भा० प्र०)

अर्थ-गडिवन-कडवा, तीक्ष्ण, चर्मण, गरम, अग्निको दीपन करनेवाला, हल्का तथा कफ, वात, विष, श्वास, कण्ठ और दुर्गन्धका नाश करने दे। यह सुगन्धिपदार्थ है, यह शरीरपर छेप करनेसे रूक्षता उत्पन्न करे दे, तथा अल्हर्मा, ज्वर और गलितवाधाको हरे दे इसको हिन्दीभाषामें गडिवन कहते हैं, बगभाषामें गेटेला, मराठीभाषामें गढोना और कर्णाटीभाषामें गाडिवन कहते हैं।

स्थौणेपरनामानि ।

स्थौणेयविकीर्णसज्जंठरितंशुकपुच्छकम् ।

अर्थ-स्थौणेय, विकीर्णमग्न, इग्नि, शुकपुच्छक, (स्थौणेयक, मर्दिशित, शुकच्छद, मयूरच्छद, रिकीर्णरोम, कीमवर्णक, र्घद्विचूट, शुरपिच्छ, शुष्कपर्ण, विकच, शीर्णरोमक, यर्दिपर्द, कुकुर, शीर्णरोम)

स्थौणेयपशुना ।

स्थौणेयकफपित्तप्रसुगधिकटुतिक्तकम् ।

पित्तप्रकोपशमनबलपुष्टिविवर्द्धनम् ॥ (ग० नि०)

अर्थ-शुनै-कफ, पित्तनाशक, सुगन्धि, चर्मण कडवा, पित्तक को रोगो शान्त करनेवाला तथा बल और पुष्टिवर्द्धक है ।

अपिच ।

स्थौणेयककटुस्त्रादुतिक्तसिग्धत्रिदोषनुव ।

मेधाशुक्रकररुन्धरक्षोघनज्वरजन्तुजित ॥

इतिरुष्टान्वदृष्टाददीर्गान्ध्यतिलकालकान् । (भा० प०)

अर्थ-शुनै-चर्मण, स्वादिष्ट कडवा सिग्ध त्रिदोषनाशक, ममानाश शुक्रकारक, स्निग्धा तथा गलितवाधा, ज्वर, कृमि, वात, शीघ्रतरिका पियाम आद, दुर्गन्ध और शरीरक निजोरो हृत् करनेवाला है ।

इसके अधिक गुण देनेकी अभिराषा हो तो भार्गवपरमभारगम गेता । यह सुगन्धि द्रव्य है, इसको हिन्दीभाषामें गुण कहते हैं बगभाषामें मन्दिपजंभट कहते हैं, मराठीभाषामें गुणार फर्नागी भाषामें मन्दिपजंभट कहते हैं, कर्णाटीभाषामें देगेन्ध्य कहते हैं ।

आर्यभट्टनामानि ।

तस्करशोरकशण्डातिनव कोधमुत्थितः ।

अर्थ-तस्कर, चोरक, चण्डा, कितव, क्रोधमूर्च्छित (दुष्कुलीन, विरोध, कोरक, धनहरी, क्षेम, राक्षसी, गणहासक, शङ्कित, खडग, दुष्पत्र, क्षेमक, रिपु, चपल, धूर्त, पटु, नीच, निशाचर, गणहास, कोपनक, चोर, फलचोरक, दुष्कुल, ग्रथिल, सुगन्धि, पर्णचोरक, ग्रन्थिपर्ण, ग्रन्थिदल, ग्रन्थिपत्र, धनहर)
अभ्य गुणा ।

चोरकस्तीव्रगन्धोष्णस्तिक्तोवातकफावह ।

नासामुखरुजाजीर्णकृमिदोषविनाशन ॥

अर्थ-चोरक सुगन्धद्रव्य, तीव्रगन्ध, कड़वा तथा वात, कफ, नासारोग, मुखरोग, अजीर्ण और कृमिदोषनाशक है ।

अपिच ।

चोरकोमधुरस्तिक्त कटुःपाकेकटुर्लघुः ।

तीक्ष्णोहृद्योहिमोहतिकुष्ठकण्डूकफानिलान् ॥

रक्षोश्रीस्वेदमेदोऽस्रज्वरगन्धविषवणान् । (भा० प्र०)

अर्थ-चोरक, मधुर, तिक्तगमयुक्त, पचनेमें चरपरा, चरपरा, हलका, तीक्ष्ण, हृदयको हितकारी, शीतल तथा कोढ़, खुजली, कफ, वात, राक्षम, अलक्ष्मी, पसीना, रुधिरविकार, भेदगेग ज्वर, गन्ध विष और घ्रणका नाश करेहै ।

अप्यञ्च ।

चोरकस्तीव्रगन्धोष्णोमधुस्तिक्तोल्घुःस्मृतः ।

पाकेकटुश्चतीक्ष्णश्चहृद्योवातविकारहा ॥

कण्डूकुष्ठकफस्वेदत्वग्दोषविषनाशन ।

व्रणमेदरक्तदोषमुखनासारुजजयेत् ॥

कृमीनजीर्णदौर्गन्ध्यमलक्ष्मीनाशनविदुः ।

कन्यादवाधांशमयेदितिर्वेद्येर्निरूपितः ॥ (नि० र०)

अर्थ-चोरक-तीव्रगन्ध, उष्ण, मधुर तिक्त, लघु पाकेके गमय चरपरा, तीक्ष्ण, हृदयको हितकारी तथा वात, कण्ट कोढ़, कफ, भेद, त्वचाके विकार, विष, घाव, रुधिरविकार, मुखरोग, नामारोग, कृमि अजीर्ण, दुर्गन्ध अलक्ष्मी और राक्षमनाशको दूर करे है ।

यद् मुगन्धिं द्रव्यं गन्धवर्णिका भट्टे । इत्थं नैपालं द्रव्यं भट्टेऽपि
पावनी देशादिकोमं चोक्तं कर्तव्यं । मात्रा २ भागैर्ह ।

पट्टनामानि ।

कुष्ठव्याधि पारिभाष्यव्याप्यपाकलघुत्पलम् ।

अर्थ-कुष्ठ, व्याधि, पारिभाष्य व्याप्य पाकल, उत्पल (गन्धालय, कुष्ठ,
व्याप्य, गन्धालय, आप्य, जरण, कौवेर, भागुर, गन्धद, गन्धदय कुष्ठिक,
काश्च, नीरुज, आमय, रुजा, गद, वाणोरान, पाणिभद्रा, गम, कुत्तित,
पावन पन्नक गेग, गेगादय, किञ्चल, हर्गिभद्रक)

| | |
|-------------------|--|
| तिन्त्री भाषाम | कुष्ठ |
| वग भाषाम | कुष्ठ |
| मगरी भाषाम | काष्ठ |
| गुनगती भाषाम | कुष्ठ, उत्पल । |
| गन्धवर्णिका भाषाम | को । |
| नैपाली भाषाम | चगल कुष्ठ । चैगलिकोष्ठ । |
| हर्गिभद्रा भाषाम | कोष्ठगन्ध <i>Co. lue. lue.</i> |
| गन्धवर्णिका भाषाम | गौमुनीआल्ल्या <i>Sina. rec. lappia</i> |
| | ओपल्लेदियाकोल्ल्या |
| फार्सी भाषाम | वाग्रद । |
| आर्य भाषाम | कुष्ठपेदेरी |

भट्टनामानि ।

कुष्ठकट्टण्णतिलस्यार्कफमारुतकुष्ठजित ।

विमर्षविषकण्डूतिलस्रग्दंष्ट्रप्रकान्तिकृत ॥ (ग० नि०)

अर्थ-कुष्ठ-गन्ध, गन्ध कट्टा तथा रत्न, वात कोष्ठ विमर्ष विष,
गुन्धनी, रत्न और शर्करा द्वा कर्तव्य और फार्सि कर्तव्य ।

अर्थपत्र ।

कुष्ठश्वासकामकुष्ठजगद्विज्ञानाभयेत् ।

अर्थ-कुष्ठ-गन्ध, गन्ध गन्धालय, गन्धालय कट्टा इत्यादि गन्ध
वातान्न विमर्ष, रत्नी, कोष्ठ और शर्करा कट्टा गन्ध कर्तव्य ।

अर्थपत्र ।

कोष्ठमुष्णकट्टितिलस्यार्कफमारुतकुष्ठजितम् ।

रसायन कान्तिकर लघुवातकफापहम् ॥

कुष्ठविषविसर्पञ्च कण्डू दद्रु त्रिदोषकम् ।

पामारक्तविकार च कास वान्तिनृपांतथा ॥

नाशयेदितिचप्रोक्तलेपनाद्वातव्याधिजित् । (नि०र०)

अर्थ—कूठ—उष्ण, कटु, तिक्त, स्वादु, वृष्य, शुरुजनक, रसायन, कान्ति-
जनक, लघु, वातकफनाशक तथा कुष्ठ, विमर्ष, कण्डू, दद्रु, त्रिदोष, पामा,
रुधिरदोष, खौंसी आँ वान्तिको दूर करेह, इसका लेप करनेसे वातव्याधि
दूर होतीह, यह वृक्षकी सुगन्धियुक्त जड़ है, इसकी उत्पत्ति सिन्धु नदीके
तीरपर है मात्रा ६ रत्तीकी ।

कचूरनामानि ।

कर्चूरोवेधमुख्यश्चद्राविड कल्पक शठी ।

अर्थ—कचूर वेध, मुख्य, द्राविड, कल्पक, शठी, (काश्यप, दुर्लभ,
गन्धमूलक, गन्धसार, जटाल)

हिन्दी भाषाम

कचूर, काली हलदी ।

बग भाषाम

एकाङ्गी ।

मराठी भाषाम

कचोरा । नगकचोरा । काचरी ।

गुजराती भाषाम

कचुरी ।

कर्णाटकी भाषाम

कचोरा ।

तैलिङ्गी भाषाम

काचोगाडु । ओकातो कचेहा ।

इंग्रेजी भाषाम

लाग झेडीआरो Long/edearo

लटिन् भाषाम

कचूर्यमाझवेद Curcumazo umbat

फारसी भाषाम

जग्वाट ।

अग्नी भाषाम

अश्वकुलकाफुर ।

उचूरगणा ।

कचूरगे दीपनो रुच्य कटुकस्तित्त एव च

सुगन्धि कटुपाक स्यात्कुष्ठाशौत्रणकामनुत् ॥

उष्णोलघुहरेच्छास गुल्मवातकफकिमीन् । (भा०प्र०)

अर्थ—कचूर—अग्निको दीपन रुग्नेवाग नचिको उत्पन्न करनेवाला,
घरपरा फडवा, सुगन्धि, कटुपाकी तथा काट, बवासीर, घाव और

सासीको दूर कोई । गरम, हल्का और भ्रम, गुल्म, वात, फर तथा
मृमिरोगका नाश कोई ।

अपिच ।

कर्तूरःकटुतिक्तोष्णःकफकासविनाशन ।

मुखवैशद्यजननोगलगण्डादिदोषनुत ॥ (गजनिघण्ट)

अर्थ-कटूर-चर्मर, कड़वा, गरम मुखको स्वच्छ करनेवाला तथा रक्त
सासी और गलगण्डादि रोगोंका नाश कोई ।

अन्यथा ।

शठीतिक्तात्रकटुकाचोष्णातीक्ष्णाग्निदीपनी ।

सुगन्धिरुचिरालघ्वी मुखस्वच्छकरी मता ॥

कोपनी रक्तपित्तस्य गलगण्डादिगोमहा ।

कुष्ठार्शोव्रणकासघ्नी श्वासगुल्मकफापहा ॥

त्रिदोषकिमिवातानाज्वरप्लीहादिनाशकृत । (नि० ७१०)

अर्थ-कटूर-कड़वा, रसम गरम तीक्ष्ण अग्निम प्रदीपक, सुगन्धि,
रुचिकारक, हल्का, मुखको स्वच्छ करनेवाला रक्तपित्तका दूषित करनेवाला
तथा गलगण्ड मंडलादिकोट घवागौर घाव, सासी श्वास, गाला, कफ,
त्रिदोष, कृमि, वात, ज्वर और प्लीहा इत्यादि रोगोंका नाश करनेवाला है ।

अपिच ।

“कर्तूरामरुदाममोदीपनोरक्तपित्तकृत ।

अजीर्णजरणश्वासेप्यपस्मारपिपुजित ॥”

अर्थ-कटूर-वात तथा आमनाशक है दीपन है, रक्त, पित्त, गलगण्ड
उत्पन्न करनेवाला है अजीर्ण रोगका दूर करनेवाला है तथा अजीर्णोगम और
श्वास गलगण्डादि रोगों का नाश करनेवाला है ।

द्विदोष-कटुका क्षुध दाताई, पित्त हर्त्रा रोगनाशक इत्येव कटु
आदिषा हर्त्रा रोगनाशक गौरी है । उम गात्रको सुखायुक्त करता है और रोगों
गौरी कटु है माया रोगनाशक ।

अन्यथा ।

शठीपलाशीपडग्रन्थासुत्रनागन्धमुल्लिखन

गन्धारिकागन्धवर्धनपृथुगलानिना ॥ (भा० पृ०)

अर्थ-शठी, पलाशी पडग्रथा, मुग्रता, गन्धमूलिका, गन्धारका, गन्धवधू, वधू, पृथुपलाशिका, (गन्धमूली, ग्रथिका, कर्पूर, पलाशसटी, शठी, पटी, गन्धशटी, कर्चुर, कर्चुर, सुगन्वासटी, गन्धमूला, गन्धोलि, गन्धमूलक, गुगन्धा, गन्धसटी, गन्धमूल, गन्धपलाशी, जीमूतमूल, कच्छोरा, हिमजा, हेमी, पडग्रन्थि, गन्धोलि, पलाशा, हिमाग्रन्था, अम्लनिशा, सुगन्धमूला, गन्धोरी, शठिका, पलाशिका, समुद्रा, तूणी, दूर्वा, गन्धा, पृथुपलाशिका, मठी, अम्लहरिद्रा, सौम्या, हिमोद्धवा, गन्धवधू)

| | |
|-----------------|--|
| हिन्दीभाषामें | गन्धपलाशी, कर्चुरभेद, कपूरकचरी । |
| बङ्गभाषामें | शटी, आम, आदा, गन्धशठी । |
| मराठीभाषामें | कापूरकचरी । |
| गुजरातीभाषामें | कपूरकाचरी । |
| कर्णाटकीभाषामें | गन्धशटी । |
| तेलङ्गभाषामें | किचलिरागट्टल । |
| लॅटिनभाषामें | हिडियम स्पेक्टम् । <i>Hedychum Spec-</i> |
| अरबीभाषामें | जरवाद । <i>tum</i> |
| वम | आवेहलद । |

अस्प गुणा ।

भवेद्गन्धपलाशी तु कपायाग्राहिणीलघुः ।

तिक्तातीक्ष्णाचकटुकानुष्णास्यमलनाशिनी ॥

शोथकासत्रणश्वासशूलहिध्मग्रहापहा । (भा० प्र०)

अर्थ-गन्धपलाशी-कपेली, ग्राही, हलकी, कडवी, तीक्ष्ण, चरपरी किञ्चित् उष्णा, मुखके मलका नाश करनेवाली तथा सूजन, खांसी, घाव, श्वास शूल, हिध्म आग मलनाशक है ।

धपिच ।

ससुगन्ध कर्चुरकस्तीक्ष्णोदाहीकटु स्मृतः ।

तिक्तश्चतुवरश्चैव शीतवीर्यो लघु स्मृत ॥

किञ्चित्पित्तकोपयतिकासश्वासज्वगपह ।

शूलहिक्कागुल्मरक्त रुजवातत्रिदोषकम् ॥

मुखवेरस्यदोर्गन्ध्यव्रणामच्छर्दिहिध्महा । (नि० २०)

अर्थ-कपूरकचरी-(त्रैलोक्य) तीक्ष्ण दादजनक, चन्दरी कपरी कपेली, शीतवीर्य, हल्की निम्बित्व विचकारक तथा रसोमी भाग गग शूल, दुचकी, गोला, रुधिरगोम, चाटि विशेष मुग्गरी विगता दुग्गेन घाव, आम, वमन और दिग्मगोमको नष्ट करे ।

विवरण । घेल दोतीई, डमकी, जड़ मुग्गन्धियुक्त वन्की गमान दोतीई, चाके टुकड़े कर मुग्गालेतेई, उतीको गन्धपत्रासी अर्थात् कपूरकचरी बदतेई सुनानामाति ।

गन्धिनीतालपणीतुदेत्यागन्धकुटीसुरा ।

अर्थ-गन्धिनी, तालपणी, श्या, गन्धरुटी, मुग, (पुरागन्धवर्मी दिव्या, गन्धाडवा, गन्धमाटिनी, मुग्गभि भृगगन्धा कुटी, गन्धिनी, भूत गन्धा, तालपणिका और मुगमार्गी)

हिन्दीभाषामें पत्रागी मुग ।

बंगभाषामें मुगमागा ।

मराठीभाषामें पत्रागीमुग । मोगमार्गी ।

कर्णाटकी भाषामें मुग ।

गुजराती भाषामें मोगमार्गी ।

भस्ममुग ।

मुगतिकाहिमास्वादीलघ्वीपित्तानिलापहा ।

ज्वरासृग्भूतरबोम्रीकुष्ठकासविनाशिनी ॥ (भावप्रसाग)

अर्थ-एराट्री-कटरी, शीतल स्वादिष्ट लघु तथा पित्त, वात, गर, रुधिरदोष, भूत, गन्ध काट और पाण्डुरोगका नाश करे ।

विवरण ।

एकांगीरुडकातिका तुत्रगभीतला मता ।

लघुस्वादुमुगन्धाम्यादिद्रियाणाचदर्पदा ॥

कफपित्तश्वामवातरक्तदोषविपापहा ।

दादभ्रमत्पाम्चर्जज्वरकुष्ठविनाशिनी ॥

पिशाचगणमालक्ष्मीसाधानागरुपता । (ति०४०)

अर्थ-एराट्री-चापरी कटरी कपेली, शीतल, हल्की स्वादिष्ट मुग्गभि रूद्रिपत्रो एव कम्बेरासी तथा कफ पित्त आम दाद रुधिरगोम विपरी

काग, दाह, भ्रम, तृषा, मूर्च्छा, ज्वर, कोठ, पिशाचवाधा, राक्षसवाधा और अलक्ष्मीका नाश करे ।

लामज्जनामानि ।

लामज्जकसुनालस्यादमृणाललयलघु ।

इष्टकापथिकसेव्यनलदचावदातकम् ॥

अर्थ—लामज्जक, सुनाल, अमृणाल, लय लघु, इष्टकापथिक, सेव्य, नलद, अवदातक, (सुनील, ग्रीष्म, दीर्घमूल, जलाशय और अवदाहक)

हिन्दी भाषाम लामज्जक ।

वगभाषाम गन्धवेणा ।

मराठीभाषाम लावज, पिवळावाळा ।

गुजराती भाषाम सुगविपीलु, खडजल, जलवालो ।

तैलगी भाषाम तेलवट्टिवेरु ।

श्रेष्ठलामज्जकलक्षणम् ।

दीर्घमूलदृढसूक्ष्ममुत्तमगन्धसंयुतम् ।

देशोसाधारणेजातलामज्जभद्रकभवेत् ॥ (भै० चि०)

अर्थ—जिमकी बड़ी जड़ हो, दृढ़ हो सूक्ष्म हो, सुगन्धियुक्त हो, साधारण देशमें उत्पन्न हुआ हो, ऐसा लामज्जक श्रेष्ठ होता है ।

अन्य गुणा ।

लामज्जकहिमतिक्तलघुदोषत्रयास्त्रजित् ।

त्वगामयस्वेदकृच्छ्राहपित्तास्त्ररोगनुत् ॥ (भावप्रकाश)

अर्थ—लामज्जक—शीतल, कड़वा, हल्का, त्रिदोषनाशक तथा रक्तपित्त, त्वचाके रोग, पसीना, मृन्कृच्छ्र, दाह और रक्तपित्त रोगको दूर करे ।

अपिच ।

लामज्जकहिम तिक्तमधुर वातपित्तजित् ।

तृड्दाहश्रममूर्च्छार्तिरक्तपित्तज्वरपहम् ॥ (रा० नि०)

अर्थ—लामज्जक—शीतल कड़वा, मधुर, वातपित्तनाशक तथा तृषा दाह, श्रम मूर्च्छा, रक्तपित्त और ज्वरको नष्ट करे ।

अन्यथा ।

लामज्जकन्तुमधुरतिक्ति शीतश्लेष्माचकम् ।

स्तम्भनलघुपित्तघ्नवाततृद्धाहनाशनम् ॥

त्रिदोषश्रममूर्च्छास्रशूलवातिविनाशनम् ।

ज्वरञ्च रक्तदोषञ्च स्वेदकृच्छ्र मदकफम् ॥

व्रणविषविसर्पञ्चनाशयेदिनिकीर्तितम् (निघण्टुस्तोत्र)

अर्थ-लामञ्जर-मयुर, तिक्त (रडवा), शीतल, पाचन, स्तम्भन, हल्का पित्तनाशक तथा वात, कृपा गद, त्रिदोष, श्रम, मूर्च्छा, रक्त, शूल, यमन, ज्वर, अधिग्विहार, पसीना, मूत्रकृच्छ्र, मद, कफ, पाच, विष और विसर्प इनको दूर करे है ।

यह एक प्रकारका सुगन्धि लृण नर्मीरु तीव्र रंगरंगम होता है ।

माया = मानकी ।

शृङ्खलामानि ।

स्पृक्षालताकोटिवर्षामरुन्माला लतामरुत् ।

लङ्कागिकासमुद्रान्ता कुटिला द्वयपुत्रिका ॥

अर्थ-स्पृक्षा-लता शोणित्वा, मरुन्माला लतामरुत्, लङ्कागिका, गमुद्रान्ता, कुटिला, द्वयपुत्रिका, (द्वयपुत्रा दर्श, पृष्ठा पिशुना, लघु वृक्ष, लङ्कागिका, लतामरुत्, ब्राह्मणी मनु, मायागिका मायानी, लक्ष्मी, पथगु मिरमा समुद्रान्ता मरुत्, माला कोटी वर्षा लङ्कागिका, वर्षागिका यिना तस्वर चोपक, चण्ड, अमरुत्)

हिन्दीभाषाम

अमरुत् अमरुत् पूर्ण ।

यद्रभाषाम

चिह्नित शाक ।

मगदीभाषाम

स्पृक्षा मगदी भाषा, शाक ।

कणाटिकाभाषाम

दिश ।

नैमिषीभाषाम

नैमिषीभाषाम ।

उत्त

निर्मिषाण ।

भाषा गुण ।

स्पृक्षास्वाह्निहिमावृष्यातिक्तानिग्लिदोषनुत् ।

कुपुकण्डविपस्वेददाहान्वज्वरकहत ॥ (भावमरुत्)

अर्थ-अमरुत्-स्वाह्नि, शीतल, शीघ्रतरु, कटुता, मीरुग लेपना, तथा कंद, सुतनी दिश, मगदी भाषा शाक मगदी भाषा शाक और मगदी भाषा शाक ।

अपिच ।

स्पृक्काकटु कपायाचतित्ताश्लेष्मार्तिकासजित् ।

श्लेष्ममेहाश्मरीकृच्छ्रनाशिनीचसुगन्धिदा ॥ (रा० नि०)

अर्थ—असवरग—चरुपाग, कपिला, कडवा तथा कफसे उत्पन्न हुई पीडा-
खासी, कफ, प्रमेह, पथरी और मूत्रकृच्छ्ररोगको दूर करे है और सुगन्धि,
दायक है ।

अन्यञ्च ।

स्पृक्कातुमधुरापाकेहृद्याचकफपित्तनुत् । (रा० व०)

अर्थ—अमवरग—पचनेम मधुर, हृदयको हितकारी और कफपित्तनाशक है)

अपिच ।

गर्गोनाकटुकातित्तातुवरास्वादुशीतला ।

वृष्याचेवसुगन्धिश्चकासतृष्णमेहनाशिनी ॥

कण्डूत्रिदोषकुष्ठचविपदोपज्वर कफम् ।

स्वेददाहरक्तदोषदौर्गन्ध्यश्चतथाश्मरीम् ॥

मूत्रकृच्छ्र च शूलश्च नाशयेदितिकीर्तिता । (नि० र०)

अर्थ—अमवरग—चरुपाग, कडवा, स्वादिष्ठ, शीतल, वीर्यजनक,
सुगन्धि तथा खामी पियाम, प्रमेह, खुजली, त्रिदोष (वात, पित्त, रुफ ।
कोह, विपविकार, ज्वर, कफ, पमीना, दाह, रुधिरविकार, दुर्गन्ध, पथरी,
मूत्रकृच्छ्र और शूलको निर्मूल करे ।

एलावालुकजामानि ।

एलावालुकमेलेयसुगन्धिहरिवालुकम् ।

अर्थ—एलावादुक—मेलेय, सुगन्धि, हरिवादुक, (वालु, वाडुक, एलवा-
डुक, एलवाडु, आलुक, एलवाडुक, कपित्थत्वक, गन्धत्वक, कुष्ठगन्धी,
कपित्थ, गन्धात्वक, एलाडु, एलवाडु)

अन्य पुनः ।

एलालु कटुकपाके कपायशीतल लघु ।

हन्तिकण्डूव्रणच्छर्दितृक्कासारुचिहृज ॥

वलामविपपित्तास्रकुष्ठमूत्रगुदक्रिमीन् । (भा० प्र०)

अर्थ-पुष्टा-पचनेन चम्परा, कपेला, शीतल इत्याका तथा गुजनी,
घाव उदित, पियाम, गार्गी, अग्नि, रुद्रपणेन कफ विप गत, विम
कोट, मृदुगेन और कृमिगेनको नष्ट करेई ।

भविष्य ।

एलावालुकमत्पुत्रकपायकफवातनुत् ।

मृच्छतिज्वरदाहानाशयेद्रोचनपरम् ॥ (राजनिषण्डु)

अर्थ-पुष्टा-अतिउष्ण, कपेला, कफगतनाशक तथा मृच्छां उर और
दाहको दूर करेई, और अन्यन्न रुचिको उत्पन्न करेई ।

भगवत् ।

ऐलेयतुवर रुच्यमत्पुत्रं शीतल लघु ।

पाकेकटुसुगन्धिस्यात्तिक्तशुद्धिकर्ममत् ॥

कफमृच्छावातदाहज्वरकण्डूविषव्रणान् ।

छदितृक्कासहृद्रोगपित्तरक्तकृजस्तथा ॥

वर्ध्मरुस्कृमिकुष्ठानिद्वरुचिचविनाशयेत् । (नि० १०)

अर्थ-पुष्टा-कपेला, शीतल इत्याका तथा पाचने
चम्परा, गुजनी रुद्रा, गुडिकाक तथा कफ, मृच्छां वात दाह, उर,
गुजनी, विप व्रण समन तथा गार्गी रुद्रोग रक्तपित्तगेन वर्ध्मगेन
कृमि उदित और अरुचिको दूर करेई ।

पुष्टा-सुगन्धि पचनेन इमम मृच्छां समान सुगन्धि भावीति ।

मंशुपामे

पुष्टावात ।

हिनीमे

मृच्छा ।

पुष्टावेम

पुष्टावात ।

तीक्ष्णम

पुष्टावात ।

मगरीम

पुष्टावात ।

मगरीमरीमनामानि ।

श्रीपुष्पपुण्डरीगीतपोण्डर्यपुण्डरीयकम् ।

प्रपोण्डरीकचक्षुष्यपुण्डर्यपोण्डरीयकम् ॥

अर्थ-श्रीपुष्प-पुण्डरी शीत पोण्डर्य, पुण्डरीयक मगरीमरीम नामानि
पुष्टां पोण्डरीयक (पुष्टावात, पोण्डरीयक पोण्डरीयक नामानि, नामानि
इतिहास मगरीयक पुष्टावात नामानि अनुमत्)

अस्य गुणा ।

प्रपौण्डरीकचक्षुष्यमधुरतिक्तशीतलम् ।

पित्तरक्तव्रणान्दन्तिज्वरदाहवृषापहम् ॥ (रा० नि०)

अर्थ—पुण्डरिया—नेत्राको हितकारी, मधुर, तिक्त, शीतल तथा रक्त, पित्त, व्रण, ज्वर, दाह और वृष्णाकी शान्ति करेह ।

अपिच ।

पौण्डर्यमधुरतिक्तकपायशुक्रलहिमम् ।

चक्षुष्यमधुरपाकेवर्ण्यपित्तकफास्रनुत् ॥ (भा० प्र०)

अर्थ—पुण्डरिया—मीठा, कडवा, कपेला, वीर्यवर्द्धक, शीतल, नेत्रोंको हितकारी, पचनेमभी मीठा, शरीरके वर्णको सुदृग् करनेवाला, तथा पित्त रुफ और रक्तदोषनिवारक है ।

प्रपौण्डरीक सुगन्धि वृक्ष है, इसके रसको आखमें लगानेसे आखके रोग दूर होतेहैं, इसको हिन्दीभाषामें पुण्डरी, पुण्डरिया वगभाषामें पुण्डरिया । मराठीमें पुण्डरीक वृक्ष । तेलिङ्गीमें पुण्डरीक मनुगे विधमानम् । गुजरातीमें पाण्डेरवा । कर्नाटकी भाषामें पुण्डरीक कहते हैं ।

पपटिनामानि ।



पनडी

जतुकारञ्जनीकृष्णापपंटीचक्रवर्तिनी ।

जतुकृज्जनिमस्पर्शजनैष्टाजननीतथा ॥

अर्थ-जतुका, श्रुती, कृष्णा, पपंटी, चक्रवर्तिनी, जतुष्ट, जनि, जनैष्टा जननी, (जतुकार, त्रिपुल्ल, निशान्ता, मुषारि, मधुसूता, राजकृष्णा, शोषकच्छ, पन्थोपमा, मृत्तमाली, भ्रमरी, कृष्णादिता, त्रिपुल्लिका कृष्णाह्वा, ग्रन्थिपणां मुषारि, तन्वली, दीपयला, रानी जतुका जनिजन्तुका)

अस्या गुणा ।

पपंटीतुवगातिकाशिशिरावर्णकृच्छ्र ।

विपत्रणहरीकण्डूकफपित्ताम्रकुष्ठनुत ॥ (भावप्रकाश)

अर्थ-पपंटी-कण्ठी, कट्या, शोणित, वर्णराग्य तस्य तथा विप, पान रुजली, एक मर दृष्टका नष्ट करे है ।

अपिच ।

जन्तुकाशिशिरातिकाकफपित्तकफापहा ।

दाहकृष्णावमिषीचरुचिकृदीपनीपरा ॥ (रा० नि०)

अर्थ-जनी-शोणित, कट्या तथा रक्तपित्त यत्र आह, कृष्णा और वमन विनाशक है तथा रुजिकाग्न और अमिषीपक है ।

अपिच ।

पपंटीभीतलावण्यां तुवगातिका लघुः ।

अग्निदीप्तिरुगीरुच्याक्तपित्तकफाजयेत् ॥

पित्त च रक्तदोष च कुष्ठदाहं वमि तृषाम् ।

कुष्ठरोगं कण्डूरोगव्रणचैत्रविनाशयेत् ॥ (त्रिपुण्ड्रनाम)

अर्थ-पपंटी-शोणित, वर्णराग्य पपंटी, कट्या हृत्पदी अग्निदीप्ति, रुजिकाग्न तथा रक्तपित्त, यत्र पित्त, रुजिकाग्न यत्र दौह, दाह, वमन, कृष्णा, रोग, विप, रुजली और वमन विनाश करे है । यत्र पित्तरोगम मरिह है ।

अस्या गुणा ।

नलिकाविद्रुमलता कपोतचम्पानटी ।

धमन्यजनकभीचनिर्मभ्याशुपिगनली ॥

अर्थ—नलिका—विद्रुमलता, कपोतचरणा, नदी, धमनी, अञ्जनकेशी, निर्मध्या, शुपिरा, नली (कपोताग्निर, विद्रुमलतिका, कपोतवाणा, नलिनी, अधमानी, स्तुत्या, रक्तदला, नर्तकी)

अस्याशुणा ।

नलिकाशीतलालध्वीचक्षुष्याकफपित्तहृत् ।

कृच्छ्राश्मवाततृष्णासकुष्ठकण्डूज्वरापहा ॥

अर्थ—नलिका—शीतल, हलकी, नेत्रोंको हितकारी तथा कफ, पित्त, मूत्र-कृच्छ्र, पथरी, पियास, रुधिरविकार, कोढ़, कण्डू और ज्वरको नष्ट करे है ।

अपिच ।

नलिकाकटुकातिक्तातीक्ष्णा च मधुरासरा ।

लध्वीशीताचसंप्रोक्ताचक्षुष्यावातपित्तहा ॥

रक्तपित्तकिमिविषकफवातोदरापहा ।

शूलाश्मरीमूत्रकृच्छ्राक्तदोषतृपाहरा ॥

कण्डूकुष्ठज्वरघ्नदुर्नामान चनाशयेत् । (नि० २०)

अर्थ—नलिका—चर्परी, कडवी, तीक्ष्ण, मधुर, दस्तावर, हलकी, शीतल, नेत्रोंको हितकारी तथा वातपित्त, रक्तपित्त, कृमि, विष, कफ, वातोदर, शूल, पथरी, मूत्रकृच्छ्र, रुधिरविकार, तृपा, खुजली, कोढ़ ज्वर घाव और उवासीरको दूर करे है ।

यह सुगन्धिद्रव्य उत्तरखण्डम नलीनामसे प्रसिद्ध है इसका स्वरूप भूगेके ममान होता है, कहीं कहीं पवारी और प्रवाली, नामसे प्रसिद्ध है । कर्णाटकमें बेसनलिके कहते हैं । और तेलिङ्ग देशमें पक्केमुक्त सुगन्धि द्रव्यमु कर्त्ते हैं ।

पुदिनानामानि ।

व्यञ्जनोवान्तिहारीचरुचिश्य शाकशोभन ।

अर्थ—व्यञ्जन—वान्तिहारी, रुचिश्य, शाकशोभन, (सुगन्धिपत्र अर्जाणन्)

हिन्दी भाषामें

पोदीना ।

बङ्ग भाषामें

पुदिना ।

मराठी भाषामें

पुदिना ।

गुजराती भाषामें

फोदिनो ।

इथेनीभाषामें

मोल् रेडीमट । Tulreian ent

त्रैलोक्यभाषामें
विश्वभाषामें
पारसभाषामें
भार्यभाषामें

मेन्थामिन्दू वेमटिन । ॥ ५६ ॥ श्री ॥
ओह शंका ।
नोभना ।
हवा ।

भय्य गुता ।

पुदिनस्तुगुरु स्वादूरुच्योहृद्य सुगायदः ।

मलमूत्रस्नम्भकरः कफकासमदापह ॥

अग्निमांथविमृचिघ्न संप्रदण्यतिमागदा ।

जीर्णज्वरकृमीश्वेवनाशयेदिति कीर्तितम् ॥ (ति० २०)

अर्थ-पाटीला-भागी, स्वादिष्ट, रसताम्र, हृदयता, सुगायद-
(सुगंधा देवता), मल और मूत्रों से रोगाणु तथा कफ, काशी, मृदादि
विमृचिता, ममर्षणी, अतिगात्र जीर्णज्वर और कृमिरोगका नाश करे ।

विवरण-इसका छोटा थुप होता है, मनुष्य पर और पशुओं में समान है।
पोलीना प्रार्थान नहीं है, कारण यह है कि, अतिमिश्र निचण्डुरस्मात्पके
(जो कि थोड़ा दिनांगे बनाई) और हिमी प्रत्येक नहीं भेगा जाता,
पोलीनेका भर्तु निकाले है, यह एक समानादि भोक रोगाणु दूर
करता है, पोलीनिकी घटनी गानेमे अत्यंत भूरा समर्थ है ।

इति शान्तिप्रामाण्यप्रदुभयपणे ॥ ५६ ॥



हरीतक्यादिवर्गः ।

— १३५ —

दक्षप्रजापतिस्वस्थमश्विनौवाक्यमूचतुः ।
 कृतोहरीतकीजातातस्यास्तुकृतिजातय ॥
 रसाःकतिसमाख्याता कतिचोपरसा स्मृता ।
 नामानिकतिचोक्तानिकिवातासांचलक्षणम् ॥
 केचवर्णगुणा के च का च कुत्रप्रयुच्यते ।
 केनद्रव्येणसयुक्ताकाश्वरोगान्व्यपोहति ॥
 प्रश्रमेतद्यथापृष्ट भगवन्बहुमर्हसि ।
 अश्विनोर्वचनश्रुत्वादक्षोवचनमब्रवीत् ॥
 पपातर्बिंदुर्मेदिन्यांशक्रस्यपिबतोऽमृतम् ।
 ततोदिव्यात्समुत्पन्नासप्तजातिर्हरीतकी ॥

अर्थ—प्रसन्नचित्त ईन्द्रेण दक्षप्रजापतिसे अश्विनीकुमारगने पूछा कि, हे भगवन् ! हमारे प्रश्नके अनुसार आप विधिपूर्वक कहिये कि, हरीतकी कहा उत्पन्न हुई ? किस प्रकारसे इसका जन्म हुआ ? कितने प्रकारकी है ? इसमें कितने रस और उपरग रहते हैं, सर्व प्रकारकी हरीतकीके नाम क्या हैं ? उनके लक्षण क्या हैं ? उनके रंग और गुण क्या क्या हैं ? और कौनसी हरीतकी किसकिस प्रयोगमें आसकती है ? और हरीतकी किसकिस द्रव्यके योगमें कौन कौनसे रोगका नाश करती है, इसप्रकार दोना अश्विनी-कुमारोंका वचन सुनकर दक्षप्रजापतिने उत्तर दिया कि, जिस समय देव-राज इन्द्रने अमृतपान किया, तब उसमें एक बूट पृथ्वीपर गिरपड़ी, उस अमृतकी बूटमें मानप्रकारमें हरीतकी उत्पन्न हुई ।

हरीतकीनामानि ।

हरीतक्यभयापथ्याकायस्थापूतनामृता ।
 हेमवत्यव्यथाचापिचेतकीश्रेयसीशिवा ॥
 वयस्थाविजयाचापिजीवन्तीगेहिणीति च ।

अथ-हरीतकी-अभया, पण्या, पापण्या, धृतता, अमृता, देवता,
 अजया नेतरी, श्रयणी शिवा, वयस्था, निजया, जीवन्ती, शक्तिः
 (सुभा, चन्दा, ग्नायनस्ता, पावनी प्रमथा, शाखा, रुद्राभया, वयन्तना
 शक्रमुद्रा, सुषोद्रवा, जया, नेतनकी, प्रपथ्या, जीवमिया, जीवनिता, भिन्ना
 गरा, भिषविमया, जीवन्ती, प्राणदा, जीव्या देवी दिव्या विमला गिन्ता)



संस्कृतभाषामे

हिन्दीभाषामे

बंगभाषामे

मराठीभाषामे

सुगर्भाभाषामे

कर्णाटभाषामे

तेलुगुभाषामे

शास्त्रिभाषामे

उत्त

द्रा

इत्यादिभाषामे

संस्कृतभाषामे

हरीतकी पातहरीतकी ।

हृद, हृ, हृ ।

हृमिनी ।

हृमकी । पातहृद ।

हृद । हृम ।

अभिज्ञेय मयि ।

कातामि कर्णाट ।

चद्वे ।

हृमिनी । कर्णाट ।

कर्णाट ।

मेगैदेव । [हिन्दी]

अथकशास्त्रम् । [हिन्दी]

रामचन्द्रिय मेदुप । [हिन्दी]

फारसीभाषामें
अरबीभाषामें

हलैले कलाजीरेजवी अस्फर हलैले जर्द ।
एहलीलज, कावली, अहलीजअस्फर,
अहलीज असवद ।
हरीतकी सप्तधा यथा ।

विजया रोहिणी चैवपूतना चामृताभया ।

जीवन्तीचेतकी चेति विज्ञेयाः सप्त जातयः ॥

अर्थ—विजया, रोहिणी, पूतना, अमृता, अभया, जीवन्ती और चेतकी,
इन भेदोंसे हरे सात जातिकी है ।

सातोंके पृथक् २ लक्षण ।

अलाबुवृत्ताविजयावृत्तासारोहिणीस्मृता ।

पूतनास्थिमतीसूक्ष्माकथितामांसलाऽमृता ॥

पचरेखाभयाप्रोक्ताजीवन्तीस्वर्णवर्णिनी ।

त्रिरेखाचेतकीज्ञेयासप्तानामियमाकृतिः ॥ (भावप्रकाश)

अर्थ—विजयाहरद—तोमड़ीके समान गोल और लम्बी होतीहै, रोहिणी
हरद गोल होतीहै, पूतना हरद छोटीगुठलीवाली होती है, अमृतानामवाली
हरद मोटीहोतीहै, पाचरेखावाली अभया हरद होतीहै, जीवन्ती हरद स्वर्णके
समान पीलेरंगकी होतीहै, और चेतकी हरद तीनरेखावाली होतीहै ।

जन्मस्थानम् ।

विध्याद्रौविजयाहिमाचलभवास्याच्चेतकीपूतना

सिंधोस्यादथरोहिणीतुविजयाजाताप्रतिस्थानके ।

चम्पायाममृताभया च जनितादेशे सुराष्ट्राह्वये

जीवन्तीतिहरीतकीनिगदितासप्तप्रभेदा बुधैः ॥

(नि० २०)

अर्थ—विजयाहरद विध्याचल पर्वतमें उत्पन्न होतीहै । पूतना और चेतकी
हरद हिमालय पर्वतमें होतीहै । रोहिणी हरद सिंधु नदीके तीरमें होतीहै ।
और विजया हरद प्रतिस्थानमें होतीहै, अमृता और अभया हरद चम्पादे-
शमें उत्पन्न होतीहै । और जीवन्ती हरद सौराष्ट्रदेशमें उत्पन्न होतीहै ।

सप्ताना प्रयोगभेदा ।

विजयासर्वरोगेपुरोहिणीत्रणरोहिणी ।

चेतकी हरडको हाथमें वारण किये रहेगा, तबतक उस प्राणीको उस हरडके प्रभावसे निश्चय दस्त होते रहेंगे, चेतकी हरडको सुकुमार दुर्बल और जो मनुष्य औषधिसे शत्रुता रखतेहैं, उनको कभीभी धारण नहीं करना चाहिये । चेतकी हरड अत्यन्त उत्कृष्ट हितकारी और सुखसहित दस्त करानेवाली है ।

विजयाहरडकी प्रशंसा ।

सप्तानामपिजातीनांप्रधानाविजयास्मृता ।

सुखप्रयोगा सुलभासर्वरोगेषु शस्यते ॥ (भावप्रकाश)

अर्थ—सातप्रकारकी हरडोंमें विजया नामवाली हरड सर्वमें प्रधान है, प्रयोगभी सुखकारक है । सुलभ अर्थात् सब स्थानोंमें मिलती है और सर्व रोगोंमें दी जाती है ।

हरीतकीगुणा ।

कपायाम्लाचमधुरातिक्ताकटुरसान्विता ।

इति पचरसा पथ्या लवणेनविवर्जिता ॥

अर्थ—कपाय, अम्ल, मधुर, तिक्त और कटु इस प्रकार हरड लवणरसके अतिरिक्त पाच रसवाली है ।

रूक्षोष्णादीपनीमेध्यास्वादुपाकारसायनी ।

चक्षुष्यालघुरायुष्यावृहणीचानुलोमनी ॥

श्वासकासप्रमेहार्शं कुष्ठशोथोदरक्रिमीन् ।

वैस्वर्यग्रहणीरोगविष्वन्धविषमज्वरान् ॥

गुल्माध्मानतृपाच्छर्दिहिकाकण्डूहृदामयान् ।

कामलांशूलमानाहप्लीहानचयकृत्तथा ॥

अश्मरीमूत्रकृच्छ्रचमूत्राघातंचनाशयेत् ॥

अर्थ—हरड—रूखी, उष्णवीर्य, अग्निको दीपन करनेवाली, मेधाजनक, पाकम स्वादिष्ट, नेत्रोंको हितकारी, हृत्को आयुर्वर्धक, वृहण, (बल्कारक) और वायुको अनुलोमन करनेवाली है तथा श्वास, खासी, प्रमेह, चवासीर, कोढ़, सूजन, उदररोग, कृमी, स्वप्न, मग्नहणी, विष्वन्ध, विषमज्वर, गुल्म, आध्मान (अफारा), तृषा, वमन, दुचकी, कण्डू, हृन्मरोग,

नामग, शुल, ज्ञानाद यद्दत्त, क्षमार्ग, मृदुलपु अर्ग मृतापयक
नामगर्ग ।

अम्लभावाज्वेद्वातपित्तमधुरतिक्ततः ।

कफरुचकृपायत्वात्त्रिदोषभीततोभया ॥

अर्थ-इह-अम्लरसगुण दोषेभ्यो वातया नाग वर्तते, मधुर रसं
तिक्तरसगुण दोषेभ्यो पिक्वा नाग वर्तते, अर्ग पपाय तथा मृदुलपु
पक्वा नाग वर्तते, इत्येवम् इह त्रिदोषनाशक ई ।

अथ ।

स्वादुतिक्तकृपायत्वात्पित्तकफरुचसा ।

कटुतिक्तकृपायत्वादम्लत्वाद्वातप्रचिद्य ॥

अर्थ-इह-स्वादु, तिक्त, कफरुचपनमे पिक्वो वर्तते, कटु तिक्त, अर्ग
कफरुचपनमे कटुका वर्तते, अर्ग अम्लपनमे वातया नाग वर्तते ।

अथ ।

हरीतकीतुमप्रोक्तापचभिरुतुरमैयुना ।

लयणेनचमाहीनायोगवाहीन्सायनी ॥

अग्निदीप्तिरुगीलक्षीसगमेध्याचलेयना ।

वातानुलोमनीश्यात्रधुप्यामृतिरारका ॥

वयस स्थापनीयल्याधुनिदाकुष्टनाशिनी ।

विषणंतानाशिनीवैचेष्टियाणाप्रसादनी ॥

शिरोगनेत्रगोत्रेस्त्रयंविषमज्वरम् ।

पुण्यंनज्वरं पाण्डुंरोगकामला तथा ॥

शोषशोथमूत्रातग्रहणौचानिमारकम् ।

अभ्रमेनज्वरंमेदकृमिश्वासविषोदरम् ॥

कामं वमं मल स्नाग्मानाद्वर्णरोगकम् ।

अर्ग प्रोदाप्रिदोषशुल्मद्विषात्रिगंतया ॥

हृत्स्नग्मक्षुलक्षनाशवेदकतिथा ॥ (विषमज्वरम्)

अर्थ-हरड-पाच रसोंसे युक्त है और लवणरसकरके वर्जित है । योगवाही, रसायन, अग्निप्रदीपक, हलकी, दस्तावर, मेघाजनक, लेखन, वातको अनुलोमन, कानेवाली, हृदयको हितकारी, नेत्रोंको हितकारी, स्मृतिकारक, अवस्थास्थापक, बलकारक, कोढ़का नाश करनेवाली, विवर्णतानाशक, इन्द्रियो-को प्रसन्न करनेवाली तथा मस्तकरोग, नेत्ररोग, स्वरभग, विपमज्वर, पुराना ज्वर, पाण्डु, हृदयरोग, कामला, शोष, सूजन, मूत्राघात, सग्रहणी, अतिमार, पथरी, वमन, प्रमेह, कृमि, श्वास, विष, उदररोग, खँसी, पसीना, मल-स्तम्भ, धानाह, कर्णरोग, बवासीर, छीहा, त्रिदोष, गुल्म, हुचकी, व्रण, ऊरुतम्भ, शूल और अरुचिका नाश करे है ।

हरीतक्या पथ्यरसावस्थितिनिर्णयः ।

पथ्यायामजनिस्वादुःसाय्वामम्लोव्यवस्थितः ।

वृन्तेतिक्तस्त्वचि कटुरस्थिस्थस्तुवरो रसः ॥

अर्थ-हरडकी मजामें मधुर रस, नसोंमें अम्लरस, डठलमें तिक्त रस, डालमें कटुर रस और अस्थियोंमें कपेला रस रहता है ।

श्रेष्ठहरीतकीलक्षणम् ।

नवास्निग्धाघनावृत्तागुर्वीक्षिताचयांभसि ।

निमज्जेत्साप्रशस्ताचकथितातिगुणप्रदा ॥

नवादिगुणयुक्तत्वतथैकत्रद्विकर्पता ।

हरीतक्या फलेयत्रद्वयंतच्छ्रेष्ठमुच्यते ॥

अर्थ-जो हरड नूतन, स्निग्ध, घन, गोल, भारी और पानीमें डालनेसे द्रवजावे, तो हरड अत्यन्त गुणवाली और श्रेष्ठ होती है अथवा जो हरड पूर्वोक्त गुणयुक्त हो और चार तोले परिमाण भारी हो, उसको सर्वगुण-वाली जानना ।

चर्वितादिहरीतकीगुणाः ।

चर्वितावर्द्धयत्यग्निपेपतामलशोधिनी ।

स्विन्नासग्राहिणीपथ्याभृष्टाप्रोक्तात्रिदोषनुत् ।

अर्थ-हरड दातोंसे चबाकर खानेसे अग्निको बढ़ाती है, पीसकर खानेसे मलको शोधन करे है, अर्थात् मलको निकालकर उदरकी शुद्धि करती है पकाई हुई खानेसे मलको रोकती है और मुनी हुई हड्डि त्रिदोषका नाश करे है ।

अर्थ—हरड मनुष्योंको मांताकी समान हित करनेवाली है, माता तो कभी २ कुपितभी होजाती है, परन्तु उदरमें स्थित अर्थात् खाई हुई हरड कभी भी अपकारी नहीं होती ।

अन्यद्रव्यमुक्तहरीतकीगुणा ।

द्राक्षांनियोज्यविधिनाद्विगुणशिवायाः

संचूर्ण्यचाक्षफलमानमिताप्रभाते ।

कल्याणिकाञ्चमुकृतागुटिकामिमांय-

संसेवतेभवतितस्यहिपित्तनाशः ॥

हृद्रोगरक्तविषमज्वरपाण्डुवान्ति-

कुष्ठानिकासकमलारुचिमेहमुख्याः ।

आनाहर्गुल्मपिटिकाप्रभवाविकाराः

सर्वेचतेविलयमाशुसुखेनयान्ति ॥

अर्थ—हरडसे दूनी दाख लेकर विधिपूर्वक चूर्ण करके बहेडेके फलकी समान गोली बनावे उस कल्याणकारी-गोलीका भातःकालमें जो मनुष्य सेवनकरता है, उसके पित्त, हृदयरोग, रक्तदोष, विषमज्वर, पाण्डुरोग, वमन, कुष्ठ, खासी, कामला, अरुचि, प्रमेह, आनाह, गुल्म और पिडिका इत्यादि रोग नाश होते हैं ।

भुक्तेपथ्याऽभुक्तेपथ्याभुक्ताभुक्तेपथ्यापथ्या ।

जीर्णेपथ्याऽजीर्णेपथ्याजीर्णाजीर्णेपथ्यापथ्या ॥

अर्थ—हरड भोजनके उपरान्त और भोजनसे प्रथम दोनों समयमें पथ्य है, तथा जीर्णम् और अजीर्णम् भी पथ्य है ।

हरीतकीसेवननिषेधः ।

“अध्वातिखिन्नोवलवर्जितश्च रूक्षःकृशोलघनकर्पितश्च ।

पित्ताधिको गर्भवती च नारी विमुक्तरक्तस्त्वभयांनखादेत्” ॥

अर्थ—मागमें चलनेमें थका हुआ, बलहीन, रूक्ष, कृश, लघन करनेसे दुर्बल हुआ, अधिक पित्तवाला, गर्भवती स्त्री और जिमका रुधिर निकाला गया हो अर्थात् फस्त खुली होय, नर्वानज्वरवाला, हनुस्तम्भरोगवाला और शोषयुक्त इत्यादि कहे दूये मनुष्योंको हर्द खानी निषेध है ।

हरीतकीशब्दस्य निदत्ति ।

हरस्य भवने जाता हरिता च स्वभावतः ।

हरेस्तु सर्वरोगांश्च तेन प्रोक्ता हरीतकी ॥ (मदनपाठनिघण्टु)

अर्थ—हर (महादेव) के भवनम उत्पन्न हुई स्वभावसे हरे रंगवाली और सर्व रोगोंको हरतीहै, इसीकारण इसका नाम हरीतकी है ।

अस्य योजगुणा ।

हरीतक्या स्मृतं वीजं चक्षुष्यं गुरुवातनुत् ।

पित्तनाशकरचैव मुनिभिः परिकीर्तितम् ॥ (नि० र०)

अर्थ—हरडके बीज नेत्रोंको हितकारी, भारी तथा वातपित्तहारी है ।

विवरण—इसका बड़ा वृक्ष होताहै, पञ्जाब, गङ्ग और कापुल देशम अधिकतासे उत्पन्न होताहै । इसके पत्ते अड़सेकी समान होतेहैं, इसका फूल महीन आमके मोंरकी समान होताहै, इस वृक्षको संस्कृतमें “नाभक” कहतेहैं । हरडकी अनेक जाति है । व्यवहार—हरडके फलकी छाल । मात्रा ६ मासेकी ।

विभीतकीनामानि । (बृहदेये नाम)



कलिट्टम फलपवृक्ष सवतांशो विभीतकी ।

अर्थ—कलिद्रुम, कल्पवृक्ष, संवर्त, अक्ष, विभीतकी, (विभीतक, विभीत, तुप, कर्पफल, मृतवास, कलि, कुशिक, बहुवीर्य, तैलफल, भृतावास, सवर्तक, वासन्त, कलिवृक्ष, वहेडुक, हार्य, विपन्न, कलिन्द, अनिलम्लक, कासम्ल, कलियुगालय, तोलफल और तिलपुष्पक)

| | |
|-----------------|--|
| संस्कृतभाषामें | विभीतक । |
| हिन्दी भाषामें | वहेडा । |
| वग भाषामें | वयडा-वहेडा । |
| मराठी भाषामें | वेहेडा-धाटिंगवृक्ष । |
| गुजराती भाषामें | वेडा । |
| कर्नाटकीभाषामें | तोरे । |
| तैलङ्गी भाषामें | बला-ताडेचेद्रु । |
| तामिली भाषामें | तनि, तण्डि, तोआण्डि । |
| इंग्रेजीभाषामें | मेरोवेलन्-बेलिरिक Myroballan Bellirika |
| लैटिन भाषामें | टरामिनेलिया-बेलिरिका Terumalia Bellirica |
| फारसी भाषामें | बल्ले । |
| अरबी भाषामें | बलेलज । |

अस्यगुणा ।

विभीतकःकटुस्तिक्तोऽपपायोष्णःकफापहः ।

चक्षुष्यःपलितघ्नश्चविपाकेमधुरोलघुः ॥ (रा० नि०)

अर्थ—वहेडा—कटु, तिक्त, कपेला, कफनाशक, नेत्रोंको हितकारी, पलितरोगविनाशक, पाकमें मधुर और हलका है ।

अपिच ।

विभीतकंस्वादुपाककपायकफपित्तनुत् ।

उष्णवीर्यहिमस्पर्शभेदनकामनाशनम् ॥

रूक्षनेत्रहितकेश्यकृमिवैस्वर्यनाशनम् ।

विभीतमज्जानृद्वर्द्धिकफवातहरोलघु ॥

कपायोमदकृच्छाथधात्रीमज्जापित्तद्वणः । (भावप्रकाश)

अर्थ—वहेडा—स्वादुपाकी, कपेला, कफपित्तनाशक, उष्णवीर्य, स्पर्शम

शीतल, भेदक, कासनाशक, रुखा, नेत्रोंको हितकारी, केशोंको सुदृढता-
दायक, कृमि और स्वरभगको नष्ट करेहै ।

यहेडेकी मींग-तृपा, वमन, कफ और वातनाशकहै । हल्की, कपेली
और मदकारकहै । आमलेकी भस्माके गुण भी इसकी समान जानने ।

अपिच ।

विभीतक.कटुस्तिक्तस्तुवरोष्णोलघु सरः ।

पाकेचमधुरोरुक्षश्चक्षुष्य.केशवृद्धिकृत् ॥

हिमस्पर्शोभेदकश्चपलितस्वरभद्रजित् ।

नासारोगरक्तदोषकण्ठरोगचनेत्ररुक् ॥

जन्तृनांकासहृद्रोगनाशकोमुनिभि स्मृतः । (नि०२०)

अर्थ-यहेडा-चरमरा, कडवा, हल्का, दस्तावर, पारखे समम
मधुर, रुखा, नेत्रोंको हितकारी, केशवर्द्धक, शीतस्पर्श, भेदक तथा पलित,
स्वरभग, नासारोग, रुधिरदोष कण्ठरोग, नेत्ररोग, खागी, हृदयरोग और
कृमिका नाश करेहै ।

अपिच ।

"विभीतकोलघु शीतपाकेस्वादु कफालजित् ।

कासहृत्क्षयकुष्ठघ्न केशवृद्धिकरः परः ॥

परकेभ्यस्तुतन्मज्जानेत्रपुष्पहरोजनात् ।

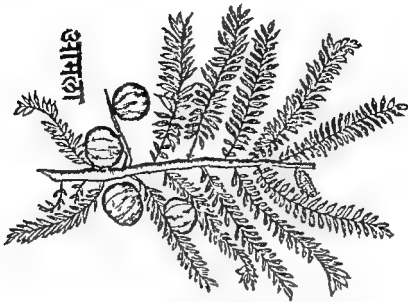
नासारोगनेत्ररोगकृमिशुकहरोलघु ॥

अक्षवृक्षभव कल्कश्चित्रपाण्डुगदापह ।"

अर्थ-यहेडा-हल्का, शीतल, तथा पारखे स्वादिष्ट कफ रुधिरविकार,
खागी, क्षयरोग और कुष्ठको नष्ट करेहै, केशवर्द्धक नामारोग, नेत्ररोग,
कृमि और शुकको हरेहै, हल्का और केशोंको हितकारीहै, इसकी मींग
नेत्रोंके पुष्पोंको हट करेहै, इसके चूषकी छालका पाटा, चित्रकोट और
पाण्डुगोगाको हट करेहै ।

विचारण-इसका यहा वृक्ष जंगल और पहातोंमें उत्पन्न होताहै, पत्ते बड़े
पत्तोंके समान होतेहैं, पूरा उत्पन्न मृदम होताहै पत्र वर्गाके पत्तोंकी
समान और सुमत्तोंमें आतेहैं । व्यवहार-पत्तोंकी छाल । मात्रा ३ मागेकी ।

आमलकीनामानि ।



आमलकीपचरसाश्रीफलीधात्रिकाशिवा ।

अकरामृतावयस्थाचवृष्यातिष्यफलातथा ॥

अर्थ—आमलकी, पचरसा, श्रीफली, धात्रिका, शिवा, अकरा, अमृता-
वयस्था, वृष्या, तिष्यफला, (वय'स्था, कायस्था, बहुफली, शान्ता, धात्री,
अमृतफला, वृत्तफला, रोचनी, कर्पफला, तिष्या, धात्रीफल, श्रीफल, अमृ,
तफल, शिव, आमलक, जातीफल)

संस्कृतभाषामें आमलकी ।

हिन्दीभाषामें आमला ।

बंगभाषामें आम्ला ।

मराठीभाषामें आवळा ।

गुजरातीभाषामें आवला ।

कर्णाटकीभाषामें नेलि ।

तैलिङ्गीभाषामें उसर काय ।

उत्तु अडा ।

इंग्रेजीभाषामें एब्लि कमिरो वेल्ट् । Emblic myrobalan

लैटिनभाषामें फिलेक्स एम्बिका Phylakhus Amblica

फारसीभाषामें आम्लझ ।

अरबीभाषामें अमृल्जु ।

भस्वाशुणा ।

आमलकपायाम्लमधुरंशिशिरलघु ।

दाहपित्तवमीमेहशोषप्रं चरसायनम् ॥ (राजनिघण्टु)

अर्थ-आमला-कपेला, अम्ल, मधुर, शीतल, हलका तथा दाह, पित्त, वमन, प्रमेह और शोषका नाशकरे हैं और रसायन हैं ।

आमलक्या फलं किंचित्कटुकं स्वादु तित्तकम् ।

अम्लचतुवरंशीतं जरा व्याधिविनाशनम् ॥

वृष्यं केश्यं सारकं च हितचारु चिनाशकम् ।

रक्तपित्तप्रमेहं विपजृतिं वर्मिं तथा ॥

आध्मानवद्धिद्विकत्वशोथशोषतृपां तथा ।

रक्तस्य विकृतिं चैव त्रिदोषं चैव नाशयेत् ॥

अम्लत्वाद्वातहप्रोक्तमाधुर्याच्चैव शीततः ।

पित्तनाशकरं चोक्तं रुक्षत्वाच्च कपायतः ॥

कफनाशकरं प्रोक्तं पूर्वविद्याविशारदे ।

अर्थ-आमला-किञ्चित् कटु, स्वादिष्ठ, कटुवा, अम्ल, कपेला, शीतल, जरा व्याधिविनाशक, वीर्यजनक, केशाको हितकारी, स्तावर, हितसारक, अरुचिनाशक, तथा रक्तपित्त, प्रमेह, विष, ज्वर, वमन, आध्मान (अपाग) मलमदता, सूजन, शोष, पित्तास, रक्तवितार और त्रिदोषना नाश करे हैं ।

आमला-खट्वेपनसे वातका, मधुरगुण और शीतलतासे पित्तका और कपे-रेपनसे तथा रुक्षतासे कफका नाशकरे हैं, इसप्रकार आमला त्रिदोषनाशकर है ।

शुष्कामलवगुणा ।

आमलस्य फलशुष्कं तित्तमम्लकटुस्मृतम् ।

मधुरं तु रक्थं भग्नसन्धानकारकम् ॥

धातुवृद्धिकरं चैव लेपनात्कातिकारकम् ।

पित्तकफं तृपां घर्मं मेदो गविष तथा ॥

त्रिदोषनाशयत्येव पूर्वाचार्यैर्निरूपितम् । (नि० २०)

अर्थ—सूखा आमला—कडवा, खट्टा, चरपरा, मीठा, कपेला, केशोको हितकारी, भयसन्धानकारक, धातुवर्द्धक और नेत्रोंको हितकारी है । इसका लेप करनेसे देहकी काति बढ़ती है, तथा पित्त, कफ, तृषा, पसीना, मेद, विष और त्रिदोषनाशक है ।

अस्य मज्जागुणा ।

तन्मज्जाप्रदरच्छर्दिवातपित्तज्वरापहा ।

कपायामधुरावृष्याश्वासकासनिबर्हणा ॥

अर्थ—इसकी मींग प्रदररोग, वमन, वात, पित्त और ज्वरको दूर करेहै । तथा कपेली, मधुर, वीर्यजनक, श्वास और खासीको नष्ट करेहै ।

यस्ययस्यफलस्येहवीर्यंभवतियादृशम् ।

तस्यतस्यैववीर्येणमज्जानमपिनिर्दिशेत् ॥ (भा०प्र०)

अर्थ—जिस जिस वृक्षके फलमें जैसा जैसा वीर्य होताहै, वैसाही उसकी मींगमेंभी जानना ।

विवरण—इसका चडा वृक्ष घाग और जगलमें होताहै, पत्ते छोटे छोटे इमलीके समान होतेहैं, इसकी शाखाओंपै छोटी छोटी लाईके दानेकी समान पीले फूल होतेहैं, फल तैदूकी समान गोल और झुमकोंमें लगते हैं । फलके ऊपर छ' रेखा अत्यन्त सूक्ष्म होती है ।

व्यवहार—फलकी छाल । माना ४ मासेकी ।

शुण्ठीनामानि ।



शुण्ठीमहोपधीविश्वाशुष्काद्रंविश्वभेपजम् ।

भेपजशृङ्गवेरश्चविश्वकफारिनागरम् ॥

अर्थ—शुण्ठी, महोपधी, विश्वा, शुष्काद्रं, विश्वभेपज, भेपज, शृङ्गवेर,

विश्व, कफारि, नागर (महीपध, शुण्ठि, इन्द्रभेषज, विश्वीपध, कटुप्रस्थि, कटुभद्र, शुण्ठय, कटूत्कटक, कटूपण, सौवर्ण, आर्द्रक, शोषण, नागगद्ग, आर्द्रज, औषध)

| | |
|-----------------|-------------------|
| संस्कृत भाषामें | शुठी । |
| हिन्दी भाषामें | सौंठ, शुठी । |
| वङ्गभाषामें | शुठ-ठ । |
| मराठीभाषामें | मुठ । |
| गुजरातीभाषामें | शुण्ठ । |
| कर्णाटकीभाषामें | शुठि । |
| तैलिङ्गीभाषामें | शौठी । |
| इंग्रेजीभाषामें | टाइजंगर । Dyngger |
| फारसीभाषामें | जजवील । |

अस्या गुणाः ।

शुण्ठीरुच्यामवातघ्नीपाचनीकटुकालघु ।
स्निग्धोष्णामधुरापाकेकफवातविबन्धनुत् ॥
वृष्यासर्पावमिश्रवासशूलकासद्धामयान् ।
हन्तिश्लेपदशीतार्शआनाहोदरमारुतान् ॥
आग्नेयगुणभूयिष्ठतोयांशपरिशोषियत् ।
सगृह्णातिमलतत्तुग्राहिशुण्ठ्यादयोयथा ॥
विवन्धभेदनीयातुसाकथग्राहिणीभवेत् ।
शक्तिर्विवन्धभेदेस्याद्यतो नमलपातने ॥ (भावप्रकाश)

अर्थ—सौंठ—रुचिकारी, आमवातनाशक, पाचक, चरपरी, हलकी, स्निग्ध, उष्णरीत्य, पाकमें मधुर वर वान और विबन्धको दूर करे। वीर्यरक्षक, मासक तथा वमन, श्वास, शूल, ग्रासी, हृदयरोग, शीपण, शोक, घरागीर अफारा, उदररोग और वातके रोगाका नाश करे। जो द्रव्य आग्नेयगुण, विशिष्ट है और जलांशोपक है, मलका ग्रहण करना है निमग्नकार सौंठ आदि पदार्थ ग्राही है, कोई फई कि जो विबन्धको भेदन करनेवाली है वह वैसे ग्राही रोगवाली है तो कहते हैं कि सौंठमें विबन्धभेदकी शक्ति है, पान्थु मलपातकी नहीं ।

अयञ्च ।

नागरं कफवातघ्नविपाकेमधुर कटु ।

वृष्योष्णं रोचनं हृद्य सस्नेहलघु दीपनम् ॥

पाण्डुं सग्रहणीं पित्तनाशयेदितिकीर्तितम् ।

अर्थ—सोंठ—कफ वातनाशक, पचनेमें मधुर, चरपरी, वीर्यवर्द्धक गरम, रोचक, हृदयको हितकारी, स्नेहयुक्त, हलकी और दीपन है तथा पाण्डुरोग, सग्रहणी और पित्तका नाश करे है ।

आर्द्रकनामानि ।

अदरख.



आर्द्रकशृङ्गवेरस्यात्कटुभद्रं कटूत्कटम् ।

अर्थ—आर्द्रक, शृङ्गवेर, कटुभद्र, कटूत्कट, (गुल्ममूल, मूलज, कन्दर, वर, महीज, सैकतेष्ट, अनृपम, अपाकृष्णक, चन्द्रारय, राहुच्छन्न, मुशाकक, शार्ङ्ग, आर्द्रशाक, मच्छाक, आर्द्रिका)

संस्कृतभाषाम्

आर्द्रक ।

हिन्दीभाषाम्

अदरख—क ।

वगभाषाम्

आदा ।

मराठीभाषाम्

आल ।

गुजरातीभाषाम्

आदु ।

कर्णाटकीभाषाम्

अल ।

तेलिङ्गीभाषाम्

अल ।

इंग्रेजीभाषाम्

जिजिरेट । Gingerroot

अरबीभाषाम्

जिजिलिर ।

लैटिन्भाषामें
फारसीभाषामें

जिजिवरओफिमिनेली Gm. lib. r Officiale
जिजिविलग्गव ।
अस्य गुणा ।

आर्द्रिकाभेदनीगुर्वीतीक्ष्णोष्णादीपनीमता ।

कटुकामधुरापाकेरूक्षावातकफापहा ॥ (भावप्रकार)

अर्थ-अदृग्व-भेदक, भारी, तीक्ष्ण, उष्ण, दीपन, चरपग, पाकम मरु
रूक्ष, वात और कफनाशक है ।

अपिच ।

शृंगवेरंरसेपाकेशीतलमधुरंलघु ।

कटुकोष्णश्चहृद्यश्चभेदकंचाग्निदीपकम् ॥

रूक्षरुचिप्रदवृष्यंपाचकसारकमतम् ।

कण्ठ्यमग्नेमांघ्रहरशोधारुचिकफापहम् ॥

वातंकण्ठरुजंकासंश्वासमानाहवातकम् ।

मलबंधंविमिशूलनाशयेदितिकीर्तितम् ॥

तस्यांकुरारसाभावात्कफवातकरामता ।

रक्तदोषस्यशमनास्तेवृद्धा कफनाशकाः ॥

काजिकासेन्धवचाद्रंपाचकंचाग्निदीपनम् ।

मलबाधामवातानांकफवातविनाशकम् ॥

केवललवणेनाथमिश्रितंचाग्निदीपनम् ।

रुच्यप्रियंसरप्रोक्तशोथवातकफापहम् ॥

भोजनात्पूर्वपश्चात्तु कण्ठजिह्वाविशोधकम् ।

जम्बीरसेन्धवयुतरुचिदमुखशुद्धिकृत् ॥

मूत्रकृच्छ्रपाण्डुरोगरक्तपित्तं व्रणतथा ।

मूत्राश्रमरीज्वरदाहंपित्तप्रीप्पेशरद्यपि ॥

अर्थ-अदृग्व रसम और पावमें मरु

हितकारी, भेदक (दस्तावर) अग्निको दीपनकरनेवाला, सूखा, रुचिको उत्पन्न करनेवाला, वीर्यजनक, पाचक, सारक, कण्ठको हितकारक तथा मटाभि, सूजन, अरुचि, कफ, वात, कण्ठरोग, खँसी, श्वास, आनाह, वात, मलबन्ध, वमन और शूलका नाश करेहै ।

काजी-और सैन्धव खगपुक्त अदरख-पाचक, अग्निप्रदीपक तथा मल-बन्ध और आमवातका नाश करेहै ।

केवल लवणमिश्रित अदरख-अग्निको दीपन करे, रुचिको उत्पन्न करे, प्रिय, सारक तथा सूजन, वा । और कफका नाशक है ।

भोजनके प्रथम भक्षण कियाहुआ अदरख-कण्ठ और जिह्वाको शुद्ध करेहै । ज्वारी नीबू और सेंधानोनके साथ अदरख मुखको शुद्धि करेहै तथा मूत्रकृच्छ्र, पाण्डुरोग, रक्तपित्त, घाव, मृत्रगम, पयरी, ज्वर, दाह और पित्तको शग्दूक्तुमे तथा ग्रीष्मऋतुमे नष्ट करे है, शेष गुण सांठकी समान जानने ।

द्रव्यगुणा ।

वातपित्तकफेभानांशरीरवनचारिणाम् ।

एकएवनिहत्यत्रलवणार्द्रककेसरी ॥

अर्थ-वात, पित्त, कफरूपी हाथी जो वनरूपी शरीरमे विचरण करते हैं उनके मारनेको एकही महापराक्रमी लवण और अदरखरूपी सिंह है ।

भोजनाग्रेसदापथ्यलवणार्द्रकभक्षणम् ॥

अर्थ-भोजनके आदिमे अर्थात् प्रथमे लवणमिश्रित अदरखका सेवन करना सदा पथ्यहै ।

निषेधः ।

कुष्ठपाण्ड्वाग्रयेकृच्छ्रेरक्तपित्तव्रणज्वरे ।

दाहेनिदाघेशदिनैवपूजितमार्द्रकम् ॥

अर्थ-अदरख-कोढमें, पाण्डुरोगमे, मूत्रकृच्छ्रमे, रक्तपित्तमे, मृत्रगमे, ज्वरमे, दाहमे, निदाघमें, शीष्मऋतुमें और शरदऋतुमें अपथ्य है । ऐसा भाव-मिश्रमे लिखाहै ।

विवरण । अदरखका गुल्म होताहै, रेतली भूमि और सजल स्थानमे अधिकतासे उत्पन्न होताहै, पत्ते छोटी इलायचीके समान होते हैं, इनके

कन्दकोटी अद्वय कहते हैं । उसी कन्दको मुखावर मोठ बनाते हैं, मोठ की अनेक जाती हैं ।

मरिचनामानि ।



मरिचपवितश्यामरेणुजयवनप्रियम् ।

बल्लीजवेळजं शुद्ध कोल क धर्मपत्तनम् ॥

अर्थ-मरिच-पवित, श्याम, रेणुज, यवनप्रिय, बल्लीज, वेल्ज, शुद्ध, कोलक, धर्मपत्तन, कोल, (ऊष्ण, वायु, यमनष्ट, घृत्तन, शाराद्र, रेणुक, कटुक, शिरोवृत्त, वाय, कटुविरोधि, मृष्ट, गवंहित, कृष्ण)

मितमरिचनामानि ।

सितमरिचशीतोत्थमितवल्लीजंचवालकचहुलम् ।

धवलंचन्द्रकमेतन्मुनिनामगुणाधिकचवश्यकरम् ॥

अर्थ-सितमरिच-शीतोत्थ मितवल्लीज, वाल्क चहुल, धवल, चन्द्रक,

(मितान्य)

सहस्रभाषामं

हिन्दीभाषामं

बगभाषामं

मराठीभाषामं

गुजरातीभाषामं

कन्नड़भाषामं

तमिलभाषामं

तामिलभाषामं

मरिच, मितमरिच ।

कार्यामरिच, सदेव मित्र । मितगी मित्र ।

मरिच, मालमरिच, माशामरिच ।

मिर-चाट्टे, मिरि ।

मर्ग, तीरात, पोन्मर्ग ।

मेणमु, बिन्नेमरेणमु ।

मरिया, मिप्पन ॥

मिन्गु, मिन्गो ।

अंग्रेजीभाषामे
लैटिनभाषामे
फारसीभाषामे
अरबीभाषामे

ब्लैकपेपर Black Pepper
पाईपर नैग्रम । Piper Nigrum
पिल पिले अस्वद् हल पिलेगिर्द ।
फिल फिलेअवीद ।

अस्यगुणा ।

मारिचकटुकतीक्ष्णदीपनकफवानजित् ।

उष्णपित्तकररूक्षश्वासशूलकृमीन्हरेत् ॥

तथाद्रं मधुरपाके नात्युष्णं कटुकगुरु ।

किञ्चित्तीक्ष्णगुणश्लेष्मप्रसेकि स्यादपित्तलम् ॥ (भा प्र)

अन्यञ्च ।

अर्थ—कालीमिरच—चरपरी, तीक्ष्ण, अग्निको दीपन करनेवाली, कफ वातनाशक, गरम, पित्तजनक, रूखी तथा श्वास, शूल और कृमिको नष्ट करेहै । कच्ची कालीमिरच—पाकम मधुर, किंचित् उष्ण, चरपरी, भागी, ईषत् तीक्ष्ण, कफको निकालनेवाली और पित्तकायक नहींहै ।

सितमारिचगुणा ।

कटूष्णलघुतच्छुष्कमवृष्यकफवातजित् ।

नात्युष्णनातिशीनञ्चवीर्यतोमारिचसितम् ॥

गुणवन्मारिचेभ्यश्चक्षुष्यञ्चविशेषतः ॥ (सुश्रुतसंहिता)

अर्थ—सफेद मिरच—चरपरी, गरम, हल्की, अवृष्य, कफ वातनाशक इसका वीर्य न अत्यन्त गरमहै और न अत्यन्त शीतलहै, इसके गुण काली मिरचके समान हैं, परन्तु विशेषकर नेत्रोंको हितकारी है ।

अपिच ।

कटूष्णश्वेतमारिचविषघ्नभूतनाशनम् ।

अवृष्यदृष्टिरोगघ्नयुक्तचैवरसायनम् ॥ (रा० नि०)

अर्थ—सफेद मिरच—चरपरी, गरम, विषनाशक, भूतनाशक, अवृष्य, दृष्टिगोविनाशक और किमीके साथ रसायनहै ।

अन्यञ्च—मारिचगुणा ।

मारिचकटुकतिक्तलघुवोष्णरुचिप्रदम् ।

अग्निपित्तकरतीक्ष्णमवृष्यद्वेष्टिशोपकम् ॥

रुक्षपित्तकरश्चैव रुफवातकृमीञ्जयेत् ।

श्वासकासंचह्मद्रोगंशूलचैव विनाशयेत् ॥

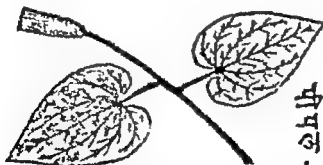
प्रमेहचार्यरोगश्चरथ्यप्रोक्तपुराविदैः । (निघण्टुरत्नाकर)

अर्थ—कालीभिरच—कडवी, चम्परी, हल्की, गरम रसिदायक, अप्रिप-
दोषक, तीक्ष्ण, अवृष्य, छेदक, शोषक, रुक्ष, पित्तकारक, तथा वात, वात,
कृमि, श्वास, साँसी, हृष्यरोग, शूल, प्रमेह और वनामीका नाश करे।

कडीभिरचका सेक करनेसे सूजन दूर होती है, गायके रीके साथ पिप्पीटुर
भिरचका व्यवहार करनेसे अश्वरोगका विषोग होता है। पत्र भिरचको मुँहके
नोकपर बंधकर उसको आगे जयरा दीपकी लोहरे जलावे, उगका धुआँ
सूत्रनेने टिचकी और शिरकी पीडा शान्त होती है ॥ भिरचम घी मिश्रितकर
रसानेमे अनेक प्रकारके नेत्ररोग विषय होता है ।

शिवरण । भिरच लता दक्षिणदेशके भिमापुर मल्लवागादीसी सादर
उपनाड भूमिम अधिकतासे उत्पन्न होता है, वहाँके रहनेवाले हमलताके
छोटे छोटे टुकड़े करके बड़े बड़े वृक्षाकी जटमें लगादेते हैं तीनपरम लताप
फल आता है फल पककर लाल होजाते हैं, परन्तु सुपुष्पानेपर कालांग
आजाता है । शाक इत्यादिमें कालीभिरच मगाला होगई । लाल भिरचके
पर्याय आगे लिखे हैं ।

पिप्पलीनामानि ।



पिप्पलीमानधीकृष्णाचपलाचञ्चलादृणा ।

उपकुल्याचकोल्याचवेदेहीति तत्तण्डुला ॥

अर्थ—पिप्पली—मानधी, कृष्णा चपला चञ्चला कृणा, उपकुल्या
कोल्या, वेदेही, तित्तण्डुला (उपुष्णा, शोष्णी, कोला कदी कण्डा, मगपा,

ऊपणा, पिप्पली, कृकला, कटुबीजा, कोरझी, तिक्ततण्डुला, श्यामा, सूक्ष्म-
तण्डुला, दन्तकफा, मगधोद्भवा)

| | |
|----------------|--------------------------|
| संस्कृतभाषामे | पिप्पली । |
| हिन्दीभाषामे | पीपल, (र) |
| बंगभाषामे | पिपुल । |
| मराठीभाषामे | पिपळी । |
| गुजरातीभाषामे | लिडिपीपल । |
| कर्णाटकीभाषामे | हिप्पली । |
| तैलिंगीभाषामे | पिप्पलु । |
| तामिलीभाषामे | पिपिलि |
| बम् | वङ्गालिपिप्परि । |
| इंग्रेजीभाषामे | लॉगपीप्पर । Long pepper |
| लैटिन्भाषामे | पाइपर लॉग । Piper Longum |
| फारसीभाषामे | पिल्पिल दराज । |
| अरबीभाषामे | डागफिल, फिल । |

अस्या गुणाः ।

पिप्पलीदीपनीवृष्यास्वादुपाकारसायनी ।
अनुष्णा कटुकास्निग्धावातश्लेष्महरीलघु ॥
पिप्पलीरेचनीहन्तिश्वासकासोदरज्वरान् ।
कुष्ठप्रमेहगुल्मार्शःप्लीहशूलाममारुतान् ॥
आर्द्राकफप्रदास्निग्धाशीतलामधुरागुरु ।
पित्तप्रशमनीसातुशुष्कापित्तप्रकोपिनी ॥
पिप्पलीमधुसयुक्तामेदकफविनाशिनी ।
श्वासकासज्वरहरावृष्यामेध्याग्निवर्धिनी ॥
जीर्णज्वरेऽग्निमान्द्येचशस्यतेगुडपिप्पली ।
कामाजीर्णारुचिश्वासहृत्पाण्डुकृमिरोगनुत् ॥
द्विगुण पिप्पलीचूर्णाद्बुडोऽन्नभिषजामत । (भा० प्र०)

अर्थ-पीपल अग्निको दीपन करनेवाली, वायुको उत्पन्न करनेवाली, पाकमें स्वादिष्ट, रसायन, किञ्चित् उष्ण, चरपी, स्निग्ध, वात-कफनाशक हलकी, दस्त रानेवाली तथा भ्राम, कास, उदरगै, ज्वर, पुष्ट, प्रमेह, गुल्म, (क्षयगै) चवामीर, शीघ्र, शूल और आमवातका नाश करे ।

कच्ची पीपल-कफको उत्पन्न करनेवाली, स्निग्ध, शीतल, मधुर, भारी, पित्तको शान्त करनेवाली, और मर्षी पीपल, पित्तको गुणित करनेवाली ।

समुपुक्त पीपल-मेदरोग, कफ, भ्राम रौंसी और ज्वरनाशक, वीर्य-वर्द्धक, मेधाजनक और अग्निवर्द्धक है, गुडोपश्रित पीपल जीर्णज्वर, हृदय-गै, मदाग्नि रौंसी, अजीर्ण, अकृचि भ्रान, पाण्डुरोग और क्रामिगैका नाश करे ।

पीपलका चूर्ण और सोडका चूर्ण गुड मिश्रकर खानेमें आम, शूल, अजीर्ण और सृजन दूर होती है ।

पीपलको नीमके रसमें उधानकर नाग देनसे अपस्मारगै दूर होता है ।

पीपलके काटेमें सहन मिश्रकर खानेमें वातज्वर और कफज्वर दूर होता है ।

सहतमें पीपलका चूर्ण मिश्रकर खायेने मूत्रशरंग दूर होता है ।

विवरण-पीपलकी चर जगवार और मगधदेशमें अधिकतामें उत्पन्न होती है, इसके पत्ते नागवर्ती अर्थात् पानके समान होते हैं ।

पिप्पलीमूलनामनि ।

मूलमुपिप्पलीमूलग्रन्थिकचटिकाशिर ।

कणामूलंकोलमूलचटिकासर्वग्रन्थिकम् ॥

अर्थ-मूल-पिप्पलीमूल, ग्रन्थिक, चटिकाशिर, कणामूल, कोलमूल, चटिका, सर्वग्रन्थिक (मंथीक, पट्टग्रन्थिक, शिर, मट्टग्रन्थिक, पट्टमूल, चट्टपण, सर्वग्रन्थिक, पत्राटय, विरूप, शोषणम्भव, मुगन्थिक, मयिल, उषण, मागध, मागधीजडा)

मंथुगभाषाम

पिप्पली ।

दिदीभाषाम

पीपल (ला । मूल ।

वंगभाषामें

पिप्पली

मगधभाषामें

पिप्पली ।

गुजरातीभाषामें
कर्णाटकीभाषामें
तैलिङ्गीभाषामें
इंग्रेजी भाषामें
लैटिनभाषामें
फारसीभाषामें
आरबीभाषामें

पीपरीमूलना गठांडा ।
पिप्पलियवेरु ।
पिप्पली वेरुपिप्पलीदुम्य ।
पाईपररूट Paper root
पाइपर ओफिसिनेर Paper officinarum
फिल्फिल् नोया ।
असडुल् फिल्फिल् ।

अभ्यगुणा ।

दीपनपिप्पलीमूलकटूष्ण पाचनलघु ।

रूक्षपित्तकरभेदिकफवातोदरापहम् ॥

आनाहप्लीहगुल्मघ्नकृमिश्वासक्षयापहम् । (भा० प्र०)

अर्थ—पीपरामूल—जठराग्निको दीपन करे, चरपरा, गरम, पाचक, हलका, रूखा, पित्तकारक, भेदक तथा कफ, वात, उदररोग, आनाह, प्लीहा, गुल्म, कृमि, श्वास और क्षयरोगका नाश करे है ।

अपिच ।

भेदनपिप्पलीमूलकासामशूलनाशनम् ।

पित्तप्रकोपितीक्ष्णोष्णरूक्षपाचनगेचनम् ॥

अर्थ—पीपरामूल—दस्तावर, खासी, आम और शूलनाशक । पित्तको कुपित करे, तीक्ष्ण, उष्ण, रूक्ष, पाचक और रोचक है ।

चक्षिरानामानि ।

चव्यचवणमुच्छिष्टचविक्रकोलवल्लिका ।

अर्थ—चव्य, चवण, उच्छिष्ट, चविका, कोलवल्लिका, (चव्या, चविक, चवी, चवि, पुरन्दर, तेजोवती, कोला, नाकुली, उपणा, चव्यक, वगिर, गन्धनाकुली, वली, कोलवल्लि, कोल, कुस्तुटमस्तक, तीक्ष्णकणिकावली, कृकर, कुटिलसप्तक कटुका, कटुपाकिनी)

मस्कृतभाषामें

चविका, चव्य ।

हिन्दीभाषामें

चव्य ।

वगभाषामं
मराठीभाषामं
गुजरातीभाषामं
कणादकीभाषामं
तैलिंगीभाषामं
लैटिन्भा०

चई गारुड ।
मिग्वेलीचे मूत्र, चवड ।
चवक ।
चव्य ।
सेवामु, चैफार्ण ।
चविका, एकम वर्षी आई पाइपचव ।
Charles F. Webb's Azo Paper Chai ।
अन्यागुणा ।

चव्यस्यादुष्णकटुकलघुरोचनदीपनम् ।

जन्तुद्वेकापहकासश्वासशूलार्तिकृन्तनम् ॥ (राजनि०)

अर्थ-चव्य-गम, चरपरी, हलकी, रोचक, जठराग्निप्रदीपक तथा शूलि, खाती, आम और शूलविनाशक है ।

अपिच ।

पिप्पलीमूलवत्तस्याविशेषाद्द्वजापहम् ।

चव्यपुष्पंगरश्वासकामक्षयविनाशनम् ॥ (म०नि०)

अर्थ-चव्यके गुण पिपलायूके समान हैं, विशेषकर शूलके रोगोंको दूर करे हैं ।

इसका पृथ-विष, आस, रोगों और क्षय रोगनाशक है ।

अन्यत्र ।

चवकंकटुकचोष्णरुच्यंचाग्रेश्चदीपनम् ।

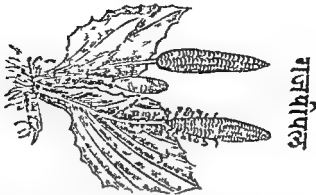
लघुकंचकुमिश्रासकासघातकफापहम् ॥

ज्वरार्शःशूलशमनमृषिभिःपरिर्कीर्तितम् ।

अन्येगुणास्तुविज्ञेयाःपिप्पलीमूलवद्वधेः ॥

अर्थ-चव्य-चापम, गम, अतिरसक जठराग्निप्रदीपक, हलकी तथा शूलि, आम, रोगों, खाती, चवक, ज्वर, पचारी और शूलका नाश करे हैं ।
और गुण पिपलायूके समान जानने चव्यको केवल जलवागम दोषोंके, इसको मन्त्रोपयोग करते हैं ।

गजपिप्पलीनामानि ।



चविकाया फलप्राज्ञे कथितागजपिप्पली ।

कपिवल्लीकोलवल्लीश्रेयसीवशिरश्चसा ॥

अर्थ—चव्यके फलकोही भिषक लोक गजपीपल कहते हैं । कपिवल्ली, कोलवल्ली, श्रेयसी, वशिर, गजकृष्णा, (करिपिप्पली, इभकणा, कपिवल्ली, कपिलिका, कपिवल्लिका, वसिर, गजाद्वा, इभोपणा, कुञ्जरपिप्पली, गजोपणा, चव्यफल, चव्यजा, त्रिद्रवदेही, दीर्घग्रन्थि, तेजसी, वतुली, स्थूलवदेही)

संस्कृतभाषाम

गजपिप्पली ।

हिन्दीभाषाम

गजपीपल ।

वगभाषामें

गजपिपुल ।

मराठीभाषामें

मोरवेलीला पिपळ्या येतात ती ।

कर्णाटकीभाषाम

गजहिप्पली ।

गुजरातीभाषामें

गजपीपर ।

तैलङ्गीभाषामें

पद्मापिप्पलु ।

लैटिन्भाषाम

प्लेन्टेगोएम्प्लेनिकुलिस कोलिस् सिन्डाप्सल्

जोफिर्मिनेलिस् Plantago Amplicaulis

Scandapans Officinalis

‘हस्यागुणा’ ।

गजकृष्णाकटुर्वातश्लेष्मद्वृद्धिर्वर्द्धिनी ।

उष्णानिहत्यतीसारश्वासकण्ठामयक्रिमीन् ॥

अर्थ—गजपीपल—चरपरी वातकफनाशक, अग्निवर्द्धक, गरम तथा अति-मार, श्वास, कण्ठरोग और कृमीका नाश करेहे ।

अपिच ।

गजोपणाकट्टणाचरुक्षामलविशोधिनी ।

बलासवातहन्त्रीचरतनकर्णविवर्द्धिनी ॥ (गजनि०)

अर्थ-गजपीपर-चरपरी, गरम, रुखा, मलशोधक वरु घातनाशक, स्तन और कर्णवर्द्धक है ।

अपिच ।

गजोपणाकट्टणाचतीक्ष्णामलविशोधिनी ।

बलासवातहन्त्री च स्तनलिंगविवर्द्धिनी ॥

अर्थ-गजपीपर-चरपरी, गरम तीक्ष्ण, मलशोधक तथा वरु, वातनाशक स्तन और लिंगवर्द्धक है ।

सिंहलीविपरीतामानि ।

सिंहलीसर्पदण्डाचसर्पाङ्गीरक्षभूमिजा ।

पार्वतीशैलजामूललम्बीजातयोत्कटा ।

अद्रिजासिंहलस्थानलम्बदन्ताचजीवला ।

जीवालाजीवनेत्राचकुम्भीपोहशाहया ॥

अर्थ-सिंहली, सर्पदण्डा, सर्पाङ्गी, रक्षभूमिजा, पार्वती, शैलजामूल, लम्बीजा, उत्कटा, अद्रिजा, सिंहलस्था, लम्बदन्ता, जीवला, जीवाला, जीवनेत्रा, कुम्भी ।

अस्या शुभा ।

सिंहलीकट्टुरुपणाचजन्तुर्भीदीपनीपरा ।

कफश्वाससमीरार्तिशमनीकोटशोधिनी ॥ (गजनिघण्टु)

अर्थ-सिंहलीपीपर-चरपरी, गरम, कृमिनाशक जट्टगामिका शोषन कर-नाशक तथा कफ, श्वास और वातका पीडाही नाशक करनेवाली और कटिही शुद्ध करे है ।

वनपिप्पलीनामानि ।

वनादिपिप्पल्यभिधानयुक्तं सूक्ष्माद्रिपिप्पल्यभिधानमेतत् ।

क्षुद्राचपिप्पल्यभिधानयोग्यं वनाभिधापूर्वकणाभिधानम् ॥

अर्थ-वनपिप्पली, सूक्ष्माद्रिपिप्पली, क्षुद्रपिप्पली, वनकना ।

अस्या गुणा ।

वनपिप्पलिकाचोष्णातीक्ष्णारुच्याचदीपनी ।

आमाभवेद्गुणाद्यातुशुष्कास्वल्पगुणास्मृता ॥ (राजनिघण्टु)

अर्थ-वनपीपल-गरम, तीक्ष्ण, रुचिकारक और अग्निप्रदीपक है, कर्षी वनपीपल अधिक गुणवाली है और सूखी स्वल्प गुणवाली है ।

मर्कटीपिप्पलीगुणा ।

मर्कटीपिप्पलीतिकातुवरासुरास्मृता ।

मूत्रकृच्छ्राश्मरीयोनिशूलविस्फोटकाजयेत् ॥ (नि०र०)

अर्थ-वानरीपीपल-कड़वी, कपेली, स्वादिष्ठ तथा मूत्रकृच्छ्र, पथरी, योनिशूल और विस्फोटकका नाश करेहै ।

चित्रनामानि ।



चित्रकोऽनलनामाचपाठीव्यालस्तथोपण ।

अर्थ-चित्रक, अनलनामा, पाठी, व्याल, उपण, (कृष्णवर्त्मा, जातवेदा, वर्दि, विभाकर, विभावसु, बृहद्गानु, वैश्वानर, शिखावान्, शुचि, शुष्मा, मत्तांच, हिमाराति, हिरण्यरेता, अग्नि, शार्दूल, चित्र, पाठी, कुट, शिखी, कृशानु, दहन, व्याल, ज्योतिष्क, पालक, अनल, दारुण, वदि, पावक, शम्बर, द्वीपी, चित्राङ्ग, दाहक, शूर, पाठीन, दारुण, अग्निक, वलरी, पाली, कुट, शिखी, लोहिताङ्ग, हुतमुक, माली, वदि, पाची, वह्निनामा)

रक्तचित्रनामानि ।

कालोव्यालकालमूलोतिदीप्योमार्जरोग्निर्दाहकपावकश्च ।

चित्राङ्गोयंरक्तचित्रोमहाङ्ग स्यादुद्राहश्चित्रकोन्योगुणाढ्य ॥

अर्ध-काल, व्यास, कालमूल, अतिनीप्य, मार्जार, अग्नि, दाहक पाव
क, चिनाक्ष, रक्तचित्र, मढाक्ष, (रक्तचित्रक, उपर्युपाक्ष्य, द्रुपाक्षे, पाठी,
ह्रस्वाग्रि)

मस्कृतभाषामं

चित्रक रक्तचित्रक ।

हिन्दीभाषामं

चीता, टालचीता ।

बंगभाषामं

चितेगाछ णटभिते, निता ।

मराठीभाषामं

चित्रक, रक्तचित्रक ।

कणाडकीभाषामं

चित्रमूल, केपिनचित्रमूल ।

तेलङ्गीभाषामं

चित्रमूलमु णगिय ।

तामिलीभाषामं

जिवपु, चित्रि ।

उर्दू

घुरगिता, रक्तगिता ।

गुजरातीभाषामं

चित्रो ।

लैट्निभाषामं

प्रावेगोरोदिक्ष्या-धुवेगोर्क्षलेनिरा ।

Phunbago roma Phunbago Zoslangia

फारसीभाषामं

वेगगंदा ।

आरबीभाषामं

जितरक्ष ।

इंग्रेजीभाषामं

पलविगोर्क्षलेपेगो ।

अस्य गुणाः ।

चित्रक कटुकः पाके वह्नि कृत्पाचनो लघु ।

रुक्षोष्णो मृदणीकुष्ठशोफार्थ कृमिकासनुत् ॥

वातश्लेष्महरो ग्राही वातार्थ श्लेष्मपित्तहृत् ॥ (भा० प्र०)

अर्ध-चीता-पाचनं चारपादे, अग्निकायक, पायक, हलका, व्यास,
गम्य तथा मृदाणी, कोट, सुन्न, घासीर, रुमि, रौली और माठ
करता नाश करे । ग्राही है तथा वादीर्चा मरागोर, और फारसिकों
दूर करे ।

अन्वयः ।

चित्रक पाचको रुक्षो लघुश्चाग्निपदीपनः ।

पाके कटुग्राहकश्च तिकोष्णो रुचिदो मतः ॥

रसायनो निमृदशः शोथकुष्ठार्थकामदा ।

कृमीन्वातोदरकण्डूयकृतग्रदणीतया ॥

आमक्षयचोदरंचनाशयेदितिकीर्तितः ।

कटुत्वात्कफह।प्रोक्तस्तित्त्वात्पित्तनाशकः ॥

उष्णत्वाद्दानहा।प्रोक्तोमुनिभिस्तत्त्वदर्शिभि ॥(नि०र०)

अर्थ—चीता—पाचक, रूखा, हलका, अग्निदीपक, पाकके समय चरपरा, ग्राही, कडुवा, गरम, रुचिदायक, रसायन, अग्निकी समान पराक्रमी तथा सृजन कोढ, बवासीर, खासी, कृमि, वातोदर, कण्डू, यकृत, सग्रहणी, आम, क्षय और उदररोगका नाश करेहै ।

यह चरपरेपनसे कफका, कडवेपनसे पित्तका और उष्णतासे वातका नाश करेहै, इसप्रकार चीता त्रिदोषनाशकहै ।

रक्तचित्रकगुणा ।

स्थूलकायकगेरुच्य-कुष्ठघ्नोरक्तचित्रक ।

रसेनिग्रामकोलोहेदधकृश्वरसायन ॥ (रा० नि०)

अर्थ—लालचीता—देहको स्थूल करनेवाला, रचिकारी, कुष्ठनाशक, पाँरेको बाधनेवाला, लोहेमें वेध करनेवाला, रसायन, और शरीरको नूतन करेहै ।

कृष्णचित्रकगुणा ।

केशा-कृष्णा-प्रजायन्तेकृष्णचित्रकभक्षणात् ।

कृष्णकृष्णममुत्पाट्यगोभिराघ्रातमेववा ॥

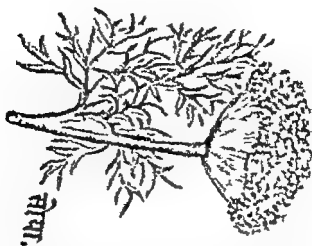
क्षीरमध्येक्षिपेद्वापिशारकृष्णप्रजायते ।

अर्थ—कालेचीतेको भक्षण करनेमें केश काले होजातेहैं, गायके सँगेदूध काले चीतेको लाकर दूधग डालनेसे दूध काला होजाताहै ।

विवरण । क्षुप होताहै, चीतेकी अनेक जातीह सफेद फूलका, लाल फूलका, काले फूलका, पीले फूलका, इनमें सफेद फूलका सर्वस्थानोंमें होताहै और लालफूलवाले तथा और फूलके चीते देखनमें बहुत कम आतेहैं ।

व्यवहार—मूल, मूलकी छाल, उत्त मात्रा ४ मासेकी ।

अतपुशनामानि ।



- शताह्वाशतपुष्पाचशताक्षीशतपुष्पिका ।

कारवीतालपर्णीचमाधवीशोफकामिमिः ॥

अर्थ-शताह्वा, शतपुष्पा, शताक्षी शतपुष्पिका, कारवी, तालपर्णी, माधवी, शोफका, मिमि (घोषा, शिवा अतिच्छा, अश्वपुष्पी, उषा, यथातपत्रिका, वज्रपुष्पी, सुपुष्पिका, शतप्रसन्ना, यदला, पुष्पादा, शतपत्रिका, शालेय, मिश्री, मालेय, मिमी, पानि, अदिच्छा, यथातपत्रिका, उषा तालपर्णी, मिमी, शालेया, शीतशिरा, शालीना, वजना जी अतिच्छा)

गंरुतभाषामे

शतपुष्पा ।

दिन्दीभाषाम

गोषा-गोषे ये यीच ।

वंगभाषामे

शुष्का ।

मराठीभाषाम

चाटवोष ।

गुजरातीभाषामे

गुजराती भारती-श्यामणा ।

गण्डकीभाषाम

नलमिमि ।

नेल्दीभाषामे

वेदतापपेष्ट-मदापा ।

इमितीभाषाम

शिमोड ।

Del and

मिदिभाषाम

परिव मरीयातु आरुता, गिरेत-ल

हताभाषामे

शुन-मुद्रेश्व ।

आर्षभाषामे

शीतल वज्रक गीपव ।

शतपुष्पागुणा ।

शतपुष्पालघुस्तीक्ष्णापित्तकृदीपनीकटुः ।

उष्णाज्वरानिलश्लेष्मघ्नशूलक्षिरोरुहृत् ॥ (भा० प्र०)

अर्थ—सोया हलका, तीक्ष्ण, पित्तजनक, जठराग्निको दीपन करनेवाला, चरपग, गरम तथा ज्वर, वात, कफ, घ्न, शूल और नेत्ररोगोको हर्हे ।

अपिच ।

शतपुष्पाकटुस्तिक्तातीक्ष्णोष्णादीपनीलघु ।

पित्तलाकफवानघ्नीविशेषाद्योनिशूलनुत् ॥ (ग० नि०)

अर्थ—सोया—चरपरा, कडवा, तीक्ष्ण, गरम, अग्निप्रदीपक, हलका, पित्त-कारक, कफ वातनाशक और विशेष करके योनिशूलका नाश करेहै ।

अन्यच्च ।

शताह्वापित्तलालघ्वीतिक्ताकटुग्निदीपनी ।

उष्णामेध्यावस्तिकर्मप्रशस्ताकफनाशिनी ॥

वातज्वरश्चशूलश्चयोनिशूलश्चनाशयेत् ।

आध्मानचक्षूरोगश्चघ्नघ्नचैवविनाशयेत् ॥

अर्थ—सोया- पित्तजनक, हलका, कडवा, चरपग, अग्निदीपक, गरम, मेधाजनक, वस्तिकर्मम प्रशस्त तथा कफ, वात, ज्वर, शूल, योनिशूल, आध्मान, नेत्ररोग, घ्न और कृमिका नाशकरेहै ।

शस्या आकृतिः ।

शतपुष्पासूक्ष्मपत्रापीतपुष्पातिछत्रका ।

प्रसिद्धाक्षेत्रविख्यातादीपनोक्ताग्रहर्षिभिः ॥

अर्थ—सोयेके पत्ते सूक्ष्म होतेहैं, फूल पीला होताहै, उग्र बहुत होतेहैं, ज्येष्ठम उत्पन्न होतेहैं और प्रसिद्ध है तथा दीपन है ।

मधुरिगानामानि ।

सितामधुरिकाचापिमाधुरीतापसप्रिया ।

गन्धाधिकाघोषवतीसुगन्धाचतृपाहरा ॥

अर्थ—सिता—मधुरिका, माधुरी, सापसप्रिया, गन्धाधिका, घोषवती सुगन्धा, तृपाहरा, (छत्रा, शालेय, शालीन, मिश्रेया, मधुरा, मिमी,

अन्यच्च ।

मिश्रेयामधुराक्षिग्धाकटु कफहरापरा ।

वातपित्तोत्थदोषघ्नीष्ठीहजन्तुविनाशिनी ॥ (राजनिघण्टु)

अर्थ—सौंफ-मधुर, क्षिग्ध, चगपरी, कफनाशक तथा वातपित्तके दोष, स्त्रीहा और कृमिको दूर करे है ।

अपिच ।

मिश्रेयागेचनीवृष्याद हपित्तास्रनाशिका ।

अर्थ—सौंफ-रुचिकारी, वीर्यजनक, तथा दाह और रक्तपित्तका नाशकरे है ।



अस्या जलगुणा ।

तज्जलशीतलरुच्यकटुदीपनपाचनम् ।

मधुरतृड्ढान्तिपित्तदाहचनाशयेत् ॥ (वि० ति० भा०)

अर्थ—सौंफका जल-शीतल, रुचिकारक, चगपरा, अम्लिको दीपन करने वाला, पाचक, मधुर तथा तृष्णा, वमन, पित्त और दाहको दूर करे है । इसके क्षुप सांघेकी समान खेत और वागोम होते हैं ।

मेधिकानामानि ।

मेयिकामेथिनीमेथीदीपनीवहुपत्रिका ।

वेधनीगन्धवीजाचज्योतिर्गन्धफलातथा ।

वल्लरीचन्द्रिकामन्यामित्रपुष्पाचकैरवी ।

कुञ्चिकावहुपर्णीचपीतवीजामुनीन्द्रिका ॥

अर्थ—मेथिका, मेथिनी, मेथी, दीपनी, बहुपत्रिका, वेधनी, गन्धवीजा, वल्लरीचन्द्रिका, मन्यामित्रपुष्पाचकैरवी, कुञ्चिका, वहुपर्णी, चपीतवीजा, मुनीन्द्रिका ।

उपोति, गन्धक, बलुग, चन्द्रिका, मन्था, मिश्रपुष्पा, कैवी, कुम्भिका,
पदुपर्णी, पीतवीजा, सुनीन्द्रिका ।



गम्भृतभाषामं
दिन्दीभाषामं
वगभाषामं
मराठीभाषामं
गुजरातीभाषामं
कर्णाटकीभाषामं
मैथिलीभाषामं
तामिलीभाषामं
उम्रेनी भाषामं
छाट्टाभाषामं
फारसीभाषामं
अरबीभाषामं

मेयिका ।

मेयी ।

मेवी ।

मेयी ।

मेयी ।

मेथपक ।

मेगुड ।

वन्द्यम ।

फेनुप्रोक्त । *Fenugreek*

श्रापगेनेला फेनग्रीक *Trigonella Lalana graecorum*

मुस्तमे शमपीत ।

बमरुड इत्या ।

भस्वागुजर ।

मेथिकायातशमनीश्लेष्मघ्नोज्वरनाशिनी ।

ततस्त्वल्पगुणाश्लेष्मायाजिनां सातुषूजिना ॥ (भा० प्र०)

अर्थ-मेथी-यातशो शांति करे, तत् और श्लेष्मा नाश करे, श्लेष्मी
शमनी अर्थ-स्वल्प गुणकारी है जो श्लेष्माश्लेष्मि नाशकर शिवाशरी ।

अर्थ- ।

मेथिकाकटुकगुणाचक्षुपित्तप्रशोषिनी ।

अनेचरुहरादीक्षिकरीयातमदी ॥ (राजनिषधु)

अर्थ-मेथी-चरपरी, गरम, रक्तपित्तनाशक, अरुचिहारक, दीमिकाशक, वातविनाशक और अग्निको दीपन करे है ।

अन्यत्र ।

मेथिकाकटुकाचोष्णारक्तपित्तप्रकोपनी ।

दीपनीचरसेतिका मलावष्टम्भिकालघु ॥

रूशाहृद्याबलकरीज्वरारोचकवान्तिहा ।

वातरक्तकफकासवातमर्शकुमीन्क्षयम् ॥

शुक्रचनाशयत्येषाप्रोक्तापूर्वचिकित्सकं । (नि०२०)

अर्थ-मेथी-चरपरी, गरम, रक्तपित्तको कुपित करनेवाली, दीपन, रसम कड़वी, मलावष्टम्भक, हलकी, रूखी, हृदयको हितकारी, बलकारक तथा ज्वर, अरोचक, वमन, वातरक्त, कफ, खोंसी, बाटी, चवामीर, कुमि और शुक्रका नाश करे है ।

अन्यत्र ।

मेथिकावातशमनीवेजिकावातलामता ।

अर्थ-मेथी-वातको शान्त करे है और वनमेथी वातको उत्पन्न करे है मेथी खेतमें बोईजाती है, फूल पीला होता है और कली आती है ।

चन्द्रशर्गनामानि ।

चन्द्रिकाचर्महन्त्रीचपशुमेहनकारिका ।

नदिनीकारवीभद्रावासुपुष्पासुवासरा ॥

अर्थ-चन्द्रिका, चर्महन्त्री, पशुमेहनकारिका, नदिनी, कारवी, भद्रा, वासुपुष्पा, सुवासरा, (अशालिक, कालमेपा, दरकृष्ण, दीर्घबीज, रक्तगर्जी, सिद्धमयोजना)

संस्कृत भाषाम् चन्द्रशूर, अशालिम ।

हिन्दी भाषाम् हालो हालिम ।

मराठी भाषाम् आहाळीव ।

गुजराती भाषाम् अशालियो ।

बंग भाषाम् हालिम ।

इंग्रेजी भाषाम् कामरू, क्रेस् । Common cress

लैटिन् भाषाम् लेपिडिय, सेटीव । Lepidium Sativum

फारसी भाषामें
अरबी भाषामें

हाटमनुष्यतरातेजक ।

हवुरशाद, हाकम, यजदलनिरजिर ।

अभ्यासणा ।

चन्द्रशूरहितद्विकावातश्लेष्मातिसारिणाम् ।

असृग्वातगदहेपिपलपुष्टिविवर्द्धनम् ॥ (भाप्रकार)

अर्थ-हालो-वात, रूय अतिमार और वातगोमका नाश करे, तथा
घात और पुष्टिबद्ध है । अपिष ।

दरकृष्णोवातशूलगुल्मन स्तन्यपुष्टिकृत् ।

बल्योवाजीकर पानाह्येपाच्छोणितशूलनुत् ॥ (गो० नि०)

अर्थ-हालो-वात, शूल और गुल्मनाशक है, स्तनोंमें दूध बढ़ानेवाला है,
बलकारक, वाजीकरणवाक्य, इसको पानीमें पीसकर धीमेसे तथा इगका
लेप करनेसे रुधिरगिरा और शूल नष्ट होता है ।

अपिष ।

अहलिममतचोष्णतिक्तत्वग्दोषनाशनम् ।

वातगुल्मनाशयतीत्येवप्रोक्तचिचित्सकै ॥ (नि० १०)

अर्थ-हाल-गम, पादना त्वचाके दोषोंका नाश करे तथा वात और
गुल्मनाशक है । अपिष ।

अभिघातकजहन्तिसदृग्धोहरकृष्णक ।

त्वग्दोषान्वातगोमांश्चनेत्रोगान्सशोणितान् ॥ (नि० नि०)

अर्थ-दृग्धपुक्त हालो-अभिघातगोन, त्वचाके रोग, वातगोन, नेत्ररोग और
रुधिरविनाशको हर करे इगका गरमता, गममान हुए दाता है । पृथ नीचे
गया होता है । भाषा = मामाही ।

यगार्जनामनि ।



अलिप्रामनि

यवानीदीप्यकोदीप्योभूतिकश्चयवानिका ।

यवाग्रजोग्रगन्धाचयवाह्वाभूकदम्बकः ॥

५० अर्थ—यवानी, दीप्यक, दीप्य, भूतिक, यवानिका, यवाग्रज, उग्रगन्धा, यवाह्वा, भूकदम्बक (ब्रह्मदर्भा, क्षेत्रयवानिका, यवसाह, दीपनी, दीपिनी, वातारि, यवजदीपनीय, शूलहन्त्री, यमानिका, उग्रा, तीव्रगन्धा, अजमोदिका, तीक्ष्णगन्धा, हृद्या, आग्निवर्धिनी, भूमिकदम्बक और अजमोदा)

संस्कृतभाषामें

यवानी ।

हिन्दीभाषामें

अजवाइन । अजमान ।

वगभाषामें

यमानी योयान् ।

मराठीभाषामें

ओंवा ।

गुजरातीभाषामें

अजमा ।

कर्णाटकीभाषामें

ओड, उडु ।

तैलिङ्गीभाषामें

वासु । ओममी ।

तामिलीभाषामें

अमन ।

इथेजीमानामें

विश्वस्त विडसीड Bishops Weed Seed

लैटिन्भाषामें

कैर कोपटिकम् टेकोटिसअजवान् ।

Carum Copticum Plectotis

फारसीभाषामें

नानुखा ।

अरबीभाषामें

कमूनमुटकी ।

यवानीगुणाः ।

यवानीपाचनीरुच्यातीक्ष्णोष्णाकटुकालघुः ।

दीपनी च तथा तिक्तापित्तलाशुकशूलहन्त ॥

वातश्लेष्मोदरानाहगुल्मप्लीहकृमिप्रणुत् । (भावप्रकाश)

अर्थ—अजवायन—पाचक, रुचिकारक, तीक्ष्ण, उष्ण, चरपरी, हलकी, दीपन, कडवी, पित्तवर्धक तथा शुक, शूल, वात, कफ, उदररोग, धानाह, गुल्म, प्लीहा और कृमिको नाश करेहै ।

अपिच ।

यवानीकटुतिक्तोष्णावातार्ष श्लेष्मनाशिनी ।

शूलाध्मानकृमिच्छर्दिमर्दिनीदीपनीपरा ॥ (रा० नि०)

अर्थ-अजवायन-चरपरी, कटवी, गरम तथा वातरी बवासीर, कफ, शूल, आध्मान, कृमि और वमनको दूर करेई और परम दीपनई ।

अन्यत्र ।

यवानीकुष्ठशूलघ्नीहृद्यापित्ताग्निवर्द्धिनी ।

अर्थ-अजवायन-कोट और शूलनाशकई, हृद्यको हितकारीई, पित्त तथा अग्निवर्द्धकई ।

अपिच ।

यवानीकटुकातिकारुच्याचोष्णाग्निदीपनी ।

पाचनीपित्तलातीक्ष्णालघुहृद्याचसारिका ॥

वृष्यावाताशंकफरुक्शूलाध्मानवमिकृमीन् ।

शुकदोषोदरानाहृद्द्रोगघ्नीहृद्युल्मकान् ॥

द्वन्द्वरोगामवातांश्च नाशयेदितिकीर्तिता । (नि० १०)

अर्थ-अजवायन-चरपरी, कटवी, रुचिकारक, गरम अग्निमर्दीपक, पाचक, पित्तजनक, तीक्ष्ण, हल्की, हृद्यको हितकारी, सारक, वीर्यजनक तथा पादीकी बवासीर, कफ, शूल, अरारा, वमन, कृमि, शुकदोष, उदररोग, आनाह, हृद्यरोग घ्नीहृद्, शूल द्वन्द्वरोग और आमवातका नाश करेई ।

अजमोदानामाग्निः ।

अजमोदापराशाचमयूरोदीप्यकस्तथा ।

तथाब्रह्मकुशामोक्षावाग्बीलोचमस्तकः ॥

अर्थ-अजमोदा, पराशा, मयूर दीपक, ब्रह्मकुशा, वाग्बी, मोक्षमस्तक, (रराता, वस्तमोदा, उग्रगन्धा, मर्गी, मोटा, गन्धदत्ता, इति कापरी, अन्धपद्रिका, मायूरी, शितामोदा मोदादत्ता, ब्रह्मपिका, मरुकोटी, विगर्भी, हृद्यगन्धा उग्रगन्धिका, मोक्षिनी, वस्तमय्या और विशम्भा)

सत्सृजमाषाम अजमोदा ।

हिन्दीमाषामे अजमोद ।

बैंगमाषामं वायव्यानी, वायुयान, वमनोपान इत्येते ।

मरार्थमाषामं अजमोदा ।

| | |
|-----------------|---|
| गुजरातीभाषामें | वोडीभजमोद । |
| कर्णाटकीभाषामें | भजमोदा । |
| तैलिङ्गीभाषामें | भाजमोदा, वाम । |
| लैटिनभाषामें | एप्पग्रेवियोलेन्स <i>Apium Graveolens</i> |
| इंग्रेजीभाषामें | सेलेरीसीड <i>Celery seed</i> |
| फारसीभाषामें | करपस । |
| भरबीभाषामें | इबुलकर्तुकेरफस । |

अस्या गुणा ।

अजमोदाकटुस्तीक्ष्णादीपनीकफवातनुत् ।

उष्णाविदाहिनीहृद्यावृष्यावलकरीलघुः ॥

नेत्रामयकफच्छर्दिहिक्षावस्तिरुजोहरेत् (भा०प्र)

अर्थ—अजमोद—चरपरा, तीक्ष्ण, जठराग्निप्रदीपक, कफवातनाशक, गरम, दाहजनक, हृदयको हितकारी, वीर्यवर्द्धक, चलकारक, हलका तथा नेत्ररोग, कफ, वमन, हिचकी और वस्तिरोगका नाश करेहै ।

अपिच ।

अजमोदाकटुरुष्णारूक्षाकफवातहारिणीरुचिकृत् ।

शूलध्मानारोचकजठरामयनाशिनीचैव ॥ (राजनिघण्टु)

अर्थ—अजमोद—चरपरा, गरम, रूखा, कफवातनाशक, रुचिकारक तथा शूल, अफारा, अरोचक और उदररोगका नाश करेहै ।

अन्यच्च ।

अजमोदोरुचिकरोदीपक ऋटुलक्षकः ।

उष्णोविदाहीहृद्यश्चवृष्योऽवलकरोलघुः ॥

तिक्तोमलस्तम्भकरोऽग्राहक पाचक स्मृतः ।

आध्मानशूलकफहृद्वातोरोचकनाशनः ॥

उदरागिकृमीश्चैव वान्तिनेत्ररुजंजयेत् ।

वस्तिशूलदन्तरोगंगुल्मशुकरुजतथा ॥ (नि०र०)

अर्थ—अजमोद—रुचिकारक, दीपन, चरपरा, रूखा, कड़वा, मलस्त-

ममक, उदरके रोग, कृमि, वमन, नेत्ररोग, चोरेत, शूल, दन्तरोग, शुन्म और
(वीर्यके विकारको दूर करें ।)

पारसीयावनीगन्धाभाति ।

यवानीयावनीस्याचौहारोजन्तुनाशनः ।

पारसीयावनीगन्धा छारश्चक्षुष्यका ॥

अर्थ-यवानीया, यवानी, चौहार, जन्तुनाशन, पारसी, यावनी, गन्धा,
छार, राक्षुष्यका ।

मसूतभाषामे

पारसी ।

हिन्दीभाषामे

सुहरी अजवाइन, सुहरी अजमोद ।

मराठीभाषामे

जिम्माणीओवा, सुखनीचें फुल ।

गुजरातीभाषामे

सुवारी अजमोद, फरमाणी दीनेची ।

लैटिनभाषामे

आग्निमिम्मा, मेग्निमिमा *Agni-mimma*

फारसीभाषामे

सुरमदप्प ।

आषा गुणा

पारसीकयवानीतुनिकोष्णावदुनीक्षणा ।

अग्निदीप्तिकरीवृष्याल्पीचैवप्रकीर्तिता ॥

त्रिदोषार्जणकृमिनुच्छलामस्यचनारिनी ।

७७० विशेषात्तुगुणास्त्वन्नेयवानीवप्रकीर्तिता ॥ (नि०१०)

अर्थ-सुहरी-अजवाइन, सुहरी, गुग्गुलु, चामपी, तीक्ष्ण, अग्निदीप्तिकरी वृष्याल्पी चैव प्रकीर्तिता ।
परनेशनी, वीर्यजनक, हल्की तथा त्रिदोष, अर्जण कृमि, शूल और
आमको नष्ट करे है, दोषगुण अजवाइनकी समान है । इसका गुण होता है ।
पक्षे गुणदायकी समान होता है । फल पारक होता है ।

सुरमदप्पे पय नीनाभाति ।

यवानीयावनीतीरातुरुष्कामदकारिणी ।

दीप्य न्यामकुम्भस्त्रोमादकोमदकारकः ॥

अर्थ-यवानी यावनी, लैंग्रा, सुरमदप्प, मदकारिणी, दीप्य, न्याम, कुम्भ
स्त्रोमाद, मादक, मदकारक ।



संस्कृतभाषामें
हिन्दीभाषामें
वगभाषामें
मराठीभाषामें
गुजरातीभाषामें
तैलिङ्गीभाषामें
वो०
तामिलीभाषामें
इंग्रेजीभाषामें
लैटिनभाषामें
फारसीभाषामें
अरबीभाषामें

खुरसानी, पारसीक यवानी ।
खुरसानी, अजवायन ।
खुराशानी, योयान् (यमानी)
खुरासाणी, ओवा, खुरसाण ।
खुरमाणी, अजमा ।
खुरसाण वामु ।
खोरसनी, उभा ।
खोरसनी, ओनाम शिष्टामुष्टि ।
हेनवेन । Henbane
हायो श्यामस्, नाईनर *Hyoscyamus Nigor*
वज, तुलमवजे ।
वजरुट वज, अवीद शीकरान् ।
अस्पा गुणा ।

सुगसानीयवानीतुयवानीसदृशागुणैः ।

विशेषात्पाचनीरुच्याग्राहिणीमादिनीगुरु ॥ (भा० प्र०)

अर्थ—खुरसानी अजवायनके गुण अजवायनके समान हैं, किन्तु विशेष
कारके पाचक हैं, रुचिकारी हैं, मादी मदकारक और भारी हैं ।

अपिच ।

सुरासानीयवानीतुकदुरुक्षाचपाचिका ।

आहिकोष्णामादिकाचगुर्वीवातकरीमता ॥

कफनाशकरीप्रोक्तागुणास्त्वन्येयवानिवत् ।

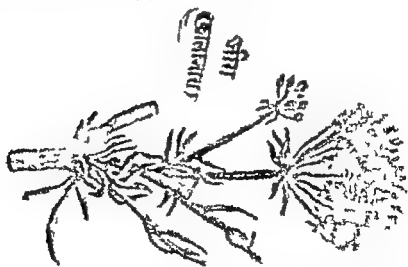
अर्थ-सुरासानी अजगमन-चरपरी, रूरी, पाचक, मारी, गरम, नशा करनेवाली, भारी, वातकारक और कफनाशक है, शेषगुण अजगमनके समान हैं ।

विवरण । इसका धूप यूरोप और पेशियाके मदादेनोम उत्पन्न होता है, आजकल सादरनपुरकी ओर अधिकतासे इसकी रोती होती है पत्ते पीसे होते हैं । व्यवहार-पत्ते और बीज ।

यह बीज दाम १ दामपोस्त मधु और जलके साथ मिलाकर शर्दी यातादि रोगोंमें दिये जाते हैं । कायुल्म इसके बीज पीछेके धूपके साथ पीसकर भीतके चमटेमें लगाकर बेटके ऊपर बांधने तो गर्भ वेद होजाता है, यह फदावत यदापर यदापर जाती आती है ।

इसके पत्तोंका अरु जाके आटेमें मिलापका उसकी पुष्पी धरे वा छाला तथा उसकी पीटा दूर होजायगी । एक घुंदा इसकी भीममें लगानेसे ओंत्सकी पीटा जाती रहती है ।

आभाजनजीरक'मानि ।



अजाजीजीरकोजीगेदीप्यकोजरणाकणा ।

अर्थ-अजाजी, जीरक, जीर, हृषिक, जराणा, कणा (जीर, हृषिक, जीरणा, अजाशिवर दहेमन्त्र, मागय, दीपक)

गौरजीरकनामानि ।

शुक्लाजाजीकणाख्यातादीर्घकःकणजीरकः ।

अर्थ-शुक्लाजाजी, कणा, दीर्घक, कणजीरक, (अजाजी, गौरजीरक, श्वेतजीरक, कणाद्वा, कणजीर, मितदीप्य, दीर्घकणा, मिताजाजी, गौराजाजी)

सस्कृतभाषामें जीरक, सितजीरक ।

हिन्दीभाषामें जीरा, सफेदजीरा ।

वगभाषामें जीरे, सादाजीरे ।

मराठी भाषामें जिरें, पाढें जिरें ।

गुजराती भाषामें शाकनु जीरु । सादुजीरु ।

कर्नाटकीभाषामें जिरिगे, विलियजीरिगे ।

तेलिङ्गीभाषामें जिलकारा, जील करर ।

इंग्रेजीभाषामें क्युमिन, सीड । Cusumin seed

लैटिन्भाषामें क्युमिनम् सेमिनम् Cumminum Cyminum

फारसीभाषामें जीरा ।

अरबीभाषामें कमुन् ।

यूनानीभाषामें रवामुन् ।

सामान्यजीरकगुणा ।

जीरक'कटुरुष्णश्चवातहृदीपन पर' ।

गुल्माध्मानोतिसारघ्नोऽग्रहणीकृमिहृत्परः ॥ (रा०नि०र०)

अर्थ-साधारणजीरा-चरपरा, गरम वातनाशक, दीपन तथा गुल्म, अफारा, अतिसार, सग्रहणी और कृमिको दूर करे हे ।

श्वेतजीरकगुणा ।

गौराजाजीहिमारुच्याकटुर्मधुरदीपनी ।

कृमिघ्नीविपहन्त्रीचक्षुष्याधातुनाशिनी ॥ (नि०र०)

अर्थ-सफेदजीरा-शीतल, रुचिकारक, चरपरा, मधुर, अग्निको दीपन करनेवाला, विपनाशक, नेत्रोंको हितकारी और अफारेको दूर करे हे ।

अपिष ।

शुभ्रजीरकदुग्धादिपाचनदीपनलघु ।

किञ्चिदुष्णचमधुरचक्षुष्यरुचिकृन्मतम् ॥

गर्भाशयशुद्धिकररूक्षप्रत्यसुगन्धिकम् ।

तिक्तचमिक्षयाध्मानवातंकुष्ठंविषंज्वरम् ॥

अरोचकंरक्तदोषमतीशारकृमीस्तथा ।

पित्तञ्चगुल्मरोगञ्चनाशयेदितिकीर्तितम् ॥ (नि० २०)

अर्थ-सफेदनीरा-चमपरा, मटरोषक, पाचक, जठराग्निका क्षीपन करने वाला, हल्का, विथिव् उष्ण, मधुर, नेत्रोंकी हितकारक, रूचिकागी, गर्भा-शयको शुद्ध करनेवाला, रुखा, बलकारक, सुगन्ध, कड़वा तथा छर्दि, क्षय, आध्मान, यात, कोढ़, विषावेचार, ज्वर, अरुचि, रक्तशिकार, अतिसार, कृमि, पित्त और गुल्मरोगका नाश करे दे ।

हृष्णचौरानामानि ।



कृष्णाजाजीतुजरणासुगन्धाकालजीरकः ।

वर्षाकालीचहृद्याचतथाचोद्धारशोधिनी ॥ (चरकसि०)

अर्थ-कृष्णाजाजी, तरणा, सुगन्धा, कालजीरक, वर्षाकाली, हृद्या, उद्धारशोधिनी, (कृष्णा, जरणा, सुगन्धा, भेदनी, चरु भेदनिता, रुष्णा, नीला, नीलवर्णा, काश्मीरजीरका, शान्तिशोधिनी, चालमेयी, सुगन्धा, सुगन्ध, कृष्णजीर, कृष्णजीरक और उद्धारशोधक)

समृन्नापामे

कृष्णजीरक ।

दिग्निपापामे

कालजीरा ।

क्षेत्रमापामे

चातजीर ।

| | |
|-----------------|--|
| मराठीभाषामें | शहाजिरें । |
| गुजरातीभाषामें | शाजीरु । |
| कर्णाटकीभाषामें | करिजीरके । |
| तैलिङ्गीभाषामें | नल्लजीर । |
| इंग्रजीभाषामें | ब्ल्याक्कारावे सीड् । Black Caraway seed |
| लैटिन्भाषामें | केरनैग्रम् । Carum Nigrum |
| फारसीभाषामें | जीरेझाह । |
| भरचीभाषामें | कयुन् किरमानी । |

अस्पृश्या ।

जरणाकटुर्गुणाचकफशोफनिकृन्तनी ।

रुच्याजीर्णज्वरघ्नीचक्षुष्याग्रहणीपरा ॥ (रा०नि०)

अर्थ—कालाजीरा—चरपरा, गरम, कफ और शोफनाशक, रुचिकारक, जीर्णज्वरहारक नेत्रोंको हितकारक और ग्राहकह ।

अपिच ।

कृष्णजीरञ्चक्षुष्यरुच्यंसोष्णसुगन्धिकम् ।

ग्राहकंकटुकंरूक्षदीपकजीर्णज्वर्तिनुत् ॥

कफशोथशिरारोगकुष्ठचेवविनाशयेत् । (नि० र०)

अर्थ—कालाजीरा—नेत्रोंको हितकारी, रुचिकारी, गरम, सुगन्धि, ग्राही (भारी), चरपरा, रूखा, दीपन तथा जीर्णज्वर, कफ, सूजन, मस्तकरोग और कुष्ठको दूर करेहै ।

पीतजीरकगुणा ।

पीताजाजीदीपनीचकट्टीचोष्णातिसारहा ।

आध्मानवातगुल्मचग्रहणीचकृमीजयेत् ॥ (नि० र०)

अर्थ—पीलाजीरा—जठराग्निको दीपन कर, चरपरा, गरम तथा अतिमार, आध्मान, वायु, गुल्म, अग्रहणी और कृमिका नाश करेहै ।

द्विविधजीरकगुणा ।

तीक्ष्णोष्णकटुकपाकेरुच्यपित्ताग्निवर्धनम् ।

कटुश्लेष्मानिलहरगन्धाढ्यजीरकद्वयम् ॥ (सुश्रुतसंहिता)

अर्थ—दोनों प्रकारके नीरे—सीढ़ीगोष्प, पत्तनेमें बरषरे, रुचिकी लक्ष्म
 ष्मनेवाले, पित्त तथा जठराग्निकी बढानेवाले चम्परे, ककू, वातनाशक और
 अत्यन्त गन्धवाले हैं ।

वृष्टीरूपमाभासि ।

कालाजाजीपृथिवीचपृथ्वीचपृथुकापृथु ।

कुञ्जिकाकुञ्जिकाकुञ्जीकारवीस्युलजीग ॥

[illegible]

सत्यव्रतभाषां

हिन्दीभाषामें

वगभाषामे

मगठीभाषामें

गुजरातीभाषामें

रुग्णादिस्त्रीभाषाम्

तुल्यभाषामें

इमेमोमापामे

ईन्द्रियाणामे

पारसीभाषायै

अर्घ्याभ्यामे

स्थूलभोगक, फाल्गुनार्द्रः ।

मल्लोर्जी, मंगरुला ।

मोटानेने माँ ।

कलौगीतिम् ।

ਭਟੋਜੀ ਘੋਰ ।

परिद्वन्द्वोत्तमिगे ।

नहानीरा यारा ।

स्मॉल वेल्ज, पर्ल्लोस। Small Parcel
flower

निगेल्डासेटिवा । *Nigella* २

द्योनिस्त, द्वाष्टाने ।

द्वयुगमोत्रा ।

॥१॥

एतौपुरुषिकातिकाकटीचोष्णाचदीपनी ।

वृष्पाचाजार्णभमनीगर्भाशयचिशोधिनी ॥

आध्मानवान्गुल्फश्चरुक्पित्तकृर्मोस्तथा ।

यफं पित्तं चामदोषनातशूलघ्ननाशयेत् ॥

हार्द-व-गरी-वहरी घाघी, गाम, नगगाहिरीव, बीपेवर्ष, भनी-

र्णनाशक, गर्भाशयको शुद्ध करनेवाली तथा आध्मान, वात, गुल्म, रक्तपित्त, कृमि, कफ, पित्त, आमदोष, वादी और शूलको नष्ट करे है ।

त्रिविधजीरकगुणा ।

जीरकत्रितयंरूक्षकटूष्णदीपनंलघु ।

समादिपित्तलमेध्यंगर्भाशयविशुद्धिकृत् ॥

ज्वरघ्नपाचनबल्यवृष्यरुच्यकफापहम् ।

चक्षुष्यंपवनाध्मानगुल्मच्छर्द्यतिसारजित् ॥ (भा०प्र०)

अर्थ—तीनोंप्रकारके जीरे—(सफेद जीरा, काला जीरा, कलौंजी) रूखे चरपरे, गरम, दीपन, हलके, मलरोधक, पित्तजनक, मेधाजनक, गर्भाशय-शोधक, ज्वरनाशक, पाचक, बलकारक, वीर्यवर्धक, रुचिकारक, कफनाशक, नेत्राको हितकारी तथा वात, आध्मान, गुल्म, वमन और अतिसारका नाश करे है ।

अरण्यजीरकनामानि ।

बृहन्पालीक्षुद्रपत्रोऽरण्यजीरकणौ तथा ।

अर्थ—बृहन्पाली—क्षुद्रपत्र, अरण्यजीर, कण ।

| | |
|-----------------|---|
| सस्कृतभाषामें | वनजीरक । |
| हिन्दीभाषामें | कालाजीरी । |
| बगभाषामें | वनजीरे । |
| मराठीभाषामें | कडूजिरं । |
| कर्णाटकीभाषामें | काजीरगे । |
| गुजरातीभाषामें | कालींजीरी । कदवीजीरी । |
| इंग्रेजीभाषामें | परपल फ्लीवेन । <i>Purpalo Flicabane</i> |
| लैटिनभाषामें | वरनोनिया एथेल मंटिका । <i>Veruonia Antholmentica</i> |
| अरबीभाषामें | कमून बहरी कमून रुमी । अस्यागुणा । |

वनजीर कटु रीतोव्रणहापञ्चनामक ॥ (राजनिघण्टु)

अर्थ—कालाजीरी—चमपरी, शीतल और व्रणनाशक है ।

अपिच ।

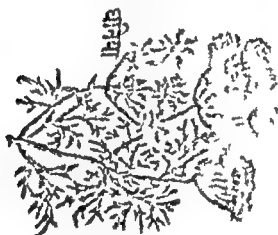
अरण्यजीरकचोष्णतुवरकटुकमतम् ।

स्तम्भवातंकफचैवव्रणचैवविनाशयेत् ॥ (नि०२०)

अर्थ-कालाजीरी-गरम, कपेली, चरपरी तथा स्तम्भक घान, वन और घायको दूर करे।

इसका छुप होता है, इसके ऊपरके भागमें रुआ और थीरमें पागजोती होती है, यह घोड़ीके मशालमें पड़ता है।

धन्याकनामानि ।



धन्याकधनिकधन्यधान्यकन्नघनीयकम् ।

कुम्भुगुगीछत्राधन्यातुम्बुरुचवितुन्नकम् ॥

अर्थ-धन्याक धनिक, धन्य, धान्यर, धनापर कुम्भुगुगी, छत्रा, धन्या, तुम्बुरु, विपुन्नक, (तुम्बुरुक धान्याक धनेपक, धानक, धान्य, धान्य, धनिका, छत्रा धान्य गुगुनि ज्ञापयाम, मरमर, जनविष धान्यावीन, धीपधाय अथविता, वेधक धाना तुनरी घेसिका, धना भद्रका इधगभा वेण, धानी श्री नि मार) ।

समूहभाषामे

धन्याक ।

हिन्दीभाषामे

धनिका ।

बंगभाषामे

धने ।

मराठीभाषामे

धने, धोदवीर ।

गुजरातीभाषामे

धाना, धोदवीर ।

कर्नाटकीभाषामे

धोदुगुगी ।

तेलुगुभाषामे

धोदमिन्न धानीनाम् ।

संस्कृतभाषामे

धोदमिन्न ।

इग्रेजीभाषामे

कोर्याडिरसीड् । Coriander seed

लैटिन्भाषामे

कोरीगड्डम सेटाईवम् । Corranbrum Sativum

फारसीभाषामे

तुल्मे कर्सीश ।

अरबीभाषामे

कजबुरा ।

धन्याकगुणा ।

धान्यकमधुरशीतकपायपित्तनाशनम् ।

ज्वरकासतृपाछर्दिकफहारि च दीपनम् ॥ (रा०नि०)

अर्थ-धनिया-मधुर, शीतल, कपेला, पित्तनाशक तथा ज्वर, खासी, तृषा, वमन और कफका नाश करेहै, तथा अग्निको दीपन करेहै ।

अपिच ।

धान्यकतुवरस्निग्धमवृण्यमूत्रललघु ।

तिक्तकटुष्णवीर्य्यश्चदीपनपाचकस्मृतम् ॥

ज्वरप्ररोचकग्राहिस्वादुपाकत्रिदोषनुत् ।

आर्द्रन्तुतद्वणस्वादुविशेषात्पित्तनाशितत् ॥

तृष्णादाहवमिश्वासकासकाश्र्यकृमिप्रणुत् ।

अर्थ-धनिया-कपेला, स्निग्ध, अवृण्य, मूत्रजनक, हलका, कडवा, चर-परा, उष्णवीर्य्य, जठराग्निको दीपन करनेवाला, पाचक, ज्वरनाशक, रोचक, पाकके समय स्वादिष्ट है, तथा त्रिदोष, तृषा, दाह, वमन, श्वास, खासी, कृशता और कृमिरेगका नाश करेहै ।

कच्चे धनियेके भी धनियोंके समान गुण हैं, स्वादिष्ट है और विशेष करके पित्तका नाश करेहै ।

अन्यथा ।

आर्द्राकुस्तुम्बरीकुय्यात्स्वादुसौगन्ध्यहृद्यताम् ।

भक्ष्यव्यञ्जनभोज्येषुविविधेष्ववचारिता॥(गोडलनि०)

दिग्गामानि ।

हिगुशूलद्रिडूमठवाहीकजतुकजतु ।

सहस्रवेधजन्तुप्रसूपाङ्गमूपधूपनम् ॥

अर्थ-हिगु-शूलद्रिड, रमठ, चाहीक, जतुक, जतु, सहस्रवेध, जन्तुप्र,

दिगुपत्रीनामात्रि ।

त्वत्पत्रीदिगुपत्री च कर्मगृध्रुलापृथु ।

वाष्पीकावाप्पिकावाष्पीदीर्विकादारुपत्रिका ॥

अर्थ-त्वत्पत्री-दिगुपत्री, कायरी, पृथुला, प्रथ, वाष्पीका वाष्पिका, वाष्पी, दीर्विका, दारुपत्रिका, (कायरी, कायरी, पृथुली, वाष्पीका, वाष्पिका, वाष्पी, पत्री, तन्वी, दारुपत्री विन्वा और पृथुला)

अस्यागुणा ।

हिगुपत्रीभवेदुन्वातीक्ष्णोष्णापाचनीकटु ।

हृदयस्तिरुग्विवन्धारः श्लेष्मगुरुमानिलापहा ॥ (भा० ३०)

अर्थ-हिगुपत्री-रुचिकारक, तीक्ष्ण, गरम, पातक, नमरी, तथा हृदय रोग, वन्तिरोग, विषम, प्रसादीर वर, गुग्म और वातका नाश करे ई ।

अपि ।

हिगुपत्रीकटुस्तीक्ष्णातिक्ष्णोष्णापाचिकामता ।

रुच्यापध्यादीपनीचहृद्यासौगन्धकारिणी ॥

तुवराकफवातामवस्निपीडाचनाशयेत् ।

उद्विद्धकार्शुगुरुमादिप्रीहामेदोपनीनिपान् ॥ (वि० २०)

अर्थ-हिगुपत्री-नामरी तीक्ष्ण कटुता गरम पातक रोगनाशक, पथ्य शीपन, हृदयको दितकारी गुग्मवि कषेयी तथा कफ वात आमशय, व म्लिकी पीडा, मलपटता प्रसादीर गुग्म, प्रीहा म अमरी और विषका नाश करे ई ।

इति वक्तव्ये गुण और नाम हीमके प्रमाणे मिलते ई । जैसे हिगुके प्रती सं। मध्यम गरम और कटु, कटुते मो इमकोपी कषयी वरी प्री-
हते और गुग्मपी हीमम मिलते ई । निगूरनाकफवी मरती भातम र-
पनी निगते मा वातरी अरुणके पावत वरते ई ।

नार्दीदिगुपत्रीनात्रि ।

नार्दीदिगुपत्रीशास्त्राजन्तुतानामटीनना ।

वरापत्रीनपिण्डाद्वासुनीयादिगुनाटिका ॥

अर्थ नार्दीदिगु पत्रीशास्त्राजन्तु, गुग्म मरती, वरुणी विषका र-
वीणा दिगुनाटिका वरुणी विषका दिगु निगते ई ।

सस्कृतभाषाम
हिन्दीभाषामें
बगभाषाम
मराठीभाषामें
गुजरातीभाषाम
कर्णाटकीभाषामें
तैलिङ्गीभाषामें
इंग्रेजीभाषामें

नाडीहिङ्गु ।
कलः पतिहीङ्ग, टिकामाली ।
हिङ्गुविशेष ।
डिकेमाली ।
डिकामाली ।
कलहन्ति ।
चिभहिङ्गवा कारु इगवा ।
डिकेमालीगम्, गम्भीगाडिनिया । Dika
mallegum Gummy Gardunia
गांडत्यायुसिडा गार्धिन्यागम्मिफेरा । Gard
niu Ceeda Gardinua Gummosera

लैटिन्भाषाम

अरबीभाषामें

कनखाभ
अस्या गुणा ।

नाडीहिङ्गु कदुष्णाचकफवातार्तिशान्तिकृत् ।

विष्ठाविवन्धदोषघ्नीचानाहामापहारिणी । (राजनिघण्टु)

अर्थ—नाडीहिङ्गु—चरपरी, गरम, कफ और वातकी वेदनाको शान्ति कर-
नेवाली तथा विष्ठा, विवन्ध और आनाह रोगनाशक है ।

अन्यथा ।

नाडीहिङ्गुस्तुकटुकस्तीक्ष्णश्चोष्णश्चदीपक ।

कफवातमलस्तम्भमनोमोहामनाशनः ॥ (निघण्टुरत्नाकर)

अर्थ—नाडीहिङ्गु—चरपरी, तीक्ष्ण, उष्ण, ज्वरप्रदीपक तथा कफ, वात,
मलवन्ध, मनका मोह और आमको दूर करेहै ।

विवरण । बड़ा वृक्ष होता है, फूल सफेद होतेहैं, फल पोगतके डोंगेकी
समान होतेहैं, पत्ते बटमोगगके समान होतेहैं इसकी नाडीहिङ्गु कहतेहैं ।

यचानामनि ।

वचोग्रगन्धापद्रुग्रन्थागोलोमीशतपर्विका ।

मङ्गल्याजटिलातीक्ष्णागालिनीलोमशातथा ॥

अर्थ—वचा, उग्रगन्धा, पद्रुग्रन्था, गोलोमी, शतपर्विका, मङ्गल्या, जटिला,
तीक्ष्णा, गालिनी, लोमशा (विजया, उग्रा, ग्क्षोत्री, वच्या, काङ्गा, भद्रा,

धुपत्री, धुपणी, स्मारणी, धोपनीया भूतनादिनी शेषमत्री, हीमवती,
जलनी (धुपत्रिका)

पारसीकवचानाम् ।

पारसीकवचाशुक्लाप्रोक्ताहेमवतीतिता ।

अर्थ-सुरागानी वच मरेद होतीही, उमकी मरुपमें हेमवती (शतरती,
मेध्या, शुक्रा, भोगवती, मीपपत्रा, रीपणी) वहीही ।

| | |
|----------------|-------------------------------|
| संस्कृतभाषाम् | वचा, पारसीकवचा, श्वेतवचा । |
| हिन्दीभाषाम् | वच, सुरागानीवच, मरेदवच । |
| बंगभाषाम् | वच खोगसानी वच श्वेतवच । |
| मराठीभाषाम् | वेरवड, पादरे वेरवड । |
| गुजरातीभाषाम् | घोदावच, सुरागानीवच मानावच । |
| कर्णाटकीभाषाम् | वच मिरापरचे । |
| तेलङ्गीभाषाम् | वागा, घटज नदाग । |
| तामिळीभाषाम् | वचायु । |
| इंग्रजीभाषाम् | स्वीटफ्लावर । Sweet Flower |
| लॅटिन्भाषाम् | एकोरा, केममस । Acorus Calamus |
| पारसीभाषाम् | गोस्तन तरे अगर सुर्फी । |
| आरबीभाषाम् | उदन्बुन । |
| | वचागुना । |

वचोमगन्धाकटुकातिकोष्णावान्तिप्रद्विकृत् ।

दीपनीवाक्प्रदाकण्ठ्याशरून्मूत्रविशोधिनी ॥

विवन्धाध्मानशूलघ्नीशोफत्रातज्जगपहा ।

अपस्मारकफोन्मादभूतजन्तवनिलान्दन्त् ॥ (ग० नि०)

अर्थ-वच-उष्णगन्धयुक्त, पारसी वही, गाम वदनजाय, भक्षित
नक, दीपन बाणीशायक, वचकी हितकारी, मन्त्रपुष्पयोगक तथा रिदग्ध
आध्मान गुण शोक, वातज, अपस्मार कटु, उमाद, मुन कृति श्री
वाल्मीकि नाथ वही ।

अधिक ।

वानातीक्ष्णाकटुष्णानकफाममन्त्रिभोपनुत ।

वातज्वरातिसारघ्नीवान्तिकृन्मादभृतहृत् ॥

अर्थ—वच—तीक्ष्ण, चरपरी, गरम तथा कफ, आम, ग्रन्थि, सृजन, वात-ज्वर और अतिसारको हरैहै । वमनकारक, उन्माद और भृतनागक है ।

अन्यत्र ।

वचायुष्यावातकफतृण्णाघ्नीस्मृतिवर्द्धिनी । (रा० व०)

अर्थ—वच—अवस्थास्थापक, वातकफनागक, तृणानिवारक, और स्मरणशक्तिवर्द्धक है ।

शुक्रवचागुणा ।

वचाश्वेतामतिमेधाचाग्निदीप्तिकरीमतो ।

आयुष्यदागुणाढ्याचवृष्याकफविनाशिनी ॥

वातभूतकृमिहरात्विनरेपूर्ववद्गुणाः ।

अर्थ—सफेदवच—मति और मेधादायकहै, जठराग्निदीपकहै, आयुर्वर्द्धक, अधिकगुणवाली, वीर्यजनक तथा कफ, वादी, भूतवाधा और कृमिको दूर करैहै । शेषगुण वचाकी समान जानने ।

महाभरीयचागुणा ।

सुगन्धाप्युग्रगन्धाचविशेषात्कफकासनुत् ।

सुस्वरत्वकरीरुच्याहृत्कण्ठमुखशोधिनी ॥ (भा० प्र०)

अर्थ—महाभरीवच—सुगन्ध और उग्रगन्धयुक्त है । विशेषकरके कफ तथा खासीको दूरकरैहै स्वरको उत्तम करनेवाली, रुचिको उत्पन्न करनेवाली तथा हृदय, कण्ठ और मुखको शुद्ध करनेवाली है ।

यचाद्भुतगुणा ।

अद्रिर्वापयसाज्येनमासमेकन्तुसेविता ।

वाचाकुट्यान्नरंप्राज्ञश्रुतिधारणसयुतम् ॥

चन्द्रसूर्यग्रहेपीतंपलमेकपयोनितम् ।

ववायास्तत्क्षणकुट्यान्महाप्रज्ञान्वितंनरम् ॥

अर्थ—वचके घूर्णको जलके साथ अथवा दूधके साथ एक मासपर्यन्त सेवन करनेसे मनुष्य बुद्धिमान् और ज्ञानी होताहै तथा चन्द्रग्रहणके समय

धुपघ्नी, इधुपर्णी, स्माग्नी, धोधनीया, भूतनाशिनी श्वेत्प्रती, कर्षितवा,
जल्नी, इधुपत्रिका)

पागडोपयणानामात्र ।

पारसीकवचाशुक्लाप्रोक्ताहमवर्तितिसा ।

अर्थ-रुसगानी वच मकेद होतई, उमको मूतमै हमवर्ती (शतवरा,
मेघ्या, गुला, भोगवती, दीर्घपत्रा कर्षिणी) कहतेई ।

सङ्गनभाषामें

वचा, पारसीकवचा, श्वेतवचा ।

हिन्दीभाषामें

वच, रुसगानीवन, मनेवचा ।

बंगभाषामें

वच, रोरासानी वच, श्वेतवचा ।

मराठीभाषामें

वेरेंद पांहे वेरेंद ।

गुजरातीभाषामें

घोटावज, रुसगानीवच, यामावज ।

कणाडकीभाषामें

वच विर्णियवजे ।

तैलिङ्गीभाषामें

वागा, घटज नक्षत्रम ।

तामिलभाषामें

वचम्पु ।

इद्रमीभाषामें

स्वीदस्मारुट । Sweet Flopan

लैटिन्भाषामें

एफोरा, केडेमा । Ad' cas Cal'as

पारसीभाषामें

सोगन जर्ज अग मुर्दी ।

अरबीभाषामें

उल्मु ।

पचागुला ।

वचोमगन्धाकटुकातिकोष्णाशान्तिपद्विकृत् ।

दीपनीवाक्प्रदाकण्ठ्याशरून्मूत्रविशोधिनी ॥

विमन्वाध्मानशूलभीशोपवातज्वगपदा ।

अपस्माकफोन्मादभूतजन्वनिलान्दरेत् ॥(ग०नि०)

अर्थ-वच-उष्णव्ययुक्त, चरुपर्ण, कटुवी, गाम, वमनकारक, अग्नि-
नक नीपन वाणीगपक कण्ठको हितकारी, मूत्रमूत्रोपक तथा विमन्वा,
आध्मान, शूल, शोथ, वातजन, अपस्मा, वच, उष्माद वच इति जीव
वातका नाम कहें ।

अविष ।

वातानीक्ष्णाकटुष्णाचफफाममन्त्रिभोपनुत् ।

१५५ वातज्वरातिसारघ्नीवान्तिक्नुमादभूतहृत् ॥

अर्थ-वच-तीक्ष्ण, चरपरी, गर्भ तथा कफ, आम, ग्रन्थि, सूजन, वात-ज्वर और अतिसारको हरेहै । वमनकारक, उन्माद और भूतनाशक है ।

अन्यत्र ।

वचायुष्यावातकफतृष्णाघ्नीस्मृतिवर्द्धिनी । (रा० व०)

अर्थ-वच-अवस्थास्थापक, वातकफनाशक, तृष्णानिवारक, और स्मरणशक्तिवर्द्धक है ।

शुक्रवचागुणा ।

वचाश्वेतामतिमेधाचाग्निदीप्तिकरीमता ।

आयुष्यदागुणाह्याचवृष्याकफविनारिनी ॥

वातभूतकृमिहरात्वितरेपूर्ववद्गुणा ।

अर्थ-सफेदवच-मति और मेधादायकहै, जठराग्निप्रदीपकहै, आयुर्वर्द्धक, अधिकगुणवाली, वीर्यजनक तथा कफ, वाती, भूतबाधा और कृमिको दूर करेहै । शोषगुण वचाकी समान जानने ।

महाभरीवचागुणा ।

सुगन्धाप्युग्रगन्धाचविशेषात्कफकासनुत् ।

सुस्वरत्वकरिरुच्याहृत्कण्ठमुखशोधिनी ॥ (भा० प्र०)

अर्थ-महाभरीवच-सुगन्ध और उग्रगन्धयुक्त है । विशेषकरके कफ तथा खासीको दूरकरेहै स्वरको उत्तम करनेवाली, रुचिको उत्पन्न करनेवाली तथा हृदय, कण्ठ और मुखको शुद्ध करनेवाली है ।

यचाहृतगुणा ।

अद्विर्वापयसाज्येनमासमेकन्तुसेविता ।

वाचाकुर्व्यान्नरप्राज्ञश्रुतिधारणसयुतम् ॥

चन्द्रसूर्यग्रहेपीतंपलमेकपयोन्वितम् ।

वचायास्तत्क्षणकुर्व्यान्महाप्रज्ञान्वितंनरम् ॥

अर्थ-वचके चूर्णको जलके साथ अथवा दूधके साथ एक मासपर्यन्त सेवन करनेसे मनुष्य बुद्धिमान् और ज्ञानी होताहै तथा चन्द्रग्रहणके समय

अथवा मर्मप्रदणके समय एक पत्र चयके कृष्णको दृष्टके माघ भाग करके
उती समय मनुष्यको अत्यन्त बुद्धिमुक्त वर्तते। यह मपत स्थान और
रेतली मृमिमें उत्पन्न होती है।

कुलिजननामानि ।

कुलजोगन्धमूलश्च तीक्ष्णमूलः कुलजन ।

अर्थ-कुलज, गन्धमूल, तीक्ष्णमूल, कुलजन ।

मस्तूतभाषामें कुलजन ।

हिन्दीभाषामें कुलीजन ।

बंगभाषामें कुलजन ।

मराठीभाषामें कोलिजन । थोर कोलिजन ।

गुजरातीभाषामें कुलिजन नातु । कुलिजन मोले ।

उप्रेमीभाषामें कुल जन नातु । Kul Jan Naatu ।

लम्बिभाषामें आन्ध्रनिवा, आन्ध्रनिवा । Andhra Niva ।

पार्सीभाषामें गिरान ।

अरबीभाषामें ईर गोलिजन ।

भार्य गुणा ।

कुलज कटुतिक्तोष्णोदीपनोमुखदोषनुत् । (ग० नि०)

अर्थ-कुलीजन-उष्णता बढ़वा गरम, दीपन और मुखदोषनाशक है ।

भावय ।

कुलिजनकटुस्निक्तमुष्णचामिप्रदीपनम् ।

रुच्यन्वर्ग्यचक्षुचमुखकण्ठविशुद्धिकृत् ॥

मुखदोषरुफनेनकासेवातकफहर्त्तु । (नि० १०)

अर्थ-कुलीजन-चापका, कटुता गरम, अग्निप्रदीपक, रुचिकारक, रसायन
मुखाग्नेशाला उत्पन्न । दिनकारी, मुख और कण्ठको शुद्ध करनेवाला तथा
मुखदोष का नाश करने और आत कफ का नाश करने ।

यह कुलिजनका धरापुत्र है। अनेकों नामों, जैसे मरुत, रोगी
इत्यादि नामों कुलिजन कहते हैं । हिन्दीमें मनुष्य नामों के रोगों कुलिजन
कहते हैं सो पत्तरी। यह नहीं है ।

चोपचीन्युत्पत्तिरक्षणम् ।



फिरगदेशसम्भूताचीनदेशेथविश्रुता ।

नामतश्चोपचीनीस्यादश्वगन्धसमाभवेत् । (शि०प्र०)

अर्थ—फिरग देशमें उत्पन्न होतीहै, चीनदेशसे आतीहै और इसका नाम चोपचीनी है और अश्वगन्धकी समान होतीहै ।

संस्कृतभाषाम

हिन्दीभाषाम

वगभाषाम

मराठीभाषाम

गुजरातीभाषाम

इंग्रेजीभाषाम

लैटिनभाषाम

फारसीभाषाम

अरबीभाषाम

फिरगीभाषाम

यूनानीभाषाम

ठीपान्तरवचा, अमृतोपहिता ।

चोवचीनी ।

तोपचीनी ।

चोपचीनी ।

चोपचीनी ।

चाइनारूट् । China root

स्माइलाक्स चाइना । Smilax China

एवन ।

एवन ।

चपा ।

रसिलियर आग्रमिनी ।

अथ द्रुपाः ।

अकलकरोष्णोवीयणत्रलकृत्कटुधामतः ।

प्रतिश्यायन्नशोयन्नवातश्चैवविनाशयेत् ॥ (नि०७०)

अर्थ-अकलकरा-उष्णवीर्यं, यन्त्राग्नयः, नश्यत नया प्रतिश्यायः, सूक्ष्म
और वातका विनाश करेई ।

द्रुपानामर्तिः ।

द्रुपावपुषाविन्नापराश्वत्थफलास्मृता ।

मत्स्यगन्धाप्रीहहन्त्रीविषघ्नीध्माक्षनाशिनी ॥

अर्थ-द्रुपा वपुषा, विमा, (द्रुपा, विमगा, विगन्धिषा, यह नाम
प्रथम प्रकारके दाउवैरै) भक्षयन्त्या, मत्स्यगन्धा, प्रीहहन्त्री, विषघ्नी,
ध्माक्षनाशिनी, (न्यन्धन्त्या, कच्छुप्रा, प्रीहहन्त्र, काली, अपघातिनी)

मंसूत्रभाषामे

द्रुपा ।

हिन्दीभाषामे

दाउवै ।

बगभाषामे

द्रुपा ।

मराठीभाषामे

• द्रोण ।

उर्दूभाषामे

मदुद्वे ।

लैटिन्भाषामे

मेरेरिगानेतितांशिया । T. 115 L. 11-12

दाउवै या प्रकारका द्रु, निगमे प्रथम द्रु मद्युर्गके समान और आमर्षी
महान गन्धवान होताई ।

द्रुपागुणाः ।

द्रुपाकटुकानित्तागुरुष्णार्त्तपनीमता ।

तुषगप्रदर्णाशुलगुल्माशायाननाशिनी ॥

गुल्मोदग्गफामाग्निमांघ्रकृमिकपीनमान ।

मलाजष्टम्भकचैवप्रदग्धैवनाशयेत् ॥

अर्थ-दाउवै-नश्यत यह नाम धीमन्, कवेरा तथा मंस-
शरीर, द्रु, शुष्म, कसार्ता वात, उन्धोग, यह आम, मन्धादि, कटि,
पित्त, मन्धहम और मन्धोगना नाम करेई ।

द्रुपागुणः ।

न्यल्पमलामृजहृन्पूज्जीदाविपलफाजयेत् ।

गुणाहस्या पूर्ववच्चेया सुज्ञैश्चिकित्सकै ॥ (नि०२०)

अर्थ—दूसेग्रकागका हाऊवेर, मूजकूच्छ, झीहा, विष और कफको नष्ट करे । शेष गुण प्रथमकी समान जानने ।

विडगनामानि ।

क्रिमिघ्नभस्मकमोधाविडगकृमिकण्टकम् ।

कैरालंकेवलंवेष्टंतण्डुलचित्रतण्डुला ॥

अर्थ—क्रिमिघ्न, भस्मक, मोधा, विडङ्ग, कृमिकण्टक, कैराल, केवल, वेष्ट, तण्डुल, चित्रतण्डुला (विडङ्गा, अमोधा, तडुला, जन्तुनाशक, क्रिमिकण्टक, रसायन, पावक, तडुल, क्रिमिरिषु, जन्तुघ्न, चित्रतण्डुल, क्रिमिघ्न, गर्दभ, कृमिहा, चिना, तण्डुला, तण्डुलीयका, वातारि, जन्तुघ्नी, मृगगामिनी, कगली, गहरा, कापाली, बरा, सुचित्रबीजा, वृषणाशन, जन्तुहन्त्री, कृष्णतण्डुला, श्वेततण्डुला, चित्रबीजा और घोषा)

संस्कृत भाषामें

विडङ्ग ।

हिन्दीभाषामें

वायविडङ्ग ।

बंग भाषामें

विडङ्ग

मराठी भाषामें

वावाडङ्ग ।

गुजराती भाषामें

वावडीङ्ग ।

कणाडकी भाषामें

वायुविडङ्ग

तैलिङ्गी भाषामें

वायु विडङ्गम् ।

तामिली भाषामें

वायविल ।

इंग्रेजीभाषामें

नेत्रेङ्ग । Babreng

लैटिन भाषामें

एंबेलिया रिबीस् Embrelia ribes

फार्सी भाषामें

बगकावली ।

अरबी भाषामें

बरज कावली ।

अन्य गुणा ।

विडगकटुतिकोष्णरूक्षवह्निकरलघु ।

गुल्माध्मानोदरश्लेष्मकृमिवातविबन्धनुत् ॥ (मद० नि०)

अर्थ—वायविडङ्ग—चरषणी, कडवी, गरम, सूती, अग्निकाशक, हृत्की तथा गुल्म आध्मान, उदररोग, कफ, कृमि, वात और विबन्धनो दूर करे ।

अधिप ।

विडगकटुकपाकेलघुवातरुफापदम् ।

तित्तमीपद्विपदन्तिरुक्षोष्णकृमिनाशनम् । (शोढलनि०)

अर्थ-वायविदग्-पाकमे चपरी, इटरी, वात कान्तासक विनिर्मु क-
टवी, विपनाशक, रुग्णी गरम और कृमिको दूर करे ।

अपघ ।

विडगकटुकं तित्तमुष्णरुच्यलगुर्मृतम् ।

दीपनं वातकफहृदग्निमाद्यारुचीर्जयेत् ॥

भ्रान्ति कृमिञ्जुलं च आध्मानमुदरतया ।

प्लीहाजीर्णं श्वासकामोदद्रोणं विपदोपकम् ॥

आमं मलावष्टम्भश्च मेदोमेदश्चनाशयेत् । (नि० २०)

अर्थ-वायविदग्-चपरी, कटवी, गरम रसिकारी, इटरी, तद्वत्तादि
को दीपन करनेवाली तथा वात, कफ, मदाग्नि, अग्नि भ्रांति, कृमि, शुद्ध,
अकारा, उदरोग, प्लीहा, अजीर्ण, भ्रात, रोगी, रुद्धगोग, विपशिका,
नाम, मलस्तम्भ, मेदोग और मेद रोगको दूर करे । मात्रा २ मासिकी ।

गुग्गुलुनामानि ।

तुम्बुरु मौरभ सौग्यनज-सानुजोद्विजः ।

नीदगवलकस्तीक्ष्णफलस्तीक्ष्णपत्रो मदागुनिः ॥

अर्थ-तुम्बुरु, सौग्य, सौग्यनज, मानुज, द्विज, मौरभ, मौरभ, नीदगवलक,
नीदगवलक, मदागुनि, (गुग्गुलु, गुग्गुलि, गुग्गुलु, मौरभ, मौरभ, मौरभ,
गुग्गुलु)

अपघ गुग्गुलु ।

तुम्बुरुर्मपूरस्तित्तकटुकदुष्ण-रुफवातनुत ।

शूलगुल्मोदराध्मानकृमिप्रोपद्विदीपन ॥ (गजनिषण्ड)

अर्थ-तुम्बुरु-मपूर, कटवी, चपरी, रुग्णी, वात वात नाशक तथा रुद्ध,
गुल्म, उदरोग, अकारा और कृमिको नाश करे । तथा अधिप और
को दे ।

अपघ ।

तुम्बुरुप्रथितं तित्तकटुपाके पित्तकटु ।

रूक्षोष्णं दीपन तीक्ष्ण रुच्यलघु विदाहि च ॥

वातश्लेष्माक्षिकर्णोष्ठशिरोरुग्गुरुता क्रिमीन् ।

कुष्ठशूलारुचिश्वासप्लीहकृच्छ्राणि नाशयेत् ॥

अर्थ—तुम्बुरु—कडवा, पाकमें चरपरा, रूखा, गरम, दीपन, तीक्ष्ण, रुचि-
कारक, हलका, विदाही तथा वात, कफ, नेत्ररोग, कर्णरोग, ओष्ठरोग, शिरो-
रोग, शरीरका भारीपन, कृमि, कुष्ठ, शूल, अरुचि, श्वास, प्लीहा और मूत्र-
कृच्छ्र रोगका नाश करेहै ।

संस्कृतभाषाम

तुम्बुरु ।

हिन्दीभाषाम

तुम्बुरु ।

वगभाषाम

नेपालि धूने, तुम्बुरु ।

मराठीभाषाम

चिरफळ ।

कोंकणीभाषाम

तिरफळ ।

वशलोचना नामानि ।

तुगाक्षीरी शुभावांशी त्वक्क्षीरी वंशलोचना ।

अर्थ—तुगाक्षीरी, शुभा, वांशी, त्वक्क्षीरी, वशलोचना, (त्वक्क्षीरा, वशजा,
क्षीरिका, तुगा, शुभ्रा, वशक्षीरी, वैणवी, त्वक्सारा, कर्मरी, श्वेता, कर्पूर-
रोचना, तुङ्गा, रोचनिका, पिङ्गा, वशशर्करा, वशरोचना, वशकर्पूर)

संस्कृतभाषाम

वशलोचना ।

हिन्दीभाषाम

वशलोचन ।

वङ्गभाषाम

वंशलोचन, वाँशकावर ।

मराठीभाषाम

वशलोचन ।

गुजरातीभाषाम

वशलोचन, वशकपूर ।

कर्णाटकीभाषाम

वशलोचना ।

तेलिङ्गीभाषाम

वशलोचना ।

इथेजीभाषाम

धीसिलिस्सम् कक्किशन् ।

The silicious Concretion

लैटिन्भाषाम

वटुणाए रडिनेस्या ।

Bambusa atundinea cora

फारसीभाषाम

तवाजीर ।

अरबीभाषाम

तवाजीर ।

अपिच ।

विडगकटुकंपाकेलघुवातकफापहम् ।

तिक्तमीपट्टिपहन्तिरुक्षोष्णकृमिनाशनम् । (गोडलनि०)

अर्थ-वायविडग-पाकमें चरपरी, हल्की, वात कफनाशक, किंचित् कटवी, विपनाशक, रुखी, गरम और कृमिको दूर करे ।

अन्यथा ।

विडगकटुकंतिक्तमुष्णरुच्यलघुरमृतम् ।

दीपनंवातकफहृदग्निमांघारुचीर्जयेत् ॥

भ्रान्तिकृमिश्चशूलंचआध्मानमुदरतथा ।

प्लीहाजीर्णेश्वासकासोद्वेगविपदोपकम् ॥

आमंमलावष्टम्भश्चमेदोमेहश्चनाशयेत् । (नि० १०)

अर्थ-वायविडग-चरपरी, कटवी, गरम, रुचिकारी, हल्की, जठराग्नि को दीपन करनेवाली तथा वात, कफ, मदाग्नि, अरुचि, भ्रान्ति, कृमि, शूल, अफारा, उदररोग, प्लीहा, अजीर्ण, श्वास, खाँसी, हृदयरोग, विपविकार, आम, मलस्तम्भ, मेदरोग और प्रमेह रोगको दूर करे । मात्रा २ भागेकी ।

तुम्बुरुनामानि ।

तुम्बुरुसौरभ सौरवनजःसानुजोद्विजः ।

तीक्ष्णवल्कस्तीक्ष्णफलस्तीक्ष्णपत्रोमहामुनिः ॥

अर्थ-तुम्बुरु, सौरभ, सौरवनज, सानुज, द्विज, तीक्ष्णवल्क, तीक्ष्णफल, तीक्ष्णपत्र, महामुनि, (स्फुट, सुगन्धि, शूलघ्न, सौरज, अन्वक, गन्धाह्न, स्फुटितफल)

अस्य गुणा ।

तुम्बुरुर्मधुरस्तिक्तकटुष्णःकफवातनुत ।

शूलगुल्मोदराध्मानकृमिघ्नोवह्निदीपन ॥ (गजनिघण्टु)

अर्थ-तुम्बुरु-मधुर, कटवी, चरपरा, गरम, कफ वात नाशक तथा शूल, गुल्म, उदररोग, अफारा और कृमिका नाश करे है तथा अग्निको दीपन करे है ।

अन्यथा ।

तुम्बुरुप्रथिततिक्तकटुपाकेपित्तकटु ।

रूक्षोष्णं दीपन तीक्ष्णं रुच्यलघुविदाहि च ॥

वातश्लेष्माक्षिकर्णोष्ठशिरोरुग्गुरुताक्रिमीन् ।

कुष्ठशूलारुचिश्वासप्लीहकृच्छ्राणि नाशयेत् ॥

अर्थ—तुम्बुरु— कडवा, पाकमें चरपरा, सूखा, गरम, दीपन, तीक्ष्ण, रुचि-
कारक, हलका, विदाही तथा वात, कफ, नेत्ररोग, कर्णरोग, ओष्ठरोग, शिरो-
रोग, शरीरका भारीपन, कृमि, कुष्ठ, शूल, अरुचि, श्वास, प्लीहा और मूत्र-
कृच्छ्र रोगका नाश करेहै ।

संस्कृतभाषामें

तुम्बुरु ।

हिन्दीभाषामें

तुम्बुरु ।

वगभाषामें

नेपालिधने, तुम्बुरु ।

मराठीभाषामें

चिरफळ ।

कोंकणीभाषामें

तिरफळ ।

वशलोचनानामानि ।

तुगाक्षीरीशुभावांशीत्वक्क्षीरीवशलोचना ।

अर्थ—तुगाक्षीरी, शुभा, वाशी, त्वक्क्षीरी, वशलोचना, (त्वक्क्षीरा, वशजा,
क्षीरिका, तुगा, शुभ्रा, वशक्षीरी, वैणवी, त्वक्सार, कर्मरी, श्वेता, कर्पूर-
रोचना, तुङ्गा, रोचनिका, पिङ्गा, वशशर्करा, वशरोचना, वशकर्पूर)

संस्कृतभाषामें

वशलोचना ।

हिन्दीभाषामें

वशलोचन ।

वङ्गभाषामें

वशलोचन, वांशकावर ।

मराठीभाषामें

वशलोचन ।

गुजरातीभाषामें

वशलोचन, वशकपूर ।

कर्णाटकीभाषामें

वशलोचना ।

तेलिङ्गीभाषामें

वशलोचना ।

इंग्रेजीभाषामें

धूमिलिस्पम् कन्क्रिशन ।

The siliceous Concretion

लैटिन्भाषामें

बण्डुणा रडिनेस्या ।

Bambusa latifolia

फारसीभाषामें

तवादीर ।

अरबीभाषामें

तवादीर ।

भस्पागुणा ।

वंशजावृद्धणीवृष्यावल्यास्वाद्धीचशीतला ।

तृष्णाकासज्वरश्वासक्षयपित्तास्रकामला ॥

हरेत्कुष्ठव्रणपाण्डुकपायावातकृच्छ्रजित् । (भा०प्र०)

अर्थ-वशलोचन-पुष्टिकारक, वीर्यवर्द्धक, जलकारी, स्वादिष्ट, शीतल तथा तृषा, खोंसी, ज्वर, श्वास, क्षय, रक्त, पित्त, कामला, कुष्ठ और पाण्डुरोगको दूर करेहै, कपायरसयुक्त है, वात तथा मूत्रकृच्छ्र रोगका नाश करेहै ।

अपिच ।

वांशीस्वादुर्हिमारूक्षाशोपकासक्षयापहा ।

भ्रमश्वासहराचेवतवक्षीरश्चतद्गुणम् ॥ (शोडलनिघण्टु)

अर्थ-वशलोचन-स्वादुष्ट, शीतल, रुखा तथा शोष, खोंसी, क्षय, भ्रम और श्वासको दूर करेहै । तवक्षीरके भी हर्षाके समान गुण जानने ।

अन्यथा ।

तुगारूक्षातुतुवरामधुरारक्तशुद्धिकृत् ।

शीताशुभावहाग्राहीवृष्याधातुविवर्धिनी ॥

वल्याक्षयश्वासकासरक्तदोषारुचिप्रणुत् ।

रक्तपित्तज्वरकुष्ठकामलापाण्डुरोगकम् ॥

दादृष्टपात्रणमूत्रकृच्छ्रदाहश्चनाशयेत् ।

वातघ्नीचेवविज्ञेयावेद्यशाम्रविशारदे ॥ (निघण्टुसत्ताकर)

अर्थ-वशलोचन-रूखा, फुपेल, मधुर, रक्तको शुद्ध करनेवाला, शीतल, शुभावह, ग्राही, वीर्यवर्द्धक, धातुवर्द्धक, वन्कारक तथा क्षय, श्वास खोंसी, रुधिरविकार, अपचा, रक्तपित्त, ज्वर कुष्ठ, कामला, पाण्डुरोग, दाह, तृषा प्रण, मूत्रकृच्छ्र, दाह और वातरा विनाश करेहै ।

तयगीरनामानि ।

तवक्षीरपय क्षीर्यवजगवयोद्भवम् ।

अन्यद्रोधूमजचान्यत्पिष्टिकातण्डुलोद्भवम् ॥

अन्यच्चतालसम्भूततालक्षीरादिनामकम् ।

अर्थ-तवक्षीर, पयःक्षीर, मवज, गवयोद्धव, गोधूमज, पिष्टिका, तण्डुलोद्धव, तालसम्भूत, तालक्षीर ।



संस्कृतभाषामें

हिन्दीभाषामें

बगभाषामें

मराठीभाषामें

गुजरातीभाषामें

इंग्रेजीभाषामें

कर्णाटकीभाषामें

लैटिन् भाषामें

फारसीभाषामें

तवक्षीर ।

तवाखीर ।

तवक्षीर ।

तवकील ।

तवखार ।

आरारोट ।

तवक्षीर ।

कर्कशमाणास्टिफोलिया । *Carcuma angustifolia*

तवागीर ।

अस्य गुणाः ।

Arrotwrot

तवक्षीरन्तुमधुरशिशिरदाहपित्तनुत् ।

क्षयकासकफश्वासनाशनचास्रदोषनुत् ॥ (राजनिघण्टु)

अर्थ-तवाखीर-मधुर, शीतल, तथा दाह, पित्त, क्षय रुधिरविकार, खासी, कफ और श्वासको दूर करे ।

अपिच ।

तवक्षीरन्तुमधुरशुभरीतसुगन्धिकम् ।

वत्यवृष्यपौष्टिकञ्चवातुवृद्धिकरलघु ॥

सुस्निग्धक्षयपित्तास्रपित्तदाहारुचीहरम् ।

कासश्वासज्वरतृष्णाकामलापाण्डुकुष्ठहम् ॥

मूत्राशमरीमूत्रकृच्छ्रमेदव्रणकफापहम् ।

रक्तदोषहरचान्यजातस्वरूपगुणंमतम् ॥ (निघण्टुरत्नाकर)

अर्थ-तवासीर-मधुर, शुभ्र, शीतल, मुगन्धी, बलकारक, पीर्यवर्द्धक, पुष्टिकारक, वातुवर्द्धक, हलकी, क्षिग्ध, तथा क्षय, पित्त, रक्तपित्त, दाह, अरुचि, खासी, श्वास, ज्वर, वृषा, कामला, पाण्डु, कोष्ठ, मूत्राशमरी, मूत्र-कृच्छ्र, प्रमेह, व्रण, कफ और रक्तविकारको दूर करे है ।

तवासीर पाच प्रकारकी होतीहै, जौ, गेहूँ, चावल, तालवृक्ष और वन-गायके दूधकी, इसप्रकार तवासीर अनेक जातिकी होतीहै, सिंगादेके चूनकी भी जनतीहै, । इन सबमें वनगायके दूधकी और जीकी उत्तम होतीहै ।

समुद्रफेननामानि ।

समुद्रफेन.फेनश्चडिण्डिरोव्धिकफस्तथा ।

अर्थ-समुद्रफेन, फेन, डिण्डिर, अन्धिकफ, (अर्णवजमल, अर्णवज, ति-न्युकफ, डिण्डिर, डिण्डीर, समुद्रकफ, जलहास, फेनक, उदधिमल, श्वेतधा-मा, लणोदधिसम्भव, वाद्विपेन, पयोधिमसुफेन, अविधिडिण्डीर, सामुद्र, शुष्काशुष्क, विध्याह, दधिफेन, मारमल)

सम्भूतभाषाम समुद्रफेन ।

हिन्दीभाषाम समुद्रफेन ।

वगभाषाम समुद्रफेना ।

मराठीभाषाम समुद्रफेण ।

गुजरातीभाषाम समुद्र फीण ।

कर्णाटकीभाषाम फडल नागले ।

तेलुगुभाषाम सामुद्रनालिके ।

इंग्रेजीभाषाम कलर फीशबोन । Cattlefishbone

लैटिन् भाषाम सेपिया ओपिगिनेरीस्त । Sepia officinalis

फारसीभाषाम फेदरिया

अरबीभाषाम जुवदुल्लेहेर ।

अरुण गुणा ।

समुद्रफेनश्चक्षुष्योलेखन.शीतलस्तथा ।

कपायोविपपित्तप्र.कर्णरुक्कफहृद्यु ॥ (भा० प्र०)

अर्थ—समुद्रफेन—नेत्रोंको हितकारी, लेखन, शीतल, कपेले तथा विप, पित्त, कर्णरोग और कफको दूर करेहै । और हलका है ।

अपिच ।

समुद्रफेनशिशिरकपायनेत्ररोगनुत् ।

कफकण्ठामयघ्नश्चरुचिकृत्कर्णरोगहृत् ॥ (राजनि०)

अर्थ—समुद्रफेन—शीतल, कपेला तथा नेत्ररोग, कफ, कण्ठरोग, और कर्णरोगका नाश करेहै और रुचिको उत्पन्न करेहै ।

अन्यच्च ।

अविधफेनोरुचिकरोलेखनस्तुवरोलघु ।

चक्षुष्य शीतलश्चैवपटलादिरुजाहर ॥

सारश्चविपदोपघ्न कर्णशूलहर पर ।

कफश्चकण्ठरोगचपित्तचैवविनाशयेत् । (नि०र०)

अर्थ—समुद्रफेन—रुचिकारक, लेखन, कपेले, हल्के, नेत्रोंको हितकारी, शीतल, पटलादिरोगनाशक, सारक, विपनाशक तथा कर्णशूल, कफ, कण्ठरोग और पित्तको दूर करेहै ।

अन्यच्च ।

समुद्रफेनशिशिरतुवरवान्तिकृत्परम् ।

अर्थ—समुद्रफेन—शीतल, कपेला और अत्यन्त वान्तिकारक है । मात्रा २ मासेकी ।

इति श्रीशालिग्रामनिष्ठभूषणे द्वादशवर्गाणि ॥ २ ॥

अथ अष्टवर्गः ।

—०—०—०—

जीवज्जामानि ।

जीवक क्षेडह्रस्वागो दीर्घायु शृङ्गक प्रियः ।

अर्थ—जीवक, क्षेड, ह्रस्वाङ्ग, दीर्घायु, शृङ्गक, प्रिय, (शृङ्गकृचं, दीपं, मधुरक, मधुर, कृचं दीपकं, चिगजीवक, जीवन, प्राणद, जीव्य, शृङ्गाद, चिगजीव, मधुर, मङ्गल्य, वृद्धिद, आयुष्मान्, जीवद, वल्द)

अभ्यगुणा ।

जीवकोमधुर शीतोरक्तपित्तानिलार्तिजित् ।

क्षयदाहज्वरान्हन्तिशुक्रश्लेष्मविवर्द्धनः ॥ (गणनिघण्टु)

अर्थ-जीवक-मधुर, शीतल तथा रक्त, पित्त, वात, क्षय, दाह और ज्वरको दूर करे। शुक्र (वीर्य) और कफको बढ़ावे।

अपिच ।

जीवकोमधुरः शीतः शुक्रलः कफकृन्मतः ।

रक्तपित्तहरो वल्यो वातपित्तज्वरापहः ॥

कृशताक्षयदाहानररक्तदोषस्य नाशकः । (नि० २०)

अर्थ-जीवक-मधुर, शीतल, शुक्रजनक, कफकारक, रक्त पित्तनाशक, बलकारक तथा वात, पित्त, ज्वर, कृशता, क्षय, दाह और रुधिरविकारको दूर करे।

अस्य स्वरूप यथा ।

जीवन्ती सदृशैः पत्रैर्जीवको गुल्मकः स्मृतः ।

कण्टीक्षीरीतथानूपे भवतीत्यब्रवीन्मुनिः ॥ (इतिकैयदेव)

अर्थ-जीवक औषधिका गुल्म अनूप देशमें उत्पन्न होता है, पत्ते जीवन्तीके समान होते हैं, कटि सूक्ष्म होते हैं और इसमें दूध होता है।

अपिच ।

जीवको द्वस्वविटपः कूर्चशीर्षश्च दक्षिणे ।

देशे सजायते कन्दो नि सारसूक्ष्मपत्रकः ॥ (शिवनिघण्टु)

अर्थ-विटप छोटा है, इसका आकार चुगरीके समान होता है, इस कन्दकी उत्पत्ति दक्षिण देशमें होती है। पत्ते सूक्ष्म मार्गान् होते हैं। व्यवहार-कन्द ।

ऋषभानामानि ।

ऋषभो दुर्द्धरो द्राक्षा मातृको वल्लुरो नृपः ॥

अर्थ-ऋषभ, दुर्द्धर, द्राक्षा, मातृक, वल्लुर, नृप, (ऋषभक, एषभ, एष, पीर, पृथिवीपति, गोपति, पीर, विपाणी, कटुद्यान, पुद्गल, योदी, दृष्टी, घुर्व, भूपति, कामी, रुक्षमिष, उक्षा लाङ्गली, गौ, वन्दुर, वन्दूर, गोरक्ष, वनवासी, ऋषिमिष, मधुर, शीतल, कामद)

अस्य गुणाः ।

ऋषभकोमधु शीतो गर्भसन्धानकारकः ।

शुक्रधातुकफानाश्रकारकोवलदायक ॥

वृष्य.पुष्टिकर प्रोक्त पित्तरक्तातिसारजित् ।

रक्तरुक्कृशतावातज्वरदाहक्षयापह ॥ (नि० २०)

अर्थ—ऋपभक्त-मधुर, शीतल, गर्भसन्धानकारक, शुक्रवर्द्धक, कफकारक, वलदायक, वीर्यजनक, पुष्टिकारक तथा पित्त, रक्तातिमार, रक्तरोग, कृशता, वातज्वर, दाह और क्षयका नाश करे है ।

जीवकर्पभक्तगुणा ।

जीवकर्पभक्तौबल्योशीतौशुक्रकफप्रदौ ।

मधुरौपित्तदाहास्रकार्श्यवातक्षयापहौ ॥ (भा० प्र०)

अर्थ—जीवक और ऋपभक्त—वलकारक, शीतल, वीर्यवर्द्धक, कफकारक, मधुर, पित्त, दाह, रुधिरविकार, वायु और क्षयरोगको नाश करे है ।

ऋपभोजीवकगुणोकामद सविशेषतः । (शोडलनिघण्टु)

अर्थ—ऋपभक्त औषधीके गुण जीवककेही समान हैं । विशेषतः यह कामको उत्पन्न करे है ।

जीवकर्पभक्तस्वरूपम् ।

जीवकर्पभक्तौज्ञेयौहिमाद्रिशिखरोद्भवौ ।

रसोनकन्दवत्कन्दौनि सागैसूक्ष्मपत्रकौ ॥ (भा० प्र०)

अर्थ—जीवक और ऋपभक्त यह दोनों औषधि हिमालय पर्वतके शिखर पर उत्पन्न होता है, इनका कद लहसनके कदकी समान होता है साररहित चारीक पत्ते होते हैं ।

जीवक बुद्धरीके आकार और ऋपभक्त वृषभ(बल)के मिंगके आकार होता है ।

मेघनामानि ।

मेदाधीरामणिच्छिद्रामधुराजीवनीरसा ।

अर्थ—मेदा, धीरा, मणिच्छिद्रा, मधुरा, जीवनी, रसा (मेदोद्भवा, श्रेष्ठा, विभावरी, वसा, शल्पपर्णिका, मेदमारा, सेहवती, मेदिनी, स्निग्धा, मेदा, द्रवा, साध्वी, शल्पद्रा, चद्रान्धिका, मेदोवती, पुरुषदन्तिका, शल्पपर्णी छिद्रनदुला, भव्या, जीवनिका, अधरा, स्वल्पपर्णी)

मेदागुणा ।

मेदातुमधुराशीतापित्तदाहार्तिकामनुत् ।

राजयक्ष्मज्वरहरावातदोषकरीचसा ॥ (निघण्टुचूडामणि)

अर्थ-मेढा-मधुर, शीतल तथा पित्त, दाह, खासी, गजयक्षा और ज्वरको नाश करेह और वातको उत्पन्न करेह ।

अपिच ।

मेदातुमधुराशीतावृष्यास्वाद्दीगुरु स्मृता ।

शुक्रवृद्धिकरीस्तन्यास्निग्धाचश्लेष्मलास्मृता ॥

वातपित्तरक्तदोषक्षयश्चैवविनाशयेत् ।

ज्वरंदाहश्चकासचनाशयेदितिकीर्तितम् ॥ (नि० २०)

अर्थ-मेढा-मधुर, शीतल, वीर्यजनक स्वादु, भारी, धातुवर्द्धक, स्तनांम दूध उत्पन्न करनेवाली, स्निग्ध, कफकारक तथा वात, पित्त, रक्तपिक्व, क्षय, ज्वर, दाह और खासीको दूर करेह ।

महालक्षणम् ।

शुभ्रकन्दोनखच्छेद्योमेदधातुरिवमनेत् ।

य समेदेतिविज्ञेयोजिज्ञासातत्परिर्जने ॥

अर्थ-जिमका मधे कन्द हा और जितमें नखसे छेदनसे मेदा धातुही समान एकप्रकारका रस टपके, उसको मेदा जाना ।

महामन्त्रात्मानि ।

महामेदादेवमणिर्वसुच्छिद्राविषाण्डुरा ।

अर्थ-महामेदा, देवमणी, वसुच्छिद्रा, विषाण्डुरा (जीवनी, पाशुगोमिणी, महामेद, पुगेद्रवा, देव, मुग्मेदा, निव्या, देवगन्धा, वृक्षाहा, प्रिन्ती, देव तामणि, गोमा, देवैष्टा, मुग्मेदा और मेदोद्रवा)

महामन्त्रागुणा ।

महामेदाहिमारुच्याकफशुक्रप्रवृद्धिकृत् ।

हन्तिदाहाम्रपित्तानिक्षयवातज्वरचसा ॥ (गजनिघण्टु)

अर्थ-महामेदा-शीतल, रुचिकारक, कफ और शुक्रको घटानेवाली तथा दाह, रक्तपित्त, क्षय, वात और ज्वरका नाश करनेवाली है ।

महामन्त्र-मेदागुणा ।

मेदायुग्मपरस्निग्धशुक्रमेद प्रवर्द्धनम् ।

मधुररसपाकाभ्यांजीवनवातपित्तजित ॥

अर्थ-मेदा और महामेदा-स्निग्ध, शुक्रजनक, मेदोवर्द्धक, रस और पाकमें मधुर, जीवन तथा वातपित्तको दूर करे है ।

महामेदालक्षणम् ।

महामेदाभिध.कन्दोमोरगादौप्रजायते ।

शुभ्राद्रकनिभ कन्दोलताजात सुपाण्डुरः ॥

अर्थ-महामेदा-नामवाला कन्द मौरगादि देशोंमें उत्पन्न होताहै यह कन्द देखनेमें सफेद अदरखकी समान होताहै, इसकी बेल चलती है और पाण्डुरगका होताहै ।

ऋद्धिनामानि ।

ऋद्धि.प्राणप्रियावृष्याप्राणदासम्पदाह्वया ।

अर्थ-ऋद्धि, प्राणप्रिया, वृष्या, प्राणदा, सम्पदाह्वया, (योग्य, सिद्धि, लक्ष्मी, प्राणप्रदा, जीवदात्री, सिद्धा, योग्या, चेतनीया, रयाङ्गी, मङ्गल्या, लोककान्ता, जीवश्रेष्ठा, यशस्या)

६.स्या गुणा ।

ऋद्धिर्वल्यात्रिदोषघ्नीशुक्लामधुरागुरु ।

प्राणैश्वर्यकरीमूर्च्छारक्तपित्तविनाशिनी ॥ (भा० प्र)

अर्थ-ऋद्धि-चलकारक, त्रिदोषनाशक, शुक्रजनक, मधुर, भारी, प्राण-प्रद, ऐश्वर्यजनक तथा मूर्च्छा और रक्तपित्तनाशक है ।

भण्यश ।

ऋद्धिस्तुमधुरास्निग्धामेधाकृच्छीतलास्मृता ।

कफशुक्रवर्धयन्तीप्राणैश्वर्यवलप्रदा ॥

रक्तशुद्धिकरीरुच्यागुर्वीकुष्ठापहामता ।

किमिन्द्रिदोषमूर्च्छास्रपित्ततृक्षयपित्तहा ॥

वातरक्तरुज्जर्तिनाशयेदितिकीर्तिता । (निःपाण्डुरत्नाकर)

अर्थ-ऋद्धि-मधुर, स्निग्ध, मेधाजनक, शीत, कफकारक, शुक्रवर्द्धक, प्राणदायक, ऐश्वर्यजनक, चलकारक, रक्तशोधक, रुचिकारक, भारी तथा कोद, क्रुमिदोष, मूर्च्छा, रक्तपित्त, रुपा, क्षय, पित्त, वातरक्त और ज्वरका नाश करेहै ।

वृद्धिनामानि ।

वृद्धिर्बोधनिकाचैवप्रियासिद्धिःसुरोत्तमा ।

अर्थ-वृद्धि, बोधनिका, प्रिया, सिद्धि, सुरोत्तमा, (योग्या, क्रद्धि, रक्ष्मी, पुष्टिदा, वृद्धिदात्री, मङ्गल्या, श्री, सम्पत्, आशी, जनेदा, मृति, सुख, सुरा, जीवभद्रा)

वृद्धिगुणा ।

वृद्धिर्गर्भप्रदाशीतावृद्धणीमधुरास्मृता ।

वृण्यापित्तास्रशमनीक्षतकामक्षयापहा ॥

अर्थ-वृद्धि-गर्भजनक, शीतल, पुष्टिकारक, मधुर, वीर्यवर्द्धक, रक्त-पित्तकी क्षान्ति करनेवाली तथा उष्ण, क्षत, खासी और शयनोग्रवा नाश करनेवाली ।

ऋद्धिर्बृद्धिश्चकन्दोचभवत कोशलेऽचले ।

श्वेनलोमान्वित कन्दोलताजातसरन्ध्रक ॥

सएवऋद्धिर्बृद्धिश्चभेदमप्येतयोर्वृषे ।

तूलग्रथिसमाऋद्धिर्वाभावर्तफलाचसा ॥

वृद्धिस्तुदक्षिणावर्तफलाप्रोक्तमहर्षिभि ।

अर्थ-ऋद्धि और वृद्धि दोनों कन्द कोशलपर्वतमें उत्पन्न होते हैं, यह दोनोंही कन्द लताजातिके होते हैं और इनके ऊपर गन्धेद रोम होते हैं और छिद्रयुक्त होते हैं ।

ऋद्धि और वृद्धिमें केवल इतनाही अंतर है कि, ऋद्धि फलामर्षी गांठके समान आकृतिवाली बापभागमें आवतशील फलयुक्त होती है, वृद्धि दक्षिण भागमें आवतमय फलसहित होती है ।

काराण्यनामानि ।

काकोलीशीतपाकीचपयम्यावायमोलिका ।

अर्थ-काकोली, शीतपाकी, पयम्या, वायमोलिका, (वामनोली शरीरा, वीरा, भीरा, शुक्रा, मेदुरा, ध्माक्षोली, ध्माक्षिका स्वादुमासी, वयम्या, जीयती, मधुरा, शुद्धशीत, पयोस्विनी, कायाम्बिका, जीरनीया)

काराण्यगुणा ।

काकोलीमधुरान्निग्धाक्षयपित्तानिलातिवृत् ।

रक्तदाहज्वरघ्नीचकफशुक्रविवर्द्धिनी ॥ (रा० नि०)

अर्थ—काकोली—मधुर, स्निग्ध तथा क्षय, पित्त, वातकी पीडा, रक्तदोष, दाह और ज्वरको नाशकरे है, कफ और शुक्रको बढ़ावे है ।

अन्यञ्च ।

काकोलीशीतलावृष्यामधुराशुक्रकारिणी ।

तिक्ताकफकरीगुर्वीक्षयपित्ततृपाहरा ॥

रक्तदोषरक्तपित्तपित्तदाहज्वरविपम् ।

वातपित्तरुजचैवनाशयेदितिकीर्तिता ॥

अर्थ—काकोली—शीतल, वीर्यवर्द्धक, मधुर, घातुवर्द्धक, कड़वी, कफका रक, भारी तथा क्षय, पित्त, तृपा, रुधिरविकार, रक्तपित्त, दाह, ज्वर, विष-वायु और पित्तरोगको दूर करे है ।

क्षीरकाकोलीनामानि ।

पयस्याक्षीरकाकोलीमहावीरापयस्विनी ।

अर्थ—पयस्या, क्षीरकाकोली, महावीरा, पयस्विनी (क्षीरकाकोलिका, क्षीरशुष्का, सुकोली, अष्टमी, क्षीरविपाणिका, जीववली, जीवशुष्का, क्षीरा, क्षीरवल्ली, वयस्या, क्षीरमधुरा, दुग्धाद्या)

क्षीरकाकोलीगुणा ।

क्षीरकाकोलिकावृष्यास्तन्यवृद्धिकरीलघु ।

रसवीर्यविपाकेषुकाकोलीसदृशाचसा ॥ (ग० नि०)

अर्थ—क्षीरकाकोली—वीर्यजनक, स्तनोंमें दूधपढ़ानेवाली, हलकी और रस, वीर्य और विपाकमें काकोलीकी समान है ।

द्विविधानोलीगुणा ।

काकोलीयुगलशीतशुक्रलमधुरगुरु ।

बृहणवातदाहास्रपित्तशोषज्वरगणहम् ॥

अर्थ—काकोली और क्षीरकाकोली—शीतल, वीर्यजनक, मधुर, भारी, पुष्टिकारक तथा वात, दाह, रक्तपित्त, शोष और ज्वरको दूरकरे है ।

अन्यञ्च ।

काकोलिकाद्वयवृष्यमवस्थास्यापनपरम् ।

स्वादुपाकरसवल्थशीतवीर्यञ्चजीवनम् ॥ (शो० नि०)

अर्थ-काकोली और क्षीरकाकोली-घृष्य, अवस्थाम्यापक, पाक और रसमें स्वादिष्ठ, बलकारक, शीतवीर्य और जीवन है ।

काकोलीक्षीरकाकोलीस्योदायतिलक्षणम् ।

जायते क्षीरकाकोली महामेदोद्रवस्थले ।

यत्रम्यात्क्षीरकाकोलीकाकोलीतत्रजायते ॥

पीवरीसदृश कन्द क्षीरस्रवतिगन्धवान् ।

सप्रोक्त-क्षीरकाकोलीकाकोलीलिङ्गमुच्यते ॥

यथास्यात्क्षीरकाकोलीकाकोलयपितथाभवेत् ।

एपाकाचिद्रवेत्कृष्णाभेदोऽयमुभयोरपि ॥

अर्थ-जिस स्थानमें महामेदा उत्पन्न होतीहै, उसीस्थानमें काकोली और क्षीरकाकोली उत्पन्न होतीहै । क्षीरकाकोलीका कन्द सतापरके समान होता है और इसमें एक प्रकारका सुगन्धि युक्त दूध निवृत्ताहै । जैसी क्षीरकाकोली होतीहै, वैसीही काकोली होतीहै, इन दोनोंमें फल इतनाही अंतरहै कि क्षीरकाकोलीकी अपेक्षा काकोली किंचित् कृष्णरंग होतीहै ।

अष्टयगतामणि ।

जीवकपर्प भकौमेदेकाकोल्योऽष्टिःशुद्धिके ।

अष्टवर्गोऽष्टभिर्द्रव्यै कथितश्चरकादिभि ॥

अर्थ-जीवरू, ऋषभक, मेदा, महामेदा, वृद्धि, ऋद्धि, काकोली और क्षीरकाकोली इन एकत्र मिलेरूप आठ द्रव्याको अष्टवर्ग कहतहै ।

अष्टयगगुणा ।

अष्टवर्गोहिम स्यादुर्वृद्धण शुक्रलोगुरु ।

भग्नसन्धानकृद्भल्य शरीरकफवर्द्धन ॥

वातपित्तामृतहृदाहज्वभेदक्षयप्रणुत ।

अर्थ-अष्टवर्ग-शीतल स्वादिष्ठ, पुष्टिजनक, बलकारक, शरीर और कफवर्द्धक है । रीत्यजनक, भारी, भग्नमन्यानपाक तथा वात, पित्त, रक्त गुण, दाह, ज्वर, प्रमेह और क्षय रोगका नाश करे है ।

राजामप्यष्टवर्गस्तुनतोऽयमतिदुर्लभ ।

तन्मादस्यप्रतिनिर्विगृह्णीयात्तद्गुणभिषक् ॥

अर्थ—यह अष्टवर्ग राजाओंकोभी अत्यन्त दुर्लभ है इसकारण अष्टवर्गके बदले इन्दीके सदृश गुणवाली औषधी लेनी ।

एतन्मय प्रतिनिधीनाह ।

मेदाजीवककाकोलीऋद्धिद्वन्द्वेपिचासति ।

वरीविदार्यश्वगन्धावाराहीश्वकमात्क्षिपेत् ।

अर्थ—मेदा और महामेदाके अभावमें सत्तावर लेनी, जीवक और ऋप-भकके अभावमें विदारीकन्द लेना, काकोली और क्षीरकाकोलीके अभावमें असगन्ध लेनी, ऋद्धि और वृद्धिके अभावमें वागहीकद लेना चाहिये ।

जीवक १ ऋपभक, २ काकोली, ३ क्षीरकाकोली ४ मेदा ५ महामेदा ६ ऋद्धि ७ और वृद्धि ८ यह आठ कन्द हैं । इनके नाम गुण, उत्पत्ति और लक्षण प्राचीन ग्रन्थोंमें लिखे हैं, परन्तु उनका ठीक निश्चय नहीं होता कि, उनका कैसा रूप है, वह कैसे है सो 'भावमिश्र' के लिखे अनुसार हम प्रथमही लिख चुके हैं कि "यह अष्टवर्ग राजाओंकोभी दुर्लभ है, इनके नाम संस्कृतके अतिरिक्त और किसी भाषामें आजपर्यन्त नहीं सुने, किन्तु किसी-किसी ग्रन्थकारने बंगाला, कर्णाटकी, तेलङ्गी, तामिली और लैटिनभाषामें इनके नाम लिखे हैं, सो उन देशोंमें प्रचलित न होनेके कारण अशुद्धसे जान पड़ते हैं" ।

मधुयष्टिनामाणि ।



मधुयष्टी यष्टिमधूर्यष्ट्याह्वाक्रीतका स्मृता ।

मधुकयष्टिमधुकयष्टिकामधुयष्टिका ॥

अर्थ—मधुयष्टी, यष्टिमधू, यष्ट्याह्वा, क्रीतका, मधुक, यष्टिमधुक यष्टिका,

मधुपट्टिका, (पॉलिमर, पॉलिमरुका, पट्टीक, पॉलिमरुका, पट्टागह, पट्टागह,
ईतिह, पॉलि, मधुमवा, मधुपट्टिक)

(क्रीतन, ह्रीतनीयरु, मधुम, मधुवली, मधूली, मधुमता, अतिरता, मधुग्नाम, गोपापदा, सौम्या)

सत्कृतभाषामे यष्टीमधु, जत्पष्टी, म्यलपष्टी, यष्टिगसक्रिया ।

हिन्दीभाषामें

वगभाषामे यष्टीमनु ।

मगढीभाषामें ल्येष्टमघ ।

ગુજરાતીભાષામાં જેઠામધનો મૂલ, જેઠીમધનો ડીરો ।

कण्टकीभाषामें षष्टिमधु, चत्विषष्टिमधु ।

तौलिङ्गीभाषामें यष्टीमधुरमु ।

इयेजीभाषामें विकसितहू। *Liquorice root*

कामनू लिक्विडम् Liquorice Extract

लैटिन्भाषामें

Glyceroliza labra

फारसीभाषामें वेरगमेदेकुमन

अग्नौ भाषामै
अमृतमसुगमुक्तस्मरगव्यसुग ।

अस्यगुणाः ।

मधुरयष्टिमधुककिञ्चित्तिकञ्चभीतलम् ।

त्रक्षुप्यपित्तहृद्यशोपतृष्णात्रणापहम् ॥ (स०नि०)

अर्य-मुर्झी-मधुर, किंचित् कडवी, शातल, नेत्रोरो हितकारी, पित्त-नाशक, रुचिकारी तथा शोथ, वृण और घणफो दूर करे है ।

अन्यथा ।

यष्टिर्हिमागुरु स्वानीचक्षुष्यात्रलवर्णकृत् ।

सुस्तिग्भाशुकलाकेशयाम्बव्यापिता निलावजित् ।

व्रणशोथविपच्छर्दितृष्णाग्लानिश्चापहा ।

तस्यारसक्रियाम्बादीयष्टे मातृगुणाश्रिका ॥

अर्थ—मुन्डरी—शीतल, भारी, मयुर, नेत्रोंसे दिव्यशरी, पल्लवाक्ष, वर्ण
को मुन्डर कान्तेशाली, शिखर, वीरचनर, केनासो मुन्दाभित्त पत्तेशाली,
मन्त्री मुन्दाशाली तथा पित्र, नाथ, रत्न, पाय, स्रजन, रिप, वमन, दृष्टा,

ग्लानि और क्षयरोगका नाश करे है । इसका सत्त (रुच्यसूत) मीठाहै और मुलैठीकी अपेक्षा अधिक गुणवालाहै ।

अन्यच्च ।

मधुवल्लीद्विप्रकाराजलजाचस्थलोद्भवा-।
 सावृष्यामधुरारुच्याबल्यागुर्वीचशीतला ॥
 चक्षुष्यावर्णदास्वर्य्यास्निग्धाकेशहितामता ।
 शुक्लारक्तपित्तघ्नीव्रणशुद्धिकरीमता ॥
 शोथविपवातरक्तव्रणवान्ति तृपांतथा ।
 ग्लानिक्षयरक्तदोषरक्तपित्तश्चपित्तकम् ॥
 सद्योव्रणंवातपित्तंनशयेदितिकीर्तितम् । (नि० २०)

अर्थ—दोनों प्रकारकी मुलैठी—[एक जलमें उत्पन्न होनेवाली, दूसरी स्थलमें उत्पन्न होनेवाली] वीर्यवर्द्धक, मधुर, रुचिकारी, बलकारक, भारी, शीतल, नेत्रोंको हितकारी, वर्णको सुंदर करनेवाली, स्वरको निर्मल करनेवाली, स्निग्ध, केशोंको हितकारी, शुक्लजनक, [पुष्टिकारक, गौल्य, मृदुवर्द्धक] रक्तपित्तनाशक, व्रणको शुद्धि करनेवाली तथा सूजन, विष, वातरक्त, घाव, वमन, तृषा, ग्लानि, क्षई, रक्तविकार, रक्तपित्त, पित्त, सद्योव्रण और वातपित्तको दूर करेहै ।

जलपृष्ठचक्रगुणाः ।

वार्यपृथकोविपच्छर्दितृष्णाग्लानिक्षयापहः । (लंकेश)

अर्थ—जलमें उत्पन्न होनेवाली मुलैठीका अर्क—विष, वमन, तृषा, ग्लानि और क्षई रोगको दूर करेहै ।

विवरण—मुलैठीका क्षुप होताहै, इसके पत्ते छोटे छोटे गोल होतेहैं इसमें छोटी और घारीक फली लगतीहै, फूल लाल आताहै, इसकी जड़ प्रयोगमें लीजातीहै । दूसरी बेलवाली मुलैठी होतीहै ।

कम्पिल्लनामानि ।

कम्पिल्ल कर्कशश्चन्द्रोरक्ताङ्गोरोचनोऽपिच ।

अर्थ—कम्पिल्ल, कर्कश, चन्द्र, रक्ताङ्ग, रोचन, (कम्पिल्लक, कम्पिल्ल, काम्पील, काम्पिल्य, कम्पिल्य, रेचनी, काम्पिल्ला, रेचना, पिकाद,

रोचनी, लघुपत्रक कम्पीटक, रेची, रेचन, गजक, लोटिताद्र, रक्तघृणक,
रक्तफल, नदीवास, बहुपुष्प और बहुफल)

संस्कृतभाषामें

काम्पित, कम्पितक ।

हिन्दीभाषामें-

कच्चा (रूख) ला ।

वगभाषामें

कमलागुंदि, गुण्डारोचनी ।

मराठीभाषामें

कपिला ।

गुजरातीभाषामें

कपीले ।

कर्णाटकीभाषामें

कम्पितक ।

इंग्रेजीभाषामें

केमिला रगलीग । Kamila Rottler

लैटिनभाषामें

मेलोसफिलिपपानस (वृक्ष)

Melotaphilippianus Rottlerianctoria

फारसीभाषामें

कन्चिलाय ।

अरबीभाषामें

किन्चीर ।

अथ गुणा

कम्पितकोविरेचीस्यात्कटूष्णोव्रणनाशनः ।

कफकासार्तिहागीचजन्तुकृमिहरोलघुः ॥ (गजनिघण्टु)

अर्थ-ज्वराल-दन्तावर चरुपत्र, गरम, व्रणनाशक तथा कफ, रोगी,
जन्तु और कृमिको दूर करे है । और हल्का है ।

अपिण्ड ।

कम्पित कफपित्तान्कृमिगुल्मोदरव्रणान् ।

हन्तिरेचीकटूष्णचमेदानाहविपाशमनुत् ॥

अर्थ-कफाला-कफ, रक्तपित्त, कृमि, गुल्म, उन्मग्न और घावको दूर
करे है, दन्त फगनेवाला है चरुपत्र है, गरम है और आनाह, विष तथा पय
रिका नाशकरे है ।

अपह ।

कम्पित सरश्वाग्निदीपक कटुक स्मृतः ।

व्रणान्यगोपणश्चोष्णोलघुभेदीकफापहः ॥

व्रणगुल्मोदराध्मानकामपित्तप्रमेहहा ।

आनाहश्चविपश्चैवमूत्राश्मारिज्जापहः ॥

कृमिचरक्तदोषञ्चनाशयेदितिकीर्तितः ।

तच्छाकशीतलतिक्तवातलंग्राहिदीपनम् ॥

अर्थ—कबीला—सारक, अग्निदीपक, चम्परा, घ्रणको भरनेवाला, गरम, हलका, दस्तावर, कफनाशक तथा घ्रण, गुल्म, उदररोग, आध्मान, खासी, पित्तप्रमेह, आनाह, विष, मूत्राश्मरी, कृमि और रक्तविकारको नाश करेहै ।

इसके पत्तोंका शाक, शीतल, कड़वा, वादी, मलरोधक और जठराग्निको दीपन करेहै ।

विवरण । इसके वृक्ष पर्वतापर अधिकतासे उत्पन्न होतेहैं पत्ते गूलरकी समानहैं, इसके फल छोटैवेरकी समान होतेहैं । उनके ऊपर लाललाल रजसी जमी होती है, पहाडी लोग उन फलोंको तोड़ टोकरीयोंमें डाल पैरोसे मलतेहैं, जो रज छूटकर नीचे झड़ जाती है उसीको कबीला कहतेहैं । मात्रा ६ रक्तीकी ।

आरग्वधनामामि ।

अमलतास



आरग्वधोगजवृक्षोव्याधिघातोजठरनुत् ।

अर्थ—आरग्वध, गजवृक्ष, व्याधिघात, जठरनुत् (चक्रपग्व्याध, सम्यक्, घनुरगुल, शम्पाक, आरेवत, कृतमाल, मुवर्णक, मन्यान, रोचन, दीर्घफ, नृपट्टम, प्रमेह, हिमपुष्प, राजतरु, काण्टूल, महाकर्णिकाग, ज्वरान्तरु, अरु-ज, स्वर्णपुष्प, स्वर्णद्रु, रुप्रसदन, कर्णाभरणक, महाराजद्रुम, कर्णिकार स्व-र्णाङ्ग, दीर्घफल, स्वर्णभूषण, आरोग्यशिम्बी, शम्पाक, व्यथान्तक, आमहा,

स्वर्णस्थाली, रेचन कुण्डन्दी, हेमपुष्प, शेफालिका, नक्तमाल, स्वर्णदृश,
सारफल, कुष्ठत्र, हुमोत्पल)

| | |
|-----------------|------------------------------------|
| संस्कृतभाषामें | आरग्वध । |
| हिन्दीभाषामें | अमलतास, घनवद्देढा । |
| बंगभाषामें | सोनाल, शोंदाल, एसादनदी, बानरनादी । |
| मराठीभाषामें | घाईपा, बाव्याच्याशंगातील गर । |
| गुजरातीभाषामें | गरमाली । गरमालोना गोल । |
| कर्णाटकीभाषामें | हेगाके । |
| तैलङ्गीभाषामें | रेखकाया । |
| इंग्रेजीभाषामें | पुडिंगपाईपट्री, पॉजिंगकाइया, |

काइयापल्प Pudding pipetree, Pongingcasia Cassia pulp

लैटिनभाषामें केश्याकिमबुन्ना । Cassia fistula

अरबीभाषामें ख्यारेश्मर ।

आरग्वधगुणा ।

आरग्वधोगुरु स्वादु शीतलोमृदुरेचन ।

ज्वरद्वद्भोगपित्तास्रवातोदावर्तशूलनुत् ॥

अर्थ-अमलतास-भारी, स्वादिष्ठ, शीतल, मृदु, रेची वया ज्वर, दृढप-
रोग, रक्तपित्त, वात, उदावर्त और शूलको निर्मूल करे है ।

पतत्फलगुणा ।

तत्फलससनरुच्यकुष्ठपित्तकफापहम् ।

ज्वरेतत्सततपथ्यकोष्ठशुद्धिकरपरम् ॥ (भा० प्र०)

अर्थ-अमलतासकी कली-मसान, रुचिकारक, कुष्ठनाशक, पित्तनिरारक,
कफत्र, ज्वरमें सर्वदा पथ्य है और कोठेको अतीव शोधे है ।

पत्रगुणा ।

पत्रमारग्वधस्यापिकफमेदोविशोपणम् ।

ज्वरेचसततपथ्यमलदोषसमन्विते ॥

अर्थ-अमलतासके पत्र-कफ और मेदागोपन है, ज्वरमें सदा पथ्य है
और मलको दिला करे है ।

पुष्पागुणा ।

पुष्पाणिस्वादुशीतानित्तकानिमाहकाणिच ।

तुवराणिवातलानिकफपित्तहराणिच ॥

अर्थ—अमलतासके फूल—स्वाद्विष्ट, शीतल, कडुवे, ग्राहक, कपेले, वातवर्धक फल, और पित्तको दूर करे हैं ।

एतन्मज्जागुणा ।

मज्जातुमधुरापाकेस्निग्धाचाग्निविवर्द्धिनी ।

रेचिकापित्तवातानानाशिकासमुदाहृता ॥

अर्थ—अमलतासकी मज्जा—पाकमें मधुर, स्निग्ध, जठराग्निको वर्धक, रेचक तथा पित्त और वादीका नाश करे है

एतन्मूलगुणा ।

कृतमालस्यमूलन्तुदुग्धेनसहपाचयेत् ।

वातरक्तनिहत्याशुदद्रुमण्डलकान्यपि ॥

अर्थ—अमलतासकी जड़—दूधमें औंवाई हुई—वातरक्तनाशक, दाह और मण्डलकुष्ठको नष्ट करे है ।

वर्णिकारगुणा ।

कर्णिकारःसरस्तिक्त कटूष्ण कफशूलहा ।

उदरक्रिमिमेहघ्नोव्रणगुल्महरोनृप ॥ (नि०२०)

अर्थ—कर्णिकार—(दूसरे प्रकारका अमलतास) सारक, कडवा, चरपरा, गरम तथा कफ, शूल, उदररोग, क्रिमि, मनेह, व्रण और गुल्मका नाश करे है ।

गजकर्ण, कुष्ठ, दद्रु, खुजली, विचर्चिकादि रोगोंपर अमलतासके पत्तोंको पीम उसमें काजी मिलाकर लेप करते हैं ।

गण्डमाला रोगमें अमलतासकी जड़को चावलाके पानीमें पीमकर नास (नाकके द्वारा पीना) देते हैं ।

विवरण । इसका घडा शूक्ष होता है, पत्ते लाल चदनके पत्तोंकी समान होते हैं फूल पीले, तरबट आमलेकी सदृश होते हैं । फली गोल और १-१॥ हाथ लम्बी होती है, उसमेंसे गूदा निकलताई, उस गूदेका जुलाव लग ताई । व्यवहार—गूदा, पत्ते, फूल, मूल । मात्रा गूदेकी ३ मासेसे लेकर १॥ तोलेतक है ।

कटुयानामानि ।

तिक्ताकाण्डेरुहारिष्टाचक्राङ्गीशकुलादनी ।

तिक्तरोहिणिकाचैवकटुकाकटुरोहिणी ॥

अर्थ-तिक्ता-काण्डेरुहा, अरिष्टा, चक्राङ्गी, शकुलादनी, तिक्तरोहिणिका, कटुका, कटुरोहिणी, (जननी, तिक्ता, तिक्तरोहिणी, मत्स्यपिप्पला, नकुन्ना-रादनी, शतपर्वा, द्विजाङ्गी, मलभेदिनी, अगोकरोहिणी, कृष्णा, कृष्णभेदा, कृष्णभेदी, मद्दौषधी, कट्वी, अजनी, कटु, केदारकटुका, वामग्री, घन्यन्त-रिग्रंथा, वान्तिदा, कट्वरा, कटुम्भरा, अशोका, काण्डेरुहा, तिक्तिका, चित्राङ्गी, मत्स्यगकला)



| | |
|-----------------|---|
| संस्कृतभाषामें | कटुका । |
| हिन्दीभाषामें | शुटकी । |
| गगभाषामें | कटकी । |
| मराठीभाषामें | शुटकी, फाळी शुटकी । |
| गुजरातीभाषामें | कटु । |
| कर्णाटकीभाषामें | केदार कटकी । |
| तैलिङ्गीभाषामें | पाट्करोहिणी, नदकोलकर । |
| ईमेजीभाषामें | ग्याश्टलोबोरलीगु । Black Hell-bear |
| एन्टिन्भाषामें | हेलोबोरो नेमर दिस्व पिक्कोईन्ट, दुर्गमा । Picrostima Kutea |
| फार्सीभाषामें | रुक्के गियाह । |
| अरबीभाषामें | रायंक अस्सद रुक्के मरौपद । |

अस्या गुणा ।

कटीतुकटुकापाकेतित्तारूक्षाहिमालघुः ।

भेदिनीदीपनीहृद्याकफपित्तज्वरापहा ॥

प्रमेहश्वासकासाखदाहकुष्ठक्रिमिप्रणुत् । (भा प्र.)

अर्थ—कुटकी—पाकमें कटु, तिक्त, रूक्ष, शीतल, हलकी, भेदन, दीपन, हृदयको हितकारी तथा कफ, पित्त, ज्वर, प्रमेह, श्वास, कास, रुधिरदोष, दाह, कोढ़ और क्रिमिका नाश करेहै ।

अन्यञ्च ।

कटुकीशीतलातिक्ताकटीचाग्निप्रदीपनी ।

भेदिकाचसरारूक्षालघ्वीरक्तरूजापहा ॥

शीतपित्तश्वासकफदाहारुचिज्वराजयेत् ।

प्रमेहकुष्ठविषमज्वरकासक्षयापहा ॥

कामलाविषहृद्गनाशिनीतिप्रकाशिता ।

अर्थ—कुटकी—शीतल, तीखी, कड़वी, अग्निदीपक, भेदक, (दस्तावर) सारक, रूखी, हलकी तथा रक्तरोग, शीतपित्त, श्वास, कफ, दाह, अरुचि, ज्वर, प्रमेह, कोढ़, विषमज्वर, खाँसी, क्षई, कामला, विष और हृदयरोगको दूर करेहै ।

अस्या शोधनविधिः ।

कटुकीमुष्णदुग्धेनप्रक्षाल्यग्राहयेदपि ।

अर्थ—कुटकीको गरम दूधसे धोकर औषधिके काममें लावे ।

विवरण । बड़ी जड़वाली गुल्म है, आक्षरा छोटा, पत्ते अण्डेके समान आकारवाले, जिनके नीचेका भाग बड़ा और बगल खण्डित होतीहै, फूल नीला और गुच्छोंमें होतेहै, हिमालयके निकट पर्वतोंके जंगलमें उत्पन्न होतीहै । कुटकी कृष्णा और पीत इनभेदोंसे दो प्रकारकीहै इनमें पीले रंगकी कुटकी नेत्ररोगोंको दूर करतीहै । व्यवहार मूल । मात्रा ६ रशीसे लेकर ७ मासेतक है ।

चिरतिक्तनामानि ।

चिरतिक्तश्चभृनिम्ब किरातरामसेनक ।

अर्थ-चिरतित्त, भूनिम्ब, रिगत, गमगेनक (अनार्यतित्त, किगाडर, चिरातित्त, तित्तक, सुतित्तक चिराडिका, कदुतित्ता, कैरात, राण्डीतित्तक, हेम, काण्डतित्त)

नेपालनिम्बनामानि ।

नेपालनिम्बोनेपालस्तृणनिम्बोज्वरान्तकः ।

नाडीतिकोर्धतित्तश्चनिद्रारिसन्निपातहा ॥

अर्थ-नेपालनिम्ब, नेपाल, तृणनिम्ब, ज्वरान्तक, नाडीतित्त, अर्धतित्त, निद्रारि, सन्निपातहा ।

संस्कृतभाषामें

चिरतित्त ।

हिन्दीभाषामें

चिरापता ।

बगभाषामें

चिरता, चिराता, नेपाले निम्ब ।

मगधीभाषामें

किगाईत, पाडेकिगाईत, कृष्णकिगाईत,

गुजरातीभाषामें

करियातु ।

कर्णाटकीभाषामें

नेलवडु ।

तैलङ्गीभाषामें

नेलान्मु ।

लैटिन् भाषामें

भिराटियाचिरेटा । *Soraria Chirata*

Aphela Chirata

इमेनीभाषामें

चिरेटा ।

फारसीभाषामें

नेनिहाड

अरबीभाषामें

कल्युम्, सारिग ।

भूनिम्बगुणाः ।

भूनिम्बोवातलन्तिकोवणरोपणकारकः ॥

सर शीतःपच्यकरोलघृक्षस्तृपापहः ।

कफपित्तज्वरकुष्ठकण्डूशोथंक्रमीस्तथा ॥

सन्निपातज्वरदाहशूलमेहव्रणतथा ।

श्वासक्रान्तप्रदरंशोपचाशोरुचिजयेत् ॥ (नि०२०)

अर्थ-चिरापता-वातकारक, कटुता, मणरोपक, ज्वरहार, शीतल, पच्य, शूलहार, शूल तथा शूल, कफ पित्त, अग, कोष्ठ, कण्डू, गुग्गुलु, शूल, शूल, सन्निपातज्वर, दाह, शूल, मेह, मण भाम रोगी मण, शोष परागति नीर भरीगरी दुग्धोद्दी ।

नेपालनिम्बगुणा ।

नेपालतिक्तकिञ्चिच्चउष्णयोगवहलघु ।

तिक्तपित्तकफशोथरक्तखत्तुद्वज्वराञ्जयेत् ॥

अर्थ-नेपालीनीम-किञ्चित् गरम, योगवाही, हलका, कडवा, तथा पित्त, कफ, सृजन, रुधिररोग, पियास और ज्वरका नाश करे हे । शेष गुण चिरायतेके समान जानने ।

अपिच ।

नैपालःसन्निपातारिर्ज्वरनिद्रापहस्तथा । (शो० नि०)

अर्थ-नेपालीनीम-सन्निपात, ज्वर और निद्राको दूरकरे हे । चिरायतेका धुप होताहे । मात्रा २ मासेकी ।

कुटजनामानि ।

कुटजःशक्रपर्यायोवत्सकोगिरिमल्लिका ॥

अर्थ-कुटज, शक्रपर्याय, वत्सक, गिरिमल्लिका, (शक्र, वरतिक्त, पाण्डुर, कटुक, कुटुक, शक्राशन, कौटज, तिक्तक, रक्तनाशक, वृक्षक, शक्रादय, कूटज, काही, कालिङ्ग, मल्लिकापुष्प प्रावृष्य, शक्रपादप, यवफल, सम्राही, पाण्डुर-द्रुम, प्रावृष्य, महागन्ध, इन्द्रद्रु, कौट, शक्रग्राही, इन्द्रयवफल)

संस्कृतभाषामें

कुटज, श्वेतकुटज ।

हिन्दीभाषामें

कुडा, कौरिया ।

वगभाषामें

कुडचिगाल, कुटगज ।

मराठीभाषामें

काळा कुडा, सफेद कुडा ।

गुजरातीभाषामें

कडी-द्रुधला ।

कर्णाटकीभाषामें

कोडसिगेयमनु ।

तैलङ्गीभाषामें

अमुट्टचेट्ट अगिञ्चेट्ट, तुम्भिकचेट्ट, अकेट्ट, च-
राल कुट्ट ।

औत्क०भाषामें

कुडिया ।

इमेजीभाषामें

ओवल्लिवडगेसुवे । Ovallewed Rose Bay

लैटिन् भाषामें

राइटियाण्डेमेनेटिका ।

अरबीभाषामें

Wights antidyenterica

तिवाज ।

कुटजगुणा ।

कुटजः कटुको रूक्षो दीपनस्तु वरो हिम ।

अशौऽतिसारपित्तास्रकफतृष्णामकुष्ठनुत् ॥ (भा० प्र०)

अर्थ-कुडा-कटु, रुक्ष, दीपन, कषाय, शीतल तथा यवापीर, अतिसार, रक्त, पित्त, कफ, तृषा, आम और कुष्ठको नष्ट करे है ।

अपिच ।

कुटजः कटुकः प्लीहाकफपित्तातिसारनुत् ॥ (शो० नी०)

अर्थ-कुडा-कटु, प्लीहा, कफ, पित्त और अतिसारका नाशकरे है ।

अन्यथा ।

कुटजः कटुतिक्तोष्णः कषायश्चातिसारजित् ।

तत्रासितश्च पित्तघ्नस्त्वग्दोषार्शनिहृतन्तन ॥ (रा० नि०)

अर्थ-कुडा-कटु, तिक्त, गरम, कषाय और अतिगारलागक है, और काला कुडा पित्त, त्वचाके दोष और नवासीरको दूर करे है ।

अतस्तु कुटजगुणा ।

श्वेतस्तु कुटजस्तित्त कटुश्चोष्णो ग्निदीपकः ।

पाचकस्तु वगेरु शोथग्रहकोरक्तदोषहा ॥

कुष्ठतिसारपित्तार्शकफतृद्रकृमिहामतः ।

ज्वरचामश्वादाहचनाशयेदितिकीर्तितः ॥ (नि० २०)

अर्थ-सफेद कुडा-कटु, तीखा, गरम, अग्निप्रदीपक, पाचक, कफहा, रूखा, मल्लोघक तथा रक्तविनाश, कौट, अतिगार, पित्त, यवापीर, कफ, तृषा, कृमि, ज्वर, आम और दाहको दूर करे है ।

अन्य तु गणना ।

पुष्पतु वत्सः स्योक्ततु वचाग्निदीपकम् ।

तिक्तशीतवातलचलघुपित्तातिसारनुत् ॥

रक्तदोषकफपित्तकुष्ठचैरातिसारकम् ।

कूर्माश्वहरेन्देतदुक्तपूर्वैश्च मृगिभिः ॥ (नि० २०)

अर्थ-पुष्पे वत्स-वगेरे, जठराग्निहीन दीपन कर्मेण्ये, वदने दीपन, वातकारक रक्तके नष्टा पित्तातिगार रुचिरविनाश, यव, पित्त, कुष्ठ, अति सार और कृमिना नाश करे है ।

अस्य शिम्बीशाकगुणा ।

तस्य शिम्बीभवं शाकं व्यजनं चामवातजित् ।

रुच्यकफघ्नं रक्तातीसारकुष्ठकृमीञ्जयेत् ॥

अर्थ—कुडेकी फलियोंका शाक—आमवातनाशक, रुचिकारक तथा रक्ता-
तिसार, कोढ़ और कृमिको दूर करे है ।

त्वग्गुणा ।

कुटजस्य त्वचा तित्तासर्वातीसारनाशिनी ।

अर्थ—कुडेकी छाल—कड़वी और सर्वातिसारनाशक है ।

विवरण । बड़ा घृक्ष होता है, पत्ते रामफलके पत्तोंकी समान घड़े घड़े
होते हैं, फूल सफेद होता है, इसमें फली होती हैं ।

सफेद कुडेके दूधमें विष होता है, उस दूधको खानेसे मनुष्य मरजाते हैं ।

इन्द्रयवनामानि ।

उक्तकुटजबीजन्तुयवमिन्द्रयवतथा ।

कलिंगचापिकलिंगतथा भद्रयवस्मृतम् ॥

अर्थ—कुटजबीज, यव, इन्द्रयव, कलिंग, कालिंग, भद्रयव, (कलिंगक,
शक्राह, शक्रबीज, वत्सक, वत्सकबीज, कालिंगबीज, कुटज, भद्रज)

सस्कृतभाषामें इन्द्रयव ।

हिन्दीभाषामें इन्द्रजी ।

गुजरातीभाषामें इदरजव ।

बगलेमें इन्द्रयव ।

मराठीभाषामें कुडराचें बीज, इन्द्रजव ।

कर्णाटकीभाषामें कोडसिगेय बीज ।

फारसीभाषामें जवान कुश्किस् ।

बरबीभाषामें लेमानुत् असाकीर ।

लैटिन्भाषामें होलरहेनाएन्टिडिमेंटेरिका ।

Holarrhena antidysenterica

अस्य गुणा ।

इन्द्रयवाकटुतित्ताशीताकफवातरक्तपित्तहरा ।

दाहातिसारशमनीनानात्वग्दोषशूलमूलघ्नी ॥ (रा० नि०)

अर्थ-इन्द्रजी, कटु, तिक्त, शीत तथा कफ, वात, रक्तपित्त, दाह, अतिसार, नाना प्रकारके त्वचाविकार और शूलको निर्मूल करे।

अपिच ।

वत्सकस्य तु वीजं च कटु तिक्तञ्च शीतलम् ।

ग्राहकं पाचनचोष्णचाग्निदीप्तिकरपरम् ॥

वातरक्तकफं दाहं पित्तना नाज्वरं स्तथा ।

शूलमर्शश्चातिसारत्रिदोषगुदकीलकम् ॥

कुष्ठकृमिविमर्षामरक्ताग्नीसहजभ्रमान् ।

श्रमचैरनिहत्याशुकथितमुनिपुगवे. ॥ (नि० २०)

अर्थ-इन्द्रजी-तीवे, कडवे, शीतल, मलरोधक, पाचक, गरम, अग्नि दीपक तथा वातरक्त, कफ, दाह, पित्तज अनेक प्रकारके ज्वर, शूल, पक्षाघात, अतिसार, त्रिदोष, गुदकील, कोष्ठ, कृमि, विसर्प, आम, रक्ताग्नी, रक्तगोम, भ्रम और श्रमको दूर करे।

विवरण । कुठ्ठेके बीजोंको इन्द्रजी कहते हैं । इन्द्रजी दो प्रकारके होते हैं, एक मीठे दूसरे कडवे, इसमें सफेद कुठ्ठेके इन्द्रजी मीठे होते हैं और काले कुठ्ठेके इन्द्रजी कडवे होते हैं । मात्रा ३ भागेकी ।

मदनफलनामानि ।



मदनफलं हि न पिण्डिनटपिण्डीतकस्तथा ।

करदाटोमरुच्यते त्वकोविपपुष्पक ॥

अर्थ-मदन, उर्दन, पिण्डीनट, पिण्डीतक, करहाट, मरुनक, शल्यक, विपयुष्पक, (पिचुक, मुचुकुन्द, कण्टकी, करहाटक, शल्य, कण्ठ, रामच्छ-
र्दनक, रामाच्छर्दनक, कैटर्य, घाराफल, तगर, राठ, गाछ, ग्रन्थिफल, घण्टाल,
वस्तिशोधन)

सस्कृतभाषामें

मदन ।

हिन्दीभाषामें

मैनफल, करहर ।

बगभाषामें

मयनाकाटा ।

मराठीभाषामें

गेळ ।

गुजरातीभाषामें

ढोल ।

कर्णाटकीभाषामें

बोनगरे रणय बोनगरे एरडु ।

तैलिङ्गीभाषामें

वसन्तकडिमिचेट्टु ।

तामिलीभाषामें

मडुककरय ।

भोत्क०

पातर ।

नेपालीभाषामें

मदल ।

प०

मिण्डकोल ।

दक्षिणीभाषामें

मेणाहल ।

इंग्रेजीभाषामें

बुशीगार्डिनीया । Bushy gardenia

लैटिन्भाषामें

रेन्डियाडुमेटोरम् । Randia fumetorum

अरबीभाषामें

जोशुल्क ।

अस्य गुणा ।

मदनोमधुःस्तित्तोवीर्योष्णोलेखनोलघु ।

वान्तिकृद्धिद्रधिहरः प्रतिश्यायव्रणान्तक ॥

रूक्षकुष्ठकफानाहशोथगुल्मव्रणापह । (भावप्रकाश)

अर्थ-मैनफल-मधुर, कडवा, उष्णवीर्य, लेखन, हल्का, घमनकारक,
विद्रधिहारक, प्रतिश्याय (जुकाम) और व्रणविनाशक है, रूखा तथा कफ,
आनाह, सूजन, गुल्म और घावको दूर करे है ।

अपिच ।

राठोवमनकूट्रेदीपकामाशयशुद्धिकृत् ।

त्वग्दोषमारुतश्लेष्मविपप्रशमन स्मृत ॥ (शो०नि०)

अर्थ-मैनफल-चमनकारक, भेदक, पक्काशय और आमामशयशोधक तथा त्वचाके रोग, वात, कफ और विषविकारको दूर करे।

- मपिय ।

मदनःकटुकस्तिक्तोमधुश्चोष्णश्चलेखनः ।

लघूरूक्षोवान्तिकारीवस्तिकर्मणिचोत्तमः ॥

कफेवातंत्रणंशोथमानाहविद्रधीस्तथा ।

गुल्मंकुष्ठप्रतिश्यायविषचाशोज्वरजयेत् ॥

अर्थ-मैनफल-कटुरसयुक्त, तिक्तमान्वित, मधुर, उष्ण, लेखन, रुक्ष, वमनकारक, वस्तिकर्ममें उत्तम तथा कफ, वात, घाव, छजन, आनाह, विद्रधि, गुल्म, प्रतिश्याय, (जुकाम) विष, यान्त्रिक और ज्वरको हरे।

कृष्ण.श्वेतश्चमदन.शीतलोमधुर स्मृतः ।

कटुस्तिक्तश्चतुर्वर्गेवान्तिकृत्कफनाशनः ॥

पक्वामाशयशुद्धेश्वकारक पित्तनाशक ।

हृद्रोगनाशकश्चैवपूर्वस्मादुत्तमोगुणः ॥ (नि० २०)

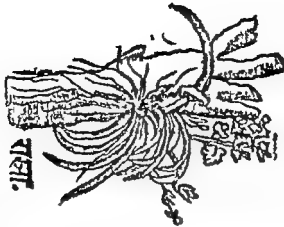
अर्थ-दूगरे प्रकारके दोनों मैनफल-(एक लाले रंगका दूतला मफेड रंगका) शीतल, मधुर, रूक्ष, निरा कपड़े, वान्तिकारक, कफनाशक, पक्काशय और आमामशयको शोधनेवाले तथा पित्त और हृदयरोगका नाश करनेवाले हैं। यह पहले मैनफलकी अपेक्षा अधिक गुणवाले हैं।

विवरण । मैनफलका वृक्ष होता है, पित्त रोगचिह्नों समान होते हैं, वृक्ष मफेड पाच पत्तड़ीके घुटेक पीलापन लिए होते हैं, वृक्ष आगमोमों, आकार होते हैं, यह वमन फगनेमें एकरी औषधी है।

राशनामानि ।

नाकुलीसुरसारास्त्रासर्पगन्धापलट्टपा ।

अर्थ-नाकुली, सुरमा, गरमा, मपगन्धा, पन्धपा (द्रोणी पत्रा, शुगन्धा, गन्धानास्त्रौ, नकुलपा, मुष्टेगासी छत्राणी, गुजरा, रस्ता, श्रेपणी, रसाना, पन्धापणी, गगा मुगन्धिपुष्पा ग्गादजा, अतिगन्धा, पुत्र-गन्धा, पुत्रगन्धा)



सस्कृतभाषामें

हिन्दीभाषामें

वगभाषामें

मराठीभाषामें

गुजरातीभाषामें

कर्णाटकीभाषामें

तेलुगुभाषामें

लैटिनभाषामें

इंग्रजीभाषामें

फारसीभाषामें

अरबीभाषामें

रास्त्रा ।

रासन, रायसन, रहसनी, रास्त्रा ।

रास्त्रा ।

नावलीच्या मुळ्या ।

रासना

रसनाकेदारे प्रसिद्धा ।

रासनापुडका, किरम्मिचका अन्तर दामर ।

वेडा रोक्म बुर्दि आई । *Anda roxburghia*

प्लुचियालेनसिओलेटा । *Pluchiancolata*

रामुन ।

जजवील शामी ।

रास्त्राभेदाः ।

रास्त्रातुत्रिविधाप्रोक्तामूलपत्रतृणतथा ।

ज्ञेयोमूलदलौश्रेष्ठौतृणरास्त्रातुमध्यमा ॥ (रा०नि०)

अर्थ—रास्त्रा—जड, पत्रे और तृण इन भेदोंसे तीन प्रकारकी है ।

तिनमें जड रास्त्रा और पत्र रास्त्रा श्रेष्ठ होती है और तृण रास्त्रा अधम गिनी जाती है ।

रास्त्रागुणाः ।

रास्त्राऽऽमपाचनीतिक्तागुरुष्णाकफवातजित् ।

शोथश्वाससमीरास्रवातशूलोदरापहा ॥

कासज्वरविपाशीतिवातिकामयदिध्मजित् । (भा०प्र०)

अर्थ-रास्त्रा-आमपाचक, कडवी, भारी, गरम, कफ-वातनाशक, सज्जन, रक्तवात, वातशूल, उदररोग, खासी, ज्वर, विषविकार, ८० अस्त्री प्रकारके वातरोग और हिध्मको दूर करे है ।

अपिच ।

रास्त्रोष्णावातशोथामवातवातामयाञ्जयेत् ॥ (शोढलनि०)

अर्थ-रास्त्रा-गरम है, वात, सज्जन, आमवात और वातरोगाको नष्ट करे है ।

अपिच ।

रास्त्रातिक्तागुरुश्वोष्णापाचन्यामविनाशिनी ।

वातरक्तविपश्वासकासचविषमज्वरम् ॥

शोथद्विक्ताचामवातकफशूलविनाशयेत् ।

ज्वरकम्पचोदरञ्चमवांन्वाताश्चनाशयेत् ॥

अर्थ-रास्त्रा-कडवी, भारी, गरम, पाचक, आमनाशक तथा वात, रक्त, विष, श्वास, स्वासी, विषमज्वर, सज्जन, द्विक्ता, आमवात, कफ, शूल, ज्वर, कम्प, उदररोग और गर्व प्रकारके वातका विनाश करे है ।

विवरण । वगैरेके प्राचीन आम्नादि वृक्षां पर उत्पन्न होती है, इसकी जड़ वृक्षकी छालके ऊपर जमीनहती है, पूरा पीरा बैंगनी छिन्दिर होता है, जड़ सहित रास्त्राका धुप लायकर गुन्दरी पात्रके ऊपर नागिनकी दहीकी छापाम रखकर पानी दे, वृक्ष बढ़ेगा और पूरेगा । व्यवहार-जड़ । मात्रा २ सोलेकी ।

नाकुलीनामाति ।

नाकुलीसुग्मानागसुगन्धागन्धनाकुली ।

नकुलेष्टाभुजङ्गाक्षीसर्पाङ्गीविपनाशिनी ॥

अर्थ-नाकुली, सुग्मा नागसुगन्धा, गन्धानुली, नकुलेष्टा, भुजङ्गाक्षी, सर्पाङ्गी, विपनाशिनी, (सुगन्धा सुगन्धा, रक्तपत्रिका, इशरी, नागगन्धा, अदिमुक्त, सुग्मा, सर्पाङ्गी, व्यालगाधा)

गन्धानुलीनामाति ।

अन्यामहासुगन्धाचसुगन्धागन्धनाकुली ।

सर्पाक्षीफणिह्वीचनकुलाद्याहिभुक्चम्पा ॥

विषमर्दिनिकाचादिमर्दनीविषमहनी ।

महादिगन्धाहिलनाज्जयान्याह्लादशाल्वया ॥

अर्थ—महासुगन्धा, सुवहा, गन्धनाकुली, सर्पाक्षी, फणिहत्री, नकुलाढ्या, अहिभुक्, विषमर्दनिका, अहिमर्दनी, विषमर्दनी, महाहिगन्धा, अहिलता)

सस्कृतभाषामें

नाकुली, गन्धनाकुली ।

हिन्दीभाषामें

नाई, नाकुलीकन्द, नकुलकन्द, हरकाईचन्दा ।

बगभाषामें

नाकुली, सुगन्धनाकुली ।

मराठीभाषामें

मुगुसवेल, नाई सापसद ।

कर्णाटकीमें

विषमुगरीद्वय ।

तैलिङ्गीभाषामें

पद्मपुचेदु ।

लैटिन्भाषामें

रोबोलकिया सर्वेतिना । *Rauwolfia Serpentina*

फारसीभाषामें

छोटा चादा ।

नाकुलीगुणा ।

नाकुलीकटुकातिक्तातथोष्णाकृमिरोगहृत् ।

वृश्चिकोन्दुरसर्पादिविषनाशयतिक्षणात् ॥

तुवराचत्रिदोषघ्नीकन्देप्येतेगुणाः स्मृताः । (ग०नि०)

अर्थ—नाकुली—चरपरी, कडवी, गरम, कृमिरोगनाशक, विच्छृ, मूपा और सर्पादिके विषको तत्क्षण दूर करनेवाली, कपेली और त्रिदोषनाशक है, इसके कन्दके गुणभी इसीके समान जानने ।

अन्यत्र ।

नाकुलीतुवरातिक्ताकटुकोष्णाविनाशयेत् ॥

भोगिलूतावृश्चिकाखुविषज्वरकृमित्रणान् । (भा०प्र०)

अर्थ—नाकुली, कपेली, कडवी, चरपरी, गरम तथा साँप, मकरी, विच्छृ और मूपा इनका विष, ज्वर, कृमि और घृणको दूर करे है ।

अन्यत्र ।

नाकुलीयुगलतिक्तकटूष्णचत्रिदोषनुत् ।

अनेकविषविध्वसिकिञ्चिच्छ्रेष्ठद्वितीयकम् ॥ (रा०नि०)

अर्थ—दोनों प्रकारकी नाकुली—(नाकुली, सुगन्धनाकुली) कडवी, चरपरी, गरम, त्रिदोषनाशक, अनेक प्रकारके विषविनाशक और गन्धनाकुली नाकुलीकी अपेक्षा किंचित् श्रेष्ठ है ।

नाकुलीकी बेल जगलम होती है, पत्ते पानकी समान होते हैं, नीचे पन्द होता है ।

सरस्वती, अमृता, कगुनी, सुवर्णलता, अग्निमाषा, दुर्मेदा, लवणा, किशुका,
आवेगा, काकाण्डी, त्रिपर्णी, पीदधा)
महाज्योतिष्मतीनामानि ।



मालिकागुनी

महाज्योतिष्मतीतीक्ष्णाकडुनीवृहत्कगुनी ।

अर्थ-महाज्योतिष्मती, तीक्ष्णा, कगुनी, वृहत्कगुनी (तेजोवती, यदुग्मा,
कनकप्रभा, सुवर्णनकुनी, लवणा, अग्निमाषा, सेनस्विनी, सुगन्ता, अग्निपत्नी,
अग्निभां, शैलमुता, मुतला, सुवेगा, वायवी, तीव्रा, काकाण्डी, वायतादनी,
गीर्वा, श्रीलता, सीम्पा, ग्राही, लवणाकिशुका, रागावतवदी, पीता,
पीतवर्ला, यशस्विनी, मेघा, मेधावती, पीरा)

संस्कृतभाषामें
हिन्दीभाषामें
बंगभाषामें
गुजरातीभाषामें
मराठीभाषामें
कर्णाटकीभाषामें
तैलिङ्गीभाषामें
इमेजीभाषामें
संस्कृतभाषामें
फारसीभाषामें

ज्योतिष्मती, महाज्योतिष्मती ।
मालिकागुनी, पद्ममालिकागुनी, उमिदिनी ।
लतावल्ली, वदन्तावल्ली ।
मालिकागुनी ।
मालिकागुनी (फा०) विंगदी ।
फागुण्डु ।
वायवी (वेदुतांगी)
स्याद्वी ।
गिलेगुलापेनिसुनेग ।
वाय ।

ज्योतिष्मतीगुला ।

ज्योतिष्मतीतिक्तरसानरुक्षाकिञ्चित्कडुवर्तकफापहान ।

दाहप्रदादीपनकृच्चमेध्याप्रज्ञांचपुष्पातितथाद्वितीया ॥ रा. नि

अर्थ—मालकागुनी—चरपरी, कडवी, रूखी, किंचित् चरपरी, वातकफ-
नाशक, दाहजनक, अग्निप्रदीपक और मेधा तथा प्रज्ञाकारकहै, दूसरीके, भी
इसीके समान गुण जानने ।

अपिच ।

ज्योतिष्मतीकटुस्तित्तासराकफसमीरजित् ।

अत्युष्णावामनीतीक्ष्णावह्निबुद्धिस्मृतिप्रदा ॥ (म० नि०)

अर्थ—मालकागुनी—चरपरी, कडवी, सारक, कफवातनाशक, अत्यन्त
गरम, वमनजनक, तीक्ष्ण तथा जठराग्नि, बुद्धि और स्मरणशक्तिको देनेवाली है ।

अप्यञ्च ।

ज्योतिष्मतीतुकटुकातित्ताचाग्निप्रदीपनी ।

अत्युष्णादाहकामेध्याप्रज्ञापुष्टिकरीमता ॥

वृष्यावान्तिकरीतीक्ष्णावर्ण्याचतुवरामता ।

उदरस्य हरेत्पीडांत्रणपाण्डुविसर्पहा ॥ (गणनि०)

अर्थ—मालकागुनी—चरपरी, कडवी, अग्निदीपक, अत्यन्त उष्ण, दाहका-
रक, मेधाजनक, प्रज्ञाकारक, पुष्टिदायक, वीर्यवर्धक, वमनकारक, तीक्ष्ण,
शरीरके रंगको उज्ज्वल करनेवाली, कपेली तथा उदरकी पीडाको हरती है,
घाव, पाण्डुरोग और विसर्प रोगको दूर करे है ।

विवरण । इसकी बेल होती है, पत्ते गोल कुठ अनीदार होते हैं । फलोंका
झुमका होता है, कच्चे फल नीले होते हैं और पकनेपर पीले पड़जाते हैं उनमेंसे
लाल धीज निकलता है, उन बीजोंमेंसे पीला तेल निकलता है, वह तेल अने-
कप्रकारके वातरोगोंको और खुजलीको दूर करता है ।

पुष्करमूलनामानि ।

पौष्करपुष्करमूलपुष्करपद्मवर्णकम् ॥

अर्थ—पौष्कर, पुष्करमूल, पुष्कर, पद्मवर्णक, (पद्मकण, पद्मपत्रमूल,
पद्मपर्णक, पुष्करिणी, वीरपुष्करादया, काश्मीर, ब्रह्मतीर्थ, श्वासारि, मूल
पुष्कर, पुष्करजटा, पुष्करशिफा, वीर, पद्मपत्रक, पद्मपुष्प, सागर, शूर,
वृक्षरुह, सुमूलक, शूलघ्न, कुष्ठभेद)

संस्कृत भाषामें

पुष्करमूल ।

हिन्दी भाषामें

पोदकरमूल ।

बंग भाषामें

कुष्ठविदोष, पुष्करमूल ।

गुजरातीभाषामें

पोकरमूल ।

मराठी भाषामें

पुष्करमूल ।

वर्णाटकीभाषामें

पुष्करमूल ।

अर्थ-गुणाः ।

पुष्करकटुतिक्तोष्णकफवातज्वरापहम् ।

श्वासारोचककासघ्नशोफघ्नपाण्डुनाशनम् ॥ (रा०नि०)

अर्थ-पोदकरमूल-चर्मपरा, कटुवा तैया कफ, वात, ज्वर, श्वास, अरोचक, खांसी, सूजन और पाण्डुरोगका नाश करे दे ।

- अपिच ।

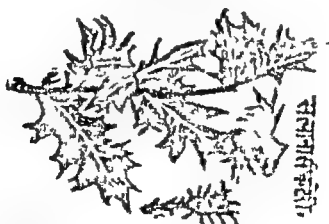
पुष्करपार्श्वरुग्वातकासशोथज्वरापहम् ।

श्वासोर्ध्ववातपाण्डुभ्रंशिकादोषनिवारणम् ॥

अर्थ-पोदकरमूल-पार्श्वविदना, वात, खांसी, सूजन, ज्वर, श्वास, अर्ध-ज्वर, पाण्डुरोग और शिपरोगनिवारक है ।

पोदकरमूल उत्तम कर्दी नहीं मिलता, इसलिये इसके बदलेमें छूट देना ।

खणसीरी मामानि ।



सालिग्रामनिरुपमणे-

स्वर्णक्षीरीहेमगिगापट्टपर्णीहिमावती ।

हेमवतीपीतपुष्पातन्मूलचोक्तञ्च्यते ॥

अर्थ-स्वर्णक्षीरी हेमगिगा, पट्टपर्णी, हिमावती, हेमवती, पीतपुष्पा,

(स्वर्णदग्धा, स्वर्णाद्वा, रुक्मिणी, सुवर्णा, हेमदुग्धा, हेमक्षीरी, काश्चनी, कटुपर्णी, हेमाद्वा, क्षीरिणी, काश्चनक्षीरी, कर्बुणी, तिक्तदुग्धा, हिमाद्रिजा, यवचिंचा, हिमोद्भवा, हैमी, हिमजा) इसकी जड़को चोक कहते हैं ।

| | |
|-----------------|---|
| सस्कृतभाषामें | कटुपर्णी, स्वर्णक्षीरी, क्षीरिणी । |
| हिन्दीभाषामें | सत्यानासी, कटेरी (चोक) भरेबद पिसोटा । |
| बंगभाषामें | स्वर्णक्षीरी, शोणाखिरुई—(चोक) । |
| मराठीभाषामें | कांटेघोत्रा, फिरगीघोत्रा । |
| गुजरातीभाषामें | दारुडी । |
| कर्णाटकीभाषामें | चिकणिकेयभेद । |
| तामिलभाषामें | ब्रह्मदण्डविरड । |
| इंग्रेजीभाषामें | गेंबोस थिसल् । Gamboge Thistle |
| | मेक्सिकन् आर्गिमोन् । Mexican Argemon |
| लैटिनभाषामें | आर्गिमनी मेक्सी केना । |

अस्या गुणः ।

हेमाह्वारेचनीतिक्ताभेदिन्युत्कृष्टशकारणी ।

कृमिकण्डूविषानाहकफपित्तास्रकुष्ठनुत् । (भा० प्र०)

अर्थ—स्वर्णक्षीरी—रेचक, कडवी, भेदक, उत्कृष्टशकारक तथा कृमि, कण्डू, विष, आनाह, कफ, रक्तपित्त और कुष्ठको नष्ट करे है ।

अन्यथा ।

क्षीरिणीकटुकातिकारेचनीशोफतापनुत् ।

कृमीदोषकफघ्नीचपित्तज्वरहराचसा ॥

अर्थ—काश्चनक्षीरी—चरपरी, कडवी, रेचक तथा सूजन, ताप, कृमि, कफ और पित्तज्वरविनाशक है ।

अपिच ।

स्वर्णक्षीरीहिमातिक्ताकृमिपित्तकफापहा ।

मृत्रकृच्छ्राश्मरीशोफदाहज्वरहरापरा ॥ (रा० नि०)

अर्थ—स्वर्णक्षीरी—शीतल है और कृमि, पित्त, कफ, मृत्रकृच्छ्र, पयरी, सूजन तथा दाहज्वरको दूर करे है ।

अन्यथा ।

स्वर्णक्षीरीहिमातिक्तास्राकण्डूविनाशिका ।

वातरक्तकृमीन्पित्तकफकृच्छ्रचनाशयेत् ॥

जूर्त्यश्मरीशोफदाहज्वरकुष्ठविनाशिनी ।

मूलचास्यचोक्रइतिगुणाःपूर्वोक्तवत्स्मृताः॥ (राजनि०)

अर्थ-स्वर्णक्षीरी-शीतल, कडवी, दस्तावर तथा खुजली, वात रक्त, पृमि, पित्त, कफ, मूत्रकृच्छ्र, ज्वर, अश्मरी (पथरी) मृजन, दाह, ज्वर और बोंड इनका नाश करेई, इसकी जड़को चोक्र कहते हैं, उसके गुणभी हमरी समान जानने ।

अपिच ।

तस्याक्षीरविन्दुमात्रनेत्रेक्षितघृतशुतम् ।

शुक्रचक्षुधिमार्संचनेत्राध्यक्षैवनाशयेत् ॥ (ग० नि०)

अर्थ-इसके दूधकी एक सूट घीके साथ भातमें लगानेमें शुक्रनेत्ररोग, अधिमासनेत्ररोग और नेत्राध्यक्षरोग दूर होते हैं ।

अथवा शरद्वपम् ।

कण्टकीकण्टपत्रार्चपातपुष्पाधुपामयेत् ।

स्वर्णक्षीरीकण्टफलाकृष्णबीजाचसुस्थिरा॥ (शिवनि०)

अर्थ-इसका धूप फाटावाला होताई, पत्तोंपर ऊपर पति होने हैं, पुन पीग होताई, दूधका रंग सुवर्णके समान वर्णवान् होताई, पत्तोंपर पति होतेई, उनमेंसे काले रंगके बीज निकलते हैं । उन बीजोंका तैल निरन-ताई, वह तेल अनेक प्रकारके त्वचा रोगोंको हर्ताई ।

वृषट्पट्टहीनामानि ।



(वृषट्पट्टहीनामानि)

कर्कटशृङ्गिकाशृङ्गीकुलिङ्गीकासनाशिनी ।

महाघोषाचचक्राङ्गीकर्कटीवनमूर्द्धजा ॥

अर्थ-कर्कटशृङ्गिका, शृङ्गी, कासविनाशिनी, कुलिङ्गी, महाघोषा, चक्राङ्गी, कर्कटी, वनमूर्द्धजा (कर्कटाख्या, कुलीरशृङ्गी, घोषा, चक्रा, शिखरी, कर्कटाख्या, कौलिरा, विपाणिका, चन्द्रास्पदा, नवागा, कुलीर-विपाणिका, नवागी, वक्रा, अजशृङ्गी, कर्कटशृङ्गी)

संस्कृतभाषामें कर्कटशृङ्गी ।

हिन्दीभाषामें काकडाशिङ्गी ।

बंगभाषामें काकडाशृङ्गी ।

मराठीभाषामें काकडाशिङ्गी ।

गुजरातीभाषामें काकडाशिङ्गी ।

कर्णाटकीभाषामें कर्कटशृङ्गी ।

तैलिङ्गीभाषामें कर्कटाशृङ्गी ।

लैटिन्भाषामें पेस्टाशिपा इत्येतिवा । *Pistaciaantagurtiwa*

अस्यायुगा ।

कर्कटशृङ्गीकातिक्ताचोष्णाचतुवरागुरुः ।

वातहिक्रातिसारघ्नीवालानांचहितावहा ॥

कासश्वाभरक्तदोषपित्तज्वृत्तिकफक्षयम् ।

वान्तिहिध्मांचोर्ध्ववातकृमिवृष्णाक्षतक्षयान् ॥

अरुचिनाशयत्येवऋषिभिः परिकीर्तिता । (निघण्टु ०)

अर्थ-काकडाशिङ्गी-कडवी, गरम, कपेली, भारी तथा वात, दुग्धकी और अतिसारको हरे है, बालकोंको हितकारी और खासी, खाँसे, रुधिर-विकार, पित्त, ज्वर, कफ, क्षय, वर्मेन, हिध्मे, ऊर्ध्ववाते, कृमि, वृषा, क्षत-क्षय तथा अरुचिको दूर करे है ।

यद्फलनामानि ।

कट्फलत्वफलकुम्भीकुमुदिकाश्रीपर्णिका ॥

अर्थ-कट्फल, त्वक्कट, कुम्भी, कुमुदिका, श्रीपर्णिका, (कैट्ये, काफल, कुम्भिपाकी, पुष्प, कुमुदी, मोमवल्क, सोमवृक्ष, गेहिणा, नासातु, अरण्य,

कृष्णगर्भ, प्रचेतसी, भद्रावती, भद्राकुम्भी, रामतेनक, कुमुदा, उमगप, भद्राक्षनक, लघुकाशमर्ष, श्रीपर्णी, भद्रा, कापररु)

रसूतभापामें

कटफल ।

हिन्दीभापामें

कायफल ।

वगभापामें

कापररु, कायनाल ।

मगठीभापामें

कुम्पाची शाल, बा पळ ।

गुजरातीभापामें

कापररु ।

कर्णाटकीभापामें

किरुतिपत्ति ।

तेलिङ्गीभापामें

पापर गुडम ।

लटिनीभापामें

मिरिका सापिश, (छाल) ।

केरिया आयोरिया *Croton tiglium*

मेरिस्सिका मेलपेरिका (वल) *Myrica*

Myrica aspalula Malabarica

अरबीभापामें

वार शीशरान ।

फार्सीभापामें

उदुम्बरु ।

भाषा गुणा ।

कटफलतुवगतिककटुवातकफज्वरान् ।

हन्तिश्वासप्रमेदाशं कासकण्ठामयारुची ॥

उमदाहदरुच्यं मुखरोगशमप्रदम् ।

तीक्ष्णक्षुतकरचोष्णहन्तिगुल्मामयानपि ॥

अर्थ-कापररु-कनेला, कर्णा, चारपग मया शाल, वर, उवा, भाग, प्रमेद, वयार्गीर, गार्गी, कण्ठरोग, अरुणि और उमदाहदं दूर करते हैं, क्षुति कारक, मुखरोगको शमन करे, तीक्ष्ण, तीक्ष्ण सनेराग, गरम और शुष्कगो-गर्भनाशक है ।

अपरा ।

कटफलरुचिदं चोष्णतुवरं रुनितकम् ।

कासंश्वासं चोमदाहमुखरोगं ज्वरं तथा ॥

कफवातप्रमेदाशं रुचिगुल्मगलामयान् ।

अग्निनाशं पाण्डुगेन प्रहर्षा निवनाशयेत् ॥

अर्थ-कायफल-रुचिदायक, गरम, कपेला, चरपरा, कडवा तथा खासी, श्वास, उमदाह, मुखरोग, ज्वर, कफ, वात, प्रमेह, ववासीर, गुल्म, कण्ठ-रोग, अग्निमाद्य, पाण्डुरोग आर सग्रहणी इनका नाश करे है । व्यवहार-छाल । मात्रा १ मासेकी ।

भार्ङ्गीनामानि ।

भारङ्गीब्राह्मणीपद्माभृङ्गजाङ्गारवल्लरी ।

मुखधौतादूर्वाफक्षीभार्ङ्गीब्राह्मणयष्टिका ॥

अर्थ-भारङ्गी, ब्राह्मणी, पद्मा, भृङ्गजा, अङ्गारवल्लरी, मुखधौता, दूर्वा, फक्षी, भार्ङ्गी, ब्राह्मणयष्टिका, (गर्दभशाक, गर्दभशाका, फक्षिका, घर्नर, वालेयशाक, वर्द्धक, ब्रह्मयष्टि, यष्टि, ब्रह्मयष्टिका, शाकवालेय, अङ्गारवल्लि, वालेय, ब्राह्मिका, गर्दभशाखी, ब्राह्मी, ब्राह्मणयष्टी, वान्तारि, वातारि, कासजित्, स्वरूपा, भ्रमरेश, शक्रमाता, भृगुभवा, खरशाका, हक्षिका, कासघ्नी, भृगुजा, भार्गवी, कार्लिगवल्ली)

सस्कृतभाषामें

भार्ङ्गी ।

हिन्दीभाषामें

भारङ्गी, ब्रह्मनेदी ।

वगभाषामें

वामुनहाटी ।

मराठीभाषामें

भारगी ।

गुजरातीभाषामें

भारगी ।

कर्णाटकीभाषामें

किर्देटेगु ।

तैलिङ्गीभाषामें

भण्टभारङ्गी ।

नेपालीभाषामें

चूया ।

लैटिन्भाषामें

क्लेरोडेंड्रान्सैराटम Clero-dendronserratum

क्लेरोडेंड्रन् सिफोन्याथसु Clerodendron siphonanthus

भार्ङ्गीगुणा ।

भार्ङ्गीरूक्षाकटुस्तिक्तारुच्योष्णापाचनीलघुः ।

दीपनीतुवरागुल्मरक्तमुत्राशयेद्भवम् ।

शोथकासकफश्वासपीनसज्वरमारुतान् ।

अर्थ-भारङ्गी-रूखी, चरपरी, कडवी, रुचिकारी, गरम, पाचक, हलकी, अग्निको दीपन करनेवाली, कपेटी तथा रक्त, गुल्म, सूजन, खासी, श्वास, पीनस, ज्वर और वातको नाश करेहै ।

अथ ।

भार्ङ्गीतुकटुतिक्तोष्णाकासश्वासविनाशिनी ।

शोफत्रणक्रिमिघ्राचदाहज्वरनिवारिणी ॥ (रा० नि०)

अर्थ-भाङ्गी-चापरी, कड़वी, गरम तथा गामी, श्वास, मूजन, पित्त, क्रिमि, दाह और ज्वरको दूर करेई ।

अथ ।

वातज्वरग्रहन्त्रीचगुणेहिकाविनाशिनी ।

गुल्मज्वरासृग्वातघ्नीशयपीनसनाशिनी ॥

अर्थ-भाङ्गी-वातज्वर, दिपा, गुल्म, ज्वर, वातशूल, शय, और पीनसको नष्ट करेई ।

अस्यापचयगुणा ।

पणमस्यज्वरदाहद्विकादोषत्रयहरेत् ॥ (नि० २०)

अर्थ-इसके पत्ते ज्वर, दाह, दुर्चरी और त्रिदोषनाशकरेई । इसका, मूत्र मंजुष्यके समान उँचा होताई, पत्ते मस्यके पत्तोंकी समान, होतेई, पत्र, सफेद होताई, इसके कोमलपत्ताका शाय बनतेई । व्याहार-मूत्र, पत्ते । भाषा १॥ मायेकी ।

पाषाणभेदनामानि ।

पाषाणभेदकोशमग्न शिलाभेदोश्मभेदकः ।

सचैवोपलभेदश्चनगभिच्छेलगर्भजः ॥

अर्थ-पाषाणभेद-मरुमात्र, त्रिणाभेद, अश्मभेदक, उपलभेद, नगभिद, शैलगर्भज, (अश्मभिद, अश्मभेदक, पाषाणभेदक, पाषाणभेद, पाषाणभेदी) (न) भेता, उपलभेदी, उपलभिद, शिलागर्भज, गिरभिद, गिरभोजनी)

मरुत भाषामे

पाषाणभेद ।

दिर्घभाषामे

पाषाणभेद ।

वंग भाषामे

पाषाणभेद, दिग्गम, पाषाणभेद ।

मराठी भाषामे

पाषाणभेद ।

गुजराती भाषामे

पाषाणभेद ।

बज्जोरती भाषामे

पाषाणभेद ।

सिन्धी भाषामे

पाषाणभेद ।

हिन्दी भाषामे

पाषाणभेद ।

लैटिन् भाषामें
फारसी भाषामें
अरबी भाषामें

कोमियस् एरोमेटिकम् *Cocins aromaticum*
गोशाद ।
जितियाना ।

पापाणभेदगुणा ।

अश्मभिद्रस्तिरुद्धमूत्रकृच्छ्रोदाहवातनुत् ।

शीतवीर्योगुरुस्निग्धस्तथातीसारनाशनः ॥ (शो० नि०)

अर्थ-पाखानभेद-वस्तिरोग, मूत्रकृच्छ्र, दाह, वात और अतिसारको दूर-
करे है, शीतवीर्य है, भारी और चिकनाई ।

अन्यञ्च ।

अश्मभेदोहिमस्तिक्तकपायोवस्तिशोधन ।

मेदंहन्तित्रिदोपाशोगुल्मकृच्छ्राश्महृद्भुजः ।

योनिरोगान्प्रमेहांश्चष्ठीहशूलव्रणानिच ॥

अर्थ-पाखानभेद-शीतल, कडवा, कपेला, वस्तिशोधक, भेदक तथा
त्रिदोष, बवासीर, गुल्म, मूत्रकृच्छ्र, पथरी, हृदयरोग, प्रमेह, छीहा, शूल
और घणरोगका विनाश करे है ।

क्षुद्रपापाणभेदगुणा ।

क्षुद्रपापाणभेदश्चव्रणकृच्छ्राश्मरीहरः ॥ (रा० नि०)

अर्थ-क्षुद्रपापाणभेद-ग्रण, मूत्रकृच्छ्र और पथरीको दूरकरे है । पाखान-
भेदवाली लकड़ी, परदेशसे आती है, वह क्याहै यह कोई नहीं जानता ।
इसको सर्वप्रकारके प्रमेह मूत्रकृच्छ्रादि रोगी लेते हैं और देशी पापाणभेदके
गुण इस पापाणभेदसे सब मिलते हैं । मात्रा १ मासेकी ।

धातपीनामानि ।

धातकीताम्रपुष्पीचधात्रीचधातुपुष्पिका ॥

अर्थ-धातकी, ताम्रपुष्पी, धात्री, धातुपुष्पिका, (धातुपुष्पी, धातु-
पुष्पी, धातुपुष्पिका, वह्निपुष्पी, धावनी, अग्निज्वाला, सुभिक्षा, पार्वती, बह-
पुष्पिका, कुमुदा, सीधुपुष्पी, कुञ्जरा, मधवासिनी, गुच्छपुष्पी, सप्तपुष्पी,
रोधपुष्पिणी, तीम्रज्वाला, वह्निशिखा, मयपुष्पा)



संस्कृतभाषाम्

दिन्दीभाषामें

वस्तुभाषामै

मराठीभाषास

गुजराती भाषामें

यत्पादकीभाषामे

तल्लिह्मापायम

३०

संस्कृतभाषायां

इंमैजीभाषाम

भातकी ।

घायले वृक्ष, घबराईले वृक्ष ।

धातुः ।

पायटी ।

पादणी :

प्राप्तिरूपः ।

ਘਾਤੁਕੀ ਪੁਟ, ਭੀਰ ਪੁਲ੍ਹ, ਜਾਗਿ ।

जातिको ।

गुह्योद्दिष्टा, कथोद्दिष्टा ।

Neofionia Eribon's

गौतम आग्नेयश्रौतम् ।

अनङ्गीकृतम् ।

धातुकीव दुर्वाशितामदकृत्तुशगलघु ।

नृणां तिसारपित्तान्नविपक्रिमिनि सर्पजित् ॥ (भा० २०)

अर्थ-पाठनी-चरण, शीतल, मन्त्रादि, नयेनी, हस्तनी, तपा, मृदा, भक्तिपाद, ग्राहिण, विष कृमि और विमर्शगोचरो जेने ई ।

10/25/2014

घातर्षणपट्टकश्रीतातयगमद्वगिणी ।

तित्कालर्ष्याय नमोऽस्तु ॥

रक्तप्रवाहिकापित्तवृद्धिसर्पव्रणापहा ।

कृम्यतीसारहननीरक्तदोषरुजापहा ॥

पुष्पमस्याः स्वादुरूक्षरक्तपित्तातिसारजित् ।

विषनाशकरंचोक्तमुनिभिस्तत्त्वदर्शिभिः ॥ (नि०२०)

अर्थ—घातकी—चरपरी, शीतल, कपेली, मदकारक, कडवी, हल्की, गर्भस्थापक तथा रक्तप्रवाहिका, पित्त, तृषा, विसर्प, व्रण, कृमि, अतिसार और रुधिरदोषको दूर करेहै ।

घायकेफूल—स्वादु, रूखे, तथा रक्तपित्त, अतिसार और विषका विनाश करेहैं । घायके वृक्षकी अपेक्षा घायके फूलोंके अधिक गुण हैं ।

विवरण । इसका वृक्ष होताहै, पत्ते अनारके समान होतेहैं, अनारके पत्ते अधिक नीले होतेहैं, घायके पत्ते कुछ पिलाई लिये खरखरे होतेहैं । फूल लाल होतेहैं, इस फूलमें कली नहीं होती । घायके फूलोंका काढा तीन दिन देनेसे म्दररोग दूर होताहै ।

दन्तरोगोंमें घायके फूल अत्यन्त हितकारीहैं । व्यवहार—फूल, छाल । माना २ मासेकी ॥

मञ्जिष्ठानामानि ।



मञ्जिष्ठाविकसाजिह्नीममङ्गाकालमेपिका ।

मण्डूकपर्णीभण्डीरीकालयोजनवल्लिका ॥

योजनवल्लीमण्डूकाकाण्डीगवध्वजनी ।

रक्तागीरक्तयष्टिश्चरक्तायोजनपर्णिका ॥

अर्थ—मञ्जिष्ठा, विक्का, जिगा, ममगा, काउमेपिका, मण्डूकपर्णी,

मण्डीरी, काला, योजनवटिका, योजनवल्ली, मण्डूकी, काश्या, वरगशरी,
रक्ताक्षी, रक्तपट्टि, रक्ता, योजनपर्णिका, (मण्डी, रक्तपट्टि, हेमपुरी,
भिण्डीरी, काण्डीरी, जिह्मी, भण्डि, भण्डिरी, भण्डिया, भण्डि, भण्डितरी,
रसापनी, गण्डीरी, हरिणी, गौरी, वसा, रोहिणी, चित्रन्ता, चित्रा, चित्रा
क्षी, जननी, विजया, मञ्जूषा, रक्तपट्टिका, क्षयिणी, रागाद्या, फालभण्डिका,
जटुणा, ज्वरहन्त्री, उषा, नागकुमारिका, भण्डीरवटिका, रागागी, वसन्
पणा, क्षेत्रिणी, ताम्रमूनी, ताम्रिका, लोहितवता और ताम्ररती)

तत्कृतभाषामें मञ्जिष्ठा ।

हिन्दीभाषामें मजीठ ।

वगभाषामें मञ्जिष्ठा ।

मराठीभाषामें मंजिष्ठ ।

गुजरातीभाषामें मजीठ ।

फर्णाटकीभाषामें मजिष्ठा ।

तैलिङ्गीभाषामें मजिष्ठुतीडा, ताम्रवल्ली ।

तामिळीभाषामें मञ्जिष्ठा ।

इमेजीभाषामें मेदरुट्टु । Mad lertrott

एट्टिनभाषामें रुबिआ बोर्डि फोर्गिया । Rubia-er dif 2.2

फारसीभाषामें रुनाम ।

भार्याभाषामें पुस्तु निरग उरु कुम्मु पार्गान ।

मजिष्ठाया ।

मञ्जिष्ठामधुगतिकाकपायास्वरवर्णकृत् ।

गुर्वोचोष्णाविपश्लेष्मशोधयोन्यक्षिकणंरुह ॥

रक्तातिसारकुष्टास्रनिस्पृषणमेदनुत् । (भा० ५०)

अर्थ-मजीठ-मधुर, कटुता वषेता, मृदको धेनु वरनेवासा, वनेरो
रुष्मत् वनेवासा, भारी, गरम तथा विष, कटु, मृदुत, मोनिताग, मेकोग,
वनेरोग, रक्तातिहार, कुष्ठ, रुभगविकार, विमर्ष, घन और ममेरोगका
नाश करनेवाली है ।

अपराध ।

मञ्जिष्ठानुवर्गोष्णावर्ग्यान्वय्यागुरुःस्मृता ॥

तिक्ताल्पर्ययनमधुगवणमेदकफापदा ।

विषनेत्ररुजंशोफंयोनिदोषज्वरतथा ॥

शूलं कर्णरुजचैवकुष्ठं चार्शकृमीजयेत् ।

रक्तातिसारवीसर्पनाशिनीचप्रकीर्तिता ॥

अर्थ—मजीठ—कपेला, गरम, वर्णको सुन्दर करनेवाला, स्वरको उत्तम करनेवाला भारी, कडवा, हलका, मधुर तथा घाव, प्रमेह, कफ, विष, नेत्ररोग, सूजन, योनिदोष, ज्वर, (कामला पक्षाघात) शूल, कर्णरोग, कुष्ठ, बवासीर, कृमि, रक्तातिसार और विसर्परोगको नष्ट करे है ।

अस्यां शाकशुणा ।

शाकेस्यान्मधुरालघ्वीस्निग्धादीप्तिकरीमता ।

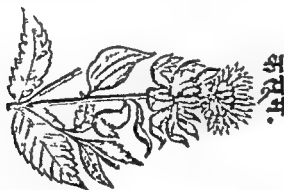
वातपित्तहरीचोक्ताऋषिभिः सत्यवादिभिः ॥ (नि० २०)

अर्थ—मजीठके पत्तोंका शाक—मधुर, हलका, स्निग्ध, जठराग्निको दीपन करनेवाला, तथा वात और पित्तको हरनेवाला है ।

फलयकृदोषहरमूलं च म्मविवर्णताहरतिलकालकघ्नञ्च (का० नि०)

अर्थ—मजीठका फल—प्लीहाको नाश करनेवाला है, मजीठकी जड़—चर्म-रोग और, तिलकालक (शरीरके तिल) को दूरकरे है ।

कुसुम्भानामानि ।



स्यात्कुसुम्भवह्निशिखलोहितग्राम्यकुकुमम् ॥

अर्थ—कुसुम्भ—वह्निशिर, लोहित, ग्राम्यकुकुम (कमलोत्तम, महागजन, कुक्कुटशिख, पापक, पीत, पद्मोत्तर, रक्त, यम्बरजन, अग्निशिखे)

संस्कृतभाषामें कुसुम्भ, कुसुम्भनीज ।

हिन्दीभाषामें कसुम (करं)

कार्सीभाषामे
अर्येभाषामे

नारु ।

दृष्ट धोषत त्वाज्ज्वरमुत्त ।

दाशागुणा ।

लाक्षावर्ण्यादिमात्रव्याप्तिग्याचतुवरालघुः ।

अनुष्णाकफपित्तान्द्विकाकामज्वरप्रणुत् ॥

व्रणोरःशतवीसर्पकृमिकुष्ठगदापहा ।

विपरक्तप्रशमनीविषमज्वरनाशिनी । (निष्पुसग्रह)

अर्थ-लात-शरीरके वर्णको उज्ज्वल करनेवाली, शीतल चर्मरोग, क्षिण, कपेली, दलकी, अनुष्ण तथा कफ, रक्तपित्त, दिक्की, रसोद्गी, ज्वर, प्रण, उरःशत, विषम, क्रिमि, कुष्ठ, विष, रक्तदोष और विषमज्वरको दूरनेवाली है ।

अप्यस्य ।

लाक्षातुतिक्तातुवराभग्रसन्धानकारिका ।

स्निग्धालघ्वीचयव्याचशीतावर्णप्रदामता ॥

कफपित्तक्षयोपश्लविपरक्तनिकारकम् ।

द्विकाकासज्वरचैवविषमक्षविनाशयेत् ॥

उरःशतचवीसर्पनासारोगकृमीस्तथा ।

कुष्ठव्रणक्षत्वग्दोषदाहक्षेयविनाशयेत् ॥ (नि० २०)

अर्थ-लात कदवी, कपेली, मृदुमन्धानकारक, स्निग्ध, दलकी, चयना रक्त, शीतल, वर्णकारक तथा तप्त, पित्त, शोष, विष, रक्तनिकार, दिक्की, रसोद्गी, ज्वर, विषमज्वर, उरःशत, विषम, नासागण, कृमि, पोट, प्रण, त्वग्दोष और दाहको दूर करनेवाली है ।

अप्यस्यगुणा ।

अलक्तफोरजोरोधीरक्तपित्तक्षयापहा ।

प्रदरजाप्यनीनाग्रमरक्तक्षययेदुत्तमम् ॥ (आप्रेयगणिता)

अर्थ-मदारा-रजोरोधक, रक्तपित्त, शोष, प्रदर और स्थातिगणको दूर करनेवाली है, इसके अधिक गुण आमों में मिले हैं । शीतल, वर्ण, रसोद्गी, इत्यादि अनेक कृमिमे दोहरी है अथवा अन्य कृमिों का मार करनेवाली है ।

हरिद्रानामानि ।



हरिद्रानिशाह्वापीतायुवतीहेमरागिणी ।

काञ्चनीक्षणदागौरीमेहघ्नीवरवर्णिनी ॥

अर्थ—हरिद्रा, निशाह्वा, पीता, युवती, हेमरागिणी, काञ्चनी, क्षणदा, गौरी, मेदनी, वरवर्णिनी, (यामिनी, क्षपा, तमासिनी, गन्धपलाशिका, सुवर्णवर्णा, युवती, मङ्गलप्रदा, कावेरी, उमा, वर्णवती, पिञ्जा, पीतवाङ्मुखा, हेमरागी, रम्भवासा, घर्षणी, पीतिका, रजनी, निशा, वट्टला, वर्णिनी, रात्रिनामिका, हरित्, रञ्जनी, सुवर्णवर्णा, सुवर्णा, शिवा, दीर्घरागा, हलदी, वराङ्गी, अनेष्टा, वरा, वर्णदात्री, पवित्रा, हरिता, विपद्घ्नी, पिङ्गा, मङ्गल्या, मङ्गला, लक्ष्मी, भद्रा, शिफा, शोभा, शोभना, सुभगादया, श्यामा, ज्वरान्तिका, योषित्प्रिया, कृमिघ्नी, हृदिलासिनी, निशाख्या, जयन्ती, दीर्घरागा, वर्णविलासिनी और हलदी)

संस्कृतभाषामें हरिद्रा ।

हिन्दीभाषामें हलदी ।

बंगलामें हलुट ।

मराठीभाषामें हलद ।

गुजरातीभाषामें हलदूर ।

कर्णाटकीभाषामें अर्शिना ।

तेलिङ्गीभाषामें पमुपु ।

द्रा० हलद ।

इंग्रेजीभाषामें टर्मेरिक । Turmeric

लैटिन्भाषामें कर्कयुमालोंगा । Curcumalonga

फारसी भाषामें जर्दचोब ।

अरबीभाषामें उरुकुसुफर ।

अथवाद्युता ।

हरिद्राकटुकातित्कारुक्षीणकफवातनुत् ।

वर्ण्यात्वद्रोपमेदास्रशोधपाण्डुरोगापहा ॥ (भास्कराग)

अर्थ-हल्दी-चरपरी, कड़वी, रुग्नी, गरम, फट, वातनाशक, बर्तरी
 सुंदरतादायक, तथा त्वराके रोग, प्रमेद, रक्तदोष, मृजन, पाण्डुरोग और
 मणको नाश करेई ।

अथवा ।

हरिद्राकटुकातित्कादेहवर्णविधायिका ।

रज्ज्वास्त्राशोधनीचर्षीणावैभृषणमता ॥

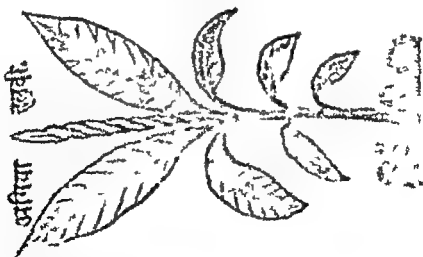
कफवातरक्तदोषकुष्ठकण्डूप्रमेदहम् ।

त्वग्दोषचव्रणशोफपाण्डुरोगकृमीन्विपम ॥

पीनमचारुचिपिन्मपनीचिन्मशतेत् । (नि०२०)

अर्थ-हल्दी-चरपरी, हल्दी, चरपरी, चरपरी, चरपरी, चरपरी, चरपरी, चरपरी,
 शोधक और विषोक्त भूषण है, तथा कफ वात, रुधिरादोष, दाह, रु-
 जली, प्रमेद, त्वराके दोष, पाण्डुरोग, मृजन, पाण्डुरोग, कृमि, विप, पाण्डुरोग,
 अकृमि, पित्त और जलवायु नाश करनेवाली है ।

कटुस्वद्विद्वानामानि ।



दारुमिश्रगन्ध्याचसुग्रीवरुदाह्व ।

एषुगन्धमपत्रान्धात्मगभिः सुगन्धिरा ॥

अर्थ-दार्वाभिद, आम्रगन्धा, सुरभीदारु, दारु, कर्पूरा, पञ्चपना, सुरभी, सुरनायिका ।

| | |
|-----------------|---|
| संस्कृतभाषामें | कर्पूरहरिद्रा, आम्रगन्धहरिद्रा । |
| हिन्दीभाषामें | कर्पूरहलदी, आम्वीयाहलदी । |
| बंगलामें | आमआदा । |
| मराठीभाषामें | आवेहळद । |
| गुजरातीभाषामें | आवाहलद । |
| कर्णाटकीभाषामें | हुलीअंशिना । |
| तैलिंगीभाषामें | कारुपमुपु । |
| इंग्रेजीमें | मेंगोजिजर । Manjojinger |
| लैटिन्में | क्यूर्यूमाएरोमेटिका । Curcuma-aromatica |
| | अस्पागुणा । |

आम्रगन्धिहरिद्रायासाशीतावातलामता ।

पित्तहन्मधुरातिक्तासर्वकण्डुविनाशिनी ॥ (भा० प्र०)

अर्थ-आम्वीयाहलदी-(कर्पूरहलदी) शीतल, वातकारक, पित्तनाशक, मधुर, कड़वी और सर्वप्रकारके कण्डुकानाशक है ।

अपिच ।

अम्लारुचिप्रदालघ्वीदीपनीचवरासरा ।

कफचोग्रव्रणकासंश्वासद्विक्राज्वरजयेत् ॥

अभिघातभवशोथंलेपाच्छीघ्रविनाशयेत् ॥ (केचित्)

अर्थ-कर्पूरहलदी-(अम्वीया हलदी, वात, रक्त और, विपनाशक है, वीर्य वर्द्धक, सन्निपातनाशक, अम्ल, रुचिदायक, हलकी, अग्निको दीपन करनेवाली, सारक तथा कफ, उग्रव्रण, खोंसी, श्वास, दुचकी, ज्वर और अभिघातसे उत्पन्न हुई सूजनको दूर करे है ।

घनहरिद्रानामानि ।

शोलीवनहरिद्रास्याद्वनारिष्टाचशोलिका ।

अर्थ-शोली, वनहरिद्रा, वनारिष्टा, शोलिका, (अरण्यहरिद्रा, वनहलदी)

संस्कृतभाषामें वनहरिद्रा ।

हिन्दीभाषामें वनहलदी, जगन्नीहलदी ।

भर्यातुणा ।

हरिद्राकटुकातित्कारुक्षीष्णकफवातनुत ।

वर्ण्यत्त्वद्वोपमेहाम्शोथपाण्डुवणापहा ॥ (भार्यकाग)

अर्थ-हरिद्रा-चरपरी, कटुवी, रुक्षी, गरम, कफ, वातनाशक रोगों-
मुदरवादापह, नया त्वचाके रोग, प्रमेह, रक्तदोष, गुजन, पाण्डुरोग और
मणको नाश करे ।

भार्य ।

हरिद्राकटुकातित्कादेवर्णविधायिका ।

उष्णारुक्षीशोथनीचर्षीणावैभूषणमता ॥

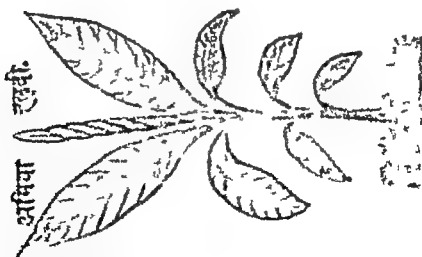
कफवातक्तदोषकुष्ठरुण्डप्रमेहकम् ।

त्वग्दोषचव्रणशोफपाण्डुगृहीन्विषम् ॥

पीनसचारुचिपित्तमण्वीचैव भवेत् । (नि०१०)

अर्थ-हरिद्रा-चरपरी कटुवी रसके गरमको कफनाशक रोग, रुक्षी,
दोषक और चियाका भूषण है, तथा कफवात, रोगप्रदोष, रोग, रु-
जली, प्रमेह, त्वचाके रोग, पाण्डु गुजन, पाण्डुरोग, कृमि, विष, पीनस,
भरुची, पित्त और अपर्याका नाश करनेवाली है ।

कटुहरिद्राभार्याभि ।



दारुमिश्रगन्धराचसुभीगरुदाकम् ।

मर्षगणपनाम्पात्सुभि सुनायिका ॥

अर्थ-दावीमेद, आम्रगन्धा, सुरभीदारु, दारु, कर्पूरा, पद्मपत्रा, सुरभी, सुरनायिका ।

| | |
|-----------------|---|
| संस्कृतभाषामें | कर्पूरहरिद्रा, आम्रगन्धहरिद्रा । |
| हिन्दीभाषामें | कपूरहलदी, आम्वीयाहलदी । |
| बंगलामें | आमआदा । |
| मराठीभाषामें | आवेहलद । |
| गुजरातीभाषामें | आवाहलदर । |
| कर्णाटकीभाषामें | हुलीअर्शिना । |
| तैलिङ्गीभाषामें | कारुपमुपु । |
| इंग्रेजीमें | मैंगोजिजर । Mangojinger |
| लैटिन्में | कवर्क्यूमाएरोमेटिका । Curcuma-aromatica |

भस्पागुणा ।

आम्रगन्धहरिद्रायासाशीतावातलामता ।

पित्तहन्मधुरातिक्तासर्वकण्डुविनाशिनी ॥ (भा०प्र०)

अर्थ-आम्वियाहलदी-(कपूरहलदी) शीतल, वातकारक, पित्तनाशक, मधुर, कड़वी और सर्वप्रकारके कण्डुकानाशक है ।

अपिच ।

अम्लारुचिप्रदालघ्वीदीपनीचवरासरा ।

कफचोग्रव्रणकासश्वासद्विक्ताज्वरजयेत् ॥

अभिघातभवशोथंलेपाच्छीघ्रविनाशयेत् ॥ (केचित्)

अर्थ-कपूरहलदी-(आम्विया हलदी, वात, रक्त और, विपनाशक है, वीर्य वर्द्धक, सन्निपातनाशक, अम्ल, रुचिदायक, हलदी, अग्निको दीपन करनेवाली, सारक तथा कफ, उग्रव्रण, खोंसी, श्वास, दुर्ज्वर, ज्वर और अभिघातसे उत्पन्न हुई सजनको दूर करे है ।

वनहरिद्रायासाति ।

शोलीवनहरिद्रास्याद्वनारिष्टाचशोलिका ।

अर्थ-शोली, वनहरिद्रा, वनारिष्टा, शोलिका, (अरण्यहरिद्रा, वनहलदी)

संस्कृतभाषामें वनहरिद्रा ।

हिन्दीभाषामें वनहलदी, जगलीहलदी ।

$\frac{1}{2} \times \frac{1}{2} = \frac{1}{4}$
 $\frac{1}{2} \times \frac{1}{4} = \frac{1}{8}$
 $\frac{1}{4} \times \frac{1}{4} = \frac{1}{16}$
 $\frac{1}{2} \times \frac{1}{8} = \frac{1}{16}$
 $\frac{1}{4} \times \frac{1}{8} = \frac{1}{32}$
 $\frac{1}{8} \times \frac{1}{8} = \frac{1}{64}$
 $\frac{1}{16} \times \frac{1}{16} = \frac{1}{256}$
 $\frac{1}{32} \times \frac{1}{32} = \frac{1}{1024}$
 $\frac{1}{64} \times \frac{1}{64} = \frac{1}{4096}$
 $\frac{1}{128} \times \frac{1}{128} = \frac{1}{16384}$
 $\frac{1}{256} \times \frac{1}{256} = \frac{1}{65536}$
 $\frac{1}{512} \times \frac{1}{512} = \frac{1}{262144}$
 $\frac{1}{1024} \times \frac{1}{1024} = \frac{1}{1048576}$
 $\frac{1}{2048} \times \frac{1}{2048} = \frac{1}{4194304}$
 $\frac{1}{4096} \times \frac{1}{4096} = \frac{1}{16777216}$
 $\frac{1}{8192} \times \frac{1}{8192} = \frac{1}{67108864}$
 $\frac{1}{16384} \times \frac{1}{16384} = \frac{1}{268435456}$
 $\frac{1}{32768} \times \frac{1}{32768} = \frac{1}{1073743872}$
 $\frac{1}{65536} \times \frac{1}{65536} = \frac{1}{4294967744}$
 $\frac{1}{131072} \times \frac{1}{131072} = \frac{1}{17179869184}$
 $\frac{1}{262144} \times \frac{1}{262144} = \frac{1}{68438966784}$
 $\frac{1}{524288} \times \frac{1}{524288} = \frac{1}{274369867776}$
 $\frac{1}{1048576} \times \frac{1}{1048576} = \frac{1}{1099511627776}$
 $\frac{1}{2097152} \times \frac{1}{2097152} = \frac{1}{4398046510000}$
 $\frac{1}{4194304} \times \frac{1}{4194304} = \frac{1}{17590093040000}$
 $\frac{1}{8388608} \times \frac{1}{8388608} = \frac{1}{70360372160000}$
 $\frac{1}{16777216} \times \frac{1}{16777216} = \frac{1}{281470987520000}$
 $\frac{1}{33554432} \times \frac{1}{33554432} = \frac{1}{1125887872000000}$
 $\frac{1}{67108864} \times \frac{1}{67108864} = \frac{1}{4503599616000000}$
 $\frac{1}{134217728} \times \frac{1}{134217728} = \frac{1}{18014398976000000}$
 $\frac{1}{268435456} \times \frac{1}{268435456} = \frac{1}{72057595904000000}$
 $\frac{1}{536870912} \times \frac{1}{536870912} = \frac{1}{288230383616000000}$
 $\frac{1}{1073741824} \times \frac{1}{1073741824} = \frac{1}{1152921534464000000}$
 $\frac{1}{2147483648} \times \frac{1}{2147483648} = \frac{1}{4611686137856000000}$
 $\frac{1}{4294967296} \times \frac{1}{4294967296} = \frac{1}{18446744051200000000}$
 $\frac{1}{8589934592} \times \frac{1}{8589934592} = \frac{1}{73786976204800000000}$
 $\frac{1}{17179869184} \times \frac{1}{17179869184} = \frac{1}{295147904819200000000}$
 $\frac{1}{34359738368} \times \frac{1}{34359738368} = \frac{1}{1180591619276800000000}$
 $\frac{1}{68719476736} \times \frac{1}{68719476736} = \frac{1}{4722366477107200000000}$
 $\frac{1}{137438953472} \times \frac{1}{137438953472} = \frac{1}{18889465888428800000000}$
 $\frac{1}{274877906944} \times \frac{1}{274877906944} = \frac{1}{75557863553715200000000}$
 $\frac{1}{549755813888} \times \frac{1}{549755813888} = \frac{1}{302231454214860800000000}$
 $\frac{1}{1099511627776} \times \frac{1}{1099511627776} = \frac{1}{1208925816859430400000000}$
 $\frac{1}{2199023255552} \times \frac{1}{2199023255552} = \frac{1}{4835703267437721600000000}$
 $\frac{1}{4398046511104} \times \frac{1}{4398046511104} = \frac{1}{19346813069750886400000000}$
 $\frac{1}{8796093022208} \times \frac{1}{8796093022208} = \frac{1}{77387252279003532800000000}$
 $\frac{1}{17592186044416} \times \frac{1}{17592186044416} = \frac{1}{309549009116014137600000000}$
 $\frac{1}{35184372088832} \times \frac{1}{35184372088832} = \frac{1}{1238196036464056550400000000}$
 $\frac{1}{70368744177664} \times \frac{1}{70368744177664} = \frac{1}{4952784145856226201600000000}$
 $\frac{1}{140737488355328} \times \frac{1}{140737488355328} = \frac{1}{19771136583424904806400000000}$
 $\frac{1}{281474976710656} \times \frac{1}{281474976710656} = \frac{1}{79084546333699619225600000000}$
 $\frac{1}{562949953421312} \times \frac{1}{562949953421312} = \frac{1}{316338185334798476902400000000}$
 $\frac{1}{1125899906842624} \times \frac{1}{1125899906842624} = \frac{1}{1261352741339193907609600000000}$
 $\frac{1}{2251799813685248} \times \frac{1}{2251799813685248} = \frac{1}{5069410965356775630438400000000}$
 $\frac{1}{4503599627370496} \times \frac{1}{4503599627370496} = \frac{1}{20277643861427102521753600000000}$
 $\frac{1}{9007199254740992} \times \frac{1}{9007199254740992} = \frac{1}{81110575445708410087014400000000}$
 $\frac{1}{18014398509481984} \times \frac{1}{18014398509481984} = \frac{1}{324518301782833640348057600000000}$
 $\frac{1}{36028797018963968} \times \frac{1}{36028797018963968} = \frac{1}{1298113207131334561392230400000000}$
 $\frac{1}{72057594037927936} \times \frac{1}{72057594037927936} = \frac{1}{5184452828525338245568921600000000}$
 $\frac{1}{144115188075855872} \times \frac{1}{144115188075855872} = \frac{1}{20673811314101352982275686400000000}$
 $\frac{1}{288230376151711744} \times \frac{1}{288230376151711744} = \frac{1}{834952452564054119291027379200000000}$
 $\frac{1}{576460752303423488} \times \frac{1}{576460752303423488} = \frac{1}{3315810010256216477164109516800000000}$
 $\frac{1}{1152921504606846976} \times \frac{1}{1152921504606846976} = \frac{1}{13263240041024865908656438067200000000}$
 $\frac{1}{2305843009$

~~श्रीगणेशाय नमः~~

[illegible]

अवि-मर्षः ना
 इति चतुर्विधः
 विदुषाणां कर्मिणः
 कामदक्षः, कामदक्षः
 कामदक्षः, कामदक्षः

समस्त भाषा
हिन्दी भाषा
संस्कृत भाषा
प्रगति भाषा
मुद्रा भाषा
संस्कृत भाषा
संस्कृत भाषा
संस्कृत भाषा
संस्कृत भाषा

महाराष्ट्र
महाराष्ट्र
महाराष्ट्र
महाराष्ट्र
महाराष्ट्र



वर्द्ध। सीमापामे

दारचोव ।

शर्मा, रक्त। सीमापामे

दारहलद ।

वर्द्ध।

अस्या गुणा ।

वर्द्ध।

तित्तादारुहरिद्रातुकटूष्णाव्रणमेहनुत् ।

कस्तूरी रक्त।

कण्डूविसर्पत्वग्दोषविपकर्णाक्षदोषहा ॥ (राजनिघण्टु)

॥

१-दारुहलदी-कडवी, चरपरी, गरम तथा व्रण, प्रमेह, कण्डू, विसर्प, दोष, विप, कर्णरोग और नेत्ररोगको दूर करेहै ।

०

अपिच ।

अस्या गुणा ।

दार्वातद्विद्विशेषेणकफाभिष्यन्दनाशिनी ॥ (रा० व०)

ल्यारुच्यतित्तादि-दारुहलदीके गुण हलदीके समान हैं विशेषकरके कफ और अभि-
रुचिकारक, कडवी द्रव्यो हरनेवाली है ।

अप्यपि ।

अपिच ।

कुष्ठवातसन्त

आम्रगन्धहरिद्रा-पित्तहन्मधुरातित्तासर्वक-

और रक्त

पित्तहन्मधुरातित्तासर्वक-

अर्थ-आमिन्याहलदी-(कपूरहलदी) शीतल, पानि ।

मधुर, कडवी और सर्वप्रकारके कण्डुकानाशकहै ।

अपिच ।

वीकायोद्रव, चालभै
वीर्योन्नन, रसना-

अम्लारुचिप्रदालघ्वीदीपनीचवरासरा

कफचोयव्रणकासंश्वासदिकांज्वरंजयेत्

अभिघातभवशोथंलेपाच्छीघ्रविनाश

अर्थ-कपूरहलदी-(आमिन्या हलदी, वात, रक्त

वर्द्धक, सन्निपातनाशक, अम्ल, रुचिदायक, हलकी

सारक तथा कफ, उग्रव्रण, खोंसी, श्वास, इन्

उत्पन्न हुई सूजनको दूर करेहै ।

॥

यनहरिद्रानात(अनमु ।

शोलीवनहरिद्रास्याहन्मधुराकट आफ इंडियन बर्बेरी ।

अर्थ-शोली, यनहरिद्रा वन्

Extract of Indian Berbery

संस्कृतभाषामे

एकस्राकटबेरेरिस् । Astringum Berberis

पानापामे

इयुज ।

सिद्धि

पसुपु

सिद्धि

सिद्धि

अस्या कृपाय ।

दार्वाकाथनमं गीरंपादपक्कायथाघनम् ।

तदारसाजनारुयंतत्रेवयो पग्मदितम् ॥

अर्थ-दारुहृदीका कादा घनाकर उम काटेमें उमकी यामपर दूध निडा कर औटावे, जब औटकर कादा होजावे तो उमारेने, उमारे रगोत करेई । और वह रगोत नेत्रको अत्यन्त हितकारी है ।

अस्या गुणा ।

रसाजनकटुश्लेष्मविपनेत्रविकारनुत ।

उष्णरसायनतित्तंछेदनव्रणदोषहृत् ॥ (भा० प्र०)

अर्थ-रगोत, जगम, गग्म, रगायन, कटुता, छेदक तथा कफ, शिप, नेत्रविकार और घणको दूर करेई ।

अस्या ।

रसाजनहिमतिकृदिकाशोविपनाशनम् ।

कर्णनेत्रभवात्रोगान्योजितमाधुमाधयंत ॥ (ग० नि०)

अर्थ-रगोत-शीतल, कटुता तथा दृक्ता, बरगोत शिप, कर्णोत और नेत्ररोगोंकी हर्द ।

अस्या ।

दार्वाकाथोद्भवतीक्ष्णरुद्र अरसायनम् ।

छेदनचर्मोष्णनभुष्यरुपनाशनम् ।

कृष्यविपक्तपित्तच्छर्दिहिकाविनाशनम् ।

श्वामनमुग्ररोगप्रप्रांनार्थैर्निरूपितम् ॥ (नि० प्र०)

अर्थ-भगोत-शीतल, कटु रगायन छेदन रगमें गग्म नेत्रोंको हितकारी, कर्णनाशन, शीतल-नभ तथा भक्तवित्त बलन दृक्ता, श्वाम और मुग्ररोगका नाश करेई ।

अस्या कृपाय ।

तोयेत्पुष्पपरिशिष्यद्रवी रुयांद्रनांजनम् ।

यामभामावयित्वाचशोचनभानुग्मिना ॥

प्राथिशोधिनेनचर्ममुपरि योजयेत् ।

विशुद्धनाशयेद्व्याधीन्नाविशुद्धकंदाचन ॥

अर्थ—रसोतको अत्यन्त उष्ण जलमें धोलदे, फिर वस्त्रमें छानकर घूपमें सुखादे, इसप्रकार शोधाहुआ रसोत सर्वकामोंमें ले शोधन, कियाहुआ रसोत व्याधिको नाश करताहै और अशुद्ध रसोत कदापि नहीं । मात्रा १॥ मासेकी।
वाकुचीनामानि ।



सोमराजीकृष्णफलावाकुचीकुष्ठनाशिनी ।

सोमवल्लीपूतिफलीवेजानीकालमेपिका ॥

अर्थ—सोमराजी, कृष्णफला, वाकुची, कुष्ठनाशिनी, सोमवल्ली, पूतिफली, वेजानी, कालमेपिका (अवल्युज, सुवल्ली, सोमवल्हिका, कालमेपी, चन्द्रलेखा, कृष्णा, पूतिफला, सुवल्ली, कालमेपी, वागुजी, वाकुजी, सोमराजिका, ऐन्दवी, शूलोत्वा, क्रिमिनी, सुवल्हिका, सिता, सितावरी, चन्द्री, सुप्रभा, कुष्ठहन्त्री, काम्मोजी, पूतिगन्धा, वल्युजा, चन्द्रराजी, कालमेपी, त्वग्दोषा-पहा, कान्तिदा, अवल्युजा, चन्द्रप्रभा, पूतिगधिका, सुपर्णिका, शशिलेखा, सोमा, कुष्ठनी, कण्टूनी और अमितत्वचा) ।

संस्कृतभाषामें

वाकुची, सोमराजी ।

हिन्दीभाषामें

वायची, वावची, वाकुची, (वाकुचीके दाने)

वगभाषामें

हाकुच, सोमराल (ज) ।

मराठीभाषामें

वावची ।

गुजरातीभाषामें

वावची, वावचीनावी ।

कर्णाटकीभाषामें

वाडचिगे ।

तैलिङ्गीभाषामें

तिप्पतोगे, नेलवयलिये ।

तामिलीभाषामें

वोगिविट्टु ।

इंग्रेजीभाषामें

एसक्यूल्दल्काकुर्जा । I sculent I lacourtia

लैटिन्में सोरेलिया—कोरेलिफोलिया, सोरेलिया, स्पाइके ।

Psoralea Corylifolia P. Spicata

वाङ्मयीनः ।

वाङ्मयीनमधुगतिकाकटुपाकारसायनी ।

विष्टम्भहृदिमारुच्यामराष्ट्रेष्माक्षपित्तनुत् ॥

रूक्षाहृद्याश्वासकुष्ठमेहज्वरक्रिमिप्रणुत् ।

तत्फलपित्तलकुष्ठकफानिलहरं कटु ॥

केश्यत्वच्यंकृमिश्वासकामशोथामपाण्डुहृत् ॥ (भा० म०)

अर्थ-वाङ्मयी-मधुर, कटुवी, पचनेमें चापरी, रसायन, विष्टम्भको दूर करनेवाली, शीतल, रुचिकारक, सात्विक, पित्त और श्लेष्मिकता नाश करने वाली, रुसी, हृद्यको हितकारी तथा श्वास, योनि, प्रमेह, ज्वर और क्रिमि मिटा, विनाश करे ।

वाङ्मयीका पत्र-पिचमनक, कुष्ठनाशक, वायु, वातविनाशक, कटु के-
शोको, उच्चम करनेवाला, त्वचाको मुदग्गतामयक तथा वमन, श्वास, शूल
वृच्छ, बजातीर, खासी, सूजन, आम और पाण्डुरोगका नाश करे ।

मध्यः ।

वाङ्मयीपाकेकटुकानिकाशीताग्रसायनी ।

मधुरारुचिदारूक्षाहृद्यामातृमिदीपनी ॥

घल्याचतुवरालध्वीमेध्यानेरक्तपित्तजित् ।

कफकुष्ठकृमिश्वासकाममेहज्वरनशान् ॥

त्रिदोषघातत्वग्दोषनिषेधकृष्णनाशयेत् ॥

अर्थ-वाङ्मयी-पाकम चापरी, कटुवी, शीतल, रसायन, मधुर, रसिक
कर, रुसी, हृद्यको हितकारी, माती अग्निवर्धनक दारुकारक, कपेटी, हृद्य
वी, मेधाजनक तथा रक्त, विष, ज्वर, योनि, कुष्ठ, श्वास, खासी, प्रमेह,
ज्वर, शूल, त्रिदोष, वायु, त्वचाको रिकार निवृत्त, कटु और रसपूर्ण अमृत
पुष्टकीरा नाश करे ।

वाङ्मयीमिदवाङ्मयीनः ।

विनाशिकारुचीमेह कुष्ठदोषप्रवाहजित् ।

पातस्तद्वर्गोपातिभ्यश्चिप्रविनाशन ॥ (भा० म०)

अर्थ—श्वित्रारि यह वाकुचीका भेद है, यह कोढ़, त्रिदोष, रक्तविकार, वातरक्त, सिध्मरोग और श्वित्र कोढ़को दूर करेहै ।

वाकुचीस्वरूपम् ।

क्षुपोवाकुचिकायाश्च गोवारीसदृशोभवेत् ।

कृष्णपुष्पोगुच्छफलोदुर्गन्धः कृष्णबीजक ॥ (शो० नि०)

अर्थ—वाकुचीका, क्षुप होताहै, पत्ते ग्वारकी समान होतेहैं, फूल काला होताहै, फल गुच्छांमें आतेहैं, उनमेंसे काले बीज निकलते हैं और इसमें दुर्गन्ध आतीहै । व्यवहार—बीज, लकड़ी । मात्रा १॥ मासेकी ।

चक्रमर्दनामानि ।

चक्रमर्दः प्रपुन्नाटोददुग्धोमेपलोचनः ।

पद्माटः स्यादडगजश्चक्रीपुन्नाटइत्यपि ॥

अर्थ—चक्रमर्द, प्रपुन्नाट, ददुग्ध, मेपलोचन, पद्माट, एडगज, चक्री, पुन्नाट, (तकिणः, तर्किल, प्रपुन्नड, मेपाक्षि, कुसुम, प्रपुन्नाल, अडगज, गजारव्य, मेपाद्वय, एडइस्ती, व्यावर्त्तक, चक्रगज, पुन्नाड, विमर्दक, तर्वट, चक्राड, शुक्रनाशन, दद्वीज, प्रपुन्नाड, खज्जुन्न, चक्रमर्दक, उरणाख्यक, प्रपुन्नड, प्रपुन्नाड, उरणाक्ष, उरणाक्षक, चक्रपद्माड, दद्वीज)

संस्कृतभाषामें

चक्रमर्द,

हिन्दीभाषामें

चक्रबड, पवाड, पमाड (२) ।

बगभाषामें

चाकुन्दा, एडाचि ।

मराठीभाषामें

टाकाळा, तरोटा ।

गुजरातीभाषामें

कुवाधियो ।

कर्णाटकीभाषामें

चगचे

तैलिंगीभाषामें

ताटचमु ।

इंग्रेजीभाषामें

ओवललीव्ड केशिया । Ovalleaved Cassia

लैटिन्भाषामें

केशिया टोरा । Cassia Tora

फारसीभाषामें

सर्जास बोया ।

अस्य गुणाः ।

चक्रमर्दालघु स्वादुरूक्ष पित्तानिलापह ।

हृद्योहिम रुफश्वासकुष्ठददृक्कमीन्दरेत् ॥

इन्त्युष्णान्तफलंकुष्ठकण्डूदृष्टिपानिलान् ।

गुल्मकासकृमिश्वामनाशनकटुकैस्त्वृणम् ॥ (भा० ४)

अर्थ-चकरट-दलका, स्वादि, कृता, विषवातनाशक, हृदयरो दित
कारी, शीतल तथा पित्त, श्वात, कुष्ठ, कटु और कृमिको नाश करनेवाले ।

चकरटका फल-गम्य है और गुष्ठ, चकरट, दाद, शिप, शक, गुन्म,
खासी, कृमि तथा श्वासको दूर करनेवाला है और कटु-वर्गामित है ।

गम्यम् ।

प्रपुत्राट स्वादुखक्षोलुषुस्तिक्त कटु स्मृतः ।

इव शीत पटुश्चैव वातपित्तकफापह ॥

ददुःकुष्ठकृमिश्वामाग्निरोरुव्रणनाशन ।

मेदोगेगंचपामाचत्रिशेषं चारुविज्वरम् ॥

मलमूत्रस्तम्भनश्चमेहकामश्चनाशनेत् ।

प्रपुत्राटस्य बीजतुग्राहिचोष्णकटुस्मृतम् ॥

कफकुष्ठश्चामकासददुःकुष्ठविपापहम् ।

गोधगुल्मयातरक्तनाशयेदिति कीर्तितम् ॥

चक्रमर्दकपणानां शाकालघ्नीनपित्तला ।

अम्लोष्णाकफघातप्रीददुःकुष्ठपशामना ॥

पामां कटुचक्रामेनश्चामशेषनिनाशनेत् । (ति० ४)

अर्थ-चमार-(चक्राम) स्वादि, कृता, दादका कटुता पावता, हृदयरो
दितकारी, शीतल, तत्ती तथा श्वात विष, चकरट, कटु, कृमि, श्वात
शितोत्तम (चक्राम) चार मेदोगेग, पामा, शिप, चक्राम, चक्राम
और गुष्ठका हृदयनाश, मेह और श्वातको दूर करने । चमारके चार-
मादोपर, गम्य, चक्राम तथा पित्त, कटु, श्वात, श्वात दाद सुखी,
शिप, गुन्म, गुन्म और श्वातका नाश करनेवाले हैं ।

चमार (चकरट) के चक्रामका दाद-दादका, विषवात, श्वात, श्वात
तथा पित्त, श्वात दाद कटु चक्राम का श्वात श्वात श्वात श्वात श्वात श्वात
है श्वात के श्वात गुन्म चक्रामके श्वात ।

पमाडकी फली टूटकर पृथ्वीमें गिर पडतीहै जो बीज उपज निकलतेहैं ।
विवरण । पमाडका धुप होता है, पत्ते गोल और एक २ डडीमें
पाच पाच होते हैं, फूल पीला होता है, उसपे फली लगती हैं । व्यवहार—
बीज, मूल, छाल, पत्ते ।

अतिविषानामानि ।

काश्मीरातिविषाश्वेताविषाप्रतिविषारुणा ॥

अर्थ—कश्मीरा, अतिविषा, श्वेता, विषा, प्रतिविषा, अरुणा, (प्रविषा,
उपविषा, धुणवल्लभा, शृङ्गीका, विश्वा, शृङ्गी, महीपथ, श्वेतकन्दा, भृङ्गी,
विरूपा, श्यामकन्दा, विपरूपा, वीरा, माद्री, अमृता, श्वेतवचा, शुक्लकन्द,
भगुरा, मृद्री, शिशुभैषज्य, शोकापहा, अतिसारखी)

संस्कृतभाषामें अतिविषा ।

हिन्दीभाषामें अतीस ।

बगभाषामें आतइच ।

मराठीभाषामें अतिविष ।

गुजरातीभाषामें अतलसनी कली ।

कर्णाटकीभाषामें अतिविषा ।

तैलिङ्गीभाषामें अतिवासा ।

लैटिन्भाषामें एकोनैट्रस हिटरोफाइलम् । *Acconitum*
Heterophyllum

अस्या गुणः ।

विषासोष्णाकटुस्निग्धापाचनीदीपनीहरेत् ।

कफपित्तातिसारामविषकामवमिक्रिमीन् ॥ (भा० प्र०)

अर्थ—अतीस—गरम, चरपरा, कडवा, पाचक, जठराग्निको दीपन करने
वाला तथा कफ, पित्त, अतिमार, आम, विष, खासी, वमि और कृमिरो-
गको, दूर करनेवाला है ।

अन्यथा ।

विषात्रयचदोषघ्नपाचनग्राहित्तकरम् ।

वालानां सर्वदापथ्यवमिशोफविमर्दनम् ॥ (गो० नि०)

अर्थ—तीनों प्रकारके अतीस—प्रदीपनाशक, पाचक, मलगोधक, कडवे,
पालकोंको सर्वकालमें पथ्य है और वमन तथा सूजनको दूर करे है ।

| | |
|-----------------|---|
| संस्कृतभाषामें | लोघ, पट्टिकालोघ । |
| हिन्दीभाषामें | लोघ, पठानीलोघ । |
| वगभाषामें | लोघकाष्ठ, पाटियालोघ । |
| मराठीभाषामें | लोघ । |
| गुजरातीभाषामें | लोदर, पठाणीलोदर । |
| कर्णाटकीभाषामें | लोघ । |
| तैलिङ्गीभाषामें | तेल्लुलोदुगचेदुग । |
| डैटिन्भाषामें | सिम्बोकोसरेसिमोसा (वृक्ष) सिम्बोकोस्केटि- गोइडिस् (छाल) <i>Symplocos racemosa</i> , <i>S Crataegoides</i> |
| अरबीभाषामें | मुगाम् । |

लोघगुणा ।

लोघोग्राहीलघु शीतश्चक्षुष्य कफपित्तनुत् ।

कपायोरक्तपित्तासृग्गतातीसारशोथहृत् ॥ (भा०प्र०)

अर्थ—लोघ—मलरोधक, हलका, शीतल, नेत्रोंको हितकारी, कफपित्त-
नाशक, कपेला तथा रक्तपित्त, रुधिरविकार, रक्तातिमार और शोथ (सूजन)
को दूरकरेहै ।

अन्यञ्च ।

रोधद्वयकपायस्याच्छीतवातकफास्रनुत् ।

चक्षुष्यविपहृत्तत्रविशिष्टोवलकरोधकः ॥ (राजनिघण्टु)

अर्थ—दोनांप्रकारके लोघ—कपेले, शीतल, वातकफनाशक, रुधिरके
विकारको दूर करनेवाले, नेत्रोंको हितकारी, विषके विकारोंके हरनेवाले
इन दोनोंमें पठानी लोघ श्रेष्ठ है ।

अन्यञ्च ।

लोघद्वयतुतुवरचक्षुष्यशीतललघु ।

ग्राहकं वातकफनुद्रक्तरुक्थोपपित्तनुत् ॥

अतिसारारुचिविषप्रदराणिविनाशयेत् ।

रक्तपित्तहरप्रोक्तपुष्पपाकेकटुस्मृतम् ॥

तुवरं मधुरशीतित्तञ्चग्राहकमतम् ।

कफपित्तहरचैवऋषिमि परिकीर्तितम् ॥ (निघण्टुरत्ना०)

अर्ध-शेनोदकारके शीघ्र-कपेटे, नेत्रोको हितकारी, शीघ्र, शीघ्र,
माही तथा वात, कफ, रक्तशोष, मोह, पित्त, भविष्य, लक्ष्मि, मि,
मदर और रक्तपिचका ताश करनेवाले हैं ।

लोपका कूट-पचनेमें घासरा, कपेटा, मयुर, शीतल, कटका, माहक
और कस्तुरिचनामक हैं ।

भट्टातयनामाभि ।

भट्टातकोऽरुणकश्चभट्टातःशोथस्तथा ।

वह्निनामासीरुक्मणकृद्धतनाशनः ॥

अर्ध-भट्टातक, अरुणक, भट्टात, शोथान, सदिनामा, बीरुक्त, मय
कूट, मूलाशान, (भट्टातकी, भविष्यकी, बीरुक्त, अरुणक, भट्टात मय,
भट्टात, अशोदिना, भागी, निर्दम, कपेट, अनन्, कृमि, शीघ्रशीघ्र, वात-
दि, शोथशीघ्र, पूषशीघ्र, मयुरशीघ्र, भीमपाद, रक्त, महार्किका, भवि,
मकोदित, शोथक, शोथशीघ्र, रक्तक)

मल्लभाषामे

भट्टातक ।

दिग्भाषामे

भट्टातक ।

मगलाभाषामे

भेग ।

मगदीभाषामे

विषया, विषया, विषये ।

मुजगतीभाषामे

विषयान् ।

मगदीभाषामे

विषयान् ।

शोथशीघ्रभाषामे

नाशनीकी, शीघ्रशीघ्र ।

शोथशीघ्रभाषामे

भवि ।

शोथशीघ्रभाषामे

शोथशीघ्र ।

शोथ

विषयान् ।

शोथशीघ्रभाषामे

शोथशीघ्र । शोथशीघ्रभाषामे शोथशीघ्र ।

शोथशीघ्रभाषामे

शोथशीघ्रभाषामे शोथशीघ्रभाषामे शोथशीघ्रभाषामे ।

शोथशीघ्रभाषामे

शोथशीघ्र ।

शोथशीघ्रभाषामे

शोथशीघ्र ।

भट्टातयनामाभि ।

भट्टातयनामाभिः शोथशीघ्रभाषामे शोथशीघ्रभाषामे ।

वातश्लेष्मोदरानाहकुष्ठाशोग्रहणीमदान् ॥

हन्तिगुल्मज्वरश्चित्रवह्निमाद्यकृमिव्रणान् । (भावप्रकाश)

अर्थ-भिलावा-कपेला, गरम, शुक्रजनक, मधुर, हल्का तथा वात, कफ, उदररोग, आनाह, कुष्ठ, बवासीर, सग्रहणी, गुल्म, ज्वर, श्चित्रकुष्ठ, अग्निमाद्य (प्रमेह) कृमि और व्रणरोगका नाश करे है ।

भल्लातकफलगुणा ।

भल्लातकफलस्निग्धकिमिदुर्नामनाशनम् ।

दन्तस्थैर्यकरंग्राहिकपायमधुरश्चनत् ॥ (राजवल्लभ)

अर्थ-भिलावका फल-स्निग्ध, किमि तथा बवासीरका नाश करनेवाला, दातोंको स्थिर करनेवाला, ग्राही, कपेला और मधुर है ।

पक्वभल्लातकगुणा ।

भल्लातकफलपक्वस्वादुपाकरसलघु ।

कपायपाचनस्निग्धतीक्ष्णोष्णच्छेदिभेदनम् ॥

मेध्यवह्निकरहतिकफवातव्रणोदरम् ।

कुष्ठाशोग्रहणीगुल्मशोफानाहज्वरकिमीन् (भावप्रकाश)

अर्थ-भिलावका पक्वा फल-मधुर, पाकमें मधुर, हल्का, कपेला, पाचक, स्निग्ध, तीक्ष्ण, गरम, छेदन, भेदक, मेघाजनक, अग्निदीपक, तथा कफ, वात, व्रण, उदररोग, कुष्ठ, अर्श, सग्रहणी, गुल्म, सूजन, आनाह, ज्वर और कृमिरोगोंको दूर करे है

अपिच ।

भल्लातस्यफलकपायमधुगकोष्णकफार्तिभ्रम-

श्वासानाहविवन्धशूलजठराध्मानकिमिध्वमनम् ॥ (रा नि)

अर्थ-भिलावका फल-कपेला, मधुर, गरम तथा कफ, भ्रम, श्वास, आनाह, विन्ध, शूल, उदररोग, आध्मान और किमिको नाश करनेवाला है ।

अस्य फलत्वगुणा ।

फलत्वचासुमधुगस्निग्धालघुकपायका ।

रसेकटीपाचिकाचलघुतीक्ष्णाचभेदिका ॥

उष्णाछेदनकर्त्रीचर्दीपनीकफनाशिनी ।

मेध्यावानश्चकुष्ठश्च व्रणं चोदरमेव च ॥

अर्शःसंग्रहणीगुल्मगोफानाहज्वरक्रिमीन् ।

नाशयेदितिसप्रोक्तामुनिभिः सत्यवादिभिः ॥ (नि० २०)

अर्थ-भिन्नावर्क घट्टरी छात्र-मधुर, त्रिगुण, हृदी, कर्षणी, रागो-
चरपरी, पातक, छीदण, भेदक, नासक, छेदा, शीघ्र, कर्माशक्त, मेधा-
जनक तथा वात, कुष्ठ, व्रण, उन्मत्त, घरासीर, संग्रहणी, गुल्म, गुदर,
अनाह, ज्वर और क्रमिगेमको नष्ट करे ।

अथ मज्जागुणाः ।

तथात्यफलजामलामधुरावृद्धणीस्पृणा ।

वृष्यादीपनकर्त्रीचतर्पणीगोफनाग्निनी ॥

अरोचकश्चदाहश्चपित्तंवातश्चनाशयेत् । (नि० २०)

अर्थ-इसके पत्रकी मज्जा-मधुर, वृद्ध, शीघ्रजनक, जन्माग्निदत्त,
तर्पण, शोषनाशक तथा अरुचि, दाह, विम और वातको दूर करनेवाली है ।

अथ मूत्रगुणाः ।

भल्लातकमूत्रमधुररूपायनातकोपनम् ॥ (राजसूत्रम्)

अर्थ-भिन्नावर्क घट्ट-मधुर, कषता और वातको दूर करनेवाली है ।

अथ मूत्रः ।

वृन्तमारुक्करस्वादुपित्तमकेश्यमग्निहृन् ॥ (भा० २०)

अर्थ-भिन्नावर्क घट्ट-मधुर, शीघ्रजनक, वातको दूर करनेवाली और
जठराग्निदत्त है ।

अथ मूत्राणामुपपत्तिः ।

भल्लातकानिपकानिममानिप्रक्षिपेन्मले ।

मलान्तियानितत्रैवशुद्धयर्थनानियोजयेत् ॥

इष्टकानृणानिचयैर्वर्षणाग्निविषंमयेत् । (आ० २०)

अर्थ-इसके भिन्नावर्क तथा जन्मों को छानकर अग्नि में निक्षिपे तबमें शुद्धावर्क
उत्पत्ति, शुद्ध करनेके लिए उत्पत्ति उत्पन्न भिन्नावर्क, इष्ट इष्टका भिन्नावर्क
इसके मूलों उत्पत्ति विषों को और शुद्ध हो ।

अथ मूत्राणामुपपत्तिः ।

शुष्कां स्पृष्ट्वा जलानि नदीमलानि कस्मृतः ॥

अर्थ—वृषाक, गोजनक, नदीभल्लातक ।

अस्य गुणा

वृषांकस्तुभवेत्तक्त कपायोमधुरोहिम ।

सग्राहीवातलश्चैवकफरक्तादिपित्तहा ॥

व्रणहेतिभिषक्श्रेष्ठैः प्रोक्तः केयनिघण्टके । (नि०र०)

अर्थ—नदीभिलावा—कडवा, कपेला, मधुर, शीतल, ग्राही, वातकारक तथा कफपित्त, रक्तपित्त, और व्रणविनाशक है ।

इसका वृक्ष बड़ा होता है, पत्ते गूमाकी समान होते हैं, फल लाल होता है ।

विजयानामानि ।

शक्राशनन्तुविजयात्रैलोक्यविजयाजया ॥

अर्थ—शक्राशन, विजया, त्रैलोक्यविजया, जया (मर्कुणारि, भङ्गा, इन्द्राशन, वीरपत्रा, चपला, अजया, आनन्दा, हर्षिणी, मोहिनी, भृङ्गी, धूर्तवधू, मातुलानी, मातुली, नीली, मनोहरा, हरा, उन्मत्तिनी, योगिनी, धूर्तपत्नी, कामाग्नि, तन्द्रारुचिर्वाद्धिनी, वीरपत्री, शिवा, माया, शिवमिया, मत्ता, ज्ञानवल्गिका)

संविदामञ्जरीगञ्जामादिनीहर्षिणीतथा ॥

अर्थ—संविदामञ्जरी, गञ्जा, मादिनी, हर्षिणी ।

संस्कृतभाषामें भङ्गा, विजया, गजा, चरस ।

हिन्दीभाषामें भोंग, भग, गोंजा ।

वगभाषामें सिद्धि, भाङ्ग, गाजा ।

मराठीभाषामें भाग, गाजा ।

ब्रह्मीभाषामें विन ।

गुजरातीभाषामें भांग्य, गांजो, चरस ।

तैलिङ्गीभाषामें जनपरितुलु गाजई ।

इंग्रेजी भाषामें इण्डियन हेम्प । Indian Hemp

लैटिन् भाषामें केनाविस् सेटाईवा । Cannabis Sativa

फारसीभाषामें किन्नाविष वरकुल्ख्याल शवनवग ।

अरबीभाषामें किन्नवकेन बुर्गारु रुदुदवज ।

भद्रगुणा ।

भङ्गाकफहरीतिक्ताग्राहिणीपाचनीलघु ।

तीक्ष्णोष्णापित्तलामोदमन्दवाग्वह्निवर्द्धिनी ॥ (भा.प्र.)

अर्थ-भग-कटनाशक, कटुवी, मादक, पातक, हृष्टवी, तपन, माघ,
पित्तजाय तथा मोद, मन्द, वागी और अग्निको करनेवाली है ।

भा.प्र. ॥

शक्राशनन्तुतीक्ष्णोष्णमोदहृन्नुष्टनाशनम् ।

बलमेध्याग्निरुन्हेष्मदोपहारिमावनम् ॥

अर्थ-भोग-तीक्ष्ण, उष्ण मोदपातक, कटनाशक कटुतपन, मेधातपन,
भीतिहारक, कटनाशक और रमावन है ।

भा.प्र. ॥

भृगीतृदीपनीरुज्याग्रादिणीपाचनीलघुः ।

निद्रापित्तप्रदोष्णान कामदाकफनाशनम् ॥

अर्थ-भोग-अग्निको दीपन करनेवाली, अग्निको उत्पन्न करनेवाली, अन्नको
रोपनेवाली, पातक हृष्टवी निद्राजनक, पित्तजाय, कामजनक और कफ
तथा वातको जीतनेवाली है ।

भा.प्र. ॥

आग्नेयीतपिणीत्रयामन्मथोदीपनीचला ।

निद्रामजननीगर्भपातिनीचविफाशिनी ॥

वेदनाक्षेपहर्णिनीजेयानमृत्कारिणी । (भा.प्र.प्रामाण्य)

अर्थ-आग्नेय-पातक, कटनाशक, पातक, मन्मथोदीपक, पित्तको
नष्टकरमान करनेवाली, निद्राजनक, गर्भको निगलनेवाली, विफारी, वेदनाको
हर्नेवाली, अक्षेपको दूर करनेवाली और मृत्कारक है ।

भा.प्र. ॥

जातामन्तरमन्थनाजलनिरीपीयूषदपापुरा

त्रैलोक्येविजयप्रतिविजयाश्रायगामप्रिया ॥

लोचनान्निनसाम्यगामितिउत्प्रेमानन्देकामदा

मानिन्द्रिणाभद्वर्षजननी च मेघिनामर्षदा ॥

अर्थ-जन्म-मन्थनाजलनिरीपीयूषदपापुरा
त्रैलोक्येविजयप्रतिविजयाश्रायगामप्रिया ॥
लोचनान्निनसाम्यगामितिउत्प्रेमानन्देकामदा
मानिन्द्रिणाभद्वर्षजननी च मेघिनामर्षदा ॥

इसका नाम विजया हुआ, यह देवराज इन्द्रको प्यारी है । हितकी अभिलाष करनेसे पृथ्वीपर मनुष्योंको प्राप्त होतीहै, इसको जलके माथ मिलाकर पीनेसे काम अत्यन्त प्रबल होताहै, सर्व प्रकारके रोग शोक दूर होतेहैं और अतुल आनन्द प्राप्त होता है ।

विवरण—यह एक प्रकारका धुप है, इसके फूल हरे गुच्छेदार होतेहैं, इसके पत्ते नीमके पत्ते समान लम्बे और कगूरदार होतेहैं, परन्तु नीमके पत्तोंसे कुछ छोटे होते हैं, प्रति दूडीपर तीन पाच अथवा सात पत्ते होतेहैं, पुरुष और स्त्रीके नामसे भग दोषकारकी होतीहै, पुरुष जातिके धुपसे पत्ते लिये जातेहैं और स्त्री जातिके धुपसे गाजेकी उत्पत्ति होती है, वगदेशके राज-शाही जिलेमें गाजेकी खेती होती है । दोनों जातिके धुप एक जगह रहनेसे जटा नहीं चार्घाजासकती, वह यही कारण है कि भंगकी खेती हरेक स्थानमें नहीं होती । वहा पर जो पुरुष जातिके वृक्ष उत्पन्न होतेहैं, उन सबको बहुत छोटे छोटेपनसे उखाड़ डालतेहैं मुगेर पञ्जाब और रामपूरके जिलेकी भग उत्तम होती है । धुप छे, फुटसे ऊँचा नहीं होता पत्ते एक इंच लम्बे होते हैं ।

हिन्दुओंको भग अत्यन्त प्यारी है विनाविघ्नके कार्य मिद्व करनेको सब उत्सवोंमें यह प्रथमही पीजाती है । पश्चिमोत्तर देशमें इसका अधिक व्यवहार है ।

हमारे देशके कोई कोई भगेडी कहते हैं, कि भगही इस ससारमें मन-भावन और परमपावन है इसी कारण भगवान् भूतनाथने इसको ग्रहण किया कोई यह भी कहते हैं कि—

सन्ध्या ।

भीजत ही सब रीझत हैं जन घोष धरी शिवके मनमानी ।
मिचं मसालो मिलाय दियो तब घोटकरी बाकी रस धानी ॥
साफी सुरपतिरायवनी यद ग्रन्थ कमण्डलुके जल छानी ।
गगते दूनी तरङ्ग उठै जब अगमे आवत भग भवानी ॥ १ ॥

घोड़ घोड़ा यह ठीक नहीं घरन यों है—

साधुनके अरु सिद्धनके अरु भट्ट सुभट्टनके मनमानी ।
यामिनिके अरु दूतनके रजपूतनगोत्रम घोटके छानी ॥
यादिके बीच अनेकन तीरथ याहिमें गग तरंगके पानी ।
कोटिन रग दिसावति है नवभगमें आवति भग भवानी ॥ २ ॥

तीदशोष्णापित्तलाभोदमन्दराग्वह्निवर्द्धिना ॥ (भा.प.)

अप्य-भंग-रसमात्र, कण्ठी, मादक पदार्थ, दूध, मीठा, ताम्र,
पिचताम्र तथा मोद, मन्, शङ्खो और आश्रिणी द्रव्यैर्वाप्ये ।

34

शक्राशनन्तुतीक्ष्णोष्णमोहहृन्मृष्टनाशनम् ।

बलमेष्यागिरु-पुष्पदोषदाग्निसावनम् ॥

अर्थ-भोग-निराग, उच्च मोक्षराग, दुःखनाशक चरित्र, सेवाशक्त, भक्तिशक्त, कल्याणक और ग्राह्य है ।

३०५५५५ ॥

भृंगीक्षुर्दापनीरुज्याप्रादिणीपाननीरुषुः ।

निद्रापित्तप्रदोष्णान् ताम्रदा कफनाशनिय ॥

अर्थ-भोग-भक्षिकी दीप्ति वसनेश्वरी शशिनी तमस्र वसनेश्वरी, भवः ।
 गीतेश्वरी, दासक, दृष्टी निद्रागन्ध विषयगन्ध, वसनेश्वरी भवः वस
 मया दासकी दीप्तिवसनेश्वरी ८ ।

2000 年 12 月 31 日

आग्नेयीतपिणीरुत्यामन्मयोदीपनोपता ।

निद्रामज्जनर्नागभंषातिर्नायपिशागिर्ना ॥

पञ्चनाशेषलक्ष्मिर्जीवनाममहकारिणी । (भाष्यमहिम्ना)

अर्ध-गंगा-नामक खन्नाबारा, कपकपत खन्नाबारा विगतो
 पञ्चमपात का-नाम, गिहनाम, गभरो गिहनाम, विगतो, खन्ना
 खन्ना, अर्ध-गंगा का खन्ना नाम गिहनाम है।

2517575

जातामन्दमन्थनामलनिरीपापुपदपापुम

अतो तं विजयप्रदेशं विजयार्थं रणनामिह ॥

ग्रीकानां हि न ह्यप्यनित्यं प्रमाणम्. याम्हा

मयान्तद्विपाशदर्पजननां वै मेविषामांशः ॥

[illegible]

महाराष्ट्र सरकारचे अर्थ-सचिव यांच्या कार्यालयात, मुंबई येथील ११-१२-१९५३ रोजी झालेल्या बैठकीचा निवेदन आहे.

इसका नाम विजया हुआ, यह देवराज इन्द्रको प्यारी है । हितकी अभिलाष करनेसे पृथ्वीपर मनुष्योंको प्राप्त होतीहै, इसको जलके साथ मिलाकर पीनेसे काम अत्यन्त प्रबल होताहै, सर्व प्रकारके रोग शोक दूर होतेहैं और अतुल आनन्द प्राप्त होता है ।

विवरण—यह एक प्रकारका क्षुप है, इसके फूल हरे गुच्छेदार होतेहैं, इसके पत्ते नीमके पत्ते समान लम्बे और कगूरदार होतेहैं, परन्तु नीमके पत्तासे कुछ छोटे होते हैं, प्रति दंडीपर तीन पाच अथवा सात पत्ते होतेहैं, पुरुष और स्त्रीके नामसे भग दोप्रकारकी होतीहै, पुरुष जातिके क्षुपसे पत्ते लिये जातेहैं और स्त्री जातिके क्षुपसे गाजेकी उत्पत्ति होती है, बगदेशके राज-शाही जिलेमें गाजेकी खेती होती है । दोनों जातिके क्षुप एक जगह रहनेसे जदा नहीं बाधीजासकती, वह यही कारण है कि भगकी खेती हरेक स्थानमें नहीं होती । वहा पर जो पुरुष जातिके वृक्ष उत्पन्न होतेहैं, उन सबको बहुत छोटे छोटेपनसे उखाड डालतेहैं मुगेर पञ्जाब और रामपूरके जिलेकी भग उत्तम होती है । क्षुप छै. फुटसे ऊंचा नहीं होता पत्ते एक इंच लम्बे होते हैं ।

हिन्दुओंको भग अत्यन्त प्यारी है विनाविघ्नके कार्य सिद्ध करनेको सब उत्सवोंमें यह प्रयमही पीजाती है । पश्चिमोत्तर देशमें इसका अधिक व्यवहार है ।

हमारे देशके कोई कोई भगोडी कहते हैं, कि भगही इस ससारमें मन-भावन और परमपावन है इसी कारण भगवान् भूतनाथने इसको ग्रहण किया कोई यह भी कहते हैं कि—

सवैया ।

भीजत ही सब रीझत हैं जब धोय धरी शिवके मनमानी ।
मिचं मसालो मिलाय दियो तब घोटकरी बाकी रस धानी ॥
साफी सुरपतिरायवनी यह नद कण्ठडुके जल छानी ।
गगते दूनी तरङ्ग उठै जब अगमें आवत भग भवानी ॥ १ ॥

घोड़ घोड़ा यह ठीक नहीं घरन यों है—

साधुनके अरु सिद्धनके अरु भट्ट सुभट्टनके मनमानी ।
कामिनिके अरु दूतनके रजपूतनघोटम घोटके छानी ॥
यादिके नीच अनेकन तीरथ याहिम गग तरंगके पानी ।
कोटिन रग दिखावति है जन भगम आवति भग भवानी ॥ २ ॥

रोगियोंको आरोग्य किया है उसका वृत्तान्त नीचे लिखतेहैं, उन्होंने छे रोगियोंको धुवापिलाकर आराम किया । सात रत्ती भग तमाखूके साधारण पत्तोंमें एक नई चिलम तमाखूके समान सजाकर हुक्के द्वारा रोगीको पिलायाया आक्षेप होनेका पहला लक्षण देखतेही रोगीको धूमपान कराया-गया । धुआ पीतेही रोगी आक्षेपसे छूट नेत्र बंदकर साधारण गीतिसे सोगया । आक्षेप होनेका ध्यान होतेही इसप्रकारसे बार बार धुआ पिला-कर उन सब रोगियोंको आराम किया गया ।

बम्बई देशके डॉक्टर जि सि (G C) लूकसने परीक्षा करके देखा है कि धुआ पीनेसे (१) आक्षेप थोड़ी देरतक ठहरता है (२) धीरे धीरे आक्षेप बहुत समयके पीछे हुआ करताहै (३) आक्षेपका तेजभी धीरे धीरे कम होजाता है (४) आक्षेपके किये रोगीको अत्यन्त कृश (दुबला) होना नहीं पडता (५) बारबार व्यवहार करनेसे फिर आक्षेप एक साथ उडजाताहै ।

डाक्टर ओसागनसीने अनेक प्रकारके रोगोंमें भगका प्रयोग करके परीक्षा की थी । उनकी राय है । धनुस्तम्भ, जलान्तक, वातरस, तडका और विपूचिका रोगकी यह औषधी है, उनके पीछे अगरज डाक्टर लोग भगको धनुस्तम्भ और विपूचिकाकी श्रेष्ठ औषधी समझतेहैं ।

डाक्टर डाय्मक (Dymac) ने धनुस्तम्भके बहुतरोगियोंको केवल भ-गसे आराम किया और निश्चय करदियाहै कि धनुस्तम्भके लिये उत्तम औषधी है यह विपूचिका रोगमें अफीमके समान काम करनेवाली है, रोग-की सम्प्राप्तिके समय काममें लानेसे अत्यन्त लाभ होताहै । इन रोगोंके अतिरिक्त यूनानी मतसे प्रमेह और अत्रवृद्धिके रोगमें भगका प्रयोग होताहै । दूधमें भंग पीसकर लेप करनेसे बवासीरीको आराम होताहै । सुनीहुई भग-का चूर्ण सहतके साथ खानेसे अतिसार, समहणी और मदाग्नि दूर होताहै । भगका पूरा धुप पीसकर नवीन घावमें लगानेसे शीघ्र आगम होताहै । और चोटकी पीडा निवारण करनेको लेप देनेसे विशेष उपकार होताहै ।

मात्रा २-४ रत्ती व्यवहार-चीज, पत्ते, जड ।

स्वास्थ्यप्रदामानि ।

खसफलेखाखसफलमुल्लमतफलमित्यपि ।

मन्त्रिपानहृमिकफपाण्डुनयमिनाभकः ।

मेदादीन्द्रासकानां च प्रीदां चातुशयं तथा ॥

नाशयेदिति च प्रोक्तो विंशेऽपस्तस्य न्यते ।

श्वेतवर्णो जारण स्याद्रुक्तमत्र च जारयेत् ॥

मृतिप्रदं कृष्णवर्णो माग्णस्तु प्रकीर्तितः ।

जराणां भक्षक पीतोषाग्ण मंप्रकीर्तितः ॥

चित्रवर्णः सारणः स्यान्मलसारणकार्यतः । (नि० २०)

अर्थ—अर्धम—आरण, सारण, और सारण, इन भक्षक मागमकाको है ।

गुण—वैरपेन्द्रक, पञ्चाशक, सारी, मयवापुर्मात्रक, वनरितककाक
आर्द्रकपाक, तलेको चरमेसारी, वीर्यका इमननकरमेसारी, पन्नी, मयु
कया सारिवाह मृमि, वर, पाण्डुरोग, शय, ममेद, भाग, मर्गी, मर्ग
और मातापको सप बर्गे । मटेरुमकी अर्धम भक्षक माग (तेल)
को है, इमकण इमको माग काये है ।

चारे केकी अर्धम मृगुकाग है इमकाग इमको माग करने है ।
पीये केकी ज्ञानाजक है इमको माग करने है । पिर वरुई अर्धम मयकी
सारण करती है इमको माग करने है ।

अमरसागमार्थः ।

उन्यन्तेऽयमयी ज्ञानिते मागमतिला अपि ॥

अर्थ—सर्वांग, मागमतिर (गुणमत्तु, गुणमर्ग, गुणी, नि
मेद मयमि)

गगुनमागमे

समर्ग, समर्ग ।

सिद्धिमागमे

समगा, समगाये दये ।

संगमागमे

संगमाग ।

हे० मा०

मागमा ।

मागमागमे

मागमा ।

गुणमागमे

गुणमाग ।

सिद्धिमागमे

सिद्धिमाग (२०)

सिद्धिमागमे

सिद्धिमागमे (२०)

सु०

सु०

मला० कशकश ।
फारसीभाषामें तुरबमेकोकनार ।
अरबीभाषामें हबुलकोकनार ।

अस्य गुणाः ।

खसबीजानिबल्यानिवृष्याणिमधुराणिच ।

जनयन्तिकफतानिशमयन्तिसमीरणम् ॥ (भा० प्र०)

अर्थ—खसखस—बलकारक, वीर्यवर्द्धक, भारी, मधुर, ग्राहक, और वातविनाशक है ।

विवरण । पोस्तकी खेती पूर्व, दक्षिण और रुहेलखण्डमें अधिकतासे होतीहै । इसका क्षुप चारफूटका होताहै, फूल सफेद, लाल, और काले रंगके अतीव सुन्दर गुलालेकी समान आते हैं, उसपै डोडे लगतेहैं उन डोडोंको छुरीकी नोकसे गोद देतेहैं, उनमेंसे जो दूध निकलताहै, उस दूधको इकट्ठा करले-तेहैं उसको पकाकर अफीम बनातेहैं और डोडेके भीतर जो धीज होतेहैं उनको खसखस कहतेहैं ।

यवक्षारनामानि ।

पाक्यक्षारोयावशूकोयवक्षारोयवाग्रजः ।

पाक्यक्षारो

।

पाक्यक्षारो

पाक्यक्षारो

पाक्यक्षारो

पाक्यक्षारो

पाक्यक्षारो

पाक्यक्षारो

पाक्यक्षारो

पाक्यक्षारो

पाक्यक्षारो

पाक्यक्षारो

पाक्यक्षारो

पाक्यक्षारो

पाक्यक्षारो

पाक्यक्षारो

पाक्यक्षारो

पाक्यक्षारो

अर्थ—पाक्य, क्षार, यावशूक, यवक्षार, यवाग्रज, (यवलास, यवशूक, सारक, रेचक, यवनालक, तिरेय, तीक्ष्णरम, यवनालज, यवज, यवशूकज, यवाह, यवापत्य)

संस्कृतभाषामें यवक्षार ।
हिन्दीभाषामें जवाखार)
वगभाषामें यवक्षार, सोरा ।

मराठीभाषामें जवखार ।

गुजरातीभाषामें जवखार ।

कर्णाटकीभाषामें यवक्षार ।

तेलङ्गीभाषामें यवखार ।

इंग्रेजीभाषामें कार्बोनेट ऑफ पोटाश । Carbonate of Potash

लैटिन्भाषामें पोटाशिय कार्बोनाम् । Potassium Carbonate

अरबीभाषामें नुतरुन ।

अथ गुणाः ।

व्यक्तारोलपु. स्निग्ध ससूक्ष्मोवह्निदीपन ।

निवन्तिशूलवातामश्लेष्मश्वासगलामयान् ॥

पण्डुशोप्रहणीगुल्मानादप्लीहहृदामयान् । (भा० प्र०)

अथ गुणः-स्निग्ध, ससूक्ष्म, अग्निप्रदीपक तथा शूल, पाण,

पण्डु, शोण, गन्धरोग, पाण्डुरोग, वयासीर, मधुहृणी, गुन्म, मानाद,

पण्डुशोणरोगो हरति ।

अथ गुणः ।

स्वप्नारोहिम. श्रेष्ठ शर्कराश्मरिकृच्छ्रजित् ।

निवन्तिशूलवातामपुस्त्यगुल्मादिजन्तुजित् ॥ (गणति)

अथ गुणः-श्रेष्ठ तथा शर्करा, अश्वगन्धरोग, शूल, वात,

गुल्मादितो भोग विमिश्रो द्यु करति ।

अथ गुणः ।

सुरक्षचोष्ण. कटुगन्धिप्रदीपक ।

पुत्रांतकफशूलाश्मरिकृच्छ्रजित् ॥

पण्डुशोणरोगमामगुल्माश्मरीहृणः ।

निवन्तिशूलवातामपुस्त्यगुल्मादिजन्तुजित् ॥

पण्डुशोणरोगमामपण्डुरुजन्तुजित् ॥

पण्डुशोणरोगमामपण्डुरुजन्तुजित् ॥ (गणति)

अथ गुणः-सुरक्ष, चोष्ण, कटु, गन्धिप्रदीपक,

पुत्रांतकफशूलाश्मरिकृच्छ्रजित् ॥

पण्डुशोणरोगमामगुल्माश्मरीहृणः ।

निवन्तिशूलवातामपुस्त्यगुल्मादिजन्तुजित् ॥

पण्डुशोणरोगमामपण्डुरुजन्तुजित् ॥

पण्डुशोणरोगमामपण्डुरुजन्तुजित् ॥

पण्डुशोणरोगमामपण्डुरुजन्तुजित् ॥

पण्डुशोणरोगमामपण्डुरुजन्तुजित् ॥

पण्डुशोणरोगमामपण्डुरुजन्तुजित् ॥

पण्डुशोणरोगमामपण्डुरुजन्तुजित् ॥

अर्थ—कपोत, स्वर्जिका, स्वर्जि, शूलघ्नी, सुखवर्चक (सौवर्चल, रुचक, सृजिकाक्षार, सर्जिका, क्षार, सुनर्चिक, स्रुघ्नी, योगवाही, स्वर्जका, सुखवर्चक, घुघ्निका, सर्जि, सर्जिक्षार, स्वर्जिक, सुखोर्जिक, सुवर्जिक, स्वर्जिक्षार, सुवर्चि, सुवर्चा, स्वर्जिकाक्षार)

संस्कृत भाषामें स्वर्जिक्षार ।

हिन्दीभाषामें सजी ।

बग भाषामें साजिखार, साजिमाटि ।

मराठी भाषामें सजीखार ।

गुजराती भाषामें साजीखार ।

कर्णाटकी भाषामें साजीखार ।

इंग्रेजीभाषामें कार्बोनेट ऑफ सोडा । Carbonate of soda

लैटिनभाषामें आर्थ्रोक्नेमम इंडिकम, कैरोक्सिलन फिटिड ।

Arthrocnemum Indicum Caroxylon foetidum

फारसीभाषामें संजारकलीया ।

अरबीभाषामें कलीवडा गुलअसफर ।

अस्य गुणा ।

स्वर्जिक्षारः कटुश्चोष्णस्तीक्ष्णो गुल्मविनाशकः ।

शूलवातकफचैव कृमीनाध्मानवातकम् ॥

उदरस्य च वातं च नाशयेदितिकीर्तितम् । (नि० २०)

अर्थ—सजी—चरपरी, गरम, तीक्ष्ण, गुटमनाशक तथा शूल, वात, कफ, कृमि, आध्मान, वायु और उदरकी वातको दूर करनेवाली है ।

विवरण । वृक्षोंके पश्चाद्गके तुकड़ेकरके मलबार प्रातकी ओर बड़ी बड़ी खाई बनाकर उनमें भर देते हैं और उसमें आग लगाते हैं पीछे वह अपने आप जलकर जम जाते हैं इसको खारी कहते हैं । यह खारी जमीनमें बनाई जाती है ।

दृष्टान्ताग्रनामानि ।

लोहद्रावीटङ्गणश्च सुभगो धातुवल्बः ॥

अर्थ—लोहद्रावी, टङ्गण, सुभग, धातुवल्ब, (पाचनक, मालतीतीरज, लोहश्लेषण, रसशोधन, रसाधिक, लोहद्रावी, रम्य, वर्तुल, कनकक्षार, मलिन, टङ्गण, मालतीतीरसम्भव, द्रावक, लोहशुद्धिकारक, रङ्गद, स्वर्णपाचक, द्रव, धातुमान्धिकर, सौभाग्य, श्वेतटङ्गण)

| | |
|-----------------|--|
| संस्तुतनामामें | दूष्णसार । |
| हिन्दीभाषामें | मुद्रागा । |
| बंगभाषामें | सौदागा । |
| मगधीभाषामें | स्वर्गासार, दकणसार । |
| गुजरातीभाषामें | टाणपादिपो, टकनकूटिपो । |
| कर्णाटकीभाषामें | टकणवारु, रितीयटकगु । |
| तेलिङ्गीभाषामें | एलिभारम् । |
| इमेजीभाषामें | बोराकन, पाययोगेद् ओक् सोडा । Borak Boleto of soda |
| लैटिनभाषामें | मोदामपाइयोगम् । Molas Bitoras |
| पारसीभाषामें | सौगार । |
| अरबीभाषामें | पुरग । |

अथ गुणाः ।

कथितपृंकणसार कटूष्ण रुफनाशन ।

स्थावगदिनिषमश्वासश्वासापहारक ॥ (गोजनिषण्ण)

अर्थ-मुद्रागा-कटु, उष्ण तथा कटा, स्थावगदि विष, तामी और भागकी हरनेवाला है ।

अथिष ।

टकणंवह्निकृद्रूक्षकफघ्नातपित्तकृत् ॥ (भाषमकाग)

अर्थ-मुद्रागा-अग्निजनक, रुखा, पचनाशक और वातपित्तकी हरनेवाला है ।

अथिष ।

टकणोद्वावणोभेदीविपहारीज्वरापहः ।

गुल्मामगूलशमनोवातश्लेष्महरः परः ॥ (ग० नि०)

अर्थ-मुद्रागा-द्रावण, घातुरी पतना करनेवाला, भेदक तथा विष, ज्वर, गुल्म, आम, गूल, वात और कफका नाश करे है ।

अथिष ।

मालतीतीगज सारस्तीक्ष्णोऽह्निमदीपकः ।

प्रिरक्ष्णोनिलकरः श्लेष्मघ्न पित्तदूषकः ॥

अर्थ-मुद्रागा-तीक्ष्ण, पचनप्रिया दीपन करनेवाला, रिकुश, वातनाशक, पचननाशक और विषकी दूषित करे है ।

अन्यच्च ।

टङ्कणोऽग्निकरोरूक्षःकफघ्नोरोचनोलघुः॥ (रसचन्द्रिका)

अर्थ—सुहागा—अग्निकारक, कफनाशक, रोचक और हलका है ।

अपिच ।

टङ्कणोभेदकोरूक्षःकटुश्चाग्निप्रदीपनः ।

पित्तलोष्णोवातकरस्तिक्तस्तीक्ष्णःपटुःस्मृतः ॥

धातुद्रावीज्वरवातकफजगमजविषम् ।

स्थावरश्चविषवांतिवातरक्तश्चनाशयेत् ॥

कासंश्वासनाशयतीत्येवमाहुर्मनीषिणः ।

अर्थ—सुहागा—भेदक, रूक्ष, कटु, अग्निदीपक, पित्तजनक, उष्ण, वातवर्द्धक, तिक्त, तीक्ष्ण, खारी, धातुको पतला करनेवाला तथा ज्वर, वात, कफ, जगमविष, स्थावरविष, वमन, वातरक्त, खांसी और श्वासको हरनेवाला है ।

अन्यच्च ।

लोहद्रावीतीक्ष्णोष्णश्चबलवह्निविवर्द्धनः॥(शोडलनि०)

अर्थ—सुहागा—तीक्ष्ण, गरम और बल तथा जठराग्निको बढ़ानेवाला है ।

‘वेतटकणगुणा’ ।

सुश्वेतटकणस्निग्धकटूष्णकफवातनुत् ।

आमक्षयापहृच्छ्वासविषकासमलापहम्॥ (राजनिघण्टु)

अर्थ—सफेद सुहागा—स्निग्ध, कटु, उष्ण, कफवातनाशक तथा आम, क्षय, श्वास, विष, खांसी और मलको हरनेवाला है ।

टङ्कणशोधनविधिः ।

आदौटकणमादायकाज्रिकाम्लेविनिक्षिपेत् ।

एकरात्रात्समुद्धृत्यरोद्रयन्त्रेविभावयेत् ॥

नरमूत्रगत टक गवां मूत्रगत तथा ।

दिनान्तेतत्समुद्धृत्यजम्बीराम्लगतकुरु ॥

जम्बीराम्लात्समुद्धृत्यनारिकेलस्यपात्रके ।

| | |
|-----------------|-----------------------------------|
| संस्कृतभाषामें | दृष्टाक्षार । |
| हिन्दीभाषामें | सुदागा । |
| उगभाषामें | नौदागा । |
| मराठीभाषामें | स्वर्गाक्षार, टाकणक्षार । |
| गुजरातीभाषामें | टंकणपादियो, टंकनचुलियो । |
| कर्णाटकीभाषामें | टकणगाठ, विनीपटंकणु । |
| तैलिङ्गीभाषामें | पुलेगारम् । |
| इंग्रेजीभाषामें | बोरारुम, वायबोरेट ऑफ़ सोडा । |
| | <i>Borax liberate of soda</i> |
| लैटिन्भाषामें | सोडामबाइबोगा । <i>Soda libere</i> |
| फारसीभाषामें | तीनाग । |
| अरबीभाषामें | युरग । |

अर्थ गुणा ।

कथितएकणक्षार.कटूष्ण.कफनाशन ।

स्थानगदिविषम्रश्वासश्चामापहारक ॥ (राजनिषण्ठ)

अर्थ-सुदागा-कटू, उष्ण तथा पत्र, स्वादगदिरिग, गामी और श्वासको हरनेवाला है ।

अपिच ।

टकणवह्निकटूक्षकफट्टातपित्तहृत् ॥ (भास्कराय)

अर्थ-सुदागा-अग्निजनक कुरा, पचनाशक और श्वासपित्तको काटनेवाला है ।
अपिच ।

टंकणोद्रावणोभेदीविषहारीज्वरापह ।

गुल्मामज्जूलशमनोवातश्लेष्महर् परः ॥ (ग० नि०)

अर्थ-सुदागा-द्रावण, पात्रको पत्रडा करनेवाला, भेदक तथा रिग, गर, गुल्म, आम, शूल, वात और श्वासनाश करने है ।

अपिच ।

मालतीतीगज क्षारस्तीक्ष्णोयद्विषदीपकृत ।

विरक्षणोनिलकरःश्लेष्मघ्न पित्तहृषक ॥

अर्थ-सुदागा-तीक्ष्ण, पचनाशक और श्वास वरनेवाला, विषनाशक, वातनाशक और विषको दूषित करने है ।

अन्यच्च ।

टङ्कणोऽग्निकोरुक्षःकफघ्नोरोचनोलघुः॥ (रसचन्द्रिका)

अर्थ—सुहागा—अग्निकारक, कफनाशक, रोचक और हलका है ।

अपिच ।

टङ्कणोभेदकोरुक्षःकटुश्चाग्निप्रदीपनः ।

पित्तलोष्णोवातकरस्तित्तस्तीक्ष्णःपटुःस्मृतः ॥

धातुद्रावीज्वरवातकफजंगमजविषम् ।

स्थावरश्चविषवांतिवातरक्तश्चनाशयेत् ॥

कासंश्वासंनाशयतीत्येवमाहुर्मनीषिणः ।

अर्थ—सुहागा—भेदक, रुक्ष, कटु, अग्निदीपक, पित्तजनक, उष्ण, वातवर्द्धक, तित्त, तीक्ष्ण, खारी, धातुको पतला करनेवाला तथा ज्वर, वात, कफ, जंगमविष, स्थावरविष, यमन, वातरक्त, खांसी और श्वासको हरनेवाला है ।

अन्यच्च ।

लोहद्रावीतीक्ष्णोष्णश्चबलवह्निविवर्द्धनः॥ (शोडलनि०)

अर्थ—सुहागा—तीक्ष्ण, गरम और बल तथा जठराग्निको बढ़ानेवाला है ।

स्वेतटक्कणगुणाः ।

सुश्वेतटंकणस्निग्धकटूष्णकफवातनुत् ।

आमक्षयापहृच्छासविषकासमलापहम् ॥ (राजनिघण्टु)

अर्थ—सफेद सुहागा—स्निग्ध, कटु, उष्ण, कफवातनाशक तथा आम, क्षय, श्वास, विष, खांसी और मलको हरनेवाला है ।

टक्कणगोधनविधिः ।

आदौटक्कणमादायकाञ्जिकाम्लेविनिक्षिपेत् ।

एकरात्रात्समुद्धृत्यरौद्रयन्त्रेविभावयेत् ॥

नरमूत्रगत टक्क गवां मूत्रगत तथा ।

दिनान्तेतत्समुद्धृत्यजम्बीराम्लगतकुरु ॥

जम्बीराम्लात्समुद्धृत्यनारिकेलस्यपात्रके ।

अस्य गुणा ।

सैन्धवलवणंस्वादुदीपनंपाचनलघु ।

स्निग्धंरुच्यंहिमवृष्यसूक्ष्मनेत्र्यत्रिदोषहृत् ॥ (भा०प्र०)

अर्थ-सैंधानोंन-स्वादुष, दीपन, पाचक, हलका, स्निग्ध, रुचिकारक, शीतल, वीर्यवर्द्धक, सूक्ष्म, नेत्रोंको हितकारी और त्रिदोषनाशक है ।

अन्यञ्च ।

सैन्धवरुचिद्वृष्यचक्षुष्यचाग्निदीपनम् ।

शुद्धस्वादुलघुस्निग्धपाचनशीतलमतम् ॥

अविदाहितसूक्ष्मश्चहृद्यश्चैवत्रिदोषहृत् ।

व्रणदोषमलस्तम्भहृद्गोचैवनाशयेत् ॥ (निघण्टुरत्नाकर)

अर्थ-सैंधानोंन-रुचिदायक, वीर्यवर्द्धक, नेत्रोंको हितकारी अग्निप्रदीपक, शुद्ध, स्वादिष्ट, हलका, स्निग्ध, पाचक, शीतल, अविदाही, सूक्ष्म, हृदयको हितकारी, त्रिदोषनाशक तथा व्रणदोष, मलस्तम्भ और हृदयरोगका नाशकरेहै ।

सैंधानोंन-सिंघकी ओरसे आताहै, सैंधानोंन आखके लिये अत्यन्त हितकारीहै, जिसमनुष्यका मल सूखगयाहो और दस्त न आताहो, उसको घीके साथ सैंधानोंन देनेसे तुरन्त दस्त आवेगा, सैंधानोंन तेलके साथ लगानेसे अनेकप्रकारके त्वचाके रोगोंको दूर करताहै हाथमें धारण करनेसे बड़ीइई नसोंको छुडादेताहै । सब प्रकारके नमकोमें श्रेष्ठ है ।

शाकम्भरीलघणनामानि ।

शाकम्भरीयवसुकरोमलवणरौमकम् ॥

अर्थ-शाकम्भरीय, वसुक, रौमलवण, रौमक, (रौमक, गडारत्न, गडलवण, शुभ्र, पृथ्वीज, गडदेज, गडोत्थ, महारम्भ, साम्भर, सम्भरोद्वय)

संस्कृतभाषामं शाकम्भरीय ।

हिन्दीभाषामं साँभरनों ।

बगभाषामं सामगदुण ।

मराठीभाषामं साम्भरलोण, साम्भरमीठ ।

गुजरातीभाषामं बटागस्मीठ ।

कर्णाटकीभाषामं गाडलवण, सम्भरदेज ।

फारसीभाषामं मिल्हेअवकीग ।

अथ गुणा ।

शाम्भरदीपनंचोष्णकोष्ठशुद्धिकरलघु ।

किञ्चिदम्लमभिष्यदिपाकेचकटुकमतम् ॥

तीक्ष्णपित्तकरभेदिव्यवायिकफनाशकम् ।

सूक्ष्मचार्श कफानाहमलवाताश्वनाशयेत् ॥ (रा० नि०)

अर्थ-शामर-दीपन, गरम, कोष्ठसोषक, इतकी, किञ्चित्भस्त्र, अभिष्यन्दि, पाकमें कटु, तीक्ष्ण, पित्तकारक, भेदक, व्यवायि, कफनाशक, सूक्ष्म तथा चवासीर, कफ, आनाह, मल और वातको दूरकरे । शामरनमक मात्राबद्ध देशके मसिद्ध शामर सरोवरमें उत्पन्न होता है ।

समुद्रलवणनामानि ।

सामुद्रिकत्रिकूटश्वरिशरलवणाब्धिजम् ।

अर्थ-सामुद्रिक त्रिकूट, शरिश, लवणाब्धिज (सागर, फटक, शिवा, सागरज, असीर, सामुद्रज, लवणोदधिगम्भव, सामुद्रिक)

ससूतभाषामे

समुद्रस्वण ।

हिन्दीभाषामे

समुद्रनोन, पांगा ।

बगभाषामे

कारक्यनुन ।

मगडीभाषामे

मीठ ।

गुजरातीभाषामे

मीठू ।

कणाटकीभाषामे

बटागर स्वण ।

तेलिङ्गीभाषामे

उबु ।

इमेतीभाषामे

साल्ट । Salt

छेतिन्नीभाषामे

सोदिभा इमुरां । Soda Muria

फारसीभाषामे

नमक ।

अरबीभाषामे

मिन्द शीर् ।

अथ गुणा ।

सामुद्रलवणंपाकेनात्युष्णमविदादिन ।

भेदनमधुगन्धिगुलमनानिपित्तलम् ॥ (ग० वि०)

अर्थ-सामुद्रना-विनिर्मु र्धन भरितो, भेदक, मद्ध, शिवा, दूत-नाशक और आकृष्ट विषकारक नही है ।

अन्यच्च ।

सामुद्रमधुरं पाके सति त्तमधुरगुरु ।

नात्युष्णदीपनभेदिसक्षारमविदाहिच ॥

श्लेष्मलवातनुत्तिकसरूक्षनातिशीतलम् । (भा० प्र०)

अर्थ—समुद्रनोन—पचनेमें मधुर, तिक्त, मधुर, भारी, किंचित् उष्ण, दीपन, भेदक, क्षाररसयुक्त, अविदाही, कफकारक, वातनाशक, कडवा, रूखा और अत्यन्त शीतलभी नहीं है ।

अन्यच्च ।

सामुद्ररुचिदहृद्यमग्निदीप्तिकरं मतम् ।

केशशौक्यकरभेदिह्यविदाहिवलासकृत् ॥

पाके तु मधुरप्रोक्तकटुतिक्तगुरुस्मृतम् ।

किञ्चिदुष्णपित्तलक्षक्षारस्निग्धचशूलनुत् ॥

वातनाशकरस्वादुऋषिभिः परिकीर्तितम् ।

अर्थ—समुद्रनोन—रुचिदायक, हृद्यको हितकारी, वालोंको घबल करने वाला, भेदक, अविदाहि, कफकारक, पचनेमें मधुर, कटु, तिक्त, भारी, किंचित् उष्ण, पित्तजनक, खारी, स्निग्ध, शूलनाशक, वातविनाशक और स्वादिष्ठ है ।

विवरण । समुद्रके जलको जमाकर समुद्रनोन बनाते हैं ।

विडलवणनामानि ।

विडविडलवणवर्तविङ्गन्धकृतकतथा ॥

अर्थ—विड, विडलवण, घूर्त, विङ्गन्ध, कृतक, (काललवण, द्राविडक, खण्ड, क्षार, आसुर, सुपाक्य, खण्डलवण, कृत्रिमक, द्राविडक, पाक्य, विट) ।

संस्कृतभाषामें

विडलवण ।

हिन्दीभाषामें

विरियासचग्नोन, कडीलानोन ।

बंगलाभाषामें

विट्नुन, ।

मराठीभाषामें

विडलोण ।

गुजरातीभाषामें

विडलवण ।

अथ गुणाः ।

विडलवणमुत्तेदिवह्वैर्बलविवर्द्धनम् ।

मलवातामविष्टमग्नूलाटोपविवन्धनुत् (गजसहम्)

अर्थ-विरियासचरनोन-उल्लेदक, जठराग्निवर्द्धक, बलवर्द्धक तथा मल, वात, आम, विष्टम्, ग्नूल, आटोप और विवन्धको दूर करे ।

मन्त्रः ।

विडक्षारोलघुश्चोष्णोरुच्यस्तीक्ष्णोमिदीपनः ।

वातानुलोमनोरुक्षोव्यवायीग्नूलाशनः ।

वातनाशकरोमेदगुरुमार्जीर्णविनाशनः ।

मलावष्टम्भकानाहवातहृद्रोगनाशन ॥

जाड्यंकफञ्चदृक्चनाशयेदितिकीर्तितम् । (नि०२०)

अर्थ-विरियासचर-दृक्ता, गरम, रुचिकारक, मीदग, अग्निदीपक, वातानुलोमन, रुक्ष, व्यवायि तथा ग्नूल, वात, ममेद, गुन्म, मार्जीर्ण, मराश्टम्भ, आनाह, वात, हृदयगोग, जठरा, वात और दाहको दूर करनेवाला है । विवर्ण । विष्टमग्न प्रसारणीके क्षारका बनाया जाता है ।

शोण्यं पचनमाति ।

अक्षसौवर्चलरुच्यदुर्गन्धग्नूलाशनम् ॥

अर्थ-अक्ष, सौवर्ण, रुच्य, दुर्गन्ध, ग्नूलाशन, (गरम, रुचिकारक, तिक्त, हृदयगन्ध, रोद्रिक, वायु, मेरु और मधुगार)

साम्यभाषामे

गौरवम् ।

दिग्भाषामे

पालानाव, पौद्गाराडा, सौगन्धान ।

वैद्यभाषामे

मन्त्रः स्तम्भ ।

मराटीभाषामे

पान्तेण ।

गुजरातीभाषामे

सुगन्ध ।

कर्णाटकीभाषामे

गौरवम् ।

ताम्रभाषामे

नायकम् ।

हिमालयीभाषामे

अनाशान्ति औरतगौर । (१२५)

नेपालभाषामे

अनाशान्ति औरतगौर । (१२५)

संस्कृतभाषामे

समस्त विद्या ।

आर्यभाषामे

समस्त विद्या ।

अस्यगुणा ।

कृष्णलवणवीर्योष्णरुचिदनिर्मलकटु ।

गुल्मशूलविवन्धघ्नकिंचित्पित्तकरलघु ॥ (वि० ति० भा०)

अर्थ—कालानान—उष्णवीर्य, रुचिदायक, निर्मल, कटु तथा गुल्म, शूल और विवन्धका नाश करे है । किंचित् पित्तजनक और हलका है ।

अन्यच्च ।

सौवर्चलकटुक्षारवीर्योष्णविशदलघु ।

गुल्मशूलविवन्धघ्नहृद्यसुरभिरेचनम् ॥

आनाहारोचकजन्तून्मूर्द्धवातचनाशयेत् । (ध० नि०)

अर्थ—कालानान—कटुरसयुक्त क्षाररसान्वित, उष्णवीर्य, विशद, हलका, हृद्यको हितकारी, सुगन्धित, दस्तावर तथा गुल्म, शूल, विवन्ध, अफारा, अरुचि, कृमि और ऊर्ध्ववातका नाश करे है ।

अन्यच्च ।

रुचकरोचनभेदिदीपनपाचनपरम् ।

सस्नेहवातनुन्नातिपित्तलविशदलघु ॥

उद्गारशुद्धिदसूक्ष्मविवन्धानाहशूलहृत् । (भा प्र)

अर्थ—कालानान—रोचक, भेदक, दीपन, पाचक, स्नेहयुक्त, वातनाशक, अत्यन्त पित्तजनक, विशद, हलका, उकारको शुद्ध करनेवाला, सूक्ष्म तथा विवन्ध, आनाह और शूलको निर्मूल करे है ।

विवरण । यह सजी और मीठे नानसे बनाया जाता है ।

वाचलवणनामानि ।

काचत्रिकूटपाक्याह्वलवणकाचसम्भवम् ॥

अर्थ—काच, त्रिकूट, पाक्याह, लवण, काचसम्भव (काचलवण, नील, काचोद्भव, काचसौवर्चल, नीलक, कृष्णवलण, पाकजकाचोत्थ, हयगन्ध, काललवण, कुरुविन्दकाचमल, कृत्रिम, नीलकाचोद्भव)

संस्कृतभाषामें काचलवण ।

हिन्दीभाषामें कचियानोन ।

वगभाषामें कालालोण ।

मराठीभाषामें वागडराग ।

गुजरातीभाषामें वगडोराग ।

अथ गुणा ।

काचदीपनमत्युष्णरक्तपित्तविवर्द्धनम् ॥

अर्थ-रुचियानोन-अग्निको दीपन करनेवाला, अत्यन्त उष्ण और रक्तपित्तवर्द्धक है ।

अथ गुणः ।

काचादिलवणरूप्यकिञ्चित्त्वारचपित्तलम् ।

दाहककफवातघ्नदीपनगुल्मशूलहृत् ॥ (राजनि०)

अर्थ-रुचियानोन-रुचिकारी, उष्ण, रक्त, पित्तजनक तथा दाह, कफ, वात, गुल्म और शूलका नाश करे और दीपन है ।

• विवरण । काचलवण काँचसे घनापाजाता है ।

आद्रिद्विनामानि ।

आद्रिद्विपाशुलवणं यज्जातभूमितः स्वयम् ।

अर्थ-आद्रिद्वि, पाशुलवण यह उष्ण नाम है, जो स्वयं (भादी) धूमिल होकर होता है ।

हिन्दिभाषाम

रेहगवानोन ।

अथ गुणा ।

क्षारगुरुकटुस्निग्धशीतलवातनाशनम् ॥ (भा० प्र०)

अर्थ-रेहगवानोन-खारी, भारी, कटु, स्निग्ध, शीतल और वातनाशक है ।

अथ गुणः ।

आद्रिद्वितीक्ष्णमुत्क्रुष्टिसन्नारकटुतिक्तकम् ॥ (राजरत्नम्)

अर्थ-रेहगवा-क्षीरण, उदरेक्षी, शास्त्रिकपुल, चण्डा और कटु है ।

विवरण । रेहगवा नामक जंगलवृक्ष की शाखी जड़निमें उत्पन्न होता है ।

अथ गुणा ।

औपरकंसार्पगुणसार्पससंगे लघुमृपरजम् ।

साम्भाररुहलगुणचमिथ्रकनरथा (१) ॥

अर्थ- औपरक, सार्पगुण, सार्पससंगे लघु, कृतरज, साम्भार, रुहलगुण, चमिथ्रक, नरथा ।

हिन्दिभाषामे

अर्थ, गुणः ।

हिन्दिभाषामे

अर्थ, गुणः ।

वर्गभाषामें

मराठीभाषामें

इंग्रेजीभाषामें

• लैटिन्भाषामें

फारसीभाषामें

अरबीभाषामें

खारीनुन ।

खारादिभीठ, उपर भूमीवर पिकतें तें ।

कावोनेट आफ् सोडा । Carbonate of soda

सोडीयकार्बोनास् Sodium carbonas

चोरे अर्मनी ।

बोदकबहलोज ।

अस्य गुणा ।

औषरतुपटुक्षारतिक्तवातकफापहम् ।

विदाहिपित्तकृद्वाहिमृत्रसशोपकारिच ॥ (रा० नि०)

अर्थ—खारीनोन—पटु क्षार, कडवा, वातकफनाशक, दाहजनक, पित्तकारक, ग्राही और मूत्रको सुखावे है ।

विवरण । खारी नमक स्वयं खारी पृथ्वीमें उत्पन्न होता है ।

रोमकलवणगुणा ।

• रोमकतीक्ष्णमत्युष्णपटुतिक्तश्चदीपनम् ।

दाहशोपकग्रहाहिपित्तकोपकरपरम् ॥

अर्थ—रोमकलवण—तीक्ष्ण, अत्यन्त उष्ण, पटु, कडवा, दीपन, दाहजनक, शोषकारक, ग्राही और पित्तको कुपित करे है ।

द्रोणीलवणनामानि ।

द्रौणेयवाद्धेयद्रोणीजवारिजचार्द्धिभवम् ।

द्रौणीलवणद्रौणत्रिकटुलवणचवसुसज्ञम् ॥

अर्थ—द्रौणेय, वाद्धेय, द्रोणीज, वारिज, वार्द्धिभव, द्रौणीलवण, द्रौण, त्रिकटु लवण ।

अस्य गुणा ।

द्रौणेयलवणपाकेनात्युष्णमविदाहिच ।

भेदनस्निग्धमीपच्चशूलघ्नचाल्पपित्तलम् ॥ (रा० नि०)

अर्थ—द्रौणीलवण—पचनेमें किञ्चित् उष्ण, अविदाही, भेदक, कुष्ठक स्निग्ध, शूलनाशक और अल्पपित्तजनक है ।

नरसारनामानि ।

क्षारश्रेष्ठोऽमृतक्षारश्चलिङ्गा लवणाभिर ।

सादरोनस्रारश्चवज्रभारोविदारण ॥

अर्थ-सागश्रेष्ठ, अमृतसार, चृत्तिकान्तरण, मान्य, नरसागर, यज्ञसार, विदारण ।

संस्कृतभाषामें

नरसार ।

हिन्दीभाषामें

नरसागर ।

वगभाषामें

निशादल ।

मगरीभाषामें

नरसागर ।

गुजगतीभाषामें

नरसागर ।

इंग्रजीभाषामें

आमोन्य, एंग्लिश । *Ammonia and English*

लैटिन् भाषामें

आमोन्यम्माग्निभात । *Ammonia in Magma*

अरबीभाषामें

नरसागर खुशानी ।

अर्थ-मन्त्र ।

पटुप्रवृत्तिशालिनी (?) त्वाग्र-शोथरुद्धिमः ।

यकृदोपेज्वरेप्लीहेरिणःशूलैर्ध्रुवाद्विषु ॥

स्तनगेगेरक्तपित्तकासेभग्नमयतथा ।

योनिव्यापत्सुचक्षोयोनरसारःसुतावहः ॥

अर्थ-नरसागर-शोथरुद्धिमः, शीतल तथा पृथ्वी रोगमें, श्वेतारोगमें, उपरमं, शिक्के शूलम्, अतृणाधिकमं, स्तनरोगमें, रक्तपित्तमं, रक्तार्थि, भग्नमं और योनिव्यापत्रोगमं गुरादायक है ।

अर्थ-य ।

नरसागरकन्तीक्ष्ण मरोव्रणविशरणः ।

रसजागणकारीम्यादतिचोष्णशगुलमनुव ॥

मलस्तम्भनादरचशूलप्लीहाभनाशयेत् ।

अर्थ-नरसागर-तीक्ष्ण, गरम, प्रज्वलित, रसजागणकारी, अत्यन्त उष्ण, गुल्मनाशक तथा मन्त्रात्मक, उपरोग, शूल और श्वेतारोग का नाशक है ।

अर्थ-प्रत्यक्षप्रमाण ।

• औष्वामादिपण्यपुनीपमम्मतागतम् ।

क्षान्धारुभिधानेनरसागर-मिष्टद्वयने (भा० प्र०)

अर्थ-इह भग्न और मांस्य मोक्षार्थं क्षान्धारुभिधाने नरसागर मिष्ट दीक है ।

अस्य शोधनविधियथा ।

नरसारोभवेच्छुष्कश्चूर्णतोयेविपाचितः ।

दोलायन्त्रेणयत्नेनभिपग्भिर्योगसिद्धये ॥ (आत्रेयसहिता)

अर्थ—सूखेनौसादरका चूर्ण दोलायन्त्र करके जलमें पचावे, इस प्रकार वैद्योंने इसकी शुद्धि कही है ।

विवरण । नवसादर कृत्रिम और अकृत्रिम इन भेदोंसे दो प्रकारका है जो मनुष्यके मूत्र, पुरीष अथवा पशुओंके पुरीषके क्षारका बनाया जाता है उसको अकृत्रिम कहते हैं, दूसरा नकली खारोंसे बनाया जाता है उसको कृत्रिम कहते हैं ।

सूर्यक्षारनामानि ।

सूर्यक्षारोऽर्कक्षारश्चतार्क्ष्यस्तीक्ष्णरसस्तथा ।

सुवर्चिकासर्वसहोर्ध्वोरिणश्चशिलाजतुः ॥

अर्थ—सूर्यक्षार, अर्कक्षार, तार्क्ष्य, तीक्ष्णरस, सुवर्चिका, सर्वसह, औरिण, शिलाजतु ।

| | |
|-----------------|-----------------------------------|
| संस्कृतभाषामें | सूर्यक्षार । |
| हिन्दीभाषामें | सोरा सूर्याखार, बाजी । |
| मराठीभाषामें | सोग । |
| गुजरातीभाषामें | सुरोखार । |
| तैलिङ्गीभाषामें | चिद्रुमस्ममु । |
| इंग्रेजीभाषामें | नाइट्र नाइट्रे साल्ट पिटर Saltper |
| लैटिन् भाषामें | पोटैशियम ट्रास Potaossum Nitras |
| फारसीभाषामें | शोरा । |
| अरबीभाषामें | अवकेर । |

अस्य गुणाः ।

औद्भिदंलवणंतीक्ष्णमत्युष्णरेचककटु ।

तिक्तमग्नेर्दीप्तिकरसूक्ष्मक्षारलघुस्मृतम् ॥

दाहकृच्छ्रोपकृद्वाहिवातनुत्पित्तकोपनम् ।

प्लीहमूर्च्छामृत्रकृच्छ्रनेत्ररुग्वातरक्तनुत् ॥

कुम्भकामलनुत्कासनासापाकचर्पाटिकाम् ।

शिरःपाकंचशूलचआध्मानचैवनाशयेत् ॥ (नि०२०)

अर्थ-सूर्यशार-तीक्ष्ण, अत्यन्त उष्ण, रेचक, कटु अग्निप्रदीपक, मूत्र, शार, लघु, दाहनक, शोषक, आह्व, वातनाशक, पित्तहारक तथा प्रीति, मूच्छा, मूत्रहृच्छ, नेत्ररोग, वातज, कुम्भरामन्य शार, नागशार, पिटिका, शिर पाक, शूल और आध्मानको दूर करे ।

विवरण । सोगशार मजीका घनापा जाता है ।

उपशारगुणा ।

मर्चभारोवस्तिशुद्धिहारकोमलशोधन ।

वस्त्रशुद्धिकश्चैवचक्षुष्य कृमिनाशकः ॥

उदावर्तदरश्चैवमुनिभिः परिकीर्तितः ॥ (नि०२०)

अर्थ-वेदशार-(साधुन) परितपोषण, मर्मशोषक, चर्मरोग निवारक, घननेपाला, नेत्रोंका दितकारी, कृमिनाशक और उदावर्तभोगना नाश करे । साधुन ममस्त संगमम प्रगिद है ।

उपशारगुणा ।

लोणारक्षारमत्पुष्पतीक्ष्णपित्तप्रशुद्धिदम् ।

क्षारलवणमीपजवातगुल्मादिदोषनुत् ॥ (ग० नि०)

अर्थ-लोणारक्षार-अत्यन्त गरम, तीक्ष्ण, पित्तप्रसक, आत्मपूर, विविध छवणमर्मपुक्त तथा वात और गुल्मादि दोषनाशक है ।

उपशारगुणा ।

चणकाम्लकमत्पुष्पतीक्ष्णपित्तप्रशुद्धिदम् ।

लवणानुगमंरुच्यशूलाजीर्णपित्तनुत् ॥ (ग० नि०)

अर्थ-चणकाक्षार-भयत अत्यगमनिन, शीता, कृतदोष, कटु मर्म समुत्, क्षीररोग तथा शार, अतीक्ष्ण और विषघ्नो दूर करे ।

विवरण । चणकाक्षार घननेत्रा विविध मर्म रोगोंमें प्रिय है ।

उपशारगुणा ।

शुकमत्पुष्पमुष्णशरीपनपाचनं परम ।

शूलगुल्मपित्तनाशकान्तराध्मानहर्षणम् ॥

चणितृष्णाभ्युष्णहृत्पीडाप्रतिमापहन् ।

अर्थ—चूक—अत्यन्त खटा, गरम, दीपन, पाचक, तथा शूल, गुल्म, विवन्ध, आम, वात, कफ, वमन, तृषा, मुखकी विरसता, हृदयकी पीडा और मदाग्निको दूर करेहै । चूक—खट्टे अनार, नींबु, इमली, आमले आदि कितनेक पदार्थोंके रसका बनाया जाताहै ।

इति श्रीआयुर्वेदोद्धारकशालिग्रामत्रैलोक्यकृतशालिग्रामनिष्पटुभूषणे भाषानुवादविभूषित

अष्टमर्ग समाप्त ॥ ३ ॥

अथ गुह्यच्युदिवर्गः ॥

अथ गुह्यच्यु उत्पत्तिः ।

अथलकेश्वरोमानीरावणोराक्षसाधिपः ।
 रामपत्नीबलात्सीतांजहारमदनातुर ॥
 ततस्तबलवात्रामोरिपुजायापहारिणम् ।
 युतोवानरसैन्येनजवानरणमूर्द्धनि ॥
 हतेतस्मिन्सुरारातौरावणेबलगर्विते ।
 देवराज सहस्राक्ष परितुष्टस्तुराघवे ॥
 तत्रयेवानराकेचिद्राक्षसैर्निहतारणे ।
 तानिन्द्रोजीवयामाससंचित्वामृतवृष्टिभिः ॥
 ततोयेषुप्रदेशेषुकपिगात्रात्परिच्युताः ।
 पीयूषविन्दवपेतुस्तेभ्योजातागुह्यचिका ॥

अर्थ—एक समय राक्षसाधिप लकेश्वर अभिमानी मदनोन्मत्त रावण राम-चन्द्रकी पत्नी सीताको बलात्कारसे हर लेगया तब बलवान् रामचन्द्रजी निज स्त्रीके हरनेवाले अपने रिपु रावणको वानराके सेनाके द्वारा रणस्थलमें जीतताभया जब वह बलगर्वित देवताओंका बेरी रावण मारागया, तब देवराज इन्द्र अत्यन्त परितुष्ट हुए और उस रणस्थलम जो उदर अमुगोंके हाथमे मारे-गयेथे उनको अमृत वर्षाकर, जिलाया उस समय उन वानराके शरीरमे उठ-लकर अमृत जिमजिम स्थानमें गिरा, वही वही यह गिलोय उत्पन्न हुई । इस कारण इसका नाम अमृता हुआ ।

गुह्यमनामानि ।



गुह्यमृतमन्त्राचकुण्डलीचकलक्षणा ।

मधुपर्णीमोमवल्लीविशल्यातत्रीनिजंरा ॥

अर्थ-गुह्यनी-अमृतवल्ली, कुण्डली, चकलक्षणा, मधुपर्णी, मोमानी, विशल्या, तन्त्री, निर्जरा (वत्सादनी, विजयदा, तान्त्रिका, अमृता, श्रीरत्निका, गुह्यनी, शास्त्रकर्तारि, पामोदराग, विजयी, उदाराग, गुह्यनी, पामा, शरा-
मि, श्यामा, सुगन्ता, मधुपर्णिका, विमोदका, अमृतमन्त्रा, श्यामा, विजया,
मोमवल्ली, भिन्नविद्या, कुण्डलीनी, श्यामा, नागदुर्गा, छत्रिका,
चन्द्राणा, अमृतगन्धिका, अमृतवल्ली, नीलवल्ली, मोमा, शरा-
पीणा, ताम्रकन्था, देवनिर्मिता, चमार्द्रा)

महत्तमापामे

गुह्यनी ।

दिदीभापाम

मिलोय ।

पंगलाभापामे

गुह्यनी ।

मगदीभापामे

गुह्यनी ।

गुह्यनीभापामे

गुह्यनी ।

वर्जनीभापामे

अमृतवल्ली ।

श्रीरत्नीभापामे

विजयिका, विजयिका, मोधुनि ।

ताम्रिभापामे

मिलोय, शरादि ।

३०

मिलोय ।

३१

मिलोय ।

३२

मिलोय ।

मिलोय

गुह्यनी ।

मिलोय

मिलोय ।

लैटिन्भाषामें काक्युलस कार्ड फीलियस । *Coenluscordifolious*

टिनोस्पोरा कार्ड फोलिया । *Tisnosporad Corifolia*

फारसीभाषामें गिलाई ।

अरबीभाषामें गिलोई ।

कन्दगुडूचीनामानि ।

अन्याकन्दोद्भवाकन्दामृतापिण्डगुडूचिका ।

बहुच्छिन्नाबहुरुहापिण्डालु.कन्दरोहिणी ॥

अर्थ—कन्दोद्भवा, कन्दामृता, पिण्डगुडूचिका, बहुच्छिन्ना, बहुरुहा और कन्दरोहिणी ।

गुडूचीगुणा ।

ज्ञेयागुडूचीगुरुगुणवीर्यातिक्ताकृपायाज्वरनाशिनीच ।

दाहान्तिगुणावमिरक्तवातप्रमेहपाण्डुभ्रमहारिणीच॥(रा.नि)

अर्थ—गिलोय—भारी, उष्णवीर्य, कडवी, कपेली तथा ज्वर, दाह, तृषा, वमन, रक्त, वात, प्रमेह, पाण्डु और भ्रमको हरनेवालीहै ।

अन्यच्च ।

गुडूचीग्राहिणीबल्यान्निदोपघ्नीरसायनी ।

दीपनीज्वरतृद्धर्दिकामलावातपित्तनुत् ॥

अर्थ—गिलोय—मलरोधक बलकारक, निदोपनाशक, रसायन, अग्निदीपक तथा ज्वर, तृष्णा, वमन, कामला और वातपित्तका नाश करे है ।

अन्यच्च ।

गुडूचीतुवरातिक्तावीर्येचोष्णाचक्षुषणा ।

ग्राहीरसायनीबल्यामधुराचाग्निदीपनी ॥

लघ्वीहृद्यायु.प्रदाचज्वरदाहतृषादरी ।

रक्तदोषवमिवातभ्रमपाण्डुप्रमेहकम् ॥

त्रिदोषकामलांचामकासकुष्ठतथाकृमीन् ।

रक्ताशवातरक्तचक्रण्डूमेढविसर्पकम् ॥

पित्तकफनाशयतिघृतेनसहवातहा ।

गुडेनश्चद्विद्वत्त्वसितयापित्तनाशिका ॥

मधुनाकफह्राशोक्तावातवाताग्नितले ।

शुठ्यामवातशमनीमुनिभिःपरिकीर्तिता ॥

अर्थ-गिणोष-कपेटी, कटरी, उगरीरुप, उग, मन्त्रोष, भास, मलसार, मधुर, ओषधप्रदीपक, हल्की, हृदयको हिनारी, आमुष, वृष, ज्वर, दाह, रुपा, स्तब्धोष, यमन, वात, धम, पाण्डुरोग, ममेह, शिरोष, कामडा, आम, खांसी, काट, कृषि, रक्तार्ण (मूर्तिप्रसादी) शाला, कण्ट, मेद, विमष, पित्त, और वृषको दूर करे । गिणोष मृते साध वातको, गुठके माय मन्त्रवृत्तायो, शास्त्र माय विचारो, मधुने माय कफको भग्नीये वेत्तमाय मधुका और मोंठकमाय आमशरणो दूर करे ।

मदिर ।

गुहूचीमधुगतिताकृच्छ्रद्वेगमातनुत् ॥

अर्थ-गिणोष-मधुर, कटरी, मृषहृद हृदयगंग और वातविनाशक है ।

भाषा-रक्तमायगुना ।

गुहूचीपर्णभाकान्तुवगेष्णालपुष्पमृता ।

कटुस्नितापाककालमधुगचरमायनी ॥

अग्निदीप्तिकरी ॥ लाभाहिणीचविशोपहा ।

वातरक्तवृषांदाहमेदकृष्टवकामलाम् ॥

पाण्डुरोगनाशयनीत्यजमानायेभाषितम् । (नि० ४०)

अर्थ-गिणोषके वृत्ताका शास्त्र-नारा, गम, हृदय, वृषग, कटरी, पानेके ममप भीरा, म्मापा, अग्निरी भीरा कमाना, वृषाग, मन्त्रोष, शिरोपनाग, वृषा वाता, वृष, दाह, ममेह, ज्वर, कामडा और पाण्डुरोगका नाश पानेमाण है वृषा भाषापोने चर्त है इमके भाषित गुण शास्त्रगमे देगे ।

मधुगतिताकृच्छ्रद्वेगमातनुत् ।

गुहूचिमत्तमुस्वाद्युष्यपुनरीपनम् ।

चभुषागत्तकृच्छ्रमपवम्भावनतागम् ॥

मानन्तविशोपशगाण्डुनीप्रवृत्तना ।

शमितीनेउरपित्तकामलापममेदहम् ॥

अरुचिंश्वासकासौचद्विक्कां चार्शक्षतथा ।

सदाहंमूत्रकृच्छ्रप्रदरसामरोगकम् ॥

नाशयेदितिसप्रोक्तपित्तमेहसर्शर्करम् । (रा० २०)

अर्थ—गिलोयका सत्त्व—स्वादिष्ठ, पथ्य, हलका, दीपन, नेत्रोंको हितकारी, धातुवर्द्धक, मेधाजनक, अवस्थास्थापक तथा वातरक्त, त्रिदोष, पाण्डुरोग, तीव्रज्वर, वमन जीर्णज्वर, पित्त, कामला, प्रमेह, अरुचि, श्वास, खासी, हिचकी, बवासीर, क्षय, दाह, मूत्रकृच्छ्र, प्रदर, सोमरोग, पित्त, प्रमेह और शर्करारोगको दूर करेहै ।

कन्दगुह्यच्युगुणा ।

कन्दोद्भवागुह्यच्युचकटूष्णासन्निपातहा ।

विपघ्नीज्वरभूतघ्नीवलीपलितनाशिनी ॥

अर्थ—कन्दगिलोय—कटु, उष्ण, सन्निपातनाशक तथा विष, ज्वर, भूत और वलीपलितविनाशक है ।

गिलोयके सत्त्व बनानेकी विधि ।

गिलोयके छोटे छोटे टुकड़े करके कूट डाले और पानीमें दोदिनतक भिजोये रखे फिर चलीनीसे छानले । दूसरे दिन उसके ऊपरका पानी सावधानीके साथ नितारदे फिर नीचेका जो गाढ़ा जल रहजाय, उसको धूपमें सुखाले । वह सत्त्व बनजायगा ।

विवरण—गिलोयकी बेल होतीहै और वृक्षोंपर फैलजाती है । गांठोंसे दो दो भाग निकलतह । धीरेधीरे उनकी झादरी और उनकीही जड़ होजातीहै । पत्ते कुछ कुछ पानकी समान और अधिक नीले होतेहैं शूल छोटा गुच्छोंमें आताहै, फल मटरकी समान होतेहैं और पकनेके समय लाल पड़ जातेहैं । व्यवहार—पत्ते, झादरा । मात्रा २ तोले ।

नागवल्लीनामानि ।

ताम्बूलीनागवल्लीचनागिनीनागवल्लिका ।

दिवाभीष्टापणलताताम्बूलिर्नागवल्लरी ॥

अर्थ—ताम्बूली, नागवल्ली, नागिनी, नागवल्लिका, दिवाभीष्टा, पर्णलता, ताम्बूलि, नागवल्ली (नागवल्ली, ताम्बूलवल्ली, सप्तशिरा, सप्तलता, फणिबल्ली, मुजगलता, भक्ष्यपत्रा, ताम्बूलवल्लिका, पर्णगृहाशया, मुखमूषण, ताम्बूल)

| | |
|------------------|-------------------------|
| संस्तुतभाषामे | ताम्बूलवर्णी, ताम्बूल । |
| दिन्दीभाषामे | नागवेन्, पान । |
| वंगभाषामे | पान । |
| भरतीभाषामे | नागवेन् । |
| चोदणीभाषामे | पानवेन् । |
| गुजरातीभाषामे | नागवेन्, पान । |
| पणोदरीभाषामे | नागवेन्, पण । |
| तेल्लिङ्गीभाषामे | तामन्वपाक । |
| तामिर्गमि | वेदिली । |
| मुन्नीभाषामे | मिडली । Ber leaf |
| हन्निभाषामे | पाइंगपिट । Paper tel |
| फार्मीभाषामे | वर्गितपां । |
| भर्मीभाषामे | फान । |

ताम्बूलमुत्त ।

ताम्बूलकटुतिकमुष्णमधुःसागकपायान्वित
यातमहमिनाशनकफहरदुःस्यविच्छेदनम् ।
स्त्रीमभाषणभूषणधृतिकरकावाग्निमदीपन
ताम्बूलनिहितास्त्रयोदशगुणाःस्वर्गेपितेदुर्लभाः ॥

अर्थ-पान-चर्मग, रदना, तम, कटु, सागुजपा, कपायान्वित
सवा यात, तमि, यन भीरु द गका हनेताई । स्वर्गभाषणके विषयम
भरतीकी समानई तथा चोदणीकी भीरु कामाक्षिराई । पानमे गद
ओ तम गुण विद्यमानई, सो स्वर्गमे भी दृष्टई ।

प्रत्यय ।

ताम्बूलविशदकन्वतीक्ष्णोष्णतुवरं सरम ।

पश्यतिक्वटुसारंस्तपित्तस्रग्लपु ॥

वत्सवञ्जन्माम्बुटीगेन्वयमलजानश्रमापहम् । (भा० २०)

अर्थ-पान-विशद कनिजवाही, हीलन, मात, वनेया साग, दलीका,
कदना, चोदणी सा, चोदणीका कटु, दन्तक कपा यन, गुण
दृष्टमे म, यात भीरु भवता दृष्ट ई ।

अन्यच्च ।

नागवल्लीकटुस्तीक्ष्णातिक्तापीनसवातजित् ।

कफकासहरारुच्यादाहकृद्दीपनीपरा ॥ (रा० नि०)

अर्थ—पान—चरपरा, तीक्ष्ण, कडवा तथा पीनस, वात, कफ और खासीको दूर करेहै, दाहजनक और अग्निप्रदीपकहै ।

श्रीवाटीपणगुणा ।

श्रीवाटीमधुरातीक्ष्णावातपित्तकफापहा ।

रसाढ्यासुरसारुच्याविपाकेशिशिरास्मृता ॥

अर्थ—श्रीवाटीपान—मधुर, तीक्ष्ण, वातपित्तकफनाशक, रसाढ्य, सुरस-युक्त, रुचिकारक और पचनेके समय शीतलहै ।

अम्लवाटीपणगुणा ।

स्यादम्लवाटीकटुकाम्लतिक्तातीक्ष्णातथोष्णामुखपाककर्त्री ।

विदाहपित्तासविकोपनीचविष्टम्भदावातनिर्हर्हिणीच ॥

अर्थ—अम्लवाटीपान—चरपरा, खट्टा, कडवा, तीक्ष्ण, गरम, मुखको पकानेवाला, दाहको उत्पन्न करनेवाला, विष्टम्भदायक और वातनिवारकहै ।

सातसीपणगुणा ।

सातसीमधुरातीक्ष्णाकटुरुष्णाचपाचनी ।

गुल्मोदराध्मानहरारुचिकृद्दीपनीपरा ॥

अर्थ—सातसीपान—मधुर, तीक्ष्ण, कटु, उष्ण, पाचक तथा गुल्म, उदररोग और आध्मानको दूर करनेवालाहै, रुचिकारक और जठराग्निको दीपन करनेवाला है ।

जीणपणगुणा ।

तत्पणजूर्णातिरसातिरुच्यासुगन्धितीक्ष्णामधुरातिहृद्या ।

मदीपनापुस्त्वकरातिवह्याविरेचनीवक्त्रसुगन्धिकारिणी ॥

अर्थ—पुरानापान—अत्यन्त रसपूरित, रुचिकारक, सुगन्धित, तीक्ष्ण, मधुर, हृदयको हितकारी, जठराग्निको दीपन करनेवाला, पुस्त्वदायक, वलकारक, दस्तावर्ग और मुखको शुद्ध करनेवाला है ।

माग्योद्वेवांगपणगुणा ।

नाम्नान्याम्लमगसुतीक्ष्णमधुरारुच्याहिमादाहनु-

त्पित्तोद्रेकहरासुदीपनकरीशल्यामुष्णामोदिनी ।

स्त्रीर्माभास्यविषद्वेनीमदकरीराहामदावल्लभा

गुल्माध्माननिश्चञ्चजिञ्चकथितासामालेनुस्थिता ॥

अर्थ-मात्रेणा अंगरापान-अग्नि, मासक, तीक्ष्ण, मधुर, रुचिरासक, शीतल, दाहनाशक, पिचनाशक, अप्रिको दीपन करनेवाला, यकृतो दूनेवाला, मुग्गमं मुग्गन्ध करनेवाला विषोद्रे माभास्यको मदानशाल्य, नगा करनेवाला, राजाओंकी सदा बहुतम तथा गुल्म, आध्मान और विषयको दूर करनेवाला ।

समप्रदायप्रशोदहीनगुण ।

अन्त्रेपट्टलिकानामकपायोष्णाकटुस्तथा ।

मलापकर्पाकण्ठस्यपित्तकृद्रातनारिनी ॥

अर्थ-अन्त्रदेशका पोष्टर्ही पान-यकृत, गरम, चापला, कटुके मज्जको निकाहनेवाला, पित्तकारक और दाहनाशक है ।

देगनीनरगुण ।

हेसणीयावदुस्तीक्ष्णादद्यादीर्घदलाचसा ।

कफनातद्वगठन्याकटुर्दीपनपाचनी ॥

अर्थ-समुद्रदेशका पान-चापला तीक्ष्ण, दृढ्यको दितकारी, दीपनको-वाला, कफनाशनाशक, रुचिरासक, चापला, दीपन और पाचक है ।

नवीनमाच्यनरगुण ।

सद्यन्त्रोटितभस्त्रिमुक्तरुजाजाड्यापदोषकृ

दाहरोचकफक्तदायिमरुट्टिएम्भ्रान्तिप्रदम् ।

यद्रूयोजनपानपापितरमतञ्चैन्निचगन्धोदिनि

ताम्बूलीद्वयमुत्तमचरुचिह्नद्वयमिदोपाधिनुत् ॥

अर्थ-सत्त्वानने तीक्ष्ण पानका भस्त्रज करना मुग्गमेग और चदनाको दूर करे है, निरोपवाक, दाहजनक, कफनिशक, रुचिरासक, पाचक करनेवाला, मन्त्रवाक, विह्वल और मननकर है, यही पान, यद्रूयोजन-तय जगने सींचा हुआ भेद है, दीपनको च्चय करनेवाला है, दाहने करनेको मुद्ग करनेवाला है और दितानाशक है ।

कृष्णवर्णमुत्तमम् ।

कृष्णवर्णमुत्तममुष्णरूपायकनेद्रादंशरुजजडनरुज

शुभपगंक्षेप्यपामागगमपत्यं रुच्यंदीर्घनपापिन य ॥

अर्थ—काला पान—कडवा, गरम, कपेला, दाह, मुखकी जडता और मलको दूरकरनेवाला है । सफेद पान—कफ वात रोगनाशक, पथ्य, रुचिकारक, जठराग्निप्रदीपक और पाचक है ।

पणशिरादिगुणा ।

शिरापणस्य शैथिल्यं कुर्व्यात्तस्यास्रहृद्गसः ।

शीर्णत्वग्दोषदंतास्यरोगकृत्तुसितासितम् ॥

अर्थ—पानकी शिरा—(नस) शिथिलताकारक और उन शिराओंका रस रुधिरको हरनेवाला है । गले और सूखे पान—त्वचाके रोगोंको, दन्तरोगोंको और मुखरोगोंको उत्पन्न करेहैं ।

पणमूले भवेद्व्याधिः पणग्रिपापसञ्चयः ।

चूर्णपणं हरेदायुः शिराबुद्धिर्विनाशिनी ॥

आयुरग्र्यशोमूले मध्ये लक्ष्मीर्व्यवस्थिता ।

तस्मादग्र्यमूलञ्च मध्यपणस्य वर्जयेत् ॥

चूर्णाधिकहरति गन्धमथादिपूगपूगतथाधिकद-

लचसुगन्धिकारि । ताम्बूलमुत्तममिदं रसनाग्रभि-

न्नपणं निशास्वधिकखण्डितपणमह्नि ॥ (वि० ति० भा०)

भावार्थ—पानकी जड़के भक्षण करनेसे अनेक प्रकारकी व्याधि उत्पन्न होती है, पानका अग्रभाग भक्षण करनेसे पाप सञ्चय होता है, पानका चूर्ण आयुको हरता है, और पानकी शिरा (नस) बुद्धिको भ्रष्ट करती है, अधिक चूना सुगन्धिको हरता है, अधिक सुपारी रागको उत्पन्न करती है और अधिक पान सुगन्धि करनेवाला है । चोच टूटा हुआ पान रात्रिमें और अधिक टूटा पान दिनमें भक्षण करना उत्तम है ।

अस्य परगुणा ।

नागवल्लीफलहृद्यसुगन्धिकफवानजित् ॥ (आ० स०)

अर्थ—नागरखेलका फल हृदयको हितकारी, सुगन्धि, कफ और वात-विनाशक है ।

पणरहितपूगगुणा ।

अनिधायमुषेपणं पूगखादतेनरः ।

मतिभ्रंशोदरिद्रीस्यादन्तेनस्मरतेहरिम् ॥

अर्थ-जो मनुष्य बिनापान सुपारी खातेहै, उनको यदि भिन्नदवावी है और दगिद्री होजातेहैं तथा अन्तर्में हरिका स्मरण नहीं करते ।

अन्वय ।

विनापणमुवेदत्त्वागुवाकभक्षयेद्यदि ।

तामद्रवनिचाण्डालीयादङ्गानगच्छति ॥

अर्थ-जो मनुष्य बिना पानके सुपारी खातेहै, सो मनुष्य जबकि मगज जीभ खान नहीं करते, तबतक चाण्डाल गिने जातेहैं ।

अन्वय-तानिषेध ।

ननेत्ररोगेनचरत्पित्तेक्षतेनवातेनपिपेनशोषे ।

मदान्ययेनापिचमोहमृच्छांश्रयानेपुताम्बुलमुशान्तिवेषा ॥

(सुपेणदेव)

अर्थ-नेत्ररोग, रक्तपित्त, डाँधरोग, वायुरोग, शोष रोग, पित्तजनितरोग, मोह, मृच्छांश्रय और श्रयारागमें पारा मान कर निषेध है ।

अन्वय ।

ताम्बुलमदितम्प्रोक्तशरीरेत्सुदुर्बले ।

उज्ज्वलस्यभोषपित्तानमदमृच्छाक्षिगेगिषु ॥

अर्थ-ताम्बुल-मदितम्प्रोक्त शरीरेत्सुदुर्बले, उज्ज्वल स्यभोषपित्तानमदमृच्छाक्षिगेगिषु, मृच्छा, मृच्छा और मृच्छाक्षिगेगिषु को अहितकारी बताते हैं ।

अन्वय ।

ताम्बुलमिधयाम्नीणांश्रयान्निषिद्धनाशिणाम् ।

नपम्बिनाशयिषेन्द्रगोमीनमदमृच्छाक्षिगेगिषु ॥ (अमोघवैजुगरे)

अर्थ-दान-विषय शरी, कर्षी, कर्मचारि और कर्मचारि शरीरोंको नपम्बिनाशयिषेन्द्रगोमीनमदमृच्छाक्षिगेगिषु ।

विशेष-पानकी देव, कर्मचारि शरीरको नपम्बिनाशयिषेन्द्रगोमीनमदमृच्छाक्षिगेगिषु । पानकी देव, कर्मचारि शरीरको नपम्बिनाशयिषेन्द्रगोमीनमदमृच्छाक्षिगेगिषु । पानकी देव, कर्मचारि शरीरको नपम्बिनाशयिषेन्द्रगोमीनमदमृच्छाक्षिगेगिषु । पानकी देव, कर्मचारि शरीरको नपम्बिनाशयिषेन्द्रगोमीनमदमृच्छाक्षिगेगिषु ।

विल्वनामानि ।



विल्वोमहाकपित्थाख्यः श्रीफलोगोहरीतकी ।

पूतिवातोऽथमङ्गल्योमालूरत्रिशिखावपि ॥

अर्थ—विल्व, महाकपित्थाख्य, श्रीफल, गोहरीतकी, पूतिवात, मङ्गल्य, मालूर, त्रिशिख, (शाण्डिल्य, शैलूप, मालूर, कपीतन, महाकपित्थ, अति-मङ्गल्य, महाफल, शल्य, हृद्यगन्ध, शलाटु, कर्कट्राह, शैलपत्र, शिवेष्ट, पत्र श्रेष्ठ, त्रिपत्र, गन्धपत्र, लक्ष्मीफल, गन्धफल, दुरारुह, त्रिशिखपत्र, शिवदुम, सदाफल, सत्यफल, सुनीतिक, समीरसार, सत्यवर्म, अधरारुह, कण्टकाढ्य, सितानन, नीलमल्लिक, पीतफल, मोमहरीतकी)

संस्कृतभाषामें

विल्व ।

हिन्दीभाषामें

वेल ।

बंगलामें

वेल, विल्व ।

मराठीभाषामें

वेल, वेलफल ।

गुजरातीभाषामें

विलोविडु ।

कर्णाटकीभाषामें

वेलडु ।

तैलिङ्गीभाषामें

मारेडीपदुनेल्व ।

तामिलीभाषामें

विल्वपाञ्जाम ।

इंग्रजीभाषामें

वेगलकिन्स । Bengal Lins

लैटिन्भाषामें

इगलमारमेलोस । Aragle Marmelos

अथगुणा ।

श्रीफलस्तुवरस्तिकोयादीरुक्षोभिपित्तकृत् ।

कटु, त्रिदोषकारक, दुर्जर, वातकारक और मदाग्निको उत्पन्न करनेवाला है।
वेलकी जड़-मधुर तथा त्रिदोष, वमन, शूल इनको नाश करनेवाली, हल्लकी
तथा मूत्ररूच्छ, वायु, कफ और पित्तका नाश करनेवाली है। इसके पत्ते
ग्राही और वातनाशक हैं ।

अथे च पत्रगुणा ।

तत्पत्रकफवातामशूलघ्नग्राहिरोचनम् ॥

अर्थ-वेलके पत्ते-कफ, वात, आम, और शूलनाशक हैं, ग्राही और
रोचक हैं ।

अस्य पुष्पगुणा ।

निहन्याद्विल्वजपुष्पमतिसारतृपां वमिम् ॥

अर्थ-वेलके फूल-अतिसार, तृपा और वमननिवारक हैं ।

विल्वमज्जाभवतैलगुणा ।

विल्वमज्जाभवतैलमुष्णवातहरपरम् ॥

अर्थ-वेलका तेल-गरम और वातविनाशक है इसके अधिक गुण तेल-
वर्गमें देखो ।

विल्वपेपिकागुणा ।

कफवातामशूलघ्नीग्राहिणीविल्वपेपिका ॥

अर्थ-विल्वपेपिका-(वेलका सूखा गूदा) कफ, वात, आम और
शूलनाशक है तथा मलरोधक है । ॥ ६४ ॥

वाजिकस्थितविल्वगुणा ।

काञ्जिकेसस्थितविल्वमग्निसदीपनपरम् ।

हृदयरुचिकरप्रोक्तमामवानविनाशनम् ॥

अर्थ-काञ्जीमें रखवा हुआ वेल-अग्निको दीपन करे, हृदयको हितकारी
है, रुचिकारी है और आमवातनाशक है ।

पक्वविल्वस्य दोषोक्तिः ।

फलेषु परिपस्वेपुये गुणा ममुदाहता ।

विल्वादन्यत्र विज्ञेया विल्वमामगुणोत्तरम् ॥ (रा० व०)

अर्थ-सर्वप्रकारके पके हुए ही फल गुणशाले होते हैं, किन्तु वेल तो
कच्चा ही गुणवाला होता है और पक्का वेल, अनेक प्रकारके दोषोंको उत्पन्न
करनेवाला है ।

कर्णाटकीभाषामें
तैलिंगीभाषामें

सीवनी ।
साझागुबुदीचेददु ।
अस्या गुणा ।

काश्मरीतुवरातित्तावीर्योष्णामधुरागुरु ।
दीपनीपाचनीमेध्याभेदिनीभ्रमशोपजित् ॥
दोपतृष्णामशूलाशोविपदाहज्वरापहा ।

अर्थ—कुम्भेर—कपेली, कडवी, उष्णवीर्य, मधुर, भारी, अग्निको दीपन करनेवाली, पाचक, मेधाजनक, दस्तलानेवाली तथा भ्रम, शोष, त्रिदोष, तृषा, आमशूल, ववासीर, विष, दाह और ज्वरको दूर करनेवाली है ।

अस्या फलगुणा ।

तत्फलवृहणवृष्यगुरुकेश्यरसायनम् ।
वातपित्ततृपारक्तक्षयमूत्रविबन्धहत् ॥
स्वादुपाकेहिमस्निग्धतुवराम्लविशुद्धिकृत् ।
हन्यादाहत्पावातरक्तपित्तक्षतक्षयान् ॥ (भा० प्र०)

अर्थ—कुम्भेरका फल—पुष्टिकारक, वीर्यवर्द्धक, भारी, केशोंको दितकारी, रसायन तथा वात, पित्त, तृष्णा, रक्तक्षय, मूत्र और विबन्धनाशक है, पचनेमें स्वादिष्ठ, शीतल, स्निग्ध, कपेला, रुद्ध, शुद्धिकारक और दाह, तृषा, वात, रक्तपित्त, क्षत और क्षयरोगको नष्ट करेहै ।

अन्यच्च ।

गाम्भारिकाफलयादिसतित्तमधुरगुरु ।
केश्यरसायनमेध्यशीतलदाहपित्तजित् ॥ (रा० व०)

अर्थ—कुम्भेरका फल—मलरोधक, कडवा, मधुर, भारी, केशोंको दितकारी, रसायन, मेधाजनक, शीतल, दाह और पित्तनाशक है ।

गम्भारीगुणा ।

श्रीपर्णीमारुतश्लेष्मशोफमेहकृमीजयेत् ।
अर्थ—कुम्भेर—वात, कफ, शोफ, प्रमेह और कृमिनाशक है ।

अस्या पुष्पगुणा ।

तत्पुष्पमधुरशीततित्तसंघाद्विवातलम् ॥

वपायमगुरुपाकपित्तान्वास्तृगदापदम् ॥ (शो०नि०)

अर्थ-पुष्पोंका फूल-मण्डप, गीत, कदना, घड़ी, शानका-रु, करेण, पानमें भी मधुर तथा रसपिन् और रसगोशों दूध को है।

॥३॥ ॥३॥ ॥३॥

गाम्भार्गिसुल्लमन्नुष्णमदितंमानुपेपुतव ॥ (रा० ५०)

अर्थ-कुम्भेश्वर। जह-भयान्त गम्य और मनुष्योक्त अति कान्तेश्वर।

कादम्बरः ।

काऽमरीकद्रुकातिलास्वाद्गुण्णातुयगसुकः ।

मधुरादीपनीमेप्यापाचनीभक्षिकामता ॥

दद्यात्पानशूलप्रीकपशोफनिदोषहा ।

विपदादज्वगरक्तदोषाभौभमनाशिनी ॥

शोपनाशक्तिप्रोक्ताफलपुष्पगन्धस्तनम् ।

धातुमद्विकरणं भ्यस्त्वादर्भातिगमायनम् ॥

स्तिग्नप्रतिप्रवाहस्तथापि प्रवलाह ।

मम हृदयं कपित्थं कटोपामया तदम् ॥

नायां वायुश्च सान्निध्यं पितृभ्यश्च यथा ॥

तृषदिद्वितीयमनन्तापत्तयेत्यम् ।
सप्तमाश्रयतोऽस्यमात्रान्तरिका ॥

प्रदग्नागित्यवकलमन्त्रातुगतत्वा ॥
सप्तम्यादिनिर्वाणान्तरात्प्राप्तम् ।

मधुसूतादिनातिक्रान्तिलुत्तरमता ।
नन्वायमः नन्वायमः नन्वायमः ॥

नल्पानृष्यान्त शेषैः पितृद्वयमना ॥
नृष्यान्त शेषैः पितृद्वयमना ॥ (वि. ३. ५. ५)

[illegible]

क्षय, वात, रक्तपित्त, क्षतक्षय और प्रदररोगका नाश करनेवाला है । कुम्भेरके फलकी मज्जा शीतल, मधुर, ग्राही, कडवी, वातकारक, कपेली, बलकारक, वीर्यवर्द्धक तथा रक्तविकार, कफ, पित्त और प्रदररोगको दूर करनेवाला है ।

विवरण-कुम्भेरका वृक्ष बड़ा होता है, पत्ते समुद्रशोष और पीपलके पत्तोंसे कुछ, कवडे २ होते हैं, फूल पीले रंगके और फलभी पीले होते हैं । डाल सुफेद और इसमें दूध निकलता है ।

पाटलानामानि ।

पाटलाकर्बुरामोघाफलेरुहाम्बुवासिनी ।

कृष्णवृन्ताकालवृन्ताकुम्भीतोयाधिवासिनी ॥

अर्थ-पाटला, कर्बुरा, अमोघा, फलेरुहा, अम्बुवासिनी, कृष्णवृन्ता, कालवृन्ता, कुम्भी, तोया, तोयाधिवासिनी (पाटली, काचस्याली, कुवेराक्षी, तोयपुष्पी, ताम्रपुष्पी, कुम्भीका, सुपुष्पिका, वसन्तदूती स्थाली, स्थिरगन्धा, अम्बुवासी, कालवृन्ती, कामदूती, अलिमिया, मधुदूती, अलिबल्लाभा, वसन्तदूती, कौकिला)

श्वेतपाटला-काष्ठपाटलानामानि ।

द्वितीयापाटलाश्वेतानिर्दिष्टाकाष्ठपाटला ॥

अर्थ-श्वेतपाटला, काष्ठपाटला (श्वेतकुम्भी, श्वेतकुवेराक्षी, श्वेतफलेरुहा, काष्ठकुवेराक्षी, काष्ठफलेरुहा, काष्ठपाटलि, मुष्कर, मोक्षक, घण्टापाटलि)

संस्कृतभाषाम

हिन्दीभाषामें

बंगलाभाषामें

मराठीभाषामें

गुजरातीभाषामें

कर्णाटकीभाषामें

तेलुगुभाषामें

तामिलीभाषामें

उत्

लैटिनभाषामें

पाटला, श्वेतपाटला ।

पाडरि, पाडल, सफेदपाडर, कठपाडर ।

पारुल, घण्टापारुल ।

रक्तपाडल ।

राताफलना पाडल, श्वेतपाडर, काकच ।

हादरी, विलियहादरी ।

कलगोरु, कलिंगोचेट्ट ।

पट्टि ।

पाटुडि ।

विगनोनिया सुविपोलेन्स *Vignonia suaviolens*

स्टिरियोस्पेर्गकेलोनोइटिस *Sterculum Chelonoides*

पाटलागुणः ।

पाटलातुर्मेतिकाकट्टणाकफरातिजिव् ।

शोफाध्मानवमिश्रामगमनीसुत्रिपातनुव ॥ (ग० नि०)

अर्थ-पाटल-वित्तगमादित, कट्टणपुत्र उष्ण, शोफाध्मानक कट्टा
सुत्रन, अमारा, वनन, भाग और मीठगानिपात है ।

अगम्य ।

पाटलारुचिशोयासुथासुतदृष्टिनाभिनी ।

नात्पुष्पातुवरम्बादुनत्पुष्पकफाननुव ॥

पित्तातिमाग्दाहप्रकलंष्टिनापित्तनुव । (ग० नि०)

अर्थ-पाटल-अरुचि, सुत्रन, रुचिपिपात, भाग, वरा और दानमिपा
रक है । निमित्त उष्ण, कषाय, रसादेष्ट, इतरा गुण पाट दान, विभाति
मार और दाहनापक, है इतरा कट्टा दित्त और मीठगानिपात है ।

अगम्य ।

पाटलाकफपित्तातुर्दृष्टिमागनापदा ।

पुष्पकपात्रमधुरभीतपित्तकफासुत्रिव ॥ (शो० नि०)

अर्थ-पाटल-कफ, पित्तविष कषाय वरा और दानमिपा रसादेष्ट ।
इतरा गुण-कषाय, मधुर, मीठगानिपात कफ और मीठगानिपात है ।

अगम्य ।

रक्तपाटलिवातिकाकट्टीचोष्णाकफापदा ।

सुत्रिपातशामवमिश्रशोफाध्मानानिनाभपेठ ॥

पुष्पाणिपाटलावास्तुरादुनितुवगजिन ।

दद्यानिर्भातनीध्यानिक्तदोषदग्निनि ।

दादेकफपित्तगोपित्तानीमाग्दानिन ।

फलाणिपाटलावान्जुनीतलानिगुणद्विप ॥

शामाणिपातिकाविकधुनपिदुपात्रम् ।

शारदसुत्रपित्तद्विवातादगजिन ॥ (ग० नि०)

अर्थ-शारद-कषाय, शारदी, उष्ण कषायक कट्टा मीठगानिपात कषाय

(त्रिदोष) वमन, सूजन और अफारेको दूर करे है पाडलके फूल-स्वादिष्ठ, कपेले, हृदयको हितकारी, शीतवीर्य्य तथा रक्तदोष, दाह, कफ, पित्तरोग और पित्तातिसारको हरनेवाले हैं । पाडलके फल-शीतल, भारी, कपेले, कडवे, मधुर तथा मूत्रकृच्छ्र, रक्तपित्त, हिचकी और वातके नाश करनेवाले हैं ।

श्वेतपाटलागुणा ।

सितपाटलिकातिक्तागुर्व्युष्णावातदोषजित् ।

वमिद्विक्काकफघ्नीचश्रमशोपापहारिका ॥ (ध० नि०)

अर्थ-सफेदपाडर-कडवी, भारी, वातनाशक तथा वमन, हिचकी, कफ, श्रम और शोषको दूर करे है ।

अन्यच्च ।

श्वेतातुपाटलाचोष्णातिक्तागुर्वीसुगन्धिका ।

रक्तदोषारुचिशोफश्वासतृड्वान्तिनाशिनी ॥

द्विक्काकफचवातश्चनाशयेदितिकीर्तितम् । (नि० २०)

अर्थ-सफेदपाडर-गरम, कडवी, भारी, सुगन्धि तथा रक्तविकार, अरुचि, सूजन, श्वास, टपा, वमन, हिचकी, कफ और वातका नाश करे है ।
भूमिपाटलागुणा ।

भूपाटलाकटूष्णाचवत्यावीर्य्यविवर्द्धिनी ।

अर्थ-भुईपाडर-चरपरी, गरम, बलजनक, और वीर्यवर्द्धक है ।

क्षुद्रपाटलागुणा ।

क्षुद्रातुपाटलाश्वेतास्निग्धाचव्रणशोधिनी ।

कफमेद कुष्ठविपमण्डलानिविनाशयेत् ॥

अर्थ-क्षुद्रपाडर-सफेद, स्निग्ध, घ्रणशोधक तथा कफ, मेद, कुष्ठ, विप और मण्डलकुष्ठको नष्ट करे है ।

वल्लीपाटलागुणा ।

वल्लीपाटलिकाचोष्णावातारोचकपित्तहा ।

रक्तदोषचशोफचनाशयेदितिकीर्तितम् ॥

अर्थ-वल्लीपाडर-गरम, वात, अरोचक, पित्त, रक्तविकार और सूजनको दूर करे है ।

(म०)-वाङ्मये पत्राका रम निकायक इयं च मागे मोठ गीत हो
नोटे पाठ मित्रका देनो अस्तमित दूर होतई ।

विदग्ध । पादका पुत्र मान होताई और दृग्गी पादका पुत्र गरीद
होताई । पद्ये वेन्गी गमान होताई ।

अभिप्रेतप्रामाण्यम् ।

अग्रिमन्थोदभिर्मन्य कर्णिकागिरिकर्णिका ।

जयाजयन्तीतर्कागीनादेर्याजयन्तिका ॥

अर्थ-अग्रिमन्थ, दृष्टिमान्य कर्णिका गिरिकागिरिका, जया, जयन्ती,
तर्कागी, नादेर्या और जयन्तीतर्का (श्रीपण तेवाम्भय ग्राहिका, पादक,
आर्या, दृष्टिमान्य, ययन जय, पादकाणि अग्रिमन्थन तर्कागी, भाग्यिकेनु
श्रीपणी, विजया, अन्नना, नरीना, तनुकर, विजयाना दृष्टिपूर अग्रिदीतक)
शुद्धाभिप्रेतप्रामाण्यम् ।



धुद्राग्रिमन्थोविजयानादेर्याचाग्रिमयिनी ।

जयाजयन्तिययनातनन्वपुण्याहमानुगा ॥

अर्थ-धुद्राग्रिमन्थ विजया, नादेर्या, अन्ननादेर्या जया, जयन्ती,
जयन्तिययनातनन्वपुण्याहमानुगा (तदन, गिरिकागिरिका अर्या तनुकर, तेवाम्भय,
तनुकरपा)

गिरिकागिरिका
दृष्टिमान्य
देवाम्भय

अग्रिमन्थ अर्या अन्ननादेर्या, अन्ननादेर्या ।
अर्या, अन्ननादेर्या, अन्ननादेर्या, अन्ननादेर्या ।
अन्ननादेर्या, अन्ननादेर्या, अन्ननादेर्या ।

| | |
|-----------------|--|
| मराठीभाषामें | थोरपेरण, लघुपेरण, टहाकळी, नरवेल्य । |
| गुजरातीभाषामें | अरणी, ऐगण । |
| कर्णाटकीभाषामें | नरुवल । |
| तैलिङ्गीभाषामें | नेलिचेट्ट । |
| उत्कलिभाषामें | अगिवथ । |
| लैटिन्भाषामें | क्लोरेड्रुनफ्लोमोईडिस । Clorodrudson Phlomodica अग्निमन्थगुणा । |

तर्कारीकटुकातिकातथोष्णानिलपाण्डुजित् ।

शोथश्लेष्माग्निमांद्याशोविड्वन्धामविनाशिनी ॥ (ध० नि०)

अर्थ—अरणी—कटु, तिक्त, उष्ण तथा वात, पाण्डुरोग, शोथ, कफ, अग्निमाद्य, अर्श, मलबद्धता और आम इत्यादि अनेक प्रकारके रोगोंको दूर करनेवाली है ।

अन्यच्च ।

अग्निमन्थोगुरुस्तिक्तोवातशोफामजित्सरः ॥ (शो० नी०)

अर्थ—अरणी—भारी, कडवी तथा वायु, सूजन और आमको जीतेहै, तथा सारकहै ।

अपिच ।

अग्निमन्थोवृहत्प्रोक्तकटुश्चोष्णोमधुस्मृत ।

तिक्तस्तुतुवरश्चाग्निदीपकोवातनाशन ॥

प्रतिश्यायकफशोथमर्शश्चैवामवातकम् ॥

मलरोधचाग्निमांद्यपाण्डुरोगविपतथा ॥

आमचमेदोरोगचनाशयेदितिकीर्तितम् । (नि० २०)

अर्थ—अरणी—कटु, उष्ण, मधुर, तिक्त, कषाय, अग्निप्रदीपक, वातनाशक तथा प्रतिश्याय (जुकाम) कफ, सूजन, चवासीर, आमवात, मलरोध, मदाग्नि, पाण्डुरोग, विष, आम और मेदोरोगको नाश करनेवाली है ।

क्षुद्राग्निमन्थगुणा ।

लघ्वग्निमन्थस्यगुणा प्रोक्तावृद्धाग्निमन्थवत् ।

विशेषाल्लेपनेचोपनादेयोफेचकीर्तिता ॥ (नि० २०)

अर्थ-छोटी आर्णवीके गुण आर्णवीके समान हैं, किन्तु विशेष करने इतना
मेघ उपनादके विषय दिनकारका है और यह सुस्वको दूर करनेवाली है ।

तत्रोपपद्युता ।

तेजोमधगुणा प्रोक्ताश्चाग्रिमधसमाधुये ।

विशेषादातरोफेनप्रोक्ता पूर्वश्रमभिभिः ॥ (नि० २०)

अर्थ-तेजोमध- (आर्णवीका भेद) इसके गुण आर्णवीका समान हैं, वानु
विशेष करने यह तानगोदका नाश करे ।

विहरण-इसका दूध होला है, पयो गान्ध और मुख्य बरकमुल्ल होला है
चूड गोद होला है वह छोटे बाल्टरी समान होला है ।

स्योनाद्वर्गः ॥

स्योनाद शुक्लानामजयदुहोयकटम्बर ।

मयुजवाः लुक् प्रियजीवीकुटव्रट ॥

अर्थ-स्योनाद-दूधगाम मदह, कटम्बर, मयुजवा, मयुज, विपरीती,
गुणदर (म दूधगाम पयोनी मद्र, कटम्बर दूधग, प्रग, दूधग, मोनर,
आम, स्योनाद विपरीत, अजानामास, पृथिव्या, मयुज, मयुज,
मयुज, मोन मद्र जीवितक, मद्र, स्यामगाम, स्यामगाम,
मयुजिभ, मयुज गाम, विपरीत, गुणद, मयुज, पाम, मयुज,
मयुज, पाम, मयुज)

स्योनादमदमार्गः ।

दुहदुहं चैव न्नश्चटिण्डुफांतीनाशन ।

प्रतिनाप्रतिनानोभनिपुष्पोमुनिद्रमः ॥

अर्थ-दुहदुहं - दुहदुह, चैव न्नश्चटिण्डुफांतीनाशन, प्रतिनाप्रतिनानोभनिपुष्पोमुनिद्रमः
नि-नाप्रतिनाप्रतिनानोभनिपुष्पोमुनिद्रमः, प्रतिनाप्रतिनानोभनिपुष्पोमुनिद्रमः
नि-नाप्रतिनाप्रतिनानोभनिपुष्पोमुनिद्रमः, प्रतिनाप्रतिनानोभनिपुष्पोमुनिद्रमः
नि-नाप्रतिनाप्रतिनानोभनिपुष्पोमुनिद्रमः, प्रतिनाप्रतिनानोभनिपुष्पोमुनिद्रमः

मयुजवाः लुक् प्रियजीवीकुटव्रट ॥

मयुजवाः लुक् प्रियजीवीकुटव्रट ॥

मयुजवाः लुक् प्रियजीवीकुटव्रट ॥

मयुजवाः लुक् प्रियजीवीकुटव्रट ॥

मयुजवाः लुक् प्रियजीवीकुटव्रट ॥

| | |
|-----------------|--|
| कर्णाटकीभाषामें | शोणा, शोडिलमर । |
| तैलिङ्गीभाषामें | पेदामानु । |
| औत्कलीमें | फणफणा । |
| पञ्जाबीमें | मुलिन । |
| नेपालीमें | करुमकन्द । |
| तामिलीमें | पन । |
| लैटिन्भाषामें | ओरोक सिल इंडिकम् (<i>Orocylnm indicum</i>) |

श्योनाकगुणा ।

श्योनाकस्तुवरस्तिक्तः कटुश्चाग्निप्रदीपनः ।
ग्राहकः शीतलो वृष्यो बलदो वातपित्तहा ॥
सन्निपातज्वरकफत्रिदोषारुचिनाशनः ।
आमवातकृमिवमीकासातीसारनाशनः ॥
नृष्णाकुष्ठनाशयतीत्येवमाहुर्मनीषिणः ।

अर्थ—शोनापाठा—कपेला, कडवा, चरपरा, जठराग्निको दीपन करने-
वाला, मलरोधक, शीतल, वीर्यवर्द्धक, बलदायक तथा वात पित्त, सन्निपात-
ज्वर, कफ, त्रिदोष, अरुचि, आमवात, कृमि, वमन, खासी, अतिसार, घृषा
और कुष्ठको नष्ट करेहै ।

अन्यथा ।

टिण्डुको वातजिदूक्ष भोफहाग्निबलप्रद ।
तुवरः शीतलस्तिक्तो वस्तिरोगहरः परः ॥
पित्तश्लेष्मामवातारिश्वासकासारुचीर्जयेत् ।

अर्थ—टण्डु—वातविनाशक, रुक्ष, शोफनिवारक, जठराग्निवर्द्धक, बलदायक,
कपाय, शीतल, तिक्त, वस्तिरोगनाशक, पित्त, कफ, वातनाशक, श्वास,
कास और अरुचिनिवारकहै ।

अस्य कोमलफलगुणा ।

कोमलतुफलचास्यतुवरमधुरलघु ।
हृद्यरुच्यपाचकश्च कण्ठ्यश्चाग्निप्रदीपकम् ॥

उष्णश्चकटु रक्षागुल्मवातरुफार्गनुव ।

अरुचिचकृमोश्चैवनाशयेदितिकीर्तितम् ॥

अर्थ-उष्णका कषा कटु कषेया, मधुर, इत्यादि, रुचिकारी, हृदिकारी, पाचक, कृमिको हितकारक, भक्षितव्य, गन्ध, कटु रक्षा तथा गुल्म, वात रुच, वरगर्भा अरुचि और कृमिनाशकारक है ।

अथ तद्वनस्पतयः ।

दीर्घवृन्तफलचामयुक्तवातप्रकोपनम् ॥ (ति० २०)

अर्थ-उष्णका कटुका कटु-माषी और वातको हृदित करनेवाला है ।

अथवा ।

पुटपाकविधानेनरक्षोनिष्कारूपप्रक्षितः ।

चिरतनमनीमारुनाशयेदितिकीर्तितम् ॥ (रा० ति०)

अर्थ-शोनाकका गुण दुग्धवर्धक, विविधो निवारक, तनु रक्तको दृढिमे बहुत दिनाश पुगना अत्रिगात्र दूर होता है ।

हृदिकारकवातप्रशान्तः ।

श्वोनाकमुगलतिक्तंभीतलक्षनिक्षोपजित ।

पित्तवृद्धेष्मातिमारुमसन्निपातश्चगवदम् ॥ (रा० ति०)

अर्थ-श्वोनाक प्रसारक श्वोनाक-कषेय शोनाक, हृदिकारक तथा विष, कटु, भक्षित, मसिगात्र और उष्णका हर्षोत्प्रेरक है ।

विषाज-श्वोनाकका गुण बहुत उष्ण दाहक, कृमिको लक्ष्मी लक्ष्मी कटुका रक्षी ममता ओं ओं कृमिको हर्षोत्प्रेरक, कटु, कषेय और उष्ण विष रक्षक, उष्ण दुग्ध प्रसारक श्वोनाक हर्षोत्प्रेरक । उष्णका कृमि रक्षक विष मनुष्योपशान्त ममाने है कहे ।

आग्निमानिषाद्वयप्रश्ने ।

आग्निगर्भोस्त्रिरामोष्मादिपर्णीभीष्मिषुषा ।

विदारिकान्तदीर्घाभिर्दीर्घपत्रांशुमारवि ॥

अर्थ-आग्निगर्भ, विषा, भीष्म विषा, दीर्घा, कटु, विदारिका, दीर्घा, कटु, भक्षित, मसिगात्र, कृमिको हर्षोत्प्रेरक, कटु, कषेय और उष्ण विष रक्षक, उष्ण दुग्ध प्रसारक श्वोनाक हर्षोत्प्रेरक । उष्णका कृमि रक्षक विष मनुष्योपशान्त ममाने है कहे ।

शुभपत्रिका, सुपर्णी, शालिपत्री, शालिदला, विदारी, सालपर्णी, एकमूला, अस्तमती, शालानी, शालिका, तन्वी और कीटविनाशिनी)

| | |
|-----------------|--|
| संस्कृतभाषामें | शालिपर्णी । |
| हिन्दीभाषामें | सरिवन । |
| बगभाषामें | शालपान, शालपानी । |
| मराठीभाषामें | सालवण । |
| गुजरातीभाषामें | शालिपर्णी । |
| कर्णाटकीभाषामें | मुल्लुवोने । |
| तेलुगुभाषामें | शीयाकुपना, सप्पाकुपोवा । |
| औत्कलीभाषामें | शारपाणि । |
| लैटिनभाषामें | डेस्मोडियम गेंजेटिकम् । <i>Desmodium Gangeticum</i> डेस्मोडियम ट्रायल्फोरम् । |

अस्या गुणाः ।

शालिपर्णीरच्छर्दिज्वरश्वासातिसारजित् ।

शोषदोषत्रयहरीवृहण्यत्कारसायनी ।

तिक्ताविषहरीस्वादीक्षतकासकृमिप्रणुत् ।

अर्थ—सरिवन—विष, वमन, ज्वर, श्वास, अतिसार, शोष और त्रिदोषनाशक है तथा पुष्टिजनक, रसायन, कडवी, विषनाशक, स्वादिष्ट, क्षत, कास और कृमिरोगको हरनेवाली है ।

अन्यच्च ।

शालिपर्णीरसेतिक्तागुर्व्युष्णाधातुवर्धिका ।

रसायनीस्वादुवृष्याविषमज्जरवातहा ॥

मेहार्शः शोथसन्तापज्वरश्वासविषकृमीन् ।

त्रिदोषशोषच्छर्दिघ्नीक्षतकासातिसारहा ॥ (नि० २०)

अर्थ—सरिवन—तिक्तगुणान्वित, भारी गरम, रसायन, धातुवर्धक, स्वादिष्ट, वीर्यजनक तथा विषमज्जर, वात, प्रमेह, ववासीर, सूजन, सन्ताप-ज्वर, श्वास, विष, कृमि, त्रिदोष, शोष, वमन, क्षत, खामी और अतिमा-रको दूर करे है ।

लण्णञ्चकटुकक्षारिगुल्मवातकफार्शनुत् ।

अरुचिचकृमोश्चैवनाशयेदितिकीर्तितम् ॥

अर्थ-इसका कच्चा पत्त कपेला, मधुर, हल्का, हृदयको हितकारी, रुचिकारी, पाचक, कण्ठको हितकारक, अग्निप्रदीपक, गरम, कटु शार तथा गुल्म, वात, कफ, चवागीर, अरुचि और कृमिरोगनाशक है ।

अस्य तदणवन्मुगा ।

दीर्घवृन्तफलंचामगुरुवातप्रकोपनम् ॥ (नि० २०)

अर्थ-इसका तड़ण पड़-भारी और वातको कुपित करनेवाला है ।

अस्य ।

पुटपाकविधानेनरसोनिष्कास्यमक्षितः ।

चिरंतनमतीमाग्नाशयेदितिकीर्तितम् ॥ (रा० नि०)

अर्थ-शोनाफला रस पुटपाककी विधिसे निकालकर उस रसको धीमे से बहुत दिनोंका पूगना अतिमार गूर होता है ।

द्विषिषधानाणमुगा ।

श्वोनाकयुगलतिकंभीतलञ्चत्रिदोषजितः ।

पित्तश्लेष्मातिसारघ्नमन्निपातज्वगपहम् ॥ (रा नि)

अर्थ-दोनों प्रकारके श्वोनाक-कड़ो, शीतल, त्रियोपनाशक तथा पित्त, कफ, अतिमार, त्रिपात और ज्वरको हरनवाले है ।

विवरण-श्वोनाक का गुण बहुत ऊँचा होता है, प्रसी हल्की लम्बी स्तनवा रकी समान दो श्वो फुटकी होता है, पक्षिके भीतर रुई और दाने निराले हैं एक दूसरे प्रकारका श्वोनाक होता है । उसका रस लवण विषे मनुष्योपरी समान होता है ।

शालिपर्णीप्रामात्रि ।

शालिपर्णीस्थिरामोम्यात्रिपर्णीपीवरीशुद्धा ।

निदाग्निगन्धादीर्घाप्रिदीर्घपत्रांशुमत्यपि ॥

अर्थ-शालिपर्णी, त्रिपर्णा, गोम्या, त्रिपर्णी, चोखी, मुदा, त्रिपर्णीगन्धा, दीर्घाप्रि दीर्घपत्रा, अजुमती (मुदला सुवर्गी, पुष्पा रसा गुर्वात्रि, दीर्घपुष्पा, लोचनीयका, ताउली, पंजिनी, चोखी, सुपा, मवानुकात्रिणी, शीतली, मुमगा देरी, शोचनी, त्रिपर्णा कीर्तिपर्णिका, मुवरा, गुमरा,

शुभपत्रिका, सुपर्णी, शालिपत्री, शालिदला, विदारी, सालपर्णा, एकमूला, अस्तमती, शालानी, शालिका, तन्वी और कीटविनाशिनी)

| | |
|-----------------|--|
| संस्कृतभाषामें | शालिपर्णी । |
| हिन्दीभाषामें | सरिवन । |
| वगभाषामें | शालपान, शालपानी । |
| मराठीभाषामें | सालवण । |
| गुजरातीभाषामें | शालिपर्णी । |
| कर्णाटकीभाषामें | मुहुडुवोने । |
| तेलङ्गीभाषामें | शीयाकुपना, सप्पाकुपोवा । |
| औत्कलीभाषामें | शारपाणि । |
| लैटिन्भाषामें | डेस्मोडियमॅजेटिकम् । <i>Desmodium Gangeticum</i> डेस्मोडियम् ट्रायल्फोरम् । |

अस्या गुणाः ।

शालिपर्णीगरच्छर्दिज्वरश्वासातिसारजित् ।

शोषदोषत्रयहरीवृहण्युत्तारसायनी ।

तिक्ताविषहरीस्वाद्वीक्षतकासकृमिप्रणुत् ।

अर्थ—सरिवन—विष, वमन, ज्वर, श्वास, अतिसार, शोष और त्रिदोषनाशक है तथा पुष्टिजनक, रगामन, कडवी, विषनाशक, स्वादिष्ठ, क्षत, कास और कृमिरोगको हरनेवाली है ।

अन्यञ्च ।

शालिपर्णीरसेतिक्तागुर्व्युष्णाधातुवर्धिका ।

रसायनीस्वादुवृष्याविषमज्वरवातहा ॥

मेदार्शः शोथसन्तापज्वरश्वासविषकृमीन् ।

त्रिदोषशोषच्छर्दिघ्नीक्षतकासातिसारहा ॥ (नि०र०)

अर्थ—सरिवन—तिक्तगुणान्वित, भारी, गरम, रसायन, धातुवर्द्धक, स्वादिष्ठ, वीर्यजनक तथा विषमज्वर, वात, प्रमेह, ववासीर, मूजन, सन्ताप-ज्वर, श्वास, विष, कृमि, त्रिदोष, शोष, वमन, क्षत, खासी और अतिमार्कको दूर करे है ।

विवरण-शालिपर्णीका क्षुप होताई, एक एक दंडमें तीन २ पत्ते होतेई
आर उसमें बहुत छोटीफलिय होतीई ।

पृश्निपर्णीनामानि ।



पृश्निपर्णीपृथक्पर्णीतन्वीकोपुकपुच्छिका ।

त्रिपर्णीपूर्णपर्णीचकलसीसिहलांगुली ॥

अर्थ-पृश्निपर्णी, पृथक्पर्णी, तन्वी, कोपुकपुच्छिका, त्रिपर्णी, पूर्णपर्णा,
कल्पी आर सिहलांगुली (त्रिपर्णी, अर्धवर्षिका, कोपुषिका, सिद्धपर्णी,
कल्पी, धावनी, गुदा, पिष्टपर्णी, लाट्टी, कोपुषिका, कल्पी, कोपुका-
मेखला, दीर्घा, शृंगारपुन्ता, सिद्धपुच्छिका, दीर्घपर्णा, अतिगुदा, पश्चिमा,
त्रिपर्णीता, कल्मि, कोपुषिका, कदला, पंकजपु, चक्रपुन्ता, चक्रपर्णी,
शीर्णमाळा, महागुदा, शृंगारविन्ता, धमनी, मेराला, लांगुलिका, मक्षपर्णी,
दीर्घपर्णी, सिद्धपर्णी, पृष्टपर्णी, अर्धपर्णी, धावनी, विष्णुपर्णी)

संस्कृतभाषामें

हिन्दीभाषामें

बगभाषामें

भगटीभाषामें

गुजरातीभाषामें

कर्णाटकीभाषामें

तामिलभाषामें

आङ्ग्लभाषामें

संस्कृतभाषामें

पृश्निपर्णी, पृष्टपर्णी ।

पिठपन, पिठनी डावडा, दीर्घा, पृश्निपर्णी ।

चारले, चाकुलिया ।

पंढरण ।

पृष्टपर्णी ।

तामिळ, अर्धपर्णी ।

कोलासुपत्र ।

कटपर्णी ।

उत्तरीया लेगोपोडिम्ब । उत्तरीयापिम्ब ।

1875

पृश्निपर्णीगुणाः ।

पृश्निपर्णीत्रिदोषघ्नीवृष्योष्णामधुरासरा ।

हन्तिदाहज्वरश्वासरक्तातीसारतृड्मीन् ॥ (भा० प्र०)

अर्थ—पिठवन— त्रिदोषनाशक, वीर्यजनक, गरम, मधुर, सारक तथा दाह, ज्वर, श्वास, रक्तातिसार, टूपा और वमननिवारकहै ।

अन्यच्च ।

पृष्टिपर्णीकटूष्णाचतित्कातीसारकासनुत् ।

वातरक्तज्वरोन्मादघ्नदाहविनाशिनी ॥ (ग० नि०)

अर्थ—पिठवन—कटु, उष्ण, तिक्त तथा अतिसार, खासी, वातरक्त, ज्वर, उन्माद, घ्न और दाहनाशकहै ।

शालपर्णीपृश्निपर्णीग्राहिणीकफवातजित् ।

शालपर्णीपृश्निपर्णीग्राहिणीकफवातजित् ॥ (रा० व०)

अर्थ—शालपर्णी और पृश्निपर्णी, ग्राही और कफपित्तनाशक हैं ।

विवरण । पिठवन पश्चिम और वगदेशमें अधिकतासे उत्पन्न होती है, दक्षिण देशमें दिखाई नहीं देती । पत्ते गोल वेलदार होते हैं, फूल गोल सपेद कुछ नीले जटायुक्त होतेहैं, । मात्रा तीन आनेभरि ।

व्यवहार—जड । परन्तु अल्पमूल्य होनेसे सर्वदेशान्तरोंमें इसके वेलकाही व्यवहार होताहै ।

बृहतीनामानि ।

बृहतीमहतीसिंहीप्रसहाहिंशुलीकुली ॥

अक्रान्ताक्षुद्रवार्ताकीरक्तापाकीलतातथा ।

अर्थ—बृहती महती, सिंही, प्रसहा, हिंशुली, कुली, अक्रान्ता, क्षुद्रवात्ताकी, रक्तापाकी, लता (बृहतिका, क्रान्ता, वार्ताकी, सिंहिका, राष्ट्रिका, स्थूलकण्ठा, क्षुद्रभण्डा, भण्डाकी, महोदिका, बहुपत्री, कण्ठतनु, कण्ठाड, कटफला, डोवडी, वनवृन्ताकी, बृहतिका, पारावेदी)

संस्कृतभाषामें

बृहती, वार्ताकी ।

हिन्दीभाषामें

कटाई, बरहटा ।

वगभाषामें

घ्याकुड, तित्वेयुन ।

मराठीभाषामें

थोरडोरली ।

गुजगतीभाषामें

उर्ध्वाभोग्गणी ।

बर्णाटकीभाषामें

रेगुलु ।

तैलिंगीभाषामें

पेदाभुलंगा, ऊरुमान् ।

तामिर्लीभाषामें

चेरुचुण् ।

लैटिनभाषामें

गोलेनमजेपीनीआई । Solarium legrum ।

गोलेनमइदिबम् । Solanum Indicum ।

फारसीभाषामें

उस्तगार, बादजान्जगली ।

अरबीभाषामें

बादजान्जगली ।

बृहतीगुणा ।

बृहतीग्राहिणीहृद्यापाचनीरुफवातकृत् ।

कटुतिक्तस्यवेरस्यमलागेचकनाशिनी ॥

उष्णाकुष्ठज्वरश्वासशूलकामाग्निमांथजित् (भा०प्र०)

अर्थ-ज्याई-मन्त्रोषक, हृदयको हितकारी, पाचन, कफवातनाशक, कटु, तिक्त तथा सुगन्धी विरमवा, मल और अग्निनाशक है, गरम है और कोष्ठ, ज्वर, श्वास, शूल, कामी और मदाग्नि को दूर करे है ।

अपच ।

बृहतीकटुतिकोष्णावानजिज्ज्वरहारिणी ।

अरोचकामकान्ध्रीश्वासहृद्रोगनाशिनी ॥ (राजनिघण्टु)

अर्थ-ज्याई-कटु, तिक्त, गरम, तथा वान, अर, अरुचि, आम, खांसी, श्वास और हृत्परोक्ता नाश करनेवाली है ।

अपच ।

बृहतीकटुकाचोष्णातिक्ताहृद्याचपाचिका ।

ग्राहिण्यग्नेर्दाहिकरीरुफवातज्वरापहा ॥

कुष्ठचारोषकच्छिश्मामं कामं हृमीस्तथा ।

मुसवेरस्यहृत्तामं कण्डूशूलामदोपहा ॥

हृद्रोगचाग्निमांथचनाशनेदितिर्नीतिता ।

अर्थ-ज्याई-कटु, उष्ण, तिक्त, हृद्य, पाचक मन्त्रोषक अग्निवर्धक, पच तथा कच वात, अर, कटु, अरोग्य, वमन, आम, खांसी, श्वास

मुखकी विरसता, हृडास, कण्ठ, शूल, आमदोष, हृदयरोग और अग्निमा-
घका नाश करे है ।

अन्या फलगुणा ।

फलानिवृहतीनांच कटुतिक्तलघूनिच ।

कण्डूकुष्ठकृमिघ्नानिकफवातहराणिच ॥

अर्थ—वृहतीके फल—कटु, तिक्त, लघु, कण्ठ, कुष्ठ, कृमि, कफ और
वातनाशक है ।

भुद्रवृहतीकागुणा ।

लघ्वीवृहतीकावातश्वासशूलकफापहा ।

अग्निमांद्यज्वरछर्दिहृद्गुगामंचनाशयेत् ॥

अर्थ—भुद्रवृहती—वात, श्वास, शूल, कफ, मदाग्नि, ज्वर, वमन, हृदयरोग
और आमनाशक है ।

श्वेतवृहतीगुणा ।

श्वेतावृहतीकारुच्याकफवातविनाशिनी ।

अजनान्नेत्ररोगघ्नीगुणास्त्वन्येतुपूर्ववत् ॥

अर्थ—सफेदवृहती—रुचिकारक, कफवातविनाशक और अजनके योगसे
अनेक प्रकारके नेत्ररोगोंको नाश करती है । शेष गुण वृहतीकी समान जानने ।

वृहतीभेदगुणा ।

अन्यावृहतीकातिक्ताकट्टीचोष्णाचपित्तला ।

रुक्षारुच्याभेदिकाचपाचिन्यग्निप्रदीपनी ॥

कफवातहराप्रोक्तापूर्ववैद्यैर्मनीषिभिः । (नि० २०)

अर्थ—दूसरे प्रकारकी कटाई—कडवी, चरपरी, गरम, पित्तजनक, रूखी,
रुचिकारी, भेदक, पाचक, अग्निप्रदीपक, कफवातनाशक है ।

विवरण । वृहतीका शुष्म जगलमें होता है इसमें कटे बहुत कम, शीतल,
इसके पत्ते वैष्णवकेमे होते हैं, फल बड़े बड़े आमलेकी समान चितले और
पीले होते हैं ।

षष्ठद्वारोनामानि ।

कण्टकारीकुलीभुद्राकामघ्नोकण्टकारिका ।

स्पृहीधावनिकाव्याघ्रोदुस्पर्शादुष्प्रधर्षिणी ॥

पाचक तथा खासी, श्वास, ज्वर, कफ, वात, पीनस, पार्श्वपीडा और हृद-
यरोगका नाश करेहै ।

अन्यच्च ।

कण्टकारीकटूष्णाचदीपनीश्वासकासजित् ।

प्रतिश्यायार्त्तिदोषघ्नीकफवातज्वरार्तिनुत् ॥ (रा० नि०)

अर्थ—कटेरी—चरपरी, गरम, अग्निप्रदीपक तथा श्वास, खासी, प्रतिश्याय,
कफ, वात और ज्वर नाशक है ।

अपिच ।

कटेरीकटुकाचोष्णादीपन्यग्नेश्वभेदिका ।

कटीरूक्षापाचनीचलघ्वीतिकाचसारिका ॥

श्वासंकासकफवातपीनसंचज्वरजयेत् ।

हृद्रोगारुचिकृच्छ्रघ्नीपार्श्वशूलस्यनाशिनी ॥

आमकृमींश्चशूलश्चनाशयेदितिकीर्तितम् । (नि० र०)

अर्थ—कटेरी—चरपरी, गरम, अग्निप्रदीपक, भेदक, कडवी, रूखी, पाचक,
हलकी, तिक्त, सारक तथा श्वास, खासी, कफ, वात, पीनस, ज्वर, हृदय-
रोग, अरुचि, मूत्रकृच्छ्र, पार्श्वशूल, आम, कृमि और शूलका नाश
करनेवाली है ।

फलतस्याः कटुः पाके रसेचकटुकभवेत् ।

शुक्रस्यरेचनभेदितक्तपित्ताग्निशूलघ्नु ॥

अर्थ—कटेरीके फल—पचनेमें चरपरे और रसमें भी चरपरे हैं, शुक्रको
दूर करनेवाले, भेदक, कडवे, पित्तजनक, अग्निवर्द्धक और हलके हैं ।

अन्यच्च ।

कण्टकारीफलतिक्तकटुकभेदिपित्तलम् ।

हृद्यचाग्नेर्दीप्तिकरलघुवातकफापहम् ॥

कण्डूश्वासज्वरकृमिमेहशुक्रविनाशनम् ॥

अर्थ—कटेरीके फल—कडवे, चरपरे, भेदक, पित्तकारक, हृदयको हित-
कारी, अग्निप्रदीपक, हलके, वातकफनाशक तथा कण्डू, श्वास, ज्वर, कृमि,
प्रमेह और वीमविनाशक हैं ।

भेनरुष्टपारंगुणा ।

लक्ष्मणाकटुकाचोष्णाचक्षुष्याचामिदीपनी ।

गर्भस्थापनकर्त्रीचपादस्यनियामिका ॥

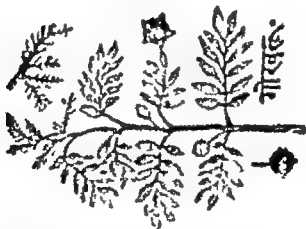
रुचिकृत्कफवातानानाभिनीपरमामता ।

शेषाश्चास्या गुणाः प्रोक्ताः फलस्यापि च पूर्ववत् ॥

अर्थ—सफेद कटेरी—चरपरी, गरम, नेत्रोंको हितकारी, अग्निप्रदीपक, गर्भ स्थापक, पारेको बाधनेवाली, रुजिहारक तथा कफ और वातका विनाश करनेवाली है। इसके शीत गुण और इसके फटके शीत गुण कटरीक समान जानने। व्यवहार—मूल, फट। मात्रा १ मासेकी।

विदग्ध । कहींके थुप छत्तेमें पृथ्वापर मर्ज्य होतेहैं । कृष्ण पंजनी और
केशर पीले रंगकी होती है । पक्षे चित्रले और अत्यन्त कटिदार होते हैं ।
कल चित्रले कच्ची अगस्थामें हने और पकने पर पीठे पड़जातेहैं । दूधरी
मुफेद फूलकी पटेगीभी इसीमाफिक होती है ।

भोक्षरनामानि ।



पलङ्गपातिश्रुगन्वाश्वदंष्ट्रान्वाद्युकण्टका ।

गोकण्टकोगोक्षुरकोनभृद्गाय इत्यपि ॥

[illegible]

क्षुद्रगोक्षुरनामानि ।

क्षुद्रोपरोगोक्षुरकस्त्रिकण्टकः कण्ठीपडंगोबहुकण्टकः क्षुरः ।

गोकण्टकः कण्टफलः पलकपाक्षुद्रक्षुरोभक्षटकश्चणदुमः ॥

स्थलशृङ्गाटकश्चैववनशृङ्गाटकस्तथा ।

इक्षुगन्धः स्वादुकण्टः पर्यायाः षोडशस्मृताः ॥

अर्थ-क्षुद्रगोक्षुर, त्रिकण्ट, कण्ठी, पडङ्ग, बहुकण्टक, क्षुर, गोकण्टक, कण्टफल, पलकपा, क्षुद्रक्षुर, भक्षटक, चणदुम, स्थलशृङ्गाटक, वनशृङ्गाटक, इक्षुगन्ध, स्वादुकण्ट यह सोलह नाम क्षुद्रगोक्षुरके हैं ।

संस्कृतभाषामें

गोक्षुर, क्षुद्रगोक्षुर ।

हिन्दीभाषामें

गोखरु, जेठे गोखरु ।

वगभाषामें

गोखरि ।

मराठीभाषामें

सराटे, लहान गोखरु ।

गुजरातीभाषामें

गोखरु, उभो वेठो वेजातनो छे ।

कर्णाटकीभाषामें

वेडितीसराटीदोडुनेगिड्ड ।

तैलिङ्गीभाषामें

पालेरु ।

औत्कलीभाषामें

गोखरा ।

लैटिन्भाषामें

पेडेल्यम्युरेक्स (बड़ा) ट्रिब्युलसटेरेस्ट्रीस (छोटा)

Pedalum Murew Terrebulus Terrestis

ट्रिब्युलसपेलटस (सिन्धुकागोखरु) *Tribulus alatus*

फारसीभाषामें

तुरुमेखार खस्क ।

भरवीभाषामें

वजरुल खस्क, वकलतलखार, रसक ।

ट्रिबिधगोक्षुगुणः ।

स्यातामुभौगोक्षुरकौमुशीतलीबलप्रदीतौमधुरौचवृहणौ ।

कृच्छ्राश्मरीमेहविदाहनाशनौरसायनौतत्रवृहद्वृणोत्तरः ॥

(राजनिघण्टु)

अर्थ-दोनोंप्रकारके गोखरु-शीतल, चल्कारक, मधुर, बृहण तथा कृच्छ्र, पथरी, प्रमेह और दाहनाशक हैं, रसायन हैं, इनमें बड़ा गोखरु अधिक गुणवाला है ।

अन्यथा ।

गोक्षुरः शीतलो वक्ष्यो मधुरो रुद्धो मतः ।
 वस्ति शुद्धिकरो वृष्यः पौष्टिकश्च रसायनः ॥
 अग्निदीप्तिकरः स्वादुर्मूत्रकृच्छ्राश्मरीहरः ।
 दाहमेहश्वासकासघ्नो गार्श्विनाशनः ॥
 वस्तिपातत्रिदोषश्च कुष्ठशूलचनाशयेत् ।

अर्थ-गोक्षुरः-शीतल, बलवारक, मधुर, घृण, वस्तिशोधक, वीर्य-
 वर्द्धक, पुष्टिकारक, रसायन, अग्निदीपक, स्वादिष्ठ, तथा मूत्रकृच्छ्र, पथरी,
 दाह, प्रमेह, श्वास, कासी, हृत्प्राण, वरामीर, वस्तिपात, त्रिदोष, कुष्ठ
 और शूलको नष्ट करे है ।

अथ ।

गोक्षुरो मूत्रकृच्छ्रमो वल्यो वृष्यो निलापहः ॥ (राजसुभ)

अर्थ-गोक्षुरः-मूत्रकृच्छ्रमो वल्यो वृष्यो निलापहः और वात-
 विनाशक है ।

अथ शाण्डिल्यः ।

तिक्तगोक्षुरकवृष्यश्चाकस्यो तो विशोधनम् ॥ (ग० प०)

अर्थ-गोक्षुरके पक्षांश शाक-तिक्तगोक्षुरक, वीर्यजनक और शोध
 विशोधक है ।

अथ बीजगुणः ।

बीजगोक्षुरकः शीतमूत्रलशोधधारणम् ।

वृष्यमायुष्करः शुक्रमेहनुरकृच्छ्रनाशनम् ॥ (आग्नेयसंहिता)

गोक्षुरके बीज-शीत, मूत्रजनक, शोणनिसारक, वृष्य, आयुर्वर्द्धक तथा
 शुक्र, प्रमेह और मूत्रकृच्छ्रको दूर करनेवाले है ।

अथ शाण्डिल्यः ।

क्षारस्तु गोक्षुराणाम् मधुरः शीतलो मतः ।

त्र्यो तो विशोधनश्चैव पातघ्नो वृष्य एव च ॥ (नि० २०)

अर्थ-गोक्षुराओं का क्षार-मधुर, शीत, त्रयोविशोधन, पातघ्नक
 और वीर्यवर्द्धक है ।

विवरण । गोक्षुर दो जातिके होतेहैं, एक पहाडी दूसरा देशी । पहाडी गोखरुका क्षुप होताहै, फूल पीला और सफेद होता है, पत्तेभी किंचित् सफेद होते हैं, फलके चार कोनोंके ऊपर एक काटा होता है । देशी गोखरुका पृथ्वीके ऊपर छाता होता है, पत्ते चनेकी समान होते हैं, फूल पीला होताहै, इसके फलमें छः कांटे होते हैं । मात्रा ६ मासेकी ।

पञ्चमूलगुणा ।

पञ्चमूलमिदं ह्रस्ववृहणबलवर्द्धनम् ।

कपायतिक्तकनातिशीतोष्णसर्वदोषजित् ॥

अर्थ—ह्रस्वपञ्चमूल—पुष्टिकारक, बलवर्द्धक, कपायरसान्वित, तिक्तरसस-
युक्त, न अत्यन्त शीतल, न अत्यन्त गरम और त्रिदोषनाशक है ।

बृहत्पञ्चमूलगुणा

पञ्चमूलमहत्तिक्तकपायकफवातनुत् ।

मधुरश्वासकासघ्नमुष्णलघ्वग्निदीपनम् ॥

अर्थ—बृहत्पञ्चमूल—तिक्त, कपाय, कफवातनाशक, मधुर, श्वासनिवारक,
कासनाशक, उष्ण, लघु और अग्निदीपक हैं ।

दशमूलगुणा ।

दशमूलत्रिदोषघ्नश्वासकासशिरोरुज ।

तन्द्राशोथज्वरानाहपार्श्वपीडारुचीर्हरेत् ॥ (भा०प्र०)

अर्थ—दशमूल—त्रिदोष, श्वास, खासी, शिरोगेग, तन्द्रा, सूजन, ज्वर,
अनाह, पार्श्वपीडा और अरुचिको हरनेवालाहै । अधिक दशमूलके गुण
मिश्रवर्गमें देखो ।

जीवन्तीनामानि ।

जीवन्तीजीवनीजीवाजीवदाचमुखकरी ।

रक्ताङ्गीप्राणदाभद्रामङ्गल्यामृगराटिका ॥

अर्थ—जीवन्ती, जीवनी, जीवा, जीवदा, मुखङ्करी, रक्ताङ्गी, प्राणदा,
भद्रा, मङ्गल्या, मृगराटिका (जीवनीया, सवा, मधुसवा मङ्गल्यनामधेया,
पयस्विनी, जीव्या, जीवदात्री, आकश्रेष्ठा, जीवभद्रा, क्षुद्रजीवा, यगस्या,
शृङ्गाटी, जीवपृष्ठा, काञ्चिका, शशशिमिका, सुर्पिगला, पुत्रभद्रा, मधुवासा
जीववृषा, जीवपत्री, जीवपुष्पी, जीववादिनी, यगस्करी)

| | |
|-----------------|-------------------------|
| संस्कृतभाषामें | जीवन्ती । |
| हिन्दीभाषामें | जीवन्ती (डोही) |
| बंगभाषामें | जीवई, जीयाती, जीवन्ती । |
| मराठीभाषामें | जीवन्ती । |
| गुजरातीभाषामें | गढारुटी, वाठगी । |
| कर्णाटकीभाषामें | हिरियादलि । |

अस्या गुणा ।

जीवन्तीमधुगशीतारक्तपित्तानिलापहा ।

क्षयदाहज्वरान्दन्तिकफवार्थविवर्द्धिनी ॥ (ग० नि०)

अर्थ-जीवन्ती-मधुर, शीतल तथा रक्त, पित्त, वात, क्षय, दाह, और ज्वरका नाश करनेवाली है तथा कफ और वीर्यको बढ़ानेवाली है ।

अपघ्न ।

चक्षुष्यासंवदोषघ्नीजीवन्तीमधुगहिमा ॥ (आ० स०)

अर्थ-जीवन्ती-नेत्रोंको दृष्टिकारी, त्रिदोषनाशक, मधुर और शीतल है ।

अपघ्न ।

जीवन्तीश्वासकासघ्नीस्यदर्पाचक्षयनाशिनी ॥ (रा० नि०)

अर्थ-जीवन्ती-श्वास और खाँसीको दूर करनेवाली है, स्वरको श्रेष्ठ करने वाली है और क्षयरोगका क्षयकरनेवाली है ।

अपघ्न ।

जीवन्तीशीतलामाध्वीस्निग्धवास्वाहीरसायनी ।

चक्षुष्यामाहकायल्यालघ्वीवातुविवर्द्धिनी ॥

घृष्यारुफरुमीमूत्रवधिनीरक्तपित्तदा ।

वातक्षयज्वरंदाहनेत्रोगं त्रिदोषकम् ॥

रक्तदोषभूतवाधापित्तनैवविनाशयेत् ।

फलं चास्याघातुवृद्धिहारकमधुरंगुरु ॥

अर्थ-जीवन्ती-शीतल, मधुर, स्निग्ध, वास्वाही, रसायन, नेत्रोंके लिए शरी, मन्त्रोपक, मांसक, स्पर्शी, वातुवर्द्धक, रक्तोर्द्धक, वातक, पित्तको क्षयनेवाली तथा ज्वर, दाह, क्षय, रक्त, नेत्रोंका विशेष

रक्तविकार, भूतवाधा और पित्तका नाशकरे है । इसका फल-धातुवर्धक मधुर और भारी है ।

बृहज्जीवन्तीनामानि ।

जीवन्त्यन्यावृहत्पूर्वापुत्रभद्राप्रियकरी ॥

मधुराजीवपुष्पाचवृहज्जीवायशस्करी ।

अर्थ-बृहज्जीवन्ती, पुत्रभद्रा, प्रियकरी, मधुरा, जीवपुष्पा, बृहज्जीवा, यशस्करी ।

संस्कृतभाषामें

बृहज्जीवन्ती ।

हिन्दीभाषामें

बड़ीजीवन्ती ।

बंगभाषामें

भडजीवइ ।

गुजरातीभाषामें

मोटीखरखोडी वृणधारनी ।

कर्णाटकीभाषामें

किरियहाले ।

इंग्रेजीभाषामें

शाशापेरला । Sasaprala

अस्या गुणाः ।

एवमेवबृहत्पूर्वारसवीर्यवलान्विता ।

भूतविद्राविणीज्ञेयावेगाद्रसनियामका ॥ (राजनिघण्टु)

अर्थ-बड़ी जीवन्ती-रसवीर्य और बलमें जीवन्तीके समान है भूत-विद्रावक और पारेको बाधनेवाली है ।

स्वर्णजीवन्तीनामानि ।

हेमपूर्णास्वर्णलतास्वर्णजीवन्तिकाचसा ।

हेमवल्लीहेमलताहेमक्षीरीसुमङ्गला ॥

अर्थ-हेमपूर्णा, स्वर्णलता, स्वर्णजीवन्तिका, हेमवल्ली, हेमलता, हेमक्षीरी, सुमङ्गला (हेमाद्रा, स्वर्णजीवन्ती, स्वर्णजीवा, हेमजीवन्ती, वृणयन्त्रि, हिमाध्रया स्वर्णपर्णा, मुजीवन्ती, मुपर्णिका, हेमपुष्पी, हेमा, हेमन्ती, सोम्पा)

संस्कृतभाषामें

स्वर्णजीवन्ती ।

हिन्दीभाषामें

पीलीजीवन्ती, मुनइगीजीवन्ती ।

बंगलामें

स्वर्णजीवन्ता ।

मराठीभाषामें

हृण्णेल, हेमहरण्णेल ।

गुजरातीभाषामें

खग्गोडी, मोठीखरखोडी ।

नाशक तथा कण्ठरोग, वात, गुल्म, ववासीर, कृमि, कुष्ठ, विष, श्वात, प्रमेह और मूषेके विषको दूर करनेवाली है ।

विषमुष्टिगुणा ।

विषमुष्टिः कटुस्तिक्तोदीपन-कफवातनुत् ।

कण्ठामयहरोरुच्योरक्तपितार्तिदाहनुत् ॥

— अर्थ—विषमुष्टि—चरपरी, कडवी, दीपन, कफवातविनाशक, कण्ठरोग-नाशक, रुचिकारी तथा रक्तपित्त और दाहको दूरकरे है ।

विवरण । जीवन्ती अनेक जातिकी होतीहै, इसकी बेल चलतीहै, फल ढोडोंमें आते हैं इसमें आककी समान दूध निकलताहै ।

मुद्रपर्णीनामानि ।

मुद्रपर्णीकाकमुद्रासहाचशिम्विपर्णिका ।

शिम्वीपर्णीक्षुद्रसहाशिम्वीमार्जारगन्धिका ॥

अर्थ—मुद्रपर्णी, काकमुद्रा, सहा, शिम्विपर्णिका, शिम्विपर्णी, क्षुद्रसहा, शिम्वी, मार्जारगन्धिका (वनजा, रिङ्गिणी, हस्वा, शूर्पपर्णी, कुरङ्गिका, कोशिला, वनोद्रवा, वनमुद्रा, आरण्यमुद्रा, वन्या, करञ्जिका)

संस्कृतभाषामें

मुद्रपर्णी ।

हिन्दीभाषामें

मुगवन ।

बंगलाभाषामें

मुगानि ।

मराठीभाषामें

रानमृग ।

गुजरातीभाषामें

अडवाड मगवेल्य ।

कर्णाटकीभाषामें

कोहसर ।

तैलिङ्गीभाषामें

कारुपेसारा ।

लैटिन्भाषामें

फेसिपोलस् ट्रायलो वेटस् । Phasiolous

Trilobetus

अस्या गुणा ।

मुद्रपर्णीहिमारूक्षातिक्तास्वादीचशुक्ला ।

चक्षुष्याक्षयशोथघ्नीग्राहिणीज्वरदाहनुत् ॥

दोषत्रयहरीलघ्वीग्रहण्यशोतिसाराजित् । (भा० प्र०)

अर्थ—मुगवन—शीतल, रूखा, कडवी, स्वादिष्ट, शुम्भजनक, नेत्रोंको हित-

कारी, क्षयघ्न, शोथनाशक, मूत्रगोचक तथा ज्वर, दाह और त्रिदोषनाशक, हल्की और सग्रहणी, घवासीर और अतिमारको दूर करनेवाली है।

अथ च ।

मुद्रपर्णी हिमा कासवातरक्तक्षयापहा ।

पित्तदाहज्वरान्हन्तिचक्षुष्याशुकवृद्धिकृत् ॥ (रा० नि०)

अर्थ-भृगवन-शीतल तथा खासी, वातरक्त, क्षय, पित्त, दाह और ज्वरको दूर करनेवाली है, नेत्रोंको हितकारी और वीर्यवर्द्धक है।

अपि च ।

मुद्रपर्णी हिमा कासवातरक्तज्वराजयेत् ।

स्वाद्वीलघ्वी त्रिदोषघ्नी ग्रहणी कृमिनाशिनी ॥

अतिमारकफार्शोग्रीपित्तनाशकरीमता ॥

रक्तस्तम्भकरारूक्षाचोक्ता वैद्यैर्निघण्टुके ॥

अर्थ-भृगवन-शीतल तथा खासी, वात, रक्त और ज्वरका नाश करे है। स्वादिष्ठ, हल्की, त्रिदोषनाशक तथा सग्रहणी, कृमि, अतिमार, कफ, घवासीर और पित्तको दूर करे है। रक्तस्तम्भक और रूखा है।

विवरण । मुद्रपर्णी भृगकी समान बेल होती है, पत्ते भृगकी समान होते हैं, फूल पीले रंगके होते हैं और फलीभी भृगकी समान होती है।

मापपर्णीनामानि ।

मापपर्णी कृष्णवृन्ता पर्णिनी पाण्डुलोमशा ।

ऋषिप्रोक्ता हयपुच्छी काम्बोजी सिद्धपुच्छिका ॥

अर्थ-मापपर्णी, कृष्णवृन्ता, पर्णिनी, पाण्डुलोमशा, ऋषिप्रोक्ता, हयपुच्छी, काम्बोजी, मिहपुच्छिका (महासदा, मिहपुच्छी, पाण्डु, लोमशा, पर्णिनी, पाण्डुलोमा, आद्रेमापा, मातमापा, मद्गल्या, हयपुच्छिका, हगमापा, अश्वपुच्छी, मापपर्णिका, कन्याणी, वज्रमूली, शालिपणा, विसारणी, आत्मोद्भवा, बहुकला, स्वयम्भू, मुलभा, घना, सिद्धविना, विगाम्बिका, सूर्यपर्णी पाण्डुग)

मंसृत्तभापामे

मापपर्णी ।

दिन्दीभापामे

मपान, घनउर्दा, जगलीउड्ड ।

वगभापामे

मापपर्णी ।

| | |
|-----------------|---|
| मराठीभाषामें | रानउडीद । |
| गुजरातीभाषामें | भडवाड, भडद्वेल । |
| कर्णाटकीभाषामें | रानोडिडुका उडु । |
| तेलङ्गीभाषामें | कारुमीनुरु । |
| लैटिन्भाषामें | ट्रेंजिआमड्रासपटना । <i>Crangaea madras, Patana</i> अस्या गुणा । |

मापपर्णीहिमातिक्तारूक्षाशुक्रबलासकृत् ।

मधुराग्राहिणीशोथवातपित्तज्वरास्रजित् ॥ (भावप्रकाश)

अर्थ—मषवन—शीतल, कडवी, रूखी, शुक्रजनक, कफकारक, मधुर, ग्राही तथा सृजन, वात, पित्त, ज्वर और रूधिरविकारको दूर करे है ।

अथञ्च ।

मापपर्णीरसेतिक्तावृष्यादाहज्वरापहा ।

शुक्रवृद्धिकरीबल्याशीतलापुष्टिवर्द्धिनी ॥ (रा० नि०)

अर्थ—मषवन—तिक्तरसान्वित, वृष्य, दाह ज्वरनाशक शुक्रवर्द्धक, बल-कारक, शीतल और पुष्टिवर्द्धक है ।

अपिच ।

मापपर्णीमहावृष्यावृहणीबलवर्णकृत् ।

स्तन्यकेशहितास्त्रिग्धावातपित्तापहाहिमा ॥ (शो० नि०)

अर्थ—मषवन—महावृष्य, पुष्टिकारक, बलकारक, बलवर्द्धक, वर्णको सुदृढतादायक, स्तनोर्में दूध उत्पन्न करनेवाली, केशको उत्पन्न करनेवाली, त्रिग्ध, वातपित्तनाशक और शीतल है ।

अथञ्च ।

मापपर्णीशुक्रवृद्धिकरावृष्याचतित्का ।

बलदापौष्टिकाशीतारूक्षाकफकरीमता ॥

रक्तरुद्धनाशिनीग्राहीत्रिदोषज्वरपित्तहा ।

रक्तपित्तक्षयकासवातंशोपञ्चदाहकम् ॥

वातपित्तरक्तदोषनाशयेदितिकीर्तितम् ।

अर्थ—मषवन—शुक्रवर्द्धक, वृष्य, कडवी, बलदायक पुष्टिकारक, शीतल, रूखी, कफकारक, रक्तरोगनाशक, मलरोधक तथा त्रिदोष, ज्वर, पित्त,

रक्तपित्त, क्षय, खासी, वात, शोष, दाह, वातपित्त और रुधिरविकारको हरनेवाली है । मापपर्णीकी वेल उड़दकी समान होतीहै । व्यवहार-सर्वांग । मात्रा २ मासेकी ।

एरण्डनामानि ।



एरण्डोव्याघ्रपुच्छ.स्याच्चित्रकस्त्रिपुटीफल. ।

पञ्चांगुल.शूलशार्वातारिर्दीर्घदन्तक ॥

-अर्थ-एरण्ड, व्याघ्रपुच्छ, चित्रक, त्रिपुटीफल, पञ्चांगुल, शूलशार्वा, तातारि, दीर्घदन्तक (रुबुक, गन्धर्वहस्तक, उरुबुक, रुबुक, चयुक, मण्ड, वर्द्धमान, व्यडत्वक, एरण्डक, इष्ट, अमण्डल, तुच्छद्व, मणहा, त्रिपुटी, व्याघ्रदल, उरुबुक, रुबुक, रुबुक, रुबुक, रुबुक, अमण्ड, आमण्ड, व्यडम्बन, कान्त, तरुण, शुभ्र, दीर्घपत्रक (दीर्घदण्डक) चित्रबीज और जेहमद)

रपतेरण्डनामानि ।



अरंड(ख)

रक्तोपरोहस्तिकर्णोव्याघ्रोव्याघ्रकरोरुवुः ।

त्रिवीजश्चरुवूकश्चचारुत्तानपत्रक ॥

अर्थ—रक्तैरण्ड, हस्तिकर्ण, व्याघ्र, व्याघ्रकर, रुवु, त्रिवीज, रुवूक, उत्तानपत्रक, (उरुवुक, नागकर्ण, चतु, करपर्ण, पाचन, स्निग्ध, व्याघ्रवल, रक्तक, चिरवीर्य, हस्वैरण्ड और व्याघ्रपुच्छ)

स्थूलैरण्डनामानि ।

स्थूलैरण्डोमहैरण्डोमहापञ्चाङ्गुलादिकः ॥

अर्थ—स्थूलैरण्ड, महैरण्ड और महापञ्चाङ्गुल ।

हिन्दीभाषामें अण्ड, सफेद अण्ड, लाल अण्ड, बड़ा अण्ड ।

बगलाभाषामें भेराण्डा, झादारेडी, लालभेण्डा, बड़भेराण्डा ।

मराठीभाषामें एरड, एरण्डोली ।

गुजरातीभाषामें धोलोपरडो, रातोपरण्डो ।

कर्णाटकीभाषामें परडुआडलके ।

तेलङ्गीभाषामें आमुडामु, आमिदपुचेट्टु ।

इंग्रेजीभाषामें कास्टर ओईल प्लांट Castor oil Plant Castor seed

कास्टरसीड्

लैटिन्भाषामें रिसिनस्कॉम्युनिस् । Ricinus Communis

फारसीभाषामें वेदजीर, सुरुमेवेदजीर ।

अरबीभाषामें खिरवा, इब्रुलखिरवा ।

तुर्कीमें करचक ।

द्विविधैरण्डगुणा ।

ऐरण्डगुग्ममधुगमुष्णगुरुविनाशयेत् ।

शूलशोथकटीवस्ति शिरःपीडोदरज्वरान् ॥

वध्मश्वासकफानादिकासकुष्ठाममारुतान् ।

अर्थ—दोनोंप्रकारके अण्ड—मधुर, उष्ण, भारी तथा शूल, सूजन, कसर, वस्ति (पेडू) और गिरोरोग, उदर, ज्वर, बद, श्वास, कफ, अफारा, कास, कुष्ठ और आमवातनाशक है ।

अस्य पत्रगुणा ।

एरडपत्रवातघ्नकफक्रिमिविनाशनम् ।

मूत्रकृच्छ्रहरं चापि पित्तारक्तप्रकोपनम् ॥

वातार्थप्रदलंगुलमवस्तिशूलहरं परम् ।

कफवातकृमीन् हन्ति वृद्धिं सप्तविधामपि ॥

अर्थ-अण्डके पत्ते-वातनाशक, कफत्र, क्रिमिविनाशक, मूत्रकृच्छ्र रोगको हरनेवाले और पित्तरोगको कुपित करनेवाले हैं। अण्डके आगेके दल अर्थात् कोमल पत्ते-वात, गुल्म, वस्ति, शूल, कफवात, कृमि और साठ-प्रकारकी अण्डवृद्धिको दूर करे हैं ।

अस्य परगुणा ।

एरण्डफलमत्युष्णं गुल्मशूलानिलापहम् ।

यकृतप्लीहोदराशोघ्नकटुकं दीपनपरम् ॥

अर्थ-अण्डके फल-अत्यन्त उष्ण, चरपरे, अग्निको दीपन करनेवाले तथा गुल्म, शूल, तप्त, यकृत, प्लीहा, उदररोग और जवासीरको दूर करे हैं ।

अस्य मज्जागुणा ।

एतन्मज्जाचविडभेदी वातश्लेष्मोदरापहा ॥ (भा० प्र०)

अर्थ-इसकी मज्जा-मलभेदक तथा वात, कफ और उदररोगका नाशकरे हैं ।

अस्य मूत्रगुणा ।

एरण्डमूलशूलत्रवृष्यवातकफापहम् ॥ (शो० नि०)

अर्थ-इसकी जड़-शूल, वात और कफको निमूल करे, तथा वीर्यजनक है ।

अस्य पुष्पगुणा ।

पुष्पं हन्त्यस्य वर्धमानिलकफगुदजान् गुल्मशूलोर्ध्ववातान् ।

अर्थ-इसका पुष्प-वर्धमानिलकफगुदजान् गुल्म, शूल और ऊर्ध्ववातको, दूर करे है ।

अतरेण्डगुणा ।

श्वेतोरुवृकस्तुकटुस्तीक्ष्णश्चोष्णो गुरुः स्मृतः ।

मधुरस्तिक्तकोवृष्यो गुरुः स्वादु सरः स्मृतः ॥

वातोदावर्तकफहृज्ज्वरकामोदगपहः ।

शोथशूलकटीनास्तिगिरुदनाशन स्मृतः ॥

श्वासानादकुष्ठवर्ध्मगुल्मप्लीहामपित्तहा ।
प्रमेहोष्मावातरक्तमेदान्त्रावर्धनप्रणुत् ॥
अस्यभेदोवृद्धस्थूलोरसेपाकेगुणाधिकः ।

अर्थ—सफेद अण्ड—कटु, तीक्ष्ण, गरम, भारी, मधुर, कड़वा, वृष्य, भारी, स्वादिष्ट और दस्तावर है । तथा वात, उदावर्त्त, कफ, ज्वर, कास, उदर, सृजन, शूल और कमर, वस्ति, मस्तकशूल, श्वास, अपास, कोष्ठ, वर्ध्मरोग (वद) गोला, प्लीहा, आमपित्त, प्रमेह, उष्णता, वातरक्त, मेद और अन्न-वृद्धिरोगका नाश करेहै । इसका भेद—स्थूल अण्ड है और वह इसकी अपेक्षा रसमें और पाकम अधिक गुणवाला है ।

रक्तेरण्डगुणाः ।

रक्तेरुबूकस्तुवरोरसेकटुर्लघु स्मृत ।
तिक्तोवातकफश्वासकासकृम्यर्शवर्ध्महा ॥
रक्तदोषपाण्डुरुजभ्रान्त्यरोचकनाशनः ।
प्रायस्त्वन्येगुणाश्चास्यश्वेतवच्चसमीरिता ॥
पर्णद्वयोस्तुसप्रोक्तवातपित्तस्यवर्धकम् ।
मूत्रकृच्छ्रवातकफकृमीश्चैवविनाशयेत् ॥
एतयोश्चांकुरोगुल्मवस्तिशूलकफकिमीन् ।
वातसप्तप्रकारतुवृद्धिरोगविनाशयेत् ॥
पुष्पतुवातकफहृत्पित्तमूत्ररुजापहम् ।
रक्तपित्तवर्धयतिफलमज्जाग्निदीपनी ॥
अत्युष्णाकटुकास्वादु पटु स्निग्धासरास्मृता ।
मलभेदकरालघ्वीगुल्मशूलकफापहा ॥
यकृद्धतोदरप्लीहावातार्शानाविनाशिनी ।

अर्थ—एक अण्ड—कपेला, रसमें चर्परा, हलका, कड़वा, वात, कफ, श्वास, काम, वृमि, चवासीर, वद, रुधिरविकार, पाण्डुरोग भ्रान्ति और अरुचिको दूर करेहै । ये गुण सफेद अण्डकी समान जानने । इन दोनोंके

पित्ते-वातपित्तकारक तथा मूत्रकृच्छ्र, वायु, कफ, और कृमिरोगका नाश करे हैं । इसके कोमल अकुर-गुल्म, वस्ति, शूल, कफ, कृमि, वायु और सात प्रकारके वृद्धिरोगको दूर करे हैं । इसके फूल-वात, रुफ, पित्त और मूत्रकृच्छ्रादि रोगोंको दूर करे हैं तथा रक्तपित्तको बढ़ावे है । इसकी मींग-अग्निदीपक, अत्यन्त उष्ण, कटु, स्वादिष्ठ, खारी, सिग्ध, सारक, मलभेदक, लघु तथा गुल्म, शूल, कफ, यकृत, वात, उदररोग, श्लीहा और वातीकी बवासीरको दूर करे हैं ।

अथ तैलगुणाः ।

एरण्डतैलमधुरगुरुश्लेष्माभिवर्द्धनम् ।

वातासृग्गुल्महृद्भोगजीर्णज्वरहरपरम् ॥ (राजवल्लभ)

अर्थ-अण्डीका तेल-मधुर, भारी, कफवर्द्धक तथा वातरक्त, गुल्म, हृद्भोग और जीर्णज्वरका नाश करे है ।

अपिच ।

एरण्डतैलमधुरं सरचोष्णं गुरुस्मृतम् ।

अरुच्यचस्मृतस्निग्धतित्तवर्ध्मोदरापहम् ॥

गुल्मवातकफांश्चैव शोथश्च विषमज्वरम् ।

कटिपृष्ठकोष्ठगुह्यशूलनाशकरपरम् ॥

अर्थ-अण्डीका तेल-मधुर, दस्तावर, गरम, भारी, अरुणिकारक, स्निग्ध, तित्त तथा, वट, उदर, गुल्म, वात, कफ, सूजन, विषमज्वर और कफ, पीठ, कोष्ठ और गुदा आदिके शूलको निर्मूल करे है ।

अथ च ।

एरण्डतैलमधुरमुष्णतीक्ष्णश्च दीपनम् ।

रसेकटुकपायश्च सूक्ष्मं स्रोतोविशोधनम् ॥

योनिशूलविशोधनमागोग्यमेघाकान्तिकृत् ।

स्मृतिस्थैर्य्यवलकरवृष्यमधुरमेव च ॥

वयःस्थापनकट्टघ्वातश्लेष्महृगपरम् ।

अर्थ-अण्डीका तेल-मधुर, उष्ण, तीक्ष्ण और जठराग्निवर्द्धक है । कटुमान्त्रिक, कपेला, सूक्ष्म और श्रोतविशोधक है । योनि (वीर्य्य)

शूलको शोधनेवाला है । आरोग्यता, मेधा और कान्ति करनेवाला है । स्मरणशक्ति बढ़ानेवाला, स्थिरताकारक, बलजनक, मधुर और वीर्यको उत्पन्न करेहै । अवस्थाको स्थापन करनेवाला है, हृदयको हितकारी तथा वात और कफको दूर करेहै ।

अपिच ।

एरण्डतैलकृमिदोषनाशनवातामयघ्नसकलाङ्गशूलहृत् ।

कुष्ठापहस्वादुरसायनोत्तमपित्तप्रकोपकुरुतेतिदीपनम् ।

अर्थ—अण्डीका तेल—कृमिरोगनाशक, वातरोगनिवारक, सर्व प्रकारके शूलको निर्मूल करनेवाला, कुष्ठघ्न, स्वादिष्ठ, रसायनमें श्रेष्ठ, पित्तको कुपित करनेवाला और अग्निको दीपन करनेवाला है । आगे इसके गुण तलवर्गमें देखो ।

विवरण—इसके वृक्ष प्रायः खेतीकी बाडपर लगाये जाते हैं, इसकी लाल और सफेद दो जाती हैं, इसके फलपर, कोमल काटे होते हैं, फलमेंसे तीन बीज निकलतेहैं, यह फल ऊपर चित्रित होतेहैं और बीजके भीतर मींग सफेद निकलतीहै उस मींगके भीतर तेल होताहै, उस मींग अथवा तेलको खानेसे जुझाव होता है । इसके पत्तोंको भस्तकपर बाधनेसे माथेका शीत दूर होताहै । व्यवहार—मूल, पत्ते, छाल, मूलकीछाल, फल, फूल, मींग और तैल ।

अकनामानि ।



पित्त-वातपित्तकारक तथा मूत्ररुच्छ, वायु, कफ, और कृमिरोगका नाश करे हैं । इसके कोमल अंकुर-गुल्म, वमिष, शूल, कफ, कृमि, वायु और सात प्रकारके वृद्धिरोगको दूर करे हैं । इसके फल-वात, कफ, पित्त और मूत्ररुच्छादिरोगोंको दूर करे हैं तथा रक्तपित्तको बढ़ावे हैं । इसकी मींग-अग्निदीपक, अत्यन्त उष्ण, कटु, स्वादिष्ट, खारी, सिग्ध, सारक, मलभेदक, लघु तथा गुल्म, शूल, कफ, यकृत, वात, उदररोग, छिदा और वागीरी ववासीरको दूर करे हैं ।

अस्य तैलगुणाः ।

एरण्डतैलमधुरगुरुश्लेष्माभिवर्द्धनम् ।

वातासृग्गुल्महृद्भोगजीर्णज्वरहरपरम् ॥ (राजवल्लभ)

अर्थ-अण्डीका तेल-मधुर, भारी, कफवर्द्धक तथा वातरक्त, गुल्म हृद्भोग और जीर्णज्वरका नाश करे हैं ।

अपिच ।

एरण्डतैलमधुरं सरंचोष्णगुरुस्मृतम् ।

अरुच्यंचस्मृतस्निग्धतित्तवर्ध्मोदरापहम् ॥

गुल्मवातकफांश्चैव शोथञ्च विपमज्वरम् ।

कटिपृष्ठकोष्ठगुह्यशूलनाशकरं परम् ॥

अर्थ-अण्डीका तेल-मधुर, दस्तावर, गरम, भारी, अरुचिकारक, सिग्ध, तित्त तथा, चद, उदर, गुल्म, वात, कफ, सृजन, विपमज्वर और फमर पीठ, कोष्ठ और गुहा आदिके शूलको निर्मूल करे हैं ।

अप्यथा ।

एरण्डतैलमधुरमुष्णतीक्ष्णञ्च दीपनम् ।

रसेकटुकपायञ्च सूक्ष्मस्रोतोविशोधनम् ॥

योनिशूलविशोधनमागोग्यमेघाकान्तिकृत ।

स्मृतिर्यैर्व्यथलकरवृष्यमधुरमेव च ॥

वयःस्थानकहृद्यवातश्लेष्महरं परम् ।

अर्थ-अण्डीका तेल-मधुर, उष्ण, तीक्ष्ण और जठराग्निदीपक है । कटुकान्वित, कपेला, सूक्ष्म और श्रोतविशोधक है । योनि (वीर्य)

शूलको शोधनेवाला है । आरोग्यता, मेधा और कान्ति करनेवाला है । स्मरणशक्ति बढ़ानेवाला, स्थिरताकारक, बलजनक, मधुर और वीर्यको उत्पन्न करेहै । अवस्थाको स्थापन करनेवाला है, हृदयको हितकारी तथा वात और कफको दूर करेहै ।
अपिच ।

एरण्डतैलकृमिदोषनाशनवातामयघ्नसकलाङ्गशूलहृत् ।

कुष्ठापहंस्वादुरसायनोत्तमंपित्तप्रकोपकुरुतेतिदीपनम् ।

अर्थ—अण्डीका तेल—कृमिरोगनाशक, वातरोगनिवारक, सर्व प्रकारके शूलको निर्मूल करनेवाला, कुष्ठघ्न, स्वादिष्ठ, रसायनमें श्रेष्ठ, पित्तको कुपित करनेवाला और अग्निको दीपन करनेवाला है । आगे इसके गुण तलवर्गमें देखो ।

विवरण—इसके वृक्ष प्रायः खेतीकी बाडपर लगाये जाते हैं, इसकी लाल और सफेद दो जाती हैं, इसके फलपर, कोमल काटे होते हैं, फलमेंसे तीन बीज निकलतेहैं, यह फल ऊपर चित्रित होतेहैं और बीजके भीतर मींग सफेद निकलतीहै उस मींगके भीतर तेल होताहै, उस मींग अथवा तेलको खानेसे जुझाव होता है । इसके पत्तोंको मस्तकपर बांधनेसे माथेका शीत दूर होताहै । व्यवहार—मूल, पत्ते, छाल, मूलकीछाल, फल, फूल, मींग और तैल ।

अकनामानि ।



क्षीरदलंशुकफलतूलाकेश्व सदासुमः ॥

अर्थ-क्षीरदल, शुकफल, तूलफल, अर्क, सदासुम, (प्रताप, क्षीरकाण्डक, विशीर, भास्कर, हरिदश, विवस्वान्, अहर्मणि, अहर्वाणधव, अयमा, अहपति, उष्णरश्मि, भात्रु, विकर्त्तन, गणरूप, मन्दार, प्रभाकर, विभाकर, दिवाकर, विभावसु, विवस्वान्, गताश्व, सविता, स्रुत, आस्फोट, वसुक, हिमागति, पुच्छी, प्रताप, क्षीरी, खज्जुघ्न, शीतपुष्पक, जम्भल, क्षीरपर्णी, विक्रोण, सदापुष्प, सूर्याद, आस्फोटक, भास्कर, आस्फोटक, रवि, कीरतनुफल और क्षीराङ्ग)

श्वेतायनामानि ।

श्वेताकौडलर्कराजाकौमन्दारोगणरूपकः ॥

अर्थ-श्वेताक, अलर्क, राजाक, मन्दार, गणरूपक, (तपन, श्वेत, दीर्घ-पुष्प, शिवाह्वय, प्रताप, शीतार्कक, शकरापुष्प, काष्ठील, वसुक, सदापुष्प, वृत्तमल्लिका, वेधा, शम्भु, गणरूपी, रक्ताक, विम्बोर, सदापुष्पी, रूपिका, आदित्यपुष्पिका, दिव्यपुष्पिका, अक, रक्तपुष्प और शुक्रफल)

हिन्दीभाषामें लाल आक, मफेद आक, मदार ।

बंगभाषामें आकन्द, श्वेतआकन्द ।

मराठीभाषामें र्द, पादरीरु ।

कर्णाटकीय पक्व, मदारपक्व ।

तमिलभाषामें नीलजिल्लेड्योली, तेलजिल्लेड्ये, जिल्लेड्येदु ।

गुजरातीभाषामें आकडो, भोलोआकडो ।

इंग्रेजीभाषामें जाईगोटिस्वोलोवर्द । Gigantic Swallow wort

लैटिनभाषामें कैरोट्रोपीम् जाईगोटिया । Calotropis Juncus

कलोट्रोपिसप्रोमिरा । OProcera

फारसीभाषामें खुक, दूध ।

बरधीभाषामें उपर ।

अपंगुणा ।

अर्क कृमिहरस्तीक्ष्णसर्गोशकफनाशनः ।

तत्पुष्पकृमिदोषघ्नहन्तिशूलोदराणिच॥(धन्वतारिणि०)

अर्थ-आर्क-कृमिनाशक, तीक्ष्ण, दस्तावर, यवासीर और कफनाशक है । इसके पुष्प कृमिदोष, शूल और उदररोगका नाशक है ।

रक्तार्कपुष्पमधुरंसतिक्तकुष्ठत्रिमिश्रकफनाशनञ्च ।

आखोर्विपंहतिचरत्तपित्तसंग्राहिगुल्मेश्वयथोहिततत् ॥

अर्थ—लाल आकका फूल-मधुर, तिक्त, ग्राही तथा कुष्ठ, कृमि, कफ, मूत्रिका विष, रक्तपित्त, गुल्म, और सृजनको दूर करे है ।

अर्कक्षीरगुणा ।

क्षीरमर्कस्यतिक्तोष्णस्निग्धसलवणलघु ।

कुष्ठगुल्मोदरहरश्रेष्ठमेतद्विरेचनम् ॥ (भा० प्र०)

अर्थ—आकका दूध-तिक्त, उष्ण, स्निग्ध लवणरस समुक्त, हल्का, कोढ़, गुल्म तथा उदररोगको दूर करे, इसका विरेचनदेना श्रेष्ठ है, अर्थात् इसके द्वारा दस्त उत्तम प्रकारसे होते हैं ।

अर्कमूत्रस्य त्वग्गुणा ।

अर्कमूलत्वचास्वेदकरीश्वासनिवर्हणी ।

उष्णाचवामिकाचैवह्युपदशविनाशिनी ॥

अर्थ—आकके जड़की छाल-पसीनेको उत्पन्न कर, श्वासको दूरकरे गरम है और उपदशरोगका नाश करे है ।

अर्कस्तुकटुरुष्णश्वातजिह्विदीपकः ।

शोफव्रणहरःकण्डूकुष्ठक्रिमिविनाशन ॥ (रा० नि०)

अर्थ—आक-कटु, उष्ण, वातनाशक, अग्निप्रदीपक तथा शोफ, व्रण, कण्ट, कुष्ठ और कृमिरोगका नाशकरे है ।

द्विविधार्कगुणा ।

अर्कद्वयसरवातकुष्ठकण्डूविषव्रणान् ।

निहतिष्ठीहगुल्मार्शःश्लेष्मोदरयकृत्कृमीन् ॥

अलर्ककुसुमवृष्यलघुदीपनपाचनम् ।

अरोचकप्रसेकार्श कासश्वासनिवारणम् ॥

अर्थ—दोना प्रकारके आक-रोचक तथा वात, कोढ़, कण्डू, विष, व्रण, छीहा, गुल्म, चवासीर, श्लेष्म, उदररोग, यकृत और कृमि रोगको दूर करे है । सफेद आकका फूल-बलकारक, हल्का, अग्निको दीपन करे, पाचक, अरुचि, प्रसेक (मुखसे लारका गिरना) चवासीर काम और श्वासको दूर करे है ।

श्वेतमन्दारकोत्पुष्पस्तित्तोमलविशोधनः ।
 मूत्रकृच्छ्रव्रणान्हन्तिकृमीनत्यन्तदारुणान् ॥
 राजार्कःकटुतिक्तोष्णःकफमेदोविषापहः ।
 वातकुष्ठव्रणान्हन्तिशोफकण्डूविसर्पनुत् ॥

अर्थ-सफेद मन्दार-अत्यन्त उष्ण, तिक्त, मलशोधक तथा मूत्रकृच्छ्र, व्रण और अत्यन्त दारुण किमि रोगको दूर करे। राजार्ककटु, तिक्त, उष्ण तथा कफ, भेद, विष वातकुष्ठ, व्रण, शोफ, कण्डू और विसर्परोगका नाशकरे।

विवरण । आक के घृक्ष जगल और मूडोंमें अधिकतासे होतेहैं। एकड़ी नि सार होताहै, पत्ते बड़ेके समान होतेहैं, फल तोतेकी समान। उसके भीतर तीन रुई निकलतीहै, आकके पच अन्नका सार करतेहैं, वो सार कफको दूर करे। इसके पत्तोंको गरम कर पेपर बाघनेमे पेटका दर्द दूर होताहै।

स्तुहीनामानि ।



स्तुहीसमन्तदुग्धाचनागदुर्वहुदुग्धिका ।
 महावृक्ष सुधावज्राशीदुण्डोदण्डवृक्षक ॥ (शोडलनि०)

अर्थ-स्तुही, समन्तदुग्धा, नागदु, यदुग्धिका, महावृक्ष, सुधा, यमा, जीदण्डा, दण्डवृक्षक, (मीदण्ड, गिदण्ड, स्तुष्, स्तुपा, रुद्रा, शुद्धी, वज्र,

वज्रद्रु, वज्रद्रुम, वज्रकण्टक, गुड, गुडा, गुडि, गुला, बहुशाल, कृष्णसार, निर्विशपत्रिका, नेत्रारि, शाखाकण्ट, सेहुण्ड, सिंहतुण्ड, वज्री, काण्डशाख, कुलिशद्रुम, काण्डरोहक)

| | |
|------------------|---|
| हिन्दीभाषामें | शूहर, सेहुड । |
| वगभाषामें | मनसागाछ, सिजवृक्ष । |
| मगठीभाषामें | निवडुग, काटेनिवडुग, फणीचें निवडुग, विकाडी, वईनिवडुग । |
| गुजरातीभाषामें | थोर दाडलियो, कटाली, कटालोथोर । हायलो तरधारी, नाना परदेशी । |
| कर्णाटकीभाषामें | निवडिगु, कालि, मुडुकालि । |
| तैलिङ्गीभाषामें | चेंमुडु । |
| देशान्तरीभाषामें | सावर । |
| इंग्रेजी भाषामें | मिल्कसहेज । प्रिक्लीपीयर । Milk hedge Prickly pear |
| लैटि० | युफोर्विया ट्रायगोना । Euphorbia Trigona युफोरवियानिरिफोलीया । Euphorbia Nirifolia |
| फारसीभाषामें | लादनाम् |
| अरबीभाषामें | जकुम, फर्युन । |
| लैटिन्भाषामें | युफोर्विया टिरुकालाइ । युफोर्विया पेण्डागोता । |
| तु० | कोडकलि । ता० कलि । मला० तिरुकलि । रुद्रिगुणा । |

रुद्रिरुग्ण पित्तदाहकुष्ठवातप्रमेहनुत् ।

क्षीरवातविषाध्मानगुल्मोदरहरपरम् ॥ (रा० नि०)

अर्थ—शूहर—गर्भ, पित्त, दाह, कुष्ठ, वात, और प्रमेहनाशकर है । शूहरका दूध—वायु, विष, आध्मान, गुल्म और उदररोगनिवारक है ।

अपिच

सेहुण्डोरेचनस्तीक्ष्णोदीपनकटुकोगुरु ।

शूलमष्टीलिकाध्मानकफगुल्मोदरानिलान् ॥

उन्मादमोहकुष्ठार्शशोथमेदोश्मपाण्डुहा ।

व्रणशोथज्वरप्लीहविषदूषीविषहरेत् ॥

अर्थ-मेदुण्ड-रेचक, नोक्षण, अग्निको दीपन करनेवाला, कटु, भारी तथा शूल, अष्टीलिका, आध्मान, कफ, गुल्म, उदररोग, वायु, उन्माद, मूर्च्छा, कोष्ठ, चवासीर, सूजन, मेदोरोग, पयरी, पाण्डुरोग, व्रण शोथ, ज्वर, घ्नीहा, दूषीविष और विषको दूर करे है ।

अस्य द्रव्यगुणाः ।

उष्णवीर्यस्नुहिभीरस्निग्धश्चकटुकलघु ।

गुल्मिनांकुष्ठिनांचापितथेवोदररोगिणाम् ।

हितमेतद्विरेकार्थेयेचान्येदीर्घरोगिणः ॥

अर्थ-मेदुण्डका द्रव्यउष्णवीर्य, स्निग्ध, चरपग और दलसाई तथा गुल्म, कुष्ठ (उपदंशरोग) उदर इनरोगवालोंको और बहुत कालके रोगियोंकोभी इसका जुल्लाय हितकारी है ।

अस्य द्रव्यगुणाः ।

सेहुण्डस्यदलतीक्ष्णदीपनरोचनमवत् ।

आध्मानाष्टीलिकागुल्मशूलशोथोदराणिच ॥

अर्थ-सेहुण्डके पत्ते तीक्ष्ण अग्निको दीपन करनेवाले अत्यन्त रुचिकारक तथा आध्मान, अष्टीलिका, गुल्म, शूल, शोथ और उदररोगको दूर करे ।

अपिच ।

सेहुण्ड कटुकस्तिक्तश्चोष्णस्तीक्ष्णप्रदीपनः ।

सरोगुरुवातिकरःकुष्ठोदरविनाशकः ॥

प्लीहवातप्रमेहश्च शूलामकफशोथनुत ।

गुल्माष्टीलाध्मानपाण्डुकफोदरव्रणज्वरान् ॥

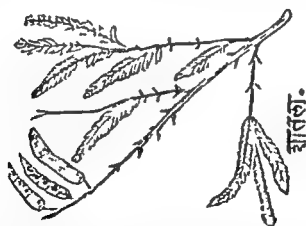
उन्मादवातमेदश्चतृथिकस्यविषहरेत् ।

दूषीविषार्शश्मरीत्रोमुनिभिः परिकीर्तितः ॥

अर्थ-भृदर, वा सेहुण्ड-कटु, तिक्त, उष्ण, तीक्ष्ण, उदग्गतिदीपक, दग्धा-यर, भारी, वान्तिहारक तथा कुष्ठ, उदर, घ्नीहा, वात, प्रमेह, शूल, आम, कफ, सूजन, मोला, अष्टीला, आध्मान, पाण्डुरोग, कटु, उष्णवर्ण, उदर,

उन्माद, वायु, मेद, विच्छूका विप, दूषीविप, बवासीर और पथरीको दूरकरेहै ।
 - विवरण । थूहर और सेड दोनों एकही जातिके वृक्ष हैं सेडकी डडी काटेदार और मोटी होतीहै, पत्ते कोमल पत्थरचट्टेकी समान होते हैं, परन्तु दूध इसकी प्रत्येकशाखा और प्रत्येक पत्तेम होताहै थूहरकी शाखा पतली और पत्तेभी छोटे छोटे हरीभिर्चकी समान लम्बे होते हैं इसके सन अंगामें दूध निकलताहै । थूहरकी अनेक जातिहैं । जैसे काटेवाला थूहर, तिधारा थूहर, चौवारा थूहर, नागफनी थूहर, रुगसानी थूहर, विलायती थूहर, इत्यादि । खुरासानी थूहरका दूध विपेला होताहै । इसके दूधको चार्दके रोगमें तथा सन्धियोंकी पीडामें चुपडनेसे तुरत पीडा दूर होतीहै । थूहरके दूधकी बाजरेके चूनके साथ गोली बनाकर खानेसे जुलाव होकर उदरका रोग दूरहोता है और थूहरके दूधमें चनेकी दालको भिगोकर उसको पीसकर झडवेरकी समान गोली बनाकर खानेसे जुलाव होकर उपदश तथा फिरग-रोग दूरहोताहै । थूहरकी राख कर उसका खार निकाल अनेक औषधियोंमें डालतेहैं । काटेवाले थूहरके पत्ताका शाक बनाकर खाते हैं । उमसे उदरके रोग दूर होतेहैं । इसके डडोंकी भस्मारक नामवाली औषधि बनती है । नागफनी थूहरके लाल पके हुए फल खानेसे श्वास और खासी दूर होती है ।

सातलानामानि ।



सातलासप्तलासाराविमलाविदुलाचसा ।

तथानिगदिताभूरिफेनाचर्ममकपेत्यपि ॥

अर्थ—सातला, सप्तला, साग, विमला, विदुला, भूरिफेना, चर्मकपा,
 (अमला, चटुफेना, फेना, टीसा, विपाणिका, स्वर्णपुष्पी, पुत्रघना)

| | |
|-----------------|--|
| हिन्दीभाषामें | सातला । |
| बगभाषामें | सिजविशेष । |
| मराठीभाषामें | निवडुगाचा भेट । |
| गुजरातीभाषामें | साथेर । |
| लैटिन् भाषामें | ओरिगेन बल्गेरीग <i>Origanum 1 al., orig.</i> |
| कर्णाटकीभाषामें | बडीलसोतुली, हिरियचद, कनख । |
| फारसीभाषामें | एशन । |
| अरबीभाषामें | सातर । |

सातलागुणा ।

सातलाकटुकापाकेवातलाशीतलालघु ।

तिक्ताशोफकफानाहपित्तोदावर्तरक्तनुत् ॥ (भा० प्र०)

अर्थ-सातला-पचनेमें कटु, वातजनक, शीतल, हल्का, तिक्त तथा शोफ, कफ, आनाह, पित्त, उदावर्त और रक्तशोफको दूर करे ।

अपिच ।

सातलाकफपित्तघ्नीलघ्वीतिकाकपायिका ।

विसर्पकुष्ठविस्फोटव्रणशोफनिकृन्तनी ॥ (राजनिघण्टु)

अर्थ-सातला-कफपित्तनाशक, लघु, तिक्त, कषाय तथा विसर्प, कुष्ठ, विस्फोट, व्रण और शोफनाशक ।

अथ यथा ।

सातलामुखपाकघ्नीजठरव्रणहृत्सरा ॥ (भो० नि०)

अर्थ-सातला-मुखपाक, उदर और व्रणरोगनाशक ।

अपिच ।

सातलातृविसर्पघ्नीरेचनीवातशोफनुत् ॥ (ग० नि०)

अर्थ-सातला-विसर्परोगनाशक, दस्त करानेवाला, वात तथा मृगनरो दूर करे ।

अथ यथा ।

सातलाशीतलातिकातीक्ष्णापाकेकटुलघु ।

हृद्यानिलप्रकुरुतेहरतेहृद्रुजंकफम् ॥

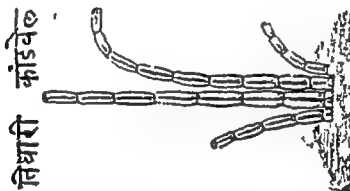
पित्तोदावर्तकुष्ठार्शोगुल्मोदरगतविषम् ।

आनाहकृमिशोफामनाशयेदितिकीर्तितम् ॥

अर्थ—सातला—शीतल, तिक्त, तीक्ष्ण, पचनेमें कटु, लघु, हृदयको हित-
कारी, अग्निजनक तथा हृदयरोग, कफ, पित्त, उदावर्त, कुष्ठ, ववासीर,
गुल्म, उदरविष, आनाह, कृमि, शोफ और आमको दूर करेहै ।

विवरण । सातलेकी बेल जगल और वनोंमें होतीहै, पत्ते खैरके पत्तोंकी
समान छोटे छोटे होते हैं । फूल पीलाहोता है । उसमें पतली तथा चपटी
फली लगतीहै । उसमें काले बीज निकलते हैं । इसमें पीले रंगका दूध
निकलताहै ।

अस्थिसहारिनामानि ।



वज्रवल्लयस्थिसहारीकुलिशचशिरालक ॥

अर्थ—वज्रवली, अस्थिसहारी, कुलिश, शिरालक (ग्रन्थिमान, अमर,
वज्राङ्गी, अस्थिशृङ्खला, अस्थिसहारक, क्रोष्टुषण्डिका)

हिंदीभाषामें

हडसहारी, हडजोड, हडसकरी ।

बगभाषामें

हाडभाङ्गा ।

गुजरातीभाषामें

हाडसाकला, वेधारी, तरधारी, चोधारी ।

मराठीभाषामें

काडबेल, त्रिधारी, चौधारी,

तैलिङ्गीभाषामें

नालेह ।

लैटिन् भाषामें

विटिस्कोडेग्युलारिस् । *Vitisquolron gularis*

साइसस फाडेग्युलोरिस् ।

अस्थिसहारिगुणा ।

अस्थिसहारक प्रोक्तोवातश्लेष्महरोस्थियुक् ।

उष्णः सरः कृमिघ्नश्च दुर्नामघ्नो क्षिरोगजित् ॥
 रूक्षः स्वादुर्लघुर्वृष्यः पाचनः पित्तलः स्मृतः ।
 काण्डत्वग्विरहितमस्थिशृङ्खलाया
 मापार्द्रद्विदलमकचुकंतदहम् ।
 संपिष्टसुतनुततस्ति लस्यते ले
 संपक्ववटकमतीव वातहारे ॥ (भा० प्र०)

अर्थ—इडसहारी—वातकफनाशक, दूदी हड्डीको जोड़नेवाली, उष्ण, सारक, कृमिघ्न, घवासीरको दूर करनेवाली, आसके रोगका नाश करनेवाली, रूखी, स्वादिष्ट, हलकी, वीर्यजनक, पाचक और पित्तकारक है । इडसहारीकी लकड़ीका एक टुकड़ा लेकर उसकी छाल छीलकर चूर्ण करले, पश्चात् उस चूर्णमें गीले उड्डेकी छिलकागदित दाल चूर्णमें आधी मिलाये दोनोंको तिलपर महीन पीस तिलके तेलमें बटी बनाये, यह बटी आसन्ता वातका नाश करेई ।

अपघ्नः ।

वज्रवल्लीसगरूक्षकृमिदुर्नामनाशिनी ।
 दीपन्युष्णाविपाके म्लान्स्वाढीवृष्यावलप्रदा ॥
 अर्शसातुविशेषेण हिता चैवाग्निदीपनी ।
 चतुर्धाराकाण्डवल्लीभूतोपद्रवशूलहा ॥
 अत्युष्णाध्मानवातांश्चतिमिरवातरक्तकम् ।
 अपस्मारवातरोगनाशयेदिति कीर्तितम् ॥
 त्रिधाराकाण्डवल्लीतुसरालक्ष्यग्निदीपनी ।
 रूक्षोष्णामधुरावातकृम्यर्शकफनाशिनी ॥
 काण्डवल्लीतुकटुकातिक्ताचोष्णासरामता ।
 पित्तलाचकफंगुल्मलूतादुष्टघ्नतथा ॥
 ग्रीहोदराग्निमांधानिशूलवातचनाशयेत् ।
 मलस्तम्भदग्नेव कीर्तितायुनिभिपुरा ॥ (नि० २०)

अर्थ-वज्रवल्ली-दस्तावर, रूखी, कृमि, ववासीरनाशक, पचनेमें अम्ल, स्वादिष्ठ, वीर्यजनक, बलदायक, विशेषकरके ववासीरके लिये अधिक हितकारी है और अग्निदीपक है । चौधारा काण्डवेल-भूतोपद्रवको दूर करनेवाली, शूलनाशक, अत्यन्त उष्ण तथा आध्मान, वात, तिमिर, वातरक्त, अपस्मार और वातरोगविनाशक है । त्रिधारी काण्डवेल-दस्तावर, हलकी, अग्निदीपक, रूखी, उष्ण, मधुर तथा वात, कृमि, ववासीर और कफनाशक है । काण्डवल्ली-कटु, तिक्त, उष्ण, दस्तावर, पित्तजनक तथा कफ, गुल्म, लूता, दुष्टघ्न, घृहा, उदर, मदाग्नि, शूल, वात और मलस्तम्भको दूरकरे ।

विवरण । इसकी वेल थूहरकी जाति होती है, इस वेलमें चार छे अंगुलपै गाठ होती है, यह द्विधारा, तिधार, चारधार इनमेंसे एक हडसधारीकी जाति होती है । काण्डवेलके भिन्नभिन्न भागमें काण्ड होती है इसकारण सस्कृतमें इसको काण्डवल्ली कहते हैं, यह शकलके समान होती है, इसलिये इसको हडशङ्करी कहते हैं ।

कलिकारीनामानि ।

कलिकारीलाङ्गलिकीदीप्ताचर्भधातिनी ।

अग्निजिह्वावह्निशिखावह्निवक्राचलांगुली ॥

अर्थ-कलिकारी, लाङ्गलिकी, दीप्ता, गर्भधातिनी, अग्निजिह्वा, वह्निशिखा, वह्निवक्रा, लांगुली, (हलिनी, गर्भधातिनी, विशल्पा, अग्निमुखी, हली, नक्ता, इन्द्रपुष्पिका, विद्युज्ज्वाला, व्रणहत्, गुप्पसीरभा, स्वर्णपुष्पा, इन्द्रपुष्पिका, शक्रपुष्पी, अनन्ता, कलिकारिका, लागलिका, गर्भनुत्)

सस्कृतभाषामें कलिकारी ।

हिन्दीभाषामें कलिहारी, कलियागी ।

बंगलामें विपलाङ्गरी, ईशलाङ्गरी ।

मराठीभाषामें खडवानाग, चगमोड्या, कळारी ।

गुजरातीभाषामें दुधियो, वठनाग, कलगारी ।

को० कल ।

कर्गाटकीभाषामें राटागारी ।

मला० मेहोत्रि, काडल ।

इंग्रेजीभाषामें गुल्फसवेन । Wolf's bane

लैटिनभाषामें ग्लोरीजोशामुपवा । Gloriosa superba

एकोनाइडमनेपिटम । Aconitum napellus

अस्या गुणा ।

कलिकारीसरातीक्ष्णाकुष्ठदुष्टव्रणापहा ॥ (वि० ति० भा०)

अर्थ-कलिहारी-सारक, तीक्ष्ण और कुष्ठ तथा दुष्ट व्रणको नष्ट करने वाली है ।

अपिच ।

कलिकारीसराकुष्ठशोफाशौव्रणशूलजित् ।

सक्षाराश्लेष्मजित्तिक्ताकटुकातुवरापिच ॥

तीक्ष्णोष्णाकृमिहृच्छ्वीपित्तलागर्भपातिनी ॥ (भा० प्र०)

अर्थ-कलिहारी, सारक, कुष्ठ, शोफ, घवामीर, घण और शूलका नाश करेई । क्षारसयुक्त, कफनाशक, कडवी, चरपरी, कपेली, तीक्ष्ण, गरम, फूमिदारक, हलकी, पित्तजनक और गर्भको गिरानेवाली है ।

अन्यथा ।

कलिकारीमरातीक्ष्णागर्भशल्यव्रणापहा ।

शुष्कगर्भञ्चगर्भञ्चपातयेच्छेपमात्रतः ॥ (शो० नि०)

अर्थ-कलिहारी-सारक, तीक्ष्ण तथा गर्भशूल और व्रणनाशक है । शुष्कगर्भ और गर्भको केवल लेपसेही गिरानेवाली है ।

अपिच ।

कलिकारीसरातिक्ताकटुपट्टीचपित्तला ।

तीक्ष्णोष्णातुवरालक्ष्वीकफवातकृमिप्रणुत् ॥

वस्तिशूलंविपचार्शं कुष्ठकण्डूव्रणतथा ।

शोथशोषञ्चशूलञ्चनाशयेदितिकीर्तिता ॥

शुष्कगर्भञ्चगर्भञ्चपातयेदितिकीर्तिता । (नि० २०)

अर्थ-कलिहारी-सारक, कडवी, चरपरी, पारी, पित्तकारी, तीक्ष्ण, गरम, कपेली, हलकी तथा कटु, रात, फूमि, वस्ति शूल, विप और योड, घवा-मीर, कण्डू, घण, सूजन, शोथ, शूल, शुष्कगर्भ और गर्भको दूर करनेवाली है ।

विराग । फूमिहारीका धुप बच्छनागकी बेन्फो समान बडरी आहति वाता होताई, पथे अंधाहुटी समान होताई । पट्ट-सार और पीले मिश्रित रंगके आत्मस सुद्ध होताई । पत्त-तीनो रंगवाले मिश्रित समान होताई ।

उसके भीतर लाल छालवाले इलायचीके बीजोंके समान बीज होतेहैं, इसकी
बेलके नीचे गाठ होतीहै, उसकी ऊपरकी छाल पिलाई लिये होतीहै, इस-
गाठको वच्छनाग कहते हैं इसमें विष होताहै ।

करवीरनामानि ।



करवीर.

करवीर श्वेतपुष्प शतकुम्भोऽश्वमारक ।

द्वितीयोरक्तपुष्पश्चण्डालोलगुडस्तथा ॥

अर्थ—करवीर, श्वेतपुष्प, शतकुम्भ, अश्वमारक, (प्रतिशस, शतमाम,
चण्डात, हयमारक, अश्वमार, अश्वघ्न, हयारि, शीतकुम्भ, तुरङ्गारि, रङ्गारि,
शातकुम्भ, प्रचण्ड, अश्वहा, वीर, हयमार, हयघ्न, शतकुन्द, अश्वरोधक,
वीरक, कुन्द, शकुद्र, तुङ्गारी, श्वेतपुष्पक, अश्वान्तक, नखराह, अश्वनाशक,
स्थलकुमुद, दिव्यपुष्प, हरिप्रिय, गौरीपुष्प और सिद्धपुष्प, यह नाम श्वेतक-
रवीरके हैं । रक्तपुष्प, चण्डात, लगुड, रक्तपसव, गणेशकुमुम, चण्डीकुमुम,
धूर, भूतघ्नावी, रविप्रिय)

ससृष्टभाषामं

करवीर, श्वेतकरवीर, रक्तकरवीर ।

हिन्दीभाषामं

सफेदकरवीर, लालकरवीर, पीलीकरवीर,
काले फूलकी करवीर ।

घग्नाभाषामं

करवी, लालकरवी ।

मराठीभाषामं

कहोर, पादरी, तानडी, पिवळी ।

गुजरातीभाषामं

कणेर, धोलाफुलनी, राताफुलनी, गुलाबी-
फुलनी, पीला फुलनी ।

कर्णाटकीभाषामं

वाक्णलिंगे, केगणलिंगे ।

| | |
|----------------------|--|
| तेलिर्द्वाभाषाम | कानेरचेद्रु । |
| इमेर्जाभाषाम | स्वीटमेन्टेड ओलियडर Sweet scented oilier |
| एन्टिन्भाषाम | नोरीय ओडोरम Nirum odor m नोरीयम |
| ओलियडर Nerum abunder | सर्वेरायिविटिया Cerbera Thevetia |
| फारसीभाषामें | सरजेहरा ।- |
| अग्नीभाषामें | मुमुल, हिमारदवली । |

श्वेतान्तिरस्वीरगुणा ।

इयारि'पञ्चधाप्रोक्तःश्वेतोरक्तश्चपाटल ।
 पीतःकृष्ण समुद्दिष्टःश्वेतस्यैतान्गुणाञ्जृणु ॥
 कटुस्तिक्तश्चतुवरस्तीक्ष्णोर्वायैणचोष्णदः ।
 ग्राहीमेहकृमीन्कुष्ठवणाशोवातनुत्परः ॥
 भक्षितोविषवज्ज्योनेऽयोलघुविपापह ।
 विस्फोटक्कुष्ठमिनुत्कण्डूव्रणकफापह ॥
 उवरनेत्ररुजचैवहयप्राणाश्वनाशयेत् ।

अर्थ-कानेर-सफेद, लाल, गुलाबी, पीली और काली इमप्रकार कृन्नाये
 भेदमे पाच प्रकारकी है । इनमें सफेद कानेर कटु, तिक्त, कपेली, तीक्ष्ण,
 उष्णग्रीष्म, ग्राही तथा प्रमेह, कृमि, कोद, घाव, यवार्तिर और वातनाशक
 है, यह भक्षण कर्ममें विषके समानहै, और नेत्रोंको दृष्टिकारी, इसकी
 तथा विस्फोट, कुष्ठ, कृमि, कण्ट ग्रन्थ, कफ, उवर, नेत्ररोग और घोटके
 प्राणोंको हरनेवाली है ।

रक्तवर्णोरगुणा ।

रक्तवर्ण शोधक स्यात्कटु पाकेचतित्तक ।
 कुष्टादिनाशकोलेपादथपाटलवर्णक ॥
 ग्रीष्मपीडा रुफवातनाशयेदिति कर्तित ।
 रक्तादिचतुर्गेभेदागुणा श्वेतहयारिवत् ॥ (नि०२०)

अर्थ-लाठ कानेर-शोधक, चरपरी, पदनेके समान काली और इमका
 लेप कर्ममें कोद दूर होताहै । गुलाबी कानेर-मस्तकशुद्ध, पद, नाभ,

इनका नाश करेहै, इसके और गुग तथा गीली, काली कनेरोंके गुण सफेद कनेरकी समान जानने ।

विवरण । कनेरके वृक्ष, वन, उपवन और पुष्पवाटिकामें लगाये जातेहैं । इसपर लाल, गुलाबी, सफेद, पीले और काले फूल आतेहैं लाल, पीले और सफेद फूलकी कनेर सर्वत्र होतीहै ।

कनेरमें विष होता है । इसको बिना विचारे खानेसे मनुष्य मृत्युको प्राप्त होते हैं इसकारण इसको बिना विचारे कभी भक्षण करना नहीं चाहिये । इसका घी बनाते हैं, वह घी अत्यन्त नसीला होताहै । मात्रा दोगुत्तीसे लेकर चाररत्तीतककी ।

धुस्तरनामानि ।



धुस्तूरोमदनोन्मत्त कितव कनकाक्षय ।
शिवप्रियोमहामोही देविकाखग्दूषण ॥

अर्थ—धुस्तूर, मदन, उन्मत्त, कितव, कनकाक्षय, शिवप्रिय, महामोही, देविका, खग्दूषण, (धूर्त, मातुल, पुरीमोद, धूर्तमृत, धतूर, घण्टिक, शठ, मातुलक, श्याम, शिवशेखर, सज्जन, कादलापुष्प, रस, कण्टक, मोहन, कलम, मत्त, शैव, तूरी, धुस्तूर, धतूर, उन्मत्तक, मदनक, दरवलभ, कण्ट-

फल, कनक, सविष, मोहन, मदकर, घण्टापुष्प, महाघट और जितने सुवर्णके नाम हैं वो सब इसके भी जानने)

हिन्दीभाषामें धनूरा ।

बगलाभाषामें धुतुरा ।

मराठीभाषामें घोघ्रा, घोतरा ।

गुजरातीभाषामें धतुरो ।

कर्णाटकीभाषामें मदकुणिके ।

तैलिङ्गीभाषामें नालाउम्मीते, उम्मेत्तचेष्टु ।

तामिलीभाषामें उमततार्ह, कारुडमते ।

पाहलीभाषामें सतुल्या, तातरईसफेदा ।

इंग्रेजीभाषामें थोर्नअपल स्ट्रामोनिय Thorn apple Stramonium

लैटिन्भाषामें डादुरा स्ट्रामोनिय डादुराजाल्या, डा०फेस्टुओसा

Delura stramonium D albo D 1091000

अरबीभाषामें जोजमासील जोजनसी तादुरा ।

अस्य गुणा ।

धत्तूरोमदवर्णाग्निवातकृज्ज्वरकुष्ठनुत् ।

कपायोमधुरस्तिक्तोयूकालिक्षाविनाशनः ॥

उष्णो गुरुर्वणश्लेष्मकण्डूकृमिविपापहः । (भा० प्र०)

अर्थ-धत्तूरा-मद, वण, अग्नि और वात इनको करनेवाला, ज्वरको दूर करनेवाला, कोढ़का नाश करनेवाला, फोला, मीठा, कट्ठा चुपे और छीसाको दूर करनेवाला, गरम, भारी तथा मग्न, कफ, कण्डू, कृमि और विषनाशक है ।
अविष ।

धत्तूरकट्टरुष्णश्चक्रांतिकारीव्रणातिनुत् ।

त्वग्दोषखर्जुकण्डूतिज्वरहारीभ्रमप्रद । (ग० नि०)

अर्थ-धत्तूरा-कट्ट, उष्ण, कान्तिकारी तथा मग्न, त्वचाके रोग, राश, कण्डू और ज्वरको दूर करने तथा भ्रमदायक है ।
अपघ्न ।

धत्तूरोदुहरक्तघ्नोव्रणाविषपित्तकृत् ॥ (श्रीडयनिगण्ड)

अर्थ-धत्तूरा-दुहरक्तनाशक, मग्नको दूर करनेवाला, विष और पित्तको दूर करे है ।

अपिच ।

धत्तूरकौचसविषौतितोयौमोहकारकौ ।

कुष्ठदुष्टव्रणहरौकामलाशौविषापहौ ॥ (ग० नि०)

अर्थ—दोनों प्रकारके धत्तूरे (काला और सफेद) विषयुक्त, कडवे, उग्र, मोहकारक तथा कुष्ठ, दुष्टव्रण, कामला, बवासीर और विषको नष्टकरेहैं ।

अपिच ।

धत्तूरःकान्तिकृच्चोष्ण कटुकश्चाग्निदीपकः ।

तुवरोमधुरस्तिक्तोमदकृद्वातिकृद्गुरुः ॥

वर्ण्यःकुष्ठव्रणश्लेष्मज्वरकण्डूकृमीञ्जयेत् ।

यूकालिक्षाश्रमविषपामात्वग्दोषनाशनः ॥

एषुकृष्णोगुणैःश्रेष्ठोमुनिभिःपरिकीर्तितः (नि० र०)

अर्थ—धत्तूरा—कान्तिकारक, गरम, चरपरा, आग्निदीपक, कपेला, मधुर, कडवा, मदकारक, वान्तिकरनेवाला, भारी, वर्णकर्त्ता तथा कुष्ठ, व्रण, कफ-ज्वर, कण्डू, कृमि, जुआ, लीख, आम, विष, पामा और त्वचाके रोगोंका नाशकरेहै इन सबप्रकारके धत्तूरोंमें काला गुणोंमें श्रेष्ठ है ।

अपिच ।

धुस्तूरोमूर्च्छाजनकोवह्निपित्तञ्चनाशयेत् (रा० व०)

अर्थ—धत्तूरा—मूर्च्छाकारक अग्नि और पित्तका नाशकरेहै ।

कृष्णधत्तूरकनामानि ।

कृष्णधत्तूरकःसिद्धः कनकसचिव शिवः ।

कृष्णपुष्पोविपाराति क्रूरधूर्तश्चकीर्तितः ॥ (रा० व०)

अर्थ—कृष्णधत्तूरक—सिद्ध, कनक, सचिव, शिव, कृष्णपुष्प, विपाराति, क्रूरधूर्त ।

हिन्दीभाषामें

कालाधत्तूरा ।

बगलाभाषामें

धुनूरा, कनकधुत्तूरा ।

कर्णाटकभाषामें

करीयमदगणिके ।

राजधत्तूरकनामानि ।

राजधत्तूरकश्चान्योराजधूर्तोमहाशठ ।

फल, कनक, सविष, मोहन, मदकर, घण्टापुष्प, महाशठ और जितने सुवर्णके नाम हैं वो सब इसके भी जानने)

| | |
|-----------------|---|
| हिन्दीभाषामें | धतूरा । |
| बंगलाभाषामें | धतूरा । |
| मराठीभाषामें | घोत्रा, धोतरा । |
| गुजरातीभाषामें | धतूरो । |
| कर्णाटकीभाषामें | मदकुणिके । |
| तैलिङ्गीभाषामें | नाल्लाउम्मात्ते, उम्मेत्तचेट्टु । |
| तामिलीभाषामें | उमतताई, कारुउमते । |
| पादलीभाषामें | सतुल्या, तातरईसफेदा । |
| इंग्रेजीभाषामें | थोर्नआपल स्ट्रामोनिय Thorn apple Stramonium |
| लैटिन्भाषामें | डाटुरा स्ट्रामोनिय डाटुराआल्बा, डा०फेस्टुभोसा Datura stramonium D. albo D. Innoxia |

अरबीभाषामें

जोजमासील जोजनसी तातूरा ।

अस्य गुणाः ।

धत्तूरोमदवर्णाग्निवातकृज्ज्वरकुष्ठनुत् ।

कपायोमधुरस्तिक्तोष्णकालिक्षाविनाशनः ॥

उष्णोगुरुवर्णश्लेष्मकण्डूकृमिविपापहः । (भा० प्र०)

अर्थ—धतूरा—मद, वर्ण, अग्नि और वात इनको करनेवाला, ज्वरको दूर करने-वाला, कोढ़का नाश करनेवाला, कपेला, मीठा, कट्या सुपे और छीलोंको दूर करनेवाला, गरम, भारी तथा मृण, कफ, कण्डू, कृमि और विषनाशक है ।
अपिच ।

धत्तूरकटुरुष्णश्चक्रांतिकारीव्रणार्तिनुत् ।

त्वग्दोषखर्जुकण्डूतिज्वरहारीभ्रमप्रदः । (रा० नि०)

अर्थ—धतूरा—कटु, उष्ण, क्रान्तिकारी तथा मृण, त्वचाके रोग, गर्ह कण्डू और ज्वरको दूर करे तथा भ्रमदायक है ।
अपिच ।

धत्तूरोदुष्टरक्तघ्नोव्रणदाविषपित्तकृत् ॥ (शोडलनिवण्टु)

अर्थ—धतूरा—दुष्टरक्तनाशक, व्रणको दूर करनेवाला, विष और विषको दूर करे है ।

अपिच ।

धत्तूरकौचसविषौतित्तोयौमोहकारकौ ।

कुष्ठदुष्टव्रणहरौकामलाशौविषापहौ ॥ (ग० नि०)

अर्थ-दोनोंप्रकारके धत्तूरे (काला और सफेद) विषयुक्त, कडवे, उग्र, मोहकारक तथा कुष्ठ, दुष्टव्रण, कामला, बवासीर और विषको नष्टकरेहैं ।

अपिच ।

धत्तूरःकांतिकृच्चोष्णकटुकश्चाग्निदीपकः ।

तुवरोमधुरस्तिक्तोमदकृद्वांतिकृद्गुरु ॥

वर्ण्यःकुष्ठव्रणश्लेष्मज्वरकण्डूकृमीञ्जयेत् ।

यूकालिक्षाश्रमविषपामात्वग्दोषनाशनः ॥

एषुकृष्णोगुणैश्चेष्टोमुनिभिर्परिकीर्तितः (नि० २०)

अर्थ-धत्तूरा-कान्तिकारक, गरम, चरपरा, अग्निदीपक, कपेला, मधुर, कडवा, मदकारक, वान्तिकरनेवाला, भारी, वर्णकर्त्ता तथा कुष्ठ, व्रण, कफ-ज्वर, कण्डू, कृमि, जुआ, लीख, आम, विष, पामा और त्वचाके रोगोंका नाशकरेहै इन सबप्रकारके धत्तूरोंमें काला गुणोंमें श्रेष्ठ है ।

अपिच ।

धुस्तूरोमूर्च्छाजनकोवह्निपित्तञ्चनाशयेत् (रा० व०)

अर्थ-धत्तूरा-मूर्च्छाकारक अग्नि और पित्तका नाशकरेहै ।

कृष्णधत्तूरकनामानि ।

कृष्णधत्तूरकःसिद्धः कनकःसचिवःशिवः ।

कृष्णपुष्पोविपाराति क्रूरधूर्तश्चकीर्तितः ॥ (रा० व०)

अर्थ-कृष्णधत्तूरक-सिद्ध, कनक, सचिव, शिव, कृष्णपुष्प, विपाराति, क्रूरधूर्त ।

हिन्दीभाषामें

कालाधत्तूरा ।

बगलाभाषामें

धुनूरा, कनकधत्तूरा ।

कर्णाटकीभाषामें

करीयमद्गणिके ।

राजधत्तूरनामानि ।

राजधत्तूरकश्चान्योराजधूर्तोमहाशठः ।

निर्घ्रैणिषुष्पकोभ्रान्तोराजस्वर्ण पडाह्वयः ॥

अर्थ-राजघचूरक, राजचूर्च, महाशठ, निर्घ्रैणिषुष्पक, भ्रान्त, गनरक और पडाह्वय ।

सितनीलकृष्णलोहितपीतप्रमवाश्चसतिधचूरा ।

सामान्यगुणोपेतास्तेषुगुणाव्यस्तकृष्णकुसुम स्यात् ॥

अर्थ-धतूरे-सफेद, नीले, काले, लाल और पंले फूलों के होते हैं, इन सबोंमें सामान्यही गुण हैं, किन्तु काले फूलका धतूरा अधिक गुणगाला है ।

प्रमाण

श्वासके रोगमें घट्टेदुष्प्रागकी रोकनेके लिये इसके सूखे डठल और पत्तोंका धुआ पिलावे । वातादिरोग और चोटलगीदूरे दर्दकी जगहमें धतूरेका रंग मापका घी और सेंधानान मिलाकर दर्दके स्थानमें लगावे । धतूरेके बीजमें वातजनित शिरोरोग आराम होताई ।

विवरण । धतूरा फूलके भेदसे काला, नीला, सफेद, पीला ४-५ प्रकारका होताई । प्रायः जगहमें उत्पन्न होताई । फाले और मुनदगी फूलका धतूरा बागादिमें होताई, पत्ते मध्यमाकार होतेई, फूल त्रणके आकार होताई । फूलका रंग बीचमें सफेद और ऊपर सफेद, नीला, पाला पीला, होताई, जिसके पांच भाग होतेई, फूलकी बाहिरी पांच पत्ताडियों नीले-गुनी होती है । फल-गोल, फाटेदार और भीतर बहुत बीजवाला होताई । जिस धतूरेका रंग अत्यन्त काला और दृश्य, पत्ते, फूल, पत्र तथा सर्वांग काला हो, उस धतूरेमें विष अधिक होताई और उसके गुणभी अधिक हैं, फल सफेदपत्र कटोर होजातेई इसके बीजोंमें विष अधिक होताई, उन बीजोंको माप्रासे अधिक खानेमें मृत्यु होताई, पैरोनादिक पातुष्टिकी औषधिमें इसके बीजोंका व्यवहार ग्रन्थामें लिगा है, इसके पीत प्रमेहकी दूर करनेमें, बाले धतूरेके पचावकी पूरसे गायी दूर होताई । धतूरेके मूदकी दूर करनेके लिये धतूरेकी मींगका ताग लेना चााईये, धतूरेका नाम धतूरेके विषकी दूर करनेवाला है । अथवा धतूरेके विषमें उगकी पीतफर पिलावे, तथा तत्कालका दूदा दुधा दूध और पी मिश्रण बीजाप ।

स्वयंदाह-धतूरा, पत्ते, बीज । माप्रा आर्षा रसीमें पत्र रसांतर ।

चासकनामानि ।



वासकोवासिकावासासिंहिकारामरूपक ।

मातृसिंहिवैद्यमाताकसनोत्पादनोवृष ॥

अर्थ-वासक, वासिका, वासा, सिंहिका, गमरूपक, मातृसिंहि, वैद्यमाता, कसनोत्पादन, वृष, (अमलक, सिंहि, वृष, सिंहास्य, वाजिदन्तक, आमलक, वाशा, वाशिका, अमरुप, वासक, वाम, वाजी, वैद्यसिंहि, सिंहपर्णी, भिषङ्-

माता, रसादनी, सिद्धमुखी, कण्ठीरवी, सितकर्णो, वाजिदन्ती, नागा, पद्म
मुखी, सिद्धपत्री, मृगेन्द्राणी, आटूरुत्त, अटूरुत्त मिहानन)

| | |
|----------------|--|
| सम्कृतभाषामें | वामक, आटूरुत्त । |
| हिन्दीभाषामें | वासा, अटूसा, विमोटा । |
| वङ्गभाषामें | वाकस, छोट वाकस । |
| मराठीभाषामें | अडुलसा । |
| गुजरातीभाषामें | अरडुशो । |
| कणाडकीभाषामें | आडसोगे । |
| तैलङ्गीभाषामें | आडासार, आडापाकु । |
| तामिळभाषामें | अपटोटे । |
| लैटिन्भाषामें | आघाटीडा बार्सीका । Adhatoris casaca अस्य गुणा । |

वासकोवातकृत्स्वर्य्यकफपित्तास्रनाशन ।

तिक्तस्तुवरकोद्व्योलघु शीतस्त्वृडार्तिहृत् ॥

श्वासकासज्वरच्छर्दिमोदकुष्ठक्षयापह । (भा प्र.)

अर्थ-अटूसा-वातकारक, स्वरको उत्तम बग्नेवाला, कफघ्न, रक्तपित्त-
नाशक, कडवा, कपेला, हृदयको हितकारी, हृत्का, शीतल तथा दृढा,
श्वास, खांसी, ज्वर, वमन, मोह, कोठ और क्षयरोगको दूर करे ।

अन्यथा ।

वासातिक्ताकटु शीताकासघ्नीरक्तपित्तजित् ।

कामलाकफवैकुण्ठज्वरश्रामक्षयापहा ॥ (राजनि०)

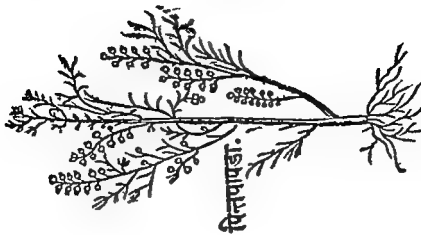
अर्थ-अटूसा-तिक्त, कटु, शीतल तथा खांसी, रक्तपित्त, कामला, कफ
विकलता, ज्वर, श्वास और क्षयरोगनाशक है ।

अटूसोका धुप होता है, पत्ते लम्बे अनीदार, अप्रसृद्धी समान होते हैं,
पूरा सफेद लगता है, दूसरा एक और छाल फूलका अटूसा होता है अटूसा
सर्वत्र मसिद्ध है ।

पपटनामानि ।

पपटोवरतिक्तश्चस्मृत'पपटकश्चस' ।

कथित.पांशुपर्यायस्तथाकचनामक ॥



अर्थ-पर्पट, वरातित्त, पर्पटक, पाशुपर्प्याय, कवचनामक, (त्रियष्टि, तित्त, चरक, वरक, भरक, रेणु, तृष्णारि, शीत, शीतप्रिय, पाशु, कलपाङ्ग, वर्मकण्टक, कृष्णशाख, प्रगन्ध, सुतित्त, रक्तपुष्पक, पित्तारी, कटुपत्र, नरु, शीतबल्लभ)

| | |
|----------------|----------------------------------|
| संस्कृतभाषामें | पर्पट । |
| हिन्दीभाषामें | पित्तपापडा, दवन पापरा । |
| वगभाषामें | क्षेत् पापडा । |
| मराठीभाषामें | सिरपठी, पित्तपापडा, को०-थरमरें । |
| वमु० | पित्तपापडा । |
| गुजरातीभाषामें | पित्तपापडो, खडमलियो । |
| | क्षेत्रपर्पट, धातो । |

| | |
|------------------|--|
| कर्णाटकी भाषामें | पपाटक । |
| तेलङ्गीभाषामें | पापार्टकमु । |
| औत्कलीभाषामें | जडपाँपुडा । |
| इंग्रेजीभाषामें | जस्टिमयाप्रोकवेन्स । <i>Justici Procorahens</i> |
| लैटिन् भाषामें | कुमेरियापार्वीफ्लोरा । <i>Eumeria Parviflora</i> |
| | कुमेरियाओफिसिनेलीस । <i>Eumeria officinalis</i> |
| फारसीभाषामें | शातरा । |
| अरबीभाषामें | चकत्तल मलीक । |

भस्व गुणः ।

पर्पट शीतलस्तित्त सग्राहीवातकोपन ।

माता, रसादनी, सिद्धमुग्गी, फण्डीखी, सितकर्णो, वाजिदन्ती, नासा, पद्म
सुखी, मिहपत्री, मृगेन्द्राणी, आटहरा, अटरूप (मिशानन)

संस्कृतभाषामें

वामन, आटरूप ।

हिन्दीभाषामें

वासा, अट्टसा, विसोंडा ।

बङ्गभाषामें

वाकत, छोट वाकन ।

मराठीभाषामें

अदुळसा ।

गुजरातीभाषामें

अरडुशो ।

कर्णाटकीभाषामें

आटसोगे ।

तेलङ्गीभाषामें

आडासार, आटापाहु ।

तामिलीभाषामें

अघडोटे ।

लैटिनभाषामें

आघाटोटा वार्सीका । Adhatoria vasca

अस्य गुणाः ।

वासकोवातकृत्स्वर्य्यकफपित्ताक्षनाशनः ।

तिक्तस्तुवरकोहृद्योलघु शीतस्त्वृडार्तिहृत् ॥

श्वासकासज्वरच्छर्दिमोहकुष्ठश्यापहः । (भा प्र.)

अर्थ-अट्टसा-वातकारक, स्वरको उत्तम करनेवाला, फट्फट, रक्तविष
नाशक, फट्फटा, फट्फटा, हृदयको दितकारी, हलका, शीतल तथा लघु,
श्वास, खांसी, ज्वर, वमन, मोह, कोट और क्षयभोगको दूर करे ।

अपघ्नः ।

वासातिक्ताकटुःशीताकासघ्नीरक्तपित्तजित् ।

कामलाकफवेकुब्धज्वरेश्वासश्यापहा ॥ (राजनि०)

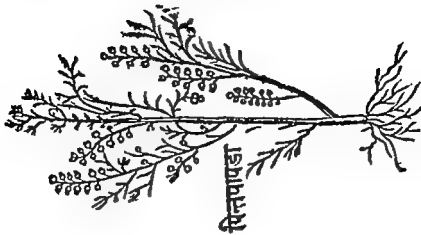
अर्थ-अट्टसा-तिक्त, कटु, शीतल तथा खांसी, रक्तविष, श्वासना, वमन
विकल्पा, ज्वर, श्वास और क्षयभोगनाशक है ।

अट्टमेका शुष होता है, पक्षे लम्बे अनीदार, अमरुदर्श समान होता है,
तृप्त सकेत लगता है, दूसरा एक और छान् पूरका अट्टसा होता है, अट्टसा
गवंप्र मसिद है ।

पपटवामानि ।

पपटोवरतिक्तअस्मृत-पपटकअस ।

कथित-पांशुपर्यायस्तथाकवचनामक ॥



अर्थ-पर्पट, वरातित्त, पर्पटक, पाशुपर्प्याय, कवचनामक, (त्रियष्टि, तित्त, चरक, वरक, भरक, रेणु, तृष्णारि, शीत, शीतप्रिय, पाशु, कलपाङ्ग, वर्मकण्टक, कृष्णशाख, प्रगन्ध, सुतित्त, रक्तपुष्पक, पित्तारी, कटुपन, नक्र, शीतबल्लभ)

| | |
|----------------|--------------------------------|
| संस्कृतभाषामें | पर्पट । |
| हिन्दीभाषामें | पित्तपापडा, दवन पापरा । |
| वगभाषामें | क्षेत पापडा । |
| मराठीभाषामें | तिरपठी, पित्तपापडा, को०-थरमर । |
| बम्० | पित्तपापडा । |
| गुजरातीभाषामें | पित्तपापडो, खडसलियो । |
| | क्षेत्रपर्पट, धातो । |

| | |
|------------------|--|
| कर्णाटकी भाषामें | पर्पाटक । |
| तेलङ्गीभाषामें | पापार्टकसु । |
| औत्कलीभाषामें | जडपाँपुडा । |
| इंग्रेजीभाषामें | जस्टिसयाप्रोकवेन्स । <i>Justici Procorahens</i> |
| लैटिन् भाषामें | कुमेरियापार्वीफ्लोरा । <i>Eumera Parviflora</i> |
| | कुमेरियाओफिसिनेर्लीस । <i>Eumera officinalis</i> |
| फारसीभाषामें | शातरा । |
| अरबीभाषामें | वकलतल मलीक । |

अस्य गुणाः ।

पर्पट शीतलस्तिक्त सग्राहीवातकोपनः ।

लघु पाकेचकटुकोहरेत्पित्तः फज्जरात् ॥

रक्तदोषारुचिर्दाहशानिभ्रममदाञ्जयेत् ।

प्रमेहवान्तिष्ठेत्पित्तानां च विनाशकः ।

अस्य शाका तु सग्राही शीतावातकरालघु ।

तिक्तारक्तरुजपित्तज्वरतृष्णाञ्चनाशयेत् ।

कफभ्रमचदाहञ्चनाशयेदितिकीर्तितम् । (नि० १०)

अर्थ-पित्तपापडा-शीतल, कडवा, मलरोधक, वातप्रकोपक, हृलका, पचनेमें चरपरा तथा पित्त, कफ, ज्वर, रुधिरविषाद, अरुचि, दाह, ग्यानि, भ्रम, मद, प्रमेह, वान्ति, तृषा और रक्तपित्तका नाश करनेवाला है । इसका शाक-मलरोधक, शीतल, वातकारक, हृलका, कडवा, रक्तरोग, पिण्डज, तृषा, कफ, भ्रम और दाहसे दूर करे ।

विवरण । इसका धूप होता है, इसकी दो जाती है एकमें नीला और दूसरेमें लाल पत्र आता है, इन दोनोंमें लालपत्रका अधिक गुणवाला है ।

निम्नतामानि ।



निम्बो नियमनो नेनापि तु मधुः सति कटुः ।

अग्निं स्रवंतो भद्रं सुभद्रं पाग्निभृत्कः ॥

शुकप्रियं भीषणं यवनेष्टो रत्नचः ।

दर्शनो हि गुनिर्योस पीतमागो गमिप्रियः ॥

अर्थ-निम्ब, नियमन, नेता, पिचुमद, सतित्तक, अगिष्ट, सर्वतोभद्र, सुभद्र, पारिभद्रक, शुक्रप्रिय, शीर्षपर्ण, यवनेष्ट, वगत्वच, उर्दन, हिगु, निर्यास, पीतसार, रविप्रिय, (मालरु, पिचुमद, पक्कृत, पृथारि, अर्कपादप, पूकमालक, कीटक, विवन्ध, निम्पक, कैटर्य, छर्दिन्न, प्रभद्र, काकफल, कीरेष्ट, सुमना, विशीर्षपर्ण, पीतसारक, शीत, राजभद्रक)

संस्कृतभाषामें निम्ब ।

हिन्दीभाषामें नीम ।

बंगलाभाषामें निमगाउ ।

मराठीभाषामें कडूनिंब ।

गुजरातीभाषामें लिंबडो ।

कर्णाटकीभाषामें बेड बेडु ।

तैलिङ्गीभाषामें बेया, टोयचेडु ।

तामिलीभाषामें वेणुमरम ।

इंग्रेजीभाषामें निंबट्री । Numbtree

लैटिन्भाषामें एकाडिरेकटा इंडिका । Azadiracta Indica

मेलियाएकाडिरेकटा । Meli Azadiracta

फारसीभाषामें नेनबूनीम तरस्तहक ।

अस्य गुणा ।

प्रभद्रक प्रभवतिशीततित्तक कफव्रणक्रिमिवमिशोकशातये ।

बलासभिद्वद्विविधपित्तदोषजिद्विशेषतोद्वद्वयविदाहशातिकृत ।

अर्थ-प्रभद्रक- (नीम) शीतल, कडवा तथा कफ, व्रण, कृमि, वमन, सूजन, बलास, बहुविध पित्तदोष और विशेषकरके हृदयकी दाहको शान्तकरहे ।

अप्यञ्च ।

निम्बवृक्षोलघु शीतस्तिक्तोग्राहीकटु स्मृत ।

अग्निमाद्यकरश्चैवव्रणशोधनकारकः ॥

शोथपाककगोवालेहितोरुद्योमतोबुधे ।

कृमिवान्तिव्रणकफशोफपित्तविषापह ॥

वातरुष्टश्चहृदाहश्रमकासज्वरतृषाम्

अरुचिरक्तदोषश्चमेहश्चैवविनाशयेत् ॥

अर्थ-नीम-दलका, जीतल, कटुवा, माही, कटु, मन्दाधिकारक, प्रण शोचक, शोफको पकानेवाला, चालकोंको हितकारक तथा शूलि, रमन, प्रण, कक, शोथ, पित्त, विष, वात, कुष्ठ, हृदयकी दाह, श्रम, रोगी, उरा, वृषा अरुचि, रुधिरविकार और प्रमेहका नाशक है ।

अस्य कोमलपल्लवगुणा ।

कोमल पल्लवश्चास्यग्राहकोवातकारकः ।

रक्तपित्तनेत्ररोगकुष्ठञ्चैवविनाशयेत् ॥ (नि० २०)

अर्थ-इसके कोमल पत्ते-माही, वातकारक तथा रक्तपित्त, नेत्ररोग और कुष्ठनाशक है ।

अस्य सामान्यप्रभुगुणः ।

निम्बपत्रंस्मृतनेत्र्यकृमिपित्तविप्रप्रणुतः ।

वातलकटुपाकश्चसर्वारोचककुष्ठनुतः । (भा० प्र०)

अर्थ-नीमके पत्ते-नेत्रोंको हितकारी, कृमि, पित्त और विषविनाशक है । यादी, पचनेमें कटु, तथा सर्वप्रकारकी अरुचि और कुष्ठनाशक है ।

अस्य जीर्णपत्रगुणा ।

जीर्णपर्णविभेषेणघ्ननाशकरमतम् ॥ (नि० २०)

अर्थ-इसके पुराने पत्ते-विभेष करके प्रणको दूर करनेवाले हैं ।

अस्य पुष्पगुणाः ।

निम्बवृक्षस्यपुष्पाणिपित्तप्रानिविशेषतः ।

तिक्तानिचकृमिप्रानितथाकफहराणिच ॥

अर्थ-नीमके पुष्प-पित्तनाशक, कटुवे तथा कृमि और वातको दग्धनेवाले हैं ।

अस्य सूक्ष्मशालिग्रामगुणाः ।

निम्बस्यसूक्ष्मशालातुकासश्चामार्शगुल्महा ।

कृमिमेहहृगप्रोक्ताफलचामलघुस्मृतम् ॥

स्निग्धश्चभेदकचोष्णमेहकुष्ठविनाशकम् ।

अर्थ-इसकी सूक्ष्मशाली-श्यामी, श्याम, पदार्थी, शुद्ध, कृमि और प्रमेहको दूर करनेवाली है, इसके अपघ्नक (कर्माविधायी) स्निग्ध, मिष्ट, भेदक, गरम, भेद और कुष्ठको नष्ट करने हैं ।

अन्यच्च ।

आमफलरसेतिक्तपाकेतुकटुकंमतम् ।

स्निग्धंलघूष्णकुष्ठघ्नगुल्मार्शःकृमिमेहनुत् ॥

अर्थ—कच्ची निंबोली—रसमें कड़वी, पचनेमें चरपरी, स्निग्ध, हलकी, गरम तथा कोढ़, गुल्म और बवासीर, कृमि और प्रमेहको हरनेवाली है ।

अस्य पक्वफलगुणा ।

निम्बस्यपक्वमधुरसुतिक्तस्निग्धफलशोणितपित्तरोगे ।

कफेप्रशस्तंनयनामयघ्नक्षतक्षयघ्नगुरुपिच्छलञ्च ॥

अर्थ—पक्की निंबोली—मधुर, कड़वी, स्निग्ध तथा रक्तपित्त, कफ, नेत्ररोग, क्षत और क्षयरोगनाशक है तथा भारी और पिच्छल है ।

अस्य बीजस्य मज्जागुणा ।

निम्बबीजस्यमज्जातुकुष्ठघ्नीकृमिनाशिनी ।

अर्थ—निंबोलीकी बीज—कुष्ठ और कृमिनाशक है ॥

अस्य तैलगुणा ।

निम्बतैलन्तुकुष्ठघ्नतिक्तकृमिहरपरम् ॥

अर्थ—नीमके बीजाका तेल—कड़वा कुष्ठ और कृमिनाशक है ।

अस्य पञ्चाङ्गगुणा ।

निम्बवृक्षस्यपञ्चागरक्तदोषहरमतम् ।

पित्तकण्डूव्रणदाहकुष्ठञ्चैवविनाशयेत् ॥

अर्थ—नीमका पञ्चाङ्ग—(छाल, पत्ते, फूल, फल, जड़) रुधिरविकार, पित्त, कण्डू, घ्रग, दाह और कुष्ठको दूर करेई ।

विवरण । नीमका पृष्ठ बड़ा होताहै, हिन्दोस्थानके सर्व स्थानोंमें अधिकतासे पाया जाताहै । वसन्तऋतुके आरम्भमें नये पत्ते और अन्तमें फूल आतेहैं । वमिरोगमें पत्तोंको पानीमें पकाके रोगीको पिलावे तो वमन और कुष्ठरोग बन्द होजायगा । मसूरिका रोगके लेपादिमें इसका व्यवहार होता है । मसूरकी दालको इसके पत्तोंम मिलाकर चैन महीनेमें देनेसे अत्यन्त विपेले मापकाभी विष नहीं चढ़ताहै । व्यवहार—छाल, पत्ते, फूल, तेल, जड़ । मात्रा १ पल ।

महानिम्बनामानि।

महानिम्ब स्मृतोद्रेकाकार्मुकोविषमुष्टिकः ।

केशमुष्टिर्निम्बकश्चरम्यकःशीर इत्यपि ॥

अर्थ-महानिम्ब, द्रेका, कार्मुक, विषमुष्टिक, केशमुष्टि, निम्बक, रम्यक, शीर, (काकाण्ड, बृहन्निम्ब, महातिक्त, महाद्रेष्क, हिमद्रुम, पावत, गैर्गिक, शुद्धसारक, सकालेयक, गिरिपत्र पवनेष्ट, कैश्यं)

संस्कृतभाषामें महानिम्ब ।

हिन्दीभाषामें चकायन ।

बंगलाभाषामें घोडानिम, महानिम ।

मराठीभाषामें चकाणीनिष, फडुनिष ।

गुजरातीभाषामें चान्प ।

कर्णाटकीभाषामें महावेष्ट ।

तैल्लिङ्गीभाषामें पेद्वेया, गगरायेचेष्ट, तुगकायन, चाण्डवेय ।

तामिलीभाषामें भालाड्वेनुवावेप्पम ।

लैटिन् भाषामें मेलिया एस्तेडेरक । *Melia Azadirach*

फारसीभाषामें आजाददरान्त ।

अरबीभाषामें बान (वृक्ष) हयूल, (घात्र)

अभ्य गुणा ।

महानिम्बोद्दिमोऽक्षस्तिकोऽग्रहीरुपायक ।

कफपित्तकृमिच्छर्दिकुष्ठहृत्तासरक्तजित् (प०नि०)

अर्थ-चकायन-जीवत, रुक्ष कटुती, मण्णरोक्त, कपेयी, तपा कफ पित्त, क्रिमि, वमन, घोट, हृत्ताम (उबकाई) और रुधिररिक्तको दूर करे ।

महानिम्ब कटुस्तिक शीतव्रतुपरोमत ।

रुक्षोऽग्रहीरुफदाद्वनंरक्तकृजंनया ॥

पित्तं कृमींश्च विषमज्वरचहृदयव्यथाम् ।

सर्वकुष्ठानिच्छर्दिचप्रमेहचविषुचिकाम् ॥

भृषिकाया विषगुल्मशीतपित्तजनाशयेत् ।

कोष्ठगोमंताभ्ररोगश्वासश्च निवारयेत् ॥

अर्थ-वकायन-कटु, तिक्त, शीतल, कपाय, रुक्ष, ग्राही तथा कफ, दाह, व्रण, रक्तरोग, पित्त, कृमि, विषमज्वर, हृदयव्यथा, सर्वप्रकारके कुष्ठ, वमन, प्रमेह, विषुचिका, मूषेका विष, गुल्म, शीतपित्त, कोटरोग, अर्शरोग और श्वासरोगको निवारण करनेवाली है ।

विवरण-वकायनके वृक्ष नीमकी समान अधिक लम्बे होतेहैं, पत्ते किंचित् बड़े होतेहैं, वकायनके फूल भी नीमकी समान होतेहैं परन्तु कुछ नीले रंगके होतेहैं फल गोल गोल होते हैं ।

कैडर्यनामानि ।

कैडर्योऽन्योमहानिम्बोरामणोरमणस्तथा ।

गिरिनिम्बोमहारिष्टशुक्लसारोऽलकाह्वयः ॥

अर्थ-कैडर्य-महानिम्ब, रामण, रमण, गिरिनिम्ब, महारिष्ट, शुक्लसार, अलकाह्वय (छर्दिघ्न, म्रियसाल, शुक्लसार, वरतिक्त)

| | |
|-----------------|---------------------------------------|
| संस्कृतभाषामें | कैडर्य । |
| हिन्दीभाषामें | मीठानीमें, कृष्णनिम्ब, वरसग । |
| बगभाषामें | घोडानिम्बविशेष । |
| मराठीभाषामें | कटवानिम्ब, धाणेरानिम्ब । |
| गुजरातीभाषामें | मोठोलीबढो । |
| कर्णाटकीमें | कपाहैवेड । |
| तैलिङ्गीमें | कारीवेया । |
| लैटिन्भाषामें | मरेयाकोनिजिआई । <i>Muraya korinji</i> |
| इंग्रेजीभाषामें | सजदकरखी कुनाह । |

अस्य गुणाः ।

कैडर्य कटुकस्तिक्त कपाय शीतलोलघु ।

सन्तापशोपकुष्टास्रकृमिभूतविषापह ॥ (रा० नि०)

अर्थ-मीठा नीम-कटु, तिक्त, कपाय, शीतल, रणु तथा सन्ताप, शोप, कुष्ठ, रुधिरविकार, कृमि, भूत और विषविनाशक है ।

अपच ।

कैडर्य शीतलस्तिक्त कटुश्चतुर्वरोलघु ।

दाहार्शकृमिशूलघ्न सन्तापविषनाशनः ॥

शोफकण्डूभूतवाधानाशयेदितिकीर्तितः । (नि० २०)

अर्थ-मीठानीम-शीतल, कटुवा, चरपरा, फोला, इत्यादि तथा शार, यवासीर, कृमि, शूल, मताप, विपनाशक, सूजन, कण्डू, और भूतबाधाको हरनेवाला है ।

विवरण । मंटेनीमका वृक्ष होताहै, पत्ते नीमकी समान किन्तु फोंरे गहिर होतेहैं, निबोली शुमखेमें आतीहै और पकनेके समय निबोलीका रंग छान पड जाताहै ।

पारिभद्रनामानि ।

पारिभद्रश्चपालाशोरक्तपुष्पः प्रभद्रकः ।

कण्टकीपारिजातः स्यान्मन्दारः कण्टकिंशुकः ॥

अर्थ-पारिभद्र, पालाश, रक्तपुष्प, प्रभद्रक, कण्टकी, पारिजात, मन्दार, कण्टकिंशुक (पारिजात, निम्बतरु, रक्तपुष्पक, किमिडावृ, रक्तशुम्भ, कृमिनाश, यक्षपुष्प, ग्लान्केर)

संस्कृतभाषामें

हिन्दीभाषामें

वगभाषामें

मराठीभाषामें

गुजरातीभाषामें

कर्णाटकीभाषामें

तैलिङ्गीभाषामें

द्राविडीभाषामें

तामिलीभाषामें

लैटिन्भाषामें

पारिभद्र ।

पगद ।

पान्तेमान्दार ।

पानरो (को०) पारिगा ।

पादेखो ।

रुगिवाण । (भरुमरम)

मुल्लमोतिचेट्ट मोट्टु, पारिदेवेय ।

पजीर ।

मुगण ।

एगिप्रिनाइटिका *Erythrina indica*

एगिप्रिनामुवगेष्ठा *Erythrina sulcavata*

अन्य गुणाः ।

पारिभद्र कृमिभ्लेष्ममेद कफानिलापहः ॥ (म० नि०)

अर्थ-पगद-कृमि, मर, मेद और कफनाशिनानाह है ।

अपिच ।

पारिभद्र कटूष्ण स्यात्कफवातनिकृन्तनः ।

अगोचकटहः पच्योदीपनश्चापि कीर्त्तिः ॥ (रा० नि०)

अर्थ—फरहद—कटु, उष्ण, कफवातनाशक, अरुचिहारक, पथ्य और दीपन है ।

अन्यञ्च ।

पारिभद्रःकटूष्णश्चपथ्यश्चाग्निप्रदीपकः ।

अरोचक कफकृमिमेहशोफहरःस्मृतः ॥

पुष्पपित्तरुजंहन्तिकर्णव्याधिविनाशयेत् ।

अर्थ—फरहद—कटु, उष्ण, पथ्य, अग्निप्रदीपक तथा अरुचि, कफ, कृमि, प्रमेह और सूजनको दूर करेहै, इसके फूल पित्तरोग और कर्णरोगनाशक हैं ।

विवरण । इसके वृक्ष जंगल और सड़कोंपर होतेहैं, पत्ते ठाककी समान एक डालीमें तीन तीन होते हैं, फूल लाल और सुन्दर होताहै, इसपर फली आतीहै, इसकी शाखाआमें सूक्ष्म काटे होते हैं । व्यवहार, छाल, पत्ते, फूल । मात्रा २ मामेकी ।

काञ्चनारनामानि ।



काञ्चनारक्तपुष्पश्चकान्तारःकनकप्रभः ।

सुवर्णारोथगिरिज.करकः काञ्चनारकः ॥

अर्थ—काञ्चन, रक्तपुष्प, कान्तार, कनकप्रभ, सुवर्णार, गिरिज, करक, काञ्चनारक, (युगपत्र, महापुष्प, गण्डारि, यमलच्छद, काञ्चनार, काञ्चनक, शोणपुष्पक, चमरिक, कुदाल, युगपत्रक, युगपत्र, काञ्चनाल, ताम्रपुष्प, कुदार, रक्तकाञ्चन, चम्पविदल, यमलच्छद)

कोविदारनामानि ।

कोविदारोथकुदाल कुदार कुण्डलीकुली ।

आस्फोटोदालक स्वल्पकेसरश्चमरीमतः ॥

अर्थ-कोविदार, कुशाल, पुष्पार, रुग्दली, सुन्नी, आसकोत, उरानक, स्वप्नोदर, चमरी, (काश्चनाल, कर्बुंगार, पाहारी, आशमन्तर)

ससृजभाषामें

काश्चना (ए), कोविदार ।

हिन्दीभाषामें

कचनार, सफेदकचनार ।

बगभाषामें

काश्चन, सरोदकाश्चन ।

मराठीभाषामें

कोरल, काश्चनरुत ।

गुजरातीभाषामें

चम्पाकाटी, चम्पोकाचनार जैना पात्राने चम्पाभाजी कहै छै ।

फर्णाटकीभाषामें

कोचाले कचनार ।

तैलङ्गीभाषामें

देवकाश्चन ।

लैटिनभाषामें

योदिनिया, बेरिणगेन । *Yodinia Beringena*

योदिनिया परगुरिआ ॥ *Paragura*

काश्चनारगुणा ।

काश्चनारोहिमोग्राहीतुवर श्लेष्मपित्तनुत् ।

कृमिरुष्टगुदभ्रशगण्डमालाव्रणापहः ॥ (भा० प्र०)

अर्थ-कचनार-शीतल, मलरोधक, कपेला, पित्त, कफनाशक तथा कृमि, कोठ, गुदभ्रज, गण्डमाला और व्रणका नाशकर है ।

अथवा ।

रक्तस्तुकाश्चन शीत सरोद्वमिप्रदीपन ।

संप्रोक्तन्तुवरोग्राहीरक्तपित्तव्रणकिमीन् ॥

गण्डमालारक्तपित्तरुष्टवाताश्चनाशनेन ।

गुदभ्रशरक्तपित्तनाशयेत्पुष्पमस्यच ॥

शीतल तुवररुक्षसमाहिमधुरं लघु ।

पित्तंक्षयश्चप्रदरंकासरक्तमज्जदरेत् ॥ (नि० १०)

अर्थ-काश्चना-शीतल, सागर, आम्रप्रदीपक, कपेला, मारी तथा कफ, पित्त, व्रण, कृमि, गण्डमाला, रक्तपित्त, पुष्प, वात, गुदभ्रज और मारिणको दूर करे है । इसके गुण-शीतल, कपेला, मारी, मधुर, लघु तथा पित्त, शय, प्रदर रोगों और रक्तमज्जको दूर करे है ।

श्वेतकाञ्चनगुणा ।

श्वेतस्तुकाञ्चनोग्राहीतुवरोमधुर स्मृतः ।

रुच्योरुक्षश्वासकासपित्तरक्तविकारहा ॥

क्षतप्रदरनुत्प्रोक्तोगुणाश्चान्येतुरक्तवत् ।

अर्थ—सफेदकचनार, ग्राही, कपेला, मधुर, रुचिकारक, रुक्ष, श्वास, खासी, पित्त, रक्तविकार, क्षत और प्रदररोगनाशक है । शेष गुण लाल कचनारकी समान जानने ।

कोविदारगुणा ।

कोविदारोदीपनः स्यात्कपाथोव्रणरोपण ।

सग्राहीसारकः स्वादुःपर्णशाकेषु चोत्तमः ॥

मूत्रकृच्छ्रत्रिदोषश्शोषदाहकफतथा ।

वातद्वरेत्पुष्पगुणारक्तकाञ्चनपुष्पवत् ॥

अर्थ—कोविदार—(सफेद कचनार) अग्निप्रदीपक, कपेला, घणको भरनेवाला, मलरोधक, सारक, स्वादिष्ट यह पत्रशाकमें उत्तम है । तथा मूत्रकृच्छ्र, त्रिदोष, शोष, दाह, कफ और वातनाशक है । इसके फलोंके गुण लालकचनारके समान जानने ।

पीतकाञ्चनारगुणा ।

पीतस्तुकाञ्चनोग्राहीदीपनोव्रणरोपण ।

तुवरोमूत्रकृच्छ्रस्य कफवाय्वोश्चनाशनः ॥

अर्थ—पीला कचनार—ग्राही, दीपन, व्रणरोपण, कपेला, मूत्रकृच्छ्र, कफ और वातनाशक है ।

काञ्चनीगुणा ।

काञ्चन्युक्ताशीर्परुजत्रिदोषचविनाशयेत् ।

स्तन्यस्पवर्द्धनकरीरुपिभिः सूक्ष्मदर्शिभिः ॥ (नि० र०)

अर्थ—काञ्चनी—(छोटाकचनार) गिरोरोग और त्रिदोषनाशक है । तथा स्तनोंमें दूध बढ़ानेवाला है ।

विवरण । कचनार लाल और मुफेट इनमें दोसे दोमकारका होता है । यह वृक्ष जंगल और पहाड़ोंमें अधिक होते हैं । पत्ते एक एक शाखामें बराबर दोदो होते हैं, मुफेट पूरा आते हैं, और फलियें लगती हैं, दूसरी प्रकारका कचनारभी ऐसा ही होता है परन्तु पूरा लाल रंगके होते हैं ।

शोभाजननामानि ।

शोभाजन-शिशुतीक्ष्णान्वकाक्षीयसुभाजनः ॥

अर्थ-शोभाजन, शिशु, तीक्ष्णान्वक, अक्षीय, सुभाजन, (तीक्ष्णान्वक, अक्षीय, शोभाजन, शोभाजन, विट्प्रथिनाशन, मधुगुञ्जन, हरीतकाक, पाक-पत्र, शिशुक, सुपत्रक, उपदश, क्षमादश, कोमलपत्रक, पद्मन, देशभूज, तीक्ष्णभूज, उग्र, कामिनीश, शोभतक, शोभाजन, मोचक, तीक्ष्णगन्ध, सुतीक्ष्ण, वनपल्लव, श्वेतमरिच, कटुकन्द, गन्ध, गन्धक, कालीयक, मेघन, आक्षीय, शुभाजन, त्रीचिचहारी, द्रविणनाशन, कृष्णगन्धा, मूलकपर्णी, मोच, तिलशिशु, जलमिय, मुखमोद, कृष्णशिशु, चन्दपा, रुचिगाशन)

शुक्लशिशुनामानि ।

श्वेतशिशु-सुतीक्ष्णश्चमुखभङ्ग-मिताह्वयः ॥

अर्थ-श्वेतशिशु, सुतीक्ष्ण, मुखभङ्ग, मिताह्वय, (श्वेतमरिच, गोचन, मुमुक्षु, मधुशिशुक)

रक्तशिशुनामानि ।

रक्तोऽसौमधुशिशु स्यात्सुरगीचशुभाजना ॥

अर्थ-रक्तशिशु, मधुशिशु, सुरगी, शुभाजना, (कृष्णबीज, गर्भपातक रक्तक, मधुर, चटुहृद, मुगन्ध, केमरी, मिद, मृगारी)

सस्कृत्रभाषामे

शोभाजन, श्वेतशिशु । रक्तशिशु ।

हिन्दीभाषामे

सैजिना, मन्दैर्दमैजिना, छालमैजिना ।

वगभाषामे

गमिने, सादागमिने, सादगतदो ।

मराठीभाषामे

शेगद, शेवगा ।

गुजरातीभाषामे

शुग्गयो ।

कर्णाटकीभाषामे

विन्निपुगि, वनपेपुगि ।

तमिऴ्नीभाषामे

मुमुक्षु ।

तामिऴ्नीभाषामे

रुसिगीभाषामे

श्वेतभाषामे

श्वेतभाषामे

शि

दीपनोरोचनोरूक्षःक्षारतित्तोविदाहकृत् ॥

संग्राहीशुकलोद्द्व्य पित्तरक्तग्रकोपनः ।

चक्षुष्यः कफवातघ्नोविद्रधिश्चयथुकिमीन् ॥

मेदोऽपचीविपष्टीहगुल्मगण्डव्रणान्हरेत् ॥ (भा० प्र०)

अर्थ—सैजिना—चरपरा, पचनेमेंभी चरपरा, तीक्ष्ण, गरम, मधुर, हलका, अग्निको दीपन करनेवाला, रुचिकारक, रूखा, क्षारयुक्त, कडवा, दाहजनक, मलरोधक, शुक्रवर्द्धक हृदयको हितकारी, पित्तको कुपित करनेवाला, रुधिरको दूषित करनेवाला नेत्रोंको हितकारी तथा कफ, वात, विद्रधि, सूजन, कृमि, मेदोरोग, अपची, विप, ण्डीहा, गुल्म, गण्डमाला और व्रणको दूर करनेवाला है ।

अन्यञ्च ।

शोभाजनस्तीक्ष्णकटु स्वादूष्ण पिच्छिलस्तथा ।

जन्तुवातार्तिशूलघ्नश्चक्षुष्योरोचन पर ॥ (रा० नि०)

अर्थ—सैजिना—तीक्ष्ण, चरपरा, स्वादिष्ट, गरम, पिच्छिल तथा कृमि, वातकी वेदना और शूलको निर्मूल करेहै । नेत्रोंको हितकारी और परम रोचनहै ।

श्वेतशिशुगुणा ।

श्वेत प्रोक्तगुणोज्ञेयोविशेषादाहकृद्भवेत् ।

ण्डीहानविद्रधिहन्तिव्रणघ्न पित्तरक्तकृत् ॥ (भा० प्र०)

अर्थ—सफेदसैजिनेके गुणभी सैजिनेकी समान हैं, विशेषकरके दाह उत्पन्न करेहै । तथा ण्डीहा, विद्रधि और व्रणको दूरकरेहै तथा पित्तरक्तकारकहै ।

अन्यञ्च ।

श्वेतशिशु कटुस्तीक्ष्ण शोफानिलनिकृन्तन ।

अङ्गव्यथाहरोरुच्योदीपनोमुखजाड्यनुत् ॥ (रा नि)

अर्थ—सफेदसैजिना—चरपरा, तीक्ष्ण, शोफनाशक, वातविनाशक, अग्न्ययानिवारक, रुचिकारक, अग्निको दीपनकरनेवाला और मुखकी जडताको दूरकरनेवाला है ।

रक्तशिशुगुणा ।

रक्तशिशुर्महावीर्योमधुरश्चरसायन ।

शोभाजननामानि ।

शोभाजनः शिशुतीक्ष्णान्धकाक्षीवसुभाजनः ॥

अर्थ-शोभाजन, शिशु, तीक्ष्णान्धक, अक्षीव, सुभाजन, (तीक्ष्ण, अक्षीव, शोभाजन, शोभाजन, विद्रधिनाशन, मधुगुञ्जन, दरीतगात्र, पत्र, शिशुक, सुपत्रक, उपदश, क्षमादश, कोमलपत्रक, घट्टगुण, तीक्ष्णमूल, उग्र, कामिनीश, शोभतक, शोभाजन, मोचक, तीक्ष्ण, वनपत्र, श्वेतमरिच, कटुकन्द, गन्ध, गन्धक, कालीय, आक्षीव, शुभाजन, श्रीचिन्ताहारी, द्रविणनाशन, कृष्णगन्धा, मोच तिलशिशु, जलमिष, मुरामोद, कृष्णशिशु, चतुपा, रुशिरा

शिशुनामानि ।

श्वेतशिशुः सुतीक्ष्णश्चमुखमद्गमिताह्वयः ॥

अर्थ-श्वेतशिशु, सुतीक्ष्ण, मुरामद्ग, तिताह्वय, (श्वेतम, सुगुण, मधुशिशुक)

रक्तशिशुनामानि ।

रक्तोऽसौ मधुशिशुः स्यात्सुरगीचशुभाजनः

अर्थ-रक्तशिशु, मधुशिशु, सुरगी, शुभाजना, (मधु, रक्तक, मधुर, चटुलद, शुगन्ध, केसरी, मिह, मृगारी)

सस्कृतभाषामे

हिन्दीभाषामे

बंगभाषामे

मराठीभाषामे

गुजरातीभाषामे

कर्णाटकीभाषामे

तेलुगुभाषामे

तामिळभाषामे

दरिणीभाषामे

इंग्रजीभाषामे

सिन्धिभाषामे

शोभाजन, श्वेतशिशु ।

मैजिना, महेश्वरीजिना,

समिती, सादासजिने

शेगट, शेवगा ।

शरपसे ।

विन्दिपन

मुग्ग

मो

शिशुः कटुक

कोढ, क्षय, श्वास और गुल्म (गोला) का नाश करेहै तथा दीपन है ।
विवरण । सैजिनेके वृक्ष वाग, वन और जगलम होतेहैं । इसकी फूलोंके
लौटफेरसे तीन जातीहैं, फूल सफेद, नीले और लाल आतेहैं, इनमेंसे सफेद
फूलका सैजिना अधिकतासे होताहै, इसकी फलियोंको दालमें डालकर
खाते हैं, सैजिनेका तेल अनेक प्रकारकी खुजलीको दूर करताहै ।

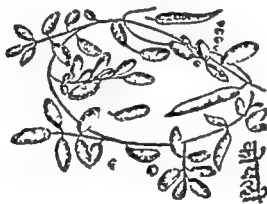
अपराजितानामानि ।

आस्फोतागिरिकर्णीस्याद्भूमिलग्रापराजिता ।

नगपर्यायकर्णीचगवाक्षीगिरिशालिनी ॥

अर्थ—आस्फोता, गिरिकर्णा, भूमिलग्रा, अपराजिता, नगपर्यायकर्णी,
गवाक्षी, गिरिशालिनी (अश्वक्षुरादिकर्णी, कटभी, दधिपुष्पिका, गर्दभी,
सितपुष्पा, श्वेतस्पदा, किणिही, श्वेता, भद्रा, सुपुष्पी, विपहनी, मुपुत्री,
सिहपुष्पी, श्वेतवराटा, गवादिनी)

नीलापराजितानामानि ।



नीलपुष्पीमहानीलास्यात्रीलागिरिकर्णिका ।

गवादिनीव्यक्तगन्धाविष्णुकान्ताविभाण्डिका ॥

अर्थ—नीलपुष्पी, महानीला, नीला, गिरिकर्णिका, गवादिनी, व्यक्तगन्धा,
विष्णुकान्ता, विभाण्डिका ।

| | |
|----------------|-------------------------|
| संस्कृतभाषामें | अपराजिता, नीलापराजिता । |
| हिन्दीभाषामें | सफेदकोयल, नीलीकोयल । |
| बंगलाभाषामें | अपराजिता, नीलपराजिता । |
| मराठीभाषामें | गोकर्णा काळी, पादरी । |

| | |
|-----------------|---------------------------------------|
| गुजरातीभाषामें | गरणी । |
| कर्णाटकीभाषामें | बिलीयगिरिकाणिके, नीलगिरिकाणिके । |
| तैलद्वीभाषामें | नीलगदुना । |
| लैटिनभाषामें | म्रीशोरिआ टर्नेगिया Cletorea Ternatea |
| ले० | मेनोरिअन् Megorian |
| अ० | मनीरगुतणं६-१ । |

मपतानितागुना ।

श्वेतागोकर्णिकाकट्टीशीतातिकाचबुद्धिदा ।

चक्षुष्यातुवराचैवसराविषविनाशिनी ॥

त्रिदोषशीर्पशूलञ्चदाहंकुष्ठञ्चशूलकम् ।

आमपित्तरुजंचैवशोथजन्तून्त्रणकफम् ॥

ग्रहपीडाभीर्पगैगविपसर्पस्यनाशयेत् ।

अर्थ-सफेद कोयल-चरणी, शीतल, पट्टरी, बुद्धिदायक, नेत्रोंको हिनकारी, कपेली, सरा (दस्तावर), विषविनाशक तथा त्रिदोष, मस्तक-शूल, दाह, फोड, शूल, आम, पित्तरोग, सूजन, कृमि, त्रण (पार), कफ, ग्रहपीडा, मस्तकोग और मयोंके विषको दूर करे ।

कृष्णगोर्णिकागुना ।

कृष्णगोर्णिकातित्कारमेम्निग्धात्रिदोषदा ।

शीतवीर्यावातपित्तज्वरदहभ्रमापहा ॥

पिशाचशाधारक्तातिसारोन्मादमदापहा ।

अतिकासधामकफकुष्ठजंतुसनापहा ॥

अन्येगुणास्तुसुप्तेतगोर्णीसदृशामता ।

अर्थ-नीलीपौष-कट्टी, विषय, त्रिदोषनाशक, शीतरीत्य तथा शूल, पित्त, ज्वर, दाह, भ्रम, पिशाचपाषा, रक्तानिहार, उन्माद, भ्रम, भ्रम, रोगी, आम, कफ, फोड, जन्तु, और सामोगको दूर करे । शीत गुण मने अरुगमिताकी समान जानो ।

विराग-कांसल मने और नीले पुष्पोंके भेदों दो प्रकारकी हैं यह रोग पाग और उपरनोंमें होती है यसे छोटे गुलाबकी समान होती है इसका पुष्प लाली भाली है ।

सिन्दुवारनामानि ।

इन्द्राणिकेन्द्रसुरसोनिगुण्डीसिन्धुवारक ॥

अर्थ-इन्द्राणिका, इन्द्रसुरस, निगुण्डी, सिन्धुवारक, (सिन्धुवार, सिन्धु-
वारक, सिन्धुक, इन्द्रसुरिप, सिन्दुवारित, इन्द्राणी, शकाणी, काशनाशिनी,
सुरसा, सिन्धु, शुरुपृष्ठक, विसुगन्धक, सुरस, श्वेतपुष्प, स्थिरसाधनक,
अनन्त, सिद्धक, अर्थसिद्धक, सिन्दुवारिका)

नीलसिन्धुवारनामानि ।



नीलकानीलनिगुण्डीसिन्दुकोनीलसिन्दुक ॥

अर्थ-नीलिका, नीलनिगुण्डी, सिन्दुक, नीलसिन्दुक, (नीलसिन्धुवार,
पीतमहा, निगुण्डी, भूतकेशी, इन्द्राणी, नीलिका, कपिका, शोफालिका,
शीतभारु, नीलिका, नीलमञ्जरी, कर्त्तरीपत्रा, भूतकेशी, वनजा, मरुत्पत्री,
वनेन्द्राणी)

संस्कृतभाषामें
हिन्दीभाषामें

सिन्दुवार, नीलसिन्दुवार, निगुण्डी, निगुण्डीभेद ।
सम्हाल, निगुण्डी, मेउडी, नीलसम्हाल, सिद्ध,
सम्हालके बीज ।

वगभाषामें
मराठीभाषामें

निशिन्दा, नीलनिशिन्दा ।
निगुण्डी-पाटन्याफुलाची, काज्याफुलाची, लिंगुर,
निगुण्डीचें बीज ।

गुजरातीभाषामें

नागढय, नागढयनारी ।

| | |
|-----------------|---|
| कर्णाटकीभाषामें | करियल्लाविमेउदी विलीयलोके । |
| तामिलीभाषामें | नोकूचि, निनोचि, मनजाप । |
| बम्० | निगुण्डी, काट्टे, कन् अदनुत्ता । |
| द्रा० | सानवाल्लि, कालिमुम्बाल्लि । |
| पञ्जाबीभाषामें | वणा, लहरि । |
| कोकणीभाषामें | नगृह, सेन्दवार । |
| इंग्रेजीभाषामें | कार्डविलेन्ड चेष्ट्री । <i>Cardleaves Character</i> |
| लैटिन्भाषामें | वाइटेस्मानिगण्ड । <i>Vitex Negundo</i> |
| तैलिङ्गीभाषामें | वेलावाविली, नायिलिचेदु, तेत्त, नन्दविन्दे वयिनी |
| फारसीभाषामें | परगुष्ट, तुरुमेपसगुष्ट-मितवान । |
| अरबीभाषामें | असदुक, इडुल्फुषा, यनरुल, अगदुय । |
| | सिन्दुवारगुणा । |

सिन्दुक स्मृतिदस्तिक कपाय कट्टकोलघु ।

केश्योनेत्रदितोदतिशूलशोधाममारुतान् ॥

कुमिकुष्टारुचिश्लेष्मज्वरात्रीला सिता द्विधा ।

सिन्दुवारदलजन्तुवातश्लेष्मदरलघु ॥ (भाषमराग)

अर्थ-सम्मान-और नीलसम्मान दोनों स्मरणशक्तिदायक, कपड़े, घरपरे इसके पाठोंको मुन्दरतागमक, नेत्राको दितकारी तथा शूल, घृत्न, आम वात, कृमि, खाँद, अग्नि, कफ और उदरको दूर करेंगे । सम्मानके पत्र-कृमि, वात और कफनाशक है तथा इसके ।

कट्टगुणानीलनिगुण्डीतिकाकृत्ताचकासजित ।

श्लेष्मशोफसमीरातिप्रदगध्मानहारिणी ॥ (रा० ति०)

अर्थ-नीलनिगुण्डी-कट्ट (चपरी) गुण (गम) ति (कट्टी) रू (रूपा) तथा काय (रांगी) रज, शोथ (गुप्न), दातरी वेदना, प्रदरोग और आध्मान (अताग) को दूर करेंगे ।

अवस्था ।

निगुण्डीकट्टकातिकाकृत्ताचकासजित ।

स्मृतिप्रदानेन्द्रिताकेश्यालक्ष्मिदीपनी ॥

मेधावर्ण्यचमप्रोतागुदनातस्थपदा ।

सन्धिवातश्चवातश्चशोफवामकृमीस्तथा ॥

कुष्ठकफव्रणप्लीहांगुल्मकण्ठरुजतथा ।

विपश्मूलचारुचिचज्वरमेदोरुजतथा ॥

गृध्रसीचप्रतिश्यायकासश्वासचनाशयेत् ।

पित्तनाशकरीप्रोक्तापर्णमस्यालघुस्मृतम् ॥

कृमिनाशकरप्रोक्तपूर्ववैद्यैःकृपालुभिः ।

अर्थ—निर्गुण्डी—चरपरी, कडवी, रुखी, गरम, कपेली, स्मरणशक्ति-
दायक, नेत्रोंको हितकारी, केशोंको सुन्दरतादायक, हल्की अग्निको
दीपन करनेवाली, मेघाजनक, वर्णकारक तथा गुदवात, क्षय, सन्धिवात,
सूजन, आम, कृमि, कोढ़, कफ, घाव, प्लीहा, गोला, कण्ठरोग, विप, शूल,
अरुचि, ज्वर, मेदोरोग, गृध्रसीवात, प्रतिश्याय, (नाकसे पानीगिरना)
खासी, श्वास और पित्तको दूर करेहै । इसके पत्ते—हल्के और कृमि-
रोगनाशक हैं ।

चतुरोनिर्गुण्डीगुणा ।

निर्गुण्डीकर्तरीयुक्ताकट्टीतित्ताकफापहा ।

वातक्षयश्चशूलश्चकण्डूकुष्ठचनाशयेत् ॥

अर्थ—कर्तरी, निर्गुण्डी—चरपरी, कडवी, कफनाशक तथा वात, क्षय, शूल,
कण्डू और कुष्ठको नष्ट करेहै ।

भरण्यनिर्गुण्डीगुणा ।

प्रोक्ताचारण्यनिर्गुण्डीपथ्यापित्तज्वरहरेत् ।

विपचगृध्रसीवातनाशयेद्वर्णकारिणी ॥

पर्णचास्यास्तुकटुकचाग्निदीप्तिकरलघु ।

कृमीन्कफश्चवातश्चनाशयेदितिकीर्तितम् ॥

कटु चोष्ण पुष्पमस्यास्तित्तकृमिकफापहम् ।

प्लीहागुल्मश्चवातश्चकुष्ठशोथश्चनाशयेत् ॥

अरुचेर्नाशकप्रोक्तकण्डूचेवविनाशयेत् । (नि० र०)

अर्थ—चननिर्गुण्डी—पथ्य तथा पित्तज्वर, विप और गृध्रसीवातनाशक

है और वर्णकारक है। इसमें पत्ते-चरपरे, भग्निको दीपन करनेवाले, इसके तथा कृमि, कफ और वातनाशक है। इसके पुष्प-चरपरे, गग्ग, कटरे, तथा कृमि, कफ, घृहा, गोल्ला, वात, शोथ, सुजा, भग्निको और कष्ट तथा खुजलीका नाश करे।

विवरण । नियुण्डीके वृक्ष याग और बनोंमें होते हैं। पत्ते आहर्षकी समान होते हैं। एक दूरीपर पाच पाच होते हैं। पत्ते नीचे और नीचे सपेह होते हैं। नियुण्डी अनेक जातिकी होती है किन्तीपर बाड़े और किन्तीपर गन्ध फल आते हैं। फल आमके मौगकी समान गुच्छेदार और केगरी रंगरे होते हैं व्यवहार । मूल । मात्रा ३ मासेकी ।

कुटजनामानि ।



कुटजोमल्लिकापुष्प शकाभोवरत्तिकर ॥

अर्थ-कुटज, मल्लिकापुष्प, शकाभ, वरत्तिक, (शक, बामक, गिगिहिका, पाण्डुर, कटु, सुक, बोटज, रित्तक, रक्तनाशक मृगक, शकाभ, शकपपाप, मृग, बारी, कालिक, मल्लिका, पुष्प, मापुष्प, शकाभ, शकाभ, शकाभ, पाण्डुम, मापुष्प, महाभाप, इन्द्र, शकभागी)

| | |
|---------------|----------------|
| संग्रहभाषामे | मृग । |
| हिन्दीभाषामे | कुडा, बोटिया । |
| बंगलाभाषामे | कटि, मृग । |
| मराठीभाषामे | कुडा । |
| गुजरातीभाषामे | कटि । |

| | |
|-----------------|---|
| कर्णाटकीभाषामें | कोडसिगेयमहनु । |
| तैलिगीभाषामें | अकेलु चगलकुष्ठ । |
| तामिलीभाषामें | वेप्याले |
| तु० | कोडजि । |
| इंग्रेजीभाषामें | ओवल्लेड रोसवे । Ovalleaved Rose Bay |
| लैटिन् भाषामें | राइटियाएन्टिडिसेन्टारिका । Wrightia antidysenterica |
| अरबीभाषामें | तिवाज । |

अस्य गुणाः ।

कुटज-कटुकोरूक्षोदीपनस्तुवरोलघु ।

अशोतिसारपित्तास्रकफतृष्णामपित्तनुत् ॥

तत्पुष्पशीतलतिक्तकपायलघुदीपनम् ।

वातलकफपित्तास्रकुष्ठातीसारजन्तुजित् ॥

तस्यशिम्बीभवशाकव्यजनचामवातजित् ।

रुच्यकफघ्नरक्तातीसारकुष्ठक्रिमीञ्जयेत् ॥ (म० वि०)

अर्थ—कुडा—चरपरा, रूखा, दीपन, कपेला, हल्का तथा बवासीर, अतिसार, रक्तपित्त, कफ, तृषा, आम और पित्तको दूर करेहै । कुडके फूल—शीतल, कडवे, कपेले, हल्के, दीपन, वातकारक तथा कफ, रक्तपित्त, कुष्ठ, अतिसार और कृमिको दूर करेहै । इसकी फलियोंका शाक—व्यञ्जन, आम—वातनाशक, रुचिकारक, कफनाशक तथा रक्तातिसार, कुष्ठ और कृमिको दूर करेहै, इसकी विशेष पर्याय और गुण एवं विवरणादिक सब दरीतक्या-दिवर्गमें देखो ।

वर्जनामानि ।



करज

करञ्जोनक्तमालश्चपुतिकःपुतिपत्रकः ।

पूतीकरञ्ज केडर्यःकलिमारवदारत ॥

अर्थ-करञ्ज, नक्तमात्र, पुतिर, पुतिपत्रक, पुतिररश्त्र, केडर्यः
कलिमार, (पुतिपत्र, पद्मपत्र, रोचन, गरज, गरभक, उन्नीर्य)

मणिः ।

चिरविल्वःकरञ्जन्य प्रकीर्णगौरवच ।

उदकीर्णपद्मन्योवृत्तपर्णःप्रकीर्तितः ॥

अर्थ-चिरविल्व, प्रकीर्ण, गौर, उदकीर्ण, पद्मन्य, और वृत्तपर्ण ।

भगवत् ।

करञ्जोनक्तमालश्चपुतिकश्चिरविल्वकः ।

पुतिपर्णोवृत्तफलोरोचनोगुच्छपुष्पकः ॥

अर्थ-करञ्ज, नक्तमात्र, पुतिक, चिरविल्व, पुतिपर्ण, वृत्तपर्ण, रोचन,
गुच्छपुष्पकः (अम्बुपत्र, तपस्वी, विषादि, वृत्तपर्णकः)

लघान्

उदकीर्णस्तृतीयोन्य पद्मन्यादस्तिवारुणी ।

अंगारवल्लीशार्ङ्गपाकाकभीरुभण्डिका ॥

अर्थ-उदकीर्ण-पद्मन्या, इन्तिवारुणी, अंगारवल्ली, शार्ङ्गपाका, कभीरु,
करभण्डिका ।

महाकरञ्जिकचिवमदहस्तिनिकाचसा ॥

अर्थ-महाकरञ्जिका, मदहस्तिनिका (पाचत्री मन्दहस्तिनी)

सत्तृतभाषामं करभ, पुतिपरश्च, वृत्तपरश्च, पद्मपत्र, महाकरञ्ज,

हिन्दीभाषामं करञ्ज, करभेद ।

वगभाषामं उदकीर्ण, पाचकश्च इत्यादि ।

मराठीभाषामं पाचककरञ्ज, पाचककरञ्ज, पाचक ।

गुजरातीभाषामं परञ्ज, चोन्नीर्य ।

कर्नाटीभाषामं नापनीपत्रम् वाटपदुर्गिणि ।

कोटिभाषामं वानुगपेष्ट वग ।

मरा० कोरा ।

वार्मिनीभाषामं कुमावरी ।

इंग्रेजीभाषामें
लैटिन्भाषामें

स्मूथलिब्द पोनगेमिया । Smooth leaved Pongamia
पोनगेमियाग्लेब्रा । Pongamia Glabra अलमम्
इन्टेग्रेफोलिया । Almus Integrefolia

करञ्जगुणा ।

करजःकटुकःपाकेनेत्र्योष्णस्तिक्तकोरसे ।
कपायोदावर्तवातानांयोनिदोषापह स्मृतः ॥
वातगुल्मार्शत्रिणहृत्कण्डूकफविपापहः ।
विचर्चिकापित्तकृमिदोषोदरमेहहा ॥
घ्नीहाहरश्चसप्रोक्तःफलमुष्णलघुस्मृतम् ।
शिरोरुग्वातकफहृत्कृमिकुष्ठार्शमेहनुत् ॥
पर्णपाकेकटूष्णस्याद्भेदकपित्तलघु ।
कफवातार्शकृमिनुद्विगणशोथअनाशयेत् ॥
पुष्पमुक्तचोष्णवीर्यपित्तवातकफापहम् ।
अस्यांकुरारसेपाकेकटुकाश्चाग्निदीपकाः ॥
पाचकाःकफवातार्शःकुष्ठकृमिविपापहा ।
शोथनाशकरा प्रोक्ताःऋषिभिःसूक्ष्मदर्शिभिः॥ (नि र)

अर्थ—करज—पचनेमें चरपरी, नेत्रोंको हितकारी, गरम, कडवी, कपेली
तथा उदावर्त, वात, योनिदोष, वातगुल्म, यवासीर, घाव, कण्डू, कफ, विष,
विचर्चिका, पित्त, कृमि, त्वचाके विकार, उदग्ररोग, प्रमेह और घ्नीहाको दूर
करनेवालीहै । करजके फल—गरम, हल्के तथा शिरोरोग, वात, कफ, कृमि,
कोढ़, यवासीर और प्रमेहको दूर करे है ।

इसके पत्ते—पचनेमें चरपरे, गरम, भेदक, (दस्तावर) पित्तजनक, हल्के
तथा कफ, वात, यवासीर, कृमि, घाव और सूजनको दूर करे हैं । इसके
पूल—उष्णवीर्य तथा पित्त, वात और कफका नाश करे है । इसके अंकुर—
रसमें और पचनेमें चरपरे, अग्निदीपन करनेवाले, पाचक, तथा कफ, वात,
यवासीर, कुष्ठ, कृमि, विष और सूजनको दूर करनेवालेहैं ।

अपिच ।

करञ्जोच्चरत्पद्मोपनाशनोदंतदाढ्यकृत् ।

करञ्जोनक्तमालश्रपृतिकःपृतिपत्रक ।

पृतीकरञ्ज केडर्य कलिमारुदागतः ॥

अर्थ-करञ्ज, नक्तमान्, पृतिक, पृतिपत्रक, पृतिकरञ्ज, केडर्य, कलिमार, (पृतिपर्ण, यदपन्न, रोचन, करञ्ज, करञ्जक, उदकीर्य)

मपिष्य ।

चिरविल्वकरञ्जन्य प्रकीर्णगौरवच ।

उदकीर्णपद्मन्थोवृत्तपर्णप्रकीर्तितः ॥

अर्थ-चिरविल्व, प्रकीर्ण, गौर, उदकीर्ण, पद्मन्थ, और वृत्तपर्ण ।

मप्यस्य ।

करञ्जोनक्तमालश्रपृतिकश्चिरविल्वकः ।

पृतिपर्णोवृत्तफलोरोचनोयुच्छपुष्पकः ॥

अर्थ-करञ्ज, नक्तमात्र, पृतिक, चिरविल्व, पृतिपर्ण, वृत्तफल, रोचन, युच्छपुष्पक (शिखपत्र, वपस्वी, विपारि, वृत्तपर्णक)

तथाप्य

उदकीर्यस्त्वृतीयोन्य पद्मन्थादस्तिवारुणी ।

अगारवल्लीशार्ङ्गिष्ठाकाकम्रीकभण्डिका ॥

अर्थ-उदकीर्य-पद्मन्था, दम्बिवारुणी, अगारवर्णी, शार्ङ्गिष्ठा, काकम्री, कभण्डिका ।

महाकर्मजिकचैत्रमदहस्तिनिकाचसा ॥

अर्थ-महाकर्मजिका, मदहस्तिनिका (काकम्री, मदहस्तिनी)

संस्तुतमापामे करञ्ज, पृतिकरञ्ज, वृत्तकर्ञ्ज, पद्मन्थ, मरारुकरञ्ज,

हिन्दीमापामे करञ्ज करञ्जपेद ।

वगमापामे उदकरञ्ज, नायकरञ्ज इत्यर्थः ।

मगदीमापामे शारङ्गारञ्ज, शालिमारञ्ज, पारुजा ।

गुजरातीमापामे चरञ्ज, चलेन्वचने ।

कर्णाटीमापामे नायगीपमानु, शारङ्गाभिगिर ।

तेजिहिमापामे कानुगनेष्टु, कत ।

मराठ

मादिहिमापामे ईगाधार ।

इय्रेजीभापामें
लैटिन्भापामें

स्मूथलिन्ड पोन्गेमिया । Smooth leaved Pongamia
पोन्गेमियाग्लेज़ा । Pongamia Glabra अलमस
इन्टेग्रेफोलिया । Almus Integrefolia

करञ्जगुणा ।

करजःकटुकःपाकेनेत्र्योष्णस्तिक्तकोरसे ।
कपायोदावर्तवातानांयोनिदोषापहःस्मृतः ॥
वातगुल्मार्शत्रिणद्धकण्डूकफविपापहः ।
विचर्चिकापित्तकृमिदोषोदरमेहहा ॥
प्लीहाहरश्चसप्रोक्तःफलमुष्णलघुस्मृतम् ।
शिरोरुग्वातकफहृत्कृमिकुष्ठार्शमेहनुत् ॥
पर्णपाकेकटूष्णस्याद्भेदकपित्तलघु ।
कफवातार्शकृमिनुद्विगणशोथश्चनाशयेत् ॥
पुष्पमुक्तचोष्णवीर्यपित्तवातकफापहम् ।
अस्याकुरारसेपाकेकटुकाश्चाग्निदीपकाः ॥
पाचकाःकफवातार्शःकुष्ठकृमिविपापहा ।
शोथनाशकरा प्रोक्ताःत्रिभिःसूक्ष्मदर्शिभिः॥ (नि र)

अर्थ—करज—पचनमें चरपरी, नेत्राको हितकारी, गरम, कड़वी, कपेली तथा उदावर्त, वात, योनिदोष, वातगुल्म, ववासीर, घाव, कण्डू, कफ, विप, विचर्चिका, पित्त, कृमि, त्वचाके विकार, उदररोग, प्रमेह और प्लीहाको दूर करनेवाली है । करजके फल—गरम, हलके तथा शिरोरोग, वात, कफ, कृमि, कोढ़, ववासीर और प्रमेहको दूर करे हैं ।

इसके पत्ते—पचनेमें चरपरे, गरम, भेदकारी (र) पित्तजनक, हलके तथा कफ, वात, ववासीर, कृमि, घाव और कुष्ठको दूर करे हैं । इसके फूल—उष्णवीर्य तथा पित्त, वात और कफको नाश करे हैं । इसके अंकुर—रसमें और पचनेमें चरपरे, अग्निदीपक करनेवाले, पाचक, तथा कफ, वात, ववासीर, कुष्ठ, कृमि, विप और शूलको दूर करनेवाले हैं ।

अपिच ।

करञ्जोज्वरत्वदोषनाशनोदतदाढ्यकृत् ।

कटुकोभेदनस्तम्यफलनयनपुष्पहत् ॥

पित्तश्लेष्मण्युदासीनविष्टम्भनविबन्धकृत् ॥ (शं० नि०)

अर्थ-यरज-ज्वर और त्वगाके दोषको दूर करे, हँसोको हट करे, चर्मपरी और दन्ताकरे । इसके पित्त-आमके पुष्टको दूर करे । तथा पित्त और कफको हरे, विष्टम्भ और विबन्धकारकरे ।

यस्यतेनगुणः ।

करजतेलतीक्ष्णोष्णकृमिहृत्कपित्तहृत् ।

नयनामयवातार्तिकुष्ठकण्डूव्रणप्रणुत् ॥

वातनुत्पित्तकृत्किञ्चिद्वेपनाश्मन्मदोषनुत् ॥ (आ० स०)

अर्थ-करजरा तड-तीक्ष्ण, गरम, कृमिनाशक, रक्षापिच्छराक नाशक, नेत्ररोग, वातकी वेपना, फोन्, कण्डू (गुग्गुली) पाप और वातका नाश करे, विशिष्ट पित्तपायक और श्लाघा स्त्रेप घनमे त्वगाके विकार दूर दोते है ।

महाकरजगुणः ।

महाकरजकस्तीक्ष्णकटुतोष्णश्वतिकफः ।

कण्डूविचर्चिकाकुष्ठत्वग्गुण्यपवणापदा ॥

अर्थ-महाकरज-तीक्ष्ण, चर्मपरी, गरम, कटु तथा कण्डू, विचर्चिका, कुष्ठ, त्वगाके रोग, विष और मृगनाशक ।

यस्यतेनगुणः ।

प्रोक्तोष्ठकरजस्तुकटुकोष्णोव्रणापदः ।

वातत्रयसंत्वन्दोषविषं चागोविनाशयेत् ॥

करजस्यप्रोक्तागुणास्त्वन्येभिपश्यन्ते ।

अर्थ-पृष्ठकरज-चर्मपरी, गरम तथा मृग (घात), वात, गरमपायक त्वगाके रोग, विषरोग और भस्म (यगर्मा) को दूर करे । शेष गुण वरी-मर्षी समान जानने ।

यस्यतेनगुणः ।

गुण्यनामाकरजं स्यादुष्णस्तिकः कटुः स्मृतः ।

विचर्चिकायातपिपकण्डूकृष्टार्शनाशनः ॥

त्वग्दोषनाशकश्चैवऋषिभिः परिकीर्तितः ।

अर्थ—गुच्छकरज—गरम, कड़वी, चरपरी तथा विर्चाचका, वात, विप, कण्डू, कुष्ठ, बवासीर और त्वचाके रोगोंका नाश करेहै ।

पूतिकरजगुणा ।

पूतिकरञ्जः प्रोक्तो गुच्छपूर्वकरजवत् ॥ (नि० २०)

अर्थ—पूतिकरञ्जके गुण गुच्छकरजकी समानेहैं ।

पूतिकरजपत्रगुणा ।

पूतिकरजपत्रलघुवातकफापहम् ।

भेदनकटुकं पाके वीर्योष्णशोफनाशनम् ॥

अर्थ—पूतिकरजके पत्ते—हल्के, वातकफनाशक, भेदक (दस्तावर), पचनेमें चरपरे, उष्णवीर्य और शोफ (सूजन) नाशक है ।

विवरण । करजके बहुत बड़े २ वृक्ष वनमें होतेहैं, पत्ते—पाखरके पत्तोंकी समान गोल और ऊपरके भागमें चमकदार होतेहैं । इसमें फूल आसमानी रंगके आतेहैं और फलभी नीले २ झुमकेदार लगतेहैं, पत्तोंमें दुर्गन्ध आती है । करज छे सातमेंकारकी होती है ।

चण्डकरजनामानि ।



कुवेराक्षीकचिकाकरजातिगच्छिका ।

वारिणीतीरिणीवल्लीज्ञेयाकण्टकिनीतिच ॥

अर्थ—कुवेराक्षी, मकचिका, फरजा, तिणगच्छिका, वारिणी, सीरिणी, वल्ली, कण्टकिनी ।

| | |
|-----------------|--|
| मसूतभाषामें | कण्टकरज । |
| हिन्दीभाषामें | करना, कशुवा । |
| वगभाषामें | कौंटाकंज । |
| मराठीभाषामें | तागगोटा । |
| गुजरातीभाषामें | काकच, तेनाफ - काकिया । |
| कर्णाटकीभाषामें | काभ्रभेदु । |
| तैलुगुभाषामें | रचकाई, गुनेपिशा । |
| इमेर्जाभाषामें | योण्डकनट <i>Baridennat</i> |
| लैटिनभाषामें | सिनाल पिनिया योण्डुमेला <i>Coccolpasia</i> । |
| फारसीभाषामें | खाय, इवलीस । |
| अरबीभाषामें | अक्तमक्त । |

कण्टकरजगुणा ।

कण्टयुक्तकरजस्तुपाकेचतुवर-कटु ।
 ग्राहकश्चोष्णवीर्यं स्यात्तित्त प्रोक्तश्चमंदहा ॥
 कुष्टाशोत्रणवातानांकृमीणांनाशन पर ।
 पुष्पतुचोष्णवीर्यस्यान्नित्तवातकफापहम् ॥

अर्थ-कच्चा-पाकके समय चगपरा कपैला, ग्राही (मनोकर) रक्त-वीर्य, कडवा तथा ममंद, कौट, घबानी, घाव, वात और कृमिजोषी। इसके पूर उष्णवीर्य, कडवे तथा वात और कफनाशक ।

विशेष । कटुककंज अर्थात् कण्टकेके वृक्ष माटीगो। इन्करिग

काजिहसुद्रावे तिये लगावेतेहे । और तेजोमें भी होयगे रक्त-अर्थ-वृषभाश-वर्षा, जो होतेहैं और पतलन गड नातेहैं । उन हार हार लवावे गेग, विषगो और भर्षा । दोहो-ते उकी काना जामे आने मने भी गरी गमान जानने ।

हे कण्ट नातेहैं रक्त कातेहैं से रक्त-मनोकर-होते कनेने वा पार परी रंगी रक्त

गुणनामाकरण स्यादुष्णस्तिद्व कने अने उरी क-लने चिचर्निफायातविषकण्टकुष्टाशंनाननिकन्दे ।

मन्त्रे ।

कजवागिहसुद्रा ।

कृष्णलाकाकिनीकक्षाकनीचि काकणन्तिका ॥

अर्थ—रक्तिका, गुड्डिका, गुञ्जा, काकजघा, शिखडिनी, कृष्णला, काकिनी, कक्षा, कनीची, काकणन्तिका (काकचिची, शागुष्टा, काकादनी, काकतित्ता, काकतुण्डिका, काका, काकिणी, काञ्ची, चूडामणी, सौम्या, शिखण्डी, अरुणा, ताम्रिका, शीतपाकी, उच्चटा, कृष्णचूडिका, रक्ता, काम्बोजी, भीलभूषणा, वन्या, श्यामलचूडा, काकचिश्चिका, काकपीडु, काकणन्ती, काकवलरी, काकशिम्बी, रक्तला, वक्त्रशल्या, ध्वाक्षनख, दुर्मोघा वायसा दनी, चडकी, तुलावीजा, अगारवलरी)

श्वेतगुञ्जानामानि ।

द्वितीयाश्वेतकाम्बोजीश्वेतगुञ्जाभिरिण्टिका ।

श्वेतोच्चटाश्वेतवीजाश्वेतपूर्वाचसास्मृता ॥

अर्थ—श्वेतकाम्बोजी, श्वेतगुञ्जा, मिरिण्टिका, श्वेतोच्चटा, श्वेतवीजा, श्वेत-रक्तिका ओर श्वेतगुड्डिका इत्यादि (चक्रगल्या, चूडाला)

| | |
|-----------------|---|
| संस्कृतभाषामें | गुञ्जा, श्वेतगुञ्जा । |
| हिन्दीभाषामें | धुँधुची, चोंटली, चिरमिटी, सपेद धुँधची । |
| वगभाषामें | कुँच, सादाकुँच । |
| मराठीभाषामें | गुजा, को०—माडलवेल । |
| गुजरातीभाषामें | चणोठी राती, चणोठीघोली । |
| कर्णाटकीभाषामें | गुलगुजे, एरडु । |
| तैलिङ्गीभाषामें | गुलुबिंदे । |
| तामिलीभाषामें | करिन । |
| तु० | गोजी । |
| म० | कुलि गुजा । |
| उत् | रुज । |
| इंग्रेजीभाषामें | बिड्टी । Beil tree |
| लैटिन्भाषामें | एब्रेस प्रिन्गेरियस । Abrus precatorius |
| फारसीभाषामें | चम्बेखल्म् । |
| अरबीभाषामें | हव मुरत, हव मुपेद । |

गुणगुणा ।

गुञ्जाश्वेतारसेतिकाकपायाकफपित्तहा ।

चक्षुष्याशुक्लानि श्राव्यारुच्यावलप्रदा ॥

इन्द्रलुप्तदरीतीनासविषामदमोदकृत ।

यक्षग्रहविषहन्तिकण्डुकुष्टत्रणान्क्रिमीन् ॥

अर्थ-हँसनी-अनुष्णा (गमनदी) कदवी, कपली, कपज, पिचनानक, नेत्रोको हितकारी, शुक्रजनक, बेणाको मुदतादायक, लिंगाको हितकारक, रजिस्कारक, पलवदक, इन्द्रियत (गज) रोगनाशक, र्त्तमिश्रितपुन, गद्वारक, मोदजनक तथा गन्ध, गद, विष, कण्ट (गुपनी) बोट, घात और क्रमिगोको नष्ट करेई ।

द्वितीयः प्रश्नः ।

गुञ्जाद्वयस्वादुतिक्तवत्यनोष्णं कफपायकम् ।

तत्र न्यक्षेयशरुच्यंचशीतं गृह्यमतबुधे ॥

नेत्ररोगनिषपित्तमिन्द्रियतत्रणकृमान् ।

राक्षसप्रदपीडांचकण्डकुष्टकफज्वरम् ॥

सुखशीर्षिकुञ्जातभ्रमश्चामृतपतथा ।

मोहमदनाशयतित्रीजशान्निकरंमतम् ॥

शूलनाशकरमूलपणचनिपनाशकम् ।

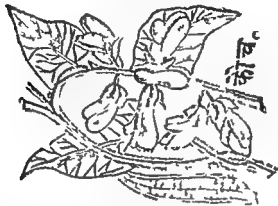
श्वेतगुलाविशेषेणवर्गीकरणकृन्मता ॥

अर्थ—दोनो मित्रांमधी (मात्र और मोह) प्रेमणी, व्याप्ति, कदरी, मठ
नारक, गम, क्रीडी, रंगारंगी उत्तम वस्त्राणी, केतोपा तितकारी,
गतिकारी, शक्ति, वीर्यपदक तथा नम्रगोम, विष, विष इन्द्रजित, मग,
इमि, मधुग, मरपीला, कण्डू, पुष्ट, कच उग्र, सुधारण, दीपण, नात
भ्रम, भ्रम युवा, मोह और मत्का नाशकई। इगरे र्थान् वाच्यताक
और शब्दाकई। इतरी मठ और पसे-विषाणाकई। सत्तई प्रेमणी,
विशेषाकई।

विशेषः । भूगर्भात् वेदं जगतां अधिपत्यां होमोद । एते इमं
जगतां होमोद । और जगते होमोद । एतं जगतां अधिपत्यां होमोद ।
एतं जगतां अधिपत्यां होमोद । एतं जगतां अधिपत्यां होमोद ।
होमोद । एतं जगतां अधिपत्यां होमोद । एतं जगतां अधिपत्यां होमोद ।

रगकी चोंटली सम्पूर्ण सफेद होतीहै । सफेद रगकी चोंटलीके छुलके उतारकर उसका चून पीसले उस चूनको दूधमें मिलाकर खडी करले वह खडी घातुको बढ़ानेवालीहै । चांटलीका तेल त्वचाके रोगोंको हरनेवाला, केशोंको बढ़ानेवाला और अनेक प्रकारके रोगोंको हरनेवाला है । व्यवहार—मूल और बीज । मात्रा १ रत्तीसे २॥ रत्तीपर्यन्त है ।

कपिकच्छुनामानि ।



कपिकच्छूरात्मगुप्ताशुकशिम्वाकपिप्रभा ।

शुकपिण्डीस्वयगुप्ताकण्डूराशूकशिम्बिका ॥

अर्थ—कपिकच्छू, आत्मगुप्ता, शुकशिम्वा, कपिप्रभा, शुकपिण्डी स्वय-गुप्ता, कण्डूरा, शूकशिम्ना (जडा, अध्यण्डा, प्रावृपायणी, शुकशिम्बि, ऋण्यप्रोक्ता, शूकशिम्बि, मर्कटी, सद्यःशोया, शूका, शूकवती, गात्रभगा, कच्छूमती, कच्छुरा, ऋपभी, कपिकच्छूरा, ऋपभ, जटा, स्वगुप्ता, अजाहा, कण्डूरा, प्रावृपा, शूकशिम्ना, अजहा, वानरी, कपिकच्छू, कपीकच्छू, शूक-पिण्डी, शूकपिण्ड, शुकशिम्नी, व्याघ्रा, मुगुप्ता, महर्पभी लाङ्गली, कुण्डली, चण्डा, दुरभिप्रहा, कपिरोमफला, गुप्ता, दृ स्पर्शा, अजडा, प्रावृपेण्या, बदरी, गुरु, आपंभी, शिम्बी, वराहिका, तीक्ष्णा, रोमाङ्ग, वनशूकरी, काशीरोमा, रोमवली, व्यङ्गा, वृष्या)

संस्कृतभाषामें

हिन्दीभाषामें

वगभाषामें

मराठीभाषामें

गुजरातीभाषामें

कपिकच्छू ।

फौंछ, किवॉच ।

आलुगुशि, धुनारगुड, दया, शुयाशिम्बी ।

कुहिलीचें बीज ।

कडवाँ, भेखनी शींगना बी ।

चक्षुष्याशुक्लाङ्गेश्चात्वेच्छावल्प्रदा ॥

इन्द्रलुप्तहरीतीव्रासविषामदमोदकृत् ।

यस्यप्रहविषहन्तिक्ण्डुकुष्टप्रणान्क्रिमीन् ॥

अर्थ-शुण्ठी-अनुष्णा (गमनार्थ) पत्रा, कपटी, पत्र, विषनाशक
नेत्राको दितकारी, गुकानक, केनाको मुद्रतादायक, त्रिशाको दितकारी
रुचिकारक, यल्लवटक, इन्द्राक्ष (मंत्र) रोगनाशक, क्षीप्रविषमुक्त, मदक
रक, मोहननक तथा यस्य, मह विष, कटू (रुजर्षी) योद, यान भी
धूमिरोगको नष्ट करे ।

क्षिप्यमाणता ।

गुञ्जाद्वयस्वादुतिक्ततल्यचोष्णं कपायकम् ।

त्वच्यनेश्वश्चरुच्यचशीतं वृष्यं मतपुणे ॥

नेत्रगोत्रविषपित्तमिन्द्रलुप्तप्रणाम्नीन् ।

राक्षसप्रदपीडांचक्ण्डुकुष्टकफज्वरम् ॥

मुखशीर्षरुजयानभ्रमश्वासं तृपतथा ।

मोहमदं नाशयति वीजवान्तिकरमतम् ॥

शूलनाशकमूलपर्णविपनाशकम् ।

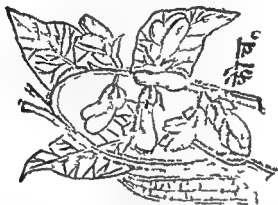
श्वेतगुञ्जाविशेषेण यशीकरणकृन्मता ॥

अर्थ-दोनों प्रकारको (गलत और मन्द) पुंनारी, मरार्द्र, कटु, यान
कारक, गम, कपटी, त्रिशाको उगम करनेवाली, केनाको दितकारी
रुचिकारी, क्षीप्र, क्षीप्ररुचक तथा नश्वर, विष, विष, इन्द्राक्ष, मन्त्र
धूमि, गम, मदपीडा कटू, कुष्ठ, कफ, ज्वर, मुखमग, जीवयोग, कफ
धम, भाग, गुञ्जा, मोह और मदका नाशकरे । इसके बीच कान्तिकर
भी शूलनाशक है । इसकी जड़ और कफ-विषनाशक है । मरेद पुंनारी
क्षीप्रकरके वर्गीकृत है ।

शिवराज । पुंनारीकी वेद भेदकम अधिकारमें होना है । यने इन्द्राक्ष
गमना होना है । और गमनम मन्त्र समान है । पुंनारीकी गम जने । और
नारी की गमक मन्त्र मुखेगारी होना है । १। पुंनारीकी पुंनारी (योनि)
होना है इन्द्राक्ष मन्त्र की योनि मुखे कफ कफनाशक होना है । २। मरेद

रंगकी चोंटली सम्पूर्ण सफेद होतीहै । सफेद रंगकी चोंटलीके छुलके उतारकर उसका चून पीसल उस चूनको दूधमें मिलाकर रबड़ी करले वह रबड़ी धातुको बढ़ानेवालीहै । चाटलीका तेल त्वचाके रोगोंको हरनेवाला, केशोंको बढ़ानेवाला और अनेक प्रकारके रोगोंको हरनेवाला है । व्यवहार—मूल और बीज । मात्रा १ रत्तीसे २॥ रत्तीपर्यन्त है ।

कपिकच्छुनामानि ।



कपिकच्छूरात्मगुप्ताशुकशिम्वाकपिप्रभा ।

शुकपिण्डीस्वयगुप्ताकण्डूराशूकरिशिम्बिका ॥

अर्थ—कपिकच्छू, आत्मगुप्ता, शुकशिम्बा, कपिप्रभा, शुकपिण्डी स्वय-गुप्ता, कण्डूरा, शूकशिम्बा (जडा, अघ्यण्डा, प्रावृषायणी, शुरुशिम्बि, ऋष्यप्रोक्ता, शूकशिम्बि, मर्कटी, सय शोया, शूका, शूकवती, गात्रभगा, कच्छूमती, कच्छुरा, ऋषभी, कपिकच्छूरा, ऋषभ, जडा, स्वगुप्ता, अजाहा, कण्डूरा, प्रावृषा, शूकशिम्बा, अजहा, वानरी, कपिकच्छू, कपीकच्छू, शूक-पिण्डी, शूकपिण्डि, शुकशिम्बी, व्याघ्रा, सुगुप्ता, महर्षभी लाङ्गली, कुण्डली, चण्डा, दुरभिग्रहा, कपिरोमफणा, गुप्ता, दृ स्पर्शा, अजडा, प्रावृषेण्या, चदरी, गुरु, अपर्षभी, शिम्बी, वराहिका, तीक्ष्णा, रोमाड, वनशूकरी, काशीरोमा, रोमवली, व्यङ्गा, वृष्णा)

सस्कृतभाषामें

कपिकच्छू ।

हिन्दीभाषामें

कौण्ड, किवॉच ।

वगभाषामें

आलशुगि, धुनारगुड, दया, शुयाशिम्बी ।

मराठीभाषामें

कुहिलीचें बीज ।

गुजरातीभाषामें

कडगो, भेरवनी जीगना धी ।

कण्टिकाभाषामे

= सुगुप्ता ।

तेलिङ्गाभाषामे

पिडिभदुगु ।

तामिगीभाषामे

पुनाइक, कान्ति ।

मद्रासाभाषामे

नायिकन्णा, चोर्ग्यादि ।

नोमतरा

रास्पातान्ति ।

सम्प०

हुदिडा ।

इयेचीभाषामे

कोरुज Conk-er

हैटिन भाषामे

मुस्सुना मुग्गेन्ना । Mullu Patti

कपिकन्धुगुत्ता ।

कपिकन्धु स्वादुरसात्रप्यात्रातभयापदा ।

भीतपित्तामहन्त्रीचनिकृनागुणनाभिनी ॥ (रा० नि०)

अर्थ-कोष्ठ-सादु, रीत्यारदक तथा रात, राय, नीतिविषय शोधविषय
भीर दुष्टप्रगको नष्ट करे ।

अपवाद ।

कपिकन्धुर्भूभाषामधुगुत्तणीगुरु ।

तित्तात्रातर्गुल्याकफपित्तामनाभिनी ॥ (भा० प०)

अर्थ-कोष्ठ-अत्यन्त रीत्यारदक तथा मधुर, दूध (वृद्धितन) भाग,
पदवी, वातवायु, पटकारक तथा कफ भीर रक्तविषयान्तर ।

कपिकन्धुर्भूभाषामधुगुत्ता ।

तर्हीजवातशमनम्पूनवाजीकन्परम ॥ (भा० प०)

अर्थ-कोष्ठ-पौज-वातनिवारण भीर वातोरुपण करेताह ।

कपिकन्धुर्भूभाषामधुगुत्ता ।

कपिकन्धुर्लु-भीतात्रप्यापित्तानिलापदा ।

मिभ्रानिमान्दन्त्रीनभ्यानांशाप्यपत्यदा ॥ (रा० नि०)

अर्थ-कोष्ठ-कोष्ठ-नीक, रीत्यारदक तथा शिम, राय, तिल्य भीर
अतिप्रगको नष्ट करे । तथा कप्या शिचोको मंजान रूपय करेताह ।

अपवाद ।

कन्धुगुत्तुगानितायोनिदोषापदामता ।

दुष्टप्रणरक्तरोषशायेंद्रिनीर्तिता ॥ (नि० रा०)

अर्थ—छोटीकौँछ—कपैली, कडवी तथा योनिदोष, कोठ ग्रण और रक्तके रोगको दूर करेहै ।

विवरण । कौँछकी बेल होतीहै, फूल सेमकी समान होतेहैं और फलियें भी सेमकी समान होतीहैं, और फलियोंके ऊपर सूक्ष्म रूँआ अधिक होताहै, इसका रूँआ शरीरमें लगनेसे अत्यन्त खुजली होनेलगतीहै । फलियोंके भीतरसे सेमके बीजोंकी समान बीज निकलतेहैं, छोटी कांठका क्षुपहोताहै ।

मांसरोहिणीनामानि ।

मांसरोहिण्यतिरुहावृत्ताचर्मकपावसा ।

प्रहारवल्लीविकशावीरवत्यपिकथ्यते (भा० प्र०)

अर्थ—मांसरोहिणी, अतिरुहा, वृत्ता, चर्मरूपा, वसा, प्रहारवल्ली, विकशा, वीरवती, (अतिरुहा, मांसरोही, कशामासी, महामासी, मांसरोहा, रसायनी, सुलोमा, लोमकरणी, रोहिणी, चन्द्रवल्लभा)

संस्कृतभाषामें

रोहिणी, मांसरोहिणी ।

हिन्दीभाषामें

मांसरोहिणी, रोहिणी ।

मराठीभाषामें

रोहिणी, मांसरोहिणी ।

गुजरातीभाषामें

रोण्य ।

कर्णाटकीभाषामें

रोहिणी, मांसरोहिणी ।

इंग्रेजीभाषामें

रेडवुडट्री । Redwood Tree

लैटिन् भाषामें

सोयमीडा फेब्रीफ्युगा । Soyumba Febrifuga

मांसरोहिणीगुणा ।



स्यान्मांसरोहिणीवृष्यासरादोषत्रयापहः॥ (भा० प्र०)

अर्थ—मांसरोहिणी—वीर्यपट्टक, सागक, (दस्तावर) और त्रिदोषनाशकरहै ।

अथिष ।

मांसरोहिणिकावण्याचोष्णाचरक्तपित्तजित् ।

सर्वासप्रदण्णोद्धतिनाप्रकार्याविचारणा ॥ (नि० र०)

अर्थ-मांसरोहिणी-ग्रन्थो दित्तपानी, उष्ण, तथा रक्तपित्त और तप्त
प्रकारकी समदण्णी दूर करे ।

रोहिणीगुणा ।

रोहिणीवातहृत्कामग्रसशोणितनाशिनी ॥ (अ० बा० नि०)

अर्थ-रोहिणी-वातनाशक, कामनिवारक, ग्रसहारक और शोणितनाशक-
विनाशक ।

रिपिषगद्विनीयुता ।

रोहिणीगुगलगीतकपायकृमिनाशनम् ।

कण्ठशुद्धिकरकृच्यवातदोषनिपुदनम् (ग० नि०)

अर्थ-रोहिणीगुगल-गीतक, कपेयी, कृमिनाशक, कण्ठशोधक,
कण्ठिकाग्र और वातनिवारक है ।विवरण । रोहिणीक गुण जगन्म अधिक होने हैं, जैसे गिराईके समान
होते हैं और एक २ दार्ढ्यमान मात्र २ होते हैं, यह भ्रमण कारक दात है ।

विह्वल्युता ।

चिरकोमातनिर्दारश्लेष्मग्रोधातुपुष्टिहृत ।

आग्नेयोनिपचयस्वफलंमत्स्यनिपुदनम् ॥

अर्थ-चिरक-वातनाशक, चिर, पातुद्विषाग्र, आग्नेय, (भ्रमण
मान) और श्लेष्म तथा निपचय समान गुणवान्क है तथा मत्स्यरो
होते हैं ।विवरण । चिरकके गुण, छोटे २ होने हैं श्लेष्मग्रोधातुपुष्टिहृत
रोगी वृद्धि उत्पन्न होते हैं । चिर-रोग और चिर रोगीमर होते हैं । श्लेष्म
ग्रो-रोगके समान मोन २ होते हैं ।

टकारोद्धतिगुणा ।

टकारोद्धतिजित्ताश्लेष्मार्द्रादीपनीलपु ।

ओधोऽग्नेयधामदीहिनापीठविमर्षिणी ॥ (भा० व०)

अर्थ-टकार-वातनाशक, कर्मा, लवणनाशक, अग्नि, और अग्नेय-
धामदीहिनापीठविमर्षिणी ।

हल्की तथा सूजन और उदररोगको हरनेवाली है । और पीठ तथा विसर्प रोगवालोंको हितकारी है ।

विवरण । टकारीके क्षुप वन और जगलमें अधिक होते हैं । पत्ते-लम्बे और गोल आते हैं, फूल- लाल, गुलाबी, कईप्रकारके आते हैं । फल-छोटे २ झुम-केदार लगते हैं ।

वेतसनामानि ।

वेतसोनिचुल प्रोक्तोवज्जुलोदीर्घपत्रकः ।

कलनोमंजरीनम्रोवानीरोविदुलस्तथा ॥

अर्थ-वेतस, निचुल, वज्जुल, दीर्घपत्रक, कलन, मञ्जरीनम्र, वानीर, विदुल, (रथ, अभ्रपुष्प, शीत, वज्जुलमिय, गन्धपुष्प, रथाभ्र, वेतसी, मञ्जरीनम्र, सुपेण, गन्धपुष्पक)

जलवेतसनामानि ।

निकुञ्चक परिव्याधोनादेयोजलवेतसः ॥

अर्थ-निकुञ्चक, परिव्याध, नादेय, जलवेतस, (शाखाछ, मेघपुष्प, तोयकाम, अभ्रपुष्पक, नदीकूलमिय, नीरमिय, सुशीतल, परिव्याध, व्याधिघात)

| | |
|-----------------|------------------------|
| संस्कृतभाषामें | वेतस, जलवेतस । |
| हिन्दीभाषामें | वेत, जलवेत । |
| वगभाषामें | वेत, वयसा, जलवेत । |
| मराठीभाषामें | थोरवेत, वेत । |
| गुजरातीभाषामें | नेतर । |
| कर्णाटकीभाषामें | वेडिमु, वेतमु । |
| तैलुगुभाषामें | पीपाम्बा, जीतयुरडुकी । |
| इंग्रेजीभाषामें | रोटा केन । Cane |
| लैटिनभाषामें | केलेमस रोडन् । Calamus |
| फारसीभाषामें | वेत । |
| अरबीभाषामें | सलाफ । |

वेतसगुणाः ।

वेतस शीतलोदाहशोफाशोयोनिरुग्रणान् ।

हन्ति वीसर्पकृच्छ्राश्चपित्ताश्चमरिक्फानिलान् ॥ (भा० प्र०)

अर्थ-वेत-शीतल तथा शोफ (सूजन) अर्श (चवामीर) योनिरोग,

प्रग (घात) विगर्भ, मृदागन्ध, स्त्रोत, अग्नि (पदवी) का भी
पातना नाश करे ।

अर्थ- ।

वेतसःकटुक.स्वादु.शीतोभूतविनाशन. ।

वातप्रकोपनोरुच्योविज्ञेयोदीपन पर ॥

रक्तपित्तोद्भवगोशुष्ठदोषत्रिनाशयेत् । (राजनिघण्टु)

अर्थ-वेत-चण्ण, म्यादिष्ट, जीवित, मृत्नागर, वायु, तपित, वान
वाला, रुचिकारक अमिको दीपन कम्प्याना तथा स्तविष्ठ और चोदनी
हू करे ।

अर्थ- ।

वेतस्तुतुवर शीतस्निग्ध कटुकफापद ।

वातपित्तचदाहचशोफार्थोभ्रमरिहृच्छेकान ॥

विश्रुपातिसतृक्तयोनिरोगवृषांजयेत् ।

रक्तदोषत्रणमेदृक्तपित्तनाकुष्ठकम् ॥

विषवेनाशयत्येवांहुः क्षागेलघुःस्मृत ।

कटूष्ण कफघ्नान्न पणभेदस्मृतम् ॥

तुवग्लघुशीतश्चित्तकटुनानलम् ।

रक्तदोषरूपपित्तनाशयेदितिर्निर्णितम् ॥

वेतनीजन्तुवृषस्वादुमृदुश्चपित्तलम् ।

रक्तदोषरूपचोनाशयेदितिर्निर्णितम् ॥ (नि० २३)

अर्थ-वेत-चण्ण, जीवित, कफ, वायु, तपित, वाद,
मृत्न, चण्णार, पदवी, मृदागन्ध, विगर्भ, अग्नि, वायु, तपित, वाद,
गोश, मृत्ना, स्त्रोत, प्रग, ममेद, स्तविष्ठ, पद भी विद्वान् अन्त कफ
वाला है । इसके अन्त-वायु, दम, वायु, मृत्न तथा कफनाशकार
है । इसके ममे-भेद (दमना) करने से दम, जीवित, कद, वायु,
वातवायु तथा शीतविनाश, कद भी विद्वान् है । इसके प-वेद,
स्तविष्ठ, ममे, ममे, विगर्भ अन्त स्तविष्ठ और कदवा ममे करे ।

जलवेतसगुणा ।

जलजोवेतसःशीतःसंग्राहीवातकोपनः ॥ (भा० प्र०)

अर्थ—जलवेत—शीतल, मलरोधक और वातको कुपित करेहै ।

अन्यच्च ।

वानीरःशीतलस्तिक्तोव्रणशुद्धिकरोमतः ।

तुवरोवातकृद्ग्राहीरूक्षःपित्तहरोमत ॥

रक्तदोषव्रणकफकव्यादग्रहनाशनः । (नि० २०)

अर्थ—जलवेत—शीतल, कडवा, व्रणशोधक, कपेला, वातकारक, मलरोधक, रूखा, पित्तनाशक तथा रुधिरदोष, व्रण, कफ, राक्षसवाधा और ग्रहकी पीडाको दूर करेहै ।

द्विविधवेतसगुणा ।

वेतसस्यद्वयशीतरूक्षचव्रणशोधनम् ।

रक्तपित्तहरंतिक्तसकपायकफापहम् ॥ (ध० नि०)

अर्थ—दोनों प्रकारके वेत—शीतल, रूखे, व्रणशोधक, रक्तपित्तनाशक, कडवे, कपेले और कफनाशक है ।

बृहद्वेत्तगुणा ।

बृहद्वेत्तस्तुशीत स्याद्भूतपित्तामकपहा ।

अन्येगुणाःपूर्ववेत्तसदृशाः समुदाहृताः ॥

अर्थ—बड़ा वेत—शीतल तथा भूतवाधा, पित्त आम और कम्पको दूर करे है । शेष गुण वेतकी ममान जानने ।

बृहज्ज्वेत्तगुणा ।

स्थूलवानीरक शीतोरूक्षोव्रणविशोधनः ।

तिक्तस्तुतुवरोरक्तदोषपित्तकफाञ्जयेत् ॥ (नि० २०)

अर्थ—बड़ा जलवेत—शीतल, रूखा, व्रणशोधक, कडवा, कपेला, तथा रक्तविकार, पित्त और कफको दूर करे है ।

विवरण । वेत और जलवेत इसकी दो जाति हैं, यह वेत जलके निकटकी भूमिमें उत्पन्न होतेहैं । इसके पेडभी लताके आकार होतेहैं, पत्ते—चामके समान, फल पूरा आतेही नहीं, वेतकी जड़ बहुत लम्बी २ होतीहै । वेतके

ऊर्ध्वपा पञ्च पादु पञ्चदोर्ध्व । इतीं रिच इपादि इमीं युतीं पञ्चदि
वेत जन्मेमां उत्पन्न होनाई । समके गुण वेतईके समान होमई ।

द्विजन्मानुपा ।

इजलोहिजलश्रापिनिचुलश्राम्बुजन्तथा ।

जलवेनमयद्वयोहिजलोऽयविपापद ॥

अर्थ-रजन्, द्विजन्, निचुल, अम्बुज, यह समुद्र (जोग) के नाम
हैं । इसी गुण नगोनकी समान हैं, विशेषता यह है कि विपश्चिन्ता है ।

महाज्जामाभि ।

अट्टोट कोलकोर्चीविपमोदीर्घकोलक ।

पीनमारस्ताप्रफलोगन्धपुष्पोनिकोचक ॥

अर्थ-अट्टोट, कोलक, कोर्ची, विपम, दीर्घकोलक पीनमार, मास्ता,
गन्धपुष्प, निकोचक, (अट्टोटक, अट्टोट, अट्टोट, निकोटक, अट्टोटक,
कोष, अट्टोट, दीर्घकोलक, समक, वेतनी, गन्ध, रज्ज्वर, कोष,
गुदपत्र, मदन, गुदमन्द, गुदगटिका, पीत, दीर्घकोल, गुणारुचक, समक,
कोल, विपालकोर्ची, निकोचक, पट्टोट, मास्ता, रज्ज्वर, मुपित)

सम्पुष्पभाषामे अट्टोट (४) ।

द्विजन्मापाम देरा देरा ।

वेगभाषामे आरु, पाण आरु, अट्टोट ।

मराटीभाषामे अट्टोटी गुह ।

गुहाराहीभाषामे अट्टोन्य ।

मराठीभाषामे अट्टोने ।

दीर्घकोलभाषामे उट्टोके ।

इमेटीभाषामे दीर्घकोल सम्पुष्पिण ।

मराठीभाषामे अट्टोटीके सेपाकि भाई । Aṭṭōṭī ke Sēpākī Bhāī

पञ्चकोषम देवकोषम् ।

अट्टोटक ।

अट्टोटस्तुपगन्धितोन्मशुद्धिकोन्मशु ।

किञ्चित्कटुमार सिन्धुस्त्रीगन्धोन्मशुद्धिक ॥

गन्धोपान्तिपञ्चभाषाविपमोपकपापदः ।

वातशूलशोथकृमिग्रहपीडामपित्तहा ॥
 रक्तदोषविसर्पघ्नश्वानाखुविषनाशनः ।
 ओतोर्विषकटीशूलमतिसारचनाशयेत् ॥
 पिशाचपीडाशमनोबीजचास्यतुशीतलम् ।
 धातुवृद्धिकरस्वादुचाग्निमाद्यकरगुरु ॥
 रसेपाकेतुमधुरवलकृतकफकृत्सरम् ।
 स्निग्धवृष्यश्चदाहघ्नवातपित्तक्षयापहम् ॥
 रक्तदोषकफपित्तविसर्पघ्नैवनाशयेत् । (नि० २०)

अर्थ—ढेरा—कपेला, कडवा, पारेको शुद्ध करनेवाला, हलका, किञ्चित् चरपरा, सर (दस्तावर), स्निग्ध, तीक्ष्ण, गरम और रूखा है । इसका रस—वान्तिजनक तथा विषाविकार, कफ, वात, शूल, कृमि, सूजन, ग्रहपीडा, आम, पित्त, रुधिरविकार, विसर्प, कुत्तेका विष, मूसेका विष, विलावका विष, कटिशूल, अतिसार, और पिशाचपीडा इनका नाश करेहै । इसके बीज—शीतल, धातुवर्द्धक, स्वादिष्ठ, मदाग्निकारक, भारी, रसमें और पाकमें मधुर, बलकारक, कफकारी, सारक, स्निग्ध, वृष्य (वीर्यवर्द्धक) तथा दाह, वात, पित्त, क्षय, रक्तविकार, कफ, पित्त और विसर्प इनको दूर करेहै ।

अन्यथा ।

अङ्गोटक कटुस्तीक्ष्ण स्निग्धोष्णस्तुवरोलघु ।

रेचन कृमिशूलामशोफग्रहविषापह ॥

विसर्पकफपित्तास्रमूषकाहिविषापह ।

तत्फलशीतलस्वादुश्लेष्मघ्नवृहणगुरु ॥

वर्त्यविरेचनवातपित्तदाहक्षयास्रजित् ॥ (भा० प्र०)

अर्थ—ढेरा—चरपरा, तीक्ष्ण, स्निग्ध, गरम, कपेला, हलका, दस्तावर तथा कृमि, शूल, आम, सूजन, ग्रहपीडा, विष, विसर्प, कफ, पित्त, रुधिरविकार, मूषके विष और सापके विषको दूर करेहै । इसका फल—शीतल, स्वादिष्ठ, कफनाशक, वृहण (बाजीकरण), भारी, बलकारक, दस्तावर तथा वात, पित्त, दाह, क्षय और रक्तविकारको दूर करेहै ।

ऊपरका चरुत बहुत पकाहोताई । कुसी बिच इत्यादि इसीमे धुनी जातीई,
वैत जलमेंभी उत्पन्न होताई । उसके गुण वैतकीके समान होतेई ।

हि चरुनामगुणा ।

इज्जलोहिज्जलश्चापिनिचुलश्चाम्बुजस्तथा ।

जलवेतसवद्रेद्योहिज्जलोऽयविपापह ॥

अर्थ-इज्जल, हिज्जल, निचुल, अम्बुज, यह समुद्रफल (शोष) के नाम
है । इसके गुण जलवेतकी समान है, विशेषता यह है कि विषविनाशक है ।

अट्टोटागामानि ।

अट्टोट कोलकोरंचीविपमोदीर्घकोलक ।

पीतमारस्ताम्रपालोगन्धपुष्पोनिकोचक ॥

अर्थ-अट्टोट, कोलक, रेची, विपम, दीर्घकोलक, पीतमार, ताम्रफल,
गन्धपुष्प, निकोचक, (अट्टोटक, अकाल, अकोल, निकोटक, अंफाचक,
चोच, नेदिम, दीघकीलक, रामठ, ककरोल, गलन्त, हदकणक, कोंठर,
गूढपत्र, मदन, गुमस्नेह, गूढवडिका, पीत, दीर्घकील, गुणादचक, लम्पणार्ण,
रौचन, विशालतल्लगभं, निकोटक, कठोर, वामर, लम्पणक, भुषित)

संस्कृतभाषामें अंकोट (ठ) ।

हिन्दीभाषामें देग, देरा ।

पंजाबीभाषामें आर, धला अंकट, अंकोट ।

मराठीभाषामें अंकोली वृक्ष ।

गुजरातीभाषामें अंकोल्य ।

कर्णाटकीभाषामें अकुले ।

तैलिङ्गीभाषामें उटीक ।

इंग्रेजीभाषामें ट्रीलीट गल्युरिट्रीग ।

लैटिनभाषामें एलेन्जेम लेमार्कि आर्दे । *Alangium Lemarchii*

एलेन्जियम हेसापेरुम ।

अट्टोटगुणाः ।

अट्टोटस्तुवगस्तिकोरसशुद्धिकरोलपु ।

किंचित्कटुसर क्षिग्धन्तीक्ष्णश्चोष्णश्चरुश्च ॥

रमोमान्तिकरश्चास्यविषदोषकफापह ।

वातशूलशोथकृमिग्रहपीडामपित्तहा ॥
 रक्तदोषविसर्पघ्नःश्वानासुविषनाशनः ।
 ओतोर्विषकटीशूलमतिसारचनाशयेत् ॥
 पिशाचपीडाशमनोबीजचास्यतुशीतलम् ।
 धातुवृद्धिकरस्वादुचाग्निमाद्यकरगुरु ॥
 रसेपाकेतुमधुरंवलकृत्कफकृत्सरम् ।
 स्निग्धवृष्यश्चदाहत्रवातपित्तशयापहम् ॥
 रक्तदोषकफपित्तविसर्पश्चैवनाशयेत् । (नि० र०)

अर्थ-ढेरा-कपेला, कडवा, पारेको शुद्ध करनेवाला, हलका, किञ्चित् चरपरा, सर (दस्तावर), स्निग्ध, तीक्ष्ण, गरम और रूखा है । इसका रस-वान्तिजनक तथा विषाधिकार, कफ, वात, शूल, कृमि, सृजन, ग्रहपीडा, आम, पित्त, रुधिरविकार, विसर्प, कुत्तेका विष, भूसेका विष, विलावका विष, कटिशूल, अतिसार, और पिशाचपीडा इनका नाश करेहै । इसके बीज-शीतल, धातुवर्द्धक, स्वादिष्ठ, मदाग्निकारक, भारी, रसमें और पाकमें मधुर, बलकारक, कफकारी, सारक, स्निग्ध, वृष्य (वीर्यवर्द्धक) तथा दाह, वात, पित्त, क्षय, रक्तविकार, कफ, पित्त और विसर्प इनको दूर करेहै ।

अप्यञ्च ।

अङ्कोटक कटुस्तीक्ष्ण स्निग्धोष्णस्तुवरोलघु ।
 रेचन कृमिशूलामशोफग्रहविषापह ॥
 विसर्पकफपित्तासमूपकाहिविषापहः ।
 तत्फलशीतलस्वादुश्लेष्मघ्नवृहणगुरु ॥
 वल्यविरेचनवातपित्तदाहक्षयासजित् ॥ (भा० प्र०)

अर्थ-ढेरा-चरपरा, तीक्ष्ण, स्निग्ध, गरम, कपेला, हलका, दस्तावर तथा कृमि, शूल, आम, सृजन, ग्रहपीडा, विष, विसर्प, कफ, पित्त, रुधिर-विकार, भूषेके विष और सापके विषको दूर करेहै । इसका फल-शीतल, स्वादिष्ठ, कपनाशक, वृहण (बाजीकरण), भारी, बलकारक, दस्तावर तथा वात, पित्त, दाह, क्षय और रक्तविकारको दूर करेहै ।

विवरण । देरेके वृक्ष वनमें अधिकतासे होतेहैं । इसके पत्ते-पत्र भगुल चौड़े और पाच उँ अंगुल लम्बे होतेहैं, पूर-सफेद होताहै, फल-भर्षी अवस्थामें नीले और पक्वतेपर लाल होजातेहैं । उनके ऊपर कालापन झलकता रहताहै । इस वृक्षपर काटे होतेहैं ।

यगनाभाषि ।

वाटचपुष्पीसमांशाचविललावलिलनीमला ।

अर्थ-वाटचपुष्पी, समांशा, विलला, विलनी, मला (वाटचानक, ओदनी, समगा, ओदनिका, भद्रा, भद्रोदनी, राखकाष्ठिका, कल्याणिनी, भद्रवला, मोटापाटी, कडावला, नीतिपाकी, वाटववाटी । निलपा, वाटवानी, वाटिका, वाटवाटिका, राखटिका, ओटनाडा, वाटरी, रनका, रनतन्तूला, मूला, मद्रामा, बारिगा, कणिजिटिका, जयती, कटोम्पटिका मन्दागा)

उसूतभाषामें

मला ।

हिन्दीभाषामें

गिरेदी, रीपाग (ला), धीनवन्द ।

वगभाषामें

वेडेला ।

मराठीभाषामें

लघुचिफणा, सिरहरी, थोचिफणा ।

गुजरातीभाषामें

मन्दाणा, गरेटी ।

कर्णाटकीभाषामें

वेणोगग ।

तमिलभाषामें

मुदिदी ।

इम्रेजीभाषामें

होन बिमरोप्टमिडा।डागिचिदिग।Horn's am

Heart (heart) S. h. hearted side

लैटिन भाषामें

मिडा पार्थीकोमिया । S. h. car. m. l. a

मिडारोदिरोमिया । Carl. l. a

यगनाभाषा ।

मिन्धारुच्यामलावृष्यामाहिणीवातपित्तजित ॥ (रा०५०)

अर्थ-मिरेदी-विषय, कणिफाग, वृष्य (रीपादेव), माही कदा वान और विरक्तो दूर करते हैं ।

यगनाभाषा ।

वत्यातिलानिमधुगपित्तानीमारनाशिनी ।

नन्दनीयेषुष्टिगनीकफनेवनिभोभनी ॥ (रात्रिपण्डु)

अर्थ-खिरेटी-कडवी, मधुर, पित्तातिसारनाशक, चलवीर्यवर्द्धक, पुष्टि-कारक और कफरोधविशोधक है ।

अपिच ।

वलामूलत्वचश्चूर्णपीतसक्षीरशर्करम् ।

मूत्रातिसार हरति दृष्टमेतन्नसशयः ॥ (भा० प्र०)

अर्थ-खिरेटीकी-जड़की छालका चूरण मिश्रीमिलेहुए दूधमें मिलाकर पीनेसे मूत्रातिसार रोग दूर होता है ।

चलावीजगुणा ।

वलाफलस्वादुपाकेकपायमधुररसे ।

हिमवीर्यगुरुगुणस्तम्भनलेखनभृशम् ॥

विवन्धाध्मानपवनकारिपित्तकफासनुत् । (व० नि०)

अर्थ-खिरेटीका फल-पचनेमें स्वादिष्ट, कपेला, मधुर, शीतवीर्य, भारी, स्तम्भन, लेखन, विवन्धकारक, आध्मानजनक, वातवर्द्धक, तथा पित्त, कफ और रुधिरविकारको दूर करेहै ।

महाबलानामानि ।

महाबलापीतपुष्पीसहदेवीचसास्मृता ॥

अर्थ-महाबला, पीतपुष्पी, सहदेवी, (ज्येष्ठबला, करम्भरा, केशरुहा, केसरिका, मृगादनी, वर्षपुष्पा, केसवांद्दनी, प्रसादनी, देवबला, सारिणी, पीतपुष्पा, देवार्हा, गन्धबल्ली, मृगा, मृगरमा, वर्षपुष्पी, वाट्या, वाट्या-यनी, सहदेवा, देवसहा, बृहद्बला, गन्धावली, महागन्धा, मद्गन्धार्यप्रसादनी)

संस्कृतभाषामें महाबला, सहदेवी ।

हिंदीभाषामें सहदेई ।

बंगलाभाषामें पीतपुष्प, वेडेला ।

मराठीभाषामें भाबुडी ।

गुजरातीभाषामें सहदेवी ।

तामिलीभाषामें नेचिट्टी ।

म० पिरिना ।

कर्णाटकीभाषामें वेळुदुवे ।

लैटिन् भाषामें सिडारोंफिल्लिया । Si la rhombifolia

महावलागुणा ।

हरेन्महावलाकृच्छ्रभवेद्धातानुलोमनी ॥ (भा० प्र०)
 अर्थ-सहदेह-मृषकृच्छ्ररोगनाशक है और वातानुलोमक है ।

अथवा ।

महावलातुमधुराधातुवृद्धिकरीमता ।

वल्यावृष्यादिदोषघ्नीज्वरहृद्रोगदाहनुत् ॥

वातार्श शोफविषमज्वगन्मेहगणतथा ।

बहुमूत्रनाशयतीत्येवमाचार्यभाषितम् ॥

अर्थ-गददेह-मधुर, धातुवर्द्धक, बलकारक, वीर्यवर्द्धक, विदोषनाशक
 तथा ज्वर, हृद्रोग, दाह, वादीकी घवामी मूत्रजन, विषमज्वर, सर्वप्रकारके
 प्रमेह और मूत्रातिमाग्निवारक है ।

अतिपट्टानामानि ।



कफी

वलिकानिपलायल्याविकृतावाद्यपुष्पिकाघण्टा ।

शीताचशीतपुष्पाभ्रग्निलवृष्यगन्निपकादशया ॥

अर्थ-वलिका, अतिपला, लम्बा, शीतला, वाद्यपुष्पिका, घंटा, शीता,
 शीतपुष्पा, भुरिपला, वृष्यगन्निपका (वनती, कृषिभोक्ता, वृष्यगन्ना)

गन्धभाषामे

अतिपला ।

दिग्भाषामे

वगही, वर्या, वफरिषा ।

मगर्भाभाषामे

विज्वती, भावर्त, वासुती ।

गुजरातीभाषाम्

खपाट्ट ।

कर्णाटकीभाषाम्

मुलुदुरुवे ।

इंग्रेजीभाषाम्

इंडियनमेलो । Indian Malow

लैटिन् भाषाम्

एप्युटिलनइंडिकम् । Aputilon indicum

अतिबलागुणा ।

तिक्ताकटुश्चातिबलावातघ्नीकृमिनाशिनी ।

दाहतृष्णाविपच्छर्दिक्तेदोपशमनीपरा ॥

अर्थ—कणई—कडवी, चरपरी तथा वात कृमि, दाह, तृषा, विष, वमन और हृदको शान्तकरेहै ।

अन्यच्च ।

वलिकामधुराचाम्लाहितादोषत्रयप्रणुत् ।

युक्त्याबुद्ध्याप्रयोक्तव्याज्वरदाहविनाशिनी॥(ग०वि०)

अर्थ—कधी (ककहिया)—मधुर, अम्ल (खट्टी), हितकारक, त्रिदोषनाशक और किसीके साथ युक्तिपूर्वक देनेसे ज्वरको हरनेवाली है ।

अन्यच्च ।

हन्यादतिबलमेहपयसासितयासह ॥ (भा०प्र०)

अर्थ—कधीको दूध और मिथ्रीके माय सेवन करनेसे प्रमेह रोगका नाश होताहै ।

त्रिविधबलागुणा ।

बलात्रयस्वादुरीतस्निग्धवृष्यबलप्रदम् ।

आयुष्यवातपित्तघ्नाहिमूत्रघ्नापहम् ॥

अर्थ—खिरौटी, महदेई और कधी यह तीनों स्वादिष्ट, शीतल, स्निग्ध, वीर्यवर्द्धक, बलकारक, अवस्थास्थापक, वातपित्तनाशक, मलरोधक, मूत्र-गोगनिवारक और ग्रहकी पीडाको दूर करेहै । मात्रा २ मासेकी ।

नागचलानामानि ।

गाङ्गेरुकीनागजलाक्षपाद्वस्वगवेधुका ॥

अर्थ—गागेरुकी, नागचला, शपा, हस्वगवेधुका, (सग्गन्धिनी, गोरक्ष-तण्डुला, भद्रोदनी, सग्गन्धा, चतुःपला, महोदया, महापत्रा, महाशाखा, महाफला, विश्वदेवा, अनिष्टा, देवदण्डा, महागन्धा, घण्टा, गरवल्गिका, विश्वदेवी)

| | |
|---------------|--|
| मस्तूनाभापामे | नागवला । |
| हिन्दीभापाम | गंगेरन, गुल्मकरी । |
| वगभापामे | गोरस, चाबुडे, पानभाद्रा । |
| मराठीभापामे | गागेरी, गांढे घामण । |
| कोरुणीभापामे | नुपनडी । |
| कर्णाटकीभापाम | घट्टगळे । |
| हैद्रि० | सिदागुमांसा । Sida spinosa अम्बा गुणा । |

मधुगम्लानागवलाकपायोष्णागुम्स्तथा ।

कट्टुष्णाकफवातप्लीत्रणपित्तविनाशिनी (ग० नि०)

अर्थ-गंगेरन-मधुर, अम्ल, कोली, गरम, भारी, चरपी, गन्धवाहना-
शक, घणनिवारक और पित्तहारक है ।

भाष्य ।

तद्भन्नागवलात्यर्थं कृच्छ्रेक्षीणशतेहिता ॥ (राजवल्लभ)

अर्थ-गंगेरनके गुणभी शिथिलकी ममान है, विशेषकरके मूत्ररोग, क्षय
और क्षीणगोममें हितकारी है ।

भाष्य ।

ज्ञेयानागवलाचाम्लामधुगतुवगगुरु ।

कटवत्युष्णात्रणवातपित्तकुष्ठशनाशयेव ॥

कण्डूक्षनागयत्येवमुनिभिः परिकीर्तिता । (निषण्डुर०)

अर्थ-गंगेरन-अम्ल, मधुर, कषेरी, भारी, चरपी, गरम तथा घन,
वात, पित्त, कुष्ठ और कण्डूको दग्नेशाली है ।

अम्बा कण्डगुणा ।

गागेरुकीफलरुक्षकपायंस्वादुवातलघु ।

लेपनस्तम्भनशीतविवन्धाभमानहृद्रु ॥ (ग्रा० नि०)

अर्थ-गुडगरुकीसे दल-रस, कषेरी, स्वादु, वाती, शैतल, मृदुभन,
शीतल, शिथिल और आम्मातनाक तथा भारी है ।

हृदनागवलागुणा ।

हृदनागवलाचाम्लामधुगानविशेषता ।

दाहज्वरहराप्रोक्तापूर्ववैद्यैर्मनीपिभि (नि० रा०)

अर्थ-वडीगगेरन-अम्ल, मधुर, त्रिदोषनाशक, तथा दाह और ज्वर-निवारक है ।

चतुर्विधवलागुणा ।

वलाचतुष्टयशीतमधुरवलकान्तिकृत् ।

स्निग्धग्राहिसमीरासपित्तास्रक्षतनाशनम् ॥

अर्थ-चारोंप्रकारकी खिरंटी (खिरंटी, सहदेई, कयी, गगेरन) शीतल, मधुर, बलवर्द्धक, कान्तिकारक, स्निग्ध, मलरोधक, तथा वातरक्त, रक्तपित्त और क्षतनाशक है ।

विवरण । वला अनेक प्रकारकी होती है जैसे खिरंटी, कयी, गगेरन, गगेटी, सहदेई, दण्डोत्पल इत्यादि । इनमें खिरंटीके भी कई भेद हैं । एक प्रकारकी खिरंटी वह होती है कि, जिसके वृक्ष डेढ़हाय ऊंचे होते हैं । इसके पत्ते-तुलसीके पत्तोंकी समान होते हैं । फूल-पीला आता है । फल-छोटे २ आते हैं और इसमें बहुतसे बीज निकलते हैं । इसके पत्तोंका शाक बनाते हैं ।

२ दूसरे प्रकारकी खिरंटीका वृक्ष पुरुषकी बराबर उंचा होता है । इसके पत्ते-अनीदार होते हैं । फूल-सफेद रंगके आते हैं, फल बारीक और गोल आते हैं । उनमेंसे जो बीज निकलता है उनको बलाबीज अथवा बीजवद कहते हैं ।

३ कयीके वृक्षभी दोढाई हाय ऊंचे होते हैं । फूल-पीला, फल-चमकी समान और गोल होते हैं । उनको प्राय बालक खाकर मरते हैं । इसके बीजभी खिरंटीकी समान होते हैं ।

४ गगेरनका वृक्ष सहदेईके वृक्षकी सदृश होता है किन्तु, इसके पत्ते-कुछ अधिक मांटे और दो अनिवाले होते हैं । फूल-गुलाबी रंगका होता है, फलभी सहदेईसे बड़े होते हैं, और फलके सूखनेपर उसके अपने आप पांच भाग होजाते हैं ।

५ सहदेईके वृक्ष छोटे और बड़े दोप्रकारके होते हैं, इसके पत्ते पतले और खरखरे होते हैं । इसका फल फूल पीलेरंगका आता है, फल छोटे २ गोल आते हैं और इसमें काटे होते हैं ।

लक्ष्मणानामानि ।

लक्ष्मणापुत्रजननीनागपत्नीचपुत्रदा ।

अर्थ-लक्ष्मणा, पुत्रजननी, नागपुत्री, पुत्रदा (पुत्रसन्दा, पुच्छश, नागिनी
नागाक्षा, नागपुत्री, वृत्तिनी, मन्त्रिका, अम्बिन्दुच्छदा)

लक्ष्मणागुणा ।

लक्ष्मणाकन्दक-शीतोमधुरश्चरसायन ।

गर्भप्रदश्चतृप्यश्चत्रिदोषघ्नणवातहा ॥ (निपण्डुरत्नाकर)

अर्थ-लक्ष्मणाकन्द-शीतल, मधुर, रसायन गर्भप्रद वीर्यवर्द्धक, त्रिदोष-
पनाशक और घ्नणविनाशक है ।

विवरण । लक्ष्मणा औषधि बहुत काम मिलती है । यह वही २ पत्र
इत्यादिमें उत्पन्न होती है । इसके पत्ते-चाड़े होते हैं उनपर लाल २ सन्दाही
समान धुँदेली होती है । इसके नीचे सफेद रंगका फेड़ निकलता है ।

स्वर्णवल्लीनामानि ।

स्वर्णवल्लीरक्तफलाकाकायु काकपल्ली ॥

अर्थ-स्वर्णवल्ली, रक्तफला, काकायु, काकपल्ली (हरणीपीतिक्ता)

भाषा गुणा ।

स्वर्णवल्लीशिर पीडात्रिदोषान्दन्तिदुग्धदा ॥

अर्थ-स्वर्णवल्ली-शिरपीडा और त्रिदोषपनाशक है, तथा स्तनोंमें दूध
घटानेवाली है ।

विवरण । स्वर्णवल्ली अर्थात् सोनेके पत्र परंत, याग, और स्तनोंमें अधिक
होती है । पत्ते-गोल अनीदार होते हैं, पत्र-लाल सगते हैं इस लताका रंग
गम्पूर्ण पीला होता है इसी कारण इसका नाम स्वर्णवल्ली है ।

हिन्दीभाषामें स्वर्णवल्ली ।

• मराठीभाषामें सोनेपत्र ।

गुजरातीभाषामें स्वर्णवल्ली ।

सर्वांगीनामानि ।

कार्पासीतुण्डिकेर्गन्धमुद्रान्ताचक्यने ॥

अर्थ-चपासी, तुण्डिकेरी, गमुद्रान्ता, (मद्रा, चन्द्र, चाद्रा, पुष्पुष्पा,
मदरी, चापांतिका, चपासी, चपागमांगीणी, चम्पा, गुप्ता, गुड, गुडके-
रिका, मरुद्रा, विषु, शार्द, चापांग, चम्पुन, चारुन)



कपास

वनकार्पासनामानि ।

त्रिपर्णावनकार्पासीभारद्वाजीयशस्विनी ॥

अर्थ-त्रिपर्णा, वनकार्पासी, भारद्वाजी, यशस्विनी (वनसरोजिनी, बहु-
मूर्ति, वनकार्पासिका, वनजा, वनोद्भवा, वनोद्भवकार्पास, अरण्यकार्पासिका,
अरण्यकार्पासी)

कालाञ्जनीनामानि ।

कालाञ्जनीचकृष्णाभाकृष्णाञ्जनीशिलाञ्जनी ॥

अर्थ-कालाञ्जनी, कृष्णाभा, कृष्णाञ्जनी, शिलाञ्जनी, (अञ्जनी, रचनी
नीलाञ्जनी, काली)

संस्कृतभाषाम्

हिन्दीभाषाम्

वङ्गभाषाम्

मराठीभाषाम्

गुजरातीभाषाम्

कर्णाटकीभाषाम्

तेलुगुभाषाम्

कार्पासी, वनकार्पासी, कालाञ्जनी ।

कपास, वनकपास, नरमावादी, कापच्छी,

[बिनोटे] कालीकपास, [रुई]

कार्पास, वनकार्पास, कालिकर्पासिकिनी [तुला]

कापशी, कापूस, सरकी, काळी कापशी ।

वणरु कपास, दिग्वणी कपाशिया ।

हत्ति काडहत्ति ।

पत्तिचेट्टु ।

| | |
|-----------------|-------------------------------------|
| शुभ्रेजीभाषामें | कायन । Corallo plant |
| ऐटिजभाषामें | गोसिर्षप भरपेइय । Gonyium bespectum |
| फारसीभाषामें | कुतुन, सुवेदना । |
| अरबीभाषामें | कुतन, हडुल कुतन । कार्पासीगुणा । |

कार्पासीमधुगन्धितास्तन्यापित्तरुफापहा ।

तृष्णादाहभ्रमभ्रान्तिमृच्छाद्वद्वलकारिणी ॥ (रा० नि०)

अर्थ-कपास-मधुर, दीप्त, स्तनोंमें दूध घटानेवाली, पल्लवारक तथा पित्त, कफ, तृषा, दाह, भ्रम, भ्रान्ति और मृच्छाको दूर करनेवाली है ।

अपघ्न ।

कार्पासीकौलधुश्लोष्णामधुगवातनाशिनी ।

तन्पलाशमभीरघ्नरक्तकृन्मृत्रवर्द्धनम् ॥

तत्कर्णपिडिकानादपृथास्यानविनाशनम् ।

तद्वीजस्तन्यदवृष्यमिग्धंकफहरगुरु ॥ (भा० प्र०)

अर्थ-कपास-दुलकी, गरम, मधुर, और वातविनाशक है । कशाग्र पत्र-वातनाशक, रक्तवर्द्धक, मूत्रको घटानेवाले, तथा काष्ठी पीडा, कण नाद और कानमें गंधके घटनेको दूर करनेवाले है । कपासके पीत-स्तनोंमें दूध घटानेवाले, वीर्यवर्द्धक, मिग्ध, कफकारी और भारी है ।

यनरापासीगुणा ।

भारद्वाजीहिमाकृत्यात्रणभस्त्रक्षतापहा ॥

अर्थ-यनरपाग-नीतन, रुधिकारक, तथा घार और शयने पावना दूर करे है ।

यान्तीगुणा ।

कालाजनीकट्टण्णास्यादम्लामक्रिमिशोधिनी ।

अपानावर्तनभमनी जट्टगमयदाग्निनी ॥ (रा० नि०)

अर्थ-कालाजपाग-चपरा, गरम, खट्टी, आमनाशक शृमिशोषक, अपानावर्तनभम और जट्टरोगको दमेवाली है ।

विशेष । कृष्णको देह मय दिम्बोश्चानमें बहुत होते है । शरीर बड़ी मोटी होती है, इसका बहुत मल त्यागत होता है, उत्तम ० अर्थात् कृष्ण

सहीके बनते हैं । कपासके फूल पीले और बीचमें लाल होते हैं उसमें गूलरकी समान तिकोने फूल आते हैं । उसके भीतर कपास निकलती है, वह कपास चरखीमें ओटी जाती है उसमेंसे जो बीज निकलते हैं उनको विनौले कहते हैं । इसके पत्तेमें पाच अनी होती है जैसे, एरण्डके पत्तोंमें । परन्तु उनसे बहुत छोटे होते हैं । एक काली कपास होती है जिसके फूल काले और विनौले भी काले होते हैं । एक नरयावाडी होती है जिसके पेड बड़े २ होते हैं, फल फूल वारह महीने आते हैं, रुई नरम होती है, विनौले हरे होते हैं, यह सब कपासहीके भेद हैं ।

वशनामानि ।



वशत्वक्सारकर्म्मार्त्तचिसारतृणध्वजा ।

शतपर्वा यवफलो वेणुमस्करतेजना ॥

अर्थ—वश, त्वक्सार, कर्म्मार्, त्वचिसार, तृणध्वज, शतपर्वा, यवफल, वेणु, मस्कर, तेजन, (किलाटी, पुष्पवातक, बृहत्तृण, किष्कुपर्वा, बन्ध, सुपर्वा, तृणकेतुक, कण्डाड, कण्टको, महावल, दृढग्रान्थि, दृढपत्र, धनद्वं, धातुप्य, दृढकाण्ड, कीचक, कुक्षिरन्ध्र, पट्टपालय, कभठ, मृत्युवीज, वादनीय, फलान्तक, तृणकेतु, पर्वयोनि, सुपर्वन्, तृणराजक, बहुपर्वन्, दुरारुह)

संस्कृतभाषामें

वश ।

हिन्दीभाषामें

वाँस ।

बंगलामें

वाँस ।

| | |
|-----------------|--|
| मगडीभाषामें | वेट, पोन्ग्रेट, भाँवेट । |
| गुनरातीभाषामें | याग । |
| कगाँटकीभाषामें | यडुविदील । |
| तैलिङ्गीभाषामें | क्चिकड यदुरु, वेन्नेयुरु, येनुगोणि, वेतु । |
| तामिर्नीभाषामें | मनगिल । |
| वम् | माण्डगय । |
| इप्रेजीभाषामें | बेंडूकेन । (Candoo cane) |
| लैटिन् भाषामें | बेधुसायलगेरिम Bambusa Villan- |
| फार्सीभाषामें | कमव । |

पंचगुणा ।

वशोम्लस्तुवरस्तिक्तशीतलःसारकोमत ।

वस्तिशुद्धिकर स्वादुःछेदनोभेदकोमत ॥

कफरक्तज्वरपित्तकुष्ठशोथव्रणतथा ।

मृत्रकृच्छ्रप्रमेहार्शान्दाहश्चैवविनाशयेत् ॥ (नि० २०)

अर्थ—बोस—गरहा, कपेला, कटवा, शीतल, सारक, वस्तिशोषर, स्वा-
दिष्ट, छेदक, भेदक तथा कफ, रक्तविकार, पित्त, गौद, मृजन शार, मृ-
च्छ, प्रमेह, चर्माश्र, और दाहका दूरकरे है ।

भस्वा परीरगुणा ।

तत्करीर कटु पाकेग्मेरुक्षोगुरुःसर ।

कपाय कफकृत्स्वादुर्विदाहीवातपित्तल ॥ (भा० प्र०)

अर्थ—बोसके अहुर-पचनेमें गरपरे, रुगे, भारी साय (दग्धाश्र),
कपेले, कफरागक, स्वादु, दाहजनक और दातविकारकर है ।

मविष ।

करीरकटुतिक्ताम्लकपायलघुशीतलम् ।

पित्तान्दाहकृच्छ्रप्ररुचिकृत्परिनिर्गुणम् ॥ (रा० नि०)

अर्थ—यामके अहुर—गरपरे, कटवे, राटे, कपेले, दग्ध, शीतल, तथा
रक्तविष, दाह और मृच्छरोगको हरें है । शक्वे परं (गति) निर्गुण ।

पंचगुणा ।

वेणोर्ध्वस्तुनुवरो रत्नश्च मधुगोमत ।

पुष्टिकृद्दीर्यकृद्बल्यः कफपित्तहरो मत ।

विषप्रमेहशमनो मुनिभिः परिकीर्तित ॥ (नि० २०)

अर्थ-वाँसके चावल-कपेले, मधुर, पुष्टिकारक, बलवर्द्धक, तथा कफ, पित्त, विष और प्रमेहको दूर करे हैं ।

अपिच ।

तद्यवास्तु सरारूक्षा कपाया कटुपाकिन ।

वातपित्तकराउष्णावद्धमूत्रा कफापहा ॥ (भा० प्र०)

अर्थ-वाँसके चावल-सारक (दस्तावर), रूखे, कपेले, पचनेमें कटु, वातपित्तकारक, गरम, तथा मूत्ररोध और कफनाशक हैं ।

द्विविधवशागुणा ।

वशौत्वम्लौकपायौचकिञ्चित्तौ सुशीतलौ ।

मूत्रकृच्छ्रप्रमेहार्श पित्तदाहास्रनाशनौ ॥

विशेषाद्रन्ध्रवशास्तु दीपनोऽजीर्णनाशन ।

रुचिकृत्पाचनो हृद्य शूलघ्नो गुल्मनाशन ॥ (राजनिघण्टु)

अर्थ-दोनों प्रकारके वास- (वास और रन्ध्रवास) खट्टे, कपेले, किञ्चित् कड़वे, शीतल, तथा मूत्रकृच्छ्र, प्रमेह, बवासीर, पित्त, दाह और रक्तविकारोंको हरे हैं । रन्ध्रवश-विशेषकरके अग्निको दीपन करनेवाला, अजीर्णनाशक, रुचिकारक, पाचक, हृदयको हितकारी, तथा शूल और गुल्मनाशक है ।

विवरण । वाँस वन जगल और पर्वतोंकी तलेटिपोंमें उत्पन्न होते हैं, फूल सफेद आता है, वाँसमें बगलोचन निकलता है, कभी २ वाँसपै जो आते हैं उन जोओंमेंसे चावल निकलते हैं उनका भात करते हैं ।

नलनामानि ।

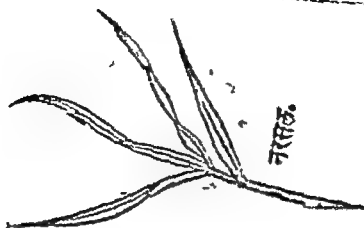
नल पोटगल शून्यमध्यश्च धमनस्तथा ॥

अर्थ-नल, पोटगल, शून्यमध्य, धमन (नाल, नड, कुशिलन्ध्र, कीचर, दीर्घवश, विभीषण, छिद्रान्त, मृदुपत्र, वशपत्र, मृदुच्छद, लालवश, नट, नटी, नड, नर्चक, मृदुपुष्प)

देवनलनामानि ।

अन्यो महानलो वन्यो देवनालो नलोत्तम ।

स्थूलनाल स्थूलदण्ड सुरनाल सुद्रुम ॥



नरसल

अर्थ-महानर, वन्य, देवनाल, नलोत्तम, स्थूनाल, स्थूजद्वय, धुरनाल,
सुद्धम ।

| | |
|----------------|---|
| सत्कृतभाषामे | नर, महानर । |
| हिन्दीभाषामे | नराल, नर, महानराल । |
| वगभाषामे | नल, वदनर । |
| मगहीभाषामे | नल, देवनर, योग्येवनर । |
| गुजरातीभाषामे | नारी । |
| कर्णाटकीभाषामे | देवनाल, वंशग्यदेवनाल । |
| तैलिङ्गीभाषामे | भुगुण्डर, विरेगगहि । |
| इंग्रजीभाषामे | इण्डियन रोपेरा । <i>Indian ropera</i> |
| लैटिन्भाषामे | लोयिलीया, निबोर्गिया, निरोलिया । <i>Lobelia Nitida</i> । |
| फरसीभाषामे | भारी । |

नरगुण ।

नलस्तुमधुरस्तिक्त रुपाय कफरक्तजित ।

उष्णोद्भस्त्रियोन्यार्तिदाहपित्तविमर्षहृत् ॥ (भा प्र.)

अर्थ-नर-मधुर, वट्ठा, वपेला, वटनाशक, रक्तविकारविनाशक,
गन्ध, तथा हृत्पदोग धमिली पीडा योनिगन्ध, दाह, विमर्ष विमर्षरा
नाशके ह ।

अपह ।

जेयोविभीषण श्रीनोश्च्यश्चनुपगमेधु ।

धोर्ग्यगृष्टिकग्निकोदीपनोग्रशोचनः ॥

विसर्पकृच्छ्रदाहास्रदोषपित्तकफान्हरेत् ।

हृद्रोगवस्तिशूलौचयोनिरुग्रक्तपित्तहा ॥ (नि० २०)

अर्थ—नल (नरसल)—शीतल, रुचिकारक, कपेला, मधुर, वीर्यवर्द्धक, कडवा, अग्निको दीपन करनेवाला, मूत्रशोधक, तथा विसर्प मूत्रकृच्छ्र, दाह, रुधिरविकार, पित्त, कफ, हृदयरोग, वस्तिशूल, योनिरोग, और रक्तपित्तका नाशकरे है)

देवनलशुणा ।

देवनलोतिमधुरोवृण्यईपत्कपायक ।

नलाधिकश्चवीर्येतुशस्यतेरसकर्मणि ॥

अर्थ—बड़ा नरसल—अत्यन्त मधुर, वीर्यवर्द्धक, किञ्चित्कपेला, और नलकी अपेक्षा वीर्यम अधिक है तथा रसकर्ममें उत्तम है ।

विवरण—नरसल अर्थात् नल वासके समान जलाशयके निकट जगलोंमें उत्पन्न होतेहैं । पत्ते—ईखके पत्तोंके समान होतेहैं इसकी आकृतिभी ईखकेही सदृश होतीहै । जिस प्रकार गन्नेके ऊपर अगोला होताहै उसीप्रकार इसके ऊपरभी होताहै परन्तु ऊचावमें ईखसे तिगुना ऊचा होताहै यह भीतरसे पोला होताहै ।

भद्रमुञ्जनामानि ।

भद्रमुञ्ज शरोवाणस्तेजनश्चक्षुवेष्टन ।

मुञ्जोमुंजातकोवाणःस्थूलदर्भः सुमेखल ॥

अर्थ—भद्रमुञ्ज, शर, वाण, तेजन, और चक्षुवेष्टन, यह नाम रामशरके हैं । मुञ्ज, मुंजात, वाण, स्थूलदर्भ, सुमेखल (इक्षुकाण्ड, मौञ्जी, तृणारव्य, ब्रह्मण्य, तेजनादय, वानरक, मुञ्जनक, शीरी, दम्भादय, दुर्मूल, दृढतृण, दृढमूल, घट्टमज, रञ्जन, शक्रभग) यह नाम मूँज अर्थात् सेटके हैं ।

संस्कृतभाषामें

भद्रमुञ्ज, मुञ्ज ।

हिन्दीभाषामें

रामसर, मूँज ।

मराठीभाषामें

मोळ ।

वगभाषामें

मुँज, रामशर, मरपत ।

तैलिङ्गीभाषामें

मुजगाटि अनिस्फुलिंग ।

द्विविधमुञ्जशुणा ।

मुञ्जद्वयन्तुमधुरतुवरशिशिरतथा ।

दाहृष्णाविसर्पात्रमृन्नमन्त्यविगेगजित् ॥

दोषत्रयहरवृष्यमेखलासृपयुज्यते । (भा० प्र०)

अर्थ—दोनों प्रकारकी मूल (मुत्र और श्मश्रु) मधुर, कषेय, शीतल तथा दाह, वृषा, विमर्ष, रुधिररिक्त, मूत्ररोग, नेत्ररोग और त्रिदोषनाशक है । तथा वीर्यवर्द्धक है ।

अन्विषा सुतगुणाः ।

सुन्नन्तुमधुर शीत रुफपित्तगदोषजित् ।

ग्रहस्थासु दीक्षासु पावनो भूतनाशन ॥

अर्थ—मूत्र-मधुर, मीठा, कफविघ्नादोषनाशक, मदरसा और दीक्षाप
पवित्र तथा मृतनाशक है ।

विष्णु-मुज और भद्रमुजके शुद्धभी नरके समान जगत्परचें गर्भीय या रेतमें चट्टत होतेंइ इगकी बीणभी कहतेंइ, यह वास्तवमें बीण शब्द भाष्य विगडकर बीण होगया इसके यात्रको मृत कहतेंइ । वृत्त मल सम्ये र गये रंगके होतेंइ ।

मासनाम्नानि ।

काश सुकाण्ड कामेश्वरनादयोनीगजस्तथा ।

काकेशुर्वायमेशुश्चमस्यादिशुत्स. गिरि ॥

अथ-काश, मुकाण्ड, काशेषु, नादेय, नीरज, कवेयु, वापसोयु, इयु
रम, शिरि, (इयुगन्वा, पोटगज, काश, कर्मपण, इयुगलिका, इपीका,
अथवाल, वापसुण, वापसुणक, काशी, वाशा, वाण्डेयु, अमरुपणक,
काशक, वनदागज, इसावि, इयुग, इयुकाण्ड, नाग, गिरुपणक, दम्पणक,
रेखन, वाण्ड, काण्डक, कण्डक, कण्डक, दम्पण)

महत्कुमार्याम्

पञ्चमः ।

दि-ईशापामे

श्री १

५७भाष्ये

चेन्नैयाग्नः ।

मरार्त्तनाशये

पुनः, सप्तमः, सप्तमः ।

मोक्षः प्राप्यते

5702

युक्तगार्हपत्यायाम्

पुस्तकालय ।

मन्त्र-श्रीगणेशाय नमः

श्रीगणेशाय नमः, काशी, २०२३ ।

तैलिङ्गीभाषामे
लैटिन्भाषामे

रेड्ड ।

कुइक्स बारवेटा । Coxbarbata

काशगुणा ।

काशस्तुतपर्ण शीतोगौल्योरुचिकरोमत ।

बलकृन्मधुरोवृष्यस्तिक्तपाकेमधु स्मृतः ॥

सर स्निग्ध पित्तदाहमूत्रकृच्छ्रक्षयापह ।

मूत्राश्मरीरक्तदोषरक्तपित्तक्षतक्षयम् ॥

पित्तरोगनाशयतीत्येवपूर्वेर्निवेदितम् ।

अर्थ—कास वृत्तिकारक, शीतल, गौल्य, रुचिकारी, बलकारक, मधुर, वीर्यवर्द्धक, कडवा, पचनेमेंभी मधुर, सर, (दस्तावर) स्निग्ध तथा पित्त, दाह, मूत्रकृच्छ्र, क्षय, मूत्राश्मरी, रुधिरविकार, रक्तपित्त, क्षतक्षय और पित्त-रोगको दूर करे है ।

विवरण । कास-नदियोंके किनारे कीचडमें उत्पन्न होतीहै, पत्ते वाभरके समान, धरन एकप्रकारकी देशी वाभरभी होतीहै, फलसफेद अधिक गोभा-यमान मजरीके समान आतेहैं ।

गुन्द्रनामानि ।

गुन्द्र पटेरकोरच्छ शृङ्गवेराभमूलकः ॥

अर्थ—गुन्द्र, पटेरक, रच्छ, शृङ्गवेराभमूलक ।

संस्कृतभाषामे गुन्द्र ।

हिन्दीभाषामे गोंदपटेर ।

मराठीभाषामे पाणगवत, रद्धा ।

गुजरातीभाषामे पान्यवाडाडी ।

इंग्रेजीभाषामे एलिफंटग्रास । Elephant grass

लैटिन् भाषामे टाइफा एलिफण्डाइन । Typha I lephantina

अस्य गुणा ।

गुन्द्र कपायोमधुरशिरिश पित्तरक्तजित् ।

स्तन्यशुकरजोमूत्रशोधनोमूत्रकृच्छ्रहृत् ॥

अर्थ—पटेर-कपेली, मधुर, शीतल, रक्तपित्तनाशक, स्तनोंके दूधको तथा शुक्र, रज, मूत्रको शुद्धकरे है । एवं मूत्रकृच्छ्ररोगविनाशक है ।

विवरण । गुद्रपट्टे-अर्थात् गौदपट्टे पानीम होताई, पणे-पट्ट नये चार पाच फुटके और एकद्वच चौंटे होतेई, पत्तेमें पत्ते निकलतेई पत्ते मोठे बहुत होतेई, बरन बीचसे गिरजावेई, उनके ऊपर एक पात बागोके समान होतीई, चालऊपर एक पतलीसी एकटी होतीई । इनरी चराई इत्यादि अनेक पदार्थ मनतेई ।

परमात्मनि ।

एरकागुन्द्रमृलाचशिम्विगुन्द्राशरीतिच ॥

अर्थ-एरका, गुन्द्रमृला, शिम्वि, गुन्द्रा, शरी । यह नाम है ।

हिन्दीभाषामें मोधीमृण ।

बंगभाषामें होंगला ।

मराठीभाषामें एरका, पाण्ड्याला ।

गुजरातीभाषामें एरका ।

अथ गुण ।

एरकाशिम्विगुन्द्राचक्षुष्यायानरोपनी ।

मृचकृच्छ्राश्रमरीदाहपित्तशोणितनागिनी ॥

अर्थ-एरका-(मोर्यामृण) जीतल, बरंपराएक, मेवाकी दिगहारी वाहर । कुपित कानेशाली, तथा मृचकृच्छ्र, पयसी, आद और रक्तपित्तनाश है ।

विवरण । मोर्यामृण-जन्म उत्तम होताई, पणे-पट्ट २ लावे हावे है ।

कृतनामानि ।

कुशोदभस्तथावर्हि मन्चमोचजक्षपण ।

ततोन्योदीर्घपत्र न्यात्क्षुपत्रन्त्येवच ॥

अर्थ-कुश, दर्भ, पौई, मृचपत्र, मन्चपत्र (कुश पत्रिय, पौाह, इतर गर्भ, कुशप) यह नाम कुशाफ है । दीर्घपत्र और क्षुपत्र यह दुगो मन्चपत्र कुशाफ है ।

मराठीभाषामें कुश, दर्भ ।

हिन्दीभाषामें कुशा, दाभ, दाभ ।

बंगभाषामें कुश ।

मराठीभाषामें मन्चपत्र और क्षुपत्र

मन्चपत्र और क्षुपत्र

गुजरातीभाषामें कुश, दाभ ।

कर्णाटकीभाषामें विलीय बुदकुशि उद्वाकुशि ।
तैलिङ्गीभाषामें कुशदूर्वाळ, दुभ ।
लैटिन्भाषामें एन्ड्रोपोगन नारळे इडिस । *Andropogon nordaides*
द्विविधदर्भगुणा ।

दर्भद्वय त्रिदोषघ्न मधुर तुवर हिमम् ।

मूत्रकृच्छ्राश्मरीतृष्णावस्तिरुक्प्रदरास्रजित् ॥ (भा० प्र०)

अर्थ—दोनों प्रकारकी दाभ—त्रिदोषनाशक, मधुर, कपेली, शीतल, तथा मूत्रकृच्छ्र, पयरी, टपा, वस्तिरोग, प्रदररोग और रक्तविकारको दूर करनेवाली है ।

अपच ।

दर्भस्तुमधुर.शीतोगर्भस्थापनकारकः ।

पित्तदाहश्रमरजोदोषञ्चैवविनाशयेत् (ध० नि०)

अर्थ—दाभ—मधुर, शीतल, गर्भस्थापक, तथा पित्त, दाह, श्रम और रजोदोषनाशक है ।

अपिच ।

दर्भ शीतोरुचिकरोमधुरस्तुवरोमत ।

स्निग्ध कफकर शुक्ररक्तशुद्धिकरोमत ॥

कफरक्तपित्तपित्तश्वासतृपांतथा ।

मूत्रकृच्छ्रवस्तिशूलकामलाप्रदरतथा ॥

रक्तदोषविसर्पञ्छर्दिमूर्च्छांतथाश्मरीम् ।

नाशयेदितिचप्रोक्तोमूलतस्यतुशीतलम् ॥

रुच्यंचमधुररक्तज्वरतृदश्वासकामलाम् ।

पित्तञ्चनाशयत्येवमुनिभिः परिकीर्तितम् ॥ (नि० रा०)

अर्थ—कुशा तथा दाभ—शीतल, रुचिकारक, मधुर, कपेली, स्निग्ध, कफकारक, शुक्र और रक्तशोधक तथा कफ, रक्त, रक्तपित्त, पित्त, श्वास, टपा, मूत्रकृच्छ्र, वस्तिशूल, कामला, प्रदर, रक्तविकार, विसर्प, वमन, मूर्च्छा और अश्मरी (पयरी) रोगको नष्ट करे है । इसकी जड़ शीतल, रुचिकारक, मधुर, रक्त, ज्वर, टपा, श्वास, कामला और पित्तको दूर करे है ।

दमोर्दोचगुणस्तुल्योत्थापित्रमितोधिक ।

यदिश्वेतकुशाभावस्त्वपंग्योजयेद्विपर ॥

अर्थ-यद्यपि कुशा और शम्भमे गुण समानही हैं तथापि कुशा अधिक गुणवाली है । जो कुशा न मिले तो उसके अभावमें दाभ लेनी ।

विवरण । गुण और दम-दोनों एक ही जातिके गुण हैं । यह रेठनी भूमिमें भूदों और जगनोंमें उत्पन्न होता है । पत्ते-इसके पागड़ोंके समान होते हैं ।

गुणसामानि ।

कचृणगेहिपदेवजग्न्यमोगन्धिकेतथा ।

भूतिकध्यामपोगश्चयामकधूपगन्धिकम् ॥

अर्थ-कचृण, रोहिप, देवजग्न्य (क) मोगन्धिक, भूतिक, याम, पोग, यामर, धूपगन्धिक, (गुगन्य, कृणगीत, कुगीतन, रोहिपकृण, कचृण, भूति, यामर, भूतिमुद्रा)

मरुतमापामे कचृण, रोहिपकृण ।

हिन्दीभापामे रोहिपकोधिमा, गयेजग्न्य, मिर्गिपागन्ध, रमराम ।

बगलामापामे गमकपूर ।

मराठीभापामे रोहिप, गुगन्यरोहिपकृण ।

गुणाटर्भापामे विरुजजर्गी ।

होल्दीभापामे कामरिगाहि, गुग्गुलु ।

औत्तर्भापामे पालरारि ।

पातर्भापामे खयालमापुन ।

अरबीभापामे अजगर ।

यमगुण ।

रोहिपतुस्रतिककट्टपाकेत्यपोहति ।

हृत्कण्ठव्याधिपित्तान्यशूलतानरुफज्वरान् ॥ (भा २.)

अर्थ-कचृण-कचरे, कट्ट, कचनेमें गरप, तथा हृत्कण्ठ, कण्ठ, रज्जि, शूल, रोग, रुफ और ज्वरको हरे ।

अजगर ।

कचृणगनामटयराटुनिककफापहम् ।

अस्त्रभल्यादिदोषमनायसर्पिणाशनम् ॥

अर्थ-कतृण-(रोहिपट्टण) चरपरे, कडवे, कफनाशक तथा श्वश-
ल्यादि दोष और बालग्रहनिवारक है ।

दीर्घरोहिपनामानि ।

अन्यद्रौहिपकंदीर्घदृढकाण्डोदृढच्छदम् ।

यज्ञेष्टदीर्घनालश्चित्तसारश्चकुत्सितम् ॥

अर्थ-दीर्घरोहिपक, दृढकाण्ड, दृढच्छद, यज्ञेष्ट, दीर्घनाल, चित्तसार,
कुत्सित ।

अस्य गुणाः ।

दीर्घरोहिपकचित्तकटूष्णकफवातजित् ।

भूतग्रहविषघ्नश्चघ्नक्षतविरोपणम् ॥

अर्थ-दीर्घरोहिपट्टण-कडवे, चरपरे, गरम तथा कफवात, भूत, ग्रह और
विषनाशक है । तथा घ्न और क्षतको भरनेवाले है ।

विवरण । रोहिप ट्टण-लम्बे और सुगन्धित मालवे और राज पूतानेके
जगलम बहुत होतेहैं । पत्ते-छोटे २ और हरे हरे अत्यन्त शोभायमान
होतेहैं, इसके सर्वांगमें बहुत सुगन्धि आतीहै । दूसरे रोहिपट्टणके कुछ
बड़े क्षुप होतेहैं । इसका तेल निकलता है, उसमें बहुत सुगन्धि होतीहै ।

भूटणनामानि ।

गुह्यबीजन्तुभूतीकसुगन्धजम्बुकप्रियम् ।

भूटणन्तुभवेच्छत्रामालातृणकमित्यपि ॥

अर्थ-गुह्यबीज, भूतीक, सुगन्ध, जम्बुकप्रिय, भूटण, छत्रा, मालातृणक
(रोहिप, भूति, भूतिक, कुट्टम्बक, मालातृण, समालम्बी, छत्र, अहिच्छत्रक,
गुच्छाल, पुस्त्वाविग्रह, बाधिर, अतिगन्ध, शङ्खगेह, गुण्डरोह, करेन्दुक,
गोच्छालक, पृतिगन्ध, बाधिरघनिनोधन)

संस्कृतभाषामें भूटण ।

हिन्दीभाषामें भूटण ।

गुजरातीभाषामें भूटण ।

कर्णाटकी भाषामें परिमलदगनीण ।

लैटिन्भाषामें एंडोपोगन, साइट्रेम । *Andropogon Citratus*

अस्य गुणाः ।

भूटणं कटुकं तिक्तं तीक्ष्णोष्णं रेचनलघु ।

वल्बजाट्टणनामानि ।

वल्बजाट्टपत्रीचट्टणेक्षुस्तृणवल्बजा ।

मौञ्जीपत्राट्टट्टणापानीयाश्राट्टक्षुरा ॥

अर्थ—वल्बजा, ट्टपत्री, ट्टणेक्षु, ट्टणवल्बजा, मौञ्जीपत्रा, ट्टट्टणा, पानी-
याश्रा, ट्टक्षुरा ।

अस्या गुणा ।

वल्बजामधुराशीतापित्तदाहट्टपापहा ।

वातप्रकोपनीरुच्याकठशुद्धिकरीपरा ॥

अर्थ—वल्बजाट्टण—मधुर, शीतल, पित्तनिवारक, दाहकारक, ट्टपानाशक,
वातको क्षुपित करनेवाले, रुचिकारक, और कण्ठकी शुद्धिकरे है ।

ऊपलट्टणनामानि ।

ऊपलोभूरिपत्रश्चसुतृणश्चतृणोत्तम ॥

अर्थ—ऊपल, भूरिपत्र, सुतृण और तृणोत्तम ।

अस्य गुणा ।

ऊपलोवलदोरुच्य पशूनासर्वदाहितः ॥

अर्थ—ऊपलट्टण—वलकारक, रुचिकारी और पशुओंको सर्वदा हितकारी है ।

इक्षुदर्मानामानि ।

इक्षुदर्भासुदर्भाचपत्रालुस्तृणपत्रिका ॥

अर्थ—इक्षुदर्भा, सुदर्भा, पत्रालु, तृणपत्रिका ।

अस्या गुणा ।

इक्षुदर्भासुमधुरास्निग्धाईपत्कपायिका ।

कफपित्तहरारुच्यालघु सन्तर्पणीस्मृता ॥

अर्थ—इक्षुदर्भ—मधुर, स्निग्ध, किञ्चित्कपेला, कफपित्तनाशक, रुचिकारक,
हल्का, और सन्तर्पण है ।

गोमूत्रिवाट्टणनामानि ।

गोमूत्रिकारक्तट्टणाक्षेत्रजाकृष्णभूमिजा ।

अर्थ—गोमूत्रिका, रक्तट्टणा, क्षेत्रजा, कृष्णभूमिजा ।

अस्य गुणा ।

गोमूत्रिकातुमधुरावृष्यागोदुग्धदायिनी ॥

अर्थ-गोमूत्रवृण-मधुर, वीर्यवर्द्धक और गोशोके दूध पशनेसाधक ।
शिल्पिकावृणनामनि ।

शिल्पिकाशिल्पिनीशीताक्षेत्रजानमृदुच्छदा ॥

अर्थ-शिल्पिका, शिल्पिनी, शीता, क्षेत्रजा, मृदुच्छदा ।
शरणा गुणा ।

शिल्पिकामधुराशीतातद्वीजंवल्लप्यदम ॥

अर्थ-शिल्पिकावृण-मधुर और शीतल है । इससे पौन पत्र भी
वीर्यवर्द्धक है ।

नि धेनिकानामानि ।

नि श्रेणिकाश्रेणिवलानीन्मावनवल्लरी ॥

अर्थ-निश्रेणिका, श्रेणिपत्रा, नीरसा, वनसहरी ।
शरणा गुणा ।

नि श्रेणिकानीन्मोष्णापशूनामवल्लप्रदा ॥

अर्थ-निश्रेणिवृण-नीरस अर्थात् शरीर, गन्ध, और पशुओंको
निर्पन्थादायक है ।

जर्द्वीननामानि ।

जर्द्वीननासुनीलाचजर्द्वीनजलाश्रया ।

अर्थ-जर्द्वीनना, सुनीला, जर्द्वी, जलाश्रया ।
शरणा गुणा ।

जर्द्वीमधुराशीतासाग्निदीप्तहारणी ।

रक्तद्रोषहगरुच्यापशूनादुग्धदायिनी ॥

अर्थ-जर्द्वीवृण-मधुर, शीतल, गन्ध, दाहहारक, रक्तद्रोषहारा
रक्तकारक, तथा पशुओंके दूध पशनेसाधक है ।

मज्जरामानि ।

मज्जर. पवन. प्रोक्त. सुप्रण. म्लिग्धपत्रा ॥

अर्थ-मज्जर, पवन, सुप्रण, म्लिग्धपत्रा, (मृदुच्छदा) ।
शरणा गुणा ।

मृदुमन्थिभमयुनेधेनूदुग्धदायिनी ॥

अर्थ-मज्जरामान-मधुर, और गोशोके दूध पशनेसाधक है ।

तृणारयनामनि ।

तृणारयचपर्वतृणपत्राढ्यचमृगप्रियम् ॥

अर्थ-तृणारय, पर्वतृण, पत्राढ्य, मृगप्रिय ।

अस्या गुणा ।

वलपुष्टिकररुच्यंपशूनांसर्वदाहितम् ॥

अर्थ-पर्वतृण-वल, पुष्टि और रुचिको उत्पन्न करनेवाला है तथा पशु-ओंको सर्वदा हितकारी है ।

वशपत्रीतृणनामानि ।

वशपत्रीवशदलाजीरिकाजीर्णपत्रिका ॥

अर्थ-वशपत्री, वशदला, जीरिका, जीर्णपत्रिका ।

अस्या गुणा ।

वशपत्रीसुमधुराशिशिरापित्तनाशिनी ।

रक्तदोषहरारुच्यापशूनादुग्धदायिनी ॥

अर्थ-वशपत्रीतृण-मधुर, शीतल, पित्तनाशक, रक्तदोषनिवारक, रुचिकारक, और पशुओंके स्तनोंमें दूध बढ़ानेवाले हैं ।

मन्यानकतृणनामानि ।

पन्थानकस्तुहरितोदृढमूलस्तृणाधिपः ॥

अर्थ-मन्यानक, हरित, दृढमूल, तृणाधिप ।

मन्यानकतृणगुणा ।

स्निग्धोवेनुप्रियोदोग्धामधुरोवहुवीर्यकः ॥

अर्थ-मन्यानकतृण-स्निग्ध, गायोंको प्रिय, दुग्धदायक, मधुर और बहुवीर्यदायक है ।

पल्लिवाहृतृणनामगुणाश्च ।

पल्लिवाहोदीर्घतृण सुपत्रस्ताम्रवर्णकः ।

अदृढ शाकपत्रादिपशूनामवलप्रदः ॥

अर्थ-पल्लिवाह-दीर्घतृण, सुपत्र, ताम्रवर्ण, अदृढ, शाकपत्रादि पल्लिवाह तृण-पशुओंको निर्वल करनेवाले हैं ।

लवणतृणनामानि ।

लवणतृणलोणतृणतृणाम्लपटुतृणचअम्लकाण्डश्च ॥

अर्थ-लवणतृण, लोणतृण, तृणाम्ल, पटुतृण, अम्लकाण्ड ।

अथ गुणाः ।

पटुतृणकंशारम्लंकपायस्तन्यवृद्धिकरम् ॥

अर्थ-लवणतृण-शारी, अम्ल, कपेडा, और दूधनाशक है ।

पण्यपातृणनामादि ।

पण्यन्वाकंशुणीपत्रापण्यध्वापणराचमा ॥

अर्थ-पण्यन्वा, कलुणीपत्रा, पण्यध्वा, पण्यमा ।

अथ गुणाः ।

पण्यन्वासमरीर्य्याम्यात्तिक्तादागनन्मार्गिणी ।

तत्कालभस्त्रघातस्यव्रणमंगेषणीपरा ॥

दीर्घामध्यातयाह्रन्वापण्यन्वात्रिषात्तृता ।

रमवीर्य्यविपाकेषुमध्यमागुणदायिका ॥

अर्थ-पण्यन्वातृण-समरीर्य्य, तिक्त, शार और मातर है तथा अन्वापण्य
घातके घातमे उत्पन्न हुए घातको भंग है पण्यन्वा तुजड़ीयां, मध्य और रम
इन भेदोंमे तीन प्रकारके हैं । इन तीनोंमे मध्य वीर्य्य और त्रिषात्रमे मध्यम
गुणदायक है ।

गुण्डपातृणनामादि ।

गुड सुकांडोगुण्डस्त्यादीरिकाण्डमिरिकाणक ।

छत्रगुण्डोमिषत्रश्चनीलपत्रमिश्राणक ॥

अर्थ-गुड, गुषाण्ड, गुण्ड, शिपिण्ड, त्रिषोत्तर, छत्रगुण्ड अमिरिक,
नीलपत्र, मिश्राणक ।

वृत्तगुण्डनामादि ।

वृत्तगुण्डोपगेवृत्तोदीर्यनालोजलाश्रय ।

तत्रस्थूलोत्पुञ्जनान्यमिश्रायदादशाभिरा ॥

अर्थ-वृत्तगुण्ड, दीर्यनाल, जलाश्रय । पर गुण्ड और वृत्त इन दोनों
को मशरुके हैं ।

अथ गुणाः ।

गुण्डस्तुमधुर भीति, कफपित्तातिमारता ।

सादृक्तरश्मस्त्यमन्वेष्टुलान्तराधिरा ॥

अर्थ-गुण्डवृण-मधुर, शीतल, तथा कफ, पित्त, अतिसार, दाह और रुधिरविकारको दूर करेहै । इन दोनोंमें स्थूल गुण्डवृण अधिक गुणवालाहै ।
चणिकावृणनामानि ।

चणिकादुग्धदागौल्यासुनालाक्षेत्रजाहिमा ॥

अर्थ-चणिका, दुग्धदा गौल्या, सुनाला, क्षेत्रजा, हिमा ।

अस्या गुणा ।

वृष्यावल्यातिमधुरावीजे पशुहितावृणे ॥

अर्थ-इसके बीज-वीर्यवर्द्धक, बलकारक, अत्यन्तमधुर और वृण, पशु-आको हितकारीहै ।

गुण्डासिनीवृणनामानि ।

गुण्डासिनीतुगुण्डालागुडालागुच्छमूलिकाचिपिटा ।

तृणपत्रीजलवासापृथुलासुविष्टराचनवाह्वा ॥

अर्थ-गुण्डासिनी, गुण्डाला, गुडाला, गुच्छमूलिका, चिपिटा, तृणपत्री, जलवामा, पृथुला, सुविष्टरा ।

अस्या गुणा ।

गुण्डासिनीकटु स्वादु पित्तादाहश्रमापहा ।

तिक्तोष्णाचपशुघ्नीचव्रणदोपनिवर्हणी ॥

अर्थ-गुण्डासिनीवृण-चरपरे, स्वादु, पित्तनाशक, दाहको दूर करनेवाले श्रमको हरनेवाले, कटु, गरम, पशुनाशक और व्रणदोपनिवारकहै ।

शूलीवृणनामानि ।

शूलीतुशूलपत्रीस्यादशाखाधूम्रमूलिका ।

जलाश्रयामृदुलतापिच्छिलामहिषीप्रिया ॥

अर्थ-शूली, शूलपत्री, अशाखा, धूम्रमूलिका, जलाश्रया, मृदुलता, पिच्छिला, महिषीप्रिया ।

अस्या गुणा ।

शूलीतुपिच्छिलाकोष्णागुरुगौल्यावलप्रदा ।

पित्तदाहहरुच्यादुग्धवृद्धिप्रदायका ॥ (नि० रा०)

अर्थ-शूलीवृण-पिच्छिल, गरम, भारी, गौल्य, बलकारक, पित्तनाशक, दाहनिवारक, रुचिकारक और दुग्धवर्द्धक है ।

अर्थ—गण्डदूर्वा, गण्डाली, तीव्रा, मत्स्याक्षिका, जलस्था, ग्रन्थिपर्णी, बाह्नी, शकुलादनी, (अतितीव्रा, मत्स्याली, ग्रन्थिला, ग्रन्थिपर्णी, वारुणी, मत्तिनेत्रा, श्यामग्रन्थि, सचिपत्रा, श्यामकाण्डा, कलाया, शकुलाक्षी, चित्रा और शकुलाक्षक)

| | |
|-----------------|--|
| सस्कृतभाषामें | दूर्वा, नीलदूर्वा, श्वेतदूर्वा, गण्डदूर्वा । |
| हिन्दीभाषामें | दूब, हरीदूब, सफेददूब, गाडरदूब । |
| वगभाषामें | दूर्वा, नीलदूर्वा, सादादूर्वा, गेंटेदूर्वा । |
| मराठीभाषामें | दूर्वा, नील श्वेत हरली, गण्डूरदूर्वा, गाढीहरली । |
| गुजरातीभाषामें | ध्रो, लीलीध्रो, धोलीध्रो, गण्डूरध्रो । |
| कर्णाटकीभाषामें | हसुगरुके, विलिपकरुके, मीनगत्ते, होन्नगुदे । |
| तैलिंगीभाषामें | दूर्वाळ, गरिकेगाडि, गरिककसुवु, पोन्नगडी । |
| तामिलीभाषामें | अरुगम पुल्लु । |
| औत्कलीभाषामें | दुब । |
| इंग्रेजीभाषामें | क्रोपिंग् साई नोटन् । Creeping Cynodon |
| लैटिन्भाषामें | साई नोटन् डेक् टिलन् । Cynodon Dactylon |
| | सामान्यद्वयांशुणा । |

दूर्वाकपायामधुगचशीतापित्ततृपारोचकवान्तिहन्त्री ।

सदाहमूर्च्छाग्रहभूतशान्तिश्लेष्मश्रमध्वसनतृप्तिदाच । (रा०नि०)

अर्थ—दूब कपेली, मधुर, गीतल, तथा पित्त, तृपा, अरुचि, वान्ति, दाह, मूर्च्छा, ग्रहकी पीडा, भूतवाधा, कफ और श्रमनाशक है तथा तृप्तिदायक है ।

नीलदूर्वांशुणा ।

दूर्वातुरक्तपित्तघ्नीकण्डूत्वग्दोषनाशिनी ॥ (रा०व०)

अर्थ—हरीदूब—रक्तपित्त, खुजली और त्वचाके रोगोंको हरे है ।

अन्यथा ।

नीलदूर्वातुमधुरातिक्ताशीतारुचिप्रदा ।

संजीवनीचतुर्वर्गरक्तशुद्धिकरीमता ॥

रक्तपित्तातिसारघ्नीज्वरपित्तवमीहरा ।

कफरक्तरुजतृष्णाविसर्पञ्चविनाशयेत् ॥

दाहञ्चचर्मदोषञ्चनाशयेदिति कीर्तिता ।

अर्थ-दग्धद्वय-मधुर, कटु, शीत, रुचिपात्र, गन्धर्व, रक्तपित्त, अतिपात्र, उर, पित्त, वमन, पत्र, रक्तपित्त, वृषा, विषय, दाह और तत्कारके विचारोंको दूर करे।

अथैतद्व्याख्या ।

श्वेतातुद्वयमधुराचतुर्वर्गमता ।

तिक्तातिशीतलावान्तिविमर्षतृष्णापहा ॥

पित्तदाहामातिसृतिरक्तपित्तद्वगमना ।

कामक्षनाशयत्येषैर्वैद्यैर्निरूपिता ॥ (रा० नि०)

अर्थ-श्वेत दृष-मधुर, शीतारक, कटु, कटु, शीतल तथा वमन, विमर्ष, तृष्णा, पत्र, पित्त, दाह, आमोतिमार, रक्तपित्त और रक्तपित्तको दूर करे।

अथैतद्व्याख्या ।

गण्डद्वयमधुराचतुर्वर्गमता ।

गिगिराहृदयोपश्रीभ्रमनृणाश्रमापहा ॥ (रा० नि०)

अर्थ-गण्डद्वय-मधुर, शीतल तथा वात, विष, उर, दृष्टोप, भ्रम, तृष्णा और भ्रमको दूर करनेवाली है।

अथैतद्व्याख्या ।

गण्डद्वयमधुराचतुर्वर्गमता ।

तिक्ताकषायामधुराचतुर्वर्गमता ।

दाहतृष्णापलायनाद्युष्टपित्तज्वगपहा (भाष्यकार)

अर्थ-गण्डद्वय-शीतल, शीतल, शीतल, मधुर, वातपात्र, वमन, पित्त, दाह, तृष्णा, पत्र, शीतल, कटु, कटु, शीतल, रक्तपित्त, अतिपात्र, उर, पित्त, वमन, पत्र, रक्तपित्त, वृषा, विषय, दाह और तत्कारके विचारोंको दूर करे।

विशेष । श्वेतद्वय शीतल तथा वात, विष, उर, दृष्टोप, भ्रम, तृष्णा और भ्रमको दूर करनेवाली है। गण्डद्वय शीतल तथा वात, विष, उर, दृष्टोप, भ्रम, तृष्णा और भ्रमको दूर करनेवाली है। गण्डद्वय शीतल तथा वात, विष, उर, दृष्टोप, भ्रम, तृष्णा और भ्रमको दूर करनेवाली है। गण्डद्वय शीतल तथा वात, विष, उर, दृष्टोप, भ्रम, तृष्णा और भ्रमको दूर करनेवाली है।

२ सपेद दृढभी नीलीदृढ अर्थात् हरीदृढहीकी जगह कहीं कहीं कोई छत्ता होजाता है वह बहुत सपेद होती है, परन्तु सत्र आकृति हरीही दृढकेसी होतीहै ।

३ गाडर एकप्रकारकी घाम होती है इसके छुप दो दो तीन २ फुट ऊँचे होजातेहैं जलाशयके स्थानमें कोसोंतक लगातार इसके खेत होते हैं इसके तृण कासके समान लम्पे होतेहैं, घरोंके ऊपर आदि उसीके तृणोंसे छाये जाते हैं, इसीकी जड खस होतीहै ।

विदारीनामानि ।

विदारीवृष्यकन्दाक्षीरशुक्लासितास्मृता ।

इक्षुगन्धात्रिपर्णाचशुक्लागजवाजिप्रिया ॥

अर्थ-विदारी, वृष्यकन्दा, क्षीरशुक्ला, सिता, इक्षुगन्धा, त्रिपर्णा, शुक्ला, गजवाजिप्रिया, (कोष्ठी, विदारिका, स्वादुकन्दा, शृगालिका, वृष्यवर्द्धिनी, विडाली, वृष्यवल्लिका, भूकृष्माण्डी, स्यादुलता, गजेष्टा, वाजिवल्भा, गन्ध-फला, क्षीरवल्ली पयस्विनी, वृक्षवल्ली और भूमिकृष्माण्ड)

क्षीरविदारीनामानि ।

अन्याक्षीरविदारीस्यादिक्षुगन्धक्षेधुवल्लयपि ।

क्षीरकन्दाक्षीरवल्लीक्षीरशुक्लापयस्विनी ॥

अर्थ-क्षीरविदारी, इक्षुगन्धा, इक्षुवल्ली, क्षीरकन्दा, क्षीरवल्ली, क्षीरशुक्ला, पयस्विनी, (महाश्वेता, ऋक्षगन्धिका, ऋष्यगन्धिका, ऋष्यगन्धा, इक्षुवल्ली, क्षीरकन्द, क्षीरलता, पय कन्दा, पयोलता, पयोविदारिका और दुग्धविदारी ।

संस्कृतभाषामें

हिन्दीभाषामें

वगभाषामें

मराठीभाषामें

गुजरातीभाषामें

कर्णाटकीभाषामें

तैलिङ्गीभाषामें

औत्कलिभाषामें

विदारी, क्षीरविदारी ।

त्रिष्टयाकन्द विलाई कन्द, विदारीकन्द, विलारी, कन्द, दृढविदारी ।

भूईकुमडा (ड), श्वेतभूईकुमड, कालभूईकुमड ।

भूईकोहळा, वेन्ट्रिचा वेल ।

फगवेलानो कन्द, भोकोल ।

नेलकुनल ।

नेलगुबुडु, महमलतिग ।

भूईकरवारु ।

लैटिनभाषामे

आईपोमिया डिजिटेटा । Ipomoea digitata

प्युरेरिया ट्यूबरोसा Puraria tuberosa

वटाटास पेनिक्युलेटा Katataspeniculata

विदारीकन्दगुणा ।

विदारीमधुराशीतागुरु स्निग्धास्रपित्तजित् ।

जेयाचकफकृत्पुष्टिवल्यावीर्यविवर्धिनी ॥ (रा० नि०)

अर्थ-विदारीकन्द-मधुर, शीतल, भारी, स्निग्ध, रक्तपित्तनाशक, कृत्कारक, तथा पुष्टि, बल और वीर्यवर्धक है

अप्यथा ।

विदारीमधुरास्निग्धावृहणीस्तन्यशुक्रदा

शीतास्त्वय्यामृत्रलाचजीवनीबलवर्णदा ॥

गुरु पित्तास्रपवनदाहान्हन्तिग्सायनी । (भावप्रकाश)

अर्थ-विदारीकन्द, मधुर, स्निग्ध, वृहण, स्तनां दूध यदानेवात्, वीर्यजनक, शीतल, स्वरको शुद्ध करनेवाला, मूत्रवर्धक, रसजीवन, प्रलकारक, वर्णको सुदृढ़ करनेवाला, रसायन, भारी तथा रक्तपित्त, वात और दाहको दूर करनेवाला है ।

अपिच ।

विदारीवातपित्तघ्नीवृष्यावल्यारसायनी ॥ (रा० प०)

अर्थ-विदारीकन्द-वातपित्तनाशक, वीर्यवर्धक, घनकारक और रसायन है ।

अप्यथा ।

विदारीमधुराशीतावृष्यास्निग्धाचर्षाष्टिका ।

धातुवृद्धिकरीवल्याकफदुग्धप्रदागुरु ॥

रसायनीमृत्रलाचस्त्वय्यास्तृक्षाचगर्भदा ।

पित्तवातहराग्वादूरक्तरुग्दाहवान्तिहा ॥

जेयाद्वेतेगुणा कन्देपुष्पावृष्यश्शीतलम् ।

रमेपाकेचमधुर्गकफकृद्वातलंगुरु ॥

पित्तनाशकगद्येतदुक्तमुनिवरे पुरा ।

अर्थ-विदारीकन्द-मधुर, शीतल, वीर्यवर्धक, स्निग्ध, पुष्टिकारक, मातृ-

वर्धक, बलकारक, कफजनक, दुग्धवर्धक, भारी, रसायन, मूत्रजनक, स्वरको सुन्दर करनेवाला, रूखा, गर्भदायक, स्वादिष्ठ, तथा पित्त, वात, रुधिरविकार, दाह और वमनको दूर करे है । इसके फूल-वीर्यवर्धक, शीतल, रस और पाकमें मधुर, कफकारक, वातवर्धक, भारी और पित्तनाशक है ।

क्षीरविदारीगुणाः ।

प्रोक्ताक्षीरविदारीतुमधुराम्लाकपायका ।

वृष्याचशुक्रजननीपुष्टिदुग्धप्रदाकटु ॥

रसायनीचबल्याचशीतामूत्रकफप्रदा ।

स्निग्धावर्ण्यागुरुःस्वय्यापित्तरुग्रक्तदोषहा ॥

पित्तशूलहरावातदाहजिन्मूत्रमेहजित् ।

ज्ञेयाकदगुणाहस्या सदृशावल्लिवद्रूपे ॥

अर्थ-दूधविदारी-मधुर, अम्ल, कपेला, वीर्यवर्धक, शुक्रजनक, पुष्टि-कारक, दूधवर्धक, चरपरा, रसायन, बलकारक, शीतल, मूत्रजनक, कफ-कारक, स्निग्ध, वर्णको सुंदरकरनेवाला, भारी, स्वरको उत्तम करनेवाला-तथा पित्तरोग, रुधिरविकार, पित्तशूल, वात, दाह और मूत्रमेहको दूर करनेवालाहै, इसके कटुके गुण बेलकी समान जानने ।

अन्यथा ।

कन्द क्षीरविदार्यास्तुस्वादुवृष्योरसायन ।

मधुरोवृहणोद्व्य शीतवीर्योहिमूत्रल ॥

अर्थ-क्षीरविदारीकन्द-स्वादुष्ठ, वीर्यवर्धक, रसायन, मधुर, वृहण, हृदयको हितकारी, शीतल और मूत्रवर्धक है ।

अपिच ।

क्षीरकन्दोद्विधाप्रोक्तोविनालस्तुसनालक ।

विनालोरोगहर्त्तास्याद्वयः स्तम्भीसनालकः ॥

अर्थ-क्षीरकन्द-नालरहित और नालयुक्त इन भेदोंसे दो प्रकारकाहै, तदा विनानालका रोगोंको हरनेवालाहै और नालवाला अवस्थाको स्थापन करनेवालाहै ।

इन्दीवरी, वरी, ऋष्यमोक्ता, नागयणी, अहेरु, अभीरु, अर्भोरुपत्री, महा-
 पुरुषदन्ता, रत्निणी, द्वीपिशतु, ऋष्यगता, काञ्चनकारिणी, मन्मथिनी,
 शतपदी, पीवरी, पीवरा, वृष्या, दिव्या, द्वीपिका, दरकण्टिका, सूक्ष्मपत्रा,
 सूक्ष्मपत्रिका, सुपत्रा, चटुमूला, शताहया, द्वीपशतु, स्वादुरसा, शताहा,
 लघुपर्णिका, आत्मगुप्ता, जटा, मूला, शतवीर्या, महोपधी, मधुरा, केणिका,
 शतपत्रिका, विश्वस्था, वैष्णवी, काष्णी, वामुदेवप्रियकरी, दुर्मना, तैलवल्ली,
 अर्धकण्टका, सुपत्रिका और शतवीर्या) । महाशतावरी, शतवीर्या-
 महोदरी, (सहस्रवीर्या, मुरसा, महापुरुषदन्तिका, धीरा, तुरङ्गिणी, चटु,
 पत्रिका, ऊर्ध्वकण्ठी, महावीर्या, फणिजिह्वा, महाशता, सुवीर्या, महती,
 अर्धकण्टिका, शतमूली, अभीरु, चटुपत्रिका, स्वादुरसा) ।

सस्कृतभाषामें

शतावरी, महाशतावरी ।

हिन्दीभाषामें

सतावर, घडीसतावर ।

वगभाषामें

शतमूली ।

महाडीभाषामें

लघुशतावरी, शतमूली, आसवली, घडीशतावरी,
 सहस्रमूली ।

गुजरातीभाषामें

शतावरी, एकलकण्ठी, शापनाशुवा ।

कर्णाटकीभाषामें

किरिपभासडी, परदुआमडी ।

तैलिङ्गीभाषामें

एदुमट्टेट्टेडाचट्ट, चलगुडु ।

इमेजीभाषामें

एम्पेरैगम् रेमिमोसत् । A racinosus

लेटिन्भाषामें

एम्पेरैगम्, मतवर वा एडसेडन्स Asparagus satavar
 or A adscendens

फारसीभाषामें

गुर्जदस्ति ।

अरबीभाषामें

शकाकुलमिथ्री ।

शतावरीगुणा ।

शतावरीगुरु-मीतातिकांश्चाद्वीग्मायनी ।

मेधाग्निपुष्टिदाम्निग्धानेन्यागुल्मातिमारजित् ॥

शुक्रस्तन्यकरीवल्पावातपित्तामशोथजित् ॥ (भा० प्र०)

अर्ध-सतावर-भारी, शीतल, कटवी, मधुर, ग्वायन, मेधाकारक,
 जठराग्निवर्धक, पुष्टिदायक, क्षिप्त, नेत्रोक्तो दितकारी, गुन्मनागर, अतिगा
 र्गनिवारक, शुक्लचक, स्तनोर्ध्वं दुग्धवर्धक, यन्कारी तथा बाल, गन्धित
 और पुमना दूर करे है ।

अन्यच्च ।

शतावर्योहिमेतिक्तेमधुरेपित्तजित्परे ।

कफवातहरेवृष्येमहाश्रेष्ठरसायने ॥ (राजनिघण्टु)

अर्थ—सतावर—शीतल, कडवी, मधुर, पित्तनाशक, कफवातनाशक, वीर्यवर्धक और रसायनकर्ममें श्रेष्ठ है ।

अन्यच्च ।

शतावरीतुमधुराशीतावृष्याचतित्तका ।

रसायनीगुरुस्वादु स्निग्धादुग्धप्रदामता ॥

अग्निदीप्तिकरीवल्यामेध्याशुक्रकरीमता ।

चक्षुष्यापुष्टिकृत्पित्तकफवातक्षयापहा ॥

रक्तदोषगुल्महन्त्रीशोथातीसारनाशिनी ।

तैलेष्टृतेप्रयोगार्थप्रशस्तामुनिभिर्मता ॥ (नि० २०)

अर्थ—शतावर—मधुर, शीतल, वीर्यवर्धक, कडवी, रसायन, भार्ग, स्वादिष्ट, स्निग्ध, दुग्धप्रद, अग्निप्रदीपक, बलकारक, मेधाजनक, शुरुजनक, नेत्राको हितकारी, पुष्टिकारक तथा पित्त, कफ, वात क्षय, रुधिरविकार, गुल्म, सूजन और अतिसारको हरनेवाली है ।

महाशतावरीगुणा ।

महाशतावरीहृद्यामेध्याचाग्निप्रदीपनी ।

शुक्रलाशीतवीर्याचवल्यावृष्यारसायनी ॥

अर्शस्सग्रहणीरोगनेत्ररोगविनाशिनी ।

गुणाद्यस्यास्तुविज्ञेया पूर्वाया सदृशागुणैः ॥ (नि० २०)

अर्थ—बड़ीशतावर—हृदयको हितकारी, मेधाजनक, अग्निप्रदीपक, शुक्रजनक, शीतवीर्यबलकारक, वीर्यवर्धक, रसायन तथा बवासीर, मग्नहणी और नेत्ररोगको हरनेवाली है । शेष गुण उसके शतावरकी समान जानने ।

अन्यथा ।

महतीकफवातघ्नीतिक्ताश्रेष्ठारसायने ॥ (रा० नि०)

अर्थ—बड़ीशतावर—कफ वातनाशक, कडवी और रसायनकार्यमें श्रेष्ठ है ।

द्विविधशतावरीगुणा ।

शतावरीद्वयवृष्यमधुरं पित्तजिह्मम् ॥

अर्थ-दोनोप्रकारकी शतावर-वीर्यवर्द्धक, मधुर, पित्तनाशक और शीतल है ।

शतावर्षद्वयगुणा ।

शतावर्षाह्यकुरस्तुतिकोवृष्योलघु स्मृतः ।

हृद्यस्त्रिदोषपित्तघ्नोवातरक्तार्थसांहर ॥

क्षयसग्रहणीरोगनाशनस्तित्तकोलघु ॥ (नि०२०)

अर्थ-शतावरके अठुर-कड़वे, वीर्यवर्द्धक, हलके, हृदयको दितकारी तथा त्रिदोष, पित्त, वातरक्त, यवासार, क्षय और सग्रहणीरोगका नाश करे हैं ।

विवरण । शतावरकी बेल अगलेंमें होती है, बेलका रंग सफेदी लिये होता है, पत्ते अत्यन्त छोटे-मोयेके पत्तोंके समान होते हैं; उसकी बेलको कोई २ बँधलोग एकलकण्ठी कहते हैं, इसमें काटे बहुत होते हैं, बेल सफेद छोटे होते हैं, बड़ी शतावरीभी इसीप्रकारकी होती है, इससे कुछ अधिक बड़ी होती है, और इसकी अनन्त मूल होती है और शतावर और इसमें कुछ भेद नहीं होता । शतावरी बपाके आरम्भमें हरी होती है और फूल आते हैं, एक वृक्षके नीचे सैरुओं जड़ होती है उसी शतावरी बढ़ते हैं ।

अश्वगन्धावातामानि ।

अश्वगन्धावाजिगन्धाकटुकाश्वारोहक ।

वाग्राहकर्णातुरगीवल्यावाजिकरीदया ॥

अर्थ-अश्वगन्धा, वाजिगन्धा, कटुका, अश्वारोहक, वाग्राहकर्णी, तुरगी, वल्या, वाजिकरी, दया, (अश्वकन्दिका, काम्युका, अश्वारोहा, अश्वगन्धिका, तुरगगन्धा, कटुका, अश्वारोहिका, पल्ला, वाजिनी, अश्वरोहिका, वाग्राहकर्णी, पुष्टिदा, बलदा, पुष्टिपीवरा, पलाशपर्णी, वातरा, श्यामला, वामरूपिणी, काला, प्रियकरी, गन्धपर्णी, श्यामिणी, वाग्राहपर्णी, चण्डा, वग्दा, तुष्टगन्धिनी, वरगाधकरी, पुष्पा, पुष्टगन्धा) ।

सम्भूतभाषामे अश्वगन्धा ।

हिन्दीभाषामे असगन्ध ।

| | |
|-----------------|---|
| वगभापामें | अश्वगन्धा । |
| मराठीभापाम | आसकद, असन्ध । |
| गुजरातीभापामें | आखसध । |
| कर्णाटकीभापामें | आसादु, अङ्गुर । |
| तैलद्वीभापामें | पिष्टिआगा । |
| इग्रेजी भापामें | विंटरचेरी । Winter cherry |
| लैटिन् भापामें | फाइसेलिस् सोमनिफेरा । <i>Physalis Somnifero</i> |
| | विथानीआ सोमनिफेरा । <i>Withania Somnifera</i> |
| फारसीभापामें | मेहेमन् वररी । |
| | अस्पा गुणा । |

अश्वगन्धानिलश्लेष्मशोफश्चित्रक्षयापहा ।

वल्यारसायनीतित्ताकपायोष्णातिशुक्रला ॥ (भा० प्र०)

अर्थ—असगन्ध—वात, कफ, सूजन, श्विनकुष्ठ और कफरोगनाशक है, तथा बल्कारक, रसायन, कडवी, कपेली, गरम और अत्यन्त वीर्यवर्द्धक है।

अन्यथा । -

अश्वगन्धाकटूष्णास्यातित्ताचमदगन्धिका ।

वल्यावातहराहन्तिकासश्वासक्षयव्रणान् ॥ (रा० नि०)

अर्थ—असगन्ध—चरपरी, गरम, कडवी, मदगन्धियुक्त, बल्कारक, वात-नाशक तथा खाँसी, श्वास, क्षय और घ्रण (घाव) दूर करे है ।

अन्यथा ।

अश्वगन्धोजराव्याधिनाशकस्तुवरःस्मृत ।

धातुवृद्धिकर किञ्चित्कटुकोबलद स्मृत ॥

कान्तिप्रदश्चसप्रोक्तस्तथाचमधुगन्धिक ।

शरीरपुष्टिकारीचवृष्यश्चोष्णोलघु स्मृत ॥

वातक्षयश्चामकासोव्रणश्चेतश्चकुष्ठकम् ।

फविपकृमीञ्छोथतथाचैवक्षतक्षयम् ॥

कण्डूनाशयतीत्येवपूर्वाचार्यैर्निरूपितम् (नि० २०)

अर्थ—असगन्ध—रसायन जयात् जराव्याधिनाशक, कपेली, धातुवर्द्धक,

किञ्चित् चरपरी, उत्पदक, कान्तिजनक, मधुगन्धियुक्त, शरीरको पुष्टि-
 करनेवाली, वीर्यवर्द्धक, गरम, हल्की तथा श्वास, सामी, घाव, श्वेतपुष्प, कफ
 विष, कृमि, मूत्रजन, क्षतक्षय और कण्ट (खुजली) को दूर करे है ।

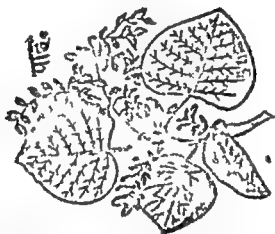
अपिच ।

अश्वगन्धापत्रलेपोग्रन्थिगण्डापचीन्हरेत् ॥ (शो० नि०)

अर्थ-अमगन्धके पत्तोंका लेप-ग्रन्थि, गण्डमाला और अपर्चाको दूर
 करनेवाला है ।

विवरण-अमगन्धका धुप होता है । फल-पनसोखाकी समान गोल होते
 हैं । इस धुपके नीचे ठोरी मूलाकी समान कद होता है, उम कंदको निकाल
 कर सुखा लेते हैं, उसको असगन्ध कहते हैं ।

पाठानामानि ।



पाठाम्बष्टापापचेलीकुचेलाछिन्नवेगिका ॥

अर्थ-पाठा, अम्बष्टा, पापचेली, कुचेला, छिन्नवेगिका (अम्बष्टिका,
 मार्चाना, पापचेरिका, सृष्टिका, स्थापनी, श्रेयणी विद्वर्कणिका, पुराणीना,
 कुचेनी, टीपनी, वनतिक्तिका, तिक्तपुष्पा, वृक्षतिका, शिशिरा, पृष्ठी,
 मान्ती, वरा, देवी, वृक्षपर्णी, तिक्ता, विद्वर्कणी, रसा, अविद्वर्कणी,
 पाटिका, अविद्वर्कणी, पाटिका, मुस्थिरा, प्रतानिनी, वत्सादनी, मालवी,
 त्रिशिरा, त्रिवृत्, वृक्षपर्णा, रक्तत्री, विषहन्त्री, मर्दोजनी, रुग्णिया, टीपनी,
 वीरा, वलिरा)

संमृत्तभाषामें

पाठा ।

दिन्यभाषामें

पाठ ।

वगभाषामें

आपनादी, निम्ब, मार्गोदि ।

| | |
|-----------------|---|
| मराठीभाषामें | पहाडमूळ । |
| गुजरातीभाषामें | कालीपाट, करेदीमूळ । |
| कर्णाटकीभाषामें | पाठा । |
| तैलिङ्गीभाषामें | पाढचेदु । |
| औत्कलिभाषामें | पाकन विन्धि । |
| इंग्रेजीभाषामें | पेरारुट । |
| लैटिन्भाषामें | सिसापिलोस् परिरा । Cissampelos pareira अस्या गुणाः । |

पाठोष्णाकटुकातिक्तावातश्लेष्महरीलघु ।

हन्तिशूलज्वरच्छर्दिंकुष्टातीसारहृद्गुज ॥

दाहकण्डूविपश्वासकृमिगुल्मोदरव्रणान् । (भा० प्र०)

अर्थ-पाढ-गरम, चरपरा, कडवा, वातघ्न, कफनाशक, हलका, तथा शूल, ज्वर, वमन, कोढ, अतिसार, हृदयरोग, दाह, कण्डू, विप, श्वास, कृमि, गुल्म, उदररोग, और व्रणको दूर करनेवाला है ।

अन्यच्च ।

पाठातिक्ताकटूष्णाचभग्नसन्धानकारका ।

तीक्ष्णालघ्वीपित्तदाहशूलातीसारनाशिनी ॥

वातपित्तज्वरच्छर्दिविपाजीर्णत्रिदोषकान् ।

हृद्गोदरक्तकुष्टातिकण्डूश्वासकृमीञ्जयेत् ॥

गुल्मोदरव्रणकफवातनाशकगीमता । (नि० रा०)

अर्थ-पाढ-कडवा, चरपरा, गरम, भग्नसन्धानकारक, (दृढेद्रुपे स्थानको जोड़नेवाला) तीक्ष्ण, हलका तथा पित्त, दाह, शूल, अतिसार, वातपित्त, ज्वर वमन, विप, अजीर्ण, त्रिदोष, हृदयरोग, रक्तकुष्ठ, कण्डू, श्वास, कृमी, गुल्म, उदररोग, व्रण और कफवातको हरनेवाला है ।

लघुपाठागुणाः ।

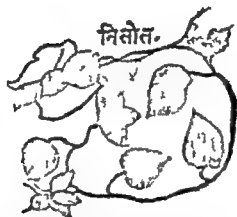
लघुपाठातिक्तरसाविपघ्नीकुष्टकण्डुनुत ।

छर्दिहृद्गोदरजिद्विदोषशमनीमता ॥ (राजनिघण्टु)

अर्थ-लघुपाढ-कडवा तथा विप, कोढ, खुजली, वमन, हृदयरोग और त्रिदोषनाशक है ।

विवरण । पादकी चेल होतीहै, पत्ते कुछ गोल होते हैं, उसके कोनोंमें ये श्वेत और सूक्ष्म मोरकी समान फूल निकलता है । फलमकोपकी गमान लालरंगके होते हैं और बागकी जड़की लघुपाठा कहते हैं तथा बागकी भी चेल होतीहै, पत्ते-फजीकी समान होते हैं, फजीके पत्ते ऊपर नीले और नीचे सफेद होते हैं, किन्तु बागके ऐसे नहीं होते, आकार भोलपत्रीकी समान और कुछेक पिलाई लिये होता है, फूल-सूक्ष्म और गफेद होते हैं, फल पीतरी सदृश होते हैं ।

त्रिपुटग्रामानि ।



त्रिवृत्सुवहात्रिपुटात्रिभण्डीरेचनीसरा ॥

अर्थ-त्रिवृत्-सुवहा, त्रिपुटा, त्रिभण्डी, रेचनी, सरा (सर्वात्रभूति, त्रिवृत्ता, सरमा, सरणा, महा, रोचनी, मालविका, श्यामा, मधुरी, भट्ट-चन्द्रा, विदला, सुपेणी, कालिङ्गिका, कालमेपी, काली, त्रिवेला त्रिवृ-त्तिका, सारा)

सररुतभाषामें

हिन्दीभाषामें

वगभाषामें

मराठीभाषामें

गुजरातीभाषामें

कर्णाटकीभाषामें

तेलुगुभाषामें

तामिऴभाषामें

इंग्रजीभाषामें

त्रिवृत् ।

निमोत, पनिल ।

तेन्नी ।

निशोचर, सेंड ।

नमोत ।

तिगडे ।

भालवेगडा ।

शिरद ।

सर्वोत्कृष्ट T. b. l. २०

लैटिन्भाषामें
फारसीभाषामें
अरबीभाषामें

आईपोमिया टरपीयम् । Ipomoeaturpetnum
निसोथ ।
तुरबुद ।

कृष्णत्रिवृत्तामनि ।

श्यामात्रिवृन्मालविकामसूरविदलाचसा ।

कालार्द्धचन्द्रपालदीसुपेणीकालमेपिका ॥

अर्थ-श्यामा-त्रिवृत्, मालविका, मसूरविदला, काला, अर्द्धचन्द्रा,
पालदी, सुपेणी, कालमेपिका (पालिन्धी, कालमेशिका)

हिन्दीभाषामें कालानिसोथ, श्यामनिलर ।

वगभाषामें कालतेडडी ।

कर्णाटकीभाषामें केप्पनेयतिगडे ।

श्वेतत्रिवृत्तामनि ।

शुक्लभण्डीत्रिभण्डीस्यात्काकाक्षीसरलात्रिवृत् ।

सर्वानुभूतिस्त्रिपुटात्र्यस्राकोटरवाहिनी ॥

अर्थ-शुक्लभण्डी, त्रिभण्डी, काकाक्षी, सरला, त्रिवृत्, सर्वानुभूति,
त्रिपुटा, त्र्यस्रा, कोटरवाहिनी (व्याघ्रपाटी, त्रिसूत्रा, वृकाक्षी, चोगनासिका,
सुवहा, निशोना, रेचनी, सर्वानुभूति और त्रिवृता)

हिन्दीभाषामें सफेदनिसोत ।

वगभाषामें श्वेततेडडी ।

मराठीभाषामें पादव्या फुलाचा निशोत्तर ।

गुजरातीभाषामें घोलाफुलनु नसोत्तर ।

रक्तत्रिवृत्तामनि ।

रक्तपुष्पारक्तमूलाकलिङ्गापरिपाकिनी ।

त्रिवृतानि सृतारुणासृत्रमध्याचसास्मृता ॥

अर्थ-रक्तपुष्पा, रक्तमूला, कलिङ्गा, परिपाकिनी, त्रिवृता, निमृता,
अरुणा, सृत्रमध्या, (व्याघ्रादनी, कुटरुणा, फालिन्दी, त्रिपुरा, ताम्रपुष्पिका,
कुलवर्णा, मसरी, अमृता, फाफनासिका, और रक्तत्रिवृत् ।

सामान्यत्रिवृद्गुणाः ।

त्रिवृत्तिकाकहूणाचक्रिमिलेप्पोदगार्त्तिजित ।

कुष्ठकण्डूव्रणान्हन्तिप्रशस्ताचविरेचनी ॥ (रा० नि०)

अर्थ-निमोत-कडवा, चरपरा, गरम, तथा किमि, कफ, उदररोग, कुष्ठ कण्डू और व्रणको दूर करे, इसका जुड़ाव प्रशसायोग्य है ।

अन्यथा ।

त्रिवृक्षमधुररूक्षतीक्ष्णवातकरमतम् ।

तुवरचरसेतित्तकटुपाकञ्चरेचकम् ॥

हितकृन्मलस्तम्भञ्चग्रहणीञ्चकफोदरम् ।

शोथपाण्डुकृमीन्प्लीहाञ्ज्वरपित्तकफतथा ॥

वातरक्तमुदावत्तं हृद्रोगञ्चविनाशयेत् । (ग० नि०)

अर्थ-निमोत-मधुर, रूखा, तीक्ष्ण, वातजनक, कपेला, विक्तरसाश्रित, कटुपाकी, इसका रेचक (जुलाब), हितकारी तथा मलस्तम्भ, गमग्रहणी, कफोदर, मृजन, पाण्डुरोग, कृमि, प्लीहा, ज्वर, पित्त, कफ, वातरक्त, उदावर्त और हृन्यरोगको दूरनेवाला है ।

श्यामात्रिवृक्षणा ।

श्यामात्रिवृक्षतोहीनगुणातीव्रविरेचनी ।

मूर्च्छादाहमदभ्रान्तिकण्ठोत्कर्षणकारिणी ॥

अर्थ-श्यामपनिलर (काला निमोय)-मर्केद नितोयकी अवस्था हीन-गुणावाला है, किन्तु विरेचने गुण इसमें तीव्र है, तथा मूर्च्छा दाह, मन्, भ्रान्ति और कण्ठको उत्कर्षण करनेवाला है ।

श्वेतात्रिवृक्षणा ।

श्वेतात्रिवृक्षेत्रनीम्यात्स्वादुरुष्णाममीगृह्णत ।

रूक्षापित्तज्वरश्लेष्मपित्तशोथोदरापहा (भा० प्र०)

अर्थ-सफेद नितोय-रेचक, स्वादिष्ट, गरम, वातनाशक, श्यामा, तथा पित्तज्वर, कफ, पित्त, मृजन और उदररोगको दूर करे ।

रूक्षत्रिवृक्षणा ।

अरुणात्रिवृक्षाम्बादु रुपायामृदुरेचनी ।

रूक्षाचकटुकाचैवपाकेतित्तरुपापहा ॥ (राप्रसङ्ग०)

अर्थ-रूपा निमोय-मृगर, कपेला, मृदुरेणी, रूखा, चरपरा, रूपाचैव पाके और कटुपाक है ।

अन्यच्च ।

रक्तात्रिवृत्कटुस्तिक्ताकटूष्णारेचनीचसा ।

ग्रहणीमलविष्टम्भहारिणीहितकारिणी ॥ (रा०नि०)

अर्थ—लालनिसोय—कडवा, चरपरा, गरम, रेचक तथा सग्रहणी, एव मलविष्टम्भहारक और हितकारक है ।

विवरण । सफेद निशोयकी बेल जगलमें होतीहै, सफेद फूल आतेहैं, गोल २ फल आतेहैं, उनमें चार २ बीज होतेहैं, पत्ते-नोकदार गोल होतेहैं, इसकी बेलकी लकड़ीमें तीन धार होतीहैं, निसोय तीन प्रकारका होताहै, परन्तु सफेद सबसे उत्तम है ।

२ काले निसोयकीभी लता होतीहै, फूल कालापनलिये बैजनीसे होतेहैं, पत्ते गोल २ नौकदार उसीप्रकार होतेहैं, परन्तु सफेदसे कुछ छोटे और फलभी कुछ छोटे होतेहैं और सब आकार इकसार होताहै, परन्तु बैज्याने सफेदकी अधिक प्रशंसा करीहै ।

माना सफेद निसोयकी २ मासेसे लेकर ४॥ मासे पर्यन्त है । माना काले निशोयकी १ मासेसे लेकर ३ मासेपर्यन्त है । माना लाल निसोयकी ३ मासेसे ६ मासेतककी है

दृतीनामानि ।

उदुम्बरपर्णीदन्तीप्रत्यक्पर्णीचदन्तिका ।

श्वेतघण्टानिकुम्भीचनि शल्यानिष्कुम्भस्तथा ॥

अर्थ—उदुम्बरपर्णी, दन्ती, प्रत्यक्पर्णी, दन्तिका, श्वेतघण्टा, निकुम्भी, निःशल्या, निष्कुम्भ (निकुम्भ, शीघ्रा, नागस्फोता, दन्तिनी, उपचित्रा, भद्रा, रूक्षा, रेचनी, अनुकूला, रक्तदन्ती, विशल्या, मधुपुष्पा, एरण्डफला, तरुणी, एरण्डपत्रिका, एरण्डपत्री, अणुखेती, विशोघनी, कुम्भी, उदुम्बर-दला, विशल्या, उदुम्बरपर्णी, शीघ्रा, ज्येष्ठा, धुणप्रिया, वराहाङ्गी, निकुम्भ और मकूनक यह नाम छोटी दन्तीके हैं) (द्रवन्ती, सावरी, चित्रा, प्रत्यक्पर्णी, अर्कपर्णी, चित्रोपाचित्रा, न्यग्रोधी, प्रत्यङ्ग्रेणी, आखुर्णी)

संस्कृतभाषामें दन्ती ।

हिन्दीभाषामें दन्ती, तिरिफल ।

बंगभाषामें दन्तीपाठ ।

मराठीभाषामें लघुदन्ती ।

| | |
|-----------------|----------------------------------|
| गुजरातीभाषामें | टातपट्टले नेपालना मूल । |
| कर्णाटकीभाषामें | दन्ती । |
| तैलिङ्गीभाषामें | दन्तीचेट्टट्ट, कोण्ड अमदुन् । |
| इंग्रेजीभाषामें | क्रोटन् सीदम् । Crotonweeda |
| लैटिन् भाषामें | क्रोटनटिग्लियम् । Croton tiglium |
| फारसीभाषामें | दद । |
| अरबीभाषामें | हबुलं मुदुक । |

दन्तीगुणा ।

दन्तीवह्निसमापाकेशोफदद्रुविनाशिनी ।

कण्डूपापामाहराकुष्ठध्वंसिनीकृमिहृत्सग ॥ (ग० नि०)

अर्थ—दन्ती—पाकमें अग्निकी समान है, दस्तावर है तथा शोक, घवा-
र्त्सार, कण्डू, पापामा, कोढ़ और कृमिरोगको दूर करे है ।

अथवा ।

दन्तीकटूष्णाशूलामत्वग्दोषनामनीचसा ।

अशोत्रिणाश्रमगीशल्यशोधनीदीपनीपग ॥ (रा० नि०)

अर्थ—दन्ती—चर्मरोग, जन्म, शोधक, दीपन, तथा शूल, आम, त्वचाके
दोष, घवासीर, घाव, पथरी और शल्यनिवारक है ।

अथवा ।

दन्तीद्वयसरपाकेरसेचकटुदीपनम् ।

गुदाङ्गुगश्रमशूलार्थ कण्डूकुष्ठविदाहनुव ॥

तीक्ष्णोष्णहन्तिपित्तान्मरुफशोफोदरकृमीन् ।

क्षुद्रदन्तीफलंतुम्यान्मधुररसपाकयो ॥

शीतलसृष्टविण्मृत्रगग्गोथकफापहम् । (भा० प्र०)

अर्थ—शोनाप्रकारकी दन्ती—दस्तावर, रस और पात्रमें चर्मरोग जठराग्नि
दीपन कान्तेवाणी, तीक्ष्ण, गरम, तथा गुदाङ्गु, चर्मरोग, शूल, परासीर, कण्डू,
कोढ़, दाह, पित्तकारक, फफू, सूजन, उदररोग और कृमि रोगका नाश
करे है । छोटी दन्तीका फल—रस और पात्रमें मधुर, तीक्ष्ण, मृदु तथा
मृदुको विकारनेशाल, विष, शोथ और चर्मरोगक है ।

बृहदन्तीनामानि ।



बृहदन्ती गुच्छफला दुग्धगर्भा विरेचनी ।

विपभद्राभद्रदन्तीज्योतिष्काचजयावहा ॥

अर्थ—बृहदन्ती, गुच्छफला, दुग्धगर्भा, विरेचनी, विपभद्रा, भद्रदन्ती, ज्योतिष्का, जयावहा ।

| | |
|-----------------|------------------------------------|
| सस्कृतभाषामें | बृहदन्ती । |
| हिन्दीभाषामें | मुगलाई अण्ड । |
| मराठीभाषामें | थोरदन्ती । |
| गुजरातीभाषामें | रतनजोत । |
| कर्णाटकीभाषामें | एरण्डनेदन्ती । |
| इंग्रेजीभाषामें | दिफिषिकनद्र । The physicent |
| लैटिन्भाषामें | करकस मल्टीफीडस । Ourcas Multifidus |
| | जेट्रोफापरगन्स, Jatropha purgans |
| फारसीभाषामें | शकारदुजुवा । |
| अरबीभाषामें | अनुखल्सा । |

बृहदन्तीगुणा ।

बृहदन्तीकटूष्णाचजठरामयशोधिनी ।

अर्शोत्रिणाशमरीशलत्वग्दोषशमनीचसा ॥

अर्थ—बृहदन्ती—चरपरी, गरम, जठरामयशोधक तथा बवासीर, घाव, पयरी, शूल और त्वचाके दोषोंको दूर करे है ।

वृद्धदन्तीयोगगुणा ।

तिक्तेरण्डस्यबीजन्तुरसपाकेगुरुमधु ।
स्निग्धचरेचकवृष्यवृंहणञ्चमलप्रदम् ॥
कफपित्तप्रदचैववामकवातदाहकृत् ।
नविषविषमित्याहुर्जैपालोविषमुच्यते ॥
शोधितश्चविरैकेषुचमत्कृतिकरपर ।

अर्थ-वृद्धदन्तीका बीज-रस और पाकर्म भारी, मधुर, स्निग्ध, रेचक, यीर्षवर्द्धक, वृंहण, चल्दायक, कफपित्तकारक, वमनजनक, वात और दाह कारक है । जो विष है वह विष नहीं है, परन्तु यह विष है अर्थात् जमालगोटा विष है । यह शोधा हुआ विरेचनके विषय शरीरम चमत्कार करता है ।

भद्रदन्तीनामानि ।

भद्रदन्तीकेशरुहाभिषग्भद्राजयावहा ॥

अर्थ-भद्रदन्ती, केशरुहा, भिषग्भद्रा, जयावहा (आरुतकी, उरगाही, जयादा, भद्रदन्तिका) भस्या गुणा ।

भद्रदन्तीकटूष्णाचरेचनीकृमिहापरा ।

शूलकुष्ठामदोषघ्नीतुदामयविनाशिनी ॥

अर्थ-भद्रदन्ती-चरपरी, गरम, दस्तावर, कृमिनाशक तथा शूल, कोट, आमदोष और उदररोगनाशक है ।

जयपादनामानि ।



जयपालश्चजैपाल सारकस्तिन्तिडीफलम् ॥

अर्थ-जयपाल, जैपाल, सारक, तिन्तिडीफल, (दन्तीबीज, मलद्रावि, निकुम्भाल्पबीज, रेचक, बीजरेचन, कुम्भीबीज, कुभिनीबीज, घण्टाबीज, घण्टनीबीज, शोधनीबीज, चक्रदन्तीबीज)

| | |
|-----------------|---------------------------------|
| सस्कृतभाषामें | जयपाल । |
| हिंदीभाषामें | जमालगोटा । |
| बंगभाषामें | जैपाल । |
| मराठीभाषामें | जेपाल । |
| गुजरातीभाषामें | नेपालो । |
| कर्णाटकीभाषामें | जेपाल । |
| इंग्रेजीभाषामें | पार्जिंगब्रोडन । Parging Broton |
| लैटिन् भाषामें | औलियम, कोटोनिस् । |
| अरबीभाषामें | हबुससलातीन । |
| फारसीभाषामें | तुखमेवेंद जीरखताई ! |

अस्य गुणा ।

जयपाल कटुरुष्णः कृमिहारीविरेचकः ।

दीपन कफवातघ्नोजठरामयशोधनः ॥ (रा० नि०)

अर्थ-जमालगोटा-चरपरा, गरम, कृमिनाशक, रेचक, दीपन, कफवात नाशक और उदरामयशोधक है ।

अन्यथा ।

जयपालोगुरु स्निग्धोरेचीपित्तरुपापहः ॥ (भा० प्र०)

अर्थ-जमालगोटा-भारी, स्निग्ध, दस्तावर और पित्त, कफनाशक है ।

अन्यथा ।

सारककफनुत्केदितीक्ष्णमुष्णविरेचनम् ॥ (रा० नि०)

अर्थ-जमालगोटा-कफनाशक, हेन्दकारक, तीक्ष्ण, गरम और दस्त लानेवाला है ।

अस्य बीजशोधनविधिः ।

निस्तुपजयपालञ्चद्विधाकृत्वाविचक्षणः ।

एतद्वीजस्यमध्येतुपत्रवत्परिवर्जयेत् ॥

अष्टमांशेन नृपेन दृङ्गणस्य तु मे लयेत् ।

केशयन्त्रेणतद्वाव्यपाच्यंदुग्धेनमप्लुतम् ॥

त्रिवारञ्जद्धिमायातिजयपालोमृतोपमम् । (इतिरमच०)

अर्थ-बुद्धिमान् वध धनञ्जय गदित जमालगोदेके दो भागदण्डके इसपे रीजके मध्यमें पत्तेकी समान जो वस्तुई उसको निकाल डाले और जमाल गोदेकी दाढमें अष्टमाश मुहागेका चूर्ण चक्के मिलावे । केशयन्त्रके द्वारा भावना दे, फिर दूधमें भिजोकर मिलावे, इसप्रकार तीन बार करनेसे जमाल गोदा अमृतकी सदृश होजाता है ।

अन्यथा ।

स्विन्नगोमयतोयमादुग्धेवाजयपालकम् ।

खर्परीमृदुभृष्टतन्नि स्नेहशुद्धिमृज्यति ॥ (आधेयसहिता)

अर्थ-जमालगोटेको गोमयको जलमै तथा दूधमै भिजोकर फिर फोमउ
रपीपटेमै भूनदेखै जय उगमै चिकनाई न रहे तब गुठ होजाता है ।

अथ बीजतिष्ठतृणा ।

तेलनिकुम्भवीजोत्थमत्युग्रचनंपरम् ।

आनाहमुदगहन्तिमन्यासञ्चगिगेगदम् ॥

धनुस्तम्भज्वरेण्मादगदमेकाङ्गसज्जकम् ।

आमवातश्च शोथश्च मर्दनात्कासनाशनम् (आयुर्वेदमहिता)

अर्थ-जमालगोटेका तेल-अत्युप्त रैचक तथा आनाइ (अरारा) उदर-
रोग, सन्धास, शिरोरोग, पनु-भ्रम, ज्वर, टमा, एकाद्विनाक रोग,
आमगाव और शोचको मदन करनेसे तथा र्गतापो दूरकरे है।

विवरण—दन्तीका ध्रुव होता है, पक्षे-गृह्यकी समान होते हैं, पक्ष गृह्यकी समान होता है इसका पक्ष अमालगात्र है। घड़ी दन्तीका पक्ष गृह्य होता है, पक्ष-अण्डकी समान होते हैं, उसमेंमे अंडांति समान बीज नियम है, उन बीजांका जुल्टाय होता है, तथा इसके दृषकांती पृथक्के दृषकी समान जुल्टाय नियोजाता है।

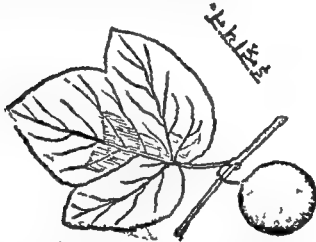
इन्द्राद्यद्विजादिति ।

इन्द्रवारुणिकाचिनाविशाखागजचिर्भिद्य ।

मृगेर्षा शुद्धमहा निप्रफलेन्द्रवारुणी ॥

अर्थ-इन्द्रवारुणिका, चित्रा विशाला, गजचिर्भिटा, मृगेर्वारु, क्षुद्रसहा, चित्रफला, इन्द्रवारुणी, (ऐन्द्री, गवाक्षी, भरा, पिटङ्गोकी, मृगादनी, इन्द्रा, अरुणा, गवादनी, इन्द्रचिर्भिटी, सूर्या, विपल्ली, गणकर्णिका, माता, सुकर्णिका, तारका, वृषभाक्षी, पीतपुष्पा, इन्द्रवहरी, हेमपुष्पा, क्षुद्रफला, वारुणी, बालकप्रिया, रक्तेर्वारु, विपलता, शकवली, विपापहा, अमृता, विपवल्ली, चित्रवल्ली, बहुफला, कपिलाक्षी, मृगेक्षणा मृगेक्षणा)

महेन्द्रवारुणीनामानि ।



महेन्द्रवारुणीकायाविशालाचमहाफला ।

आत्मरक्षाचित्रफलातुवसीत्रपुसीचसा ॥

अर्थ-महेन्द्रवारुणी, काया, विशाला, महाफला, आत्मरक्षा, चित्रफला, तुवसी, त्रपुगी (रम्या, महेन्द्री, त्रपुसा, चित्रवल्ली, दीर्घवल्ली, बृहत्फला, बृहद्वारुणी, सौम्या, श्वेतपुष्पा, मृगाक्षी, मृगेर्वारु, मृगादिनी, हस्तिदन्ती, कटुरसा, कपिलाक्षी, कुम्भसी, उरमिया, चित्रला, देवी और गजचिर्भरा)

संस्कृतभाषामें

हिन्दीभाषामें

बंगभाषामें

मराठीभाषामें

गुजरातीभाषामें

रा०

दे०

कर्णाटकीभाषामें

तैलिङ्गीभाषामें

इद्रवारुणी, महेन्द्रवारुणी ।

इन्द्रायण, फरफेदु, बडीइन्द्रायण, बडीइन्द्रफला ।

राखालगशा, राखालताडु, कुदरुकी, बढमाकाल ।

लघुइद्रवण, कांबडळ, थोरकांबडळ ।

इद्रवाणीयुं, गावमुकणु ।

तसतुम्नो, गडतुम्नो ।

घोडइन्द्रावण, घुलेइन्द्रावण ।

हामेवे, हिरियाहामेवे ।

एतिपुच्छा ।

| | |
|-----------------|--|
| इंग्रेजीभाषामें | कोलोसिय । Colo-yni |
| लैटिन्भाषामें | सिट्रुस् कोलोसियुस । Citrullus Colo-yni |
| स्युक्लुमिस | स्युदोकोलो सिथिम् । Cucum spo Colocynth 14 |
| फारसीभाषामें | खुर्यजातल्ल । |
| अरबीभाषामें | हजल । |

इन्द्रवारुणीगुणा ।

इन्द्रवारुणिकातिक्ताकटु शीताचरेचनी ।

गुल्मपित्तोदरश्लेष्मक्रिमिकुष्ठेज्वरापहा ॥ (ग० नि०)

अर्थ-इन्द्रायण-कडवी, चरपगी, शीतल, रेचक तथा गुल्म, पित्त, उदररोग, कफ, क्रिमि, कोष्ठ और ज्वरको हरनेवाली है ।

अथवा ।

लघ्वीन्द्रवारुणीप्रोक्तापाकेरुच्यतेतिक्ता ।

शीतासरोष्णवीर्याचलष्वीचनप्रकीर्तिता ॥

गुल्मपित्तोदरकफक्रिमिकुष्ठेज्वरघ्नान् ।

श्वासकासग्रन्थिमेहमूढगर्भरुक्कामला ॥

प्लीहानगुष्कगर्भज्वलगण्डविषतथा ।

आनाहवातमपिचचामंदुष्टोदरंतथा ॥

सर्वोदराणिपाण्डुअनाशयेदितिकीर्तिता । (नि० १०)

अर्थ-इन्द्रायण-पचनेमें चरपगी, कडवी, शीतल, तारक, उष्णरीत्य हल्की तथा गुल्म, पित्त, उदररोग, कफ, क्रिमि, कुष्ठ, ज्वर, प्रण, श्याम, रोगी, ग्रन्थि, प्रमेह, मूढगर्भ, कामला, प्लीहा, गुल्मगर्भ, गन्गण्ड, विष, आनाह, वात, अपर्चा, आम, दूधेन्द्र, सर्वप्रकारके उदररोग और पाण्डुरोगका नाश करनेवाली है ।

अथेन्द्रवारुणीगुणा ।

अन्येन्द्रवारुणीकफरुजक्षयपदतथा ।

नाशयेदितिसप्रोक्तागुणाश्चान्येतुपूर्वतन् ॥

गन्धैर्यैचपाकेचाधिकाचोक्तागुणैरियम् । (नि० १०)

अर्थ-यहां इन्द्रायण-वृक्षरोग और इन्द्रायण रोगको दूर करनेवाली है ।

रस, वीर्य और विपाकमें इन्द्रायणकी अपेक्षा यह अधिक गुणवाली है, शेष गुण इन्द्रायणकी समान जानने ।

विवरण । इसकी बेल अधिकतर खारी भूमिमें उत्पन्न होतीहै, फल-सूक्ष्म काटेयुक्त लालरंगका होताहै, फूल-पीलेरंगका होताहै । पत्ते लम्बे बीचबीचमें फटेहुए होतेहैं, दूसरी रेतली भूमिमें होतीहै, उसका फल-पीलेरंगका होताहै । इन दोनों जातिकी इन्द्रायणके फल तथा मूलके द्वारा जुड़ाव दियाजाताहै ।

स्वर्णपत्रीनामानि ।

कल्याणीहेमपत्रीचरेचनीस्वर्णपत्रिका ।

अर्थ—कल्याणी, हेमपत्री, रेचनी, स्वर्णपत्रिका, (स्वर्णपत्री, स्वर्णमुखी, हेमपत्रिका, रेचिका, स्वांणनी और मलहारिणी)

संस्कृतभाषामें

स्वर्णपत्री ।

हिन्दीभाषामें

सनाय ।

मराठीभाषामें

सोनामुखी ।

बगभाषामें

सोनामुखी, सोनापाता ।

इंग्रजीभाषामें

टिनेवेलीसिना ।

लैटिनभाषामें

सिनाइडिका ।

अस्या गुणा ।

विद्वन्धवह्निमान्धश्चयकृदाद्युदरतथा ।

प्लीहोदरवद्वगुदमजीर्णविषमज्वरम् ॥

कामलापाण्डुरोगश्चकल्याणीक्षपयेद्भुवम् । (आ० स०)

अर्थ—सनाय—मलज्वर, मृदाग्नि, यकृत, उदररोग, प्लीहोदर, वद्वगुद, अजीर्ण, विषमज्वर, कामला और पाण्डुरोगका नाशकरेहै ।

कृष्णवीजनामानि ।



कृष्णबीजश्यामबीजस्मृतंश्यामलीजकम् ॥

अर्थ-कृष्णबीज, श्यामबीज, श्यामलीबीजक ।

संस्कृतभाषामें कृष्णबीज ।

हिन्दीभाषामें कालादाना ।

बंगभाषामें नीलकलमी ।

इंग्रेजीभाषामें पेलवुडपोमिया ।

लटिन्भाषामें फागवटिमनील ।

अथ गुणाः ।

कृष्णबीजसरसिग्धशोथोदरहरपरम् ।

ज्वरविष्टम्भहारीचमस्तकामयनाशनम् ॥

उदावर्तकफेनाहेप्रयोज्यबुद्धिमत्तरं ।

अर्थ-कालादाना-दस्तावर, चिकना दया सजा, उदग्गोग, उग्र, सिष्टम्भ, मस्तकरोग, उदावर्त, रुफ, और आताद रोगको दूरकरे ।

विवरण । जमालगोटके अभावमें इसका व्यवहार किया जाता है, पर्योकि जमालगोटकी समान यह इतना भयंकर दस्तावर नहीं है । आजकल बहुतसे आलौपथिकडाक्टर सरकारी सफासानेमें इसका व्यवहार करते हैं । व्यवहार-यौन । माया ६ मासकी ।

नीलिग्रामानि ।

नीलीतुनीलिनीनीलामेववर्णाचकुत्सला ।

दूलीक्रीतक्रिकाकालानीलिकानीलपुष्पिका ॥

अर्थ-नीली, नीलिनी, नीला, मेघगणां, गुलडा, दूरी, ह्रीतक्रिका, काला, नीलिका, नीलपुष्पिका, (मामीणा, मगुपुष्पिका, रघनी, श्रीदनी, नुत्या, तुणी, टोला, दूष्पिका, टोणिका, अद्रिका, मामणी, मामिणी, दूरी, टोणी, मेला, तुन्डा, नीलपत्री, राती, नीलपुष्पी, चानी, श्यामा, शाधिनी, श्रीकला, ग्राम्या, भद्रा, भारवाही, मोचा, कृष्णा, व्यधनवेणी, महापुष्पा, अमिता, ह्रीतनी, पेन्नी, चारुटिका, गन्धपुष्पा, श्यामपुष्पा, रघुपरी, महापुष्पा, म्बिरतंगा, रगपुष्पी, वृन्तिका, अश्रनवेणिका, चामरी, विपदा, गन्धपुष्पी, और म्बिरतंगा)

संस्कृतभाषामें नीली ।

हिन्दीभाषामें नीला, नील ।

| | |
|-----------------|--|
| वगभापामें | नीलगच्छी नीलगाठ । |
| मराठीभापाम | गुळी, लटुनीळी । |
| गुजरातीभापामें | गली । |
| कर्णाटकीभापामें | हिरीपनीली । |
| तैलिङ्गीभापामें | निलीजेडु । |
| इंग्रेजीभापामें | इडिगो । Indigo |
| लटिनभापामें | इडिगोफेरा कोर्डिफोलिया । Indigofera cordifolia |

अस्या गुणाः ।

नीलीतुकटुकातिक्ताकेश्याचोष्णासरामता ।

व्यग्लेष्मोदरमोहहृद्रोगचभ्रमतथा ॥

वातरक्तमुदावर्तमामवातकफजयेत् ।

मदकासविपंचामवातगुल्मज्वरतथा ॥

कुष्ठकृमिश्चोदरश्चप्लीहाश्चैवविनाशयेत् । (नि०र०)

अर्थ—नील—चरपरा, कडवा, केशोंको हितकारी, गरम, सारक तथा व्यग, श्लेष्म, उदररोग, मोह, हृदयरोग, भ्रम, वातरक्त, उदावर्त, आमवात, कफ, मद, खाँसी, विष, आम, वात, गुल्म ज्वर, कोढ़, कृमि, उदर और प्लीहाका नाशको है ।

अन्यथा ।

नीलीकेश्याशिरोरोगव्रणकुष्ठापहासरा ॥ (शो० नि०)

अर्थ—नील—केशोंको सुदरकरनेवाला तथा मस्तकरोग, घाव और कोढ़को दूर करेहै, तथा दस्तावर है ।

विवरण । नीलके धुप छोटे २ किसानलोग खेतीमें बोतेहैं, पत्तेसरफाकके समान नीले और कुठेक कालापन लिये होतेहैं । इसकी फली—टेडी और गोल होतीहै, इसकी डाली और पत्तोंकी कुद्दीकर कुण्डोंमें पानीभर उममें गलातेहैं, तब इसका नील बनातेहैं वह नीले रंगके काममें आताहै, दूमरा इसीका भेद बड़ा नील है ।

महानीलीनामानि ।

अन्याचैवमहानीलीअमराराजनीलिका ।

तुत्था श्रीफलिकामेलकेशार्हाभर्त्सपत्रिका ॥

अर्थ-महानीली, अमग राजनीलिका, नुत्या, श्रीफलिका, मेला, वेगार्श, भर्तृपत्रिका ।

हिन्दीभाषामें बडानील ।

बगभाषामें बडनील ।

मराठीभाषामें योगनीली ।

गुजगर्तभाषामें मोटीगली ।

कर्णाटकीभाषामें हिरीपनील ।

लैटिनभाषामें इडिगोकेग टिकनोग्पा । *Indigofera tinctoria*

भस्वा गुणा ।

महानीलीगुणादयान्याद्रगश्रेष्ठासुर्वीर्यदा ।

पूर्वोक्तनीलिकादेपासगुणासर्वकर्मसु ॥

अर्थ-बडानील-गुणादय, उत्तमरंगवाला, शीर्षपत्रक, नीलकी अपेक्षा यह सर्व गुणोंमें उत्तम है ।

शस्त्रगुणानामानि ।



शरपुखाकालभाकषीहारि कालिकामता ॥

अर्थ-शरपुखा, कालहार, घृणारि, पालिका (घृणहन्तु, नीलपुष्टादि, काण्डपुखा, घाणपुखा, इषुपुष्टिका, सायरपुखा, इषुगु, शरपुखा) ।

अमगशस्त्रगुणानामानि ।

गराभिधात्रपुगान्याच्चेताद्यामितमायका ।

मितपुगाभेतपुगाशुभ्रपुखाचपञ्चथा ॥

अर्थ-भेतरपुगा, मितचायका, मितपुगा, भेत्पुगा, गुभ्रपुगा ।

अमगशस्त्रगुणानामानि ।

अन्यातुकंठपुगास्यात्कठानु वंठपुष्टिका ॥

अर्थ-कण्ठपुखा, कठाल, कण्ठपुखिका ।

सस्कृतभाषामें

शरपुखा, श्वेतशरपुखा, कण्ठपुखा ।

हिन्दीभाषामें

सरफोंका, सफेद सरफोंका, कण्ठपुरा ।

वगभाषामें

वननील, सादवननील ।

मराठीभाषामें

उन्हाळी ।

कर्णाटकीभाषामें

येरडुकोगि, मडुकोगि ।

तेलिङ्गीभाषामें

प्रापोराचेद्रु, तेलवेंपल्लिचेद्रु ।

तामिलीभाषामें

कोल्लुक्कवकेल्लपि ।

दा०

जलिकुलथि ।

इंग्रेजीभाषामें

परपल्टेफ्रोसिया । Purple tephrosia

लैटिन्भाषामें

टेफ्रोसियापरपूरिया । Tephrosia Purpurea

शरपुरागुणा ।

शरपुखायकृत्प्लीहगुल्मव्रणविपापहा ।

तिक्त कपायःकासास्रश्वासज्वरहरोलघु ॥ (भा०प्र०)

अर्थ-सरफोंका-यकृत, प्लीहा, गुल्म, व्रण और विषविनाशक, है । तथा कडवा कपेला, हलका, और खासी, रुधिरविकार, श्वास तथा ज्वरको दूर करनेवाला है ।

अपिच ।

शरपुखाकटूष्णाचकिमिवातरुजापहा ।

श्वेतात्वेपागुणाढ्यास्यात्प्रशस्ताचरसायने ॥ (रा नि)

अर्थ-सरफोंका-चरपरा, गरम, किमि और वातनाशक है सफेद सरफोंका सरफोंकेसी, अपेक्षा अधिक गुणवाला और रसायनकार्यमें उत्तम है ।

अन्यथ ।

शरपुखातुकटुकातिक्तोष्णातुवरालघु ।

यकृत्कृमिप्लीहगुल्मव्रणकासविपापहा ॥

श्वासाश्रित्तदोषघ्नीहृद्भोगकफवृत्तिहा ।

वातकफोदरव्यगगलत्कुष्ठञ्चनाशयेत् ॥

श्वेतायाश्शरपुखायाः क्तातोद्यधिकगुणा । (नि०२०)

अर्थ-सरफोंका-चरपरा, कदवा, गरम, कपेला, हल्का, तथा मृदु, कृमि, छीदा, गुल्म, ग्रण, खासी, विष, श्वास, चवर्त्तार, रुधिरविनाग, हृदयरोग, कफ, ज्वर, वात, कफोदर, व्यङ्ग (झोई) और गल्लुष्टको नष्ट करे है । रक्त सरफोंकेसे सफेद अधिक गुणवाला है ।

कठपुष्पागुणा ।

कठपुष्पाकटूष्णाचक्रिमिशूलविनाशिनी ॥ (रा०नि०)

अर्थ-कठपुष्पा-चरपरा, गरम तथा कृमि और शूलविनाशक है ।
विवरण । सरफोंकेका धुप होता है, पत्ते-नीलके समान होते हैं, पून-लाल और चारोंके होते हैं, फलियोंके ऊपर रेंआ होता है, दूसरे प्रकारकी फलियोंपर रेंआ नहीं होता । सफेद सरफोंकेका धुप, पृथ्वीपर फैला हुआ होता है, पत्ते-लाल सरफोंकेसे कुछेक छोटे होते हैं, पून-मरेद होता है । शरफोंकेकी जड़-चिलममें रखकर पीनेसे खासी और श्वास दूर होता है । सरफोंकेकी मात्रा ४ मासे । कठपुष्पेकी मात्रा ५ मासे ।

दुरालभानामानि ।

दुरालभादुरालम्भासमुद्रान्ताचरोदिनी ।

गान्धारीकच्छुगनन्ताकपायादुरभिग्रहा ॥

अर्थ-दुरालभा, दुर्गलभा, समुद्रान्ता, रोदिनी, गांधारी, पच्छुरा, अनन्ता, कपाया, दुर्गभिग्रहा (दुःस्पर्शा, कुनाशक, रोदिनी, घनुर्षा, सुवर्ण, म, विकण्टक, आत्ममूली, पद्ममुरी, इदकार्पा, घन्वपाग, घन्वी, घन्वयवामक, प्रबोधिनी, सुन्दरला, विष्णु, चमूरी, मरुतन्मा, उष्ट्रभस्पा, मृदुपर्णा, कपायती, शरपुष्पाकलिनी, विनाशदा, रविग्रहा, अनामसु

अर्थ-शरपुष्पा, कालशा

काण्डपुष्पा, माणपुष्पा, इउपुष्पा-पा ।

अथ-हिगुणा ।

शरभिधाचपुष्पाम्या

श्वपुष्पाश्वेतपुष्पाशुभ्रपुष्पा

मिनगायना, मिठपुरा

शुभ्रपुष्पामानि ।

शरपुष्पा

लैटिन्भाषामें फगोनियापरेविका । *Fogonia-arabica*
 फारसीभाषामें वादावर्द ।
 अरबीभाषामें शुकाई ।

अस्या गुणा ।

उष्णभक्ष्यामरुजसविपघ्नीबोधकृत्परा ।

कपायाज्वरहृच्छीतातथातीसारनाशिनी ॥ (ध० नि०)

अर्थ—धमासा—बोधकारक, कपेला, शीतल तथा वात, श्वास, विप,
 ज्वर और अतिसारनाशक है ।

अन्यञ्च ।

दुरालम्भाकटुस्तिक्तासोष्णाक्षाराम्लिकातथा ।

मधुरावातपित्तघ्नीज्वरगुल्मप्रमेहजित् ॥ (रा० नि०)

अर्थ—धमासा, चरपरा, कडवा, गरम, खारी, खट्टा, मीठा तथा वात,
 पित्त, ज्वर, गुल्म और प्रमेहको हरेंहे ।

अपिच ।

दुरालभाकटुस्तिक्तामधुरारक्तशुद्धिकृत् ।

शीताचोष्णाविसर्पघ्नीविषमज्वरनाशिनी ॥

तृदच्छर्दिमेहगुल्मघ्नीमोहरक्तरुजापहा ।

वातपित्तकफकुष्ठज्वरचैवविनाशयेत् ॥ (नि० र०)

अर्थ—धमासा—चरपरा, कडवा, मीठा, रक्तबोधक, शीतल, गरम, तथा
 विसर्प, विषमज्वर, तृषा, वमन, प्रमेह, गुल्म, मोह, रुधिरविकार, वातपित्त,
 कफ, कीट और ज्वरको दूर करे है ।

विवरण । धमासेका, रेतली भूमिम छत्ता होता है, काटे बारीक होते हैं,
 पत्ते—सूक्ष्म और फलभी बहुत छोटे २ होते हैं । मात्रा ६ मासेकी ।

यथासनामानि ।

यासोयवासकोनन्तावालपत्रोधिकट्टक ।

दूरमूल.समुन्द्रान्तोदीर्घमूलोमरुद्रव ॥

अर्थ—यास, यशामक, अनन्ता, बालपत्र, अधिकट्टक, दूरमूल, समुद्रान्त,
 दीर्घमूल, मरुद्रव (यवाम, कण्टकी, चटुकण्टक, शुद्धगुदी, गेदनिफा, विषम,

कण्टकाशुक, त्रिपणिका, गन्धारी, वामन्त, वनडर्म, त्रिवर्णक, तीक्ष्णरन्ध्र,
सुदमपत्र)



संस्कृतभाषामें

यवाम ।

हिन्दीभाषामें

जवागा, दुलाह ।

बगभाषामें

यवासा ।

मराठीभाषामें

फटिचुपुक, तावटा धमागा ।

गुजरातीभाषामें

जवासो ।

कर्णाटकीभाषामें

तोरे इंगडु ।

लैटिनभाषामें

अल्बुर्गाई मरोगम । *Alburturum*

फारसीभाषामें

फरावतुन ।

अरबीभाषामें

अल्बुर्गा हाज ।

मरु गुना ।

यास म्वाद्दरमस्तिक्तस्तुवर शीतलोलेषु ।

कफमेदीमदभ्रान्तिपित्तासृक्कुष्ठकामजित ॥

तृष्णात्रिमर्षवातामयमिज्वरहरः स्मृतः । (धन्यन्तरिणि०)

अर्थ-जवामा-रसादिप्र, कृत्वा, कपेला, शीतल, हृत्वा, तदा पत्र,
मेद, मद, भ्रान्ति, रक्तपित्त, कोट, मूर्मा, शृषा, शिगरे, वातामय इति
आर रसाको ह्य परेह ।

अन्वयः ।

यानस्तुमशुग्मस्तिकोपत्य-नान्निप्रदीपक । सर शीतोले-

धुश्वेतुवर कफपित्तजित् ॥ रक्तरुक्कुष्ठवीसर्पमेदभ्रममदा-
पहः । वातरक्ततृपांछर्दिकासदाहज्वरंहरत् ॥ (नि० २०)

अर्थ—जवासा—मधुर, कडवा, बलकारक, अग्निको दीपन करनेवाला, सारक, शीतल, हलका, कपेला तथा कफ, पित्त, रक्तविकार, कोढ़, विसर्प, भेद, भ्रम, मद, वातरक्त, पियास, वमन, साँसी, दाह और ज्वरका नाश करे है ।

विवरण । जवासा—धमासेकी समान होता है, और यह भी जलाशयके समीपकी भूमिमें अधिक उत्पन्न होता है । इसके काँटे धमासेसे कुठेक बड़े होते हैं, और पत्ते भी किञ्चित् बड़े होते हैं । प्रायः जवासेके गुण धमासेसे मिलते हैं । वर्षाऋतुके आदि अतमें यह फलता फूलता है, और वर्षाऋतुमें तो आपसे आपही जलजाता है ।

मुण्डोनामानि ।

श्रावणीश्रवणामुण्डीभूतघ्नीचपलङ्कपा ॥

अर्थ—श्रावणी, श्रवणा, मुण्डी, भूतघ्नी, चपलङ्कपा, (कदम्बपुष्पा, अरुणा, मुण्डीरिका, कुम्भला, मिथु, श्रवणशीर्षिका, म्रजिता, परिम्राजि, तपोधना)
महामुण्डीनामानि ।

महाश्रावणिकान्यातुसास्मृताभूकदम्बिका ।

कदम्बपुष्पिकाचस्यादव्यथातितपस्विनी ॥

अर्थ—महाश्रावणिका, भूकदम्बिका, कदम्बपुष्पिका, अव्यथा, तपस्विनी, (महामुण्डी, लोचनी, कदम्बपुष्पी, विकचा, क्रोडचूडा, चपलङ्कपा, नदीकदम्बा, मुण्डारव्या, महामुण्डनिका, माता, स्यविरा, लोतनी, भूकन्द, अलम्बुपा, वृद्धा, छिन्नग्रन्थिका, नीलकदम्बिका, बोडा)

संस्कृतभाषामें

मुण्डी, महामुण्डी, महाश्रावणिका ।

हिन्दीभाषामें

मुण्डी, छोटीमुण्डी, गोरखमुण्डी, बड़ीमुण्डी ।

बंगलाभाषामें

मुडिरी, मुण्डी, थुलकुडी, बडथुलकुडी ।

मराठीभाषामें

वरसबोडी, बोडयरा ।

गुजरातीभाषामें

मुडी, गोरखमुडी, बोडियोक्गर ।

कर्णाटकीभाषामें

फीपोवोडतर, हिरीपशोडतर ।

तैलिङ्गीभाषामें

बोडसरपुचेट्टु ।

ता० वम०

कोट्टक ।

लेटिन्भाषामें
अरबीभाषामें

स्फिरैयम् इडिकस् (*Sphoeranthus indicus*)
कमादर युस् ।

मुण्डीगुणा ।

मुण्डीतित्ताकटु. पाकेर्वीर्योष्णामधुरालुप ।
मेध्यागंडापचीकृच्छ्रकृमिपित्तार्तिपाण्डुतुत ॥
क्षीपदारुच्यपस्मारप्लीहमेदोगुदात्तिनुत । (ग० नि०)

अर्थ-मुण्डी-कडवी, पचनेमें, चरपरी, उष्णरीषा, मधुर, दृढरी, मेधा-
जनक, तथा गलगड, अपची, सूत्रहृच्छ्र, कृमि, पित्तकी पीडा, पाण्डुरोग,
क्षीपद, अरुचि, अपस्मार, प्लीहा, मेद और गुदारी वेदनाको दूर करे ।
अपच ।

श्रावणीतुरुपायोष्णापाकेतित्ताचतीक्ष्णका । मधुराभेद-
कालर्चामेध्यावल्याग्नायना ॥ गलगडगडमालामपची
कफवातकम् । प्लीहामेदमयोन्मादक्षीपदपाण्डुरोगकम् ॥
अरुचियोनिशूलश्चकामसर्गचकृच्छ्रकम् । पित्तचामप-
स्मारकृमिश्वासश्चकुष्ठकम् ॥ विषदोषचातिमारुहर्दिचैव
विनाशयेत ।

अर्थ-गोरखमुण्डी-(मुण्डी) कपेली, गरम, पचनेमें चरपरी, तीक्ष्ण,
मधुर, दृढावर, दृढरी, मेधाजनक, पचकारक, रग्नायन, तथा गलगड,
गण्डमाला, अपची, वक्, वात प्लीहा, मेदरोग, उन्मादरोग, क्षीपद,
पाण्डुरोग, अरुचि, योनिशूल, रोगी, पशामी, सूत्रहृच्छ्र, पित्त, आमरोग,
मृगी, कृमि, श्वास, कोष्ठ, विषाधिकार, अतिमार और पसना दूर कर-
नेवाली है ।

महाभायनित्तगुणा ।

महामुण्डीतुमधुरातित्ताचोष्णाग्नायनी ।

रुच्याम्वर्याप्रमेदमीवातनाशरोगिनी ॥

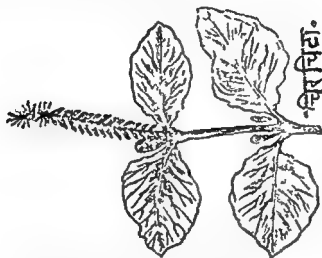
अन्येगुणान्तुमुण्डीरज्जेयानिद्यैश्चमृगिभिः । (नि० २०)

अर्थ महामुण्डी-मधुर, तीक्ष्ण, गरम, रग्नायन, रक्षिषाक मरुषो

शुद्ध करनेवाली, प्रमेहनाशक और वातविनाशक है । शेष गुण मुण्डीकी समान जानने ।

विवरण । मुण्डी और महामुण्डी वृणके समान प्रसर जातिकी वनस्पति है, पत्ते-अगुलीकी समान लम्बे २ होतेहैं फल-कदम्बके समान अथवा मॅरटीके तुल्य किंवा घुण्डीसदृश होतेहैं ।

अपामार्गनामानि ।



अपामार्ग शैखरिकोधामार्गवमयूरकौ ।

प्रत्यक्पर्णीकीशपर्णीकिणिहीखरमञ्जरी ॥

अर्थ-अपामार्ग, शैखरिक, धामार्गव, मयूरक, प्रत्यक्पर्णी, कीशपर्णी, खरमञ्जरी, (अपाङ्गक, किणी, कीशपर्णी, चमत्कार, शैखरेय, अधामार्गव, केशपर्णी, स्थलमञ्जरी, प्रत्यक्पुष्पी, क्षारमध्य, अधोवण्डा, शिखरी, दुर्ग्रह, अध्वशल्य, कान्तरिक, मर्कटी, दुरभिग्रह, वासिर, पराक्पुष्पी, कण्ठी, कर्कटपिप्पली, कटुमञ्जरीका, अत्राट, धुरक, पाण्डुकण्डक, तालाकट, कुञ्ज, मालाकण्ड, अत्राट)

संस्कृतभाषामें

हिन्दीभाषामें

वगभाषामें

मराठीभाषामें

गुजरातीभाषामें

कर्णाटकीभाषामें

तैलिङ्गीभाषामें

अपामार्ग ।

चिरचिटा, एटर्जीरा, ओगा ।

अपाङ्ग ।

अघाडा ।

अयेडी ।

उत्तरणे, चिचिग ।

दुर्जीणिके ।

इग्नेजीभाषामं

रुचिरेष्टी । Rou-chastie

लैटिन् भाषामं

पचिर्गचिरा णस्तिरा । Vchirachira asyara

ओकिरेयन आदर निफोत्रिया । A Okirayia

फारसीभाषामं

सारवासगोता ।

बरवीभाषामं

अत्कम ।

अपामार्गगुणा ।

अपामार्ग सरम्तीक्ष्णोदीपनस्तितक कटु ।

पाचनोरोचनञ्छर्दिकफमेदोनिलापह ॥

निहन्तिहृद्गुजाध्मार्शः कण्डूशूलोदरापची । (भा०प्र०)

अर्थ-चिर्गचिरा-सारक (दस्तावर) तीक्ष्ण, दीपन, कटुता, चरपरा, पाचक, रुचिकारक, तथा वमन, कफ, मेदोरोग, वात, हृत्प्रेम, आप्मान, नवामार, कण्डू, शूल, उदरगोग और अपरीसी दूर करे दे ।

अपचय ।

अपामार्गस्तुतिकोष्ण कटुश्चरुफनाशनः ।

अर्थ कण्डूदगममोक्तहृद्गुजान्तिहृत् ॥ (रा०नि०)

अर्थ-चिर्गचिरा-कटुता, गरम, चरपरा, कफनाशक तथा कण्डू, उदर रोग, आम और रुधिरविषादको दूर करे दे, तथा मन्त्ररोग और वमन कारक है ।

अपिचय ।

अपामार्गोऽग्निवर्तीक्ष्ण कलेदन क्षमन मरः ॥ (रा०प)

अर्थ-चिर्गचिरा-अग्निकी समान तीक्ष्ण, क्षेमक क्षमन और मारक है ।

अपचय ।

अपामार्गोऽग्निवर्तीक्ष्णोन्म्याच्छीर्षकमीत्रयेन ।

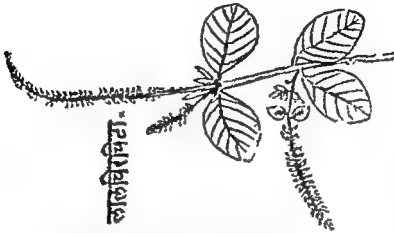
वामकोक्तमग्रादीगतातीमारनाशनः ॥

नस्येयान्तोप्रशमन म्याहृदुकण्डूकफापह । (गो०नि०)

अर्थ-चिर्गचिरा-अग्निकारक, तीक्ष्ण और इसका नाश-क्षिपक कफको दूर करे दे । वमनकारक, रक्तविकारनाशक, और रक्तविकारनाशक है, चिर्गचिरा-नाम और वमनरम्यं मगमापोग्य है, तथा, दाह, शुष्कता और गरमाशय है ।

विवरण । चिरचिटेका क्षुप होता है, पत्ते-गोल होते हैं, पत्तोंके बीचमेंसे एक बाल निकलती है, उस बालमें सूक्ष्म और मृदु काँटेयुक्त बीज होते हैं उन, बीजाँको पीसकर पीनेसे बवासीर दूर होती है । चिरचिटेके क्षारके गुण क्षारवर्गमें देखो ।

रक्तापामार्गनामानि ।



रक्तोन्योवशिरोवृत्तफलोधामार्गवोपि च ।
प्रत्यक्पर्णीकेशपर्णीकथिताकपिपिप्पली ॥

अर्थ-रक्तापामार्ग, वशिर, वृत्तफल, धामार्गव, प्रत्यक्पर्णी, केशपर्णी, कपिपिप्पली, (धुद्रापामार्ग, आघटक, दुग्धनिका, रक्तविट, कल्पपत्रिका, क्षव, अधामार्गव, प्रत्यक्लेणी, खरच्छद, कूट, मर्कटपिप्पली, कुञ्ज और दुरभिग्रह)

| | |
|----------------|------------------------|
| संस्कृतभाषामें | रक्तापामार्ग । |
| हिन्दीभाषामें | लालचिरचिरा । |
| बंगभाषामें | रागाआपाग । |
| मराठीभाषामें | लालअवाडा । |
| गुजरातीभाषामें | क्षिपटो । |
| कच्छीभाषामें | कैपियुत्तरणे । |
| तैलङ्गीभाषामें | उतरायणी कैपियुत्तरणे । |
| है० | एकिरेथिसलेपेरिया । |

अस्य गुणाः ।

रक्तापामार्गकः किञ्चित्कटुकः शीतलः स्मृतः । मलावष्टम्भ-

शृगालघण्टी, वज्रास्थि, शृखला, वज्रकण्टक, वज्र, शृखालिका, पिकेक्षणा, पिच्छिला,) (वीरतरु, त्रिभुर, धुरक, शुङ्गपुष्प और कुलाहक यह नाम सफेद कोकिलाक्षके हैं) (छत्रक और अतिष्ठय यह दो नाम लाल कोकिलाक्षके हैं)



संस्कृतभाषामें

हिन्दीभाषामें

बंगभाषामें

मराठीभाषामें

कोकणीभाषामें

गुजरातीभाषामें

कर्णाटकीभाषामें

तैलिङ्गीभाषामें

औत्कलीभाषामें

इंग्रेजीभाषामें

लैटिन् भाषामें

कोकिलाक्ष ।

तालमखाना—कलया ।

कुलियाखाडा, कुलेकौंटा, कुलक, शृलमईनइत्यादि

विखरा ।

कोलिस्ता ।

एखरो ।

कुलुगोलिके ।

गोवी । गोलिमिडिचेट्टु ।

कुडलिरखा, मायुरेण ।

एगलिट्ट वालरिया । Longleaved Barlarin

एक्केया लोजिफोलिया । Astercanthia Longifolia

अस्य गुणाः ।

कोकिलाक्षोमधु भीतोरुच्योवल्योगुरु स्मृत । वृष्योम्ल-
स्तर्पणस्तिक स्वादु स्निग्धश्चचिक्कणः ॥ आमवातामवा-
तातिसारतृष्णाभ्रगीरुज । वातास्रमेहशोथामग्नरुद्धना-
ग्नोमतः ॥ पित्तञ्च दृष्टिगोचञ्च नाशयेदिति कीर्तितः ।

अथ चतुर्था ।

पर्णञ्चस्वादुतित्तस्याच्छोथशूलविषापहम् । आनाहवात-
मुदरपाण्डुरोगञ्चनाशयेत् ॥ वन्धञ्चमलमूत्राणावातमेवन
नाशयेत् । वृद्धस्यकोकिलाशस्यगुणान्त्वस्यममामताः ॥

अर्थ-तालमखाना-मसुर, शीतल, रुक्मिकाक, वल्कलाक, भारी, वीर्य-
वर्द्धक, रक्षा, तर्पण (रुक्मिकाक), कडवा, स्वादिष्ट, विरग, विरग, तथा
आमवात, आन, वातातिहार, कृपा, पथरितेग, वातगत ममेद, सुदन,
आमरक्त, पित्त और दृष्टिरोगको दूर करे दे । तालमखानेक पथे-स्वादिष्ट,
कडवा, तथा सुजन, शूल, विष, आनाहवात, उदरोग, पाण्डुरोग, मलोग,
मूत्रोग और वातावष्टभको हरनेवाले हैं, पथे तालमखानेके गुण आनीची
समान जानने ।

अथ पंचमगुण ।

कोकिलाशस्यजीजन्तुगीतम्वादुकपायकम् । तिक्तवृष्य-
गुरुर्वल्यग्राहकगर्भस्थापनम् ॥ कफवातकृमिजलान्त-
श्मकरंतथा । रक्तदोषश्चदाहश्चपित्तश्चैवविनाशयेत् ॥

अर्थ-तालमखानेके जीत-शीतल, स्वादिष्ट, कृष्ण, कडवा, वीर्यवर्द्धक,
भारी, वल्ककारी, गभस्थापक, कफवातकारक, मलमूत्रमख तथा रुक्मिकाक,
दाह, और पित्तको हरनेवाले हैं ।

विरग । कोकिलाश अथाह 'वन्ध्यापे' सुष मास' तदक निरुद्ध कृपा
पौमातेयी ताल, और कृष्णोमे उत्पन्न होमाके हैं, पथे-ल्लये दाने हैं 'गुर्मी
कोते होते हैं, गुमेरी समान गांठे होती हैं उन गांठोंमेंसे बीज निकलता
है, उसको तालमखाना कहने हैं ।

कण्टकारीनामानि ।

महाप्रतकुमारीचकुमारीदीर्घपत्रिका ।

१४ कण्टकारीचकुमारीचकुमारी ॥

१५, दीर्घपत्रिका, अरुण, गुग्गुलु, कण्टकारी, मधु

१६-मधुपत्री, कण्टकारी, मधुपत्री, मधुपत्री, अमर

१७, कण्टकारी, मधुपत्री, मधुपत्री, मधुपत्री, मधुपत्री

कपिला, अम्बुधिस्रवा, सुकण्टका, स्थूलदला, गृहकन्या, अदला, मण्डला,
माता, अतिपिच्छला, रसायनी, कण्टकिनी)

| | |
|-----------------|--|
| सस्कृतभाषामें | घृतकुमारी । |
| हिन्दीभाषामें | घिगुवार, ग्वारपाठा, कुवारपाठा । |
| वगलाभाषामें | घृतकुमारी । |
| मराठीभाषामें | कोरफड, कोरफाटा । |
| गुजरातीभाषामें | कुवार । |
| कर्णाटकीभाषामें | लोयिसर । |
| तेलङ्गीभाषामें | पिन्नगोरिण्टकलवन्द, विरजाजितोगे । |
| इंग्रेजीभाषामें | बाबेडोसआलोस । <i>Barbadoesaloe</i> |
| लैटिन्भाषामें | आलाइबावेंडेन्स । <i>Aloebarbadosense</i> |
| फारसीभाषामें | दरखतेसिन्न । |
| अरबीभाषामें | मुसनर । |

अस्या गुणा ।

कुमारीभेदिनीशीतातित्तानेन्यारसायनी । मधुरावृहणीच-
ल्यावृष्यावातविपप्रणुत् ॥ गुल्मप्लीहयकृच्छर्दिकफज्वरह-
रीभवेत् । ग्रन्थ्यग्निदग्धविस्फोटरक्तपित्तत्वगामयान् ॥ भा प्र

अर्थ-धीकुवार-भेदक (दस्तावर) शीतल, कडवा, नेत्रांको हितकारी,
रसायन, मधुर, वृहण, बलकारक, वीर्यवर्द्धक, तथा वात, विप, गुल्म, प्लीहा,
यकृत, वमन, कफज्वर, ग्रन्थि, अग्निदग्ध, विस्फोट, रक्तपित्त और त्वचाके
रोगोंको दूर करे है ।

अन्पद्य ।

गृहकन्याहिमातित्तामदगन्धि कफापहा ।

पित्तकासविपश्वासकुष्ठनीचरसायनी ॥ (रा० नि०)

अर्थ-धीकुवार, शीतल, कडवा, मदगन्धियुक्त, कफनाशक, तथा पित्त,
खासी, विप, श्वास और कुष्ठको नष्टकरे है, और रसायन है ।

अस्य दण्डादिगुणा ।

तन्मध्यदण्डोमधुरःकुमारीमदरोगुणः ।

विगेपात्कृमिपित्तघ्न पुष्पमस्यगुरुस्मृतम् ॥

वातपित्तकृमीश्वेवनाशयेदितिकीर्तितम् ।

अर्थ-इसके नीचेका डंडा-घाकुवारकी समान गुणवाला है शिवदेवके मनुष्य तथा कृमि और पित्तनाशक है । इसके पत्थरवाला तथा बाठ, पित्त और कृमिको दूर करनेवाले है ।

विवरण । घाकुवारका धुप-गारी पृथ्वी, ग्रेटली भूमि तथा नदीके तटके निकट अधिकतासे उत्पन्न होते हैं, पत्थर-गन्धे और मोटे होते हैं । पत्थरकी दोनों ओर फट्टे होते हैं, इनके भीतर घाके समान गूदा निपलता है, पत्थरके ओर जनीदार होते हैं, घाकुवारके रंगमें रंदा निपलता है, रंगमें लाल पृष्ठ आता है । घाकुवारके रंगमें पटुआ घनाया जाता है ।

पत्थरवाला नामानि ।

एर्लीयक कृष्णबोल कुमारीमागतोद्भव ॥

अर्थ-एर्लीयक, कृष्णबोल, कुमारी, सारतोद्भव ।

सम्पत्तभाषामें एर्लीयक ।

दिन्दीभाषामें पलवा ।

मराठीभाषामें बालाबोल, कृष्णबोल ।

गुजरातीभाषामें पलियो, शिवोत्तरी पलियो ।

तैलुगुभाषामें बोल ।

इंग्लीशभाषामें सार्कोटिन आल्गेन । Sarcotina Alga

हिन्दीभाषामें आलोसोकोरिना । Allosocorina

फारसीभाषामें मुयर्ग्यार ।

यु० केपग ।

अरबीभाषामें गार्गमुतुने ।

अथ गुणा ।

कृष्णबोल रुद्ध शीतोभेदकोन्मगोधन ।

शुद्धाध्मानकफान्वातकृमिगुल्माननाशकः ॥ (रूनि०)

अर्थ-पटुवा, सारस, शीतल, शकल, सारको शोथोरोग तथा शूल, अरुणा, वक्, बाण, कृमि और गुल्मको दूर करनेवाला है ।

शुद्धाध्माननामानि ।

काकाननिकाधुपेनभीनृगनेनी ।

रज्जुदानीम रज्जुहापृथ्वनपुष्पाचानाम्भुना ॥

अर्थ—काककेतकी, शुद्रकेतकी, तृणकेतकी, रज्जुदात्री, मध्यदण्डा, पृथक्पुष्पा ।

हिन्दीभाषामें रामबाँस (न)

गुजरातीभाषामें केतकी ।

लैटिन्भाषामें एलोयमेरिकाना । *Aloe Americana*

विवरण—रामबाँसके-वृक्ष प्रायः वाग और खेतोंकी बाड़ोंपर अधिकतासे होतेहैं, यह घीकुवारकी समान होते हैं, परन्तु घीकुआरसे कुछ कालापन लिये और बड़े तथा पतले होते हैं, इसपर लाल और सफेद रंगके गुच्छेदार फूल आते हैं ।

अस्या गुणा ।

श्वेतातुकेतकीकट्वीस्वाद्धीतिक्तालघुःस्मृता । विपकफना-
शयतिपुष्पमस्यालघुस्मृतम् ॥ कटुतिक्तकान्तिकरमुष्ण
वातकफापहम् । केशदुर्गन्धितापघ्नकेसरः सिध्मकण्डुहा ॥

किञ्चिदुष्णफलस्वादुवातमेहकफापहम् ॥ (नि० २०)

अर्थ—रामबाँस—चरपरा, स्वादु, कडवा, हल्का, तथा विप और कफ-
नाशक, है । इसका फूल—हल्का, चरपरा, कडवा, कान्तिजनक, गरम,
वातकफनाशक, केशोंकी दुर्गन्धताको दूर करनेवाला और तापनाशक है ।
इसके फूलका जीरा—सिध्म और कण्डूनाशक है । इसका फल किञ्चित्,
उष्ण, स्वादिष्ट, तथा वात, प्रमेह और कफनाशक है ।

पाण्डुफलीनामानि ।

पाटलीस्यात्पाण्डुफली वृसरावृत्तरीजका ।

पाण्डुफलाभूरिफला तथासप्ताह्वयाभिधा ॥

अर्थ—पाटली, पाण्डुवली, धूमरा, वृत्तरीजका, पाण्डुफला, भूरिफला ।

हिन्दीभाषामें पाटली ।

मराठीभाषामें पाटुरफली ।

गुजरातीभाषामें शीणवी ।

कर्णाटकीभाषामें पाटुरफल मणमड ।

ले० पट्टाजिया ल्युकोपाईरस । *Lujia leucopyrus*

अस्या गुणा ।

पाण्डुफलीतुमधुगवल्यावृष्याचर्भीतला ।

मूत्राघातपित्तरोगमूत्ररुच्छ्रावस्तृजयेत् ॥ (नि० २०)

अर्थ-पाण्डुरा-मधुर, मलकारक, वीर्यवर्द्धक, शीतल, तथा वृषा
वात, पित्तमेघ, मूत्रकृन्ध, और रुधिरके विनाशको दूरकरे ।

मन्वसा ।

शिरागपाण्डुरफलीगोल्याकृच्छ्रार्तिदोषहा ।

त्रल्यापित्तहगवृष्यामृत्राचातनिवारणी ॥ (रा० नि०)

अर्थ-पाण्डुपत्नी-शीतल, गौन्य, मूत्रकृच्छ्ररोगनाशक, पित्तवर्द्धक, विष-
नाशक, शीर्यवर्द्धक, और मूत्राघातनिवारक है ।

पनसो नामानि ।

पनस्यांगेपणीचोक्तातथाचरुपिकच्छुकः ॥

अर्थ-पनसी, गेपणी, कपिकच्छुक ।

भरपा गुणा ।

पनसीकाभव मूल व्रणगेपणभेदनम् ॥

अर्थ-पनसीकी गट-व्रणको भग्नेवाली और दग्ताकरे ।

गङ्गाती नामानि ।

गगाटया गगटी चैत्र पित्तव्रणप्रमादनी ॥

अर्थ-गगाटी, गगटी, पित्तव्रणप्रमादनी ।

भरपा गुणा ।

गंगेटीरुहविण्मृत्राकपात्राभीनलागुरु ॥ (गो० नि०)

अर्थ-गंगेटी-मलमूत्रवर्द्धक, कपेली, शीतल और भारी है । तथा गग
और पित्तनाशक है ।

श्वेतपुननवा नामानि ।



श्वेतपुननवा

पुननवाभेनमूलाकटिल्लभनिगदिका ।

अर्थ-पुनर्नवा, श्वेतमूला, कठिल, चिराटिका, (वृश्चारा, श्वेतपुनर्नवा, सितवर्षाभू, वर्षाङ्गी, वर्षाही, विगाख, शशिवाटिका, पृथ्वी, धनपत्र, कठिलक, शोथघ्नी, दीर्घपत्रिका ।

रक्तपुनर्नवानामानि ।



रक्तपुनर्नवाप्युक्ताशोथघ्नीरक्तपत्रिका ।

रक्तकाण्डावर्षकेतुर्वर्षाभू प्रावृषायणी ॥

अर्थ-रक्तपुनर्नवा, शोथघ्नी, रक्तपत्रिका, रक्तकाण्डा, वर्षकेतु, वर्षाभू, प्रावृषायणी (कठिलक, रक्तपुष्पा, शिलाटिका, वर्षकेतु, बूरा, मण्डल-पत्रिका, लोहिता, वैशाखी, रक्तवर्षाभू शोफघ्नी, रक्तपुष्पिका, विकस्वरा, विपघ्नी, प्रावृषेय्या, सारिणी, वर्षाभव, शोणपत्र, भौम, पुनर्भव, नव, नव्य)

नीलपुनर्नवानामानि ।



नीलापुनर्नवानीलाश्यामानीलपुनर्नवा ।

कृष्णाख्यानीलवर्षाभूनीलिनीस्वाभिधान्विता ॥

अर्थ-नीलापुनर्नवा, नीला, श्यामा, नीलपुनर्नवा, कृष्णाख्या, नीलव-र्षाभू, नीलिनी ।

अथ च ।

पुनर्नवातुवीज्योष्णाभेदिनीचरसायनी ।

कफानिलामदुर्नामब्रध्नशोथोदरापहा ॥ (राजनिघण्टु)

अर्थ—श्वेतपुनर्नवा—उष्णवीर्य, दस्तावर, रसायन तथा कफ, वात, ववासीर, मूत्र, मूजन और उदररोगको दूरकरे है ।

अन्यच्च ।

वर्षाभूर्मधुरातिक्ताकपायाकटकासरा ।

क्षारोष्णादीपनीरूक्षाशोफानिलकफापहा ॥

हृद्यारुच्याजयेदशोत्रणपाण्डुगरोदग्म् । (ग० नि०)

अर्थ—श्वेतपुनर्नवा—मधुर, कडवा, कपेला, चरपरा, सारक, क्षारयुक्त, गरम, दीपन, रूखा, शोफघ्न, वातविनाशक, कफनाशक, हृदयको हितकारी, रुचिकारी तथा ववासीर, घाव, पाण्डु, विष और उदररोगको दूरकरे है ।

अपि च ।

श्वेतापुनर्नवातिक्ताचोष्णाकट्टीचतृवरा।रुच्याग्निदीपनी-

रूक्षामधुरापटसारका ॥ हृद्याशोफकफवातकासमशोत्रण-

जयेत् । पाण्डून्विषोदरशूलहृद्रोगोरक्षतापहा ॥ घृतेनमू-

लकचास्याह्यजितहन्तिपुष्पकम् । मधुनासहमूलतुह्यजित

स्त्रावनाशकम् ॥ अजितमार्कवरसेनैत्रकण्डूनिवारणम् ।

केवलेनजलेनैवह्यजिततिमिरापहम् । जलेनगोशकृताचपि-

प्पल्यार्चाजितयदा ॥ रात्र्यांध्यनश्यतेतेनचोष्णपर्णग्स

स्मृतः ॥

(नि० २०)

अर्थ—श्वेतपुनर्नवा—कडवा, गरम, चरपरा, कपेला, रुचिकारक, अग्नि प्रदीपक, रूखा, मधुर, खारी, दस्तावर, हृदयको हितकारी, तथा मूजन, कफ, वात, खोंसी, ववासीर, घाव, पाण्डुरोग, विष, उदर, शूल, हृदयरोग और उर क्षत रोगको दूर करे है । इसकी जड़को पीसकर घीमें मिलाकर अजन करे, वह अजन आँखाके फूलेको दूर करता है । इसकी जड़में मधु-मिलाकर अजन करे वह अजन रक्तस्त्रावनाशक है । इसकी जड़को भागोंके रसके साथ नेत्रोंमें लगानेमें नेत्राकी खुजली दूर होती है । इसकी जड़को

केवल अग्नि गाय आगोमिं उमानेगे निमित्तमेव दूर होता है । गायके मोप
के गममें इगुर्वा जड़ और पीपल उषात्पत्र अवन कस्तूर पद अंजन रसों
धेको दूर करनेका है, इगुके पत्तोंका रस गरम है ।

रक्तपुननवागुणा ।

पुनर्नवारुणानिक्ताकदुपाकादिमालुः ।

वातलायाहिणीश्लेष्मपित्तकृत्विनाग्निनी (भा० प्र) ०

अर्थ-रक्तपुननवा (गन्धपूनां) कट्वा, पचनेमें चरपत्र, नीलार, इन्डा,
वातरात्र, मष्टगोषक, तथा चक्र, पिच और रक्तभिरागोंको दूर करे ।

अथवा ।

रक्तपुनर्नवातिक्ताग्निनीशोफनाग्निनी ।

रक्तप्रदरदोषघ्नीपाण्डुपित्तप्रमर्दिनी ॥ (ग० नि०)

अर्थ-रक्तपुनर्नवा (गन्धपूनां चोड) कट्वा, गरम, शोफनाशक तथा
रक्त, मन्त्ररोग, पाण्डुरोग और पिचको दूर करनेका है ।

नीलपुनर्नवागुणा ।

नीलापुनर्नवानिक्ताकदृष्ट्याचरम्यायनी ।

हृद्रोगपाण्डुप्रयथुश्चासवातरफापदा ॥ (ग० नि०)

अर्थ-नीलपुनर्नवा-कट्वा, चरपत्र, गरम, रसायन तथा हृद्रोग, पाण्डु
रोग, सुगन्ध, भास, पात और फाटाका है ।

अथ वायव्यागुणा ।

पौनर्नवापिर्णभाकानानिरत्नाकफापदा ।

वाताग्निमांशगुल्मघ्नीप्लीहाशुल्वविनागिना (ति० र०)

अर्थ-पुनर्नवा पक्षोपा नाक-अल्पान रस, तथा वात मंशानि, गुल्म,
प्लीहा और शुल्को दूर करे ।

विरण । यदि तीन बार जातिर्वा होवे, दूर नाक, गरम, लवण
गले होवे । इनमें मरे के पत्रवा विषमरस है और गरम रस
मौं अर्वायु गुणुमेवा मानना । १-विषमरसका पुन-दृष्ट्याच रसायन
होता है । पने-मोठ और लवण विषमरस होता है, गुल्म मरे होवे ।
२-मौं-रसकी दृष्ट्याच अविषमरस होता है, पने रसायन होता है ।
३-मौं-रसकी दृष्ट्याच अविषमरस होता है, पने रसायन होता है ।

प्रसारणीनामानि ।



प्रसारणीराजवलागन्धालीचकटम्भरा ।
गन्धाढ्यागन्धभद्राचसारणीसरणीतथा ॥

अर्थ-प्रसारणी, राजवला, गन्धाली, कटम्भरा, गन्धाढ्या, गन्धभद्रा, सारणी, सरणी (भद्रपर्णी, शरणा, शरणी, गन्धोली, सारणी, भद्रवला, भद्रपर्णी, प्रतानिनी सरणी, सुप्रसरा, सारिणी, प्रसरा, सरा, चारुपर्णी, प्रतानिका, प्रवला, राजपर्णी, चन्द्रपर्णी, चन्द्रवल्ली, प्रभद्रा, प्रसारिणी, वल्या)

संस्कृतभाषामें

हिंदीभाषामें

बङ्गभाषामें

मराठीभाषामें

गुजरातीभाषामें

कर्णाटकीभाषामें

तेलिङ्गीभाषामें

लॅटिनभाषामें

प्रसारणी ।

गन्धप्रसारणी, पसरन, प्रसारनी ।

गन्धभादला, गौधाली, गन्धभादुलिया ।

प्रसारणी, चादवेल ।

प्रसारणवेल्य (नारी)

हेसरणे ।

गोन्तेमगोरुचेट्टु, सविरेलचेट्टु ।

पिडेरिया फिटीडा *Pæderia foetida*

मेकारंगा टोमेंटोसा *Macaranga tomentosa*

अस्या गुणा ।

प्रसारिणीगुरुवृष्यावलसन्धानकृत्सर ।

वीर्य्योष्णावातहृत्तिक्तावातरक्तकफापहा ॥ (भा० प्र०)

अर्थ-गन्धप्रसारणी-भारी, वीर्य्यवर्द्धक, चलकारी, सन्धानकारक, उष्ण-वीर्य्य, वातनाशक, कडवी तथा वातरक्त और कफको हरनेवाली है ।

अथ ।

प्रसाङ्गीगुरुष्णाचतित्तावनविनाशिनी ।

अर्थः अथयुद्धन्त्रीचमलनिष्टम्भहार्णी ॥ (ग० ति०)

अर्थ-पक्ष्म-भारी, गरम, कटरी तथा वान गुता, पराणी, और मरती विट्मनारी इमेवार्णी ।

अथ ।

वातपित्तहर्मोष्णावल्यावृष्याप्रमाङ्गी ॥ (गजसुभ)

अर्थः ।

अर्थ-गन्धप्रसाङ्गी वातपित्ताहार, गरम, वृष्याप्र और दीर्घ वटंक ।

साङ्गीवातगुक्तीमोष्णावृष्याप्रलप्रदा ।

कट्टीचलपुचक्षुष्याम्बुष्याङ्गनिशान्चदत्त ॥ (गो. ति.)

अर्थ-गन्धप्रसाङ्गी-वातगुक्तीनाहार, गरम, वृष्याप्र, कट्टी, चालपुचक्षुष्याम्बुष्याङ्गनिशान्चदत्त ॥ (गो. ति.)
अर्थ-गन्धप्रसाङ्गी-वातगुक्तीनाहार, गरम, वृष्याप्र, कट्टी, चालपुचक्षुष्याम्बुष्याङ्गनिशान्चदत्त ॥ (गो. ति.)

अथ ।

प्रसाङ्गीगुरुष्णाचतित्तावनविनाशिनी । भग्नास्थिमन्त्रान-
करीकान्तिहृद्वातुवर्द्धका ॥ वातार्थभोफकफहामरन्तम्भ-
कर्मिता । वातगुक्तीदोषानागयेदितिकीर्तिता ॥ (नि०)अर्थ-गन्धप्रसाङ्गी-भारी, गरम, कट्टी, पक्ष्म-भारी, और गुता हाटकी जोहोसारी, कान्तिहृद्वातुवर्द्धका, वातार्थभोफकफहामरन्तम्भ-
कर्मिता । वातगुक्तीदोषानागयेदितिकीर्तिता ॥ (नि०)अर्थ-गन्धप्रसाङ्गी-भारी, गरम, कट्टी, पक्ष्म-भारी, और गुता हाटकी जोहोसारी, कान्तिहृद्वातुवर्द्धका, वातार्थभोफकफहामरन्तम्भ-
कर्मिता । वातगुक्तीदोषानागयेदितिकीर्तिता ॥ (नि०)

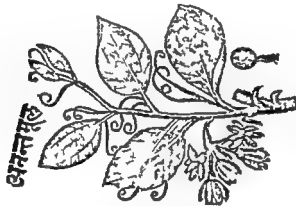
सारिवानामानि ।

सारिवाशारिवानन्तागोपीचोत्पलशारिवा ।

भद्रवल्लीनागजिह्वाकरालाभद्रवल्लिका ॥

अर्थ—सारिवा, शारिवा, अनन्ता, गोपी, उत्पलशारिवा भद्रवल्ली, नाग-
जिह्वा, कराला, भद्रवल्लिका, (गोपवल्ली, सुगन्धा, भद्रा, श्यामा, शारदा,
गोपकन्या, गोपा, प्रतानिका, लता, आस्फोता, काष्ठशारिवा, गोपवधू,
धवलशारिवा, कृशोदरी)

कृष्णशारिवानामानि ।



श्यामलताचपालिन्दीगोपिनीकृष्णशारिवा ॥

अर्थ—श्यामलता, पालिन्दी, गोपिनी, कृष्णशारिवा, (चित्रधारिणी,
दृढबन्धिनी, गोपी, गोपवल्ली, गोपा, सारिवा, उत्पलसारिवा, अनन्ता,
शारिवा, श्यामा, कालपेपी, महाश्यामा, सुभद्रा, दीर्घमूला, मसरविदला,
कलघण्टिका, गोपवधू, कृष्णमूली, कृष्णा, चन्दनसारिवा, भद्रा, चन्दनगोपा,
चन्दना, कृष्णवल्ली)

सस्कृतभाषामे

हिन्दीभाषामे

वगभाषामे

मराठीभाषामे

गुजरातीभाषामे

कर्णाटकीभाषामे

तेलुगुभाषामे

सारिवा, कृष्णसारिवा ।

गोरीमर, कालीसर, करियासाउ, गोंगियामाउ,
सालसा, सारिवन इत्यादि ।

अनन्तमूल, श्यामलता, कन्धण्टि इत्यादि ।

श्वेतउपलमरी, कृष्णउपलसरी, सुगन्धउपलसरी ।

कपरी, कालीबेल्य ।

सारिवा ।

नीलतिग ।

आत्माविभाषाम्

गुणान्वयम् ।

इत्येवं भाषाम्

इतिपत्रं भाषामाश्रितम् ॥ १॥ १॥ १॥ १॥

एवं भाषाम्

देविदेवमेव दादेवम् ॥ १॥ १॥ १॥ १॥

आत्माविभाषाम्

अथातुमाग्विभीतामनुगच्छकलागुरु । म्निग्यातित्तमु-
गन्धिश्चकुपुकण्डजगपहा ॥ देहदोर्गन्ध्याग्निमात्रं भवाम-
कासारुर्चाहम् । आमत्रिदोषनिषद्द्रक्तगम्प्रदगपहा ॥
कफातिनाम्बुद्रदाहगत्तपित्तहगपहा । वातनाभकर्णप्रोक्ता-
कृपिभिस्तत्त्वदर्शिभिः ॥ (नि० २०)

अर्थ-गोत्रिभाषा-आत्मा, मध्य गुणतन्त्र भाषा, विभाषा, कर्मा-
गुणान्वय तथा कौट, कट्ट, उग्र, देहर्षी गन्धवत्ता, भाषाणि भाषा, ग्राही,
अकर्मा, लाभ, विदोष, विष, म्निग्यातित्त, प्रदोषी, कर्मा भविष्यत्,
वृथा, दाह, रतापच और वातरो हर्षेणार्थी है ।

अपक्ष ।

अनन्ताग्राहिणीगत्तपित्तप्रभमर्नादिमा ॥

अर्थ-गोत्रिभाषा-मन्त्रोपपन्न गत्तपित्तप्रभमर्नादिमा और ग्राहिणी है ।

आत्माविभाषाम् ।

आग्विभाषातपित्तगृह्यतद्वृद्धिज्वरनाशिनी ॥ (नि० २१)

अर्थ-गोत्रिभाषा (मन्त्रोपपत्ता)-वात विष, म्निग्यातित्त, कृप-
वमन और उग्रको हर्षेणार्थी है ।

अपक्ष ।

कृष्णातुमाग्विभीतामनुगच्छकलागुरु ।

कफनीननसंप्रोक्तागुणाभ्यान्वेष्यपुर्ववत् ॥ (नि० २२)

अर्थ-गोत्रिभाषा-आत्मा, वीर्यवद्वत् मध्य गोत्र कर्माग्विभाषा है और कृष्णा-
श्रेष्ठग्राहिणी ममत्त भावने ।

इतिपत्रं भाषामाश्रितम् ।

माग्विभाषातपित्तगृह्यतद्वृद्धिज्वरनाशिनी ।

अग्निमात्रं भवामकासारुर्चाहम् ॥

दोषत्रयास्रप्रदरज्वरातीसारनाशनम् । (भा० प्र०)

अर्थ—दोनोंप्रकारकी सारिवा—स्वादिष्ठ, स्निग्ध, शुरुजनक, भारी तथा मन्दग्नि, अरुचि, श्वास, खासी, आम, विष, त्रिदोष, रक्तप्रदर और ज्वर-तिसारको हरनेवाली है ।

विवरण । कालीसारिवा और सफेदसारिवाकी काली बेल होती है, पत्ते—अनारकी समान होते हैं, उन पत्तोंमें सफेद छोटे होते हैं, बेलकी जड़में कपूर-कचरीकी, समान सुगन्धि आती है, और इसमें दो २ फली आती है, कितनेक मनुष्य इसकी जड़को सालसापरेला कहते हैं ।

भृङ्गराजनामानि ।

मार्कवोभृङ्गराजश्चभृङ्गाह्व केशरञ्जन ।

पितृप्रियोरगकश्चकेश्यकुन्तलवर्द्धन ॥

अर्थ—मार्कव, भृङ्गराज, भृङ्गाह्व, केशरञ्जन, पितृप्रिय, रगक, केश्य, कुन्तलवर्द्धन (भृङ्ग, पतङ्ग, मार्कर, मार्क, नागमार, पररु, भृङ्गसोदर, अङ्गा-रक, एकरज, करञ्जक, भृङ्गरज, भृङ्गार, जजागर, केशराज, मर्कर, भृङ्गारक, भेकराज पकजात)

पीतभृङ्गराजनामानि ।

पीतोन्मत्तस्वर्णभृङ्गारोहरिवासोहरिप्रिय ।

देवप्रियोवन्दनीय पावनश्चपडाह्वयः ॥

अर्थ—पीतभृङ्गराज—स्वर्णभृङ्गार, हरिवात, हरिप्रिय, देवप्रिय, वन्दनीय, पावन ।

नीलभृङ्गराजनामानि ।

नीलस्तुभृङ्गराजोन्मोहानीलः सुनीलक ।

महाभृङ्गोनीलपुष्प श्यामलश्चपडाह्वयः ॥

अर्थ—नीलभृङ्गराज, महानील, सुनीलक, महाभृङ्ग, नीलपुष्प, श्यामल यह छे नाम हैं ।

सरकृतभापामं

भृगराज, केशराज ।

हिंदीभापामं

भागरा, भगरा, भेगरिया, भगरैया, कुहुरभागरा ।

वगलाभापामं

भीमराज, केशुरे ।

मराठीभापामं

माका ।

| | |
|---------------|---|
| गुणगुणीभाषामे | गोमरी । |
| यर्गोटीभाषामे | गर्गमुकु । |
| तीर्थीभाषामे | गुणगुणीभाषामे गुणगुणीभाषामे गुणगुणीभाषामे । |
| और्यीभाषामे | गुणगुणीभाषामे । |
| इमेयीभाषामे | गुणगुणीभाषामे । |
| निधिभाषामे | गुणगुणीभाषामे । |
| गार्गीभाषामे | गुणगुणीभाषामे । |
| अर्यीभाषामे | गुणगुणीभाषामे । |

भद्राभाषामे ।

भृङ्गनाजन्तुचक्षुष्मस्तित्तोष्ण तेश्चान्न ।

कफशोषविपन्नभनवनीलोन्मायन ॥ (गणनिपद्य)

अर्थ-भांगरा-नेत्रोको दित्तार्गी कटारा, गम्भ केरुण्युद्ध (नेत्रोको
 वाता फरनेसाया) तथा वर गुजन, और विपदिनाजक है इनमें मन्त्र
 भांगरा ग्मायन है ।

भाषामे ।

भृङ्गनाज कटुस्मितोत्तित्तोष्ण कफजानहृत् ।

न्मायनोन्मगन्तुन्तिदुष्टनेत्रगिरोत्तित्तुन ॥ (प० नि०)

अर्थ-भांगरा-वर्गस कटारा, गम्भ, गम्भ, वातागम्भस ग्मायन
 तथा वर, गंठ, नेत्रोको, और विपदि, वीर्योको वर वन्नेसाया है ।

भाषामे ।

मार्जितस्मितकटुशोष्णशुष्कतेश्चान्न । त्वन्योक्तदक्ष

तीक्ष्णशब्दन्त्योमे योग्मायन ॥ शोफसामनां वराहं गिरो

नेत्ररुजनया । कफजानहृत्तानहृत्तमीति ॥

आमं च पादुगो गच्छो गन्तुं नया । विपदनाशयत्ने

कटुनाशयत्ने मन ॥ (नि० ३०)

अर्थ-भांगरा-वर्गस गम्भ, नयाको दित्तार्गी वर वर वर वर
 दित्तार्गी गम्भ, मन्त्र वर वर वर दित्तार्गी, मन्त्रकपक गम्भस वर
 गुजन, वातागम्भ, वर वर दित्तार्गी, नेत्रोको वर वर, वर वर

कोठ, कृमि, आम, पाण्डुरोग, हृदयरोग, त्वचाके रोग, विष, और कण्डूको दूर करनेवाला है ।

विवरण—भागरेका क्षुप—प्रायः गीली पृथ्वीम होता है, पत्ते खरखरे होते हैं, पत्तोंका रस काला होताहै, सपेद, पीले और काले इन फूलोंके भेदसे तीन प्रकारका है ।

शणपुष्पोनामानि ।

शणपुष्पीस्मृताघण्टाशणपुष्पसमाकृतिः ॥

अर्थ—शणपुष्पी, घण्टा, शणपुष्पसमाकृति (बृहत्पुष्पी, शणिका, शण-घण्टिका, शणपुष्पिका, पीतपुष्पी, स्थूलफला, लोमशा, माल्यपुष्पिका और घण्टारवा)

द्वितीयान्यासूक्ष्मपुष्पास्यात्क्षुद्रशणपुष्पिका ।

विष्टिकासूक्ष्मपर्णीचवाणाह्वासूक्ष्मघटिका ॥

अर्थ—दूसरी—सूक्ष्मपुष्पा, क्षुद्रशणपुष्पिका, विष्टिका, सूक्ष्मपर्णी, वाणाह्वा और सूक्ष्मघण्टिका ।

तृतीयान्यावृत्तपर्णीश्वेतपुष्पामहासिता ।

सामहाश्वेतघण्टीचसामहाशणपुष्पिका ॥

अर्थ—तीसरी—वृत्तपर्णी, श्वेतपुष्पा, महासिता, महाश्वेतघण्टी, महाशण-पुष्पिका ।

शणनामानि ।



शणस्तुमाल्यपुष्प स्याद्दामक कटुतिक्तक ।

निशादनोदीर्घशाखस्त्वम्सारोदीर्घपल्लव ॥

अर्थ-शण, माल्यपुष्प, वामक, कटुतिक्त, निशादन, दीर्घशार, त्वक्सार, दीर्घपल्लव ।

संस्कृतभाषामें

हिंदीभाषामें

वगभाषामें

मराठीभाषामें

कोकणीभाषामें

गुजरातीभाषामें

द्राविडभाषामें

कर्णाटकीभाषामें

तैलिङ्गीभाषामें

तामिलीभाषामें

गुजरातीभाषामें

इथ्रेजीभाषामें

लैटिन्भाषामें

फारसीभाषामें

शणपुष्पी, द्वि० शणपुष्पी, तृ० शणपुष्पी । शण ।

शुनशुनिया, पटशण, वनशण, शणहुली, शणइ, घागही इत्यादि । सन ।

वनशणइ, शनशने, शोणोरगाछ ।

ताग ।

खुळखुळा ।

शण ।

जनवकनर ।

गिळुगिळि, चिक्कगिळ, मतेकाडविट्टि ।

शणमनुवेल, जेनपनर, रेळचेडु ।

जेनष्पनर ।

पन ।

फ्लाक्सहेम्प । I lax Hemp

क्रोटेलेरिया जुनाशिया । Crotalaria-juncin

लादना ।

शणपुष्पीगुणा ।

शणपुष्पीकटुस्तिक्तावामिनीकफपित्तजित । (भा०प्र०)

अर्थ-वनशण (शुनशुनिया)-चरपरी, कडवी, वमनकारक और कफपित्तनाशक है ।

अन्यथा ।

शणपुष्पीरसेतिक्ताकपायाकफवातजित ।

अजीर्णज्वरदोषघ्नीवामनीरक्तदोषनुत ॥ (रा०नि०)

अर्थ-वनशण-तिक्तरसान्वित, कपेली कफवातनाशक, वमनजनक तथा अजीर्ण, ज्वर और रुधिगविकारको हर्नवाली है ।

अपिच ।

शणघण्टागसेतिक्तातुवरावामनीस्मृता ।

अजीर्णकफवातघ्नीरक्तदोषज्वरजयेत ।

कण्ठास्यरोगहृद्भोगपित्तरुक्सन्निपातहृत् ॥

अर्थ-चनशन-तिक्तसन्धित, कपेली, वमनजनक तथा अजीर्ण, कफ, वात, रुधिरविकार, ज्वर, कण्ठरोग, मुखरोग, हृदयरोग, पित्तरोग और सन्निपातको दूर करे है ।

क्षुद्रशणपुष्पीगुणा ।

शणपुष्पीक्षुद्रतित्तावम्यारसनियामिका ॥ (रा० नि०)

अर्थ-दूसरी शणपुष्पी-कडवी, वमनकारक, और पारेको बाधनेवाली है ।

महाश्वेतागुणा ।

महाश्वेतातुतुवराचोष्णासूतनियामिका ।

मोहनेस्तम्भनेचैवप्रशस्ताऋषिभिःस्मृता ॥ (नि० र०)

अर्थ-तीसरी शणपुष्पी-कपेली, गरम, पारेको बाधनेवाली तथा मोहन और स्तम्भनके विषय लीजाती है ।

शणगुणा ।

शणस्त्वम्लःकपायश्चमलपातकरोमतः । गर्भपातरक्तपात
वान्तिकृच्चामपातकृत् ॥ उष्णोवातकफघ्नश्चअगमर्दरुजा-
पह । अस्यप्रसूनंप्रदररक्तदोषहरस्मृतम् ॥ (नि० र०)

अर्थ-सन-अम्ल (खट्टी), कपेली, मलको पतित करनेवाली, गर्भ और रुधिरको गिरानेवाली, वमनजनक, आमको गिरानेवाली, गग्म तथा वात, कफ और अगके टूटनेको दूर करे है । इसका फल-प्रदर और रुधिर-विकारको हरे है ।

शणवीजगुणा ।

शीतलशणवीजस्याद्राहकश्चगुरुस्मृतम् ।

इतरेतुगुणा सवेशणवत्परिकीर्तिता ॥ (नि० र०)

अर्थ-सनके बीज-शीतल, ग्राही और भारी है, गुण सनकी समान जानने। विवरण । शनकी खेती हिन्दोस्यानमं सर्वत्र अधिकतामे होती है, झादरा अडकी समान पत्ता-फलाकार । फूल-पीले होते हैं । फल लम्बा और खुल्ल होता है । व्यवहार-बीज और पत्ते ।

त्रायमाणानामानि ।

त्रायमाणासुभद्राणीत्रायन्तीवलभट्टिका ॥

अर्थ-त्रायमाणा, सुभद्राणी, त्रायन्ती, वलभट्टिका (बाँपक, चल्देवा,

अर्थ-शण, माल्यपुष्प, वामक, कटुतिक्त, निशादन, दीर्घशाख, त्वक्सार, दीर्घपल्व ।

सस्कृतभाषामें

हिंदीभाषामें

बंगभाषामें

मराठीभाषामें

कोकणीभाषामें

गुजरातीभाषामें

द्राविडभाषामें

कर्णाटकीभाषामें

तैलिङ्गीभाषामें

तामिलीभाषामें

ब्रह्मीभाषामें

इथ्रेजीभाषामें

लैटिन्भाषामें

फारसीभाषामें

शणपुष्पी, द्वि० शणपुष्पी, तृ० शणपुष्पी । शण ।

झुनझुनिया, पटशण, वनशण, शणहुली, शणई, घागही इत्यादि । मन ।

वनशणइ, झनझने, ओणोरगाछ ।

ताग ।

खुळखुळा ।

शण ।

जनवकनर ।

गिळुगिळि, चिक्कागिळ, मतेकाडविट्टि ।

शणमतुवेळ, जेनपनर, रेल्लचेडु ।

जेनप्पनर ।

पन ।

फलाक्सहप् । Flax Hemp

क्रोटेलेरिया जुनशिया । Crotalaria-juncin

लादना ।

शणपुष्पीगुणा ।

शणपुष्पीकटुस्तिक्तावामिनीकफपित्तजित । (भा०प्र०)

अर्थ-वनशण (झुनझुनिया)-चरपरी, कडवी, वमनकारक और कफपित्तनाशक है ।

अन्यथा ।

शणपुष्पीरसेतिक्ताकपायाकफवातजित ।

अजीर्णज्वरदोषघ्नीवामनीरक्तदोषनुत् ॥ (रा०नि०)

अर्थ-वनशण-तिक्तरसान्वित, कपेली कफवातनाशक, वमनजनक तथा अजीर्ण, ज्वर और रुधिरविकारको हरनेवाली है ।

अपिच ।

शणवण्टारसेतिक्तातुवरावामनीस्मृता ।

अजीर्णकफवातघ्नीरक्तदोषज्वरजयेत ।

कण्ठास्यरोगहृद्दोगपित्तरुक्मन्निपातहृत् ॥

अर्थ—चनशन—तिक्तसन्निवृत्त, कपेली, वमनजनक तथा अजीर्ण, कफ, वात, रुधिरविकार, ज्वर, कण्ठरोग, मुखरोग, हृदयरोग, पित्तरोग और सन्निपातको दूर करे हे ।

क्षुद्रशणपुष्पीगुणा ।

शणपुष्पीक्षुद्रतिक्तावम्यारसनियामिका ॥ (रा० नि०)

अर्थ—दूसरी शणपुष्पी—कडवी, वमनकारक, और पारेको बाधनेवाली है ।

महाश्वेतागुणा ।

महाश्वेतातुतुवराचोष्णासूतनियामिका ।

मोहनेस्तम्भनेचैवप्रशस्ताऋषिभि स्मृता ॥ (नि० र०)

अर्थ—तीसरी शणपुष्पी—कपेली, गरम, पारेको बाधनेवाली तथा मोहन और स्तम्भनके विषय लीजाती है ।

शणगुणा ।

शणस्त्वम्ल कपायश्चमलपातकरोमतः । गर्भपातरक्तपात
वान्तिकृच्चामपातकृत् ॥ उष्णोवातकफघ्नश्चअगमर्दरुजा-
पह । अस्यप्रसूनप्रदररक्तदोषहरस्मृतम् ॥ (नि० र०)

अर्थ—सन—अम्ल (खट्टी), कपेली, मलको पतित करनेवाली, गर्भ और रुधिरको गिरानेवाली, वमनजनक, आमको गिरानेवाली, गरम तथा वात, कफ और अगके दृढनेको दूर करे है । इसका फूल—प्रदर और रुधिर-विकारको हरे है ।

शणबीजगुणा ।

शीतलशणबीजस्याद्राहकञ्चगुरुस्मृतम् ।

इतरेतुगुणा सर्वेशणवत्परिकीर्तिताः ॥ (नि० र०)

अर्थ—सनके बीज—शीतल, ग्राही और भारी है, गुण सनकी समान जानने। विषय । सनकी खेती हिन्दोस्थानमें सर्वत्र अधिकतामें होती है, सादरा अडकी समान पत्ता—फलाकार । फूल—पीले होते हैं । फल लम्बा और खुफल होता है । व्यवहार—बीज और पत्ते ।

त्रायमाणानामानि ।

त्रायमाणासुभद्राणीत्रायन्तीवलभद्रिका ॥

अर्थ—त्रायमाणा, सुभद्राणी, त्रायन्ती, वलभद्रिका (वार्षिक, वलदेवा,

भद्रनाभिका, कुलना, त्रायमाणिका, बलभद्रा, सुकामा, वार्षिका, गिरिजा, अनुजा, मेगल्याहार्, देवउला, पालिनी, भयनाशिनी, अवनी, रक्षणी, त्राणा)

संस्कृतभाषामें त्रायमाणा ।

हिन्दीभाषामें त्रायमान ।

वगभाषामें चडाडुसुर, बला, बहुला, वनभाडुलिया इत्यादि ।

मराठीभाषामें त्रायमाण ।

गुर्जरातीभाषामें त्राहिमान् ।

कर्णाटकीभाषामें त्रायमाणा हिमवति प्रसिद्धा ।

लैटिन भाषामें थेलिक्ट्रम फोलियो लोझमा Thalictrum Foliosum

फारसीभाषामें अस्मक ।

अस्या गुणा ।

त्रायमाणातुतुवराशीतलामधुरासरा । तित्तापित्तरुजछर्दि-
ज्वरंगुल्मकफविषम ॥ शूलभ्रमरक्तरुजंक्षयग्लानितृपातथा ।
हृद्गोसरक्तपित्तश्चदुर्नामानविनाशयेत् ॥ त्रिदोषनाशिनी
प्रोक्तापूर्ववैद्यैर्महर्षिभि । (नि० २०)

अर्थ-त्रायमान-कपली, शीतल, मधुर, दस्तावर, कटवी तथा पित्तराग, वमन, ज्वर, गुल्म, कफ, विष, शूल, भ्रम, रक्तगो, क्षय, ग्लानि, तृपा, हृदयरोग, रक्तपित्त, बवासीर और त्रिदोषका नाश करनेवाली है ।

विवरण । त्रायमानके पत्ते गोजियाकी समान पृथ्वीपर फैलेहुये होते हैं, और बीचमें दोटण्डीसी निकलतीहैं, उसके बीजाको त्रायमान कहते हैं । किन्तु कितनेक गनुष्य भ्रममें त्रायमानको गुलबनपत्ता कहते हैं ।

यवतित्कानामानि ।

यवतित्कामहातित्कादृढपादाविसर्पिणी । नाकुलीनेत्रमीला
चशखिनीपत्रतण्डुली ॥ तदुलीचाक्षपीडाचसृक्ष्मपुष्पी-
यशस्विनी । माहेश्वरीतित्कयवायावीतित्केतिषोडश ॥

अर्थ-यवतित्का, महातित्का, दृढपादा, विसर्पिणी, नाकुली, नेत्रमीला, शखिनी, पत्रतण्डुली, तन्दुली, अक्षपीडा, सृक्ष्मपुष्पी, यशस्विनी, माहेश्वरी, तित्कयवा, यावी, तित्का ।

संस्कृतभाषामें यवतित्का ।

| | |
|-----------------|--|
| हिन्दीभाषामें | शखिनी । |
| वगभाषामें | यवेची, भेतवोना (कालमेघ) |
| मराठीभाषामें | यवोची, टीटवी । |
| को० | शाखवेल्थ । |
| गुजरातीभाषामें | शखहेल्थ आख्युफुडामाणा, भगलिंगी । |
| कर्णाटकीभाषामें | शखिनी । |
| लैटिनभाषामें | एंड्रोग्राफिस पेनिक्युलेटा । <i>Andrographis paniculata</i> ब्रायोनिआस्का ब्रेला <i>Bryonia scabrella</i> अस्या गुणा । |

यवतिकासतिकास्यादीपनीरुचिकृत्परा ।

आमकुष्ठक्रिमिविपदोपघ्नीरेचनीचसा ॥ (रा० नि०)

अर्थ—शखिनी—कटवी, अग्निको दीपन करनेवाली, रुचिको उत्पन्न करनेवाली, दन्तोंको लानेवाली, तथा आम, कोढ़, कृमि और विपदोपको दूरकरनेवाली है ।

अन्यत्र ।

यवतिकासमहातिकासाग्निकृद्बलवर्द्धिनी ।

तिकाज्वरातिसारघ्नीवालानांशुभदासदा ॥ (आ० स०)

अर्थ—शखिनी—जठराग्निको दीपन करनेवाली, बलवर्द्धक, कडवी ज्वरातिसारनाशक और मदेव जालकोंके कल्याण करनेवाली है ।

अपिच ।

शंखिनीकटुतिक्तोष्णागुरु स्निग्धाविशोधिनी ।

त्रिदोषशमनीकुष्ठक्षयोदरविनाशिनी ॥ (का० नि०)

अर्थ—शखिनी—चरपरी कडवी, गम्भ, भारी, स्निग्ध, विशोधक, तथा त्रिदोष, कोढ़, क्षय और उदररोगको दूरकरनेवाली है ।

अथवा ।

यवतिकातुकटुकारुचिरात्राग्निदीपनी ।

सराम्लाकटुकातीक्ष्णास्निग्धोष्णाचत्रिदोषहा ॥

कुष्ठामविपदोपघ्नीगुक्तदोषकृर्मास्तथा ।

शोफंजयेच्चोपगन्धनाशयेदितिकीर्तितम् ॥ (नि० रा०)

अर्थ-शखिनी-कडवी, चरपरी, रुचिकारक, अग्निदीपक, सारक, (दस्तावर) अम्ल (खट्टी), कटु, तीक्ष्ण, स्निग्ध, गरम, त्रिदोषनाशक तथा कुष्ठ, आम, विषविकार, रक्तदोष, कृमि, सूजन और उदररोगको दूरकरनेवाली है ।

विवरण । शखिनीकी बेल-शिवलिंगीकी समान होतीहै, फल भी शिव-लिंगीकी समान होतेहैं, शखिनीके बीज-शखकी सदृशहोतेहैं, शिवलिंगीके फलके ऊपर सफेद छीटे होतेहैं, किन्तु शखिनीके फलके ऊपर छीटे नहींहोते।
लिङ्गिनीनामानि ।

लिङ्गिनीवहुपत्रास्यादीश्वरीशैवमल्लिका । स्वयम्भूलिंगस-
म्भूतालिंगीचित्रफलाऽमृता ॥ पंडोलीलिंगजादेवीचण्डाप-
स्तम्भिनीतथा । शिवजाशिववल्लीचविज्ञेयापोडशाह्वया ॥

अर्थ-लिंगिनी, बहुपत्रा, ईश्वरी, शैवमल्लिका, स्वयम्भू, लिंगसम्भूता, लिंगी, चित्रफला, पंडोली, लिंगजा, देवी, चण्डा, आपस्तम्भिनी, शिवजा, शिववल्ली (शिवमल्लिका, यकपुष्पा, और तुल्यिनी)

| | |
|-----------------|--|
| संस्कृतभाषामें | लिंगिनी । |
| हिन्दीभाषामें | शिवलिंगी, ईश्वरलिंगी । |
| बगभाषामें | शिवलिंगिनी । |
| मराठीभाषामें | शिवलिंगी वाड्डुल्ली । |
| गुजरातीभाषामें | शिवलिंगी । |
| कर्णाटकीभाषामें | पचगुरिया ईश्वरलिंगी । |
| हैतिन्भाषामें | ब्रायोनिया लेसिनियोसा । <i>Bryonia laciniosa</i> अस्या गुणा । |

लिंगिनीकटुरुष्णाचदुर्गन्धाचरसायनी ।

सर्वसिद्धिकरीदिव्यावश्यारसनियामिनी ॥ (रा० नि०)

अर्थ-शिवलिंगी-चरपरी, गरम, दुर्गन्ध, रसापन, सर्वसिद्धिकारक, दिव्य, वशीकरण और पारेको बाधनेवाली है ।

अपिच ।

लिंगिनीकटुकाचोष्णादुर्गन्धाचरसायनी ।

सर्वमिद्धिप्रदालोहस्तम्भिनीसूतवन्धिनी ॥

सिध्मनाशकरीवश्यकारिणीचप्रकीर्तिता । (नि०२०)

अर्थ—शिवलिङ्गी—चरपरी, गरम, दुर्गन्धित, रसायन, सर्वसिद्धिदायक, लोहस्तम्भक, पारदको वाधनेवाली, सिध्मनाशक और वशीकरण है ।

विवरण । शिवलिङ्गीकी बेल होतीहै, फल—नीले और गोल होतेह, पकने-पर लाल पड़जातेहैं, फलके ऊपर सपेद चित्र होते हैं, फलमेंसे बीज निकल-तेहैं, उन बीजोंमें शिवके लिंगका, आकार होताहै ।

मूर्वानामानि ।

मूर्वामधुरसादेवीगोकर्णीदृढसूत्रिका ।

तेजनीपीलुपर्णीचधनुर्मालाधनुर्गुणा ॥

अर्थ—मूर्वा, मधुरसा, देवी, गोकर्णा, दृढसूत्रिका, तेजनी, पीलुपर्णा, धनुः-माला, धनुर्गुणा (मोरदा, सवा, मधुलिका, धनु श्रेणी, कर्मकरी, धनुः-शाखा, श्रवा, मूर्वा, मधुश्रेणी, धनु, श्रेणी, सुरङ्गिका, देवश्रेणी, पृथक्त्वचा, मधुस्रवा, अतिरसा, पीलुपर्णिका, दिव्यलता, ज्वलिनी, गोपवल्ली)

सस्कृतभाषामें

मूर्वा ।

हिन्दीभाषामें

चूर्णहार, मुहरी, चुरनहार ।

बगभाषामें

मुर्वा, मुर्गा, मुरहर, शोचमुखी, बोडाचक्र इत्यादि ।

मराठीभाषामें

मोरबेल ।

कर्णाटकीभाषामें

मुहुरासि ।

तैलिङ्गीभाषामें

पागचेट्टु, सग, चग, सागा ।

तामिलीभाषामें

मरूल ।

का०

मोरहरी ।

लैटिन् भाषामें

हिमेटिस ट्राईलोबा । *Oloamatistriloba*

अस्या गुणाः ।

मूर्वासरागुरु स्वादुस्तिक्तापित्तास्रमेहनुत ।

त्रिदोषतृष्णाहृद्रोगकण्डुकुष्ठज्वरापहा ॥ (धन्वन्तरि) ।

अर्थ—चूर्णहार—सारक (दस्तावर), स्वादिष्ट, कडवी तथा रक्तपित्त, प्रमेह, त्रिदोष, तृषा, हृदयरोग, कण्डू, कुष्ठ और ज्वरको हरनेवाली है ।

अन्यथा ।

मूर्वातिक्ताकषायोष्णाहृद्रोगकफवातहत ।

अर्थ-शखिनी-कडवी, चरपरी, रुचिकारक, अग्निदीपक, सारक, (दस्तावर) अम्ल (खट्टी), कटु, तीक्ष्ण, स्निग्ध, गरम, त्रिदोषनाशक तथा कुष्ठ, आम, विषविकार, रक्तदोष, कृमि, सूजन और उदररोगको दूर करनेवाली है।

विवरण। शखिनीकी बेल-शिवलिंगीकी समान होती है, फल भी शिवलिंगीकी समान होते हैं, शखिनीके बीज-शखकी सदृश होते हैं, शिवलिंगीके फलके ऊपर मफेट ठीटे होते हैं, किन्तु शखिनीके फलके ऊपर ठीटे नहीं होते।
लिङ्गिनीनामानि।

१. लिङ्गिनीबहुपत्रास्यादीश्वरीशैवमल्लिका। स्वयम्भूलिंगस-
ज्जन्तुर्लिङ्गिनीपुष्पात्सुता ॥ पडोलीलिंगजादेवीचण्डाप-

अर्थ-चूर्णहार-कपेली, कडवी, स्वादु, तिग्मगण्डोदशाह्वया ॥
दस्तावर, त्रिदोषनाशक तथा रुधिरविकार, मेदोरोग काष्ठ, अग्निसम्भूता, वमन, मुखदोष, भ्रम, कण्ठ, टृषा, हृदयगर्भ, कफ, पित्त, वात और ज्वरको दूर करनेवाली है। इसका कन्द-कृमि, कृमिकीलकरोग और विष-विकारको दूर करे है।

विवरण। मूवाकी बेल वनमें होती है, इसमें छोटे २ और मधुर २ पल लगते हैं, पत्ते-धीकुआरकी समान चिकने और कुछ मोटे २ होते हैं।

काकमाचीनामानि।



मकोप.

काकमाचीध्वांशमाचीवायसीचवनाघना ॥

सिध्मनाशकरीवश्यकारिणीचप्रकीर्तिता । (नि०र०)

अर्थ—शिवलिङ्गी—चरपरी, गरम, दुर्गन्धित, रसायन, सर्वसिद्धिदायक, लोहस्तम्भक, पारदको वाधनेवाली, सिध्मनाशक और वशीकरण है ।

विवरण । शिवलिङ्गीकी वेल होतीहै, फल—नीले और गोल होतेहैं, पकने-पर लाल पड़जातेहैं, फलके ऊपर सपेद चित्र होते हैं, फलमेंसे बीज निकल-तेहैं, उन बीजोंमें शिवके लिंगका, आकार होताहै ।

मूर्वानामानि ।

मूर्वामधुरसादेवीगोकर्णीदृढसूत्रिका ।

तेजनीपीलुपर्णीचधनुर्मालाधनुर्गुणा ॥

अर्थ—मूर्वा, मधुरसा, देवी, गोकर्णा *Solanum nigrum*
माला, धनुर्गुणा (मोग्ग) सालनम् नाइग्रम् ।

शाखा, श्रृंगामें रोवातरीख ।

मधुरबीभापामें एनवुस्सालव ।

अस्या गुणा ।

काकमाचीत्रिदोषघ्नीस्निग्धोष्णास्वरशुक्रदा ।

तिक्तारसायनीशोथकुष्टाशोज्वरमेहजित् ॥

कटुनेत्रहिताहिक्काछर्दिहृद्रोगनाशिनी । (भा० प्र०)

अर्थ—मकोय—त्रिदोषनाशक, स्निग्ध, गरम, स्वरजनक, शुक्रकारक, कडवी, रसायन, चरपरी, नेत्रोंको हितकारी तथा सूजन, कोढ़, बवासीर, ज्वर, प्रमेह, हिचकी, वमन और हृदयरोगको हरनेवाली है ।

अन्यथा ।

काकमाचीकटुस्तिक्तारसोष्णाकफनाशिनी ।

शूलार्श शोफदोषघ्नीकुष्ठकण्डूतिहाग्निनी ॥ (रा० नि०)

अर्थ—मकोय—चरपरी, तिक्तारमान्वित, गरम, कफनाशक तथा शूल, बवासीर, सूजन, कोढ़ और कण्डूका नाश करे है ।

अन्यथा ।

काकमाचीसरास्वर्यावृष्यादोषत्रयापहा ।

नात्युष्णाशीतलानातिकुष्ठहन्त्रीग्मायनी ॥ (शो० नि०)

अर्थ-मकोय-सागक (दस्तावर), स्वरको 'उत्तम करनेवाली, वीर्य वर्द्धक, त्रिदोषनाशक, न अत्यन्त उष्ण है, और न अत्यन्त शीतल है, कुष्ठनाशक और रसायन है । अपिच ।

काकमाचीरसेतित्ताचोष्णाकटीरसायनी । वृष्यास्त्रि-
ग्धाच स्वय्याचहृद्याधातुविवर्द्धिनी ॥ नेत्र्यारुच्यास-
रालघ्वीकफशूलार्शशोफहा । त्रिदोषकुष्ठकण्डूतिकर्ण-
कीटातिसारहा ॥ हिक्काछर्दिश्वासकासज्वरहृद्रोगमे-
हहा । (नि० २०)

अर्थ-मकोय-तित्तरसान्वित, गरम, चरपरी, रसायन, वीर्यवर्द्धक, स्निग्ध, स्वरको उत्तम करनेवाली, हृदयको हितकारी, धातुवर्द्धक, नेत्रोंको हितकारी, रुचिकारी, दस्तावर, हलकी तथा कफ, शूल, ववासीर, सजन, त्रिदोष, कोढ़, कण्डू, कर्णकीट, अतिसार, दिचकी, वमन, श्वास, खाँसी, ज्वर और हृदयरोगको हरनेवाली है ।

विवरण । मकोयका-धुप होताहै, पत्ते-गोल और लम्बे । फूल-सपेद रंगका छोटा । फल-चोटलीकी समान गोल और गुच्छोंमें आते हैं । फल पकनेपर लाल रंगके और किसी २ के काले रंगके भी होजातेहैं ।

वायजघग्नामानि ।



काकजवाचकाकाञ्चीकाकागीकाकनासिका ॥

अर्थ-काकजवा, काकाञ्ची, काकागी, काकनासिका (काका, कारु-
नासा, काकरुन्ना, कृपीवल, काकाद्वा, घासजंग, काफाहा, मुलोमगा,
पारावतपदी, दासी, नडीकान्ता, काकी, मुरगी)

संस्कृतभाषामें
हिन्दीभाषामें

काकजवा ।
काकजवा, ममी ।

| | |
|-----------------|---|
| वगभापामें | केउयाठेडा काटागुडकाउली । |
| मराठीभापामें | कागाचें झाड । |
| गुजरातीभापामें | अवेडी । |
| कर्णाटकीभापामें | जीरीचिलेच । |
| तेलिंगीभापामें | नालादुच्चीणीके । |
| लैटिन्भापामें | हॅपलेथिस् हॅटेम्युलेरीस । <i>Lees Hirta</i> |
| | अस्या गुणा । |

काकजघातुतिक्तोष्णाकृमिव्रणकफापहा ।

वाधिर्यार्जीर्णजित्कटीविपमज्वरहारिणी (रा० नि०)

अर्थ—काकजघा (मसी)—कडवी, गरम, चरपरी तथा कृमि, घाव, कफ, वविरता, अजीर्ण और विपम ज्वरको दूर करनेवाली है ।

विवरण । काकजघाके छुप-जगलमें और वनोंमें बहुत होतेहैं, पत्ते—लम्बे २ हरे और काले रंगके होते हैं, फूल—छोटे २ और काले रंगके होते हैं । पत्तापर खरखरापन और बारीक २ रुआसा होता है, शाखा गाढेदार होती है और उनमें थोड़ी २ दूषपर ऎडावडापन होता है ।

अन्यच्च ।

काकजघाहिमातिक्ताकपायाकफपित्तनुत ।

निहन्तिज्वरपित्तास्रव्रणकण्डूविपक्रिमीन् ॥ (भा० प्र०)

“क्षतोपयोगिकाचैववाधिर्यश्चविनाशयेत् ।”

अर्थ—काकजघा (मसी)—शीतल, कडवी, कपेली तथा कफ, पित्त, ज्वर, रक्तपित्त, कण्डू, विप, और कृमिका नाश करेहै । तथा क्षतरोगमें हितकारी और वधिरताको दूर करे है ।

वायनासानामानि ।

काकनासातुकाकांगीकाकतुण्डफलाचसा ।

अर्थ—काकनासा, काकांगी, काकतुण्डफला (ध्वाक्षनासा, काकतुण्डी, वायसी, मुग्गी, तस्करस्त्रायु, ध्वाक्षतुण्डा, मुनासिका, वायसादा, ध्वाक्षनखी, काकाक्षी, ध्वाक्षनामिका, काकमाणा, काकश्मश्रु, चोरस्त्रायु, शिरोवला)

संस्कृतभापामें

काकनासा ।

हिन्दीभापामें

कौआठोडी ।

वगभापामें

केउयाडुटी ।

मराठीभाषामें श्वेतकावली ।
 कर्णाटकीभाषामें द्विरीयकागे डोले वडिलि कट्टरली ।
 तैलिङ्गीभाषामें वेळमसन्दिचेदट्ट, पुसगुलिबिन्दचेदट्ट, काकिडोंडचेदट्ट ।
 लैटिन्भाषामें जिम्ब्रिमासिल्वेस्ट्रि । *Gymurbma Sylvestre*
 अस्या गुणा ।

काकनासाकपायोष्णाकटुकारसपाकयो ।

कफघ्नीवामनीतित्ताशोफार्शः श्वित्रकुष्ठनुत ॥ (भा प्र)

अर्थ—कौआठोडी—कपेली, गरम, रसमें चरपरी और पचनेमेंभी चरपरी, कफनाशक, वमनकारक, कडवी, तथा सृजन, चवासीर और भिन्नकुष्ठको नष्ट करे है ।

अन्यथा ।

काकनासातुमधुराशिरिरापित्तहारिणी ।

रसायनीदाढ्यकरीविशेषात्पलितापहा ॥ (रा० नि०)

अर्थ—कौआठोडी—मधुर, शीतल, पित्तनाशक, रसायन, दृढताकारक और विशेषकरके पलित (बालोंका धवल होजाना) को दूर करे है । कौआठोडी,—विशेषकरके जगल और कंठकी भूमिमें होतीहै, पत्ते—गुलाबके पत्तोंसे ठोटे, फूल—नीले और मुकुंद रंगके काँवेकी नासिकाकी समान होतेहैं, इसपर फली आतीहै घीज लोबियेकी समान निकलते हैं ।

नागपुष्पीनामानि ।

नागपुष्पीश्वेतपुष्पानागिनीरामदूतिका ॥

अर्थ—नागपुष्पी, श्वेतपुष्पा, नागिनी, रामदूतिका ।

अस्या गुणा ।

नागिनीरेचनीतित्तातीक्ष्णोष्णाकफपित्तनुत ।

विनिहन्तिविपञ्चूलयोनिदोषवमिक्रिमीन् ॥ (भा० प्र०)

अर्थ—नागपुष्पी—दस्तावर, कडवी, तीक्ष्ण, गरम तथा कफ, पित्त, विप, शूल, योनिदोष, वमन और कृमिरोगको दूर करे है ।

विवरण । नागपुष्पीकी बेल चलतीहै, वनके वृक्षोंपर पैलज्जातीहै, पत्र—सबेद और काले होतेहैं, एक एक शाखामें एक एक पत्ता होताहै, इसके नीचे फल होताहै ।

मेपशृङ्गीनामानि ।

मेपशृङ्गीमेपवल्लीचक्षुर्मेपविपाणिका ॥

अर्थ-मेपशृङ्गी, मेपवल्ली, चक्षु, मेपविपाणिका (नन्दीवृक्ष, चक्षुर्वहल, मेदशृङ्गी, गृहद्रुमा, बहलचक्षु, विपाणी, अजशृङ्गी, विपाणिका, अजशृङ्गी, चक्रश्रेणी, अजगन्धिनी, मौवी, नेत्रौषधी, आवर्तिनी, वर्तिका, सर्पदण्डिका, चक्षुष्या, तिक्तदुग्धा, पुत्रशृङ्गी, कर्णिका, अक्षिभेषज)

| | |
|-----------------|---|
| संस्कृतभाषामें | मेपशृङ्गी, अजशृङ्गी । |
| हिन्दीभाषामें | मेढाशींगी । |
| बंगलाभाषामें | मेडाशिंगे, गाडलशिंगी, ठागलवेट । |
| मराठीभाषामें | मैडफळी, केवणीच्या शेंगा । |
| गुजरातीभाषामें | मडाशिंगी आटडानी शींग । |
| कर्णाटकीभाषामें | उरियमर । |
| इंग्रेजीभाषामें | स्कृट्री । Scrot tree |
| लैटिन् भाषामें | हेलीक् टेरीस् इसोरा । Helicteris isora |
| | जिमनेगा सिलवेस्ट्री । Gymneruas yves-tree |
| फारसीभाषामें | किस्त । |
| अरबीभाषामें | वर्किस्त । |

अस्या गुणाः ।

अजशृङ्गीरसेतिक्कारूक्षापाकेकटु स्मृता । चक्षुष्याशी-
तला स्वाद्वीबल्याभेदकरीमता ॥ रसायनातुतुवरादाह-
पित्तकफापहा । रक्तरूक्षासतिमिरश्वासव्रणविपापहा ॥
कृम्यर्थं गूलहृद्रोगनाशिनीशोथहास्मृता ॥ कुष्ठवातना-
शयतिफलमस्यास्तुतिक्तकम् ॥ कटूष्णदीपनद्व्यरु-
च्यचाम्लपटुस्मृतम् । समनकुष्ठमेढमकासकिमिकफ-
प्रणुत् ॥ विषदोषव्रणवातनाशयेदितिकीर्तितम् । (नि० २०)

अर्थ-मेडाशिंगी-रसमें कड़वी, रूखी, पचनेमें चरपरी, नेत्रोंको हितकारी
शीतल, स्वादिष्ट, बलकारक, भेदक, रसायन, कपेली तथा दाह, पित्त, कफ,
रक्तविकार, रसासी, तिमिररोग, श्वास, व्रण, विष, कृमि, बवासीर, हृदयरोग,
सूजन, कोढ़ और वातको बिनाश करनेवाली है । इसका फल-कटुता, चर-

परा, गरम, दीपन, हृदयको हितकारी, रुचिकारक, ग्टा, खारा, ममन, तथा क्रोध, प्रमेह, खाँसी, कृमि, कफ, विषविकार, ग्रण, और वातको दूर करनेवाली है ।

विवरण । मेढाशिगीका बड़ा वृक्ष होताहै, पत्ते-फालसेके समान, और फूल-लाल होते हैं, इसकी पत्ती गोल और लम्बी होतीहै, इसके वृक्ष प्रायः पर्वतापर बहुत होतेहैं ।

हसपादीनामानि ।



हसपादीकीरमातात्रिपादीचमधुस्रवा ।

अर्थ-हसपादी, कीरमाता, त्रिपादी, मधुस्रवा (सुवहा, हसपदी, गोधाघ्रि, त्रिफला, गोधापदिका, त्रिदला, हसवती, चित्रपदा, हसपदिका, हसाघ्रि, रक्तपादी, त्रिपदा, घृतमण्डलिका, विश्वग्रन्थि, त्रिपदिका, त्रिपदी, कीटमारी, कर्णाटी, ताम्रपादी, विक्रान्ता, त्रहादनी, पदाङ्गी, शीताङ्गी, सूतपादिका, सञ्चारिणी, पदिका, प्रहादी, कीरपादिका, घातंगपददी, गोधापदी, त्रिपादिका, रक्तपादी)

संस्कृतभाषामें

हसपादी, गोधापदी ।

हिन्दीभाषामें

हसपादी, हसपगी ।

वगभाषामें

गोपालेलता ।

मराठीभाषामें

लाल लाजातु ।

गुजरातीभाषामें

हमराज कालीडाडलीनो ।

कर्णाटकीभाषामें

नविलडि ।

तैलंगीभाषामें

हसपादमु ।

इंग्रेजीभाषामें

मेडनूहेर । Maiden hair

लैटिनभाषामें

एडिण्टम ल्युन्युलेटम । Adiantum Lunulatum

फारसीभाषामें

परस्या उगान ।

अरबीभाषामें

शारुल चीन शारुलअड ।

अस्या गुणा ।

हसपादीगुरुशीता हन्ति रक्तविषव्रणान् ।

विसर्पदाहातीसारलूताभूताग्निरोहिणी ॥ (भा० प्र०)

अर्थ—हसपादी—भारी, शीतल तथा रुधिरविकार, विष, व्रण, विसर्प, दाह, अतिसार, लूता, भूतवाधा और अग्निरोहिणीरोगको दूर करनेवाली है ।

अन्यञ्च ।

हसपादीतुकटुकाचोष्णाप्रोक्तारसायनी ।

भूतवाधाविषचैवापस्मारभ्रमनाशिनी ॥ (नि० र०)

अर्थ—हसपादी—चरपरी, गरम, रसायन तथा भूतवाधा, विष, अपस्मार और भ्रमको हर्नेवाली है ।

विवरण । हसपादीके क्षुप—जलाशयके समीप अत्यन्त शीतल स्थानोंमें होते हैं, विशेष करके कुँएँ बावडी इत्यादि स्थानोंमें बहुत होते हैं, इसको हम देशमें हसराज कहते हैं, इसकी जड़ लाल और कोमल होती है, पत्ते—हरे २ बहुत छोटे २ होते हैं ।

सोमलतानामानि ।

सोमलतासोमवल्लीसोमक्षीरीद्विजप्रिया ॥

अर्थ—सोमलता, सोमवल्ली, सोमक्षीरी, द्विजप्रिया (चन्द्रवल्लरी, इन्दुलेखा, सोमवल्लिका, महागुल्मा, यज्ञश्रेष्ठा, धनुर्लता, सोमार्हा, गुल्मवल्ली, यज्ञवल्ली, सोमक्षीरा, सोमा, यज्ञाङ्गा)

संस्कृतभाषामें सोमवल्ली ।

हिन्दीभाषामें सोमवल्ली, सोमलता ।

वगभाषामें सोमलता ।

मराठीभाषामें सोमवल्ली ।

कर्णाटकीभाषामें सोमवल्ली ।

तैलिङ्गीभाषामें पल्लवीजी, टिगट्टुमुट्टु, पुत्तोगे ।

लैटिन्भाषामें सारकोटिमा ब्रेवीस्टिमा *Sarcostemma brevifigmar*

अस्या गुणा ।

सोमवल्लीत्रिदोषघ्नीकटुतिक्तारसायनी ॥ (भा० प्र०)

अर्थ—सोमलता—त्रिदोषनाशक, चरपरी, कड़वी और रसायन है ।

शान्यञ्च ।

सोमवल्लीकटु शीतामधुरापित्तदाहनुत ।

तृष्णाविशोपशमनीपावनीयजसाधनी ॥ (रा०नि०)

अर्थ—सोमलता—चरपरी, शीतल, मधुर तथा पित्त, दाह, तृष्णा और विशोपको शान्त करनेवाली है, पवित्र और यज्ञसाधक है ।

विवरण । धृहरकी जो कोई प्रकारकी जातिहै उनमेंसे सोमलता भी एकभातिकी बेल है, इसमें शुद्ध पक्षके दिनोंमें क्रमवार प्रतिपदामे लेकर पूर्णमासीतक एक एक पक्षा प्रतिवार निकरताहै, पन्द्रहतिथियोंमें पन्द्रह पक्षे होजातेहैं, फिर कृष्णपक्षकी परीवासे लेकर अमावास्यातक एक एक पक्षा प्रतिदिन गिरता जाताहै, पन्द्रहदिनमें एक पक्षाभी नहीं रहता, इस लताका चन्द्रमामे अवित्र सेहै, इमकारण इस अद्रुतलताका नाम सोमलताहै ।

आश्वत्थवल्लीनामानि ।

आकाशवल्ली.



आकाशवल्लीतुबुधे कथिताऽमरवल्ली ॥

अर्थ—आकाशवल्ली, अमरवल्ली, (खवली, दु स्पर्शा, व्योमवल्लीरा)

संस्कृतभाषामें

आकाशवल्ली ।

हिंदीभाषामें

आकाशवेल, अमरवेल ।

वगभाषामें

आलोकलता, आकाशनेत्र ।

मगधीभाषामें

आकाशवेड, अमगेल ।

गुजरातीभाषामें

अमरवेल ।

कर्णाटकीभाषामें

नेदमुदवली ।

तैलिङ्गीभाषामें

इन्द्रजाल ।

लैटिनभाषामें

कसुदुदारी पलेस्मा । *Cuscuta reflexa*केमियाफिन्फोमिंग । *Cuscuta filiformis*

अर्घ्यभाषामें

अन्ननिपून ।

अस्या गुणा ।

खवल्लीग्राहिणीतिक्तापिच्छिलाक्ष्यामयापहा ।

तुवराग्निकरीहृद्यापित्तश्लेष्मामनाशिनी ॥ (भा० प्र०)

अर्थ—आकाशवेल—ग्राही, कडवी, पिच्छल, अक्षिरोगनाशक, कपेली, अग्निजनक, हृदयको हितकारी, तथा पित्त, कफ और आमवातनाशक है ।

अन्यच्च ।

आकाशवल्लीकटुकामधुरापित्तनाशिनी ।

वृष्यारसायनीवल्यादिव्यौषधिपरास्मृता ॥ (रा० नि०)

अर्थ—आकाशवेल—चरपरी, मधुर, पित्तनाशक, वीर्यवर्द्धक, रसायन, बलकारक और दिव्यौषधि है ।

विवरण । आकाशवेल—डोरेकी समान वृक्षोंपै फैली हुई होती है, रंग-पीला होताहै, फूल-सफेद आताहै, और इसकी जड़ नहीं होती । व्यवहार सर्वांग । मात्रा २ तोले ।

पातालगरुडीनामानि ।



छिलिहिण्डोमहामूल पातालगरुडाद्वय ॥

अर्थ—छिलिहिण्ड, महामूल, पातालगरुड (वत्सादनी, सोमवल्ली, तिक्तागा, मोचकाभिधा, तार्क्षी, साँपणी, गारुडी, दीर्घकाण्डा, दृढकाण्डा, महावला, दीर्घवल्ली, दृढलता)

सस्कृतभाषामें पातालगरुडी ।

हिंदीभाषामें छिरेटा ।

वगभाषामें गिलिन्डा ।

| | |
|-----------------|--|
| मगठीभापामें | तानीचा वेल, मुयपाड । |
| गुजरातीभापामें | वेवडीओलप । |
| तैलिह्नीभापामें | दूसरतोमे । |
| लैटिन्भापामें | कोक्युलस् विलोसस् । <i>Cocculus villosus</i> । |
| | अस्या गुणाः । |

छिलिहिण्ड परवृष्य-कफघ्न पवनाह्वय ॥ (भावप्रकाश)
अर्थ-छिरेटा-अत्यन्त वीर्यवर्द्धक, कफ और वार्तनाशक है ।

अपघ्न ।

वत्सादनीतुमधुरापित्तदाहासदोषनुत् ।

वृष्यासन्तर्पणीरुच्याविपदोपविनाशिनी ॥ (ग० नि०)

अर्थ-छिरेटा-मधुर, वीर्यवर्द्धक, सन्तपणं, रुचिकारक, तथा दाह, पित्त, रुधिरविकार और विपदोपविनाशक है ।

विवरण । पातालगरुडकी अर्धांशु छिरेटीकी वेल होती है, यह बहुत मोटी और दृढ़ होती है, इसके तलुभी बहुत पक्के होते हैं, इसके फल छोटे-छोटे और गुन्डोंमें लगते हैं, तरुण अवस्थामें हरे और पकनेपर काले होजाते हैं, इनके पत्ते सीसमके पत्तोंकी समान होते हैं, उनका रंग निकालकर जलमें डालनेमें जल जमजाता है ।

यदानामानि ।



वदावत्सादनीमेव्यापगपुष्टपगथया ॥

अर्थ-वदा, वृक्षादनी, सेव्या, परपुष्टा, पराश्रया (वृक्षरुहा, जीवन्तिका, काकुरुहा, वन्दाका, शेखरा, वन्दाका, वल्दक, नीलवल्ली, वन्दाकी, परवासिका, वाजिनी, पुत्रिणी, वन्दा, पादपरुहा, शिखरी, तरुरोहिणी, वृक्षादनी, कामवृक्ष, शैखरी, केसरूपा, तरुरुहा, तरुस्था, गन्धमादनी, कामिनी, तरुभुक, श्यामा, उपदी, वृक्षभक्षा, नीलवर्णा, वन्दाकी, गन्धमादनी और रोहिणी)

संस्कृतभाषामें वन्दा ।

हिन्दीभाषामें वन्दा, वन्डाल, वदाक, वादा ।

बंगलाभाषामें वाँदु, परगाऊ, मान्दडा ।

मराठीभाषामें वादागुल, कामरुख ।

गुजरातीभाषामें वादो ।

कर्णाटकीभाषामें वन्दणिके ।

तैलिङ्गीभाषामें वाजिनीके ।

लैटिन् भाषामें लोरेन्थस लॉगिफोलियस । *Loranthus Longifolious*

अस्या गुणा ।

वन्दाकः कफवातास्रस्नायुव्रणविपापहः ॥ (म० नि०)

अर्थ-वादा-कफ, वात, रुधिरविकार, स्नायु, व्रण और विपविनाशक है ।

अन्यच्च ।

वदाक स्याद्विमस्तिक्त कपायोमधुरोरसे ।

मागल्य-कफवातास्रक्षोव्रणविपापहः ॥ (भावप्रकाश)

अर्थ-वन्दा-शीतल, कडवा, कपेला, मधुरसाम्बित, मङ्गलग्नकर तथा कफ, वात, रुधिरविकार, राक्षसवाधा, व्रण और विपविनाशक है ।

अपिच ।

वन्दाकस्तिक्तशिशिर-कफपित्तश्रमापह ।

वश्यादिसिद्धिदोवृष्य कपायश्चरसायन ॥ (रा० नि०)

अर्थ-वन्दा-कडवा, शीतल, कफनाशक, पित्तघ्न, श्रमहर्ता, वशीकरणादिसिद्धिकता, वीर्यवर्द्धक, कपेला और रसायन है । वन्दा, वृक्षाकी शाखाएँ होता हैं ।

विवरण । वन्दा विविधप्रकारका वृक्षापर वृक्षतरीखा होजाता है, उसकी जड़ जलग नहीं होती, वृक्षमें उत्पन्न होजाता है कोई २ ऐसा कहते हैं कि, काकादिक कोई पक्षी किसी वृक्षकी शाखा लाकर वृक्षपर रखदेते हैं, उसीमें

मराठीभाषामें तानीचा वेल, भुयपाड ।
 गुजरातीभाषामें वेवडीओलप ।
 तैलिङ्गीभाषामें दूसरतोगे ।
 लैटिन्भाषामें कोक्युलस विलोसम् । (oculus villosus)
 अस्या गुणा ।

छिलिहिण्ड परवृष्य कफघ्नः पवनाह्वयः ॥ (भावप्रकाश)
 अर्थ-छिरेटा-अत्यन्त वीर्यवर्द्धक, कफ और वातनाशक है ।
 अन्यथा ।

वत्सादनीतुमधुरापित्तदाहासदोषनुत् ।

मराठीभाषामें वडवती ॥ (रा० नि०)
 वगभाषामें वडपायकुचि ।
 तैलिङ्गीभाषामें पिण्ड, वण्डचेट्टु ।
 इंग्रेजीभाषामें लैर्कापेडियम् ।
 अस्या गुणा ।

वटपत्रीरूपायोष्णायोनिमृत्रगदापहा ॥ (भावप्रकाश)
 अर्थ-वटपत्री-कपेली, गरम तथा योनिरोग और मृत्ररोगको दूर करे ।
 अपिच ।

वटपत्र्यश्मभिच्छीतामधुरातुवलप्रदा ।

किञ्चिदग्नेदीप्तिकरीत्रणकृच्छ्रप्रमेहजित ॥

अश्मरीमृत्रघातञ्च भगन्दग्निनाशयेत् । (निषण्डुरस्ताकर)

अर्थ-वटपत्री-शीतल, मधुर, उलवर्द्धक, किञ्चित् अग्निको दीपन करने वाली, तथा घाव, मृत्रकृच्छ्र, प्रमेह, पयरी, मृत्रघात और भगन्दरोगको दूर करनेवाली है ।

विवरण । वटपत्री पाषाणमेदहीका भेद है, इसके पत्त-वटके समान होते हैं, इमीसे इसका नाम वटपत्री है ।

मत्स्यापीनामानि ।

मत्स्याः ॥ तित्ति च ॥
 अर्थ-मत्स्याः ॥ मत्स्यादनी ।
 मत्स्याः ॥ जित् ।

अर्थ—वदा, वृक्षादनी, सेव्या, परपुष्ठा, पराश्रया (वृक्षरुहा, जीवन्तिका, काकुरुहा, वन्दाका, शेखरा, वन्दका, वल्दक, नीलवली, वन्दाकी, पर-वासिका, वशिनी, पुत्रिणी, वन्धा, पादपरुहा, शिखरी, तरुरोहिणी, वृक्षादनी, कामवृक्ष, शैखरी, केशरूपा, तरुरुहा, तरुस्था, गन्धमादनी, कामिनी, तरु-मुक, श्यामा, उपदी, वृक्षभक्षा, नीलवर्णा, वन्दाकी, गन्धमादनी और रोहिणी)

संस्कृतभाषामें वन्दा ।

हिन्दीभाषामें वन्दा, वन्दाल, वदाक, वादा ।

वगलाभाषामें वॉदु, परगाछा, मान्दडा ।

मराठीभाषामें वादागुल, कामरुख ।

गुजरातीभाषामें ૩૧. ૧૧૧૧૧૧ ૧૧૧૧૧ ૧૧૧૧૧ ૧૧૧૧૧

वृश्चिकोन्दुरुसर्पाणां विपघ्नीत्रणरोपणी ॥ (भा० प्र०)

अर्थ—सर्पाक्षी (सरहटी, गडनी)—चरपरी, कडवी, गरम, कृमिनाशक तथा विच्छेद, मूत्रा और साँपके विषको दूर करनेवाली है ।

विवरण । सर्पाक्षी—सरफोंकेका भेदहै, सरफोंकेमें और इसमें किसी प्रकारका भेद नहीं पाया जाता है ।

शरापुष्पीनामानि ।



शरापुष्पी (शखाहली)

मेघ्याचण्डाशखपुष्पीसुपुष्पीकम्बुमालिनी ।

अर्थ—शखपुष्पी, मेघ्या, चण्डा, सुपुष्पी, कम्बुमालिनी, (शखाहा,

पीतपुष्पी, कम्बुपुष्पा, मलविनाशिनी, किरीटी, शखकुसुमा, भूलगा, शर-
गालिनी, माङ्गल्यकुसुमा, कम्बुपुष्पी, वनमालिनी, इतरा, सङ्गमपद्मा, सर्पाङ्गी,
रक्तपुष्पी, रक्तपुष्पिका, नीलपुष्पी, विष्णुकान्ता, सितपुष्पी, श्वेतकुसुमा,
वनविलामिनी)

संस्कृतभाषामें

शखपुष्पी ।

हिन्दीभाषामें

शखाडुली, कीडियाली ।

बंगलाभाषामें

शखाडुली, डानडुनी ।

मराठीभाषामें

शखावळी, शखोनी ।

गुजरातीभाषामें

शखावली ।

कर्णाटकीभाषामें

शखपुष्पी ।

लैटिनभाषामें

इवोल्व्युलस इरेक्टा (सफेद) *Evolvulus 1 recta*

इवोल्व्युलस आलसिनोइडिस (लाल) *E Alsinoides*

इवोल्व्युलस इरैटस (काली) *E. irritatus*

अन्वया गुणा ।

शखपुष्पीतुतीक्ष्णोष्णामेध्याकृमिविपापहृ॥ (रा० व०)

अर्थ—शखाडुली—तीक्ष्ण, गरम, मेधाजनक, तथा क्रिमि और विषवि-
नाशक है ।

अप्यस्य ।

शखपुष्पीसगमेध्यायुष्यामानसरोगहृत्तरसायनीरूपायो-
ष्णास्मृतिकान्तिबलाग्निदा ॥ कटुकाशीतलास्वर्य्याकुष्ठ-
क्रिमिविषप्रणुत । पाचकायु स्थिरकतीमांगल्यापित्तना-
शिनी ॥ लूतापस्मारदोषघ्नीग्रहदोषस्थनाशिनी । सर्वोपद्र-
वहाप्रोक्तापुष्पेभेदागुणेऽसमा ॥

अर्थ—शखाडुली—सारक, मेधाजनक, आयुर्वृद्धक, मनके रोगोंको हरने-
वाली, रसायन, कपेली, गरम, स्मरणशक्तिवृद्धक, कातिजनक, यत्वृद्धक,
अग्निदायक, चरपरी, शीतल, स्वर्गको उत्तम करनेवाली, मगलसारक, अव-
स्थास्थापक, पाचक, तथा कोष्ठ, कृमि, विष, पित्त, लूता, अपस्मार, ग्र-
हदोष और सर्वप्रकारके उपद्रवोंको दूर करनेवाली है सर्वप्रकारकी शखपुष्पी
गुणोंमें समान है ।

अन्यच्च ।

शखपुष्पीकपायोष्णा कफकुष्ठविनाशिनी ।

रसायनीसरादिव्या लालाहृल्लासजृतिहा ॥

लक्ष्मीमेधावलानीनां वर्द्धिनीकथिताबुधैः ।

अर्थ-शखपुष्पी-कपेली, गरम, कफ और कुष्ठको नष्ट करनेवाली, रसायन सारक, दिव्य, मुखसे लारका गिरना, उबकाई, और ज्वरको दूर करनेवाली है तथा लक्ष्मी, मेधा, बल और अग्निको बढ़ानेवाली है ।

श्वेतशखपुष्पीगुणा ।

शुभ्राचशखिनीमेध्याशीतलावश्यसिद्धिदा । रसायनीस-
रास्वर्य्याकिञ्चिदुष्णाचतूवरा ॥ स्मृतिकान्तिवलाग्नीनां
वर्द्धिनीकटुकामता ॥ पाचकायुःस्थिरकरीमाङ्गल्यापित्त-
नाशिनी ॥ विपदोपमपस्मारकफकृमिविपहरेत् । कुष्ठलू-
तात्रिदोपघ्नीग्रहदोपस्यनाशिनी ॥ सर्वोपद्रवहाप्रोक्तारक्ता-
नीलागुणे समा । (निघण्डुस्तनाकर)

अर्थ-सफेद शखाहुली-मेधाजनक, शीतल, वशीकरण, सिद्धिदायक, रसायन, सारक, स्वरको सुन्दर करनेवाली, किञ्चित् उष्ण, कपेली, तथा स्मरणशक्ति, काति और अग्निको बढ़ानेवाली है । चरपरी, पाचक अवस्था-स्थापक, मगलकारक, तथा पित्त और विपदोप, अपस्मार (मृगी), कफ, कृमि, विष, कोष्ठ, छूता, त्रिदोष, ग्रहदोष और सर्व उपद्रवोंको दूर करे है । लाल शखपुष्पी और नीली शखपुष्पीके गुणभी इसकी समान जानने ।

विवरण । शखपुष्पीका छत्ता प्रायः ऊपर भूमिमें होता है, पत्ते छोटे और धूसर रंगके सूक्ष्म होते हैं, फूल-उपद्रगियासे मिलता हुआ होता है, सफेद फूलवालीको सफेद शखाहुली कहते हैं, लाल रंगके फूलवालीको लाल शखाहुली कहते हैं, नीले रंगके फूलवालीको विष्णुक्रान्ता कहते हैं ।

अथ पुष्पीनामानि ।

पयस्याहर्कपुष्पीचगूर्यवल्लीकुटुम्बिनी ॥

अर्थ-पयस्या, अर्कपुष्पी, सूर्यवल्ली, कुटुम्बिनी (जलकामुका, क्षीरिणी, वक्रशल्या, दुराधर्षा, कूकर्म, सिरिण्डिका, शीता, प्रहरकुटवी, शीतला, जलेरुहा, सितपर्णी, शीतपर्णी और अर्कपुष्पिका)

पीतपुष्पी, कम्बुपुष्पा, मलविनाशिनी, किरीटी, शखकुमुमा, भूतघ्ना, शख-
गालिनी, माद्रूपकुमुमा, कम्बुपुष्पी, वनमालिनी, इतरा, सत्वपत्रा, सर्पांशी,
रक्तपुष्पी, रक्तपुष्पिका, नीलपुष्पी, विष्णुकान्ता, सितपुष्पी, श्वेतकुमुमा,
वनविलासिनी)

संस्कृतभाषामें

शखपुष्पी ।

हिन्दीभाषामें

शखाडुली, कौडियाली ।

बंगलाभाषामें

शखाडुली, डानकुनी ।

मराठीभाषामें

शंखावळी, शखोनी ।

गुजरातीभाषामें

शखावली ।

कर्णाटकीभाषामें

शखपुष्पी ।

लैटिनभाषामें

इवोल्वुलस इरेन्डा (सफेद) *Evolvulus Ereta*इवोल्वुलस आलसिनोइडिस (लाल) *E. Alundoides*

१७९२५

इवोल्वुलस हर्सेटस (काली) *E. hirsutus*

समान होती है, पत्ते-गिलोयके समान ।

समान गोल आता है, और इसमें दूध निकलता है ।

लज्जालुनामानि ।



लज्जावंती

लज्जालु स्याच्छमीपत्रासमगाञ्जलिकारिका ।

रक्तपादीनमम्कारिताभ्रासदिरकेत्यपि ॥

अर्थ-लज्जालु, शमीपत्रा, समगा, अञ्जलिकारिका, रक्तपादी, नमस्कारिता,
साध्या, रात्रिका, (कन्दिरी, मृष्टा, सतिरपत्रिका, मकोचिनी, समद्रा,

अन्यत्र ।

शखपुष्पीकपायोष्णा कफकुष्ठविनाशिनी ।
रसायनीसरादिव्या लालाहृल्लासजर्तिहा ॥
लक्ष्मीमेधाबलाग्नीना वर्द्धिनीकथिताबुधैः ।

अर्थ—शखपुष्पी—कपेली, गरम, कफ और कुष्ठको नष्ट करनेवाली, रसायन सारक, दिव्य, मुखसे लारका गिरना, उबकाई, और ज्वरको दूर करनेवाली है तथा लक्ष्मी, मेधा, बल और अग्निको बढ़ानेवाली है ।

श्वेतशखपुष्पोष्णा ।

शुभ्राचशखिनीमेध्याशीतलावश्यसिद्धिदा । रसायनीस-
रास्वय्याकिञ्चिदुष्णाचतृवरा ॥ स्मृतिकान्तिबलाग्नीनां
वर्द्धिनीकटुकामता ॥ पाचकायु स्थिरकरीमाङ्गल्यापित्त-
नाशिनी ॥ विपदोपमपस्मारकफ... ॥
ताञ्जिदोग्नी... ॥ नरागान्विनाशयेत् ॥ (भा० प्र०)

अर्थ—लजावती (डुईमुई) शीतल, कडवी, कपेली तथा कफ, पित्त, रक्तपित्त, अतिसार और योनिरोगोंको दूर करे है ।

अन्यत्र ।

रक्तापादीकटुःशीतापित्तातीसारनाशिनी ।

शोफदाहश्रमश्वासव्रणकुष्ठकफास्त्रनुत ॥ (रा० नि०)

अर्थ—लजावती (डुईमुई) चरपरी, शीतल, पित्तातिसारनाशक तथा सृजन, दाह, श्रम, श्वास, घाव, कोढ़, कफ और रक्तविकारको दूर करे है ।

विपरीतलज्जालुनामानि ।

लज्जालुर्विपरीतान्याअल्पक्षुपवृहदला ॥

अर्थ—विपरीतलज्जालु, अल्पक्षुप, बृहदल ।

अस्या गुणा ।

वैपरीत्याचलज्जालुर्ध्वभिधानेप्रयोजयेत् ।

लज्जालुर्वैपरीत्याहुःकटुरुष्ण कफप्रणुत ॥

रसेनियामकश्चैवनानाविज्ञानकारक । (राजनिघण्टु)

अर्थ—विपरीतलज्जालु—चरपरा, गरम, कफनाशक, पारेको वाधनेवाला और अनेक प्रकारके चमत्कार दिखलानेवाला है ।

विवरण । लजावन्ती अर्थात् छईमुईके लुप वेलके समान होतेहैं, पत्ते
छोकर अथवा रंगके समान होतेहैं, फूल-गुलाबी नीले मिश्रित रंगके होते
हैं, इसकी जड़ लाल होती है, इसको स्पर्श करे तो ये लजाके मारे सर्माकर
मुकड जाती है, पश्चात् विस्तृत होजाती है, यह दो प्रकारकी होती है, एक
काटेवाली, एक बिना काटेकी, हाथके लगतेही मुकड मुकडाकर नीचेको
मुक जाती हैं । इसीलिये इसका नाम लजावती (छईमुई) रखा है ।

अलम्बुपानामानि ।

अलम्बुपाखरत्वक्चतथामेदोगलास्मृता ॥

अर्थ-अलम्बुपा, खरत्वक्, भेदोगला ।

अस्या गुणा ।

अलम्बुपालघु स्वादु कृमिपित्तकफापहा ॥

अर्थ-अलम्बुपा (लजावका भेद) हलका, स्वादिष्ट तथा कृमि, पित्त
और कफनाशक है । दुग्धपानामानि ।

दुग्धीक्षीरात्मिकाक्षीरीक्षीराबीचमरुद्रवा ॥

अर्थ-दुग्धी, क्षीरात्मिका, क्षीरी, क्षीराबी, मरुद्रवा, (स्वादुपर्णी,
क्षीरिणी, क्षीराविका, माहिणी, कण्डरा, ताम्रमूला और दुग्धिका)

दुग्धपनीनामानि ।

दुग्धफेनीपय.फेनीफेनीदुग्धापयस्विनी ।

लूतारिर्व्रणकेतुश्चगोजापर्णीचसप्तधा ॥

अर्थ-दुग्धफेनी, पय फेनी, फेनीदुग्धा, पयस्विनी, लूतारि, व्रणकेतु,
गोजापर्णी । नागाशुनीनामानि ।



नागार्जुनीपयोवर्पायोगिनीलघुदुग्धिका ।

अर्थ-नागार्जुनी, पयोवर्पा, योगिनी, लघुदुग्धिका ।

| | |
|-----------------|--|
| सस्कृतभाषामें | दुग्धिका, दुग्धफेनी, नागार्जुनी । |
| हिन्दीभाषामें | दुद्धी, दूधिया, दूधीकलव । |
| वगभाषामें | दुधि, दुध्या, दुदूले, क्षीरद, खिरद इत्यादि । |
| मराठीभाषामें | लघुदुधी, थोरदुधी । |
| गुजरातीभाषामें | दुधेलीमोटी, थोरदुधी । |
| कर्णाटकीभाषामें | मरिजवणीगे । |
| तैलिङ्गीभाषामें | पिलपालचेट्टु । |
| लैटिन्भाषामें | युफोर्विबार्हिटा । <i>Lupharbia hirta</i> यूपाविफ्लोरा <i>Luparviflora</i> युटाईमिफोलिया <i>Eu thymefolia</i> |
| फारसीभाषामें | निशाशत । |

दुग्धिकागुणा ।

दुग्धिकोष्णागुरूक्षवातलागर्भकारिणी ।

स्वादुक्षीराकटुस्तिक्तामृष्टमूत्रमलापहा ॥

स्वादुर्विष्टम्भिनीवृष्याकफकुष्ठकृमिप्रणुत् । (भा प्र)

अर्थ-दुद्धी-गरम, भारी, रूखी, वादी, गर्भकारक स्यादिष्ठ क्षीरयुक्त, मलमूत्रको निकालनेवाली, चरपरी, कडवी, मधुर, विष्टम्भजनक, वीर्यवर्द्धक तथा कफ, कोढ़, और कृमिनाशक है ।

दुग्धफेनीगुणा ।

दुग्धफेनीकटुस्तिक्ताशिशिराविपनाशिनी ।

व्रणापसारणीरुच्यायुत्तयाचेवरसायनी ॥ (रा० नि)

अर्थ-दुग्धफेनी-चरपरी, कडवी, शिशिर, विपनाशक, व्रणनिवारक, रुचिकारक आर किसीके साथ होनेसे रसायन है ।

नागार्जुनीगुणा ।

नागार्जुनीतुमधुरावृष्यारूक्षाचग्राहिणी । तित्ताचवातला

गर्भस्थापनीकटुकापटु ॥ धातुवृद्धिकरीहृद्याचोष्णापारद-

वन्धिनी । मलस्तम्भकरीमेढकफकुष्ठकृमिहरेत् ॥

अर्थ-नागार्जुनी (एकमकारकी दुद्धी)-मधुर, वीर्यवर्द्धक, रूखी,

ग्राही, कडवी, वातकारक, गर्भस्थापक, चम्परी, खारी, घातुवर्धक, हृदयको हितकारी, गरम, पारेको बाधनेवाली, मलको स्तम्भन करनेवाली तथा ममेह, कफ, कोढ़ और कृमिको दूर करेई ।

विवरण । दुद्धीका क्षुप छत्तासा होताई, ऊपरको कम उठताई, सितिम फैलताई, दुद्धी तीनप्रकारकी होतीई, एक नोकदार लाल पत्तोंकी, एक गोलपत्तोंकी और एक भूगोंके टानोंकी समान छोटे २ पत्तोंकी होतीई, तीनोंप्रकारकी दुद्धीमें दूध निकलता है ।

भूम्यामलीकोनामानि ।



मुहुआंवला.

भूम्यामलीशिवातालीशेत्रामलीचझारिका ॥

अर्थ-भूम्यामली-दिवा, ताली, क्षेत्रामली, शारिका (चटुपुष्पी, जडा, अध्यष्ठा, तालि, तामरकी, अजडा, सूक्ष्मफला, क्षेत्रामलकी, भूम्यामलकी, वितुन्नक, झडा, अफला, अमला, अजुडा, शरा, माला, शायामला, अम लजुडा, तमाली, तमालिका, तामरकी, उज्जडा, हृदपादी, विनुजा, विनु- न्तिका, भृघात्री, चारदी, घृष्पा, विपत्री, चटुपत्रिका, चटुवीर्या, अदि- मपदा, वीरा, विश्वपर्णा, हिमालया, अरुहा, भूम्यामलकिका, चटुपथा, चटुफला, भृषवा, दलस्पर्शिनी, चटुपुत्रा, सूक्ष्मदूला, हृदपाना, विन्तपर्णा, अमली, तमालिनी, पुत्रश्रेणिका, आमलकी, हिलालिका, चोरण)

सहस्रतभाषामे भूम्यामलकी ।

हिन्दीभाषामे मुहुआमला, भट्टाआंवला, पतालआंवला, भोमिआंवला

वगभाषामे मुहुआमला ।

मराठीभाषामे मुहुआवली ।

गुजगतीभाषामे भोआवली ।

कर्णाटकीभापामें आरुनेलि ।
तैलिङ्गीभापामें नेलाउसीरीके ।
लैटिन्भापामें फाईलेन्यस् निरुरी Phyllanthusniruri
फाईलेन्यस् युरिनेरिया P urinaria
अस्या गुणा ।

भूधात्रीचकपायाम्लापित्तमेहविनाशिनी ।

शिशिरामूत्ररोधार्तिशमनीदाहनाशिनी ॥ (रा०नि०)

अर्थ—भुईआमला—कपेला, खट्टा, शीतल तथा पित्त और प्रमेहनाशक,
मूत्ररोधनिवारक और दाहको शान्त करनेवाला है ।

अन्यञ्च ।

भूधात्रीवातकृत्तिकाकपायामधुराहिमा ।

पिपासाकासपित्तास्रकफपाण्डुक्षतापहा ॥ (भा प्र)

अर्थ—भुईआमला—वातकारक, कडवा, कपेला, मधुर, शीतल तथा
पिपास, खाँसी, रक्तपित्त, कफ, पाण्डुरोग और क्षननाशक है ।

अन्यञ्च ।

भूधात्रीतुविशेषेणविपघ्नीपुत्रदायिनी ॥ (शो०नि०)

अर्थ—भुईआमला—विशेषकरके विपनाशक और पुत्रदायक है ।

अपिच ।

भूधात्रीतुहिमातिकाकपायामधुरालघु ।

रोचनीपाण्डुपित्तास्रकफकुष्ठविपापहा ॥

जयेच्छ्वासतृपादाहहिक्काकासक्षतक्षयान् । (ग०नि०)

अर्थ—भुईआमला—शीतल, कडवा, कपेला, मधुर, हल्का, रुचिकारक
तथा पाण्डुरोग, रक्तपित्त, कफ, कोढ़, विष, ज्वाम, तृषा, दाह, हिचकी,
खाँसी, क्षत और क्षयका नाश करेहै ।

विवरण । भुईआमलेके क्षुप जोटे २ होते हैं, पत्तोंके नीचे राईके दानेके
समान फलोंकी शाखा होती है ।

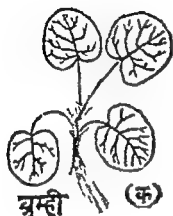
ब्राह्मीनामानि ।

ब्राह्मीवयस्थामत्स्याक्षीसुरसात्रह्यचारिणी ॥

अर्थ—ब्राह्मी, वयस्था, मत्स्याक्षी, सुरसा, अह्यचारिणी (सोमवलरी,
मत्स्याक्षी, सरस्वती, गोम्या, मुरध्रेष्ठा, मुवर्धला, कपोतवेगा, वेधात्री, दिव्य-

तेजा, महौषधि, स्वायम्भुवी, सौम्यलता, सुरेष्टा, ब्रह्मकन्यका, मण्डूकमाता,
मण्डूकी, भेद्या, वीरा, भारती, वरा, पद्मेष्ठिनी, दिव्या, शम्भु, कपोतवद्वा,
सोमवल्ली)

मण्डूकपर्णीनामानि ।



मण्डूकपर्णीमण्डूकीभेकीमण्डूकपर्णिका ॥

अर्थ-मण्डूकपर्णी, मण्डूकी, भेकी, मण्डूकपर्णिका (मण्डूकी, त्वाष्ट्री,
दिव्या, महौषधी, ब्रह्ममण्डूकी, मुषिपा, ददुच्छदा)

| | |
|-----------------|--|
| मसकृतभाषामें | ब्राह्मी, मण्डूकी, ब्रह्ममण्डूकी । |
| हिन्दीभाषामें | ब्राह्मी, ब्रह्ममण्डूकी, वग्भी, चोली । |
| वगभाषामें | ब्राह्मीशाक, अधविर्णी, गुलकुटि, थालकुनि । |
| मराठीभाषामें | ब्राह्मी । |
| गुजरातीभाषामें | ब्राह्मी, विद्याब्राह्मी, गडभगमी । |
| कर्णाटकीभाषामें | अदिलग । |
| तैलुगुभाषामें | अम्भनीचेट्ट, मण्डूकब्रह्मी । |
| तामिलभाषामें | वीमी, वल्लिकेरी । |
| संस्कृत | वाम, ब्राह्मी । |
| इंग्रेजीभाषामें | इण्डियन पेनीवर्ट । Indian penny wort |
| लैटिनभाषामें | हाइड्रो रोगदल एश्याटीका Hydrocotyle Asiatica |
| पारसीभाषामें | जगनव । |

ब्राह्मीगुणाः ।

ब्राह्मीदिभामरगतिकालप्वीमेभ्याचशीतला । कपायामधु-

रास्वादुपाकायुष्यारसायनी ॥ स्वय्यास्मृतिप्रदाकुष्ठपा-
ण्डुमेहासकासजित् । विपशोथज्वरहरीतद्वन्मण्डूकप-
र्णिनी ॥ (भा० प्र०)

अर्थ—ब्रह्मी—हिम, सारक (दस्तावर), हलकी, मेधाकारक, शीतल,
कपेली, मधुर, स्वादुपाकी, आयुर्वर्द्धक, रसायन, स्वरको उत्तम करनेवाली,
स्मरणशक्तिवर्द्धक तथा कोढ़, पाण्डु, प्रमेह, रुधिरविकार, रसासी, विष,
सूजन और ज्वरको हरनेवाली है, इसकेही समान मण्डूकपर्णीके गुण जानने ।

अन्यच्च ।

ब्राह्मीतुभेदिनीगुर्वीमेध्यापित्तकफापहा ॥ (राजवल्लभ)

अर्थ—ब्रह्मी—भेदक, भारी, मेधाजनक, तत्रा पित्त और कफनाशक है ।

अपिच ।

ब्राह्मीशीताकपायाचतित्ताबुद्धिप्रदामता । मेध्यायुरग्निज-
ननीसारकास्वादुलालघु ॥ कण्ठशुद्धिकरीहृद्यास्मृति-
दाचरसायना । हृद्यामेहविपकुष्ठपाण्डुकासज्वरजयेत् ।
शोफकण्डूघ्नीहवातरक्तपित्तारुचीर्जयेत् । श्वासशोपसर्व-
दोषकफवातामयाञ्जयेत् । सर्वेप्येतेगुणाब्रह्ममण्डूक्याम-
पिसंस्थिता । (नि० र०)

अर्थ—ब्रह्मी—शीतल, कपेली, कडवी, बुद्धिदायक, मेधाजनक, आयुव-
र्द्धक, अग्निजनक, सारक, स्वादिष्ठ, हलकी, कण्ठशोधक, हृदयको हितकारी,
स्मरणशक्तिवर्द्धक, रसायन तथा प्रमेह, विष, कोढ़, पाण्डुरोग, रसासी, ज्वर,
सूजन, कण्डू, घ्नीहा, वातरक्त, पित्त, अरुचि, श्वास, शोष, सकलदोष, कफ
और वातको दूर करनेवाली है । ब्रह्ममाण्डूकीकेभी इसीकेसमान गुण जानने ।

अन्यच्च ।

ब्राह्मीतुपिच्छलायुष्यासरोन्मादविमर्दिनी ।

वयस स्थापनीमेध्यावाक्स्वरस्मृतिदापरा ॥

तिक्ताहृद्याकटु पाकेश्वासश्लेष्मनिकृन्तनी । (ग० नि०)

अर्थ—ब्रह्मी—पिच्छिल, आयुर्वर्द्धक, सारक (दस्तावर), उन्मादनाशक,
अवस्थास्थापक, मेधाकारक तथा वाणी, स्वर और स्मरणशक्तिवर्द्धक है ।
कडवी, हृदयको हितकारी, पचनेम चर्परी और श्वास तथा कफनाशक है ।

मण्डूकपर्णगुणा ।

मण्डूकपर्णिकालध्वीस्वादुपाकासराहिमा ॥ (रा० व०)

अर्थ-ब्रह्ममण्डूकी-इल्की, पचनेमें स्वादिष्ठ, दस्तावर और शीतल है ।

अस्या गुणा ।

ब्रह्ममण्डूकिकापाण्डुविपशोथज्वरान्हरेत ॥ (इति दशा०)

अर्थ-ब्रह्ममण्डूकीका अर्क-पाण्डुरोग, विपदोष, सृजन और ज्वरको दूर करनेवाला है ।

विवरण । ब्रह्मीके शुष्का उचासा प्रायः सजल क्षिति अथवा जलाशयके समीप भूमिमें होता है, पत्ते-छोटे २ गोल एक ओरसे खिले हुए होते हैं, दूसरी ब्रह्ममण्डूकी होती है, उसके पत्ते-छोटे होते हैं ।

द्रोणपुष्पीनामानि ।

द्रोणाचद्रोणपुष्पीचफलेपुष्पाचकीर्तिता ॥

अर्थ-द्रोणा, द्रोणपुष्पी, फलेपुष्पा, (क्षयपत्री, कुम्भयोनि, कुरुम्बिका, चित्राक्षुष, कुरुम्बा, सुपुष्पी, चित्रपत्रिका, भसनक, पालिन्दी, कुम्भयोनिका, छत्राणी, छत्रका, कौण्डिन्य, वृक्षमारक)

संस्कृतभाषामें द्रोणपुष्पी ।

हिन्दीभाषामें गूमा, गोमा ।

बंगालीभाषामें द्रोणपुष्पी (घलघमे)

मराठीभाषामें कुम्भा, तुम्बा ।

गुजरातीभाषामें कुम्बो ।

कर्णाटकीभाषामें तुम्ब ।

तैलिङ्गीभाषामें लुगुगुम्मि ।

लैटिनभाषामें ल्युकासतिपेन्लेस *Leucas cephalotus*

अस्या गुणा ।

द्रोणपुष्पीगुरु स्वाद्वीरुक्षोष्णाशतपित्तकृत ।

सतीक्ष्णालवणाम्वादुपाकाकट्टीचभेदिनी ॥

कफामकामलाशोथतमकश्चामजन्तुजिन । (भा० प्र०)

अर्थ-द्रोणपुष्पी (गूमा)-भारी, स्वादिष्ठ, रुग्णी, गम्भ, वातपित्तदायक, तीक्ष्ण और लक्षणास्युक्त, पचनेमें भी स्वादिष्ठ, चरपरी, दस्तावर तथा पच, नाम, यामत्रा, सृजन, तमकशाम और कृमिको दूर करे है ।

अन्यच्च ।

द्रोणपुष्पीकफाशोग्रीकामलाकृमिशोथजित ॥ (रा० व०)

अर्थ—द्रोणपुष्पी (गृमा)—कफ, ववामीर, कामला, कृमि और सूजनको दूर करे है ।

अपिच ।

द्रोणपुष्पीकटुसोष्णारुच्यावातकफापहा ।

अग्निमांघ्रहराचैवपक्षाघातस्यनाशिनी ॥ (शो० नि०)

अर्थ—गृमा—चरपरा, गरम, रुचिकारक तथा वात, कफ, मदाग्नि और पक्षाघात रोगनाशक है ।

अस्या पत्रगुणा ।

द्रोणपुष्पीदलंस्वादुरुक्षंशुचपित्तकृत ।

भेदनंकामलाशोथमेहज्वरहरंकटु ॥ (भावप्रकाश)

अर्थ—गृमाके पत्ते—स्वादु, रुखे, भारी, पित्तकारक, भेदक तथा कामला, सूजन, प्रमेह और ज्वरको हरनेवाले हैं ।

विवरण । गृमाका छुप होता है, गुच्छे गाठ २ म होते हैं, उन गुच्छोंम सफेद फूल होता है । और फूलके ऊपर दो पत्ते होते हैं । इनके भीतर बीज होते हैं । मात्रा २ मासेकी ।

आदित्यभक्तानामानि ।

आदित्यभक्तावरदार्कभक्तासुवर्चलासूर्यलतार्ककान्ता ।

मण्डूकपर्णीसुरसम्भवाचसोग्रिस्सुतेजार्कहितारवीष्टा ॥

मण्डूकीसत्यनाम्नीस्यादेपामार्तण्डवल्लभा ।

विक्रान्ताभास्करेष्टाचभवेदष्टादशाह्वया ॥

अर्थ—आदित्यभक्ता—वरदा, अर्कभक्ता, सुवर्चला, सूर्यलता, अर्ककान्ता, मण्डूकपर्णी, सुरसम्भवा, चाँगी, सुतेजा, अर्कहिता, रवीष्टा, मण्डूकी, सत्यनाम्नी, मार्तण्डवल्लभा, विक्रान्ता, भास्करेष्टा (सूर्यावर्ता, रविप्रीता) और दूसरी त्रयसुवर्चला इसीकाही भेद है ।

संस्कृतभाषामें

आदित्यभक्ता, सुवर्चला, त्रयसुवर्चला ।

हिन्दीभाषामें

दुग्धज, त्रयसौचली, सौचली ।

यगभाषामें

दुग्धज, वनशलते ।

| | |
|-----------------|--------------------------------------|
| मराठीभाषामें | सूर्यफूल । |
| गुजरातीभाषामें | सूरजमुखी । |
| कर्णाटकीभाषामें | दुरदुर, आदित्यभक्ति । |
| तैलिङ्गीभाषामें | सूर्यकान्तिषु । |
| इंग्रेजीभाषामें | सफलावर । Sunflower |
| लैटिन्भाषामें | हेलिपथस् एन्थुअस । Helianthus annuus |
| फारसीभाषामें | गुलेआफतावपरस्त । |
| अरबीभाषामें | अरदमून । |

आदित्यभक्तागुणा ।

आदित्यभक्ताशिगिरासतित्तापदुस्तथोग्राकफहारणीच ।

त्वग्दोषकण्डूव्रणकुष्ठभूतग्रहोग्रशीतज्वरनाशिनीच ॥ (रा०)

अर्थ-आदित्यभक्ता (दुरदुर)-शीतल, कडवी, खारी, उष्ण, कफनाशक तथा त्वचाके विकार, कण्डू, व्रण, कुष्ठ, भूत, और उष्णग्रन्थिज्वरनाशक है ।

अन्यथा ।

आदित्यभक्ताकटुकाशीतातित्तातिपित्तला । रुक्षाम्वाढी
चकट्टीचकफवातव्रणापहा । शीतज्वग्भूतग्राधग्रहपीडांवि-
नाशयेत् ॥ मेहकृमींश्चकुष्ठअत्यग्दोषविनाशयेत् ॥ (नि० २०)

अर्थ-आदित्यभक्ता (दुरदुर)-चर्मपी, शीतल, कडवी, अत्यन्त पित्तकारक, रुखी, स्वादिष्ठ, खारी, तथा कफ, वात, व्रण, शीतज्वर, भूत-माघा, ग्रहपीडा, प्रमेह, कृमि, कोष्ठ और त्वचाके दोषोंको दूर करनेवाला है ।

अन्यथा ।

सुवर्चलादिभिर्रुक्षाम्वादुपाकामगगुरु ।

अपित्तलाकटुभागविष्टम्भकफनातजित ॥ (भा० प्र०)

अर्थ-दुरदुर-शीतल रुखा पचनेमें स्वादिष्ठ, दृढावर, भारी, पित्तपा-
क नहीं, चरपरा, खारी तथा विष्टम्भ, कफ, और वातको दूर करनेवाला है ।

अन्यथा ।

सुवर्चलागुरुःशीतामृत्रलाकर्णशूलनुत ॥

अर्थ-दुरदुर-भारी, शीतल, मृत्रजनक और कण्ठगुन्नाशक है ।

अन्यथागुरुः ।

अन्यानित्तरूपायोग्यासराश्चालषु कटुः ।

निहन्तिकफपित्तास्रश्वासकासारुचिज्वरान् ॥

विस्फोटकुष्ठमेहास्रयोनिरुक्कृमिपाण्डुता ॥

अर्थ—ब्रह्मसुवर्चला (ब्रह्मसोचली)—कपेली, गरम, सारक (दस्तावर), हलकी, चरपरी तथा कफ, रक्तपित्त, श्वास, खासी, अरुचि, ज्वर, विस्फोटक, कोढ़, प्रमेह, रुधिरविकार, योनिरोग, कृमि और पाण्डुरोगको दूर करनेवाली है ।

अन्यच्च ।

अन्योष्णाकुष्ठमेहाश्मकृच्छ्रज्वरहरालघु ॥ (म० नि०)

अर्थ—ब्रह्मसोचली—गरम, हलकी तथा कोढ़, प्रमेह, पथरी, मूत्रकृच्छ्र और ज्वरको हरनेवाली है ।

आदित्यपत्रागुणा ।

आदित्यपत्रावीर्योष्णाकट्टीसदीपनीमता । स्वर्यारसायनी
तिक्तातुवराचसरामता ॥ रुक्षालघ्वीचसप्रोक्ताकफवातवि-
नाशिनी । रक्तदोषज्वरश्वासकासविस्फोटकतथा ॥ कुष्ठ
मेहचारुचिचयोनिशूलतथाश्मरीम् । मूत्रकृच्छ्रपाण्डुरोग
गुल्मश्चैवविनाशयेत् ॥ (नि० २०)

अर्थ—आदित्यपत्रा—उष्णवीर्य, चरपरा, अग्निप्रदीपक, स्वरको उत्तम करनेवाला, रसायन, कडवा, कपेला, दस्तावर, रुखा, हलका तथा कफ, वात, रुधिरविकार, ज्वर, श्वास, खासी, विस्फोटक, कोढ़, प्रमेह, अरुचि, योनिशूल, पथरी, मूत्रकृच्छ्र, पाण्डुरोग और गुल्मका नाश करेहै ।

विवरण । ब्रह्मसुवर्चला—अर्थात् दुरदुरकी बेल तथा धुप होतेहैं, यह विशेषकरके यागमें बोधे जाते हैं, प्रायः इसपर स्योदपके होनेपर फूल प्रकुलित होजाते हैं, बेलवाले दुरदुरमें जो फूल आते हैं वह नीले रंगके होते हैं, और धुपवाले दुरदुरके फूल सफेद होते हैं, बहुत सुन्दर और सरस्योकांग होते हैं, परन्तु बहुत छोटे होते हैं ।

चण्ड्याकट्टीनामानि ।

वन्ध्याककाटकीदेवीकान्तायोगेश्वरीतिच ।

नागारिर्भक्तदमनीविपकण्टकिनीतथा ॥

अर्थ—चण्ड्याककाटकी, देवी, कान्ता, योगेश्वरी, नागारि, भक्तदमनी, विपकण्टकिनी (नागागति, वन्ध्या, नागहन्त्री, मनोज्ञा, पथ्या, दिवा, पुनदा,

मकन्दा वन्दवल्ली, ईश्वरी, श्रीकन्दा, सुगन्धा, गण्डमनी, विषकन्दकिनी, वरा,
नक्रदमनी, कन्दशालिनी, भूतापहा, सर्वोपवी, विषमोहप्रशमनी, महायोगेश्वरी)

सस्कृतभाषामे वन्ध्याककोटकी ।

हिन्दीभाषामे वासखखसा, वनककोडा, वासककोडा ।

बगभाषामे तित्काकरोल, तित्काकडी ।

मराठीभाषामे वासकटोली ।

गुजरातीभाषामे वासकण्टीलो ।

कर्णाटकीभाषामे वजेमडुबागलु ।

लैटिनभाषामे मोमोंडको डायोइकामेल Momodora dioica
अस्या गुणाः ।

वन्ध्याककोटकीतित्काकटूष्णाचकफापहा ।

स्थावरादिविषघ्नीचशस्यतेसारमायने ॥ (रा. नि)

अर्थ-वासककोडा-कडवा, चरपरा, गरम, कफनाशक, स्थावरादि विष-
विनाशक और पाण्डेको बाधनेवाला है ।

अपघ्न ।

वन्ध्याककोटकीलघ्वीरुफनुद्रणशोधिनी ।

सर्पदर्पहरीतीक्ष्णाविमर्षविषहाग्नि ॥ (भावप्रकाश)

अर्थ-वनककोडा-हल्का, कफनाशक, घण्टाघक, सर्पके विषको हर-
नेवाला, तीक्ष्ण तथा विमर्ष और विषको दूर करनेवाला है ।

अपिण ।

वन्ध्याककोटकीतित्काकट्टीचोष्णालघु स्मृता । रसायनी

शोधिनीचमथावगादिविषापहा ॥ कफनेत्रजिरोरोगव्रणघ्नी-

सर्पकासहा । रक्तदोषमर्षविषनाशयेदितिकोत्तिता ॥ (नि.र)

अर्थ-वासककोडा-कडवा, चरपरा, गरम, हल्का, रसायन, शोधन,
स्थावरादिविषनाशक तथा कफ, नेत्ररोग, मम्मरोग, घण, विष, रोगी,
शोधनविनाश और सापके विषको दूर करनेवाला है ।

विवरण-वन्ध्याककोटकी अर्थात् वासककोटकी के कटोरे में गमान
जगत् के मृतापण के ज्ञाती है, पशु इगम पक्ष नहीं आते, इगम के इगमो
पापककोटा रहती है, कफ के स्थान में रक्त, मूत्र कोष होता है और इगमो
जड़ के नीचे गोश्वने पक्ष कन्द निगमना है ।

अस्या जन्द्गुणा ।

वन्ध्याकर्कोटकीकन्दोहन्तिश्लेष्मविपद्भ्यम् ॥ (शो०नि०)

अर्थ—वनककोटेका कन्द—कफ और दोनों प्रकारके विष, (स्थावर और जगम) को दूर करनेवाला है ।

मार्कण्डिकानामानि ।

मार्कण्डिकाभूमिचरीमार्कण्डीमृदुरेचनी ॥

अर्थ—मार्कण्डिका, भूमिचरी, मार्कण्डी, मृदुरेचनी, (भूमिवल्ली, पीत-पुष्पी, पीतपुष्पा, महौषधी, जालतीका)

संस्कृतभाषामें मार्कण्डिका ।

हिन्दीभाषामें भुईखखसा । (सनाय)

बगभाषामें काकरोलभेद ।

मराठीभाषामें सोनामुखी ।

द० सोनामुखी ।

टे० आहुली ।

गुजरातीभाषामें भीठीआवलय ।

कर्णाटकीभाषामें तलाडवल्ली ।

तेलङ्गीभाषामें नेलतण्डी ।

इंग्रेजीभाषामें जालेक्झाण्डियन—सेना । Alexandrian-sena

लैटिनभाषामें सेन्नेफोलिआ । Sennefolia

केसियाण्गस्टिफोलिआ । Cissia augustifolia

फारसीभाषामें सना ।

अरबीभाषामें सना ।

अस्या गुणा ।

मार्कण्डिकाकुष्ठहरीऊर्द्धाध कायशोधिनी ।

विषदुर्गन्धकासघ्नीगुल्मोदरविनाशिनी ॥ (भा०प्र०)

अर्थ—भुईखखसा—कुष्ठनाशक, ऊपर और नीचेसे शरीरका शोधन करने-वाला, तथा विष, दुर्गन्ध, खासी, गुल्म और उदररोगोंको हरनेवाला है ।

विवरण । भुईखखसाकी एक लता होतीहै, पत्ते—परखलकी समान होतेहैं और फूल पीले रंगके होतेहैं ।

देवदालीनामानि ।



देवदाली (पन्दाह)

जीमूतक कण्टफलागरागरीवेणीसहाकोपफलाचकदफला ।

घोराकदम्बाविपदाचकर्कटीस्यादेवदालीखलुसारमृपिका ॥

वृत्तकोपाविपद्भीचदालीलोमशपत्रिका ।

तुरंगिकाचतर्कारीनाम्रामेकोनविभति ॥

अर्थ-जीमूतक, कण्टफला, गगरी, वेणी, गहा, कोपफला, कदफला, घोरा, कदम्बा, विपदा, कर्कटी, देवदाली, सारमृपिका, वृत्तकोपा, विपद्भी, दाली, लोमशपत्रिका, तुरंगिका, तर्कारी (देवताड, गरनाशिनी, घोषा, आखुविपदा, चतुरगका, देवदालिका, पांता, रास्पगा)

संस्कृतभाषामें

देवदाली ।

हिन्दीभाषामें

सर्निया, घघरबेल, विदाली घुसगा बदाम ।

बगभाषामें

घोषकात्ताविशेष, दयाताडा ।

मराठीभाषामें

देवदाली, देवदगरीपत्र ।

गुजरातीभाषामें

खुडवेत्य ।

तैलिङ्गीभाषामें

डातरगाण्डि, लताविशेषम् ।

कर्णाटकीभाषामें

देवडगर ।

इंग्रजीभाषामें

मिस्टलि-ल्युफा । Earthy-lutea

लैटिन् भाषामें

न्युफाणकिनेग । I 1191 I 11224

या०

मन्त्र ।

अस्या गुणाः ।

देवदालीरसेपाकेनित्तातीक्ष्णाविषापहा ।

वामनीहन्तिगुदजकफशोफामकामला ॥

ज्वरकासारुचिश्वासहिध्मापाण्डुक्षयकिमीन् । (रा नि)

अर्थ—देवदाली (घघरवेल)—रस और पाकमें कडवी, तीक्ष्ण, विपनाशक, वमनकारक, तथा गुदजरोग, कफ, शोफ आम, कामला, ज्वर, खासी, अरुचि, श्वास, हिध्म, पाण्डु और क्षयरोगका नाश करे है ।

अपिच ।

देवदालीवमिकरातिक्ताचोष्णाचक्ष्मणातीक्ष्णापाण्डुक-
फश्वासकासार्षक्षयनाशिनी ॥ कामलाकृमिहिक्राघ्नीज्वर
शोथविपापहा । भूतवाधारुचिहरा चोदुरोर्विपनाशिनी ॥
फलमस्या सरतिक्तगुल्मकिमिकफापहम् । शूलार्शकाम-
लावातनाशकपरिकीर्तितम् ॥ (नि० र०)

अर्थ—देवदाली (घघरवेल)—वमनकारक, कडवी, गरम, चरपरी, तीक्ष्ण तथा पाण्डुरोग, कफ, श्वास, खासी, ज्वासीर, क्षय कामला, कृमि, हिचकी, ज्वर, सूजन, विष, भूतवाधा, अरुचि और मूषेके विषको दूर करनेवाली है । इसका मूल—सारक, कडवा तथा गुल्म, कृमि, कफ, शूल, ववासीर और कामला वातको हरनेवाली है । अन्यथा ।

देवदालीत्रयश्वासज्वरकासकफापहम् ।

आखोर्विपनिहन्त्याशुवामकश्चिरेचकम् ॥

श्वेतारक्ताचपीताचदेवदालीगुणै समा । (शो० नि०)

अर्थ—तीना प्रकारकी देवदाली—श्वास, ज्वर, खासी, कफ और मूषेके विषको दूर करे है तथा वमनकारक और चिरेचक है । सफेद, लाल और पीली इन तीना देवदालीके गुण समान हैं ।

विवरण । देवदाली, बन्दाल, घघरवेल, मुनया और सखमाके फलवाली बड़ीवेल होती है, सेतकी बाडोपर किसान लोग बहुत लगाते हैं, फल—सफेद पीले और लाल तीन रंगके होते हैं, फलोंके ऊपर बहुत छोटे २ कटि होते हैं, इसका फल छोटी तुगाईकेसा होती है ।

जलपिप्पलीनामानि ।

जलपिप्पल्यभिहिताशाग्दीशकुलादनी ।

मत्स्यादनीमत्स्यगन्वालाङ्गलीत्यपिकीर्तिता ॥

अर्थ-जलपिप्पली, शारदी, शकुलादनी, मत्स्यगन्वा, लाङ्गली (महा
गङ्गी, तोयवल्लरी, अग्निज्वाला, चित्रपत्री, माणदा, तृणशीता, वटुगिरा)

सस्कृतभाषामें जलपिप्पली ।

हिन्दीभाषामें पनिसिगा, गगतिग्या, जलपीपर ।

वगभाषामें कौचडाघास, पनिसिगा ।

मराठीभाषामें जलपिपळी ।

गुजरातीभाषामें रतवेलियो ।

कर्णाटकीभाषामें होमुगुड ।

इंग्रेजीभाषामें परपल लिप्पा । Purple Lippala

लैटिन्भाषामें लिपियानोदिप्रोरा । Lippia Nodiflora

फारसीभाषामें पीपलआबी ।

अरबीभाषामें पिल्लिलमाय ।

अस्या गुणा ।

जलपिप्पलिकाहृद्याचक्षुष्याशुकलालघुः ।

सग्राहिणीहिमारुक्षारक्तदाहव्रणपहा ॥

कटुपाकरमारुच्याकपायावद्विवर्द्धिनी । (भा० प्र०)

अर्थ-जलपीपल-हृदयको हितकारी, नेत्राको हितकारी, शुभचनक,
हलकी, मलरोधक, शीतल, रुखी, पचनेमें और रसम चरपरी, रुचिकायक,
कंपली, अग्निवर्द्धक तथा रुधिरविकार, दाह और व्रणका दूर करे दे ।

अन्यथा ।

जलपिप्पलिकाहृद्याचक्षुष्याशीतलामता । रमकालेचकटु

काग्राहिणीशुकलालघु ॥ रुक्षातीक्ष्णाचतुर्वगमुखशुद्धि-

करीमता । रुच्याग्निदीपनीवातकाग्निरीरक्तदोषहा ॥ रस-

दोषंकृमीन्दाहव्रणश्वासकफतथा । वातविपंश्रसंमृन्त्रांतृपां

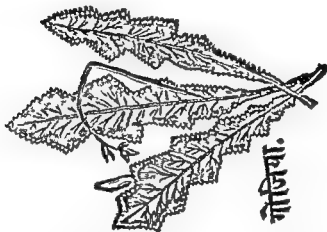
पित्तज्वरहरेत् ॥ (नि० २०)

अर्थ-जलपीपल-हृदयको हितकारी, नेत्राको हितकारी, शीतल, कटु
रसान्वित, माही, शुभचनक, हलकी, रुखी, तीक्ष्ण, पचनी, शुभको शुद्ध
पचोत्पादी, अग्निवर्द्धक, वातकायक तथा रुधिरविकार, रस

दोष, कृमि, दाह, घ्रण, श्वास, कफ, वात, विष, भ्रम, सूच्छा, तृषा और पित्तज्वरको दूर करे है ।

विवरण । जलपीपलके क्षुप-प्रायः सजल भूमिमें उत्पन्न होते हैं, पत्ते-बड़ी नोलियाके समान और नोकदार होते हैं, इसमें पीपलके समान एक चाल निकलती है ।

गोजिह्वानामानि ।



गोजिह्वादार्विकागोभीकुरसादार्विपत्रिका ॥

अर्थ-गोजिह्वा, दार्विका, गोभी, कुरसा, दार्विपत्रिका (अनडुजिह्वा, दार्विका, दवीं, दावी, गोजिह्विका, खरपत्री, वातोना, अधोमुख, अध पुष्पी ।

संस्कृतभाषामें गोजिह्वा ।

हिन्दीभाषामें गोजिया, गोभी ।

वगभाषामें दाडिशक ।

मराठीभाषामें पायरी ।

गुजरातीभाषामें भोपायरी ।

तैलिङ्गीभाषामें येदुनालुकचेदुदु, भरीलिकचेदुदु ।

लैटिनभाषामें एलिफेण्टोपस् स्फेवर । *Elophuntopus Scalar*

फारसीभाषामें कलमरूमि ।

अस्या गुणा ।

गोजिह्वावातलाशीताग्राहिणीरुफपित्तनुत ।

हृद्याप्रमेहकासाम्रघ्नज्वरहरीलघु ॥

कोमलातुवगतिक्तास्वादुपाकारसास्मृता । (भा० प्र०)

अर्थ-गोभी-वातजारक, शीतल, माही, कफपित्तनाशक, रूक्षको हितकारी, हल्की तथा प्रमेह, खाँसी, रुधिरविकार, म्रण और ज्वरको हरनवाली है, तथा कोमल, रुपेली, कडवी, पचनेमें और रसम स्वादिष्ट है ।

अन्यथा ।

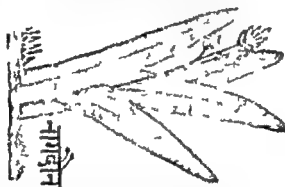
गोजिह्वाकटुकातिक्ताशीतलाव्रणरोपिणी ।

पित्तसर्वविपहन्तिकासारुचिविनाशिनी ॥ (नि०२०)

अर्थ-गोभी-चरपरी, कडवी, शीतल, म्रणको भरनेवाली तथा पित्त, सर्व प्रकारके विष, खाँसी और अरुचिको दूरकरनेवाली है ।

विवरण । गोभीका धुप होताहै, पत्ते-लम्बे और सरसरे होते हैं, फूट-सुपुणके वर्णके समान चक्राकार होताहै, पत्तोंके बीचमें एक बाल निपल-ताहै । इसको शाकरी गोभी नहीं समझना चाहिये ।

नागदमनीनामनि ।



विज्ञेयानागदमनीउलामोटाविपापहा ।

नागपुष्पीनागपत्रामहायोगेस्वरीतिच ॥

अर्थ-नागदमनी, घटा, मोटा, विपापहा, नागपुष्पी, नागपत्रा, मदायी-नेत्रवी, (जम्बु, नाम्बरती, घृफा, रक्तपुष्पी, जाम्बवी, मट्ठी, दृधंपा, दुग्धहा, वृत्ता, वृत्तपुष्पा, मदग्नी, विषमोदनी, विषन्ता, वनकुमारी विपारी, श्रीचन्दा, वदशास्त्रिनी, विषविनाशिनी)

सम्पूतभाषाम

नागदमनी ।

हिन्दीभाषामें

नागदमा, नागमैन ।

बंगलाभाषामें

नागन्ना ।

मराठीभाषामें

नागदवणी ।

गुजरातीभाषामें

नागदमज ।

कन्नड़भाषामें

नागदमनी ।

तैलङ्गीभाषामें
तामिलीभाषामें
नेपालीभाषामें
लैटिनभाषामें

ईश्वरिचेदुट्ट दरणमु ।
माचिपत्री ।

तितापात ।

आर्गटिमसियाबुल्गेरिस् साइन ए इण्डियन ।

Artimisia vulgaris Syn A Indran

अस्या गुणा ।

बलामोटाकटुस्तिक्तालघु पित्तकफापहा । मूत्रकृच्छ्रव्रणा-
त्रक्षोनाशयेज्जालगर्दभम् ॥ सर्वग्रहप्रशमनीविशेषविपना-
शिनी । जयसर्वत्रकुरुतेधनदासुमतिप्रदा ॥ (भा० प्र०)

अर्थ—नागदौन—चरपरी, कडवी, हल्की, तथा पित्त, कफ, मूत्र, कृच्छ्र,
घाव, राक्षसबाधा, और जालगर्दभरोगको दूरकरनेवाली है । सर्वग्रहोंको
शान्ति करनेवाली और विशेषकरके विपनाशकहै, सर्वत्र जयकारक, धन
और सुमतिदायक है ।

अन्यथा ।

जेयाजम्बूस्त्रिदोषघ्नीतीक्ष्णोष्णाकटुतिक्ता ।

उदराध्मानदोषघ्नीकोष्ठशोधनकारिणी ॥ (रा० नि०)

अर्थ—नागदौन—त्रिदोषनाशक, तीक्ष्ण, गरम, चरपरी, कडवी, उदरके
अफारेको दूर करनेवाली, और कोठेको शुद्ध करनेवालीहै ।

अपिच ।

प्रोक्तानागदमन्युष्णातिक्तालघ्वीरुचिप्रदा ।

कोष्ठशुद्धिकरीतीक्ष्णाकटुकायोनिदोषजित् ॥

लूतासर्पविपवातंकफवान्तिक्ममीन्द्रणम् ।

मूत्रकृच्छ्रचोदरञ्चजालगर्दभक्तथा । त्रिदोषप्रमेहञ्चका-
सकण्ठरुजतथा । शूलगुल्मरक्तदोषज्वरम्वविपाणिच ।

आध्मानग्रहपीडाञ्चनाशयेदितिकीर्तिता । (नि० र०)

अर्थ—नागदौन—गरम, कडवी, हल्की, रुचिदायक, कोठेको शुद्धकर-
नेवाली, तीक्ष्ण, चरपरी तथा योनिदोष, मकड़ी और साँपका विष, कफ,
वमन, कृमि, घाव, मूत्रकृच्छ्र, उदररोग, जालगर्दभ, त्रिदोष, प्रमेह, खामी,

कण्ठरोग, शूल, गुल्म, रुधिरविकार, प्वर, सर्वविष, आध्मान और ग्रहपीडाको दूर करनेवाली है ।

विवरण । नागदमनको कितनेक वंश ता होना कहते हैं और किननेक भिषग्वर सुदर्शन कहते हैं, सो हमको ठीक = निश्चय नहीं होता कि, नाग दमन क्या वस्तु है ।

छिफनीनामानि ।



नाकछिफनी.

छिफनीक्षवकृत्तीक्ष्णाछिफिकाघ्राणदुःखदा ।

अर्थ-छिफनी, क्षवकृत्, तीक्ष्णा, छिफिका, घ्राणदुःखदा, (उष्मा, उग्र गन्धा, क्षरक, कूरनासा, सवेदनापट्ट)

सम्भृतभाषामें

छिफनी ।

हिंदीभाषामें

नाकछिफनी ।

वगभाषामें

होंबुटी, छिफनी, हेंचेतागाछ ।

मराठीभाषामें

नाकशिकणी ।

गुजरातीभाषामें

नाकछीकणी ।

लैटिनभाषामें

सैंटिपीदा ऑंधेयुलरीस् । *Sentipela Orlanulores*

फारसीभाषामें

येरगाउजपा ।

अरबीभाषामें

उफरकटुदुग ।

अभ्या सुधा ।

छिफनीकटुकारुभातीक्ष्णोष्णावह्निपित्तकृत ।

वातगुक्तदरीकुष्ठकृमिवातरुफापहा ॥ (भा० ३०)

अर्थ-नाकछिफनी-चर्मरी, रुग्री, तीक्ष्ण, गरम, अग्निवाक, पित्तकार, तथा वातगुक्त, फोड, कृमि, वात, और कयनाशक है ।

अपिष ।

छिफनीकटुकारुन्यापित्तलात्राग्निदीपनी ।

लब्धपुष्पातुगतीत्रगन्धात्वग्दोषनाशिनी ॥

कफवातश्वेतकुष्ठकृमिरक्तरुजस्तथा ।

ग्रहपीडाभूतवाधादृष्टिश्चैवविनाशयेत् ॥

अर्थ—नाकठिकनी—चरपरी, रुचिकाक, पित्तकारक, अग्निदीपक, हलकी, गरम, कपेली, तीव्रगन्धयुक्त, तथा त्वचाके दोष, कफ, वात, श्वेत-कुष्ठ, कृमिरोग, रक्तविकार, ग्रहकी पीडा, भूतवाधा और दृष्टिके दोषोंको दूर करनेवाली है ।

विवरण । नाकठिकनीका क्षुप छोटा होताहै, पत्ते छोटे होतेह । इसके नीचे कड होताहै, इसके पत्ताको वा डडीको सूँघनेसे ठीकें आतीहै ।

अन्यञ्च ।

छिक्कनीश्वासकासासृग्विपघ्नीवामनीमता । (शो०नि०)

अर्थ—नाकठिकनी—श्वास, खासी, रुधिरविकार, और विपविनाशक है । तथा वमनकारक है ।

कुकुन्दरनामानि ।

कुकुन्दरस्ताम्रचूड सूक्ष्मपत्रोमृदुच्छद ।

अर्थ—कुकुन्दर, ताम्रचूड, सूक्ष्मपत्र, मृदुच्छद, (कुकुरदु) ।

संस्कृतभाषामें कुकुन्दर, कुकुरदु ।

हिन्दीभाषामें कुकुरीदा ।

बंगभाषामें कुकुरदाका, कुकुरमुता ।

मराठीभाषामें कुकुरवदा ।

गुजरातीभाषामें कौकुरुदा ।

लैटिनभाषामें ब्ल्युमियाओडोरेटा । *Blumen Odorata*

फारसीभाषामें कमाकिमुस ।

अरबीभाषामें सनीयस्ल अर्द ।

भस्पा गुणा ।

कुकुन्दर कटुस्तिक्तोज्वरघ्नश्चोष्णकृन्मत ।

गत्तरुक्कफदाहानांतृपायाश्चैवनाशन ॥

अस्यार्द्रमूलश्चमुखेधारितमुखदोषनुत । (नि० २०)

अर्थ—कुकुरीदा—चर्मपत्र, कडवा, ज्वरनाशक, गरम, तथा रुधिरविकार, कफ, दाह, और तृपाको दूर करनेवाला, है । इसकी कच्ची जड़को मुरमं रखनेसे मुखके रोग दूर होतेह ।

विवरण । कुक्कुटिके धुप, लम्पे लम्पे होते हैं । विनेष करके शार्ङ्गके
स्यानोंमें उत्पन्न हो जाते हैं, पत्ते तम्बाकूकी समान बड़े बड़े होते हैं, इनके
ऊपर लाल शिखा होती है ।

सुदर्शननामानि ।

सुदर्शनासोमवल्लीचक्राङ्गीमधुपर्णिका ।

अर्थ-सुदर्शना-सोमवल्ली, चक्राङ्गी, मधुपर्णिका (चक्राङ्गा, श्यामी,
वृषकर्णा, चक्राङ्गा) ।

हिन्दीभाषामें सुदर्शन ।

वगभाषामें सुदर्शनगुलभ, पद्मगु० ।

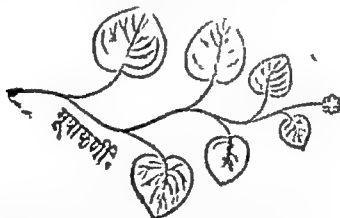
अस्या गुणा ।

सुदर्शनाम्बादुरुष्णाकफशोफास्रवातजित् । (भा० प्र०)

अर्थ-सुदर्शन-स्यादिष्ठ, तगम, तथा कफ, सृजन, शीत वातरक्तको
हरनेवाला है ।

विवरण । सुदर्शनका धुप चक्रका समान होता है, पत्ते लम्पे लम्पे शार्ङ्गी
समान होते हैं कभी कभी किसीपर सुपेन्द रंगका पृथ्वी आता है ।

भागुपर्णानामानि ।



मृपाकर्ण्यासुपर्णोचवृषपण्यासुकर्णिका ।

भूमिचरीद्रवन्तीचशम्भरीभृगुश्रया ॥

अर्थ-मृपाकर्णा-भागुपर्णा, वृषपर्णी, भागुकर्णिका, भूमिचरा, द्रवन्ती,
शम्भरी, भृगुश्रया (वृषिका, उन्दुरकर्णी, श्यामी, भागुपर्णी, शिख
पर्णी, भृगुकर्णिका, माता, भूमिचरी, चन्द्रा यस्यादिक, भृगुपर्णी,
गुणा, सुवन्तरी, आदिभू शिखा, मृगणा, शतशुक्ला, भागुकर्णिका, मृषि

कपर्णी प्रतिपर्णशिका, सहस्रमूषी, विक्रान्ता, पत्रश्रेणी, आखुपर्णी, पर्णिका, भूदरीभवा, उपचित्रा, मूषिकाहया, रण्डा, आखुपर्णिका, मूषिका, फलिप-
निका, मूषिपर्णिका, सचित्रा मूषीकर्णी, सुकर्णिका, न्यग्रोधी) ।

सस्कृतभाषामें आखुकर्णी, मूषाकर्णी, द्रवन्ती ।

हिंदीभाषामें मूसाकानी ।

बंगलाभाषामें उन्दुरकानीपाना ।

मराठीभाषामें उदिरकानी भोपनी ।

गुजरातीभाषामें उदरकनी ।

कर्णाटकीभाषामें वलिहहें ।

तैलङ्गीभाषामें एडुकचेविचेट्टु ।

लैटिनभाषामें आईपोमिया रेनिफोर्मिस, Ipomoea Renniformis
लेक्टेकारिमोटील्फोरा । Lactearemotiflora

फारसीभाषामें गोरोमुप, सतर ।

अरबीभाषामें अजानुलफार ।

यु० शरदम् ।

अरुपा गुणा ।

आसुकर्णीकटुस्तिक्ताकपायाशीतलालघु ।

विपाकेकटुकामूत्रकफामयकृमिप्रणुत ॥ (भा० प्र०)

अर्थ—मूसाकानी—चरपरी, कडवी, कपेली, शीतल, हल्की, पचनेम
चरपरी तथा मूत्ररोग, कफरोग और कृमिरोगको दूर करनेवाली है ।

अन्यत्र ।

द्रवन्तीकृमिहृत्तीक्ष्णायोनिदोपहरासरा । (शो० नि०)

अर्थ—मूसाकानी—कृमिनाशक, तीक्ष्ण, मारक और योनिदोषहारक है ।

अपिच ।

लघ्व्यासुकर्णीकटुकातिक्ताचोष्णाचशीतला । रसायनीर-

सालघ्वीकपायाकफपित्तनुत ॥ शूलज्वरकृमिग्रन्थिमूत्रकृ-

च्छ्रप्रमेहहृत् ॥ अनाहोदरहृद्रोगविषपाण्डुभगन्दरान् ।

कुष्ठानिनाशयेदेवपर्ववैयैरिहपितम् ॥

अर्थ—मूसाकानी—चरपरी, कडवी, गम, शीतल, रसायन, मारक, हल्की,

कपेली तथा कफ, पित्त, शूल, ज्वर, कृमि, ग्रन्थि, मूत्ररूच्छ, प्रमेद, आनाद,
उदररोग, हृदयरोग, विष, पाण्डुरोग, भगन्दर और कुष्ठको दूर करनेवाली है।
मृदवासुवर्णाशुणा ।

आखुकर्णावृहत्युक्ताशीतलामधुरास्मृता ।

रसवन्धकरीनेत्र्यारसायन्यथशूलनुत् ॥

ज्वरकृमीन्व्रणचाखुविषचेवविनाशयेत् । (नि० २०)

अर्थ-बड़ी मूसाकानी-शीतल, मधुर, पारेको नाघनेवाली, नेत्रोंको हित-
कारी, रसायन तथा शूल, ज्वर, कृमि, ग्रन्थि और मूत्रोंके विष हरनेवाली है।

विवरण । मूसाकर्णिका छत्ता पृथ्वीपर फैला हुआ होता है, पत्तेपूत्तेके
पानकी समान होते हैं, हरेकपत्तेके नीचे जड़ होती है, शरीर सख्त और
छालीलिये होती है और फल बहुत लगते हैं।

मयूरशिखानामानि ।

वर्हिचूडातुशिखिनीशिखालु सुगिम्वाशिखा ।

शिखिवलाकेकिशिखामयूराद्याभिधाशिखा ॥

अर्थ-वर्हिचूडा, शिखिनी, शिखालु, सुगिम्वा, शिखा, शिगिम्वा,
केकिशिखा, मयूरशिखा, (नीलकण्ठशिखा, महामाहि, मधुच्छदा, मयूरचूडा)

सस्कृतभाषाम मयूरशिखा ।

हिंदीभाषाम मोरशिखा (लाङ्गमुगां)

यज्ञभाषाम मयूरशिखा ।

मगधीभाषाम मयूरशिखा ।

गुजरातीभाषाम मोरशिखा ।

कर्णाटकीभाषाम होंगेयमृमुव ।

तलिङ्गीभाषाम मयूरशिखियने धुपविगेमसु ।

लैट्नीभाषाम मिन्नेमिया किम्याग । (ला० २०)

फारसीभाषाम अमनाते, गलान ।

आर्या गुणा ।

नीलकण्ठशिखालक्ष्मीपित्तश्रेष्मातिमारजित । (भा० २०)

अर्थ-मोरशिखा-दन्तों तथा पित्त, श्लेष्म और श्रमिमारों दूर करने
वाली है।

गन्धश्च ।

वह्निचूडारसेस्वादुर्मूत्रकृच्छ्रविनाशिनी ।

वालग्रहादिदोषघ्नीवश्यकर्मणिशस्यते ॥

अर्थ—मोरशिखा—स्वादुरसान्वित, मूत्रकृच्छ्रनाशक, वालग्रहादिदोषविनाशक और वशीकरण कर्ममें प्रशसायोग्य है ।

अपिच ।

मयूराह्वाशिखाशीताकपायाम्लाम्लपाकिनी ।

लघ्वीपित्तकफपित्तमतीसारंविनाशयेत् ॥ (के०चि०)

अर्थ—मोरशिखा—शीतल, कपेली, खट्टी, पचनेमेंभी खट्टी, हलकी तथा पित्त, कफपित्त और अतिसारनिवारक है ।

विवरण । मोरशिखाके छोटे छोटे धुप होते हैं, यह प्रायः रुस्क भूमिमें उत्पन्न होती है, पत्ते—कटीले होते हैं, इसके ऊपर मोरकी समान चोटी होती है, इसी कारण इसको मोरशिखा कहते हैं, कितनेक वैद्य मोरशिखाको लज्जावतीका भेद कहते हैं ।

इति श्रीशालिग्रामनिगण्डुमूषणं गुडूच्यादिर्गं ॥ ३ ॥

अथ पुष्पवर्गः ।

पुष्पनामानि ।

द्विय सुमनसःपुष्पप्रसूनकुसुमसुमम् ॥

अर्थ—सुमनस, पुष्प, प्रसून, कुसुम, सुम, (सून, प्रसव, सुमन)

पुष्परत्ननामानि ।

पुष्पद्रव पुष्पसार पुष्पस्वेदश्चपुष्पजः ।

पुष्पनिर्यासकश्चैवपुष्पाम्बुजपटाह्वयः ॥

अर्थ—पुष्पद्रव, पुष्पसार, पुष्पस्वेद, पुष्पज, पुष्पनिर्यासक, पुष्पाम्बुज ।

संस्कृतभाषामें पुष्प, पुष्पद्रव ।

हिन्दीभाषामें फूल, पुष्पका अंक, गुलाबादि अथवा पुष्पका मधु ।

बंगलाभाषामें फूल, फुलेरम, गोलापजलममृति वा मधु ।

मराठीभाषामें फूल ।

गुजरातीभाषामें फुल ।

| | |
|-----------------|----------------------------|
| कर्णाटकीभाषामें | दुधिनयमरु । |
| तेलुगुभाषामें | पुष्प । |
| इंग्रेजीभाषामें | फलावर । Flower |
| लैटिन् भाषामें | फ्लोरि floa फ्लोरिम् flora |
| फारसीभाषामें | गुल । |
| अरबीभाषामें | घर्द । |

पुष्पधारणशुभा ।

पुष्पस्यधारणकान्तिवर्द्धनकामकारकम् ।

ओज श्रीवर्द्धकचैवपापग्रहविनाशनम् ॥ (नि० २०)

अर्थ-पुष्पको धारण करनेसे-कान्ति, काम, ओज और लक्ष्मीकी वृद्धि होती है तथा पापग्रहका नाश होता है ।

पुष्पद्रवशुभा ।

पुष्पद्रव सुरभिशीतकपायगोत्यो दाहभ्रमार्तिवमिमोहमुखामयघ्न । तृष्णार्तिपित्तकफदोषहरः सरश्च सन्तर्पणश्चि-
ग्मरोचकहारकश्च ॥

अर्थ-पुष्पद्रव-(पुष्पका अर्क तथा मधु)-सुगन्धित, शीतल, कपेला, गोल्प तथा दाह, भ्रम, वमन, मोह, मुखरोग, वृषा, पित्त, कफ और बहुत कालकी अरुचिको दूर करनेवाला है । तथा सारक और सन्तर्पण है ।

अर्थ-पुष्प ।

पुष्पद्रव सर शीतस्तुवर श्रमदाहहा ।

वान्तिवृद्धपित्तरोगघ्नो मुखरोगविनाशन ॥ (ग्रन्थान्तर)

अर्थ-पुष्पद्रव-सारक (दस्तावर), शीतल, कपेला तथा श्रम, वमन, वृषा, पित्तरोग और मुखरोग नाशक है ।

जातीतमार्ग ।

सुमनामालतीजातीचेतकीचसुरप्रिया ॥

अर्थ-सुमा-मालती-जाती, चेतकी, सुरप्रिया (सुगन्धिना, गुरु मारी, मध्यापुष्पी, मनीषा, रात्रुषी, मनीषा, तैलमालिनी, जाती, दमनना, ताठि, राजपुष्पिका, चण्डिका, त्रिपुण्ड्र मालिनी, रामजी, मरुती, सुगन्धा, वमनना, दाहना) (२ रत्नचन्द्रिका, रत्नमाली,

प्रियवदा, मनोज्ञा, नृपात्मजा, जाति और वसन्तजाता) यह नाम पीली जातिके है ।

| | |
|-----------------|-------------------------------|
| सस्कृतभाषामें | जाती, स्वर्णजाती । |
| हिन्दीभाषामें | जाती (चमेली) जाई, पीलीजाई । |
| बगभाषामें | जाती (चामिली) स्वर्णजाती । |
| मराठीभाषामें | पादरी जाई, पिंवळीजाई । |
| कर्णाटकीभाषामें | जाजि । |
| तैलङ्गीभाषामें | जाईपुष्पाळु । |
| तुर्कीभाषामें | जाजिपु । |
| लैटिन्भाषामें | जेस्मिन फ्लेक्ससईलिम् । |

अस्या गुणाः ।

जातीतुतुवरातित्तालध्वीचोष्णाकटु-स्मृता । मुखपाककफ
वातमुखदन्तशिरोरुजम् ॥ अक्षिरोगविपकुष्ठरक्तदोषत्रण
तथा । पित्तकृमीव्राशयति कलिकास्याव्रणापहा ॥ विस्फो-
टनेत्ररुक्कुष्ठनाशिनीतिबुधाजगुः । पुष्पसुगन्धिसप्रोक्तमनो-
जकफपित्तनुत् ॥ (नि० २०)

अर्थ-जाती-कपेली, कडवी, हल्की, गरम, चरपरी, वमनकारक तथा
मुखपाक, कफ, वात, मुखरोग, दन्तरोग, मस्तकरोग, नेत्ररोग, विप, कुष्ठ,
रुधिरदोष, घाव, पित्त और कृमिरोगको दूर करनेवाली है । इसकी कली-
व्रण, विस्फोट, नेत्ररोग और कुष्ठको नष्ट करे है । इसका फल-सुगन्धित,
मनोज्ञ, कफ और पित्तनाशक है ।

स्वर्णजातीगुणाः ।

स्वर्णजातीचसप्रोक्तादन्तशूलरुजापहा ।
रक्तदोषश्चपूयश्चकर्णशूलश्चनाशयेत् ॥
गुणास्त्वन्येतुजातीवज्जेया पूर्वमनीपिभिः ।

अर्थ-पीलीजाती-दन्तशूल, रुधिरविकाश, पूय (राध, पीप) और
कर्णशूलको दूर करनेवाली है । इसके शेष गुण जातीकी समान जानने ।

विवरण । जातीकी-धूल-प्राय चौमासमें अधिकताने दार्ताई, फूल-
सफेद और बारीक पंखडीका होता है ।

शिरोरोग, नेत्ररोग, मुखरोग, दन्तरोग, और त्वचस्के विकारोंको दूर करनेवाली है ।

विवरण । चमेलीकी बेल-वन, उपवन, चाग और पुष्पवाटिकामें लगाई जाती है, इसकी कली लम्बी ढडीकी होती है, फूलका रंग सफेद और ऊपर कुछ लाली लिये होता है, फूलकी सुगन्धि अत्यन्त प्रिय होती है, चमेलीके फूलोंमें तिलोंको बसाकर अर्थात् रखकर कुछ दिन पीछे कोहम पिखाते हैं, तब उस तेलको फुलेल और चमेलीका तेल कहते हैं, वह उत्तम सुगन्धिवाला और शीतल होता है ।

चापकी-मल्लिकाशुद्धरनामानि ।

वार्षिकीशीतभीरुश्चमदयन्तीप्रमोदनी ।

भद्रवल्लीप्रियासौम्यामल्लिकावनचन्द्रिका ॥

मुद्गरकोगन्धराज सप्तपत्रश्चविदप्रियः ।

अर्थ-वार्षिकी, शीतभीरु, मदयन्ती, प्रमोदिनी (अतिगन्धा, गवाक्षी, भूपदी, वार्षिकी, अष्टापदी, दन्तपत्रा, देवलता, श्रीपदी, पद्मपदानन्दा, मुक्तान्धना, दलकोपका) भद्रवल्ली, प्रिया, सौम्या, मल्लिका, वनचन्द्रिका, (भूपदी, शीतभीरु, तृणशून्य, तृणशून्या, गोरी, वनचन्द्रिका, नारीश, गिरिजा, सिता, मल्ली) मुद्गरक, गन्धराज, सप्तपत्र, विदप्रिय, (मुद्गरा, राजपुत्री, बर्तुल, पद्मपद, प्रिया, गन्धमार, अतिगन्ध, प्रिय, जनेष्ट, मृगेष्ट)

सस्कृतभाषामें १ वार्षिकी, २ मल्लिका, ३ मुद्गर ।

हिन्दीभाषामें बेल, मोतिया, घुघुरुमोतिया, वनमोगरा, मोगरा ।

वगभाषामें बेलफुलगाछ, मल्लिकाफुलरेगाछ, मल्लिकामेद ।

गुजरातीभाषामें बेल, डोलर, जगलीखिलयो, रानमोगरी ।

मराठीभाषामें मोगरी, रानमोगरी, सोईमोगरी ।

कर्णाटकीभाषामें बलिमल्लिगे ।

तैलिङ्गीभाषामें मलिपुण्डल, मल्लेचेट्टु, कुलकान्ताचेट्टु ।

लैटिनभाषामें जेस्मिनपुविगेन्स । J जेस्मिनसैटेंक J *Jasminum Sribac*

वार्षिकीगुणा ।

वार्षिकीशीतलालघ्वीतिकादोषत्रयापहा ।

कर्णाक्षिमुखरोगघ्नीततेलतद्वृणस्मृतम् ॥

उपशानिनामानि ।



अर्थ-मातृपा-मधुर, शीतल, सुगन्धित, दुग्धदायक, कागको उत्पन्न करनेवाला, भौंगोंको आनन्दजनक, नीर पित्तके कोपको दूर करे है ।

अपघ्न ।

वार्षिकीशिथिलहृद्यासुगन्धि पित्तनाशिनी ।

कफवातविपस्फोटकृमिदोषामनाशिनी ॥ (रा० नि०)

अर्थ-बेला-शीतल, हृदयको दितकारी, सुगन्धित, पिचनाराय, तथा कफ, वात, विष, स्फोट, कृमि और यामको दूर करनेवाला है ।

अपिच ।

मल्लिकाकटुतिक्तास्याचक्षुष्मासुखपाकहृदय ।

कुष्ठविम्फोटकण्डूतिविषव्रणहरापग ॥

अर्थ-मल्लिका (मोतिपाभेद)-नरपग, कटु, नेत्रको दितकारी, मुरापाकनाशक तथा कुष्ठ, विस्फोट, कण्डू, विष और व्रणको हरनेवाला है ।

मल्लिकामम्भपुष्पतिक्तजयतिमारुतम् ॥ (गो० नि०)

अर्थ-मल्लिकाके पुष्प-कटु और वातको जिते हैं ।

विराग । मोतिपा, बेला, गुणुरमोतिपा और भौंगरा, यह सब पचनेही होते हैं । पचे-धेगिने पनोंसे छछेय छोटें और विशेष रस्तास- रात है, पुत्र-अत्यन्त सुगन्धित सुपे- रंगके आते हैं । मोतिपाके पुत्र-अगिर मो- रात है, भौंगराके पुत्र-हृदय सब मो- होते हैं ।

शिरोरोग, नेत्ररोग, मुखरोग, दन्तरोग, और त्वचके विकारोंको दूर करनेवाली है ।

विवरण । चमेलीकी बेल-वन, उपवन, वाग और पुष्पवाटिकामें लगाई जातीहै, इसकी कली लम्बी डडीकी होतीहै, फूलका रंग सफेद और ऊपर कुछ लाली लिये होता है, फूलकी सुगन्धि अत्यन्त मिय होती है, चमेलीके फूलोंमें तिलोंको बसाकर अर्थात् रखकर कुछ दिन पीछे कोहूम पिखाते हैं, तब उस तेलको फुलल और चमेलीका तेल कहते हैं, वह उत्तम सुगन्धिवाला और शीतल होता है ।

वापकी-मल्लिकामुद्ररजामानि ।

वार्षिकीशीतभीरुश्चमदयन्तीप्रमोदनी ।

अन्नन्लीप्रियासौम्यामल्लिकावनचन्द्रिका ॥

वगभापामें

1715, 1716, 1717 ।

गुजरातीभापाम

नेवरी ।

मराठीभापामें

नेवाळी, रायनेवाळी, वीरवन्ति ।

कर्णाटकीभापाम

विरवन्तिगे, विरवन्तिभेद ।

लैटिन्भापामें

इम्सोरा पार्विफ्लोरा । *Lora parviflora*

अस्या गुणा ।

नेपालीकटुकातिक्ताशीताचसुरभिलघु ।

त्रिदोषनेत्ररोगघ्नीकर्णाननरुजापहा ॥

सर्वरोगहराप्रोक्तागुणै पूर्वकोविदे ।

अर्थ-नेवारी-चरपरी, कडवी, शीतल, सुगन्धि, हलकी तथा त्रिदोष, नेत्ररोग, कर्णरोग और मुखरोग, सर्वरोगनाशक है ।

विवरण । नेवारीके वनमें बड़े बड़े वृक्ष होतेहैं, पत्ते-लम्बे कुछ गोल होतेहैं, फूल-आमके जोरकी समान गुच्छोंमें जातेहैं ।

यूथिकानामानि ।

यूथिकायूथिवासन्तीवालपुष्पीशिखण्डिनी ।

सापीतास्वर्णयूथीचहेमपुष्पीमनोहरा ॥

अर्थ-यूथिका, यूथि, वासन्ती, बालपुष्पी, शिखण्डिनी (गणिका, अम्नछा, मागधी, प्रहसन्ती, बालपुष्पिका, भृङ्गानन्दा, पुष्पगन्धा, गुणज्वला,

चारुमोडा, शिग्रण्डी, हरिणी, शरवृथिका, सुगन्धिका, सुवितरुणी, सुगन्धा, मोदनी चद्रगन्धा, गजादया) यह जुहीके नाम हैं । स्वर्णयूरी, हेमपुष्पी मनोहरा, (सुवर्णयूरी, हेमपुष्पा, सुगन्धा, हेमयूथिका, सुवतीटा, रक्तगन्धा, शिरण्डी, नागपुष्पिका, पीनयूरी, पीतिका, कनकमभा, हेमा, गन्धादया, हेमपुष्पिका, सुवर्णादा, व्यक्तगन्धा, पीतयूरी) यह पीली जुहीके नाम हैं ।

| | |
|-----------------|---|
| संस्कृतभाषामें | यूथिका, यूरी । |
| हिन्दीभाषामें | जुही, पीलीजुही । |
| वगभाषामें | जुह, स्वर्णजुह । |
| मराठीभाषामें | पादरी लहान जुह, पिवळी जुह । |
| गुजरातीभाषामें | जुहजिगरी, पीठी जुह । |
| कर्णाटकीभाषामें | यरदुमोल्ने । |
| तेलुगुभाषामें | जुहपुष्पाडु । |
| उडिन्भाषामें | पश्चिम भोगिसुदेम् (Ja Lurum Auric latum द्विकिष्पुषिणाशुना । |

यूथिकायुगलस्त्रादुशिगिरशर्कगर्त्तिनुत । पित्तदाहवृषाहा-
ग्निनातात्वग्दोषनाशनम् ॥ मर्वाभायूथिकानान्तुगमनी-
य्यादिमाम्यता । सुरुपञ्जसुगन्धादयस्वर्णयूथ्यानि-
शेषत ॥ (रा० नि०)

अर्थ—शोणप्रकारकी जुही—स्पाइम, शीतल, तथा शर्करारोग, पित्त, दाह, वृषा आर नानाप्रकारके त्वचाके विकारोंको दूर करनेवाली है, संसाराशर्क जुही रक्त, रीत्य और विपाकमें समानदा है, परन्तु पीली जुही मुख्यमें और सुगन्धमें अधिक है ।

अथवा ।

यूथियुग्मद्विमित्तकटुपाकग्निलघु ।

मधुरनुबह्वपित्तप्रकफनातलम् ॥

व्रणात्त्वमुखदन्तान्निगिरोगविपापहम् ।

अर्थ—शोणप्रकारकी जुही—शीतल, कटु और पक्वमें शरीर, रक्त, मधुर, नैवेद्य, हृदयको हितकारी विमलाकार, कटु और पातकारक तथा

व्रण, रुधिरविकार, मुखरोग, दन्तरोग, नेत्ररोग, मस्तकरोग, और विषको नाश करनेवाली है ।

विवरण । जुहीकी वेल-वन, उपवन और पुष्पवाटिकामें होतीहै, फूलकी पेंसडी सपेद रंगकी और सुगन्धिवाली होती है, दूसरी पीलेरंगकी जुही होतीहै, उसके फूल पीलेरंगके होतेहैं, पीली जुही अत्यन्त शोभायुक्त और सुगन्धिदायक है ।

माधवीनामानि ।

अतिमुक्तामाधवीचसुवसन्तापराश्रया ।

अतिमुक्तकामुकश्चमण्डपोभ्रमरोत्सवः ॥

अर्थ-अतिमुक्ता, माधवी, सुवसन्ता, पराश्रया, अतिमुक्त, कामुक, मण्डप, भ्रमरोत्सव (चन्द्रवल्ली, सुगन्धा, भृङ्गमिया, भद्रलता, भूमिमण्डप, भूपणा, वासन्ती, पुण्ड्रकलता, अतिमुक्तक, माधविका, विमुक्तक, माधवीलता, वसन्तद्वती, और लतामाधवी)

संस्कृतभाषामें माधवी ।

हिन्दीभाषामें माधवी ।

बंगभाषामें माधवीलता ।

गुजरातीभाषामें माधवीलता, रक्तपिप्पि ।

मराठीभाषामें पीतवेल ।

कर्णाटकीभाषामें इन्दुगोक्षे, विरवन्तिगे ।

तैलिङ्गीभाषामें माधवतोगे, पुष्पुगुरिर्विद ।

इंग्रेजीभाषामें क्लस्टर्ड हिप्पेज । Clustered Hiptage

लैटिन्भाषामें हिप्पेजमेडेन्ड्रोटा Hiptage Madablota

वर्षा शुभा ।

माधवीकटुकान्तिकाकपायामदगन्धिका ।

पित्तकासत्रणान्दन्तिदाहशोषविनाशिनी ॥ (रा० नि०)

अर्थ-माधवीलता-चरपरी, कडवी, कपेली, मद्गन्धवाली, तथा पित्त, खोंसी, व्रण, दाह और शोषको दूर करनेवाली है ।

अन्यथा ।

माधवीमधुराशीतालध्वीदोषत्रयापहा । (भा० प्र०)

अर्थ-माधवीलता-मधुर, शीत, हल्की, और त्रिदोषनाशक है ।

विवरण । माधवी लताकी यडी घेळ होती हे, पत्ते-चम्पाकी समान होते हे, फूल-विलके फूलकी समान होते हे, और गुच्छोंमें जाते हे ।

माधवीनामानि ।

मालतीसुमनाजातिर्यासन्तीयुवतीतथा ॥

अर्थ-मालती, सुमना, जाति, वामन्ती, युवती ।

तत्सूतभाषामे मालती ।

हिन्दीभाषामे

वगभाषामे

मराठीभाषामें

गुजरातीभाषामें

तैमिऴभाषामें

एफार्दिगु कोर्पाफाउनेटा । Lilies Co ophyllate

अस्या गुणा ।

मालतीकफपित्तास्यरुग्त्रणरिमिकुष्ठजित् ।

चक्षुष्यकुसुम तस्या पत्रतत्कफपित्तजित् ॥ (रा० य०)

अर्थ-मालतीलता पत्र, पित्त, रुग्णोग, व्रण, क्रिमि, और कुष्ठनाशक है । मालतीके फूल-नेत्रोंको दितकारी है । मालतीके पत्ते-कफ और पित्तको हरनेवाले है ।

अपघ्न ।

मालतीकफपित्तामत्वग्दोषकृमिकुष्ठनुत् ।

वामनीव्रणशोथघ्नीष्टनिरुर्णस्यपाकहृत् ॥ (गो० नि०)

अर्थ-मालती-कफ, रक्तपित्त, त्वचाके दोष, कृमि, और कुष्ठनाशक है, वमनकारक, तथा व्रण, सूजन, और पतनगे राधके बहनेरो दूर करे है ।

विवरण । मालती लताकीभी येन होती है, फल मृमगामि आते है, पत्ते जोरन्तीकी समान होते है ।

वदनी शतपत्री इत्यादिनामानि ।

सेवतीगमतरुणीरुर्णिकाचक्रोत्सर्ग ।

शनपत्रीमोम्यगन्धानवृत्ताशनपत्रिका ॥

कुन्जकोभद्रतरुणीवृत्तपुष्पोतिरेसरः ।

अर्थ-सेवती, गमतर्णी, र्णिका, चाक्रोत्सर्ग (कुन्ज, मदन, इव

पत्री, गन्वाड्या, शिववल्लभा, भृङ्गेष्टा, तरुणी, सुदला, बहुपत्रिका, भृङ्गवल्लभा) शतपत्री, सौम्यगन्वा, सुवृत्ता, शतपत्रिका, (महाकुमारी, लाक्षापुष्पा, अतिमञ्जुला, सुमना, सुशीता, शतदला, सुवृत्ता,) कुञ्जक, भद्रतरुणी, वृत्तपुष्प, अतिकेसर, (महासह, कण्टकाढ्य, सर्व, अलिकुल सकुल, वृहत्पुष्प, महासहा, कण्टकाढ्या, देवतरुणी, वारिकण्टक)



संस्कृतभाषामें

हिन्दीभाषामें

वगभाषामें

मराठीभाषामें

गुजरातीभाषामें

कर्णाटकीभाषामें

तेलुगुभाषामें

इंग्रजीभाषामें

लैटिन् भाषामें

फारसीभाषामें

अरबीभाषामें

तरुणी, शतपत्री, कुञ्जक ।

सेवती, गुलाब, कृजा, सदागुलाब ।

सेवती, गोलाप, कृजा, श्वेतगोलाप ।

गुलाबाचे फूल, शेवती, कादेशेवन्ती ।

शेवती, गुलाब, मोशमीगुलाब ।

सेवतिमे, चेवडे ।

गुलाबीपुडु, चेमाण्डिचेट्टु ।

केवेनरोस *Arbigerous* गुलाबद कनफेडन Confection
ऑफरोस of rose

रोसा सेण्टिफोलिया *Rosa Centifolia* रोगादेमेनेना
Rosa damascena

गुले, गुलमुख, गुलेमुदकी ।

बदअहमरननरीन, जरनबीन, गुलकद, मादलबद, बर्क ।

विवरण । माधवी लताकी यही घेए होती है, पचे-चम्पाकी समान होते हैं, फूल-तिलके फूलकी समान होते हैं, और गुच्छोंमें जाते हैं ।

माधवीनामाति ।

मालतीसुमनाजातिर्वासन्तीयुवतीतथा ॥

अर्थ-मालती, सुमना, जाति, वानन्ती, युवती ।

सम्भृतभाषामे मालती ।

हिन्दीभाषामे

वगभाषामे

मराठीभाषामे

गुजरातीभाषामे

लैटिनभाषामे

एकान्तिष् कायोकाह्येय । *Delonix Cororhyllata*

अस्या गुणा ।

मालतीकफपित्तान्यरुत्रणकिमिरुष्टजित ।

शतपत्रीहिमाह्वयाग्राहिणीशुक्लपित्तजित ॥ (रा० पु०)

दोषत्रयास्तजिद्वर्ण्यातिकाकट्टीचपाचनी ॥

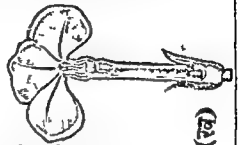
अर्थ-सौवर्ती-शीतल, एतयोः हितकारी, मलरोधक, पुष्पजनक, दृक्को-विदोषनाशक, रक्तदोषविनाशक, कट्टी, चरपी और पाचक है ।

अपच ।

शतपत्रीमराठ्याभीताह्वयाचशुक्ला । लघ्वीचतुवगस्वा-
द्रीसुगभिर्याहिणीमता ॥ वर्ण्याकट्टीचतिकाचरुन्याचामि-
प्रदीपनी । विदोषमुखपाकअरक्तपित्तंरुफनया ॥ पित्त-
क्तविकारश्चदाहश्चैवविनाशयेत् । पुष्पन्तुर्भीतलघ्वर्ण्यात-
पित्तविदाहनुत् ॥

अर्थ-सौवर्ती-मारक, वीर्यरुद्धक, शीतल, हृदयका हितकारी, पुष्पजनक, दृक्को, कट्टी, मालती, मालिनी, गुग्गुलु, मलरोधक, वर्ण्याको मुख कर्मेवादी, चरपी, कट्टी, रुचिरारक, अग्निप्रदीपक तथा शिरोप, मुखपाक, रक्तपित्त, रक्त, पित्त, कट्टीरोगकार और दाहको दूर करनेवाली है । शतपत्री-मीन, वर्ण्याको उग्रता करनेवाली, वात, विष और दाहनाशक है ।

पत्री, गन्धाढ्या, शिववलभा, भृङ्गेष्टा, तरुणी, सुदला, बहुपत्रिका, भृङ्गवलभा) शतपत्री, सौम्यगन्धा, सुवृत्ता, शतपत्रिका, (महाकुमारी, लाक्षापुष्पा, अतिमञ्जुला, सुमना, मुशीता, शतदला, सुवृत्ता,) कुञ्जक, भद्रतरुणी, वृत्तपुष्प, अतिकेसर, (महासह, कण्टकाढ्य, खर्व, अलिकुल सकुल, वृद्धपुष्प, महासहा, कण्टकाढ्या, देवतरुणी, वारिकण्टक)



यदाहध्रवातपित्तजित् ॥ (राजनिघण्टु)

अथ—कूजा (सदागुलाव)—सुगन्धि, शीतल, तथा रक्तपित्त और कफ नाशक है । इसका फूल—शीतल, वर्णको सुदरतादायक तथा दाह और वातपित्तनाशक है ।

विवरण । सेवती, गुलाव और कूजा यह तीनों ध्रुपजातिके वृक्ष—वन उपवन और पुष्पवाटिकामें होतेहैं, तद्वा सेवती सपेद फूलवाली और माचीन है, गुलाव, लाल फूलका, पीलेफूलका, सपेद फूलका और अनेक जातिका नवीन है, अर्थात् पहिले हिन्दोस्थानमें नहीं होता था, कृजेप भी सपेद फूल आता है, इसके फूलमें गुलाव और सेवतीकी अपेक्षा अल्प सुगन्धि होतीहै । एक मोशमी गुलाव, दूसरा बारहमासी होताहै, मोशमी गुलाव चैत्र वैशाखमें खिलताहै और इसमें सुगन्धि अत्यन्त होतीहै, बारहमासी गुलावसँ सदैव फूल आतेहैं । गुलाव और सेवतीके फूलोंका गुल्कन्द तथा पाक वनताहै, वह पाक पुष्टिकारी, बलदायक और दस्तावर है । मारवाडकी ओर गुलावके वन होतेहैं । गुलावका अर्क अत्यन्त गुणकारी है । औषधिके प्रयोगमें सेवती और मोशमी गुलाव लेना चाहिये ।

चम्पकनामानि ।

चम्पक सुकुमारश्चसुरभि शीतलश्चस ।

चाम्पेयोहेमपुष्पश्चकाञ्चन पट्पदातिथिः ॥

अर्थ-चम्पक, मुकुमार, मुरभि, शीतल, चाम्पेय, देमपुष्प, काधन, पद्मपदातिथि, (पुष्पमाधिगट्ट, हेमाढ, गुभग, शीतलच्छन्, पुष्पमादिच, वरलग्न्ध, उमगन्ध, रुद्र, देमपुष्पक, पुष्पगन्ध, नागपुष्प, स्वर्णपुष्प, भृङ्ग-मोहि, भ्रमरातिथि, दीपपुष्प, वनदीप, स्थिरगन्ध, अतिगन्धक, पीतपुष्प, मुकुमार, स्थिरपुष्प)

अस्य वशिष्ठानामानि ।

एतस्य कलिकागन्धफलीतिकथितावुधे ॥

अर्थ-चम्पाकी कलीको गन्धफली, (चटुगन्धा, गन्धमोहिनी, चवक कोरक कहते हैं)

| | |
|-----------------|-------------------------------------|
| संस्कृतभाषामें | चम्पक । |
| हिन्दीभाषामें | चम्पा (चार्जिन, दे०) |
| बंगभाषामें | चापा । |
| मराठीभाषामें | मोनचांका, पिबळाचापा । |
| गुजरातीभाषामें | गय-रपो, पालोरपो । |
| कर्णाटकीभाषामें | सपगे । |
| तेलिङ्गीभाषामें | चपार्गी पुट्ट । |
| ता० | चवक । पु० सपेटो । |
| मैथिलीभाषामें | मिसेरिया चम्पेका । Michela Champaca |

भरवा सुजा ।

चम्पक रुद्रकस्तित्त रुपायोमधुरोहिम ।

विषक्तिमिदं कृच्छ्राफवातामपित्तजित् ॥ (भा० प्र०)

अर्थ-चम्पा-चम्परी, कर्वा, फलेनी, मधुर, शीतल, तथा विष, क्षमि, मूत्ररुद्ध, पात, वात और रक्तपित्तको दूर करनेवाली है ।

गन्धः ।

चम्पक रुद्रकस्तित्त गिरिरोदाहनाशन ।

कुष्ठरुण्डव्रणहरो गुणादयोगजचम्पक ॥ (ग० नि०)

अर्थ-चम्पा-चम्परी, गन्धी, शीतल तथा दाह, कुष्ठ और व्रणों को दूर करनेवाली है । इसमें रागाग्नि अधिक गुणावाली है ।

चम्प पुत्रगुणा ।

चम्पकस्तपित्तमंशीनोष्णरुफनाशनम् ॥ (सु० म०)

अर्थ-चम्पाके फूल-रक्तपित्तनाशक, शीतल, उष्ण और कफनाशक हैं ।
अन्यञ्च ।

चाम्पेयकुसुमशीतकपायस्वादुपाकिच ।

कफपित्तहरतद्वत्पुन्नागस्यचसम्भवम् ॥ (शो० नि०)

अर्थ-चम्पाके फूल-शीतल, कपेले, पचनेमें स्वादिष्ट, तथा कफ और पित्तनाशक हैं ।

अपिच ।

सुवर्णचम्पकश्चोक्तः शीतलस्तिक्तककटु । तुवरोमधुरोवृ-
ष्योद्द्वयश्चैव सुगन्धिदः ॥ भ्रमराणां घातकरो दाहपित्तकफा-
पहः । रक्तदोषमूत्रकृच्छ्रात् कुष्ठविपतथा ॥ कृमिकण्डूव्र-
णांश्चैव नाशयेदितिकीर्तितम् ॥ (नि० २०)

अर्थ-चम्पा-कडवी, चरपरी, शीतल, कपेली, मधुर, वीर्यवर्द्धक, हृद-
यको हितकारी, सुगन्धि, भौरोंका नाश करनेवाली तथा दाह, पित्त, रुधि-
राधिकार, मूत्रकृच्छ्र, वात, कुष्ठ, विष, कृमि, कण्डू और व्रणको दूर
करनेवाली है ।

विवरण । चम्पाका बड़ा वृक्ष होता है, पत्ते-रामफलकी समान होते हैं,
फूल-पीले अत्यंत सुगन्धि युक्त होते हैं ।

चम्पकभेदाः ।

श्वेतस्तुचम्पक प्रोक्तो नागादिश्चम्पकस्तथा ।

सुल्तानचम्पकश्चान्यो नीलश्चभूमिचम्पकः ॥

- | | |
|---------------|---|
| संस्कृतभाषाम् | श्वेतचम्पक (क्षुद्रचम्पक, क्षीरवृक्ष) २ नागचम्पक, (नागपुष्प, नागकेसरक) ३ सुल्तानचम्पक, ४ नीलचम्पक (मधुगन्धि, मनोहर) ५ भूमिचम्पक । |
| हिन्दीभाषाम् | १ सपेदचपा, २ नागचम्पा, ३ सुल्तानचम्पा, ४ नीलचपा, ५ भुईचपा । |
| मराठीभाषाम् | १ सुरुचाफा, २ नागचाफा, ३ सुल्तानचाफा, ४ निळाचाफा, ५ भुईचाफा । |
| गुजरातीभाषाम् | १ धोलोचम्पो, २ नागचम्पो, ३ सुल्तानचम्पो, ४ लीलोचम्पो ५ भूचम्पो । |

कणादनीमापाम

१ नागचम्पगे ।

सैन्यनीमापाम

१ गणेरचेदु ।

सैनीनभापामें

१ प्युमेरिया पञ्चपुटिकोत्तिमा । *Plumeria acutifolia*मेसुनाफेलिमा *Mesuaferia* केलोकेय इनोरेट*Calophyllum Inobhillum* म्यादेसेन्टेदरेमोनिन्,(३०) *Sweet scented Calophyllum* आर्ट बोदिग ओदोरेटिमिया । *Artabotys Odoratissima*केम्फेरिया गट्टा । *Kaempferia rotunda*

भेतादिचम्पगुणा ।

श्वेतस्तुचम्पकः प्रोक्तः सरस्तिक कटु स्मृत । तुवरोष्ण

कुष्ठकण्ड्वणशूलकफापह ॥ वातचोदररोगश्च आध्मानचै-

वनाशयेत् । नागनामाचम्पकस्तुवर्णश्चोष्ण कटु स्मृत ॥

व्रणरोपणकारीचचक्षुष्य कफवातहा । पित्तस्वतरस्यसयोगा-

दग्निस्तम्भकमेत ॥ भूमिजश्चम्पकश्चोष्ण कटु शोथरु-

जापह । गलगण्डव्रणश्चैवनाशयेदितिकीर्तितम् ॥ (नि० २०)

अर्थ-गण्ड चम्पा-गारक (कुष्ठकटुस्तावर) कटुर्वा, चरपरी, कपेटी,

गर्म, तथा कुष्ठ, कण्ट, व्रण, शूल, कफवात, उदररोग और आध्मान

रोगको दूर करनेवाली है । नागचम्पा-वर्णको उज्ज्वल करनेवाली, गर्म,

चरपरी, व्रणको भग्नेवाली, नेत्रोंको दृष्टिफारी, तथा कटु और वातनाशक

है । और वस्तुभाके समयोगे अग्निस्तम्भक है । भूमिज-नाग-गर्म, चरपरी,

तथा शोथरोग, गलगण्ड और व्रणको दूर करनेवाली है ।

विवरण । गण्ड चम्पाका वृक्ष पहा होता है, पत्ते-उष्ण और तीक्ष्ण

दूध निरन्तरता है, फूल-सफेद और पीले भागमें पीला होता है । नीली-

चम्पाका वृक्ष मध्यमाकारका होता है, पत्ते-सामान्यकी समान होते हैं,

फूल-नीले रंगका होता है, उन फूलोंको ताम्रकेश कहते हैं, नागचम्पाके

गुण सुगन्धिवर्गमें गिर्यजुर्बे है । मुल्लानचम्पाके फूलोंकी ताम्रकेश कहते

हैं, नागचम्पाकी दो जाती हैं इसकी भाँति तिराणे । भूमिजचम्पाका फूल

उभे पृथ्वीमें निकलता है ऐसा होता है, पत्ते-मुल्लानकी समान होते हैं ।

फूल-सफेद आता है और सुगन्धिनी मुल्लानकेकी जाती है ।

वकुलनामानि ।

वकुल.केशर.कण्ठस्तैलाङ्गोमधुपञ्जर ॥

अर्थ—वकुल, केशर, कण्ठ, तैलाङ्ग, मधुपञ्जर (सिंहकेशर, केशर, मुकुल, वकुल, मकुल, वरलब्ध, सीधुगन्ध, स्त्रीमुखमधु, दोहल, मधुपुष्प, सुरभि, भ्रमरानन्द, स्थिरकुसुम, शारदिक, करक, सिन्धुगन्ध, विशारद, गूढपुष्पक, धन्वी, मदन, पद्मोद, चिरपुष्प)

| | |
|-----------------|---|
| संस्कृतभाषामें | वकुल । |
| हिन्दीभाषामें | मौलसिरी, वकुल । |
| बंगभाषामें | वकुलगाठ । |
| मराठीभाषामें | वकुल । |
| गुजरातीभाषामें | बोलसरी, वरगोली । |
| कर्णाटकीभाषामें | करक । |
| तैलिङ्गीभाषामें | पावडा, पोगडचेट्टु । |
| औत्कलीभाषामें | वडकुडि । |
| तामिलीभाषामें | मोगदम । |
| दा० | घोलसरी । |
| इंग्रेजीभाषामें | सुरीनाममेडलर । Surinam medlar |
| लैटिन्भाषामें | माईमुसोप्सइलजीआई । <i>Mumusops Elen</i> |

वकुलगुणा ।

वकुल.शीतलोह्वोविपदोपविनाशन ।

मधुरश्वकपायश्वमदाढ्योर्हर्षदायक ॥ (राजनिघण्टु)

अर्थ—मौलसिरी-शीतल, हृदयको हितकारी, विपदोपनाशक, मधुर, कपेली, मदाढ्य, और हर्षदायक है ।

अन्यथा ।

वकुलस्तुवरोऽनुष्ण कटुपाकरोऽगुरु ।

कफपित्तविषश्चित्रकृमिदन्तगदापह ॥ (भा० प्र०)

अर्थ—मौलसिरी-कपेली, अनुष्ण, पाक और रसमें चरपरी, भारी, तथा कफ, पित्त, विष, श्वित्रकृमि और दन्तवेगाको दूर करनेवाली है ।

वकुलपुष्पगुणा ।

वकुलजकुसुमरुच्यशीराढ्यसुरभिशीतलमधुरम् ।

स्निग्धकपायंकथितंमलमग्रहकारकंचैव ॥ (ग० नि०)

अर्थ-मौलमिरीके फल-रुचिकारक, शीतल, सुगन्धि, मधुर, स्निग्ध, कपेले और मलको संग्रह करनेवाले हैं ।

अथवा ।

पुष्पकपायमधुरशीतपित्तकफावजित ॥ (गजवद्धम)

अर्थ मौलमिरीके फल-कपेले, मधुर, शीतल, कफ और रुधिराकारोंको दूर करनेवाले हैं ।

मधुरस्निग्धगुणः ।

मधुरश्चकपायश्चस्निग्धसंग्राह्याशुलम ।

स्थिरीकरञ्चदन्तानाविशदफलमुच्यते ॥ (तु० सं०)

अर्थ-मौलमिरीके फल-मधुर, कपेले, स्निग्ध, मलको साक्षित करनेवाले, शीतलको स्थिर करनेवाले और विनाशक हैं ।

अथवा ।

तत्फलमधुरस्निग्धकपायंविशदहिमम ।

कफपित्तद्वन्द्वविग्रन्वाध्मानघातकृन् ॥ (५० नि०)

अर्थ-मौलमिरीके फल-मधुर, स्निग्ध, कपेले, विनाश, शीतल, कफपित्त नाशक, दाताको स्थिर करनेवाले, तथा विषम, आध्मान और वातनाशक हैं ।

अथवा ।

त्रकुलस्यफलरश्चविशदस्तम्भनगुरु । कपायमधुरंशीतले-
खनकफपित्तद्वन्द्व ॥ दन्तदाढ्यस्त्रग्रादिविग्रन्वाध्मानघात-
कृन् । तद्विजदन्तनालजनस्यान्-द्रीपरुजापहय ॥ (शो० नि०)

अर्थ-मौलमिरीके फल-स्निग्ध, विनाश, स्तम्भन, भाग, कपेले, मधुर, शीतल, खेतन, कफपित्तनाशक दाताको दृढकरनेवाले, मन्त्रोपक, तथा विद्वन्, आध्मान और वातनाशक हैं । मौलमिरीके बीज शोणिक द्रव्यको दूर एवं भर्षात् दाताको स्थिरतादायक हैं, और मौलमिरीके बीजाना मल सेवेने शिरोवेगे नाशको मान होता है ।

गुह्यगुह्यवार्ता ।

शिवमतीपाशुपनप्रादौलोनुकांयमुः ॥ (भा० ५०)

अर्थ-शिवमल्ली, पाशुपत, एकाक्षील, बुक, वसु (जीव, शिवपिण्ड, सुत्रत, वसुक, शिवाग, शिवेष्ट, कमपूरक, शिवाहाद, शाम्भव)

सस्कृतभाषामें शिवमल्ली, वृहद्वकुल ।

हिन्दीभाषामें वनहुला, वृहन्मौलसिरी ।

मराठीभाषामें थोरवकुल ।

गुजरातीभाषामें वरशोली, मोटीवालसिरी ।

कर्णाटकीभाषामें वगेटाह ।

अस्य गुणाः ।

बुकोऽनुष्णः कटुस्तिक्तः कफपित्तविषापहः ।

योनिशूलतृपादाहकुष्ठशोथालसनाशन ॥

अर्थ-बड़ी मौलसिरी-अनुष्ण, चरपरी, ऊडवी, तथा कफ, पित्त, विष, योनिशूल, तृपा, दाह, कुष्ठ, सृजन और रुधिरविकारको दूर करे ।

अन्यच्च ।

बुक शीतोविपश्लेष्मपित्तकृच्छ्राश्मदाहनुत् ।

अर्थ-वृहन्मौलसिरी (वनहुला,)-शीतल, तथा विष, कफ, पित्त, मूत्रकृच्छ्र, पथरी और दाहका नाश करनेवाली है ।

अपिच ।

स्थूलपुष्पश्चवकुलोदीपनोमधुर कटु ।

पित्तदाहकफश्वासमूत्रकृच्छ्रविषश्रमान् ॥

अश्मरीनाशयत्येवमदगन्धिश्चविद्यते (नि० २०)

अर्थ-बड़ीमौलसिरी-अग्निप्रदीपक, मधुर, चरपरी तथा पित्त, दाह, कफ, श्वास, मूत्रकृच्छ्र, विष, श्रम और पथरी रोगका नाश करे है, तथा मदगन्धियुक्त है ।

विवरण-मौलसिरीके वृक्ष-वन और उपवनोंमें होते हैं, पत्ते-राजजामुनके समान होते हैं, फूल-सूक्ष्म और सपेद तथा चक्रके आकारके होते हैं, फूलमें अत्यन्त सुगन्ध होती है इसकी सुगन्ध सुखानेपरभी न्यून नहीं होती, मौलसिरीकी नर नारी दो जाती हैं । एकमें फल आते हैं, और दूसरेमें नहीं आते हैं जिसपर फल नहीं आते उस मौलसिरीका फल कुछ बड़ा और सपेद होता है और जिसपर मिनदूरी रंगका फल आता

स्निग्धकपायकथितंमलसग्रहकारकंनैव ॥ (ग०नि०)

अर्थ-मौलतिरिक्ते पृष्ठ-रुचिकारक, क्षीरादयः, मुगन्धि, शीतल, मधुर, स्निग्ध, कपेले और मलको मग्न करनेवाले है ।

मध्यम ।

पुष्पकपायमधुरगीतंपित्तकफामजित ॥ (राजवह्म)

अर्थ मौलतिरिक्ते पृष्ठ-कपेले, मधुर, शीतल, कफ और क्षयविकारोंको दूर करनेवाले है ।

बहुलवल्गुना ।

मधुरअकपायश्चस्निग्धमग्राह्याकुलम् ।

स्थिर्गीकरअदन्तानांनिशदफलमुच्यते ॥ (सु० सु०)

अर्थ-मौलतिरिक्ते पृष्ठ-मधुर, कपेले, स्निग्ध, मलको साधित कारोसार, वर्णाद्विभाषामे ^{जैसे} और विशुद्ध है !

तल्लिभाषामे टोटगु ।

तामिर्भाषामे दहो ।

औत्तर्भाषामे वद ।

तैदिभाषामे देगेपमगु मुपेसिस्त्रियम् ।

नामा सुभाषामे ।

अथ गुण ।

मुचुकुन्द कटुतिक्त कफरान्ध्रअकण्ठदोषघ्न ।

त्वन्दोषशोफशमनोत्रणपामाविनाशनश्चैव ॥

अर्थ-मुचुकुन्द-त्रणपा, कटुता तथा पित्त, रोगी, कण्ठरोग, त्रणपा, मन्त्र, शोफ और पामागोग विनाशक है ।

अन्तर ।

मुचुकुन्द शिर्षीडापित्तामयिपनाशन । (म०पा०नि०)

अर्थ-मुचुकुन्द-शिर्षी पीडा और रक्तपित्त विनाशक है ।

अन्तर ।

मुचुकुन्दः कटुशोणाम्बित्तम्बर्षकपापघ्न ।

रानन्वन्दोषशोफमर्षिर्षीडानिराशनः ॥

निद्रोपगन्धपित्तान्पित्तगन्धान्निद्रोपगन्धान् । (नि०पा०)

अर्थ-शिवमल्ली, पाशुपत, एकाष्टील, बुक, वसु (शैव, शिवपिण्ड, मुन्नत, वसुक, शिवाग, शिवेष्ट, क्रमपूरक, शिवाहाट, शाम्भव)

संस्कृतभाषामें शिवमल्ली, वृहद्रकुल ।

हिन्दीभाषामें वनडुला, वृहन्मौलसिरी ।

मराठीभाषामें थोरवकुल ।

गुजरातीभाषामें वरशोली, मोटीवालसिरी ।

कर्णाटकीभाषामें वगेटाडु ।

अस्य गुणाः ।

बुकोऽनुष्ण कटुस्तिक्त कफपित्तविपापहः ।

योनिशूलतृपादाहकुष्ठशोथस्रनाशनः ॥

अर्थ-बड़ी मौलसिरी-अनुष्ण, चरपरी, कडवी, तथा कफ, पित्त, विप, योनिशूल, तृपा, दाह, कुष्ठ, सूजन और रुधिराविकारको दूर करने में ।

हिन्दीभाषामें कुदेकावृक्ष, कुदेका फूल ।

वगभाषामें कुन्द ।

मराठीभाषामें कुन्द ।

कर्णाटकीभाषामें सुरागि ।

तेलिंगीभाषामें मोड्ड ।

अस्य गुणाः ।

कुन्दशीतलघुश्लेष्मशिरोरुग्विपपित्तजित ॥ (भा० प्र०)

अर्थ-कुन्द-शीतल, हल्का, तथा कफ, शिरोरोग, विप और पित्तका नाश करनेवाला है ।

अन्यथा ।

कुन्दोत्तिमधुर शीत कपाय केशभावन ।

कफपित्तहरश्चैवसरोदीपनपाचनः ॥ (रा० नि०)

अर्थ-कुन्द-अत्यन्त-मधुर, शीतल, कपेला, केशभावन, मारक (कुष्ठेक दस्तावर), अग्निदीप, पाचक और कफपित्तनाशक है ।

अपिच ।

कुन्द शीतोत्तिमधुरस्तुवर्गसारकोलघु । पाचकोदीपको

हृद्य कटुकस्तिक्तक स्मृत ॥ पित्तगेशिरोरोगविप्रशो-

धामनाशनः । रक्तद्वोयश्चातश्चनाशयेदितिकीर्तितम् ।

(नि० १०)

अर्थ-कुन्-शीतल, अत्यन्तमृग, कपेला, सारफ, इलका, पायक, दीपा, अन्यको दितकारि, चापरा, कडवा तथा पिचुरोग, मग्नरोग, रिप, सजन, आम, रुधिरविकार और वातको हरनेवाला है ।

विवरण । पुन्डके दृष्ट-छोटे छोटे होते हैं, पुन्-अर्थात् सुन्दर रक्त-रगको आते हैं ।

तिग्गनामानि ।

तिलक.धुरक श्रीमान्पुरुषाच्छिन्नपुष्पकः ।

अर्थ-तिलक, धुरक, श्रीमान्, पुरुष, छिन्नपुष्पक (सुगमण्डनक, रिशे पक, पुग्द, पुण्डक, स्थिरपुष्पा, छिन्नकट अथवा, मृतजीव, तर्णावगातावाम, वामन्तमुन्दर, दुग्धकट, मानविमृषणगत, पुत्राग, रेधर, शतरात्रक)

| | |
|-----------------|-------------------|
| समूहभाषाम | तिग्गपुष्पकः । |
| हिन्दीभाषामें | तिग्गपुष्प । |
| गुजरातीभाषाम | तिग्गदृष्ट । |
| मराठीभाषामें | तिग्गपुष्पकः । |
| बर्णाटकीभाषामें | तिग्गपुष्पविशेष । |

अथ गुणः ।

तिलक.कटुक.पाकेरमेचोष्णोरसायनः ।

कफ.कुष्ठकृमीन्वस्तिमुग्रदन्तगदान्दहेन ॥ (भा० प्र०)

अर्थ-तिग्गपुष्पक-पाकेमे चण्डा, मममें भी चरपा, गाम, राजपत्र तथा कफ, कुष्ठ, कृमि, वस्तिमोग सुगमोग और अनादिरोगोंको दूर करे है ।

अथ भाः ।

तिलकोमधुर.मिथ्यायातपित्तरुपापटः ।

बलपुष्टिकनोद्व्योलुमेंदोविरुद्धः ॥

अर्थ-तिग्ग-मधुर, मिथ्य, बलपुष्टक, पुष्टिकारक, हृदयता तिग्गादि, दण्डता, मेदानक तथा शीत, रिप और गानाग है ।

अथिषः ।

तिलकोमधुर मिथ्य पौष्टिकोयलमेदशूनः । तृणोद्व्योलुमें-

त्युष्ण पाकेचोष्णकरःस्मृतः ॥ रसायनस्तीक्ष्णरूक्षोदन्त-
रुक्कृमिकुष्ठहा ॥ वातपित्तकफघ्नश्चविषकण्डूव्रणापहः ॥ रक्त-
रुग्दुग्धरुग्वस्तिरुजां नाशकरः स्मृतः । तिलकः क्षारयोगेन
गुल्मशूलोदरापहः । त्वगस्य तु वराचोष्णापुस्त्वग्नी दन्तदो-
पहा ॥ रक्तदोषकृमिव्रणशोफानाचविनाशिनी ॥ (नि० २०)

अर्थ—तिलक—मधुर, स्निग्ध, पुष्टिकारक, बलवर्द्धक, मेदजनक, हृदयको
हितकारी, हल्का, रसमें अत्यन्त उष्ण, पचनेमें चरपरा, रसायन, तीक्ष्ण,
रूखा, तथा दन्तरोग, कृमि, कुष्ठ, वात, पित्त, कफ, विष, कण्डू, व्रण,
रुधिरविकार, दुग्धरोग, और वस्तिरोगका नाश करे है । यह किसी क्षारके
योगसे गुल्म, शूल और उदररोगको दूर करे है । इसकी छाल—कधेली,
गरम, तथा पुरुपता, दन्तरोग, रुधिरविकार, कृमि, व्रण और सृजनको दूर
करनेवाली है ।

विवरण । तिलक वृक्षका फूल—तिलके फूलकी समान होता है और उस
फूलमें सुगन्धि आती है, फल—पीपलकी समान तथा मधुर होता है ।

कदम्बनामानि ।

कदम्ब सुरभिर्नीप प्रावृषेण्योहरिप्रिय ।

अर्थ—कदम्ब, सुरभि, नीप, प्रावृषेण्य, हरिप्रिय, (हलिप्रिय, ललनाप्रिय,
प्रियक, हारिद्र, अशोकारी, नीप, कादम्ब, पट्पदेष्ट, जाल, वृत्तपुष्प,
कदम्बर्य, सीधुपुष्प, जीर्णपर्ण, महाद्वय, कर्णपूरक)

धाराकदम्बनामानि ।

नीपोमहाकदम्ब स्याद्धाराकदम्ब इत्यपि ।

अर्थ—नीप, महाकदम्ब, धाराकदम्ब (धूलिकदम्ब, धाराकदम्बक,
भ्रमरप्रिय, पट्पदप्रिय, प्रावृष्य, पुलकी, भृङ्गवल्लभ, मेघाभ, प्रियक, केसराद्वय,
बहुफल, कदम्बक)

भूमिकदम्बनामानि ।

भूमिकदम्बोभूनीपोभूमिजोभृङ्गवल्लभ ।

लघुपुष्पोवृत्तपुष्पोविषघ्नोव्रणहारक ॥

अर्थ—भूमिकदम्ब, भूनीप, भूमिज, भृङ्गवल्लभ, लघुपुष्प, वृत्तपुष्प, विषघ्न,
व्रणहारक ।

सुतृप्तभाषाम

कदम्ब, धाराकदम्ब, भूमिकदम्ब ।

दिन्दीभाषामे

कदम्बा पेद, धाराकदम्ब ।

वगनाषामे

कदम्बाळ, केलिकदम्ब ।

मगदीभाषामे

गजकदम्ब, धूलिकदम्ब, पठप, भूमिकदम्ब ।

गुजरातीभाषामे

कदम्ब, कडम्ब ।

कणाटकीभाषामे

कडड, धूलिकडड, धाम्बकडड, भूमिकडड ।

तेलुगुभाषामे

पट्टिमिन्दु, कदम्बपेट्टु, मोगुडुकादमि ।

लटिनभाषामे

पयोमिफालम्बेदेवा Artileptaltes ca 16-18

नोट्रियापाविचगेग । Vancha par-11-12

अरबीभाषामे

कदम्ब ।

कदम्बगुणा ।

कदम्ब रुडुकस्तिक्तोमधुरस्तुनर पदु । शुक्रवृद्धिकर श्री-
तोयुरुविष्टम्भकारक ॥ रुज-स्तन्यप्रदोप्रादीयर्णरुद्रोनि-
दोपहा ॥ ग्लुहृग्लुहृकृच्छ्रभवातपित्तकफत्रणम ॥ दाहनि-
पनाशयतिहृगुगआस्यतूत्रग । शीतरीय्यादीपनाशल-
चवोऽगोचकापहा ॥ ग्लुपित्तातिमारग्रा-फलंरुच्यंगुरुम्भ-
तम् । उष्णरीय्यंरुफकरतत्पक्रंरुफपित्तजिन ॥ वातना-
शकरप्रोक्तमृपिभिस्तत्त्वदर्शिभि ।

अर्थ-कदम्ब-चापरी, कदवी, मधुर, कपेली, गारी, गुजराती, दौण्य,
मारी, विष्टम्भकारक, रुजरी, स्तनामे दूध पानेवाली, मलरोधक, वर्णकारक,
तथा योनिगेग, स्तराग, सुवृष्ट्य, वात, पित्त, कफ, दाह, दाह और
विषको दूर करनेवाली है । इसके अरर-कपेले मोतरीय्यं, मृगशिरः,
हल्के तथा अरुति, रुजपित्त और अतिमारगो दूर करनेवाली है । इसके
फल-रुचिमारग, भारी, उष्णरीय्यं और कदवाक है । इसके पत्रे प-
कट, पित्तकारक और वातनिनाशक है ।

गजकदम्बगुणा ।

नीपस्तुनाम्लस्तुनरोमधु नील स्मृत । विपंस्तुनरुजं
पित्तकफभेजिनागपेन ॥ फलन्तुमधुग्वाम्बनीलगुरु
पित्तदत । ग्लुदोपहाप्रोक्तमृपिभिस्तत्त्वदर्शिभि ॥

अर्थ—राजकदव—अम्ल, कपेली, मधुर, शीतल तथा विष, रुधिरविकार, पित्त और कफको दूर करनेवाली है । इसका फल—मधुर, शीतल, भारी, तथा पित्त और रुधिरके दोषोंको दूरकरे है ।

धाराकदम्बगुणा ।

धाराकदम्बकस्तिक्तोवर्ण्यः शीत कपायक ।
कटुकोवीर्य्यकृच्छ्रोथविपपित्तकूफव्रणान् ॥
वातनाशयतीत्येवमुक्तश्चक्रडपिभिः किल ।

अर्थ—धाराकदम्ब—कडवी, वर्णको उज्ज्वल करनेवाली, शीतल, कपेली, चरपरी, वीर्य्यकारक तथा सृजन, विष, पित्त, कफ, व्रण और वातका विनाश करनेवाली है ।

धूलिकदम्बगुणा ।

धूलिकदम्बकस्तिक्तस्तुवर कटुकोहिम ।
वीर्य्यवृद्धिकरोवण्योविपशोथविनाशक ॥
वातपित्तकफरक्तदोषैवविनाशयेत् ।

अर्थ—धूलिकदम्ब—कडवी, कपेली, चरपरी, शीतल, वीर्य्यवर्द्धक, वर्णको सुदर करनेवाली तथा विष, सृजन, वात, पित्त, कफ और रुधिरके विकारोंको हरनेवाली है ।

कदम्बिकागुणा ।

कदम्बिका तु मधुरा शीतला तु वरा गुरु । मलस्तम्भकरी क्षा-
रा रूक्षास्तन्यकफप्रदा ॥ वातला मुनिभिः प्रोक्ता फलत्वस्या-
स्तु शीतलम् । तुवरं मधुरं पित्त रक्त दोषहरं मतम् ॥

अर्थ—कदम्बिका (कदम्बी)—मधुर, शीतल, कपेली, भारी, मलस्त-
म्भकारी, सारी, रूखी, स्तनामें दूध उत्पन्न करनेवाली, कफकारक और
वातवर्द्धक है । इसके फल—शीतल, कपेली, मधुर तथा पित्त और रक्तविकार-
नाशक है ।

भूमिकदम्बगुणा ।

भूमे'कदम्बकस्तिक्तोवर्ण्यः शीत कटु स्मृत ।

वीर्य्यप्रद्विकरश्चैवतुवगेविपशोथहा ॥

पित्तं कृमीश्च सर्वाश्च मेहात्राजयतीति । (नि० १०)

अर्थ-मृषिकदम्ब-कडवी, वणको उन्मत्त करनेवाली, शीतल, परसी, वीर्य्यप्रदं, कपेली तथा विष, सुजन, पित्त, कृमि और सर्वविकारके प्रमेहोगोंको दूरकरनेवाली है ।

द्विगुणकदम्बगुणः ।

कदम्बयुगलवण्यविपशोथहरहिमम् ।

अर्थ-दोनोंप्रकारकी कदम्ब (कदम्ब, चटोफदम्ब)-वणको मुन्दा करने-वाली, शीतल, तथा विष और सुजनको दूरकरनेवाली है ।

विवरण । कदम्बके पृथ-नगरके निकट होते हैं, पत्र-तन्मे और मोर तथा महुवकी समान होते हैं, पत्र-मोल नीम्बुकी समान, पुन पत्रके ऊपर तथा मुगन्धयुक्त और छोटे होने हैं रातकदम्ब तथा नींदको रिकदम्ब कहते हैं । कदम्बकी अनेक जाति हैं ।

वर्णिकारनामानि ।

कर्णिकार पणित्रात्र पादपोत्पल इत्यपि ॥

अर्थ-कर्णिकार, पणिप्पात्र, पादपोत्पल ऐसे तीन नाम हैं ।

कर्णिकारगुणाः ।

कर्णिकार कटुस्तिक्तस्तुवग्भोधनोलुबु ।

रञ्जनं मुग्धं शोथश्लेष्मास्रवणरुष्टजिन ॥ (भा० १०)

अर्थ-कर्णिकार-चरपरा, कटुता, कपेली, गोघर, दन्ता, रक्त, मुग्धावक तथा सुजन, गर, रुधिरविकार, मग और रुष्टको नष्ट करते हैं ।

विवरण । कर्णिकारके पृथ-त्राय पत्र और वनोंमें अधिक होते हैं । पत्र-त्रायके पत्रोंकी समान होते हैं, पृथ-त्राय और अत्यन्त मनोरम मगते हैं ।

वर्णिकारनामानि ।

विड्विज्जात विड्विगट् पीठक पीनभट्टकः ।

हेमर्गोनिप्रलम्बीपट्टपदानन्दवर्द्धनः ॥

अर्थ-विड्विज्जात विड्विगट्, पीठक, पीनभट्ट हेमर्गो, विड्विगट्, पट्टपदानन्दवर्द्धन (विड्विगट्, पीठकमान)



| | |
|----------------|------------|
| संस्कृतभाषामें | किंकिरात । |
| हिन्दीभाषामें | किंकिरात । |
| मराठीभाषामें | देवबाभूळ । |
| गुजरातीभाषामें | रामबावल । |
| फारसीभाषामें | मधिलान । |

अस्य गुणाः ।

किङ्किरातोहिमस्तिक्तस्तुवर शोधनोलघु ।

विपकिमिहर शोथश्लेष्मश्रवणकुष्ठजित् ॥ (ध०नि०)

अर्थ—किंकिरात—शीतल, कडवा, कपेला, शोधक, हल्का तथा विप, कृमि, सृजन, कफ, वधिरता और कुष्ठको नष्ट करे है ।

अन्यच्च ।

किङ्किरातोहिमस्तिक्त कपायश्चहरेदसौ ।

कफपित्तपिपासास्रदाहशोथवमिकिमीन् ॥

अर्थ—किंकिरात—शीतल, कडवा, कपेला तथा कफ, पित्त, पिपासा, रुधिरविकार, दाह, सृजन, वमन और कृमिरोगको दूर करे है ।

अपिच ।

किङ्किराततुतुवरतिक्तशीतोष्णदमतम् । कफपित्ततृपारक्तदो-
पदाहज्वरान्वमिम् ॥ मोहविपनाशयतीत्येवमुक्तमिषग्वरे ।

अर्थ—किंकिरात—कपेला, कडवा, शीतल, गरम, तथा कफ, पित्त, तृपा, रुधिरदोष, दाह, ज्वर, वमन, मोह और विषका नाश करे है ।

| | |
|-----------------|--|
| तैलिङ्गीभापामें | मुगलीपुबु, मोगिलिचेद्रु । |
| लैटिन्भापामें | पेन्डनसओशेरिटिसिमस् । Pandanus Odoratissimus |
| फारसीभापामें | करज । |
| अरबीभापामें | कादी । |

केतकी-सुवर्णकेतकीगुणा ।

केतकीकटुकास्वाद्मीलध्वीतिक्ताकफापहा ।

उष्णातिक्तरसाज्ञेयाचक्षुष्याहेमकेतकी ॥

अर्थ-केवडा-चरपरा, स्वादिष्ट, हलका, कडवा, और कफनाशक है ।
सुवर्णकेतकी-गरम, कडवी और नेत्रोंको हितकारी है ।

अन्यच्च ।

श्वेतातुकेतकीकट्वीस्वाद्मीतिक्तालघुःस्मृता । विपकफनाश-
यति पुष्पमस्यालघुस्मृतम् ॥ कटुतिक्तकान्तिकरमुष्णवात-
कफापहम् । केशदुर्गन्धतापघ्नकेसर सिध्मकण्डुहा ॥ कि-
ञ्चिदुष्णफल स्वादुवातमेहकफापहम् । सुवर्णकेतकीतिक्ता
नेत्र्याचोष्णालघुःस्मृता ॥ कटुकामधुराचैवविपरुक्कफना-
शिनी । अस्याः पुष्पसुखकरकामोद्दीपनकारकम् ॥ किञ्चि-
दुष्णञ्चकटुकतिक्तनेत्र्यसुगधिकम् । स्तनश्चास्यातिशिशि-
रोदेहदाढ्यकरःपटु ॥ वल्योगसायन पित्तकफस्यचविना-
शक । फलकेसरयोश्चैवगुणा पूर्वोक्तवन्मता ॥ (नि० २०)

अर्थ-श्वेतकेतकी (केवडा)-चरपरा, स्वादिष्ट, कडवा, हलका तथा
विप और कफको दूर करनेवाला है, इसका फूल-हलका, चरपरा, कडवा,
कान्तिकारक, गरम तथा वात, कफ और बालाकी दुर्गन्धको दूर करे है ।
इसकी केसर-सिध्म और कण्डूनाशक है, तथा कुछ गरम है । इसका
फल-स्वादिष्ट तथा वात, प्रमेह और कफनाशक है । सुवर्णकेतकी
(केतकी)-कडवी, नेत्रोंको हितकारी, हल्की, चरपरी, मधुर, विपविकार
और कफनाशक है । इसका फूल-सुराकारी, कामको दीपन करनेवाला,
किञ्चित् गरम, चरपरा, कडवा, नेत्रोंको हितकारी और मुगन्धित है । इसके
स्तन-अत्यन्त शीतल, देहको हटकरनेवाले निमक्तीन, बलकारक, रमायन तथा

पित्त और कफनाशक है । और इसके कण्डके तथा केसरके गुण सारे केतकीके कण्डकी और केसरकी समान जानने ।

अथवा ।

केतकीवातलावृष्यातन्द्रानिद्राकर्मात्मता ॥ (आ० न०)

अर्थ-केतकी-वातकारक, वाय्वर्द्धक तथा तन्द्रा और निद्राको उत्पन्न करनेवाली है ।

विवरण । केतकीके वृक्ष याग और जलके निकट अधिष्ठाता होते हैं, वृक्षके भीतर चार्गीक कटि और पक्षे सम्मिलित होते हैं, पक्षके बगैर पक्षी होते हैं । दृष्टां मुखर्णनेवाली होती है, उगका धुप पीना और विशेष गुणधवाला होता है ।

अथवाग्रामानि ।

अथोर गोकनाशश्चविनित्र र्णप्रसक्त ।

कट्टेलिहंमपुष्पश्चपिण्डपुष्पन्मथेयन ॥

अर्थ-अग्राम, शोरनाश, शिनित्र, रणप्रसक्त, कट्टेली, देमपुष्प, पिण्डपुष्प, (अद्रनामिष, वीतनाश, विनोक्त, वन्दुउद्धम, वन्दु, मधुपुष्प, अपशोफ, कट्टेलि, केटिष, रत्नपुष्प, शिष, वणपुष्प, शुभग, गैरनी, वाघपुष्प, गोगितक, वामावयातन, पिण्डपुष्प, नर, गमा, पद्म, काश-द्विदीपद, कान्तावरणोद्द, चनगुप्त, गन्धपुष्प, गीनिगीतादीर, शोकहर्षा, स्मर्गाभ्राम, दोषहारी प्रसक्त, वामावयातन)

मरुतमापाम अथोर ।

दिदीभाषामे अथोर (अथोगि)

वर्गमापामे अथोर ।

मर्गाभाषामे अथोर ।

गुप्तगतीभाषामे आगुनाले देशी पीनगुप्तानी, आगुनाले रात्रीगुप्तानी ।

दिदिभाषामे अथोग्या लीमिगोप्या ।

गोपिग्या अथोर ।

अथोरगुणा ।

अथोर गीनलस्तितामाहीगुप्य कषायकः ।

दोषापनीवृषादार्कमि-गोपतिपायजिन ॥ (आ० न०)

अर्थ-अथोर-शीतल, कट्टेली, मणोभक्त, वन्दुके अग्राम वामावया,

कपेला, तथा अपचीदोष, तृषा, दाह, कृमि, शोष, विष और रक्तदोषको दूर करे है ।

अन्यच्च ।

अशोकोमधुर शीतश्चास्थिसन्धानकृन्मत । प्रिय.सुगन्धि
कृमिकृत्तुवरोष्णश्चतित्तरु ॥ शरीरकान्तिकृच्चैवस्त्रीणासु-
च्छोकनाशनः । ग्राहीपित्तहरोदाहश्रमगुल्मोदरापहः ॥
शूलाध्मानेविषचाशोत्रणसर्वातृपतथा । शोथापचीतृपश्चैव
नाशयेद्रक्तजंरुजम् ॥ (नि० २०)

अर्थ—अशोक—मधुर, शीतल, हड्डीको जोड़नेवाला, प्रिय, सुगन्धि, कृमिहारक, कपेला, गरम, कड़वा, देहकी कान्ति बढ़ानेवाला, स्त्रियोंके शोकको दूर करनेवाला, मलरोधक तथा पित्त, दाह, श्रम, गुल्म, उदररोग, शूल, आध्मान, विष, बवासीर, व्रण, सर्व प्रकारकी तृषा, सृजन, अपची, तृषा और रुधिररोगको दूर करनेवाला है ।

अपिच ।

अशोकस्यत्वचारक्तप्रदरस्यविनाशिनी ॥ (शो०नि०)

अर्थ—अशोककी छाल—रक्तप्रदररोगको हरनेवाली है ।

विवरण । अशोक वृक्षकी दोजाती है, एकके पत्ते रामफलकी समान और फूल नारंगीके रंगकी सदृश होता है, माह फाल्गुनमें खिलतेहैं और दूसरे अशोकके पत्ते आमकी समान होते हैं, फूल—सफेद कुठेक साधारण पीले रंगका होता है, इससे फल चामासेके आरम्भमें आतेहैं । इसके कच्चे फलका रंग नीला और पकनेपर लाल होजाता है, इसके फल रानेके योग्य नहीं है और इन फलोंमेंसे जो बीज निकलतेहैं वह बीजभी किमी औषधिके प्रयोगमें नहीं लिये जाते, फूल जिसका नारंगकी समान है ऐसे अशोक को “जोनेशिया” अशोक कहते हैं और दूसरेको “ग्वेटेरीआ लॉजिफो-
लिया” कहते हैं ।

पुत्रागनामानि ।

पुरुषाख्योरक्तवृक्ष पुत्रागोदेववल्लभ ॥

अर्थ—पुरुषाख्य, रक्तवृक्ष, पुत्राग, देववल्लभ (पुरुष, पुत्र, केशर, केशव, केमरी, काम्बोज, नागपुष्प, रुम्भीक, रक्तकेशर, पाण्डुनाग, पाटलाद्रुम, रक्तपुष्प, रक्तेणु, अरुमा ।

लिख आये हैं । इसके फल बृहदन्तीकी समान होते हैं उन फलोंका तेल निकलता है ।

सैरेयकनामानि ।

सैरेयकः श्वेतपुष्पः सैरेयकटसारिका ।

सहाचरः सहचरः सचभिद्यपिकथ्यते ॥

अर्थ—सैरेयक, श्वेतपुष्प, सैरेय, कटसारिका, महाचर, सहचर, भिन्दी (मृदुकण्ड, महासह, बाण, उद्यानपाकी, सौरीयक, कण्डकुरण्ड, क्षिण्टिका, क्षिण्टी)

कुरण्डकनामानि ।

किङ्किरातोकुरण्डश्चकनकः पीतपुष्पकः ।

पीताम्लानः सहचरः पीतसैरेयकश्चस ॥

अर्थ—किङ्किरात, कुरण्ड, कनक, पीतपुष्पक, पीताम्लान, सहचर, पीत-सैरेयक (कुरण्डक, सहचरी, सहाचर, वीर, पीतपुष्प, दासी, कुरुण्डक, पुर) नीलक्षिण्टी (भातंगल) नामानि ।

नीलपुष्पीनीलक्षिण्टीदासीचार्तगलश्चस ।

अर्थ—नीलपुष्पी, नीलक्षिण्टी, दासी, भातंगल (बाणा, भर्तंगल, बाण, सहचर, नीलकुरुण्डक, शरीयक, शैरेयक, सैरीय, सैरेय, नीलकुमुमा, बाला, कण्डार्तगला)

कुरयकनामानि ।

रक्ताम्लानोरक्तपुष्पोरामालिङ्गनकामुकः ।

रागप्रसवकश्चैवसुभगः शोणक्षिण्टिक ॥

अर्थ—रक्ताम्लान, रक्तपुष्प, रामालिङ्गनकामुक, रागप्रसव, सुभग, शोणक्षिण्टिक, (कुरवक, रक्तक्षिण्टी, रक्तक्षिण्टिका, शोणक्षिण्टी) ।

रक्तपुष्पः कुरवकः पीतपुष्पः कुरण्डकः ।

नीलपुष्पश्चार्तगलः सैरेयः श्वेतपुष्पकः ॥

अर्थ—लालफूलकी कटसरैयाको "कुरवक" पीलेफूलवालीको "कुरण्डक" नीलेफूलवालीको "भातंगल" और सफेदफूलकी कटसरैयाको "सैरेय (क)," कहते हैं ।



| | |
|---------------|--|
| ससृजतभाषामे | मेषक, कुरङ्ग, भाचंग, कुरपरा । |
| हिन्दीभाषामे | कर्मरंषा, पिपासामा । |
| पगभाषामे | सौदि, पुससौदि, चीनसौदि, बालसौदि, गारहादि । |
| मराठीभाषामे | पिपासोरंग, कामगारंग, नीजोरंग पांशोरंग । |
| गुजरातीभाषामे | पादा अगेनीयो, चीनगुन, रातागुनो, बाल गुनो, घातागुनो । |
| रणांदरीभाषामे | होवणगादे, बन्दगिद, बरिपगोदे, मगुद गोदे गल्ल । |
| तैल्लिभाषामे | गोदे । |
| हैग्नभाषामे | पामेरिषा प्रापोनिम् । <i>Isis carle</i> <i>Isis</i> पेस्पकगुप । |

मैर्यः कुष्टवातावरकफकण्टविपापदः ।

तित्तोष्णोमधुगोदनम्ल सुमिग्ध वैशमञ्जन ॥ (भा द.)

अर्थ-गन्ध कण्ठी कर्मरंषा-कर्मरं, मगम, मगु, चीनगु, बालगु, लिपादि,
मुद्रिय, वैशमञ्जक तथा पोट, रात, रंग-विशम, कट, कण्ट औष
विपदिनाशक ई ।

अगस्त ।

श्वेत कुण्टकस्मितकः स्य मिग्धोमधु स्मृत । कटुशो-
ष्णोऽन्तर्हितोऽप्यल्पस्निग्धनाशन ॥ कुष्टानंगुदोपपन्न
कण्टविम नया । नानायेदारुणचैव रुपिभिः पर्यायो-
क्ति ॥ (पि २०)

अर्थ—सफेद फूलकी कटसरीया—कडवी, केशोंको हितकारी, स्निग्ध, मधुर, चरपरी, गरम, दातोंको हितजनक तथा बलीपलित, कुष्ठ, वात, रक्तविकार, कफ, कण्डू, विष और घोर वेदनाको हरनेवाली है ।

कुरण्टकगुणा ।

पीत कुरण्टकश्चोष्णस्तिक्तश्चतुवर स्मृतः ।

अग्निदीप्तिकरोवातकफकण्डूहरः स्मृतः ।

शोथरक्तविकारञ्चत्वग्दोषञ्चैवनाशयेत् ॥

अर्थ—पीलेफूलकी कटसरीया,—गरम, कडवी, कपेली, अग्निदीप्त तथा वात, कफ, कण्डू, सूजन, रक्तविकार और त्वचाके दोषोंको दूर करे है ।

आतगलगुणा ।

नीलः कुरण्टकस्तिक्तः कटुर्वातकफापहः ।

शोथकण्डूशूलकुष्ठघ्नत्वग्दोषनाशनः ॥

अर्थ—नीलेफूलकी कटसरीया—कडवी, चरपरी तथा वात, कफ, सूजन, कण्डू, शूल, कोढ़, घ्न और त्वचाके विकारोंको दूर करे है ।

नीलक्षिण्टीगुणा ।

नीलक्षिण्टीतुकटुकातिक्तत्वग्दोषनाशिनी ।

दन्तरोगकफशूलवातशोथञ्चैवनाशयेत् ॥

अर्थ—कालेफूलकी कटसरीया—चरपरी, कडवी तथा त्वग्दोष, दन्तरोग, कफ, शूल, वात और सूजनको दूर करनेवाली है ।

शुरषवगुणा ।

रक्त कुरण्टकस्तिक्तोवर्णश्चोष्णः कटु स्मृतः ।

शोथज्वरवातरोगकफरक्तरुजतथा ॥

पित्तमाध्मानकंशूलश्वासक्रासञ्चैवनाशयेत् । (नि० र०)

अर्थ—लालफूलकी कटसरीया—कडवी वर्णकी उज्ज्वल कर्मेवाली, गरम, चरपरी तथा सूजन, ज्वर, वातरोग, कफ, रक्तविकार, पित्त, आध्मान, शूल, श्वास, और साँसीको हरनेवाली है ।

विवर्ण । पियावासा अर्थात् कटसरीयाके क्षुप वन और वागोम बहुत होते हैं, इसकी चार प्रकारकी जाति है इसके पत्रोंका रंग भी चार प्रकारका

होना है-सरेद, पीले, छाय और नोले इन चारों प्रकारके विचारविमो
काट होते हैं, पत्तेभी सबके छोटे - बड़ेही होते हैं, किमीमें विशेष
अन्तर नहीं होता ।

यन्त्रुपाणि ।



दुपहरिपाकाफल.

वन्धुगोवन्धुजीवश्रक्तोमाध्याह्निकोपिन ।

उत्प-यन्त्रु, यन्त्रुजीव, शक्त, माध्याह्निक (शक्त, यन्त्रुजीव,
यन्त्रु, यन्त्रु, यन्त्रु, यन्त्रुजीव, यन्त्रु, यन्त्रु, यन्त्रु, यन्त्रु,
भक्त, ओष्ठयुग्म, अर्कालम्भ, मन्त्राग्नि, यन्त्रु, हर्षिन्ध, यन्त्रु,
जगत्, सुपुष्प)

संस्तरभाषामें

यन्त्रु ।

दिन्दीभाषामें

दुपहरिपा, यन्त्रुपा ।

यगभाषामें

यन्त्रुपिकुलेगाड ।

मराठीभाषामें

दुपारीचें पुन ।

गुजरातीभाषामें

यन्त्रुपा ।

संज्ञाभाषामें

यन्त्रु ।

तैल्लिभाषामें

निर्दिष्ट, मरिच, पदार्थ, यन्त्रु ।

यन्त्रु

दुपारी ।

यन्त्रु

यन्त्रुपा ।

मिष्टभाषामें

पेय, यन्त्रु, यन्त्रुपा ।

यन्त्रुपा ।

यन्त्रुपाजीवश्रक्तोमाध्याह्निकोपिन ।

यन्त्रुपाजीवश्रक्तोमाध्याह्निकोपिन ॥

यन्त्रुपाजीवश्रक्तोमाध्याह्निकोपिन ॥

अर्थ—दुपहरिया—मलगेघक, किञ्चित् गरम, भारी, कफकारक, ज्वर-
नाशक, तथा वात, पित्त, पिशाचनाघा और ग्रहवाधाको दूर करे है ।

विवरण । दुपहरियाके वृक्ष घर और बागोंमें बोदेते हैं, फूल सफेद,
सिन्दूरी, लाल तीन चार जातिका होता है, यह दुपहरके समय खिलती है,
इसीसे इसको दोपहरिया कहते हैं ।

सिद्धेश्वरनामानि ।

सिद्धेश्वरश्चसिद्धाख्य सिद्धनाथः प्रकीर्तितः ।

अर्थ—सिद्धेश्वर, सिद्धाख्य, सिद्धनाथ ।

संस्कृतभाषामें सिद्धेश्वर, सिद्धाख्य, सिद्धनाथ,

दे० गुलतुरा ।

वगलाभाषामें कृष्णचूड़ ।

गुजरातीभाषामें सधेश्वरी ।

कर्णाटकीभाषामें कोमरी ।

लैटिनभाषामें सिसालपिनीयालकेरिमा । *Caesalpinia pulcherrima*

अस्य गुणाः ।

सिद्धेश्वरोहिमं स्निग्धं ग्रन्थिनाडीघ्नापहं ।

वातव्याधिहरश्चैव त्रिदोषामयनाशनः ॥

अर्थ—सिद्धेश्वर—शीतल, स्निग्ध तथा ग्रन्थि, नाडीघ्न, वातरोग और
त्रिदोषनाशक है ।

शखोदरीनामानि ।

शखोदरीवर्हपुष्पाचिञ्चापत्रालपकण्टकी ।

शलाखापत्रीसुपुष्पाचवनवासीसुरिम्बिका ॥

अर्थ—शखोदरी, वर्हपुष्पा, चिञ्चापत्रा, अल्पकण्टकी, शलाखापत्री,
सुपुष्पा, वनवासी, सुरिम्बिका ।

संस्कृतभाषामें शखोदरी ।

दे० गुलतोरा, गुल्फरी ।

गुजरातीभाषामें रागगदी, नहानी, गुल्मोर ।

मराठीभाषामें शखामुर, घाकरीगुल, कुटुमकेरा ।

तैलङ्गीभाषामें सामिडीताचेडु ।

लैटिनभाषामें पोईनसियाना रिजाइना *Poinciana rigua*

पोईनसियाना पल्केरिमा *P. Pulcherrima*

होता है-सफेद, पीले, लाल और नीले इन चारों प्रकारके पियावासेमें काटे होते हैं, पत्तेभी सबके छोटे = एकसेही होते हैं, किसीमें विशेष अन्तर नहीं होता ।

बन्धुनामानि ।



दुपहरियाकाफल.

बन्धुकोबन्धुजीवश्चरक्तोमाध्याह्निकोपिच ।

अर्थ-बन्धुक, बन्धुजीव, रक्त, माध्याह्निक, (रक्तक, बन्धुजीवक, बन्धुक, बन्धु, बन्धुल, बन्धुजीव, बन्धुलि, बन्धुर, सूर्यभक्त, सूर्यभक्तक, ओष्ठपुष्प, अर्कगल्म, मध्यदिन, रक्तपुष्प, हरिम्रिय, शरत्पुष्प, ज्वर, सुपुष्प)

संस्कृतभाषामें

बन्धुक ।

हिन्दीभाषामें

दुपहरिया, गेजुनिया ।

वगभाषामें

बान्धुलिफुलेरगाड ।

मराठीभाषामें

दुपारीचें फूल ।

गुजरातीभाषामें

बपोरियो ।

कर्णाटकीभाषामें

बदुरे ।

तेलिङ्गीभाषामें

नितिमली, माकिनचेट्टु, वेगसिनचेट्टु ।

बम्०

दुपारि ।

पञ्जा०

गुलदुफारिया ।

लैटिन् भाषामें

पेरोटपिडिम फिनिश्या । Pentapets Phorincea

अन्य गुणाः ।

स्याद्वन्धुजीवकोग्राहीकिञ्चिदुष्णोऽगुरुर्मतः ।

कफकृज्ज्वरहृद्वातपित्तैर्वविनाशयत ॥

पिशाचग्रहवावांचनाशयेदितिकीर्तित ।

अर्थ—दुपहरिया—मलरोधक, किञ्चित् गरम, भारी, कफकारक, ज्वर-
नाशक, तथा वात, पित्त, पिशाचनाधा और ग्रहवाधाको दूर करे है ।

विवरण । दुपहरियाके वृक्ष घर और बागोंमें बोदेते हैं, फूल सफेद,
सिन्दूरी, लाल तीन चार जातिका होता है, यह दुपहरके समय खिलती है,
इसीसे इसको दोपहरिया कहते हैं ।

सिद्धेश्वरनामानि ।

सिद्धेश्वरश्चसिद्धाख्यसिद्धनाथ प्रकीर्तितः ।

अर्थ—सिद्धेश्वर, सिद्धाख्य, सिद्धनाथ ।

संस्कृतभाषामें सिद्धेश्वर, सिद्धाख्य, सिद्धनाथ,

दे० गुलतुरा ।

वगलाभाषामें कृष्णचूड़ ।

गुजरातीभाषामें सधेशरो ।

कर्णाटकीभाषामें कोमरी ।

लैटिनभाषामें सिसालपिनियालकेरिमा । *Caesalpinia pulcherrima*

अस्य गुणा ।

सिद्धेश्वरोहिमस्त्रिगुहग्रन्थिनाडीव्रणापहः ।

वातव्याधिहरश्चैवत्रिदोषामयनाशनः ॥

अर्थ—सिद्धेश्वर—गीतल, त्रिगुह तथा ग्रन्थि, नाडीव्रण, वातरोग और
त्रिदोषनाशक है ।

शखोदरीनामानि ।

शखोदरीवर्हपुष्पाचिश्चापत्राल्पकण्टकी ।

शलाखापत्रीसुपुष्पाचवनवासीसुशिम्विका ॥

अर्थ—शखोदरी, वर्हपुष्पा, चिश्चापत्रा, अल्पकण्टकी, शलाखापत्री,
सुपुष्पा, वनवासी, सुशिम्विका ।

संस्कृतभाषामें शखोदरी ।

दे० गुलतोरा, गुल्फरी ।

गुजरातीभाषामें राशगडी, नहानी, गुलमोर ।

मराठीभाषामें शलाखसुर, घाकरीगुल, कुकुमकेशर ।

तैलङ्गीभाषामें सामिडीतावेडु ।

लैटिनभाषामें पोईनसियाना रिजाइना *Poinciana rigida*

पोईनसियाना पल्केरिमा *P. Pulcherrima*

शंखोदरीगुणा ।

शंखोदरीमताचोष्णाकफवातविनाशिनी ।

शूलामवातशमनीनेत्ररोगनिवारिणी ॥

अर्थ-शंखोदरी-गरम तथा कफ, वात, शूल, आमवात और नेत्ररोग निवारक है ।

झण्डूवनामानि ।

झण्डुः स्यात्स्थूलपुष्पातुझण्डुकोझण्डुकस्तथा ।

अर्थ-झण्डु, स्थूलपुष्पा, झण्डूक, झण्डुक ।

संस्कृतभाषामें झण्डु, स्थूलपुष्पा, झण्डूक, झण्डुक ।

हिन्दीभाषामें मखमली, गुलतोरा, कलगा, लालमुरगा ।

मराठीभाषामें झंडू, मखमाल ।

गुजरातीभाषामें मुखमल ।

इंग्रेजीभाषामें फ्रचमेरीगोल्ड French mary gold

लैटिन्भाषामें टेजिटिम् इरेक्टा *Ingletes erecta*मिलेस्याक्रेसरोटा *Colisacrestota*

फारसीभाषामें काजेखन्स ।

अरबीभाषामें हमाहम ।

अस्य गुणा ।

झण्डु कटुः कषाय स्याज्ज्वरभूतग्रहापहा । (रा० नि०)

अर्थ-लालमुरगा-चरपरा, कपेला तथा ज्वर, भूत और मरुती पीडाको दूर करनेवाला है ।

सिन्दूरपुष्पीनामानि ।

सिन्दूरपुष्पीसिन्दूरीतृणपुष्पीसुकोमला ।

अर्थ-सिन्दूरपुष्पी, सिन्दूरी, तृणपुष्पी, सुकोमला (रक्तजीजा, रक्तपुष्पी वीरपुष्पा, करच्छदा, शोणपुष्पी) ।

संस्कृतभाषामें सिन्दूरपुष्पी ।

हिन्दीभाषामें सिन्दूरगिया, जाफर, लटकण ।

मराठीभाषामें शेंद्री ।

गुजरातीभाषामें सिन्दूरी ।

कर्णाटकीभाषामें सिन्दूरी ।

इंग्रेजीभाषामें
लेटिन्भाषामें

आरनाटो Crnott
विकसाओरमाना Bixa Oimana
अस्या गुणा ।

सिन्दूरीविषपित्तास्रतृष्णावान्तिहरीहिमा (भा०प्र०)

अर्थ—सिन्दूरपुष्पी—विष, रक्तापित्त, तृषा और कान्तिनाशक तथा शीतलहै ।

अन्यथा ।

सिन्दूरीकटुकातिक्ताकपायाश्लेष्मवातजित् ।

शिरोर्तिशमनीभूतनाशीचडीप्रियाभवेत् ॥

अर्थ—सिन्दूरपुष्पी—चरपरी, कडवी, कपेली, तथा कफ, वात, मस्तकरोग और भूतनाशकहै तथा चण्डीको प्यारीहै ।

अपिच ।

सिन्दूरीपुष्पिकातिक्ताकटु शीतलघु स्मृता । तुवरारक्तदो-
पघ्नीवातरक्ततृपञ्जयेत् ॥ विषदोषश्चपित्तश्चवातपित्तवर्मित-
था । कफमस्तकशूलश्चभूतदोषश्चनाशयेत् । (नि० २०)

अर्थ—सिन्दूरपुष्पी—कडवी, चरपरी, शीतल, हल्की, कपेली तथा रक्त-
विकार, वातरक्त, तृषा, विषदोष, पित्त, वातपित्त, वमन, कफ, मस्तकशूल
और भूतवाधाको दूर करनेवाली है ।

विवरण । सिन्दूरियाके धुप उपवनोंमें होते हैं, पत्ते बेलके समान होतेहैं,
फूल लाल २ सिन्दूरकी समान होते हैं उसके बीजभी लाल रंगके होते हैं,
इनको जलमें डालनेसे जल लाल होजाताहै ।

प्राजत्तनामानि ।



प्राजक्तः पारिजातश्च हारश्च द्वारपुष्पकः ।

नालकुङ्कुमकोरागपुष्पीच खरपत्रकः ॥

सस्कृतभाषामें प्राजक्त, पारिजात, हारश्चद्वारपुष्पक, नालकुङ्कुम,
रागपुष्पी, खरपत्रक ।

हिंदीभाषामें हारसिंगार, प्राजक्त ।

मराठीभाषामें प्राजक्त, पारिजात ।

गुजरातीभाषामें शीयाली, हारक्षणगार ।

इंग्रेजीभाषामें स्क्वेरस्टोल्कड निकटैथिस । Square Stalked Nyctacthes

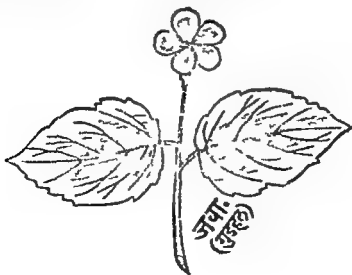
लैटिनभाषामें निकटेन्थिस अर्बोरेन्सिस । Nycranthes Arborensis
हारश्चद्वारपुष्पा ।

रसः प्राजक्तपत्रस्य ज्वरघ्नस्तित्तक स्मृतः ।

पर्णखण्डसमायुक्तस्त्वचाकासविनाशनः ॥

अर्थ—हारश्चगारके पत्तोंका रस—ज्वरनाशक और कड़वा है । इसकी
छाल पानम रखकर खानेमें खासी दूर होती है ।

विवरण । इसके वृक्ष वन और उपवनोंमें होते हैं, इसके फूल अत्यन्त सुंदर
होते हैं, फूलकी डंडी केशरीरंगकी होती है, उन डंडियोंको पीसकर पत्र
रगते हैं, इसके फूल चपटे और छोटे होते हैं और पत्ते ओढहुलकी समान
तथा सरसरे होते हैं । ॥ जनापुष्पनामानि ॥



आंशूपुष्पजपाचाथप्रातिकाहरिवल्लभा ।

सस्कृतभाषामें ओडपुष्प, जपा, प्रातिका, हरिवल्भा (जवा, ओड्रा-
ख्या, रक्तपुष्पी, अर्कप्रिया, रागपुष्पी, ओडपुष्पी,
त्रिसन्ध्या, अरुणा)

हिंदीभाषामें ओडहुल, जवा, गुडहर ।

वगभाषामें जवाफूलैरगाड ।

मराठीभाषामें जासवद ।

गुजरातीभाषामें जामुम ।

कर्णाटकीभाषामें दासनल ।

तेलिङ्गीभाषामें मदारु ।

इंग्रेजीभाषामें शुफलावर । Shoe flower

लैटिन्भाषामें हिविस् स्कस् रोजासाईनेनसिस् । Hibiscus Rosasinensis

अस्य गुणा ।

जपाशीताचमधुरास्निग्धापुष्टिप्रदामता । गर्भवृद्धिकरीया-
हीकेश्याजन्तुप्रदामता ॥ वान्तिजन्तुकरादाहप्रमेहार्शवि-
नाशिनी । धातुरुक्प्रदरचेद्रुतश्चैवविनाशयेत् ॥ जपापु-
ष्पलघुग्राहितिककेराविवर्द्धनम् । (नि० २०)

अर्थ—जपा (ओडहुल, गुडहर)—शीतल, मधुर, स्निग्ध, पुष्टिकारक,
गर्भवृद्धिकारक, आही, बालोंको हितकारी तथा वमन और कृमिको उत्पन्न
करनेवाली तथा दाह, प्रमेह, बवासीर, धातुरोग, प्रदर और इन्द्रक्षत
रोगको हरनेवाली है । इसके फूल-हलके, मलरोधक, कडवे और केश
वर्द्धक हैं ।

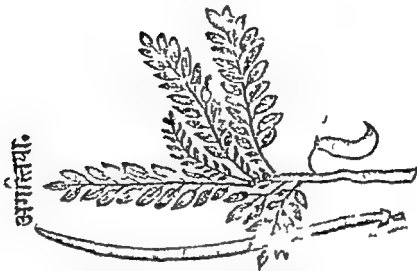
विवरण । जवाके वृक्ष मध्यमाकारके होते हैं, प्रायः वाग और उपवनोंमें
बोयेजाते हैं, पत्ते अट्टसेकी समान बड़े बड़े और फूल बहुत बड़ा अत्यन्त
लालरंगका आताहै । प्रयोगमें फूल लिये जातेहैं इसके फूलमें अनेक गुण हैं
विशेषकरके रुधिरके विकार और नियोंके रजके विकारोंमें व्यवहार
किये जाते हैं ।

घृतभर्जितजपापुष्पगुणा ।

घृतेनभर्जितजपाख्यातवंकुरुतेसुखम् ।

अर्थ—घीमें भुनाहुवा गुडहरका फूल-नियोंके सुखपूर्वक रजोधर्म
करानेवाला है ।

अगस्त्यनामानि ।



अगस्त्योवङ्गसेनश्चमुनिपुष्पोमुनिद्रुमः ।

अर्थ-अगस्त्य, वङ्गसेन, मुनिपुष्प, मुनिद्रुम (अगस्ति, शीघ्रपुष्प, घणारि, दीर्घफलक, रक्तपुष्प, मुरमिय, शुद्धपुष्प, घणापह, रसरघ्वरी, पवित्र, मुनि-
मिय, मुनितरु, वङ्गसेनक, कनली, शीघ्रपुष्प, वक्रपुष्प, मुरमिय)

| | |
|-----------------|-------------------------|
| संस्कृतभाषामें | अगस्त्य । |
| हिंदीभाषामें | अगस्तिया, हथिया, हदगा । |
| वंगभाषामें | वक । |
| मराठीभाषामें | अगस्ता, हदगा । |
| गुजरातीभाषामें | अगायियो । |
| कर्णाटकीभाषामें | अगसेघमरु । |
| तैलिङ्गीभाषामें | अनीसे, अविस्ति । |
| तामिलीभाषामें | अगति । |
| इंग्रेजीभाषामें | लार्जफ्लावर्ड एगेटी । |
| लैटिन्भाषामें | एगाटी ग्लाडी फ्लोरा । |

अस्य गुणाः ।

अगस्ति पित्तकफजिघातुर्थिकहरोद्दिमः ।

रज्जोवातकरस्तिक्तप्रतिश्यायनिवारणः । (भा० ५०)

अर्थ-अगस्ति-शीतल, रूखा, वातकारक, कटुवा तथा पित्त, कफ, चातुर्विक्रम्य और प्रविश्यायनिवारक है ।

अन्यच्च ।

अगस्तिशिशिरगौल्यत्रिदोषघ्नमापहम् ।

वलासकासवैवर्ण्यभूतघ्नश्चलावहम् ॥

अर्थ—हथिया-शीतल, गौल्य तथा त्रिदोष, भ्रम, वलास, कास, विवर्णता, भूतवाधा और चलनाशक है ।

अस्यपुष्पगुणा ।

अगस्तिकुसुमशीतचातुर्थिकनिवारकम् ।

नक्तान्ध्यनाशनंतिक्तकपायकटुपाकिच ॥

पीनसश्लेष्मपित्तघ्नवातघ्नमुनिभिर्मतम् ।

अर्थ—अगस्तियाके फूल-शीतल, चातुर्थिकज्वरनिवारक, रतोंवेको दूर करनेवाले, कड़वे, कपेले, पचनेमें चरपरे तथा पीनसरोग, कफ, पित्त और वातनाशक है ।

अस्यपत्रगुणा ।

पर्णन्तुमुनिवृक्षस्यकटुतिक्तगुरुस्मृतम् ।

मधुरकिञ्चिदुष्णश्चस्वच्छकृमिकफापहम् ॥

कण्डूविपरक्तपित्तनाशयेदितिकीर्तितम् ।

अर्थ—अगस्तियाके पत्ते—चरपरे कड़वे, भारी, मधुर, किञ्चित्तरम, स्वच्छ तथा कृमि, कफ, कण्डू, विष और रक्तपित्तको हरनेवाले हैं ।

अस्यशिम्बीगुणा ।

मुनिशिम्बीसराप्रोक्ताबुद्धिदारुचिदालघु । पाककालेतु

मधुरातिक्ताचैवस्मृतिप्रदा ॥ त्रिदोषशूलकफहृत्पाण्डुरोग-

विपापनुत् । शोषगुल्महराप्रोक्तासापकारूक्षपित्तला॥(नि र)

अर्थ—अगस्तियाकी फली—सागक (कुड़ेक दस्तावर) बुद्धिदायक, रुचिकारक, हल्की, पचनेमें मधुर, कड़वी, स्मरणशक्तिवर्द्धक, तथा त्रिदोष, शूल, कफ, पाण्डुरोग, विष, शोष और गुल्मनाशक है । इसका शाक रुखा-और पित्तकारक है ।

विवरण—अगस्तियाके वृक्ष पुष्पोद्यानोंमें अधिक होतेहैं, पत्ते सेंजिनेकेसे होते हैं विशेषकरके इसपर नागरखेल अर्थात् पानाकी खेल चढ़ा करतीहै, इसलिये

इसके पत्ते उत्तम होतेहैं इसके फूल लाल और सफेद होतेहैं इसकी पत्ती अत्यन्त कोमल होतीहै यह इसकी ठीक पहिचानहै कि, जब अगस्त्यसुनिका उदय होताहै तबही अगस्तिणके फूल खिलतेहैं ।

तुलसीनामानि ।

तुलसीवैष्णवीवृन्दासुगन्धागन्धहारिणी ।

अमृतापत्रपुष्पाचपवित्रासुरवल्लरी॥

अर्थ-तुलसी, वैष्णवी, वृन्दा, सुगन्धा गन्धहारिणी, अमृता, पत्रपुष्पा, पवित्रा, सुरवल्लरी (सुभगा, तीव्रा, पावनी, विष्णुवल्लभा, सुरेज्या, सुरता, कायन्त्या, सुरदुन्दुभि, सुराभि, बहुपत्री, मञ्जरी, हरिमिया, अपेतराक्षसी, ज्यामा, गौरी, त्रिदशमञ्जरी, भूतप्री, भूतपत्री, पर्णात, फटिञ्जर, कुठेरफ, पुण्या, माधवी, सुरवल्ली, भेतराक्षसी, सुवहा, ग्राम्या, गुल्भा, यहमञ्जरी, देवदुन्दुभि, विष्णुपत्नी, मालाश्रेष्ठा, पापत्री, लक्ष्मी, श्रीकृष्णवल्लभा)

कृष्णातुलसीनामानि ।

कृष्णातुकृष्णतुलसीकृष्णपर्णीकरालक ।

अर्थ-कृष्णा, कृष्णतुलसी, कृष्णपर्णी, करालक ।

संस्कृतभाषामें तुलसी ।

हिन्दीभाषामें तुलसी ।

बंगभाषामें तुलसी ।

मराठीभाषामें तुलस, तुलसी ।

गुजरातीभाषामें तुलसी ।

कर्णाटकीभाषामें एरेडतुलसी ।

तैलिङ्गीभाषामें तुलसी ।

इंग्रेजीभाषामें हाईटवेमिल White Basil परपल् स्टार्कड वेमिड

Purple stalked Basil

लैटिन्भाषामें ओसिन आल्व Ocumum Album ओसिम

सेक्ट Ocumum sanctum

फारसीभाषामें रेहान् ।

अरबीभाषामें उलसीबदरत ।

तुलसीगुणा ।

तुलसीरुटुकानिकाहृद्योष्णादाहपित्तवृत्त ।

दीपनीकुष्ठकृच्छ्रासपार्श्वरूक्षफवातजित् ॥

शुक्लाकृष्णाचतुलसीगुणैस्तुल्याप्रकीर्तिता ।

अर्थ—तुलसी—चरपरी, कडवी, हृदयको हितकारी, गरम, दाहकारक, पित्तजनक, दीपन तथा कुष्ठ, मूत्रकृच्छ्र, रक्तविकार, पसवाडेकी पीडा, कफ और वातका नाश करनेवाली है । सफेद और काली तुलसीके गुण समान हैं ।

अथ च ।

श्वेताकृष्णाचतुलसीकटूष्णाचोपणाजगु । दाहपित्तकरी
हृद्यातुवराह्यग्निदीपिका । लघ्वीवातकफश्वासकासहिध्मा-
कृमीञ्जयेत् । वान्तिर्दोर्गन्ध्यकुष्ठानिपार्श्वशूलविपापहा ॥

मूत्रकृच्छ्ररक्तदोषभूतवाधाचनाशयेत् । शूलज्वरचहिका-
चनाशयेदितिकीर्तिता ॥ (नि० २०)

अर्थ—सफेद और काली तुलसी—चरपरी, गरम, तीक्ष्ण, दाहजनक, पित्तकारक, हृदयको हितकारी, कपेली, अग्निदीपक, हल्की तथा वात, कफ, श्वास, खाँसी, हिध्म, कृमि, वमन, दुर्गन्ध, कुष्ठ, पार्श्वशूल, विष, मूत्रकृच्छ्र, रक्तदोष, भूतवाधा, शूल, ज्वर और दुर्चकीको दूर करनेवाली है ।

विवरण । तुलसीके धुप जगलमें और वागोंमें बहुत होते हैं और बहुतेरे गृहस्थी लोग पूजाके लिये अपने २ घरोंमें लगा लेते हैं इसके पत्ते गोल २ कुछ लम्बाई लिये अत्यन्त कोमल होते हैं और उनमें सुगन्धीभी आती है, इसकी डाली २ में बाल निकलती है उसको भजरी कहते हैं । दूसरी श्याम पत्तोंकी श्यामा तुलसी कहलाती है परन्तु आकृति दोनोंकी एकसीही है ।

मरुयकनामानि ।



मरुवा. (क)



मरुवा (ख)

| | |
|-----------------|--|
| वगभाषामे | दोना, दना । |
| मराठीभाषामें | दवणा, रानदवणा । |
| गुजरातीभाषामें | डमरो । |
| कर्णाटकीभाषामें | दवना । |
| इंग्रेजीभाषामें | वर्मुड । Worm wood |
| लैटिनभाषामें | आर्दिमिस्या इन्डिका । Artemesia indica |
| | आर्दिमिस्या सिवर्सियाना । A. Seversian |
| | दमनकगुणा । |

दमनस्तुवरस्तिक्तोहृद्योवृष्यःसुगन्धिक ।

ग्रहणाद्विपकुष्ठसक्तेदकण्डूत्रिदोषजित ॥ (नि०२०)

अर्थ-दोना-कपेला, कडवा, हृद्यको हितकारी, वीर्यवर्द्धक, सुगन्धित, इसका सेवन करनेसे विप, कोष्ठ, रुधिरविकार, हेतु, कण्डू और त्रिदोषका नाश होता है ।

अन्यथा ।

दमन शीतलस्तिक्तकपायकटुकश्चदोषहरः ।

द्वन्द्वत्रिदोषशमनोविपस्फोटविकारहरण स्यात् । (रा०)

अर्थ-दोना-शीतल, कडवा, कपेला, चरपरा, तथा, द्वन्द्वज दोष, त्रिदोष, विप और विस्फोटनाशक है ।

वनदमनगुणा ।

वनजोदमनप्रोक्तोवीर्यस्तम्भनकारकः ।

चलप्रदश्चामदोषनाशक परिकीर्तितः ॥

अर्थ-वनदोना-वीर्यस्तम्भक, चलदायक व आमदोषनाशक है ।

अग्निदमनगुणा ।

अग्नेर्दमनकश्चोष्ण कटूरुक्षोग्निदीपनः ।

रुच्योहृद्योवातकफगुल्मघ्नीहविनाशकः ॥

अर्थ-अग्निदवना-गरम, चरपरा, रुखा, अग्निदीपक, रुचिकारक, हृद्यको हितकारी तथा वात, कफ, गुल्म और घ्नीहाफो दूर करनेवाला है ।

विवरण-दोनाके गुण छाने २ होते हैं, पत्ते अत्यन्त सुगन्ध युक्त होते हैं, पत्तोंके ऊपर बहुत रुआँता होता है, फलोंके छत्तेमें होते हैं ।

अर्जुनामनि ।

अर्जकःक्षुद्रतुलसीक्षुद्रपर्णोमुखार्जकः ।

उग्रगन्धस्तुजम्बीर कुठेरस्तुकठिञ्जरः ॥

अर्थ—अर्जक, क्षुद्रतुलसी, क्षुद्रपर्ण, मुखार्जक, उग्रगन्ध, जम्बीर, कुठेर, कठिञ्जर ।

सिताजकनामानि ।

सितार्जकस्तुवैकुण्ठोवटपत्रकुठेरक ।

जम्बीरोगन्धबहुल सुमुख कटुपत्रक ॥

अर्थ—सितार्जक, वैकुण्ठ, वटपत्र, कुठेरक, जम्बीर, गन्धबहुल, सुमुख, कटुपत्रक (श्वेतच्छद, पाता, अर्जक, श्वेतपर्णास, अम्रार्जक, तीक्ष्ण, तीक्ष्णगन्धा)

कृष्णार्जकनामानि ।

कृष्णार्जककाममालोमालुक कृष्णमालुक ।

स्यात्कृष्णमल्लिकाप्रोक्तागरघ्नोवनवर्वर ॥

अर्थ—कृष्णार्जक, कालमाल, मालुक, कृष्णमालुक, कृष्णमल्लिका, गरघ्न, वनवर्वर (कृष्णवर्णा, कालवर्णा, करालक, कृष्णपर्णा, मुरभिमालक, कालमालक) ।

वर्चरीनामानि ।

वर्चरीकवरीतुङ्गीखरपुष्पाजगन्धिका ।

अर्थ—वर्चरी, कवरी, तुङ्गी, खरपुष्पा, अजगन्धिका, (असुरसा, चर्वा, अजगन्धा, कवरा, खरपुष्पिका, मुरभी, तुलसीढिपा, सुरसा, अपेतराक्षसी) ।

वनवर्चरीनामानि ।

वनवर्चरिकान्यातुसुगन्धि सुप्रसन्नक ।

दोषाक्लेशीविपन्नश्चसुमुख सूक्ष्मपत्रक ॥

निद्रालुशोकहारीचसुवक्रश्चदशाह्वय ।

अर्थ—वनवर्चरिका, सुगन्धि, सुप्रसन्नक, दोषाक्लेशी, विपन्न, सुमुख, सूक्ष्मपत्रक, निद्रालु, शोकहारी, सुवक्र ।

सस्कृतभाषामे अर्जक, वर्चरी, वनवर्चरी ।

हिंदीभाषामे वर्चरी, वनतुलसी ।

| | |
|-----------------|---|
| वङ्गभाषामें | वाउइतुलसी, वनवाउइतुलसी । |
| मराठीभाषामें | रानतुलसी । |
| गुजरातीभाषामें | रानतुलसीभेद । |
| कर्णाटकीभाषामें | कगोरले-करीयकगोरले । |
| तैलिङ्गीभाषामें | कारुतुलसी । |
| सि० | तोखुलाम्बा । |
| लैटिनभाषामें | ओमिमम ग्रेटिमिम । <i>Ocimum gratissimum</i> |
| फारसीभाषामें | पलगमुष्क । |
| अरबीभाषामें | फरजमुष्क । |

अजयसिताज-वृणार्जवगुणा ।

अर्जकास्त्रिकटूष्णा स्यु कफवातामयापहा ।

नेत्रामयहरारुच्या सुखप्रसवकारका ॥ (रा०नि०)

अर्थ-तीनोंप्रकारकी अर्जक-चरणी, रुचिकारक, गरम तथा कफ, वातरोग और नेत्ररोगनाशक है तथा सुरप्रसवक ममव करानेवाली है ।

अन्वय ।

वर्बरीत्रितयरुक्षशीतकटुविदाहिच ।

तीक्ष्णरुचिकरहृद्यदीपनलघुपाकिच ॥

पित्तलकफवाताखदद्रुक्रिमिविपापहम् ।

अर्थ-तीनोंप्रकारकी वरणी-रुखी, शीतल, चरणी, दाहजनक, तीक्ष्ण, रुचिकारक, हृद्यको हितकारी, दीपन, पचनेमें इत्की, पित्तकारक तथा कफ, वात, रुधिरदोष, दाह, कृमि और विषको दूरकरनेवाली है ।

अपिच ।

आरण्यतुलसीक्षुद्राकट्टीचोष्णाचतित्तरा । रुच्याग्निदीप-

नीहृद्याविदाहीलघुपित्तला ॥ रुक्षाकण्डूविपन्धर्दिकुष्ठज्व-

रविनारिनी । वातकृमीन्कफदृग्दुग्धोपश्लनाशयेत् । वी-

जचास्यादाहशोपनाशकंपरिर्कीर्तितम् ।

अर्थ-गर्वमवारणी चरणी-चरणी, गरम, कटवी, रुचिकारक, अग्निदीपक, हृद्यको हितकारी, दाहकारक, इत्की, पित्तजनक, रुखी तथा कण्डू, विष, वमन, रुष्ट, ज्वर, वात, कृमि, कफ, दाह और रुधिरके दोषोंका दूर करनेवाली है । इसके बीज-दाह और शोपनाशक है ।

वनवर्वरिकाशुष्णा ।

वनवर्वरिकाचोष्णासुगन्धकटुकाचसा ।

पिशाचवान्तिभूतघ्नीघ्राणसन्तर्पणीपरा ॥ (रा०नि०)

अर्थ—वनवर्वरी—गरम, सुगन्धित, चरपरी, नासिकाइन्द्रियको तृप्ति करने वाली तथा पिशाचनाघा, वमन और भूतवाधाको दूर करनेवाली है ।

अन्यच्च ।

आरण्यतुलसीचोष्णाकटुकाचसुगन्धिका ।

वातत्वग्दोषवीसर्पविपचैवविनाशयेत् ॥ (नि०र०)

अर्थ—वनतुलसी—गरम, चरपरी, सुगन्धित तथा वात, त्वचाके विकार, विसर्प और विपके विकारोको हर्नेवाली है ।

अपिच ।

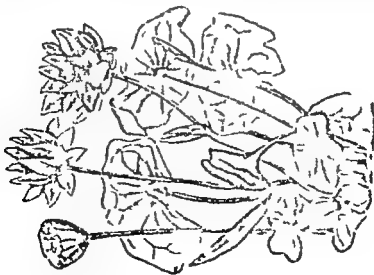
निद्राहर शोफहारीदाहकारीचसस्मृतः ।

सुमुखचातिकृच्छ्रघ्नवातश्लेष्महरपरम् ॥

अर्थ—वनवर्वरी—निद्राका नाशकरनेवाली, शोफनाशक, दाहकारक तथा मूत्रकृच्छ्र, वात और कफनाशक है ।

विवरण—वर्वरी अर्थात् वनतुलसी अनेक प्रकारकी होती है यह प्रायः जगत् और वनार्म अधिक होती है, पत्ते पियात्रोसिके समान छोटे होते हैं उनमें नीमके पत्तोंकेसे कगूरे होते हैं, फूल पिलावनलिये होता है सुगन्धिभी बहुत आती है ।

अथ पट्टननामानि ।



पङ्कजकमलपद्मवज्जनलिनमम्बुजम् ।

कुशेशयश्चराजीवमरविन्दंसरोरुहम् ॥

अर्थ-पकज, कमल, पद्म, वज्ज, नालिन, अम्बुज, कुशेशय, राजीव, अरविन्द, सरोरुह (पाथोज, नल, अम्भोज, अम्बुजन्म श्री (') अम्बुरोह, अम्बुपद्म, मुजल, अम्भोरुह, पाथोरुह, पुष्कर, वार्ज, तामरस, कुञ्ज, कज, शतपत्र, निसत्तुसुम, सहस्रपत्र, महोत्पल, वारिरोह, सरसिज, मालिज, पकेरुह, विसप्रसून, वारिज, क्वार, आस्यपत्र, वनशोभन, जठजन्म, जलरुद, जलरुह, सरोज, सरोजन्म, सरोरुद, पकेज, श्रीवास, श्रीपर्ण, इन्दिरालय, जलजात, कज, नालीक, नालिक, वनज, अम्लान, पुटक, अम्वन, मारज, सरोरुह, कुटप,)

श्वेतमलनामानि ।

पुण्डरीकमहापद्मश्वेतपद्मसिताम्बुजम् ।

दशोपमहरिनेत्रशारदशम्भुवल्लभम् ॥

अर्थ-पुण्डरीक, महापद्म, श्वेतपद्म, सिताम्बु, दशोपम, हरिनेत्र, शारद, शम्भुवल्लभ (मिताम्भोज, शतपत्र, शुद्धपद्म, सितावज्ज, श्वेतवारिज, शरत्पद्म) ।

रक्तमलनामानि ।

रक्तोत्पलकोकनदंरक्तवर्णंरविप्रियम् ।

अर्थ-रक्तोत्पल, कोकनद, रक्तवर्ण, रविप्रिय, (अल्पपत्र, रक्तकमल, रक्तकमल, जालोहित, अलिप्रिय, कृष्णानन्द, रक्ताम्भोज, शोणपद्म, अम्णकमल, चारुनाटक, अरविन्द, रक्तवारिज, रक्तसरोरुह ।

नीलमलनामानि ।

नीलाम्बुजन्मनीलावज्जनीलपद्ममृदूत्पलम् ।

अर्थ-नीलाम्बुजन्म, नीलावज्ज, नीलपद्म, मृदूत्पल, (इन्दीवर, नीलपद्म, नीलकमल,)

नीलोत्पलनामानि ।

अर्थ-इन्दीवर, कुचलय, यन्त्र, निधक, सुगन्ध, कुदमल, अति, मरुतमोषामे, कमल, ५

यन्त्रोदय, गौग

| | |
|-----------------|--|
| हिन्दीभाषामें | कमल, सफेदकमल, लालकमल, नीलकमल, नील- कमोदनी । |
| वगभाषामें | पद्म, श्वेतपद्म, रक्तपद्म, नीलपद्म, नीलगुन्दि, |
| मराठीभाषामें | कमळ, पाटरेकमळ, तानडेकमळ, नीळेंकमळ, । |
| गुजरातीभाषामें | कमल, घोलाकमल, रातताउपेडेते राताकमल, जेना नालमा काटाहोय, नीलकमल, मुगन्धीनेताना । |
| कर्णाटकीभाषामें | विलीयतावरे, केदावरे, करियतावरे, नेइदिदु । |
| तैलिङ्गीभाषामें | कालावा, नालावाकालावा, एराकालावा, तम्मि, तस्मियुवु, नेलनामर, नलकुलतु । |
| तामिलीभाषामें | अम्बल । |
| इंग्रेजीभाषामें | लोटस । Lotus |
| लैटिन् भाषामें | लीलवियम स्पेसीयोसम । Nelumbium Speciosum नीलवीय केरुलियम । Nelumbium Careruleum नीलवीय प्युबेसिन्स । N - pubescens |
| फारसीभाषामें | नीलफर, गुलनीलोफर । |
| अरबीभाषामें | कखुलमा, वर्द नीलोफर । |

उमल्लगुणा ।

कमलशीतलवर्ण्यमधुरकफपित्तजित ।

तृष्णादाहास्रविस्फोटविषवीसर्पनाशनम् ॥ (भा० प्र०)

अर्थ—साधारणकमल—शीतल, देहको सुन्दर करनेवाला, मधुर तथा
कफ, पित्त, तृषा, दाह, रुधिरदोष, विस्फोट, विष और विसर्पभेगनाशक है ।
अपघ्न ।

पद्मरूपायमधुरशीतपित्तरूपास्रजित । (राजवल्लभ)

अर्थ—कमल—कपेला, मधुर, शीतल तथा पित्त, कफ और रुधिरवि-
कारको दूर करे है ।

अपिच ।

कमलशीतलस्वादुसुगन्धिव्रान्तितापहम् । वर्ण्यतृप्तिरु-
चेवरक्तपित्तश्रमापहम् ॥ कफपित्ततृषादाहविस्फोटरक्तदो-
षकम् । विसर्पश्चविषश्चैवनाशयेदितिकीर्तितम् ॥

अर्थ—कमल—शीतल, स्वादिष्ट, सुगन्धि, भ्रान्तिहरक, तापनिवाहक,

वर्णकारक, वृत्तिजनक तथा रक्तपित्त, ध्रम, कफ, पित्त, कृपा, दाह, विम्फोट, रक्तविकार, विसर्प और विषको दूर करनेवाला है ।

रक्तकमलगुणा ।

धवलकमलशीतमधुरकफपित्तजित् । (भा प्र.)

अर्थ-सफेदकमल-शीतल, मधुर तथा कफ और पित्तनाशक है ।

अन्यथा ।

श्वेतंतुकमलशीतस्वादुतिक्तकपायकम् । मधुरवर्णकृत्रेय्य
रक्तदोषप्रतृपाहरम् ॥ कफपित्तश्रमंदाहृत्पणाशोधत्रणज्वर-
म । सर्वविम्फोटकश्चैवनाशयेदितिकीर्तितम् ॥ (रा० नि०)

अर्थ-सफेदकमल, शीतल, स्वादिष्ट, कडवा, कपेला, मधुर, वर्णको उज्ज्वल करनेवाला, नेत्रोंको रक्तकारी तथा रुधिरविकार, कृपा, कफ, पित्त, ध्रम, दाह, कृष्णा, शोष, व्रण, ज्वर और सर्वमहागर्भके विम्फोटकोंको हर्नेवाला है ।

रक्तकमलगुणा ।

कोकनदकटुतिक्तमधुरशिशिरश्चरक्तदोषहरम् ।

पित्तकफवातशमनमन्तर्पणकारणगृह्यम् (राजनिघण्टु)

अर्थ-लालकमल-चरपग, कडवा, मधुर, शीतल, रक्तदोषनाशक, पित्त, कफ और वातको शान्ति करनेवाला, मन्तर्पण तथा शुष्कपट्टक है ।

नीलगुणमलगुणा ।

नीलाब्जशीतलम्वादुगुगान्विपित्तनाशकम् ।

रुच्यरसायनेश्रेष्ठकेश्यचदेहदाढ्यकृत् ॥ (रा० नि०)

अर्थ-नीलगुण-शीतल, स्वादिष्ट, गुगान्वि, पित्तनाशक, रुचिकारक, रसायनवर्म्ममें उत्तम, देहको, दृढ करनेवाला और घावोंको भरनेवाला है ।

नीलोत्पलगुणा ।

नीलोत्पलमतिस्वादुशीतसुरभिसौग्यकृत् ।

पाकेतुतिक्तमत्यन्तरक्तपित्तापहागम् ॥ (रा० नि०)

अर्थ-नीलोत्पल (फा० नीलोपर)-अत्यन्त स्वादिष्ट, शीतल, सुगन्धि, गुणकारक, पचनेमें अत्यन्त कडवा और रक्तपित्तनाशक है ।

पद्मिनीनामानि ।

मृलनालदलोत्फुल्ल फलैः नमुदितापुन ।

पद्मिनीप्रोच्यतेप्राज्ञैर्विसिन्यादिश्वसास्मृता ॥

अर्थ—मूल, नाल, पत्र और बीजादिसंयुक्त, खिलेहुए कमलको पद्मिनी कहते हैं, (विसिनी, नलिनी, कुन्दिनी, मृणालिनी, कमलिनी, पुटकिनी, पकजिनी, सरोजिनी, अरविन्दिनी, अविजनी, नालिकिनी, अम्भोजिनी, पुष्करिणी और जम्बालिनी यह सब पद्मिनीके पर्याय हैं) ।

पद्मिनीगुणा ।

पद्मिनीमधुरातिक्ताकपायाशिशिरापरा ।

पित्तकिमिशोपवान्तिभ्रातिसन्तापशान्तिकृत् ॥ (रा नि)

अर्थ—कमलिनी—मधुर, कड़वी, कपेली, शीतल तथा पित्त, कृमि, शोष, वाति, भ्राति और सतापकी शांति करनेवाली है ।

अन्यत्र ।

पद्मिनीशीतलागुर्वीमधुरालवणाचसा ।

पित्तासृक्फनुदूक्षावातविष्टम्भकारिणी ॥ (भा० प्र०)

अर्थ—कमलिनी—शीतल, भारी, मधुर, लवणरसयुक्त, रक्तपित्तनिवारक, कफनाशक, खुरपी और वातविष्टम्भकारक है ।

अपिच ।

पद्मिनीमधुराशीतातिक्ताचतुवरागुरु ।

क्षास्तनदाढ्यकरीमता ॥ कफपित्तरक्तरुजविषशोषवमिकृ-

मीन् । सन्तापमूत्रकृच्छ्रश्चनाशयेदितिकीर्तिता ॥ (नि० २०)

अर्थ—कमलिनी—मधुर, शीतल, कड़वी, भारी, वातस्तम्भकारक खुरपी, स्तनाको दृढ़ करनेवाली तथा कफ, पित्त, रक्तविकार, विष, शोष, वमन, कृमि, सताप और मूत्रकृच्छ्ररोगको हरनेवाली है ।

पद्मसंवर्तनादिनामानि ।

सवर्तिकानवदलबीजकोशस्तुकर्णिका ।

किञ्जल्क केसर प्रोक्तोमकरन्दोऽगम स्मृत ॥

पद्मनालमृणालस्यात्तथाविसमितिस्मृतम् ।

अर्थ—कमलके नये पत्तोंको सवर्तिका, बीजकोश (कमलगट्टेका घर) को कर्णिका, केसर (जीरा) को किञ्जल्क रंगको मकरन्द और नालको मृणालकद तथा विस (कमलकद) यद कहने हैं ।

अथ श्लोकः ।

मधुमत्तिकादिमानिकाकपायादाहृत्यप्रशुत ।

मृत्रकृच्छ्रगुदव्याधिग्नपित्तविनाग्निनी ॥

अर्थ-कमठक, कामठपत्त-शीतल, मूत्रकृच्छ्र, गुदरोग और मूत्रपित्त दो दूर करनेवाले हैं ।

अथ श्लोकः ।

पद्मस्य कृष्णिकानिकाकपायामधुनादिमा ।

मृत्रमैश्वर्यकृच्छ्रानृष्णामरुफपित्तमुत ॥ (भा. प्र.)

अर्थ-कृष्णिका (बीजकोष) - कदवा, कपूर, मधुर, शीतल, हल्वा तथा मृत्रकी विग्रता, मृषा, मूत्रविचार, रुफ और पित्तका नाश करे है ।

अथ श्लोकः ।

किञ्चलकमकन्दश्चकमपद्मकेसरम् ।

अर्थ-किञ्चल, मकन्द, केसर, कन्दकेसर (विभ्र, पीतवर्ण, सुद, चाम्पक, केसर, चाम्पक, आर्षात, काथन)

अथ श्लोकः ।

किञ्चलक शीतलोवृष्यकपायाद्याहिकोऽपिम ।

कफपित्ततृपादाहरत्ताशोविषशोथजित् ॥

अर्थ-कमलकण्ठ-शीतल, वीर्यवृद्धक, कपूर, मल्लोषक तथा कफ, पित्त, मृषा, दाह, रक्ताश (रुधिरकी चवाती), विष और सूजनको दूर करे है ।

अथ श्लोकः ।

किञ्चलकमधुरीरुक्षकदुर्गास्यवृणापह ।

गिगिरुन्यपित्तघ्नस्तृष्णादाहनिपापहः ॥ (रा. नि.)

अर्थ-कमलकण्ठ-मधुर, रूक्षा, चारपी, मृत्ररोग, तथा घ्नरोगनाशक है और शीतल, रुचिकारक, पित्तनाशक, मृषा, दाह और विषको दूर करने वाला है ।

अथ श्लोकः ।

किञ्चलक शीतलोवृष्यकान्तिदन्तुवर्गमधु । कदूरुन्यो

निरुगर्गवैर्यरुगेमत ॥ वृणपित्ततृपादाहमरुग

यकफम् । विपरक्तांशसशोपज्वरवातञ्चनाशयेत् ॥ (नि० र०)

अर्थ—कमलकेसर—शीतल, मलरोधक, कान्तिजनक, कपेली, मधुर, चरपरी, रुचिकारी, गर्भको स्थिर करनेवाली तथा घ्रण, पित्त, वृषा, दाह, मुखरोग, क्षय, कफ, विष, रक्तांश, शोष, ज्वर और वातका नाश करनेवाली है ।

पद्मबीजनामानि ।

पद्मबीजन्तुपद्माक्षंगालोडयपद्मकर्कटी ।

अर्थ—पद्मबीज, पद्माक्ष, गालोडय, पद्मकर्कटी (कन्दली, भेण्डा, कौश्वादनी, कौश्वा, श्यामा) ।

| | |
|-----------------|--------------|
| संस्कृतभाषामें | पद्मबीज । |
| हिन्दीभाषामें | कमलगट्टा । |
| वगभाषामें | पद्मबीचि । |
| मराठीभाषामें | कमलाक्ष । |
| तैलिङ्गीभाषामें | तामरकाडा । |
| गुजरातीभाषामें | कमलकाकडी । |
| कर्णाटकीभाषामें | पद्माक्ष । |
| भरवीभाषामें | वालकेकुवति । |

अस्य गुणाः ।

पद्मबीजहिमस्वादुकपायतित्तकगुरु ।

विष्टम्भिवृष्यरुक्षञ्चगर्भस्यस्थापकपरम् ॥

कफवातहरवलयंग्राहिपित्तास्रदाहनुत । (भा० प्र०)

अर्थ—कमलगट्टा—शीतल, स्वादिष्ट, कपेला, कडवा, भारी, विष्टम्भकारक, वीर्यवर्द्धक, रूखा, गर्भस्थापक, कफवातनाशक, बलकारक, मलरोधक तथा रक्तपित्त और दाहको दूर करनेवाला है ।

अपिच ।

कमलाक्ष स्वादुरुच्य पाचन कटुक स्मृत । शीतलस्तुवर्ग-
स्तित्तोगुरुर्विष्टम्भकारक ॥ गर्भस्थितिकरोरुक्षोवृष्यो-
वातकरोमत । कफकृच्छेखनोग्राहीवलय पित्तविनाशक ॥
रक्तरुग्मिदाहास्रपित्तनाशकरोमत । (निघण्टुग्लाकर)

अर्थ-कमलगट्टा-स्वाद्विष्ट, रुचिकारक, पाचक, चरपण, शीतल, कपेला, कडवा, भारी, विष्टम्भकारक, गर्भस्थापक, रूखा, वीर्यवर्द्धक, वातवर्द्धक, कफकारक, ऐसन, मलरोधक, बलकारक तथा पित्त, रक्तविकार, वमन, दाह और रक्तपित्तका नाश करनेवाला है । पृथ्वीदेशमें कमलगट्टेकी गिरी (मींग) को भुनकर मखाना बनाते हैं । मखानेके गुण आगे परिशिष्टवर्गमें लिखे हैं ।

मकरन्द-पद्ममधुगुणा ।

अरविन्दहृत शीतोमकरन्दोतिवृहण ।

त्रिदोषशमन सर्वनेत्रामयनिपृदन ॥ (आ० स०)

अर्थ-कमलका मधु-शीतल अत्यन्तपुष्टिकाक, त्रिदोषनाशक और सर्वमकारके नेत्ररोगोंको दूर करनेवाला है ।

कमलिनीपत्रगुणा ।

कमलिन्याश्छद शीतस्तुवगेमधुरोमत ।

तिक्तपाकेतिरुदुकोलधुर्व्याहकोमतः ॥

वातकृत्कफपित्तानानाशकोमुनिभि स्मृत ॥ (नि र)

अर्थ-कमलिनीके पत्ते-शीतल, कपेले, मधुर, कटवे, पचनेमें चरपे, हलके, मलरोधक, वातकारक तथा कफपित्तनाशक है ।

पद्मनालनामानि ।

मृणालपद्मनालञ्चकोमलविमिनीविसम ।

अर्थ-मृणाल, पद्मनाल, कोमल, निसिनी, विम (पित्त, कौक, याम रक, तन्तुर, मृणाली, मृणालिनी, पद्मतन्तु, नलिनीरुह, तन्तुल)

सस्फुटभापामे मृणाल, पद्मनाल ।

दिदीभापामे कमलकी नाल, कमलकी दडी ।

वगभापामे पद्मेगट्टाटा ।

मगडीभापामे कमलाचा देंद ।

कणाटकीभापामे कमलन्तु ।

तेलिङ्गीभापामे तामरगुल, तामरतोंगे ।

मृणालगुणा ।

मृणालगिगितिक्रपायपित्तदाहजित् ।

मूत्रकृच्छ्रविकारग्रन्तवान्तिहरपग्म ॥ (ग० नि०)

अर्थ—कमलकी नाल—शीतल, कडवी, कपेली तथा पित्त, दाह, मूत्ररुच्छ, रविरविकार और वमनको हरनेवाली है ।

अन्यत्र ।

मृणालंशीतलवृष्यपित्तदाहास्रजिह्वरु ।

दुर्जरस्वादुपाकञ्चस्तन्यानिलकफप्रदम् ॥

सग्राहिमधुररूक्षशालूकमपित्तद्रुणम् । (भावप्रकाश)

अर्थ—कमलकी नाल—शीतल, वीर्यवर्द्धक, पित्तनिवारक, दाहहारक, रक्तरोगनाशक, भारी, दुर्जर पचनेमें, स्वादिष्ट, स्तनोंमें दूध उत्पन्न करने-वाली, वातवर्द्धक, कफकारक, मलरोधक, मधुर और रूखी है इसीकी समान भसींडेके गुण जानने ।

पद्मकन्दनामानि ।

पद्मादिकन्दशशालूककरहाटश्चकथ्यते ।

मृणालमूलभिस्साण्डजालालूकञ्चकथ्यते ॥

अर्थ—कमलादिकके कन्दको—शालूक, करहाट (पद्ममूल, कटाक्षप, शालूक और जालालूक) कहते हैं । मृणालकी मूलको भिस्साण्ड, जालालूक, (पक शरण, शालूक, शालु और गोपभद्र) कहते हैं ।

सस्कृतभाषामें पद्मकन्द, भिस्साण्ड ।

हिन्दीभाषामें कमलकन्द, भसींडा ।

वगभाषामें पक्षीर गेंडा, शालुक ।

तैलिङ्गीभाषामें जाजिकाय ।

शालयगुणा ।

शालूककटुकविष्टम्भिरुक्षरुन्धकफापहम् ।

कपायकासपित्तघ्नतृष्णादाहनिवारणम् ॥ (रा० नि०)

अर्थ—शालूक (कमलकन्द, भसींडा)—कटु, विष्टम्भकारक, रूक्ष, रुचि-कारक, कफनाशक, कपेला तथा खौसी, पित्त, तृषा और दाहनिवारक है ।

अपिच ।

शालूक कटुकश्चोक्तस्तुवरोमधुगेयुरु । मलस्तम्भकरो-
रूक्षोनेत्र्योवृष्यश्चशीतल ॥ दुर्जरोग्राहकोक्तपित्तदाहतृ-
पाकफम् । पित्तवातञ्चगुल्मञ्चपित्तकासकूर्मीस्तथा ॥ मुख-
रोगरक्तदोषनाशयेदितिचस्मृत' । (नि० २०)

अर्थ-शालूक (कमलकन्द, भसीडा)-कटु, कपेला, मधुर, भारी, मरु
स्तम्भक, रूखा नेत्रोंको हितकारी, वीर्यवर्द्धक, शीतल, दुर्जर, मलरोगक
तथा रक्तपित्त, दाह, वृषा, कफ, पित्तवात, गुल्म, पित्त, रोंसी, कृमि,
मुखरोग और रुधिरविकारको दूर करनेवाला है।

विवरण। कमल-लाल, नीले और सफेद इन भेदोंसे तीन प्रकारके होते
हैं, कमल विशेषकरके गम्भीर और निर्मल नीरवाले स्वच्छ सरोवर और
तालमें उत्पन्न होतेहैं पत्ते बड़े २ गोल और चिकने जिनपर जलका बिन्दु
न ठहरे इसप्रकारके बहुत और शोभायमान होते हैं उन पत्ताको घुँनेके
पातभी कहते हैं, उनके नीचे जो डण्डी होती है उसको मृणाल भर्षात्
कमलकी नाल कहते हैं, कमलके फूलोंमें जो पीला २ जीरा होता है उसको
कमल केसर कहते हैं, कमलके फूलोंमें जो स्वरस रस लगा होता है उसको
कमलकी रज और मकरन्द कहते हैं कमलमें जो फल लगते हैं उसको
कमलकी रज और मकरन्द कहते हैं कमलमें जो फल लगते हैं उसको
पद्मकोप कहते हैं, उनमें जो बीज निम्नते हैं उनका नाम कमलगद्दे हैं
कमलकी जड़को भसीडे कहते हैं।

कुमुदनामानि ।

कैरवचन्द्रकान्तश्चगर्दभकुमुदकुमुद ।

अर्थ-कैरव, चन्द्रकान्त, गर्दभ, कुमुद, कुमुद (सौगन्धिक, कन्दोत,
कच्छ, कुन, गन्धसोम, सितोत्पल, धवलोत्पल, श्वेतोत्पल, बहार, शीतरश्म,
शशिकान्त, चन्द्रिकाम्युज, इन्दुकमल, कुवल्य)

| | |
|-----------------|---------------------------------|
| संस्कृतभाषामें | कुमुद । |
| हिन्दीभाषामें | कोई, कमोदनी, बघोला, बयूना । |
| बंगभाषामें | हेलाफुल, नालिफुल, श्वेतशुद्रि । |
| मराठीभाषामें | पादरे उत्पल । |
| गुजरातीभाषामें | पोयणा । |
| कर्णाटकीभाषामें | विलिपंते इट्टि । |

कुमुदगुणाः ।

कुमुदशीतलम्बादुपाकेनित्तकफापहम् ।

रक्तदोषहरदाहश्रमपित्तप्रशान्तिकृत् ॥ (रा० नि०)

अर्थ-कुमुद (रमोदनी)-शीतल-स्वादुश्च पात्रनेमि बहवी, पाननाक
तथा रुधिरविकार, दाह, श्रम और पित्तको शान्ति करे है।

अल्पञ्च ।

कुमुदपिच्छिलंस्निग्धंमधुरद्वादिशीतलम् ।

अर्थ—कुमुद—पिच्छिल, स्निग्ध, मधुर, शीतल और आनन्दजनक है ।

कुमुदबीजगुणा ।

भवेत्कुमुद्वीजस्वादुरुक्षहिमगुरु ।

अर्थ—कुमुदके बीज अर्थात् घघोलके दाने—स्वादुष्व, रुखे, शीतल और भारी हैं ।

उत्पलनामानि ।

अनुष्णचोत्पलंचैवरात्रिपुष्पंजलाह्वयम् ।

हिमाब्जशीतजलजनिशाफुल्लञ्चसप्तधा ॥

अर्थ—अनुष्ण, उत्पल, रात्रिपुष्प, जलाह्वय, हिमाब्ज, शीतजलज, निशाफुल्ल (पुष्प) (कुवळ, कुवलय कुवेल) ।

उत्पलगुणा ।

उत्पलशिशिरस्वादुपित्तरक्तार्त्तिदोषनुत् ।

दाहश्रमवमिभ्रान्तिकृमिज्वरहरपरम् ॥

अर्थ—उत्पल—शीतल, स्वादिष्ठ तथा पित्त, रक्तविकार, दाह, श्रम, वान्ति, भ्रान्ति, कृमि और ज्वरको शान्ति करे है ।

रक्तकुमुदनामानि ।

हल्लकंरक्तकुमुदसोमाख्यंरक्तकैरवम् ।

अर्थ—हल्लक, रक्तकुमुद, सोमाख्य, रक्तकैरव (रक्तसन्ध्यक, रक्तकहार, रक्तसौगन्धिक, रोचना, अलगन्ध)

उत्पलिनीनामानि ।

उत्पलिनीकैरविणीकुमुद्वीजकुमुदिनीचचन्द्रेष्टा ।

कुवलयिनीन्दीवरिणीनीलोत्पलिनीचविजेया ॥

अर्थ—उत्पलिनी, कैरविणी कुमुद्वीज, कुमुदिनी, चन्द्रेष्टा, कुवलयिनी, इन्दीवरिणी, नीलोत्पलिनी ।

उत्पलिनीगुणा ।

उत्पलिनीहिमातित्ताग्तामयहारिणीचपित्तघ्नी ।

तापकफकासतृष्णाश्रमवमिशमनीचविजेया ॥ (रा नि)

अर्थ-कुमुदिनी, उत्पलिनी, शीतल, कडवी तथा रक्तगोग, पित्त, ताप, कफ, रसासी, तृषा, श्रम और वमनको दूर करनेवाली है ।

विवरण । कुमुदनी कमलके तुल्य तीन प्रकारके होते हैं लाल, नीले और सफेद फूलोंके भेदसे ही जाते हैं, कुमुदके फूल कमलके पत्रोंसे छोटे होते हैं और रात्रिको चन्द्रमाके उदय होनेपर खिलते हैं और सूर्यका प्रकाश होतेही बन्द होजाते हैं, इनके पत्ते फूलके ऊपरही लगे होते हैं, उसमें जाबित्रीके समान कोष होताहै, उसकोपका फल होजाताहै, रात्री अवस्थाम तो उसमें भीतर लालदाने निकलते हैं और पक जानेपर वह दाने काले पड़ जातेहैं दग फलको घघोल कहते हैं, उसकी जड़को चाच अथवा सालक कहते हैं ।

स्थलपद्मिनीनामानि ।

पद्मचारिण्यतिचराऽव्यथापद्माचसारदा ।

अर्थ-पद्मचारिणी, अतिचरा, अव्यथा, पद्मा, सारदा, (चारिणी, पद्मादा, मुगन्धमूला, अम्बुगुहा, लक्ष्मी, श्रेष्ठा, मुपुष्करा, रम्या, पद्मावती, स्यन्ददा, पुष्करिणी, पुष्करपाणिनी, पुष्करनादी) ।

संस्कृतभाषामें स्थलपद्मिनी ।

हिन्दीभाषामें स्थलकमलिनी ।

वगभाषामें स्थलपद्म ।

मराठीभाषामें स्थलकमलिनी ।

कर्णाटकीभाषामें कडुदाघरे ।

लैटिन भाषामें आयोनीदा मुदिकोस । *Ionis daam Suffrutico am*

अभ्य गुणा ।

शीतातिक्ताचतुवगस्तनदाढ्यकरीमता । लप्तीकट्टीचविज्ञे-
याकफपित्तस्यनाशिनी ॥ मूत्राश्रमीमूत्रकृच्छ्रातशूलति-
सारदा । वान्तिदाहमोहमेहैरक्तरुग्श्वासहामता ॥ अपरमा-
रविपकासंनाशयेत्पद्मचारिणी । (नि० २०)

अर्थ-पद्मचारिणी-स्थलकमलिनी, शीतल, कडवी, कषेरी, मूत्राश्री, दह करनेवाली, हलकी, चरपी तथा कफ, पित्त, मूत्रादमरी, मूत्रकृच्छ्र, वात, शूल, अतिपार, वमन, दाह, मोह, प्रमेह, रक्तशिर, श्वास, अप-
स्मा, विष और रसासीको दूर करनेवाली है ।

विवरण । स्थलकमलभी कमलकेही समान होताहै, परन्तु इसमें विशेषता यह है कि, पृथ्वीमें उत्पन्न होताहै, आकृति तो सब कमलकीसीही होतीहै किन्तु पत्ते और फूल, फल सब कमलसे छोटे होते हैं ।

इति श्रीशालिग्रामनिगण्डुभूषणेपुष्पवर्ग ॥ ४ ॥

अथ फलवर्गः ।

आम्रनामानि ।

आम्र.



आम्र-प्रोक्तोरसालश्चसहकारोऽतिसौरभ ।

कामाङ्गोमधुदूतश्चमाकन्द पिकवल्लभ ॥

अर्थ-आम्र, रसाल, सहकार, अतिसौरभ, कामाङ्ग, मधुदूत, माकन्द, पिकवल्लभ, (चूतक, आम्र, फलश्रेष्ठ, फलोत्पत्ति, मृपालक, चूत, पट्टपदा-
तिथि, वसन्तद्वि, पिकमिष, स्त्रीप्रिय, गन्धवन्धु, अलिमिष, शरेष्ट, मादे-
गसरव, पिकवन्धु, केशवायुध, कोपी, परपुष्टमहोत्सव, कामशर, कामव-
ल्लभ, कामाग, कीरेष्ट, माधवद्वि, भृङ्गाभीष्ट, सीधुग, माधुरी, कोकि-
लोत्सव, वसन्तद्वि, मोदाग, मन्मथालय, मन्मथावास, मुमदन, पिङ्गाग,
नृप्रिय, मिषगु, कोकिगवास, वसन्तपादप, भ्रमरप्रिय, मनोन, मन्मथा-
वास, शुक्रप्रिय, वनोत्सव, मदादय, मन्त्री) ।

संस्कृतभाषामें

आम्र ।

हिन्दीभाषामें

आम ।

| | |
|-----------------|----------------------------------|
| वगभाषामें | आम । |
| मराठीभाषामें | आवा । |
| गुजरातीभाषामें | आवो । |
| कर्णाटकीभाषामें | माविनफल । |
| तैलिङ्गीभाषामें | माविडि । |
| इंग्रेजीभाषामें | मङ्गोत्री । Mangotree |
| लैटिन्भाषामें | मैंगीफराइडिका । Mangifera Indica |
| फारसीभाषामें | आवा । |
| अरबीभाषामें | अम्रज । |

आम्रपुष्पगुणा ।

आम्रपुष्पमतीमारकफपित्तप्रमेहनुत् ।

असृग्दुष्टिहरशीतरुचिकृद्वाहिवातलम् ॥ (भावप्रकाश)

अर्थ-आमका मूल-अतिसार, कफ, पित्त, प्रमेह और दुष्टरक्तनाशक है ।
तथा शीतल, रुचिकारक, मलरोधक और वातकारक है ।

अन्यथा ।

आम्रपुष्पशीतलस्याद्वातलं ग्राहकमतम् ।

अग्निदीप्तिकररुच्यकफपित्तप्रमेहनुत् ॥

प्रदरचातिसारञ्चनाशयेदिति मेमतम् । (निघण्टुरत्नाकर)

अर्थ-आमका मूल-शीतल, वातहारक, मलरोधक, अग्निप्रदीपक, रुचिकारी तथा कफ, पित्त, प्रमेह प्रदर और अतिमाग्निकारक है ।

शालतरुणाद्यगुणा ।

शालाम्रकरुपायाम्लं रुच्यमारुतपित्तकृत् ।

तरुणतुतदत्यम्लं रुक्षदोषत्रयात्मकम् ॥ (भा० य०)

अर्थ-शालाम्र अर्थात् कच्ची अँपिया-कपेली, रसही रुचिकारक तथा वात और पित्तकारक है, विनाशकाहुआ वंश आम-अत्यन्त रसही, रुखा तथा विद्रोष और रुधिरके विकारोंको उत्पन्न करे है ।

अन्यथा ।

शालाम्रकरुतपित्तकृग्मध्यन्तुपित्तलम् । (ग. २)

अर्थ-कच्ची अँपिया-रक्तपित्तकारक और तरुण आम विमननक है ।

अपिच ।

वालाभ्रस्तुवरश्चोष्ण सुगन्धिश्चाम्लकः स्मृत । क्षारस्ययो-
गाद्रुचिदोग्राहीरूक्षश्चकान्तिदः ॥ पित्तवातकफात्रक्तदोषां-
श्चैव करोतिस । कण्ठरूग्वातमेहश्चयोनिदोषव्रणतथा ॥
अतिसारप्रमेहश्चनाशयेदितिकीर्तित । (नि० २०)

अर्थ—कच्ची आँविया—कपेली, गरम, सुगन्धि, खट्टी, किसी क्षारके साथ होनेसे रुचिकारी, मलरोधक, रुखी तथा कान्ति, पित्त वात, कफ और रुधिरके दोषोंको उत्पन्न करनेवाली और कण्ठरोग, वात, प्रमेह, योनिदोष, व्रण, अतिसार तथा प्रमेहको हरनेवाली है ।

आम्रपेपो गुणा ।

आम्रमामत्वचाहीनमातपेतिविशोपितम् ।

आम्लस्वादुकपायंस्याद्देदनंकफवातजित् ॥ (भा० प्र०)

अर्थ—कच्चे आमके ऊपरका छिलका छील फिर उसके टुकड़े करके धूपमें सुखादेवे उसको अमचूर कहतेहैं, वह अमचूर—खट्टा, स्वादिष्ठ, कपेला, भेदक और कफवातको हरनेवाला है ।

पक्वाम्रगुणा ।

पक्वतुमधुरवृष्यस्निग्धवलसुखप्रदम् ।

गुरुवातहरंहृद्यवर्ण्यशीतमपित्तलम् ॥

कपायानुरसवह्निश्लेष्मशुक्रविवर्द्धनम् । (भा० प्र०)

अर्थ—पकाहुआ आम—मधुर, वीर्यवर्द्धक, स्निग्ध, बलवर्द्धक, सुखदायक, भारी, वातविनाशक, हृदयको हितकारी, वर्णको सुंदर करनेवाला, शीतल, अपित्तल अर्थात् पित्तको नहीं करनेवाला, किञ्चित् कपेला तथा अग्नि, कफ और शुक्रवर्द्धक है ।

अप्यत्र ।

पक्वत्वाभ्रफलसुगन्धिमधुरस्निग्धपरवृहण रुच्यवातहरश्चहृ-
द्यलघुग्राहीप्रमेहप्रणुत । शीतवर्ण्यमपित्तलव्रणहरश्लेष्मास्त्र-
रोगापह यद्वृद्धामनउल्लसत्यपिमुने किवर्णनभृतले ॥

अर्थ—पकाहुआ आम—सुगन्धि, मधुर, स्निग्ध, अत्यन्त पुष्टिकारक, रुचि-

कारी, वातविनाशक, हृदयको हितकारी, भारी, मलरोधक, प्रमेहनाशक, शीतल, वर्णको उज्ज्वल करनेवाला, अपिचल तथा व्रण, श्लेष्म और रुधिरके रोगोंको दूर करनेवाला है ।

अपिच ।

पक्वाग्रोमधुर शुक्रवर्द्धकः पौष्टिकः स्मृतः ।

गुरुः कान्तिवृत्तिकरः किञ्चिदम्लोरुचिप्रदः ॥

हृद्यो मांसवलानाञ्चवर्द्धकः कफकारकः ।

तुवरश्चतृषावातश्रमानानाशकः स्मृतः ॥ (नि० र०)

अर्थ-पक्वाग्रो आम-मधुर, शुक्रवर्द्धक, पुष्टिकारक, भारी, कान्तिजनक, वृत्तिकारक, किञ्चित् खटा, रुचिकारक, हृदयको हितकारी तथा मांस, पाल और कफवर्द्धक है, कपेला और तृषा, वात तथा श्रमानाशक है ।

वृक्षपत्राग्रगुणा ।

तदेव वृक्षसपक्वगुरुवातहरपरम ।

मधुगम्लरसकिञ्चिद्रवेत्पित्तप्रकोपनम् ॥ (भा० प्र०)

अर्थ-वही वृक्षसपक्व गुण आम-भारी, वातनाशक, मधुर, किञ्चित् खटा और पित्तको कुपित करनेवाला है ।

वृष्टिमन्त्राग्रगुणा ।

आम्रकृत्रिमपक्वञ्चतद्रवेत्पित्तनाशनम् । रसस्याम्लस्य ही-

नन्तुमाधुर्याञ्चविशेषतः ॥ उपित्तं तत्पगरुच्यमलवीर्यकर-

लघु । शीतलशीघ्रपाकिस्त्राढातपित्तहरमरम् ॥ (भा० प्र०)

अर्थ-पालमें पक्वाग्रो आम-पित्तनाशक, अम्लरसदीन और मधुर-रसपूरित है । वही वागित-परम रुचिकारक, पलवर्द्धक, वीर्यजनक, हितकारी, शीतल, शीघ्रपाकी, वातपित्तनाशक और रुष्टक दम्तार है ।

आम्रगुणा ।

तद्रसो गालितो वल्यो गुरुर्वातहरः सरः ।

अहृद्यस्तर्पणो तीव्रदण्ड कफवर्द्धनः ॥

अर्थ-आमका निचोटा हुआ रस-पलकारक, भारी, वातविनाशक, रुष्टक दम्तार, हृदयको अहितकारी, वृत्तिकारक, अतीव्रदण्ड और कफवर्द्धक है ।

सैवदुग्धेनसयुक्तकान्तिदःस्वादद स्मृत ।

वृष्यश्चान्येगुणाश्चोक्तारसेनसदृशा स्मृताः ॥ (नि० २०)

अर्थ-वही रस दूधके साथ कान्तिजनक, स्वाददायक और वीर्यवर्द्धक है और गुण रसकी समान जानने ।

चोपिताम्रगुणा ।

चोपिताम्रोवलरुचिर्वीर्यवृद्धिकरः पर ।

लघुताशीतताशीघ्रपाकतावातपित्तनुत ॥

मलयन्धकरश्चैवपूर्ववैद्यैरुदीरितः ।

अर्थ-चूतकर खायाहुवा आम-वल, रुचि और वीर्यवर्द्धक है तथा लघुता, शीतता, शीघ्रपाकता और वातपित्तनाशक है तथा मलयन्धक है ।

शस्त्रच्छिन्नाम्रगुणा ।

पक्व स्याच्छस्त्रच्छिन्नाम्रोजाड्यमाधुर्यशीतकृत् ।

रुचिकृच्चिरपाकश्चधातुवृद्धिकरोतिस ॥

वलकत्तावातपित्तनाशन परिकीर्तितः । (नि० २०)

अर्थ-शस्त्र अर्थात् चक्कूसे काटके खाया हुआ आम-जडता, मधुरता, शीतता, रुचि, चिरपाक, धातुवृद्धि और बलकारक है तथा वातपित्तनाशक है ।

आम्रावत्त ।

पक्वस्यमहकागस्यपट्टेविस्तारितोरम ।

धर्मगुणोमुहुर्दत्तआम्रावर्त्तडतिस्मृत ॥

अर्थ-पकेहुये आमके रसकी बख्खपर निछाकर प्रथम मुखालेखे डमको आम्रावत्त (ऑषट) कहते हैं ।

आम्रावत्तगुणा ।

आम्रावर्त्तस्तृपाच्छर्दिवातपित्तहरः सर ।

रुच्य सूर्याग्नि पाकाल्लघुश्चमहिकीर्तितः ॥ (भा प्र)

अर्थ-आम्रावत्त (ऑषट)-ठपा, वमन और वातपित्तनिवारक है, पुष्टेक दस्तावर, रुचिकारक यह सूर्यको किरणासे पाक होनेसे हल्का है ।

आम्रावत्तगुणा ।

तस्यखण्डगुरुपगोचनचिग्पाकिच ।

मधुगृहणवत्यभीतलवातनाशनम् ॥

अर्थ-आमका रुकड़ा-भारी, रुचिकारी, देखे पचनेवाला, मधुर, पृथु, बलकायक, जीतल और वातविनाशक है ।

अतिशयाश्रमशयगुणा ।

मन्दानलत्वविषमज्वरश्चरक्तामयवद्धगुदोदरश्च । आश्रति-
योगेनयनामयवाकरोतितस्मादतितानिनाद्यात ॥ एतद-
म्लाम्रविषयमधुगम्लपरंनतु । मधुरस्यपरनेत्रहितत्वाद्या
गुणायत ॥ शुण्ठयम्भसोऽनुपानंस्यादाम्राणामतिभक्षणे ।
जीरकप्रयोक्तव्यमहसोवर्जलेनच ॥ (रा० नि०)

अर्थ-अधिक आमका रसाना मदाति, विषमज्वर, रुधिरविकार, वद्धगु-
दोदर और नेत्ररोगको उत्पन्न को है, इस कारण अधिक आमका रसाना वर्जित
है, यह जितने दाप आमके को है सो मय राटे आमके जानने, परन्तु मँडे
आमके भक्षण करनेसे यह रोग नहीं होते हैं, मधुर आम को अधिकतर नेत्रोंकी
हितकारी और अधिक गुणवाला है । अधिक आम रानेके पीछे मोटका
जल पीवे तथा जीरा फालानेन राना उचित है ।

मधुगुणाश्रयगुणाः ।

मधुनातत्क्षयप्रीहवातश्लेष्महरपरम् ।

अर्थ-मधुयुक्त आम-दाप (राजयक्ष्मा,) प्रीडा, वात और श्लेष्मनाशक है ।

घृतगुणाश्रयगुणाः ।

सघृतंवातपित्तमदीपनबलवर्णकृत । (राजरत्नम्)

अर्थ-घृतयुक्त आम-वातपित्तनाशक, दीपन, बलवद्ध और वर्णनाशक है ।

दूधगुणाश्रयगुणाः ।

वातपित्तहररुच्यगृहणवलवर्द्धनम् ।

वृष्यवर्णकरस्वादुदुग्धाश्रगुम्भीतलम् ॥ (मा० प्र०)

अर्थ-दुग्धयुक्त आम-वातपित्तनाशक, रुचिकारक पृथु, बलवद्धक,
वीर्यवर्द्धक, म्वाश्रित, भारी और जीतल है ।

आश्रयगुणाः ।

आश्रसीजतुमधुरकिञ्चिदभ्युपयुक्तम् ।

चान्त्यतीमारहदाहनाशनानुप्रेममम् ॥

अर्थ-आमकी गुठली-मधुर, किञ्चित् अम्ल, कपेली तथा वमन, अति-सार और हृदयकी दाहको दूर करनेवाली है ।

आम्रास्थितैलगुणा ।

आम्रतैलतुतुवरंस्वादुरूक्षञ्चतित्तकम् ।

सुगन्धिमुखरोगस्यनाशनकफवातनुत् ॥ (नि० २०)

अर्थ-आमकी गुठलीका तेल-कपेला, स्वादिष्ट, रूखा, कडवा, सुगन्धि तथा मुखरोग, कफ और वातनाशक है ।

आम्रत्वचादिगुणा ।

आम्रत्वचाकपायाचमूलसौगन्धितादृशम् ।

रुच्यसग्राहिशिरिषुप्पतुरुचिदीपनम् ॥

अर्थ-आमकी छाल-कपेली, आमकी जड़-कपेली, सुगन्धित, रुचिकारक, मलरोधक और शीतल है । आमका फूल-रुचिको दीपन करे है ।

आम्रान्तस्त्वग्गुणा ।

आम्रान्तस्त्वग्ग्राहिणीतुतुवरादाहकारिणी ।

पित्तमेढकफानाश्नारिणीयोनिशुद्धिकृत् ॥

अर्थ-आमकी अन्तरकी-छाल-मलरोधक, कपेली, दाहकारक तथा पित्त, प्रमेह और कफनाशक है । तथा योनिको शुद्धि करे है ।

आम्रमूलगुणा ।

आम्रमूलतुतुवरग्राहिशीतरुचिप्रदम् ।

सुगन्धिकफवातानानाशनपरिकीर्तितम् ॥

अर्थ-आमकी जड़-कपेली, मलरोधक, शीतल, रुचिदायक, सुगन्धि तथा कफ और वातविनाशक है ।

आम्रपद्मगुणा ।

आम्रच्छदस्तुतुवरोग्राहकोरुचिकारक ।

वातपित्तरुफान्दन्तीत्येवञ्चपरिकीर्तितम् ॥ (नि० २०)

अर्थ-आमके कोमल पत्ते-कपेले, मलरोधक, रुचिकारक तथा वात, पित्त और कफको हरनेवाले हैं ।

गजाम्रनामानि ।

गजाम्रोन्धोराजफल स्मराम्र कोकिलोत्सवः ।

मधुर कोकिलानन्द कामेष्टो नृपवल्लभ ॥

अर्थ-गजाश्र, राजफल, स्मराश्र, कोकिलोत्सव, मधुर, कोकिलानन्द, कामेष्ट, नृपवल्लभ, (एक, आश्राव, कामाह, राजपुत्रक)

वालराजफलकफाश्रपवनंश्वासातिपित्तप्रद मध्यतादृशमे-
वदोषबहुलभृष्यकपायाम्लकम् । पक्वचेन्मधुरत्रिदोषश-
मनतृष्णाविदाहश्रमश्वासारोचकमोचरुगुरुहिमवृष्याति-
भृषाह्वयम् ॥

अर्थ-कच्चा कलमी आम, कफ, वातरक्त, भाग और अत्यन्त पित्तजनक है । तरुण कलमी आमके गुण कच्चे कलमी आमकी समान हैं । अनेक दोषकारक, कपेला और रगदाह । पक्का कलमी आम मधुर, त्रिदोषनिवारक तथा तृष्णा, दाह, श्रम, भाग और अरुचिनाशक है, भारी, शीतल और अत्यन्त वीर्यवर्द्धक है ।

विवरण । आमके वृक्ष माय भागवतवर्षके समस्त प्रदेशोंमें अविद्यमान होते हैं, अर्थात् प्रत्येक नगरके निकट आमके बाग होते हैं । आमकी अनेक जाति हैं, किन्तु आकृति मयकी प्यारी होती है । पत्ते जायुनकी समान कुछ विशेष लम्बे होते हैं। पूरा छोटा छोटा मीर आता है, यमन्तकनुके मारम्भम पूरा आने लगता है । और यमन्तकनुके अन्तग चनेरी परापर पल आते हैं, पश्चात् बटकर १०-१० तौले तकके होजाते हैं । भयप अवस्थामें हरा रंग होता है और पकनेपर पीला पड़जाता है और कोई हरे-ही रहते हैं । फलके भीतर गुठली निकलती है उसके भीतर भाग निकलती है उसको बिजली कहते हैं ।

दूधरे कलमी, मालदूधे, विलासती, अनेकप्रकारके दूधरे डीपोंमें आये हुये आम हैं । यह इनकी अपेक्षा अधिक पक्के और विषम मधुर होते हैं । परन्तु अनेकप्रकारके कार्योंमें यह देसीही आम श्रेष्ठ गिनेजाते हैं ।

आश्रावतपनामानि ।

आश्रावतकपीतनककपिभृतोम्लकम् ।
वर्षपार्ककपिभृडातनुश्रीगिपि

अर्थ-आश्रावतक, पीतनक, कपिभृत, अम्लक

तनुश्रीगि, कपिभृत (पीतन, कपिभृत)

रसाढ्य, तनुक्षीर, अम्नरातक, अम्बरीष, आम्रात, अम्रात, अम्रातक, अध्व-
गभोग्य, मर्कटात्र और तुङ्गी)



| | |
|-----------------|--|
| सस्कृतभाषामें | आम्रातक । |
| हिंदीभाषामें | अम्बाडा । |
| वगभाषामें | आम्बाडा । |
| मराठीभाषामें | अम्बाडा । |
| कर्णाटकीभाषामें | आवोडेयकायि । |
| तैलिङ्गीभाषामें | आमाटम् । |
| गुजरातीभाषामें | अम्बेडा । |
| इंग्रेजीभाषामें | स्पोन्डिआस् मिनट् । <i>Spondias minute</i> |
| लैटिन्भाषामें | स्पोन्डिआस् मॅंगिफरा । <i>Spondias mangifera</i> |
| अल्पफलगुणाः । | |

आम्रातमल्लवातप्रगुरुष्णरुचिकृत्सरम् । पक्वतुतुवरस्वादु
गसेपाकेहिमस्मृतम् ॥ तर्पणश्लेष्मलक्षिग्धवृष्यविष्टम्भि
वृहणम् । गुरुवल्ग्यमरुत्पित्तक्षतदाहक्षयाम्बजित् ॥ (भा० प्र०)

अर्थ—कच्चा अम्बाडा—खट्टा, वातनाशक, भारी, गरम, रुचिकारक और
सारक है । पक्का अम्बाडा, कपेला, स्वादु, पाकमेंभी स्वादु, शीतल, वृत्ति-
कारक, कफकारक, क्षिग्ध, वीर्यवर्द्धक, विष्टम्भजनक, पुष्टिकारक, भारी,
वल्कारी तथा वात पित्त, क्षत, दाह, क्षय और रुधिरविकारको दूर करे है ।

अपच ।

आम्रातकोगुरुश्लेष्मस्तुवरोम्लोरुचिप्रदः । सरःकट्यपि-

और तीगरा खटा, तहां मधुर अनार त्रिदोषनाशक है । और मीठा और खटा अनार वातपित्तनाशक है । खटा अनार-रक्तपित्तनाशक और गर्व प्रकारके अनार मलगेधक है ।

अर्थ- ।

वलयपित्तानिलघ्नलघुशिशिरममृग्दाहमूर्च्छापिपासा-
भ्रान्तिभ्रान्तिज्वरच्छर्दिरुचिमदगदाजीर्णनिर्वल्यनाशी ।
मिष्टविष्टम्भिगुक्रप्रदमकफकरंदाडिमचातिपक्वं
हीनंतस्मादपक्वतुवग्मथमरुन्माथिरुच्ययदम्लम् ॥

अर्थ-अत्यन्त पक्का अनार-चलनाशक, पित्तनाशक, वातविनाशक, हल्का, शीतल तथा रुधिरविकार, टाढ़, मूर्च्छा, पिपासा, भ्रान्ति, भ्रम, ज्वर, वमन, अरुचि, मोह, अजीर्ण और निर्वल्यताका नाश करे है । मिष्ट, विष्टम्भजनक, गुक्करोष्ण और कफकारक है । तरुण अनार-रोग, वात नाशक, रुचिकारक और खटा है ।

अर्थ- ।

दाडिमतुवग्चाम्लमधुगृत्तित्तिरुक्कम् । त्रिग्वचदीपनग्रा-
हिहृद्यचोष्णरुचिप्रदम् ॥ लज्ज्वग्निदीपकप्रोक्तरुफकामथ-
मापहम् । सुगन्धकठरुजपित्तनाशयेदितिकीर्तितम् ॥ मधुरं
तत्तृत्तिकरधातुवृद्धिकरलघु । तुवग्ग्राहकत्रिग्वधमेध्यवलय-
श्चमाधुगम् ॥ पथ्यं त्रिदोषतृड्दाहज्वरहृद्गोगनाशनम् ।
मुखरोगकंठरोगनाशयेदितिकीर्तितम् ॥ मधुगम्लंतत्तृ-
च्यं दीपनचमतलघु । वातपित्तप्रशमनंतदम्लपित्तलंमतम् ॥
रक्तपित्तकं चैव कफवातविनाशकम् । गुण्यं चाल्प-
त्प्रोक्तरुच्यं च हृदयप्रियम् ॥ वातानुलोमनरुग्मुनिभि-
परिकीर्तितम् । (नि० २०)

अर्थ-अनार-कपडा, खटा, मधुर, शीतल
हृदयको दिव्यकारी, गरम, रुचिकारक,
गोती, भ्रम, मुखरोग, कंठरोग ३०

त्रिग्व, दीपन, मग्गोषक
त्रिपदीपक तथा च, ३०
नाशक है । मधुर

अनार-वृत्तिकारक, वातवर्द्धक, हलका, कपेला, ग्राही, स्निग्ध, मेधाजनक, बलवर्द्धक, मधुर, पथ्य तथा त्रिदोष, तृषा, दाह, ज्वर, हृदयरोग, मुखरोग और कठरोगको दूर करेहै । मधुराम्ल अर्थात् खट्टा और मीठा अनार-रुचिकारक, दीपन, हलका, वात और पित्तनाशक है । खट्टा अनार-पित्तकारक रक्तपित्तजनक, कफ और वातविनाशक है । कच्चा सुखाया हुआ अनार-अनारदाना-रुचिकारक, हृदयको प्रिय और वातको अनुलोमन करनेवाला है ।

दाडिमपुष्पादियुगा ।

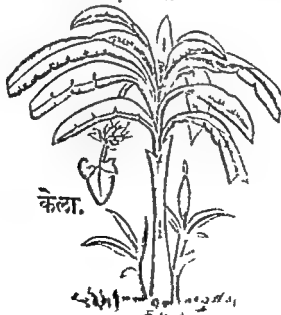
तत्पुष्पञ्चपुनर्जयनासासृगतिनावनात् ।

दाडिमत्वक्क्रिमिघ्राचग्राहीरक्तातिसारहा॥ (शो०नि०)

अर्थ-अनारके फूल-नाकसे रुधिर गिरनेको दूर करेहै । अनारके बल्कल कृमिनाशक, मलरोधक और रक्तातिसारको हरेहै ।

विवरण । अनार-मध्यमाकारका वृक्षहै, हिन्दोस्थानके सर्व स्थानोंमें मिलताहै, पंजाबी और काबुली वृक्षोंके फल कुछ अधिक मधुर होतेहैं । जो नाकसे रुधिर गिरता हो तो अनारको सूघनेसे और इसका अर्क नाकमें डालनेसे आराम होजाताहै । बीज और छिलका खाँसीको खोतेहैं । इसकी जड़ कीड़ोंको नाश करतीहै ।

कदलीनामानि ।



केला.

कदलीसुफलारभामोचावारणवल्लभा ।

और तीताग खट्टा, तहां मधुर अनार विद्रोहनाशक है । और भीठा और खट्टा अनार वातपित्तनाशक है । खट्टा अनार-रक्तपित्तहारक और गरम फलके अनार मरुगोषक है ।

अन्यथा ।

बल्यपित्तानिलघ्नलघुशिशिरममृगदाहमूर्च्छापिपासा-
भ्रान्तिश्रान्तिज्वरच्छर्दयरुचिमदगदाजीर्णनिर्वल्यनाशी ।
मिष्टविष्टम्भिगुक्प्रदमरुफकरंदाडिमंचातिपक्क
हीनतस्मादपक्रतुवग्मथमरुन्माथिरुच्ययदम्लम् ॥

अर्थ-अत्यन्त पक्का अनार-बलकारक, पित्तनाशक, वातविनाशक, हलका, शीतल तथा रुधिरविकार, दाह, मूर्च्छा, पिपासा, भ्रान्ति, भ्रम, ज्वर, यमन, अरुचि, मोह, अजीर्ण और निर्वलनाका नाश करे है । मिष्ट, विष्टम्भजनक, शुक्लवर्णक और कफकारक है । तरुण अनार-रक्ता, वात नाशक, रुचिप्राप्तक और खट्टा है ।

अथ ।

दाडिमतुवग्माम्लमधुगृत्तिसिंहारकम् । सिग्धचदीपनग्रा-
हिहृद्यचोष्णरुचिप्रदम् ॥ लप्वग्निदीपकप्रोक्तरुफकामथ-
मापहम् । मुखकठरुजपित्तनाशयेदितिकीर्तितम् ॥ मधुर
तृत्तिकरधातुवृद्धिकरंलघु । तुवग्मग्राहकसिग्धमेभ्यबल्य-
क्षमाधुग्म ॥ पथ्यविद्रोपतृडदाहज्वरहृद्गोगनाशनम् ।
मुखरोगकठंगंगागयेदितिकीर्तितम् ॥ मधुराम्लतनु-
च्यदीपनंचमतंलघु । वातपित्तप्रशमनतदम्लपित्तालमतम् ॥
रक्तपित्तकंघ्वकफवातविनाशकम् । शुष्कबालधन-
न्प्रोक्तरुच्यनद्वयप्रियम् ॥ उतातुलोपनरुग्मुनिभि-
परिकीर्तितम् । (नि० १०)

अर्थ-अनार-कपेरा, खट्टा, मधुर, शुद्धिकारक, सिग्ध, दीपन, मरुगोषक, हृदयको हिहृद्यगी, गरम, रुचिकारक, हृन्, मुखको कठोरता तथा रुज, पित्तनाशक, दाह, ज्वर, गंगा, श्रम, मृगगोग, कंदरोग और

पिपासा, रक्तपित्त तथा कफ, वातनाशक है । मधुर

अनार-रुचिकारक, घातुवर्द्धक, हलका, कपेला, ग्राही, स्निग्ध, मेधाजनक, बलवर्द्धक, मधुर, पथ्य तथा त्रिदोष, तृषा, दाह, ज्वर, हृदयरोग, मुखरोग और कठरोगको दूर करेहै । मधुराम्ल अर्थात् खट्टा और मीठा अनार-रुचिकारक, दीपन, हलका, वात और पित्तनाशक है । खट्टा अनार-पित्तकारक, रक्तपित्तजनक, कफ और वातविनाशक है । कच्चा सुखाया हुआ अनार-अनारदाना-रुचिकारक, हृदयको प्रिय और वातको अनुलोमन करनेवाला है ।

दाडिमपुष्पादिगुणा ।

तत्पुष्पञ्चपुनर्जयं नासासृगतिनावनात ।

दाडिमत्वक्क्रिमिघ्राचग्राहीरक्तातिसारहा ॥ (शो०नि०)

अर्थ-अनारके फूल-नाकसे रुधिर गिरनेको दूर करेहै । अनारके बल्कल कृमिनाशक, मलरोधक और रक्तातिसारको हरेहै ।

विवरण । अनार-मध्यमाकारका वृक्षहै, हिन्दोस्थानके सर्व स्थानोंमें मिलताहै, पंजाबी और काबुली वृक्षोंके फल कुछ अधिक मधुर होतेहैं । जो नाकसे रुधिर गिरता हो तो अनारको सूघनेसे और इसका अर्क नाकमें डालनेसे आराम होजाताहै । बीज और छिलका खाँसीको खोतेहैं । इसकी जड़ कीड़ोंको नाश करतीहै ।

यदलीनामानि ।



कदलीसुफलारभामोचावारणवल्लभा ।

सुकुमागचर्मण्वतीतत्पत्रीनगरीपवि ॥

अर्थ-कन्ली, मुफला, ग्भा, मोचा, वारणवटभा, मुकुमारा, चर्मण्वती, तत्पत्री, नगरीपवि (वारणपुसा, अशुमत्तला, काष्ठीला, कदल, वार पुसा, वारणपुसा, सकृत्तला, गुच्छतला, दम्बिविषाणी, गुच्छन्तिका, नि.मारा, गजेष्टा, चाल्कमिया, ऊरुस्तम्भा, भातुरा, वनलम्भा, वटहफ, मोचर, रोचर, लाचर, वाग्वृषा, आपतच्छदा, तन्तुविग्रहा, अभुगारा) ।

सकृत्तभाषाम कदली ।

दिन्दीभाषाम केला ।

वगभाषाम कला ।

मराठीभाषाम केळ, मोनकेळ, गुटेळी, छोराडी, नवी ।

गुजरातीभाषाम केन्य ।

कर्णाटकीभाषाम कदली, मत्वालेकाष्ठ, कावालेवप ।

तट्टीभाषाम चक्राकेली, आरटीराया अगटिनेट्टु, गुडगनेर, दौदताडे ।

तामिलीभाषाम वाळे ।

पाहवी० तट, तटमपन ।

दुसाई० वाहा ।

वर्गी० इगर्पा ।

इमेनीभाषाम कुन् । Platan

लैन्नि भाषाम मुतातेपियेनरम् । M. parid ० ० ०

मुगोपरेटिन्यारा । M. parid ० ० ०

काग्वीभाषाम मायड, मांस ।

अग्नीभाषाम तना ।

अथ माषाण्यन्युता ।

कदलमधुगृप्यरुपायनातिशीतलम् ।

रक्तपित्तहृदयकच्यंश्लेष्मकगुरु ॥ (रा० प०)

अर्थ-केली माषाण्यनी, मधुर, वीर्यसदक, किमिष्ट, वनेरी, शीतल, रक्तपित्तनाश, हृदयको दिनकार, शिवाली, कदलमधु और नागि है ।

अथ ।

कदलीनीनलागु रीगृप्यासिग्नामधुःस्यूता ।

पित्तरक्तविकारञ्चयोनिदोषंतथाश्मरीम् ॥

रक्तपित्तनाशयतीत्येवमाचार्य्यभाषितम् ।

अर्थ—कदली—शीतल, भारी, वीर्य्यवर्द्धक, क्षिग्ध, मधुर तथा पित्त, रुधिरविकार, योनिदोष, पयरी और रक्तपित्तको दूर करे है ।

कोमलकदलीफलगुणा ।

कोमलकदलशीतमधुरचकपायकम् ।

रुच्यमम्लसमुद्दिष्टं पित्तनाशकरञ्चतत ॥

अर्थ—केलेकी कोमल फली—शीतल, मधुर, कपेली, रुचिकारक, अम्ल और पित्तनाशक है ।

मध्यमकदलीफलगुणा ।

तृड्भूक्तपित्तादिगदप्रमेहान्फलकदल्यास्तरुणंनिहन्ति ।

सग्राहिकतित्तकपायरूक्षंरक्तातिसारशमयंज्वरञ्च ॥

अर्थ—केलेकी तरुणफली—तृषा, रक्तपित्त, नेत्ररोग, प्रमेह, रक्तातिसार और ज्वरको दूर करनेवाली है, ग्राही, कडवी, कपेली और रूखी है ।

अन्यञ्च ।

मध्यमकदलकिञ्चित्तुवरमधुरगुरु ।

अग्निमाद्यकरचैवऋषिभिर्परिकीर्तितम् ॥

अर्थ—केलेकी तरुण (कुठ कच्ची और कुठ पक्की) फली—किञ्चित् कपेली, दृग, भारी और मन्दाग्निकारक है ।

अथ कदलीफलगुणा ।

सग्राह्यपक्वञ्चसुशीतलञ्चकपायकवातकफं करोति ।

विष्टम्भिवल्यगुरुदुर्जरञ्चाारण्यरम्भाफलमेव चैतत ॥

अर्थ—कच्ची केलेकी फली—मलरोधक, शीतल, कपेली, वातकफकारक, ज्वरक, बलवद्धक, भारी, दुर्जर और जंगली केलेकेभी गुण इसीके जानने ।

पक्वकदलीफलगुणा ।

पक्वफलकपायमधुरवलयञ्चशीततथापित्तचाक्षविमर्द-

रपथ्यनमदानले । मधु. शुक्रविवर्द्धनकमहरन्त्युणा-

न्तेद तीक्ष्णं

शोमयुक्तमन्तर्ग-

अर्थ-कैलेका नल-शीतल, मलरोधक तथा वृषा, मूत्ररूच, प्रमेद, कर्णरोग, अतिमार, रुधिरका गिरना, स्फोटक, रक्तपित्त, दाह, रुधिर-विकार, योनिरोग और शोषको दूर करे है ।

यदलीक-द्रव्याणां ।

वल्य कदल्याःकन्द स्यात्कफपित्तहरोगुरु ।

वातलोग्नामन कपायोरुक्षशीतल ॥

कर्णशूलरजोदोषसोमरोगनियच्छति ।

अर्थ-कैलेका कन्द-जलकारक, कफपित्तनाशक, भारी, वातकारक, रक्तयिकारको दूर करनेवाला, कपेला, रुग्णा, शीतल तथा कर्णशूल, रजोदोष और सोमरोगको दूर करे है ।

अन्यथा ।

कन्द कदल्यारुक्षस्याद्वातलम्तुवगेगुरु । शीतोऽल्योम-
धु'केश्योरुच्योऽभिमांयकारक ॥ कर्णशूलचाम्लपित्तदा-
हंरुजतथा । सोमदोषरजोदोषं कृमीन्कुष्ठघ्ननाशयेत् ॥ नि र.

अर्थ-कैलेका कन्द-रूग्णा, कपेला, भारी, शीतल, घटाटक, मूत्र, केशोंको हितकारी, रुचिकारी, मन्दाप्रकारक तथा कर्णशूल, अम्लपित्त, दाह, रुधिरविकार, सोमरोग, रजोदोष, कृमि और कुष्ठको नष्ट करे है ।

यदलीक-द्रव्याणां ।

सारकदल्या मग्राहिचाप्रियगुरुशीतलम् ॥

तृडदाहमृत्ररूच्यतिमारमेहाश्रमोमकम् ।

अस्थिन्नावरक्तपित्तविस्फोटाश्रयनाशयेत् ॥

अर्थ-सदलीक-मन्त्रोचक, अप्रिय, भारी, शीतल तथा वृषा, दाह, मूत्ररूच, अतिमार, प्रमेद, सोमरोग, अस्थिन्नाव, रक्तपित्त और विस्फोट-नाशक है ।

आरण्यकदलीगुणाः ।

आरण्यकदलीशीतामपुरात्रलवर्द्धिनी । वीर्यवृद्धिकरीरू-

च्यादुर्जगचगुरु स्मृता । तृडदाहशोषपित्तानाशिनी-

प्रकीर्तिता । फल-पुनःपान्य मधुरमगुरु-

अर्थ-वनकदली भयावृ रजोदोष-शीतल

दंष्ट

वर्द्धक, रुचिकारक, दुर्जर, भारी तथा वृषा, दाह, शोष और पित्तका नाश करे है । इसका फल कपेला, मधुर और भारी है ।

काष्ठकदलीगुणा ।

काष्ठस्यकदलीग्राहीहृद्यारुच्याचशीतला । अग्निमांद्यकरी
गुर्वीदुर्जराचातिमाधुरी ॥ तृड्दाहमूत्रकृच्छ्राणारक्तपित्तस्य
नाशिनी । विस्फोटंचास्थिरोगचनाशयेदितिकीर्तिता ॥

अर्थ—काष्ठकदली (काठकेला)—ग्राही, हृद्यको हितकारी, रुचिकारक, शीतल, मन्दाग्निकारक, भारी, कठिनतासे पचनेवाला, अत्यन्त मधुर तथा वृषा, दाह, मूत्रकृच्छ्र, रक्तपित्त, विस्फोट और अस्थिरोगका नाश करे है ।

सुवर्णकदलीगुणा ।

सुवर्णकदलीशीतामधुराचाग्निदीपनी ।

वल्यावृष्याचगुर्वीचतृड्दाहकफनाशिनी ॥ (नि०र०)

अर्थ—सोनकेला—शीतल, मधुर, अग्निप्रदीपक, बलकारक, वीर्यवर्द्धक, भारी तथा वृषा, दाह और कफका नाश करे है ।

अन्यच्च ।

तदेवचम्पकाख्यंतुवातपित्तहरंगुरु ।

वृष्यञ्जैवातिशीतञ्चमधुररसपाकयो ॥ (रा०व०)

अर्थ—चम्पककेला, वातपित्तनाशक, भारी, वीर्यवर्द्धक, अत्यन्त शीतल, मधुर और पचनेमभी मधुर है ।

अन्यच्च ।

सुवर्णमोचाकफवातहारिणीविष्टम्भिनीदीपनकारिणीच ।

सुदुर्जरादाहविघातिनीचरक्तअपित्तंशमयेतनिश्चितम् ।

अर्थ—चम्पककेला—पीलाकेला—कफवातनाशक, विष्टम्भकारक, अग्निप्रदीपक, दुर्जर, दाहनाशक और रक्तपित्तको शान्तिकरे है ।

मदद्रव्यकदलीगुणा ।

महेन्द्रकदलीचोष्णावातस्यचविनाशिनी ।

प्रदरपित्तरोगचनाशयेदितिकीर्तिता ॥

अर्थ—महेन्द्रकदली—गरम तथा वात प्रदर और पित्तरोगका नाश करे है ।

शृंगवदलीकृष्णगुणा ।

कृष्णातुकदलीरुच्यातुवरामधुरालघु ।

वायोर्धातोवृद्धिकरीमेहपित्तवृषाहारा ॥ (नि० २०)

अर्थ-कालाकेला-रुचिकारक, कपेला, मधुर, हल्का, वातकारक, धातु-
वर्द्धक तथा प्रमेह, पित्त और वृषाको दूर करे है ।

माणिस्यमुक्तामृतचम्पकाद्याभेदाकदल्यावहवो-

पिसन्ति । उक्तागुणास्तेषुचिराद्भवन्तिनिर्दोषता

स्याल्लघुताचतेषाम् ॥ (भा० प्र०)

अर्थ-केलेकी माणिस्य, मुक्ता, अमृत और चम्पकादि अनेक जाति हैं,
उन सबोंमें उपरोक्तही गुण हैं किन्तु निर्दोष और हल्कापन अधिक होता है
विवरण । केला सम्पूर्ण भारतवर्षमें और उच्च राष्ट्रोंके वा और पहा-
डोंमें अधिकतासे होता है, केलेकी अनेक जाति हैं, जैसे पहाडों केला-
चम्पककेला, जगली केला, पहा केला, काठ केला, इत्यादि, परन्तु गुणमें
सब समान हैं, केलेका वृक्ष बहुत ऊँचा होता है, पत्ते दो चाग मनुष्यके लम्बे
और गांध आध गज चौड़े होते हैं, यह वृक्ष सम्पूर्णमें समान होता है और
पत्तेश पत्ते निकलते चले आते हैं, गिवाय पत्तोंके और कोई शाखा इसमें
नहीं होती, केवल पत्ताहीसे वेदित होता है, उसमें चम्पके भीतर चम्पकी
नियन्ता है कुछ मार नहीं होता, उसके रीचमें एक दृष्टा मिलता है उस
दृष्टेपर एक हजार फली आती है बीजमें मधमे ऊपर कम उबलनेभी
बड़ा लाल रंगका एक पुच्छ तोषण सुरजीवे मुन्य आता है फली कभी
अवस्थामें लाग होती है उसको छंदपर मगनेसे पीले रंगनी होजाती है
पहाडमें मुनिपोंके मोनाके लिये यह उत्तम पदार्थ है ।

मारिकेनामानि ।



नारिकेलोद्दफलोलाङ्गलीकूर्चशीर्षकः ।

जुङ्गःस्कन्धफलश्चेवतृणराजः सदाफलः ॥

अर्थ—नारिकेल, दृढफल, लाङ्गली, कूर्चशीर्षक, जुङ्ग, स्कन्धफल, तृणराज, सदाफल, (नारिकेर, नाडिकेलि, नारीकिली, नारीकारी, नारिकेरि, नारिकेलि, सदापुष्प, शिराफल, मृदुफल, पुटोदक, गारिकेर, रसफल, सुतुङ्ग, कूर्चशेखर, दृढनीर, नीलतरु, मङ्गल्प, उच्चतरु, स्कन्धतरु, दाक्षिणात्य, दुरारुह, ज्यम्बकफल, शिराफल, करकाम्भा, पयोधर, सुतकुण, कौशिकफल, फलमुण्ड, जटाफल, मुण्डफल, विश्वामित्रमिय, नाडीकेल, नारकेर, सुभङ्ग, फलकेशर, वरफल, महाफल, सदाफल, तोयगर्भ, व्यक्षफल) ।

संस्कृतभाषामें

नारिकेल ।

हिन्दीभाषामें

नारियल, नरियल, खोपरा ।

वगभाषामें

नारिकेल, नारकोल ।

मराठीभाषामें

श्रीफल, नारळ ।

गुजरातीभाषामें

नालीयर ।

कर्णाटकीभाषामें

तेगिनकायि ।

तेलिंगीभाषामें

टेंकाया, नारिकदम ।

तामिलीभाषामें

टेन्ना, तेन्नायि ।

औत्कलीभाषामें

नडिया ।

इंग्रेजीभाषामें

कोकोनट पाम । Coconut palm

लैटिन्भाषामें

कोकोमन्युसिफेरा । Coconusifera

फारसीभाषामें

जोजहिन्दी नारीगल ।

अरबीभाषामें

नारजिल् ।

नारिये-साधारणगुणाः ।

नारीकेलसुमधुरगुरुस्निग्धञ्जशीतलम् ।

हृदयसंवृहणवस्तिशोधनरक्तपित्तनुत् ॥ (आ० स०)

अर्थ—साधारण नारियल—मधुर, भारी, स्निग्ध, शीतल, हृदयको हितकारी, पुष्टिकारक, वस्तिशोधक और रक्तपित्तनाशक है ।

अन्यथा ।

नारिकेलगुरुस्निग्धशीतवृष्यचदुर्जगम् । वस्तिशुद्धिकरवृष्यवृहणकफकारकम् ॥ स्वादुविष्टम्भकृत्प्रोक्तशोषतृदपि-

क्षयनाशनम् । वातपित्तरक्तदोषं दाहञ्चैव विनाशयेत् ॥ अत-
क्षयनाशयतीत्येवमुक्तकृपालुभिः । (नि० २०)

अर्थ-नारियल-साधारण, भारी, स्निग्ध, ग्रीतल, वीर्यवर्द्धक, कटिनाशक, पचनेवाला, वस्त्रशोधक, चल्कारक, पुष्टिकारक, कफमारक, रसाग्नि, विष्टम्भकारक तथा शोष, कृपा, पित्त, वातपित्त, रुधिरदोष, दाह और क्षतक्षयका नाश करे है ।

अपिच ।

स्निग्धस्वादुरसविपाकमधुरहृद्यजडं दुर्जरं पित्तप्रभृतिवर्द्धनं
मदकरवातामयध्वसनम् । आमश्लेष्मविपाककोपशमनव-
ह्नेश्रमध्वसनकन्दर्पस्य बलं ददाति नितगंतन्नारिकेलं फलम् ।

अर्थ-नारियल-साधारण, स्वादु, रसयुक्त, पाचन मधुर, हृद्यको दित
कागी, भारी, दुर्जर, विघ्ननाशक, वृद्धिबद्धक, मदकारक, वातगोमनाशक,
सारक, आम और कफको कोपको शान्ति करनेवाला, मग्निनाशक, आम-
नाशक और कामदेवको बलको बढ़ानेवाला है ।

कोमलनारिकेलं गुणः ।

विशेषतः कोमलनारिकेलं निहन्ति पित्तज्वरमस्य दोषान् ।
तृदद्यर्दिदाहामयमाशुहन्त्यात्मरक्तपित्तप्रभवाश्च रोगान् ॥
(ग० ५०)

अर्थ-कोमल नारियल विशेषरूपसे पित्तज्वर, रक्तपित्त, कृपा, अमन,
दाह और रक्तपित्तमें उत्पन्न हुए रोगोंका शीघ्रही नाश करे है ।

पक्वनारिकेलं गुणः ।

पक्वनारिकेलं तु दाहकपित्तलग्नम् ॥

वृष्यमलस्रम्भस्वरुनिदं मधुरं मतम् ।

दीपनबलकृत् प्रोक्तवीर्यस्य च विवर्द्धकम् ॥ (नि० २०)

अर्थ-पक्वनारिकेल-दाहनाशक, विघ्ननाशक, भारी, वीर्यवर्द्धक मतम्
म्भ, शक्तिदायक मधुर मीठा, पचनवर्द्धक और वीर्यवर्द्धक है ।

गुणः नारिकेलं गुणः ।

नारिकेलं फलं शुष्कं दुर्जरं दाहकं गुणः ।

स्निग्धंमलस्तम्भकरवलवीर्यरुचिप्रदम् ॥

अर्थ—शुष्कनारियल अर्थात् सूखागोला—कठिनतासे पचनेवाला, दाहकारक, भारी, स्निग्ध, मलस्तम्भक, तथा वल, वीर्य और रुचिको उत्पन्न करनेवाला है ।

नारिकेलजलगुणा ।

स्निग्धस्वादुहिमहृद्यदीपनवस्तिशोधनम् ।

वृष्यपित्तपिपासाघ्ननारिकेलोदकगुरु ॥ (सु०मु०)

अर्थ—नारियलका जल वा दूध—स्निग्ध, स्वादिष्ट, शीतल, हृदयको हितकारी, दीपन, वस्तिशोधक, वीर्यवर्द्धक, पित्तनिवारक, प्याम्नाशक और भारी है ।

- अथञ्च ।

दुग्धतुनारिकेलस्यवल्परुच्यगुरुस्मृतम् ।

पाकेस्वादुसमुद्दिष्टस्निग्धवृष्यञ्चदाहकम् ॥

किञ्चिदुष्णवातकफगुल्मकासविनाशकम् । (नि०र०)

अर्थ—नारियलका दूध—चल्कारक, रुचिदायक, भारी, पचनेमें स्वादिष्ट, स्निग्ध, वीर्यवर्द्धक, दाहकारक, किञ्चित् गरम तथा वात, कफ, गुल्म और खाँसीको दूर करे है ।

अथिच ।

नारिकेलाम्बुतरुणतृष्णाघ्नपित्तनाशनम् ।

वालस्यनारिकेलस्यजलंप्रायोविरेचनम् ॥

शीतंवमधुमूर्च्छाघ्नपित्तज्वरविनाशनम् ।

नारिकेलोदकजीर्णविष्टम्भिगुरुशीतलम् ॥ (रा०य०)

अर्थ—तरुण-नारियलका जल—तृष्णा और पित्तनाशक है । वाल नारिकेल अर्थात्—कच्चे नारियलका जल—विरेचक, शीतल तथा वमन, मूर्च्छा और पित्तज्वरको दूर करे है । पक्केनारियलका जल—विष्टम्भकारक, भारी और शीतल है ।

नारिकेलपुष्पगुणा ।

नारिकेलस्यपुष्पन्तुशीतरक्तातिसारहृतम् ॥

रक्तपित्तप्रमेहञ्चसोमरोगञ्चनाशयेत ।

मलस्तम्भकरचापिप्रोक्तपूर्वमनीषिभि (नि० र०)

तनाशनम् । वातपित्तरक्तदोषं दाहश्चैव विनाशयेत् ॥ क्षत-
क्षयनाशयतीत्येवमुक्तं कृपालुभिः । (नि० २०)

अर्थ-नारियल-साधारण, भारी, स्निग्ध, शीतल, वीर्यघर्दक, कटिन्ताने पचनेवाला, वस्तिगोषक, बलकारक, पुष्टिकारक, कफकारक, ग्वादिपु, विष्टम्भकारक तथा शोष, वृषा, पित्त, वातपित्त, रुधिरदोष, दाह और शतक्षयका नाश करे है ।

भाष्य ।

स्निग्धम्ववादुरसविपाकमधुरद्वयं जडं दुर्जगपित्तप्रभृतिवर्द्धन
मदकरवातामयध्वसनम् । आमश्लेष्मविपाकक्रोपशमनव-
ह्नेत्रमध्वसनकन्दर्पस्य बलददाति नितरांतग्रागिकेलफलम् ।

अर्थ-नारियल-साधारण, स्वादु रसयुक्त, पाकम मधुर, दृढको दित्त कारी, भारी, दुर्जग, पित्तनाशक, कृमिवर्द्धक, मदकारक, वातरोगनाशक, मारक, आम और कफके क्रोपको शान्ति करनेवाला, अग्निनाशक, आम नाशक और कामनेयके बलको बढ़ानेवाला है ।

कोमलनारिकेलगुणाः ।

विशेषतः कोमलनारिकेलनिदन्ति पित्तज्वरमसदोषान् ।
तृदद्यर्दिदाहामयमाशुहन्त्यात्मगतपित्तप्रभनाशरोगान् ॥
(ग० य०)

अर्थ-कोमल नारिकेल विशेषकरके पित्तज्वर, ग्रासिकार, वृषा रमन, दाह और रक्तपित्तमें उत्पन्न हुए रोगोंका शीघ्रही नाशकरे है ।

पक्वनारिकेलगुणाः ।

पक्वनारिकेलतुदादकपित्तलगुरु ॥

वृष्यमलस्तम्भकरुचिदमृगमतम् ।

दीपनपलकृत्प्रोक्तनीर्यस्यचित्रवर्द्धकम् ॥ (नि० २०)

अर्थ-पक्वनारिकेल-दाहकारक, पिशुननाशक, भारी, वीर्यघर्दक, मरारक, रुचिदायक, मधुर दीपन, बलवर्द्धक और वीर्यघर्दक है ।

शुष्कनारिकेलगुणाः ।

नारिकेलफलं शुष्कं दुर्जगदादकगुरु ॥

स्निग्धमलस्तम्भकरवलवीर्यरुचिप्रदम् ॥

अर्थ—शुष्कनारियल अर्थात् सूखागोला-कठिनतासे पचनेवाला, दाहकारक, भारी, स्निग्ध, मलस्तम्भक, तथा बल, वीर्य और रुचिको उत्पन्न करनेवाला है ।

नारिकेलजलगुणा ।

स्निग्धस्वादुहिमहृद्यं दीपनवस्तिशोधनम् ।

वृष्यपित्तपिपासाघ्ननारिकेलोदकगुरु ॥ (सु०मु०)

अर्थ—नारियलका जल वा दूध—स्निग्ध, स्वादिष्ट, शीतल, हृदयको हितकारी, दीपन, वस्तिशोधक, वीर्यवर्द्धक, पित्तनिवारक, प्याग्नाशक और भारी है ।

- अन्यच्च ।

दुग्धतुनारिकेलस्य वल्यरुच्यगुरुस्मृतम् ।

पाकेस्वादुसमुद्दिष्टं स्निग्धवृष्यञ्च दाहकम् ॥

किञ्चिदुष्णवातकफगुल्मकासविनाशकम् । (नि०र०)

अर्थ—नारियलका दूध—बलकारक, रुचिदायक, भारी, पचनेमें स्वादिष्ट, स्निग्ध, वीर्यवर्द्धक, दाहकारक, किञ्चित् गरम तथा वात, कफ, गुल्म और खाँसीको दूर करे है ।

अपिच ।

नारिकेलाम्बुतरुणतृष्णाघ्नपित्तनाशनम् । बालस्य नारिकेलस्य जलं प्रायो विरेचनम् ॥ शीतं वमनमुर्च्छाघ्नपित्तज्वरविनाशनम् । नारिकेलोदकजीर्णविष्टम्भिगुरुशीतलम् ॥ (रा०व०)

अर्थ—तरुण-नारियलका जल—तृष्णा और पित्तनाशक है । बाल नारिकेल अर्थात्—कच्चे नारियलका जल—विरेचक, शीतल तथा वमन, मुर्च्छा और पित्तज्वरको दूर करे है । पथेनारियलका जल—विष्टम्भकारक, भारी और शीतल है ।

नारिकेलपुष्पगुणा ।

नारिकेलस्य पुष्पन्तु शीतरक्तातिसारहृत् ॥

रक्तपित्तप्रमेहञ्च सोमरोगञ्च नाशयेत् ।

मलस्तम्भकरं चापि प्रोक्तं पूर्वमनीपिभिः । (नि०र०)

अर्थ-नारियलका पत्र-शीतल तथा गृक्तातितार, रक्तपित्त, ममेद और सोमको दूर करे और मलस्तम्भक है ।

नारिये पुष्पजलगुणा ।

नारिकेलपुष्पजलगुरुवृष्यप्रकीर्तितम् ॥

तत्कालमदकृत्प्रोक्तचातिस्निग्धमुदीरितम् ।

तच्चेदम्लंकफकरपित्तलघुमिवातनुत् (नि० २०)

अर्थ-नारियनके फूलका जल-भारी, वीर्यवर्द्धक, तत्काल मदहारक, अत्यन्त स्निग्ध, अम्ल, कफकारक, पित्तजनक, कृमि और वातनाशक है ।

नारियलतादीगुणा ।

नारिकेलतरुतोयमतीवस्निग्धमाशुमदकृद्गुरुवृष्यम् ।

साम्लभावमुपयात्यपगह्नेष्टेष्मपित्तजनकश्चकृमिघ्नम् ॥

अर्थ-नारियनके पेड़का जल-अत्यन्त स्निग्ध, तत्काल, मदहारक, भारी और वीर्यवर्द्धक है । और वही जल दोषहरके पीछे अम्लभावगुत्त होकर कफकारक, पित्तजनक और कृमिनाशक होजाता है ।

नारिकेलरसतेजगुणा ।

नारिकेलफलोद्भूतं तेलवाजीकरंगुरु। पोषणं क्षीणधातूनां ना-

तपित्तप्रणाशनम् ॥ मृत्रावाते प्रमेहे च श्वासे कान्ते च यक्ष्मणि।

मेधालोपे च हितदक्षतानां भरणतथा ॥

अर्थ-नारियनका तेज-बाजीकर, भारी, क्षीणपात्रुवाते मनुष्योंको पुष्टि कारक, वातपित्तनाशक तथा मृत्रावात, ममेद, भ्रान्त, रोगी, शतपदमा और मेधाते छोपमें हितकारी है तथा क्षतरोमोंको दग्नेवाला है ।

मधुनारियेगुणा ।

मोहजातीयकनामनारिकेलं च शीतलम् ।

मधुरं पुष्टिहृद्बलवृद्ध्यचाग्निप्रदीपकम् ॥

कान्तिजतुकनस्निग्धकफस्यामम्यकोपनम् ।

कामवृद्धिकरदेहस्थैर्यहृदाहनाशनम् ।

तृषांपित्तश्रमवानमतिस्नाग्नाशयेत् ।

अर्थ-मधुनारिये-शीतल, मधुर, पुष्टिहारक, बलवर्द्धक, कान्तिप्रद, कामवृद्धिकर, देहस्थैर्यहृदाहनाशन, तृषांपित्तश्रमवानमतिस्नाग्नाशयेत् ।

अग्निप्रदीपक, कान्तिजनक, कृमिकारक, स्निग्ध, कफको कुपित करनेवाला, आमकारक, कामवर्द्धक, देहको स्थिर करनेवाला, दाहनाशक, तृषा, पित्त, श्रम, वात और अतिसारको दूर करनेवाला है ।

विवरण । नारियलका बहुत बड़ा वृक्ष होता है आकार खजूर और ताड़के समान होता है, यह वृक्ष पूर्वकी ओर कलकत्ता, जगन्नाथ तथा बम्बईमें बहुत हैं, विशेष करके नदी अथवा समुद्रके निकट अधिक उत्पन्न होते हैं, इनमें शाखा नहीं होती, इनके ऊपरके भागमें खजूरकेसे पत्ते होते हैं, उनहीं पत्तोंके बीचमें नारियल लगते हैं, उन नारियलको फोड़कर जो रस निकलता है उसको नारियलका दूध कहते हैं, जब वे नारियल सूख जाते हैं, तब उनकी भीतरकी भाँगको गोला अथवा खोपड़ा कहते हैं, यह फल मगलादि कार्योंमें बहुत लिये जाते हैं ।

ग्राम्यखजूरानामानि ।

भूमिखजूर्जरिकास्वाद्दीदुरारोहामृदुच्छदा ।

तथास्कन्धफलाकाककर्कटीस्वादुमस्तका ॥

अर्थ—भूमिखजूर्जरिका—स्वादिष्ठ, दुरारोहा, मृदुच्छदा, स्कन्धफला, काक-कर्कटी, स्वादुमस्तका (खजूर, खजूर, खजूर्जरी, खरस्कन्धा, दुष्प्रघर्षा, दुरारोहा, कपायी, नि श्रेणी, यवनेष्टा, हरिमिया)

पिण्डखजूरिकात्वानामानि ।

पिण्डखजूर्जरिकात्वान्यासादेशेपश्चिमेभवेत् ।

अर्थ—पिण्डखजूर्जरिका (पिण्डखजूर्जरी, राजजम्बु, पिण्डीफल, मुद्र-रिका, दीप्या, सपिण्डा, मधुरस्रवा, फलपुष्पा, स्वादुपिण्डा, हयभक्षा) यह पश्चिमदेशमें प्रसिद्ध है ।

छोदारानामानि ।



सज्ज्वरीगोस्तनाकारपरद्वीपादिहागता ।

जायतेपश्चिमेदेशेसाद्योहारेतिकीर्त्यते ॥

अर्थ—दृष्टाग गोस्तनाकारसज्ज्वरी यद् दो नाम सुदूरके है, सुदूरा गोवि
थनोंकी समान आकाशवाला होता है और दूसरे द्वीपमें आया है ।

मस्कृतभाषामें

सज्ज्वरी, पिण्डसज्ज्वरी, छोदारा ।

हिन्दीभाषामें

खजूर, पिण्डखजूर, दृष्टाग ।

बंगभाषामें

खेजूर, पिण्डखेजूर, छोदारा ।

मराठीभाषामें

दिगी, खजरी ।

गुजरातीभाषामें

खजरी, खजूर, गारफ ।

कर्णाटकीभाषामें

इचिड्ड, सिद्धिचिड्ड, कराचिड्ड ।

तेलुगुभाषामें

इडाचेट्टु, समुद्रपुण्ड्र ।

इंग्रजीभाषामें

डेन पाम । Data plan

लैटिनभाषामें

फिनिक्स मोटेना । Phoenix motena

फिनिक्स डेफरिफिकेरा । Defrifer

फिनिक्स० सिन्निगट्टिम । P. Syneon

तमरकृतम् ।

फारसीभाषामें

रुमांतर, रुमांतरुक ।

अरबीभाषामें

विषियल्लहरीगुला ।

खज्ज्वरीव्रितयभीतमधुग्नसपाकयो । क्षिग्धरुनिजहृद्य

क्षतक्षयहरगुरु ॥ तर्पणस्तपित्तप्रपुष्टिपिष्टम्भशुक्रकम् ।

कोष्ठमारुतहृद्वल्यंयान्तिवातरुफापदम् ॥ ज्वराभिघातक्षु-

त्तृष्णाकालश्वासनिवाकम् । मधमृच्छामरुत्पित्तमथोद्धत-

गदान्तकृत ॥ महतीभ्यांगुणैरुपास्वल्पगज्ज्वरिगामता ।

तस्मादल्पगुणंलेयमन्यतसज्ज्वरीकाफलम् ॥ (भा० ५०)

अर्थ—तैलानामकारकी राक्ष-शीतल, भार, क्षिग्ध, क्षिग्धराव हृत्पत्र
क्षिक्की, भारी, क्षिक्की, पुष्टिवाक, विष्टमकार, शुक्लदंष्ट्र चटनदंष्ट्र
मया राव राव, र्गदपित्त, कोष्ठग, वातज्वर, भगिमत, वमा, क्षा, बन्ध,
हृषा, हृषा, र्गगी, र्गग, मन्, मृच्छा, वातपित्त भार मधममममिगो-
मोक्षो दूर करीशब्दी है । मोक्षो यही राक्षामें छोरी राक्षामें दूर भग्न है
भार राक्षो छोरी राक्षकी भवेता हीगुणमानी है ।

अन्यच्च ।

अपक्वखज्जूरफलं त्रिदोषाणां प्रकोपनम् ।

पक्वमेव हितं श्रेष्ठं त्रिदोषशमनपरम् ॥ (आ० स०)

अर्थ—कच्ची खज्जूर—त्रिदोषको प्रकुपित करनेवाली । पक्की खज्जूर—हितकारी, उत्तम और त्रिदोषको शान्ति करनेवाली है ।

खज्जुरीताडीगुणा ।

खज्जुरीतरुजतोयमदपित्तकरभवेत् ।

वातश्लेष्महरं रुच्यं दीपनवलशुक्रकृत् ॥ (भा० प्र०)

अर्थ—खज्जूरकी ताड़ी—मदकारक, पित्तकारक, वातनाशक, कफनाशक, रुचिकारक, दीपन, बलकारक और शुक्रवर्द्धक है ।

खज्जुरादिमस्तकगुणा ।

खज्जुरिकादितालानां नारिकेलस्य मस्तकम् ।

स्वादुपाकरसप्रोक्तं रक्तपित्तहरतथा ॥

अर्थ—खज्जूर, ताड़ और नारियलवृक्षका मस्तक—स्वादु, पचनेमें भी स्वादु और रक्तपित्तनाशक है ।

अथ च ।

गुवाकतालखज्जूरनारिकेलरिरासि च ।

स्वादुतिक्तकपायाणि मूत्रातङ्गहराणि च ॥

बलप्राणकराण्याहुः शुक्रवृद्धिकराणि च । (रा० ज०)

अर्थ—सुपारी, ताड़, खज्जूर और नारियलवृक्षका मस्तक—स्वादु, कड़वा, कपेला, मूत्ररोगनाशक, बलवर्द्धक, प्राणवर्द्धक और शुक्रवर्द्धक है ।

पिण्डखज्जुरीगुणा ।

दाहघ्नी मधुरास्रपित्तशमनी तृष्णार्तिदोषापहाशीत-
श्लासक-
फत्रमोदयहरासन्तर्पणी पुष्टिदा ॥ वह्नेर्माद्यरुरीगुरुर्विपह-
राहृद्याचधत्ते वल-
स्निग्धावीर्य्यविवर्द्धिनी च कथिता पि-
ण्डाख्य खज्जुरिका ॥

अर्थ—पिण्डखज्जूर, दाहनाशक, मधुर, रक्तपित्तनिवारक, तृषानाशक, शीतल, श्लासनाशक, कफघ्न, श्रमहारक, तृप्तिकारक, पुष्टिदायक, मदाग्नि-
कारक, भारी, विषहारी, बलवर्द्धक, स्निग्ध और वीर्य्यवर्द्धक है ।

सुलेमानातिशयनामानि ।

सुलेमानीतुष्टदुलादलहीनफलाचसा ।

अर्थ-सुलेमानी, मृदुला, टन्हीनकाता यह नाम सुलेमानी गवर्ण है ।

अस्मा सुना ।

सुलेमानीश्रमभ्रान्तिदाहमूर्च्छाम्लपित्तहृत् ॥ (भा० प्र०)

अर्थ-सुलेमानीरसशुभ्र-श्रम, भ्रान्ति, दाह, मूर्च्छा और अम्लपित्तनाशक है ।

विवरण । रसशुभ्र-विशुद्धरस और गुहावे वृक्ष मीमे लम्बे = चने जाने है, उनमें पत्ते लम्बे और शाखायुक्त लम्बी होती है, वृक्षपर रसपट्टे की गरीबों के समान वषट् जमा रहता है, ऊपर शाखाओंमें वृक्ष लगते हैं यह गानेमें उच्चम नहीं होते हैं, वषट्मे = होते हैं इतनालगे उनको भनादप लोग नहीं गाने, इनलोग राते हैं वृक्षों विण्दरस होता है उगने वृक्ष तोड़कर पोरियामें भर देते हैं, ताँगरा मुदाग होता है यह दोनों रसशुभ्र समान आकारका होता है ।

शास्त्रनामानि ।



वातादोवातनेरीत्यात्रेनोपमफलत्नथा ।

अर्थ-वाता, वातरुही, नेत्रोपमदन्त, (गुणप्र, वाताम, वाताम, वातरुही)

गवर्णमापाम

वाताद ।

हिदीमापामें

मगम मीठे, पदाम वरने ।

वैगमापामें

वाताम ।

मराठीनापाम

गाटे पदाम, गदु पदाम ।

गुजरातीमापाम

मदाम मीठा, मदाम कटवी ।

मैथिलीमापामें

वेदम ।

लक्ष्मीमापामें

नररुम ।

| | |
|---------------|---|
| इयेजीभापामें | स्वीट् अल्मड । Sweet almond |
| | बीटर अल्मड । Bitter almond |
| लैटिन्भापामें | एमिग्डेलस्ककम्युनी । Amigdalalus Communis |
| | एमिग्डेलस् एमेर । Amigdalus amarr |
| अरबीभापामें | लोजलहलु, लोजलमुर । |
| फारसीभापामें | बदामशीरी, बदामतलख । |
| | बदामगुणा । |

वातादुष्ण सुस्निग्धोवातघ्नःशुक्रकृद्गुरुः ।

वातादमज्जामधुरावृष्यापित्तानिलापहा ।

स्निग्धोष्णाकफकृन्नेष्टारक्तपित्तविकारिणाम् ॥ (भा प्र)

अर्थ—बदाम—गरम, स्निग्ध, वातनाशक, शुक्रवर्द्धक और भारी है ।
बदामकी मींग—मधुर, वीर्यवर्द्धक, वातपित्तनाशक, स्निग्ध, गरम, कफकारक
और रक्तपित्तरोगवालेको हितकारी नहीं है ।

अपिच ।

बादाम सारकश्चोष्णोगुरुरम्लकफप्रदः । स्निग्धः स्वादुस्तुव-
रश्चशुक्रलोवातनाशनः ॥ उष्णवीर्यचामफलसारकगुरुपित्त-
लम् । कफपित्तकरश्चैववातनाशकमुत्तमम् ॥ तत्पक्वमधुरंवृष्य
सुस्निग्धपौष्टिकमतम् । शुक्रलकफकारीचरक्तपित्तव्यपो-
हति ॥ शामकवातपित्तस्यपूर्ववैद्यैरुदीरितम् । शुष्कश्चत-
त्फलप्रोक्तमधुरधातुवर्द्धकम् ॥ स्निग्धंवृष्यश्चल्यश्चपौष्टिक
कफकारिच । वातपित्तस्यशमनप्रोक्तगुणविशारदे ॥ (नि०र०)

अर्थ—बदाम—सारक, गरम, भारी, अम्ल, कफकारी, स्निग्ध, स्वादु,
कपेला, शुक्रजनक, वातनाशक, उष्णवीर्य है । कच्चा बदाम—सारक, भारी,
पित्तजनक तथा कफ, पित्तविकार और वातका नाश करे है । पक्का
बदाम—मधुर, वृष्य, स्निग्ध, पुष्टिकारक, शुक्रजनक, कफकारक तथा रक्त-
पित्त और वातपित्तका नाश करे है । सूखा बदाम—मधुर, धातुवर्द्धक, स्निग्ध,
वृष्य, बलकारक, पुष्टिकारी, कफकारक और वातपित्तको दूर करे है ।

बदामतेलगुणा ।

वातादतेलमृदुरेचनस्याद्वाजीकरमूर्द्धगदग्रहन्त्यात ।

पित्तानिलमलपुदाहनाशिलापण्यदमैहङ्गसुशीतम् ॥

(आत्रेयमहिता)

अर्थ—अदामका तेल । मृदुर्गन्धी, बाजीवर, मन्तयरोगनाशक, पित्तनाशक, वातघ्न, हृत्प्रा, पाहनाशक, स्थावण्यतादायक, प्रमेदराशक और शीतल है ।

दिवरण । घटामने घटे ७ गुण, बाधुल और मन्तवागम होने है । पौष्ण्ये और गोत्र होने है, पृथु भीष्मे छोटा आता है । कण्ठके रसित घटाम कहलाते है ।

मन्तवरुनामात्रि ।

मुष्टिप्रमाणपदसंवेसिञ्चितिकाफलम् ।

अर्थ—मुष्टिप्रमाण, पदर, मेघ, मिथिभिवान्तर, (मेरित, मेरि)

समृत्तभाषामें मटापद ।

हिन्दीभाषामें सेर ।

पगभाषामें सेर ।

मगहीभाषामें मोठें मोर ।

गुजरातीभाषामें मेर ।

इंग्लिशभाषामें अप्ल । Apple

लैटिनभाषामें पादम मेसस । Pyrus L. etc

फारसीभाषामें मेर ।

अरबीभाषामें गुलाब ।

आर्य गुणा ।

संवसर्मागपित्तमृदुदणकफकृष्टक ।

रन्नेपाकेचमभुगभिगिगंविशुक्रहृत् ॥ (भा०प्र०)

अर्थ—गर । वातादिघनाशक, पुष्टिदायक, पदवाती, भारी, रस और पाचमें मधुर, शीतल, हृत्ति और गुनराश है, मेरि शरीरमें मदी है, कर्षादि विनाश भावनाशक और विनी मरामें गई वेगताशा ।

अमृतमन्तवृत्ता ।

अमृतमन्तफलधानुनल्लेकमधुरगुरु ।

रन्नेपाकेचमभुगभिगिगंविशुक्रहृत् ॥

अर्थ—आमताली—पाचुरदंर, मधुर, भारी, कर्षादि, अमृत वाग्वान्तर और विनीपको शरीर में मरामें गई ।



विवरण । सेव, वीह और नासपाती इन तीनोंकी एकही जातिहै, इनमें अन्तर थोडाही है, जैसे छुहारे, पिण्डखजूर, खजूरकी एकही जातिहै । सेवके वृक्ष काश्मीर और काबुलमें बहुत होतेहैं, परन्तु नासपाती हिन्दो स्थानमें भी बहुत होतीहै, इनके वृक्ष अमरुदके वृक्षकी बराबर होतेहैं, पत्तेभी अमरुदके बराबर कुछ चौड़े होतेहैं, काश्मीरका सेव बहुत मधुर होताहै, और काबुलका तुरग होता है, काश्मीरकी नासपातीभी बहुतही मधुर होती है, जिसे नाक कहतेहैं, वीहका मुरब्बा दस्तोंकी व्याधिमें काम आताहै और बलदायक होताहै ।

पेरुवफलनामानि ।



पेरुकद्वद्वीजचमासलचापृथक्त्वचम ।

मृदुपीतवर्तुलञ्चतुवर्गमधुराम्लकम् ॥

अर्थ—पेरुक, द्वद्वीज, मामल, अपृथक्त्वच, मृदु, पीत, वर्तुल, तुवर्ग, मधुराम्लक ।

पित्तानिलनलबुदाहनाशिलापण्यदमेहकरंमुशीतम् ॥

(आधेयनदिना)

अर्थ-यदासरा तेल । मृदुरेची, शार्मीकर, मस्तकरोगनाशक, पित्तान्तर, वातघ्न, हृत्पा, दाहनाशक, लावयतादायक, प्रमेहपायक और शीतम् है ।

विवरण । यदासरे पडे २ गुप्त, कायुल और मन्त्रागमें दाने है । पसे लम्बे और मोठे होने है, पूरा मोठे छोटा आता है । पत्रके पीन चयाम पदलावे है ।

उदरगन्तामानि ।

मुष्टिप्रमाणवदरसेवसिञ्चितिकाफलम् ।

अर्थ-मुष्टिप्रमाण, वदर, सेव, सिञ्चितिकाफल, (मेथित, मेवि)

समृद्धभाषामें मदापद ।

हिन्दीभाषामें गेव ।

पगभाषामें सेव ।

मगदीभाषामें मोठे मोर ।

गुजरातीभाषामें सेव ।

इमिजीभाषामें अण्ड । Apple

लत्तिभाषामें पादम् मेम् । Pigeon

तारगीभाषामें गेव ।

अरबीभाषामें गुजाद ।

भारत गुला ।

संवसमीरपित्तमृदणकफहृद्गुरु ।

रमेपाकेनमशुगिगिरुचिशुक्रहृत् ॥ (भा०प्र०)

अर्थ-गर । शक्विषनाशक, पुष्टिपाक, वदरवाही, भागी, रग और पातमें मधुर, शीतल, रस और मुखपायक है, गेव दापति मरी है, सफाई गिराव भासनाशक और दिनी संवसे रसि शेषाशय ।

प्रमृदणकफहृत् ।

अमृतस्यफलंवातुवर्द्धनमशुगुरु ।

रुच्यचाम्लवातदग्निदोषस्यचभामरम् ॥

अर्थ-नागनागी-पादुसदन मधुर, भागी, रसिवाही अमृत, शक्विषनाशक और विदोषक रसि वातदोषनाशक है ।

अमृतफल,
(नासपाती.)



विवरण । सेव, वीह और नासपाती इन तीनोंकी एकही जातिहै, इनमें अन्तर थोड़ाही है, जैसे जुहारे, पिण्डखजूर, खजूरकी एकही जातिहै । सेवके वृक्ष काश्मीर और काबुलमें बहुत होतेहैं, परन्तु नासपाती हिन्दो स्थानमें भी बहुत होतीहैं, इनके वृक्ष अमरुदके वृक्षकी बराबर होतेहैं, पत्तेभी अमरुदके बराबर कुछ चौड़े होतेहैं, काश्मीरका सेव बहुत मधुर होताहै, और काबुलका तुरग होता है, काश्मीरकी नासपातीभी बहुतही मधुर होती है, जिसे नाक कहतेहैं, वीहका मुख्वा दस्तोंकी व्याधिमें काम आताहै और बलदायक होताहै ।

पेरुफलनामानि ।



पेरुफलद्वीजत्रमांसलचापृथक्त्वचम् ।

मृदुपीतवर्तुलश्चतुवरमधुराम्लकम् ॥

अर्थ—पेरुफ, द्वीज, मांसल, अपृथक्त्वच, मृदु, पीत, वर्तुल, तुवर, मधुराम्लक ।

| | |
|---------------|--|
| समृद्धभाषामे | पेदक, अमृतद्वय । |
| हिन्दीभाषामे | मपेद सत्तरी, सातमत्तरी, बीद, अमृतद्वय । |
| मराठीभाषामे | पांसे पेद, सांपदे, (गुणार्थ) पेद । |
| गुजरातीभाषामे | जामपद, पेद । |
| तेलुगुभाषामे | शामिपदु । |
| इंग्रजीभाषामे | ग्रावार्थ ग्रावार्थ । <i>Gruar & hite Gu arard</i> |
| लैटिनभाषामे | मिडिय पोमिफर पार्गस कॉम्पुनीय । <i>Ped 1- Peda ferum Pyrus Com punitis</i> |
| फारसीभाषामे | अमृतद्वय । |
| अरबीभाषामे | कमत्तरी । |

अस्य गुणाः ।

पेरुकतुवरप्रोक्तम्बाद्वस्त्रकफकारकम् ।

शुक्लवातपित्तमभीतलंचरसमतम् ॥

अर्थ-मत्तरी-पेद, सात, अमृत, कवचार्थ, शुक्लमतम्, वातपित्तनाशक और शीतल है ।

भास्वत् ।

ततोमृत्तफलम्बादुतुवरचातिशीतलम् ।

तीक्ष्णगुरुकफकृत्तदमादनाशकम् ॥

वृष्यरुचिशुक्लरंगविशेषप्रकीर्तितम् ॥ (नि०२०)

अर्थ-मत्तरी-सात, कवच, अमृत मीठ, तीक्ष्ण भाति, कवचार्थ, वातपित्तक, उष्णमादनाशक, तीक्ष्णरसक, रुचिशुक्ल, गुरुकफ और विशेष नाशक है ।

विराज । मत्तरीके गुण वातार्थ अभिषेकार्थे होते हैं, वधे मानके रक्तोग पुच्छक रोगे होते हैं, कफ रसा और तिष्ठि कफुमें आते हैं, कवच मीठार्थे मीठ और पीठे सातभी होता है ।

भास्वत्तन्मात्रम् ।

नारंगोनागिरंगस्यात्त्वक्मुगन्तोमुगमियः ॥

अर्थ-नारंग, नागिरंग, त्वक्मुगन्त, मुगमिय (नागिरंग, नाग, देगाव, नागम, कवचमत्तरी, विमिर, किर्मिन्विर, मुगमिय, मुग, त्वक्म, देगाव, कवचम, मीठार्थ, मत्तार्थ, मत्त, मत्त, मत्त)



नारंगी.

| | |
|-----------------|--------------------------------------|
| संस्कृतभाषामें | नागरग, नारग । |
| हिन्दीभाषामें | नारंगी । |
| वगभाषामें | नारगालेडु । |
| मराठीभाषामें | नारिंग । |
| गुजरातीभाषामें | नारंगीलिबु । |
| कर्णाटकीभाषामें | माधवला । |
| तैलङ्गीभाषामें | दयाकाया, गजनिम्म, नारजिचेडु । |
| तामिलीभाषामें | किचिलि । |
| ओत्कलीभाषामें | नारिंगी । |
| इंग्रेजीभाषामें | ऑरंज । Orange |
| लैटिन्भाषामें | साईट्रस ऑरेंटियम् । Citrus aurantium |
| फारसीभाषामें | नारज । |
| अरबीभाषामें | नारज । |

अस्यफलगुणा ।

नागरङ्गन्तुसुगन्धिविपाकेदुर्जरगुरु ।

नात्यम्लमीपन्मधुरवृष्यवातविनाशनम् ॥

अर्थ—नारंगी—सुगन्धि, जतिकठिनतासे पचनेवाली, भारी, किञ्चित् अम्ल, किञ्चित्, मधुर, वीर्यवर्द्धक और वातविनाशक है ।

अन्यथा ।

नारंगकफपित्तामकारकदुर्जरसरम् । अत्यम्लवातहरकचा-

| | |
|-----------------|--|
| संस्कृतभाषामें | पेरुक, अमृतफल । |
| हिन्दीभाषामें | सफेद सफरी, लालसफरी, बीह, अमरुद । |
| मराठीभाषामें | पाद्रे पेरू, तानडे, (गुलाबी) पेरू । |
| गुजरातीभाषामें | जामफल, पेग । |
| तैलिङ्गीभाषामें | झामिपडु । |
| इंग्रेजीभाषामें | ग्वावावैट ग्वावारेड् । Guava white Guava red |
| लैटिन्भाषामें | सिडियं पोमिफर पाईरस कोम्बुनीस् । Psidium Pomiferum Pyrus Communis |
| फारसीभाषामें | अमरुत । |
| अरबीभाषामें | कमशरी । |

अस्य गुणाः ।

पेरुकंतुवरप्रोक्तस्वादुम्लंकफकारकम् ।

शुकलंवातपित्तघ्नीशीतलंचरसंमतम् ॥

अर्थ—सफरी—कपेली, स्वादु, अम्ल, कफकारक, शुकजनक, वातपित्तनाशक और शीतल है ।

अन्यत्र ।

ततोमृतफलंस्वादुतुवरचातिशीतलम् ।

तीक्ष्णंगुरुकफकरंवातदंमादनाशकम् ॥

वृष्यरुचिशुककं त्रिदोषघ्नप्रकीर्तितम् ॥ (नि०र०)

अर्थ—सफरी—स्वादु, कपेली, अत्यन्त शीतल, तीक्ष्ण, भारी, कफकारी, वातवर्द्धक, उन्मादनाशक, वीर्यवर्द्धक, रुचिकारक, शुकजनक और त्रिदोषनाशक है ।

विवरण । सफरीके वृक्ष बागोंमें अधिकतामें होते हैं, पत्ते आमके पत्तोंसे कुछेक छोटे होते हैं, फल वर्षा और शिशिर ऋतुमें आते हैं, फल मीतगमे सफेद और कोई लालभी होता है ।

नागरनामानि ।

नारगोनागरंगस्यात्वक्सुगन्धोमुखप्रियः ॥

अर्थ—नारंग, नागरग, त्वक्सुगन्ध, मुखप्रिय (नाय्यंद्, नागर, ऐरावत, नागरक, चक्राधिवासी, किर्मिर, किर्मिरत्वक्, मुखप्रिय, सुरग, त्वगन्ध, इरावत, वक्रवास, योगरग, गन्धादय, गन्धपत्र, वगिष्ठ)



संस्कृतभाषामें
हिन्दीभाषामें
वगभाषामें
मराठीभाषामें
गुजरातीभाषामें
कर्णाटकीभाषामें
तेलङ्गीभाषामें
तामिलीभाषामें
औत्कलीभाषामें
इंग्रेजीभाषामें
लैटिन्भाषामें
फारसीभाषामें
अरबीभाषामें

नागरग, नारग ।
नारंगी ।
नारंगालेबु ।
नारिंग ।
नारंगील्लिबु ।
माधवला ।
दयाकाया, गजनिम्भ, नारजिचेडु ।
किचिलि ।
नारिंगी ।
ऑरज । Orange
साईट्स् ऑरेंटियम् । Citrus aurantium
नारज ।
नारज ।

भक्ष्यफलगुणा ।

नागरङ्गन्तुसुरभिविपाकेदुर्जरगुरु ।

नात्यम्लमीषन्मधुरंवृष्यवातविनाशनम् ॥

अर्थ—नारंगी—मुगन्धि, अतिकठिनासे पचनेवाली, भारी, किञ्चित्
अम्ल, किञ्चित्, मधुर, वीर्यवर्द्धक और वातविनाशक है ।

अन्यथा ।

नारगकफपित्तामकारकदुर्जरसरम् । अत्यम्लवातहरकंचा-

| | |
|-----------------|---|
| सस्कृतभाषामें | पेरुक, अमृतफल । |
| हिन्दीभाषामें | सफेद सफरी, लालसफरी, वीढ़, अमरुद् । |
| मराठीभाषामें | पादरे पेरू, तावडे, (गुलाबी) पेरू । |
| गुजरातीभाषामें | जामफल, पेर । |
| तैलिङ्गीभाषामें | झामिपडु । |
| इंग्रेजीभाषामें | ग्वावावैट ग्वावारेड् । Guava white Guava red |
| लैटिन्भाषामें | सिडिय पोमिफर पाईगस कोम्बुनीम् । Psidium Pomiferum Pyrus Communis |
| फारसीभाषामें | अमरुत । |
| अरबीभाषामें | कमशरी । |

अस्य गुणाः ।

पेरुकंतुवरप्रोक्तस्वादुम्लकफकारकम् ।

शुक्रलंवातपित्तघ्नीतिशूलचरसंमतम् ॥

अर्थ—सफरी—कपेली, स्वादु, अम्ल, कफकारक, शुक्रजनक, वातपित्तनाशक और शीतल है ।

अन्यत्र ।

ततोमृतफलस्वादुतुवरचातिशीतलम् ।

तीक्ष्णगुरुकफकरंवातदंमादनाशकम् ॥

वृष्यरुचिशुक्रकरंत्रिदोषघ्नप्रकीर्तितम् ॥ (नि०२०)

अर्थ—सफरी—स्वादु, कपेली, अत्यन्त शीतल, तीक्ष्ण, भारी, कफकारी, वातवर्द्धक, उन्मादनाशक, वीर्यवर्द्धक, रुचिकारक, शुक्रजनक और त्रिदोषनाशक है ।

विवरण । सफरीके वृक्ष नागोंमें अधिकतासे होते हैं, पत्ते आमके पत्तोंसे कुछेक छोटे होते हैं, फल वर्षा और जिशिर ऋतुमें आतेहैं, फल भीतर्मे सफेद और कोई लालभी होता है ।

नागरगनामानि ।

नारगोनागरगःस्यात्त्वक्सुगन्धोमुखप्रियः ॥

अर्थ—नारग, नागरग, त्वक्सुगन्ध, मुखप्रिय (नार्यङ्ग, नागर, तेगवत, नागरुक, चक्राधिवासी, किर्भर, किर्भरत्वक्, मुखप्रिय, मुरग, त्वगन्ध, इगवत, वक्रवान, योगरग, गन्धाढ्य, गन्धपत्र, वरिष्ठ)



नारंगी.

संस्कृतभाषामें

हिन्दीभाषामें

वगभाषामें

मराठीभाषामें

गुजरातीभाषामें

कर्णाटकीभाषामें

तेलङ्गीभाषामें

तामिलीभाषामें

ओत्कलीभाषामें

इंग्रेजीभाषामें

लैटिनभाषामें

फारसीभाषामें

अरबीभाषामें

नागरग, नारग ।

नारगी ।

नारगालेबु ।

नारिंग ।

नारगीलिबु ।

माधवला ।

दयाकाया, गजनिम्म, नारजिचेडु ।

किचिलि ।

नारिंगी ।

ऑरंज । Orange

साईटस ऑरेंटियम् । Citrus aurantium

नारज ।

नारज ।

अस्यफलगुणाः ।

नागरङ्गन्तुसुरभिविपाकेदुर्जरसम् ।

नात्यम्लमीपन्मधुरवृष्यवान् ।

अर्थ—नारंगी—सुगन्धि, अतिरुचि, पचनेवाली, भारी, किञ्चित् अम्ल, किञ्चित्, मधुर, वीर्यवर्द्धक और वातदिनाशक है ।

अन्यथा ।

नारगकफपित्तामकारकदुर्जरसरम् । अत्यम्लवातहरकचा-

| | |
|-----------------|--|
| संस्कृतभाषामें | पेरुक, अमृतफल । |
| हिन्दीभाषामें | सपेद सफरी, लालसफरी, वीह, अमरुद । |
| मराठीभाषामें | पादरे पेरू, तानडे, (गुलाबी) पेरू । |
| गुजरातीभाषामें | जामफल, पेर । |
| तैलिङ्गीभाषामें | शामिपडु । |
| इंग्रेजीभाषामें | ग्वावावैट ग्वावारेड् । Guava white Guava red |
| लैटिनभाषामें | सिडिय पोमिफर पाईरस कोम्बुनीम् । Psidium Pomiferum Pyrus Commnus |
| फारसीभाषामें | अमरुत । |
| अरबीभाषामें | कमशरी । |

अस्य गुणा ।

पेरुकतुवरप्रोक्तं स्वादु म्लंकफकारकम् ।

शुक्रलवातपित्तघ्नशीतलं चरसमतम् ॥

अर्थ-सफरी-कपेली, स्वादु, अम्ल, कफकारक, शुक्रजनक, वातपित्तनाशक और शीतल है ।

अन्यथा ।

ततोभृतफलस्वादुतुवरचातिशीतलम् ।

तीक्ष्णगुरुकफकरं वातदं मादनाशकम् ॥

वृष्यरुचिशुक्रकरत्रिदोषघ्नप्रकीर्तितम् ॥ (नि० २०)

अर्थ-सफरी-स्वादु, कपेली, अत्यन्त शीतल, तीक्ष्ण, भारी, पफकारी, वातवर्द्धक, उन्मादनाशक, वीर्यवर्द्धक, रुचिकायक, शुक्रजनक और त्रिदोषनाशक है ।

विवरण । सफरीके वृक्ष जागोंमें अधिकतासे होते हैं, पत्ते आमके पत्तोंसे कुछेक छोटे होते हैं, फल वर्षा और शिशिर ऋतुमें आतेहैं, फल भीतरमें सफेद और कोई लालभी होता है ।

मागरगनामानि ।

नारगोनागंगं स्यात्त्वक्सुगन्धो मुखप्रिय ॥

अर्थ-नारग, नागग, त्वक्सुगन्ध, मुखप्रिय (नार्यङ्ग, नागर, पेगवत, नागरुक, चक्राधिवासी, किर्मिर, किर्मारत्वक्, सुगन्ध, मुरग, त्वगन्ध, इगव, वमवास, योगरग, गन्धादघ, गन्धपत्र, वरिष्ठ)

| | |
|-----------------|--------------------------------|
| गुजरातीभाषामें | बीजोरुलिंबु । |
| इंग्रेजीभाषामें | साईट्रस । Citrus |
| लैटिन्भाषामें | साईट्रस एसीडा । Citrus acida |
| | साईट्रस मेडिका । Citrus Madica |
| फारसीभाषामें | तुरज । |
| अरबीभाषामें | उतरज । |

अस्य फलगुणा ।

बीजपूरफलस्वादुरसेऽम्लदीपनलघु ।

रक्तपित्तहरंकण्ठजिह्वाहृदयशोधकम् ॥

श्वासकासारुचिहरहृद्यंतृष्णाहरंस्मृतम् । (भा० प्र०)

अर्थ—विजोरानींबू—स्वादु, खट्टा, दीपन, हलका, रक्तपित्तनाशक, कंठ-शोधक, जिह्वाशोधक, हृदयशुद्धिकारक तथा श्वास, खाँसी, अरुचि, तृषा-नाशक है और हृदयको हितकारी है ।

अन्यच्च ।

मातुलुगफलचाम्लमुष्णकंठविशोधकम् । तीक्ष्णलघुप्रिय
चाग्निदीपकरुचिकारकम् ॥ स्वादुश्चजिह्वाहृदयशोधक
पित्तवातनुत् । कफश्वासतृषाकासान्निहक्काश्चैवविनाशयेत् ॥
अरुचिरक्तपित्तचनाशयेदितिकीर्तितम् । तच्चवालमातुलु-
ङ्गपित्तवातकफप्रदम् ॥ रक्तरुक्कारकचैतेमध्यमस्यापित्ते
गुणा । पक्कमहावर्णकरंहृद्यवल्ग्वश्रुपौष्टिकम् ॥ शूलाजी-
र्णविवन्धघ्नवातश्वासकफञ्जयेत् । अग्निमांश्चशोफश्चका-
सारोचकनाशकम् ॥ फलत्वग्दुर्जरातिक्तातीक्ष्णोष्णास्नि-
ग्धिकागुरु । कुमिवातकफान्हन्तित्वग्द्रव साधुशीतल ॥
गुरुर्धातोर्वृद्धिकरं स्निग्ध कफहर स्मृत । वातपित्तहर-
प्रोक्तः प्रोक्तोन्तर्भागकोमधु ॥ वातशूलरुफछर्दिमगेचस्य-
चनाशक । केसरदीपनमेध्यलघुग्राहिरुचिप्रदम् ॥ गुल्मो-
दरश्वासकासहिक्कावातमदात्ययान् । मदशोषविवन्धाशो-

त्युष्णचमतंबुधै ॥ मधुरतच्चामधुरंहृद्यमम्लवलप्रदम् ।
विशदगुरुरुच्यञ्चसरंचोष्णसुगन्धिकम् ॥ स्वादुचामकृमी-
न्वातश्रमशूलञ्चनाशयेत् । (नि० र०)

अर्थ-नारगी (मधुर और अम्ल) दोनों प्रकारकी-कफ, पित्त और आमकारक है । कठिनतासे पचनेवाली, कुठेक दस्तावर, अत्यन्त अम्ल, वातनाशक, अत्यन्त उष्ण और मधुर है । खट्टी नारगी-हृदयको, हितकारी, अम्ल, बलवर्द्धक, विशद, भारी, रुचिकारक, सारक, उष्ण, सुगन्धि, स्वादु तथा आम, कृमि, वात, श्रम और शूलका नाश करेहै ।

विवरण-नारगीके वृक्ष मध्यमजातिके वागोंमें बहुत होतेहैं, पत्ते नीयूके समान होतेहैं फूल अत्यन्त सुगन्धित, और सफेद रंगके आते हैं, फल गोलर होतेहैं, कच्ची अवस्थामें हरे और पकनेपर लाल सिंदूरिया रंगके होजातेहैं, वागेश्वरकी नारगी सर्वत्र स्थानोंमें प्रसिद्ध है ।

बीजपूरनामानि ।



बीजपूरोमातुलङ्गोरुचक.फलपूरक ॥

अर्थ-बीजपूर, मातुलङ्ग, रुचक, फलपूरक (अम्लफेगर, बीजपूर्ण, पूर्ण बीज, सुकेसर, बीजक, मातुलङ्ग, मुपूर, बीजफलक, जन्तुन, दन्तुच्छद, पूरक, रोचनफल)

संस्कृतभाषामें

हिन्दीभाषामें

रंगभाषामें

मराठीभाषामें

बीजपूर ।

विजोरा मीठु ।

टावालेयु ।

महाकुंग ।

| | |
|-----------------|---------------------------------|
| गुजरातीभाषामें | वीजोरुलिबु । |
| इंग्रेजीभाषामें | साईट्रस् । Citrus |
| लैटिन्भाषामें | साईट्रस् एसीडा । Citrus acida |
| | साईट्रस् मेडिका । Citrus Madica |
| फारसीभाषामें | तुरज । |
| अरबीभाषामें | उतरज । |

अस्य फलगुणा ।

बीजपूरफलस्वादुरसेऽम्लदीपनंलघु ।

रक्तपित्तहरंकण्ठजिह्वाहृदयशोधकम् ॥

श्वासकासारुचिहरंरुद्व्यंतृण्णाहरस्मृतम् । (भा० प्र०)

अर्थ—विजोरातीवृ—स्वादिवृ, खट्टा, दीपन, हलका, रक्तपित्तनाशक, कठ-
शोधक, जिह्वाशोधक, हृदयशुद्धिकारक तथा श्वास, खाँसी, अरुचि, तृपा-
नाशक है और हृदयको हितकारी है ।

अन्यञ्च ।

मातुलगफलचाम्लमुष्णकठविशोधकम् । तीक्ष्णलघुप्रिय
चाग्निदीपकरुचिकारकम् ॥ स्वादुश्चजिह्वाहृदयशोधक
पित्तवातनुत् । कफश्वासतृपाकासान्हिकाश्चैवविनाशयेत् ॥
अरुचिरक्तपित्तचनाशयेदितिकीर्तितम् । तच्चत्रालमातुलु-
ङ्गपित्तवातकफप्रदम् ॥ रक्तरुक्कारकचैतेमध्यमस्यापिते
गुणा । पक्वमहावर्णकरंरुद्व्यवलयश्चपौष्टिकम् ॥ शूलाजी-
र्णविवन्धघ्नवातश्वासकफञ्जयेत् । अग्निमांश्चश्चशोफश्चका-
सारोचकनाशकम् ॥ फलत्वग्दुर्जरातिक्तातीक्ष्णोष्णास्नि-
ग्धकागुरु । कृमिवातकफान्हन्तिस्त्वग्द्रवसाधुशीतलः ॥
गुरुर्धातोर्वृद्धिकरः स्निग्ध कफहर स्मृत । वातपित्तहरः
प्रोक्त प्रोक्तोन्तर्भागकोमधु ॥ वातशूलकफछर्दिमरोचस्य-
चनाशकः । केसरदीपनमेध्यलघुग्राहिरुचिप्रदम् ॥ गुल्मो-
दरश्वासकासहिकावातमदात्ययान् । मदशोषविवन्धाशो-

वांतीश्चनाशयत्यलम् । केसरस्थरस पार्श्ववस्तिशूलकफा-
रुची । वातचश्वासकासंचछर्दिश्चैवविनाशयेत् ॥ वीजंतु
मातुलगस्यगर्भददुर्जरगुरु । उष्णतिक्तदीपनचबल्यमशौ-
रुजापहम् ॥ वातपित्तशोफकफान्नाशयेदितिकीर्तितम् ।
फलमज्जागुरु शीतास्वादीस्निग्धावलप्रदा ॥ वातपित्तेना-
शयेच्चमूलमर्शकृमीहरम् । विपूचीमलबन्धश्चशूलचैववि-
नाशयेत् ॥ पुष्पन्तुमातुलगस्यदीपनग्राहिशीतलम् । ल-
घुवातंरक्तपित्तनाशयेदितिकीर्तितम् ॥

अर्थ-विजोरा नींबू-खट्टा, गरम, कठशोधक, तीक्ष्ण, हल्का, म्रिय,
अग्निप्रदीपक, रुचिकारक, स्वादिष्ठ, तथा जिह्वा और हृदयको शुद्ध करनेवाला
तथा पित्त, वात, कफ, श्वास, तृषा, खोंसी, हिचकी, अरुचि और रक्तापि-
त्तको दूर करेहै । कोमल विजोरा-पित्त, वात, कफ और रुधिरके विकारोंको
उत्पन्न करेहै । मध्यम-अवस्थाके विजोरेकेभी कोमल अर्थात् कच्चे विजोरेकी
ममान गुण है । पक्का विजोरा-देहको सुदृढ़ करनेवाला, हृदयको हितकारी,
बलकारक, पुष्टिजनक तथा शूल, अजीर्ण, विबन्ध, वात, श्वास, कफ,
मदाग्नि, सृजन, खोंसी और अरुचिको हरनेवाला है । विजोरेका वफल-
दुर्जर, कडवा, तीक्ष्ण, गरम, स्निग्ध, भारी तथा वात और कफको दूर करे
है । विजोरेके वफलका रस-स्वादु, शीतल, भारी, धातुवर्द्धक, स्निग्ध, कफ-
कारक और वातपित्तनाशक है । विजोरेके वफलके अन्तरका भाग-मधुर
तथा वात, शूल, कफ, वमन और अरुचिको दूरकरेहै । विजोरेकी केसर-दीपन,
मेघाकारक, हल्की, मलरोधक, रुचिकारक तथा गुल्म, उदरगंघ, श्वाग,
खोंसी, हिचकी, वात, मदात्पय, उन्माद, शोष, विबन्ध, अर्श और वमनको
दूर करनेवाली है । विजोरेकी केसरका रस-पार्श्व, वस्तिशूल, कफ, अरुचि,
वात, श्वाग, खोंसी और वमनका नाश करे है । विजोरेके बीज-गर्भदायक,
अतिकटिन्तामे घुसनेवाले, भारी, गरम, दीपन, बलवर्द्धक तथा यरासीर,
वात, पित्त, सृजन और कफका नाशकरेहै । विजोरेके बीजकी मींग-
भारी, शीतल, स्वादु, स्निग्ध, बलवर्द्धक तथा वात और पित्तका नाश करे
है । विजोरेके छुसारी जड़-अशंगेग, कृमि, विपूची, मलयघ और शूलका

नाशकरैहै । विजोरेके फूल दीपन, मलरोधक, शीतल, हलके तथा वात और रक्तपित्तका नाश करे हैं ।

ऋतुपरत्वेनानुपानगुणा ।

सिन्धूत्थेनघनागमेचसितयाकालेशरत्सज्ञके हेमन्तेलवणार्द्र-
हिगुमारिचे सिद्धार्थतेलान्वितैः ॥ एतैस्तैः शिशिरेमधावपि
युतैर्ग्रीष्मेगुडेनान्वितवैद्यैर्भूमिपमातुलगमुदितसर्वत्रसाधारणम्

अर्थ-विजोरेको-वर्षाऋतुमें सैन्धवलवणके साथ, शरदऋतुमें मिश्रीके साथ, हेमन्तऋतुमें लवण, अदरक, हींग और मिर्चके साथ, शिशिरऋतुमें और वसन्तऋतुमें सरसोंके तेलके साथ और ग्रीष्मऋतुमें गुडके साथ सेवन करना चाहिये ।

वनबीजपूरगुणा ।

अम्लकटूष्णोवनबीजपूरोरुचिप्रदोवातविनाशनश्च ।

स्यादामदोषकिमिनाशकारीकफापहश्वासनिपूदनश्च(रा नि)

अर्थ-वनविजोरानीबु-खट्टा, चरपरा, गरम, रुचिदायक, वातविनाशक तथा आमदोष, कृमि, कफ और श्वासको दूरकरे हैं ।

मधुरमातुलुङ्गगुणा ।

मधुरमातुलगन्तुशीतरुचिकरंमधु । गुरुवृष्यदुर्जरञ्चस्वा-
दिष्टचत्रिदोपनुत् । पित्तदाहरक्तदोपान्विवन्धश्वासकास-
कान् ॥ क्षयंहिक्कांशयैश्चपूर्वैरेवमुदाहृतम् ।

अर्थ-मधुरमातुलग-शीतल, रुचिकारक, मधुर, भारी, वीर्यवर्द्धक, दुर्जर, स्वादिष्ट तथा त्रिदोष, पित्त, दाह, रुधिरविकार, मलवध, श्वास, खासी, क्षय और दुर्चकीको दूर करे है ।

विवरण । विजोरेके वृक्ष बागोंमें होते हैं, इसके पत्ते नींबूके पत्तोंमेंदी मिलते हैं, परन्तु लम्बाई चौड़ाईमें इससे आठ दशगुने होते हैं, फूल सफेद आता है, फल लम्बा और गोल होता है, किसी किसी देशमें जगली विजोरा होता है, दूसरा मीठा विजोरा होता है ।

निम्बूकनामानि ।

निम्बूकस्यादम्लजम्बीरकारस्यवह्निदीप्योवह्निबीजोम्लसारः ।
दन्ताघातशोधनोजन्तुमारीनिम्बूकस्याद्रोचनोरुद्रसज्ज ॥

अर्थ-निम्बूक, अम्लजम्बीर, वह्निदीप्य, वह्निवीज, अम्लसार, दन्ताघात,
शोधन, जन्तुमारी, निम्बूक, रोचन ।

जम्बीरनामानि ।



जम्बीरोदन्तशठोजम्भजम्भीरजम्भलश्चैव ।

रोचनकोमुखशोधीजाड्यारिजंतुजिन्नवधा ॥

अर्थ-जम्बीर, दन्तशठ, जम्भ, जम्भीर, जम्भल, रोचनक, मुखशोधी,
जाड्यारि, जन्तुजित् (जम्भल, जम्भक, जम्भर, दन्तहर्षण, दन्तकर्षण,
गम्भीर, जम्भिर, रेवत, वप्रशोधी, दन्तहर्षक, जम्भी)

ससृष्टभाषामं

निम्बूक, जम्बीर ।

हिन्दीभाषामं

नींबू, कागजीनींबू, जम्भीरीनींबू, बिहारीनींबू,
कन्नानींबू, मीठानींबू ।

वगभाषाम

कागजीलेबू, जाम्बीरलेबू, पातीलेबू, कमलालेबू ।

भराठीभाषामं

कागदीलेबू, इंडालेबू, मोटेइंडालेबू, माखरलेबू ।

गुजरातीभाषामं

कागदीलेबू, दोडगालेबू, मीठालेबू ।

कर्णाटकीभाषामं

कचिरे, कनिले ।

संस्कृतभाषामं

निम्बपत्र, जम्भीरम् ।

इंग्रेजीभाषामं

लेमन्त । Lemons

लैटिनभाषामं

लेमोन एगिट । Lemonum aculeum

लेमोनिस्कोटिक्स ।

फारसीभाषामें

लिमुनेतुर्ज, लिमुनेशिर ।

अरबीभाषामें

लिमुनेहामिज ।

निम्बूकगुणा ।

निम्बूकमम्लवातघ्नदीपनपाचनलघु ।

निम्बुककृमिसमूहनाशनतीक्ष्णमम्लमुदरश्रमापहम् ।

वातपित्तकफशूलिनेहितकष्टनष्टरुचिरोचनपरम् ॥ (भा०प्र०)

अर्थ—नीम्बू—खट्टा, वातनाशक, दीपन, पाचक, हल्का, कृमिसमूहनाशक, तीक्ष्ण, उदररोगनाशक, श्रमहारक, वात, पित्त, कफ और शूलमें हितकारी, अरुचिनिवारक और रोचन है ।

अन्यच्च ।

त्रिदोषसद्योज्वरपीडितानादोषाश्रितानाञ्चक्षवज्जलानाम् ।

मलग्रहेवद्धगुदेहितश्चविषूचिकायामुनयोवदन्ति ॥ (आ०स०)

अर्थ—नीम्बू—त्रिदोषजन्य रोग, तत्कालके ज्वर, अनेक प्रकारके मदाग्निके रोग, सुखादिकसे पानीका गिरना, मलग्रह, गुदवद्धता और विषूचिकारोगमें अत्यन्त हितकारी है ।

अपिच ।

निम्बूफलरोचनमग्निवृद्धिकरोतिपित्तञ्चसवातरक्तम् ।

अचाक्षुपश्लेष्मकरविशेषाद्भुक्तस्यपाककुरुतेचसद्य ॥ (सुपेण)

अर्थ—नीम्बू—रोचन, अग्निदीपक, पित्तजनक, वातरक्तकारक, नेत्रोंको अहितकारी, कफकारक और विशेष करके खायेहुए भोजनको पचानेवाला है ।

अन्यच्च ।

त्रिदोषवह्निक्षयवातरोगनिपीडितानाविषविह्वलानाम् ।

मदानलेवद्धगुदेचदेयविषूचिकायामुनयोवदन्ति ॥

अर्थ—नीम्बू—त्रिदोष, वह्नि, क्षय और वातरोगसे पीडित किये हुए मनुष्योंको तथा विषसे विह्वल कियेहुए मनुष्योंको और मदाग्नि, कोष्ठरोग तथा विषूचिका रोगमें देना चाहिये ।

अपिच ।

निम्बूणपाचकचाम्लदीपननेत्रयोर्हितम् । अतिरुच्यञ्चक-

दुक्तुवरचमतलघु ॥ कफवातं वार्मिकासकण्ठरोगक्षयतथा ।
पित्तशूलं त्रिदोषञ्च मलस्तम्भविषृचिकाम् । वद्धोदरचाम-
वातगुल्मञ्चैव कृमीजयेत् । तत्पक्वचगुणे श्रेष्ठं प्रोक्तं वैद्यवि-
शारदैः ॥ (नि० २०)

अर्थ-नींद-गरम, पाचक, खट्टा, दीपन, नेत्रोंको हितकारी, अतिशय रुचिकारक, कटु, कपेला, हलका तथा कफ, वात, वमन, खँसी, कण्ठरोग, क्षय, पित्त, शूल, त्रिदोष, मलस्तम्भ, विषृचिका, वद्धगुदोदर, आमवात, गुल्म और कृमिको दूर करे है । पक्का निम्बु गुणोंमें श्रेष्ठ है ।

जम्बीरगुणाः ।

जम्बीरं मधुरकिञ्चिदत्यम्लपित्तकृद्गुरु ।

सुगन्धिदुर्जरवह्निकफवातविबन्धनुत् ॥ (रा० व०)

अर्थ-जम्बीरीनींद-किञ्चित् मधुर, अत्यन्त खट्टा, पित्तकारी, भारी, सुगन्धित, दुर्जंग तथा अग्नि, वायु और कफकी विबन्धताको दूर करने-वाला है ।

भण्यते ।

जम्बीरस्य फलरसे म्लमधुरवातापहपित्तकृत्पथ्यं पाचनरोचन-
बलकरवह्नेर्विबुद्धिप्रदम् । पक्वं चेन्मधुरकफार्तिशमनपित्तास-
दोषापनुद्वर्ण्यवीर्यविवर्द्धनरुचिकरपुष्टिप्रदतर्पणम् (रा० नि०)

अर्थ-जम्बीरीनींद-अम्ल, मधुर, वातनाशक, पित्तजनक, पथ्य, पाचक, रोचन, बलकारक और अग्निवर्द्धक है । पक्का जम्बीरीनींद-मधुर, कफनाशक, रक्तपित्तनिवारक, वर्णको सुदृढ़ करनेवाला, वीर्यवर्द्धक, रुचिकारक, पुष्टि-कारक और तृप्तिदायक है ।

अपि च ।

जम्बीरमुष्णगुर्वम्लवातश्लेष्मविबन्धनुत् । शूलं कासकफो-
त्केशच्छर्दितृष्णामदोषजित् ॥ आस्यवेरस्य हृत्पीडान-
ह्निमान्द्यकृमीन् हरेत् । स्वल्पजम्बीरिकातद्वत्तृष्णाच्छर्दिनि-
वारिणी ॥ (रा०)

अर्थ-जम्बीरीनींद-गरम, भारी, अम्ल, वातकफनाशक, विबन्धनिवारक

तथा शूल, खाँसी, कफ, उत्क्लेश, वमन, टपा, आमदोष, मुखकी विरसता, हृदयकी पीडा, मदाग्नि और कृमिको दूर करे है। छोटी जम्भीरीके गुणभी बड़ीकी समान जानने, विशेषकरके यह टपा और वमनको दूर करे है।

लिम्पावगुणा ।

लिम्पाकसुरभिस्वादुनात्यम्लभक्तरोचनम् ।

वातश्लेष्महरहृद्यछर्दिघ्ननातिपित्तकृत् ॥ (राजवल्लभ)

अर्थ—लिम्पाक (जम्बीरभेद) सुगन्धि, अत्यन्त अम्ल नहीं, अन्नरोचक, वातश्लेष्मनाशक, हृदयको हितकारी, वमननिवारक और कुष्ठेक पित्तकारक है।

बृहणगुणा ।

करुणकफवातास्रमेदोघ्नपित्तकोपनम् । (रा० व०)

अर्थ—कन्नानीवृ—कफ, वातरक्त और मेदरोगनाशक है तथा पित्तवर्द्धक है।

त्रिम्बूकसाधारणगुणा ।

अशीतमम्लमग्निकृत्समस्तशूलगुल्महृत् ।

अरोचकविषूचिकाकृमीश्वनिवृनाशयेत् ॥

अर्थ—साधारणनीवृ पित्तकारक, खट्टा, अग्निवर्द्धक, सर्व प्रकारके शूल और गुल्मको नाश करनेवाला तथा अरुचि, विषूचिका और कृमिरोगको हरनेवाला है।

बृहज्जम्बीरगुणा ।

बृहज्जम्बीरकचाम्लतुवरंतिक्तकसरम् ।

उष्णपित्तकफघ्नश्चपाचनपरिकीर्तितम् ॥

येगुणालघुजवीरेतेवृद्धेसन्तिचाखिला ।

अर्थ—बड़ाजम्बीरीनीवृ—खट्टा, कपेला, कड़वा, सारक, गरम, पित्तकफ-नाशक, पाचक । जो गुण बड़े जम्बीरीनीवृमें हैं वही गुण छोटे जम्बीरीनीवृमें जानने ।

मधुकुक्कुटिगुणा ।

मधुकुक्कुटिकाशीताश्लेष्मलास्यप्रसादनी ।

रुच्यास्वादुर्गुरु सिग्धावातपित्तविनाशिनी ॥ (रा० व०)

अर्थ—मीठाजम्बीरीनीवृ—शीतल, कफकारक, मुखको निर्मल करनेवाला, रुचिकारक, स्वादिष्ट, भारी, सिग्ध तथा वात और पित्तनाशक है।

मिष्टनिम्बुगुणा ।

मिष्टनिम्बूफलस्वादुगुरुमारुतपित्तनुत् ।

गररोगविषध्वसिकफोत्केशघ्नरक्तहृत ॥

शोषारुचितृपाछर्दिहरवलयञ्चवृहणम् । (भा० प्र०)

अर्थ-मीठानींबू-स्वादिष्ठ, भारी, वातपित्तनाशक, गररोगनाशक, विष विनाशक तथा कफ, उत्केश, रुधिरविकार, शोष, अरुचि, तृषा और वमनको दूर करेहै, बलवर्द्धक और पुष्टिकारक है ।

मधुकर्कटीगुणा ।

मधुकर्कटिकास्वाद्धीरोचनीशीतलागुरु ।

रक्तपित्तक्षयश्वासकासहिकाभ्रमापहा ॥ (भा० प्र०)

अर्थ-चकोतरा-स्वादिष्ठ, रोचक, शीतल, भारी तथा रक्तपित्त, क्षय, श्वास, खाँसी, हिचकी और भ्रमको दूर करनेवाला है ।

जम्बीरपत्रगुणा ।

पत्रजम्बीरजतीक्ष्णकृमिवातकफापहम् ।

सुरभिदीपनरुच्यंमुखवेशधकारकम् ॥

अर्थ-जम्बीरीनींबूकेपत्ते-तीक्ष्ण, कृमिहारक, वातनिवारक, कफनाशक, सुगन्धित, दीपन, रुचिकारक और मुखको निर्मल करनेवाले हैं ।

विवरण । नींबूके वृक्ष, बागोंमें होते हैं, किन्तु किसी २ देशमें वनमें भी देखपड़ते हैं, पत्ते सब प्रकारके नींबूओंके गोल होते हैं निंबुओंके पत्ताम केवल छोटे बड़ेकाही अन्तर अर्थात् किसीके पत्ते छोटे और किसीके बड़े होते हैं, सर्वप्रकारके नींबूओंके फूल सफेद और सुगन्धियुक्त होते हैं, फल कच्ची अवस्थामें नीले और पकनेपर पीले पड़जाते हैं, नींबू, जम्बीर, कागजी, विहारी, कन्ना, मीठानींबू, चकोतरा, नारंगी, सतग, विनोग इत्यादि अनेक जातिके होते हैं ।

तिन्तिटीनामानि ।

अम्लिकाचुक्रिफाम्लीचचुक्रादतशठापिच ।

अम्लाचचिचकाचिचातिन्तिडीकाचतित्तिडी ॥

अर्थ-अम्लिका, चुक्रिका, आम्ली, चुक्रा, दन्तशठा, अम्ट्रा, चिरका, चिचा, तित्तिटीका, तित्तिडी । (तित्तिटीक, तित्तिम्लिका, वृषाम्,

अम्लीका, आम्लिका, आम्लीका, तित्तिड, तित्तिली, तित्तिका, भाब्दिका,
चुक्र, अत्यम्ला, भुक्ता, भुक्तिका, चारित्रा, गुरुपत्रा, पिच्छिला, यमदूतिका,
चरित्रा, शाकचुक्रिका, सुचुक्रिका, सुतित्तिडी, पक्तिपत्रा, सर्वाम्ला)



संस्कृतभाषामें

हिन्दीभाषामें

वगभाषामें

मराठीभाषामें

गुजरातीभाषामें

कर्णाटकीभाषामें

तैलिङ्गीभाषामें

औत्कलीभाषामें

तामिलीभाषामें

वम्०

इंग्रेजीभाषामें

लैटिन्भाषामें

अरबीभाषामें

तित्तिडी ।

इमली ।

तैतुल ।

चिच ।

आवली ।

हुणिते, हुणितेहण्णु, हुणिसिनपटे ।

चिंताचेदट्ट, चिण्ट ।

कआ ।

पुलि ।

टिन्टज ।

टेमेरिड्ट्री । Tamarind Tree

टेमेरिडस् इडिकस् । Tamarindus Indicus

तमराहिदी ।

अद्वय फलगुणा ।

अम्लिकाम्लागुरुवातहरीपित्तकफामृत्त ।

पक्कतुदीपनीरुक्षासरोष्णाकफवातनुत् ॥ (भा० प्र०)

अर्थ—कच्ची इमली—भारी, वातनाशक, पित्तजनक, कफकारक और रक्तको दृढित करेहे । पकी इमली—दीपन, रुग्नी, कुष्ठक दस्तावर, गरम, कफ तथा वातनाश करेहे ।

अन्यथा ।

अम्लिकाया फलवालवातघ्नकफपित्तकृत् ।

तत्पक्वदीपनरुच्यमत्युष्णकफवातजित् ॥ (रा० व०)

अर्थ-कच्ची इमली-वातविनाशक, कफकारक और पित्तजनक है । पक्की इमली-दीपन, रुचिकारी, अत्यन्त उष्ण तथा कफ और वातको जीते है ।

अपिच ।

चिचावृक्षोगुरुश्चोष्णश्चाम्ल पित्तकफप्रदः । रक्तकोपनकारीचवातनाशकरोमत ॥ चिचापुष्पन्तुतुवरस्वाद्वम्लच रुचिप्रदम् । विशदचाग्निजनकलघुवातकफापहम् ॥ प्रमेहघ्नसमुद्दिष्टपर्णशोथहरमतम् । रक्तदोषहरत्रैवफल चास्यतुकोमलम् ॥ अत्यम्लग्राहकचोष्णरुच्यचाग्निप्रदीपकम् । रक्तपित्तस्यपित्तस्यकफरक्तस्यकोपनम् ॥ वातनाशकरप्रोक्ततत्पक्ववातलमतम् । कफपित्तकरत्रैवतत्पक्वमधुरसरम् ॥ अम्लहृद्यभेदकश्चमलस्तम्भकरमतम् । दीपनरुचिदचोष्णरुक्षवस्तिविशोधनम् ॥ व्रणदोषकफवातजन्तृश्चैवविनाशयेत् । शुष्कचिचाफलहृद्यलघुभ्रान्तिश्रमापहम् ॥ तृपाहृक्कमहरकृमिनाशकरमतम् ॥

अर्थ-इमलीका वृक्ष-भारी, गरम, रसदा, पित्तजनक, कफकारक, रक्तप्रकोपक और वातविनाशक है । इमलीके फूल-कपेले, स्वादु, अम्ल, रुचिकारक, विशद, अग्निदीपक, हल्के तथा वात, कफ, और प्रमेहको दूर करे हैं । इमलीके पत्ते-सूजन और रुधिरविकारको हरनेवाले हैं । कच्ची इमली-अत्यन्तरसदी, मलरोधक, गरम, रुचिकारक, अग्निप्रदीपक तथा रक्तपित्त, पित्त, कफ और रक्तको कुपित करनेवाली है तथा वातनाशक है । तरुण इमली-घादी, कफ और पित्तको उत्पन्न करनेवाली है । पक्कीइ इमली मधुर, सारक, रसदी, हृदयको हितकारी, दस्तावर, मलरतम्भक, दीपन, रुचिकारक, गरम, रुखी, वस्तिशोधक तथा व्रण दोष, कफ, वात और कृमिनाशकरनेवाली है, सखी इमली-हृदयको हितकारी, हल्की तथा श्रम, भ्रान्ति, तृपा, क्रम और कृमिका नाश करे है ।

चिचातुनूतनावातकफस्यकारिणीमता ।

सावार्पिकीवातपित्तनाशिनीपरिकीर्तिता ॥

अर्थ—नवीन इमली—वात और कफको उत्पन्न करे है । एक वर्षकी इमली—वात—पित्तनाशक है ।

चिंचाक्षारश्वाग्निमांद्यशूलनाशकरोमत ॥

अर्थ—इमलीका क्षार—मदाग्नि और शूलको निर्मूल करे है ।

पक्वचिंचारसश्चाम्लोमधुरोरुचिकृन्मतः ।

व्रणनाशकरश्चैवलेपनाच्छोथपंक्तिहृत ॥

अर्थ—पक्कीइमलीका रस—अम्ल, मधुर, रुचिकारक, व्रणविनाशक तथा इसका लेप करनेसे—सृजन और पंक्तिशूल नष्ट होता है ।

चिचासारंदाहकफकारकचातिअम्लकम् ।

वातनाशकरप्रोक्तसमानशर्करायुतम् ॥

दाहपित्तकफचैवनाशयेदितिकीर्तितम् । (नि०२०)

अर्थ—इमलीका सार—दाह और कफकारक, अत्यन्तखट्टा और वातविनाशक है । उसी सारमें बराबरकी खोंड मिलालीजाय तो दाह, पित्त और कफको हरनेवाला होजाताहै ।

विवरण । इमलीके वृक्ष बहुत बड़े २ ऊँचे और सघन जंगल तथा नगरके निकट घर बाहर सर्वत्र स्थानोंमें होते हैं, पत्ते चौंल्लीके समान डालियामें दोनों ओर बराबर लगे होते हैं, और खट्टे होते हैं, फूल गुच्छोंमें लगे होते हैं, रंगपीला २ उनमें कुछ लाल लाल मिन्दुसे पड़े होते हैं, फलियें कठोरके समान तिरछी और लम्बी होती हैं, उसको भी कटारा कहते हैं, उन कटारोंपर सुखे हुए ठिलके होते हैं, ठिलकोंको ठीलनेमें गूदा निकलता है, परन्तु उस गूदेके भीतरभी बीज निकलते हैं उनको चोइये कहते हैं, यह इमली दो प्रकारकी होती है, एक लाल गूदेकी दूसरी सफेद गूदेकी ।

आलुपनामानि ।

आरुकवीरसेनञ्चवीरवीरारुकतथा ।

तच्चविद्याच्चतुर्जातिपत्रपुष्पादिभेदतः ॥

अर्थ—आरुक, वीरसेन, वीर, वीरारुक (आरूक, मल, भटूक भट्ट, रक्तफल) इसकी पत्र और पुष्पादिके भेदसे चार जाति हैं ।

वृक्षाम्लनामानि ।

वृक्षाम्लंतिन्तिडीकञ्चुकंस्यादम्लवृक्षकम् ।

अर्थ-वृक्षाम्ल, तिन्तिडीक, चुक, अम्लवृक्षक, (अम्लशाक, चुकाम्ल, तिन्तिडीफल, शाकाम्ल अम्लपूर, पूराम्ल, रक्तपूरक, चूडाम्ल, बीजाम्ल, फलाम्लक, अम्लवृक्ष, अम्लफल, रसाम्ल, श्रेष्ठाम्ल, अत्यम्ल, अम्लवीन, चुकफल)

संस्कृतभाषामें

वृक्षाम्ल ।

हिन्दीभाषामें

विषाम्बिल । तत्तडीक ।

वगमापामें

महादा, (भ) अम्लकुटा, (सार०सु-) चुका
(भा० दी०) तैतुल, (सु) ।

मराठीभाषामें

आमसोल (को०) कोकनसोल ।

गुजरातीभाषामें

कोकम ।

कर्णाटकीभाषामें

तिन्तिडिक ।

इंग्रेजीभाषामें

कोकवटगट्टी । Kokum Buty's tree

लैटिनभाषामें

ग्यारमीनिया परप्यूरिआ । Garcinia Purpure ।

गोवा०

मिडोओ ।

अस्य गुणा ।

वृक्षाम्लमाममल्लोष्णवातघ्नकफपित्तलम । पक्वन्तुगुरुस्रा-
हिकटुकंतुवरलघु ॥ अम्लोष्णरोचनरूक्षदीपनकफवात-
कृत । तृष्णाशोथहणीगुल्मशूलहृद्रोगजन्तुजित ।

अर्थ-कच्चा विषाम्बिल-खट्टा, गरम, वातनाशक, कफकारक और पित्तजनक है । पक्का विषाम्बिल भारी, मलमोघक, चरपरा, कपेला, हलका, सटा, गरम, रोचन, रूखा, दीपन, कफकारक, वातवर्धक तथा कृपा, चवासीग, सग्रहणी, गुल्म, शूल, हृदयरोग और कृमिको दूर करे है ।

विवरण । विषाम्बिलके वृक्ष गोवाकी ओर होतेहैं देखनेमें अत्यन्त सुन्दर और शद्विशर होतेहैं, पत्ते लम्बे और चिकने, शीत ऋतुमें आतेहैं और गन्तऋतुमें पड़ लगते हैं, फल मार्गिके समान होतेहैं इसके सब अंग गटे होतेहैं ।

अम्लवेतसनामानि ।

स्यादम्लवेतसञ्चुक्रःशतवेधीसहस्रजित् ।

अर्थ-अम्लवेतस, चुक्र, शतवेधी, सहस्रजित् (अम्ल, वोधि, रसाम्ल, आम्लवेतस, वेतसाम्ल, अम्लसार, वेधक, भीम, भेदन, भेदी, राजाम्ल, अम्लभेदक, अम्लकुश, रक्तसार, फलाम्ल, अम्लनायक, सहस्रवेधी वीराम्ल, गुल्मकेतु, वराभिध, शखद्रावी, मासद्रावी, वराङ्गी, गुल्महा, महाक्षार)

संस्कृतभाषामें अम्लवेतस ।

हिन्दीभाषामें अमलवेंत ।

बगभाषामें थैकड़, अम्लवेतस ।

मराठीभाषामें चुका ।

गुजरातीभाषामें अमलवेत ।

इंग्रेजीभाषामें कामन् सोरेल । Common Soral

लैटिन् भाषामें आसीडो झेफोलिया । AcidoZeyfolia

फारसीभाषामें तुर्पक ।

अस्यफलगुणा ।

अम्लवेतसमत्यम्लभेदनलघुदीपनम् । हृद्रोगशूलगुल्म-
घ्नपित्तललोमहर्षणम् ॥ रूक्षविण्मद्यदोषघ्नप्लीहोदावर्तना-
शनम् । हिक्कानाहारुचिश्वासकासाजीर्णविमिश्रणुत् ॥ कफ-
वातामयध्वसिच्छागमांसद्रवत्वकृत् । चणकाम्लगुणज्ञेय
लोहसूचिद्रवत्वकृत् ॥ (भा० प्र०)

अर्थ-अमलवेंत-अत्यन्त खटा, भेदक, हलका, दीपन, पित्तकारक, लोमहर्षक, रूखा तथा हृदयरोग, शूल, गुल्म, मलदोष, मद्यदोष, प्लीहा, उदावर्त, हिचकी, आनाह, अरुचि, श्वास खँसी, अजीर्ण, वमन, कफ और वातरोगको हनेवाला है । बकरेके मासको गलानेवाला । जैसे चनेके खारसे लोहेकी सुई गलजाती है उसीप्रकार इसके रसमें सुई गेरनेसे गलजाती है ।

अथञ्च ।

अम्लवेतसमत्यम्लंकपायोष्णचवातजित् ।

कफार्शश्चमगुल्मघ्नमगेचकहरपरम् ॥ (रा० नि०)

अर्थ-अमलवैत-अत्यन्त खट्टा, कपेला, गरम, वातनाशक तथा कफ, ववासीर, श्रम, गुल्म और अरुचिको दूर करनेवाला है ।

अपिच ।

अम्लवैतसमत्यम्लमानाहकफवातजित् ।

तदेवसिद्धदोषघ्नंश्रमघ्नग्राहिगुर्वपि ॥ (रा० व०)

अर्थ-अमलवैत-अत्यन्त खट्टा, आनाहनाशक, कफ तथा वातविनाशक है । पक्का अमलवैत-त्रिदोषनाशक, श्रमहारी, ग्राही और भारी है ।

विवरण । अम्लवैतके वृक्ष मध्यम आकार और दो प्रकारके होतेहैं, एक अम्लवैत, दूसरी वैती, यह छोटे होतेहैं यह पेड़ मालियोंके बागोंमें बहुत होतेहैं, फूल सफेद रंगके, फलगोल खरूजके समान, कच्चा हरा, पकनेपर पीला पड़जाताहै और चिकना होताहै ।

पनसनामानि ।



पनस कटकिफल फणसोऽतिवृद्धफल ।

अपुष्प फलदश्चैवस्थूलकण्टफलस्तथा ॥

अर्थ-पनस, कटकिफल, फणस, अतिवृद्धफल, अपुष्प, कटद, स्थूलकण्टफल, (कण्टाफल, आशय, मुरजफल, पनस, फलस, चम्पकाष्ठ, चम्पा, कोप चम्पाष्ठ, मृदङ्गफल, पानम, मदासर्ज, फलिन, पलपृष्ठा, स्थूल, कण्डीफल, मूलफलद, अपुष्पफलद, पूतफल)

संस्कृतभाषामें पनस ।

हिन्दीभाषामें कटहर, कटहल, पंगल ।

बंगभाषामें चांताल ।

| | |
|-----------------|--------------|
| मराठीभाषामें | फणस । |
| गुजरातीभाषामें | पणस । |
| कर्णाटकीभाषामें | हलमिनहण्णु । |
| तैलिङ्गीभाषामें | पनसकायि । |
| औ० | फणस । |
| तामिळीभाषामें | बला । |

लैटिन्भाषामें आर्टोकार्पस इन्टेग्रिफोलिया । *Artocarpus Lutea* folia
अस्यफलगुणा ।

पनसंशीतलपक्वस्निग्धपित्तानिलापहम् । तर्पणवृहणस्वादु
मांसलश्लेष्मलभृशम् ॥ वल्यशुक्रप्रदहन्तिरक्तपित्तक्षतक्ष-
यान् । आमतदेवविष्टम्भवातलंतुवरगुरु ॥ दाहकृन्मधु-
रवल्यकफमेदोविमर्दनम् । पनसोद्भूतबीजानिवृष्याणिमधु-
राणिच ॥ गुरुणिवद्धवर्चांसिष्टमूत्राणिसवदेत् । मज्जाप-
नसजोवृष्योवातपित्तकफापहः ॥ (भा० प्र०)

अर्थ—पक्का कटहर—शीतल, स्निग्ध, पित्तवातविनाशक, वृष्टिकारक,
पुष्टिकारक, स्वादिष्ठ, मासवर्द्धक, कफकारक, उलवर्द्धक, शुक्रजनक तथा
रक्तपित्त और क्षतक्षयको क्षयकरे है । कच्चा कटहर—विष्टम्भकारक, घादी,
कपेला, भारी, दाहकारक, मधुर, बलकारक, कफनाशक और मेदनाशक
है । कटैलके बीज—वीर्यवर्द्धक, मधुर, भारी, मलको बाँधनेवाले और मूत्रको
निकालनेवाले हैं । कटैलकी मींग—वीर्यवर्द्धक और वात पित्त कफका नाश
करनेवाली है ।

अन्यत्र ।

कण्टाफलसुमधुरवृहणंगुरुशीतलम् । दुर्जरवातपित्तघ्नश्ले-
ष्मशुक्रवलप्रदम् ॥ कण्टाफलमपक्वन्तुकपायस्वादुशीतल-
म् । कफपित्तहरञ्चैवतत्फलास्थ्यपित्तहृणम् ॥ तद्बीजसर्पि-
पायुक्तस्निग्धं हृद्यवलप्रदम् । (रा० व०)

अर्थ—पक्का कटहर—मधुर, पुष्टिकारक, भारी, शीतल, दुर्जर, वात और
पित्तनाशक तथा कफ, शुक्र और बलवर्द्धक है । कच्चा कटैल और उसके बीज—

कपले, स्वादिष्ट, शीतल तथा कफ और पित्तनाशक है । इसके बीज घृतके साथ-स्निग्ध, हृदयको हितकारी और बलवर्द्धक हैं ।

अपिच ।

पनसस्यफलंचाममलावष्टम्भकृन्मतम् । मधुरंदोषलवत्य
तुवरगुरुवातलम् ॥ कोमलतच्चमधुरगुरुवत्यंकफप्रदम् । मे-
दोवृद्धिकरचैवदाहवातप्रपित्तनुत ॥ तत्पक्वशीतलदाहिसि-
ग्धवैतृत्तिकारकम् । धातुवृद्धिकरस्वादुर्मांसलञ्चकफप्रदम् ॥
बल्यपुष्टिकरं जन्तुकारकदुर्जरवृषम् । वातक्षतक्षयरक्तपित्त
चाशुव्यपोहति ॥ तस्यबीजन्तुमधुरंवृष्यंविष्टम्भकगुरु ।
तस्यपुष्पगुरुस्तिक्तमुखशुद्धिकर्म्मतम् ॥ (नि० २०)

अर्थ-कटहरका कच्चा फल-मलस्तम्भक, मधुर, त्रिदोषकारक, बलवर्द्धक, कपेला भारी और वादी है । कोमल कटैल-मधुर, भारी, बलवर्द्धक, कफ-कारक, मेदोवर्द्धक तथा दाह और वातपित्तनाशक है । पक्का कटैल-शीतल, विदाही, स्निग्ध, वृत्तिकारक, धातुवर्द्धक, स्वादिष्ट, मांसवर्द्धक, कफकारक, बलवर्द्धक, पुष्टिजनक, जन्तुजनक, दुर्जर, वीर्यवर्द्धक तथा वात, क्षतक्षय और रक्तपित्तका नाश करे है । इसके बीज-मधुर, वृष्य, विष्टम्भक और भारी हैं । इसके फल-भारी, कडेवे और मुखको शुद्ध करनेवाले हैं ।

विवरण । कटहरके वृक्ष बहुत घडे २ होते हैं, माय' बागोंमें माली लोग बहुत लगा देते हैं, पत्ते गोल और लम्बे होते हैं, फुड आतेही नहीं, कटहल बहुत बड़ा फल होता है और वह गूलरके समान लकड़ीको फोड़कर निकलता है, फल हरे रंगका निकलता है, ऊपर कडे २ काटे होते हैं, कटहरपर हेम-न्तऋतुके पश्चात् फल लगते हैं वह फल गजभर लम्बा और बहुत मोटा होता है, तोल २० सेर तकका होता है ।

लघुच्यनामानि ।

लकुच'धुद्रपनसोलिकुचोडहुगित्यपि ।

अर्थ-लकुच, धुद्रपनस, लिचुच, डडु (लकच, ऐरावत, अम्लक, निरुच, कपापी, हृदयलक, काश्यप, शाल, शर, गूलरसन्ध, मान्द्यमलम्)

सस्यत्रभाषामं लकुच ।
दिर्घभाषामं यदहर ।

| | |
|----------------|---|
| वगलाभाषामें | डेओ, मादार । |
| मराठीभाषामें | बटार, फल, धुद्रफणस । |
| गुजरातीभाषामें | लकुच । |
| लैटिन्भाषामें | आर्टोकार्पसलकुचा । <i>Artocarpus Lacoocha</i> |
| अस्य गुणाः । | |

आमलकुचमुष्णश्चगुरुविष्टम्भकृत्तथा । मधुरश्चतथाम्ल-
श्चदोषत्रितयरक्तकृत् ॥ शुक्राग्निनाशनश्चापिनेत्रयोरहितं
स्मृतम् । सुपक्वंतत्तुमधुरमम्लचानिलपित्तहृत् ॥ कफव-
ह्निकरंरुच्यवृष्यविष्टम्भकश्चतत् । (भा प्र)

अर्थ—कच्चा बडहर—गरम, भारी, विष्टम्भकारी, मधुर, खट्टा, त्रिदोष-
कारक, रुधिरविकारकारक, नेत्रोंको अहितकारी तथा शुक्र और अग्निनाशक
है । पक्का बडहर—मधुर, खट्टा, वातपित्तनाशक, कफकारक, वद्विवर्द्धक,
रुचिकारी, वीर्यवर्द्धक और विष्टम्भकारक है ।

अन्यञ्च ।

लकुचंगुरुविष्टम्भिस्वाद्वम्लरक्तपित्तकृत् ।

श्लेष्मकारिसमीरघ्नमुष्णशुक्राग्निनाशनम् ।

अर्थ—बडहर—भारी विष्टम्भकारी, स्वादिष्ठ, खट्टा, रक्तपित्तकारक, कफ-
कारक, वातनाशक, गरम तथा शुक्र और अग्निनाशक है ।

अपिच ।

लिकुचंगुरुविष्टम्भित्रिदोषंशुक्रदूषणम् ।

अर्थ—बडहर—गुरु, विष्टम्भकारक, त्रिदोषवर्द्धक और शुक्रको दूषितकरे है ।

विवरण । बडहरके वृक्ष—बहुत ऊँचे २ और झाड़ेदार होते हैं प्रायः बागोंमें
बहुत देखनेमें आते हैं, पत्ते—पाखरके समान और फल—गाठदार गोल २
केयके बराबर होते हैं, कच्ची अवस्थामें हरे २ होते हैं । इनको पेड़परसे तोड़-
कर पालमें रखकर पकाते हैं, इसके भीतर दश बीज सफेद रंगके बीज
निकलते हैं, यह भी कटहरका भेद है, इसके फूलको लकुच कहते हैं, यह पीले-
रंगके होते हैं ।

तिन्दुवनामानि ।

तिन्दुकोनिलसारश्चकालस्कन्धोतिमुत्तक ।

स्फूर्जक.स्फूर्जन. सृष्ट स्यन्दनोरावणोरवः ॥

कृष्णत्वक्कृष्णसारश्चसुसारश्चविरूपकः ।

अर्थ-तिन्दुक, अनिलसार, कालस्कन्ध, अतिमुक्तक, स्फूर्जक, स्फूर्जन, सृष्ट, स्यन्दन, रावण, रव, कृष्णत्वक्, कृष्णसार, सुसार, विरूपक (शिति-सारक, स्फूर्जक, केन्दु, तिन्दु, तिन्दुल, तिन्दुकि, तिन्दुकी, नीलसार, स्वर्यक, रावण, स्यन्दनाद्वय)

संस्कृतभाषामें तिन्दुक ।

हिन्दीभाषामें तेंदू ।

बंगभाषामें गाव, तेंद ।

मराठीभाषामें टेमुणी, आपन ।

गुजरातीभाषामें दिघग्वो ।

कर्णाटकीभाषामें रुचुरु ।

तैलङ्गीभाषामें तमिक ।

तामिलीभाषामें तुम्बिक ।

इंग्रेजीभाषामें एननी । Tdony

लैटिनभाषामें डायोस्पायोईरोस् एग्रिओप्टेरिस् । Diospyros

फारसीभाषामें अवनुसुझाद । [Embryoperis

अस्य गुणा ।

तिन्दुकस्तुवरन्तिक्त स्निग्धोष्णोव्रणवातहा । सग्राहीदुर्ज-
रोजिह्वाजाडयकारीजडोगुरु ॥ आमचास्यफलस्निग्धक-
पायलेखनलघु । सग्राहिशीतलरुक्षविमन्धारुचिवातकृत ॥
पक्वपित्तप्रमेहान्नद्व्यश्मनमधुरगुरु । स्वादुपाकरसंस्निग्ध
दुर्जरवातनाशकम् ॥

अर्थ-तेंदू-कपेला, कडवा, स्निग्ध, गरम, घणनाशक, वातहारक, मल-
रोधक, अतिकाटिनतासें पचनेवाला, जिह्वाको जडनाकारक, जड और भारी
है । इसका फलाम्ल-प्रिय, कपेला, लेखन, हलका, मलरोधक, शीतल, स्निग्ध
तथा विपन्ध, अरुचि और वातको करनेवाला है । इसका पत्रा पित्त,
प्रमेह, रुधिरविस्तार और अश्वमर्गनाशक है । स्वादुपाकी, स्वादु, स्निग्ध,
दुर्जर और वातनाशक है ।

अन्यच्च ।

अम्लोष्णलघुसंग्राहिस्निग्धपित्ताग्निवर्द्धनम् ।

आमकपायसंग्राहितिन्दुकवातकोपनम् ॥ (सु० स०)

अर्थ—तेंदू—खट्टा, गरम, हलका, स्निग्ध, पित्त और अग्निवर्द्धक है । कच्चा तेंदू—कपेला, मलरोधक और वातको कुपित करनेवाला है ।

अपिच ।

तिदुकस्तुवरस्तिक्तः स्निग्धश्चोष्णो मधुः स्मृतः । वायुव्रण
हरत्यस्य फलचामकपायकम् ॥ लेखनग्राहकशीतस्वादुहृ-
क्षलघुस्मृतम् । मलस्तम्भारुचिकरवातकृत्तिक्तकमतम् ॥
तत्पक्वश्चगुरुस्वादुमधुस्निग्धश्चदुर्जरम् । कफकृन्मेहपि-
त्तघ्नरक्तरुग्वातनाशकम् ॥ तिन्दुकाष्टस्यसारस्तुपित्तरो-
गहरोमतः । (नि० २०)

अर्थ—तेंदू—कपेला, कडवा, स्निग्ध, गरम, मधुर, वात और व्रणनाशक है । इसका कच्चा फल—कपेला, लेखन, ग्राही, शीतल, स्वादु, रूखा, हल्का, मलस्तम्भक, अरुचिकारक, वातवर्द्धक और कडवा है । इसका पक्का फल—भारी, मधुर, स्वादु, दुर्जर, कफकारी, प्रमेहहारी तथा पित्त, रक्तरोग और वातनाशक है । तेंदूकी लकड़ीका सार, पित्तरोगनाशक है ।

विवरण । तेंदूके वृक्ष-अत्यन्त ऊँचे २ होते हैं, पत्ते—गोल २ नोकरदार सीसमकेसे होते हैं, छाल—काली २ होती है, उसमें खार होता है, इसकी लकड़ी स्थानादिकोंके बनानेके काममें आती है, इसके भीतरका सार काला और बजनदार होता है, हिन्दुस्तानी लोग इसको धावनूत कहते हैं, तेंदूके फल गोल और गोभायमान नीचूके समान हरे हरे होते हैं, पकनेपर पीले पड़ जाते हैं ।

वाकतिन्दुयनामानि ।

तिन्दुकोन्योद्वितीयस्तुजलजोदीर्घपत्रक ।

काकेंदुकेतिविख्यात कुपीलुः काकपीलुरु ॥

अर्थ—काकेन्दु, जलज, दीर्घपत्रक, काकेन्दुका, कुपीलु, काकपीलुक, (काकड, काकतिन्दु, काकम्फूर्न, काकाह, काकजीजर, कुलरु)

संस्कृतभाषामें

हिंदीभाषामें

वगभाषामें

मराठीभाषामें

गुजरातीभाषामें

संलिङ्गीभाषामें

तामिलीभाषामें

काकतिन्दुक ।

मकरतेंदुआ, काकतट्ट ।

कंद, माकडागाव, माकडातेंदु ।

काकटेंभुणी ।

काकटिंखो ।

तुमि, तुमकि ।

तुम्बि ।

अस्य गुणाः ।

स्यात्काकतिन्दुकं तिक्तं शीतलवातलंघु ।

विपाके कटुकं ग्राहिकपित्तासनाशनम् ॥

अर्थ-मकरतेंदुआ-कडवा, शीतल, वादी, हल्का, पचनेमें चरपरा, मलरोधक तथा कफ और रक्तपित्तकफनाशक है ।

अन्यच्च ।

काकतिन्दुः कपायाम्लोगुरुर्वातविकारनुत् ।

पक्वस्तु मधुरः किञ्चित्कफकृत्पित्तवातहृत् ॥

अर्थ-काकतेंदू (मकरतेंदुआ)-कपेला, खट्टा, भारी, वातविकारनाशक । पकातेंदू-किञ्चित् मधुर, कफकारक और पित्तवातहारक है ।

विवरण । तेंदूके वृक्ष-जगलमें होते हैं, इसकी छाल काली और छालमें सार होता है, वृक्षके भीतरका सार बजनदार और काले मीसमकी समान होता है, उसको देसीभाषामें आवनुस कहते हैं, फल-गोल नींबूकी समान होते हैं । दूसरा काकतेंदू काट्टेयुक्त होता है, फल-तेंदूके फलमें छोटे होते हैं ।

कारस्करनामानि ।

कारस्करस्तु किंपाकोविपतिन्दुर्विपट्टम् ।

गरट्टमोग्म्यफलं कुपाकं कालकटुकम् ॥

अर्थ-कारस्कर, किम्पाक, विपतिन्दु, विपट्टम्, गरट्टम्, रम्पट्टम्, कुपाक, कालकटुक (गुपीड, मकरतिन्दु, पशीर, वजुल, चिपि)



संस्कृतभाषामे

कारस्कार ।

हिन्दीभाषामे

कुचला ।

वगभाषामे

कुचिले ।

मराठीभाषामे

काजरा, कारस्कार, कुचला ।

गुजरातीभाषामे

शेरकांचला ।

कर्णाटकीभाषामे

काजिवार ।

तैलिङ्गीभाषामे

मुष्टिगिजा ।

इंग्रजीभाषामे

पाईसननट । Poison nut

लैटिन्भाषामे

स्टिकनास नरुसवामिका Strychnos Nuxvomica

फारसीभाषामे

इफराकी ।

अरबीभाषामे

कातिखुरकलक फलूजमाही ।

अस्य गुणाः ।

विपतिन्दुर्महातिक्त-कफवातविषापह ॥

अर्थ-कुचला-अत्यन्त कडवा तथा कफ, वात और विषविनाशक है ।

अपिच ।

कारस्कर कटूष्णश्चतिक्त कुष्ठविनाशन ।

वातामयासकण्डूतिकफकार्थव्रणापह ॥

अर्थ-कुचला-चरपरा, गरम, कडवा, कुष्ठनाशक तथा वातरोग, रुधि-
ग्दोष, कण्डू, कफ, काश्य, बवासीर और घणको दूर करनेवाला है।

अन्यथा ।

कचिरः कटुकस्तिक्तोरुक्षोष्णो दीपनो लघुः ।

भेदनस्तृदनो हन्ति पाण्डुरोगचकामलाम् ॥

अर्थ-कुचिला-चरचरा, कडवा, रुखा, गरम, दीपन, हलका, भेदक,
तृदन तथा पाण्डुरोग और कामलारोगको हरनेवाला है।

अपिच ।

कागस्करोमदकरस्तुवगेग्राहक स्मृतः । कटुस्तिक्तो-
लघुश्चोष्ण कुष्ठरक्तविकारहा ॥ कण्डू रूफवातरोगं व्रणचाशो
ज्वरजयेत । अस्य चामफलग्राहितुवरवातकृच्छ्र ॥ शीत-
लंचसमुद्दिष्टतत्पक्विपदं गुरु । पाके च मधुरप्रोक्तकफवातप्र-
मेहकम् ॥ पित्तरक्तविकारचनाशयेदितिकीर्तितम् । (नि० रा०)

अर्थ-कुचिला-मदकारक, कपेरा, मलरोधक, चरपरा, कडवा, हलका,
गरम तथा कोढ़, रक्तविकार, कण्डू, कफ, वातरोग, घाव, बवासीर और
ज्वरको दूर करेहै। इसका कच्चा फल-मलरोधक, कपेला, वातघारक,
हलका और शीतल है। इसका पक्का फल-विपद, भारी, पातम मधुर
तथा कफ, वायु, प्रमेह, पित्त और रक्तक्षेपनाशक है।

विवरण । कुचलेके दृक्ष-मध्यम आकारके होतेहैं, भाग बनोंमें बहुत
देखनेमें आतेहैं, पत्ते-पानके समान और फल नारंगीके समान सुन्दर सुन्दर
होतेहैं, इसके बीजाको कुचला कहतेहैं।

मधुसनामानि ।

मधुकोमधुवृक्षश्च मधुपीलो मधुस्रवः । गुडपुष्पो रोधुष्णो
वानप्रस्थोऽथ माधवः ॥ मध्वगन्ती क्षणमाश्वडोला फलो म-
हाद्रुमः । मधुकोन्यो द्वितीयस्तु जलजो दीर्घपत्रकः ॥ ह्रस्व-
पुष्पफल स्वादु गौलिकास्थान्मधुलिका ।

अर्थ-मधुका, मधुगुहा, मधुपीला, मधुस्रव, गुडपुष्प, रोधुष्ण, वानप्रस्थ,
माधव, मध्वग, क्षणमाश्व, डोलापत्र, महाद्रुम (मधुर, मधु, मधुवा,

मध्वल,) दूसरा जलमधूक होता है, उसके यह नाम हैं जलज, (दीर्घपत्रक, ह्रस्वपुष्पफल, स्वादु, गौलिका, मधूलिका, क्षौद्रमिय, पतंग, कीरेष्ट, गौरिकाक्ष, मगल्य, मधुपुष्प, गौरिकाल्य)

| | |
|-----------------|---|
| संस्कृतभाषामें | मधूक, जलमधूल । |
| हिन्दीभाषामें | महुआ, जलमहुआ । |
| बगभाषामें | मौल, मउल, मौया, जलमउल । |
| मराठीभाषामें | मोहाचा वृक्ष, मोहवृक्ष, जलमोहा । |
| गुजरातीभाषामें | महुडो, जलमहुडो । |
| कर्णाटकीभाषामें | महूरप्पे, जलमहे, तोरेइप्पे, यरडुइप्पे । |
| तैलिङ्गीभाषामें | इपा, पिन्ना । |
| तामिलीभाषामें | कदइलुपि । |
| इंग्रेजीभाषामें | इलूपाट्री । <i>Elloopatree</i> |
| लैटिनभाषामें | बेसिया लाटिफोलिया । <i>Bassia latifolia</i> |
| फारसीभाषामें | चका । |

अस्य गुणा ।

मधूकोमधुर शीत श्लेष्मलोवीर्यदंस्मृत । पुष्टिकृत्तुवर-
स्तिक्त पित्तदाहव्रणश्रमान् ॥ कृमिदोषचवातचनाशयेदि-
तिकीर्तितम् । पुष्पचमधुरशीतं धातुवृद्धिकरगुरु ॥ स्निग्ध-
विकाशिहृद्यचदाहपित्तमरुत्प्रणुत् । फलमस्यगुरुशीतम-
हृद्यशुक्रलमतम् ॥ स्निग्धरसेचपाकेचमधुरधातुवर्द्धकम् ।
मलावष्टम्भकवल्परक्तर्गवातपित्तकम् ॥ तृपांदाहश्वास-
कासक्षतयक्ष्मापहस्मृतम् । तदेवपक्वंवलदं पित्तवातविना-
शनम् ॥ (नि० २०)

अर्थ—महुआका वृक्ष—मधुर, शीतल, कफकारक, वीर्यवर्द्धक, पुष्टिकागक, कपेला, कडवा तथा पित्त, दाह, व्रण, श्रम, कृमिदोष और वातका नाश करनेवाला है । इसका फूल—मधुर, शीतल, धातुवर्द्धक, भारी, स्निग्ध, विकाशी, हृदयको हितकारी तथा दाह, पित्त और वातका नाश करनेवाला है । इसका फल भारी, शीतल, हृदयको आहितकारी, शुक्रजनक, स्निग्ध, रक्त और पाकमें मधुर, धातुवर्द्धक, मलस्तम्भक, वल्परक्त, रुधिरदोष, वात, पित्त,

टपा, दाह, नास, खोंसी, क्षतःक्षय और राजयक्ष्माको दूर करे है। इसका पत्रा फल-बलवर्द्धक तथा वात और पित्तनाश करे है।

अस्य त्र्यगुणा ।

मधूकरक्तपित्तघ्नघ्नशोधनरोपणम् ।

अर्थ-मधुवेकी छाल-रक्तपित्तनाशक, घ्नघ्नशोधक और घ्नरोपण है।

अस्य तैलगुणा ।

मधूकतैलमधुरपिच्छलतुवरमतम् ॥

कफपित्तज्वरचैवदाहपित्तचनाशयेत् ।

अर्थ-मधुवेका तेल-मधुर, पिच्छल, कपेला तथा कफ, पित्तज्वर, दाह और पित्तका नाश करे है।

अस्य सारगुणा ।

मधूकसारोनस्येनभूतादिकफवातजित् ॥

अर्थ-मधुवेके सारकी नास लेनेसे-भूतादि बाधा, कफ और वात दूर होता है।

जलमधूकगुणा ।

ज्ञेयोजलमधूकस्तुमधुरोवणनाशन ।

वृष्योवान्तिहृग् शीतोवलकागीरसायन ॥

अर्थ-जलमधुवा-मधुर, घ्नघ्ननाशक, वीर्यवर्द्धक, वमननाशक, शीतल, बलवर्द्धक और रसायन है।

विवरण । मधुके वृक्ष-वनम और परंतोमें बड़े २ ऊँचे होते हैं पत्ते-पदाम अथवा बड़के पत्तोंकी समान होते हैं। फूलमें शहदके समान गन्ध आती है और इसमेंसे शर्कराके समान चीज निकलते हैं, इसके पदोंमें तेल निकलता है।

पीलुनामानि ।

पीलु शीतसहस्रसीधानीगुडफलस्तथा ।

विरचनफल शारसीश्याम करभवल्लभ ॥

अर्थ-पीलु, शीतगद, ससी, धानी, गुडफूल, विरचनफल, शारसी, श्याम, करभवल्लभ (पीलुष, करभवल्लभ)

महापीलुनामानि ।

अन्यत्रैवमृदुपीलुर्महापीलुर्महाफल ।

राजपीलुर्महावृक्षोमधुपीलुःपडाह्वयः ।

अर्थ—वृहत्पीलु, महापीलु, महाफल, राजपीलु महावृक्ष, मधुपीलु ।

संस्कृतभाषामें पीलु, वृहत्पीलु ।

हिन्दीभाषामें पीलु, बड़ापीलु ।

बगभाषामें पीलुगाऊ ।

मराठीभाषामें लघुपीलु, थोरपीलु, किकलेचा वृक्ष ।

गुजरातीभाषामें खारीजाल्य, मोटीजाल्य ।

कर्णाटकीभाषामें मिरीयेऊगनि, दोडुपीलु ।

तैलङ्गीभाषामें गोलुगुचेदुडु, पिन्नवरगोण्ड ।

तामिलीभाषामें कोकु ।

देशीभाषामें झल ।

इंग्रेजीभाषामें मस्टर्डट्री ऑफ स्क्रिप्चर Mustard tree of scripture

लैटिन्भाषामें सालवेडोरेरापसिका *Salvadora persica*

सालवेडोराओलिओइडिस *Salvadora Oleoides*

फारसीभाषामें दखतेमिस्वाक ।

अरबीभाषामें इराक ।

पीलुगुणा ।

लघुपीलुस्तुकटुकःफपायोमधुरोम्लकः । सर स्वादुर्दीप-
नश्चतितस्तीक्ष्णश्चभेदक ॥ रक्तपित्तकरश्चोष्णोविदाही-
चार्शगुल्मनुत् । स्निग्ध कफवातरक्तप्लीहानाहरुजतथा ॥

उदरंविपवाधांचनाशयेदितिकीर्तितम् ।

अर्थ—लघुपीलु—चरपरा, कपेला, मधुर, खट्टा, सर, स्वादिष्ट, दीपन,
कडवा, तीक्ष्ण, दस्तावर, रक्तपित्तकारक, गरम, दाहजनक, स्निग्ध, तथा
बवासीर, गुल्म, कफ, वातरक्त, प्लीहा, आनाह, उदर, और विपके
दोषोंको दूर करे ।

वृहत्पीलुगुणा ।

वृहत्पीलुस्तुमधुरोवृष्य पित्तविपापहः ।

आमहादीपनोरुच्यस्तेलचास्यलघुस्मृतम् ॥

कफवातरुजहन्तिचेतिपूर्वबुधेऽस्मृतम् । (नि०र०)

अर्थ-वृहत्पीलु-मधुर, वीर्यवर्द्धक, पित्तनाशक, विषघ्न, धामनाशक, दीपन, रुचिकाग्री है । इसका तेल-हलका तथा कफ और वातका नाश करनेवाला है ।

विवरण । पीलुके वृक्ष दो जातिके होते हैं एक छोटा और एक बड़ा, छोटे पीलुपर बहुत छोटे २ फल आते हैं और पकनेपर लाल पड़जाते हैं, दूसरा बड़ा पीलु होता है, उसके फूल पीले और फल लाल और काले होते हैं ।

अरारोटनामानि ।

अखरोट पार्वतीय-फलस्नेहोगुडाशयः ।

कीरेष्ट कर्परालश्चस्वादुमज्ज पृथक्छद ॥

अर्थ-अरारोट, पार्वतीय, फलस्नेह, गुडाशय, कीरेष्ट, कर्पराल, स्वादु-मज्ज, पृथक्छद, (रेखाफल, वृत्तफल, मन्दनाभफल, अक्षोट, पक्षोटक, अरारोट, आखोट, आक्षोट, कन्दराल और आस्फोटक)

सस्कृतभाषामें अक्षोट ।

हिंदीभाषामें अरारोट ।

बगभाषामें आकोट ।

मराठीभाषामें अक्षोट ।

गुजरातीभाषामें अरारोट ।

कर्णाटकीभाषामें आखोट ।

दा० उव्यकाई ।

इंग्रेजीभाषामें वालनट् । Walnut बेलगाम वालनट् । Belgum welrat

लैटिनभाषामें एल्युराईट्स ट्रायलोवा । Alnus triloba

एल्युराईट्स मोल्फाना । A molucers

फारसीभाषामें चार्तगज ।

अरबीभाषामें जोशअष्टपम् मगन, जोशगीदं गाम्चार ।

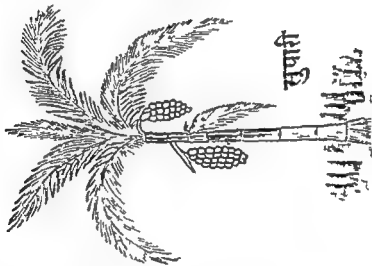
अस्य गुणाः ।

अखरोटोमधुर किञ्चिदम्ल स्निग्धश्चशीतल । वीर्यवृद्धि करश्चोष्णोरुचिद कफपित्तकृत ॥ गुरु प्रियोत्तलकर कफ-कृन्मलवद्धकृत । वातपित्तक्षयवातहृद्भोगक्तदोषकम् ॥ रक्तपातचदाहचनाशयेदिति कीर्तितम् । (नि० २०)

अर्थ—अखरोट—मधुर, किञ्चित् खट्टा, स्निग्ध, शीतल, वीर्यवर्द्धक, गरम, रुचिदायक, कफपित्तकारक, भारी, प्रिय, वलवर्द्धक, कफकारक, मलवर्द्धक तथा वातपित्त, क्षय, वात, हृदयरोग, रुधिरदोष, रक्तवात और दाहको दूर करनेवाला है ।

विवरण । इसके वृक्ष—काबुलकी ओर अधिकतासे होते हैं, फूल—सफेद रंगके छोटे और झुमखोंमें लगते हैं, पत्ते—गोल लम्बे और कुछ २ मोटे होते हैं, फल—गोल और मैनफलकी समान होता है, फलके भीतर मींग निकलती है । वह मींग बदामकी मींगकी समान मधुर होती है ।

शुभाकनामानि ।



शुवाक खपुर. पूगीपूगश्चक्रमुकोऽस्यतु ।

फलपूगीफलप्रोक्तमुद्गेगञ्चतदीरितम् ॥

अर्थ—शुवाक, खपुर, पूगी, पूग, क्रमुक, (घोण्डा, गुवाक, कपीतन, क्रमु, क्रमुकी, पूगवृक्ष, दीर्घपादप, हृदयवल्कल, वल्कतरु, चिषण, अकोट, तन्तुसार, सुरजन, गोपदल, राजताल, छटाफल, करमट्ट) इसके फलको पूगीफल, मुद्गेग और घोण्डाफल, कहते हैं ।

| | |
|-----------------|----------|
| संस्कृतभाषामें | पूगीफल । |
| हिन्दीभाषामें | शुषारी । |
| बंगभाषामें | शुषारी । |
| मराठीभाषामें | शुषारी । |
| गुजरातीभाषामें | शोषारी । |
| कर्णाटकीभाषामें | अडकेमर । |

तैलिङ्गीभाषामे

पाककाया ।

औत्क०

शुषा ।

इंग्रेजीभाषामें

बिटलनट् पाम् । Betelnut Palm

लैटिनभाषामें

एरिका केट्टेचु । Arec cate chu

फारसीभाषामें

पोपिल ।

अरबीभाषामें

फोफिल ।

अस्य गुणाः ।

पूगगुरुहिमंरूक्षकपायकफपित्तजित् । मोहनदीपनंरूच्य-
मास्यवैरस्यनाशनम् ॥ आद्रंतदूर्ध्वभिष्यन्दिवह्निद्विष्टिहर
स्मृतम् । स्विन्नदोषत्रयच्छेदिदृढमध्यतदुत्तमम् ॥ (भा० प्र०)

अर्थ-सुपारी-भारी, जीतल, रूखी, कपेली, कफपित्तनाशक, मोहकारक,
दीपन, रुचिकारक और मुखकी विरसत्ताको दूर करे। कधी सुपारी भारी,
अभिष्यन्दी, मन्दाग्निकारक, दृष्टिशक्तिनाशक, आँठकर बनाई दुई सुपारी,
जिसका मध्यभाग दृढ होवे ऐसीसुपारी उत्तम और त्रिदोषनाशक है ।

पक्कपूगपट्टगुणाः ।

पक्कन्तुवातलरूक्षभेदनकफनाशनम् ॥

अर्थ-पक्की सुपारी-घादी, रूखी, दस्तावर और कफनाशक है ।

शुष्कपट्टगुणाः ।

शुष्कमग्निकरपूगकपायमधुरं परम् ॥

अर्थ-सूखीसुपारी-अग्निवर्धक, कपेली और मधुर है ।

अपक्वपूगपट्टगुणाः ।

शुर्वभिष्यन्दिमधुरतोयधृग्वह्निनाशनम् ॥

अर्थ-कधी सुपारी-भारी, जेइजनक, मधुर और अग्निनाशक है ।

पूगस्य शास्त्रमप्यादिभेदमाह ।

पूगमादौविषंघोर्द्वितीयेभेदिदुर्जरम् ।

तृतीयादिपुपातव्यसुधातुल्यरमायनम् ॥

अर्थ-सुपारी-प्रथम अर्थात् यही अवस्थामें विषकी गमान अपकारी है ।
मध्यम अवस्थामें भेदक और दुःख है । और शुष्क अवस्थामें अमृतकी समान
रसवारी और रसायन है । इस कारण प्रथम और द्वितीय अवस्थाको छोड़
कर तृतीय अर्थात् सूखी सुपारी खानी चाहिये ।

अपिच ।

पूगीफलमोहकरस्वादुरुच्यकपायकम् । रूक्षसरचमधुरगु-
 रुपथ्यचदीपनम् ॥ किञ्चित्कटुचसम्प्रोक्तंमुखवैरस्यनाश-
 कम् । वमिक्लेदत्रिदोषघ्नमलवातकफतथा ॥ पित्तदुर्गंधतां
 चैवनाशयेदितिकीर्तितम् । आर्द्रपूगीफलप्रोक्ततुवरंकंठशु-
 द्धिकृत् ॥ अभिष्यन्दि सरचैवगुरुदृष्ट्याग्निमांघकृत् । रक्त-
 दोषमुखमलपित्तचामकफतथा ॥ आध्मानमुदर चैवनाश-
 येदितिकीर्तितम् । शुष्कपूगीफलरुच्यपाचकं रेचकतथा ॥
 स्निग्धचवातलचैवकण्ठरुग्धृत्रिदोषनुत् । पर्णं विना केवल-
 तुभक्षितशोफपाण्डुकृत् ॥ पक्वचार्द्रपूगफलछेदकचत्रिदोष-
 हृत् । शुष्कपक्वीकृततत्तुस्निग्धवातकरमतम् ॥ त्रिदोष-
 नाशकचैवतद्बालसर्वदोषहृत् ।

अर्थ—सुपारी साधारण—मोहकारक, स्वादिष्ठ, रुचिजनक, कपेली, रूखी, सारक, मधुर, भारी, पथ्य, दीपन, किञ्चित् चरपी, मुखकी विरस-
 ताको दूर करनेवाली तथा वमन, क्लेद, त्रिदोष, मल, वात, कफ, पित्त और
 दुर्गंधको दूर करनेवाली है । कच्ची सुपारी—कपेगी, कंठशोधक, अभिष्यन्दि,
 सारक, भारी, दृष्टिशक्तिनाशक, मदाग्निकागक तथा रक्तविकार, मुरमल,
 पित्त, आम, कफ, आध्मान और उदररोगका नाश करे है । सुखी सुपारी—
 रुचिकारी, पाचक, रेचक, स्निग्ध, वादी तथा कंठगोग और त्रिदोषका नाश
 करनेवाली है । विना पानके सुपारी खानेसे सूजन और पाण्डुरोग उत्पन्न
 होता है । पकाई हुई कच्ची सुपारी—छेदक और त्रिदोषनाशक है । पकाई हुई
 सुखीसुपारी—स्निग्ध, वातकारक और त्रिदोषनाशक है । कोमलसुपारी—
 सर्वदोषनाशक है ।

आध्रोद्भवपूगफलपाकेतुमधुरमतम् । किञ्चिदम्लञ्चतुवरकफ
 वातविनाशकम् । मुखजाव्यकरचैवमुनिभि परिकीर्तितम् ॥

अर्थ—आन्ध्रदेशमें उत्पन्न होनेवाली सुपारी—पचनेमें मधुर, किञ्चित्
 अम्ल, कपेली तथा कफवातनाशक और मुखको जड़तादायक है ।

चम्पावर्तीभवंपृगंपाचनचाग्निदीपनम् ।

बलप्रदरसाढ्यञ्चकफनाशकरंमतम् ॥

अर्थ-चम्पापुरकी सुपागी-पाचक, अग्निप्रदीपक, (बलवर्द्धक) रसाढ्य और कफनाशक है ।

गोठसंज्ञपृगफलरुच्यचाग्निप्रदीपनम् ।

कटुकतुवरंचोष्णपित्तलमलोद्धृत ॥

अर्थ-गोठनामवाली सुपागी-रुचिकारक, अग्निप्रदीपक, चरपरी, कपेली, गरम, पित्तजनक और मलरोग है ।

बलगुलग्रामजपृगरुच्यचाग्निप्रदीपनम् ।

पाचनचत्रिदोषघ्नमलस्तम्भाममेदहृत ॥

अर्थ-बलगुलग्रामम उत्पन्न होनेवाली सुपागी-रुचिकारी, अग्निप्रदीपक, पाचक, त्रिदोषनाशक तथा मलस्तम्भ, आम और भेजनाशक है ।

चन्दापुरभवपृगरसेचमधुरमतम् ।

कटुकतुवररुच्यम्बादुचाग्निप्रदीपनम् ॥

पाचनमुनिभिः प्रोक्तकफनाशकरंमतम् ।

अर्थ-चन्दापुरीसुपागी-रसमें मधुर, चरपरी, कपेली, रुचिकारी म्बादु, अग्निप्रदीपक, पाचक और कफनाशक है ।

गुहागरोद्भवपृगमधुरतुवरलघु ।

कटुकद्रावकचैवपाचकविशदमतम् ॥

मलस्तम्भतथाध्माननातचैवविनाशयेत ।

अर्थ-गुहागरीसुपागी-मधुर, कपेली, हल्की, चरपरी, द्रावक, पाचक, विशद तथा मलस्तम्भ और आध्मान, वातनाशक है ।

नैलवद्वाममभूतकमुककठशुद्धिकृत ।

पाचनमधुररुच्यमरकान्तिकरलघु ॥

त्रिदोषनाशकचैवरसाम्लचनिगयने ।

अर्थ-नैलवतग्रामम उत्पन्न होनेवाली सुपागी-कठोपपक, पारक, मधुर, रुचिकारक, मारक, रान्तिकारक, हल्की त्रिदोषनाशक और रसाढ्य है ।

पूगवृक्षस्यनिर्य्यासोमोहन शीतलोगुरु ।

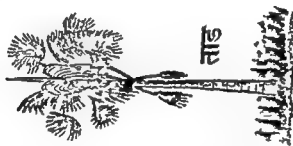
पाकेचोष्णःपित्तलञ्चपटुश्चाम्ल प्रकीर्तितः ॥

वातनाशकरश्चैवमुनिभिः परिकीर्तितः ।

अर्थ—सुपारीके पेडका गोंद—मोहनक, शीतल, भारी, पाकके समय उष्ण, पित्तकारक, चरपरा, खट्टा और वातनाशक है ।

विवरण । सुपारीके वृक्ष—ताड और नारियलकी जातिके लम्बे २ बागोंमें बहुत होतेहैं, इसका वृक्ष खम्भके समान सीधा चलाजाताहै, इसके पत्ते—बड़े २ नारियलकेमे होतेहैं, इसके ऊपर बड़े २ वेरके शिरके सदृश फल कुठ लम्बाईलिये गोल २ भातेहैं, उसको छीलनेमें भीतरसे सुपारी निकलतीहै, सुपारीकी अनेक जातिहैं, जिहाजी, श्रीवर्धनी, मानगचन्दी, और अनेक प्रकारकी होतीहैं ।

तालनामानि ।



तालस्तुलेख्यपत्र स्यात्तृणराजोमहोन्नतः ॥

अर्थ—ताल, लेख्यपत्र, तृणराज, महोन्नत, (तल, भूमिपेशीच, दीर्घतरु, द्रुमश्रेष्ठ, द्रुमेश्वर, तालद्रुम, पत्री, दीर्घस्कन्ध, ध्वजद्रुम, तृणराज, मधुरस, मडाढ्य, दीर्घपादप, चिगायु, तरुराज, दीर्घपत्र, गुच्छपत्र, आमवृक्ष, करपत्रवान, दीर्घद्रु, तन्तुनिर्य्यास, तन्तुगुभ, शतपत्रा)

श्रीताळनामानि ।

श्रीतालोमयुतालश्चलक्ष्मीतालोमृदुच्छदः ॥

अर्थ—श्रीताल, मयुताल, लक्ष्मीताल, मृदुच्छद (विनालपत्र, लेगाड, समीलेरयदल, शिगलपत्रक, याम्पोद्रुत)

हिन्ताळनामानि ।

हिन्तालःस्थूलतालश्चवल्कपत्रोवृहदलः ॥

अर्थ—हिन्ताल, स्थूलताल, वल्कपत्र, वृहदल (पुगरोट, स्थिराग्रिक,

हिमदानक, हिन्दु, स्थिर, निम्न, लम्पिरात्रिक गर्भवादी, मीन-
ताल, भीम, बहुक, लम्पिरा, मुद्गता)

संस्कृतभाषामें ताल, श्रीताल, हिन्ताल ।

हिन्दीभाषामें ताड, श्रीताड, हिन्ताल ।

बंगभाषामें ताल, श्रीताल, हेताल ।

मराठीभाषामें ताड काटेताड, काळताड ।

गुजरातीभाषामें ताड, श्रीताल, हिन्ताल ।

तामिलीभाषामें पनम ।

इंग्रेजीभाषामें पालमार्डपाम *Palmyra palm*

लैटिन्भाषामें कोरेसस प्रलेवेलिफोर्मिस *Coraisus Platylobus*

फारसीभाषामें ताल ।

अरबीभाषामें नाग ।

ताडगुणा ।

तालवृक्षस्तुमधुर भीतलोमदकृद्गुरु । पुष्टिकृच्छुककफ-
कृन्मेदकृद्गलकारक ॥ वृष्यश्चसारक पित्तदाहशोषविप-
श्रमान् । विपकुष्ठकृमीरक्तदोषवाताश्वनाशयेत् ॥ (नि० २०)

अर्थ-तालवृक्ष-मधुर, शीतल, मदकारक, भारी, पुष्टिकारक, शुभ्रजनक
कफकारक, मेदकारक, बलवर्द्धक, वीर्यजनक, सारक, तथा, पित्त, दाह,
शोष, विप, श्रम, विपकुष्ठ, कृमि, रुधिरदोष और वातका नाश करने-
वाला है ।

अस्य पट्टगुणा ।

वातहावृहणोवल्य किमिहाकुष्ठनाशनः ।

रक्तपित्तहर स्वादुस्ताल सप्तगुणान्वित ॥ (रा० नि०)

अर्थ-ताडवा पत्र-पुष्टिकारक, बलवर्द्धक त्रिभिन्नांगक सप्तगुणक,
रक्तपित्तहारक और स्वादुग्भवाला है ।

अस्यामरगुणा ।

आममरुफलप्रोक्तस्निग्धस्व

कवल्यभीतलधातुवर्द्धकम् ॥

तिक्तस्मृतम् ।

तक्षयगक्तदोषनाश

न । मरु

राम

न

अर्थ-ताडका कच्चाफल-स्निग्ध, स्वादिष्ट, भारी, मलगेधक, बलकारक, शीतल, धातुवर्द्धक, वीर्यजनक, तृप्तिकारक, मासवर्द्धक, कफकारक तथा वात, श्वास, रक्तापित्त, व्रण, दाह, क्षत, पित्त, क्षय और रुविरके दोषोंको दूर करनेवाला है ।

अभ्यन्तरफलगुणा ।

पक्वतालफलपित्तरक्तश्लेष्मविवर्द्धनम् ।

दुर्जरवहुमूत्रवतन्द्राभिप्यन्दशुक्रदम् ॥

अर्थ-ताडका पक्का फल-रक्तापित्तकारक, कफकारक, कठिनतासे पचनेवाला, बहुमूत्रजनक, तन्द्राको उत्पन्न करनेवाला, अभिप्यन्दि और शुक्र-दायक है ।

अस्त्राष्टकलबीजगुणा ।

आर्द्रतुफलबीजं वमूत्रलशीतलस्मृतम् ।

रसेपाकेचमधुरं कफकृद्वातपित्तहृत् ॥

अर्थ-ताडके कच्चे फलके बीज-मूत्रजनक, शीतल, रस और पाकमें मधुर, कफकारक और वातपित्तहारक है ।

अस्य फलप्रज्ञागुणा ।

तालमजातुतरुणाकिंचिन्मदकरीलघु ।

श्लेष्मलावातपित्तघ्नासस्नेहामधुरासरा ॥ (भा० प्र०)

अर्थ-तरुण ताडकी मींग-किञ्चित् मदकारक, हलकी, कफकारक, वातपित्तनाशक, स्नेहयुक्त, मधुर और मारक है ।

ताळपट्टोद्भवजङ्गुणा ।

तालाम्बुपित्तजिच्छुक्रस्तन्यवृद्धिकरगुरु ॥ (रा व)

अर्थ-ताडके फलका जल-पित्तनाशक, शुक्रवर्द्धक, भारी और स्तनामें दूधको उत्पन्न करनेवाला है ।

ताळमण्डिनागुणा ।

श्लेष्मदोषकरीवृष्यावातलाश्लेष्मवर्द्धिनी ।

कासहृत्लासविध्वंसदग्णीतालमण्डिका ॥ (आ० स०)

अर्थ-ताडी-कफकारक, वीर्यवर्द्धक यात्री, श्लेष्मवर्द्धक, कासनाशक और उषकाईको दूर करनेवाली है ।

भन्यन् ।

तालजतरुणंतोयमतीवमदकृन्मतम् ।

अम्लीभृतंतदातुस्यात्पित्तकृद्वातदोषहृत् ॥

अर्थ-नवीन ताड़ी-अत्यन्त मदकारक है और खट्टी होनेपर पित्तकारक और वातहारक है ।

तालप्रलम्बगुणा ।

तथातालप्रलम्बश्चरुक्षक्षतरुजापहम् ।

अर्थ-तालप्रलम्ब-रुक्ष और क्षतरोगनाशक है ।

तालपक्षरगुणा ।

तालवृक्षस्यशीर्षस्थ पजरोधातुवर्द्धनः ।

वातपित्तहरश्चैववस्तिशुद्धिकर पर ॥

अर्थ-ताड़के मस्तकका पजर-धातुवर्द्धक, वातपित्तनाशक और वस्तिशोधक है ।

तालवृन्तपाशुगुणा ।

तालवृन्तभवोवातस्त्रिदोषशमनोलघुः । राजवृद्धभ

अर्थ-ताड़के पत्तेकी पवन-त्रिदोषनाशक और हलकी है ।

तालमूलागुणा ।

तन्मूलतुभवेत्स्वादुपाकेचरक्तपित्तहम् ।

अर्थ-ताड़की जड़-स्वादु, पचनेमें स्वादिष्ट और रक्तपित्तनाशक है ।

श्रीतालगुणा ।

श्रीतालोमधुरोत्पतमीपञ्चैवकृपायकः ।

पित्तजित्कफवर्गीचवातमीपत्रकोपयेत् ॥

अर्थ-श्रीताल-अत्यन्त मधुर, किञ्चित्पेना, पित्तनाशक, कफकारक और रुद्ध र वातको रुपित करनेवाला है ।

विवरण-ताड़के घड़े २ गूदा होते हैं, पत्ते घड़े घड़े लम्बे गमुरकी जनीली समान करीले लम्बे घोंटे चार चार फूटके होते हैं, इनसे पत्ते आदि विभिन्न पदार्थ बनाये जाते हैं । पहिले यदा ताड़के पत्तोंपर गमस्त अन्य निरसे जाते थे ताड़नी नर और नारी यह हो जाती है नर जातिके गूदामें पत्त नहीं आते और नारीके गूदामें पत्त लगते हैं । नरमें शारता नहीं होती । गूदके गमको ताड़ी कहते हैं ।

हिन्तालशुष्का ।

हिन्तालोमधुराम्लश्चकफकृत्पित्तदाहनुत् ।

श्रमतृष्णापहारीचशिशिरोवातदोषनुत् ॥ (रा नि)

अर्थ—हिन्ताल—मधुर, अम्ल, कफकारी, पित्तनाशक, दाहनाशक, शीतल, वातविकारविनाशक तथा श्रम और तृष्णा को दूर करे है ।

कपित्थनामानि ।



कपित्थस्तुदधित्थ स्यात्तथापुष्पफलःस्मृतः ।

कपिप्रियोदधिफलस्तथादन्तशठोऽपिच ॥

अर्थ—कपित्थ, दधित्थ, पुष्पफल, कपिप्रिय, दधिफल, दन्तशठ (ग्राही, मन्मथ, पुष्पफल, कगित्थ, कवित्थ, देवपादादय, मालूर, मङ्गल्य नीलमल्लिका, ग्राहिफल, चिरपाकी, ग्रन्थिफल, कुचफल, कपीष्ट, गन्धफल, दन्तफल, करभवल्लभ, काठिन्यफल, कञ्जफलक, अक्षतस्य)

संस्कृतभाषामें कपित्थ ।

हिन्दीभाषामें कैथ ।

वङ्गभाषामें कपेद्राठ, कतुवेर ।

मराठीभाषामें कैवठ, कविठ ।

गुजरातीभाषामें कौट, काठ, कोटवडी ।

कर्णाटकीभाषामें वेल्लु ।

तेलङ्गीभाषामें एलागाकाया ।

उग्रजीभाषामें तुदणपल एलिफण्टपल । Wool apple Elephant apple
 मैटिन्भाषामें केरोनिया एलिफैंटेनम् । Ieroma Elephantum
 कपित्थकलमाधारणगुणा ।

कपित्थमम्लमधुररूपायविशदगुरु ।

कामातिमारुहद्रोगच्छर्दिकफरुजापहम् ॥ (आ०स०)

अर्थ-कैय-खट्वा, मधुर, कपेला, बिगद, भारी तथा गॉसी, अतिसार,
 हृदयरोग, वमन और कफरोगको दूर करे है ।

अथ कपित्थकलमाधारणगुणा ।

कपित्थमामरुण्डघ्नविषघ्नग्राहिवातलम् ।

मधुगम्लकपायत्वात्मौगन्ध्याच्चरुचिप्रदम् (रा)

अर्थ-कड्याकैय-कण्डूनाशक, विषनाशक, मलरोधक, वातघ्नक । यह
 मधुर, अम्ल रूपाय और गुणघृष्ट होनेसे वातघ्न रुचिकारक है ।

अथ कपित्थकलमाधारणगुणा ।

तद्वपकृदोपघ्नगुरुग्राहिविषापहम् । (राज)

अर्थ-पक्षा कैय-विशेषनाशक, भारी, ग्राही और विषविनाशक ।

अन्यथा ।

कपित्थमधुरचाम्लतुवग्राहिशीतलम् । वृष्यतिक्तपित्तवा-
 तत्रणनाशकमतम् ॥ फलमामकपित्थस्यग्राहिकोष्णचरु-
 शकम् । लघ्वम्लतुवगन्धेनलेखनवातपित्तकृत ॥ जिह्वाजा-
 व्यकरुच्यविषस्यकफप्रणुत । तत्पक्वंरुचिदं चाम्लरूपा-
 यग्राहिमाधुरम् ॥ कठशुद्धिकरशीतगुरुवृष्यचदुर्लभम् ।
 श्वासभयगत्करुजवान्तिवातश्रमतथा ॥ हिष्मानचविषग्ला-
 नितृपादोपत्रयतथा । द्विषाकामनाशयतिरीजचहृदयथा-
 पहम् ॥ ग्रीष्मस्यथापिषत्त्रैविमर्षत्रैवनाशयेत् । वीजतेल-
 अतुवग्राहकस्वादुपित्तनुत् ॥ आखोर्विषरफत्रैवद्विषा-
 वान्तिचनाशयेत् । विषनाशकरपुष्पपर्णयान्त्यनिमागनुत् ॥
 हिसानाशयतीत्येवप्रोक्तपूर्वमनर्पिभिः । (नि० १०)

अर्थ—कपित्थ—मधुर, खट्टा, कपेला, ग्राही, शीतल, वीर्यवर्द्धक, कडवा तथा पित्त और वातका नाश करे है । इसका कच्चा फल—ग्राही, गरम, रूखा, हलका, खट्टा, कपेला, लेखन तथा वात, पित्त और जिह्वाको जड़ता कारक है, रुचिजनक तथा विष, स्त्रग् और कफका नाश करे है, इसका पका फल—रुचिकारक, खट्टा, कपेला, ग्राही, मधुर, कठशोधक, शीतल, भारी, वीर्यवर्द्धक, और दुर्जर है । तथा श्वास, क्षय, रक्तदोष, वमन, वायु, श्रम, विष, ग्लानि, तृषा, त्रिदोष, दुचकी और खाँसीको दूर करे है, इसके बीज हृदयरोग, मस्तकशूल, विष, विसर्प इनको दूर करेह, इसके बीजाँका तेल—कपेला, ग्राही, स्वादु, पित्तनाशक तथा भूँसेका विष, कफ, दुचकी और वमनको दूर करे है, इसके फल—विषनाशक है । इसके पत्ते—वमन, अतिसार और दुचकीको दूर करे है ।

विवरण । इसके वृक्ष सर्व हिन्दोस्त्यानर्म पाये जाते हैं, फल नेलसे छोटे और सफेद रंगके लगते हैं, पत्ते छोटे और चिकने होतेह, फूल छोटे और सफेद रंगके आते हैं, वर्षाऋतुमें इसकी कली खिलती है, फिर क्रमसे फलके आकार परणवती है, शीतऋतुमें फल पकजाते हैं, कैथमें एक आश्चर्यकारक गुण है कि, कोई हाथी कैथको खालेवे उस हाथीके पेटमें कैथका सार भाग अर्थात् गूदा रह जायगा और गुदेरहित अखण्डित कैथ मलके साथ निकल आवेगा ।

रमरगनामानि ।



कमररव.

कारुक कर्मरग स्याच्छिरालस्तुशुकप्रिय ।

अर्थ—कारुक, कर्मरग, शिगल, शुकाप्रिय (रूहल, रुनाकर, कम्मार, कर्मरक, पीतफल, कर्मरग मुद्गर, धागपल, कम्मारक)

| | |
|----------------|--|
| हिन्दीभाषामें | पानीआमला । |
| बगभाषामें | पानीआमला । |
| मराठीभाषामें | पाणआवले । |
| गुजरातीभाषामें | पाणिआवला । |
| इंग्रजीभाषामें | फलाकुर्या काटाफाकटा । <i>Malvartia Calophylla</i> फलागोमोचिआई । <i>Romontelua</i> |

भस्म गुणा ।

प्राचीनामलकदोषत्रयजिह्वज्वरघातिच ॥ (भा०प्र०)

अर्थ-पानीआमला-त्रिदोषनाशक और ज्वरको दूर को है ।

अपिच ।

पानीयामलकराहिस्वाद्विमुखाशोधनम् । (रा०नि०)

अर्थ-पानीआमला-मलरोग, स्वादु, ज्वर और मुखशोधक है ।

अपिच ।

“प्राचीनामलकरुच्यंन्निग्धगुरुगरापहम् ।

वातघ्नपित्तकफहृदुष्णगुरुममीरजित्” ॥ (म०पा०)

अर्थ-पानीआमला-रुचिकारी, निग्ध भारी, विषनाशक, वात, पित्त और कफको दूर करनेवाला, भारी और वातहारी है ।

अपिच ।

पर्णामलकमधुररुचिप्रदगुरुचोष्णम् ।

विषत्रिदोषघ्नमनकफतृष्णावातहप्रोक्तम् ॥

सुतगतदेवपक्ककफपित्तकरविशेषतश्चोक्तम् ॥ (नि०र०)

अर्थ-पानीआमला-मधुर, रुचिदायक, भारी, गरम, त्रिदोषनाशक तथा कफ, तृष्णा और वातका नाश करनेवाला है । यही पक्काहवा विशेष करने कफ और पित्तकाय है ।

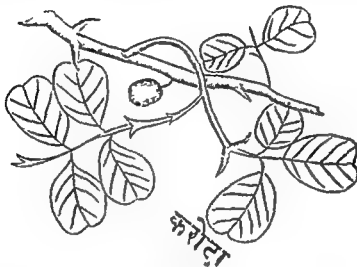
विषरण-पानीआमलाके गुण त्रिदोषके समीप होते हैं, इसमें कठिनी होते हैं और यह हल हल येरके समान कठिनी होते हैं ।

कर्मदेवनामात्रि ।

करमर्दोपनेक्षुद्राकराम्ल करमर्दक ।

नल्माल्लघुफलायातुनाज्ञेयाकरमर्दिता ॥

अर्थ-करमई, वनेक्षुद्रा, कराम्ल, करमईक, (कृष्णपाकफल, अविग्र, सुपेण, करामई, कृष्णपाक, पाकफल, कृष्णफल, पाककृष्ण, फल, कृष्ण-फलपाक, पाककृष्ण, फलकृष्ण, वनालय, वनालक, कराम्बुक, कणचूक, बोल, वश, करमदी, कराम्लक, पाणिमई, कण्टकी, अविग्र, सुपुष्प, दृढक-ण्टक, जातिपुष्प, क्षीरफल, डिम-डिम, गुच्छी, क्षीरी, बहुदल) इससे छोटीको करमईका कहते हैं ।



संस्कृतभाषामें करमईक ।

हिंदीभाषामें करौदा, करईदा ।

बंगभाषामें करमचा ।

मराठीभाषामें गोडाकरवदा, वडूकरवदा ।

गुजरातीभाषामें करमदी, करमदा ।

कर्णाटकीभाषामें करिजिगे ।

तैलिङ्गीभाषामें वाका, पारिकचेट्टु ।

इंग्रेजीभाषामें जास्मिन्फ्लावरडॅरेस्ता । *Jasmine flowered carissa*

लैटिन्भाषामें कैगसा कोरदास *Carissa Corandas*

अस्य गुणाः ।

करमईद्वयत्वाममम्लगुरुतृपाहरम् ।

उष्णरुचिकरप्रोत्तरक्तपित्तकफप्रदम् ॥

तत्पक्वमधुगुरुच्यलयुपित्तसमीरजित् । (भा० प्र०)

अर्थ-दोनों प्रकारके करोंदे कच्चे-खट्टे, भारी, नृषानाशक, गरम, रुचि कारक तथा रक्तपित्त और कफकारक हैं। वही पड़े, मधुर, रुचिकारी, हल्के तथा पित्त और वातको जीते हैं।

अथवा ।

कर्मर्द्धपिपासाग्रमम्लरुच्यचपित्तकृत । (रा० व०)

अर्थ-कर्मर्द्ध-पिपासानाशक, खट्टा, रुचिकारी और पित्तहारी है।

अपिच ।

कर्मर्द्धफलचामतित्तचाग्निप्रदीपकम् । गुरुपित्तकरग्राहि
चाम्लमुष्णरुचिप्रदम् ॥ रक्तपित्तकफचैववर्द्धयेत्तृहिनाश-
कम् ॥ तत्पक्वमधुररुच्यलघुशीतचपित्तहम् । रक्तपित्तं
त्रिदोषश्चविषवातंचनाशयेत् । तच्छुष्कपक्षसदृशगुणज्ञे-
यविचक्षणै ॥ अत्यम्लस्यगुणाश्चैवज्ञेयाआमकराम्लवत् ॥

अर्थ-दोनों प्रकारके कच्चे कर्मर्द्ध-खट्टे, अग्निप्रदीपक, भारी, पित्तहारी, मलशोधक, खट्टे, गरम, रुचिदायक, रक्तपित्तनाशक, कफजनक और नृषा नाशक हैं। वही दोना पक्वदुग्धे-मधुर, रुचिकारी, हल्का, शीतल तथा विष, रक्तपित्त, त्रिदोष, विष और वातविनाशक हैं। सारे कर्मर्द्धके गुण पड़े कान्तिहीन ममान जानने और अत्यम्लरुचिक गुण बच्चेकी ममान जानने।

अथवा ।

कर्मर्द्धफलचार्द्रमम्लपित्तकफप्रदम् ।

भेदनचोष्णवीर्यचवातप्रशमनगुरु ॥

पक्वबुकेल्पपित्तेचतन्मूलकृमिनुत्पन्नम् । (शो० नि०)

अर्थ-कर्मर्द्धकर्मर्द्ध-खट्टा, पित्तजनक, कफकारक, भेदन, उष्णशीतल, वातनिवारक और भारी है। पक्व रक्त-पित्तनाशक है। मम्ल रक्त कृमिको हनेवाला और मारक है।

विवरण-कर्मर्द्धकर्मर्द्ध मम्ल मागोंमें बहुत है, पक्व गरम और गुर्मा पित्त बुराई समान आते हैं, पक्वके गुच्छे पेगोंके ममान मम्लरुचि, पक्व के जो नाशक होते हैं, पक्व मम्ल नोकापरा नाशकिये अपक्व मम्लरुचि होते हैं, दुग्ध पक्व है आधेनाश और पक्वनाश वात परजाते हैं।

चदरीनामानि ।

वदरीदृढबीजाचकण्टकीसुफलापिच ।

नखीव्याघ्रनखीघोण्टाकोलीगुडफलापिच ।

अर्थ-वदरी, दृढबीजा, कण्टकी, सुफला, नखी, व्याघ्रनखी, घाण्टा,
(कोली, गुडफला, कोला, कोली, कोलि, कुवली)

वदरीफलनामानि ।

फलंतुवदरकोलंसौवीरफेनिलकुहम् ।

कर्कन्धु कोलिकुवलपिच्छलावदरीच्छदा ।

अर्थ-वदर, कोल, सौवीर, फेनिल, कुह, कर्कन्धु, कोलि, कुवल, पिच्छला,
वदरीच्छदा, (सौवीरफ, वालेष्ट, फलशैगिर, वृत्तफल, घोण्टा गोपघोण्टा,
इस्तिकोलि, गोपघोण्टी, झगालकोलि, वादिर, गुडफल, दृढबीज, वृत्तफल,
कण्टकी, वक्रकण्टक, सुरस, सुफल, स्वच्छ, कर्कन्धू, वदर, कोली, कोला,
कुवली, स्वादुफला, गृध्रनखी, कुवल (:), पिच्छिल, स्वादुफल, कुलक,
कोकिल, अजामिया, उभयकण्टक)

मस्कृतभाषामें

वदरी, वदर, कर्कन्धू, कोल, सौवीर, इस्तिकोलि,

हिंदीभाषामें

वेरीका पेड, बेर, छोटेवेर, पैमटी, बडे वेर ।

बगभाषामें

कुलगाछ, कुलफल, बडकुलगाछ, बरई, शियाकुल ।

मराठीभाषामें

बोरीचें झाड, बोर, रायबोर, लघुबोर ।

गुजरातीभाषामें

मोटीबोरडी, नानीबोडी ।

कर्णाटकीभाषामें

येरु ।

तेलिङ्गीभाषामें

रेगुचेट्टु, रघ ।

औत्क०

कुडि ।

तामिलीभाषामें

रेयन्ति ।

इंग्रेजीभाषामें

जुजव । *Jujab*

लैटिनभाषामें

सिसिफम जुजुबा । */ɪz ˈplʌs fjuːjʊbə*

फारसीभाषामें

कुनार ।

अरबीभाषामें

मीदरनवक ।

वदरलक्षणानिगुणाश्च ।

पच्यमानसुमधुरसौवीरवदरमहत । सौवीरवदरशीतभेदन-
गुरुशुक्रलम् ॥ बृहणपित्तदाहास्रक्षयतृष्णानिवारणम् । सौ-

वीगच्छधुसंपरुमधुरकोलमुच्यते ॥ कोलन्तुवदरदाहिक-
च्यमुष्णञ्चवातहत । कफपित्तकरश्चापिगुरुसारकमीरित-
म् ॥ कर्कन्धूक्षुद्रवदगकथितपूर्वमृगिभिः । अम्लस्यात्क्षु-
द्रवदगकपायमधुगमनाक् ॥ मिधगुरुचित्तचवातपित्ताप-
हस्मृतम् । शुष्कभेद्यग्निवृत्तसर्वलघुतृष्णाकुमान्वजित ॥ (भा प्र.)

अर्थ-बड़ा और पक्कर मीठा पड़गयाहो ऐसे बेरको गोबरि कहते हैं,
गोबरिबेर-शीतल, भेदक, भार्ग, शुभजनक, पुष्टिकारक तथा पित्त, दाह,
रुधिरविकार, क्षय और हृषानिवारक है । गोबरिमे छोट अर्धात् सामान्य
बेर और पक्कर मीठे होगये हों ऐसे बेरोंको कोल कहते हैं । कोलबेर-दाह
जनक, रुचिकारक, गरम, वातनाशक, कफपित्तकारक, भार्ग, और गारक
है । छोटे बेरोंको कर्कन्धू, कहते हैं । कर्कन्धू-गटे, कपरे, मधुर, शिथिल,
भार्ग, कटवे और वातपित्तनाशक है । मयप्रकारके गुणेंद्रुम बेर-भेदक,
अग्निजनक, इसके नया तथा, जम और रुधिरान्धोंको दूर करते हैं ।

अथ च ।

कर्कन्धू कोलवदगमामपित्तकफाजहम् । परुपित्तानिलहरं
स्निग्धंममधुरमरम् ॥ तच्छुष्ककफनातघ्ननचपित्तेविरु-
ध्यते । पुगणतृद्रप्रशमनंश्रमभ्रदीपनलघु ॥ (राजनहम्)

अर्थ-छोटे, बड़े और सामान्य कछे बेर-पित्त और कफनाशक है वही
पछे-पित्तवातनाशक, शिथिल, मधुर और गारक है, वही सुखे-कट और
वातनाशक है और पित्तवदक नहीं है और वही पुगने तथा-और श्रमना
शक, है, अग्निप्रदीपक और लघुपायी है ।

अथ च ।

अपक्वलेष्माणविगचयनिनातविननुते ततोमध्यायस्थ रि-
मपिमधुगम्लपवनहत । सुपकपित्तत्रश्रममद्वमिच्छेदि
वलद सगृष्णाजित्तद्वदरमश्नन्तिधनित ॥

अर्थ-अपक्व अर्धात् कछे बेर-वातनाशक और वातनिवारक है । मत्स्य
अवस्थाके बेर-निश्चित मधुर, अम्ल और वातनाशक है । पके बेर-पित्त
नाशक, श्रमहारक, वननिवारक सखरक, गारक और सुपायक है ।

अपिच ।

वदरीशीतलारूक्षातिक्तापित्तकफापहा । फलमस्यास्तुम-
धुरतुवरचाम्लमीरितम् ॥ तच्चपक्तुमधुरमम्लमुष्णकफप्र-
दम् । ग्राहकलघुरुच्यञ्चवाय्वतीसारशोपहृत् ॥ रक्तश्रमह-
रप्रोक्तपडितैश्वरकादिभिः ॥ (नि० २०)

अर्थ—वेरीका वृक्ष—शीतल, रुक्ष, कडवा तथा पित्त और कफनाशक है ।
इसका कच्चा फल—मधुर, कपेला और खट्टा है । इसका पक्का फल मधुर,
खट्टा, गरम, कफकारक, मलरोधक, हल्का रुचिकारी तथा वात, अतिसार,
शोष, रुधिरदोष और श्रमको हरनेवाला है ।

हस्तिकोलिगुणा ।

गजकोलदुर्जरस्याच्छीतस्वादुगुरुस्मृतम् ।

ग्राहकलेखनस्निग्धपौष्टिकमलवद्धकृत् ॥

आध्मानकाग्नकचैत्रपित्तवातविनाशनम् ॥ (रा० नि०)

अर्थ—हस्तिकोलिवेर—दुर्जर, शीतल, स्वादु, भारी, ग्राही, लेखन, स्निग्ध,
पुष्टिकारक, मलवर्द्धक, आध्मानकाग्न तथा पित्त और वातनाशक है ।

राजवदरगुणा ।

राजवदरसुमधुरशिशिरोदाहार्तिपित्तवातहर ।

वृष्यश्चवीर्यवृद्धिकुरुते शोषश्रमहरते ।

अर्थ—राजवेर—मधुर, शीतल, दाहनाशक, पित्तनाशक, वातनिवारक,
वीर्यवर्द्धक, वृष्य तथा शोष और श्रमनाशक है ।

भृषदरीगुणा ।

भृषदरीमधुराम्लकफवातविकारहारिणीपथ्या ।

दीपनपाचनकर्त्रीकिञ्चित्पित्तास्कारिणीरुच्या ॥ (नि० २०)

अर्थ—झडवेर—मधुर, आम्ल, कफनाशक, वाताधिकारनिवारक, पथ्य,
दीपन, पाचक, रुचिकारक और किञ्चित् रक्तपित्तको क्षुपित करे है ।

वदरीफलमज्जागुणा ।

वदरीफलमज्जातुवरामधुरामता ।

शुक्रदावलदावृष्याकासश्वातृपापहा ।

वातघ्नीछर्दिदाहघ्नीपित्तहामुनिभिर्मता ॥ (नि० २०)

अर्थ—घेरकी भोग—कपेली, मधुर, शुक्रजनक, बलवर्द्धक, वीर्यवर्द्धक तथा रसोमी, नाम, तृपा, वात, वमन, दाह और पित्तको दूर करे ।

यदरस्यपत्रगुणा ।

यदरस्यपत्रलेपोज्वरदाहविनाशन ।

त्वचाविस्फोटशमनीरीजनेत्रामयापहम् ॥ (रा० नि०)

अर्थ—घेरके पत्तोंका लेप—ज्वर और दाहका नाशकरे है । घेरकी छाल फोड़ेको दूर करनेवाली है । घेरके रीज अर्थात् गुठलीकी भोग नेत्ररोगनिवारक है । घेरके वृक्ष सर्व हिन्दोस्थानके स्थानोंमें मिलते हैं ।

विवरण—घेरके वृक्ष अनेक जातिके होते हैं और सब स्थानोंमें होते हैं, इसके वृक्ष काष्ठदार मध्यम भागके होते हैं, पत्ते छोटे और गोल कुछेक लम्बाई लिये होते हैं, पूल मीरुहोंमें छोटे २ गोल रंगके होते हैं फल अपनीच जातिके आते हैं छोटे बड़े लम्बे, गोल, पैन्डी, कडा, पीटा और रामपुरी इत्यादि । एक स्रवेर कहलाते हैं उनके धुप छोटे २ फलीपर पड़े हुए होते हैं उनका एक बन्दी है जिसका नाम यदरिकाश्रम है, और दिल्लीत भागे यद कर जा देखा तो कोतातक घेरके हैं वृक्ष देखनेमें भापे, उनहीं धुपाका वाट काटकर और उनके पत्ते झाड़ झाड़कर बड़े बड़े ऊँचे ढेर लगाते हैं, उनहीं पात्रा कहते हैं उसीसे गाय भैंसोंकी उद्गम्यता होती है उन धुपोंपर छोटे २ घेरभी लगते हैं प्रथम हर होते हैं मध्यम अवस्थामें पीले और अन्तममय छाल पड़कर सुफट जाते हैं ।

विरट्नामानि ।

विरट्नाम सुवातृक्षोयन्धिलम्बादुरुण्टक ।

सप्तवयजवृक्षश्चकण्टकीव्याघ्रपादपि ॥

अर्थ—विरट्ना, सुवातृक्ष, यन्धिल, म्बादुरुण्टक, सप्तवय, व्याघ्र पाद (वैरट्ना वृक्षका कण्टकारी, सुवातृक्ष, विविरी, यन्धिल, सप्तवय, सुवातृक्ष, मधुपर्ण कण्टपाद यदुर्ना, गोवयोग्ना, सुवट्ना, मुदुर्ना, दत्तराज, पतिप, अयराज, विरट्ना, विरक, वृक्षविविरी, वृषुपीज सुमातृक्ष पारंगोदिया, मरुज)

| | |
|----------------|--|
| संस्कृतभाषामे | विककत । |
| हिन्दीभाषामे | कटाई, किंकिणी, बज । |
| बगभाषामे | बईचिगाठ । |
| मराठीभाषामे | वेहडचाच फल । |
| गुजरातीभाषामे | विकलो । |
| कर्णाटकीभाषामे | हलुमाणिका मालेगु । |
| तेलङ्गीभाषामे | कानवेगुचेट्टु । |
| औत्क० | बड्चकुडि । |
| प० | कुकोया । |
| लैटिन्भाषामे | सिलस्ट्रम् मोटेना । <i>Solstrus Montana</i> अस्य गुणा । |

विककतोम्लमधुरपाकेतिमधुरोलघु ।

दीपन.कामलासघ्न.पाचन पित्तनाशनः (रा० नि०)

अर्थ—कटाई—अम्ल, मधुर, पाकमेंभी मधुर, लघु, दीपन, कामलानाशक, रुधिरदोषनिवारक, पाचक और पित्तनाशक है ।

अन्यज्ञ ।

विककतोमधुश्चाम्ल.कपाय शीतलोजयेत् । वलासपित्त-
शोफास्रविकारान्कामलान्तथा ॥ पाककालेतिमधुरोदाहं
शोपचनाशयेत् । दीपन पाचनश्चैवघ्नलूतार्शनाशनः ॥

अर्थ—विककत—मधुर, अम्ल, कपेला, शीतल तथा कफ, पित्त, शोफ, रुधिरविकार और कामलारोगको दूर करे है । पचनेमेंभी मधुर, दीपन, पाचक और दाह, शोष, घ्न, लूता और बवासीरको दूर करे है ।

अपिच ।

विककतफलपक्वमधुरसर्वदोषजित् । (भावप्रकाश)

अर्थ—विककतका पका फल—मधुर और सर्वदोषनाशक है ।

अन्यज्ञ ।

विककतचनात्युष्णदोषहृन्नेत्रपुष्पजित् ।

अर्थ—विककत—अत्यन्तगर्म नहीं है, त्रिदोषनाशक और आँखके फूलेको दूर करे है । विककतके वृक्ष—जंगल और बनोंमें होते हैं, वृक्षपे काटे होते हैं ।

विवरण । कटादिके वृक्ष जंगल और वनामें बहुत बड़े २ होते हैं उनके पत्ते छोटे २ और डालियोंमें कटि होते हैं, इसमें बहुत अच्छे २ घेरे समान मोल २ फल लगते हैं ।

प्रियालनामानि ।

प्रियालस्तुरसरस्कन्धश्चागेवदुलवलकलः ॥

राजादनस्तापसेष्ट सन्नकटुधनुष्पट ॥

अर्थ—प्रियाल, सरस्कन्ध, चार, यदुलवल्कल, राजादन, तापसेष्ट, सन्न कटु, धनुष्पट (अखट, ललन, चारफ, यदुलवल्कल, सन्नकटु, तापसामिष, स्नेहबीज, उपवट, मोक्षबीर्य, हृमलक, राजातन, विपल, धनु, पट, हमलक, धनुषपट, प्रियालक)

संस्कृतभाषामें प्रियाल, प्रियाल ।

हिन्दीभाषामें चिगेजी ।

बंगभाषामें चिगेजी, प्रियाल ।

मराठीभाषामें चारोळी (को०) चारवृक्षबीज ।

गुजरातीभाषामें चारोली ।

कर्णाटकीभाषामें चारबीज ।

तेलुगुभाषामें मारुषु ।

तामिलभाषामें फाटमुरा ।

औ० चरु ।

पं चिगेरी ।

लैटिनभाषामें बुनेननिया रेडिकाग्निभा । Buchanania latifolia

फारसीभाषामें बुकडेगाना ।

अरबीभाषामें दयूममाना ।

अथ गुणाः ।

चागेलीमधुगवृष्यानाम्लगुर्वीसगमता । मलस्तम्भहरी
त्रिग्वर्णीतलाघातुवर्धिनी ॥ कफकृद्भृजगजल्याप्रियायात-
विनाशिनी । पित्तदाहज्वरतृपाक्षतरुयक्तदोषनुल ॥ क्षतक्षय-
नाशयतितन्मन्त्रामधुगमता । वृष्यानादादपित्तपीनसोत्तम-
धुरगुरु ॥ विशिष्टुष्णकफकं पित्तयातविनाशनम् ॥ (दि० ७१०)

अर्थ-चिरोंजी-मधुर, वृष्य, भारी, अम्ल, सारक, मलस्तम्भक, स्निग्ध, शीतल, वातुवर्द्धक, कफकारक, दुर्जर, वल्वर्द्धक, प्रिय, वातविनाशक तथा पित्त, दाह, ज्वर, तृषा, क्षतरोग, रक्तविकार और क्षतक्षयका नाश करेहै । चिरोंजीकी मींग-मधुर, वीर्यवर्द्धक, दाह और पित्तनाशक है । चिरोंजीका तेल मधुर, भारी, किञ्चित् गरम, कफकारक और पित्तवातको दूर करेहै ।

अपिच ।

प्रियालमधुगन्निग्धवृहणवातपित्तजित् । (रा० नि०)

अर्थ-चिरोंजी-मधुर, स्निग्ध, पुष्टिकारक और वातपित्तनाशक है ।

प्रियालमूलादिगुणा ।

चारमूलतुतुवररक्तरुक्फपित्तहम । चारमज्जातुमधुरावृ-
ष्यास्निग्धाचशीतला ॥ मलस्तम्भकरीचामवर्द्धकादुर्जरा
मता । हृद्याचशुक्रलावातपित्तनाशकरीमता ॥ (नि० रा०)

अर्थ-चिरोंजीके वृक्षकी जड़-कपेली तथा रुधिरविकार, कफ और पित्तनाशक है । चिराजीवृक्षकी मींग-मधुर, वीर्यवर्द्धक, स्निग्ध, शीतल, मलस्तम्भक, आमवर्द्धक, दुर्जर, हृदयको हितकारी, शुक्रजनक और वात-पित्तनाशक है ।

विवरण-चिराजीके वृक्ष काकण आदि देशमें अधिक होते हैं, पत्ते छोटे २ नोकदार खगखरे होते हैं, पत्ते छोटे २ घेरके समान नीलेरंगके होते हैं उसमेंसे जो मींग निकलती है, उसको चिराजी कहते हैं ।

राजादननामानि ।

राजादन फलाध्यक्षोराजन्याक्षीरिकापिच ।

अर्थ-राजादन, फलाध्यक्ष, राजन्या, क्षीरिका (राजफल, कपीट, क्षीरवृक्ष, नृपद्रुम, निम्बनीज, मधुफल, माधवोद्भव, क्षीरी, गुच्छफल, पूषेष्ट, राजवल्लभ, श्रीफल, दृढस्कन्ध, क्षीरशुद्ध)

| | |
|----------------|------------------|
| संस्कृतभाषामें | राजादन । |
| हिन्दीभाषामें | खिन्नी, गिरनी । |
| बगभाषामें | क्षीरिणी राजणी । |
| मराठीभाषामें | गिरणी । |
| गुजरातीभाषामें | रायण । |

कर्णाङ्गीभाषामे मेमे माग्निने ।

तामिलीभाषामे पट्ट ।

इमेनीभाषामे औवट्टयुगर्लीवड माइमुसोप्प । Obti - 1 and

लैटिन्भाषामे माइमुसोप्प देउसुलान्डा । Muni so, p. h. randra
सम्प गुणा ।

क्षीरीकृष्णफलशीतस्निग्धगुरुवलप्रदम् ।

तृष्णामृच्छामदभ्रान्तिक्षयदोषत्रयाम्रजित ॥ (म० नि०)

अर्थ-खिरनी-शीतल, स्निग्ध, भारी, चल्बर्बक तथा कृपा मृत्ता,
मद, भ्रान्ति, क्षय और विदोषको दूर करे है ।

अग्नि ।

राजादनीतुमधुरापित्तद्वद्धकृतर्पणी ।

वृष्यास्थौल्यकरीहृद्यासुस्निग्धामेदनाशकृत ॥ (रा० २०)

अर्थ-खिरनी-मधुर, पित्तनाशक भारी, कृतिदायक वीर्यवानक,
वेदको स्थूल करनेवाली, स्निग्धको दितकारी, स्निग्ध और प्रमेदका हर्ने-
वाली है ।

अन्यथा ।

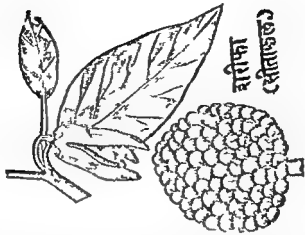
राजादतहिमस्निग्धरूपायमधुगुरु । म्वाद्धम्लपाकमग्राहि

वृष्यविष्टम्भिवृहणम् ॥ रोचनमासलहन्तिदोषत्रयमदभ्रमा-
न् । मृच्छामोहत्पादाहरकपित्तक्षतशयान् ॥

अर्थ-खिरनी शीतल, स्निग्ध, कण्ठ्य, मधुर, भारी, स्वाद, अम्लपाकी,
मलरोधक, वीर्यवर्धक, विष्टम्भजनक, पुष्टिकायक, रोचन, मातृवदक तथा
विदोष, मन्त्र, भ्रम, मृच्छा, मोह, कृपा नाश, मन्त्रविष और क्षतशयों को
दूर करे है ।

विवरण । खिरनीके गुण पट्टे २ उं० होतेहैं, वने पोटारीके समान होतेहैं,
इसमें शीतलतुल्य और आर्द्रा और वसन्त ऋतुमें पट्ट भावहैं, पट्ट दिक्का
गोके समान गुणों सम्यक्तेहैं, वे कभी अम्ल्यामें हरे और पश्चिमे पर पट्ट-
जानेहैं और पट्ट २ पश्चिमेपरभी हरे ही रहतेहैं, इनको हृदियर पट्टतेहैं उन
गुणोंमेंसे कृपा भी निश्चय है ।

आतृप्यनामानि ।



सीताफलगडगात्रवेदेहीवल्लभतथा ।

कृष्णबीजचाग्रिमाख्यमातृप्यबहुबीजकम् ॥

अर्थ-सीताफल-गडगात्र, वेदेहीवल्लभ, कृष्णबीज, अग्रिमाख्य, आतृप्य, बहुबीजक ।

संस्कृतभाषाम्

आतृप्य ।

हिन्दीभाषाम्

सरीफा, सीताफल ।

वगभाषाम्

आता ।

मराठीभाषाम्

सीताफल ।

तेलुगूभाषाम्

सीताफल ।

इंग्रेजीभाषाम्

कस्टर्डप्पल Casterd ypple

ल०

एनोना स्क्वमोसा Annona Squamosa

फारसीभाषाम्

काज ।

अरबीभाषाम्

सरीफा ।

अस्य गुणाः ।

तर्पणरक्तकृत्स्वादुशीतलहृद्यमेवच ।

बलदमासकृद्वाहरक्तपित्तमरुत्प्रणुत ॥

अर्थ-सीताफल-तृप्तिजनक, रक्तवर्द्धक, स्वादिष्ट, शीतल, हृदयको हितकारी, उल्वर्द्धक, मातृवर्द्धक तथा दाह, रक्तपित्त और वातविनाशक है ।

अन्यथा ।

सीताफलतुमधुरशीतलहृद्यबलप्रदम् ।

वातलकफकृत्स्वादुपुष्टिकृत्पित्तनाशनम् ॥ (नि०२०)

अर्थ-मीठाफल (सरीसा) मधुर, मीठल, हृदयको हितकारी, पित्त
रुद्धक, वातकारक, कफकारक, स्वादिष्ट, पुष्टिकारक और पित्तनाशक है।

विवरण। सर्गिकेकवृक्ष प्रायः सर्व भाग्यवर्षके प्रदेशोंमें पाये जाते हैं।
व्यवहार फल, पत्र, छाल, मूल,। इसके बीजोंको पीसकर शिर घोंबते
शिरके काँडे अर्थात् जूँ दूर होती है।

एवजीप नामानि।



गमस्यचफलगमफलगमाह्वयंतथा।

रक्तत्वचंचवासन्तकृष्णवीजमृदूफलम् ॥

अर्थ-गमफल, रामाह्वय, रक्तत्वच, वागन्त, कृष्णवीज, मृदूफल (ग्यनी,
ग्रीष्मजा, अमिमा,)

मस्कृतभाषाम

एवनी।

हिन्दीभाषाम

एवनी, पनीना।

बगभाषाम

नीना, एनीना।

मराठीभाषामें

रामफल।

गुजरातीभाषामें

रामफल।

तमिऴ्भाषामें

गमफल।

इंग्रेजीभाषामें

नेट्रुफस्टडफ्ल ॥ *Neelotoma indica*

लैटिनभाषामें

पनीना नेट्रुफ्ल ॥ *Ar. anteculata*

गोवा०

अनीना।

मध्य एशिया।

गमफलकपायचस्वादुम्लकफकारकम्।

वातलंचासृग्द्विद्विपित्तश्रमधुरापहम् ॥ (नि०२०)

अर्थ—रामफल—कपेला, स्वादिष्ट, खट्टा, कफकारक, वादी तथा रुधिर विकार, तृषा, दाह, पित्त, श्रम और धुधाको हरनेवाला है ।

अननासनामानि ।

अननास



अननासपारवतीचामकौतुकसज्ञकम् ।

अर्थ—अननास, पारवती, आम, कौतुकसज्ञक ।

संस्कृतभाषामें अननास, कौतुकसज्ञक ।

हिन्दीभाषामें अननास ।

मराठीभाषामें अननास ।

गुजरातीभाषामें अननास ।

इंग्रेजीभाषामें पाइनएपल । Pine apple

लैटिन् भाषामें अननासा मेदिवा । *Annona sativa*

अस्पृश्या ।

अननासमपक्वन्तुरुच्यं हृद्यगुरुर्मतम् । कफपित्तकरचैव प्रोक्तं
चान्नमरोचकम् ॥ श्रमकुमनाशयतितत्पक्वस्वादुपित्तहृत् ।
रसातपविकारचनाशयेदितिकीर्तितम् ॥ (नि० २०)

अर्थ—फला अननास रुचिकारक—हृदयको हितकारी, भारी कफपित्त-कारक, अन्नरोचक तथा श्रम और कुमनाशक है । पक्वा अननास—स्वादु पित्तकारक तथा रसविकार और आतपविकारको दूरकरे ।

विवरण । अननास पहिले हिन्दोस्तानमें नहीं होता था क्योंकि मिस्रमें

वातलंकफकृत्स्वादुपुष्टिकृत्पित्तनाशनम् ॥ (नि०२०)

अर्थ-सीताफल (सरीफा) मधुर, जीतल, हृदयको हितकारी, बलव
छेक, वातकारक, कफकारक, स्वादिष्ट, पुष्टिकारक और पित्तनाशक है।

विवरण। सरीफेके वृक्ष प्रायः सर्व भारतवर्षके प्रदेशोंमें पाये जाते हैं।
व्यवहार फल, पत्र, छाल, मूल,। इसके बीजाको पीसकर शिर घोनेसे
शिरके कीड़े अर्थात् जूँ दूर होती हैं।

एवनीफलनामानि।



रामस्यचफलरामफलरामाह्वयंतथा।

रक्तवचचवासन्तकृष्णबीजंमृदूफलम् ॥

अर्थ-रामफल, रामाह्वय, रक्तवच, वासन्त, कृष्णबीज, मृदूफल (एवनी,
ग्रीष्मजा, अग्रिमा,)

संस्कृतभाषामें

एवनी।

हिन्दीभाषामें

एवनी, एनोना।

बंगभाषामें

नोना, लोना।

मराठीभाषामें

रामफल।

गुजरातीभाषामें

रामफल।

तैलिङ्गीभाषामें

रामफल।

इंग्रेजीभाषामें

नेटेल्कस्टर्डएपल। *Nettelcustard apple*

लैटिनभाषामें

एनोना रेटीकुलेटा। *Anonareteculata*

गोवा०

अनोना।

भस्म गुणा।

रामफलकपायचस्वाद्वल्कलंकफकारकम्।

वातलचासतृदाहपित्तश्रमक्षुधापहम् ॥ (नि०२०)

अर्थ—रामफल—कपेला, स्वादिष्ठ, खट्टा, कफकारक, वादी तथा रुधिर विकार, तृषा, दाह, पित्त, श्रम और क्षुधाको हरनेवाला है ।

अननासनामानि ।

अनन्नास



अननासपारवतीचामकौतुकसज्ञकम् ।

अर्थ—अननास, पारवती, आम, कौतुकसज्ञक ।

सस्कृतभाषामें अननास, कौतुकसज्ञक ।

हिन्दीभाषामें अननास ।

मराठीभाषामें अननास ।

गुजरातीभाषामें अननास ।

इंग्रेजीभाषामें पाईनएपल । Pine apple

लैटिन् भाषामें अननासा सेटिवा । *Annona sativa*

अव्ययगुणा ।

अननासमपक्वन्तुरुच्यहृद्यगुरुर्मतम् । कफपित्तकरचैवप्रोक्त

चान्नमरोचकम् ॥ श्रमकुमनाशयतितत्पक्वस्वादुपित्तहृत् ।

रसातपविकारचनाशयेदितिकीर्तितम् ॥ (नि०र०)

अर्थ—कच्चा अननास—रुचिकारक—हृद्यको हितकारी, भारी कफपित्त-कारक, अन्नरोचक तथा श्रम और कुमनाशक है । पक्का अननास—स्वादु पित्तकारक तथा रसविकार और आतपविकारको दूरकरे है ।

विवरण । अननास पहिले दिन्डोस्थानभ नहीं होताथा क्योंकि मिवाय

निघण्टुरत्नाकर (जोकि, थोड़ेसे दिनोंसेही बनाई) के और किसी प्राचीन निघण्टुम नहीं देखाजाता ।

निकोचकनामानि ।

निकोचकचारुफलंसकोचजलगोजकम् ।

पिस्तमुकूलकंज्ञेयदन्तीफलसमाकृति ॥

अर्थ-निकोचक, चारुफल, सकोच, जलगोजक, पिस्त, मुकूलक, दन्ती-फलसमाकृति ।

सस्कृतभाषामें

हिन्दीभाषामें

बगभाषामें

मराठीभाषामें

गुजरातीभाषामें

इंग्रेजीभाषामें

लैटिन्भाषामें

फारसीभाषामें

अरबीभाषामें

निकोचक ।

पिस्ता ।

पेस्तागाछ ।

पिस्ते ।

पस्ता ।

पिस्तेशिओनट् । Pistachionut

पिस्तेशियाद्वेरा । Pistachiavera

पिस्ता ।

फिस्तक ।

अल्पगुणा ।

निकोचकगुरुस्निग्धवृष्योष्णधातुवर्द्धकम् ।

रक्तप्रसादनस्वादुबल्यपित्तकरमतम् ॥

तिक्तसारचकफहृद्वातगुल्मत्रिदोषजित् । (नि०२०)

अर्थ-पिस्ते-भागी, स्निग्ध, वीर्यवर्द्धक, गरम, वातवर्द्धक, रक्तको शुद्ध करनेवाले, स्वादु, बलवर्द्धक, पित्तकारक, कडवे, सारक, कफनाशक तथा वात, गुल्म, और त्रिदोषको दूर करे ।

अजीर्णनामानि ।



अजीरमञ्जुलज्ञेयकाकोदुम्बरिकाफलम् ।

अर्थ-अजीर, मञ्जुल, काकोदुम्बरिकाफल ।

संस्कृतभाषामें अजीर ।

हिन्दीभाषामें अजीर ।

वगभाषामें औंजीर, पेयाग ।

मराठीभाषामें अजीर ।

गुजरातीभाषामें अजीर ।

कर्णाटकीभाषामें मेडियड्ड ।

इंग्रेजीभाषामें फिग्री । Fig tree

लैटिनभाषामें फाईकस्कोरेका । Ficus carica

फारसीभाषामें तीन ।

अस्य गुणा ।

अजीरकफलमतीवसुशीतलचसद्योनिवारयतिशोणितपित्तमुग्रम् । पथ्यविशेषमपिपित्तशिगेविकारेनासाप्रवृत्तरुधिरेचविशेषतस्तु ॥

अर्थ-अजीर-अत्यन्तशीतल, तत्काल रक्तपित्तनाशक, पित्त और शिगे-रोगमें विशेष करके पथ्यहै तथा नाकसे रुधिरके गिरनेको बंदकरे है ।

अन्यथा ।

अजीरकगुरुहिममधुरचवातपित्ताक्षरोगहरणकरणरुचीनाम् । सुस्वादुपाकरसयोगुरुशीतलचक्षेप्सामवातकरमस्रविकारहारि ॥

अर्थ-अजीर-भारी, शीतल, मधुर, वातनाशक, रक्तपित्तहारी, रुचिकारी, स्वादु, पचनेमेंभी स्वादु तथा क्षेप्स और आमवातकारकहै और रुधिरविकारको दूर करे है ।

परुषकनामानि ।

परुष रुगिरिपीलुगेपणनागदलोपमम् ।

अर्थ-परुषक, गिरिपीलु, रोपण, नागदलोपम (पतवत, नीलचर्म नीलमण्डल, पगपर, अल्पास्थि, धन्वनच्छद, मृदुफल)



फालसा

| | |
|-----------------|--------------------------------------|
| संस्कृतभाषामें | परुषक । |
| हिन्दीभाषामें | फालसा, परुषा । |
| बगभाषामें | फलसा । |
| मगदीभाषामें | फालसा । |
| कर्णाटकीभाषामें | वेदहा, दागलि । |
| तेलङ्गीभाषामें | पुटकी । |
| गुजरातीभाषामें | ध्रामण । |
| इंग्रेजीभाषामें | एश्याटिक ग्रेविया । Asiatic Growin |
| लैटिनभाषामें | ग्रेविया एश्याटिका । Grow in Asiatic |
| फारसीभाषामें | पालसा । |
| अरबीभाषामें | फालसा । |

अल्पफलगुणा ।

परुषमम्लकटुककफार्तिजिह्वातापहंततफलमामपित्तकृत ।
सोष्णश्चपक्वमधुरंरुचिप्रदपित्तापहंशोफहरचतर्पणम् ॥

अर्थ—कृष्ण फालसा—कटु, कफनाशक, खट्टा, वातनाशक और पित्तको उत्पन्न करे है । पक्का फालसा—मधुर, रुचिदायक, पित्तनाशक शोफनाशक और वृत्तिकारक है ।

अन्यथा ।

परुषककपायाम्लमामपित्तकरलघु ।

तत्पक्वमधुरपाकेशीतविष्टम्बिवृहणम् ॥

हृद्यतृदपित्तदाहास्रज्वरक्षयसमीरहृत् । (भा०प्र०)

अर्थ—कच्चा फालसा—कपेला खट्टा, पित्तकारक, हलका । पक्का फालसा मधुर, शीतल, विष्टम्भकारक, पुष्टिजनक, हृदयको हितकारी तथा तृषा, पित्त, दाह रुधिरविकार, ज्वर, क्षय और वातको दूर करे है ।

अन्यञ्च ।

परूपककपायाम्ललघूष्णस्वादुपित्तलम् । रूक्षमारुतजि-
त्पक्वस्वादुम्लशुक्लहिमम् ॥ रोचनमधुरं पाके हृद्यविष्टम्भि
वृहणम् । हन्तिमारुतपित्तास्रतृष्णादाहक्षतक्षयान् ॥

अर्थ—कच्चा फालसा—कपेला, खट्टा, हलका, गरम, स्वादिष्ट, पित्तकारक रूखा व वातको दूर करनेवाला है । पक्का फालसा—स्वादिष्ट, खट्टा, शुरुजनक, शीतल, रोचन, पचनेमें मधुर, हृदयको हितकारी, विष्टम्भकारक, पुष्टिकारक तथा वात, रक्तपित्त, तृषा, दाह और क्षतक्षयको क्षयकरे है ।

अस्वत्त्वगुणा ।

परूपकत्वक्प्रमेहघ्नीयोनिमेदूप्रदाहनुत् ॥

मृत्रदोषप्रशमनीशीतपित्तानिलापहा ॥ (आ०स०)

अर्थ—फालसेकी छाल—प्रमेहनाशक, योनिकी दाह और लिङ्गकी दाहको दूर करनेवाली, मृत्ररोगनिवारक तथा शीत, पित्त और वातविनाशक है ।

विवरण—फालसेके वृक्ष मध्यम आकारके होते हैं, मालीलोग अपने बागोंमें बहुत लगा देते हैं पत्ते बेलके समान तीन २ मिले हुए होते हैं, फल दो तीन एकत्र होते हैं, फल कच्ची अवस्थामें हरे और पकनेपर ऊँचे रंगके होजाते हैं ।

वृत्तनामानि ।



सत्तन

तृतृतद्वयकाष्ठब्रह्मण्यब्रह्मदारुच ।

मृदुसारसुपुष्पंचसुरूपनीलरगकम् ॥

अर्थ—तृत, तृद, ब्रह्मकाष्ठ, ब्रह्मण्य, ब्रह्मदारु, मृदुसार, सुपुष्प, सुरूप, नीलरगके (तूल, ब्राह्मणेष्ट, नीलवृन्तक, कमुक, विप्रकाष्ठ, मदसार, पूष, ब्रह्मनेष्ट, तृद, पृथ, ब्रह्मण्य, पलाशिक, शूप) ।

| | |
|-----------------|-----------------------------|
| संस्कृतभाषामें | तृत । |
| हिन्दीभाषामें | सहतृत, तृत । |
| वगभाषामें | तूँत (ट), पलाशपिपुल । |
| मराठीभाषामें | तूत । |
| कों० | तुतीची फळे । |
| गुजरातीभाषामें | शेतृत, तृत । |
| तैलिङ्गीभाषामें | कम्मलिचेडु । |
| तामिलीभाषामें | मपुकहड्चेडि । |
| इंग्रेजीभाषामें | मलबेरिझ Mulberries |
| लैटिन्भाषामें | मोरस इण्डिका । Morus Indica |
| | मोगसनिग्रा । Morus nigra |
| | मोरसआल्बा । Morus alba |
| फारसीभाषामें | शाठतृत, तृततुश, तृतशीरि । |
| अरबीभाषामें | तृत, तृतहामीज, तृतदुद । |
| | अस्य गुणाः । |

तृतपक्वगुरुस्वादुहिमं पित्तानिलापहम् ।

तदेवामगुरुसरमम्लोष्णं रक्तपित्तकृत ॥ (भावप्रकाश)

अर्थ—पक्वः सहतृत—भारी, स्वादिष्ठ, शीतल तथा पित्त और वात विनाशक है । कच्चे सहतृत—भारी, माग्न्य खट्टे, गरम और रक्तपित्तकारक है ।

अपिच ।

तौतानिपक्वानिगुरुशीतानिमधुगणिच । ग्राहकाणि रक्तदोषवातपित्तहराणिच ॥ कोमलानि च तानि स्युर्गुरुरेचकगणिच । अम्लानि चोष्णवीर्याणि रक्तपित्तहराणिच ॥

अर्थ—पक्वः सहतृत—भारी, शीतल, मधुर, मलमोघक तथा रक्तविकार,

वात और पित्तका नाश करें । कोमल सहतुत-भारी, दस्तावर, खट्टे, गरम और रक्तपित्तका नाश करें । सहतुतके वृक्ष बागोंमें बहुत होते हैं, पत्ते अजीरके समान तीन र कगुरेवाले और नीमके पत्ताके सदृश चारों ओर आरेकेसे चिन्न होते हैं, यह वृक्ष दोमकारके होते हैं, एकपर काले सहतुत आते हैं, और दूसरेपर सफेद सहतुत आते हैं, इसके फल फलीके समान होते हैं, और उनमें बाजरेकेसे दाने सर्वत्र लगे होते हैं वह फली अत्यन्त कोमल और रसीली होती है ।

पारेवतनामानि ।

पारेवतश्वेतपुष्पतिन्दुकाभफलमतम् ।

अर्थ-पारेवत, श्वेतपुष्प तिन्दुकाभफल (आरेवत, पालेवत)

सस्कृतभाषामं पारेवत ।

हिंदीभाषामं पारेवत ।

वगभाषामं पेयाग ।

औ० प्याडा ।

तेलिङ्गीभाषामं उत्तारिगे, दोढउत्तरिगे ।

अस्य गुणाः ।

पारेवतहिमस्वादुगुरुष्णवातपित्तजित् ।

तद्वन्माणवकज्ञेयतृष्णाघ्नमिष्टमम्लकम् ॥ (ध० नि०)

अर्थ-पारेवत-शीतल, स्वादिष्ट, भारी, गरम, वातपित्तनाशक और महापारेवतकेभी गुण इसाके समान हैं तृषानाशक, मिष्ट और अम्ल है ।

अन्यच्च ।

पारेवततुतुवरकृमिवातहारि वृष्यतृपाज्वरविदाहहरचहृ-
द्यम् ॥ मूर्च्छाभ्रमश्रमविशोषविनाशकारि स्निग्धञ्चरुच्य-
मुदितवहुवीर्यदच ॥

अर्थ-पारेवत-कपेला, कृमिनाशक, वीर्यवर्द्धक, स्निग्ध, रुचिकारक, वृष्य हृदयको हितकारी तथा तृषा, ज्वर, दाह, मूर्च्छा, भ्रम, श्रम, और शोषनाशक है ।

महापारेवतगुणाः ।

महापारेवतेर्गोल्यालकृत्पुष्टिवर्द्धनम् ।

वृष्यंमूच्छांज्वरघ्नञ्चपूर्वोक्तादधिकं गुणैः ॥

अर्थ-महापारेवत-गौल्य, वल्कारक, पुष्टिवर्द्धक, वीर्यवर्द्धक, मूच्छानि-
वारक, ज्वरनाशक यह पारेवतसे अधिक गुणवाला है ।

श्लेष्मातकनामानि ।

श्लेष्मातकः कर्बुदार पिच्छिलोलेखशाटक ।

शैलुः शैलुर्गन्धपुष्पः शापितो बहुवारक ॥

अर्थ-श्लेष्मातक-कर्बुदार, पिच्छिल, लेखशाटक, शैलु, शैलु, गन्धपुष्प,
शापित, बहुवारक, (उदाल, भूतवृक्ष, बहुवार, द्विजकुत्तित, शीतफल, शाकट,
कर्बुदारक, भूतद्रुम, श्लेष्मात, श्लेष्मातक, शीतल, उदालक, सेत्र)

भूवपुदागमानि ।



भूकर्बुदारकश्चान्यलघुश्लेष्मातकस्तथा ॥

अर्थ-भूकर्बुदार, लघुश्लेष्मातक (क्षुद्रश्लेष्मान्तक, भूशैलु, लघुपिच्छिल,
लघुशीत, लघुशैलु, सूक्ष्मफल, मधुभूतद्रुम, भूकर्बुदार)

संस्कृतभाषामें

श्लेष्मातक । भूकर्बुदार ।

हिन्दीभाषामें

लिसोडा, लिसोरे, लभेरा ।

वगभाषामें

बहुवार, चालतागाछ, बोहरी ।

मराठीभाषामें

मोंकर, शैलवट, मोंकरी, गोंधर्गी ।

गुजरातीभाषामें

गुदोमोटो, गुदीनांनी ।

कर्णाटकीभाषामें

चेन्नू गादिणी ।

तमिलीभाषामें

नाकेरु, कुक्केरु ।

तामिलीभाषामें

विटि ।

आङ्गलीभाषामें

अट ।

| | |
|----------------|--|
| इग्नेजीभापामें | नेरोलिण्ड सेपिस्तन । <i>Narrow leaved Sepistun</i> |
| लेटिन्भापामें | कोर्डिया एगस्टिफोलिया । <i>Cordia angustifolia</i> |
| फारसीभापामें | सिपिस्तान् । |
| अरबीभापामें | सेफिस्तान् दवक । |

अस्य गुणा ।

श्लेष्मातकटुशीतलंचतुवरस्यात्पाचकमाधुरं स्निग्धकेश्यव-
लासदंत्वथकृमीञ्छूलामरक्तापहम् ॥ विस्फोटघ्नपित्त-
नाशनकरवीसर्पसर्वविष हन्तिह्यस्यफलतुशीतमधुरतित्त-
लघुस्तृवरम् ॥ वायोर्वृद्धिकरचपित्तशमनविष्टम्भिरुच्य
तथासृग्दृष्टिकफनाशनचगदितपक्ततथामाधुरम् ॥ स्निग्धं
शीतलवृहणंनिगदितविष्टम्भिरुक्षगुरु वायोर्नाशकरचपि-
त्तशमनस्याद्रक्तदोषापहम् ॥ ((नि०र०)

अर्थ-श्लेष्मान्तक-कटु, शीतल, कपेला, पाचक, मधुर, स्निग्ध, केशोंको
हितकारी, तथा कृमि, शूल, आमरक्त, कफकारी, विस्फोटक, घ्न, पित्त,
विसर्प और सर्व प्रकारके विषोंको हरनेवाला है । इसके फल-शीतल, मधुर,
कड़वे, हलके, कपेले, वातवर्द्धक, पित्तको शान्ति करनेवाले, विष्टम्भकारक,
रुचिजनक तथा रुधिरविकार, दृष्टिविकार और कफनाशक है । इसके पक्षे
फल-मधुर स्निग्ध-शीतल, पुष्टिकारक, विष्टम्भकारक, रूखे, भारी, वातवि-
नाशक, पित्तनिवारक और रुधिरविकारको हरनेवाले है ।

भवसुंदागुणा ।

शुद्रश्लेष्मातकवातकोपनमधुरंमत्तम् ।

किंचिच्छीतलज्ञेयकृमिघ्नस्वर्णमारकम् ॥

अर्थ-लभेरा-वातको कुपित करनेवाला, मधुर, किंचित शीतल, कृमि-
नाशक और सुवर्णको मारे है ।

विवरण । लिसोडेके वृक्ष जगल और वनमें अधिक होते हैं, पचे गोल
कुठ लम्बाई लिये होते हैं, फल अलूचेके समान गोल रसीले गुच्छोंमें लग-
ते हैं, भीतरसे चिपकते हैं इसीप्रकारके लभेडेके वृक्षभी होते हैं, पचेभी इसी
भौतिके होते हैं परन्तु फल इससे छोटे होते हैं, कच्चे रंगम हरे और पकनेपर
कुछ गुलाबीसे होजाते हैं, फलके भीतर बीज और कुछ गोंदमा निकलता है ।

वृष्यमूर्च्छाज्वरघ्नश्चपूर्वोक्तादधिकंगुणैः ॥

अर्थ—महापारेवत-गौल्य, बलकारक, पुष्टिवर्द्धक, वीर्यवर्द्धक, मूर्च्छानि-
वारक, ज्वरनाशक यह पारेवतसे अधिक गुणवाला है ।

श्लेष्मातकनामानि ।

श्लेष्मातक-कर्बुदार-पिच्छिल-लेखशाटक ।

शेलु शेलुगंधपुष्पःशापितोबहुवारकः ॥

अर्थ—श्लेष्मातक-कर्बुदार, पिच्छिल, लेखशाटक, शेलु, शैलु, गन्धपुष्प,
शापित, बहुवारक, (उद्दाल, भूतवृक्ष, बहुवार, द्विजकुत्तित, शीतफल, शाकट,
कर्बुदारक, भूतद्रुम, श्लेष्मात, श्लेष्मातक, शीतल, उद्दालक, शैलु)

भूकर्बुदारनामानि ।



भूकर्बुदारकश्चान्यलघुश्लेष्मातकन्तथा ॥

अर्थ—भूकर्बुदार, लघुश्लेष्मातक (भुद्रश्लेष्मान्तक, भूशेख, लघुपिच्छिल,
लघुशीत, लघुशेलु, सूदमाल, मधुभूतद्रुम, भूकर्बुदार)

संस्कृतभाषामें

श्लेष्मातक । भूकर्बुदार ।

हिन्दीभाषामें

लिसोदा, लिसोरे, लभेरा ।

वगभाषामें

बहुवार, चालतागाछ, बोहरी ।

मराठीभाषामें

भाकरा, शेळवट, भोंकरी, गोंधणी ।

गुजरातीभाषामें

गुटोमोटो, गुदीनानी ।

कर्णाटकीभाषामें

चेलु गोंदिणी ।

तेलुगुभाषामें

नाकेरु, नुक्केरु ।

तामिलीभाषामें

विदि ।

नीत्कलीभाषामें

जड ।

विष, गुल्म, शूल, कृमि, प्रमेह, नेत्ररोग और जलके भैलको दूर करे है । इसका कोमलफल-नेत्रोंको हितकारी, वातवर्द्धक, शीतल तथा रक्तपित्त, तृषा, विष और मोहको दूर करे है । इसका तरुणफल-दुर्जर, रुचिजनक, कफ और पित्तनाशक है । इसका पक्का फल पित्तजनक, वमनकारक, पसी-नेको लानेवाला तथा सूजन, पाण्डुरोग, विष, प्रतिश्याय और कामला रोगको दूरकरे है । इसके बीज-नेत्रोंको हितकारी, कपेले, भारी, जलको निर्मल करनेवाले, मधुर तथा पथरी, वात, कफ, मूत्रकृच्छ्र, तृषा, नेत्ररोग, विष, प्रमेह और मस्तक रोगको दूर करे है । निर्मलीकी जड़-सर्वप्रकारके कुष्ठोंको नष्टकरनेवाली है ।

विवरण । कतक अर्थात् निर्मलीफल गोल होतेह, और उसके ऊपरकी डाल कुचलेकी डालकी समान होतीहै, विशेष करके इसकी सब आकृति कुचलेमेही मिलती है ।

द्राक्षानामानि ।

द्राक्षामधुरसास्वाद्धीकृष्णाचारुफलरसा ।

मृद्रीकागोस्तनीचैवयक्ष्मघ्नीतापसप्रिया ॥

अर्थ-द्राक्षा, मधुरसा, स्वाद्धी, कृष्णा, चारुफला, रसा, मृद्रीका, गोस्तनी, यक्ष्मघ्नी, तापसप्रिया, (मियाला, गुच्छफला, रसाला, अमृतफला, स्वादु-फला हारहूरा, फलोत्तमा, सुफला) ।

उपिष्टद्राक्षानामानि ।

अन्याकपिलद्राक्षामृद्रीकागोस्तनीचकपिलफला ।

अमृतरसादीर्घफलामधुवल्लीमधुफलामधुलिश्व ॥

हरिताचहारहूरासुफलामृद्रीहिमोत्तरापथिका ।

हैमवतीशतवीर्याकाश्मीरीगजगजमहिगणिता ॥

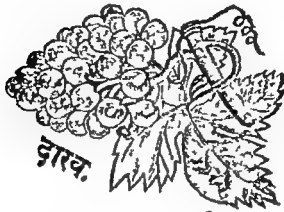
अर्थ-कपिलद्राक्षा, मृद्रीका, गोस्तनी, कपिलफला, अमृतरसा, दीर्घ-फला, मधुवल्ली, मधुफला, मधुलि, हरिता, हारहूरा, सुफला, मृद्री, हिमोत्तरा, पथिका, हैमवती, शतवीर्या, काश्मीरी ।

घावणीद्राक्षानामानि ।

अन्यासाकाकलीद्राक्षाम्बुकाचफलोत्तमा ।

लघुद्राक्षाचनिर्बीजासुवृत्तारुचिकारिणी ॥

अर्थ-काकलीद्राक्षा, जाम्बुका, फलोत्तमा, लघुद्राक्षा, निर्वीजा, सुवृत्ता, रुचिकारिणी, (रसाधिका) ।



| | |
|-----------------|--|
| सस्कृतभाषामें | द्राक्षा । |
| हिन्दीभाषामें | दाख, कार्लीदाख, कितामिस, अगूर, भूरीदाख । |
| वगभाषामें | कितामिस, मनेका, आगुर, वेदाना, कितामिस । |
| मराठीभाषामें | काल द्राक्ष, वेदाना, किममिस । |
| गुजरातीभाषामें | धराख, काठिधराख, कितमिस । |
| कर्णाटकीभाषामें | वेडगणद्राक्षे, चिकुद्राक्षे । |
| तैलिंगीभाषामें | द्राक्षा, किसिमिसि, पोंडु, द्राभचंद्र । |
| तामिलीभाषामें | कोडिमण्डि गिप्पझाम । |
| इंग्रेजीभाषामें | ग्रेप Grape रासिन्स । Raisins |
| लैटिनभाषामें | वाइटिन्स, वेनिफेरा । Vitis Venifera |
| फारसीभाषामें | अगूर, मुनफा, दानेमबीज । |
| अरबीभाषामें | फीसमीम, एनब्जनीव, इडुमजयीव । |

द्राक्षापक्वासराशीताञ्चक्षुष्यावृहणीयुरुः । स्वादुपाकरसाम्ब-
 र्यातुवरासृष्टमृत्रविट् ॥ कोष्ठमारुतकृदृष्याकफपुष्टिरुचि-
 प्रदा । हन्ति तृष्णाज्वरश्वासवातवातास्रकामला ॥ कृच्छ्रा-
 न्पित्तसमोहदाहशोपमदात्ययान् । आमास्वल्पगुणानुर्वी-
 मेवाम्लार्गकपित्तकृत ॥ वृष्यास्याद्रोम्तनीद्राक्षागुर्वोचरु-
 फपित्तनुत । अवीजान्यास्वल्पतगोस्तनीमदृशीगुणे ॥

द्राक्षापर्वतजालध्वीसाम्लाश्लेष्माम्लपित्तकृत् । द्राक्षापर्व-
तजायादृक्तादृशीकरमर्दिका ॥ (भा० प्र०)

अर्थ-पक्षीदाख-सारक (कुठ २ दस्तावर) शीतल, नेत्रोंको हितकारी,
वृहण, भारी, स्वादुपाकी, स्वादु, स्वरशोधक, कपेली, मूत्र और मलको
निकालनेवाली, कोठेमें वातको करनेवाली, वीर्यवर्द्धक, कफकारक, पुष्टि
जनक, रुचिकारक तथा तृषा, ज्वर, श्वास, वात, वातरक्त, कामला, मूत्र-
कृच्छ्र, रक्तपित्त, मोह, दाह, शोष और मदात्मयरोगको हर्नेवाली है ।
कच्चीदाख-स्वल्पगुणवाली, भारी, खट्टी और रक्तपित्तकारक है । गोस्तनी
अर्थात् कालीदाख-वीर्यवर्द्धक, भारी और कफपित्तहारी है । किममिस-
कालीदाखके समान गुणवाली है । पर्वतीदाख-हलकी, खट्टी, कफ और
अम्लपित्तको करनेवाली है । करमर्दिकानामवाली दाख-पर्वतीदाखकी
समान गुणवाली है ।

अन्यच्च ।

द्राक्षातुमधुरास्निग्धावृष्याशीतानुलोमनी ।

वल्यावृष्याक्षतक्षीणतृपावातास्रपित्तजित् ॥ (रा० व०)

अर्थ-दाख-मधुर, स्निग्ध, वीर्यवर्द्धक, शीतल, मलभेदक, वलकारक,
वीर्यवर्द्धक तथा क्षत क्षीण, वात और रक्तपित्तका नाश करे है ।

अन्यच्च ।

द्राक्षातिमधुराम्लाचशीतापित्तार्तिदाहजित् ।

मृत्रदोषहरारुच्यावृष्यासतर्पणीपरा ॥

अर्थ-दाख-मधुर, खट्टी, शीतल, पित्तनिवारक, दाहनाशक, मृत्रदोष-
हारक, रुचिकारक, मृष्य और वृषिकारक है ।

द्राक्षावालफलकटूष्णविशदपित्तास्रदोषप्रद

मध्यचाम्लरसरसान्तरगतारुच्यातिवह्निप्रदम् ।

पक्वचेन्मधुरतथाम्लसहिततृष्णास्रपित्तापह

पक्वशुष्कसमंश्रमार्तिशमनमन्तर्पणपुष्टिदम् ॥

अर्थ-कच्चीदाख-कटू, उष्ण, विशद, रक्तपित्तकारक, मध्यम अवस्थाकी
दाख-खट्टी, रुचिकारक और अग्निवर्द्धक है । पक्वी दाख-मधुर,

खट्टी, तृषा और रक्तपित्तनाशक है। पक्कर सुखगई हो ऐसी दास-धम-
नाशक, तृप्तिकाशक और पुष्टिजनक है।

द्राक्षासैवसुधातुवृद्धिजननीससर्पशोपापहा
तृष्णातिव्यथनीसमीरशमनीछर्द्यामयध्वंसिनी ।
पाकेम्लासुरसारसेनमधुगशीताचवीर्य्येणसा
सपक्काविहिताज्वरेचकफजेविण्मूत्रसशोधनी ॥

६ अर्थ-दास-धातुवर्द्धक, शोपनाशक, प्यासको हरनेवाली, वातको
दुग्करनेवाली, वमनरोगनाशक पचनेमें अम्ल, मुरस मधुर, शीतवीर्य्य,
ज्वर और कफको हरनेवाली मूत्र और मलको शोधनेवाली है।

द्राक्षाफलमधुरमम्लकपाययुक्त क्षारेणपित्तमरुताकफहा-
रिशीघ्रम् ॥ श्रेष्ठनिहन्तिरुधिरामयदाहशोपमृच्छाज्वरश्च-
सनकासविनाशकारि ॥

अर्थ-दास,-मधुर, खट्टी, कपेली और किर्तीक्षारके साथ पित्त वात
और कफका नाश करेहै। उत्तम तथा रुधिररोग, दाह, शोप, मृच्छा, ज्वर,
श्वाम और खाँसीको दृढ़ करेहै।

गोस्तनीगुणा ।

द्राक्षातुगोस्तनीशीताहृद्यावृष्यागुरुर्मता । वातानुलोमनी
स्निग्धाहर्षदाश्रमनाशिनी ॥ दाहमृच्छाश्वामकामकफपि-
तज्वरापहा । रक्तदोषतृषावातहृद्यथाचैवनाशयेत् ॥

अर्थ-कालीदास-शीतल, हृद्यकी हितकारी, वीर्य्यवर्द्धक भारी, वाता-
नुलोमन, स्निग्ध, हर्षजनक तथा श्रम, दाह, मृच्छा, श्वाम, खाँसी पच,
पित्तज्वर रुधिरविकार, तृषा, वात और हृद्यकी व्यापको हरनेवाली है।

५ लघुद्राक्षागुणा ।

लघ्वीद्राक्षातुमधुगशीतावृष्यारुचिप्रदा । अम्लारमालाम-
प्रोक्ताश्वामकासज्वरापहा ॥ हृद्यथाग्नपित्तघ्नीक्षतक्षय
विनाशिनी । स्वरभेदतृषावातपित्तचैवविनाशयेत् ॥
तित्ततात्रमुसम्यापिनाशयेदितिकीर्तिता ।

अर्थ-किसमिस-मधुर, शीतल, वीर्यवर्द्धक, रुचिप्रद, खट्टी, रसाल तथा श्वास, खाँसी, ज्वर, हृदयकी पीडा, रक्तपित्त, क्षतक्षय, स्वरभेद, तृषा, वात, पित्त और मुखके कडवेपनको दूर करे हे ।

विवरण । दाख-काली, लाल और किसमिस इत्यादि अनेक जातिकी हे, इसकी उत्पत्ति काबुल तथा देशांतरोंमें होती हे, दूसरे प्रकारकी दाख इस देशमेंभी होती हे, इसके पत्ते हाथके आकारके होते हैं, फल गुच्छोंम लगते हे ।

मण्डपीनामानि ।

भृशिम्विकारक्तबीजात्रिवीजास्नेहबीजका ।

मण्डपीभूमिजाभूस्थातथाभूचणकास्मृता ॥

अर्थ-भृशिम्विका, रक्तबीजा, त्रिवीजा, स्नेहबीजका, मण्डपी, भूमिजा, मूस्था, भूचणका ।

संस्कृतभाषामें मण्डपी ।

हिन्दीभाषामें मूँगफली ।

मगधीभाषामें भुईमुगाच्याशगा ।

गुजरातीभाषामें माडवी ।

इंग्रेजीभाषामें ग्राउण्डनूट पिनूट । Groundnut peanut

लैटिनभाषामें आरेकीस हायपोजिया । Arachis hypoece

फारसीभाषामें मुलीयन् वेल ।

अरबीभाषामें शेपवान ।

अस्य गुणा ।

मण्डपीमधुरास्निग्धावातलाकफकारिका ।

ग्राहिकावद्धवर्चाश्चतत्तेलतद्वृणस्मृतः ॥

अर्थ-मूँगफली, मधुर, स्निग्ध, वादी, कफकारक, मलरोधक, मलको बाधनेवाली, उसके तेलके गुण इसीके समान जानने ।

याजृतधनामानि ।

काजृतकोष्ठतपत्रोगुच्छपुष्पश्रपार्वती ।

स्निग्धपीतफलश्चैवपृथग्जीजोद्वरुष्कर ॥

अर्थ-काजृतक, वृत्तपत्र, गुच्छपुष्प, श्रपार्वती, स्निग्धपीतफल, पृथग्याज, अरुष्कर (अमिष्ठ, उपपुष्पिका)

| | |
|-----------------|--|
| संस्कृतभाषामें | काजूतक । |
| मराठीभाषामें | काजूचें झाड । |
| गुजरातीभाषामें | काजुकलिया । |
| तैलङ्गीभाषामें | गतमामोड, जिडिमाभेडी । |
| इंग्रेजीभाषामें | केश्युनट । <i>Casheunut</i> |
| लैटिन्भाषामें | एनाकार्डिय ओक्सिडेन्टेली । <i>Anacardium Occidentaly</i> |
| फारसीभाषामें | बादामफिरगी । |

अथ गुणाः ।

काजूतकस्तुतुवरोमधुरोष्णोलघु स्मृतः । धातुवृद्धि-
करोवातकफगुल्मोदरज्वरान् ॥ कृमिव्रणाग्निमाद्यानिकु-
ष्ठचश्वेतकुष्ठकम् । संग्रहण्यर्शआनाहान्नाशयेदितिकी-
र्त्तितः ॥ (नि.र)

अर्थ-काजूतक-कपेला, मधुर, गरम, हलका, धातुवर्द्धक तथा वात,
कफ, गुल्म, उदररोग, ज्वर, कृमि, व्रण, मदाग्नि, कुष्ठ, श्वेतकुष्ठ, संग्रहणी,
यवासीर और अफारेको दूर करनेवाला है ।

विवरण । काजूतकके वृक्ष-दक्षिण और गुजरातमें अधिकतासे होते हैं ।
पत्ते-लम्बे और गोल, फल सफेद और लाली लिये सुमरामें आते हैं,
फल-सफरीची समान होता है ।

जम्बूनामानि ।

जम्बून्तुसुरभिपत्रानीलफलाश्यामलामहास्कन्धा ।

राजार्हागजमूलाशुकप्रियामेघमोदिनीचनवाहा ॥

अर्थ-जम्बू, सुगन्धित, नीलफला, श्यामला, महास्कन्धा, राजार्हा,
राजफला, शुकप्रिया, मेघमोदिनी, (जम्बू, जम्बूल)

महाजम्बूनामानि ।

महाजम्बूराजजम्बू स्वर्णमातामहाफला ।

शुकप्रियाकोकिलेष्टामहानीलावृहत्फला ॥

अर्थ-महाजम्बू, राजजम्बू, स्वर्णमाता, महाफला, शुकप्रिया, कोकिले-
ष्टा, महानीला, वृहत्फला, (महापत्रा, पल्लव, नन्द, सुगन्धित)

धुद्रजम्बूनामानि ।

धुद्रजम्बूदीर्घपत्रासूक्ष्मकृष्णफलातथा ॥

अर्थ—धुद्रजम्बू, दीर्घपत्रा, सूक्ष्मकृष्णफला (मध्यमा)

काकजम्बूनामानि ।

काकजम्बू काकफलानादेयीकाकवल्लभा ।

भृगेष्टाकाकनीलाचध्वाक्षजम्बूधनप्रिया ॥

अर्थ—काकजम्बू, काकफला, नादेयी, काकवल्लभा, भृगेष्टा काकनीला, ध्वाक्षजम्बू, धनप्रिया ।

भूमिजम्बूनामानि ।

अन्याचभूमिजम्बूर्हस्वफलाभृगवल्लभाह्रस्वा ।

भूजम्बूर्भ्रमरेष्टापिकभक्षाकाष्ठजम्बूश्च ॥

अर्थ—भूमिजम्बू, हस्वफला, भृगवल्लभा, ह्रस्वा, भ्रमरेष्टा, पिकभक्षा, काष्ठजम्बू (सूक्ष्मपत्रा, जलजाम्बुका)

संस्कृतभाषामें जम्बू, महाजम्बू, धुद्रजम्बू ।

हिन्दीभाषामें जामुन, बड़ीजामुन, फरेंद्र, छोटीजामुन ।

वगभाषामें जामगाछ, बडजाम, धुद्रेजाम, वनजाम ।

मराठीभाषामें थोर जामूळ, नदीजामूळ ।

कोंकणीभाषामें राजिले ।

गुजरातीभाषामें राजजाम्बु, रावणा वेलरोपाजाम्बु, डुगरिजाम्बु ।

कर्णाटकीभाषामें निरलु, दोदुनिरलु ।

तेलङ्गीभाषामें पेदानेरडि, नीरनेरडि ।

इंग्रेजीभाषामें जावीरट्टी Jambir tree

लैटिन् भाषामें सुजिनिया जाम्बोलेना Eugenia Jambolana

सिंक्षिप्यम् जावोलेनम् Syzygium Jambolanum

जम्बूगुणा ।

जम्बूवृक्षस्तुतुवरोग्राहीमधुरपाचक । मलस्तम्भकरोरुओ

रुचिकृत्पित्तदाहहा ॥ अम्ल कण्ठ्य कृमिश्वामशोपाती-

सारकासहा । रक्तदोषकफचैवव्रणचैवविनाशयेत् ॥

फलचतुर्वर्चाम्लमधुग्भीतलमतम् । रुच्यरुक्षग्राहकचले

खनंकठदृपकम् ॥ मलस्तम्भकरं वातकारककफपित्तनुत् ।

आध्मानकारकं प्रोक्तपूर्ववैद्यैर्मनीषिभिः ॥

अर्थ-जामुनकी ठाल-कपेली, मलरोधक, मधुर, पाचक, मलस्तम्भक, रुक्ष, रुचिकारक तथा पित्त और दाहको दूर करे है, खट्टी, कठको हित-
कारी तथा कृमि, श्वास, शोष, अतिसार, खोंसी, रक्तदोष, कफ और प्रण
इनका नाश करे है । इसके फल-कपेले, मधुर, शीतल, रुचिकारक, रुखे,
मलरोधक, कठदृपक, मलस्तम्भक, वातवर्द्धक, कफपित्तनाशक और अफा-
नेको करनेवाले है ।

अथ च ।

जाववगुरुविष्टम्भिकपायं स्वादुशीतलम् ।

अग्निसदृपणं रुक्षवातलकफपित्तजित् ॥ (रा०)

अर्थ-जामुनका फल-भारी, विष्टम्भकारक, कपेला, स्वादिष्ट, शीतल,
अग्निसदृपक, रुखा, वादी तथा कफ और पित्तनाशक है ।

राजजम्बुगुणा ।

राजजम्बुतुमधुराचोष्णाचतुवरामता । स्वयामलस्तम्भक-
रीश्वसशोषश्रमापहा ॥ मुखजाड्यातिसारघ्नी कफकास
विनाशिनी । फलचास्यास्तुरुचिदमधुरस्तम्भकगुरु ॥
दोषनाशकरं स्वादुऋषिभिः परिकीर्तितम् ।

अर्थ-राजजामुन-मधुर, गरम, कपेली, स्वरगोचक, मलस्तम्भक तथा
श्वास, शोष, श्रम, मुखकी जडका, अतिसार, कफ, और खोंसीको हरने
वाली है । इसके फल-रुचिकारक, मधुर, स्तम्भक, भारी, दोषनाशक
और स्वादिष्ट है ।

जलजम्बुगुणा ।

जलजम्बुतुवराशीतातिकगुरु स्मृता । पाके च मधुराचा-
म्लापुष्टिद्विहृद्वाहिणीमता ॥ वीर्यवृद्धिकरी नल्याश्रमदाहति
सारहा । रक्तदोषकफपित्तत्रणं चैव विनाशयत् ॥

अर्थ-जलजामुन-कपेली, शीतल, कठवी, भारी, पाकमें मधुर, अम-
पुष्टिकारक, मलरोधक, वीर्यवर्द्धक, यलकारक तथा श्रम, दाह, अतिसार,
रुधिरविकार, कफ, पित्त और प्रणको दूर करनेवाली है ।

क्षुद्रजम्बूगुणा ।

क्षुद्रजम्बूतुवराहृद्याचमधुरामता । वीर्य्यप्रदाग्राहिणीच
पुष्टिकृत्कफपित्तहा ॥ हृद्रोगकठरोगचदाहचैवविनाशयेत् ॥

अस्या फलगुणा प्रोक्ता गजजम्बूफले समा ॥ (नि० र०)

अर्थ—छोटी जामुन—कपेली, हृदयको हितकारी, मधुर, वीर्य्यवर्द्धक, मलरोधक, पुष्टिकारक, कफपित्तनाशक तथा हृदयरोग, कण्ठरोग और दाहको दूर करे है । इसके फलोंके गुण गजजामुनकी फलकी समान जानने ।

जम्बूफलमन्त्रागुणा ।

तन्मज्जामधुराग्राहीविशेषान्मधुमेहहा ।

तदकुराहिमारूढाग्राहकाध्मानकारकाः ॥

अर्थ—जामुनकी मींग—मधुर, मलरोधक और विशेषकरके मधुमेहको हरे है । इसके अकुर—शीतल, रूखे, ग्राही और आध्मानकारक है ।

विवरण । जामुनके वृक्ष—तीन चार प्रकारके होते हैं, एक नदीके निकट होते हैं, जिनके पत्ते कनेरके समान होते हैं उनको नदी जामुन कहते हैं, दूसरी बड़ी जामुन होती है, उसके पत्ते पीपलकेमे होते हैं, उसको जमुना कहते हैं, तीसरी साधारण जामुन होती है, उसके पत्ते आमकेमे होते हैं, फल मध्यम जातिका होता है, कच्ची अवस्थामें हरी २ होती है और पकनेपर उसका रंग बैजनी हो जाता है, फलके स्थानमें जामुनपर मीरही आता है ।

इति फलवर्ग समाप्त ।

इति श्रीशाठिप्रामनिष्ठभूषणे षट्पथे ॥ ५ ॥

वटादिवर्गः ।

घटनामानि ।

वटोरक्तफल शुद्धीन्यग्रोध स्कन्धजोधुव ।

क्षीरिवैश्रवणावासोवहुपादोवनस्पति ॥

अर्थ—वट, रक्तफल, शुद्धी, न्यग्रोध, स्कन्धज, धुव, क्षीरी, वैश्रवणावाम, बहुपाद, वनस्पति (नन्दी, शुद्ध, गृहत्पाद, वैश्रवणालय, वैश्रवणोदय, घृष्ट नाथ, यमप्रिय, कर्मज, भाण्डीर, जटाल, रोहिण, अवगोही, विटपी

स्कन्धरुह, मण्डली, महच्छाय, भृङ्गी, यक्षावास, यक्षतरु, पादरोहण, नील,
शिफारुह, बहुपातु, जटिल, जटी)

सस्कृतभाषामें वट ।

हिन्दीभाषामें वड ।

वराभाषामें वट ।

मराठीभाषामें वड ।

गुजरातीभाषामें वड ।

कर्णाटकीभाषामें आल ।

तैलिङ्गीभाषामें मारिंघेट्ट, मारि, पेदिमरि ।

तामिलीभाषामें आल ।

औदकलीभाषामें वोरु ।

इंग्रेजीभाषामें चनीयन्ट्री । *Banyan tree*

लैटिनभाषामें फाईकस् इन्डिकस । *Ficus indicus*

फारसीभाषामें दरखितरेशा, वडवाई, ऐशाण्यगर्द ।

अरबीभाषामें जातुदयाइययआच ।

अस्य गुणा ।

वट रीतोगुरुर्ग्राहीकफपित्तव्रणापह ।

वर्ण्योविसर्पदाहघ्न कपायोयोनिदोषहत ॥ (भा० प्र०)

अर्थ-वड-शीतल, भारी, मलरोधक, कफ और पित्तनाशक, व्रणाविनाशक, वर्णको सुन्दर करनेवाला, विसर्परोगनाशक, दाहनिवागक और योनिदोषको दूर करे है ।

अन्यथा ।

वट कपायमधुर शिशिर कफपित्तजित ।

ज्वरदाहन्तृषामोहव्रणशोफापहागक ॥ (ग० ज०)

अर्थ-वड-कपेला, मधुर, शीतल, कफपित्तनाशक तथा ज्वर, दाह, तृषा, मोह, व्रण और सृजनको दूर करे है ।

अपिच ।

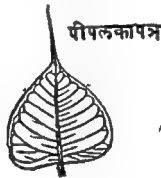
वटोरुर्ग्राहिमोग्राहीछर्दिघ्नोयोनिदोषजित ।

वर्ण्योभृच्छर्विमर्षघ्न कफपित्तहर्त्रेगुरु ॥ (थ० नि०)

अर्थ—वड—रूखा, शीतल मलरोधक, वमननिवारक, योनिदोषहारक, वर्णको सुंदर करनेवाला, भारी तथा भूच्छा, विसर्प और कफपित्तको दूर करेहै ।

विवरण । वडका वृक्ष महाविशाल होताहै, इसके पत्तेभी लम्बे चौड़े होतेहैं, फल छोटे २ झुंडवेरके बराबर आतेहैं । इसकी शाखाओंमेंसे लाल लाल अंकुर निकलतेहैं, जब वह बढ़जातेहैं उसको वटकी डाढ़ी कहतेहैं, वह इतनी बढ़जातीहै कि, लटकती २ पृथ्वीमें आकर जमजातीहै । जहाँ जहाँ यह डाढ़ी जमजातीहै वहाँ २ वडके वृक्ष होजातेहैं, इसप्रकार एक वडकी अनेक जड़ें होतीहैं परन्तु यह सब वास्तवमें एकहीहै और परस्पर मिली हुई होतीहै ऐसीही यह बढ़ते २ उस वडका बीघोंमें विस्तार होजाताहै ।

अवस्थानामानि ।



पीपलकापत्र

वोधिद्रु पिप्पलोऽश्वत्थश्चलपत्रोगजाशन ॥

अर्थ—वोधिद्रु, पिप्पल, अश्वत्थ, चलपत्र, गजाशन, (केशवालप, चैत्यद्रु, वोधितरु, कृष्णावात, चैत्यवृक्ष, नागवन्धु, देवात्मा, महाद्रुम, कपी-तन, वोधिद्रुम, चलदल, कुञ्जराशन, अच्युतावात, पवित्रक, शुभद्र, वोधि-वृक्ष, याज्ञिक, गजभक्षक, श्रीमान्, क्षीरद्रुम, विप्र, मङ्गल्य, श्यामल, शुद्धपुष्प, सेव्य, सत्य, शुचिद्रुम, धनुर्वृक्ष)

| | |
|-----------------|--------------------|
| संस्कृतभाषामें | अश्वत्थ । |
| हिन्दीभाषामें | पीपलवृक्ष । |
| वगभाषामें | अश्वत्थ, आशोतगाड । |
| मराठीभाषामें | पिपळ । |
| गुजरातीभाषामें | पीपलो । |
| कर्णाटकीभाषामें | अरली । |

तैलङ्गीभाषामें
इथेजीभाषामें
लैटिन्भाषामें
फारसीभाषामें

गईचेट्टु, कुट्टुगुधिवचेट्टु ।
पोपुगलीन्ड फिगुट्टी । Poplar leaved figtree
फाईकस् रिलिजियोसा । Ficus Religiosa
दरखतलरजा ।

अभ्य गुणा ।

पिप्पलोदुर्जर शीत.पित्तश्लेष्मव्रणास्रजित् ।

गुरुस्तुवरकोरुश्लोवर्ण्योयोनिविशोधन. ॥ (भा० प्र०)

अर्थ-पीपल-दुर्जर, शीतल, पित्त, श्लेष्म, व्रण, और रुधिरके विकाराको दूर करेहै । भारी, कपेला, रूखा, वर्णको सुंदरतादायक और योनिशोधक है ।

अपिच ।

अश्वत्थोमधुर शीत रुपायोदुर्जरोगुरु । रुश्लोवर्ण्यस्तिक्त-
कश्चयोनिशोधनकारक ॥ योनिदोषं रक्तदोषदाहपित्तक-
फाञ्जयेत् । व्रणंच नाशयत्येव फलपक्वच शीतलम् ॥ हृद्यं रक्त-
रुजपित्तविषदोषचनाशयेत् । दाहवान्तिच शोषं च ह्यरुचि-
चैव नाशयेत् ॥ (नि० र०)

अर्थ-पीपल-मधुर, शीतल, कपेला, दुर्जर, भारी, रूखा, वर्णको उज्ज्वल करनेवाला, कड़वा, योनिशोधक तथा योनिदोष, रुधिरदोष, दाह, पित्त, कफ और व्रणको दूर करनेवाला है । इसके पके फल-शीतल, हृद्यको हितकारी तथा रक्तरोग, पित्त विष, दाह, वमन, शोष और अरुचिको दूर करनेवाले हैं ।

विवरण । पीपलका वृक्ष-बहुत बड़ा होताहै, यह वृक्ष ग्राम और नगरमें बहुत होतेहैं, वनोंमें बहुत कम होतेहैं, इसके पत्ते-गोन् और अनीदार डालिपोंपर लगतेहैं यह पत्ते गर्देव हिलते रहतेहैं इमपरभी छोटे भूत होतेहैं, फल भी पत्तोंकी जडमें छोटे झटवरकी तुल्य लगते हैं, उनको पिपलीति कहतेहैं, इमकी जालाओंपर लाख्मी आताहै परन्तु गर्देव नहीं कोई गमय पाकर यह वृक्ष बहुत श्रेष्ठ और पवित्रहै ऋषि मुनिपनि इमको पूजनके योग्य समझ गहराहै ।

पानीशफिपदनामानि ।

पानीशोन्योफलीशश्चरुपित्त कमण्डलु ।

गर्दभांड.कन्दराल कपीतन सुपार्श्वक. ॥

अर्थ-पारीश, फलीश, कपिचृत, कमण्डल, गर्दभाण्ड, कदगल, कपीतन, सुपार्श्वक ।

| | |
|-----------------|---|
| संस्कृतभाषामें | पारीश । |
| हिन्दीभाषामें | पारिसपीपल, गजदड़ । |
| वगभाषामें | गजशुडी । |
| मराठीभाषामें | पारसपिपल भेंड । को०मणेरवृक्ष । |
| गुजरातीभाषामें | पारसपिपलो । |
| कर्णाटकीभाषामें | वगरली । |
| तैलङ्गीभाषामें | घेनगाखी, गगरेय । |
| तामिलीभाषामें | पोरिश, पूवरश, सरम् । |
| इंग्रेजीभाषामें | हिविक्सम् Hibiscus |
| लैटिन्भाषामें | थेसपीसीया पोपलनिया । <i>Thaespia populnea</i> |
| फारसीभाषामें | यलास वेल्य । |

अस्य गुणाः ।

फलीशोदुर्जर स्निग्ध.कृमिशुक्रकफप्रद ।

फलोम्लोमधुरोमूलेकपाय स्वादुमज्जक ॥ (भा प्र)

अर्थ-पारिसपीपल-अत्यन्त कटिनतासे पचनेवाला, स्निग्ध, कृमिजनक, शुक्रकारक और कफवर्द्धक है । इसके फल-अम्ल । इसकी जड़में मधुरता । इसकी मज्जामें कपेला और भीठापन है ।

अपघ्न ।

ब्रह्मवृक्षस्तुमधुरोवृष्योम्लस्तुवरोमत.।दुर्जर कफकृत्स्निग्ध
शुक्रलोजतुकारक ॥ वातपित्तचर्द्द्वोगदाहकठरुजतया ।
नाशयेदितिसप्रोक्त फलमम्लमधुस्मृतम् ॥ मूलतुतुवरज्ञेय
मज्जास्वाद्धीस्मृताबुधे । (नि० र०)

अर्थ-पारिसपीपल-मधुर, वीर्यवर्द्धक, रक्ता, कपेला, अतिकटिनतासे पचनेवाला, कफकारक, स्निग्ध, शुक्रजनक, कृमिकारक तथा वात, पित्त, हृदयरोग, दाह और फट्टरोगको दूर करे है । इसके फल-अम्ल और मधुर है । इसकी जड़-कपेला है । इसकी मज्जा स्वादिष्ट है ।

विवरण । पाणिमपीपलका वृक्ष-पीपलके समान होता है, परन्तु पीपलपर फूल नहीं होते हैं और पाणिमपीपलमें भिंडीकी समान पीपलफूलभी आते हैं और इसके डोरे भिंडीके आकार होते हैं ।

नन्दीवृक्षानामानि ।

नन्दीवृक्षोऽश्वत्थभेद प्ररोहीगजपादप ।

स्थालीवृक्ष क्षयतरुः क्षीरीचस्याढनस्पतिः ॥

अर्थ-नन्दीवृक्ष, अश्वत्थभेद, प्ररोही, गजपादप, स्थालीवृक्ष, क्षयतरु, क्षीरी, वनस्पति ।

संस्कृतभाषामें

नन्दीवृक्ष ।

हिन्दीभाषामें

बेलियापीपल ।

तैलिङ्गीभाषामें

वट्टिचेट्टु ।

अस्य गुणाः ।

नन्दीवृक्षोलघुः स्वादुस्तिक्तस्तुवरउष्णक ।

पाकेकटूरसेग्राहीविपपित्तकफास्रनुत् ॥ (भा०प्र०)

अर्थ-बेलियापीपल-हल्का, स्वादिष्ट, कपेला, कड़वा, गरम, पचनेमें चरपरा, मलरोगक तथा विष, पित्त, कफ और रुधिरके दोषको दूर करे ।

विवरण । बेलिया पीपलभी पीपलका भेद है, इसके पत्ते-पड़े २ होते हैं इसकी शाखाओंमेंभी अकुर होते हैं, इसकी जड़ बहुत मोटी होती है ।

प्रक्षानामानि ।

पुञ्जोजटीपर्कटीचकपर्गीचारुदर्शिनी ।

शृङ्गीचरोहशाखीचक्षुश्वत्थीपिपरीवटी ॥

अर्थ-पुञ्ज, जटी, पर्कटी, कपर्गी, चारुदर्शिनी, शृङ्गी, चरोहशारी, अश्वत्थी, पिपरी, वटी (कमण्डलुतरु, कपीतन, शोभि, मुपादर, विमण्डल, गरुभाण्ड पीतन, दृढमरोह, पुवक, प्रवह, महाफल, कन्दराज, पर्वगी, प्रक्षा, जटि, शीशा)

संस्कृतभाषामें

पुञ्ज, पर्वगी ।

हिन्दीभाषामें

पारार, ।

यगभाषामें

चारुदगाळ

मराठीभाषामें

पिपरी ।

गुजरातीभाषामें पीपर्य ।
कर्णाटकीभाषामें वसुरि)
लैटिन्भाषामें फाईलसविरैन्स । *Ilex verance*
अस्य गुणाः ।

पुक्ष. कपाय शिशिरोव्रणयोनिगदापह. ।

दाहपित्तकफासघ्न. शोफहारक्तपित्तहृत् ॥ (भा० प्र०)

अर्थ—पाखर—कपेला, जीतल तथा घ्रण, योनिरोग, दाह, पित्त, कफ, रुधिरविकार, सूजन और रक्तपित्तको दूर करै है ।

अपघ्न ।

पुक्ष कटु. कपायश्चशिशिरोरक्तदोषजित् ।

मूर्च्छाभ्रमप्रलापघ्नोद्वस्वपत्रोविशेषत ।

मूर्च्छाभ्रमप्रलापघ्नोद्वस्वपत्रोविशेषत ॥

अर्थ—पाखर—कटु, कपाय, शिशिर, रक्तदोषनाशक तथा मूर्च्छा, भ्रम और प्रलापको दूर करनेवाला है । हस्वपत्रवाला पाखर अधिक गुणवाला है विवरण । पाखरके वृक्ष-वड पीपलकी भाँतिके जगल और ग्रामोंमें बहुत होतेहैं, पत्ते—लम्बे २ आमकेसे होतेहैं, जब नया वृक्ष लगाना होताहै तब इसके गुच्छेको काटकर लगादेतेहैं, उसीमेंसे हरे २ पत्ते निकलने लगतेहैं, पाच, छै, वर्षमें बँसाही वृक्ष छायादार होजाताहै, इसके सज्जन बनकी प्रशंसाहै कि, ऐसी उत्तम छाया किसी वृक्षकी नहीं होतीहै ।

उद्वम्पग्नानामि ।



उदुम्बरः क्षीरवृक्षो हेमदुग्धः सदाफलः ।

अपुष्पफलसम्बधो यज्ञाङ्ग शीतवल्कलः ॥

अर्थ—उदुम्बुर, क्षीरवृक्ष, हेमदुग्ध, सदाफल, अपुष्पफलसम्बध, यज्ञाङ्ग, शीतवल्कल (कृमिकण्ट, कृमिकण्टक, क्रिमिकण्टक, पाणिमुख, पुष्पहीन, जन्तुफल, यज्ञफल, यज्ञोदुम्बर, उदुम्बर, हेमदुग्धक, ब्रह्मवृक्ष, हेमदुग्धी, मुचक्षु, श्वेतवल्कल, कालरकन्ध, यज्ञयोग्य, यज्ञीय, भुमतिष्ठित, शीतवल्क, यज्ञसार, पुष्पशून्य, पवित्रक, सौम्य, शीतफल, जग्नेफल)

संस्कृतभाषामें उदुम्बर ।

हिन्दीभाषामें गूलर ।

बगभाषामें यज्ञदुम्बर ।

मराठीभाषामें उम्बर ।

गुजरातीभाषामें उवरो ।

कर्णाटकीभाषामें अत्ति ।

तैलिङ्गीभाषामें वाट्टचेट्ट ।

इंग्रजीभाषामें किगट्री । fig tree

लैटिन भाषामें फाइकसग्लोमिरेटा । ficus glomerata

फारसीभाषामें अजीरे आदम ।

अरबीभाषामें जमीझ ।

भस्म गुणा ।

उदुम्बर शीतल स्याद्भस्मन्धानकाङ्क । व्रणरोपणकृद्-
श्रोमधुरस्तुवरोगुरु ॥ अस्थिमन्धानकृद्घ्न्य कफपित्ताति
साङ्कान् । योनिरोगनाशयतिवल्कचेवास्य शीतलम् ॥
दुग्धदन्तुवरगम्यं व्रणनाशकं स्मृतम् । कोमलचास्यचफल
स्तम्भकृत्तुवग्मतम् ॥ हितकारितृपापित्तकफरुक्तरुजापहम् ।
मध्यमकोमलस्वादुशीतलतुवग्मतम् ॥ पित्तं तृषामोदक-
रुक्त्वातिवमीहम् । प्रदारघ्नं मुद्दिष्टमपक्वतुवग्मतम् ॥
रुच्यं चाम्लदीपनं स्यान्मासवृद्धिकरमतम् । रक्तरुद्धाङ्कं चै-
व गोपलं च जडमतम् ॥ तत्पक्वञ्च रुपाय स्यान्मधुरकृमिना-

रकम् । जडरुचिप्रदचातिशीतलकफकारकम् ॥ रक्तरु-
क्पित्तदाहक्षुत्तृपाश्रमप्रमेहहम् । शोषमूर्च्छाहरप्रोक्तपूर्वं स्वे
स्वेनिघण्टके ॥ (नि० र०)

अर्थ—गूलर—शीतल, गर्भसन्धानकारक, त्रणको भरनेवाला, रूखा, मधुर,
कपेला, भारी, अस्थिसन्धानकारक, वर्णको उज्ज्वल करनेवाला तथा कफ,
पित्त, अतिसार और योनिरोगका नाश करे है । उसकी ठाल अत्यन्त शी-
तल, दुग्धवर्द्धक, कपेली, गर्भको हितकारी और त्रणविनाशक है । इसके
कोमल फल—स्तम्भक, कपेले, हितकारी तथा तृपा, पित्त, कफ और रुधिरके
रोगोंका नाश करे है । मध्यम कोमल फल—स्वादु, शीतल, कपेले, पित्त,
तृपा और मोहकारक तथा रक्तत्वाव, वमन और प्रदररोगनाशक है । इसके
तरुणफल—कपेले, रुचिकारक, अम्ल, दीपन, मासवर्द्धक, रुधिरको विगाड-
नेवाले, दोषजनक और जड हैं । इसके पक्के फल—कपेले, मधुर, कृमिका-
रक, जड, रुचिकारक अत्यन्त शीतल, कफकारक तथा रुधिरविकार, पित्त,
दाह, क्षुवा, तृपा, श्रम, प्रमेह, शोष और मूर्च्छाको हरनेवाले हैं ।

नष्टुदुम्बरनामानि ।

नष्टुदुम्बरिकाचान्यालघुपत्रफला तथा ।

लघुहेमदुग्धाप्रोक्तालघुपूर्वसदाफला ॥

अर्थ—नष्टुदुम्बरिका, लघुपत्रफला, लघुहेमदुग्धा, लघुपूर्वमदाफला ।

अस्य गुणा ।

नष्टुम्बरीगुणे सर्वे सदृशा तु मता बुधे ।

रसवीर्यविपाकेषु किञ्चिन्मूनाचपर्वत ॥

अर्थ—नष्टीके निकटका गूलर—गूलरकेही समान गुणवाला है तथा रस,
वीर्य और विपाकमें किञ्चित् हीन है ।

वासोदुम्बरिनामानि ।

उदुम्बरफलाच्चैव कर्कशच्छदनाऽमुमा ।

काकोदुम्बरिकाज्ञेयाक्षीर्गचरपत्रिका ॥

अर्थ—उदुम्बरफला, कर्कशच्छदना, अमुमा, काकोदुम्बरिका, क्षीरी,
खरपत्रिका (कृष्णोदुम्बरिका, खरपत्रि, राजिका, धुदुदुम्बरिका, कुष्ठ्री,

उदुम्बर.क्षीरवृक्षोहेमदुग्ध.सदाफल ।

अपुष्पफलसम्बधोयज्ञाङ्ग शीतवल्कल ॥

अर्थ—उदुम्बुर, क्षीरवृक्ष, हेमदुग्ध, सदाफल, अपुष्पफलसम्बध, यज्ञाङ्ग, शीतवल्कल (कृमिकण्ट, कृमिकण्टक, क्रिमिकण्टक, पाणिमुर, पुष्पहीन, जन्तुफल, यज्ञफल, यज्ञोदुम्बर, उदुम्बर, हेमदुग्धक, ब्रतवृक्ष, हेमदुग्धो, मुचभु, श्वेतवल्कल, कालस्कन्ध, यज्ञयोग्य, यज्ञीय, मुप्रतिष्ठित, शीतवल्क, यज्ञसार, पुष्पशून्य, पवित्रक, सौम्य, शीतरू, जवनेफल)

संस्कृतभाषामें उदुम्बर ।

हिन्दीभाषामें गूलर ।

बगभाषामें यज्ञदुम्बर ।

मराठीभाषामें उम्बर ।

गुजरातीभाषामें उमरो ।

कर्णाटकीभाषामें अनि ।

तेलुगुभाषामें वाडूचेट्टु ।

इंग्रेजीभाषामें किग्वी । fig tree

लॅटिन् भाषामें पाइकसग्लोमिरेग । Picus glomeratus

फारसीभाषामें अर्जीरे आदम ।

अरबीभाषामें जर्मीस ।

भस्व गुणा ।

उदुम्बर शीतल स्याद्बर्भसन्धानकारक । व्रणरोपणकृद्-
क्षोमधुरस्तुवर्गेगुरु ॥ अस्थिसन्धानकृद्द्वर्ण्य कफपित्ताति-
सारकान् । योनिर्गोमनाशयतिवल्कचैवास्यशीतलम् ॥
दुग्धदतुवरगर्भ्यव्रणनाशकंरम्भृतम् । कोमलचास्यचफल-
स्तम्भकृत्तुवरगर्भृतम् ॥ हितकारितृपापित्तरुफरक्तरुजापहम् ।
मध्यमकोमलस्वादुशीतलतुवरगर्भृतम् ॥ पित्ततृषामोदक-
रक्तसुतिवर्मीहरम् । प्रहारघ्नसमुद्दिष्टमपक्रुतुवरगर्भृतम् ॥
रुच्यचाम्लदीपनम्यान्मामवृद्धिकर्गर्भृतम् । रक्तरुक्कार्गर्भ-
चक्षुषलं च जडमतम् ॥ तत्पक्वञ्चरुपायस्यान्मधुरकृमिका-

रकम् । जडं रुचिप्रदं चातिशीतलरुफकारकम् ॥ रक्तरु-
क्पित्तदाहक्षुत्तृपाश्रमप्रमेहहम् । शोषमूर्च्छाहरं प्रोक्तपूर्वैः स्वे-
स्वेनिघण्टके ॥ (नि० २०)

अर्थ—गूलर—शीतल, गर्भसन्धानकारक, व्रणको भरनेवाला, रूखा, मधुर,
कपेला, भारी, अस्थिमन्धानकारक, वर्णको उज्ज्वल करनेवाला तथा कफ,
पित्त, अतिमांस और योनिरोगका नाश करे है । उसकी छाल अत्यन्त शी-
तल, दुग्धवर्द्धक, कपेली, गर्भको हितकारी और व्रणविनाशक है । इसके
कोमल फल—स्तम्भक, कपेले, हितकारी तथा तृपा, पित्त, कफ और रुधिरके
रोगोंका नाश करे है । मध्यम कोमल फल—स्वादु, शीतल, कपेले, पित्त,
तृपा और मोहकारक तथा रक्तस्राव, वमन और मदरोगनाशक हैं । इसके
तरुणफल—कपेले, रुचिकारक, अम्ल, दीपन, मांसवर्द्धक, रुधिरको निगाड-
नेवाले, दोषजनक और जड हैं । इसके पक्षे फल—कपेले, मधुर, कृमिका-
रक, जड, रुचिकारक अत्यन्त शीतल, कफकारक तथा रुधिरविकार, पित्त,
दाह, क्षुधा, तृपा, श्रम, प्रमेह, शोष और मूर्च्छाको हरनेवाले हैं ।

नद्युदुम्बरानामानि ।

नद्युदुम्बरिकाचान्यालघुपत्रफला तथा ।

लघुहेमदुग्धाप्रोक्तालघुपूर्वसदाफला ॥

अथ—नद्युदुम्बरिका, लघुपत्रफला, लघुहेमदुग्धा, लघुपूर्वसदाफला ।

अस्य गुणाः ।

नद्युम्बरीगुणे सर्वे सदृशा तु मता बुधे ।

रसवीर्यविपाकेषु किञ्चिन्नृणाचपूर्वत ॥

अथ—नदीके निकटका गूलर—गूलरकेही समान गुणवाला है तथा रस,
वीर्य और विपाकमें किञ्चित् हीन है ।

यारोदुम्बरानामानि ।

उदुम्बरफलाच्चैव कर्कशच्छदनाऽमुमा ।

काकोदुम्बरिकाज्ञेयाक्षीगीचरपत्रिका ॥

अर्थ—उदुम्बरफला, कर्कशच्छदना, अमुमा, काकोदुम्बरिका, क्षीरी,
खम्पत्रिका (कृष्णोदुम्बरिका, सरपत्रिका, रानिका, सुदोदुम्बरिका, सुपत्री,

फल्गुवाटिका, अजाजी, फल्गुनी, मल्लू, चित्रमेपजा, ध्वाशनात्री, पड, जवनेफला, बहुफला, खरदला, मलयु, फल्गुफला, काकोदुम्बर, काकोदुम्बरिका, अजाक्षी, भद्रोदुम्बरिका)

संस्कृतभाषामें काकोदुम्बरिका ।

हिन्दीभाषामें कटुमर ।

वगभाषामें काकडुमुर ।

मराठीभाषामें काळाउम्बर, बोखाडा ।

गुजरातीभाषामें टेडउम्बरो ।

कणाडकीभाषामें काअत्ति ।

तैलिङ्गीभाषामें ब्रह्ममेडिचेट्टु, काकी वाडुचेट्ट ।

इंग्रेजीभाषामें किगरी । *hog tree*

लैटिन भाषामें फाइकस् ओपोसिटि फोलिया । *It is opposite to folia*

फाइकस् हिस्पिडा । *It is sp. h.*

फारसीभाषामें अजिरेदस्ती ।

अरबीभाषामें तनवरि ।

भक्ष्या गुणा ।

मलपूस्तम्भकृत्तिकाशीतलातुवराजयेत् ।

कफपित्तव्रणश्वित्रकुष्ठपाण्डुरोगकामलाः ॥ (भा०प०)

अर्थ-कटुमर-स्तम्भक, शीतल, फण्डा तथा कफ, पित्त, व्रण, श्वित्रकुष्ठ, पाण्डुरोग, चर्मांग और कामलारोगको दूर करे है ।

भक्ष्य ।

काकोदुम्बरिकाशीताकपायादन्धातिनी ।

रक्तातिमारदन्त्रीचमुख

अर्थ-कटुमर, शीतल, फण्डा तथा कामे रोगोंके निग्रहे ।

काकोदुम्बरिका

शीतलाय

पराक राजय

(१०)
नामि-

दुर्नामानं चोर्द्धदोपनाशयेदितिकीर्तितम् । फलमस्या स्वा-
दुशीततुवरवृत्तिकारकम् ॥ गुरुधातुवृद्धिकर पाके च मधुर
स्मृतम् । स्निग्धमलस्तम्भकरपौष्टिकग्राहिवातलम् ॥ (नि० र०)

अर्थ—कटूमर—शीतल, कडवा, अम्ल, मलस्तम्भक, कटु, कपेला, याही,
इन्द्रियप्रसादक तथा त्वग्दोष, कामला, पित्त, रक्तपित्त, कफ, श्वेतकुष्ठ,
व्रण, पाण्डुरोग, रुधिरविकार, सूजन, घवासीर और ऊर्ध्वगत दोषको दूर
करे है । इसके फल—स्वादु, शीतल, वृत्तिकारक, भारी, धातुवर्द्धक, पचनेमें
मधुर, स्निग्ध, मलस्तम्भकारक, पुष्टिजनक और मलरोधक हैं ।

विवर्ण । गूलर अर्थात् उदुम्बर और कटूमरका वडा वृक्ष होता है,
इसपर फूल नहीं आते, इसकी शाखाओंमेंसे फल उत्पन्न होते हैं, फल गोल २
अजीरकी समान होते हैं और इसमेंसे दूध निकलता है, इसके पत्ते—लम्बे-
टेकेसे होते हैं, नदी उदुम्बरके पत्ते गूलरके पत्तासे छोटे और फलभी छोटे
होते हैं, कटूमरके पत्ते गूलरके पत्तासे बड़े हैं वरन् गगेरनके पत्ताके समान
होते हैं । इसके पत्ताको छूनेसे हाथोंमें खुजली होने लगती है और पत्तामें
दूध निकलता है ।

शिरिषनामानि ।

शिरिषोभण्डिलोभण्डीभण्डीरश्चकपीतन ।

शुकपुष्प शुकतरुमृदुपुष्प शुकप्रिय ॥

अर्थ—शिरिष, भण्डिल, भण्डी, भण्डीर, कपीतन, शुकपुष्प, शुकतरु,
मृदुपुष्प, शुकप्रिय (कर्णपूर, शुकद्रुम, भण्डील, भण्डीर, मृदुपुष्प, विषघाती,
विषनाशन, शीतपुष्प, भण्डिक, स्वर्णपुष्पक, शुकैष्ट, चर्हपुष्प, विषहन्ता,
सुपुष्पक, उद्दानक, शुकतरु, लोमशपुष्पक, कपीतक, कर्लिंग, श्यामल,
शरिखनीफल, मधुपुष्प, वृत्तपुष्प, शिरिखनीफल, श्रवण, श्यामवर्ण)

संस्कृतभाषामें शिरिष ।

हिन्दीभाषामें गिरम ।

वगभाषामें शिरिषगाछ, चट्ठा ।

मराठीभाषामें गिरसी ।

गुजरातीभाषामें शिरिष, शरपडो ।

कर्णाटकीभाषामें गिरसु ।

फल्गुवाटिका, अजाजी, फल्गुनी, मलय, चित्रभेषजा, घासनाम्री, फा,
जयनेफला, वटुफला, खरदला, मलयु, फल्गुफला, काकोदुम्बर, काकोदुम्ब-
रिका, अजाशी, भद्रादुम्बरिका)

संस्कृतभाषामें काकोदुम्बरिका ।

हिन्दीभाषामें कटुमर ।

वगभाषामें काकदुमुर ।

मराठीभाषामें काळालम्बर, घोखाडा ।

गुजरातीभाषामें टेडडम्बरो ।

कर्णाटकीभाषामें काभत्ति ।

तैलिङ्गीभाषामें ब्रह्ममेडिचेट्टु, काकी वाडुचेट्टु ।

इंग्रेजीभाषामें किग्री । Hog tree

लैटिन भाषामें फाइकस् ओपोसिटि फोलिया । *Ficus oppositifolia*

फाइकस् हिस्पिडा । *H. hispida*

फारसीभाषामें अजिरेदस्ता ।

अरबीभाषामें तनयारि ।

अस्या गुणा ।

मलपृस्तम्भकृत्तिकाशीतलातुवराजयेत् ।

कफपित्तव्रणश्चित्रकुष्ठपाण्डुर्भकामला ॥ (भा० प्र०)

अर्थ—कटुमर—स्तम्भक, शीतल, कफला तथा कफ, पित्त, वण, श्वित्ररुष्ट
पाण्डुरोग, चयासीर और कामलारोगको दूर करे है ।

अप्यथा ।

काकादुम्बरिकाशीतारुपायादद्दुधातिनी ।

रक्तातिसारहन्त्रीचमुखनासाश्चधातिनी ॥ (शी० नि०)

अर्थ—कटुमर, शीतल, कफला तथा शूल, रक्तातिमार, मुख और नासि
रोगों कषिणके मिश्रणको दूर करे है ।

अपिच ।

काकोदुम्बरिकाशीतातिकाश्लस्तम्भकाकटु । तुवराग्रादि-
णीप्रोक्ताश्चेन्द्रियाणां प्रसादका ॥ त्वग्दोषकामलापित्तस्त-
पित्तकफाञ्जयेत् । श्वेनकुष्ठं व्रणपाण्डुं क्तरो गन्धं शोथकम् ॥

दुर्नामानचोर्द्धदोषनाशयेदितिकीर्तितम् । फलमस्याःस्वा-
दुशीततुवरंतृप्तिकारकम् ॥ गुरुधातुवृद्धिकर पाके च मधुर
स्मृतम् । स्निग्धमलस्तम्भकरंपौष्टिकग्राहिवातलम् ॥ (नि०र०)

अर्थ—कटुमर—शीतल, कडवा, अम्ल, मलस्तम्भक, कटु, कपेला, ग्राही,
इन्द्रियप्रसादक तथा त्वग्दोष, कामला, पित्त, रक्तपित्त, कफ, श्वेतकुष्ठ,
घ्रण, पाण्डुरोग, रुधिरविकार, सूजन, वधासीर और ऊर्ध्वगत दोषको दूर
करे है । इसके फल—स्वादु, शीतल, तृप्तिकारक, भारी, धातुवर्द्धक, पचनेमें
मधुर, स्निग्ध, मलस्तम्भकारक, पुष्टिजनक और मलरोधक है ।

विवर्ण । गूलर अर्थात् उदुम्बर और कटुमरका बड़ा वृक्ष होता है,
इसपर फल नहीं आते, इसकी शाखाओंमेंसे फल उत्पन्न होते हैं, फल गोल २
अजीरकी समान होते हैं और इसमेंसे दूध निकलता है, इसके पत्ते—लम्हे-
डेकेसे होते हैं, नदी उदुम्बरके पत्ते गूलरके पत्तोंसे छोटे और फलभी छोटे
होते हैं, कटुमरके पत्ते गूलरके पत्तोंसे बड़े हैं वरन् गगेरनके पत्तोंके समान
होते हैं । इसके पत्तोंको दूनेसे हाथोंमें खुजली होने लगती है और पत्तामें
दूध निकलता है ।

शिरिषनामानि ।

शिरिषोभण्डलोभण्डीभण्डीरश्चकपीतन ।

शुकपुष्पःशुकतरुमृदुपुष्प शुकप्रिय ॥

अर्थ—शिरिष, भण्डल, भण्डी, भण्डीर, कपीतन, शुकपुष्प, शुकतरु,
मृदुपुष्प, शुकप्रिय (कर्णपूर, शुकद्रुम, भण्डील, भण्डिर, मृदुपुष्प, विषघाती,
विषनाशन, शीतपुष्प, भण्डक, स्वर्णपुष्पक, शुकैष्ट, बर्हपुष्प, विषहन्ता,
सुपुष्पक, उद्दानक, शुकतरु, लोमशपुष्पक, कपीतक, कर्लिंग, श्यामल,
शखिनीफल, मधुपुष्प, वृत्तपुष्प, शिखिनीफल, पुवग, श्यामवर्ण)

संस्कृतभाषामें शिरिष ।

हिन्दीभाषामें सिरस ।

बगभाषामें शिरिषगाछ, चट्का ।

मराठीभाषामें शिरसी ।

गुजरातीभाषामें शिरिष, शरपडो ।

कर्णाटकीभाषामें शिरसु ।

तेलिङ्गीभाषामं
लैटिन्भाषामं

दिग्गन्, शिरीषम्रानु ।
आल्बीशियालेवेक् । Albi. in libel
आल्बीयमरा । A amra

फारसीभाषामं
अरबीभाषामं

दरसते जकरिया, तुग्मेदरखते नकरिया ।
मुल्तानुल् असजाग, हनेमुल्तानुल् असजाग ।
अस्यगुणा ।

शिरीषकटुकशीतोविपवातहर पर ।

पामासकुष्ठकण्डूतित्वग्दोषम्यविनाशन ॥ (रा० नि०)

अर्थ-गिरस-कटुक, शीतल तथा विष, यात, पामा, रुधिरविकार, कुष्ठ,
कण्डू और त्वचाके दोषोंको दूर करे है ।

अवयव ।

शिरीषोशीविपस्वेदत्वयुक्छोफविसर्पनुत । (शा० नि०)

अर्थ-गिरस-घवासीर, विष, पमीना, त्वचाके दोष, मृजन और विम-
र्षको दूर करे है ।

अविध ।

गिरीषोमधुरोऽनुष्णस्मितकश्चतुर्वगेलयु ।

दोषशोथविसर्पघ्न कासव्रणविषापह ॥ (भा० प्र०)

अर्थ-गिरस-मधुर, अनुष्ण, कडवा, कपेला, हल्का तथा द्रव्य, मृजन,
विमर्ष, रसाती, व्रण और विषको हरनेवाला है ।

विवरण । गिरसके वृक्ष-घडे ० ऊँच और मधन जगलोंमें हात हैं,
पक्ष-आमलक समान छोटे ० और दाल्चिमीं यरायर लगते हैं, पूर-
छोटे ० तन्तुआंसे मुसन्नित अत्यन्त कोमल हरे २ कुछ पीले ० सुगन्धयुक्त
चदुत सुन्दर होते हैं, पत्ती पतली चपटी तीन चार आठ अंगुलतक, लम्बी
पान अंगुलसे ज्यादा चौड़ी, भीतर उतके भूरे रंगके बीज होते हैं एक
फलीमें दस बीजका प्रमाण है ।

शिशपानामानि ।

शिशपाकृष्णसारचपिपलायुगपत्रिका ।

पिच्छलाधृत्रिकावीरकपिलागुरुशिशपा ॥

अर्थ-शिशपा, कृष्णसागर, पिपला, युगपत्रिका, पिच्छला, धूमिका,
बोरा, कपिला, अगुरुशिशपा, अगुरु, युगपत्रिका, यामा,
नुमाख्य, उपामा, धीरा, शिशु

श्वेतशिशपानामानि ।

शिशपान्याश्वेतपत्रासिताद्वादिश्वशिशपा ॥

अर्थ—श्वेतशिशपा, श्वेतपत्रा, सितशिशपा ।

कपिलशिशपानामानि ।



कपिलाशिशपाचान्यापीताकपिलशिशपा ।

सारिणीकपिलाक्षीचभस्मगर्भाकुशिशपा ॥

अर्थ—कपिलशिशपा, पीता, कपिला, सारिणी, कपिलाक्षी, भस्मगर्भा, कुशिशपा)

संस्कृतभाषामे

हिन्दीभाषामे

वगभाषामें

मराठीभाषामे

गुजरातीभाषामें

कर्णाटकीभाषामें

तं०

तामिलीभाषामें

इंग्रजीभाषामें

ल०

अरबीभाषामें

शिशपा, श्वेतशिशपा, कपिलशिशपा ।

सीसम, सफेदसीसो, कपिलवर्णसीसम ।

शिशुगाछ, शादाशिशुगाछ, कपिलपत्रशिशुगाछ ।

काळाशिसवा ।

शिशम ।

करीपहेविडु, बिलीनइविडु, हांवदनिडु ।

जिट्टेगुचहु ।

जानुकुकट्टइ, पयकेदर ।

ब्लॉकुड सीस्ट्री । Black wood Si on tree

डालनरजिया लेटिकोलिया । Dalbergia latifolia

सासम ।

शिशपागुगा ।

शिशपाकटुकतित्कारुपायाशोपहारिणी ।

उष्णवीर्याहरेन्मेद-कुष्ठवित्रवमिकृमीन् ॥

तैलिङ्गीभाषाम

दिरमन, शिरीषम्रानु ।

लैटिनभाषामें

आल्वीक्षियालेनेकु । Albi-ria khibet

आल्वीयमरा । A amala

फार्सीभाषामें

दरखते जकगिया, तुरमेदरखतेजरगिया ।

अरबीभाषामें

मुल्तानुल् असजार, हवेमुल्तानुल् असजार ।

अस्य गुणा ।

शिरीष-रुद्रकः शीतो विपवातहर पर ।

पामासकुष्ठकण्टित्वग्दोपस्यविनाशन ॥ (रा० नि०)

अर्थ-गिरस-कटु, शीतल तथा विष, वात, पामा, रुधिरविकार, सुप्त, कण्ट और त्वचाके दोषोंको दूर करे है ।

अपेक्ष ।

शिरीषोशीविपस्वेदत्वयुक्छोफाविसर्पनुत् । (शा० नि०)

अर्थ-गिरस-प्रवाही, विष, पत्तीना, त्वचाके दोष, सूजन और विमर्षको दूर करे है ।

अपेक्ष ।

शिरीषोमधुरोऽनुष्णस्तिक्तश्चतुर्वर्गेलघु ।

दोषशोथविसर्पघ्नकासत्रणविपापह ॥ (भा० प्र०)

अर्थ-तिरस-मधुर, अनुष्ण, कटुवा, कपेला, हल्का तथा दोष, सूजन, विसर्प, रसार्मा, घ्न और विषको हरनेवाला है ।

विवरण । तिरसके मूल-बड़े २ ऊँचे और सवन जगहोंमें होते हैं, पत्ते-आमलेके समान छोटे २ और डालियाँ सरासर लगते हैं, फूल-छोटे २ तन्तुओंमें सुगन्धित अत्यन्त फीमल हरे २ कुछ पीले २ सुगन्धयुक्त बहुत सुन्दर होते हैं, पत्ती पतली चपरी तीन चार आठ अंगुल तक लम्बी पान अंगुलसे ज्यादा चौड़ी, भीतर उसके मूल गणके चीज होते हैं एक पत्तीमें दस बीजका प्रमाण है ।

शिशुपामामानि ।

शिशुपाकृष्णसारचपिपलायुगपत्रिका ।

पिच्छलाधूम्रिकावीरकपिलागुरुशिशुपा ॥

अर्थ-शिशुपा, कृष्णवारा, पिपला, युगपत्रिका, पिच्छला, धूम्रिका, बीरा, कपिला, अगुरुशिशुपा (अगुरु, पिच्छला, युगपत्रिका, काटा-नुवारण, श्यामा, धीरा, मंदपत्री, सीधुप्रमया)

श्वेतशिशपानामानि ।

शिशपान्याश्वेतपत्रासिताह्वादिश्वशिशपा ॥

अर्थ—श्वेतशिशपा, श्वेतपत्रा, सितशिशपा ।

कपिलशिशपानामानि ।



कपिलाशिशपाचान्यापीताकपिलशिशपा ।

सारिणीकपिलाक्षीचभस्मगर्भाकुशिशपा ॥

अर्थ—कपिलशिशपा, पीता, कपिला, सारिणी, कपिलाक्षी, भस्मगर्भा, कुशिशपा)

संस्कृतभाषामें

हिन्दीभाषामें

वगभाषामें

मराठीभाषामें

गुजरातीभाषामें

कर्णाटकीभाषामें

तं०

तामिलीभाषामें

इंग्रेजीभाषामें

ल०

अरबीभाषामें

शिशपा, श्वेतशिशपा, कपिलशिशपा ।

सीतम, सफेदसीतो, कपिलवर्णसीतम ।

शिशुगाछ, झाड़ाशिशुगाछ, कपिलपत्रशिशुगाछ ।

काळाशितवा ।

शिशम ।

करीपइविडु, विलीनइविडु, होंवदनिडु ।

जिट्टेरुचडु ।

जानुकुकट्टइ, पशकेदर ।

ब्लॉक्वुड सीस्ट्री । Black wood Si no tree

डालनरजिया लेटिकोल्या । Dalbergia latifolia

सामम ।

शिशपाशुगा ।

शिशपाकटुकातित्ताकपायाशोपहारिणी ।

उष्णवीर्याहरेन्मेद कुष्ठश्चित्रवमिकृमीन् ॥

वस्तिरुग्रघ्नदाहास्रवलासान्गर्भपातिनी । (भा० प्र०)

अर्थ-सीसम-कटु, तिक्त, कषाय, शोषनाशक, उष्णवीर्य तथा भेद, श्वित्रकुष्ठ, वमन, कृमि, वस्तिगग, घ्न दाह, रुग्णविकार और कफको हरनेवाला है तथा गर्भको गिरानेवाला है ।

अन्यथा ।

गिशपादद्गुशोफघ्नीकुष्ठजीर्णज्वरापहा ।

अर्थ-सीसम-दाह, सृजन, फोड, अजीर्ण और ज्वरको हरनेवाला है ।

अन्यथा ।

श्यामादिगिशपातिक्ताकटूष्णाकफवातजित ।

कुष्ठजीर्णहरादीप्याशोफातीसारहारिणी ॥

अर्थ-सीसम कटुवा, चरपरा, गरम, अग्निवर्दीपक तथा कफ, वात, कुष्ठ, अजीर्ण, सृजन और अतीसारको दूर करे है ।

अथेतगिरावागुणा ।

श्वेतादिगिशपातिक्तागिशिगपित्तदाहनुत ।

अर्थ-सफेद सीसम-कटुवा, शीतल तथा पित्त और दाहको दूर करे है ।

वपिदगिरावागुणा ।

कपिलाशिशपातिक्ताशीतवीर्याश्रमापहा ।

वातपित्तज्वरघ्नीचच्छर्दिहिकाविनाशिनी ॥

अर्थ-भूरेरंगका सीसम-कटुवा, शीतवीर्य, श्रमनाशक तथा वात, पित्त, ज्वर, वमन और हिचकीको दूर करे है ।

विशिष्टगिरावागुणा ।

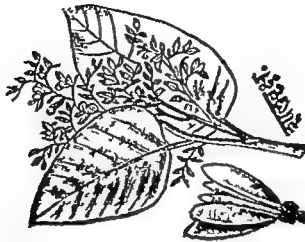
गिशपात्रितयवर्ण्यहिमशोफविमर्पजित ।

पित्तदाहग्रशमनवल्यरुचिकरपरम ॥ (ग० नि०)

अर्थ-तीनों प्रकारके ग्रीष्म-वर्णोंकी सुंदर हरनेवाले, शीतल, पठारदह, रुचिजनक तथा सृजन, विसर्प, पित्त और दाहको शान्तकरे है ।

विवरण । सीसमके वृक्ष बहुत बड़े २ तंगसमें होते हैं, पत्ते मोठ मोठदार पेरीकी समान होते हैं, फूल बहुत छोटे २ गुरछोंमें लगते हैं, पत्ती बहुत पतली और चपटी होती हैं, उनमें छोटे २ चपटे बीज निकलते हैं, ग्रीष्मकी मज्जरी कुछ उपामता और लम्बा दिने भूरेरंगी होती हैं, दूसरा बड़े गका ग्रीष्मकी इतीप्रकारका होता है ।

सालनामानि ।



सालस्तुसर्जकार्याऽश्वकर्णिकासस्यसम्बर ।

अर्थ—साल, सर्जकार्य, अश्वकर्णिका सस्यसम्बर, (अश्वकर्णक, शस्य-
शम्बर, उपमेत, दीर्घशाख, जलदाशन, लतातरु, लताशख, शकुतरु, शकु-
वृक्ष, सर्ज, सर्जरस, कल, कललजोद्व, वलीवृक्ष, चीरपर्ण, रालकार्य, अज-
कर्णक, वस्तकर्ण, कपायी, ललन, गन्धवृक्षक, वश, रालनिर्यास, दिव्यसार
सुरेष्टक, शूर, अग्निवल्लभ, यक्षपूष, सिद्धक, जरणद्रुम, तार्क्ष्यप्रसव, धन्य,
दीर्घपर्ण, कुशिक, कौशिक)

| | |
|-----------------|-------------------------------|
| संस्कृतभाषामें | साल, अश्वकर्ण । |
| हिन्दीभाषामें | साल, सखुया, साखु । |
| बंगलाभाषामें | शालगाछ, लताशाल । |
| मराठीभाषामें | गळेचा वृक्ष, साजग । |
| कर्णाटकीभाषामें | सजरदामर । |
| ते० | एपचेट्टु । |
| तामिलीभाषामें | कुगिलियम । |
| इंग्रेजीभाषामें | मालती । Sal tree |
| लैटिनभाषामें | ओरिया रोवष्ट । Shorea robusta |

अस्य गुणाः ।

अश्वकर्ण कपाय स्याद्वणस्त्रेदकफकृमीन् ।

ब्रध्नवीद्विवाधिर्य्ययोनिकर्णगदान्दरेत ॥ (भा० प्र०)

अर्थ-अश्वकर्णं साल-कपेला तथा ग्रग, पसीना, कफ, कृमि, मूत्र, वि-
ट्पि, वधिरता, योनिगोग और रुग्णरोगको हर्नेवाला है ।

अथ च ।

अश्वकर्णं कटुस्तिक्त स्निग्ध-पित्तामनाशनम् ।

उगेविस्फोटकण्डून्-शिरोदोषार्तिकृतम् ॥ (रा० नि०)

अर्थ-अश्वकर्णं-कटु, तिक्त, स्निग्ध, रक्तपित्तनाशक तथा उगविस्फोट,
कण्डू और मस्तकगोगको दूर करे है ।

अथ च ।

उज्ज्वलहरश्चैव श्लेष्मरक्तप्रकोपहतम् ।

अथ-गाल-ग्रणविनाशक और कफ तथा विचके काँपको शांति करे है ।

अथ च ।

अश्वकर्णं कटुस्तिक्तोष्ण क्षान्तिकर्मेतम् । स्निग्धोष्ण
कफपाण्डुर्तिपित्तकर्णरुजाहरम् ॥ रक्तकृद्बहुपुष्पोन्नमो
क्षतकण्डूहा । विषदोषवातरोगशिरोरोगश्चनाशयेत ॥
फलचमधुररुक्षशीतस्तम्भनकृद्दृक् । मलावष्टम्भनकरतुव-
रलेखनमतम् ॥ आध्मानशूलवातानां कारकं पित्तनाशक-
म् । रक्तदोषतृपादाहक्षतशयविनाशनम् ॥ (नि० २०)

अर्थ-अश्वकर्णं-गाल-चर्मरा, कटुता, मृज्जा, क्षान्तिकारक, स्निग्ध,
गन्ध तथा कफ, पाण्डुगोग, पित्त, कर्णरोग, रक्तगोग, ममेद कोट, गण,
उर-क्षत, कण्डू, विषविकार, वातरोग और शिरोरोगका नाश करे है ।
रुमका कटु-मधुर, रुखा, शीतल, स्तम्भक, भारी, मलावष्टम्भक, कपेला,
लेखन तथा आध्मान शूल और वातकारक है । पित्तनाशक और रुषि-
विकार, ठपा, दाह और क्षतशयको दूर करे है ।

अथ च ।

सर्जकोऽन्योऽजकर्णं स्याच्छालोमग्निपत्रकम् ।

अर्थ-सर्जक, अजकर्णं, शास्त्र, मरिचपत्रक ।

शैविप्रामाणिकं

वेधेरियाद्विष्का ।

अथ च ।

अजकर्णं रटुस्तिक्तः कृपायोष्णोऽन्यपोहति ।

कफपाण्डुश्रुतिगदान्मेहकुष्ठविषव्रणान् । (भा० प्र०)

अर्थ-अजकर्ण (सालभेद)-चरपरा, कडवा, कपेला, गरम तथा कफ, पाण्डुरोग, कर्णरोग, प्रमेह, कोढ़, विष और व्रणको दूर करे है ।

अन्यच्च ।

सर्जस्तुकटुतिकोष्णोहिमस्निग्धोऽतिसारजित् ।

पित्तास्रदोषकुष्ठघ्नः कण्डूविस्फोटवातजित् ॥ (रा० नि०)

अर्थ-अजकर्ण (सालभेदक) चरपरा, कडवा, गरम, शीतल, स्निग्ध तथा अतिसार, रक्तपित्त, कोढ़, कण्डू और विस्फोटका नाश करे है ।

विवरण-शालके बड़े बड़े वृक्ष होतेह पत्तेभी बहुत बड़े बड़े लगतेहैं, फूल कुमखोंम आतेहैं । दूसरा अश्वकर्ण, अजकर्ण इत्यादि शालके कई एक भेदहैं । शालके गोंदको राल कहते हैं ।

शल्लकीनामानि ।

शल्लकीगजभक्षाचगजप्रियाचह्लादिनी ।

महारुहावसामोचासुरभीसुरभीरसा ॥

अर्थ-शल्लकी, गजभक्षा, गजप्रिया, ह्लादिनी, महारुहा, वसा, मोचा, सुगभी, सुरभीरसा (गजभक्ष्या, शिल्लकी, सिल्लकी, सल्लकी, सिह्लकी, सिंह-भूमिका, सुवहा, सुरभि, महेरुणा, कुन्दुरुकी, गजाशना, महेरुणा, महारणा, हादिनी, अश्वमुत्री (अश्वपुत्री) कुम्भी, अम्बफला, करका, सुखमोदा, सुगन्धा, सुरभिम्बवा, गजवल्लभा, हस्वदा, बहुस्रवा, गन्धवीरा, सुन्त्रवा, वन-कर्णिका, नागवधू, सुश्रीका, गन्धमूला, गसाला, जलतिक्तिका)

सस्फुटभाषामे शल्लकी ।

हिदीभाषाम सालई, सलई ।

वगभाषामे शलई, शालविशेष ।

मराठीभाषामे शालईवृक्ष, धूपशलई ।

गुजरातीभाषामे शालेड्ड, धूपेडो ।

कर्णाटकीभाषामे तदीकु ।

तामिलीभाषामे कुलि ।

लैटिन् भाषामे बोसवेलिया, थेरीफेरा । Boswellia Tharifera

अस्य गुणा ।

शल्लकीतुवराशीताश्लेष्मपित्तातिसारजित् । रक्तपित्तव्रणह-

रीपुष्टिकृत्समुदीरिता ॥ तत्फलकफवातार्शः कुष्ठारोचकना-
शनम् । पुष्पंचास्यरुफवातमर्शः कुष्ठारुचीर्जयेत् ॥ (रा. नि)

अर्थ-शालई-कपेली, शीतल तथा कफ, पित्त, अतिसार, रक्तपित्त और घणको दूर करे है तथा पुष्टिकारक है । इसका फल-कफ, वात, यवासीर कोट और अरुचिको दूर करे है । इसका पुष्प-कफ, वात, यवासीर, कोट और अरुचिको दूर करे है ।

अन्यथा ।

वृक्षस्तुशलकीसज्ज पुष्टिकारीकपायक । शीतवीर्यश्च
मधुरस्तिक्तोग्राह्यस्त्रिदोषनुत् ॥ व्रणदोषंकफवातपित्तचार्श-
चनाशयेत् । पक्वानिसारकुष्ठश्चरक्तपित्तंविनाशयेत् ॥
निर्यासोऽस्यमतोनाम्नाकुन्दुरु सुजभापितः ॥ (नि० २०)

अर्थ-शालई-पुष्टिकारक, कपेली, शीतवीर्य, मधुर, कटवी, मलरोधक तथा रुधिरविकार, घण, कफ, वात, पित्त, यवासीर, पक्षातिसार, कोट और रक्तपित्तका नाशकरे है । इसके गोदको विद्वान् कुन्दुरु कहते हैं ।

विवरण-शलकी अयात् शालईका बहुत बड़ा वृक्ष होता है पत्ते नीमक समान होते हैं, फलमें तीनरेखा होती है, इमीशुभका गोद, कुन्दुरु होता है ।

अर्जुननामानि ।

अर्जुन. फाल्गुन. पार्थश्वित्रयोधीधनजय ।

वेरांतक.किरीटी च नदीसर्जोथपाडव ॥

अर्थ-अर्जुन-फाल्गुन, पार्थ, श्वित्रयोधी, धनजय, बैरान्तक, किरीटी, नदीसर्ज, पाडव (वीरतरु, इन्द्रद्रु, कटुभ, इन्द्रद्रुम, शम्भर, गण्डर्वा, कर्णारि, कर्णारक, कौन्तेय, इन्द्रधनु, गण्डर्वा, शिवमल्ल, सत्पगानी, वीरद्रु, वृष्णमारुधि धृयाज, धन्वी, यौग, वीरगृह, धरत) ।

| | |
|---------------|---------------|
| गन्धुतभाषामे | अधुन । |
| हिन्दीभाषामे | कोट, घाट । |
| बगलाभाषामे | अर्जुनगाछ । |
| मराठीभाषामे | सारदोट । |
| गुजरातीभाषामे | वटायो । |
| तेलुगुभाषामे | मट्टियेद्रु । |

कर्णाटकीभापामे तारेमत्ति ।

लेटिन्भापामें स्क्वर्युलियायुरेन्स । *Sterculia urens*

अस्य गुणा ।

ककुभ.शीतलोभग्रक्षतक्षयविपास्रजित् ।

मेदोमेहव्रणान्हन्ति तुवर.कफपित्तहृत ॥ (भा०प्र०)

अर्थ—अर्जुन शीतल, कपेला, तथा भग्न, क्षत, क्षय, विष, रुधिरविकार, मेद, प्रमेह, व्रण और कफपित्तको दूर करेह ।

अन्यच्च ।

अर्जुनस्तुकपायोष्ण.कफघ्नोव्रणशोधन ।

पित्तश्रमतृपार्तिघ्नोमारुतामयकोपन ॥ (रा०नि०)

अर्थ—अर्जुन—कपेला, गरम, कफनाशक, व्रणशोधक, तथा पित्त श्रम और तृपानिवारक है एव वातरोगको कुपित करेह ।

अन्यच्च ।

पार्थ पथ्येक्षतेभग्नेरक्तस्तम्भनकृच्छूयो (रा नि)

अर्थ—अर्जुन—क्षत, भग्न, रक्तस्तम्भ और मूत्रकृच्छ्ररोगमें हितकारी है ।

अपिच ।

अर्जुनस्तुवरश्चोष्णमधुर शीतलःस्मृत । कान्तिदोषलकृ-

च्चैवलघुव्रणविशोधक ॥ अस्थिभगास्थिसंहारेहित.कफ-

विनाशक । पित्तश्रमतृपादाहमेहवातविनाशक ॥ हृद्रोग

पाण्डुरोगचविषवाधाक्षतक्षयम् । मेदोवृद्धिरक्तदोषघ्नम् श्वा-

मक्षततथा ॥ भस्मरोगनाशयति पूर्वैरिति निरूपितम् । (नि०र०)

अर्थ—अर्जुन—कपेला, उष्ण, मधुर, शीतल, कान्तिजनक, चल्कारक हल्का, व्रणशोधक, तथा, अस्थिभग्न, अस्थिमहार, कफ, पित्त, श्रम, तृपा, दाह प्रमेह, हृदयरोग, पाण्डुरोग, विषवाधा, क्षतक्षय, मेदवृद्धि, रुधिर-विकार, पसीना, श्वास, क्षत और भस्मरोगको नाश करेह ।

विवरण—अर्जुनके पृष्ठ वडे २ लम्बे और ऊँचे २ बनोंमें होतेहैं, इसके पत्ते लम्बे और गोल अनीदार होतेहैं इसकी छाल सफेद रंगकी होतीहै और उसमें दूध निकलताहै ।

अमननानानि ।

बीजकः पीतसारश्च पीतमालक इत्यपि ।

चन्दूकपुष्प प्रियक सर्जकश्चासन-स्मृत ॥

अर्थ-बीजक, पीतसार, पीतमालक, चन्दूकपुष्प, प्रियक, अमन,
(पीतशाल, पीतशालक, पीतमाल, परमायुध, महामर्ज, मीरि, वधूकपुष्प,
बीजवृक्ष, नीलक, गियमालक, अमन)

| | |
|----------------|---|
| मरूतभाषामं | अमन, बीजक, पीतसार । |
| हिंदाभाषामं | आमन, विजयगार । विजयगारया गोट । |
| वगभाषामं | पियाशाल । |
| मगठाभाषामं | विवटा, विरज गारा गोट । |
| गुजरातीभाषामं | बीया, हीरादखण, बीषानो गुट । |
| कर्णाटकीभाषामं | केपिजदाने । |
| तेलुगुभाषामं | मादि । |
| व० | अमन । |
| इम्रेजीभाषामं | इन्डियन् किनोरी । It is a kind of |
| लैटिनभाषामं | शेफोफोम मामुपिय । Pterocarpus Marsupium |
| फारसीभाषामं | कमरफम् । |

अमनगुणा ।

अमन-कटुरुष्णश्च तित्तोवातातिदोपनुत ।

सारको गलदोपमोरक्तमडलनाशन ॥ (राजनिघण्टु)

अर्थ-अमन (विजयगार)-गरमी, गरम, कटवी, वातातिदोषनाशक,
सारक, गलरोगनिवारक और रक्तमडलनाशक है ।

अपच ।

बीजक कुष्ठनीमर्षश्चित्रमेतद्गुदकृमीन ।

हन्ति श्रेष्ठात्पित्तचत्वच्य केचोरमायन ॥ (भा० प्र०)

अर्थ-विजयगार-कोष्ठ, विष, विषप्रद प्रमेद, गुदाके रोग, कृमी,
पच और रक्तपिच्छका नाश करे है, तथा और पेशाबों स्थिरांग तथा
रगापन है ।

अपच गुणगुणा ।

अमनस्यनुपुष्पाणि विपाके मधुगणिच ।

तिक्तानिपाचनीयानिवातलानिभवन्तिहि ॥

अर्थ-विजयसारके फूल-पचनेमें मधुर, कडवे, पाचक और वादी है ।

विवरण-असन अर्थात् विजयसारके वृक्ष वनोंमें बहुत बड़े २ होतेहैं । पत्ते पीपलके पत्तासे कुछ २ छोटे होते हैं, फल पीले आमलेके समान होतेहैं इसकी लकड़ी कालापन गिये होती है ।

खदिरनामानि ।

खदिरोरक्तसारश्चगायत्रीदन्तधावनः ।

कण्टकीवालपत्रश्चबहुशल्यश्चयाज्ञिक ॥

अर्थ-खदिर, रक्तसार, गायत्री, दन्तधावन, कण्टकी, वालपत्र, बहुशल्य, याज्ञिक, (वालतनय, पथिद्रुम, तिक्तमार, कण्टकीद्रुम, प्रसख, युपद्रु, बाल-पुत्र, कर्कटी, जिह्वाशल्य, कुष्ठद्रुत, नालपत्रक, यूपद्रुम, खद्यपत्री, क्षितिक्षम, सुशल्य, वक्रकण्टक, यज्ञाग, जिह्वाशल्य, सारद्रुम, कुष्ठारि, नहुमार, मेध्य)

श्वेतखदिरनामानि ।



खदिर श्वेतसर्गोऽन्य कदर सोमवल्कल ।

अर्थ-खदिर, श्वेतसार, कदर, सोमवल्कल, (सोमवल्क, नम्रशल्य खदिरापन, काम्मुक, कुजकण्टक, सोमसार, सोमवृक्ष, पथिद्रुम श्याममार, नेमिवृक्ष, कण्ठादय, महावृक्ष, द्विजाभिष)

| | |
|-----------------|--------------------------------------|
| संस्कृतभाषामें | खदिर, श्वेतखदिर । |
| हिन्दीभाषामें | खैर, सफेदखैर, पपडिपार्गर (कट्या) । |
| बंगभाषामें | खयैरगाळ, पापरीखयैरगाळ । |
| मराठीभाषामें | खैर, पाडगाखैर । |
| गुजरातीभाषामें | खैरियो, गोरड । |
| कर्णाटकीभाषामें | कैपिनखैर बिलीयतर्पि । |
| तैलिङ्गीभाषामें | चडचेद्रु, ग्वामु तेलचड । |
| लैट्न्भाषामें | एकेअपकेट्रेन्गु । |

सदिरगुणा ।

खदिरःशीतलोदन्त्यःकण्डूकासारुचिप्रणुत ।

तित्त कपायोमेदोघ्न कृमिमेहज्वरघ्नान् ॥

श्वित्रशोथामपित्तास्रपाण्डुकुष्ठकफान्दरेत् । (भा०प्र०)

अर्थ-खैर-शीतल, दातोंको दह करनेवाली, कड़वी, कपेली तथा कण्डू, खोंसी, अरुचि, भेद, कृमि, प्रमेह, ज्वर घ्न, श्वित्रकुष्ठ, शोथ आम, रक्त-पित्त, पाण्डुरोग, कुष्ठ और कफको दूर करनेवाली है ।

श्वेतखदिरगुणा ।

कदरोविशदोव्रण्योमुखरोगकफान्नजित ।

“हन्तिकण्डूविपश्लेष्मकृमिकुष्ठव्रणग्रहान्” ॥ (भा०प्र०)

अर्थ-सफेद खैर-विशद, घ्नको दितकारी तथा मुखरोग, कफ, रुधि रदोष, कण्डू, विष, श्लेष्म, कृमि, कौट, घ्न और ग्रहवाधाको हरे है ।

अथवा ।

श्वेतस्तुखदिरस्तिक्त कपायःकटुरुष्णक ।

कण्डूतिकुष्ठभृतघ्न कफवातव्रणापह । ॥ (रा०नि०)

अर्थ-सफेद खैर-कड़वी, कपेली, चरपरी, गरम तथा कण्डू, कुष्ठ, भृतवाधा, कफ, वात, और व्रणको दूर करनेवाली है ।

अथनिष्पासादिगुणा ।

निर्यासस्तस्यमधुरोवत्य शुक्रविवर्द्धन ।

सारस्तुविशदोव्रण्योमुखरोगकफान्नजित ॥ (प्र०पि०)

अर्थ-इसका गोंद-मधुर, घटकात्क, शुक्रवर्द्धक, इसका सार विशद, व्रणको दितकारी तथा मुखरोग, कफ और रुधिरके दोषोंको दूर करे है ।

खदिरस्यारवागुणा ।

खादिर खदिरोत्तद्गस्तत्सारंगद स्मृत ।

अर्थ-खादिर, खदिगेदृत, गद (अदृतसार ग, सगार रादि-शर्षंगा)

गस्तुमभाषाम

सर्दिगसार ।

हिन्दीभाषाम

रोगसार, ब-या ।

बेगभाषाम

खदेर ।

| | |
|-----------------|-------------------------------------|
| मराठीभाषामें | खैराचा साड, नार, कात |
| गुजरातीभाषामें | खैरसार, काथो । |
| कर्णाटकीभाषामें | काथ । |
| इंग्रेजीभाषामें | केटेच्यु । Catechu |
| लैटिन्भाषामें | केटेच्युएक्वाकुट । Garcobneytraenim |
| फारसीभाषामें | कात । |
| अरबीभाषामें | कात । |

अस्य गुणा ।

खादिरस्तुवरोष्णश्चतित्तोरुचिकरोमतः । अग्निदीप्तिकरो
ग्राहीदंतदाढ्यकरोमतः ॥ कटुक कफवातानां व्रणस्य च
विनाशकः । कण्ठरोगसर्वमेहकृमीन्मुखरुजतथा ॥ अष्टा-
दशैव कुष्ठानि स्थौल्यचार्शच नाशयेत् ।

अर्थ—खादिरसार तथा कत्या—कपेला, गरम, कडवा, रुचिकारक, अग्नि-
प्रदीपक, मलरोधक, दातांको दृढ करनेवाला, चरपरा तथा कफ, वात, व्रण,
कण्ठरोग, सर्वप्रकारके प्रमेह, कृमि, मुखरोग, अठारह १८ प्रकारके कोढ़,
शरीरकी स्थूलता और बवासीरको दूर करे है ।

विट्खदिरगामानि ।

इरिमेदो विट्खदिर कालस्कन्धोऽरिमेदकः ।

अर्थ—इरिमेद, विट्खदिर, कालस्कन्ध, अरिमेदक (विट, इरिमेद, अरि-
मेद, किमिशान्न, गिरिमेद, मरुद्रुम, रिमेद, गोधास्कन्ध, अहिमार, पृति-
मेद, अहिमेदक)

| | |
|-----------------|---------------------------------------|
| संस्कृतभाषामें | अरिमेद । |
| हिन्दीभाषामें | दुर्गधितैर । |
| बंगभाषामें | गुयेवान्ला, विटखपेर) |
| मराठीभाषामें | शेष्याखैर, गधियाहिवर, घाणेगखैर । |
| गुजरातीभाषामें | इरिमेद, गन्धिलोखैर । |
| इंग्रेजीभाषामें | स्पंजट्री Spongo tree |
| लैटिन्भाषामें | एकेसीया फारनेसीयाना Acacia Farnesiana |

अस्य गुणा ।

इरिमेद कपायोष्णो मुखदन्तगदासजित् ।

रादिगुणा ।

खदिर शीतलोदन्त्यः कण्डूकासारुचिप्रणुत् ।

तिक्त कपायोमेदोघ्नः कृमिमेहज्वरघ्नान् ॥

श्वित्रशोथामपित्तास्रपाण्डुकुष्ठकफान् हरेत् । (भा० प्र०)

अर्थ-खैर-शीतल, दातको दृढ करनेवाली, कड़वी, कपेली तथा कण्टू खोंसी, अरुचि, मेह, कृमि, प्रमेह, ज्वर, घ्रग, भिन्नकुष्ठ, शोथ, आम, रक्त-पित्त, पाण्डुरोग, कुष्ठ और कफको दूर करनेवाली है ।

भेत्तगन्धिगुणा ।

कदरोविशदोव्रण्यो मुखरोगकफान्नजित् ।

“हन्ति कण्डूविपश्चेष्मकृमिकुष्ठव्रणग्रहान्” ॥ (भा० प्र०)

अर्थ-तफेद खैर-विशद, घ्रगको हितकारी तथा मुखरोग, कफ, कृमि-ग्रीव, कण्टू, विष, श्लेष्म, कृमि, फोड, घ्रग और घ्रदपाघातों को हरे है ।

अपच ।

श्वेतस्तुखदिग्स्तिक्त कपायः कटुरुष्णक ।

कण्डूतिकुष्ठभूतघ्नः कफवातघ्नोऽपह ॥ (रा० नि०)

अर्थ-सफेद खैर-कड़वी, कपेली, चरपरी, गरम तथा कण्टू, दुग्ध, भूतपाघा, कफ, वात, और घ्रणको दूर करनेवाली है ।

अपच निष्पायादिगुणा ।

निर्य्यासस्तस्य मधुरोऽल्पश्च शुकविवर्द्धनः ।

सारस्तु विशदोव्रण्यो मुखरोगकफान्नजित् ॥ (ग० वि०)

अर्थ-इसका गोंद-मधुर, पल्लवरास, शुक्रादक, इसका सार विशद, घ्रणको हितकारी तथा मुखरोग, कफ और श्लेष्म के दोषोंको दूर करे है ।

रादिस्मारनामानि ।

खादिर खदिरोत्तद्भस्मत्सारोऽगदं स्मृतम् ।

अर्थ-खादिर, खदिरोद्भूत, रगत (अद्वतगा रगत, गायक रगि-शर्करा)

संस्क्रुतभाषामें

खदिग्मार ।

दिन्दीभाषामें

खैरमार, कल्या ।

वैजभाषामें

खपेर ।

| | |
|-----------------|---------------------------------------|
| मराठीभाषामें | खैराचा साड, नार, कात |
| गुजरातीभाषामें | खैरसार, कायो । |
| कर्णाटकीभाषामें | काथ । |
| इंग्रेजीभाषामें | केटेच्यु । Catechu |
| लैटिन्भाषामें | केटेच्युएक्व्वाकुट । Gareebneytraenim |
| फारसीभाषामें | कात । |
| अरबीभाषामें | कात । |

अस्यगुणा ।

खादिरस्तुवरोष्णश्चतित्तोरुचिकरोमतः । अग्निदीप्तिकरो
ग्राहीदतदाढ्यकरोमतः ॥ कटुककफवातानां व्रणस्य च
विनाशकः । कण्ठरोगसर्वमेहकृमीन्मुखरुजंतथा ॥ अप्पा-
दशैवकुष्ठानिस्थौल्यचार्शचनाशयेत् ।

अर्थ—खादिरसार तथा कत्या—कपेला, गरम, कडवा, रुचिकारक, अग्नि-
प्रदीपक, मलरोधक, दाताको दृढ करनेवाला, चरपरा तथा कफ, वात, व्रण,
कण्ठरोग, सर्वप्रकारके प्रमेह, कृमि, मुखरोग, अठारह १८ प्रकारके कोढ़,
शरीरकी स्थूलता और चवासीरको दूर करे हे ।

विट्गदिग्गामानि ।

इरिमेदोविट्खदिर कालस्कन्धोऽरिमेदकः ।

अर्थ—इरिमेद, विट्खदिर, कालस्कन्ध, अरिमेदक (विट, इरिमेद, असि-
मेद, क्रिमिशान्नव, गिरिमेद, मरुद्रुम, रिमेद, गोधास्कन्ध, अहिमार, पृति-
भेद, अहिमेदक)

| | |
|-----------------|---------------------------------------|
| संस्कृतभाषामें | अरिमेदः । |
| हिन्दीभाषामें | दुर्गधिलेर । |
| वगभाषामें | गुयेवान्ला, विटखपेर) |
| मराठीभाषामें | शेण्यारखैर, गंधियाहिवर, धाणेराखैर । |
| गुजरातीभाषामें | इरिमेद, गन्धिलोखेर । |
| इंग्रेजीभाषामें | स्पंजट्री Spongia tne |
| लैटिन्भाषामें | एकेगीया फारनेशीयाना Acaia larnesianna |

अस्य गुणा ।

इरिमेद कपायोष्णोमुखदन्तगदासजित् ।

हन्तिरुण्डविपश्येष्मकृमिकुष्ठविषव्रणान् ॥ (भा० ५०)

अर्थ-दुर्गंधरोग-कपेली, गरम तथा भुखरोग, इन्तरोग, रुधिरविकार, कण्ट, विष, कफ, कृमि, कोढ़, विष और प्रगसो दूर होते हैं ।

भाष्य ।

अग्निमेद कपायोष्णस्तिक्तकोभूतनाशनः ।

शोफातिमारकामघ्नोऽपिर्वासर्पनाशन ॥ (ग० नि०)

अर्थ-दुर्गंधरोग-कपेली, गरम, कडवा, भूतनाशक तथा सृजन, अति मार, खोंगी, विषविकार और विषपेको दग्धेवाला है ।

भाष्यनिष्ठातमुणा ।

अग्निमेदस्यनिर्व्यासोमधुरस्तुवलप्रदः ।

धातुवृद्धिकश्चैवमुनिभिः सप्रभापितः ॥ (नि० ७०)

अर्थ-अग्निमेदता गोंद-मधुर, बन्धदंष्ट्र और धातुवृद्धि है ।

धनुर्गदिरमुणा ।

लघुस्तुखदिरः प्रोक्तस्तिक्तोष्णश्चरुपायकः । कटुस्तीक्ष्ण-
श्चअम्लश्चरुश्च कृमिकफापहः ॥ भुखरोगदतरोगरक्तदोषं
प्रमेहकम् । मदकण्डूविमर्षचर्माग्निरोगविषज्वरम् ॥ पिशा-
चवाधामुन्मादकुष्ठदाहं ज्वरतथा । आध्मानं नाशयत्यंशफल-
चास्यमधुमृतम् । मिथ्यरुहं प्लगमत्तचरुफलातविनाशकम् ।

अर्थ-लघुर्गद-कडवा, गरम, कपेली, चापरा, तीक्ष्ण, अम्ल, रुणा तथा कृमि, कफ, भुखरोग, दंतरोग, रुधिरविकार, प्रमेह, मार, कण्ट, विमर्ष, वस्तिरोग, विषमयूर, पिशाचवाधा, उन्माद, कोढ़, दाह, प्रग और नाशमानको दूर करते हैं । इति ७०-मधुर, मिथ्य, चापरा, गरम तथा कटु और वातविनाशक है ।

कटोर्गदिरमुणा ।

चर्मीयदिरकस्तिक्तः कटुश्चोष्ण कपायकः ।

रमेष्टश्चानकामघ्नः पित्तगतविशेषजित् ॥ (नि० ७१)

अर्थ-चर्मीयद-कडवा, चापरा, गरम कपेली, रुणा कटुभाग गोंगी विष रक्तविकार और विशेषजित है ।

विवरण । रौरके वृक्ष वनमें बड़े २ होतेहैं, इसकी छाल खगदरी और, चटकी हुई होतीहै, इसके पत्ते आमलेकेमें छोटे २ होतेहैं, इसपर महीन २ और टेढ़े २ काँटे होतेहैं, खैरसाग और कल्या यह भी रौरहीके एकडीका बनाया जाताहै, दूसरे सफेद रौर और दुर्गन्धित रौरके वृक्ष वनमें बहुत होते हैं ।

रोहीतकनामानि ।

गेहीतकोरोहितकश्चरोहितःकुशाल्मलीदाडिमपुष्पसज्ञकः ॥

सदाप्रसून सचकूटशाल्मलिर्विरोचन शाल्मलिकोनवाहयः

अर्थ-रोहीतक, रोहितक, रोहित, कुशाल्मली, दाडिमपुष्पसज्ञक, सदा-प्रसून, कूटशाल्मलि, विरोचन, शाल्मलिक, (रक्तपुष्प, सदापुष्प, रक्तज्ञ, स्त्रीहनाशन, स्त्रीहघाती, रुच्य, रक्तप्रसादन, रोही, स्त्रीहशत्रु, दाडिमपुष्पक, स्त्रीहघ्न, मासदलन, यकृद्द्वी, चलच्छद, स्त्रीहारि, रोहितेय, रोहिण)

श्वेतरोहीतकनामानि ।

सप्ताह्व श्वेतरोहीत सितपुष्प सिताह्वयः ।

सितांग शुक्ररोहीतोलक्ष्मीवाजनवल्लभः ।

अर्थ-सप्ताह्व, श्वेतरोहीत, सितपुष्प, सिताह्वय, सितांग, शुक्ररोहीत, लक्ष्मीवान, जनवल्लभ (क्षारयोग्य, लक्ष्मी, सर्वजनप्रिय)

संस्कृतभाषामें रोहितक, कूटशाल्मली, श्वेतरोहितक ।

हिन्दीभाषामें रोहेडा ।

वगभाषामें रोडा, रयना, नयना, कडार ।

मराठीभाषामें रक्तरोहिडा ।

गुजरातीभाषामें रगतराहिडो, श्वतराहिडो ।

कर्णाटकीभाषामें यरहुमल, मुत्तल ।

तेलिङ्गीभाषामें मुन्डमोदुगचेट्टु ।

लैटिन्भाषामें टेक्रोमा जण्ड्युपेटा । *Te oma undulata*

रोहीतकोयकूटस्त्रीहगुल्मोदग्रहर पर (रा ० व ०)

अभ्य गुणाः ।

अर्थ-रोहेडा-घट्ट-स्त्रीदा, गुल्म और उदररोगनाशक है ।

अभ्यञ्ज ।

रोहीतकोकटुमिर्गधौकपायौचसुशीतलो ।

कृमिदोषव्रणप्लीहा रक्तनेत्रामयापहो ॥

अर्थ—दोनों प्रकारके गोंदें—चरपे, स्निग्ध, शीतल, कपेले तथा कृमि रोग, व्रण प्लीहा, रक्तविकार और नेत्ररोगोंको दूर करे।

अधिक ।

गोहीतकट्यस्निग्धतुवरकटुकमतम् । रक्तप्रसादनंतिकंशी-
तलचसम्मतम् ॥ कृमिप्लीहारक्तदोषव्रणकर्णरुजापहम् ।
विपुनेत्ररुजगुल्मयकृत्कफविनाशनम् ॥ वातविषण्वंमांस-
चमदशूलचनाशयेत । आनाहभूतवायांचनाशयेदितिकीर्ति-
तम् ॥ (नि० २०)

अर्थ—दोनोंप्रकारके गोंदें—स्निग्ध, कपेले, चरपे रक्तप्रसादन, कट्ये, शीतल, मांसक तथा कृमि, प्लीहा, रुधिरविकार, व्रण, कर्णरोग, विष, नेत्ररोग, गुल्म, यकृत, कफ, वात, विषण्व, मांस घट, शूल, आनाह, और भूतवायुको दूर करे ।

विवरण । गोंदेंके वृक्ष यनोंमें अधिक होता है, पूर्य अनारकी समान होता है लाल और गंध इन पूर्यके भेदमें गोंदेंकी दो जाती है, गजनिंदुम लाल गोंदें और कृष्णाल्मलीके फलप्र नाम तथा गुण निरोंह और गोदलनिन्दुमी कृष्णाल्मली और लाल गोंदेंका प्यही लिखा है, पित्तु भावप्रकाशमें लाल गोंदें और कृष्णाल्मली भिन्न २ लिखे हैं और गुणभी भिन्न २ लिखे हैं तो भावप्रकाशमें कृष्णाल्मलीके नाम और गुण भाग लिखे हैं ।

बहुनामाति ।



मालाफलोपपन्नलोपुग्मकण्टोदृढारुह ।
रण्टकीमृक्षमपश्वपीतपुष्पकपायक ॥

अर्थ-मालाफल, ववूल, युग्मकण्ट, दृढारुह, कण्टकी, सूक्ष्मपत्र, पीत-
पुष्प, कपाय (किंकिरात, किंकिराट, युगलाक्ष, कण्टलु, तीक्ष्णकण्टकगोशृंग,
पल्लिवीज, दीर्घकटक, कफान्तक, दृढवीज, अजभक्ष, कण्टल, ववूल, वव्वोल,
वावल, स्वर्णपुष्प, पीतक)

| | |
|-----------------|---|
| संस्कृतभाषामें | ववूर, ववूल । |
| हिन्दीभाषामें | ववूर, कीकर, २ ववूरका गाद । |
| वगभाषामें | वाव्गालाठ । |
| मराठीभाषामें | दाभूळ, वावूल, कीकर, २ वाभळीचा गाद । |
| गुजरातीभाषामें | वावल । |
| कर्णाटकीभाषामें | पुलई । |
| तैलिङ्गीभाषामें | वलवतडु, नल्लुम्म । |
| औत्क० | गुडडा । |
| वम्० | रोमकडि । |
| दामिलीभाषामें | कलिकिकर । |
| इथ्रेजीभाषामें | एकेश्पात्री । <i>Acacia tree</i> |
| | गम् आरेवीक । <i>Gu n Arabic</i> |
| लैटिन्भाषामें | एकेश्पा आरेवीका । <i>Acacia Arabica</i> |
| | एकेश्पा गम्मि । <i>A Gummi</i> |
| फारसीभाषामें | मुगिला = गोन् । |
| अरबीभाषामें | अमुगिला ३ सिमग । |
| | अस्य गुणा । |

ववूरस्तुकपायोष्ण कफकासामयापह ।

आमरक्तातिसारघ्न पित्तदाहार्थनाशन. ॥ (रा० नि०)

अर्थ-ववूर-कपेला, गरम तथा कफ, खाँसी, आम, रक्तातिसार, पित्त,
दाह और, घवासीरको दूर करे है ।

अपिच ।

ववूल कफनुद्वाहीकुष्ठक्रिमिविपापह । (भा० प्र०)

अर्थ-ववूल कफनाशक, मलगेधक तथा कोष्ठ, कृमि और विषविना
शक है ।

अपिच ।

ववूलस्तित्तमधुर त्रिग्ध शीतोष्णवृवर । आमरक्ताति-

साराणां नाशनो ग्राहको मतः ॥ कफकामचपित्तचदाहरत्त-
तिसारकम् । वातप्रमेदशमयेत्पर्णन्तुग्रहकं मतम् ॥ रुच्य
कटुष्णकामघ्नवातपुस्त्वकफार्शनुत् ॥ (नि० १०)

अर्थ-वयूर-कडवा, मयूर, स्निग्ध, शीतल, गरम, कपेला, मन्मोघ
तथा आम, रक्तातिमार, कफ, रोगी, पित्त, दाह, वात और प्रमेदों दूर
करे। इमके पत्ते-मल्लोदक, रुचिकारक, चर्परे, गरम तथा रोगी, वात,
पुरुषता, कफ और चरामीरको हरे।

अम्य का गुणा ।

“वच्चूलस्य फलरुक्षविशदस्तम्भनंगुरु ।

कपायमधुरं शीतिलेग्वनकफपित्तहृत् ॥” (भाष्यकाश)

अर्थ-वयूरकी फली-सूती, विषण, मलस्तम्भक, भारी, कपेला, मयूर,
शीतल स्वेपन तथा कफ और पित्तनाशक है ।

अरुणिका गुणा ।

वच्चूलस्य तु निर्व्यामो ग्राही पित्तानिलापहः ।

रक्तातिसारपित्तान्वमेदप्रदरनाशनः ।

भग्नसन्धानकं शीत शोणितस्रुतिवारण ॥ (आ० सं०)

अर्थ-वयूरका गाड़-मलसंधक, पित्त और वातनाशक तथा रक्तानिहार,
रक्तपित्त, प्रमेद और प्रदरों दूर करे है । भग्नसन्धानकारक, शीतल और
रुचिकारक गिरनेको रोक करे है ।

विषण-वयूरके बहुतमे वृक्ष जलाशयके समीप जगत्तदिम पत्र उपज
गड़े होते हैं, इमसे सुखे समान महातीक्ष्ण पोटि होते हैं और वे पत्र ३० से
पत्र गड़े होते हैं । पत्ते बहुत छोटे = आमलेकमे होते हैं, पूरा पाने इमके
गोल = लगे हैं, उममें मित्रके सहज प्रेमी = पत्नी होती है ।

अरिष्टनाशक ।

अरिष्टस्तमाहृत्य कृष्णार्णोर्धनाशनः ।

रक्तबीज पीतफेन फेनिलोगर्भपातनः ॥

अर्थ-अरिष्ट, माद्वन्ध, कृष्णार्ण, अर्धमाषा, रक्तबीज, पीतबीज,
देनिक, गर्भपातन (गेडा घुस्सल, अरिष्ट, ममस्य सुम्भर्षाग, दर्शक
गामरन्कर)

| | |
|-----------------|--|
| सस्कृतभाषामे | अरिष्टक । |
| हिन्दीभाषामें | रीठा । |
| वगभाषामें | रिटेगाऊ । |
| मराठीभाषामें | रिठा । |
| गुजरातीभाषामें | अरिठा । |
| तेलुगुभाषामें | कुकुड । |
| इंग्रेजीभाषामें | सोपबेरी सोपनट । Soap berry Soap nut |
| लैटिनभाषामें | सेपिस्त इमार्जिनटस । <i>Sapintus emarginatus</i> सेपिडस ट्रिफोलियेटस । <i>S Trifoliatum</i> |
| फारसीभाषामें | फिदकाईदी । |
| अरबीभाषामें | बुदक । |

अस्य गुणा ।

अरिष्टकस्त्रिदोषघ्नो ग्रहजिह्वर्भपातनः । (भा० प्र०)

अर्थ—रीठा—त्रिदोषनाशक, ग्रहविनाशक और गर्भको गिरानेवाला है ।

अन्यथा ।

अरिष्टकः कटुः पाके तीक्ष्णोष्णो लेखनो गुरु । दोषत्रयहरो गर्भपातनो गर्भशान्तिकृत् ॥ तत्र लवामकपानान्नस्याच्छीर्षरुजापहम् । अर्धशीर्षव्यथाहन्ति वमनाद्विपनाशनम् ॥

अर्थ—रीठा—पचनेमें चरपरा, तीक्ष्ण, गरम, लेखन, भारी, त्रिदोषनाशक, गर्भको गिरानेवाला तथा गर्भको शान्ति करनेवाला है । इसके जलको पीनेसे वमन होती है और वमनमें विष दूर होता है । इसके जलका नास लेनेसे मस्तक रोग और आघातोंसी दूर होती है ।

विवरण । रीठके वृक्ष—वन और उपवनमें होते हैं, पत्ते रीठके एक डंडीम ६।७ लगे होते हैं, फल अमरोंमें आते हैं । रीठके झागोंसे बन्ध घोंते हैं ।

पुत्रजीवनामानि ।

पुत्रजीव पवित्रश्च गर्भदः सुतजीवकः ।

पुत्रजीवोपत्यजीव सिद्धिदोपत्यजीवकः ॥

अर्थ—पुत्रजीव, पवित्र गर्भद, सुतजीवक, पुत्रजीव, अपत्यजीव, मिद्धिद, अपत्यजीवक, (गर्भकर, जीवपुत्रक, क्षीपटापह, कुमारजीव, यष्टीपुष्प, अर्धसाधक)

| | |
|-----------------|---|
| संस्कृतभाषामें | पुत्रजीव । |
| हिन्दीभाषामें | जियापोता, पनिजिया, निपापति, पितीजिया । |
| बगभाषामें | जियापुता, पुतजिया । |
| मराठीभाषामें | पुत्रजीवकट्टा । |
| गुजरातीभाषामें | पुत्रजीवक । |
| कर्णाटकीभाषामें | पुत्रजीव । |
| तैलुगुभाषामें | पुत्रजीव । |
| लैटिनभाषामें | पुत्रजीव । |
| | पुत्रजीव । राक्सपुर्णिभाई । Putrajan Raakshapurni |
| | अथ पुत्रजीव । |

पुत्रजीवोगुरुर्वृष्योगर्भद श्लेष्मवातकृत ।

सष्टमूत्रमलोन्मोहिमःस्वादु कटु पटु ॥ (भा०प्र०)

अर्थ-जीवापोता-भागी, वीर्यवर्द्धक, गमदायाक, पत्रसारक, मत्स्य
यको करनेवाला, रुग्ण, शीतल, स्वादु, चरपग, और रसायन है ।

अथ ।

पुत्रजीवोहिमोवृष्य श्लेष्मदोगर्भजीवदः ।

चक्षुष्य पित्तशमनोदाहृतृष्णानिवारण ॥ (रा०नि०)

अर्थ-जीवापोता-शीतल, वीर्यवर्द्धक, पत्रसारक, गर्भ और जीवदायक,
नेत्रोंको दृष्टिकारी, पित्तको शान्त करनेवाला तथा दाह और तृष्णाको हर्ने-
वाला है ।

विशरण । पुत्रजीवक अथवा पतिजियाके वृक्ष सम्पूर्ण इन्द्रियों पर
गमान होता है पक्षेभी उमा आकारके, पत्रभी उमा आकारके होते हैं और
इसके बीजाकी माला रुद्धासती गुण्य बनती है, माष, माषु गगन गहन
बनातेहै ।

इन्द्रगुहोमायादि ।

इन्द्रगुहोमायावृक्षश्चित्तकस्तपामसद्रुमः ॥

अर्थ-इन्द्र, अद्भुत वृक्ष चित्तक, तपामस (मलवीर्य, इन्द्र, वृक्ष,
पुत्रपदा, तापसक, इन्द्र, इन्द्रपत्र, विषयक, अनिष्टावक, मोक्षक, मनुष्य,
शरीर, विषयक, मोक्षक, श्लेष्मक, प्रसिद्ध, विषयक, दाहक,
पित्तमस, वृक्षक, शान्त प्रसिद्ध, शीतल, नेत्रोंको, दाहक,
और भक्षक)

| | |
|-----------------|---|
| संस्कृतभाषामें | इगुदी । |
| हिन्दीभाषामें | हिगोट, गोंदी । |
| बगभाषामें | जियापुता, इझोट । |
| मराठीभाषामें | हिगणनेट । |
| गुजरातीभाषामें | इगोरियो । |
| तैलिगीभाषामें | गरा । |
| इंग्रेजीभाषामें | डेलील । Delhi |
| लैटिन् भाषामें | बेल्लेनाइटीस राक्सबुर्धिआई Balanites Loxburilla |
| अरबीभाषामें | हिलेलजे । |

अथ गुणाः ।

इडुद कुष्ठभृतादिग्रहव्रणविपक्विमीन् ।

हन्त्युष्णश्चित्रशूलघ्नस्तिक्तककटुपाकवान् ॥ (भा प्र)

अर्थ—हिगोट—कोठ, भूतादिवाधा, ग्रहवावा, व्रण, विष, कृमि, श्वित्रकुष्ठ और शूलको निर्मूल करे है । गरम, कडवा और पचनेमें चरपरा है ।

अथ सू ।

इगुदीकफरक्तामग्रन्थिघ्नीस्याद्वर्णेहिता ।

ऐगुदंस्वादुतिक्तचस्निग्धोष्णश्लेष्मवातजित् ॥ (शा नि)

अर्थ—हिगोट—कफ, रक्ताम, ग्रन्थि और व्रणविनाशक है । इसका फल स्वादिष्ट, कडवा, स्निग्ध गरम तथा कफ और वातविनाशक है ।

अपिच ।

इगुदीनामकोवृक्षोमदगधि कटुर्लघु । तिक्तश्चोष्ण फेनिल-
श्चप्रोक्तश्चैवरसायन ॥ कृमीन्वातविषशूलश्चित्रकुष्ठं व्रण
कफम् । ग्रहपीडाभूतवाधानाशयेदितिकीर्तितम् ॥ अस्य पु-
ष्पन्तुमधुरस्निग्धचोष्णचतिक्तकम् । वातंकफनाशयतीत्ये-
वमाचार्य्यभाषितम् ॥ (नि० २०)

अर्थ—हिगोट—मदगन्धि युक्त, चरपरा, हल्का, कडवा, गरम, फेनिल,
(शागोकोकनेवाला) रसायन तथा कृमि, वात, विष, शूल, श्वित्रकुष्ठ, व्रण,
कफ, ग्रहपीडा और भूतवाधाको दूर करे है । इसके फल मधुर, स्निग्ध, गरम,
कडवे तथा वात और कफका नाशकरे है ।

आयुर्वेदमन्त्रागुणा ।

इंगुद्या फलमज्जकोजलयुतोलेपोमुमेकान्तिद । (१.जी)

अर्थ-इंगुदीके फलकी मज्जको जन्को नात्र मुमेक लेप करनेसे मुत्तरी कान्ति बढ़ती है ।

विवरण-इंगुदीके पत्र २ पृष्ठ जगल और वनाम उत्पन्न होते हैं, उन पृष्ठमें फाटेभी होते हैं, पूर्य नींदके समान कुठेर लग्ये और गोत्र होते हैं, फलसे ऊपर गुटलीके सदृश रस लगा रहता है माना फल रसमें ठर रहता है ।

जिह्मनीनामानि ।

जिह्मनीक्षिगिनीक्षिगीमुनिर्यासाप्रमोदिनी ॥

अर्थ-जिह्मनी, क्षिगिनी, मिह्मनी, मुनिर्यासा, प्रमोदिनी, (सुत्र म अरी, पार्यती)

मम्भनभाषामे

जिगिनी ।

दिदीयाषामे

जिगिनी ।

मराठीभाषामे

मोई मोय ।

गुजरातीभाषामे

मरेडी, मोनेहु ।

कर्णाटकीभाषामे

ओगीय, प्रम ।

तैलुगुभाषामे

ओम्नासादेमर । O m a r a d e m r

अर्थ गुणा ।

जिह्मनीमधुगमोष्णाकपायायानिभोधिनी ।

कट्टकात्रणहृद्रोगनाततीमारहृत्पद ॥ (भाष्यकाग)

अर्थ-जिह्मनी-मधु, गरम, फोटी, यारीशोषक, चरपरी तथा प्रस हृदयरोग, वान और अतिमारको दूर करे है और नमरति है ।

भाष्य ।

जिह्मनीमुसदोर्गपतृष्णावातकफापता ।

कट्टपाकाजयेडातवणतीमारहृदुज ॥ (मो० नि०)

अर्थ-जिह्मनी मुसरी दुर्गपता, दुषा, वात, कट्ट, वातप्रग अनिमार और हृदयरोगको दूर करे है तथा पथनेमें चरपरी है ।

विवरण-जिह्मनीके पत्र २ उभे पृष्ठ जगल और पहाडीमें होते हैं, पत्र मरेरे समान भाषाओंमें बगवत दोनों और रस होता है पूर्य नींद और पत्र केरके समान आते हैं ।

तमाक्षनामानि ।

तमालउक्तस्तापित्थः कालस्कन्धोमितद्रुम ।

लोकस्कन्धोनीलध्वजोनीलतालश्चसस्मृत ॥

अर्थ—तमाल, तापित्थ, कालस्कन्ध, अमितद्रुम, लोकस्कन्ध, नीलध्वज, नीलताल, (तापिञ्ज, तापिच्छ, कृष्णस्कन्ध, तम, तमा, कालताल, महानल)

| | |
|-----------------|-------------|
| संस्कृतभाषामें | तमाल । |
| हिन्दीभाषामें | स्यामतमाल । |
| वगभाषामें | तामालगाछ । |
| मराठीभाषामें | तमालवृक्ष । |
| गुजरातीभाषामें | तमाल । |
| तैलिङ्गीभाषामें | तमालु । |

अस्य गुणा ।

तमालस्तुवर' शोथदाहविस्फोटहृत्पुन ॥ (म०नि०)

अर्थ—स्यामतमाल—कपेला, सूजन, दाह और विस्फोटनाशक है ।

अन्यच्च ।

कालस्कन्धश्चमधुरोवलयोवृष्योगुरु स्मृत ।

धातुवृद्धिकरः शीत श्रमदाहकफापह ॥

पित्तशोथचविस्फोटपित्तचैवविनाशयेत ॥ (नि०र०)

अर्थ—स्यामतमाल—मधुर, बलवर्द्धक, वांछ्यवर्द्धक, भारी, धातुवर्द्धक शीतल तथा श्रम दाह, कफ पित्तसे उत्पन्न हुआ शोथरोग, विस्फोट और पित्तको दूर करे है ।

विवरण—तमालके वृक्ष प्रायः यमुना और तापी नदीके निकट बहुत होतेहैं, वृक्षकी मूल और शाखा श्यामरंगकी होतीहैं, पत्ते गोल और शीगमकी सहज और फूल लाल होतेहैं और फूल छोटे २ करीबके समान होतेहैं ।

तृणीनामानि ।

तृणीतुन्नकआपीनस्तुणिक कच्छकस्तथा ।

कुठेरक कान्तलकोनन्दीवृक्षश्चनन्दकः ॥

अस्यफलमज्जागुणा ।

इगुद्या.फलमज्जकोजलयुतोलेपोमुखेकान्तिदः । (व जी)

अर्थ-इगुदीके फलकीर्मिंगको जलके साथ मुखपे लेप करनेसे मुखकी कान्ति बढ़ती है ।

विवरण । इगुदीके वडे २ वृक्ष जगल और वनोंमें उत्पन्न होतेहैं, उस वृक्षमें काटेभी होतेहैं, फूल नींबूके समान कुठेक लम्बे और गोल होते हैं, फलके ऊपर गुठलीके सदृश रस लगा रहताहै मानों फल रसमें तर रहता है ।

जिङ्गिनीनामानि ।

जिङ्गिनीझिगिनीझिगीमुनिर्यासाप्रमोदिनी ॥

अर्थ-जिङ्गिनी, झिगिनी, झिङ्गी, मुनिर्यासा, प्रमोदिनी, (कुल म जरी, पार्वती)

संस्कृतभाषामें

जिगिनी ।

हिंदीभाषामें

जिगिणी ।

मराठीभाषामें

मोई, मोक ।

गुजरातीभाषामें

मवेडी, मोलेडु ।

कर्णाटकीभाषामें

ओरीथ, प्रग्म ।

लैटिनभाषामें

ओडिनावोडियर । Odina nodier

अस्य गुणा ।

जिङ्गिनीमधुरासोष्णाकपायायोनिशोधिनी ।

कटुकाव्रणहृद्गोवातातीसारहृत्पटु ॥ (भावप्रकाश)

अर्थ-जिङ्गिणी-मधुर, गरम, कपेली, योनिशोधक, चरपरी तथा व्रण, हृदयरोग, वात और अतिसारको दूर करे है और नमकीन है ।

अन्यथा ।

जिङ्गिनीमुखदोर्गध्यतृष्णावातकफापहा ।

कटुपाकाजयेद्वातव्रणातीसारहृद्भुज । ॥ (सो० नि०)

अर्थ-जिङ्गिनी-मुखकी दुर्गन्धता, तृषा, वात, कफ, वातव्रण, अतिसार और हृदयरोगको दूर करे है, तथा पचनेमें चरपरी है ।

विवरण-जिङ्गिनीके वडे २ उच्चे वृक्ष जगल और पहाडोंमें होतेहैं, पत्ते मरुवेके समान शाखाओंमें बराबर दोनों ओर लगे होतेहैं, फल मफेद और फल घेरके समान आतेहैं ।

तमाङ्गनामानि ।

तमालउक्तस्तापित्थ कालस्कन्धोमितद्रुमः ।

लोकस्कन्धोनीलध्वजोनीलतालश्चसस्मृत ॥

अर्थ—तमाल, तापित्थ, कालस्कन्ध, अमितद्रुम, लोकस्कन्ध, नीलध्वज नीलताल, (तापिञ्ज, तापिच्छ, कृष्णस्कन्ध, तम, तमा, कालताल, महाबल)

संस्कृतभाषामें

तमाल ।

हिन्दीभाषामें

स्यामतमाल ।

वगभाषामें

तामालगाड ।

मराठीभाषामें

तमालवृक्ष ।

गुजरातीभाषामें

तमाल ।

तैलिङ्गीभाषामें

तमाल ।

अस्य गुणा ।

तमालस्तुवरः शोथदाहविस्फोटहृत्पुन ॥ (म०नि०)

अर्थ—स्यामतमाल—कपेला, मूजन, दाह और विस्फोटनाशक है ।

अन्यच्च ।

कालस्कन्धश्चमधुरोवल्ग्योवृष्योगुरुः स्मृत ।

धातुवृद्धिकर शीत श्रमदाहकफापहः ॥

पित्तशोथचविस्फोटपित्तचैवविनाशयेत ॥ (नि०र०)

अर्थ—स्यामतमाल—मधुर, बलवर्द्धक, वीर्यवर्द्धक, भारी, धातुवर्द्धक, शीतल तथा श्रम दाह, कफ पित्तसे उत्पन्न हुआ शोथरोग, विस्फोट और पित्तको दूर करे है ।

विवरण—तमालके वृक्ष प्रायः यमुना और तापी नदीके निकट बहुत होतेहैं, वृक्षकी मूल और शाखा उपामरगकी होतीहैं, पत्ते गोल और शीशमकी सदृश और फूल लाल होतेहैं और फूल छोटे २ करीबके समान होतेहैं ।

तृणीनामानि ।

तृणीतुन्नकआपीनस्तुणिकः कच्छकस्तथा ।

कुठेरक कान्तलकोनन्दीवृक्षश्चनन्दकः ॥

अर्थ-तूणी, तुन्नक, आपीन, तुणिक, कच्छक, कुठेरक, कान्तलक, नन्दीवृक्ष, नन्दक (तूणीक, पीतक, कच्छप, कान्त, नन्दी)

अस्य गुणा ।

तूणीयक. कटुः पाकेकपायोमधुरोलघु ।

तिक्तोय्राहीहिमोवृष्योव्रणकुप्रासपित्तजित् (रा०नि०)

अर्थ-तूणी-पचनेमें चरपरी, कपेली, मधुर, हलकी, कडवी, मलरोधक, शीतल, वीर्यवर्द्धक तथा ग्रण, कुष्ठ और रक्तपित्तको दूर करे है ।

अन्यच्च ।

नन्दीवृक्ष कटुस्तिक्त पीतस्तिक्तासदाहजित ।

शिरोर्तिश्वेतकुष्ठघ्न सुगन्धिः पुष्टिवीर्यद ॥ (भा०प्र०)

अर्थ-तून-चरपरी, कडवी, पीली, सुगन्धि, पुष्टिकारक, वीर्यवर्द्धक तथा रक्तपित्त, दाह, शिरकी पीडा और श्वेतकुष्ठको दूर करे है ।

अपिच ।

तूणीवृक्ष.कटुस्तिक्त पुष्टिकृच्छीतलोलघु । वीर्यप्रदश्चम-
धुरस्तुवरोय्राहकोमत । वृष्यस्त्रिदोषहृत्प्रोक्तोव्रणकुष्ठच
नाशयेत् ॥ रक्तपित्तश्वेतकुष्ठंशीर्षपीडांचनाशयेत् ॥ कण्डू
पित्तरक्तदोषदाहचैवविनाशयेत् ॥ (नि०र०)

अर्थ-तून-चरपरी, कडवी, पुष्टिकारक, शीतल, हलकी, वीर्यवर्द्धक, मधुर, कपेली, मलरोधक, वृष्य, त्रिदोषनाशक तथा ग्रण, कुष्ठ, रक्तपित्त, श्वेतकुष्ठ, शिरकी पीडा, कण्डू, पित्त, रुधिरविकार और दाहको दूर करे है ।

विवरण-तूनके बड़े सघन वृक्ष जंगल और बनोंमें होतेहैं, पत्ते नीमके पत्तासे कुछेक बड़े होतेहैं, फूल बहुत छोटे २ भेद रंगके आतेहैं, लकड़ी इसकी बहुत उत्तम होतीहै ।

भूर्जपत्रनामानि ।

भूर्जपत्र स्मृतोभूर्जचर्मोविहलवल्कलः ॥

अर्थ-भूर्जपत्र, भूर्ज, चर्मो, वहुलवल्कल (मुचर्मा, छटपत्र, वल्कट्टम, भूर्जपत्रक, चित्रत्वक्, बिन्दुपत्र, रक्षापत्र, विचित्रक, भूतपत्र, मृदुपत्र, मृदुचर्मा, शैलेन्द्रस्थ, चर्मद्रुम, छत्रपत्र, शिनि, स्थिरच्छद, मृदुत्वक्, तलनिम्बोक पसकी, विद्यादल, पत्रपुष्पक, मुज, बहुपट, बहुत्वक्, मृदुच्छद)

| | |
|-----------------|--|
| संस्कृतभाषामें | भूर्जपत्र । |
| हिन्दीभाषामें | भोजपत्र । |
| वगभाषामें | भूजिपत्र । |
| मराठीभाषामें | भूर्जपत्र । |
| गुजरातीभाषामें | भोजपत्र । |
| कर्णाटकीभाषामें | भूर्जपत्र । |
| इंग्रेजीभाषामें | जेकैमोंटी । <i>Jacque montii</i> |
| लैटिन्भाषामें | विटुला भोजपत्र । <i>Betula hojaputra</i> |

अस्यगुणा ।

भूर्जोभूतग्रहश्लेष्मकर्णरुक्पित्तरक्तजित ।

कपायोराक्षसघ्नश्चमेदोविपहर पर ॥ (भा० प्र०)

अर्थ—भोजपत्र—भूत, ग्रह, कफ, कर्णरोग, रक्तपित्त राक्षस, मेद और विपविनाशक है तथा कपेला है ।

अन्यञ्च ।

भूर्जकटुकपायोष्णोभूतरक्षाकर पर ।

त्रिदोषशमन पथ्योदुष्टकौटिल्यनाशन ॥

“पित्तरक्तरुजांहतामत्रकायेप्सुसिद्धिदः” ।

अर्थ—भोजपत्र—चरपरा, कपेला, गरम, भूतबाधाको दूर करनेवाला, त्रिदोषको शान्त करनेवाला, पथ्य तथा दुष्ट, कुटिलता और रक्तपित्तको हरनेवाला है तथा मन्त्रादि कार्योंमें सिद्धिदेनेवाला है ।

अन्यञ्च ।

भूर्जोवल्य कफक्षघ्न । (राजवह्म)

अर्थ—भोजपत्र—घलकारक, कफनाशक और रुधिरके दोषोंको दूर करे है ।

विवरण । भोजपत्रके वृक्ष विशेषकरके हिमालयादि पर्वतोंमें उत्पन्न होते हैं, इस वृक्षकी छालकोही भोजपत्र कहते हैं, छाल, कागज तथा सूखे केलेके पत्तेकी समान होती है, पहिले भोजपत्रका बम्बके स्थानमें व्यवहार किया जाता था । भोजपत्रमें अनेक प्रकारके जड़ मन्त्र लिखे जाते हैं ।

पट्टाष्टनामानि ।

पलाशःकिंशुक पर्णोयाजिकोरक्तपुष्पक ।

क्षारश्रेष्ठोवातपोथोब्रह्मवृक्षः समिद्धरः ॥

अर्थ-पलाश, किंशुक, पर्ण, भाजिक, रक्तपुष्पक, क्षारश्रेष्ठ, वातपोथ, ब्रह्मवृक्ष, समिद्धर, (कर्क, त्रिपत्रक, ब्रह्मपादप, पलाशक, त्रिपर्ण, रक्तपुष्प, पृतहु, ब्रह्मवृक्षक, ब्रह्मोपनेता, काष्ठद्रु, धीजस्त्रेह, त्रिपर्ण, कृमिघ्न, वक्रपुष्पक, मुपर्णी)



सस्कृतभाषामे

पलाश ।

हिन्दीभाषामे

ढाक, टेसू, केसू, बाग, काकगिया, पलाश ।

बगभाषामे

पलाशगाछ ।

मराठीभाषामे

पळस ।

गुजरातीभाषामे

खाखरो ।

कर्णाटकीभाषामे

मुत्तड ।

तैलङ्गीभाषामे

मातुकाचेइड ।

तामिलीभाषामे

पराशन् ।

औत्कलीभाषामे

पराशु ।

इंग्रेजीभाषामे

डाउनी प्राच व्युटिया । Downy branch butea

लैटिन्भाषामे

व्युटिया फ्रडाशा (लाल) Butea frondosa

व्युटिया पार्विफ्लोरा (धवल) B. parviflora

अस्य गुणा ।

पलाशोदीपनोवृष्यः सरोष्णोत्रणगुल्मजित । भग्नसन्धानकृ-
दोपग्रहण्यर्शं कृमीन्हरेत् ॥ कपायः कटुकस्तिक्तस्त्रिगुण-
दजरोगजित । तत्पुष्पस्वादुपाफेतुकटुतिक्तकपायकम् ॥
वातलंकफपित्तास्रकृच्छ्रजिह्वाहिभीतलम् । तृड्दाहशमनं

वारतक्तकुष्ठहरपरम् ॥ फललघूष्णमेहार्शः कृमिवातकफाप-
हम् । विपाकेकटुकरूक्षकुष्ठगुल्मोदरप्रणुत् ॥ (भा० प्र०)

अर्थ—डाक—अग्निप्रदीपक, दीर्घवर्द्धक, सागक, गरम, कपेला, चरपरा, कडवा, स्निग्ध, दूटे हाडको जोड़नेवाला तथा गुदजरोग, सग्रहणी, बवासीर कृमि, व्रण और गुल्मको हरनेवाला है । इसके फल—खादुपाकी, कटु, तिक्त, कपेले, वातवर्द्धक तथा कफ, रक्तपित्त, मूत्ररूच्छ, वातरक्त और कुष्ठको नष्टकरेहें तथा शीतल, मलगोधक, तृषा और दाहको दूर करनेवाले हैं । इसके फल—हल्के, गरम, पचनेमें चरपरे, रुखे तथा प्रमेह, बवासीर, कृमि, वात, कफ कुष्ठ गुल्म और उदररोगको दूरकरे हैं ।

अप्यञ्च ।

पलाशस्तुकपायोष्ण कृमिदोषविनाशन । तद्बीजपामक-
ण्डूतिदद्रुत्वग्दोषनाशकृत् ॥ तस्य पुष्पचसोष्णचकण्डूकु-
ष्ठार्तिनाशनम् । रक्त पीत मितोनील कुसुमैस्तु विभज्यते ॥
किंशुकैर्गुणमाम्येपि सितो विज्ञानदः स्मृतः ।

अर्थ—डाक—कपेला, गरम और कृमिदोषनाशक है । इसके बीज पामा, कण्डू, दाद और त्वचाके दोषोंको दूर करेह । इसके फल—गरम तथा कण्डू और कुष्ठको नष्टकरेह । रक्त—लाल, पीले, सफेद और नीले इन रक्तोंके भेदसे चार प्रकारका है, गुण तो चारोंके समानही हैं, किन्तु सफेद रक्तका अनेक प्रकारके विज्ञानदायक है ।

अन्यञ्च ।

पालाशमूलस्वरसोनेत्रच्छायाध्यपुष्पजितः ।

तद्बीजकृमिविध्वसिकाडो रसायनेहितः ॥ (शो० नि०)

अर्थ—पालाशकी जड़का स्वरस—नेत्रच्छाया, रत्नोंधी और नेत्रके कृमिको दूर करेह । इसके बीज—कृमिनाशक है । इसकी काढ़ रसायनकर्ममें उत्तम है ।

अप्यञ्च ।

उष्ण पलाशस्तु वरो वृष्यो दीप्तिकः सरः । तिक्तः स्निग्धो ग्रा-
हकश्च भग्नमन्धानकारकः ॥ व्रणगुल्मकृमिप्लीहासग्रहण्य-

र्शवातहा । कफयोनिरुजपित्तनाशयेदितिकीर्तितम् । पुष्प-
भेदादयरक्तपीतशुभ्रकनीलकः ॥ पुष्पाणिस्वादुतिक्तानि
उष्णानितुवराणिच ॥ वातलानिग्राहकाणिशीतलान्यूपणा-
निच । तृपादाहपित्तकफात्रक्तदोषचकुष्ठकम् ॥ मूत्रकृच्छ्र
घातयन्तिफलंरूक्षंलघुस्मृतम् । उष्णंचकटुकपाकेरुफवा-
तोदरकृमीन् ॥ कुष्ठगुल्मप्रमेहार्शगूलानांचैवनाशकम् ।
फलबीजचस्निग्धोष्णकटुकमिकफाञ्जयेत् ॥ नूतनापल्ल-
वाश्चास्यकृमिवातविनाशका । (नि०र०)

अर्थ—ढाक—कपेला, गरम, वीर्यवर्द्धक, अग्निप्रदीपक, सारक, कडवा,
स्निग्ध, मलरोधक, भग्नसन्धानकारक तथा व्रण, गुल्म, कृमि, डीहा, सग्र-
हणी, ववासीर, वात, कफ, योनिरोग और पित्तको दूर करे है ।
यह लाल, पीत, श्वेत और नील इन चारोंके भेदमे चारप्रकारका । इसके
फूल—स्वादु, कडवे, गरम कपेले, वातवर्द्धक, मलरोधक, शीतल, चरपरे
तथा तृपा, दाह, पित्त, कफ, रुधिरविकार, कुष्ठ और मूत्रकृच्छ्रको दूरकरे
है । इसके फल—रूखे, हलके, गरम, पचनेमे चरपरे तथा कफ, वात, उदा-
रोग, कृमि, कुष्ठ, गुल्म, प्रमेह, ववासीर और शूलको निर्मूल करेहै । इसके
फलके बीज—स्निग्ध, गरम, चरपरे तथा कफ और कृमिका नाश करेहै ।
इसके कोमल पत्ते—कृमि और वातका नाशकरेहै ।

अथ निघ्यासगुणा ।

पलाशभवनिर्य्यासोग्राहीचक्षपयेद्ध्रुवम् ।

ग्रहणीमुखजान्कासाञ्जयेत्स्वेहातिनिर्गमम् (आ०स०)

अर्थ—ढाकका गांढ—मलरोधक तथा सग्रहणी, मुखरोग, खोंसी और
पसीनेको दूरकरे है ।

विवरण । पलाश अर्थात् ढाकके वडे = वृक्ष प्रायः नदीकी तलैटी और
जागल प्रदेशमें होते हैं, पत्ते—गोल = एक एक डडीमें तीन तीन आते हैं,
प्रथम लाल निकलते हैं फिर हरे रंगके होजाते हैं । फूलकी डडी काली और
गग अत्यन्त सुन्दर, लाल रंगके होते हैं । पत्ती लम्बी २ लगती हैं, बीज
गोल और चपटे निकलते हैं, इसके बीजोंको टकपन्ना कहते हैं ।

हस्तिकर्णपलाशनामानि ।

तद्भेदेस्यात्किंशुलकः किञ्चुलोहस्तिकर्णकः ॥

अर्थ—इसका भेद हस्तिकर्ण है उसके नाम यह है किंशुलक और हस्तिकर्णक ।

अस्य गुणा ।

हस्तिकर्णः परंवृष्यो मेघायुर्वलवर्द्धनः ॥ (रा० नि०)

अर्थ—हस्तिकर्णपलाश—अत्यन्तवीर्यवर्द्धक तथा मेघा, आयु और बलवर्द्धक है ।

शाल्मलीनामानि ।

शाल्मलिः स्याच्छाल्मलिश्च शाल्मली शाल्मली तथा ॥

अर्थ—शाल्मलि, शाल्मलि, शाल्मली, शाल्मली (पिच्छला, पूरणी, मोचा, स्थिरायु, तूलिफला, दुरारोहा, शाल्मलिनी, शाल्मल, अपूरणी, निर्गन्धपुष्पी, तुलिनी, कुकुटी, रक्तपुष्पा, कण्टकारी, मोचनी, शीमूल, कदला, चिरजीवी, पिच्छिल, रक्तपुष्पक, तूलवृक्ष, मोचाख्य, कण्टकद्रुम, कुकुटी, रक्तोत्पल, रम्यपुष्प, बहुवीर्य, यमद्रुम, दीर्घद्रुम, स्थूलफल, दीर्घायु, कण्टकाष्ठ, निस्सारा, दीर्घपादपा)

मोचरसनामानि ।

निर्य्यासः शाल्मलेऽपिच्छोऽशाल्मलीवेष्टकोपिच ।

मोचलावोमोचरसोमोचनिर्य्यास इत्यपि ॥

अर्थ—शाल्मलीनिर्य्यास, पिच्छ, शाल्मलीवेष्टक, मोचलाव, मोचरस, मोचनिर्य्यास, (मोचसार, मोचश्रुत, मोचसुत, पिच्छिलसार, सुरस, मोचाक, शाल्मलि, मोचाह, वेश्मरस, शाल्मल)

| | |
|-----------------|--------------------------------------|
| सस्कृतभाषामें | शाल्मली, २ शाल्मलीनिर्य्यास, मोचरस । |
| हिन्दीभाषामें | सेमल [र], २ सेमरका गोंद, मोचरस । |
| वगभाषामें | शिमुल, २ शिमुलेरआठा । |
| मराठीभाषामें | सावरी, शेवरी २ सावरीचा डांक । |
| गुजरातीभाषामें | शेमली २ शेमतानो गुद, मोचरस । |
| कर्णाटकीभाषामें | यवलवदमर । |
| तेलङ्गीभाषामें | रुगचेड्डु । |
| औत्कलीभाषामें | चोन्नरो । |

तामिलीभाषामें
इंग्रेजीभाषामें
लैटिन् भाषामें

पुला ।
सिल्ककाटनट्री Silcottyn tree
बोंवक्समेलैवेरिकम् Bombaxmalabaricum
सालमेलिया मेलवेरिका Salma malabarica
शाल्मलीगुणा ।

शाल्मलीशीतलास्वाद्मीरसेपाकेरसायनी ।

श्लेष्मलास्निग्धवृष्याचवृहणीरक्तपित्तजित् (भा०प्र०)

अर्थ—सेमल—शीतल, स्वादिष्ट, पचनेमें भी स्वादिष्ट, रसायन, कफकारक,
स्निग्ध, वीर्यवर्द्धक, पुष्टिकारक और रक्तपित्तनाशक है ।

अन्यञ्च ।

शाल्मलीपिच्छलावृष्यावल्यामधुरशीतला ।

कपायाचलघु स्निग्धाशुक्रश्लेष्मविवर्धिनी ॥ (रा० नि)

अर्थ—सेमल पिच्छल, वीर्यवर्द्धक, मधुर, शीतल, कपेला, हल्का,
स्निग्ध तथा शुक्र और कफवर्द्धक है ।

अपिच ।

शाल्मलीमधुरावृष्यावल्याचतुवगमता । शीतलापिच्छि-
लालघ्वीस्निग्धास्वाद्मीरसायना ॥ शुक्रलाश्लेष्मलाचैवधा-
तुवृद्धिकरीमता । रक्तपित्तचपित्तचरक्तदोषश्चनाशयेत् ॥
त्वग्रसोस्याग्राहक स्यान्तुवर्ग कफनाशनः । पुष्पन्तुशीतल
पित्तगुरुस्वादुकपायकम् ॥ वातलग्राहकरक्षकफपित्तपि-
नाशकम् । रक्तदोषहरचैवगुणाह्येतेफलस्यच ॥ कन्दोस्या
मधुरशीतोमलस्तम्भकरोमत । शोफंदाहचपित्तचस-
न्तापचैवनाशयेत् (नि०र०)

अर्थ—सेमल—मधुर, वीर्यवर्द्धक, बलकारक, कपेला, शीतल, पिच्छल,
हल्का, स्निग्ध, स्वादिष्ट, रसायन, शुरुजनक, कफकारक, धातुवर्द्धक, तथा
रक्तपित्त, पित्त और रुधिरके दोषोंको दूर करेहै । इसकी छाल—कपेली
और कफनाशक है, इसके फूल—शीतल, कड़वे, भारी, स्वादिष्ट, कपेले,
वादी, मलरोधक, रूखे तथा कफ, पित्त और रुधिरके दोषोंको दूर

करे है । इसके फलके गुणभी इसीकी समान जानने । इसका कद-मधुर, शीतल, मलस्तम्भक तथा सृजन, दाह, पित्त और मन्तापको हरनेवाला है ।

अस्यपुष्पधाकगुणा ।

शाल्मलीपुष्पशाकन्तुघृतसेन्धवसाधितम् ।

प्रदरनाशयत्येवदुःसाध्यञ्चनसेशयः ॥१॥

कफपित्तास्रजिह्वाहिवातलचप्रकीर्तित ।

अर्थ-घृत और सेन्धवनोंसे बनायाहुआ मेमलके फुलाका शाक, असाध्य प्रदररोगको हरे है, कफ और रक्तपित्तको दूर करे है, मलरोधक और वादी है ।

मोचरसगुणा ।

मोचारसस्तुतुवरोग्राहीवलकरः स्मृत । पुष्टिकृद्भातुकृद्-
प्योबुद्धिदः शीतलः स्मृतः ॥ वयसस्थापनोवृष्योगुरुस्वा-
दूरसाधन । स्निग्ध कफकगोर्भस्थापकोवातनाशनः ॥
अतिसारप्रवाहघ्नोरक्तकृष्णपित्तदाहहा । आमातीसारशम-
नोरक्तातीसारनाशनः ॥ “पारदस्यविकारघ्नोसेवनान्मास-
मात्रतः । केचिन्मोचरसस्थानेपृग्गुप्पचनिक्षिपेत्” ॥ (नि र)

अर्थ-मोचरस-कपेला, मलरोधक, बलवर्द्धक, पुष्टिकारक, धातुवर्द्धक, वर्णको उज्ज्वल करनेवाला, बुद्धिदायक, शीतल, अग्न्यास्यापक, वीर्यवर्द्धक, भागी, स्वादिष्ट, रसायन, स्निग्ध, कफकारक, गर्भस्थापक, वातनाशक तथा अतिमार, प्रवाहिका, रक्तरोग, पित्तदाह, आमातिसार और रक्तातिसारको दूर करनेवाला है । इसको एक मासपर्यन्त सेवनकरनेसे पारेके विकार दूर होतेहैं, कोई २ वष मोचरसके स्थानमें सुपागीका फूल भरतेहैं ।

विचरण । मेमलके वृक्ष प्रायः जगलाम अधिक होतेहैं एक डर्रामें आठ दश पत्ते लगतेहैं इसमें काटे होतेहैं । फूल कमलकी समान लालरंगके होतेहैं । फल आकके समान लगतेहैं । भीतरमें रुई निकलतीहै । इसके गादको मोचरस कहतेहैं ।

कूटशाल्मलीनामानि ।

कुत्मितः शाल्मलि प्रोक्तोरोचनः कूटशाल्मलिः ॥

अर्थ-कुत्मितशाल्मलि, रोचन, कूटशाल्मलि ।

कूटशाल्मलीगुणा ।

कूटशाल्मलिकस्तिक्तः कटुकः कफवातनुत् ।

भेद्युष्णः प्रीहजठरयकृद्गुल्मविपापहः ॥

भूतानाहविविधास्रमेदः शूलकफापहः । (भावप्रकाश)

अर्थ—कूटशाल्मली—कडवा, चरपरा, कफवातनाशक, भेदक, गरम तथा प्रीहा, उदररोग गुल्म, विष, मृत, आनाह, विवध, रुधिरविकार, मेद, शूल और कफनाशक है । कूटशाल्मलिके वृक्ष जंगलमें विशेष करके होते हैं, पत्ते जिगिनीकी समान, फूल अत्यंत लालरंगके आते हैं । एकसफेद रंगका होता है ।

धवनामानि ।

धवः पिशाचवृक्षश्च शकटाख्यो धुरन्धरः ॥

अर्थ—धव, पिशाचवृक्ष, शकटाख्य, धुरन्धर, (शकटाख्य, दृढतरु, गौर, कपाय, मधुरत्वक्, शुष्कवृक्ष, शुष्काङ्ग, पाण्डुतरु, धवल, पाण्डुर, घट, नन्दितरु, स्थिर, पीतफल, मधुरत्वच)

संस्कृतभाषामें धव ।

हिन्दीभाषामें धा, धावा ।

बंगभाषामें वाऊयागाऊ ।

मराठीभाषामें धावडा ।

गुजरातीभाषामें धावडो ।

कर्णाटकीभाषामें सिरिवरु ।

तेलिङ्गीभाषामें नारिजचेडु ।

लैटिन्भाषामें एनोजिसम लाटिफोलिया । *Anogisus Latifolia*कौनोकार्पस लाटिफोलिया । *Conocarpus Latifolia*

अस्य गुणा ।

धव.कटु.कपायः स्यात्कफवातविनाशन. ।

पित्तप्रकोपनोरुच्य दीपन.पाण्डुरोगजित् ॥

अर्थ—धव—चरपरा, कपेल, कफवातनाशक, पित्तको कुपितकरनेवाला, रुचिकारक, दीपन और पाण्डुरोगको दूर करे है ।

अन्यत्र ।

धवस्तुतुवरः भीतोमधुर.कटुकोमत ।

दीपनोरुचिकृच्चैवपाण्डुरोगप्रमेहजित् ॥

कफपित्तार्शवातानानाशकःपरिकीर्तितः । फलंचास्यहिम
स्वादुरूक्षचतुवरमतम् ॥ मलस्तम्भकरचैववातलकफपित्त-
जित् । “मूलंकटुकपायंचपित्तकृद्दीपनपरम्” ॥ (नि र)

अर्थ—धां—कपेला, शीतल, मधुर, चरपरा, दीपन, रुचिकारक तथा
पाण्डुरोग, प्रमेह, कफ, पित्त, ववासीर और वातको दूर करेहै । इसका
फल—शीतल, स्वादिष्ट, रूखा, कपेला, मलस्तम्भक, वातवर्दक तथा कफ-
पित्तनाशक है । इसकी जड़—चरपरी, कपेली, पित्तकारक और
परम दीपनहै ।

विवरण । धवके वृक्ष जगलमें अधिक होतेहैं, इसके पत्ते अमरूदकी समान
और छाल सफेद रंगकी होतीहै, फल बहुत छोटे होतेहैं इसकी लकड़ीके हल्ले
और मूसल बनतेहैं ।

धन्वगनामानि

धन्वगस्तुधनुर्वृक्षोगोत्रवृक्ष.सुतेजनः ॥

अर्थ—धन्वग, धनुर्वृक्ष, गोत्रवृक्ष, सुतेजन ।

अस्य गुणाः ।

धन्वङ्ग.कफपित्तात्मकासहचुवरोलघुः ।

बृहणोवलकृदृक्षःसन्धिकृद्गणरोपणः ॥ (भा० प्र०)

अर्थ—धन्वगवृक्ष—कफ, रक्तपित्त और खाँसीको दूर करेहै, कपेला, हलका,
बृहण, बलकारक, रूखा, सधिकारक और गणको भरनेवाला है ।

धन्वननामानि ।

धन्वनःपिच्छिलत्वक्चधनुर्वृक्षोमहावलः ।

अर्थ—धन्वन, पिच्छिलत्वक्, धनुर्वृक्ष, महावल, (रक्तकुमुम, रुजातद,
पिच्छिलक, रूक्ष, स्वादुफल)

अस्य गुणाः ।

धन्वनस्तुवगोवृष्योमधुर कटुकोमत । वल्योरुशूलघुश्चै-
वधातुवृद्धिकरोमतः ॥ किचिदुष्णश्चसप्रोक्तोत्रणरोपणका-
रकः । कफमातहरोदाहशोपकण्ठरुजापह ॥ रक्तरुक्पि-

तकासघ्नः पीनसस्य विनाशकः । फलचास्य स्वादुशीतं तु व-
रं कफवातहम् ॥

अर्थ—धामिनवृक्ष—कपेला, वीर्यवर्द्धक, मधुर, चरपरा, वलकारक, रूखा, हलका, धातुवर्द्धक, किंचित् गरम, प्रणरोपण तथा कफ, वात दाह, गोप, कण्ठरोग, रुधिरविकार, पित्त, खाँसी, और पीनस रोगको दूर करे है । इसका फल—स्वादु, शीतल, कपेला, कफ और वातविनाशक है ।

विवरण । धामिनके वृक्ष—बहुत बड़े और लम्बे होते हैं, पत्तेवरके पत्तोंमें कुछ बड़े होते हैं, इसकी एकड़ी प्रायः इमारतके काममें आती है ।

करीरनामानि ।

करीरगूढपत्रचशाकपुष्पंकटूफलम् ।

अन्थिलतीक्ष्णसारचकण्टकीमरुभूरुहम् ॥

अर्थ—करीर, गूढपत्र, शाकपुष्प, कटूफल, अन्थिल, तीक्ष्णसार, कण्टकी, मरुभूरुह (ककर, ब्रकच, निष्पत्रिका, करिर, फरक, तीक्ष्णकण्टक, मृदु-फल, निष्पत्र, ओणपुष्प, विटाफिक, शतकुन्त, सुफल, उष्णमुदर, विष्व-क्पत्र, कृशशाख)

संस्कृतभाषामें

करीर ।

हिंदीभाषामें

करील ।

वगभाषामें

करील (मथुगदिमें) कचडा ।

मराठीभाषामें

नेवती ।

गुजरातीभाषामें

केर ।

कर्णाटकीभाषामें

तिप्पतिगे ।

तैलिङ्गीभाषामें

कवरकुगक एनुगदत मुमोदतु ।

इंग्रेजीभाषामें

केपर Caper

लैटिनभाषामें

केपरिस् स्पाइनोसा Caparis spinosa.

फारसीभाषामें

कनार ।

अस्य गुणा ।

करीरमाध्मानकरं कपायकटूष्णमेतत्कफहारिभूरि ।

श्वासानिलारोचकसर्वशूलविच्छर्दिखर्ज्ज्वणदोषहारि ।

अर्थ—करील—आध्मानकारक, कपेला, चरपरा, गरम, कफनाशक तथा श्वास, वात, अरुचि, सर्वप्रकारके शूल, घमन, खर्ज्ज्व और प्रणविनाशक है ।

अन्यञ्च ।

करीर कटुकस्तिक्त स्वेद्युष्णोभेदन.स्मृत ।

दुर्नामकफवातामगरशोथव्रणप्रणुत् ॥ (भा० प्र०)

अर्थ—करील—चरपरा, कडवा, पसीनेको लानेवाला, उष्ण, भेदक तथा ववासीर, कफ, वात, आम तथा विष, मूजन, और व्रणको दूर करेहै ।

अन्यञ्च ।

करीरस्तुवरश्चोष्ण कटुश्चाध्मानकारक. । रुच्योभेदकर
स्वादु.कफवातामशोथजित् ॥ विपाशोव्रणशोथघ्न कृमिपा-
माहगेमत । अरोचकसर्वशूलश्वासचैवविनाशयेत् ॥ फल
चास्यकटुस्तिक्तमुष्णचतुवरंमतम् । विकासिमधुरयाहिमु-
खवैशद्यकारकम् । हृद्यरूक्षकफमेहदुर्नामानचनाशयेत् ।
पुष्पवातकरप्रोक्तंतुवरकफपित्तनुत् ॥ (नि० र०)

अर्थ—करील—कपेला, गरम, चरपरा, आध्मानकारक रुचिकारक, भेदक, स्वादु तथा कफ, वात, आम, मूजन, विष, ववासीर, घ्न, शोथ, कृमि, खुजली, अरुचि, सर्व प्रकारके शूल और श्वासको दूर करेहै । इसका फल—चरपरा, कडवा, गरम, कपेला, विकासि, मधुर, मलरोधक, मुखको स्वच्छ करनेवाला, हृद्यको हितकारी, रूखा तथा कफ, प्रमेह और पित्तका नाश करे है ।

अन्यञ्च ।

करीरोव्रणशोफाशौरक्तहृत्कफवातजित । कटुपाकगो-
त्युष्णोयकृत्सीहापहोन्निकृत ॥ तत्पुष्पकफवातघ्नंकटुपा-
करसलधु । मृष्टमृत्रपुरीषचसदापथ्यरुचिप्रदम् ॥ बालचा-
स्यफलपाकेकटुकश्लेष्मशोथजित । कपायवातलतित्त-
त्पक्वकफपित्तजित् ॥ (शो० नि)

अर्थ—करील—ग्रण, मूजन, ववामीर और रक्तविकारको दूर करनेवाला तथा कफ, वात, यकृत और डीहाको दूर करे है, पचनेमें चरपरा, अत्यंत गरम और अग्निवर्द्धक है । इसके पृष्ठ—कफवातविनाशक, चरपरे, पचनेमेंभी चरपरे, हल्के, मूत्र और मलको करनेवाले, सर्वत्र पथ्य और रुचिकारक है ।

इसके कच्चे फल-पचनेमें चरपरे, कफनाशक, शोथनिवारक, कपेले, यादी, कडवे और पके फल-कफ तथा पित्तनाशक हैं ।

विवरण-करीलके वृक्ष भूडके ऊपर तथा मारवाडकी भूमिमें अधिकतासे होते हैं, इसकी डडी नीले रंगकी और फूल गुलाबी रंगका होता है, फाल्गुन और चैत्रमासमें इसके ऊपर फल फूल आते हैं, पत्ते न होनेके कारण वृक्षमें फूलही फूल दीखते हैं ।

शाखोटनामानि ।

शाखोट. पीतफलकोभूतावास.खरच्छद ।

अर्थ-शाखोट, पीतफलक, भूतावास, खरच्छद (पिशाचद्रु, पीतफल, कर्कशच्छद, शखिनीवास, भूतवृक्ष, सकट, अक्षधर, करच्छद, गयाक्षी, धूकावास, रूक्षपत्र, पीत, कैशिक्योज, क्षीरनाश)

स० शाखोट ।

गु० साहोडा ।

हि० सहोडा (रा) ।

क० आखोडमरण ।

व० जेओडा, शाडा ।

ते० भारिणिकेचेद्रु वरतकी ।

म० सफोड ।

ले० स्टेप्लुसासपर ।

Streplusaspar

अस्य गुणाः ।

शाखोटोरक्तपित्ताशौवातश्लेष्मातिसारजित् ।

अर्थ-सहोडा-रक्तपित्त, घवासीर, वात, कफ और अतिसारको दूर करे है ।

विवरण । सहोडेके वृक्ष अत्यंत गंठाले झाड झकाडसे मध्यम फटके होते हैं, पत्ते छोटे छोटे और चिकने चिकने होते हैं, फूल सफेद रंगके और लकड़ीमें काटेसे प्रतीत होते हैं ।

शाकनामानि ।

शाकं ककचपत्रः स्यात्खरपत्रोत्तिपत्रक ।

महीरुहः श्रेष्ठकाष्ठं स्थिरसारोगृहद्रुमः ॥

अर्थ-शाक, ककचपत्र, खरपत्र, अतिपत्रक, महीरुह, श्रेष्ठकाष्ठ, स्थिरमार, गृहद्रुम, (अनिल, अर्ण, महापत्र, शाकतरु, शाकवृक्ष, शाकारव्य, अर्जुनोपम, शरपत्र, अतिपत्र, भूमिरुह, दारदारु, खरच्छद, दीर्घच्छद, कोलपत्र, योगी, इलीमक गन्धसार, स्थिरमार, स्थिरक, धुवसाधन)

| | |
|-----------------|--------------------------------------|
| संस्कृतभाषामें | शाक । |
| हिन्दीभाषामें | सागोन, सागवन । |
| बंगभाषामें | शेयुनगाछ । |
| मराठीभाषामें | साग, सागवान । |
| गुजरातीभाषामें | शाग । |
| कर्णाटकीभाषामें | नैगु । |
| तैलङ्गीभाषामें | टेकुचेट्टु । |
| तामिलीभाषामें | टेक । |
| औत्क० | सिंगुरु । |
| इंग्रेजीभाषामें | इंडियनटीकट्री । Indian teak tree |
| लैटिनभाषामें | टेक्टोना ग्रांडीम् । Tectona Grandis |
| फारसीभाषामें | फिलगोस् । |
| अरबीभाषामें | फिल्जोश उजनुलपिल । |

अस्पृश्या ।

शाकस्तुसारकः प्रोक्त पित्तदाहश्रमापहः ।

कफघ्नमधुरं रूक्षं कपायशाकवल्कलम् ॥ (रा० नि०)

अर्थ—शाक (सागोन)—सारक तथा पित्त, दाह और श्रमनाशक है ।
सागोनकी छाल—कफनाशक, मधुर, रूखी और कपेली है ।

अन्यथा ।

भूमिसहस्तुशिशिरोरक्तपित्तप्रसादनं ॥ (मा० प्र०)

अर्थ—सागवन—शीतल और रक्तपित्तको शुद्ध करनेवाला है ।

अपिच ।

शाकः श्लेष्मानिला मधो गर्भसन्धानदोहिमः । (म० पा० नि०)

अर्थ—सागोन—कफ और वातनाशक, गर्भसन्धानकारक और शीतल है ।

अन्यथा ।

शाकवृक्षस्तुतुवरः शीतलो रक्तपित्तहा । गर्भस्थैर्यकरश्चैव
गर्भसन्धानकारक ॥ वातपित्तं तथा शीतकुष्ठचातिमृतिज-
येत् । अस्य पुष्पतुतुवरं तिक्तचविशदलधु ॥ वातप्रकोपन
रूक्षकफपित्तप्रमेहनुत् । वल्कलचास्य मधुररूक्षचमधुरम-
तम् ॥ कफनाशकरश्चैव मुनिभिः परिकीर्तितम् । (नि र)

अर्थ-शाकवृक्ष-कपेला, जीतल, रक्तपित्तनाशक, गर्भको स्थिरकरनेवाला, गर्भमन्धानकारक तथा वात, पित्त, ववासीर, कोढ़ और अतिसारको दूर करेहै । इसके फूल-कपेले, कडवे, विषद, रूखे हल्के, वातको कुपित करनेवाले तथा कफ, पित्त और प्रमेहको दूर करेहै । इसकी छाल-मधुर, रूखी, कपेली और कफनाशक है ।

विवरण । शाकके बड़े वृक्ष जगलम होतेहैं, पत्ते बड़े और खरसरे होतेहैं इसके पत्ताको हाथसे मलनेसे हाथ लाल होजाते हैं सागके फूल छोटे और मफेद होतेहैं ।

चरुणनामानि ।

वरुणोवर्हपुष्पश्चेत्तुक्ताशाक कुमारक ।

उरुमाणसेतुवृक्षश्चेत्तद्रुमरुतापह ॥

अर्थ-चरुण, वर्हपुष्प, तिक्तशाक, कुमारक, उरुमाण, सेतुवृक्ष, श्वेतद्रु, मारुतापह, (वरण, कुमार, अश्मग्रीव, सेतुक, सेतु, वराण, शिविमण्डल, श्वेतवृक्ष, श्वेतद्रुम, साधुवृक्ष, तमाल)

संस्कृतभाषामें वरुण ।

हिन्दीभाषामें वरना (विलि) ।

वगभाषामें वरुणगाछ ।

मराठीभाषामें वायवर्णा, (का०) भाटवर्णा ।

गुजरातीभाषामें वरणो ।

कर्णाटकीभाषामें मदवमले ।

तेलुगुभाषामें उरुमाट्टि, जाजिचेट्टु, उलिमिचिट्टु ।

तामिलीभाषामें मरालिगम् ।

लैटिनभाषामें क्रेस्टिवा, गेक्सबुर्गिआइ । Crataeva Roxburghii

क्रेनिया, रिलिजिओसा । Crataeva C Religiosa

अस्य गुणाः ।

वरुण पित्तलोभेदीश्चेत्तद्रुमरुतापह ।

निहन्तिगुल्मवातास्रकृमिश्चोष्णाग्निदीपन ॥

कपायोमधुरस्तिक्त कटुकोरुक्षकोलघु ॥ (भा०प्र०)

अर्थ-वरुण-पित्तकारक, भेदक, कफ, मृद्वृक्ष, पयरी, गुल्म, वातगत

और कृमिका नाश करेहै । गरम, अग्निप्रदीपक, कपेला, मधुर, कडवा, चरपरा, रूखा और हलका है ।

अन्यत्र ।

वरुण कटुरुष्णश्चरक्तदोषहर. परः ।

शीतवातहर स्निग्धोदीप्योविद्रधिवातजित ॥ (रा० नि०)

अर्थ-वरुण-चरपरा, गरम, रुधिगविकारनाशक, शीतवातनिवारक, स्निग्ध, दीपन तथा विद्रधि और वातविनाशकहै ।

अन्यत्र ।

वरुणोऽनिलशूलघ्नोभेदीचोष्णोऽश्मरीहर. ।

पुष्पवरुणजग्राहिपित्तघ्नमामवातजित ॥ (रा० ज०)

अर्थ-वरुण-वात और शूलनाशक, दस्तावर, गरम और पथरीको दूर करेहै । वरुणके फल-मलरोधक, पित्तनाशक और आमवातको दूर करेहै ।

अपिच ।

वरुणोष्णकटुस्निग्धोदीपनोमधुर स्मृत । लघुस्तिक्त-
स्तुतुवर पित्तलोभेदक स्मृत ॥ वातंकफविद्रधिचमूत्रकृ-
च्छूचनाशयेत । अश्मरीवातरक्तचगुल्मरक्त रुजकृमीन् ॥
रक्तदोषशीर्षवातमृत्राघातचहृद्रुजम् ॥ हृद्रोगनाशयत्येव
पुष्पचास्यचग्राहकम् ॥ रक्तदोषहरचेवफलचास्यसगुरु ।
पाकेतुमधुरस्वादुस्निग्धोष्णवातनाशकम् ॥ पित्तकफना-
शयतीत्येवचमुनिभिर्मतम् ॥ (नि० र०)

अर्थ-वरुण-गरम, चरपरा, स्निग्ध, दीपन, मधुर, हलका, कडवा, कपेला, पित्तनरक, दस्तावर तथा वायु, कफ, विद्रधि, मूत्रकृच्छ्र, पथरी, वातरक्त, गुल्म, रक्तविकार, कृमि, रक्तदोष, शीर्षवात, मृत्राघात, हृत्पथोग और उरशूलको नष्ट करे है । इसका फल-मलरोधक, रक्तविनाशक । इसके फल-मारक, भारी, पचनेमें मधुर, स्वादिष्ट, स्निग्ध, गरम तथा वातपित्त और कफको हरे है ।

विवरण । वरुणका वडा वृक्ष होता है, पत्ते बेलकी समान तीन २ लगते

हैं, फल चेलकी समान गोल और सुपारीकी आकृतिवाले होते हैं, फल गुलजुरेकी सदृश होता है ।

कटभीनामानि ।

कटभीनाभिकाशौण्डीपाटलीकिणिहीतथा ।

मधुरेणुःक्षुद्रश्यामाकैडर्यश्यामलानवा ॥

अर्थ-कटभी, नाभिका, शौण्डी, पाटली, किणिही, मधुरेणु, क्षुद्रश्यामा, कैडर्य, श्यामला, (स्वादुपुष्प, कटम्बर, किणिही, भद्रेन्द्राणी)

श्वेतकटभीनामानि ।

सितादिकटभीश्वेताकिणिहीगिरिकर्णिका ।

शिरीषपत्रीकालिन्दीशतपादाविपन्निका ॥

महाश्वेतामहाशौण्डीमहादिकटभीदशा ॥

अर्थ-सितकटभी, श्वेतकिणिही, गिरिकर्णिका, शिरीषपत्री, कालिन्दी, शतपादा, विपन्निका, महाश्वेता, महाशौण्डी और महाकटभी)

संस्कृतभाषामें

कटभी, श्वेतकटभी ।

हिन्दीभाषामें

करही, कटभी, हरिपल ।

मराठीभाषामें

वाकुभा ।

गुजरातीभाषामें

वापुणा ।

कर्णाटकीभाषामें

वेछाल ।

इंग्रेजीभाषामें

केरीमट्टी । *Caraya tree*

लैटिनभाषामें

केरिया आर्बोरिया । *Caraya arborea*

कटभीगुणा ।

कटभीचेत्कट्टुरुष्णागुल्मविषाध्मानशूलदोषघ्नी ।

वातकफाजीर्णरुजांशमनीश्वेताचतत्रगुणयुक्ता ॥ (ग. नि)

अर्थ-कटभी-चरपरी, गरम तथा गुल्म, विष, आध्मान शूल, वात, कफ और अजीर्णरोगको दूर करेहै और श्वेतकटभी गुणयुक्तहै ।

अन्यथा ।

कटभीतुप्रमेहार्शोनाडीव्रणविपक्वमीन् ।

हन्त्युष्णाकफकुष्ठभीकट्टुरुक्षाचकीर्त्तिता ।

तत्फलतुवर्जयेद्विशेषात्कफशुकजित् ॥ (भावप्रकाश)

अर्थ—कटभी—प्रमेह, ववासीर, नाडीव्रण, विष, कृमि, कफ और कुष्ठको नष्ट करे है, गरम, चर्परी और रूखी है । इसका फल—कपेला और विशेषकर कफ तथा शुक्रनाशक है ।

विवरण । कटभीके मध्यम आकारके वृक्ष होतेहैं पत्ते लम्बे और कुछ कुछ गोल होते हैं, फल अंड खरूजेकी समान ठोटे ठोटे लगतेहैं ।

मुष्ककनामानि ।

मुष्ककोमोक्षकोमुष्टिर्मूर्खकोमोचकस्तथा ।

क्षारश्रेष्ठ.क्षारवृक्षोद्विविध.श्वेतकृष्णक ॥

अर्थ—मुष्कक, मोक्षक, मुष्टि, मूर्खक, मोचक, क्षारश्रेष्ठ, क्षारवृक्ष, (गौलिक, मेहन, पाटली विपापह, जटाल, वनवासी, सुतीक्ष्णक, गोलीद, गोलिह, क्षारोष्ण, शिखरी, वनवासी, घण्टापाटलि, क्षुद्रपाटलि, मुचक, जटाल, झाटल, मोक्ष, घण्टा, पाटलि, क्षारद्रु, कालमुष्कक, पाटली, घण्टाक, तीक्ष्ण, घण्टक, कालस्थाली) यह सफेद और कृष्ण इन भेदोंसे दो प्रकारका है ।

संस्कृतभाषामें

हिन्दीभाषामें

वगभाषामें

मराठीभाषामें

गुजरातीभाषामें

कर्णाटकीभाषामें

तैलिङ्गीभाषामें

लैटिन्भाषामें

मुष्कक, मोक्षक ।

मोषा, मोखा, फरवाह ।

घण्टापाखल ।

मोक्षडी, मोखावृक्ष ।

मरखो ।

मोखदलाई ।

मोक्षपुचेद्रु, मुष्कतुण्डुचेद्रु ।

स्कीवीरास्वीटे निओइविगु । Schre bern swiete moedes
अस्य गुणा ।

मुष्कक कटुकोम्लश्चरोचन पाचन.पर ।

प्लीहगुल्मोदरार्तिघ्नोद्विधातुल्यगुणान्वित (रा०नि०)

अर्थ—दोनोप्रकारके मोखावृक्ष—चरपरे, सष्टे, रोचन, पाचक तथा प्लीहा गुल्म और उदररोगको दूर करे ह ।

अपच ।

मोक्षक.कटुकस्तिक्तोग्राह्युष्णःकफवातहृत् ।

विषमेदोगुल्मकण्डूवस्तिरुक्ष्मिशुक्रनुत ॥

अर्थ-मोखा-चरपरा, कडवा, मलरोधक, गरम तथा कफ, वात, विष, भेद, गुल्म, कण्डू, वस्तिरोग, कृमि और शुरुको नष्ट करे है ।

अन्यथा ।

मोक्षक.कफवातघ्नोग्राहीगुल्मविपकृमीन् ।

हन्त्युष्णोवस्तिरुक्कण्डूतत्पुष्पंकफपित्तजित् ॥

निर्यासोस्यपग्वृष्य.शोषपित्तानिलापह. । (म नि)

अर्थ-मोखा-कफवातनाशक, मलरोधक, गुल्म, विष और कृमिनाशक है गरम, वस्तिरोग और कण्डूको दूर करे है । इसका फल कफपित्तनाशक है । इसका गाद-अत्यन्त वीर्यवर्धक तथा शोष पित्त आर वात-विनाशक है ।

अन्यथा ।

मुष्कक कटुकश्वाग्लोरुचिकृत्पाचन स्मृत । ग्राहकोष्ण

पटुस्तिक्तःप्रीहगुल्मोदरापह ॥ विपदोपकफवातमेदरुग्ध-

स्तिशूलहा । शुक्रदोषकर्णरुजपित्तकण्डूकृमीञ्जयेत् ॥ पुष्प

कुष्ठहरज्वरातपित्तकफप्रणुत् । फलमग्नेदोतिकरभेदकगे-

चकमतम् ॥ गुल्ममेहार्शःपाण्डुघ्नशुक्रदोषोदरञ्जयेत् । (नि र)

अर्थ-मोखावृक्ष-चरपरा, सटा, रुचिकारक, पाचक, मलरोधक, गरम, निमकीन, कडवा तथा प्रीहा, गुल्म, उदररोग, विषविकार, कफ, वात, भेद रोग, वस्तिशूल, शुक्रदोष, कर्णरोग, पित्त, कण्डू और कृमिको दूर करे है । इसका फल-कुष्ठ, वात, पित्त, कफको दूर करे है । इसका फल-अग्निप्रदीपक, दस्तावर, रोचक तथा गुल्म, ममेह, बवासीर, पाण्डुरोग, शुक्रदोष और उदररोगको दूर करे है ।

विवरण । मोखके वृक्ष मफेद और काले इनमेदामें त्र्योमकारके होते हैं, पत्ते बड़े बड़े होते हैं । उनमें आकसी समान दूध निकलता है । फल घग्ग कारके लगते हैं ।

अम्बुशिरीषिणानामानि ।

शिरीषिकाटिंढिणिकादुर्वलाम्बुशिरीषिका ।

अर्थ-शिरीषिका टिंढिणिका दुर्वला, अम्बुशिरीषिका ।

सस्कृतभाषामे अम्बुशिरापिका ।
हिन्दीभाषामे जलसिरस, दाढोन ।
मराठीभाषामे जलशिरसी ।

अस्य गुणाः ।

त्रिदोषकफकुष्ठार्शोहरीवारिशिरापिका ।

अर्थ—जलसिरस (दाढोन)—त्रिदोष, कफ, कोष्ठ और ववामीरको दूर करे है ।

अन्यच्च ।

ढिढिणीकफकुष्ठार्शःसन्निपातविपापहा ॥ (म०नि०)

अर्थ—जलसिरस—कफ, कुष्ठ, ववासीर, सन्निपात और विपाको दूर करे है ।
विवरण । जलसिरसके वृक्ष, सिरसकेही समान कुठ छोटे जलमें होतेहैं ।
शमीनामानि ।

शमीशकुफलीशान्ताकेशहन्त्रीशिवाफला ।

मङ्गल्याशुभदालक्ष्मीपवित्रापापनाशिनी ॥

अर्थ—शमी, शकुफली, शान्ता, केशहन्त्री, शिवाफला, मङ्गल्या, शुभदा, लक्ष्मी, पवित्रा, पापनाशिनी (शकुफली, शकुफला, सकुफला, शिवा, काननारि, तुगा, कचरिफला, केशमयनी ईशानी, तपनतनया, इष्टा शुभफरी, हविर्गन्धा, मेघ्या, दुरितदमनी, शकुफलिका, समुद्रा, वह्निगर्भा, समीर, ईशान, सुरभी, पापशमनी, भद्रा, शकरी, सुपत्रा, मुखदा, ईशाना, शकरा शकुफलिका, शुभद्रा)

| | |
|----------------|---|
| सस्कृतभाषामे | शमी । |
| हिन्दीभाषामे | छाकर (रा) समी, मफेदकीकर, ठिकुर । |
| वगभाषामे | शॉइ, हूइवाव्वा । |
| मराठीभाषामे | थोरशमी, लघुशमी । |
| गुजरातीभाषामे | खिजडी, नानी खिजडी । |
| कर्णाटकीभाषामे | वनि, कावलि । |
| तेलिङ्गीभाषामे | शमीचेदु । |
| ओत्क० | शुमि । |
| इमेजीभाषामे | स्पजटी । Spung tree |
| लेटिन् भाषामे | प्रोसोपिस स्पाइसिजेग । Prosopis spigera |

अस्य गुणाः ।

शमीरूक्षाकपायाचरक्तपित्तातिसारजित् ।

तत्फलंतुगुरुस्वादुरुक्षोष्णंनखकेशनुत् ॥ (रा०नि०)

अर्थ-शमी (छोंकर) रूखा, कपेला, तथा रक्तपित्त और अतिसारनाशक है । इसका फल भारी, स्वादिष्ट, रूखा, गरम तथा नख और केशोंका नाश करे है ।

अथ च ।

शमीतिक्ताकटु शीताकपायारोचनीलघु ।

कफकासभ्रमश्वासकुष्ठार्शः कृमिजित्स्मृता ॥

“तत्फलपित्तलरूक्षमेध्यकेशविनाशनम्” । (भा० प्र०)

अर्थ-छोंकर-कडवा, चरपरा, शीतल, कपेला, रोचन, हल्का तथा कफ, खाँसी, भ्रम, श्वास, कोढ़, बवासीर और कृमिको दूर करे है । इसका फल-पित्तजनक, रूखा, मेधाकारक और केशोंका नाश करे है ।

अथ च ।

शमीतुतुवरारूक्षाशीतालघ्वीचतित्तका । कटुकारेचनीचै-
वरक्तपित्तातिसारनुत् ॥ कुष्ठार्शः श्वासकासभीकफभ्रमकृमीन्
हरेत् । कम्पश्रमानाशमनीफलंतीक्ष्णश्चपित्तलम् ॥ मेध्य-
गुरुस्वादुरुक्षमुष्णकेशहरपरम् ।

अर्थ-शमी (छोंकर)-कपेला, रूखा, शीतल, हल्का, कडवा, चरपरा, दस्तावर तथा रक्तपित्त, अतिसार, कुष्ठ, बवासीर, श्वास, खाँसी, कफ, भ्रम, कृमि, कम्प और श्रमनाशक है । इसका फल-तीक्ष्ण, पित्तजनक, मेधाजनक, भारी, स्वादिष्ट, रूखा, गरम और केशोंको दूर करे है ।

विवरण । बड़ा वृक्ष होता है पत्ते छोटे, रींखी समान और फली संग-रीकी समान होती है । यह भी एक चबूतरकी जातीमें से है ।

सप्तपणनामानि ।

सप्तपर्णोविशालत्वक्छारदोविपमच्छद ।

अर्थ-सप्तपर्ण, विशालत्वक्, शारद, विपमच्छद (पिष्ट, विनद, विन्याक, सारद, देववृक्ष, दलेगन्धि, शिरोरुजा, ग्रहनाश, सुतिपत्र, ग्रहाशी, ग्रहनाशन,

गुच्छपुष्प, शुक्तिपर्ण, सुपर्णक, अयुकच्छद, अयुग्मच्छद, गुच्छपुष्प, युग्म-
पर्ण, मुनिच्छद, वृहत्क्षू, बहुपर्ण, शाल्मलिपत्रक, मदगन्ध, गन्धिपर्ण,
सप्तच्छद, उत्रपर्ण, शरदिपुष्प)

| | |
|----------------|---|
| संस्कृतभाषामे | सप्तपर्ण । |
| हिंदीभाषामे | उतिवन, सतवन, सतोना, आतिपान् । |
| वगभाषामे | आतिमगाउ, छेतेन । |
| मराठीभाषामे | सात्विण । |
| गुजरातीभाषामे | सप्तपर्ण । |
| व० | आतविण । |
| कर्णाटकीभाषामे | एलेलेग । |
| तैलिङ्गीभाषामे | पेडाकुल, अगिटाकु । |
| लैटिनभाषामे | जालस्टोनिया स्कोलेरिस् । <i>Alstonia scholaris</i> अन्य गुणा । |

सप्तपर्णोव्रणश्लेष्मवातकुप्टास्रजन्तुजित ।

दीपन श्वासगुल्मघ्नःस्निग्धोष्णस्तुवर सरः (भा०प्र०)

अथ—सतवन—व्रण, कफ, वात, कुष्ठ, रुधिरविकार, कृमि, श्वास और
गुल्मका नाश करेहै । दीपन, स्निग्ध, उष्ण और कुष्ठ = दस्तावर है ।

अथछ ।

सप्तपर्ण कपायोष्णस्तित्तोदीप्तिकर सर ।

स्निग्धोद्दृक् कृमि-श्वासकुप्टगुल्मव्रणास्रजित् ॥

मदगन्धिघ्नोदोषघ्न शूलरक्तरुजापह ॥ (ग० नि०)

अर्थ—सतवन—कपेला, गरम, कडवा, अग्निप्रदीपक, सारक, स्निग्ध,
हृदयको हितकारी, मदगन्धिवाला तथा कृमि, श्वास, कोढ़, गुल्म, व्रण,
रुधिरविकार, त्रिदोष, शूल और रक्तरोगका नाश करेहै ।

विशरण । बड़ा वृक्ष है, पत्ते शैमल्की समान और फल = डाल्मीम
जात = लगनेहै ।

तिनिशनामानि ।

तिनिशः स्पन्दनोनेमीसर्वसारोऽश्मगर्भकः ।

अर्थ—तिनिश, स्पंदन, नेमी, सर्वसार, अश्मगर्भक (तिनाशक, स्पन्द

नद्रुम, अक्षक, चित्रकर्मा, रयद्रु, अतिमुक्तक, वञ्जुल, चित्रकूट, चर्मी, शताग, शकट, रथ, रथिक, भस्मगर्भ, मेपी, जलधर, स्पदनि)

सस्कृतभाषामें तिनिश ।

हिंदीभाषामें तिरिच्छ, (-) तिनमुना ।

बंगभाषामें तिनाश, सादन, जारुलगाठ ।

मराठीभाषामें तिवम ।

गुजरातीभाषामें हम्मो, मिणोहम्मो । [bergia oides.

लैटिन् भाषामें युजिनियाडाल बर्जिया ओईडिस् Ougenia da
अस्य गुणा ।

तिनिश श्लेष्मपित्तासमेद कुष्ठप्रमेहजित् ।

तुवर श्वित्रदाहघ्नोव्रणपाण्डुकृमिप्रणुत् (भा० प्र०)

अर्थ-तिरिच्छ-कफ, पित्त, रुधिरविकार, मेद, कोढ़, प्रमेह, श्वित्रकुष्ठ, दाह, व्रण, पाण्डु और कृमिका नाश करे तथा कपेला है ।

अन्यथा ।

तिनिशस्तुवरश्चोष्णोग्राहक कफवातहा । रक्तातिसारकु-
ष्ठचमेहमेदव्रणतथा ॥ रक्तदोषचपित्तचश्वित्रकुष्ठकृमिस्त-
था । दाहचपाण्डुरोगचनाशयेदिति कीर्तितः ॥ (नि० २०)

अर्थ-तिरिच्छ कपेला, गरम, ग्राही, कफवातनाशक तथा रक्तातिमार, कोढ़, प्रमेह, मेद व्रण, रुधिरविकार, पित्त, श्वित्रकुष्ठ, कृमि, दाह और पाण्डुरोगका नाश करे ।

विवरण । तिनिमके बड़े बड़े वृक्ष होते हैं, पत्ते छोटे छोटे छोंकरकी गमान होते हैं, इसकी आकृति खैर अथवा लकिरकी समान होती है ।

हरिद्रनामानि ।

हारिद्रक पीतवर्ण श्रीमान्गौरुद्रुमोवर ।

अर्थ-हारिद्रक, पीतवर्ण, श्रीमान्, गौरुद्रुम (हरिद्र, पीतदारु, पीत-
काष्ठ, रक्तक, फट्मचक, सुपुष्प, मुराद, पीतकटुम)

संस्कृत भाषामें हरिद्र ।

हिन्दीभाषामें दिवा, हलुदा, हलदु ।

बंगभाषामें वृक्षविशेष ।

मराठीभाषामें हळदीवावृक्ष ।

गुजरातीभाषामें
कर्णाटकीभाषामें
लैटिन्भाषामें

हल्दरखो ।

विलिखु ।

नोहिया कोर्डिफोलिया । *Nauclea cordifolia*

पाडना कोर्डिफोलिया । *Adina cordifolia*

अस्य गुणाः ।

हरिद्रुःकटुकपाकेवीर्योष्णस्तुवरः कटु ।

लघु कफहरोवर्ण्योत्रणशोधनरोपण ॥

तिक्तोवलयःकान्तिदध्त्वग्दोषांश्चविनाशयेत् ।

अर्थ—हल्दुवा—पचनेमें चरपरा, उष्णवीर्य, कपेला, चरपरा, हलका, कफनाशक, वर्णको उज्ज्वल करनेवाला, ग्रणशोधक, ग्रणरोपण, कडवा, बलवर्द्धक, कान्तिजनक और त्वचाके दोषाको दूर करे है ।

अपिच ।

हरिद्रुःशीतलस्तिक्तोमगल्यपित्तवान्तिजित् ।

अगकान्तिकरोवलयोनानात्वग्दोषनाशन ॥(रा०नि०)

अर्थ—हल्दुवा—शीतल, कडवा, मगलकारक, पित्तनाशक, वमननिवारक, बलवर्द्धक और त्वचाके दोषाको दूर करे है ।

विवरण । हल्दुके बड़े बड़े वृक्ष पर्वत और वनमें होतेहैं, इसकी छाल पीले रंगकी होतीहै । पत्ते दोनों ओर शाखामें बराबर लगे होतेहैं ।

रुद्राक्षनामानि ।

रुद्राक्षचशिवाक्षचसर्वाक्षभूतनाशनम् ।

पावननीलकण्ठाक्षहराक्षचशिवप्रियम् ॥

अर्थ—रुद्राक्ष, शिवाक्ष, सर्वाक्ष, भूतनाशन, पावन, नीलकण्ठाक्ष, शिवप्रिय (वृणमेरु, अमर, पुष्पचामर)

हिन्दी, बग, मराठी, गुजराती, कर्णाटकी, तालगी—रुद्राक्ष ।

लैटिन् भाषामें इन्डोकार्पस गेनीट्रस ।

अस्य गुणाः ।

रुद्राक्षमम्लमुष्णचवातघ्नकफनाशनम् ।

शिरोर्तिशमनरुच्यंभूतग्रहविनाशनम् ॥

अर्थ-रुद्राक्ष-अम्ल, उष्ण, वातनाशक, कफनिवारक, शिरकी पीडाको दूरकरनेवाला तथा भूतबाधा और ग्रहबाधाको हरेहै । रुद्राक्षके वृक्ष विभोप-करके बनमें होतेहैं, पत्ते लघु और कुछ गोल होतेहैं । इसके बीजांको रुद्राक्ष कहतेहैं ।

माटनामानि ।

माडोमाडदुमोदीर्घोध्वजवृक्षोवितानक ।

मद्यदुमोमोहकारीमद्यदुरज्जुगृध्रा ॥

अर्थ-माट, माडदुम, दीघ, ध्वजवृक्ष, वितानक, मद्यदुम, मोहकारी, मद्यदुरज्जु ।

संस्कृतभाषामें माड ।

हिन्दीभाषामें माड ।

मराठीभाषामें माड ।

गुजरातीभाषामें माड, भेलिमाड ।

कर्णाटकीभाषामें बैनो ।

इंग्रेजीभाषामें टोर्नेलिच्छ । *Torneilich*

तैमिन्निभाषामें कैयुंटायुरेन्म कागाट । *Carayon Ureno Carayuta*

अभ्यगुणा ।

माडस्तुशिभिरोरुच्यःकपायःपित्तदाहकृत ।

तृष्णापहोमरुत्कागीश्रमहृच्छेप्मकारकः ॥ (रा० नि०)

अर्थ-माड-शीतल, रुचिकारक, कपेला, पित्तदाहकागक, तृष्णानिना रक, वादी, श्रमनाशक और कफकागक है ।

विवरण । माडके वृक्ष बन जगल मंत्र होतेहैं, पत्ते नडे नडे लम्बे और गोल होतेहैं, फूल मधुर और लाल रंगके आतेहैं ।

माजडनामानि ।

साजडोवनजोवृक्ष कृष्णत्वक श्यामसागकः ।

धाराफलोथनिस्सारवलकोवीरवृक्षक ॥

अर्थ-माजड, वनजवृक्ष, कृष्णत्वक, श्यामसागक, धाराफल निस्सार-फलक, वीरवृक्षक ।

हिन्दीभाषामें

बौहा (६) ।

मराठीभाषामें आयन, ऐन ।
गुजरातीभाषामें साजड ।
तेलिङ्गीभाषामें नल्लमहि ।
लैटिन्भाषामें टर्मिनेलिया ग्लेघ्रा ।

अभ्य गुणा ।

“पार्थक्षतेनिलेभग्रेरक्तस्तम्भेकफेहितः” ॥

अर्थ—साजड—क्षत, वात, भग्न, रक्तस्तम्भ और कफगोगमं हितकारी है ।
विवरण—साजडभी अर्जुनका भेद है, इसकी आकृति प्रायः अर्जुनवृक्षकी
समान होती है । इसीका भेद ढोल समुद्रिका जानना ।

ढोलसमुद्रिकागुणा ।

ढोलसमुद्रिकाप्रोक्ताकीटादीनांविषप्रणुन ॥

अर्थ—ढोलसमुद्र-कीटादिकोंके विषको हग्नेवाला है ।

इति श्रीशास्त्रिप्रामनिःपृष्टभूषण वटादिनर्ग ॥ ९ ॥

अथ धातूपधातुवर्गः ।

मुख्यनामानि ।

स्वर्णसुवर्णकनकहिरण्यहेमहाटकम् ।

चामीकरंशातकौम्भद्राविणभूरिपिञ्जरम् ॥

अर्थ—स्वर्ण, सुवर्ण, कनक, हिरण्य, हेम, हाटक, चामीकरंशातकौम्भ,
द्राविण, भूरिपिञ्जर, (गागेय, भर्म्म, कर्तुर, जातरूप, महारजत, काश्चन,
रुक्म, कार्तस्वर, गाम्गूनद, अष्टाषद, कर्गहाटक, ऋश्य, मानमि, अकुप्य,
लोहोत्तम, भूत्तम, पुरट, रेकन, शातकुम्भ, कर्तुर, कर्तुर, रुक्म, भद्र, गौग्व,
चाम्पेय, भरु, चन्द्र, कल्पीत, अभ्रक, अग्निपीज, लोहवर, उध्व, मारुक, रपडा
मणिप्रभव, मुख्यधातु, शतखण्ड, उज्ज्वल, कल्पाण, मनोहर, अग्निवीर्य,
अग्नि, भास्कर, पित्रान् आपिञ्जर, तेज, तिम्र, अग्निभ, दीप्तक, मद्गल्प,
सौमेरुक, भृङ्गाय, जाम्बय, आग्नेय, निष्क, तपनीयक, अग्निशिर, चद,
अथ, पेश, पृथान, लोह, अमृत, मन्त दश, चारुत्न, पीतर, श्रीनिनेन,
भूषणार्ह, सूर्यनामक)

अर्थ-रुद्राक्ष-अम्ल, उष्ण, वातनाशक, कफनिवारक, शिगका पीडाको दूरकरनेवाला तथा भूतबाधा और ग्रहबाधाको हरेहै । रुद्राक्षके वृक्ष विशेषकरके वनमें हातेहैं, पत्ते लघु और खुट गोल होतेहैं । इसके बीजाको रुद्राक्ष कहतेहैं ।

माडनामानि ।

माडोमाडद्रुमोदीर्घोध्वजवृक्षोवितानक ।

मद्यद्रुमोमोहकारीमद्यद्रुरज्जुरष्टधा ॥

अर्थ-माड, माडद्रुम, दीर्घ, ध्वजवृक्ष, वितानक, मद्यद्रुम, मोहकारी, मद्यद्रुरज्जु ।

संस्कृतभाषामें माड ।

हिन्दीभाषामें माड ।

मराठीभाषामें माड ।

गुजरातीभाषामें माड, भेलिमाड ।

कर्णाटकीभाषामें बैनो ।

इंग्रेजीभाषामें थोर्नेलिड । Thorneless

लैटिनभाषामें कर्पुटायुलेन्स वागाट । Carota (runc Carota

भस्मगुणा ।

माडस्तुशिशिरोरुच्यः कपायः पित्तदाहकृत ।

तृष्णापहोमरुत्कारीश्रमहृच्छेप्सुकारकः ॥ (रा०नि०)

अर्थ-माड-शीतल, रुचिकारक, कपेला, पित्तदाहहारक, तृष्णानिराक, वादी, श्रमनाशक और रुफकारक है ।

विवरण । माडके वृक्ष वन जगल सर्वत्र होतेहैं, पत्ते बड़े बड़े लम्बे और गोल होतेहैं, फूल मरेड और लाल रंगके आतेहैं ।

साजनामानि ।

साजडोवनजोवृक्ष कृष्णत्वक श्यामसारकः ।

वागफलोत्थनिस्सारवलकोवीरवृक्षकः ॥

अर्थ-साजड, वनजवृक्ष, कृष्णत्वक, श्यामसारक, वागफल, निस्सारफलक, वीरवृक्षक ।

हिन्दीभाषामें कील (१) ।

| | |
|----------------|-----------------------|
| मराठीभाषामें | आयन, ऐन । |
| गुजरातीभाषामें | साजड । |
| तेलुगुभाषामें | नल्लमहि । |
| लैटिनभाषामें | टामिनेलिया ग्लेब्रा । |

अभ्य गुणा ।

“पार्थक्षतेनिलेभग्नैरक्तस्तम्भेकफेहित” ॥

अर्थ—साजड—क्षत, वात, भग्न, रक्तस्तम्भ और कफरोगमें हितकारी है ।

विवरण—साजडभी अर्जुनका भेद है, इसकी आकृति प्रायः अर्जुनवृक्षकी समान होती है । इसीका भेद ढोल समुद्रिका जानना ।

ढोलसमुद्रिकागुणा ।

ढोलसमुद्रिकाप्रोक्ताकीटादीनाविपप्रणुन ॥

अर्थ—ढोलसमुद्र—कीटादिकोंके विषको हग्नेशाला है ।

इति श्रीशालिग्रामनिजन्दुमूपणे वटादिर्ग ॥ ६ ॥

अथ धातूपधातुवर्गः ।

सुवर्णनामानि ।

स्वर्णसुवर्णकनकहिरण्यहेमहाटकम् ।

चामीकरशातकौम्भद्राविणभूरिपिञ्जरम् ॥

अर्थ—स्वर्ण, सुवर्ण, कनक, हिरण्य, हेम, हाटक, चामीकरशातकौम्भ, द्राविण, भूरिपिञ्जर, (गागेय, भस्म, कर्तुर, जातरूप, महारजत, काश्चन, रुक्म, कार्तस्वर, जाम्बून, अष्टापद, कर्हाटक, रुद्रय, मानसि, अकुप्य, लोहोत्तम, भूत्तम, पुरट, रेकन, शातकुम्भ, कर्तुर, कर्चुर, रुक्म, भद्र, गैरिक, चाम्पेय, भरु, चन्द्र, कलधौत, अश्रक, अग्निमीज, लोहवर, उर्ध्व, मारुक, स्पृश, मणिप्रभव, मुग्यधातु, शतरवण्ड, उज्ज्वल, कल्याण, मनोहर, अग्निवीर्य, अग्नि, भास्कर, पित्रान आपिञ्जर, तेज, त्रिप्त, अग्निभ, दीप्तक, मङ्गल्य, सीमेरुक, भृङ्गार, जाम्बर, आग्नेय, निष्क, तपनीयक, अग्निशिर, चट, अय, पेश, कृञ्जन, लोह, अमृत, मरुत, दध, चारुत्न, पीतक, श्रीनिकेत, भृषणार्ह, सूर्यनामक)

संस्कृतभाषामे सुवर्णं, स्वर्णं ।
 हिन्दीभाषामे सोना ।
 वगभाषामे सोना ।
 मराठीभाषामे सोने ।
 गुजरातीभाषामे सोनु ।
 कर्णाटकीभाषाम चिन्ना, स्वर्ण ।

तैलिङ्गीभाषामे भङ्गार ।
 इथेजीभाषामे गोल्ड । Gold
 लैटि० ओर । Aurum
 फारसीभाषामे तिला ।
 अग्नीभाषामे जह्व ।

स्वर्णशुणा ।

स्वर्णस्निग्धकपायचतित्तमधुरमेवच ।

स्वादुशीतत्रिदोषघ्नरसायनसुरोचकम् ॥

चक्षुष्यमायुष्यप्रजावीर्य्यवलस्मृतिप्रदम् ॥

अर्थ-सोना-स्निग्ध, कपेला, कडवा, मधुर, स्वादु, शीतल, त्रिदोष-नाशक, रसायन, रुचिकारक, नेत्रोंको, हितकारी, आयुवर्द्धक, प्रजाजनक, वीर्य्यनायक, बलकारक और स्मरणशक्तिवर्द्धक है ।

मुषर्णररीक्षा ।

दाहेक्तसितछेदेनिकपेकुमुप्रभम् । तारशुल्बोज्झित
 स्निग्धकोमलगुरुहेमतत् ॥ तच्छ्वेतंकठिनरत्नविवर्णसमल-
 दलम् ॥ दाहेछेदेसितश्चेतकपेत्याज्यलघुस्फुटम् ।

अर्थ-तपानेमें लालहो, तोड़नेमें सफेदहो, कर्तार्यके ऊपर रखनेसे केशरी रंगका होजाय, चादी और तांबे करके रहितहो, स्निग्ध, नरम और भारी ऐसा मोना उत्तम होता है । गन्धेदगका बडोर, रूखा, बुध्दगका, मेलयुक्त, परतयुक्त, तपाने और तोड़नेमें सफेद हो, कर्तार्यके ऊपर रखनेसे सफेद होजाय, हलका और चोट मारनेसे टूट जावे ऐसा मोना त्याग्य है ।

भवेच शुणा ।

सुवर्णशीतलंवृष्यवत्यगुरुसायनम् । स्वादुतित्तञ्जतुवर-
 पाकेचस्वादुपिच्छिलम् ॥ पवित्रबृहणनेत्र्यमेधास्मृतिम-
 तिपदम् । हृद्यमायुष्करंकान्तिवाग्विशुद्धिस्थिरत्वकृत ॥
 विपद्द्वयक्षयोन्मादत्रिदोषज्वरशोपहृत् ।

अर्थ-सोना (सोनेकी, भस्म)-शीतल, वीर्य्यवर्द्धक, बलवर्द्धक, भारी

रसायन स्वादिष्ठ, कडवा, कपेला, पचनेमें स्वादु पिच्छिल, पवित्र, पुष्टिकारक, नेत्रोका हितकारी तथा मेघा, स्मरण शक्ति और बुद्धिजनक है, हृदयको हितकारी, आयुवर्द्धक, कान्तिजनक, वाणीको शुद्ध और स्थिर करनेवाला, तथा स्थावरविष, जगमविष, क्षय, उन्माद, त्रिदोष, ज्वर और शोषको दूर करे है ।

असम्यङ्मारितस्वर्णगुणा ।

असम्यङ्मारितस्वर्णवलवीर्य्यचनाशयेत् ।

करोतिरोगान्मृत्युञ्जतद्धन्याद्यन्नतस्ततः ॥

अर्थ—अविधिसे मारा सुवर्ण-वल, और वीर्य्यनाशक है, रोगजनक और मृत्युकारक है । इसकारण उसको भले प्रकारसे मारे ।

अशुद्धस्वर्णस्यदोषाः ।

वलंसवीर्य्यहृतेनराणांरोगव्रजपोषयतीहकाये ।

असौख्यकार्य्येवसदासुवर्णमशुद्धमेतन्मरणञ्चकुर्यात् ॥

(भा० प्र०)

अर्थ—अशोधित सुवर्ण-वल और वीर्य्यनाशक, शरीरमें अनेकप्रकारके रोगोंको उत्पन्न करनेवाला, निरन्तर, अशुखकारक और मरणको करनेवाला है ।

दह्यतेधातवोवह्नौमणिरन्नाभ्रकादयः । नक्षीयतेनम्रियतेसुवर्णमजरामरम् ॥ अपक्वहेमसघृष्टशिलायांजलयोगतः ।

द्रवरूपतुतत्प्रेयमधुनागुणदायकम् ॥ मध्वामलरूचूर्णचवरकश्चेतितत्रयम् । प्राश्यारिष्टग्राहितोपिमुच्यतेप्राणसकटात् ॥ तस्मान्मृतोत्थितचापिभक्षयन्तद्विचारयेत् ।

मृतहाटकदिव्यकार्तिनोतिक्षतश्वासकासोक्षयपित्तवातो ।

प्रमेहग्रहण्यातिसारोचकुष्ठज्वरहन्तिवापढकदर्पदच ॥

अर्थ—धातु, मणि, रत्न और अभ्रकादि सम्पूर्ण रस अग्निमें डालनेसे जलजातेहैं । किन्तु, सोना नतो मरताहै और न कम होताहै, इसकारण यह अजर और अमरहै । कच्चे सोनेको लेकर जलके योगसे पत्थरपर धिसे, फिर उसमें सहित ढालकर पिघे तो अत्यन्त गुण होताहै ।

सहस्र-आमलेका चूर्ण और सोनेके बर्क इनको एकत्र मिलाकर चाटनेसे अरिष्टको प्राप्त हुवा और प्राणसकटहोने परभी आरोग्य होजाता है ।

सोनेकी भस्म-दिव्य कातिजनक तथा क्षत, श्वास, खँसी, क्षय, पित्त, वात, प्रमेह, संग्रहणी, अतिसार, कुष्ठ और ज्वरको दूर करेई तथा नपुमकोंके कामदेवकी वृद्धि करे है ।

स्त्रजंस्पोत्पत्ति ।

पुगनिजाश्रमस्थानासप्तर्षीणाजितात्मनाम् । मरीचिगिरा
अत्रि.पुलस्त्य.पुलहःऋतु ॥ वसिष्ठश्चेतिसप्तैतेकीर्तिताः प-
रमर्षयः । पत्नीविलोम्यलावण्यलक्ष्मीसम्पन्नयावनाम् ॥
कदर्पदर्पविध्वस्तचेतसोजातवन्दसः । पतितयद्धरापृष्ठेरेतन्तु
हेमतामगात् ॥ कृत्रिमचापिभवतितद्रसेन्द्रस्यवेधतः ॥ (भा प्र)

अर्थ-पूर्वकालमें मरीचि, जगिरा, अत्रि, पुलस्त्य, पुलह, ऋतु और वसिष्ठ यह जितात्मा, सप्तऋषि अपने आश्रममें बैठे हुयेये । इनकी पत्नीकी लावण्यता और यावनावस्थारूप लक्ष्मीको देख कामके वाणोंसे पीडित अग्रिष्ठा शुरु जो पृथ्वीमें गिरा उगमे सोनेकी उत्पत्ति हुई और एक कृत्रिमभी होताहै, जिसको पागेके वेधने मनाते है ।

विवरण-लक्षा, चीन, अमेरिका, आफ्रिका आदिद्वीपोंमें सोनेकी अनेक खानें हैं । प्रायः उपर्युक्तस्थानोंकी भूमिको खोदनेसे जो सोनेकी पूलमा मिलाहुवा गेता निकलताहै उगको अनेकप्रकारसे साफ करके मोना बनाया जाता है ।

रूप्यवनामानि ।

रूप्यंदुर्वर्णकश्चेतस्वर्जरलोहराजकम् ।

अकुर्यंरजतसौधविमलचन्द्रलोहकम् ॥

अर्थ-रूप्य, दुर्वर्णक, श्वेत, स्वर्ण लोहगजद, अरुण्य, रजत, गोघ, विमल, चन्द्रलोहक, (शुभ्र, वसुध्रेष्ठ, रुधिर, श्वेतक, महाशुभ्र, तनस्पक, चन्द्रमूर्ति, सित, तार, कल्पित, इन्द्रलोहक, रौप्य, धौत, चन्द्रहात, राजरग, दुर्वर्ण, भगवीच, फलधौत, कुप्य, रुचिर, चन्द्रवपु, महाशुभ्र, पाप्मन, महाधन, चन्द्रकान्ति, शुभ)

| | | | |
|-----|----------------------|-----|----------------------|
| स० | रूप्यक, रौप्य, रजत । | तै० | ऐंडी । |
| हि० | चादी, रूपा । | इ० | सिल्वर । Silver |
| व० | रूप । | लै० | आर्गेन्टम । Argentin |
| म० | रुपे, चादी । | फा० | नुकरा । |
| गु० | म्पु । | अ० | फिहा । |
| क० | बोह्लि । | | |

रौप्यपरीक्षा ।

गुरुस्निग्धमृदुधेतदाहेच्छेदेवनक्षमम् । वर्णाद्यचन्द्रव-
त्स्वच्छरूप्यनवगुणशुभम् ॥ कठिनकृत्रिमरूक्षरक्तपीतद-
ललघु । दाहेच्छेदेघनेर्नष्टरूप्यदुष्टं प्रकीर्तितम् ॥

अर्थ-तोलमें भारी, स्निग्ध, नरम, तपाने और तोड़नेमें मफेद, घनकी चोटको सहलेवे, सुंदरवर्ण और चन्द्रमाके समान निर्मल यह नवगुणयुक्त रूपा उत्तम होता है । कठोर बनावटी, रूखा, लाल, पीलेपत्तरवाला, हल्का, तपाने तोड़ने और घनकी चोटसे टूटजाय ऐसा रूपा दुष्ट होता है ।

रौप्यगुणा ।

रौप्यस्निग्धकपायाम्लविपाकेमधुरसरम् ।

वयस स्थापनशीतलेखनवातपित्तजित् ॥

अर्थ-रूपा-स्निग्ध कपेला, अम्ल, पचनेमें मधुर, सागक, आयुवर्द्धक, शीतल लेखन और वातपित्तको हरनेवाला है ।

अन्यज्ञ ।

तारचतारयतिरोगसमुद्रपारदेहस्यपौष्टिककरहरतेमलच ।

वर्ण्यविपन्नममलहर्तिप्रमेहवृष्यपुनर्नवरकरुरुतेचिरायुः ॥

अर्थ-तार (रूपा)-प्राणियोंको रोगरूपी समुद्रमें तारनेवाला है, शरीरको पृष्ट करनेवाला, देहके मलको हरनेवाला, वर्णको उज्ज्वल करनेवाला, विपनाशक, प्रमेहनाशक, वांस्पर्धक, वृद्धमनुष्यको यौवनमान करनेवाला और आयुको बढ़ानेवाला है ।

अपिच ।

सितयाहन्तिदाहाद्यवातपित्तफलत्रिकात ।

त्रिसुगन्ध्याप्रमेहादीन् रजतहत्यसंगयम् ॥

सहत-आमलेका चूर्ण और सोनेके बर्क इनको एकत्र मिलाकर चादनेसे अरिष्टको प्राप्त हुवा और ग्राणसकटहोने परभी आरोग्य होजाता है ।

सोनेकी भस्म-दिव्य कातिजनक तथा क्षत, श्वास, खोंसी, क्षय, पित्त, वात, प्रमेह, मग्नहणी, अतिसार, कुष्ठ और ज्वरको दूर करेहै तथा नपुमकोंके कामदेवकी वृद्धि करे है ।

ऋषणम्योत्पत्ति ।

पुरानिजाश्रमस्थानांसप्तर्षीणांजितात्मनाम्।मरीचिरगिरा
अत्रि पुलस्त्य पुलह क्रतु ॥ वसिष्ठश्चेतिसप्तैतेकीर्तिता प-
रमर्षय । पत्नीविलोक्यलावण्यलक्ष्मीसम्पन्नयावनाम् ॥
कदर्पदर्पविध्वस्तचेतसोजातवेदस । पतितयद्वरापृष्टरेतस्तु
हेमतामगात्॥कृत्रिमचापिभवतितद्रसेन्द्रस्यवेधत॥(भा प्र)

अर्थ-पूर्वकालमें मरीचि, अगिरा, अत्रि, पुलस्त्य, पुलह, क्रतु और वसिष्ठ यह जितारामा, सप्तऋषि अपने आश्रममें बैठे हुयेये । इनकी पत्नीकी लाव-
ण्यता और यावनावस्याम्प लक्ष्मीको देख कामके बाणासे पीडित अग्निका
शुक्र जो पृथ्वीमें गिरा उममें सोनेकी उत्पत्ति हुई और एक कृत्रिमभी
होताहै, जिसकी पारेके वेधमें घनाते हैं ।

विवरण-रूपा, चीन, अमेरिका, आफ्रिका आदिदेशोंमें सोनेकी अनेक
खानें हैं । प्रायः उपर्युक्तस्थानोंकी भूमिको खोदनेमें जो सोनेकी पूरणा
मिलाहुवा गेठा निकलताहै उसको अनेकप्रकारमें माफ करके मोना
बनाया जाता है ।

रूपवचनामार्ति ।

रूप्यदुर्वर्णकंश्वेतग्वर्जरलोहराजकम् ।

अकूप्यरजतसौधमिमलचन्द्रलोहकम् ॥

अर्थ-रूप्य, दुर्वर्णक, श्वेत, रज्जु रोहराजक, अकूप्य, रजत, सौध,
विमल, चन्द्रलोहक, (शुभ्र, वसुश्रेष्ठ, रुधिर, श्वेतक, महाशुभ्र, तत्तत्पद,
चन्द्रभूति, सित, तार, कल्पित, इन्द्रलोहक, गैर्य, धौत, चन्द्रहास, गान्धन,
दुर्वर्ण, रंगहीन, फलधौत, कृष्ण, रुधिर, चन्द्रगु, महामु, चापक, महा-
घन, चन्द्रकान्ति, शुभ्र)

स० रूप्यक, रौप्य, रजत ।
 हि० चादी, रूपा ।
 व० रूप ।
 म० रुपें, चादी ।
 गु० रुपु ।
 क० वेष्टि ।

तै० ऐंडी ।
 इ० सिल्वर । Silver
 लै० आर्गेन्टम । Argentinum
 फा० नुकाग ।
 अ० फिहा ।

रौप्यपरीक्षा ।

गुरुस्निग्धमृदुभेददाहेच्छेदेधनक्षमम् । वर्णाख्यचन्द्रव-
 त्स्वच्छरूप्यनवगुणशुभम् ॥ कठिनकृत्रिमरूक्षरक्तपीतद-
 लंलघु । दाहेच्छेदेधनेर्नष्टरूप्यदुष्टंप्रकीर्तितम् ॥

अर्थ-तोलम भारी, स्निग्ध, नरम, तपाने और तोड़नेमें मफेद, धनकी चोटको सहलेवे, सुंदरवर्ण और चन्द्रमाके समान निर्मल यह नवगुणयुक्त रूपा उत्तम होता है । कठोर बनावटी, रूखा, लाल, पीलेपत्तरवाला, हलका, तपाने तोड़ने और धनकी चोटसे टूटजाय ऐसा रूपा दुष्ट होता है ।

रौप्यगुणा ।

रौप्यस्निग्धकपायाम्लविपाकेमधुरसरम् ।

वयस स्थापनशीतलेखनवातपित्तजित् ॥

अर्थ-रूपा-स्निग्ध कपेला, अम्ल, पचनेमें मधुर, सागक, आयुवर्द्धक शीतल लेखन और वातपित्तको हरनेवाला है ।

अन्यथा ।

तारचतारयतिरोगसमुद्रपारदेहस्यपौष्टिककरहरतेमलच ।

वर्ण्यविपन्नममलहरतिप्रमेहवृण्यपुनर्नवकरकुरुतेचिरायुः ॥

अर्थ-तार (रूपा)-प्राणियोंको रोगरूपी समुद्रसे तारनेवाला है, शरीरको पुष्ट करनेवाला, देहके मलको हरनेवाला, वर्णको उज्ज्वल करनेवाला, विपनाशक, प्रमेहनाशक, वीर्यवर्द्धक, वृद्धमनुष्यको यौवनवान करनेवाला और आयुको बढ़ानेवाला है ।

अपिच ।

सितयाहन्तिदाहाद्यवातपित्तफलत्रिकात् ।

त्रिसुगन्ध्याप्रमेहादीन्नजतहत्यसशयम् ॥

अर्थ-रूपा-चीनीके साथ-दाहादिरोगांको, त्रिफलेके साथ-वातपित्ता
टिकांको और त्रिपुगन्धि (इलायची, दालचीनी और तेजपात) के साथ-
प्रमेहादिक रोगोंको हर्नेवाला है ।

अशोधितरोष्यशुणा ।

तारशरीरस्यकरोतितापविध्वसनयच्छतिशुक्रनाशम् ।

वीर्य्यबलहन्तितनोश्चपुष्टिमहागदान्पोशयतिह्यशुद्धम् ।

अर्थ-अशोधित रूपा-शरीरमें तापको कर्नेवाला, शरीरको शिथिल
करनेवाला, शुक्रनाशक, वीर्य्यविनाशक, पुष्टिनाशक, यत्हागक और महागो-
गोंको उत्पन्न करनेवाला है ।

रोष्यस्यात्पत्ति ।

त्रिपुरस्यवधार्थायनिर्निमेषेर्विलोचने । निरीक्षयामासगि-
वः क्रोधेनपरिपूरित ॥ अग्निस्तत्कालमपतत्तस्यैकस्मा-
द्विलोचनात् । ततोरुद्र समभवद्वेश्वानरइवज्वलन् ॥ द्वि-
तीयादपतन्नेत्रादश्रुचिन्दुस्तुवामकात् । तस्माद्भजतमुत्पन्न-
मुक्तकर्मसुयोजयेत् ॥ कृत्रिमञ्चभवेत्तद्विवगादिरमयोगतः ।

(भा० प्र०)

अर्थ-त्रिपुगामुरके वध करनेके लिये श्रीमहादेवजी अत्यन्त क्रोधित हुये
तब उम त्रिपुगामुरको पत्रकगदित देगते हुये उगीसमय महादेवके पुत्रनेत्रमे
अग्नि निरुगी, जिससे महादेव अग्निके समान प्रज्वलित होते हुये और योंपे
नेत्रमे जो आसुकी मूत्र गिरी उममे चानीकी उत्पत्ति हुई । एक कृत्रिम
चानी बग और पारेके योगसे बनती है ।

विवरण । चांदीकी खानें अमेरिका, मिलोन आदि देशाम अधिरुद्ध ।

ताम्रनामानि ।

ताम्रम्लेच्छमुखद्विष्टंवरिष्ठकनीयसम् ।

अर्थ-ताम्र, म्लेच्छमुख, द्विष्ट, वरिष्ठ, कनीयस (ताम्रक, शुन्य, व्यष्ट,
उदुम्बर, शुल, उदुम्बर, औदुम्बर, औदुम्बर, उदुम्बर, रविसप्तक, मुनिपि
चल, अक, सुस्पांड, म्नेहितापग, लोहिताप, सपनेष्ट, अम्यक, अग्विन्,
रविन्दोद, रविमिष, रक्त, नैपासिक, रक्तपात्र, सर्वलोद, पवित्र, ब्रह्मरथंता,
भासुर)

| | | | |
|-----|---------|-----|-------------------|
| म० | ताम्र । | तै० | गगी । |
| हि० | ताँवा । | ता० | ताव्रम, शेषु । |
| व० | तामा । | इ० | कापर । Copper |
| म० | तामँ । | ते० | क्युप्रम । Cuprum |
| गु० | तावो । | फा० | मिस । |
| क० | ताम्र । | अ० | नुहाम । |

उत्कृष्टताम्रस्य लक्षणम् ।

जपाकुसुमसङ्काशस्निग्धमृदुघनक्षमम् ।

लोहनागोज्झितताम्रमारणायप्रशस्यते ॥

अर्थ—जो जपाके फूँकी समान रंगवाला, स्निग्ध, नरम, घनकी चोटकी सहलेवे और जिसमें लोहे तथा शीशेका मेल न हो ऐसा ताँवा मारणकर्मम उत्तम होता है ।

दूषितताम्रस्य लक्षणम् ।

कृष्णरूक्षमतिस्तब्धश्चेतचापिघनासहम् ।

लोहनागयुतंचेतिशुल्बदुष्टंप्रकीर्तितम् ॥

अर्थ—जो काला, रूखा, अत्यन्त कठोर, सफेद, घनकी चोट न सहसके और लोहे तथा शीशेयुक्त हो ऐसा तामा दुष्ट होता है । यह माग्नकर्ममत्याज्य है ।

ताम्रगुणा ।

ताम्रसुपक्वमधुरकपायतिक्तविपाकेकटुशीतलव ।

कफापहपित्तहरविघ्नशूलघ्नपाण्डूदरगुल्मनारिः॥ (रा नि)

अर्थ—ताँवा—मधुर, कपेला, कड़वा, पाकमें कटु, शीतल, कफनाशक, पित्तानिवारक तथा विघ्न, शूल, पाण्डुरोग, उदररोग और गुल्मरोग-नाशक है ।

अप्यञ्च ।

गुल्मञ्चकुष्ठचगुदामयचशूलानिरोफोदरपाण्डुरोगम् ।

उत्क्लेशमेदभ्रमदाहहीननिहन्तिसम्यङ्मृतमेवशुल्बम् ॥

अर्थ—औरभी ताँवा—गुल्म, कोढ़, गुदरोग, शूल, सूजन, उदररोग, पाण्डुरोग उत्क्लेश, भेद, भ्रम और दाहकी हरनेवाला है ।

अपिच ।

ताम्रकपायंमधुरसवित्तमम्लचपाकेकटुसारकच ।

पित्तापहंशेष्महरंचशीतंतद्रोपणस्यालघुलेखनंच ॥

पाण्डुरदराशोज्वरकुष्ठकासश्वासक्षयान्पीनसमम्लपित्तम् ।

शोफकृमीञ्जूलमपाकरोतिग्राहूर्बुधावृद्धणमल्पमेतत् ॥

अर्थ-तावा-कपिला मधुर, कडवा, अम्ल, पाकम कटु, सागक, पित्त-
नाशक, रुफनाशक, शीतल, रोषण, हलका, ऐसन तथा पाण्डुरोग, उदर-
रोग, उन्मादीर, ज्वर, फोड खाँसी, चाम, क्षय, पीनम, अम्लपित्त, सृजन,
कृमि और शूलको दूर करे है और अल्पवृद्धण है ।

असम्बद्धमारिनाघ्न्य दोषा ।

एकोदोषोविपेतामेत्वसम्यङ्मारितेष्टे ।

दाहःस्पर्शोऽरुचिर्मूर्च्छाक्रोदोर्गोवमिर्भ्रमः ॥

अर्थ-विषम तो केवल एकही दोष है, पाल्नु कुविधिते माते इस तांनम
दाह, पसीना, अरुचि, मूर्च्छा, क्रोद मे (दस्तका होना) वमन और भ्रम
यह आठ दोष रहते हैं ।

ताम्रापणि ।

शुक्रयत्कार्तिकेयस्यपतितधरणीतलं ।

तस्मात्ताम्रसमुत्पन्नमिदमाहु पुगविदं ॥

अर्थ-कार्तिकेयका वीर्य पृथ्वीम पतित हुआ उममें ताम्रेशी उत्पत्ति
हुई ऐसा माचीन विद्या कहते हैं ।

विवरण । वङ्गदेशमें ताम्रेशी अनेक खान है ।

रुगनामार्ग ।

रगंवंगचक्रसज्जस्वर्णजनागजीवनम् ।

अर्थ-रग, वग, चक्रमत्त, स्वर्णज, नागजीवन, (मृदङ्ग, गुहपत्र, तमर,
नागज, कम्तीर, आलीमरु, मिहृ, स्वेत, नाग, शृषु, शृषुग, आप, मधुर,
हिम, कुरुष्प, पिच्छ, प्रीतिगन्ध, चिप्ट)

ग० रग, वग ।

त० तमरम् ।

हि० रग, रगा, कर्पूर, वग ।

इ० टीन् ।

व० राक्ष, वग ।

रि० स्वेदम् ।

म० मपीर ।

पा० अरजीज ।

गु० कलह, कर्पूर, गारिपारी ।

अ० रमाय ।

ख० तार ।

रगशुणा ।

त्रपुसकटुतिक्तहिमकपायलवणंसरचमेहघ्नम् ।

कृमिदाहपाण्डुशमनकान्तिकरंतद्रसायनंच ॥ (रा नि)

अर्थ-राग (वग)-कटु, तिक्त, गीतल, कपायरसान्वित, लवणरसयुक्त, सारक, प्रमेहनाशक, कृमिनाशक, दाहनिवारक, पाण्डुरोगहारक, कान्तिकारक और रसायन है ।

अन्यत्र ।

रगलघुसररूक्षमुष्णमेहकफकृमीन । निहन्तिपाण्डुसश्वास
चक्षुष्यपित्तलमनाक् ॥ सिहोयथाहस्तिगणनिहन्ति त-
थैवरगखिलमेहवर्गम् ॥ देहस्यसौख्यंप्रबलेन्द्रियत्व न-
स्यपुष्टिविदधातिनूनम् ॥

अर्थ-राग (वग)-इल्का, सारक, रूखा, गरम तथा प्रमेह, कफ, कृमि, पाण्डु और श्वासरोगको दूर करेहै, नेत्रोंको हितकारी और किंचित् पित्तकारी है । जैसे सिंह हाथियोंके समूहोंका नाश करता है, उसीप्रकार वग सर्वप्रकारके प्रमेहादिकोंका नाश करती है । देहको सुख देनेवाली, इन्द्रियाको प्रबल करनेवाली और देहको पुष्टि करनेवाली है ।

अपिच ।

कासेश्वासेचमन्दाग्रोपीनसेविषमज्वरे ।

प्रमेहेपाण्डुरोगेचमृतवगप्रयोजयेत् ॥

अर्थ-खाँसी, श्वास, मन्दाग्रि, पीनम, विषमज्वर, प्रमेह और पाण्डुरोगम वग देनी हितकारी है ।

अशोधितयद्गदोप ।

वगविधत्तेखलुशुद्धिहीनतथाह्यपक्वश्चकिलासगुल्मो ।

कुष्ठानिशूलकिलवातशोथपाण्डुंप्रमेहश्चभगदरच ॥

विषोपमरक्तविकारवृन्दक्षयश्चकृच्छ्राणिकफज्वरच । मेहा-
श्मरीविद्रधिमुख्यरोगान्नागोऽपिकुर्यात्कथितान्विकारान् ॥

अर्थ-अशोधित और अपक्व वग-किलासकुष्ठ, गुल्म, कुष्ठ, शूल, वात-
व्याधि, सृजन, पाण्डु, प्रमेह, भगन्दर, रक्तविकार, क्षय, मूत्रकृच्छ्र, कफ,

पित्तापहंश्लेष्महरचशीतंतद्रोपणस्याल्लघुलेखनच ॥

पाण्डूदराशोज्वरकुष्ठकासश्वासक्षयान्पीनसमम्लपित्तम् ।

शोफकृमीञ्जलमपाकरोतिप्रादुर्बुधावृंहणमल्पमेतत् ॥

अर्थ-ताया-रूपेण मधुर, कडवा, अम्ल, पाकम कटु मारक, पित्त-नाशक, कफनाशक, शीतल, रोपण, हलका, छेदन तथा पाण्डूगोग, उग्र-गोग, ववामीर, ज्वर, फोड, खाँसी, श्वास, क्षय, पीनम, अम्लपित्त, सूजन, कृमि और शूलको दूर करे दे और अल्पवृहण दे ।

असम्पद्मारिनामस्य दोषा ।

एकोदोषोविपेताप्रेत्वसम्यङ्मारितेष्टे ।

दाह स्वदोऽरुचिर्मूर्च्छाहृदोरेकोवमिभ्रम ॥

अर्थ-विषमें तो केवल एकही दोष है, पान्थु शुक्तिभिगे मारि रूप तीव्रम दाह, पसीना, अरुचि, मूर्च्छा, हृद भेद (दर्माका होना) वमन और भ्रम यह आठ दोष रहते हैं ।

ताम्रापनि ।

शुक्रयत्कार्तिकेयस्यपतितधग्णीतले ।

तस्मात्ताम्रममुत्पन्नमिदमाहु पुगविद ॥

अर्थ-कार्तिकेयका धीर्य पर्याप्त पतित हुआ उगम तापकी उपाधि हुई ऐसा प्राचीन विद्वान् कहते हैं ।

विवरण । यद्गन्धम तामेकी अनेक गानें हैं ।

रगन मानि ।

रगवगचक्रसङ्गम्वर्णजनागजीवनम् ।

अर्थ-रग, वग, चक्रगन्त, स्वर्णज, नागजीवन, (मृदङ्ग, गुहपत्र, तमर, नागज, रस्तीर, आर्यामर, गिहउ, स्वरेत, ताम्र, प्रपु, प्रपुप, आप, मङ्ग, हिम, पुष्प्य पिघर, प्रतिगन्ध, चिपट)

म० रग, वग ।

त० तमरमु ।

हि० रग, रगा, रग, वग ।

इ० गेल । 1m

प० रग, रग ।

ह० रगम् । 5. 11. 11

म० वर्यान् ।

प० अरजीन ।

गु० रग, रग, रग, रग ।

अ० रगम् ।

र० तमर ।

| | | | |
|-----|--------------|-----|-------------------|
| स० | नाग, सीसक । | ते० | शीश, शिपमु । |
| हि० | सीसा । | दा० | शिश्नु । |
| व० | सीसे, सीसा । | इ० | लेड । Lead |
| म० | शिसें । | लै० | प्लुम्ब । Plumbum |
| गु० | शीसु । | फा० | सुर्व । |
| क० | सीसा । | अ० | रसासुल, अश्वद । |

सीसक गुणा ।

सीसरगगुणज्ञेयविशेषान्मेहनाशनम् । नागस्तुनागशततुल्य-
बलंददाति व्याधिविनाशयतिजीवनमातनोति॥वह्निप्रदीपय-
तिकामबलंकरोति मृत्युञ्जनाशयतिसततसेवितोऽसौ ॥

अर्थ-शीशमें रौंगके तुल्य गुण हैं, विशेषकर प्रमेहको दूर करेहै ।
सीसा-सौ हाथियोंकी समान बलको देवेहै । व्याधिविनाशक, जीवनवर्द्धक,
जठराग्निको दीपन करे, कामजनक, बलवर्द्धक, और निरंतर सेवन करनेसे
मृत्युकाभी नाश करेहै ।

अन्यञ्च ।

क्षयपवनविकारेगुल्मपाण्डुमयेषु भ्रमकृमिकफशूलमेहका-
सामयेषु । ग्रहणिगुदगदैनैवैतद्वह्नीप्रशस्त शुभविधिकृत-
नाग कामपुष्टिददाति ॥

अर्थ-सीसा-क्षयरोग, वातविकार, गुल्म, पाण्डुरोग, भ्रम, कृमि, कफ,
शूल, प्रमेह, खाँसी, समग्रणी और गुदाके रोगोंमें देना चाहिये ।

नागस्य प्रकारभेदा ।

नागन्तुद्विविधप्रोक्तकुमारसमलतथा । कुमारसर्वकार्येषु
योजनीयगुणाधिकम् ॥द्रुतद्रावंमहाभारछेदेकृष्णसमुज्ज्व-
लम् । पूतिगंधवहि कृष्णशुद्धसीसमतोन्यथा ॥

अर्थ-कुमार और समल इन भेदोंसे नाग दो प्रकारका है । तथा अधिक
गुणवाला होनेके कारण कुमार जातिके सीसेको सर्व कार्योंमें प्रयोग करना
चाहिये । जो अग्निमें डालनेसे शीघ्र गलजाय, तौलमें भारी हो, तोड़नेमें
काला और भीतर उज्ज्वल हो, जिसमें दुर्गंध आव और घाहग्ने काला हो
ऐसा सीसा उत्तम होता है ।

ज्वर, मेह, पथरी और विद्रधि आदि मुख्यरोगोंको उत्पन्न को है तथा विषकी ममान है। और अशोधित शीताभी उपरोक्त रोगोंको उत्पन्न करता है।

यगन्त्र प्रकारभेदा ।

क्षुरकमिश्रकञ्चापिद्विविधवद्भुमुच्यते ।

उत्तमक्षुरकतत्रमिश्रकत्वहितमतम् ॥

अर्थ-क्षुरक और मिश्रक इन भेदसे यग दो प्रकारकी है, तहां शुभक यग अत्यन्त उत्तम और मिश्रक यग अहितकारी है।

धवल मृदुल सिग्ध द्रुतद्रावंसर्गारवम् ।

निःशब्दखुरवगस्यात मिश्रकंश्यामशुभ्रकम् ॥

अर्थ-जो श्वेत, नरम, चिकनी शीघ्रगलजाय, तोलमें भारी, और आगमें डालनेसे शब्द न करे उसको खुरक कहते हैं और मिश्रक शुभ्र और श्याम मिलेहुये रंगकी होती है।

असुवर्णर रक्षणम् ।

श्वेतमृदुलघुस्वच्छसिग्धमुष्णसहं हिमम् ।

सूत्रपत्रकरकान्तत्रपुत्रेषुमुदाहृतम् ॥

अर्थ-सफेद, नरम, तोलमें हल्का, स्वच्छ, सिग्ध, उष्णगद, शीतल, निमके मृत् और पत्तर होजाय और चमकदार ऐसा रंग उत्तम होता है।

विवरण । रंग अन्यट्टीपांगे आता है, घर्तनोंकी कटई और रंग प्रभृतिरे काममें आता है। तापके योगसे रंगका कौम्य बनता है। रंगकी भ्रमणी वग कहते हैं।

शीघ्रगनामानि ।

सीससुवर्णकचीनपिष्टसिन्दूरकारणम् ।

अर्थ-सीम, सुवर्णर, चीन, पिष्ट, सिन्दूरकारण (सीमक, सीतापत्रक, नाग, वन, योगेष्ट, गण्डपत्रमर, बट, स्वर्णारि, यवनेष्ट, चीर, वन, विषष्ट, सुवर्णारि, प्रपु [], यक्षक मदायन, पाशुनेष्टक, पाशुमल, श्वेतजन, जड, मुसद्रम, उरग, युग्म, परिपिष्टक, मृदुहृष्णापग, वन, तागुद्विषर, गिरा-पृष्ठ, रपोग, चीनपिष्ट, चीनरग, ऐरव, पाशुमल, पारव) ।

| | | | |
|-----|--------------|-----|------------------|
| स० | नाग, सीसक । | ते० | शीश, शिपमु । |
| हि० | सीसा । | दा० | शिश्नु । |
| व० | सीसे, सीसा । | इ० | लेड । Lead |
| म० | शिसं । | लै० | प्लुबम । Plumbum |
| गु० | शीसु । | फा० | सुर्व । |
| क० | सीसा । | अ० | रुसासुल, अखद । |

सीसक गुणा ।

सीसरगुणज्ञेयंविशेषान्मेहनाशनम् । नागस्तुनागशततुल्य-
बलददाति व्याधिविनाशयतिजीवनमातनोति॥वह्निप्रदीपय-
तिकामबलंकरोति मृत्युञ्जनाशयतिसंततसेवितोऽसौ ॥

अर्थ-शीशमें रॉंगके तुल्य गुण है, विशेषक के प्रमेहको दूर करेहै ।
सीसा-सौ हाथियोंकी समान बलको देवेहै । व्याधिविनाशक, जीवनवर्द्धक,
जठराग्निको दीपन करे, कामजनक, बलवर्द्धक, और निरंतर सेवन करनेसे
मृत्युकाभी नाश करेहै ।

अन्यञ्च ।

क्षयपवनविकारेगुल्मपाण्डुामयेषु भ्रमकृमिकफशूलेमेहका-
सामयेषु । ग्रहणिगुदगदेवैनष्टवह्नीप्रशस्त शुभविधिकृत-
नागःकामपुष्टिददाति ॥

अर्थ-सीसा-क्षयरोग, वातविकार, गुल्म, पाण्डुरोग, भ्रम, कृमि, कफ,
शूल, प्रमेह, खँसी, सग्रहणी और गुदाके रोगोंमें देना चाहिये ।

नागस्य प्रकारभेदा ।

नागन्तुद्विविधप्रोक्तकुमारसमलतथा । कुमारसर्वकार्य्यं
योजनीयंगुणाधिकम् ॥द्रुतद्रावमहाभारच्छेदेकृष्णसमुज्ज्व-
लम् । पूतिगधवह्नि कृष्णशुद्धसीसमतोन्यथा ॥

अर्थ-कुमार और समल इन भेदोंसे नाग दो प्रकारका है । तहा अधिक
गुणवाला होनेके कारण कुमार जातिके सीसेकी सर्व कार्योंमें प्रयोग करना
चाहिये । जो अग्निमें डालनेसे शीघ्र गलजाय, तोलमें भारी हो, तोड़नेमें
काला और भीतर उज्ज्वल हो, जिसमें दुर्गंध आव और बाहरसे काला हो
ऐसा सीसा उत्तम होता है ।

अशोधितयंगनादोषा ।

पाकेनहीनौकिलवगनागौकुष्ठानिगुल्माश्चतथाविकारान् ।

कण्डप्रमेहानिलसादशोथभगन्दरादीन्कुरुत प्रभक्तौ ॥

अर्थ-पाकहीन वग और शीशिके खानेसे-कुष्ठ, गुल्म कण्ड, प्रमेह, मदाग्नि सन्न और भगदरादि रोग उत्पन्न होतेहैं ।

नागोरवति ।

दृष्ट्वाभोगिसुताग्न्यावासुकिस्तुमुमोचह ।

वीर्यजातस्ततोनाग सर्वरोगापहंनृणाम् ॥

अर्थ-भोगिमपंकी मुद्गर पुरीको देख वासुकी साँपने वीर्य छोड़ा गग वीर्यमे मनुष्यकी सर्वरोग हरनेवाला साँगा उत्पन्न हुआ ।

जसदनामानि ।

जसद्वगसदृशगीतिहेतुश्चतन्मतम् ।

अर्थ-जसद, वगसदृश, गीतिहेतु (ज्योतपट्ट, कमास्थि)

सम्भूतभाषाम जसद ।

हिन्दीभाषाम जस्त, जस्ता ।

पैगभाषाम दस्ता ।

मराठीभाषाम जस्त ।

गुजरातीभाषामें जमत ।

तर्लिगीभाषाम रास ।

इंग्रेजीभाषामें स्तिफ ।

लैटिनभाषामें स्तिफ ।

फारसीभाषामें रुपतुविया ।

अरबीभाषामें जसद ।

जसदगुजा ।

जसदतुवगतिकशीतलरुफपित्तहृत् ।

चक्षुष्यपग्ममेहान्पाण्डुश्वामचनाशयेत् ॥

अर्थ-जस्त कपेला कट्वा, शीतल, कलपित्तनाग नेत्रोंको दित्तारंग तथा प्रमेह, पाण्डु और श्वामको दूर करे ।

पातलोहनामानि ।

तीव्रलोहमयन्कान्तंकृष्णाबोलोहकान्तकम् ॥

अर्थ-तीव्र लोह, अयस्कान्त, कृष्णायन, लोहकान्तक (चामरपीर, तीक्ष्ण, आगारालय, शय, शयक, शयक, विष, पिप्पायन, आयन, शय मुन्दज, निशित, राक्ष, अय. वान्त, चिप्रापुत्र, और चालन)

कृष्णलोहनामानि ।

वर्तलोहं तीक्ष्णलोहनीलिकापुटलोहकम् ।

अर्थ—वर्तलोह, तीक्ष्णलोह, नीलिका, पुटलोहक (रुक्मलोह, मृत्तकाल, कृष्णायस, मुण्डलोह, मुण्डायस, ह्यत्सार, गिलात्मज, अश्मज, कृषि-लोह और आर)

| | |
|-----------------|-----------------------------|
| संस्कृतभाषामें | लोह । |
| हिन्दीभाषामें | लोहा, इस्पात, फोलाद । |
| बंगभाषामें | लोह, तिखा, इस्पात, काललोह । |
| मराठीभाषामें | लोखड, पोलाद, तिवें । |
| गुजरातीभाषामें | लोडु, मोडु, गजवेल । |
| कर्णाटकीभाषामें | अयस्कान्त, कन्विण । |
| तैलङ्गीभाषामें | इनुमु । |
| इंग्रेजीभाषामें | आयर्न । Iron स्टील । Steel |
| लैटिनभाषामें | फेरम । Ferrum |
| फारसीभाषामें | आहन्, फोलाद, सगेआहन । |
| अरबीभाषामें | हदीद, हजरल । |

कान्तलोहशुणा ।

गुल्मोदरार्शःशूलाममामवातभगन्दरम् । कामलाशोथकु-
ष्ठानिक्षयकान्तमयोहरेत् ॥ घृहीतानमम्लपित्तञ्चयकृच्चापि-
शिरोरुजम् । सर्वात्रोगान्विजयतेकान्तलोहनसशयः ॥
बलवीर्यवपुःपुष्टिकुरुतेऽग्निविवर्द्धयेत् ।

अर्थ—कान्तलोह,—गुल्म, उदर, अर्श, शूल, आम, आमवात, भगन्दर, कामला, शोथ, कुष्ठ, क्षय, घृहीत, अम्लपित्त, यकृत और मस्तकादि अनेक रोगोंको दूर करे है, बलकारक, वीर्यजनक, शरीरको पुष्टि देनेवाला और अग्निवर्द्धक है ।

कान्तलोहरूप लक्षणम् ।

यत्पात्रेनप्रसरतिजलेतैलविन्दु प्रतप्ते हिं गुग्गंधत्यजतिच-
निजतित्तांनिम्नकल्क । तप्तदुग्धभवतिशिखराकारक
नैतिभूमिं कृष्णांग-स्यात्सजलचणकःकान्तलोहतदुक्तम् ॥

अर्थ-जिसके बर्तनदाग जलमें तेलकी घूँट डालनेसे नहीं फैले, जिसमें सपानेसे दाग अपनी गन्धको छाड़देवे और नीमका कल्क रखनेसे मीठा होजाय तथा जिसमें दूध आँटानसे दूध शिखरके आकार ऊपरको राधा होजावे, पान्तु फले नहीं और जिसमें जलसाहित चने भिगोनेसे फाँले होनावे उसको कान्तलोह कहते हैं ।

अथविधशुद्धलोहस्य गुणाः ।

लोहतित्सरशीतिमधुरतुवांगुरु । रुक्षवयस्यचक्षुष्यलेख-
नंवातलजयेत् ॥ कफपित्तगरशूलशोथार्ग-प्लीहापाण्डुताः ।
मेदोमेहकृमीन्कुष्ठतत्किट्टतद्देवहि ॥

अर्थ-शुद्धलोहा-कडवा, सारक, शीतल, मधुर, कपेला, भारी, रुखा, अवस्थास्थापक, नेत्राको दितकारी, वादी तथा कफ, पित्त, विष, शूल, सूजन, चयामीर, प्लीहा, पाण्डुरोग, मेद, प्रमेह, कृमि और कुष्ठका नाश करे । लोहेके समान लोहेके काँटके गुण जानने ।

अथोषधौष्यदोषाः ।

कृत्रित्वकुष्ठामयमृत्युदमच्छद्वागशूलोकरुतेऽश्मरीच ।
नानारुजाच्चापितथाप्रकापकरोतिहृल्लासमशुद्धलोहम् ॥
जीवहारिमदकारिचायसचेदशुद्धिमदसस्कृतध्रुवम् ।
पाटवंनतनुतंशरीरकेदारुणद्विदिरुजाचयच्छति ॥

अर्थ-अशुद्धलोहा-नपुगकता, पुष्ट, मृत्यु, हृदयरोग, शूल, पररी, तानामकारके रोगोंका योरा और हृत्तातको कानेवाला है । प्राण-नाशक, मदकारक, शरीरकी चातुर्व्यंता नाशक और दारुण हृदय-पापी उत्पन्न करता है ।

लोहस्य रसाभित्तिदोषाः ।

गुरुतादृढताक्लेदोक्फोहस्यकारिता ।
अश्मदोषसुदुर्गन्धोदापासप्तायसस्यतु ॥

अर्थ-गुरुता, दृढता, क्लेद, कफ, देहकारिता पत्यदोष और दुर्गन्ध पर सात दोष लोहेमें स्वाभाविक रहते हैं ।

शुद्धलोहगुणाः ।

मुण्डरुक्षोष्णतित्तचवातपित्तकफप्रणुत् ।

तीक्ष्णपाण्डुरोहरंतच्चशूलमेहनिवारणम् ॥

अर्थ—मुण्डलोह—रूखा, गरम, कडवा, त्रिदोषनाशक, तीक्ष्ण तथा पाण्डुरोग, शूल और प्रमेहको हरनेवाला है ।

लोहस्योत्पत्ति ।

पुरालोमिनदैत्यानांनिहतानांसुरैर्युधि ।

उत्पन्नानिशरीरेभ्योलोहानिविविधानिच ॥

अर्थ—पूर्वकालमें देवताओंके द्वारा युद्धमें विनाश किये हुए जो लोमिन दैत्य उनके शरीरसे अनेक प्रकारके लोहे उत्पन्न हुए, ऐसी लोहेकी उत्पत्ति हुई है ।

लोहसेविन काय्याणि ।

गुञ्जामेकांसमारभ्ययावत्स्युर्नवरक्तिका । तावच्छौहमम-
श्रीयाद्यथादोषबलंनरः ॥ कूष्माण्डतिलतैलचमापान्नंरा-
जिकान्तथा । मद्यमम्लरसं चैव वर्जयेच्छौहसेवकः ॥

अर्थ—एकगुजासे लेकर नवरत्नतक लोहेकी मात्रा है । लोहेको सेवन करनेवाले मनुष्य—पेठा, तिलका तेल, उडद, राई, मदिरा और भ्रम्लरस खटाई आदि) वाले पदार्थोंको छोड़ देवे ।

मण्डूरनामानि ।

सिंहानकिट्टिमण्डूरलोहकिट्टमयोर्मलम् ॥

अर्थ—सिंहान, किट्टि, मण्डूर, लोहकिट्ट, अयोर्मल (लोहसिंहानिका, लोहज, लोहपुटीप, लोहमल, सितमन, सिंहान, सितवान, शूलघातन, लोहमल, किट्ट, लोहचूर्ण, कृष्णचूर्ण, लोष्ट और सिंदूर)

मण्डूरलक्षणगुणा ।

ध्मातस्यलोहस्यमलंमण्डूरमितिचोच्यते ।

यच्छौहंयद्गुणंप्रोक्तंतत्किट्टमपितद्गुणम् ॥

अर्थ—दग्धलोहेके मलकोही मण्डूर कहते हैं । जिस २ लोहेके जैसे ५ गुण हैं, वैसे २ ही उसकी कीटके जानने ।

सप्तविधामण्डूरप्रकारभेदा ।

शताद्धमुत्तमकिट्टमध्यंचाशीतिवार्पिकम् ।

अधमपष्टिर्वर्षयिततोहीनंविषोपमम् ॥ (भा०प्र०)

अर्थ-१०० सौवर्षसे अधिक कालका मण्डूर मवोंलूट है, ८० अस्तां वर्षका मण्डूर मध्यम है, ६० साठ वर्षका मण्डूर अधम और इससे अल्प-कालका मण्डूर विपके समान है ।

विवरण । लोहेकी अनेक जातिहै, उन सबको महा ग्रन्थ बदनेके समयमें नहीं लिखा । लोहेके अलग २ भेद और गुणदोष विशेष देखनेकी इच्छा होय तो "ग्मराजशकर" ग्रन्थमें देखो ।

काम्यतामानि ।

कांस्यविद्युत्प्रियकसंताम्राध्वगशुल्बजम् ॥

अर्थ-काम्य-विद्युत्प्रियक, कम, ताम्राध्वं, वगशुल्बज, (कगारिय, प्रकाश, घण्टाशब्द, अमुराहय, सांगष्टक, घोष, कामीय, घोंसुण्य, बरिलोहक दीप्तलोहक, घोषपुष्प, दीप्तलोह, कामक, कांस, ताम्रप्रयुज, दीप्ति)

सस्मृतभाषामं कांस्य ।

हिन्दीभाषामं फौता, कॉमी ।

बंगभाषामं कांगा ।

मगधीभाषामं कामे ।

गुजरातीभाषामं कामु ।

कणादकीभाषामं कजु ।

तेलङ्गीभाषामं कजु ।

इमेनीभाषामं थेलमेटल । B II Metal मोक्ष । १०००

फारसीभाषामं रोइन ।

अग्नीभाषामं शालिग्राम ।

काम्यरगुणा ।

कांस्यस्यतुगुणान्न्यास्वयोनिसदृशाजने ।

संयोगजप्रभावेणतस्यान्येपिगुणास्त्वृता ॥

कास्यंकपायतित्तोष्णलेखनंविशदसरम् ।

गुरुनेत्रहितरुक्षरुफपित्तहरपरम् ॥ (भा०प्र०)

अर्थ-कांसके गुण ताँबे और रंगके समान जानने । संयोगके कारण इसके अलगभी और गुण कहने हैं । कांगा-कपला, कट्या, गरम, तरल विरल, कुटेक दस्तावर, भारी, नेत्रोंकी दृष्टिकारी, मृदा और चरपित्तको हर करे है ।

अन्यच्च ।

कास्यन्तुतित्तमुष्णचक्षुष्यवातकफविकारघ्नम् ।

रूक्षकपायरूच्यलघुदीपनपाचनपथ्यम् ॥ (रा० नि०)

अर्थ—शुद्ध, काँसा—कडवा, गरम, नेत्रोंको हितकारी, वातकफघ्नोपनाशक, रूखा, कपेला, रुचिकागक, दीपन और पाचक है ।

घृतमेकंविनाचान्यत्सर्वकास्यगतनृणाम् ।

भुक्तमारोग्यसुखदंहितंसात्म्यकरंतथा ॥

अर्थ—एक केवल घृतको छोड़कर शेष सर्व प्रकारके पदार्थ कासेके पात्रमें रखे हुए—भारोग्यता और सुखको देनेवाले तथा सात्म्य होजाते हैं ।

विवरण । कासा—आठभाग तावा और दोभाग रागके योगसे बनाया जाताहै । कासेके पात्र आदि अनेक सामान बनते हैं । कासा—उपधातु है ।

पित्तलनामानि ।

पित्तलञ्चाऽथारकूटकपिलोहसुवर्णकम् ।

रिरीरीरीचरीतिश्चपीतलोहसुलोहकम् ॥

ब्राह्मीतुराज्ञीकपिलाब्रह्मरीतिर्महेश्वरी ।

अर्थ—पित्तल, आरकूट, कपिलोह, सुवर्णक, रिरी, रीरी, गीति, पीतलोह, सुलोहक, ब्राह्मी, राज्ञी, कपिला, ब्रह्मरीति, महेश्वरी (पतिकावेर, द्रव्यदारु, गीती, मिश्र, आर, राजगीति, छुट्टसुवर्ण, सिंहल, पिंगल, पीतनक, लोहितक, पिगललोह, पीतरु, पाकनुण्डी, राजपुत्री, ब्रह्माणी, हरिलोह, पिंग)

संस्कृतभाषामें पित्तल ।

हिंदीभाषामें पीतल, काची पीतल ।

बंगभाषामें पितल, काँचापितल ।

मराठीभाषामें पितल, मोनापितल ।

गुजरातीभाषामें पीतल ।

कर्णाटकीभाषामें पित्तलेपगडु ।

तैलिङ्गीभाषामें इत्तडी ।

इथ्येजीभाषामें ब्राम । Brass

फारसीभाषामें विगज ।

पित्तलगुणा ।

पित्तलस्यगुणाज्ञेयाःस्वयोनिसदृशाजनैः । सयोगजप्रभावं-

णतस्यान्येपिगुणा स्मृताः॥ रीतिकायुगलरुक्षतिलचलव-
णरसे । शोधन पाण्डुरोगघ्नं कृमिघ्ननातिलेखनम् ॥

अर्थ-पीतलके गुण तावे और जस्तकी ममानह, सयोगजनकप्रभावसे
औरगुण कहते हैं । दोनों प्रकारके पीतल-रुखे, कटवे, लवणरसान्वित,
शोधक, पाण्डुरोगनाशक, कृमिनाशक और अतिलेखन नहीं हैं ।

अन्यत्र ।

सकलमेहमरुद्वदजार्जुजग्रहणिकाकफपाण्डुभवरुजम् ।

श्वसनकामलशूलभवंरुजहरतिभस्मतदारकसम्भवम् ॥

अर्थ-पीतल-सर्वप्रकारके प्रमेह, वात, गुदज्वर, ममदण्ठी, कफ, पाण्डु,
धाम, कामला और शूलका नाश करे ।

अपिच ।

रीतेर्द्रवपाण्डुसमीरनाशनरुक्षसर कृमिहरलवण विपघ्नम् ।

वृष्यवलीपलितनाशनमुग्रमायुर्वृष्टिकगेतिसहसाचरसायनच ।

अर्थ-दोनोंप्रकारके पीतल-पाण्डुरोगनाशक, वातविनाशक, रुखे, सारक,
कृमिहारक, लवणरसान्वित, विपनाशक, वीर्यवर्द्धक, वर्णापलितनाशक
और आयुवर्द्धक हैं ।

विवरण । पीतल-उपधातु है यह ताँबे और जस्तके योगसे बनाया
जाता है । इसमें ताँबा १ भाग और जस्त ३ भाग टांककर बनाया जाता
है । यह दोप्रकारका होता है ।

पारदनामानि ।

पारदो रसधातुश्च रसेन्द्रश्च महारस ।

चपल शिववीर्य्यश्च रसःसूतःशिवाह्वय ।

अर्थ-पारद, रसधातु, रसेन्द्र, महारस, चपल, शिववीर्य्य, रस, सूत,
शिवाह्वय (रसराज, मनोय, महोत्तम रगतेह, रगोत्तम, मृतराज, जैत्र,
शिववीज, शिव, अमृत, लोकेश, दुर्द्वेज, मधु, रुद्रज, हस्तेज, अशित्तज,
अविचज, रोचज, अमर, देव, मृत्पुनाशक, स्कन्द, स्कन्दाशक, देव,
दिग्भारत, ग्वापनश्रेष्ठ, मशोद, सुतक, सिद्धधातु, पारद, इरवीज,
रजस्वक, गोधि, पार, लोहेज, दुर्ध्व, मृत्पुनाशन, देवनिधि, शिनेज,
रोचज, म्यामी)

संस्कृतभाषामे पारद ।
 हिन्दीभाषामे पारा ।
 बगभाषामे पारा ।
 मराठीभाषामे पारा ।
 गुजरातीभाषामे पारो ।
 कर्णाटकीभाषामे पारदरसः ।

तैलिंगीभाषामे पारदरसम् ।
 इंग्रेजीभाषामे मर्क्युरी Mercury
 लैटिन्भाषामे हेड्मर्जिर ।
 Hydnargyrum
 फारसीभाषामे सिमान ।
 अरबीभाषामे जीवक ।

पार गुणाः ।

पारदः पडूसः स्निग्धस्त्रिदोषघ्नोरसायन । योगवाही महावृ-
 ष्यः सदा दृष्टिवलप्रदः ॥ सर्वामयहरः प्रोक्तो विशेषात् सर्वकुष्ठ-
 नुत् । असाध्यो यो भवेद्भोगो यस्य नास्ति चिकित्सितम् ॥ रसे-
 न्द्रो हन्ति तद्भोगं नरकुञ्जरवाजिनाम् । (भा० प्र०)

अर्थ—पारा—मधुर, अम्ल, कटु, तिक्त, कषाय और लवणरसान्वित,
 स्निग्ध त्रिदोषनाशक, रसायन, योगवाही, महावृष्य, सदैव दृष्टि और
 बलको बढ़ाता है । सर्वरोगनाशक और विशेष करके कुष्ठनाशक है । जो
 रोग असाध्य है और जिनकी चिकित्सा नहीं है उन मनुष्य, हाथी और
 घोड़ेके रोगोंको पारा अवश्य हरता है ।

अन्यथा ।

देहस्य शुद्धिं कुरुते च पारदो नानागदानां हरणे समर्थः ।

करोति पुष्टिं हरते च मृत्युकल्पायुप चैव करोति नूनम् ॥

पारदः सकलरोगपारदो राजयक्ष्मसरभेकवारिदः ।

सर्वरोगमपहतितत्क्षणाग्नौ गच्छति सराजभक्षणात् ॥

अर्थ—पारा—देहशुद्धिकारक, नानाप्रकारके रोगविनाशक, पुष्टिकारक
 और मृत्युहारक है, तथा चिरजीव करनेवाला है । पारा सर्वरोगोंको दूर करने
 वाला, राजयक्ष्मारोगको हरनेवाला और पानके रसके साथ भक्षण करनेसे
 सर्वप्रकारके रोगोंको तत्काल दूर करनेवाला है ।

अपि च ।

मूर्च्छातों गदहृत्तथैव खगतिं घत्ते विवद्वो र्थदः स्याद्भस्माम-
 यवार्धकादिहरणदृक् पुष्टिकातिप्रदम् । वृष्यं मृत्युविनाशनं-

बलकरंकांताजानंदन शार्दूलातुलसत्त्वकृच्चभुविजा-
त्रोगानुसारीस्फुटम् ॥ मूर्च्छितोद्गतेभुजवधनंभूयोपिमु-
क्तिदोभवति । अमरीकगेतिमृतःकोन्यःकरुणाकरोस्ति-
सृतात ॥

अर्थ—मूर्च्छितपारा—रोगनाशक और वाकाशमागम गमन करनेकी शक्ति देनेवाला है । घटपारा अर्यदायक है । और पारेकी भस्म—तृणता-
ष्टष्ट, पुष्टि तथा कान्तिजनक है । वीर्यरश्मिक, मृत्युनाशक, भिषोको आनन्द-
जनक और योगवादी है । मूर्च्छित पारा—अंगप्रदनाशक और मुक्तिदायक है ।
और मराइवा पारा अमरपदको देवे है । फिर हृत्ते अधिक और कौन दूसरा
कृपा करनेवाला है ।

पारदे पठ्यानि ।

हितमुद्गात्रदुग्धाजशाल्यन्नानिसदातत । शाकेपुनर्नवादेवि
मेवनादसवास्तुकम् ॥ सैन्यवनागरंमुस्तामूलकानिचमश-
येत । आत्मज्ञानकथापूजागिवम्यचविशेषत । एतास्तु
समायान्भद्रेनलघेद्रसभक्षक ॥ (नि० १०)

अर्थ—पारेको भक्षण करनेवाले मनुष्योंको दूध दूध, शालिग्रामके
चावल, चकरीका दूध, पुनर्नवेका शाक, शाकिका शाक, मधुष्का शाक,
सधानाँन, नागरमोया और मूरी भक्षण करने चाहिये । तथा आत्मज्ञान,
कथा, पूजा और विशेष करके शिवकी भक्ति करनी चाहिये और कथापि
लघन नहीं करे ।

पारदुदावा ।

मलविपत्रद्विगिरित्वचापलनेसर्गिकदोषमुशान्तिपारदे ।
उपाधिजोद्गात्रपुनागयोगजोदोषारसेन्द्रेकथितोमुनीश्वर ॥
मलेनमूर्च्छामरणविषेणदाहोयिनाकष्टतर शरीरे । देहस्य-
जाड्यगिरिणामदाम्यान्नांवल्यतावीर्यवृत्तिश्रुप्तमाम ॥
वगेनकुष्ठभुजगेनपद्मोभवेत्ततोर्नापग्निशोपनीय । बद्धिनि-
पमलचेनिनुरयादोपास्तयोस्ते ॥ एतेकुर्वन्तिमन्नापवृत्ति

मूर्च्छानृणांक्रमात् । अन्येऽपिकथितादोषाभिपग्भिःपारदे
यदि ॥ तथाप्येतेत्रयोदोषाहरणीयाविशेषतः ।

अर्थ—मल, विष, अग्नि, गिरिदोष, चपलता यह पाच दोष पारेमे
स्वभावसेही हैं और राग तथा शीशिके दो दोष इसमें उपाधिज हैं, ऐसे सात
दोष मुनीश्वरोंने कहे हैं । मलके दोषसे मूर्च्छा, विषके दोषसे मृत्यु, अग्नि-
दोषसे दाह और अत्यन्त शरीरमें पीडा पर्वतके दोषसे देहमें जडता और
चचलताके दोषसे वीर्यको हरेहै । बगदोषसे कुष्ठ और शीशिकेदोषसे नपुस-
कताको करता है । इसकारण इसको विधिपूर्वक शोधनाचाहिये । अग्नि,
विष और मल यह तीन दोष पारेम मुख्य हैं । सो सताप, मृत्यु और
मूर्च्छा इनको क्रमसे करते हैं यद्यपि औरभी पारेम वैद्योंने अनेक दोष कहे
हैं, किन्तु मुख्य यह तीनही दोष हैं, इससे इनको विशेषकरके हरना चाहिये ।

अशोधितपारददोषा ।

सस्कारहीनखलुसूतराजयःसेवतेतस्यकरोतिवाधाम् ।

देहरयनाशविदधातिनूनकष्टांश्वरोगाञ्जनयेन्नराणाम् ॥

अर्थ—जो मनुष्य अशोबितपारेका सेवन करता है उसको यह बाधा
करताहै । निश्चय देहका नाश करनेवाला कष्ट और अनेक प्रकारके रोगाको
उत्पन्न करेहै ।

पारदस्यात्पत्तिजःतिलक्षणानि ।

रसायनादिभिलोकैः पारदोरस्यतेयतः । ततोरसइतिप्रोक्त
सचधातुरपिस्मृतः ॥ शिवाद्वात्प्रच्युतरेतः पतितधरणीतले-
तद्देहसारजातत्वाच्छुक्लमच्छमभृच्चततः ॥ क्षेत्रभेदेनविज्ञेयं
शिववीर्य्यचतुर्विधम् । श्वेतरक्ततथापीतंकृष्णतत्तुभयेत्क्र-
मात् ॥ ब्राह्मणःक्षत्रियोवैश्यः शूद्रश्चखलुजातितः । श्वेतश-
स्तरुजानाशेरक्तकीलरसायनम् ॥ धातुवादेतुतत्पीतखेगतौ
कृष्णमेवच ।

अर्थ—रसायनकी इच्छावाले प्राणी इसकी, काक्षा, करते ह । इसकारण
इसका नाम रसहै और इसको धातुभी कहते हैं । पृथ्वीमें महादेवका वीर्य्य
पतित होनेपर पारेकी उत्पत्ति हुई इस कारण वह देहका, मागभाग, शुक्ल

उत्पन्न होनेके हेतु, शुक्लवर्ण और स्वच्छ, हुआ। यह शेषभेदसे श्वेत, रक्त, पीत और वृष्ण चार प्रकारका है। तहाँ सफेद रंगके पारेको आम्रग कहते हैं, यह रोगनाश करनेमें उत्तम है। और लाल रंगके पारेको क्षत्रिय कहते हैं, यह रसायनकार्यमें उत्तम है। पीलेरंगके पारेको वैश्य कहते हैं, यह घातुवादमें श्रेष्ठ है। और काले रंगके पारेको शूद्र कहते हैं यह आकाश-मार्गमें चलनेको सहायक है।

पारदमयसा ।

मृदःकोटिगुणंस्वर्णस्वर्गात्कोटिगुणमणिः ।

मणेःकोटिगुणं पाणोपाणात्कोटिगुणरसः ॥

रसात्परतर्लिंगनभूतनभविष्यति । (नि०२०)

अर्थ-मृदाके गुणोंसे अधिक करोड़ गुण सुवर्णके दर्शन करनेमें हैं। सुवर्णके गुणोंमें अधिक करोड़गुण मणिके दर्शन करनेमें हैं। मणिके गुणोंसे अधिक करोड़गुण पाणके दर्शन करनेमें हैं और पाणके गुणोंसे करोड़ गुण अधिक पारेके दर्शन करनेमें हैं, पारेमें अधिक गुणवाला पदार्थ न हुआ और न होगा। पारेका विशेषवर्णन हमारे यनाये "रसगजपदा" ग्रन्थमें देखो।

द्विगुणममानि ।

हसपादसस्थानेद्विगुलंरक्तपारदम् ॥

अर्थ-हसपाद, रसरयान, द्विगुल, रक्तपारद (द्विगुल, द्विगुलि, द्विगुल, रक्त, मर्कटशीर्ष, दण्ड, गत, उरु, उन्द, कपिशर्षपक, बबूर, सुगं, गुनर, गजन, म्लेच्छ, त्रिशूल, पूर्णपारद, चम्पाक, रसोदर, रंजक, रसगर्भ, पूर्णपारद, मनोहर, नम्मां, नानाशृंगारवर्द्धन)

संस्कृतभाषामें द्विगुल ।

हिन्दीभाषामें द्विगुल, गिगरफ, इंगुर, ईंगपु ।

बंगभाषामें द्विगुल ।

मराठीभाषामें द्विगुल ।

गुजरातीभाषामें द्विगुली ।

कर्णाटकीभाषामें द्विगुलियक ।

तमिऴीभाषामें द्विगुलिकायु ।

| | |
|----------------|---|
| इमेजीभापामें | सल्फेट ऑफ़ मर्क्युरि । Sulphate of Mercury |
| | सिनेबारानेटिव । cinnabar Native |
| लैटिन् भापामें | सल्फ्युएट हैड्राजिर । Sulphuatum Hydrargyrium |
| फ़ारसीभापामें | सिग्रफ़ । |
| अरबीभापामें | जजफर । |

हिङ्गुलगुणा ।

तिक्त.कपाय.कटुहिङ्गुलु.स्यान्नेत्रामयघ्न कफपित्तहारी ।
हृल्लासकुष्ठज्वरकामलाश्वप्तीहामवातौचगरनिहन्ति ॥

अर्थ-हिङ्गुल (सिगरफ)-कडवा, कपेला, चर्परा तथा नेत्ररोग,
कफ, पित्त, हृल्लास, कुष्ठ, ज्वर, कामला, श्वीहा, आमवात और विषको
दूर करे है ।

अन्यञ्च ।

हिङ्गुलमधुरतिक्तमुष्णंवातकफापहम् ॥
त्रिदोषद्वद्वदोपोत्थज्वरहरतिसेवनात् ॥

अर्थ-हिङ्गुल (सिगरफ)-मधुर, कडवा, गरम, वातकफ, त्रिदोष,
द्वन्द्वजदोष और ज्वरका नाश करेहै ।

अपिच ।

हिङ्गुल.सर्वदोषघ्नोदीपनोऽतिरसायनः ।
सर्वरोगहरोवृष्योजारणेलोहमारणे ॥

अर्थ-हिङ्गुल (सिगरफ)-सर्वदोषनाशक, दीपन, अतिरसायन, सर्वरो-
गनाशक, वीर्यवर्द्धक, जारण और लोहेके मारनेमें उत्तम है ।

हिङ्गुलभेदलक्षणम् ।

हिङ्गुल.स्त्रिविध.प्रोक्तश्चर्म्मरःशुकतुण्डकः। हसपादस्तृती-
यःस्याच्चर्म्मर शुभ्रवर्णकः ॥ शुकतुण्डकहिङ्गुल.पीतवर्णो
भवेत्सहि । जपाकुसुमसङ्काशोहसपादोमहोत्तमः ॥(भा प्र)

अर्थ-सिगरफ-चर्म्मर, शुकतुण्डक और हसपाद इनभेदोंसे तीन
प्रकारका है । तथा चर्म्मरहिङ्गुल सफेद रंगका, शुकतुण्डक हिङ्गुल पीले
रंगका और हसपादहिङ्गुल जपाके फूलोंकी समान लाल रंगका अत्यन्त
उत्तम होता है ।

विगुप्तोत्पत्ति ।

अशुद्धपारदभागचतुर्भागंतुगन्धकम् । उर्ध्वोन्निष्वालोदपा-
त्रेक्षणंमृद्वग्निनापचेत ॥ कृत्वाथखड्गशस्तत्रकाचकुप्यानि
रुध्यच । वल्लमृत्तिकयामम्यक्काचकूपिप्रलेपयेत् ॥ सर्वतो-
गुलमानेनच्छायाशुष्कतुकारयेत् । बालुकायंत्रगर्भंतुदिन-
मृद्वग्निनापचेत् ॥ क्रमवृद्ध्याग्निनापश्चात्पत्रेद्विवमपचकम् ।
सप्ताहृतुसमुद्धृत्यद्विगुल स्थान्मनोहरः ॥

अर्थ-अशुद्धपादा-एकभाग, गन्धक चारभाग इन दोनोंको हाँठेके पायस
डाक्टर, एक क्षण मठाग्रिमे पकावे, फिर टुकड़े पकके काँचकी शीशीम
गर् उग शीशीपि कपडा और मिट्टी लपेटे, चारोंभोर एक अगुल केचा रेण
को, छायाम सुरावे फिर बालुकायत्रमे रखकर एक दिन मृदु अग्रिमे पचावे
क्रममे फिर पाचदिन पर्यंत गृहिरता हुआ अग्रि लगावे सातवें दिन
निरालले जन्मा विमल वनजायगा ।

साक्षात्जननामानि ।

स्रोतोऽन्ननदीजचवाल्मीकञ्जयामलम् ॥

अर्थ-स्रोताजन नदीज, वाल्मीक, जयामल, (स्रोतज, स्रोतानदाभर,
स्रोतोभव, स्रोतार, स्रोतीरगार, कपोतान्न, यामुन, पतिमाती, वारिभव,
कपोतगार, कपोतगार और वाल्मीकश्रीणि)

स्रोतोऽन्ननदीजयामनि ।

स्रोतीरकपर्पितेयमेवकनीलमजनम् ॥

अर्थ-स्रोतीरक, पार्वतय, मेरु, नील, जजन (यामुन, पुष्प, नांद्य,
स्रोतान, टप्पन, सुवीर्य, नीलांता, गुण्य, यामिगम्भर और कपतन)

मरुतभाषामे स्रोताजा, स्रोतीराजन ।

दिन्दीभाषामे सुरमा, अजा, श्वेतगुम्मा, वायुगुम्मा ।

पिंगभाषामे श्वेतगुम्मा, नीलगुम्मा, नीलाभन, काङ्गुमा ।

मरुतीभाषामे राजासुरमा, पाङ्गुमा, पोटसुगुमा ।

मृजमशीभाषामे सुरमा, बालासुरमा, मानगुम्मा ।

सप्तोदरीभाषामे स्रोतोन्न ।

मिन्दीभाषामे स्रोतीराजन ।

| | |
|-----------------|--|
| इंग्रेजीभाषामें | सल्फुरेट ऑफ आंटीमनी । Sulphuret of antimony |
| लैटिन्भाषामें | आंटिमोनाई सल्फुरेटम् । Antimonii Sulphuratum |
| फारसीभाषामें | सूर्मअस्फहानि । |
| अरबीभाषामें | कुहल इसमुद । |

स्रोतोऽञ्जनगुणाः ।

स्रोतोऽञ्जनस्मृतस्वादुचक्षुष्यकफपित्तनुत ।

कपायलेखनस्निग्धग्राहिच्छर्दिविपापहम् ॥

हिक्काक्षयास्त्रजिच्छीतसेवनीयंसदाबुधै । (भा० प्र०)

अर्थ—स्रोतोञ्जन (कालासुर्मा)—स्वादुद्रिष्ट, नेत्रोंको हितकारी, कफपित्तनाशक, कपेला, लेखन, स्निग्ध, मलरोधक, वमननिवारक, विषनाशक, हिचकीको दूर करनेवाला, क्षयरोगको हरनेवाला है, रक्तदोषनिवारक और शीतल है ।

अष्टस्रोतोऽञ्जनस्य लक्षणम् ।

वल्मीकशिखराकारभिन्ननीलाञ्जनप्रभम् ।

घृष्टेचगौरिकावर्णश्रेष्ठस्रोतोऽञ्जनञ्चतत ॥

अर्थ—वाँबीकी शिखरके आकार भिन्न नील अञ्जनकी समान प्रभायुक्त और जो घिसनेमें गेरूकी रंगकाहो वह उत्तम स्रोतोऽञ्जन है ।

सौवीराञ्जनगुणाः ।

सौवीरमधुरशीतकपायंस्निग्धलेखनम् ।

रक्तपित्तविषच्छर्दिहिकाम्रद्वक्प्रसादनम् ॥

अर्थ—सौवीराञ्जन—मधुर, शीतल, कपेला, स्निग्ध, लेखन, तथा रक्तपित्त, विष, वमन और दुचकीको दूर करेहै तथा नेत्रप्रसादक है ।

पुष्पाञ्जननामानि ।

पुष्पाञ्जनन्तुर्कौसुम्भरीतिकंकुसुमाञ्जनम् ॥

अर्थ—पुष्पाञ्जन, कौसुम्भ, रीतिक, कसुमाञ्जन (रीतिपुष्प, पुष्पकेतु, पीप्पक, सद्ञ्जन, रीतिकुसुम, माक्षिक, चाक्षुष्य, कृमिरसाञ्जन और धातु-माक्षिक)

| | | | |
|-----|--------------------------|-----|----------------------|
| स० | पुष्पाक्षन । | क० | पुष्पाजन । |
| हि० | पुष्पाजन । | ते० | पुष्पाजनमु । [Oxyde |
| पे० | पुष्पाक्षन । | इ० | सिंह ओषधी । Zinc |
| म० | पिण्डेवेकीट, पुष्पाक्ष । | ले० | सिन्धुगार् ओषधी । |
| गु० | यसांजन । | | Zinc Oxide |

पुष्पाजनगुणा ।

पुष्पाजनहिमप्रोक्तपित्तद्विकाप्रदाहनुत् ।

नाशयेद्विषकासांतिमर्वनेत्रामयापहम् ॥ (रा० नि०)

अर्थ-पुष्पाजन-शीतल, पित्तनिवारक, क्षिपानाशक, दाहहारक, विष विनाशक, खोंसोंकी पांढाफो हरनेवाला और मर्बं प्रकारके नेत्ररोगको दूर करनेवाला है ।

अभ्यस्य ।

रीतिपुष्पचक्षुष्यशीतपित्तकफापहम् ॥

द्विक्वांदाहविषकासनेत्ररोगचनाशयत् ॥ (नि० र०)

अर्थ-पुष्पाजन-नेत्राको हितकारी तथा शीतपिच, कफ, क्षिपरी, दाह, विष, खोंसों और नेत्ररोगनाशक है ।

अपिच ।

पुष्पाजनहिमस्निग्धशीतमर्बानिरोहत् ।

अतिदुर्ध्वद्विक्वाप्रविषज्वलगदापहम् ॥

अर्थ-पुष्पाजन-हिम, श्लिष, शीतन, मर्बप्रकारक नेत्ररोगहारक, अत्यंत, दुर्ध्व द्विक्वाप्रविषज्वलगदापहम् ।

तुरग्वनामानि ।

मृषातुत्थकांस्पनीलतुत्थकगिरिविकण्टकम् ॥

अर्थ-मृषातुत्थ, कास्पनील, तुत्थक, गिरिविकण्टक (तुरग, इतिहास, नीलांगज मयूरप्रोक्षक, ताम्रगर्भ, अमृतोद्व, मयूरतुत्थ, मयूर, गिरिविकण्ट, नील, तुत्थापन, गिरिवीर, शिशुमक, मयूरक, हेममा मृषाविह और ताम्रोपधातु)

मैष्टरभाषामें

तुरग, मयूरतुत्थ ।

हिन्दीभाषामें

(तुत्थि) नीलांगीया नीलांगुति ।

देवभाषामें

तुत्थि ।

| | |
|-----------------|-------------------------------------|
| मराठीभाषामें | मोरचूत (द) । |
| गुजरातीभाषामें | मोरखुयु । |
| कर्णाटकीभाषामें | मयूरतुत्य । |
| तैलङ्गीभाषामें | मेलतुतु । |
| इंग्रेजीभाषामें | सल्फेट ऑफ कॅपर । Sulphate of Copper |
| लैटिनभाषामें | क्युप्रेआसल्फस Cuprea Sulphas |
| फारसीभाषामें | दूदिया । |
| अरबीभाषामें | तुतिया अकजर । |
| | तुत्यगुणा । |

तुत्थककटुकक्षारकपायवामकलघु ।

लेखनंभेदनशीतचक्षुष्यंकफपित्तदृत् ॥

विपाशमकुष्ठकण्डूघ्नंखर्परचापित्तद्वणम् ।

अर्थ—नीलायोथा—चरपरा, नमकीन, कपेला, वमनकारक, हलका, लेखन, भेदक, शीतल, नेत्रोंका हितकारी तथा कफ, पित्त, विष, पथरी, और कण्डूनाशक है । खर्परयाकेभी इसीकी समान गुण जानने ।

अन्यञ्च ।

तुत्थकटुकपायोष्णश्चित्रनेत्रामयापहम् ।

विषदोषपुसर्वेषुप्रशस्तवान्तिकारकम् ॥ (रा०नि०)

अर्थ—नीलायोथा—चरपरा, कपेला, गरम, चित्रकुष्ठनाशक, नेत्ररोगनाशक, सर्वप्रकारके विषके विकारोंमें प्रशस्त और वमनकारक है ।

अपिच ।

तुत्थकनेत्ररोगघ्नशीतचित्रविनाशनम् ।

कृमिघ्नलेखनभेदिकण्डूक्लेदविपापहम् ॥

अर्थ—नीलायोथा—नेत्ररोगनाशक, शीतल, चित्रकुष्ठनाशक, कृमिनाशक, लेखन, भेदक तथा कण्डू, क्लेद और विषके विकाराको हरनेवाला है ।

अपिच ।

निशेपदोषविषहृद्गदशूलमूलकुष्ठाम्लपित्तकवित्रधहरपरचा

रसायनं वमनरेचकरगदघ्नचित्रापहगदितमत्रमयूरतुत्थम् ॥

अर्थ—नीलायोथा—सर्वदोष, विष, हृदयरोग, शूल, कुष्ठ, अम्लपित्त और

विबन्धकों दूर करनेवाला है, रसायन, वमनकारक, दस्तलानेवाला और चित्रकोटको दूर करनेवाला है ।

अन्यथा ।

वमने मडले दद्रो विपेचैव प्रशस्यते ॥

अर्थ-नीलायोथा-वमन मडलकुष्ठ, दाद और विपके विकारोंमें हि कारी है ।

स्पर्शनामानि ।

चक्षुष्यममृतोत्पन्न खर्परीदार्विकानथा ॥

अर्थ-चक्षुष्य, अमृतोत्पन्न, खर्परी, दार्विका (खर्पर, रसाक, खर्परीका, तुत्य, खर्परीतुत्य, खर्परीतुत्यक, मगडोषधातु)

संस्कृतभाषामें खर्पर ।

हिन्दीभाषामें खपरिया, खापरिया ।

बगभाषामें खापर ।

मराठीभाषामें कलखापरी ।

गुजरातीभाषामें खापरियुकातु ।

कर्णाटकीभाषामें खर्परी ।

तैलङ्गीभाषामें खर्पर ।

इंग्रजीभाषामें ब्लैक जाक । black jack

लैटिनभाषामें सिकिमल्काइड । /mel Sulphidum

फारसीभाषामें सगवसरी ।

अरबीभाषामें तुतिपा, किरमानी, मकगुल ।

स्पर्शगुणाः ।

रसक सर्वमंहघ्न कफपित्तविनाशनः ।

नेत्ररोगक्षयघ्नश्चज्वरकुष्ठविषापहः ॥ (वै०चि०नि०)

अर्थ-खपरिया-सर्व प्रकारके प्रमेह, कफ, पित्त, नेत्ररोग, क्षय, ज्वर कुष्ठ और विपके विकारोंको दूर करे ।

अन्यथा ।

जायतेशोभनभस्मसर्वव्याधिहरपद्मम् ।

नेत्ररोगहरं हृदिक्षयदाखर्पनेयुरुः ॥ (रसचन्द्रिका)

अर्थ-खपरिया-सर्वप्रकारकी व्याधिविनाशक, नेत्ररोगनिवारक हृदका-
रक, क्षयरोगको हस्नेवाली और भारीहै ।

अशोधितखपरदोषा ।

अशुद्ध-खपर कुर्व्याद्भ्रान्तिभ्रान्तिविशेषतः ।

तस्माच्छोध्य-प्रयत्नेनयावद्भ्रान्तिविवर्जितः ॥

अर्थ-अशोधित खपरिया-भ्रान्ति और भ्रान्तिको करती है इसकारण
जयतक भ्रान्ति करके रहित नहो तबतक प्रयत्नसे शोधे ।

स्वर्णमाक्षिकनामानि ।

माक्षिकधातुमाक्षिकताप्यस्वर्णाह्वयमतम् ।

अर्थ-माक्षिक, धातुमाक्षिक, ताप्य, स्वर्णाह्वय (सुवर्णमाक्षिक, स्वर्ण-
माक्षिक, तापिच्छ, आपीत, ताप्यक, पीतमाक्षिक आवर्त, क्षौद्रधातु,
माक्षिकधातु, कदम्ब, चक्रनाना, तापिज, स्वर्णवर्ण, हेमद्युति, मधुधातु,
अजनामक)

तारमाक्षिकनामानि ।

विमलमाक्षिकश्रेष्ठश्वेताक्षतारमाक्षिकम् ।

अर्थ-विमल, माक्षिकश्रेष्ठ, श्वेताक्ष, तारमाक्षिक (रूप्यमाक्षिक, रौप्य-
माक्षिक)

सस्कृतभाषामे

हिन्दीभाषामे

वगभाषामे

मराठीभाषामे

गुजरातीभाषामे

कर्णाटकीभाषामे

तैलिङ्गीभाषामे

इथ्रेजीभाषामे

लैटिन्भाषामे

अरबीभाषामे

स्वर्णमाक्षिक, तारमाक्षिक ।

सोनामाखी, रूपामाखी, तारामुखी ।

स्वर्णमाक्षिक, तारमाक्षिक, रौप्यमाक्षिक ।

दगडीसोनामुखी, रौप्यमाखी ।

सोनामाखी, रूपामाखी ।

धातुमाक्षिक, यरडुमाक्षिक ।

स्वर्णमाखी, रूपामाखी ।

आयर्नपाईराईटीम् । Iron pyrites

फेरीसल्फ्युरेटम् । Ferri sulphuratum

मुर्कशीशाजहवी, मुर्कशीशाफिदा ।

स्वर्णमाक्षिकगुणा ।

सुवर्णमाक्षिकस्वादुतिक्तवृष्यंरसायनम् ।

चक्षुष्यवस्तिहृत्कण्ठपाण्डुमेहविषोदरम् ॥

अरी शोफविषकण्डुविदोषानपिनाशयेत् ॥ (भा प्र)

अर्थ-मोनामागी-स्वादु, कटुवी, वृष्य, रसायन, नेत्रोंको हितकारी, वगितोगनाशक तथा कण्डुगोग, पाण्डुगोग, प्रमेह, विष, उदग्गोग, विष वरामीर, सुजन, विष, कण्डु और विदोषका नाश करे।

अथवा ।

माक्षिकमधुरतित्तमम्लकटुकफापहम् ।

भ्रमहृत्तासमृच्छार्तिश्वानकामविपापहम् ॥

अर्थ-माक्षिकधानु-मधुर, कटुवी, अम्ल, चामपी, वरनाशक तथा भ्रम, हृत्ताग, मृच्छा, श्वान, गामी और विपापों का नाश करे।

अथवा ।

माक्षिकतुवग्वृष्यस्वयंलघुगन्धायनम् ।

चक्षुष्यकुष्ठगोफागोमेहनस्त्यर्तिपांडुता ।

व्यनायिकटुकहन्तिकुष्ठोदरविषक्षयान् ॥ (म०नि०)

अर्थ-माक्षिकधानु-करीली, वीर्यपट्टक, मधुरी मरुत परनेवाली, दन्की, रसायन, नेत्रोंको हितकारी तथा कुष्ठ, सुजन वरामीर, प्रमेह, वरमी-की पीडा, पाण्डुगोग, वृष्ट उदग्गोग, विष और क्षयगोगका नाश करे।

व्यवापी और चामपी है।

अथवा माक्षिकदोष ।

मन्दानलत्वचलहानिमुग्रांविष्टम्भितानेवगदान्मकुष्ठान् ।

मालातैवव्रणप्रविकांचकुर्व्यादशुद्धगलुमाक्षिकञ्च ॥ (भा प्र.)

अर्थ-अशुद्ध माक्षिकधानु मन्दाग्रि, मन्दाग्रि, विष्टम्भिता, नेत्रगोग, कुष्ठ, गण्डमात्र और वरामीर उग्रप्र परनेवाली है।

अथवा ।

अशुद्धमाक्षिककुर्यादाध्यकुष्ठत्रयकृमीन् ।

शोधनीयप्रयत्नेनतस्मात्कनरुमाक्षिकम् ॥ (नि०१०)

अर्थ-अशुद्ध मोनामागी-भाष्य, वृष्ट, क्षय और कृदिको उग्रप्र करे।

इगवगण प्रयत्न करके शोधनी आदिये।

अपिच ।

किञ्चित्सुवर्णसाहित्यात्स्वर्णमाक्षिकमीरितम् ।

उपधातुःसुवर्णस्यकिञ्चित्सुवर्णगुणान्वितम् ॥

अर्थ—किञ्चित् सुवर्णमिश्रित होनेसे यह स्वर्णमाक्षिक कहीजाती है, सुवर्णकी उपधातु है और किञ्चित् सुवर्णके गुणयुक्त है ।

तारमाक्षिकगुणा ।

माक्षिकोरजतहाटकप्रभ शोधितोतिगुणदःसुसेवितः ।

मेहकुष्ठकृमिशोफपाण्डुतापस्मृतिहरतिसोश्मरीजयेत् ॥

स्वर्णमाक्षिकवहोपाविज्ञेयास्तारमाक्षिके ।

अर्थ—रूपामाखी चादीकी और सोनेकी समान प्रभायुक्त होती है, यह भलेप्रकारसे शोधी हुई अनेक गुणदायक है तथा प्रमेह, कोढ़, कृमि, सूजन, पाण्डुरोग, अपस्मार और पथरीको हरनेवाली है । अगोथित रूपामाखीके दोष स्वर्णमाखीकी समान जानने ।

तारमाक्षिकमन्यन्तुतद्रवेद्रजतोपमम् ।

किञ्चिद्रजतसाहित्यात्तारमाक्षिकमीरितम् ॥

अर्थ—जो माखी रूपेकी समान श्वेतवर्ण तथा किञ्चित् रौप्यमिश्रितहो वह रूपामाखी कही जाती है ।

वोदारनामानि ।

वोदारोनागसत्त्वश्चव्रणघ्न स्वर्णवर्णकः ।

| | |
|-----------------|--|
| संस्कृतभाषामें | वोदार, नागसत्त्व, व्रणघ्न, स्वर्णवर्णक । |
| हिन्दीभाषामें | मुरदाशिंग । |
| मराठीभाषामें | मुग्दाडशिंग । |
| गुजरातीभाषामें | वोदारकाकरो । |
| इंग्रेजीभाषामें | लियार्ज । Litharge |
| लैटिनभाषामें | प्लुवी आक्षैड । Plumbi |
| फारसीभाषामें | मुग्दासिंग । |
| अरबीभाषामें | मुद्दासिज । |

वोदारगुणा ।

वोदार मारकोभेदीव्रणरोपणकारकः । वान्तिकृन्मृत्रकृच्छ्रा-

चक्षुष्यवस्तिहृत्कण्ठपाण्डुमेहविषोद्गम् ॥

अर्ग शोफविपरुण्डुत्रिदोषानपिनाशयंत ॥ (भा प्र.)

अर्थ—गोनामाखी—खादु, पट्टी, दुग्ध, ग्लायन, नेत्रापी हितकारी, वमिर्नोगनाशक तथा कण्ठरोग, पाण्डुरोग, प्रमेद, विष, उदग्मोत, शिष यवागीर, मृजन, विष, कण्ठ और विद्रोषका नाश करी ।

अप्यस्य ।

माशिकमधुरतिक्तमम्लकटुकफापहम् ।

भ्रमहृत्तासमृच्छतिश्वासकामविपापहम् ॥

अर्थ-मासिकधानु-मधुर, सड्यो, अम्ल, जगपी, फलनाशक तथा भ्रम, प्लाम, मूच्छा, भ्रम, गौमी और विषको दूर करे ई ।

भारतम् ।

मासिकतृणग्रुप्यस्त्रयंलघुरमायनम् ।

चक्षुष्यकुष्ठशोफाभामेदवन्त्यतिपांडुता ।

व्यमायिषट्कहन्तिरूपेदगविपन्नयान् ॥ (म० नि०)

अर्थ-मासिकपात-रूपकी शीघ्रचटक, गम्भीर स्वच्छ वसनेवाली, हल्की, ग्लायन, नेत्रोंको दितकारी तथा शुद्ध, सुनन वसानी, धमेद, वस्ती की पीडा, पाण्डुरोग, कुष्ठ, उदररोग, विष और क्षयरोगका नाशक है। स्त्रियाँ और बच्चे हैं।

दय्यायी और नमसी है ।

भद्राहमादिपदायः ।

मन्दानलत्वयल्लानिमुप्राविष्टम्भितानेवगदान्मकुष्ठान् ।

मालातयेवन्नणपूर्विकाचकुर्यादशद्धसल्लुमानिकञ्च॥ (भा.प्र.)

अर्थ-अणुद भाषिकपाणु-मन्दाणि, यन्दाणि, विदम्भता, न्यराण,
रुद, गन्धमाना र्थांश्च ग्रन्थो लपन्न कर्मवार्ता इ ।

भारत !

अग्न्यादिकुर्यादांध्यकुसुमयस्मीन ।

शोधनीयप्रयत्नेनतस्मात्कनकमानिषम् ॥ (नि०२०)

अर्थ-अगुट मोनामागी-भाष्य, पुत्र, शय और कृषिको उत्पत्ति की है।
इसकायन समय के लोग ही सादिते।

इयदागल दपयन वरके शोषण कादिये ।

| | |
|----------------|-----------------------------|
| कर्णाटकीभाषामे | अभ्रक । |
| तेर्लिगीभाषाम | अभ्रक । |
| इग्नेजीभाषामे | टालक, ग्लिमर । Tale Glimmer |
| लैटिन्भाषामे | माईका । Mica |
| फारसीभाषामे | सिताराजमीन । |
| अरबीभाषामे | तट्टक । |

मारिताभ्रकगुणा ।

अभ्रकपायमधुरसुशीतमायुष्करंधातुविवर्द्धनश्च । हन्यात्रि-
दोषं व्रणमेहकुष्ठं घ्नीहोदरग्रन्थिविषकृमीश्च ॥ रोगान् हन्ति-
द्रढयति वपुर्वीर्यवृद्धिविधत्ते तारुण्याढ्यं रमयति शतं योपि-
तां नित्यमेव । दीर्घायुष्काञ्जनयति सुतान् विक्रमे सिंहतु-
ल्यान्मृत्योर्भीतिहरतिसततं सेव्यमानमृताभ्रम् ।

अर्थ—अभ्रक—कपेला, मधुर, शीतल, आयुकर, धातुवर्द्धक, त्रिदोष-
नाशक तथा व्रण, प्रमेह, कोढ़, घ्नीहा, उदररोग, ग्रन्थि, विष और कृमिका
नाश करेहै । रोगनाशक, देहको दृढ करनेवाला वीर्यवर्द्धक, तरुण अवस्था युक्त
सौ स्त्रियोंसे नित्यप्रति रमनेका सामर्थ्य करानेवाला, दीर्घ आयुवाले और
सिंहकी समान पराक्रमी ऐसे पुत्रको उत्पन्न करनेवाला और मृत्युके भय-
कोभी हरनेवाला है ।

अन्वयः ।

मृताभ्रककामवलप्रदचविषमरुणसभगन्दराध्यम् ।

मेहभ्रमपित्तकफचकासक्षयनिहन्त्येव यथानुपानात् ॥

अर्थ—अभ्रकको यथानुपानके साथ सेवन करनेसे कामप्रद, बलकारक
तथा विष, वात, श्वास, भगन्दर, आध्य, प्रमेह, भ्रम, पित्त, कफ, रौंसी
और क्षयरोगको हरनेवाला है ।

अभ्रस्य जातिवर्णनेन ।

विप्रक्षत्रियविशुद्धभेदात्स्यात्तच्चतुर्विधम् ।

क्रमेण च सितरक्तपीतकृष्णञ्च वर्णत ॥

अर्थ—अभ्रक—जातिके भेदमे चार प्रकारका है, जैसे ब्राह्मण, क्षा

णाग्रमेहस्यचकारकः ॥ कफवातघ्नशूलमुदरकृमिशोथक-
म् । आध्मानवातगुल्मञ्चआनाहशोफज्वरम् ॥ उदावर्त-
नाशयतीत्येवमाहुर्मनीषिणः ।

अर्थ-मुग्दासिग-सारक, भेदक, घणरोपक, वमनकारक, मूत्रहृच्छा-
रक, प्रमेहकारक तथा कफ, वात, घण, शूल, उत्तरोग, कृमि, सृजन,
आध्मान, वात, गुल्म, आनाह, शोफज्वर और उदावर्तको दूर करे है ।

अप्यथा ।

सीससत्त्वमरुच्छेप्समशमनंकायदाहकम् ।

केश्यपुसांगरोगघ्नरजनरसबंधनम् ॥ (नि०२०)

अर्थ-मुग्दासिग-वात, कफ, गर्माके रोग और शरीरकी दाहको दूर
करे है केशोंको दिनकारी, पुष्पाके अरोगोंको दूर करनेवाला और परोको
घाघनेशाल है ।

यादागोत्पत्तिस्तनम्

अबुदस्यगिरेःपार्श्वजातवेदाग्रशृंगकम् ।

सदलपीतवर्णचभवेद्वर्जरमडले ॥

अर्थ-अबुदपर्वतक निकट पार्श्वभागमें पेदार नामशाला शृंग है उस
शृंगमें मुग्दासिग उत्पन्न होता है यह सदल और पीले रंगका तथा शुभ्र-
वर्णमें होता है ।

अभयनामानि ।

अभ्रकगिरिजामीजनिर्मलगिरिजामलम् ।

अब्द्व्योमवनंशुभ्रबहुपत्रं वनाहकम् ॥

अर्थ-अभ्रक, गिरिजामीज, निमल, गिरिजामल, अभ्र, व्योम, वन,
शुभ्र, बहुपत्र, वनाहक, (गिन्जि, भमल, गौरव्योमल, गरुडराज, अभ्र,
भद्र, नाभर, अन्तरिम आशान, स, अनन्त, गौरीन गौरीशेष, गगन)

गम्भूतभाषाम

अभ्रक ।

दिग्धिभाषामे

अभ्रक, अन्तरिम, भाभ ।

शगभाषामे

अभ्र ।

मराटीभाषामे

अभ्रक ।

मुजगतीभाषामे

अभ्रक ।

| | |
|-----------------|--------------------------------|
| कर्णाटकीभाषामें | अभ्रक । |
| तैलिंगीभाषामें | अभ्रक । |
| इग्रेजीभाषामें | टाल्क, ग्लिम्बर । Tale Glimmer |
| लैटिन्भाषामें | माईका । Mica |
| फारसीभाषामें | सिताराजमीन । |
| अग्नीभाषामें | तलूख । |

मारिताभ्रकगुणा ।

अभ्रकपायमधुरसुशीतमायुष्करधातुविवर्द्धनञ्च । हन्यात्रि-
दोषत्रणमेहकुष्ठंघ्नीहोदरग्रन्थिविषकृमीश्च ॥ रोगान्हन्ति-
द्रढयतिवपुर्वीर्यवृद्धिविधत्तेतारुण्याढ्यरमयतिशतयोपि-
तानित्यमेव । दीर्घायुष्काञ्जनयतिसुतान्विक्रमै सिंहतु-
ल्यान्मृत्योर्भीतिहरतिसततसेव्यमानमृताभ्रम् ।

अर्थ—अभ्रक—कपेला, मधुर, शीतल, आयुकर, धातुवर्द्धक, त्रिदोष-
नाशक तथा व्रण, प्रमेह, कोढ़, घ्नीहा, उदग्ररोग, ग्रन्थि, विष और कृमिका
नाश करेहै । रोगनाशक, देहको दृढकरनेवाला वीर्यवर्द्धक, तरुणअवस्थायुक्त
सौ स्त्रियोंसे नित्यप्रति रमनेका सामर्थ्य करानेवाला, दीर्घ आयुवाले और
सिंहकी समान पराक्रमी ऐसे पुत्रोंको उत्पन्न करनेवाला और मृत्युके भय-
कोभी हरनेवाला है ।

अन्यञ्च ।

मृताभ्रककामबलप्रदचविषमरुगसभगन्दराध्यम् ।

मेहभ्रमपित्तकफचकासक्षयनिहन्त्येवयथानुपानात् ॥

अर्थ—अभ्रकको यथानुपानके साथ सेवन करनेसे कामप्रद, बलकारक
तथा विष, वात, श्वास, भगन्तर, आध्य, प्रमेह, भ्रम, पित्त, कफ, खाँसी
और क्षयरोगको हरनेवाला है ।

अभ्रस्य जातिषणभेदा ।

विप्रक्षत्रियविद्गूढभेदात्स्यात्तच्चतुर्विधम् ।

क्रमेणचसितरक्तपीतकृष्णञ्चवर्णत ॥

अर्थ—अभ्रक—जातिके भेदमे चार प्रकारकाहै, जैसे प्राक्षण, क्षत्रिय, वैश्य

और अठ्ठ तथा ब्राह्मणभ्रमर-भेदगता, शशिय भ्रमर-ताम्रगता, वैष्णवभ्रमर-पांति गता और अठ्ठ भ्रमर पांति गता होता है ।

प्रशम्यतेनिततारंगक्तनचुरमायने ।

पीतहेमनिकृष्णतुगदेषुभृतयेऽपिच ॥ (भावप्रकाश)

अर्थ-चादीके पतानेमें तवेद भ्रमर, रंगायन कम्पम लान, मुष्णकें पतानेमें पाला और गोगाम तथा रभयके लिये कृष्ण भ्रमर लेना तादृश ।

चतुर्विधाभ्रमर नामान्तगुणा ।

पिनाकदुर्दुरनागवज्रचेतिचतुर्विधम् । पिनाकवर्जयेंद्रीमा-
न्ददुर्दुराशिशेषत । तृतीयनागमज्ञादृग्गत्त परिवर्जयेत् ।
मुञ्चत्यग्राविनि क्षितपिनाकदलमक्षयम् ॥ अज्ञानाद्वक्षणा-
त्तन्ममहाकुष्ठप्रशयम् । दुर्दुर्गत्तविनि क्षिप्तपुस्तैर्दुर्दुर्ग-
त्तम् ॥ गोलकान्चदृग्गत्तत्तत्तन्मन्मन्मुप्रदायकम् । ना-
गन्तुनागवज्रहोप्रत्तकार्पणिमुञ्चति ॥ तद्रक्षितमवश्यन्तु-
विदधातिभगन्दरम् । वज्रन्तुवज्रवत्तिष्ठेत्तन्नाग्रा विहृतीन-
जेत् ॥ वज्रमज्जितयोग्यमभ्रमरवनेतरत् । नवभिषुवनम-
व्याधिवाहक्यमृत्युहृत् ॥ अभ्रमुत्तरगोलोन्धनुमत्तगुणा-
धिकम् । दक्षिणाद्रिभवनाभ्रम्वल्पमत्तगुणप्रदम् ॥

अर्थ-पिनाक, दुर्दुर्ग, नाग और वज्र इन भ्रमरोंमें अभ्रमर, पात प्रकाश
है । इनमें पिनाक, दुर्दुर्ग और गगनामवाला भ्रमर पताने योग्य है ।
पिनाकभ्रमर अशिम शत्रुने परा २ होताहै । पांति भ्रमरों को
अज्ञानों शत्रुने ग्रा ले तो उनके महाकुष्ठरोग उत्पन्न होताहै । दुर्दुर्गनाम
वाला भ्रमर अशिम शत्रुने भ्रमरकी समान मार करताहै । तथा
गोलकावर होताहै । इसका भक्षण करनेमें मृत्यु होतीहै । गगनामवाला
भ्रमर अशिम शत्रुने प्रकाश करताहै, इसको भक्षण करनेमें भक्षण
भगन्दररोग उत्पन्न होताहै । और वज्ररूप भ्रमर अशिम शत्रुने वज्र
समान शत्रुने मारा पता होताहै और विवाहको प्रशस्त होताहै यह
वज्राभ्रमर मर प्रकाशके भ्रमरनाम उत्पन्न होताहै वातामय प्रकाशके रोग,

वृद्धावस्था और मृत्युको हरनेवाला है । उत्तरके पर्वतोंमें होनेवाला अभ्रक बहुत सत्त्वसम्पन्न और अधिक गुणवाला है तथा दक्षिणके पर्वतोंमें उत्पन्न होनेवाला अभ्रक अल्पसत्त्व और अल्पगुणवाला है ।

अशोधिताभ्रदोषा ।

पीडाविधत्तेविविधानराणांकुष्ठक्षयपाण्डुगदचशोथम् ।

हृत्पार्श्वपीडाञ्चकरोत्यशुद्धमभ्रह्यसिद्धगुरुतापदस्यात् ॥

अर्थ—अशुद्ध अभ्रक—अनेक प्रकारकी पीडा, कुष्ठ, क्षय, पाण्डुतोग, सृजन, हृदयकी पीडा, पसवाड़ेकी पीडा, भारीपन और तापको उत्पन्न करेहे ।

अभ्रकोत्पत्ति ।

पुरावधायवृत्रस्यवज्रिणावज्रमुद्धतम् । विस्फुलिङ्गास्तत-
स्तस्यगगनेपरिसर्पितः ॥ तेनिपेतुर्वनध्वानाच्छिखरेषुम-
हीभृताम् । तेभ्यएवसमुत्पन्नतत्तद्गिरिपुचाभ्रकम् ॥ तद्वज्र-
वज्रजातत्वादभ्रमभ्ररवोद्भवात् । गगनाद्गलितयस्माद्गगनञ्च
ततोमतम् ॥ (भा० प्र०)

अर्थ—पूर्वकालमें इन्द्रदेवने वृत्रासुरके मारनेको वज्र उठाया उस समय उस वज्रमेंसे चिनगारियें निकलकर आकाशमण्डलमें फैल गई, फिर वेही चिं-
नगारियें गर्जते वादलोंसे निकलकर जिन २ पर्वतोंके शृंगोंमें गिरीं उन्हीं २ पर्वतोंमें अभ्रक उत्पन्न हुआ । यह वज्रसे जो उत्पन्न हुआ इसीसे इसको वज्र कहते हैं, वादलोंके शब्दसे जो प्रगट हुआ इसीसे इसको अभ्रक कहते हैं और आकाशमें जो गिरा इसी कारण इसको गगन कहते हैं ।

अभ्रे पश्यम् ।

क्षाराम्लद्विदलचैवकर्कटीकारवेलकम् ।

वृन्ताकंचकरीरचतेलचाभ्रेविवर्जयेत ॥

अर्थ—अभ्रकको सेवन करनेवाले मनुष्य क्षार, अम्ल, द्विदल (उडद मृगादि) ककड़ी, कोला, वेगन, करील और तेलको छोड़देवे ।

गन्धवनामानि ।

गौरीवीजवलिर्गन्धपापाणोगन्धक स्मृतः ।

अर्थ—गौरीवीज, बलि, गन्धपापाण, गन्धक, (गन्धिक, गन्धाश्म, पामात्र, सौगन्धिक, सुगन्धिक, पामारि, शुल्वारि, गन्धी, गन्धमोदन,

और शूद्र, तथा मातृगणभक्त-भेतरगता, क्षत्रिय भक्त-तान्त्रिका
वैश्यभक्त-पति रगता और शूद्रभक्त वाले रगता होता है ।

प्रशम्यतेमितताग्नेक्तनुरमायने ।

पीतद्वेमनिकृष्णतुगदेषभृतयेऽपिच ॥ (भावमहाग)

अर्थ-चादीके बनानेमें राखे हुए अन्नक, रसायन कर्ममें लाए, सुदर्णके
बनानेमें पीत और रागोंमें तथा अन्नक जिनमें कृष्ण अन्नक लेना चाहिये ।

गुणधाराधनस्य ताम्रपुष्पगुणा ।

पिनाकदुर्दुरनागमञ्जुश्चेतिचतुर्विधम् । पिनाकवर्जयेद्भीमा-
न्ददुर्गश्चविशेषतः । तृतीयनागमञ्जुश्चद्वयं पश्चिमवर्जयेत् ।
सुशक्त्यमोनिनि क्षितपिनाकदलमञ्जयम् ॥ अज्ञानाद्रक्षणा-
त्तन्ममहाकुष्ठप्रदायकम् । दुर्दुर्गत्वमिनि क्षिप्रं दुर्दुर्गत्व-
निम् ॥ गोलकान्वद्गुण कृत्वा तन्म्यान्मृन्मृन्प्रदायकम् । ना-
गन्तुनागमञ्जुः फलकापगुणश्चेति ॥ तद्वद्वितमवश्चन्तु-
विदधातिभगन्दाम् । वद्वन्तुवद्वन्तिष्ठन्तन्नाम्ना विद्वन्ति-
जेत ॥ वद्वन्तुवद्वन्तिष्ठन्तन्नाम्ना विद्वन्ति-
व्याधिपार्श्वक्यमृत्पुष्टम् ॥ अभ्रमुत्तरशैलान्त्यमृन्मृन्गुणा-
धिकम् । दक्षिणाद्रिमवचाभ्रम्वत्पमत्त्वगुणप्रदम् ॥

अर्थ-पिनाक, दुर्दुर्ग, नाग और वज्र इन भेदोंमें अन्नक, चाा प्रकाश
है । इनमें पिनाक, दुर्दुर्ग और नागनामराज अन्नक रसायने सोमदे ।
पिनाकअन्नक अग्निमें दालनेमें परत २ होताहै । यदि इगरी चोरे
अग्निके वज्रमें रसायने तो उगक महाकुष्ठरोग उत्पन्न होताहै । दक्षिणा
वाला अन्नक अग्निमें दालनेमें भेदकी समान दाल् जाताहै । तथा
गोलकाकार होताहै । इगरी अन्नक करनेमें मृन्मृन् होताहै । नागनामराज
अन्नक अग्नि । दालनेमें फलका जाताहै, इगरी भाग करनेमें अन्नक
भगन्मृन्मृन् उत्पन्न होताहै । और वद्वन्तुवद्वन्तिष्ठन्तन्नाम्ना अग्निमें दालनेमें वज्रके
समान नेमिका तैसा बना जाताहै और विद्वन्तिष्ठन्तन्नाम्ना अन्नक
वज्रका सर्व प्रकारके अन्नकाम उत्पन्न होनेके कारण यह प्रकाश होताहै ।

वृद्धावस्था और मृत्युको हरनेवाला है । उत्तरके पर्वतोंमें होनेवाला अभ्रक बहुत सत्वसम्पन्न और अधिक गुणवाला है तथा दक्षिणके पर्वतोंमें उत्पन्न होनेवाला अभ्रक अल्पसत्व और अल्पगुणवाला है ।

अशोधिताभ्रदोषा ।

पीडाविधत्तेविविधानराणाकुष्ठक्षयपाण्डुगदचशोथम् ।

हृत्पार्श्वपीडाञ्चकरोत्यशुद्धमम्रह्यसिद्धगुरुतापदस्यात् ॥

अर्थ—अशुद्ध अभ्रक—अनेक प्रकारकी पीडा, कुष्ठ, क्षय, पाण्डुरोग, सृजन, हृदयकी पीडा, पसवाड़ेकी पीडा, भारीपन और तापको उत्पन्न करेहै ।

अभ्रकोरपत्ति ।

पुरावधायवृत्रस्यवज्रिणावज्रमुद्धृतम् । विस्फुलिङ्गास्तत-
स्तस्यगगनेपरिसर्पित ॥ तेनिपेतुर्धनध्वानाच्छिखरेषुम-
हीभृताम् । तेभ्यएवसमुत्पन्नतत्तद्विरिपुचाभ्रकम् ॥ तद्वज्र-
वज्रजातत्वादभ्रमभ्ररवोद्भवात् । गगनाद्गलितयस्माद्गगनञ्च
ततोमतम् ॥ (भा० प्र०)

अर्थ—पूर्वकालमें इन्द्रदेवने वृत्रासुरके मारनेको वज्र उठाया उस समय उस वज्रमेंसे चिनगारियें निकलकर आकाशमंडलमें फैल गई, फिर वेही चिं-
नगारियें गर्जते बादलोंसे निकलकर जिन २ पर्वतोंके शृंगोंमें गिरीं उन्हीं २ पर्वतोंमें अभ्रक उत्पन्न हुआ । यह वज्रसे जो उत्पन्न हुआ इसीसे इसको वज्र कहते हैं, बादलोंके शब्दसे जो प्रगट हुआ इसीसे इसको अभ्रक कहते हैं और आकाशमें जो गिरा इसी कारण इसको गगन कहते हैं ।

अभ्रे पथ्यम् ।

क्षाराम्लद्विदलचैवकर्कटीकारवेल्लकम् ।

वृन्ताकचफरीरचतैलचाभ्रेविवर्जयेत ॥

अर्थ—अभ्रकको सेवन करनेवाले मनुष्य क्षार, अम्ल, द्विदल (उडद मूंगादि) ककड़ी, कोला, वगन, करील और तेलको छोड़दे ।

गन्धवनामानि ।

गौरीबीजवलिर्गन्धपापाणोगन्धक स्मृत ।

अर्थ—गौरीबीज, बलि, गन्धपापाण, गन्धक, (गन्धिक, गन्धाश्म, पामात्र, सौगन्धिक, मुगन्धिक, पामारि, शुल्बारि, गन्धी, गन्धमोदन,

वर, पूतिगन्ध, गन्ध, दिव्यगन्ध, सगन्ध, रम्यगन्धक, सुशारि, फोडन,
भृगुगन्ध, दाम्भूमिन, यलरस)

| | | | |
|-----------------|---------|-----------------|---------------|
| सन्तृप्तभाषामें | गन्धक । | हैलिद्वीभाषामें | गंधकमु । |
| हिन्दीभाषामें | गन्धक । | अ० | गलर मिर्चान । |
| यगभाषामें | गन्धक । | पारसीभाषामें | गोगिर्द । |
| मराठीभाषामें | गन्धक । | छेडिभाषामें | मफ । |
| गुजरातीभाषामें | गन्धक । | अरबीभाषामें | विप्रित । |

गन्धकगुणः ।

गन्धकः कटुकस्तिक्तोवीर्य्योष्णस्तुवरः सरः ।

पित्तल कटुकः पाकेकण्डूवीमर्षजन्तुजित ।

हन्ति कुष्ठद्वयप्लीहकफवातात्रसायन ॥ (भावप्रकाश)

अर्थ-गन्धक-चरपग, कटका, उष्णस्वभाव, कपेला, गारक, पित्तजनक,
पचनेष पद, रसायन तथा कटुक, मिर्ष, हृमि, शुष्, क्षप, धीरा, वर
और पातको दूर करनेवाला है ।

गन्धकः ।

शोधितोयन्तुगन्धः स्याज्जगमृत्युरुजापहः ।

अग्निमदीपन श्रेष्ठोवीर्य्यवृद्धिकरोऽस्थिरुत ॥ (प्र० भू०)

अर्थ-शोधितगंधक-जरा और मृत्युनाशक है तथा सर गेगनिशारक है,
अग्निमदीपक, श्रेष्ठ, क्षम्य-तरीकरक और अग्निजनक है ।

अग्निः ।

पवनपित्तकफान्विषकामलान् सरलकुष्ठगदान्पुनिगन्ध-
क । हरति निष्कमित पयसान्वितो मदनवृद्धिकरोनय-
नार्तिहत ॥ (नि० २०)

अर्थ-शोधितगंधक-आर मासे दूधक, माय मेसन कर्मणे शक्तिशाल,
विशक्तिशाल, कटुशक्तिशाल, विष, कामग, गर्भ मकारके पुष्ट और भ्रमरोगोको
दूर करे है तथा कामदेवको यशसे है ।

अग्निप्रकाशः ।

अशोशितोगन्धकपुष्पकुष्ठरगेनिनापंथिपमभर्गः ।

सौम्यक्षरपक्षरत्नधोज शुक्लनिहन्त्येनकरोदिनायम ॥

अर्थ—अशुद्धगन्धक—कोढ़ और विषमताप देहमें उत्पन्न करता है तथा सुख, रूप, बल, ओज और शुक्रका नाश करता है और रुधिरको दूषित करे है ।

अन्यच्च ।

अशुद्धकुरुतेकुष्ठपित्तदाहंभ्रमरुजम् ।

हन्तिवीर्य्यवलरूपगन्धकशोधयेत्ततः ॥

अर्थ—अशुद्धगन्धक—कुष्ठ, पित्त, दाह, भ्रम और पीडाको उत्पन्न करे है । वीर्य्य, बल और रूपका नाश करे है इस कारण प्रथम शोधक काम लेवे ।

गन्धकस्य प्रकारभेदा ।

श्वेतोरक्तश्चपीतश्चनीलश्चेतिचतुर्विधः । गन्धकोवर्णतोज्ञे-
योभिन्नभिन्नगुणाश्रयः । श्वेतःकुष्ठापहारीस्याद्रक्तोलोहप्र-
योगकृत् । पीतोरसेप्रयोगार्होनीलोवर्णान्तरोचितः ॥

अर्थ—गन्धक, सफेद, लाल, पीला और नीला इन भेदोंसे चार प्रकारका है, तथा सफेद गन्धक—कुष्ठनाशक है । लाल गन्धक—लोहके मारनेमें लेना । पीला गन्धक—पारेके विषयमें, उत्तम है, और नीला गन्धक वर्णान्तर तथा रसायनकर्ममें श्रेष्ठ है ।

अन्यच्च ।

रक्तोहेमक्रियासूक्तःपीतश्चैवरसायने ।

व्रणविलेपनेश्वेतःकृष्ण श्रेष्ठःसुदुर्लभः ॥

अर्थ—लाल गन्धक सुवर्णके उनानेमें लेना, पीलागन्धक रसायन कर्ममें लेना, व्रणके लेपादिकमें सफेद गन्धक लेना और कृष्णगन्धक श्रेष्ठ और दुर्लभ है ।

श्वेतगन्धकलक्षणम् ।

शुक्लपद्मसमच्छायोनवनीतसमप्रभः ।

मृष्टण कठिन स्निग्ध श्रेष्ठगन्धकउच्यते ॥

अर्थ—जो सफेद कमलकी समान वणवाला, नवनीतकी समान प्रभायुक्त हो मृष्टण, कठिन और स्निग्ध ऐसा गन्धक उत्तम कहा जाता है ।

मन शिलानामानि ।

मनःशिलाचगोलाचमनोज्ञानागजिह्विका ।

मनोगुप्तारोगशिलानैपालीकुनटीशिला ॥

अर्थ—मनःशिला, गोला, मनोज्ञा, नागजिह्विका, मनोगुप्ता, रोगशिला, नैपाली, कुनटी, शिला, (मनःसिल, कुलटी, मनोह्वा, नेपालिका, कल्याणिका, नागमाता, रमनेत्रिका, दिव्यौषधि)

संस्कृतभाषामें मनःशिला ।

तैलङ्गीभाषामें मानुशिला ।

हिन्दीभाषामें मनशिल, मनशिल ।

फारसीभाषामें जरनिख, अहेमर ।

वगभाषामें मनडाल ।

इंग्रेजीभाषामें रीलेगार ।

मराठीभाषामें मनशील ।

लैटिन्भाषामें आसॅनिक, मर्ल्फडम् ।

गुजरातीभाषामें मणशिल ।

मन शिलागुणा ।

मनःशिलागुरुर्वल्यासरोष्णालेखनीकटु ।

तिक्तास्निग्धाविपश्वासकासभूतकफास्त्रनुत् ॥

अर्थ—मनशिल—भारी, बलकारी, सारक, गरम, लेखा, चरपरी, कडवी, स्निग्ध तथा विष, श्वास, खासी भूत, कफ और रुधिरके विकारोंको दूर करे है ।

अशोधितमन शिलादोषा ।

मनःशिलामन्दवलकरोतिजन्तुन्ध्रुवंशोधनमन्तरेण ।

मलानुबन्धकिलमूत्ररोधमशर्करंकृच्छ्रगदचकुर्व्यात् ॥

अर्थ—अशुद्धमनशिल—बलको कम करनेवाली, मलरोधक, मूत्ररोधक, शर्करारोगजनक और मूत्रकृच्छ्र रोगको करे है ।

हरितालमनशिलदोषद ।

तालकस्यैवभेदोऽस्तिमनागेवतदन्तरम् ।

तालकमतिपीतस्याद्रवेद्रक्तामन शिला ॥

अर्थ—हरिताल और मनशिल इन दोनोंमें केवल इतनाही अंतर है कि, हरिताल अत्यन्त पीली और मनशिल लाल होतीहै ।

हरितालनामानि ।

पिञ्जरपित्तलतालमनोज्ञहरितालकम् ।

छत्रागकाञ्चनरसंगोदन्तनटमण्डनम् ॥

अर्थ-पिञ्जर, पिच्छल, ताम्र, मनो, हरितालक, छत्राङ्ग, काञ्चनम्, गोदन्त, नटमण्डन (विद्यमानि, पीतक हरिताल, कपूर, पीता, हरिपीत, सिद्धधातु, पिञ्जर, लोमहृत्, वंशपत्रक, वर्णर, भञ्ज, पीत, मोगोच, चित्राङ्ग, पिञ्जरक, वृन्त, सान्क, कलकाम, काञ्चनक, विद्यालक, मिश्रगन्ध, पिङ्ग, पिङ्गमार, गौरीलम्बि)

स० हरिताल ।

दि० हरिताल ।

य० हरिताल, हत्तेड ।

म० हरिताल ।

व० हरिताल ।

इ० ओषधिमैत्र ।

ह० यनोभार विभक्ततादिम्

अ० जरातिभार ।

हरितालगुणः ।

हरितालकदृग्निग्धकपायोष्णहरं द्विपम् ।

कण्डुकुष्टास्थिगोमान्तरुफपित्तकृन्तणम् ॥

अर्थ-हरिताल-रसगी, निग्ध, कपेली, गरुड, विषाणक तथा कण्डुकुष्ट, मुग्धगो, रुधिरविकार, कर्त, पित्त, पाण्ड और प्रमत्ते दूर करे ।

अवस्था ।

शोधितहरितालन्तुकान्तिवीर्यविपर्जनम् ।

कुष्टादिकफगोमंजराभृत्युद्वर्णपरम् ॥

अर्थ-शोधित हरिताल-शक्तिजनक, वीर्यवर्धक, कृत्राभिगोमदायक, कफगोमनाशक, अग और मृत्युको नाश करनेवाली ।

अवस्था ।

अश्लीतिपातान्तरुफपित्तगोमान्कुष्ठानिमेदाश्रुदामयांश ।

निहन्तिगुत्रार्धमित्तुनालपङ्कजडेनममनयुक्तम् ॥

अर्थ-श्लीति चोष्णीमार हरितालकी भग्न और छ पाण्ड चोष्णी मित्र, कफ गान्धेरी जगती प्रमत्ते बाल, कर्त, पित्त, कुष्ठ ज्वर और वराणां दूर होती ।

अशुद्धहरितालदोषः ।

अशुद्धन्तालमायुर्दत्तकफमाग्नमेदहृत् ।

तापत्पेटादिनरान्द्रुक्तेनेनशोधयेत् ॥

अर्थ—अशोधित हरिताल—आयुनाशक, कफकारक, वातवर्द्धक, प्रमेह-जनक, तापजनक, विस्फोटकारक और अगसकोचक है ।

अपिच ।

अशुद्धतालंखलुपीतवर्णसधूमकंवातचयचपित्तम् ।

पगुत्वकुष्ठेतनुतेचतेनदेहस्यनाशंचकरोतिसद्यः ॥

अर्थ—अशुद्ध हरताल—पीली और अग्रिमें डालनेसे धुआ देने लगतीहै ऐसी हरिताल—वातपित्तको बढ़ानेवालीहै, देहमें पगुता और कुष्ठको उत्पन्न करनेवाली है और तत्काल देहनाशक है ।

अन्यच्च ।

हरतिचहरितालचारुतांदेहजाताम् सृजतिचबहुतापमंग-
सङ्कोचपीडाम् ॥ वितरतिकफवातौकुष्ठरोगंविदध्यादिद-
मशितमशुद्धमारितंचाप्यसम्यक् ॥

अर्थ—अशुद्ध और कुविधिसे मारी हुई हरिताल—देहकी सुदरताको हरने-वाली घोर ताप तथा अगोंका सकोच और पीडाको करनेवाली, कफवातको बढ़ानेवाली और कोढ़को करनेवाली है ।

हरितालस्वप्रकारभेदः ।

हरितालद्विधाप्रोक्तंपत्राख्यपिण्डसज्ञकम् । तयोगद्यंगुणै
श्रेष्ठततोहीनगुणपरम् ॥स्वर्णवर्णगुरुस्निग्धसपत्रचाभ्रपत्र-
वत् । त्राख्यतालकविद्याद्गुणाढ्यंतद्रसायनम् ॥ निष्पत्र
पिण्डसदृशस्वल्पसत्त्वतथागुरु । स्त्रीपुष्पहारकंस्वल्पगुण
तत्पिण्डतालकम् ॥

अर्थ—पत्रहरिताल और पिण्डहरिताल इन भेदोंसे हरिताल दो प्रकारकी है तथा पत्रहरिताल (तवकिया) गुणोंमें श्रेष्ठ और पिण्डहरिताल हीनगुण-वालीहै । जो हरिताल स्वर्णके समान वर्णवाली हो, भारी हो, स्निग्ध हो और अभ्रककी समान पत्रयुक्त हो वह पत्रहरिताल जाननी यह हरिताल अधिक गुणवाली और रसायन है और जो पत्ररहितहो पिण्डकी समान गोल हो वह अल्पसत्वयुक्त, हलकी, रूखी पुष्पका नाश करनेवाली और अल्पगुणवाली ऐसी पिण्डहरिताल जाननी ।

अथ च ।

हस्तिनालोष्टवाप्रोक्तो गोदन्तः सर्वतोधिकः ।

तदभावे तु पत्राग्नौ वयमस्थापनं पर ॥

अर्थ-हरिताल आठ प्रकारकी रहै, उन सबमें गोदन्त हरिताल उसमें है, गोदन्त हरितालके अभावमें पत्राग्नौ हस्तिनाल लेनी यह अन्त्या स्थापक है ।

हरिताल अन्त्यानुरूपम् ।

सर्वगतविनाशे पुत्रयमाप्रहस्त्रिया । सुहालाहलजीगभयाम-

पस्मारहरपम् ॥ समुद्रफलयोगेन जलोदगविनाशनम् ।

देवदालिगमैर्युक्तभगन्दरहरपम् । फिरगटोपजंरोगजान-

न्ति सुदुस्तम् ॥ विमर्षमण्डलं कण्डूपामानि स्फोटयन्त्या ।

वातरक्तकृतामोगानन्यानपि विनाशयेत् ॥

अर्थ-हरितालकी भस्म-गर्भप्रकाश रक्तविरागमें भास्त्रियालकी गाय देनी चाहिये, वस्तुनाग विष और तीक्ष्ण गाय अन्त्यागोगमें देनी चाहिये, समुद्रफलके गाय जलोदगोगमें देनी चाहिये और देवदालीक गाय भगन्दर, विरोगपत्र, विमर्ष, महत्, कटू, पाता, विमर्ष और वात रक्तजनित रोग तथा अन्याय रोगादीकी दूर करे ।

हरितालभास्त्रियमात्रम् ।

भक्षयं प्रतिमात्रद्विधा योगेन तालम् ।

ज्ञानमूर्द्धनकटुत्वयुक्तामिष्टभोजनमाचरेत् ॥

अर्थ-हरिताल प्रथम एक गुंता प्रमाण भास्त्रिय करनी चाहिये तथा भस्त्र, भस्त्र और कटुपत्रादि नही खावे और निष्ठु भोजन करे ।

हरितालप्रमाणम् ।

आमं तामं क्षये दुष्टे पित्तं वेदान्तशोणिते ।

वट्टुपामानेन रुष्टे तालकचप्रदापयेत् ॥

अर्थ-हरिताल-आम, रसमी, क्षय, पित्त, वेदान्त, वट्टु पाता, क्षय और वट्टुपातामें देनी चाहिये ।

हरितालादीनामुत्पत्तिः ।

हरितालहरेर्वीर्य्यलक्ष्मीवीर्य्यमनःशिला ।

पारदशिववीर्य्यस्याद्गन्धकपार्वतीरजः ॥

अर्थ - विष्णुके वीर्यसे हरिताल, लक्ष्मीके वीर्यसे मनशिल, शिवके वीर्यसे पारग और पार्वतीके रजसे गन्धककी उत्पत्ति है ।

विवरण । हरिताल-वगपत्री, स्तवक (तवकिया) ओर पिण्डारव्य (गुवरिया) इन भेदोंसे कई प्रकारकीहै दूसरी एक गोदन्ती हरिताल होतीहै ।

वासीखनामानि ।

कासीसधातुकासीसखाचरधातुशेखरम् ।

शोधनंपांसुकासीसकेसरहसलोमशन् ॥

अर्थ-कासीस, धातुकासीस, खाचर, धातुशेखर, शोधन, पांसुकासीस, केसर, हसलोमश (शुभ्र, कासीस, नेत्रौपध)

पुष्पकासीनामानि ।

द्वितीयंपुष्पकासीसवत्सकचमलीमसम् ।

ह्रस्वनेत्रौपधयोज्यंविशदंनीलमृत्तिका ॥

अर्थ-पुष्पकासीस, वत्सक, मलीमस, ह्रस्व, नेत्रौपध, विशद, नील-मृत्तिका ।

संस्कृतभाषामें

कासीस, पुष्पकासीस ।

हिन्दीभाषामें

कसीस, पुष्पकसीस ।

वगभाषामें

धातुकासीस, पुष्पकासीस ।

मराठीभाषामें

हिराकस, श्वेतनीळी ।

गुजरातीभाषामें

हीराकणी वे जातनी छे नीली तथा धोळी ।

कर्णाटकीभाषामें

कासीस ।

इंग्रेजीभाषामें

सल्फेट ऑफ आयर्न । Sulphate of iron vitriolgreen

विट्रिअलग्रीन्

हे०

फेरिमल्फास । Ferry Sulphas

फारसीभाषामें

जाकेमब्ज ।

अरबीभाषामें

जाजेअग्दर, जाजेअम्हर ।

वार्तासंग्रहः ।

कासीसतुक्पायंन्याच्छिग्विपकुष्टजित । सज्जुमिह-
 र्वेवचक्षुष्यकान्तिवर्द्धनम् ॥ पुष्पकासीसकान्तिकंभीतने-
 त्रामयापहम् । लेपेनपामाकुष्टादिनानात्वग्दोषनाशनम् ॥

अर्थ-कमीस-कपेला, जीतक, नेत्रोको दितकारी वार्तासंग्रह, तथा
 रिप, तुष्ट, सज्जु और क्षुमिका नाम के हैं । पुष्पकासी-रुद्रा, जीतक,
 नेत्ररोगनाशक, इमका लेप करने से पामा, कुष्टादि और अनेक प्रकारके रोगों
 निवार हो सकते हैं ।

अर्थः ।

कासीसतुक्पायंन्याच्छिग्विपकुष्टजित । अमृतपुष्पकान्ति-
 त्तक्षकंभ्यक्षारविपप्रणुत् ॥ वृष्यवनित्रकुष्टममृत्तुष्टा-
 श्मरीहरम् । कफपातित्रणकुष्टवनेनविनाशयेत् ॥

अर्थ-वार्तासंग्रह-कपेला, जीतक, नेत्रोको दितकारी वार्तासंग्रह अमृत
 पुष्प, कपेला वार्तासंग्रह दितकारी, क्षार, विपनाशक, वृष्य, विपप्रणु,
 नाशक तथा वृष्यवनित्र कपेला, कटु, वात, प्रण, कुष्ट और क्षययोगका
 नाश करे हैं ।

अर्थः ।

पुष्पादिकामीमपिप्रशस्तमोष्णंरुपायान्ममर्ताननेन्दम् ।
 विषानिलश्रेष्ममतित्रणप्रश्नित्रनयप्रशस्तजनन ॥
 यानश्रेष्महृक्केशनेत्रकण्टविपप्रणुत् ।

मृत्तुष्टाश्मरीश्चित्रनाशनंपरिकीर्तितम् ॥ (वि० २०)

अर्थ-पुष्पकासीस-अमृतपुष्पक नाम, रवेण रुद्रा, अमृतपुष्प नेत्रोको
 दितकारी तथा विष नाशक, प्रण, श्रेष्ठवनि और क्षययोगका नाश करे हैं,
 वृष्यवनित्र, वात, कटु, नेत्र और केशकारी मृत्तुष्टा विष, कटुवनि और
 कपेला के हैं ।

अर्थः ।

अस्मन्मृत्तिराम्भनपामीनुधातुस्तपि ।
 तदेवमिदित्थीनपुष्पनामीनमुच्यते ।

अर्थ—वातुकासीस—भस्मकी समान अप्लमृत्तिका होती है और पुष्पका-
सीस धातुकासीससे कुठेक पीला होता है ।

गैरिकनामानि ।

गिरिमृद्गैरिकरक्तधातुलोहितमृत्तिका ।

अर्थ—गिरिमृद्, गैरिक, रक्तधातु, लोहितमृत्तिका (गिरिधातु, गवे-
धुक, धातु, सुरगधातु, गिरिमृद्गव, वनालक्त, गवेरुक, प्रत्यश्म, गिरिज,
गैरिय, ताम्रधातु)

सुवर्णगैरिकनामानि ।

सुवर्णगैरिकचान्यत्सुरक्तंस्वर्णगैरिकम् ।

अर्थ—सुवर्णगैरिक, सुरक्त, स्वर्णगैरिक, (स्वर्णधातु, शिला धातु, सन्ध्याभ्र,
वभ्रधातु, सुरक्तक)

पापाणगैरिकनामानि ।

पापाणगैरिकप्रोक्तकठिनाताम्रवर्णकम् ।

अर्थ—पापाणगैरिक, कठिन, ताम्रवर्णक ।

संस्कृतभाषामें गैरिक, सुवर्णगैरिक, पापाणगैरिक ।

हिंदीभाषामें गेरु, पीला गेरु, हिरोंजी ।

वगभाषामें गिरिमाटी ।

मराठीभाषामें सोनगेरु, तावेगेरु, डुरमुजी ।

गुजरातीभाषामें गेरु, सोनागेरु, हडमची ।

कर्णाटकीभाषामें जाजु, होजाजु ।

इंग्रेजीभाषामें ओकर Oker रेडलम्बरस्टोन Red lumber stone

लैटिन् भाषामें बॉलरुत्रा Bole Rubia

फारसीभाषामें गिलेसुखमिश्री ।

अरबीभाषामें तीनेमगेरवी अहमर ।

गैरिकगुणा ।

गैरिकरक्तपित्तासकफहिक्काविपापहम् ।

चक्षुष्यमन्यद्रल्यचविशेषाद्धान्तिनाशनम् ॥

अर्थ—गेरु—रक्तपित्त, रक्तविकार, कफ, हिचकी और विषका नाश करे
है, नेत्रोंको हितकारी, बलकारक और विशेषकरके वमननिवारक है ।

अथ च ।

विशदोगैरिकःस्निग्ध कपायोमधुरोहिम ।

कासीसगुणा ।

कासीसतुकपायस्याच्छिशिरं विपकुष्ठजित् । खज्ज्वृकमिह-
रं चैव चक्षुष्यं कान्तिवर्द्धनम् ॥ पुष्पकासीसकतिक्तशीतने-
त्रामयापहम् । लेपेन पामा कुष्ठादिना नात्वग्दोषनाशनम् ॥

अर्थ—कमीस—कपेला, शीतल, नेत्राको हितकारी, कान्तिवर्द्धक, तथा
विष, कुष्ठ, खज्ज्वं और कृमिकानाश करे है । पुष्पकासीस—कडवा, शीतल,
नेत्ररोगनाशक, इसका लेप करनेसे पामा, कुष्ठादि और अनेक प्रकारके त्वचाके
विकार दूर होते हैं ।

अन्यथा ।

कासीसतुवरं शीतचक्षुष्यकान्तिवर्द्धनम् । अम्लमुष्णञ्च ति-
क्तञ्च केभ्यं क्षारविषप्रणुत् ॥ वृष्यचचित्रकुष्ठमृत्रकृच्छ्रा-
श्मरीहरम् । कफवातत्रणकुष्ठक्षयचैव विनाशयेत् ॥

अर्थ—कामीस—कपेला, शीतल, नेत्राको हितकारी, कान्तिवर्द्धक, अम्ल
उष्ण, कडवा केशाको हितकारी, क्षार, विषनाशक, वृष्य, चित्रकुष्ठ,
नाशक तथा मृत्रकृच्छ, पथरी कफ, वात, प्रण, कुष्ठ और क्षयरोगका
नाश करे है ।

अपि ।

पुष्पादिकासीसमपि प्रशस्तमोष्णं कपायाम्लमतीव नेत्र्यम् ।
विषानिलश्लेष्ममतिव्रणप्रश्वित्रभयघ्नं रुचरजनच ॥
वातश्लेष्महरं केशनेत्रकण्डूविषप्रणुत् ।

मृत्रकृच्छ्राश्मरीश्वित्रनाशनपरिकीर्तितम् ॥ (नि० २०)

अर्थ—पुष्पकामीस—अत्यन्तप्रशस्त, गरम, कपेला, खट्टा, अतिगन्ध नेत्राको
हितकारी तथा विष, वात, कफ, प्रण, श्वेतकुष्ठ और क्षयरोगका नाशकरे है,
केशरजन, वात, कफ, नेत्र और केशाकी खुजली, विष, मृत्रकृच्छ और
पथरीको दूर करे है ।

कासीसदशणम् ।

भस्मवन्मृत्तिका म्लचकामीसंघातु इत्यपि ।
तदेव किञ्चित्पीतं तु पुष्पकासीसमुच्यते ।

अर्थ—धातुकासीस—भस्मकी समान अम्लमृत्तिका होती है और पुष्पका-
सीस धातुकासीससे कुछेक पीला होता है ।

गैरिकनामानि ।

गिरिमृद्गैरिकरक्तधातुलोहितमृत्तिका ।

अर्थ—गिरिमृत्, गैरिक, रक्तधातु, लोहितमृत्तिका (गिरिधातु, गवे-
धुक, धातु, सुरगधातु, गिरिमृद्भव, बनालक्त, गवेरुक, प्रत्यश्म, गिरिज,
गैरिय, ताम्रधातु)

सुवर्णगैरिकनामानि ।

सुवर्णगैरिकचान्यत्सुरक्तस्वर्णगैरिकम् ।

अर्थ—सुवर्णगैरिक, सुरक्त, स्वर्णगैरिक, (स्वर्णधातु, गिलाधातु, सन्ध्याभ्र,
वध्रुधातु, सुरक्तक)

पापाणगैरिकनामानि ।

पापाणगैरिकप्रोक्तकठिनाम्रवर्णकम् ।

अर्थ—पापाणगैरिक, कठिन, ताम्रवर्णक ।

संस्कृतभाषाम् गैरिक, सुवर्णगैरिक, पापाणगैरिक ।

हिंदीभाषाम् गेरु, पीला गेरु, हिरांजी ।

बगभाषाम् गिरिमाटी ।

मराठीभाषाम् सोनगेरु, तावेगेरु, डुरमुजी ।

गुजरातीभाषाम् गेरु, सोनागेरु, हडमची ।

कर्णाटकीभाषाम् जाजु, होजाजु ।

इंग्रेजीभाषाम् ओकर Oker रेडलम्बरस्टोन Red lumber stone

लैटिन् भाषाम् बॉलरुब्रा Bole Rubra

फारसीभाषाम् गिलेसुखमिश्री ।

अरबीभाषाम् तानेमगेरेवी अहमर ।

गैरिकगुणा ।

गैरिकरक्तपित्ताम्रकफहिकाविपापहम् ।

चक्षुष्यमन्यद्वल्यचविशेषाद्धान्तिनाशनम् ॥

अर्थ—गेरु—रक्तपित्त, रक्तविकार, कफ, हिचकी और विषका नाश करे
है, नेत्रोंको हितकारी, बलकारक और विशेषकरके वमननिवारक है ।

अन्यत्र ।

विशदोगैरिक.स्निग्ध.कपायोमधुरोहिमः ।

चक्षुष्योरक्तपित्तघ्नश्छर्दिहिकाविपापहः ॥

अर्थ-गेरु-विशद, स्निग्ध, कपेला, मधुर, शीतल, नेत्रोंको हितकारी, रक्तपित्तनाशक, तथा वमन, हिचकी और विषविनाशक है ।

सुवर्णगैरिकविशुद्धिगुणः ।

**सुवर्णगैरिकस्निग्धमधुरतुवरमतम् । चक्षुष्यशीतलवलय-
णरोपणकारकम् ॥ विशदकान्तिकृत्योक्तदाहपित्तकफज-
येत् । हिकारक्तरुज्जृतिविषविस्फोटकवमिम् ॥ अग्निद-
ग्धघ्नचाशोरक्तपित्तचनाशयेत् ॥**

अर्थ-पीला गेरु-स्निग्ध, मधुर, कपेला, नेत्रोंको हितकारी, शीतल, वलकारक, घणरोपण, विशद, कान्तिजनक तथा दाह, पित्त, कफ, रुधिरविकार, ज्वर, विष, विस्फोटक, वमन, अग्निदग्धघ्न, चवासीर और रक्तपित्तको हरनेवाला है ।

टिपिप्लीखगुणः ।

गैरिकद्वितयंस्निग्धमधुरतुवरमतम् ।

चक्षुष्यंदाहपित्तासकफहिकविपापहम् ॥

अर्थ-दोनोप्रकारके गेरु-स्निग्ध, मधुर, कपेले, नेत्रोंको हितकारी तथा दाह, रक्तपित्त, कफ, रुचकी और विषको हरनेवाले हैं ।

राक्षीनामानि ।

पाकशुकाशिलाधातुकठिनीचखटिखडी ।

अर्थ-पाकशुहा, शिलाधातु, कठिनी, खटि, खडी (खटी, खटिनी, खटिका, धवलमृत्तिका, श्वेतधातु, पाण्डुमृत्तिका, मितधातु, पाण्डुमृत्, ककखटी, वणरेखा, वर्णलेखा, मृत्तिकानखा, मनीलाधातु, वर्णलेखिका, शुक्रधातु, धातुपट, कठिनिका, लेखनी, मकख ।

संस्कृतभाषाम् खटी ।

हिन्दीभाषाम् गैरियामाटी, खडिया, गौरखडी ।

वगभाषाम् खडिमाटी, चाखडि ।

मराठीभाषाम् खट्ट ।

गुजरातीभाषाम् खडी ।

कर्णाटकीभाषाम् वेणेवट्ट ।

| | |
|----------------|--|
| इय्रेजीभाषामें | पाईपक्ले । Pipe clay |
| लैटिनभाषामें | कार्बोनेट आफ् कल्शम । Carbonate of calcium |
| फारसीभाषामें | गिलेसुफेद, गिलेखरिया । |
| अरबीभाषामें | तिने अवीयद । |

खटीगुणा ।

खटिकामधुरातिक्ताशीतलाव्रणदोषहा ।

पित्तदाहकफरक्तदोषनेत्ररुजजयेत् ॥

अर्थ—खडिया—मधुर, कडवी, शीतल, व्रणनाशक तथा पित्त, दाह, कफ, रुधिरविकार और नेत्ररोगको दूर करे है ।

अन्यत्र ।

खटीदाहासनुच्छीतामधुराविषशोपजित् । कफघ्नीनेत्रयो-
पथ्यालेखनावालकोचिता ॥ तद्वत्पापाणखटिकाव्रणपि-
त्तास्रजिद्धिमा । लेपादितद्वणाप्रोक्ताभक्षितानृत्तिकासमा ॥

अर्थ—खडिया—दाह, रक्तदोष, विष, शोष और कफको दूर करेहै, शीतल, मधुर, नेत्रोंको हितकारी, लेखन आग वालकोंको हितकारीहै । पापाणखटिका (मेलखडी)—केभी गुण खडियाकी समानहैं तथा व्रण, पित्त और रक्तविकारको दूरकरेहै, शीतल इसके लेप करनेमें यह गुण है और खानेमें तो भिट्टीकी समान है ।

कपर्दकनामानि ।

कपर्दकोवराटश्चकपर्दीचवराटिका ।

अर्थ—कपर्दक, वराटक, कपर्दी वराटिका (वगड, कपर्द, ऊढा-
हवी, चगाचर, चर, वज्र्य, वालफ्रीडक)

| | | | |
|---------------|--------------|-----------------|----------------|
| सस्कृतभाषामें | कपर्दक । | गुजरातीभाषामें | कोडी । |
| हिन्दीभाषामें | कवडी, कौडी । | कर्णाटकीभाषामें | कवडी । |
| वगभाषामें | कडि । | इय्रेजीभाषामें | क्वरीस Corries |
| मराठीभाषामें | कवडी । | | |

कपर्दिवागुणा ।

कपर्दिकाहिमानेत्रहितास्फोटक्षयापहा ।

कर्णस्त्रावाग्निमाद्यघ्नीपित्तास्रकफनाशिनी ॥

अर्थ—कवडी—शीतल, नेत्रोंको हितकारी तथा स्फोट, क्षय, कर्णमात्र, अग्निमाद्य, रक्तापित्त और कफका नाश करे है ।

अपिच ।

कटूष्णादीपनीवृष्यागुल्मवातकफापहा ।

परिणामादिशूलघ्नीग्रहणीक्षयनाशिनी ॥

अर्थ—कौडी—चरपरी, गरम, दीपन, वृष्य तथा गुल्म, वात, कफ, परिणामशूल, मग्नहर्णी और क्षयगोगका नाश करेई ।

अन्यथा ।

कपर्द कटुतिक्तोष्ण कर्णशूलव्रणापह ।

शूलगुल्मामयघ्नश्चनेत्रदोपनिकृन्तन ॥

अर्थ—कौडी—चरपरी, कडवी, गरम तथा कर्णशूल, घण, शूल गुल्म और नेत्रगोगका हरनेवाली है ।

कपर्दकाभेदा ।

वराटिकात्रिधाप्रोक्ताश्वेताशोणात्रिधापरा । पीताचर्तीक्ष्णा
चक्षुष्याश्वेताशोणाहिमाव्रणा ॥ अतिविंदुभिरश्वेतैर्लाछिता
रेखयाथवा । बालग्रहहरानानाकारांतुकेषुत्रपूजिता ॥ पीता
गुल्मयुतापृष्टेरसयोगेषुयोजयेत् । सार्धनिष्कप्रमाणार्सो
श्रेष्ठायोगेषुयोजयेत् ॥ निष्कप्रमाणामभ्यासाहीनापादोन-
निष्कका ॥

अर्थ—कौडी सफेद, लाल और पीली इन भेदोंमें तीनप्रकारकी है, वदा पीली कौडी—तीक्ष्ण और नेत्रोंको हितकारी है, सफेद और लाल कौडी—शीतल और व्रणका भरनेवाली है । बाले विंदुयुक्त तथा रेखाआकारके लाछित ऐसी कौडी—बालग्रहनाशक और अनेक प्रकारके कानुकोंमें उपयो-गी है और जिसकी पीठपर पीली गांठें हों ऐसी कौडी रसकर्ममें लेनी चाहिये । तोलमें डेढ़ तौलेवाली कौडी उत्तम होती है पर तौडेभरपी कौडी मध्यम और पाव तौडे भरपी कौडी वनिष्ठ होती है ।

शुक्तिनामानि ।

शुक्तिर्मुक्ताप्रसूश्चैवमहाशुक्तिश्चशुक्तिका ।

मुक्तास्फोटोन्धिमण्डूकीमौक्तिकप्रसवाचमा ॥

अर्थ-शुक्ति, मुक्तामसु, महाशुक्ति शुक्तिका, मुक्तास्फोट, अन्धिमण्डूकी, मौक्तिकमसवा (दुर्नामा, दीर्घकोपिका, दीर्घकौशिका, पद्मशुक्ति, मुक्तगार महाशुक्ति, तौतिक, मौक्तिकशुक्ति, मुक्तमाता, मुक्तास्फोटा)

जलशुक्तिनामानि ।

जलशुक्तिर्वारिशुक्तिः कृमिसूक्ष्मशुक्तिका ।

शम्बुकाजलडिम्बश्चपुटिकातोयशुक्तिका ॥

अर्थ-जलशुक्ति, वागिशुक्ति, कृमिसु (क्ति), क्षुद्रशुक्तिकागम्बूका, जल डिम्ब, पुटिका, तोयशुक्तिका, (नगशुक्ति)

सस्कृतभाषामें शुक्ति, जलशुक्ति ।

हिन्दीभाषामें मोतीकी सीप, जलसीप

वगभाषामें शिनुक, शामुक ।

मराठीभाषामें मोत्याची शिप, नदीतील शिप ।

गुजरातीभाषामें मोतीनी छीप, नदीना छिपना ।

कर्णाटकीभाषामें मुक्तिनीसिपु, तैग्यिसिपु ।

इंग्रेजीभाषामें ओईस्टरशेल । Oyster shell

शुक्तिगुणा ।

मुक्ताशुक्ति कटु स्निग्धाश्वासहृद्भोगनाशिनी ।

शूलप्रशमनीरुच्यामधुरादीपनीपरा ॥ (रा०नि०)

अर्थ-मोतीकी सीप-चरपरी, स्निग्ध, श्वासनिवारक, हृदयवेगहारक, शूलको दूर करनेवाली, रुचिको उत्पन्न करनेवाली, मधुर और दीपन है ।

अन्यच्च ।

मुक्ताशुक्तिस्तुमधुरास्निग्धारुच्याचदीपनी ।

कट्टीचकासशूलघ्नीहृद्भोगस्यचनाशिनी ॥

स्नायुरोगहरीचैवज्वरघ्नीव्रणभेदिनी ॥ (रा०नि०)

अर्थ-मोतीकी सीप-मधुर, स्निग्ध, रुचिकारक, दीपन, चरपरी तथा खासी, शूल, हृदयरोग, स्नायुरोग और ज्वरका नाश करनेवाली है और व्रणभेदक है ।

अपिच ।

शुक्तिश्चशिशिरापित्तरक्तज्वरविनाशिनी ॥

अर्थ-सीप-शीत, पित्त, रुधिरविकार और ज्वरको हर्नेवाली है।

जलशुक्तिगुणा ।

जलशुक्तिः कटुः स्निग्धादीपनी गुल्मशूलनुत् ।

विषदोषहरारुच्यापाचनी बलदायिनी ॥

अर्थ-जलसीप-चर्मपरी, स्निग्ध, दीपन, गुल्मनाशक, शूलनिवारक, विषविकारहारक, रुचिकारक, पाचक और बलवर्द्धक है।

अन्यथा ।

जलशुक्तिः कटु स्निग्धादीपनी पाचकाचसा ।

रुच्याबलप्रदा गुल्मनाशिनी चक्षुषोर्हिता ॥

विषदोषचशूलचनाशयेदितिकोर्त्तिता । (रा० नि०)

अर्थ-जलकी सीप-चर्मपरी, स्निग्ध, दीपन पाचक, रुचिकारक, बलवर्द्धक गुल्मनाशक, नेत्रोंको हितकारी तथा विषदोष और शूलका नाश करे।

विवरण । मोतीकी सीप और साधारण सीप इन भेदोंसे सीप दो प्रकारकी होती है । तहा मोतीकी सीप अत्यंत शुभ्र और सुफेद रंगकी समुद्रमें होती है । दूसरी सीप नदियोंमें होती है ।

शरनामानि ।

शख. समुद्रज. कम्बुः सुनाद. पावनध्वनि ॥

अर्थ-शख, समुद्रज, कम्बु, सुनाद, पावनध्वनि (कम्बु, कम्बोज अञ्ज, त्रिरेख, जलज, अर्णाभव, अन्त कुटिल, महानाद, श्वेतपूत, मुखर-दीर्घनाद, वदुनाद, हरिम्रिय, दीर्घनिरसन, सुगन्ध, सम्यक्छब्द, जलोद्भव, विष्णुम्रिय, दुष्टद्रावी, धवल, स्त्रीविभूषण, पांचजन्य, अर्णाभव, अर्णा-वभवोदर ।

| | | | |
|-----|------------|-----|-------------|
| स० | शख । | गु० | शख । |
| हि० | शख । | तै० | शख । |
| व० | शोक, शंख । | ई० | कोर । Catch |
| म० | शख । | | |

शंखगुणा ।

शखोनेत्र्योहिम शीतोल्बु पित्तकफास्रजित ।

अर्थ-शख-नेत्रोंको हितकारी, शीतल, हलका, तथा पित्त, कफ और रुधिरके विकारोंको दूर करेहै ।

अन्यच्च ।

शख कटुःसरःशीत.पुष्टिवीर्य्यबलप्रदः ।

गुल्मशूलहर श्वासनाशनोविपदोपनुत् ।

अर्थ-शख-चरपरा, सारक, शीतल, पुष्टि, वीर्य्य और बलवर्द्धक तथा गुल्म, शूल, श्वास और विपके विकारोंको हरेहै ।

अपिच ।

शखःशीतःकपायश्चलेखीचाजीर्णशूलजित् ।

अर्थ-शख-शीतल, कपेला, लेखन तथा अजीर्ण और शूलनाशक है ।

अपिच ।

शखस्तुपौष्टिकोवल्गोरसकालेकटुःस्मृतः । पटुःशीतोग्रा-

हकश्चक्षुष्योवर्णकृन्मतः ॥ नेत्रपुष्पपंक्तिशूलगुल्मसग्रह-

णीहरेत् । तारुण्यपिटिकागुल्मशूलश्वासहरःस्मृतः ॥

दक्षिणावर्तशखस्तुत्रिदोपकामलापहः । विपदोपक्षयनेत्र-

ग्रहपीडाविनाशकः ॥ (रत्नाकरे)

अर्थ-शख-पुष्टिकारक, बलवर्द्धक, कटुरसान्वित, खारी, शीतल, मल-रोधक, नेत्रोंको हितकारी, वर्णकारक तथा नेत्रका फूला, पंक्तिशूल, गुल्म सग्रहणी, तारुण्यपिटिका (मुहासे) गुल्म, शूल, और श्वासनाशक है । दक्षिणावर्तशख-त्रिदोष, कामलारोग, विपदोष, क्षय, नेत्ररोग और ग्रहकी पीडाको दूर करे है ।

शखस्य प्रकारभेदाः ।

द्विधासदक्षिणावर्त्तिर्वाभावर्त्तिस्तुभेदतः ।

दक्षिणावर्त्तशखस्तुपुण्ययोगादवाप्यते ॥

यद्गृहेतिष्ठतिसौवैसलक्ष्म्याभाजनभवेत् ।

अर्थ-शख-दक्षिणावर्त्त और वामावर्त्त इन भेदोंसे दोप्रकारका है । दक्षिणावर्त्त शख पुण्यके योगसेही प्राप्त होताहै । और जिसके घरमें यह रहताहै उसके लक्ष्मीकी अधिक वृद्धि होती है ।

श्रेष्ठशतलक्षणम् ।

शखस्तुविमलः श्रेष्ठश्चद्रकान्तिसमप्रभ ।

अशुद्धोगुणदोनेवशुद्धस्तुसुगुणप्रदः ॥

अर्थ-निर्मल और जिसकी चंद्रमाके समान कान्ति हो ऐसा शख उत्तम है । अशुद्ध शख गुणदायक नहीं है और शुद्ध शख गुणदायक है ।

कृमिशब्दानामानिगुणाम् ।

कृमिशखः कृमिजलज कृमिवारिश्च जन्तुकम्बुश्च ।

कथितोरसवीर्याद्यै कृतनिधिभिः शंखसदृशोऽयम् ॥

अर्थ-कृमिशख, कृमिजलज, कृमिवारि, जन्तुकम्बु । कृमिशख-रसवीर्यादिकमं शखकेही समान है ।

क्षुद्रश नामानि ।

कोशस्थालघुशंखास्तुक्षुद्रका क्षुल्लकास्तथा ।

शंखनकाश्च शम्बूकाः क्षुद्रशखानदीभवा ॥

अर्थ-कोशमय, लघुशख, क्षुद्रक, क्षुल्लक, शंखनक, शम्बूक, क्षुद्रशंख, नदीभव ।

क्षुद्रशतगुणा ।

शम्बूका शीतलानेत्ररुजास्फोटविनाशिनः ।

शीतज्वरहरास्तीक्ष्णाग्राहिदीपनपाचना ॥

अर्थ-क्षुद्रशख शीतल, नेत्ररोगनाशक, स्फोटकविनाशक, शीतज्वरनिवारक, तीक्ष्ण, ग्राही, दीपन और पाचक है ।

मयस्य ।

शम्बूकः सृष्टविण्मृत्रो मधुर पित्तरोगहा ।

अर्थ-क्षुद्रशख (घोंघा)-मल और मूत्रको करनेवाला, मधुर और पित्तरोग नाशक है ।

अपिष ।

क्षुल्लकः कटुकस्तिक्त शूलहारी च दीपनः ।

अर्थ-क्षुल्लक (घोंघा)-चरपरा, कटुवा, शूलनाशक और दीपन है ।

श्रेष्ठशतलक्षणम् ।

कङ्कुपंकालकुपश्च विरङ्गनङ्गदायकम् ।

अर्थ—ककुष्ठ, कालकुष्ठ, विरग, रगदायक (रेचक, पुलक, शोधक, कालपालक)

| | |
|----------------|-------------------------|
| सस्कृतभाषामें | ककुष्ठ । |
| हिंदीभाषामें | ककुष्ठ (मुरदासिंग) । |
| वगभाषामें | पार्वतीयमृत्तिकाविशेष । |
| मराठीभाषामें | कुकुष्ठ । |
| गुजरातीभाषामें | पीलीयो । |

कुकुष्ठगुणा ।

ककुष्ठरेचनतिक्तकटूष्णवर्णकारकम् ।

कृमिशोथोदराध्मानगुल्मानाहकफापहम् ॥ (भा० प्र०)

अर्थ—ककुष्ठ—दस्तावर, कडवा, चरपरा, वर्णकारक तथा कृमि, सूजन, उदर, अध्मान, गुल्म, आगाह और कफरोगका नाश करे है ।

अन्यञ्च ।

ककुष्ठतिक्तकटुकवीर्य्यचोष्णंप्रकीर्तितम् ।

गुल्मोदावर्त्तशूलघ्नरसजन्तुघ्णणापहम् । (रत्नाकर)

अर्थ—ककुष्ठ—कडवा, चरपरा, उष्णवीर्य्य तथा गुल्म, उदावर्त्त, शूल, रस, जन्तु और घ्नविनाशक है ।

अन्यञ्च ।

ककुष्ठपित्तकृद्वेदिविवधकफगुल्मनुत् । भजेदेनविरेकार्थं

ग्राहिभिर्यवमात्रया ॥ नाशयेदामपूतिचविरेच्यं क्षणमात्रतः ।

सुभक्षितचताम्बूलविरेकतविनाशयेत् ॥

अर्थ—ककुष्ठ—पित्तकारक, भेदक तथा विधध, कफ और गुल्मको दूर करे है । इसको एक जीकी बराबर मलरोधी मनुष्योंको देनेसे क्षणमात्रमें दस्त होने लगते हैं और दुर्गंध आम दूर होजाती है तथा ताम्बूलके खानेमें वही दस्त बंद हो जाते हैं ॥

ककुष्ठोत्पत्तिरक्षणम् ।

हिमवत्पादशिखरेककुष्ठमुपजायते । तत्रैकनलिकाख्यस्या-
त्तदन्यरेणुकस्मृतम् ॥ पीतप्रभंगुरुस्निग्धश्रेष्ठककुष्ठमा-
दिमम् । श्यामपीतलघुत्यक्तसत्त्वेनेष्टहिरेणुकम् ।

अर्थ-ककुप्र हिमालय पर्वतके शिखरामें उत्पन्न होताहै, तहा एक नलि कारूप और दूसरा रेणुक कहा जाताहै । इनमें पीला, भारी, चिकना ऐसा श्रेष्ठ ककुप्र होताहै और काला, पीला, हलका और जिसमें सत्त्व न हो वह कनिष्ठ और उसको रेणुक ककुप्र कहते हैं ।

अपिच ।

केचिद्वदन्तिककुप्रसद्योजातस्यदन्तिन ।

वर्चश्चश्यामपीताभंतदतीवविरेचनम् ॥

अ - कोई मुरदेसिंगको तत्कालके उत्पन्न हुवे हाथीके घड़ेकी बिष्टा कहतेहैं । यह श्याम और पीली प्रभावला होताहै तथा अत्यन्त दस्तावर है ।

शराजीरकनामानि ।

कम्बुजीर शृङ्गणजीरस्तथाशृङ्गणमृदापिच ।

अर्थ-कम्बुजीर, शृङ्गणजीर, शृङ्गणमृत् [६] ।

सम्कृतभाषामें शखजीरक ।

हिन्दीभाषामें सगनगहत ।

मराठीभाषामें शखजिरी ।

गुजगतीभाषामें शखजीरु ।

इंग्रेजीभाषामें सोपस्टोन् । Soapstone

लैटिनभाषामें सिलिकेट ऑफ मेगनेशिया । Silicate of Magnesia

फारसीभाषामें सगे जराहत ।

अरबीभाषामें इजरुल पराबी ।

भक्ष्य गुणा ।

शंखाभिधजीरकतुव्रणदाहरुचजयेत् ।

प्रलेपाच्छोफवीसर्पकक्षारक्तविकारजित् ॥

अर्थ-शंखजीरक (सगरजगहत)-व्रण और दाहरोगको दूर करेहै । इसका लेप करनेसे मूजन, विसर्प, कक्षा और रक्तविकार दूर होताहै ।

स्फटीनामानि ।

स्फटीचम्फटिकाप्रोक्ताश्वेताशुभ्राचरगदा ॥

दृढरंगारगदृढादृढारगापिकथ्यते ॥

अर्थ—स्फटी, स्फटिका, श्वेता, शुभ्रा, रगदा, ढहरगा, रगदडा, दडा, रंगा
(स्फटिकारि, स्फटिकारिका, रगाङ्गा, मुरगा, गतरगा)

स० स्फटिकारि ।

तै० फाटिके ।

हिं० फटकिरी ।

अ० विट्टील हाईट आलम् ।

व० फटफिरी ।

लै० हैडार्जिर्मसल फ्युरेष्टम् ।

म० तुर्दी, फटकी ।

फा० जाकसफेते ।

क० फटकी ।

अ० जाज कल्कतार ।

अस्य गुणा ।

स्फाटिकातुकपायोष्णावातपित्तकफव्रणान् ।

निहन्तिश्वित्रवीसर्पान्योनिसङ्कोचकारिणी॥(भा०प्र०)

अर्थ—फटकिरी—कपेली, गरम तथा वात, पित्त, कफ, व्रण, श्वित्रकुष्ठ और विसर्पको दूर करे है तथा योनिको सङ्कुचित करनेवाली है ।

अन्यच्च ।

स्फाटिकीतुवरास्त्रिग्धाकट्वीरगप्रदामता । रसवन्धकरीकुष्ठ
व्रणप्रदरनाशिनी॥विपदोपमूत्रकृच्छ्रवान्तिशोषत्रिदोषक-
म् । प्रमेहचनाशयत्येवपूर्वाचार्यैर्निवेदितम्॥ (रत्नाकर)

अर्थ—फटकिरी—कपेली, त्रिग्ध, चरपरी, रगमद, रसवन्धक तथा कुष्ठ, व्रण, प्रदर, विपविकार, मूत्रकृच्छ्र, वमन, शोष, त्रिदोष और प्रमेहको हरनेवाली है ।

चुम्बकनामानिगुणाश्च ।

चुम्बक कान्तपापाणोऽयस्कान्तोर्लोहकर्पक ।

चुम्बकोलेखन शीतोमेदोविपगरापह ॥

अर्थ—चुम्बक, कान्तपापाण, अयस्कान्त और लोहकर्पक । चुम्बक-
त्थर—लेखन, शीतल तथा भेद, विष और उपविषको दूर करे है ।

राजावर्तगुणा ।

राजावर्तकटुस्तिक्तःशिशिरःपित्तनाशनः ।

राजावर्तःप्रमेहघ्नश्छर्दिहिकानिवारण ॥

अर्थ—राजावर्त—(रेवंग)—कटु, तिक्त, शीतल, पित्तनाशक तथा
वमन और हिचकीको दूर करे है ।

अर्थ-ककुष्ठ हिमालय पर्वतके शिखरोंमें उत्पन्न होताहै, तथा एक नलि-
कारूप और दूसरा रेणुक कहा जाताहै । इनमें पीला, भारी, चिकना पेसा
श्रेष्ठ ककुष्ठ होताहै और काला, पीला, हल्का और जिममें सत्त्व न हो वह
कनिष्ठ और उमको रेणुक ककुष्ठ कहते हैं ।

अपिच ।

केचिद्वदन्तिककुष्ठसद्योजातस्यदन्तिनः ।

वर्चश्चश्यामपीताभतदतीवविरेचनम् ॥

अ -कोई मुरदेसिंगको तत्कालके उत्पन्न हुवे हाथीके बच्चेकी विष्टा
कहतेहैं । यह श्याम और पीली प्रभावाला होताहै तथा अत्यन्त
दस्तावर है ।

शराजीरकनामानि ।

कम्बुजीर क्षुब्धजीरस्तथाक्षुब्धमृदापिच ।

अर्थ-कम्बुजीर, क्षुब्धजीर, क्षुब्धमृत् [६] ।

संस्कृतभाषामें शराजीरक ।

हिन्दीभाषामें सगदगाहत ।

मराठीभाषामें शराजिर्ग ।

गुजरातीभाषामें शराजीरु ।

इंग्रेजीभाषामें सोपस्टोन् । Soapstone

लैटिनभाषामें सिलिकेट ऑफ मैग्नेशिया । Silicate of Magnesia

फारसीभाषामें सगे जराहत ।

अरबीभाषामें हजरुल एगवी ।

अस्य गुणाः ।

शंखाभिर्धन्वीरकतुव्रणदाहरुचजयेत् ।

प्रलेपाच्छोफवीसर्पकक्षारक्तविकारजित् ॥

अर्थ-शंखजीरक (सगरजगाहत)-व्रण और दाहरोगको दूर करेहै ।
इसका लेप करनेसे सूजन, विसर्प, कक्षा और रक्तविकार दूर होताहै ।

स्फटीनामानि ।

स्फटीचस्फटिकाप्रोक्ताश्वेताशुभ्राचरंगदा ॥

दृढरंगारंगदृढादृढारंगापिकथ्यते ॥

अर्थ-स्फटी, स्फटिका, श्वेता, शुभ्रा, रगदा, दृढरगा, रगदृढा, दृढा, रगा
(स्फटिकारि, स्फटिकारिका, रगाङ्गा, मुरगा, गतरगा)

स० स्फटिकारि ।

हि० फटकिरी ।

व० फटफिरी ।

म० तुर्दी, फटकी ।

क० फटकी ।

तै० फाटिके ।

अ० विट्नील हार्ड आलम् ।

लै० हैडार्जिरमसल फ्युरेष्टम् ।

फा० जाकसफेते ।

अ० जाज कल्कतार ।

अस्य गुणा ।

स्फाटिकातुकपायोष्णावातपित्तकफघ्नान् ।

निहन्तिश्वित्रवीसर्पान्योनिसङ्कोचकारिणी॥(भा०प्र०)

अर्थ-फटकिरी-कपेली, गरम तथा वात, पित्त, कफ, घ्नण, श्वित्रकुष्ठ
और विसर्पको दूर करे है तथा योनिको सकुचित करनेवाली है ।

अन्यच्च ।

स्फाटिकीतुवरास्त्रिग्धाकट्टीरंगप्रदामता । रसबन्धकरीकुष्ठ
घ्नणप्रदरनाशिनी॥विषदोषमूत्रकृच्छ्रवान्तिशोषत्रिदोषक-
म् । प्रमेहंचनाशयत्येवपूर्वाचार्यैर्निवेदितम् ॥ (रत्नाकर)

अर्थ-फटकिरी-कपेली, त्रिग्ध, चरपरी, रंगप्रद, रसबन्धक तथा कुष्ठ,
घ्नण, प्रदर, विषविकार, मूत्रकृच्छ्र, वमन, शोष, त्रिदोष और प्रमेहरोगको
हरनेवाली है ।

चुम्बकनामानिगुणाश्च ।

चुम्बक.कान्तपापाणोऽयस्कान्तोलौहकर्पक ।

चुम्बकोलेखन शीतोमेदोविषगरापह. ॥

अर्थ-चुम्बक, कान्तपापाण, अयस्कान्त और लौहकर्पक । चुम्बकप-
त्थर-लेखन, शीतल तथा भेद, विष और उपविषको दूर करे है ।

राजावर्तगुणा ।

राजावर्तःकटुस्तिक्त शिशिरपित्तनाशन ।

राजावर्तःप्रमेहघ्नश्छर्दिहिकानिवारण. ॥

अर्थ-राजावर्त-(रेवटी)-कटु, तिक्त, शीतल, पित्तनाशक तथा प्रमेह,
वमन और हिचकीको दूर करे है ।

सौराष्ट्रीनामानि ।

सौराष्ट्र्याढकीतुवरीपर्पटीकालिकासती ।

सुजातादेशभापायांगोपीचन्दनमुच्यते ॥

अर्थ-सौराष्ट्री, आढकी, तुवरी, पर्पटी, कालिका, सती, सुजाता, इमको गोपीचन्दन कहते हैं । (काशी, पार्वती, मसी, मृदाद्वया, मृत, मृत्सर्पा, आसङ्ग, मुराष्ट्रजा, मृत्तालक, काली, मृत्तिका, कसोदरा, मृत्तिका, मुरमृत्तिका, स्तुत्या, सौराष्ट्री)

संस्कृतभाषामें सौराष्ट्री ।

हिन्दीभाषामें गोपीचन्दन, सोरठकी मिट्टी ।

बंगभाषामें सौराष्ट्रेष्ट्रीय मुगन्धिमृत्तिकाविशेष ।

मराठीभाषामें गोपीचन्दन ।

गुजरातीभाषामें गोपीचन्दन ।

छेदिन्भाषामें सिलिकेट ऑफ एल्युमीना ।

सौराष्ट्रीमुणा ।

गोपिकाचन्दनशीतंदाहव्रणविपापहम् ।

विसर्पशमकलेपात्पतद्गर्भस्थिरीकरम् ॥

अर्थ-गोपीचन्दन शीतल, दाहनाशक, प्रणविनाशक, विषहाटक, विसर्प निवारक और इसका लेप कर्मेसे पतित गर्भ स्थिर हो जाता है ।

अपघ्न ।

गोपीचन्दनकदाहक्षतरक्तविकारनुत् ।

पित्तकफचप्रदग्नाशयेदितिकीर्तितम् ॥

अर्थ-गोपीचन्दन दाह, क्षत, छीघरविकार, पित्त, कफ और प्रदरोगका नाश करे है ।

वायुफानामानि ।

सिकतावालुकासिकाशीतलासूक्ष्मशर्करा ।

प्रवाहोत्थामहाश्लक्ष्णासूक्ष्मापानीयचूर्णका ॥

अर्थ-मिकता, वायुफा, तिका, शीतला, सूक्ष्मशर्करा, प्रवाहोत्था, महाश्लक्ष्णा, सूक्ष्मा, पानीयचूर्णका, (वालिका, प्रवाही, मदासूक्ष्मा, पानीयचूर्णिका, गेठा)

| | | | |
|-----|-----------------------|-----|-----------------|
| स० | वालुका । | तै० | विशिका । |
| हि० | वालु, रेत [ती, ता,] | इ० | सॅन्ड । Sand |
| व० | वाली । | रै० | सीलीका । Silica |
| म० | वालू रेती । | फा० | रेग । |
| गु० | रेती, वेष्ट । | अ० | रमल । |
| क० | हाड्डल । | | |

अस्यगुणा ।

सिकतामधुराशीतालेखनीतापनाशिनी ।

अग्निदग्धव्रणचैवव्रणोरक्षतनाशिनी ॥

श्रमकुष्ठहरीचास्यास्वेदनवातनाशनम् । (रत्नाकर)

अर्थ-वालु तथा रेत-मधुर, गीतल, लेखन, तापनाशक तथा अग्निदग्ध-व्रण, व्रण, उरक्षत, श्रम और कुष्ठका नाश करे है । इसका सेक वातनाशक है ।

कदमनामानि ।

पङ्कस्तुजलकल्कश्चुलुकःकर्दमोमल ।

चिकिलपलितोद्रापपललश्चनिपट्टर ॥

अर्थ-पङ्क, चुलुक, कर्दम, मल, चिकिल, पलित, द्राप, पलल, निपट्टर (जम्बाल, साद, दम)

कृष्णमृत्तिकानामानि ।

मृन्मृदामृत्तिका मृत्स्नाक्षेत्रजाकृष्णमृत्तिका ।

अर्थ-मृत्, मृदा, मृत्तिका, मृत्स्ना, क्षेत्रजा, कृष्णमृत्तिका ।

संस्कृतभाषामें पक, कर्दम, मृत् ।

हिन्दीभाषामें कौंच, गारा, मिट्टी, काली मिट्टी ।

वगभाषामें कादा माटी, कालमाटी ।

मराठीभाषामें चिखल, माती, गाग ।

गुजरातीभाषामें गारो, कालीमाटी ।

तैलिङ्गीभाषामें नोबुड ।

इंग्रेजीभाषामें मडब्लैक क्ले । Mud black Clay

लैटिन्भाषामें हैड्रस् सिलिकेट ऑफ़ आल्युमीनीयम् ।

Hydras silicate of aluminum

पक्वशुणा ।

पकोदाहासपित्तासशोथघ्नः शीतल सरः ।

अर्थ-कीच-दाह, रक्तापित्त, रुधिगविकार और सजनको दूर करे।
शीतल और सारक है)

अन्यथा ।

कर्दम शीतलोरुक्षोविपघ्नो वेदनापह ।

शोफदाहप्रशमनो व्रणशोधनरोपणः ॥

अर्थ-कीच-शीतल, रूखी, विपघ्न, वेदनानाशक, शोफनिवारक, दाहको शांत करनेवाली, व्रणशोधक और व्रणरोपक है ।

अपिच ।

कर्दम शीतल स्निग्धो विपपित्तास्रभग्नजित् ।

शोफदादक्षतहरो हित शोथनरोपणे ॥

अर्थ-कीच-शीतल, स्निग्ध तथा विप, रक्तापित्त, भग्न, सजन, दाह और घावको दूर करे है । व्रणशोधक और व्रणको भग्नेवाला है ।

कृष्णमृद्गुणा ।

कृष्णमृत्क्षतदाहान्प्रदग्धेष्मपित्तनुत ।

अर्थ-कालीमिट्टी-घाव-दाह, रुधिगविकार, प्रदग्ध और कफपित्त-नाशक है ।

अन्यथा ।

कृष्णमृत्स्नारक्तदोषप्रदग्धक्षतदाहहा ।

मूत्रकृच्छ्ररुफपित्तनाशयेदिति कीर्तिता ॥

अर्थ-कालीमिट्टी, रुधिगविकार, प्रदग्ध, क्षत, दाह, मूत्रकृच्छ्र, रुफ और पित्तको दूर करे है ।

अन्यथा ।

कृष्णमृत्क्षतदाहान्प्रदग्धेष्मपित्तनुत ।

प्रलेपाद्विनिहत्येपाशोथं भक्ष्यतमम्भवम् ॥

अर्थ-कालीमिट्टी-क्षत, दाह, रुधिगविकार, प्रदग्ध, कफ, पित्तको हर और इगला लेप करनेसे भित्तवर्मे उत्पन्न हुआ सजन दूर होती है ।

बोलनामानि ।

बोलंगन्धरसपिण्डनिर्लोहवार्बरसम् ।

सुगन्धनालकपौरंसगन्धसितविदुः ॥

अर्थ-बोल, गन्धरस, पिण्ड, निर्लोह, वर्बरस, सुगन्ध, नालक, पौर, रसगन्ध, सित, (रक्तापह, मुण्ड, सुरस, पिण्डक, विष, ववर, सौरभ, रस, रसगन्धक, महागन्ध, विश्व, शुभगन्धक, विश्वगन्ध, व्रणारि, प्राण, बोल, गोप, गोस, पिण्डगोस, शश, गोसशश, गान्धार, भसिवर्धन, गोपरस, बोलज, गोपक, पिण्डल, गोल)

संस्कृतभाषामें बोल ।

हिन्दीभाषामें बोल, हीराबोल, बीजाबोल ।

वगभाषामें गन्धरस, बोल, हिराबोल, खुनखारापी ।

मराठीभाषामें बोल ।

गुजरातीभाषामें हिराबोल ।

कर्णाटकीभाषामें बोल ।

तैलिङ्गीभाषामें वालिम, त्रिपोलम् ।

तामिलीभाषामें वेल्डिप्पोलम् ।

वम्० रक्त्या बोल ।

इंग्रेजीभाषामें मिर्हा । Myrrha

लैटिन्भाषामें बालासामोडेडिन् मिर्हा । Balsamodion myrrha

फारसीभाषामें सुर ।

अरबीभाषामें मुस्ताफ, मुरमकी ।

अस्य गुणा ।

रक्तबोलः कटुस्तिक्तस्तुवरोष्णश्चपाचनः । मेध्योऽग्निदीप-
को गर्भाशयस्य च विशोधनः ॥ सुगन्धिरक्तदोषघ्नः कफपि-
त्तत्रिदोषनुत् । प्रदराश्मारिमेहघ्नो योनिशूलज्वरप्रणुत् ॥
कुष्ठापस्माररक्तातीसारस्वेदनिवारण । ग्रहवाधां पौरुषत्व
नाशयेदिति कीर्तितम् ॥ (रत्नाकरे)

अर्थ-बोल-चरपरा, कडवा, कपेला, गरम, पाचक, मेघाजनक, अग्नि-
प्रदीपक, गर्भाशयशोधक, सुगन्धि तथा रुधिरदोष, कफ, पित्त, त्रिदोष,

प्रदग्, पयरी, ममेह, योनिगूल, ज्वर, कुष्ठ, अपस्मार, रक्तातिमार, पसीना, ग्रहवाधा और पुरुषताका नाश करे है ।

शिलाजतुनामानि ।

शिलाजत्वद्रिजतुचशैलनिर्यासइत्यपि ।

गेरेयमश्मजश्चापिगिरिजशैलधातुजम् ॥

अर्थ-शिलाजतु, अद्रिजतु, शैलनिर्यास, गेरेय, अश्मज, गिरिज, शैलधातुज, (अर्थ, शिलाज, अगज, शैल, शैलेय, शीतपुष्पक, शिलाव्याधि, अश्मोत्थ, अश्मलाक्षा, अश्मजतुक, जत्वश्मक)

स० शिलाजतु ।

हि० शिलाजीत ।

व० शिलाजतु ।

म० शिलाजीत ।

क० कडुवेचरु ।

इ० आसपेल्ट, जुझपिच ।

ह० आसपेल्ट पश्चाधिनम् ।

पिदुमेन जुडाईरम् ।

अस्यास्यतिलक्षण गुणाश्च ।

निदाघेघर्मसन्तप्ताधातुसाग्धराधगः । निर्यासवत्प्रमुञ्च-
न्तितच्छिलाजतुकीर्तितम् ॥ सौवर्णरजतंताम्रमायसतच्च-
तुर्विधम् । शिलाह्वकटुतिक्तोष्णकटुपाकंरसायनम् ॥ छेदि-
योगवहन्तिकफमेदोश्मशर्करा । मृत्रकृच्छ्रक्षयश्वासवा-
तास्त्राशांसिपाडुताम् ॥ अपस्मारंतथोन्मादशोथकुष्ठो-
दरकृमीन् । सौवर्णन्तुजपापुष्पनर्णभवतितद्रमात् ॥ मधुरं
कटुतिक्तन्तुशीतलंकटुपाकिच । राजतपाण्डुरशीतकटुकं
स्वादुपाकिच ॥ ताम्रंमयूरकण्ठाभंतीक्ष्णमुष्णञ्चजायते ।
लौहजटायुपक्षामतत्तिल्लवणभवेत् ॥ विपाकेकटुकंशीत
सर्वश्रेष्ठमुदाहृतम् ॥ (भा०प्र०)

अर्थ-उष्णकालमें सुखंकी किरणोंसे पर्वत तपित होकर पागुभोंके
मारको गोंदकी समान छोटवे हैं, उस मारको शिलाजीत कहते हैं, सौवर्ण,
रजत, ताम्र और आयस इन भेदोंसे शिलाजीत चार प्रकारका है । शिला-
जीत-बट, तिन, उष्ण, पत्रपाकी, ग्यापन, छेदक, योगवारी तथा वात,

मेद, पथरी, शर्करा, मूत्रकृच्छ्र, क्षय, श्वास, वातरक्त, ववासीर, पाण्डुरोग, अपस्मार, उन्माद, सृजन, कुष्ठ, उदररोग और कृमिरोगका नाश करे है । सौवर्ण (सुवर्णकी खानका) । शिलाजीत-जपाके फूलके समान लाल रंगका होता है, मधुरसयुक्त, कटुरसान्वित, तिक्तसयुक्त, शीतल और पचनेमें चरपरा है । राजत (रूपेकी खानका) । शिलाजीत-पाण्डुरंगका होता है । शीतल, कटु और पचनेमें स्वादिष्ट है । ताम्र (तावेकी खानका) शिलाजीत-मोगकी गरदनके रंगकेसा होता है । तीक्ष्ण और उष्ण है । लौह (लोहेकी खानका) । शिलाजीत-जटायुकी पखकी समान काले रंगका होता है । कटवा, लवणरसान्वित, विपाकमे चरपरा, शीतल और सवमें श्रेष्ठ है ।

अन्यच्च ।

मासेशुकेशुचौचैवशैलासूर्याशुतापिता । जतुप्रकाशस्व-
रमशिलाभ्य प्रसवन्तिहि॥शिलाजत्विति विख्यातं सर्वव्या-
धिविनाशनम् । त्रपवादीनान्तुलौहानां पण्णामन्यतमान्वयम् ।
जेयसुगन्धतच्चापि पृथ्वीनिप्रथितक्षितौ । लौहाद्भवतितद्य-
स्माच्छिलाजतुजतुप्रभम् । तस्यलौहस्यतद्दीर्घ्यरसञ्चापि
विभर्तितत् । त्रपुसीसायसादीनिप्रधानान्युत्तरोत्तरम् ॥
यथायोगप्रयुक्ताहिश्रेष्ठश्रेष्ठगुणाः स्मृताः । (सु०स०)

अर्थ-ज्येष्ठ आपाढके महीनेग पर्वत सूर्यकी किरणोंसे अत्यन्त तापित होकर लाखकी समान प्रकाशमान अपने रसोंको शिलाओंसे बहाते हैं, वह रस शिलाजीत नामसे विख्यात है यह सर्व व्याधिका नाश करनेवाला है, सीसा इत्यादि और लोहादिक उह धातुओंसे यह पृथक् है इसे सुगन्धवाला जानना । यह पृथ्वीमें उँ स्थानासे होता है जो लोहसे उत्पन्नहोता है वह लाखके रंगका है, वह उस लोहेका वीर्य और रसभी धारण करता है । राग, सीसा लोहादि खानजनित गुणोंम उत्तरोत्तर प्रधान है, वह श्रेष्ठ गुणवाले यथा-योग्य प्रयुक्त करने चाहिये ।

अथशिलाजतुलक्षणम् ।

गोमूत्रगन्धवत्कृष्णस्निग्धमृदुतथागुरु ।
तिक्तकपायशीतञ्चसर्वश्रेष्ठतदायसम् ॥

अर्थ-जिसमें गोमूत्रकी समान गंध आतीहो, रगकृष्णहो, चिकना, नरम, भारी, कड़वा, कषेण, और जीतल ऐसा शिलाजीत हीहकी खानसे उत्पन्न हुआ श्रेष्ठ जानना ।

शिलाजतुगुण ।

शैलजकटुकतित्तमेहघ्नश्चरसायनम् । उष्णमुन्मादशोफ-
घ्नक्षयकुष्ठाश्वमीहरम् ॥ शोफोदरापस्मारघ्नवस्तिरोगार्श-
नाशनम् । कण्डूअपाण्डुरोगअर्द्यर्दिवातकफजयेत
वलीपलितकामघ्नवासमूत्ररुजापहम् ॥

अर्थ-शिलाजीत-उष्णरा, कड़वा, प्रमेहनाशक, रसायन, गरम तथा
उन्माद, मृजन, क्षय, कोढ़, पथरी, जोर, उदर, अपस्मार, वस्तिरोग, यवा
सीर, कण्डू, पाण्डुरोग, वमन, वात, कफ, वलीपलित, रोंसी, श्वाग और-
मृयुरोगको दूर करेहै ।

अपिच ।

शिलाजकफवातघ्नतित्तोष्णक्षयरोगनुत ।

वह्नीक्षितभक्ष्यत्तल्लिगाकारमधूमकम् ॥

अर्थ-जो अग्निमें गरनेसे धुमरहित और लिगाकार सदा हो जावे वह
शिलानीत उत्तम और शुद्ध जानना । शिलाजीत-कफवातनाशक, कड़वा
गरम और क्षयरोगका नाशक है ।

अशुद्धशिलाजतुरोषा ।

अशुद्धंदाहमूर्च्छाश्रमपित्तास्रशोणितम् ।

शिलाजतुप्रकुरुतेमांथमग्नेश्वविड्ग्रहम् ॥ (रत्नाकर)

अर्थ-अशुद्ध शिलाजीत-दाह, मूर्च्छा, श्रम, रक्तपित्त, रुधिरविसार,
नाप्रिमाय और मलव्यवहारों करता है ।

इति शालिग्रामनिवण्डुभूषणे ध्यातव्यम् ॥ १ ॥

अथ रत्नोपरत्नवर्गः ।

अथ रत्नस्य निरुक्तिः ।

वनार्थिनोजना मवेगमन्तेऽस्मिन्नतीत्यत

ततोऽन्नमितिप्रोक्तंशब्दशास्त्रविशारदेः ॥ (भा०प०)

रत्नक्रीवेमणिःपुंसिस्त्रियामपिनिगद्यते ।

तत्तुपापाणभेदोऽस्तिमुक्तादिचतदुच्यते ॥ (कोष)

अर्थ—घनकी इच्छावाले प्राणी इन रत्नोंमें अतीव रमतेहैं इसीकारण शब्द शास्त्रोंके ज्ञाताओंने रत्न ऐसा नाम रक्खा है । रत्न और मणि यह दोनो चमकनेवाले जवाहरात और मोती आदिमें कहे जाते हैं ।

रत्नानांनिरूपणम् ।

वज्रविद्रुममौक्तिकमरकतवैदूर्यगोमेदक

माणिक्यहरिनीलपुष्पद्वयदौरत्नानिनाम्नानव ।

यान्यन्यान्यपिसन्तिकानिचिदिहत्रैलोक्यसीमिस्फुट

नाम्नातान्युपरत्नसञ्ज्ञकतमान्याहुःपरीक्षाकृतः । (नि २)

अर्थ—नवरत्न—हीरा १ मृगा २ मोती ३ मरकत ४ वैदूर्य ५ गोमेद ६ माणिक्य ७ नील ८ और पुष्पराग ९ इस प्रकार यह नौ हैं । और इस पृथ्वीपर इन्हीं रत्नाकी सदृश दूसरे रत्न होते हैं उनको उपरत्न ऐसा परीक्षक लोग कहते हैं ।

अन्यञ्च ।

मुक्ताफलहीरकचवैदूर्यपद्मरागकम् ।

पुष्परागचगोमेदनीलगारुत्मतंतथा ॥

प्रवाल्युक्तान्येतानिमहारत्नानिवैनव । (विष्णुधम्मोत्तरे)

अर्थ—मोती, हीरा, वैदूर्य, माणिक्य, पुष्कराज, गोमेद, नील, पद्मा और मृगा इन नवरत्नोंको महारत्न कहते हैं ।

रत्नगुणा ।

रत्नानिभक्षितानिस्थुर्मधुराणिसराणिच ।

चक्षुष्याणिचशीतानिविपद्मानिधृतानिच ॥

मङ्गल्यानिमनोज्ञानिग्रहदोषहराणिच ।

अर्थ—रत्न—मधुर, सारक, नेत्रोंको हितकारी, शीतल, विपदाशरु, क्षिप्र, मङ्गलकागक, मनोज्ञ और ग्रहदोषको दूर करे हैं ।

अन्यञ्च ।

मणयोवीर्यतःशीतामधुरास्तुवगरसात् ।

चक्षुष्यालेखनाश्चापिसारकाविषहारका ॥

अर्थ-माणि (ग्ल)-शीतवीर्य, मधुर, कपेली, नेत्रोंको दितकारी, लेखन, सारक और विषहारक है ।

हीरगनामानि ।

हीरकवज्रमणिगण्डकोणदृढगर्भकम् ।

अर्थ-हीरक, वज्र, मणि, पट्टकोण, दृढगर्भक (हीर, इर्धान्परिय, वज्रक, सूचीमुख, वगारक, ग्लमुख्य, वज्रपर्यायनाम, अभेद्य, दृढाद्ग, चन्द्र, मणिकर) ।

सरकृतभाषाम हीरक, वज्र ।

हिदीभाषाम हीर ।

वगभाषाम हिरे ।

मगदीभाषाम हिरा ।

गुजगतीभाषाम हिरो ।

कणाटकीभाषाम वज्र ।

तैलद्वीभाषाम वज्र ।

इमेजीभाषाम डाण्डमोण्ड । Diamond ।

ऐभिन्नाभाषाम पिभोरकावेन गम्भ । I : m h : A : m

पा० इस्माश ।

हीरगुणा ।

हीरकसारक शीत कपायोमधुरस्तथा ।

चक्षुष्योवान्तिकृत्पापालक्ष्मीनाशकरोधृत ॥

अर्थ-हीर-गाम्भ (रुद्ध २ दस्तावर) शीत, कपेय, मधुर, और नेत्रोंको दितकारी यमात्कारक है । इसको धारण करनेसे पाप और अलक्ष्मीका नाश होता है ।

हीरगभद्रस्तुत्या ।

सधैतरतुस्मृतोविप्रोलोहितक्षत्रियः स्मृत । पीतोपेश्योऽ-
मितशूद्रश्चतुर्वर्णात्मकश्च ॥ ग्मायनेमतोविप्रसर्पसिद्धि-
प्रदायक । क्षत्रियोऽप्याधिविष्वमीजगन्मृत्युहरः स्मृत ॥ वै-
श्वोधनप्रदः प्रोत्तरतथादेहस्यदादर्थकृत । शूद्रोनाशयति

व्याधीन्वयःस्तम्भं करोति च ॥ पुस्त्रीनपुसकानीहलक्षणीया-
निलक्षणे । सुवृत्ता. फलसम्पूर्णास्तेजोयुक्ता बृहत्तराः ॥ पु-
रुपास्ते समाख्याता रेखा बिन्दुविवर्जिता । रेखा बिन्दु समा-
युक्ता पडसास्ते स्त्रिय. स्मृता ॥ त्रिकोणाश्च सुदीर्घास्ते विज्ञे-
याश्च नपुसका । तेषु स्युः पुरुषाः श्रेष्ठारसवन्धनकारिणः ॥
स्त्रियः कुर्वन्ति कायस्य कान्तिस्त्रीणां सुखप्रदाः । नपुसका-
स्त्ववीर्याः स्युरकामाः सत्त्ववर्जिताः ॥ स्त्रियः स्त्रीभ्यः प्र-
दातव्याः क्लीवक्लीवे प्रयोजयेत् । सर्वेभ्यः सर्वदा देयाः पुरुषा-
वीर्यवर्द्धना ॥ (भा० प्र०)

अर्थ-हीरा-जातिके भेदसे चार प्रकारका है, जैसे ब्राह्मण, क्षत्रिय,
वैश्य, और शूद्र, तथा ब्राह्मण हीरा (सफेद, हीरा) रसायनकार्यमें
उत्तम और सर्वसिद्धिदायक है । क्षत्रिय हीरा (लालरंगका) यह सर्व व्याधि,
जरा और मृत्युनाशक है । वैश्य हीरा, (पीले रंगका) यह, धनप्रदायक,
और शरीरको दृढ करनेवाला है । और शूद्र हीरा, (काले रंगका) होता है,
यह व्याधिनाशक और अवस्थास्थापक है । हीरा-स्त्री, पुरुष और नपुसक,
इन भेदसे तीन प्रकारका है, उत्तम गोलाकार, चमकदार, बड़ा रेखा और-
बिन्दु करके हीन हीरेको पुरुषजातिका जानना । रेखा और बिन्दुकरके युक्त
तथा, छे कोनेवाले हीरेको स्त्रीजातिका हीरा जानना । त्रिकोणयुक्त और
सुदीर्घ हीरेको नपुसकजातिका जानना । इनमें पुरुषजातिका हीरा-रस(पारा)
को बाँधनेवाला और श्रेष्ठ है । स्त्रीजातिका हीरा-कान्तिजनक और
स्त्रियोंको सुखकारक है । नपुसकजातिका हीरा वीर्यविहीन, कामवर्जित
और सत्त्वशून्य जानना । स्त्रीजातिका हीरा स्त्रियोंके, नपुसक जातिका
नपुसकोंके और पुरुषजातिका हीरा सर्व प्राणियोंके लिये उपयोगी और
वीर्यवर्द्धक है ।

हीरस्य गुणाः ।

वज्रसमीरकपित्तगदाश्च हन्याद्वज्रोपमञ्चकुरुतेव पुरुत्तमश्चि ।
शोषक्षयभ्रमभगन्दरमेहमेदपाण्डूदरश्च यथुहारि च पडसाढचम् ।

अर्थ-हीरा-वातपित्तकफरोगनाशक, शरीरको वज्रके समान दृढ करने-
वाला, एक्ष्मीवर्द्धक, पडसयुक्त तथा शोष, क्षय, भ्रम, भगन्दर, प्रमेह,
मेद, पाण्डु, उदररोग और सृजनको दूर करनेवाला है ।

अन्यत्र ।

वज्ररसायनचैवपद्मसैश्वर्युतसदा । देहदाढ्यकरपुष्टिरलवी-
र्यविवर्द्धनम् ॥ सुवर्णसुखकृद्वातकुष्ठपित्तक्षयभ्रमान् ।
कफवातचशोफचमेदमेहभगन्दरान् । पाण्डुगेगोदरमेद
नाशयेदितिकीर्तितम् ॥

अर्थ-हीरा-रसायन, पद्मसयुक्त, देहको दृढकरनेवाला, पुष्टि, वज्र और
वीर्यवर्द्धक है, वर्णको सुंदर करनेवाला, सुखदायक तथा वातकुष्ठ, पित्त,
क्षय भ्रम, कफ, वात, शोफ, मद्, प्रमेह, भगन्दर, पाण्डुरोग, उदर और
मेदनाशक है ।

अशुद्धीयदोषा ।

अशुद्धकुरुतेवज्रकुष्ठपार्थव्यथांतथा । पाण्डुतापगुरुत्न-
तस्मात्सशोध्यमारयेत् ॥ पीडाविधत्तेविविधानराणांकुष्ठ-
क्षयपाण्डुगदंचदुष्टम् । हृत्पार्थपीडांकुस्तेतिदु गदामशु-
द्धवज्रगुरुमात्महत्यजेत् ॥ (रत्ना०)

अर्थ-अशोषित हीरा-कोठ, पार्थगुल, पाण्डु, शरीरमें ताप और भारी-
पनरो को है । तथा अनेक प्रकारकी पीडा, कुष्ठ, क्षय, पाण्डुगो, हृत्प
और पमलीमें गुल तथा आत्माका नाश करे है ।

माणिक्यनामानि ।

पद्मरागोलोहितकोमाणिक्यशोणरत्नकम् ।

अर्थ-पद्मराग, लोहित, माणिक्य, शोणरत्नक, (रत्नराग, रविरत्नक,
शोणरत्न, तरणिरत्न, शृङ्गारी, रगमाणिक्य, तरुण, रत्ननामक, रागपुष्प,
रत्न, शोणोपल, गीगधिक, कुरुविन्द, कुरुविन्व, लोहित, कुरुविन्दक,
लक्ष्मीपुष्प, अरुणोपल) ।

ग० पद्मराग, माणिक्य ।

दि० मानिक, रत्न ।

व० माणिक ।

म० माणिक ।

शु० माम्पन, पूर्वा ।

र० माणिक ।

तै० माणिक्य ।

इ० रुबी । Ruby

है० रुबिनम् । Rubina

पा० रत्नपद्मजाली ।

अ० रत्न ।

माणिक्यगुणा ।

माणिक्यलेखनं शीतल कपेला मधुर सारक ।

चक्षुष्यमंगलदाहदुष्टग्रहविपापहम् ॥

अर्थ—माणिक—लेखन, शीतल, कपेला, मधुर, सारक, नेत्रोंको हितकारी मंगलकारक तथा दाह, दुष्टग्रह और विपविनाशक है ।

माणिक्यभेदवणा ।

सिंहलेतुभवेद्रक्तपद्मरागमनुत्तमम् । पीतकाणपुरोद्भूतकुरुविन्दमिति स्मृतम् ॥ अशोकपल्लवच्छायमिदं सौगन्धिकविदुः । तुम्बुरुच्छाययानीलनीलगन्धिप्रकीर्तितम् ॥ उत्तमसिंहलोद्भूतं निकृष्टं तुम्बुरुद्भवम् । मध्यममध्यमज्ञेयमाणिक्यक्षेत्रभेदतः ॥

अर्थ—सिंहल देशमें लालरगका पद्मराग नामवाला रत्न उत्पन्न होता है यह सर्वमें श्रेष्ठ जानना । कानपुर नामवाले देशमें कुरुविन्द नामवाला माणिक उत्पन्न होता है यह पीला और मध्यम जानना । और अशोक वृक्षके पल्लवकी सदृश रगके सौगन्धिक नामवाले माणिक्यको मध्यम जानना । तुम्बुरु देशमें उत्पन्न होनेवाले नीले रगके माणिकको नीलगन्धि माणिक कहते हैं यह अत्यन्त निकृष्ट है अर्थात् सिंहल देशमें उत्पन्न होनेवाला माणिक अत्युत्तम, तुम्बुरु देशमें उत्पन्न होनेवाला अत्यन्त निकृष्ट और अन्य देशमें उत्पन्न होनेवाले सर्व मध्यम जानने ।

बहुमूर्त्यमाणिक्यगुणा ।

वन्धूकगुञ्जाशकलेन्द्रगोपाजपासुमास्रक्समवर्णशोभाः ।

भ्राजिष्णवोदाडिमबीजवर्णास्तथापरोर्किंशुकपुष्पभासः ॥

सिन्दूरपद्मोत्पलकुकुमानालाक्षारसस्यापिसमानवर्णाः ।

चकोरपुष्कोकिलसारसानानेत्रावभासश्च भवन्ति केचित् ॥

अर्थ—वन्धूक पुष्पकी समान, गुञ्जाकी, इन्द्रगोप कीडेकी और जपाके फूलकी समान वर्णवाला और शोभासयुक्त तथा चमकदार, अनारके बीजकी सदृश रगवाला माणिक होता है । और कोई कहते हैं देखके फूटकी समान मधायुक्त, सिन्दूरकी सदृश, लाल कमलकी समान, कुकुमकी समान,

लासकी समान तथा चक्रोर, कोमिला और सारस इनके नेत्रोंकी चालिकी समान वर्णवाले माणिक कचिह होते हैं ।

अन्यथा ।

कचिचुस्फाटिकोत्थानादेशेतुवरसज्जके । सधर्माण प्रजा-
यन्तेस्वलपमृल्यादितेस्मृता ॥ वर्णानुयायिनस्तेपारं-
देशेतथापरे । यज्ञायन्तेतुतेकेचिन्मौल्यलेशमवाप्नुयु ॥
शोभाद्वितयवन्तोयेमणयः शतिकारका । उभयत्रपदयेपा
तेनचस्यात्पराभव ॥

अर्थ-कहीं तुवर देशमें स्फटिक मणिका माणिक बना लेते हैं यह स्वल्प मृल्यका होता है । रत्नदेशमें उन्हींके रंगकी समान दूसरा बनाते हैं यह उसमेंभी कम कीमतके होते हैं उह मणियें शानिकारक हैं । जो जिनके दोनों ओर पड़ हैं उन माणिकोंसे दार होती है ।

अथ तोल ।

गुञ्जाफलप्रमाणस्तुदशमतिगुञ्जकान्त । पद्मगगन्तुल्य-
तियथाप्रवमहागुण ॥ विम्बीफलसमाकारेपद्मसुदशतोल-
कः । पद्मगगन्तुल्यतियथोत्तरमहागुण ॥ अतः परप्रमा-
णेनमानेनचलक्ष्यते ।

अर्थ-तोल-एक गुञ्जामे लेकर १७ गुञ्जा प्रमाणतक पद्मगगमणि तुलती है-यह बड़े गुणावरके युक्त होती है । पद्मगगमणि निम्नी २ तोलमें अधिक होगी उत्तरी २ ही उसकी कीमतभी अधिक होगी । जिसका पद्मकी समान आकार है और ६-८-१०-तोलकी तोलमें है उसकी कीमत यथाक्रममें अधिक जाननी । हमारे उपरान्त प्रमाणसे मात्तम होता है ।

अथ गुन्यम् ।

पङ्क्तिशानिसहस्राण्येकमणः पलप्रमाणम् । कर्पत्रयस्यत्रि-
तिरुपरिष्ठात्पद्मगगम् ॥ अर्द्धपलस्यद्वादशकर्पस्यैवपद-
सहस्राणि । यज्ञाष्टमामिकमिततस्यसद्वन्त्रयमौल्यम् ॥
मापचतुष्टययत्स्यात्तस्यदशशतमौल्यम् ॥ मापद्वयमितो

यस्तुपद्मरागः सुनिर्मलः । तस्यपचशतं मौल्यरौप्यं कर्पस्य
चेरितम् ॥ मापकैकमितोयस्तुपद्मरागो गुणान्वितः । शतैक-
समितं वाच्यं मौल्यतस्य विचक्षणैः ॥ अतो न्यूनप्रमाणास्तु
पद्मरागा गुणोत्तराः ॥ स्वर्णाद्विगुणमौल्येन मूल्यते पांप्रक-
ल्पयेत् । व्रणे मूल्यचार्द्धतेजोहीनस्य मूल्यमष्टांशः । अल्प-
गुणो बहुदोषो मूल्यनाप्नोति विशांशम् ॥

अर्थ—जो माणिक तोलमें ४ तोलेभर हो उसकी कीमत २६०००, रुपये हैं । और जो माणिक ३ तोलेभर हो उसकी कीमत २००००, रुपये हैं । जो माणिक तोलमें दो तोलेभर हो उसकी कीमत १२०००, रुपये हैं । और जो तोलमें एक तोलाभर हो उसकी कीमत ६०००, रुपये हैं । और जो तोलमें आठ मासे हो उसकी कीमत ३०००, रुपये हैं और जो तोलमें चार मासेभर हो उसकी कीमत १०००, रुपये जानने जो पद्मराग तोलमें दो मासेका हो और निर्मल हो उसका मूल्य, ५००, रुपये जानने । जो पद्मराग तोलमें एक मासेका है और गुणसयुक्त है उसका मूल्य १००, जानने । और जो तोलमें इससे भी कम है तथा गुणोंमें श्रेष्ठ है उसका मूल्य सुवर्णसे द्वागुना जानना और जो उसमें व्रण हो तो आधे मूल्यका जानना । और हीनतेजका हो तो कीमत आठवें भाग जाननी । जिसमें अल्पगुण और बहुत दोष हों तो उसकी कीमत बीसव, भाग भी नहीं ।

रत्नपरीक्षा ।

वालार्ककरसंस्पर्शाद्य शिखालोहितावमेत् । रजयेदाश्रय
वापिसमहागुण उच्यते । दुग्धेशतगुणोक्षितोरजयेद्यः समतत ।
वमेच्छिखालोहितावापद्मरागः स उत्तमः । अन्धकारे म-
हावोरेयो न्यस्तः सन्महामणिः ॥ प्रकाशयति सूर्याभ स-
श्रेष्ठ पद्मरागक । पद्मकोशेषु यो न्यस्तः प्रकाशयति तत्क्षणा-
त् ॥ पद्मरागवरो ह्येव देवानामपि दुर्लभः । सर्वारिष्टप्रशम-
नः सर्वसम्पत्तिदायकः ॥ वालार्काभिमुखकृत्वा दर्पणे धारये-

न्मणिम् । तत्रकान्तिविभागेनच्छायाभागंविनिर्दिशेत् ॥ अ-
प्रणश्यतिसदेहेशिलायांपरिचर्पयेत् । घृष्टोयोत्यन्तशोभा-
वान्परिमाणनमुञ्चति ॥ सज्ञेयोऽशुद्धजातीयोज्ञेयाश्चान्ये
विजातयः । अत्यन्तलोहितोयश्चपद्मगगःस उच्यते ॥

अर्थ-जो प्रातःकालके सूर्यकी किरणोंके स्पर्श करतेही लाल कान्तिको
त्याग देता है और जो अपने आश्रितको प्रसन्न करे वह पद्मरागरत्न महा
गुणवाला है । जो अपनेसे साँगुने दूधमें पटा हुआभी चारों ओरसे कान्ति
प्रगट करता है और जो लाल रंग की कान्तिको पैन्गवे है वह पद्मरागरत्न
अत्यन्त उत्तम है । महागौर अवकारमें रक्खा हुआ यह महागत्न पादे
सूर्यकी समान प्रकाश करे तो उत्तम है । जो माणिक मुद्रितकमलमें
रखनेसे तत्काल कमल को प्रकलित करते वह उत्तम पद्मगगगत्न देवता-
आकोभी दुर्लभ है सम्पूर्ण अरिष्टोंको शान्ति करनेवाला और सम्पूर्ण सम्प-
त्तियोंको देनेवाला है । प्रातःकालके सूर्यके गन्मुख दर्पणमें इस मणिको
धरे उसके कान्तिविभागसे छायाभागको जाने मनेइको दूर करनेके लिये
इसको पत्यपर चिमे जो घिगनेमें अत्यन्त शोभावाला हो और परिमाणको
त्याग न करे तो शुद्ध पद्मगगमणि जाने और दूसरे विनाशाय पद्मगग है
जो अत्यन्त लाल है वही पद्मगग मणि है ।

माणिरयगुणा ।

नपत्नमध्येपिकृताधिवासप्रमादवृत्तावपिवर्त्तमानम् ।

नपद्मगगस्यमहागुणस्यभर्तारमापत्समुपेतिकाचित

दोषोपसर्गप्रभवाश्रयेतेनोपद्रवास्तसमभिद्रवन्ति ।

गुणे सुमुख्येऽसकलरूपेतोय पद्मगगप्रयतोऽभिर्भर्त्ति ॥

अर्थ-शत्रुओंके भीउमें रहने और प्रमाद करनेपरभी इस महागुणवाली
पद्मगगमणिके प्रभावसे इसका धारण करनेवाला कभी आपत्तिको प्राप्त
नहीं होता नितने दोष है उनमेंसे कोई भी इसको प्राप्त नहीं होता जो पद्मगग
मणिको धारण करता है वह सम्पूर्ण गुणोंसे संपुर्ण हो जाता है ।

अपद्य ।

माणिरयमधुरस्निग्धवातप्रज्वामायनम् ।

कफभ्रद्रीपनंबृष्यभूतप्रश्नयार्त्तिनुत्त ॥

अर्थ-माणिक्य-मधुर, स्निग्ध, वातविनाशक, रसायन, कफनाशक, दीपन, वीर्यवर्द्धक, भूत और क्षयरोगको दूर करे है ।

अपिच ।

माणिक्यमधुरस्निग्धवातपित्तप्रणाशनम् ।

रत्नप्रयोगप्रज्ञानारसायनकरपरम् ॥

अर्थ-माणिक-मधुर, स्निग्ध, वातपित्तनाशक, रत्नके प्रयोगमें श्रेष्ठ और रसायन है ।

अप्यच्च ।

माणिक्यमधुरस्निग्धवातघ्नचरसायनम् ।

पित्तव्रणनाशयतिपूर्वरितिनिवेदितम् ।

अर्थ-माणिक-मधुर, स्निग्ध, वातनाशक, रसायन, पित्तनाशक और व्रणको दूर करे है ।

मौक्तिकनामानि ।

मौक्तिकशुक्तिजमुक्ताशौक्तिकेयशशिप्रभम् ।

अम्भ-सारमिन्दुरत्नलक्ष्मीमुक्ताफलंहिमम् ॥

अर्थ-मौक्तिक, शुक्तिज, मुक्ता, शौक्तिकेय, शशिप्रभ, अम्भ-सार, इन्दुरत्न, लक्ष्मी, मुक्ताफल, हिम (शुक्तिबीज, क्षरी, कुवल, सौम्य, तार, तारा, मौक्तिक, तौक्तिक, शीतल, नीरज, नक्षत्र, अम्भ-सार, विन्दुफल, मुक्तिका, शौक्तिकेय, शुक्तिमणि, स्वच्छ, हिमवल, सुधाशुभ, सुधाशुरत्न, लक्ष, शशिमय, हैमवत, भूरुह, शौक्तिक) ।

स० मुक्ता ।

हि० मोती

व० मुक्ता ।

म० मोती ।

शु० मोती ।

क० मौक्तिक ।

तै० मोत्यालु ।

इ० पर्ल । Pearl

लै० मागारिटा । Margaurita

फा० मखारिद ।

अ० लोले ।

मौक्तिगुणा ।

मुक्ताकपायास्वाद्धीचवलपुष्टिप्रदायिनी ।

वृष्यानेत्रहिताराजयक्ष्मघ्नीविषनाशिनी ॥

स्त्रीणांकान्तिरतिकरीधारणाद्ब्रह्मपापनुत् । (आ०स०)

अर्थ-मोती-कपेला, स्वादिष्ठ, चलयदंष्ट्र, पुष्टिकारक, वीषवर्द्धक, नेत्रोको हितकारी तथा रानयदमा और विषविनाशक है । इसको धारण करनेमें-म्रियाकी कान्ति और रति नष्टती है तथा मृदु और पापका नाश होता है ।

अथश ।

मौक्तिकसुमधुरमुशीतलट्टिरेगशमनविपापहम । राजय-
क्ष्मपणिकोपनाशनक्षीणवीर्य्यवलपुष्टिवर्द्धनम् ॥ कफपित्त-
क्षयव्यसिकासश्चामाग्निमात्रजित । पुष्टिद्वृष्यमायुष्यदा-
हघ्नमौक्तिकमतम् । मुक्तानाहारविधृतिर्दाहपित्तविनाशि-
नी । कान्तिहर्षनेत्रसुखददातीतिप्रकीर्तितम् ॥ (निर)

अर्थ-मोती-मधुर, शीतल, हाँटिंगेको मृदु करनेवाला, विषविनाशक, राजयक्ष्माको हरनेवाला, क्षीणरीत्यवाक्को घट और पुष्टि बनवाता है । मोती-कफ, पित्त, शय, रागी, श्वाग, मन्दात्रि और दाहको दूर करे, पुष्टिकारक, वीर्य्यवर्द्धक और आयुवर्द्धक । मोतिपाँका मृदु धारण करनेसे-दाह और पित्त मृदु होता है, कान्तिजनन इस यन्त्रा है और नेत्राम सुख होता है ।

मौक्तिकोत्पत्ति ।

शुक्ति शखोगज क्रोड फणीमत्स्यश्चन्दुर ।

वेणुश्चाष्टासमाख्याता भुजैर्मौक्तिकयोनय ॥

अर्थ-पडित्तोने गोप शरा, दार्या, मृगर, ताँप, मल्लरी, भेड़क और यात यह आठ मोतीके उत्पन्न होनेके स्थान कहे हैं ।

गामौक्तिक ।

यदन्तावलकुम्भमम्भवमद पीतारुणमदकरु ।

धात्रीदघ्नतयात्रवमयमरुम्योजकुम्भोद्वयम् ॥

अर्थ-गजमोती-काम्पोजदेशसे घटवान् हाथिपाँके गदम्यनके निश्च किंचित् लाल और पीले रंगका मोती उत्पन्न होता है इसको ग्री, पागल परती है और यह अणम रत्न है ।

कषाहमौक्तिक ।

एकारुमसुगेननिष्ठुहृतयाय राननंगाहने

तस्यानादिवराहवंशजनुप.कोलस्यमूर्ध्निरथितम् ।
ककोलाकृतिमिन्दुवत्सधवलंदैवादवाप्नोतितत्
यस्तधारयतेभवेत्सनिधिभिर्मर्त्योर्धनाधीशवत् ॥

अर्थ—वराहमोती—आदि वराह अवतारके वशका जो मूअर इकला सुखसहित निस्पृह वनमें विहार करता है उस मूअरके मस्तकमें मोती होताहै, वह मोती ककोलकी समान आकृतिवाला, चन्द्रमाकी समान वल होता है, यह मोती प्रारब्धके ही वशसे प्राप्तहोताहै । इस मोतीके मिलनेसे दरिद्री वनायीश होजाते हैं ।

वेणुमौक्तिक ।

मुक्ताःसन्तिकुलाचलेषुकरकाकान्त्युद्भवावंशजाः ।
कर्कन्धूफलवन्धवोनिदधतेकठेषुशुद्धागनाः ॥

अर्थ—वशमोती—कुलाचल पर्वतपर उत्तमकान्तिवाले वास होतेहैं उन वासोंमें बेरकी समान मोती उत्पन्न होताहै उस मोतीको खिया कण्ठमें धारण करती हैं ।

मत्स्यमौक्तिक ।

प्रोष्ठीगर्भगतस्तुमौक्तिकमणिर्गजैःसमःपाटली-
पुष्पाभ.सनलक्ष्यतेभुविजनैरस्मिन्कलौपापिभिः ॥

अर्थ—मत्स्यमोती—मछलीके पेटमें होतेहैं यह मोती गजमोतीकी समान आकृतिवाले और पाटलके फूलकी समान रगवाले होतेहैं और यह मोती इस पृथ्वीपर पापीजनोंकी दृष्टि नहीं पडतेहैं ।

दंडुरमौक्तिक ।

यन्मेघोदरसम्भवतदवनीमप्राप्तमेवामरैर्व्योमस्थैरपनीयते
विनियतवर्षासुमुक्ताफलम् ॥ तिग्माशोरपिदुर्निरीक्ष्यमकृ-
शसौदामिनीसन्निभ देवानामपि दुर्लभनमनुजस्यैतस्य
प्राप्तिःपुनः ॥

अर्थ—वर्षाप्रतुमे जो मेडक मेघोदरसे उत्पन्न होते और पृथ्वीके ऊपर नहीं गिरते हैं उन मेडकोंके उद्गमे मोती उत्पन्न होतेहैं वह मोती पृथ्वीपर नहीं आते बीचमें देवता ग्रहण करलेते हैं वह मोती सूर्यके तेजसेभी अधिक

और विजलीकीसमान प्रभावाले होते हैं देवताआकोभी दुर्लभ हैं और मनुष्योंकी तो क्या बात है ।

शिवमौक्तिक ।

शिवस्याच्युतहारिणोजलनिर्घोषनाजा कम्बुका-
स्तेष्वत किलमौक्तिकंभवतिवैतच्छुक्रतारानिभम् ॥

कापोताण्डसमसुवृत्तमसकृच्छ्रीकसरूपलघु
स्निग्धस्पर्शकृतहितचनपुनर्मर्त्यस्तदासाधते ॥

अर्थ-पाचजन्य शय्यके वनके जो शाल समुद्रमें हैं उन शालोंमें शिव-
तया नक्षत्रका समान कान्तिवाले और कबूतरके भटेकी समान गोल मोती
उत्पन्न होते हैं वह मोती झलकदार, स्निग्ध, हल्के और लक्ष्मीजनक हैं तथा
वह एकबार मनुष्याको स्पर्श होनेपर फिर हाथ नहीं लगते हैं ।

शिवमौक्तिक ।

शेषस्यान्वयिनाफणामुफणिनायन्मौक्तिकजायते वृत्तनि-
र्मलमुज्ज्वलशगिरुचिश्यामच्छविश्रीकरम् ॥ ककोलाकृति
कोपिकांटिसुकृते प्राप्नोतिचेन्मानव सस्याद्वाजिगजाधि-
कानृपसमोजातोपिनीचेकुले ॥ आस्तेसन्ननिचेत्सपन्नगम-
णिस्तेयातुयानामग हतुरन्नमनेक्षतेइतरत कुर्यान्महा-
शांतिकम् ॥

अर्थ-मर्षजमौक्तिक-शेषक वनमें जो उत्पन्न हुये सर्व उन शालोंके फलोंमें
उत्पन्न होते हैं वह मोती गोल, निर्मल, उज्ज्वल, चन्द्रमार्गी समान श्याम
छविवाले और कबूतरकी समान आकृतिवाले होते हैं वह मोती किसी
करोट जन्मतक पुण्य करनेवाले मनुष्यको ही हाथ लगते हैं जिस मनुष्यको
यह मोती प्राप्त होते हैं उनके गज अभादिकर्षी शूद्र होती हैं और वह
नीचकुलताभी मनुष्य राजाके समान हो जाता है और उन मोतिपोंको
घरमें रखनेसे निशय नाशमवाया दूर होती है तथा महाशान्ति होती है ।

शिवमौक्तिक ।

श्वेतस्निग्धमतीवधुरतरस्यात्पारमीकोद्वचम् ।

रक्षकाञ्जनवर्णमरुगुनम्याद्वावर्मौक्तिकम् ।

शोणतूर्मजसभवविदुरतिस्रिग्धतथादोषजम्
चातुर्वर्ण्ययुतसुलक्षणमिति श्लक्ष्णंकविश्रीकरम् ॥

अर्थ—पारसदेशके समुद्रमें उत्पन्न होनेवाला मोती—श्वेत, त्रिग्ध और अत्यन्त प्रकाशमान होता है अरवके समुद्रमें उत्पन्न होनेवाला मोती—रूखा और कुछ सुवर्णकी समान रंगवाला होता है । और अन्य समुद्रोंमें उत्पन्न होनेवाले मोती, लाल, त्रिग्ध, दोषजनक, चारवर्णयुक्त, सुलक्षण और चिकने तथा लक्ष्मीको करनेवाले होते हैं ।

शुक्तिमौक्तिक ।

पदस्वेतेष्वपिरुक्मिणीवजगतिख्यातिगतारुक्मिणी
नाम्नाशुक्तिमतीवचोत्तमगुणासिधौसमुज्जृम्भते ॥
तस्यागर्भभवन्तुकुंकुमनिभंजातीफलाकृत्तिनम्
स्थूलस्त्रिग्धमतीवनिर्मलतमंभूमौप्रकाशसदा ॥

अर्थ—जो सीप रूपेकी समान या सोनेकी समान दीप्तिमान अत्यन्त उत्तमगुणयुक्त समुद्रमें उत्पन्न होती है उस सीपमें कुंकुमकी समान प्रभायुक्त जायफलकी समान रूपवाले, स्थूल, त्रिग्ध, अत्यन्त निर्मल और सदैव प्रकाश करनेवाले मोती उत्पन्न होते हैं ।

मौक्तिकपरीक्षा ।

यद्विच्छायंमौक्तिकव्यगकायशुक्तिस्पर्शरक्ततांचापिधत्ते
मत्स्याक्षांकल्लक्षमुत्ताननिम्ननैतद्धार्यधीमतादोषदायि ॥
नक्षत्राभंवृत्तमत्यन्तमुक्तंस्निग्धस्थूलनिर्व्रणंनिर्मलच
न्यस्तधत्तेगौरवंयत्तुलायांनिर्माल्यतन्मौक्तिकसिद्धिदायि ॥

अर्थ—जो मोती कान्तिरहित, व्यगशरीरवाला, सीपीमें लगाहुआ, लाल, मछलीकी आखोंकी समान चिह्नित, रूखा और ऊँचा नीचा होता है ऐसे दोषदायक मोतीको, बुद्धिमान् पुरुष नहीं धारण करे । जो मोती नक्षत्रकी समान कान्तिवाला, गोल, त्रिग्ध, स्थूल, व्रणरहित, निर्मल और तोलमें भारी होता है ऐसा मोती अमूल्य और सिद्धिदायक है ।

प्रवालनामानि ।



सूंगेफोस्ट.

प्रवालांगारकमणिविंदुमोभोधिपल्लव ।

भौमरत्नचरत्नांगोरक्तागञ्जलतामणि ।

अर्थ-प्रवाल, अक्षरकमणि विंदुम, जम्भोधिपल्लव, भौमरत्न, रत्नाङ्ग, रक्ताङ्ग, लतामणि (रक्तवन्द, रक्तवन्द्य रत्नाङ्ग)

ससृत्तभाषाम प्रवाल ।

हिन्दीभाषाम मृगा ।

वगभाषाम पला, मुद्रा ।

मराठीभाषाम पोंवळी ।

गुजरातीभाषाम परवाण ।

कर्णाटकीभाषाम अरुणवत ।

तैलुगुभाषाम मरायफ, पागशन्द ।

इमितीभाषाम रेडकोरल । Red coral

छिन्तिभाषाम कंतेन्सिरुम् । Carian amber

पारसीभाषाम मिरजान, बेगभिरडा ।

भार्यभाषाम फेमगुमुद ।

प्रवालमुद्रा ।

वीर्यवृद्धौ तथा पुष्टौ यस्येच्छावर्तनेषु ।

विद्रुमं गोधिततेन मेरुनीयगुणप्रदम् ॥

अप-जि मनुष्याकी वीर्यवर्धो यशोवर्धो और शरीरवर्धो पुष्टि कर्नेकी

इच्छा वर्तती है उनको शुद्धप्रवाल (मूंगा) का सेवन करना चाहिये और यह प्रवाल अनेक गुणदायक है ।

अन्यच्च ।

विद्रुमसर्वदोषघ्नदीपनरुचिपुष्टिदम् ।

क्षयपाण्डुज्वरश्वासकासमेदोगदाञ्जयेत् ॥

अर्थ—मूंगा—सर्वदोषनाशक, दीपन, रुचिकारक, पुष्टिदायक तथा क्षय, पाण्डु, ज्वर, श्वास, खाँसी और मेदरोगको दूर करे है ।

अन्यच्च ।

**प्रवालमधुरसाम्लंकफपित्तार्तिदोषऽनुत् । वीर्यकान्तिकरं
स्त्रीणां धृतेर्मगलदायकम् ॥ क्षयपित्तास्रकासघ्नदीपनपाचन
लघु । विपभूतादिशमनविद्रुमनेत्ररोगहृत् ॥**

अर्थ—मूंगा—मधुर, अम्ल, कफनाशक, पित्तनिवारक, वीर्यवर्द्धक, कान्तिजनक, स्त्रियोंको धारण करनेसे मगलदायक, क्षयनाशक, रक्तपित्त-हारक, कासघ्न, दीपन, सारक, पाचक, हलका तथा ज्वर, विष, भूतादि-बाधा, उन्माद, पाण्डुरोग, प्रमेह और नेत्ररोगको दूर करे है ।

प्रवालमजरीगुणा ।

प्रवालमजरीसार्द्राकामपुष्टिकरीनृणाम् ।

सेवितासततदेहेवीर्यस्तम्भकरोति च ॥

अर्थ—मूगेकी कच्ची घेल—मनुष्योंके काम और पुष्टिको देनेवाली है और इसको निरंतर सेवन करनेसे वीर्यस्तम्भ होता है ।

प्रवालोत्पत्तिक्षणम् ।

वालार्ककिरणारक्तासागरसलिलोद्भवाचजलतापा ।

नत्यजतिनिजांरुचिर्निकपेष्टप्रापिसामृताजात्या ॥

**पक्वविवफलच्छायवृत्तायतमवक्रकम् । स्निग्धमव्रणकस्थूल
प्रवालसप्तधाशुभम् ॥ आररगजलाकान्तिवक्रसूक्ष्मसको-
टरम् । रुक्षकृष्णलघुश्चेत्प्रवालमशुभत्यजेत् ॥**

अर्थ—समुद्रमें घालसूर्यके किरणोंकी समान लाल मूगेकी घेल उत्पन्न होती है यह घेल कसोटीपं विसनेसेभी अपनी कान्ति और रंगको नहीं

ओडती तथा अमृतकी समान गुणकारी है । पक्की बन्दुगीके पलकी समान लाल, गोल, लम्बे, सगल, सिग्ध, यशरहित और स्थूल इन सात लक्षणोंसे युक्त भूगे उत्तम होते हैं । पीतलकी समान रंगवाले, पानीरी समान रंगवाले, बक्र (टेडे) सूक्ष्म, छिद्रयुक्त, मृदा, कृष्ण, इनके और श्वेत ऐसे भूगे त्याज्य हैं ।

मरकतनामानि ।

गारुत्मतमरकतमश्मगर्भहरिन्मणिः ।

अर्थ-गारुत्मत, मरकत, अश्मगर्भ, हरिन्मणि (गारुत्मक, गरुडाश्म, मरक्त, राजनील, गरुडाश्रित, रौहिण्य, सौवर्ण, गरुटोद्रीणि सुषरत्न, अश्मगर्भज, गरुलाहि, वापयोड, गारुड, गरुटोद्रीणि, वापयोड)

स० मरकत ।
हि० पद्मा ।
व० पाद्मा ।
म० पाचूरत्न ।
गु० लीङ्गपात्रु ।
क० पाचि पत्रे ।

तै० नीलम् ।
इ० इमरीन्ड । Isorol
रै० रमेरेष्टम् । Sinraclua
पा० तुमुगइप ।
अ० जमरद ।

मरकतगुणाः ।

पाचिकाशीतलारुच्यारमकालेमधु स्मृता ।

पुष्टिकृद्विषदावृष्याभूतत्राधाम्लपित्ताहा ॥

अर्थ-पत्रा-शीतल, रुचिकारक, मधुरसान्वित, पुष्टिकारक, विषनाशक, वीर्यवर्द्धक तथा मृतपापा और अम्लपित्तको दूर करे ।

गन्धः ।

ज्वरच्छर्दिविषश्वाससन्तापाम्नेश्वमाद्यनुत् ।

दुर्नामपाण्डुगोफप्रतार्क्ष्यमोजोविवर्द्धनम् ॥

अर्थ-पत्रा-ज्वर, पथन, विष, श्वास, सन्ताप, मन्दाग्नि, पशार्तिर, पाण्डुरोग और मृज्जनको दूर करे और ओजको वृद्धि करता है ।

मरकतमणिप्रतीकाः ।

स्वच्छगुरुमृगिगगात्रचमार्दयसमेतमव्यगमदुर्गम् । शृगा-
रीमरकतनिभृयाव । शर्करिलस्त्वमलिनम् । लघुहृत्तिका
न्तिकल्मषत्रासयुतविकृतागमरकतममरोपिनोपपुंजीन ।

अर्थ—स्वच्छ, भारी, स्निग्ध, मृदु, अव्यग और बहुरंगवाला ऐसा पन्ना श्रृङ्गारी मनुष्योंको धारण करना चाहिये । खरखरा, रूखा, मलिन, हलका कान्तिहीन, कल्पयुक्त, त्रासयुक्त और विकृतांग धारण नहीं करे ।

अपिच ।

हरिद्वर्णगुरुस्निग्धस्फुटरश्मिरयशुभम् । भासुरभासनंता-
क्ष्यगात्रसमंसुसमतम् ॥ कपिलकर्कशनीलपाण्डुकृष्णच
लाघवम् ॥ चिपटविकृतकृष्णरूक्षताक्ष्यनशस्यते । (रत्नाकर)

अर्थ—हरेरंगवाला—भारी, स्निग्ध, कान्तिवान्, तेजस्वी, दीप्तियुक्त और गरुडकी समान रूपवाला ऐसा पन्ना उत्तम है । कपिलवर्ण, खरखरा, नीला, पाण्डुवर्ण, कृष्ण, हलका, चिपट, विकृत और रूखा ऐसा पन्ना उत्तम नहीं होता ।

पुष्परागनामानि ।

पुष्परागोजीवरत्नपीतस्फटिकइत्यपि ।

अर्थ—पुष्पराग, जीवरत्न, पीतस्फटिक, (पुष्पराज, मञ्जुमणि, वाचस्प-
तिवल्लभ, पीत, पीतस्त, पीताम्बा, गुरुरत्न, पीतमणि)

| | | | |
|-----|--------------------|-----|--------------------|
| स० | पुष्पराग । | क० | पुष्पराग । |
| हि० | पुरराज । | तै० | पुष्परागम् । |
| व० | पुष्पराग । | इ० | दोपाज । Topag |
| म० | पुष्कराज । | लै० | दोपाजीयो । Topagio |
| शु० | पुरराज, पीछ रत्न । | | |

पुष्परागगुणा ।

पुष्परागविपच्छर्दिकफवाताग्निमांध्यजित् ।

दाहकुष्ठार्शशमनदीपनलघुपाचनम् ॥

अर्थ—पुरराज—विष, वमन, कफ, वात, मन्दाग्नि, दाह, कुष्ठ, और बवासीरको दूर करे, दीपन, हलका और पाचक है ।

अन्यत्र ।

पुष्परागोऽम्लः शीतः स्याद्वातलोमेश्चदीपन ।

वृष्योवयःस्थापकश्चप्रज्ञाबुद्धिविवर्द्धनः ॥

वातनाशकरः प्रोक्तोऽमुनिभिः पारदर्शिभिः ।

अर्थ-पुष्पराज-अमृत, शीतल, पाटी, अग्निप्रदीपक, वीर्यवर्द्धक, अवस्था-
स्यापक, प्रजाजनक, बुद्धिवर्द्धक और वातविनाशक है ।

पुष्परागदशणम् ।

पुष्परागगुरुस्निग्धस्वच्छस्थूलसममृदु ।

कर्णिकारप्रसूनाभममृणशुभमृषा ॥

अर्थ-पुष्पराज-भारी, चिकना, निमल, मृदु, गोल, नम, अमृततामके
पूलकी समान पीलेगका और मृण इन भाव प्रकारसे पुष्पराज उत्तम
जानना ।

भाष्य ।

कृष्णविद्धाद्वितव्यगधवलमलिनलघु । विच्छायशर्करा-
भागपुष्परागसदोपलम् ॥ स्वच्छायपीतगुरुगात्रसुरग-
शुद्ध स्निग्धचनिर्मलमतीवसुवृत्तशीलम् । यत्पुष्परागम-
मलकलयेदमुष्य पुष्णातिकीर्तिमतिशौर्यमुत्पायुरर्थान् ॥
अयत्तलुपुष्परागोजात्यस्तथाचायपरीक्षैकैरुक्त ।

अर्थ-जो पुष्पराग-बाला, विद्ध भस्त्रित, व्यग (साईयुक्त) गन्ध,
मलिन, हलका, वरग और रागग पेता पुष्पराज दोषवाग होता है ।
और जो दीप्तिवान्, पीला, भारी, उत्तमरागदार, शुद्ध, स्निग्ध, निर्मल और
उत्तम गोल पेता पुष्पराज श्रेष्ठ होता है यह पुष्पराज शौर्य, शौर्य, मुग्ध,
आयु अर्थको देवे है ।

श्रीरामनिष्पत्तमात्रि ।

नीलस्तुशौरिगत्नस्याग्नीलाभमानीलरत्नक ।

नीलोपलस्तृणयाहीमदानील.सुनीलक ॥

| | |
|-----------------|--|
| मंसूतभाषामें | नील, शौरिगत्न, नीलाभमा, नीलरत्नक, नीलोपल, मृणमाही, मदानील, सुनीलक (मगर) |
| हिन्दीभाषामें | नीलमणि । |
| पंजाबीभाषामें | नीलमणि । |
| भगटीभाषामें | नीलमणि । |
| मुत्तगतीभाषामें | नीलम् का इनम् । |
| बंगालीभाषामें | नील । |

तैलिङ्गीभाषामे नील ।
 इग्रेजीभाषामे सेफायर । Saffire
 लैटिन्भाषामे सेफायर्स । Saffirus
 नीलगुणा ।

श्वासकासहरंवृष्यत्रिदोषघ्नसुदीपनम् ।

विषमज्वरदुर्नामपापघ्ननीलमीरितम् ॥

अर्थ—नीलम्—श्वास, खासी, त्रिदोष, विषमज्वर, चवासीर और पापना-
 शक है, वीर्यवर्द्धक और अग्निप्रदीपक है ।

शान्यञ्च ।

नील सतिक्तकोष्णश्चकफपित्तानिलापह ।

योदधातिशरीरेचसौरिमर्दनदोभवेत् ॥

अर्थ—नीलम्—कडवा, गरम, कफपित्तनाशक और इसको शरीरमें धारण
 करनेसे शनिग्रहकी बाधा दूर होतीहै ।

नीलस्य वणभेदाः ।

सितशोणपीतकृष्णच्छायानीलाः क्रमादिमेकथिता ।

विप्रादिवर्णसिद्धयै धारणमस्यापिवज्रवत्फलदम् ॥

अर्थ—सफेद, लाल, पीला और काला इन भेदोंसे नीलम् चार प्रकारका
 है तथा सफेद रगका ब्राह्मण, लालरगका क्षत्रिय, पीले रगका वैश्य और
 काले रगका शूद्र होताहै । नीलम् अगम धारण करनेमें हीरेकी सभान
 फल देताहै ।

गोमेदनामानि ।

पिंगस्फटिकोगोमेदोऽगस्तिसत्त्वतमोमणिः ।

अर्थ—पिङ्गस्फटिक, गोमेद, अगन्तिमत्त्व, तमोमणि (गोमेदक, पीतरत्नक,
 बाहुरत्न, स्वर्भानव)

स० गोमेदक ।

क० गोमेद ।

हि० गोमेदमणि ।

त० गोमेदक ।

व० गोमेद ।

इ० ओनिस्त । Onyx

म० गोमेदमणि ।

ल० ओनिस्त । Onyx

गु० गोमूत्र जेनु पीलारगनु ।

अर्थ-पुष्पराज-भस्त्र, शीतल, वार्दी, अग्निप्रदीपक, वीर्यवर्द्धक, अरस्या-
स्थापक, प्रताजनक, रुद्धिवर्द्धक और वातविनाशक है ।

पुष्परागलक्षणम् ।

पुष्परागगुरुस्निग्धस्वच्छस्थूलसममृदु ।

कर्णिकारप्रसूनाभममृणशुभमृधा ॥

अर्थ-पुष्पराज-भारी, चिकना, निर्मल, स्थूल, गोल, नरम, अमलतातक
फलकी समान पीलेरंगका और मृणु इन आठ प्रकारसे पुष्पराज उत्तम
जानना ।

अप्यथ ।

कृष्णविद्धाङ्कितव्यगधवलमलिनलघु । विच्छायशर्करा-
भागपुष्परागमदोषलम् ॥ स्वच्छायपीतगुरुगात्रसुग-
शुद्ध स्निग्धचनिर्मलमतीवसुवृत्तगोलम् । यत्पुष्परागम-
मलकलयदमुष्य पुष्पातिकीर्तिमतिशौर्यसुग्रासुरर्थान् ॥
अयखलुपुष्परागोजात्यस्तथाचायपरीक्षकैरुक्तः ।

अर्थ-जो पुष्पराग-काला, बिट्ट भङ्कित, म्यग (स्याद्युक्त) रंगेद,
मलिन, दृक्का, बेरग और रसरग पेसा पुष्पराज दोषयाला होताहै ।
और जो दीप्तिवान्, पीला, भारी, उत्तमगुणान् शुद्ध, स्निग्ध, निर्मल और
उत्तम गोल पेसा पुष्पराज श्रेष्ठ होताहै यह पुष्पराज कीर्ति शौर्य, सुग्रा,
आयु अर्थको देवे ।

नीलमणिनामानि ।

नीलस्तुशौरिगत्नस्याव्रीलाभमानीलरत्नक ।

नीलोपलस्तृणग्राहीमहानीलमुनीलक ॥

| | | |
|----------------|----------------------------------|---------|
| संस्तुतभाषामें | नील, शौरिगत्न, नीलाभमा, नीलरत्नक | नीलोपल, |
| दिन्दीभाषामें | नीलमणि । | |
| वगभाषामें | नीलमणि । | |
| भारतीभाषामें | नीलमणि । | |
| गुजरातीभाषामें | नीलम् वादनम् । | |
| मराठीभाषामें | नील । | |

न्तिगोमेदप्रतिरूपिणम् ॥ शुद्धस्यगोमेदमणेस्तुमूल्यंसुव-
र्णतोद्वैगुणमाहुरेके । अन्येतथाविद्रुमतुल्यमूल्यंतथापरचा-
मरतुल्यमाहुः ॥ चतुर्विधानामेपान्तुधारणंपरिसम्मतम् ।

(भोजराजकृतधुक्तिकल्पतरु.)

अर्थ-गोमेदमणि-हिमालय और सिन्धुमें होती है । स्वच्छकान्तिवाली, भारी, चिकनी, अच्छेवर्णवाली, दीप्तिमान्, गोल और पिंजरयुक्त ऐसी गोमेदमणि उत्तम होती है, जातिके भेदसे गोमेदमणि चार प्रकारकी है ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र तदा ब्राह्मण सफेद रगकी, क्षत्रिय लाल रगकी, वैश्य पीले रगकी और शूद्र नीले रगकी होती है । इसी प्रकार चार तरहकी छाया होती है सफेद, लाल, पीली और काली । जो भारी, सफेद-रगकी, चिकनी तथा अत्यन्त पुरानी और स्वच्छ हो ऐसी गोमेदमणिको धारण करनेसे लक्ष्मी और धनधान्यकी वृद्धि होती है । जो हलकी, विरूप, खरदरी, स्नेहसे लिपटी हुईसी और मलीन है उस गोमेदमणिको धारण करनेसे-सम्पत्ति, भोग, बल और वीर्यका नाश होता है । जो दोष हीरेमें होते हैं वह दोष गोमेद मणिमें भी हैं । इसकी परीक्षा अग्नि और शानसे करनी चाहिये स्फटिक मणिकोभी गोमेदमणि बनालेते हैं । शुद्ध गोमेदमणिका मूल्य सुवर्णसे दूना है और कोई मूंगेकी घरावर कहते हैं । कोई अमररत्नकी समान कहते हैं । इसका चार प्रकारका धारण करना शुभ है ।

वैदूर्यनामानि ।

वैदूर्यराष्ट्रककेतुरत्नमेवखराड्कुरम् ।

अर्थ-वैदूर्य, राष्ट्रक, केतुरत्न, मेखराकुण (बालबायज, बालसूर्य, बालसूर्यक, केतव, मावृष्य, अभ्ररोह, शराब्दाकुर, विदूररत्न विदुरज, केतुग्रहबलम्) ।

| | |
|-----------------|------------------------------|
| संस्कृतभाषामें | वैदूर्यम् । |
| हिन्दीभाषामें | वैदूर्य, वैदूर्य, लहसुनिया । |
| वगभाषामें | वैदूर्यम् । |
| मराठीभाषामें | वैदूर्यरत्न । |
| गुजरातीभाषामें | माजरानी आँख जेठु रमणियो । |
| कर्णाटकीभाषामें | वैदूर्यम् । |

गोमेदमणिगुणा ।

गोमेदकोम्लश्चोष्णश्चवातकोपविकारनुत ।

दीपनपाचनश्चैवधृतोयंपापनाशनः ॥

अर्थ-गोमेदमणि-अम्ल, उष्ण, वातको कोपको शान्ति करनेवाली, दीपन, पाचक और इसको ज्वररम धारण करनेसे पापका नाश होता है ।

अन्यथा ।

गोमेदकफपित्तघ्नक्षयफलक्षयकरम् ।

दीपनपाचनरुच्यत्वच्यबुद्धिप्रबोधनम् ॥

अर्थ-गोमेदमणि-कफपित्तनाशक, क्षयनाशक, पाण्डुरोगदाहक, दीपन, पाचक, रुचिकारी, त्वचाको दितकारी और बुद्धिप्रबोधक है ।

अपिच ।

गोमेदोम्ल पाचकश्चक्षुष्योष्णोग्निदीपन ।

लघुर्वातस्यकामस्यनाशकारीप्रकीर्तितः ॥

अर्थ-गोमेदमणि-अम्ल, पाचक, नेत्रोंको दितकारी, गरम, अग्निदीपन, हल्की तथा वात और रोगोंको दूर करे है ।

गोमेदमणि ॥ ।

हिमालयेवामिन्धोवागोमेदमणिसम्भव । स्वच्छकान्तिगुरु
 स्निग्धोवर्णाढयोदीप्तिमानपि ॥ बलक्ष पि जगोभन्योगो-
 मेदइति कीर्तित । चतुर्धाजातिभेदस्तु गोमेदोऽपि प्रभान्यते ।
 ब्राह्मण शुक्रवर्ण स्यात्क्षत्रियोग्क्त उच्यते । आर्षीतो वैश्य-
 जातिस्तु शूद्रस्तु नील उच्यते ॥ अथाचतुर्विधाश्चेतागृह्य-
 ताऽमिता तथा । गुरुप्रवाढ्य मितवर्णस्य स्निग्धोमृदुर्वा-
 तिमहापुगण ॥ स्वच्छस्तु गोमेदमणिर्धृतोयकरोति लक्ष्मीं
 धनधान्यबुद्धिम् । लघुर्विरूपोऽस्ति त्वगोन्धमानः स्नेहोपलि-
 मोमलिन खरोऽपि । करोति गोमेदमणिर्विनाशं मम्यति भो-
 गावलवीर्यराशे । यदोपाहीन्ये ज्ञेयं नास्तु गोमेदमणा अपि ॥
 परीक्षावहित साध्यानां यथापद्रुको विदे । न्यदि केनैव नृप-

न्तिगोमेदप्रतिरूपिणम् ॥ शुद्धस्यगोमेदमणेस्तुमूल्यंसुव-
र्णतोद्वैगुणमाहुरेके । अन्येतथाविद्रुमतुल्यमूल्यतथापरेचा-
मरतुल्यमाहुः ॥ चतुर्विधानामेपान्तुधारणपरिसम्मतम् ।

(भोजराजकृतयुक्तिकल्पतरुः)

अर्थ—गोमेदमणि—हिमालय और सिन्धुमें होती है । स्वच्छकान्तिवाली, भारी, चिकनी, अच्छेवर्णवाली, दीप्तिमान्, गोल और पिंजरयुक्त ऐसी गोमेदमणि उत्तम होती है, जातिके भेदसे गोमेदमणि चार प्रकारकी है ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र तथा ब्राह्मण सफेद रगकी, क्षत्रिय लाल रगकी, वैश्य पीले रगकी और शूद्र नीले रगकी होती है । इसी प्रकार चार तरहकी छाया होती है सफेद, लाल, पीली और काली । जो भारी, सफेद-रगकी, चिकनी तथा अत्यन्त पुरानी और स्वच्छ हो ऐसी गोमेदमणिको धारण करनेसे लक्ष्मी और धनधान्यकी वृद्धि होती है । जो हलकी, विरूप, खरदरी, स्नेहसे लिपटी हुईसी और मलीन है उस गोमेदमणिको धारण करनेसे—सम्पत्ति, भोग, बल और वीर्यका नाश होता है । जो दोष हीरेमें होते हैं वह दोष गोमेद मणिमें भी हैं । इसकी परीक्षा अग्नि और शानसे करनी चाहिये स्फटिक मणिकोभी गोमेदमणि घनालेते हैं । शुद्ध गोमेदमणिका मूल्य सुवर्णसे दूना है और कोई मूंगेकी वरावर कहते हैं । कोई अमररत्नकी समान कहते हैं । इसका चार प्रकारका धारण करना शुभ है ।

वैदूर्यनामानि ।

वैदूर्यराष्ट्रककेतुरत्नमेघखराड्कुरम् ।

अर्थ—वैदूर्य, राष्ट्रक, केतुरत्न, मेघखराकुर (बालवायज, बालसूर्य, बालसूर्यक, केतव, प्रावृष्य, अभ्ररोह, शराब्दाकुर, विदूररत्न विदूरज, केतुग्रहबलभ) ।

संस्कृतभाषामें

वैदूर्य ।

हिन्दीभाषामें

वैदूर्य, वैदूर्य, लहसुनिया ।

वगभाषामें

वैदूर्य ।

मराठीभाषामें

वैदूर्यरत्न ।

गुजरातीभाषामें

माजरानी आँख जेवु लसणियो ।

कर्णाटकीभाषामें

वैदूर्य ।

तेलघ्नीभाषामे
इप्रेजीभाषामे

वेदूर्यम् ।
केटुमजाह । Lat ८१०
अस्य गुणा ।

वेदूर्यसृष्णमम्लञ्चकफमारुतनाशनम् ।

गुल्मादिदोषशमनभूषितञ्जुभावहम् ॥ (रा० नि०)

अर्थ-वेदूर्य-गरम, अम्ल, कल्याणसारक तथा कफ, वात और गुल्मादि दोषोंको दूर करे है । एवं इसका धारण करनेसे शुभ फलको देता है ।

अपचा ।

वेदूर्यरक्तपित्तघ्नप्रजायुर्वलवर्द्धनम् ।

पित्तप्रधानरोगघ्नदीपनगुल्मनाशनम् ॥

अर्थ-वेदूर्यमणि-रक्तपित्तनाशक प्रजा आयु और यन्वर्द्धक, पित्तप्रधानरोगनाशक, दीपन और गुल्मको दूर करे है ।

अपचा ।

वेदूर्यसृष्णमम्लस्यादग्निद्वग्गमायनम् ।

शूलगुल्मोदरकफवातनाशरग्मतम् ॥

अन्यगुणाहीनकवट्टिजेयाविमुक्ते-किल ।

अर्थ-वेदूर्यमणि-गरम, अम्ल, अग्निप्रदीपक, रमायन तथा शुभ, गुल्म, उदररोग, फट और वातका नाश करे है और गुण हीरेकी समान जानने ।

उत्तमवेदूर्यरत्नम् ।

वेदूर्यश्यामशुभ्राभममन्वच्छगुरुस्फुटम् ।

भ्रमच्छुभ्रान्तर्गयेण गर्भितशुभमीर्गितम् ॥

अर्थ-जो वेदूर्यमणि (लक्ष्मणिषा)-रूपाम और शुभ तथा शिवाका-तिवाका हो, ममगोत्र, मन्वच्छ, भारी, स्फुट, भोतरम पिमंगो पदम, क्षीर चन्द्रमाकी समान रूपाम कांति हो जेमा वेदूर्य उत्तम होता है ।

इति शालिग्रामे ।

अथोपरत्नानि ।

वेदूर्यश्यामशुभ्राभममन्वच्छगुरुस्फुटम् ।

गोनास-क्षुद्रकुलिर्भजीर्णव्रधगोनमम् ॥

अर्थ-वैक्रान्त, विक्रान्त, नीलवज्र, कुवज्रक, गोनास, धुद्रकुलिश, जीर्णवज्र, गोनस ।

वैक्रान्तगुणा ।

वैक्रान्तस्तुत्रिदोषघ्नः पङ्क्तसोदेहदाढ्यकृत् ।

पाण्डुरज्वरश्वासकासक्षयप्रमेहनुत् ॥

अर्थ-वैक्रान्तमणि-त्रिदोषनाशक, पङ्क्तान्वित, देहको दृढ करनेवाला तथा पाण्डुरोग, उदररोग, ज्वर, श्वास, खासी, क्षय और प्रमेहको दूर करे है ।

अन्यच्च ।

वैक्रान्तोवज्रसदृशोदेहलोहकरोमतः ।

विषघ्नोरसराजश्चज्वरकुष्ठक्षयप्रणुत् ॥

अर्थ-वैक्रान्तमणिके गुण हीरेके समान है, देहको दृढ करनेवाली, पारेके विषको हरनेवाली तथा ज्वर, कुष्ठ और क्षयरोगको दूर करे है ।

सूर्यकान्तनामानि ।

दीप्तोपलः सूर्यकान्तोज्ज्वलनाशमाग्निगर्भकः ।

अर्थ-दीप्तोपल, सूर्यकान्त, ज्ज्वलनाशमा, अग्निगर्भक (रविकान्त, अक्तोपल, तापन, तपनमणि, सूर्याशमा, दहनोपम, सूर्यमणि) ।

सस्कृतभाषामें सूर्यकान्त ।

हिन्दीभाषामें आतिशीशीशा, सूर्यकान्त ।

बगभाषामें आतसपायर ।

मराठीभाषामें सूर्यकान्तमणि ।

गुजरातीभाषामें अगनचशमानो काच ।

इंग्रेजीभाषामें मेग्निफाइंग ग्लास । Magnifying glass

सूर्यकान्तगुणा ।

सूर्यकान्तोभवेदुष्णोनिर्मलश्चरसायनः ।

वातश्लेष्महरोमेध्यः पूजनाद्रवितुष्टिदः ॥ रा० नि)

अर्थ-सूर्यकान्तमणि-गरम, निर्मल, रसायन, वात और कफनाशक, मेधाजनक और इसका पूजन करनेसे सूर्य सतुष्ट होताहै ।

अन्यच्च ।

सूर्यकान्तस्त्रिदोषघ्नोमेध्योष्णश्चरसायनः ।

वैलङ्घीभाषामे
उपेजीभाषामे

वैदूर्य ।
केटुगजाद । Ca seye
अस्य गुणा ।

वैदूर्यसृष्णमम्लश्चकफमारुतनाशनम् ।

गुल्मादिदोषशमनभूषितश्शुभावहम् ॥ (रा० नि०)

अर्थ-वैदूर्य-गरम, अम्ल, कल्याणसारक तथा कफ, वात और गुल्मादि
दोषोंको दूर करे है । एवं इसको धारण करनेसे शुभ फलसे होता है ।

अपघ्न ।

वैदूर्यरक्तपित्तप्रजायुर्वलवर्द्धनम् ।

पित्तप्रधानरोगघ्नदीपनगुल्मनाशनम् ॥

अर्थ-वैदूर्यमणि-रक्तपित्तनाशक, प्रजा आयु और घटवदक, पित्तप्र-
धानरोगनाशक, दीपन और गुल्मसे दूर करे है ।

अल्पि ।

वैदूर्यसृष्णमम्लन्यादग्निद्वचरसायनम् ।

शूलगुल्मादूरकफवातनाशकर्मतम् ॥

अन्येगुणादूरकवह्निजेयापितुषेकिल ।

अर्थ-वैदूर्यमणि-गरम, अम्ल, अग्निप्रदीपक, रसायन तथा शूल, गुल्म,
उदररोग, कफ और वातका नाश करे है और गुण हीरेकी समान मानने ।

उत्तमवैदूर्यसृष्णम् ।

वैदूर्यश्यामशुभ्राभसमन्वच्छुगुरुस्फुटम् ।

भ्रमच्छुभ्रान्तरीयेण गर्भितशुभमीरितम् ॥

अर्थ-जो वैदूर्यमणि (नन्दमुनिपा)-श्याम और शुभ्र तथा विमल-
तिराला हो, समताप, स्पष्ट, भारी, मृदु, भोक्तव्य विमलसे चरक, और
चन्द्रमाकी समान श्याम कान्ति हो होगा वैदूर्य उत्तम होता है ।

इति शान्ति ।

अथोपरत्नानि ।

देवान्तराणां च ।

पेरान्तश्चैविकान्तनीलवज्रकुम्भकम् ।

गोनाम शुद्धकृत्तिशर्जीणवज्रशर्माणम् ॥

अर्थ-वैक्रान्त, विक्रान्त, नीलवज्र, कुवज्रक, गोनास, क्षुद्रकुलिश, जीर्णवज्र, गोनास ।

वैक्रान्तगुणाः ।

वैक्रान्तस्तुत्रिदोषघ्नः पट्टसोदेहदाढ्यकृत् ।

पाण्डुरज्वरश्वासकासक्षयप्रमेहनुत् ॥

अर्थ-वैक्रान्तमणि-त्रिदोषनाशक, पट्टसान्वित, देहको दृढ करनेवाला तथा पाण्डुरोग, उदररोग, ज्वर, श्वास, खासी, क्षय और प्रमेहको दूर करे है ।

अन्यच्च ।

वैक्रान्तोवज्रसदृशोदेहलोहकरोमतः ।

विपद्भोरसराजश्चज्वरकुष्ठक्षयप्रणुत् ॥

अर्थ-वैक्रान्तमणिके गुण हीरेके समान है, देहको दृढ करनेवाली, पारेके विपको हरनेवाली तथा ज्वर, कुष्ठ और क्षयगोगको दूर करे है ।

सूर्यकान्तनामानि ।

दीप्तोपलः सूर्यकान्तोज्वलनाश्माग्निगर्भकः ।

अर्थ-दीप्तोपल, सूर्यकान्त, ज्वलनाश्मा, अग्निगर्भक (रविकान्त, अकों-पल, तापन, तपनमणि, सूर्याश्मा, दहनोपम, सूर्यमणि) ।

सस्कृतभाषामें सूर्यकान्त ।

हिन्दीभाषामें आतिशीशीशा, सूर्यकान्त ।

वगभाषामें आतसपाथर ।

मराठीभाषामें सूर्यकान्तमणि ।

गुजरातीभाषामें अगनचशमानो काच ।

इंग्रेजीभाषामें मैग्निफाइंग ग्लास । Magnifying glass

सूर्यकान्तगुणाः ।

सूर्यकान्तोभवेदुष्णोनिर्मलश्चरसायनः ।

वातश्लेष्महरोमेध्यः पूजनाद्रवितुष्टिदः ॥ रा० नि)

अर्थ-सूर्यकान्तमणि-गरम, निर्मल, रसायन, वात और कफनाशक, मेघाजनक और इसका पूजन करनेसे सूर्य सतुष्ट होता है ।

अन्यच्च ।

सूर्यकान्तस्त्रिदोषघ्नोमेध्योष्णश्चरसायनः ।

कफवातहर प्रोक्त पूर्वगयुर्विदर्जनैः ॥ (रत्नाकर)

अर्थ-सूर्यकान्तमणि-त्रिदोषनाशक, मेघाननक, ग्वापन, कफ और वातको दूर करे ।

शुद्ध स्निग्धो निर्बणो निस्तुपस्तुयो निर्वृष्टो व्योमनेर्मल्यमेति ।

यः सूर्यांशुस्पर्शनिर्वृतवह्निर्जात्यामोयं चक्षते सूर्यकान्तः ॥

अर्थ-जो चिकना, घणगदित, तुपरादित, विघनेमे आकाशकी समान निर्मल होजाय और धूपमें रखनेमे जिममें जगि चलते देगा सूर्यकांत (आतिर्गोशीना) उत्तम होता है ।

चन्द्रकान्तनामानि ।

चन्द्रकान्त सोममणि सिताश्माप्रस्तरोपल ।

अर्थ-चन्द्रकान्त, सोममणि, गिताश्मा, प्रस्तरोपल (चान्द्र, चन्द्रमणि, चन्द्रोपल, इन्दुकान्त, चन्द्राश्मा, गंतुवोपल, शीताश्मा, चाद्रिकाद्वार शशिकान्त) ।

| | |
|-----------------|------------------|
| समृद्धभाषामें | चन्द्रकान्त । |
| हिदीभाषामें | चन्द्रकान्त । |
| यगभाषामें | चन्द्रकांत । |
| मराठीभाषामें | चन्द्रकान्तमणि । |
| कर्णाटकीभाषामें | चन्द्रकान्त । |
| तालुगीभाषामें | चन्द्रकान्त । |

चन्द्रकान्तमणिगुणाः ।

चन्द्रकान्तमणि शीत स्निग्ध स्वच्छ शिवप्रियः ।

अमदाहप्रहालक्ष्मीविनाशनो निगन्तरम् ॥

अर्थ-चन्द्रकान्तमणि-शीतल, स्निग्ध, स्वच्छ, शिवप्रिय तथा कष्टविचार, दाह, मद और अलक्ष्मीका नाशकर है ।

चन्द्रकान्तद्वयतगुणाः ।

चन्द्रकान्तोद्भवकृष्णविनाशनम् ।

अर्थ-चन्द्रकान्तमणिका जल-रुग्णा, शीतल और दाहका दूर करे ।

चन्द्रकान्तस्य स्वकृष्णम् ।

पूर्णेन्दुवस्पर्शादमृतव्रततिष्ठमान् ।

चन्द्रकान्ततदाख्यातदुर्लभतत्कलयुगे ॥ (यु०क०)

अर्थ-चन्द्रमाकी किरणोंके स्पर्शसे जिसमें अमृत (जल) टपकताहै उसीको चन्द्रकान्तमणि कहतेहैं यह कलियुगमें अत्यन्त दुर्लभहै ।

स्फटिकनामानि ।

शैवःशूकःश्वेतरत्नस्फटिकोनिस्तुपोपलम् ।

अर्थ-शैव, शूक, श्वेतरत्न, स्फटिक, निस्तुपोपल (स्फाटिक, स्फाटक, स्फटिकात्मा, स्फाटीक, स्फाटिकोपल, भासुर, स्फटिकोपल, शालिपिष्ट, वीराशिल, सितोपल, विमलमणि, निर्मलोपल, स्वच्छ, स्वच्छमणि, अमररत्न, निस्तुपरत्न, शिवमिय) ।

स० स्फटिक ।

यु० फाटकमणि ।

हि० स्फटिक, फटिकमणि ।

क० स्फटिक ।

ब० फटिक् ।

तै० स्फटिक ।

म० स्फटीक ।

इ० किष्टल ।

स्फटिःशुणा ।

स्फटिकःसमवीर्यं स्यात्पित्तदाहार्तिशोपनुत् ।

तस्याक्षमालाजपतोद्धत्तेकोटिगुणफलम् ॥ (नि०र०)

अर्थ-स्फटिकमणि-समवीर्यं तथा पित्त, दाहकी वेदना और शोषको दूर करे है इसकी मालाके जपनेसे कोटिगुण फल होता है ।

परोजनामानि ।

पेरोजहरिताश्माचभस्माङ्गहरितद्विधा ।

अर्थ-पेरोज, हरिताश्म, भस्माङ्ग और हरित इन भेदोंसे दो प्रकारका है ।

संस्कृतभाषामें पेरोज ।

हिन्दीभाषामें फिरोजा ।

वगभाषामें उपरलविशेष ।

मराठीभाषामें पेरोज ।

गुजरातीभाषामें पीरोजो ।

कर्णाटकीभाषामें पेरोज ।

इंग्रेजीभाषामें टर्कोइड । Turkois

लैटिन्भाषामें टर्चेसीयस टर्चीना । Turchesius Turchina

फार्गीभाषामे
अर्घीभाषामे

किरोना ।
किरोजज ।

भस्म गुणा ।

पेरोजमुकपायस्यान्मधुरदीपनंयम् ।

स्थावरजद्रमञ्चवमयोगाञ्चतथाविषम् ॥

तत्त्वमनाथयेच्छीघ्रशूलभृतादिदोषजम् ।

अर्थ-किरोना-कपेला, मधुर, दीपन और किरोके संयोगसे स्थावर तथा जगम विषको दूर करे दे और शूलभृतादि दोषोंमें उत्पन्न हुये शूलका नाश करे दे ।

काचनामानि ।

काचः कृत्रिमरत्नत्रयिगाणोमुकुरोपिच ।

अर्थ-काच, कृत्रिमरत्न, पिगाण, मुकुर ।

संस्कृतभाषामे

काच ।

इमेतृभाषामे

रत्नम् । (१)

हिन्दीभाषामे

कॉच कश्च ।

हिन्दीभाषामे

रत्नम् । (१)

संस्कृतभाषामे

काच ।

फार्गीभाषामे

भाशुर्गीनां ।

मगदीभाषामे

काच ।

अर्घीभाषामे

मुजाम् ।

गुजरातीभाषामे

काच ।

भस्म गुणा ।

काचातुमाकालध्वीप्रणनेत्रहितायदा ।

लेखनीशूलहृत्प्रोक्तावेश्याम्रिगारदे ॥ (ति० २०)

अर्थ-काच-माकक रत्नका, प्रण और वेश्योंकी दितकारी, रत्ना और शूलनाशक है ।

दुग्धपाषाणनामानि ।

दुग्धपाषाणि काशीर्गमायसीमेऽम्रत्रिभा ।

अर्थ-दुग्धपाषाणिका, काशी, मायसी, मदनत्रिभा (दुग्धपाषाण, दुग्धपाषाणिका, दुग्धपाषा, गोमेष्टात्रिभा, श्याम, दीपिका, दुग्धी सीत (सर, गोम))

संस्कृतभाषामे

दुग्धपाषाणम् ।

हिन्दीभाषामे

शिमिल्या ।

| | |
|-----------------|-----------------|
| वगभाषामें | शिरगोला । |
| मराठीभाषामें | शिरगोळा । |
| गुजरातीभाषामें | दुधियो पाणो । |
| कर्णाटकीभाषामें | रगवालियहरेल्ल । |
| | अस्पृग्गुणा । |

दुग्धपापाणकोरुच्यईपदुष्णोज्वरापहः ।

पित्तहृद्गोगशूलघ्न कासाध्मानविनाशनः ॥

अर्थ—दुग्धपापाण—रुचिकारक, ईपदुष्ण, ज्वरनाशक तथा पित्त, हृदय-रोग, शूल, खाँसी और आध्मानको दूर करे है ।

इति श्रीशालिग्रामनिघण्टुभूषणे रत्नोपरत्ननर्ग समाप्त ॥ ८ ॥

अथ विषवर्गः ।

विषनामानि ।

काकोलोगरल क्ष्वेडोविपस्यादारदोपिच ।

सौराष्ट्रिक-शौक्लकेयोत्रह्मपुत्र-प्रदीपन ॥

अर्थ—काकोल, गरल, क्ष्वेड, विप, दारद, सौराष्ट्रिक, शौक्लकेय, ब्रह्मपुत्र, प्रदीपन (आहेय, अमृत, गरद, कालकूट, कसाकूल, हारिद्रि, रक्तशृङ्गिक, नील, गर, घोर, हाटाहल, हलाहल, शृङ्गी, भुगर, जाङ्गल, तीक्ष्ण, रस, रसायन, जशुल, जाशुल, वत्सनाभ, जीवनाघात, किपल, प्राणहर)

| | |
|-----------------|--------------------------------|
| संस्कृतभाषामें | वत्सनाभ, अमृत । |
| हिन्दीभाषामें | बचनाग, मीठाविष । |
| वगभाषामें | काटविष, अमृतविष । |
| मराठीभाषामें | बचनाग । |
| गुजरातीभाषामें | ठिंगडियो, वठनाग । |
| कर्णाटकीभाषामें | वशनवी । |
| तेलुगुभाषामें | नाभी । |
| इंग्रजीभाषामें | एकोनाईट । AConite |
| लैटिनभाषामें | एकोनाइटफेरोक्स । Aconitumferox |
| फारसीभाषामें | जहर । |
| अरबीभाषामें | विष । |

व्यसनाभविषयुणा ।

वत्सानाभोतिमधुर मोष्णोवातकफापहः ।

कण्ठरुग्मन्निपातघ्नः पित्तमन्तापकारकः ॥ (रा०नि०)

अर्थ—(वत्सानाभ मीठा)—अत्यन्त मधुर, गरम, वातकफनाशक तथा कण्ठरोग और मन्निपातको दूर करे। पित्त और मन्तापको उत्पन्न न करे ।
अपघ्न ।

विषप्राणहरप्रोक्तं च वायि च विकशि च ॥

आग्नेयं वातकफहृद्योगवादिमदावहम् ॥

अर्थ—विष-प्राणनाशक, व्याधायी, विकारी आग्नेय, वातरक्तनाशक, योगवादी और मदावहक है ।

अग्निः ।

रुक्ममुष्णतथातीक्ष्णसूक्ष्ममाशुच्यवायि च । विकशि विग-
दश्चैव लघ्वपाकि च ते दश ॥ तत्रोक्ष्यात्कोपयेद्वायुमोष्ण-
त्पित्तसंशोणितमातैर्द्वयान्मनिमोदयति मर्मन् रान्निभन-
त्ति च ॥ शरीरावयवान्मोक्ष्यात्प्रविभेदिकरोति च । आशु-
त्वादाशुवत्प्रोक्तं च वायात्प्रकृतिर्हन्त । विकशिन्यादीपय-
ति दोषान्धातुन्मलानपि । अतिरिच्यते भेदाद्भिक्षितस्य-
अलावनात् ॥ दुर्जरा वा विषापित्तात्तस्मात्त्रेभ्यस्ते निम्नः ।

अर्थ—रुक्म, उष्ण, तीक्ष्ण, सूक्ष्म, आशुव्याधायी, विकारी, विगद, तप्त और अपाकी यह दश गुण विषम रहते हैं । तर्जो रुक्मगुणसे वायु मधुरित होती है । उष्णगुणसे पित्त और रक्त दूषित होते हैं । तीक्ष्णगुणसे मर्मको मोहता और मर्मसंघनका छिन्न करता है । सूक्ष्मगुणसे मर्म शरीरके अन्तर्गते होकर अनेक अनेक विषाभोका प्रकाश करता है । आशुगुणसे अत्यन्त शीघ्र अपने कामोका प्रकाशित करता है । व्याधायिगुणसे मूर्खको तब मरता है । विकशितगुणसे शरीरका वातादि शोष, रसादि धातु और मूत्रादि मलके समूहको पकाता है । विगदगुणसे हृत्ता अग्न्यन्त दृष्टाको मरता है । तप्तगुणसे अतिरिच्य दूधिविषम पानना और अन्तर्गते दुर्जरा तथा दृश्य दूध वगैरोंके श्रेष्ठ होता है ।

अन्यच्च ।

विपरसायनबल्यवातश्लेष्मविकारनुत् । कटुतिक्तकपाय-
ञ्च मदकारिसुखप्रदम् ॥ व्यवायिचशिरोद्वाहिकुष्ठवातास-
नाशनम् । अग्निमांद्यश्वासकासप्लीहोदरभगन्दरम् ॥ गुल्म-
पाण्डुव्रणार्शासिनाशयेद्विधिसेवितम् ॥

अर्थ—विधिसेवित विष—रसायन, बलकारक तथा वात, श्लेष्म, कुष्ठ, वातरक्त, अग्निमाद्य, श्वास, खाँसी प्लीहा, उदररोग, भगन्दर, गुल्म, पाण्डु और व्रणका नाश करे है तथा चरपरा, कडवा, कपेला, मदकारी, सुखकारी और व्यवायी है ।

अपिच ।

विषव्रणहरंप्रोक्तव्यवायिचविकाशिच।आग्नेयवातकफहृद्यो-
गवाहिमदावहम् ॥ तदेवयुक्तियुक्तन्तुप्राणदायिरसायनम्।
पथ्याशिनांत्रिदोषघ्नंवृहणवीर्य्यवर्द्धनम् ।

अर्थ—विष—व्यवायी, विकाशी, योगवाही, मादक है इसीको युक्तिपूर्वक सेवन करनेसे बलदायक, रसायन, पुष्टिकारक, वीर्य्यवर्द्धक तथा व्रण, कफ और त्रिदोषजनित रोग नष्ट होते हैं ।

विषस्य प्रकारभेदा ।

वत्सनाभ सहारिद्रःसक्तकश्चप्रदीपन । सौराष्ट्रिक शृङ्गक-
श्चकालकूटस्तथैवच॥हालाहलोव्रह्मपुत्रोविषभेदाअमीनव ।

अर्थ—वत्सनाभ, हारिद्र, सक्तक, प्रदीपन, सौराष्ट्रिक, शृङ्गक, काल-
कूट, हालाहल और व्रह्मपुत्र इन भेदोंसे विष नव प्रकारका है ।

१ अथ वत्सनाभस्य स्वरूपम् ।

सिन्धुवारसदृक्पत्रोवत्सनाभ्याकृतिस्तथा ।

यत्पाश्चैनतरोर्वृद्धिर्वत्सनाभःसभापितः ॥

अर्थ—सभालुके पत्तोंकी समान चउड़ेकी नाभिकी आकृतिवाला और जिसके निकट दूसरा वृक्ष नहीं जमे उसको वत्सनाभ विष कहते हैं ।

२ अथ हारिद्रस्य स्वरूपम् ।

हरिद्रातुल्यमूलोयोहारिद्रःसउदाहृतः ।

अर्थ—हलदीकी समान जिसका मूल ही उसको हारिद्र विष जानना ।

३ अथ सक्तुकाय स्वरूपम् ।

यद्वन्थि सक्तुकेनैवपुष्पमध्य ससक्तुकः ।

अर्थ-जिसकी गाठ मत्तुकी सहय बीचमेंसे भरी हुई हो उसको मक्तुक विष जानना ।

४ अथ मदीपनस्य स्वरूपम् ।

वर्णतोलोहितोय स्यादीतिमान्द्रहनप्रभः ।

महादाहकर पूर्वं कथित सप्रदीपनः ॥

अर्थ-जिसका वर्ण लाल अत्यन्त दीर्घमान् और अधिक गमान प्रभा-
वाला उसको महादाह करनेवाला मदीपन विष जानना ।

५ अथ मीराष्ट्रिकस्य स्वरूपम् ।

सुगन्धविषयेय स्यात्समोराष्ट्रिक उच्यते ।

अर्थ-जो मोरठ देशमें उत्पन्न होता है उसको मीराष्ट्रिक विष कहते हैं ।

६ अथ मन्निगस्य स्वरूपम् ।

यस्मिन्गोशृङ्गकेनद्धेदुग्धभवतिलोहितम् ।

समृद्धिकइतिप्रोक्तोद्रव्यतत्त्वविगारदे ॥

अर्थ-जिसको गावको गोमूत्रमें पाँवनेसे गावका दूध लाने उतरने से
उगको घाँवमें शृङ्गक (मीरगवारिष) कहा है ।

७ अथ पादपुष्पस्य स्वरूपम् ।

देवासुररणेदेवैर्हतस्यपृथुमालिनः । दैत्यस्यरुधिगजातस्त-

रुश्वत्थसन्निभः ॥ निर्यामः कालकृदोऽस्यमुनिभिः परि-

कीर्तितः । मोहिच्छत्रे शृङ्गवेकोद्रुणे मलयभवेत् ॥

अर्थ-जो भगुरोंके समामम सेवों जय पूयुमाणि देवोंके मारा कथ
उग देवोंके रुधिगों बीचकी समान गुण उत्पन्न हुआ इस गुणोंके मोहों
मुनि कालकृद विष कहते हैं यह मोहिच्छत्र, शृङ्गवे, कोकण और मलयमें
उत्पन्न होता है ।

८ अथ शालिग्रहस्य स्वरूपम् ।

गोन्ननाभफलोयुग्मस्तलालपत्रच्छदस्तथा निजनायस्यद-

श्वन्तेममीपस्याद्रुमादयः ॥ असौशालाहलोत्तेजः किष्कि-

शयादिमालये । दाक्षिणात्रिनददेवोकोद्रुणेपिनजायते ॥

अर्थ—दाखोंके गुच्छोंके समान फल और तालके घृशोंकी समान वृक्ष होता है जिसके नेजसे समीपके वृक्ष जलजाते हैं उसको हालाहल विष जानना यह किष्किन्धापुर, हिमालय पर्वत, दक्षिण समुद्रके तटके देशोंमें और कोंकणदेशमें उत्पन्न होता है ।

९ अथ ब्रह्मपुत्रस्य स्वरूपम् ।

वर्णतःकपिलोयःस्यात्तथाभवतिसारकः ।

ब्रह्मपुत्रःसविज्ञेयोजायतेमलयाचले ॥

अर्थ—जिसका रंग कपिलवर्ण और सारभी जिसका कपिलवर्ण होता है उसको ब्रह्मपुत्र विष जानना यह मलयाचल पर्वतमें उत्पन्न होता है ।

विषस्य वर्णभेदाः ।

ब्राह्मणःपाण्डुरस्तेषुक्षत्रियोलोहितप्रभः । वैश्यःपीतोऽसि-
तःशूद्रोविपउक्तश्चतुर्विधः । रसायनेविषविप्रक्षत्रियदेहपुष्ट-
ये । वैश्यंकुष्ठविनाशायशूद्रंदद्याद्रधायच ॥ (भा.प्र)

अर्थ—पाण्डु रंगका विष ब्राह्मण, लाल रंगका क्षत्रिय, पीले रंगका वैश्य और काले रंगका विष शूद्र होता है । रसायनमें ब्राह्मणविष, देहको पुष्टि करनेके लिये क्षत्रियविष, कुष्ठको दूर करनेके लिये वैश्य और मारणके लिये शूद्र जातिका विष देना चाहिये ।

अथ यक्षः ।

स्थावरजगमश्चैवद्विविधविषमुच्यते ।

दशाधिष्ठानमाद्यन्तुद्वितीयपोडशाश्रयम् ॥

अर्थ—स्थावर और जगम इन भेदोंसे विष दो, प्रकारका है तथा स्थावर विष १० प्रकार और जगम विष १६ प्रकार जानना ।

स्थावरविषस्यदशप्रकारा यथा ।

मूलपत्रफलपुष्पत्वक्क्षीरंसारमेवच ।

निर्यासोधातवःकन्दःस्थावरस्याश्रयादश ॥

अर्थ—स्थावरविष—वृक्षादिके मूल, पत्र, फल, पुष्प, छाल, दूध, सार, गोंद, धातु और कन्द इन दश स्थानोंमें रहता है । अमृतादिक विषको स्थावरविष कहते हैं ।

स्यादरविषय्य भक्षणदोषः ।

स्थावरंतुज्वरद्विधादन्तर्द्वर्गलप्रहम् ।

फेनवम्यरुचिश्वासमृन्तीश्चजनयेद्विषम् ॥

अर्थ-स्यावरविष-ज्वर, द्विचकी, दन्तद्वर्ग, गलवेदना, मुग्धमे श्वागोहा आना, वमन, अरुचि, श्वास और मृच्छाकी उत्पन्न करता है ।

जट्टमतिषय्य मलप्रहम् ।

सर्पाःकीटोन्दुरालताश्लिङ्गागलगोधिका । जल्लोकाम-

त्स्यमण्डूकाःशलभा सकृकण्टकाः ॥ श्वसिद्व्याघ्रगोमा

युतस्थुनकुलादयः । दष्टिणोऽमीविषतेषां दष्ट्रोत्थंजंगमंमतम् ॥

अर्थ-सर्प, कीट, उन्दुर (मूसा), दूता (मकड़ी), वृक्षिन (बिगुल) गलगोधिका, जल्लोका (जोंक), मत्स्य (मछली), मण्डूक (मेटक), माल्य (पतंग), शल्लाभा, कुपुट, शिङ्ग, व्याघ्र, शूलान्, केन्दूभा और नौला इन सब जन्तुओंके दौंतीके विषको जंगम विष कहते हैं ।

पेयमतिषय्य पादद्वयपारा ।

दृष्टिनिश्वासोदघ्राश्चनसमृन्मलानिच ।

शुक्लालामुग्धस्पर्शसदंशनावमार्हितम् ॥

गुदास्थिपित्तशुकानिदोपइजगमाश्रया ।

अर्थ-जंगमविष-सर्पादिक विषेकी जनुमारी दृष्टि, निषाग, दूत, नगा, गुर, घाट, शूल, लार, मुग्ध स्पर्श दीन, मार, गुदमे, अग्नि, विष और शुक इन १६ स्थानोंमें होता है ।

जंगमविषय्य भक्षणदोषः ।

निद्रानिद्रांक्रमेदाहंसपाकलोमदर्पणम् ।

शोकश्चातिमारजजनयेजंगमविषम् ॥

अर्थ-जंगमविष-निद्रा, लब्धा, शान्ति, शर, पाप, शोकदर्पण, शोक और अतिमारका जंगम करता है ।

साधिविषमुत्ता ।

यंदुर्गुणानिषेऽजुहतेम्युहोनायिगोपनात् ।

नस्नाद्विषप्रयोगेपुनो गतिताप्रयोजनेत् ॥

अर्थ-जो दुर्गुण अर्थात् दोष अशुद्ध विषमें हैं वे दोष शोधितविषमें नहीं हैं इस कारण विषको शोधनपूर्वक औषधिमें लेना चाहिये ।

अथ विषसेवनप्रकारः ।

नानारसौषधैस्तुदुष्टायांतीह्नोगदा । तेनश्यन्तिविषेदत्ते
शीघ्रवातकफोद्भवाः ॥ शरद्वीष्मवसन्तेषुवर्षासुचप्रदापयेत् ।
चातुर्मास्येहरेद्रोगान्कुष्ठलूतादिकानपि । दातव्यसर्वरोगेषु
घृताशिनिहिताशिनि ॥ क्षीराशिनिप्रयोक्तव्यरसायनरते
नरः । ब्रह्मचर्य्यविधानहिविषकल्पेसमाचरेत् ॥ पथ्येस्व-
स्थमनाभूत्वातदासिद्धिर्नसशय । आचार्येणतुभोक्तव्यशि-
ष्यप्रत्ययकारकम् ॥ विषेशुद्धिर्हितदपिमात्रयानान्यथाभ-
वेत् । सर्वरोगप्रशमनदृष्टिपुष्टिकरंविषम् ॥

अर्थ-जो वातकफोद्भगोग नानाप्रकारकी औषधियोंको सेवन करनेसे नहीं दूर होते वे रोग विषके सेवन करनेसे दूर होजातेहैं सर्वऋतुओंमें विष-
मात्राके प्रमाण विधिपूर्वक देना चाहिये । चार महीनेमें विष, कुष्ठ और
लूतादि रोगोंको दूर करताहै और यह सर्वरोगोंमें देना चाहिये । रसायनमें
रत ऐसे मनुष्योंको दूध, घी और हितकारक अन्नका सेवन करना और
ब्रह्मचर्य्यको धारण कर अनन्तर विषका सेवन करे इसप्रकार करनेसे रोगोंका
नाश होताहै । शिष्य और रोगीके निश्चयके लिये प्रथम विष वैद्यको भक्षण
करना चाहिये । शोधित विष मात्राके अनुसार सर्वरोगोंमें देना हितकारक
है । विष दृष्टिको स्वच्छ करनेवाला और शरीरको पुष्टि करनेवाला है ।

विषमात्राप्रमाणम् ।

एकाष्टकभवेद्यावदभ्यस्ततिलमात्रया ।

सर्वरोगहरनृणाजायतेशोधितविषम् ॥

अथ-शोधित विष प्रथम आठ दिनपर्यन्त तिलप्रमाण देना तदनन्तर
एक तिल वटावे इस प्रकार करनेसे सर्वप्रकारकी व्याधियोंका नाश होताहै ।

अन्यच्च ।

प्रथमेसार्पणीमात्राद्वितीयेसार्पणद्वयम् । तृतीयेचतुर्थेचपच-
मेदिवसेतथा ॥ पष्ठेचमप्तमेधैवक्रमवृद्ध्याविवर्द्धयेत् । सप्त-

सर्पपमात्रेण प्रथमसप्तकनयेत ॥ एवमात्राविषदेयं नृतीयेन-
मकेकमात्र । वृद्ध्या हन्यात्प्रदातव्यं चतुर्थसप्तकनथा ॥ एव
सप्तसमायाते परमात्राभिपश्येत् । स्थिरीकुर्याद्यथेच्छन्तु
ततस्त्यागन्तुकारयेत् । सेवनकमहान्यातुविषकल्पस्तु-
रित । एवमात्रासेवनस्याह आमात्रंतुकुष्टवान् ॥ एवमात्रा-
ष्टपर्यन्तपगमात्राधिकामता । विधिनामात्रयाकालेभवे-
त्पथ्यागिनानृणाम् ॥

अर्थ-विष-पहिते दिा एव सप्तगोत्री वरापर, दृग्ने दिन दो मरगोत्री
ममान, तीमरे दिन तीन मरगोत्री ममान भवान् गातदिपरमत्त एव
मरगो राज रोज घटाता जाय और दृग्ने मनादमेभी गात मरगा प्रमाण
तेतारि, तीमरे मनादम फिर ममते एव २ सप्तगो अधिप वरा २ इमप्रकार
तीमरे मनादमे ममते विषकी मात्रा देनी चाहिये । चौथे मनादमे ममते
वृद्धि कर देनी चाहिये । इमप्रकार गात मनाद यातनेपर श्रेष्ठ विधि विपरी
पथ्य मात्रा कर्दाई मये-उ स्थिरकरके फिर इमका त्याग करा मरगो
कमती तरे । यह विषकल्पके मरन करनेकी विधि है । इमप्रकार कृपराग
एक गुना प्रमाण रास आठ गुनापथ्य-उ इमकी परम मात्रा है । विधिप्रकार
मात्रा सेवन करना हुआ पथ्यमें रहे ।

विषयगम पथ्यगम ।

पृनक्षीगमिताक्षीद्रगोवृमास्तण्डुलास्तथा । मरीचमेन्यय
द्राक्षांमधुरपानकहिमम् ॥ जलनय्यहिमंदं हिमं रात्रिदिम
जलम् । विषम्यनेयकोमत्योभजेदतिविचक्षण ॥

अर्थ-विष सेवन करनेवाले मनुष्यको घी, दूध, मधु, नई, पानी,
पार्श्वमिरा, मीठानमर, लाल मधु और शीतल, पानर, द्रव्यादिक,
शीतल, शीतका और शीतल द्रव्य सेवन करना चाहिये ।

माषाधिक्यमात्रावर्धयति ।

मात्राधिक्यदामर्त्य प्रमादाद्भयं विषम् । अष्टांशान्तास्तदा
तेन जायते तस्यैव दिनः ॥ नोमात्र प्रथमेवेति द्वितीयेरेषां भवे-
त्त । गेनृतीविदाहः स्यात्तुर्थपतनभवेत् ॥ पेतन्पुपनमे

वेगेपष्टेवैकल्यमेवच । जडतासप्तमेवेगेमरणचाष्टमेभवेत् ॥
विषवेगानितिज्ञात्वामत्रतत्रैर्विनाशयेत् । यावन्नाष्टमवेगन्तु
संप्राप्नोतिहिमानवः ॥

अर्थ—जिस समय जो मनुष्य प्रमादके वश होकर मात्रामे अधिक विषको भक्षण करलेताहै उस मनुष्यके उसीसमय आठ वेग उत्पन्न होतेहैं तहा प्रथम वेगमें रोमाञ्च और दूसरेमें कम्प, तीसरे वेगमें दाह चीथे, वेगमें शरीरका गिरना, पाचवें वेगमें मुखमें झागोंका आजाना, छठे वेगमें विकलता, सातवें वेगमें जडता और आठवें वेगमें मरण होताहै । इसप्रकार विषके वेगोंको जानकर जबतक आठवाँ वेग न आवे तबतक मन और तनमें नाशकरे ।

विषको उतारना ।

अतिमात्रयदाभुक्तवमनतस्यकारयेत् । दद्यात्तावदजादुग्ध
यावद्भ्रान्तिर्नजायते ॥ अजादुग्धयदाकोष्ठेस्थिरीभवतिदेहि-
न । विषवेगंततोजीर्णजानीयात्कुशलोभिषक् ॥

अर्थ—जो कोई मात्रासे अधिक विषको खाले उमको वमन करावे जब तक वमन न हो तबतक बकरीका दूध पिलादे जिस समय बकरीका दूध कोठेमें स्थिर होजाय उसी समय विषका वेग उतर जायगा ।

अन्यच्च ।

विपंहन्याद्रस पीतोरजनीमेघनादयो ।

सर्पाक्षिटकणवापिघृतेनविषहृत्परम् ॥

अर्थ—हलदी और चालाई तथा सर्पाक्षि अथवा मुहागा और घी देनेसे विषका नाश होता है ।

अन्यच्च ।

पुत्रजीवकमज्जावापीतानिम्बकवारिणा ।

विषवेगनिहन्त्येवघृष्टिर्दावानलंयथा ॥

अर्थ—जियापीता घृक्षकी मज्जाको नींबूके रसम उवाल्कर पीनेसे विषवे-
गका नाश होता है जमे घृष्टिसे दावानल्का नाशहोता है ।

अतिमात्रयदाभुक्ततदाज्यटकणंपिवेत् ।

कान्तिवर्द्धक तथा त्रिदोष और सर्वव्याधिनाशक है । अशुद्धशखिया-सप्त-
धातुनाशक तथा दाह, चित्तभ्रम, लालास्राव, मृत्ति, अनेक प्रकारकी पीड़ा,
बहुव्याधि और वृषाको उत्पन्न करे है यह मूर्खके हाथमें कभीभी नहीं देना
और न कहना तथा उसके समीपभी न रखना क्योंकि यह प्राणनाशक है ।

अथ उपविषनामानि ।

अर्कक्षीरस्तुहीक्षीरतथैवकलहारिका ।

करवीरोऽथधुस्तूर.पञ्चचोपविषा.स्मृताः॥ (अमरकोश)

अर्थ-आकका दूध, सेटुण्डका दूध, कलिहारी, कनेर और घतूरा यह
पाच उपविष हैं ।

अन्यच्च ।

अर्कक्षीरस्तुहीक्षीरलाङ्गलीकरवीरक ।

गुञ्जाहिफेनोधुस्तूरःसप्तोपविषजातय ॥ (भा० प्र०)

अर्थ-आकका दूध, सेटुण्डका दूध, कलिहारी, कनेर, घुघुची, अफीम
और घतूरा यह सात उपविषकी जाति हैं ।

अपिच ।

सुहृर्कलाङ्गलीगुञ्जाहयारिविषमुष्टिकः ।

जैपालोन्मत्ताहिफेननवोपविषजातय ॥

अर्थ-सेटुण्ड, आक, कलिहारी, घुघुची, कनेर, कुचिला, जमालगोदा,
घतूरा और अफीम यह ९ उपविषकी जाति हैं ।

इति श्रीशालिग्रामत्रैलोक्यचिन्ते शास्त्रिणामनिर्णयभूषणे त्रिपोपविषवर्ग समाप्त ॥ ९ ॥

अथ धान्यवर्गः ।

धान्यनामानि ।

धान्यभोग्यचभोगार्हमन्नाद्यजीवसाधनम् ।

अर्थ-धान्य, भोग्य, भोगार्ह, अन्न, आद्य, जीवसाधन (स्तम्भ-
करि, व्रीहि)

धान्यभेदा ।

शालिधान्यव्रीहिधान्यशूकधान्यतृतीयकम् - । शिम्बीधा-
न्यक्षुद्रधान्यमित्युक्तधान्यपचकम् ॥ शालयोरक्तशाल्याद्या-

त्रीहयःपष्टिकादयः । यवादिकशूकधान्यमुद्राद्यंशिविधान्यकम् ॥ कंवादिकंक्षुद्रधान्यतृणधान्यचतस्सृतम् ॥

अर्थ-शालिधान्य, ग्रीहिधान्य, शूकधान्य, शिवीधान्य और धुद्राधान्य इन भेदोंसे धान्य पाच प्रकारके कहें । तथा रक्तशालिआदि शालिधान्य, तादीआदि ग्रीहिधान्य, जौको आदिसे शूकधान्य, मूगको आदिसे शिवीधान्य और कणुनीको आदिसे धान्योंको गुरुधान्य कहते हैं और क्षुद्रधान्योंको तृणधान्यभी कहते हैं ।

शालिधान्यनामानि ।



धान



पुष्प

रक्तशालिःमकलम पाण्डुक शकुनाहन । मुगन्धरःकद-
मकोमहाशालिभद्रपक ॥ पुष्पाण्डक पुष्पुर्गिकन्तया
महिषमस्तक । दीर्घशूक काञ्चनकोदायनोलोभपुष्पक ।
हत्वाद्याःशालय मन्निपहवोनहुदेभजा । अन्यविन्ता-
ग्भीतेस्तेममन्नानाजमापिता ॥

अर्थ-रक्तशालि, मकल, पाण्डु, शकुनाहन, मुगन्धर, कदम, कोमहाशालि, भद्रपक, पुष्पाण्डक, पुष्पुर्गिकन्तया, महिषमस्तक, दीर्घशूक, काञ्चनकोदायन, ओलोभपुष्पक और हत्वाद्याः शालय, मन्निपहवो, नहुदेभजा । अन्यविन्ता-ग्भीतेस्तेममन्नानाजमापिता ॥

| | |
|-----------------|-----------------------------|
| संस्कृतभाषामें | शालि, तण्डुल । |
| हिन्दीभाषामें | धान, शालिधान, चावल । |
| बगभाषामें | शालिधान्य, चाउल । |
| मराठीभाषामें | साळी, भात । |
| गुजरातीभाषामें | शाल्य, चोखा । |
| कर्णाटकीभाषामें | नेलु । |
| तेलुगुभाषामें | वान्यमु, धीयमु । |
| इंग्रेजीभाषामें | राईस । Rice |
| लैटिनभाषामें | ओरिझासेटाईवा । Oryza sativa |
| फारसीभाषामें | विरज । |
| अरबीभाषामें | उरज । |

शालिधान्यलक्षणम् ।

कण्डनेनविनाशुक्लाहैमन्ताःशालय.स्मृता

अर्थ-जो विना छरे फटके सफेद हों उनको शालिधान कहते हैं और शालिधान हैमन्तऋतुमें होते हैं इस कारण इनका हैमन्तिक नामभी है ।

शालिधान्यगुणा ।

शालयोमधुरा स्निग्धावल्यावद्भाल्पवर्चसः ।

कपायालघवोरुच्या.स्वर्य्यावृष्याश्ववृहणाः ॥

अल्पानिलकफा.शीता.पित्तघ्नामृत्रलास्तथा ।

अर्थ-शालिधान-मधुर, स्निग्ध, बलकारक, अल्पप्रमाणमलोघक, कपेले, हलके, रुचिकारक, स्वरको शुद्ध करनेवाले, वीर्यवर्द्धक, पुष्टिजनक, कुष्ठक वातकफको कुपित करनेवाले, शीतल, पित्तनाशक और मूत्रजनक है ।

अपिच ।

शालयोदग्धभूजाता कपायालघुपाकिनः । सृष्टमृत्रपुर्णपा-
श्वरूक्षा.श्लेष्मापकर्षणा । केंदारावातपित्तघ्नागुग्वा कफजु-
कलाः । कपाया.स्वल्पवर्चस्कामधुराश्ववृहदा ॥स्थल-
जा स्वादव पित्तकफघ्नावातपित्तदाः । किञ्चित्तिक्ता कपा-
याश्वविपाकेकटुकाअपि । वापितामधुगवृष्यावल्याःपित्त-
प्रणाशनाः ॥श्लेष्मलाश्चाल्पवर्चस्काः कपायागुग्वाहिमाः ।

वापितेभ्यांगुणे. किञ्चिर्द्विना प्रोक्ता अवापिता ॥ रोपिता-
स्तुनवावृष्या पुगणालवव स्मृताः । तेभ्यस्तुगेपिताभ्यः
शीघ्रपाकागुणाधिकाः ॥ छिन्नरुद्धादिमारुन्नात्रल्या पित्त-
कफापहा । वडविट्का रुपायाश्चलचवश्चाल्पतितका ॥

अर्थ-नवीद्वयं पृथ्वीमें उत्पन्न हुये शांतिधान-कपेले, लघुपारी, मन्
और मूत्रको कानेवाले, रुगे और कफको शोखनेवाले हैं । रोनेमें उत्पन्न हुये
शांतिधान-वातपित्तनाशक, भारी, कफकारी, शुक्लजनक, कपेले, अल्पम
वर्तक, मधुर और घटवर्तक हैं । स्थलमें उत्पन्न हुये शांतिधान-रुग्निह,
पित्तकफनाशक, वातपित्तवर्तक, किञ्चि-कपेले, कपेले और पाकमें गट्टु हैं ।
वापित्तधान्य-मधुर, वीर्यवर्तक, घटकारक, पित्तनाशक कफनाशक,
अल्पमलवर्तक, कपेले, भारी और शीतक हैं । अवापित्तधान्य वापित्तधान्यो
किञ्चित् हीन गुणवाले हैं । रोपित्तधान्य-वीर्यवर्तक हैं और वही
पुगन दानेपर इसके होजाते हैं । और = पानोंकी अवेसा रोपित्तधान्य
अतिगुणवाले और शीघ्रपायी हैं । छिन्नरुद्धादिधान्य-शीतल, रुगे,
घटकारक, पित्तकफनाशक, मलरोधक, कपेले, इसके और किञ्चित् वडव हैं ।
रुग्णादिगुण ।

उक्तशालिर्वन्तपुवत्योवर्णमिदोपजित । चक्षुष्योमृन्मल
स्वर्य्यं शुक्लस्तृद्वज्रगपह ॥ विषव्रणभामसामदादनुद-
द्विपुष्टिद । तस्मादल्पान्तगुणा शालयोमददादय (पा. २.)

अर्थ-शालिर्वातपित्तधान्य (दाउदगरी धान)-गम धान्योंमें उत्तम है,
मन्वर्तक, भारीके रगको उत्पन्न करनेवाले, विद्रोपनाशक, मन्को
रिक्कारी, सुप्रपाक, स्वको अंग करनेवाले, शुक्लजनक, लघुपाकाय
रुग्णाशक, विषविनाशक, मलनाशक, पाकमें गट्टु करनेवाले, शीतकी
इनेवाले, दादको दूर करनेवाले और पुष्टिको देनेवाले हैं । मरुतादि अतिरि
गुण उत्तमशालिधानकी अवेसा कम है ।

मरुतादिधान्यगुणः ।

रागाप्रशालिकाग्निग्धामभुगनामिर्वीपनी। यत्तु सान्निधातुप-
थ्यसन्तानत्रिवोपहा ॥ लघ्वीगुणभ्यधिकज्ञेयानेयोत्तमो-
न्मभेताग्नान्नाधारणाज्ञेयाभ्यगुणर्गमि ॥ (ग्ला. २.)

अर्थ—राजशालि (इसराज, वाँसमती इत्यादि)—स्निग्ध, मधुर, अग्निप्र-
दीपक, बलकारक, कान्तिजनक, धातुवर्द्धक, पथ्य, त्रिदोषनाशक और
हलके हैं । ये सफेद, लाल और काले इन भेदोंसे तीन प्रकारके हैं इन
तीनोंके गुण एक २ से अधिक हैं ।

अन्यच्च ।

रक्तशालिर्महाशालिः कलमापष्टिकापरा । खञ्जरीटापसा-
हीचजीरकान्याकपिञ्जला ॥ सौगन्धीशूकलाचान्याविल-
वासीकचोरका । गरुडारुक्मवन्तीचकलमान्यातथापरा ॥
विल्वजामागधीपीताताम्रादशशालयः ।

अर्थ—रक्तशालि, महाशालि, कलमा, पष्टिका, खजरीटा, पसाही,
जीरका, कपिञ्जला, सौगन्धी, शूकला, विलवासी, कचोरका, गरुडा,
रुक्मवन्ती, कलमा, विल्वजा, मागधी और पीता इन भेदोंसे शालिधान
अठारह प्रकारके हैं ।

तेषांगुणाः ।

रक्तशालिस्त्रिदोषघ्नीचक्षुष्यामूत्ररोगहा । महाशालिर्गुरुवृ-
ष्याचक्षुष्यावलवर्द्धिनी ॥ शीतागुरुस्त्रिदोषघ्नीमधुरापप-
ष्टिका । जीरकावातपित्तघ्नीकलमाश्लेष्मपित्तहा ॥ कपिञ्ज-
लाश्लेष्मलास्यान्मागधीकफवातला । विलवासीगुरुश्चापि
पित्तघ्नीशुक्रवर्द्धिनी ॥ शूकलापित्तवातघ्नीकचोरापित्तनाशि-
नी ॥ गरुडान्याचवातघ्नीपित्तमूत्रगदापहा ॥ रुक्मवन्तील-
घुरुचित्रलपुष्टिकरीमता । कलमान्यालघुःपथ्यावातश्लेष्म-
विवर्द्धिनी ॥ विल्वजामागधीपीतासामान्यास्तागुणागुणैः ॥
रुचिकृद्वलकृन्मूत्रदोषघ्नीचश्रमापहा ॥ दग्धग्रामाचलेजा-
ता शालयोलघुपाकिनः । सुपथ्यावद्विण्मूत्रारुक्षा श्ले-
ष्मापकर्षिणः ॥ केदारप्रभववृक्षावातपित्तविनाशिनः ।
रक्तपित्तविकारघ्नावातला कफकारका ॥ देशेर्देशेविभिन्ना-

निनामानिपरिलक्षयेत् । समान्गुणैश्च सर्वान्स्तान्भूमिभागो-
द्भवान्विदुः ॥ शालयश्चित्ररोहाश्चमूत्रलायातलाहिमा । हागीत

अर्थ-रक्तशालिधान-त्रिदोषनाशक, नेत्रोंको हितकारी और मृश्ररोगको दूर करे है । महाशालिधान-भारी, वीर्यवर्द्धक, नेत्रोंको हितकारी और पलकारी है । पथिक शालिधान-शोथल, भारी, त्रिदोषनाशक और मृश्र है । जीरफ शालिधान-वातपित्तनाशक है । कर्माधान-कफ और पित्तको दूर करे है । रुषिभट्ट शालिधान-कफकारक है । मागधी शालिधान-कफ और वातको करे है । विलवामी शालिधान-भारी, पित्तनाशक और शुक्रवर्द्धक है । शूकना शालिधान-पित्तवातनाशक है । कण्ठोद्य शालिधान-पित्तनाशक है । गरुड शालिधान-वातविनाशक तथा पित्त और मृश्ररोगको दूर करे है । रत्नमन्त्री शालिधान-हृत्क, रक्तिकारक, घनवर्द्धक और पुष्टिकारक है । दृग्मे प्रवास्य कर्माधान-रक्तक, कफ और वातकवर्द्धक है । पिल्लजा, मागधी और पीता पद तीनों मकरांश शालिधान गुण और दोषोंमें समान है । रुषिकारक, पत्रकारक मृश्ररोग नाशक और श्रमरोगहारक है । दधद्राम और परतमे उपमे शालिधान-लघुपाकी है, पथ्य, मलमृश्ररोग, रुग्ने, और रक्तको मोचनेवाला है । मेतमे उपमे शालिधान-रुग्ने वातपित्तनाशक, रक्तपिच्छिनाशक, रक्तवर्द्धक और कफकारक है । इन सब शालिधानावे नाम अंग २ में भिन्न है । सर्व प्रकारके शालिधान मयमरारकी भूमिरे भागोंमें उपलब्ध हुए गुणोंमें समान है । हिमरोदशालिधान मृश्ररोग, वातकारक और शीतल है ।

शालिधानावधत्तम् ।

वापिता रुष्टिना शुक्रात्रीदयश्चिम्पाकिन । कुण्ठनीति

पाटलशङ्खुमुद्राण्डकदन्त्यपि ॥ शालग्रामस्तनमुपहत्याया

मीतय मृत्ना । कुण्ठनीति मयिज्ञाय

पाटल पाटलापुष्पपुष्पकोटिदिग-

कुण्डलाण्डकदन्त्यपि

लदन्त्यपि ।

शालग्रामा ॥

॥

॥

॥

॥

न्दिनोवद्धवर्चस्कापष्टिकैः समाः ॥ कृष्णव्रीहिर्वरस्तेषां
तस्मादल्पगुणा परे । (भा० प्र०)

अर्थ—व्रीहिधान-वर्षाकालमें पकतेहैं यह धान छरनेमें सफेद और बहुत
देरमें पकतेहैं व्रीहिधान अनेक प्रकारके होतेहैं जैसे कृष्णव्रीहि, पाटल,
कुक्कुटाण्डाकृति, शालामुख और जतुमुख इत्यादि । जिसके तुप और चावल
काले रंगके हों उसको कृष्णव्रीहि कहतेहैं । जिसका रंग पाटलके फूलकी
समान हो उसको पाटलाव्रीहि कहतेहैं । जिसका आकार मुरगेके अंडेकी
समान हो उसको कुक्कुटाण्डव्रीहि कहतेहैं । जिसका गूँक और चावल काला
हो उसको शालामुख कहतेहैं । जिसके मुखका रंग लाखकी समान हो
उसको जतुमुखव्रीहि कहतेहैं । सर्वप्रकारके व्रीहिधानपाकमें मधुर, शीत-
वीर्य, अल्प अभिष्यन्दि और मलरोधक । व्रीहिधानोंमें कृष्णव्रीहिधान
अधिक गुणवालेहैं, शेष अल्प गुणवाले हैं ।

अन्यञ्च ।

कृष्णव्रीहिस्रिदोषघ्नीमधुराकाश्रयहातथा ।

पित्तघ्नीपिच्छिलाशुक्ररूपवर्णवलप्रदा ॥ (वै० नि०)

अर्थ—कृष्णव्रीहिधान-त्रिदोषनाशक, मधुर, कृशतानाशक, पित्तनिवारक,
पिच्छिल तथा शुक्र, रूप और वर्ण तथा बलको देवें ।

पष्टिकलक्षण नामानि च ।

गर्भस्थाएवयेपाकयान्तितेपष्टिकामतापष्टिक शतपुष्पश्च
प्रमोदकमुकुन्दकौ ॥ महापष्टिकइत्याद्या पष्टिका समुदाह-
ता । ऋतेऽपि व्रीहयप्रोक्ताव्रीहिलक्षणदर्शनात् ॥

अर्थ—जो बालमेंही पकजावें उनको पष्टिक धान्य कहते हैं । पष्टिक,
शतपुष्प, प्रमोदक, मुकुन्दक, महापष्टिक (पष्टिका, पष्टिशालि, पष्टिज,
स्निग्धतण्डुल, पष्टिवासरज) इत्यादिक पष्टिकधान्य कहलाते हैं । इनमें
व्रीहिधानोंके लक्षण मिलनेसे यह व्रीहि कहे जाते हैं ।

अन्यञ्च ।

योव्रीहि पष्टिरात्रेणपच्यतेसतुपष्टिक ।

अर्थ—जो धान ६० रातमें पकके तैयार होजायें उनको पष्टिकधान्य
कहते हैं ।

अष्टमस्कन्धः ।

पष्टिकामधुन 'शीतालघवोवद्धवर्नस' । वातपित्तप्रशमनाः
शालिभि मट्टशागुणे । पष्टिकाप्रवगतेर्पालघ्नीविन्ध्यावि-
दोपजित ॥ म्वाद्दीमृद्दीमाहिणीचमलदाज्वरहाग्नि । रक्त-
शालिगुणैस्तुल्यास्तत स्वल्पगुणाः परे ॥ (भा० ५०)

अर्थ-पटिक (माटीघान)-मायुर, जीतम, इलके, मन्त्राधिक वास
पित्तनाशक, यह गुणोंमें शास्त्रिधानके समान है। मरुदहाके भास्वोंमें
पटिक धान्य उत्पन्न है, इलके, मिस्र, प्रियंवदाशक, व्याग्नि, नम्र,
मलरोधक, यन्त्रायक, प्रमाणाक। इनके गुण वायु शास्त्रिधानोंकी समान
जानने और ७ धान इनमें हीनगुणवाले हैं।

सुगन्धः ।

मित्रघोषाक्षीयुरु स्वादुसिद्धोपघ्नन्मिथोहिमः ।

पट्टिकोन्नीदिपुश्रेष्ठोगोश्रानितगोस्त ॥ (पाभय)

अर्थ-मागीपान-मिथ्य मन्त्रोपाय, स्वादि, शिरोपनाशक, मित्र, शीतल और मरधानाम धेनु है। यह रज्जि, भेड़से दूध और गौ से मकागरे है तथा उष्णपक्षि पानार्थी अनेक पौधपक्षिपान अधिक गुणवाले है।

॥६॥

चिरंयातदगमिदोषजमन पन्थ सदाप्राणिनां श्रेष्ठोर्मादि
पुपष्टिश्च श्रमदः कृच्छ्रादिदोषापातः ॥ गौरक्षानितगौर-
तौपिनिनगंसेय इगेन्युजमे अत्रंक्षानदर सतत्पद-
तानादिदोषापातः ॥

[illegible][illegible]

भिन्न २ हैं । सस्कृतग्रन्थोंमें अनेक नाम कहे हैं जैसे कलम, सुगंधशालि, धान्योत्तम, राजभोग्य, सुवर्णशालि, प्रमोदक, पष्टिक इत्यादि अनेक जाति हैं वह सर्व नहीं लिखी क्योंकि वर्तमानकालमें सस्कृत नाम प्रचलित नहीं हैं देश २ में जुदे २ नाम हैं जैसे इस देशमें हसराज, वासमती, सुनखर्चा, विंदली, दाऊदखानी, मुनिया, रायमुनिया, दलवादल, चवल, फतेपुरी, वकी नागपुरी, मोथा इत्यादि प्रचलित हैं अगर इसी देशके नाम लिखें तो १०० पृष्ठकी पुस्तक तैय्यार होजाय । जो साठ दिनमें पककर तैय्यार होजायें उनको साठीधान कहते हैं । साठीधान और धानोंकी अपेक्षा हल्के और पथ्य हैं । जौ, गेहू, बाजरा, ज्वार इत्यादिको शूकधान्य कहते हैं । मूंग, उडद, मोठ, चने इत्यादिको शिम्बीधान्य कहते हैं । शमा, कगुनी, कोदों आदि तृणधान्य हैं ।

यवनामानि ।

यवस्तुमेध्य सितशूकसंज्ञोदिव्योक्षतः कचुकिधान्यराजौ ।

स्यात्तीक्ष्णशूकस्तुरगप्रियश्च शक्तुर्हयेष्टश्च पवित्रधान्यम् ॥

अर्थ—यव, मेध्य, सितशूक, दिव्य, अक्षत, कचुकि, धान्यराज, तीक्ष्ण-शूक, तुरगप्रिय, शक्तु, हयेष्ट, पवित्रधान्य (शितशूक, हयप्रिय, यवक, श्वेतशुद्ध, प्रवेद, शीतशूक, कचुकी, तुरगप्रिय)

सस्कृतभाषामें यव ।

हिंदीभाषामें जौ ।

बगभाषामें यव ।

गुजरातीभाषामें जव ।

मराठीभाषामें जव, जौ ।

कर्णाटकीभाषामें मुडजयव ।

तैलिङ्गीभाषामें यवधान्य ।

तामेलीभाषामें वार्लिअरिसु ।

इंग्रेजीभाषामें विटरवार्ली, पेरलवार्ली । Bitter Barley Pearl

Barley

लैटिन्भाषामें होर्डियदेगुशास्टिकम् । Hordeum Hexastichum

फारसीभाषामें जव ।

अरबीभाषामें जईर ।

यस्य प्रमाणम् ।

यवःसञ्जकनिःशुकहर्गिद्वेतिधामतः ।

मञ्जुकीगुणवास्तस्मात्रि श्रुतोत्पगुण स्मृतः

हर्गिद्विर्णोहीनगुणोमुनिभिःपरिहीर्त्तिनः ।

अर्थ-जो शुक, निःशुक और हर्गि वगैरे इन भेदोंमें नीचे प्रकारके हैं
तथा शुकयुक्त जो गुणाम अधिक हैं, निःशुक जो हीन गुणवाले और हर्गि
वगैरे जो उनमेंही हीन गुणवाले हैं ।

प्रमाणम् ।

यवन्तुर्भीतशुक स्यात्रि श्रुतोऽतियम स्मृतः ।

स्नात्त्यस्तद्वत्सद्वर्गिनस्तन स्वल्पश्रुतिनः ॥ (भा. म.)

अर्थ-शीतशुकवाले जोशुके पर पड़ते हैं, शुकहीन जोशुके भक्तिपर
पड़ते हैं, इरे भगवत् जीको स्तोत्र पड़ते हैं और मायावाय पराशरों गन्ध
पर पड़ते हैं ।

प्रमाणम् ।

रुद्र शीतोशुक स्वादु रुपायोमधुरोयवः ।

शुष्योप्राहीरुपमश्रुत्यात्पित्तश्रानकामनुत ॥ (भा. म.)

अर्थ-जो-शुष्य, शीत, भाही, स्वादु, कषय, मधुर, शीतपरदेव
मल्लोभक, कषणापक तथा विन, भाग और रसमयीको दूर करे हैं ।

प्रमाणम् ।

यव रुपायोमधुर शीतलोलोचनोमृदु । नृणोपुतिलवत्प-

न्योरक्षामेभागिवर्द्धन ॥ कटुपाकोऽनभिष्यन्दीन्मर्या-

यल्लङ्गगुरु । बहुवानमलोपणन्धेय्यारगिनिष्ठिम् ॥

कण्ठन्वगामरक्षेप्मपित्तमंदप्रणाशनः । पीनमक्षामहा-

नोऽन्नमभलोदिनवृद्धप्रपुग ॥ तन्नाऽतिययोन्मूल-स्तो

न्योन्यूनतरस्तनः (भा. म.)

अर्थ-जो-कषय, मधुर, शीतल, लोचन, मृदु, कण्ठोपुतिल (पत्र)।
क्षामर विवर्द्धन, कटु, मधु और भक्तिपरदेव, वाहने कटु, अनभिष्यन्दी,
क्षामको मुद कान्ता, कषणापक भाही, प्राणापक शान्ति कान्ता, मधुर

मलको करनेवाले, वर्णको सुन्दर करनेवाले, पिच्छिल तथा कण्ठरोग, त्वचारोग, कफ, पित्त, मेदरोग, पीनस, श्वास, खासी, उरुस्तम्भ, रक्तविकार और तृषाको दूर करनेवाले हैं । जैसे अतियव और अतियवसे स्तोवय हीनगुणवाले हैं ।

अन्यच्च ।

यव कपायोमधुर सुशीतल प्रमेहजित्तिक्तकफापहारकः ।

अशूकमुण्डस्तुयवोवलप्रदोवृष्यश्चतृणां बहुवीर्य्यपुष्टिदः । (रा.)

अर्थ—जौ—कपेले, मधुर, शीतल, प्रमेहनाशक, कडवे और कफनाशक हैं । अशूक अर्थात् मुण्डे जौ—बलवर्द्धक, वीर्य्यवर्द्धक, वृष्य और पुष्टिकारक हैं ।

गोधूमनामानि ।



गोधूमो बहुदुग्ध स्यादरूपो म्लेच्छभोजनः ।

यवनो निस्तुपक्षीरी रसाल सुगन्धसः ॥

अर्थ—गोधूम, बहुदुग्ध, अरूप, म्लेच्छभोजन, यवन, निस्तुप, क्षीरी, रसाल, सुगन्ध (गोधूम, सुमना,)

तस्करभाषामें गोधूम ।

हिंदीभाषामें गेहू ।

बगभाषामें गम ।

मराठीभाषामें गहू, काठे लाल ग्वाचे (वॉ-) पायेगुल्युवे ।

गुजरातीभाषामें घट ।

कर्णाटकीभाषामें गोदी ।

तेलुगुभाषामें गोदुगु ।

इंग्रजीभाषामें हीट । Wheat

लैटिन् भाषामें ट्रिटिकम्, वटगोरी । Triticum Vulgar.

कार्त्तमापामे

गदुम ।

अरवीमापामे

हिता ।

गोधूमगुणा ।

मधुरोगुरुविष्टम्भीवृण्योवलयोऽथवृहण ।

ईपत्कपाय शीतश्चगोधूम स्याद्विदोपहा ॥ (हा०स०)

अर्थ-गेहू-मधुर भारी, विष्टम्भकारक, वीर्यवर्द्धक, वन्काग्र, शुष्टि-
कारक, कुष्ठेक कपेले, शीतल और विदोपनाशक है ।

अथ ।

गोधूमउक्तोमधुरोगुरुश्चवलय-स्थिर-शुकरुचिप्रदश्च ।

स्निग्धोऽतिशीतोऽनिलपित्तदतामन्धानकृज्जीवनकोलपरेची ॥

अर्थ-गेहू-मधुर, भारी, बलकारी, ठेठो स्थिरकलेबले, शुद्धजनक,
रुचिकारक, स्निग्ध, अत्यन्त शीतल, वातपित्तनाशक, सन्धानकारक, मा-
दायर और कुष्ठेक दस्तावर है ।

अथ ।

गोधूम स्निग्धमधुरोऽनिलपित्तदाहहत ।

गुरु श्लेष्ममदोऽल्लोरुचिरोवीर्यवर्द्धनः ॥ (ग०नि०)

अर्थ-गेहू-स्निग्ध, मधुर, वातनाशक, पित्तनाशक, श्लेष्माकारक, भारी,
करकारी, मदकारक, बलवर्द्धक, रुचिजनक और वीर्यवर्द्धक है ।

अथैष लक्षणगुणा ।

गोधूम सुमनोऽपि स्याद्विषय सचकीर्त्तित । महागोधूमः-

त्याग्र्य पश्चादङ्गात्ममागत ॥ मधूलीतुतत-किञ्चिदल्पा-

सामध्यदङ्गाजा । नि श्लेष्मदीर्घगोधूम-कचित्रन्दीमुखामि-

धः ॥ गोधूमोमधुर शीतोवातपित्तहरोगुरु । रुफेऽशुक्रप्र-

दोवलय स्निग्ध सन्धानकृत्सर ॥ जीवनावृहणोऽण्योऽन-

ण्योरुच्य स्थिरत्वकृत् । मधूलीगीतलान्निग्धापित्तमीमधु-

नल्लघु ॥ शुक्लावृहणीपच्यतद्वन्नदीमुख स्मृत ॥ (भा०)

अर्थ-गेहू महागोधूम, मधूली और दीर्घगोधूम इन भेदोंमें तीन प्रकार-
१. पश्चाद-२. दङ्गा ३. दङ्गा, श्लेष्मदीर्घ, मधूली, रुफे, शुक्रप्र-
दो, वलय, स्निग्ध, सन्धान, कृत्, सर, जीवनावृहण, अन्योऽन-
ण्योरुच्य, स्थिरत्वकृत्, मधूली, गीतलान्निग्धा, पित्तमीमधु-
नल्लघु ॥ शुक्लावृहणीपच्यतद्वन्नदीमुख स्मृत ॥ (भा०)

रके हैं तथा महागोधूम पश्चिम मरुदेश आदिम होते हैं, मधूली गोधूम महागोधूमसे छोटा है यह मध्यदेश (देहली, आगरा, लखनऊ आदि) में होता है और दीर्घगोधूम, शुक्ररहित होता है और कहीं २ नन्दीमुखनामसे भी प्रसिद्ध है । गेहू-मधुर, शीतल, वातपित्ताशक, भारी, कफकारक, शुक्रजनक, बलकारक, त्रिग्व, सन्धानकारक, सारक, संजीवन, पुष्टिकारक, वर्णको सुंदर करनेवाले, रुचिकारी और गरीरको स्थिर करनेवाले हैं । मधूली गेहू-शीतल, त्रिग्व, पित्ताशक, मधुर, हलके, शुक्रजनक, पुष्टिकारक और पथ्य हैं तथा नन्दीमुखके भी गुण इसीके समान जानने ।

यवनालनामानि ।

यवनालोयावनालः शिखरीवृत्ततण्डुलः ।

दीर्घनालोदीर्घशरःक्षेत्रेश्वरक्षुपत्रकः ॥

अर्थ-यवनाल, यावनाल, शिखरी, वृत्ततण्डुल, दीर्घनाल, दीर्घशर, क्षेत्रेश्वर, क्षुपत्रक ।

धवळयावनालनामानि ।

धवलोयावनालस्तुपाण्डुरस्तारतण्डुलः ।

नक्षत्राकृतिविस्तारोवृत्तोमौक्तिकतण्डुलः ॥

अर्थ-धवळयावनाल, पाण्डुर, तारतण्डुल, नक्षत्राकृतिविस्तार, मौक्तिकतण्डुल (जूर्गाह, देवधान्य, जूर्ग, बीजगुणक, चूर्नल, पुष्पगन्ध, सुगन्ध, सेतुवृद्धक)

मुवरयावनालनामानि ।



जुआर.

अथतुवरयावनालस्तुवरश्चरुपाययावनालश्च ।

अपिगुक्तयावनाललोहितलोहिततुवग्धान्याश्च ॥

पारसीभाषामें

गदुम ।

अरबीभाषामें

हिता ।

गोधूमगुणा ।

मधुरोगुरुविष्टम्भीपृष्णोवलयोऽथवृहणः ।

ईपत्कपाय शीतश्चगोधूम स्याद्विदोषहा ॥ (हा०स०)

अर्थ-गेहू-मधुर, भारी, विष्टम्भकारक, वीर्यवर्द्धक, वलकाय, शुद्धि-कारक, कुष्ठेक कपेले, शीतल और विदोषनाशक है ।

अपघ्न ।

गोधूमउक्तोमधुरोगुरुश्चउल्यःस्थिर शुक्ररुचिप्रदश्च ।

स्निग्धोऽतिशीतोऽनिलपित्तहतासन्धानकृज्जीवनकोल्परैचो ॥

अर्थ-गेहू-मधुर, भारी, बलकारी, देशको स्थिरकानेवाडे, शुक्रजनक, रुचिकारक, स्निग्ध, अत्यन्त शीतल, वातपित्तनाशक, सन्धानकारक, प्रा-दायक और कुष्ठेक दस्तावर है ।

अपघ्न ।

गोधूम स्निग्धमधुरोदातन पित्तदाहहृत् ।

गुरु श्लेष्ममदोऽल्योरुचिरोवीर्यवर्द्धनः ॥ (ग०नि०)

अर्थ-गेहू-स्निग्ध, मधुर, वातनाशक, पित्तन, दाहनिशक, भारी, पृथ्वी, मद्यारक, बलवर्द्धक, रुचिजनक और वीर्यवर्द्धक है ।

अपिच्य लक्षणगुणा ।

गोधूम मुमनाऽपिस्याद्विविधःसच कीर्तितः । महागोधूमद-

त्याख्य पश्चाद्वेशात्समागतः ॥ मधुलीतुततःकिञ्चिदरपा-

मामध्यदेशजा । नि श हां दीर्घगोधूम रुचिन्नन्दीमुग्धाभि-

ध ॥ गोधूमोमधुर शीतोऽतपित्तहरोगुरुः । रुफेऽशुक्रप्र-

दोऽल्य स्निग्धःसन्धानकृत्तरः ॥ जीवोवृहणोवर्ण्योऽ-

ण्योरुच्यःस्थिरत्वकृत । मधुली-गीतलास्निग्धापित्तघ्नीमधु-

गल्लपु ॥ शुक्रलावृहणीपव्यानद्वन्द्वीमुग्ग स्मृत ॥ (भा प्र.)

अर्थ-गो मदागोधूम, मधुली और मधुलीगोधूम इन भेदों में तीन प्रका-

१ ५६१६-१५६१६ देगा १५६१६ देगा १५६१६ देगा १५६१६ देगा १५६१६ देगा

रके हैं तथा महागोधूम पश्चिम मरुदेश आदिमें होते हैं, मधूली गोधूम महागोधूमसे छोटा है यह मध्यदेश (देहली, आगरा, लखनऊ आदि) में होता है और दीर्घगोधूम, शुकरहित होता है और कहीं २ नन्दीमुखनामसे भी प्रसिद्ध है । गेहू-मधुर, शीतल, वातपित्तनाशक, भारी, कफकारक, शुक्रजनक, बलकारक, स्निग्ध, सन्धानकारक, सारक, सजीवन, पुष्टिकारक, वर्णको सुदृढ़ करनेवाले, रुचिकारी और शरीरको स्थिर करनेवाले हैं । मधूली गेहू-शीतल, स्निग्ध, पित्तनाशक, मधुर, हलके, शुक्रजनक, पुष्टिकारक और पथ्य हैं तथा नन्दीमुखके भी गुण इसीके समान जानने ।

यवनालनामानि ।

यवनालोयावनालः शिखरीवृत्ततण्डुलः ।

दीर्घनालोदीर्घशरःक्षेत्रेशुश्वेषुपत्रकः ॥

अर्थ-यवनाल, यावनाल, शिखरी, वृत्ततण्डुल, दीर्घनाल, दीर्घशर, क्षेत्रेशु, इक्षुपत्रक ।

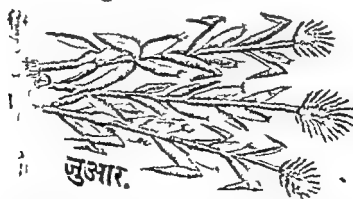
धवलोयावनालनामानि ।

धवलोयावनालस्तुपाण्डुरस्तारतण्डुलः ।

नक्षत्राकृतिविस्तारोवृत्तोमौक्तिकतण्डुलः ॥

अर्थ-धवलयावनाल, पाण्डुर, तारतण्डुल, नक्षत्राकृतिविस्तार, मौक्तिकतण्डुल (जूर्गाद, देवधान्य, जूर्गन्, बीजपुष्पक, जूर्मल, पुष्पगन्ध, सुगन्ध, सेगुरुदक)

तुयरयावनालनामानि ।



अथतुयरयावनालस्तुवरश्चकपाययावनालश्च ।

अपिगुक्तयावनाललोहितलोहिनतुवगधान्याश्च ॥

अर्थ-तुल्यपावनात्-सुवर, कृपायपावनात् रक्तपावनात्, लोहित,
नेत्रितुल्यधान्य ।

अपिच ।

ललिताक्रोष्टुपुच्छाचश्रीखण्डीचसुगन्धिका ।

कृष्णाभाद्रपर्दाचान्याश्चेतामडाचजर्णका ॥

रक्तिकाकुच्चिकाद्याश्चवह्योजर्णाहजातय' ।

अर्थ-ललिता, क्रोष्टुपुच्छा, श्रीखण्डी सुगन्धिका, कृष्णा, भाद्रपर्दा,
नेना, मडा, जर्णका, रक्तिका और कुच्चिका इत्यादि स्वाग्नी भोज
जाति है ।

संस्कृतभाषामें

हिन्दीभाषामें

पराभाषामें

पावनात्, धुवपावनात् रक्तपावनात् ।

कुञ्ज, नरेंद्रपुञ्ज, लालरंग ।

जोरा, चना, धेनूचनार, शालग्राम, लाल-
चना, भुडा ।

मगडीभाषामें

गुजरातीभाषामें

कर्णाटकीभाषामें

तेलुगुभाषामें

इंग्रजीभाषामें

हिन्दीभाषामें

जायन्, जरा ।

जाय, जुता ।

चाण्डदेव, शालग्राम ।

जोरा ।

जोरा । मगडी भाषा ।

होना, चना । ॥ ८०० ॥

गोमय, चने, चने ।

काश्मीरीभाषामें

पार्सीभाषामें

जोरा ।

विष्णु, शिव, शक्ति ।

पराभाषामें ।

वाचनान्मोगुरु नीतिनामजायतीति ।

वृष्णीगलन्मन्त्रात् स्वादु पित्तस्फापद ॥

रक्तगोमय मनीरुपिभिः पूर्यमीति ॥

अर्थ-इस भाषा, नीति, मन्त्र, मन्त्रोक्त, रक्तगोमय, मनीरु,
रक्त, गोमय, मनीरु इत्यादि विष्णुस्फापद और रक्तगोमय मनीरु
इत्यादि पदोंसे पूरा है ।

धवलोयावनालशुणा ।

धवलोयावनालस्तुपथ्योवृष्योवलप्रद ।

त्रिदोषार्शोव्रणहरोगुल्मारुचिविनाशक ॥

अर्थ—सफेदज्वार—पथ्य, वीर्यवर्द्धक, बलकारक तथा त्रिदोष, त्रिवासीर, व्रण, गुल्म और अरुचिको हट करे हे ।

शार्ङ्गोयावनालशुणा ।

शार्ङ्गोयावनालस्तुश्लेष्मलः पिच्छिलोगुरु ।

शीतलोमधुरोवृष्योवल्य पुष्टिकरोमत ॥

त्रिदोषशमनश्चैवपूर्ववैद्यैर्निरूपित । (नि० २०)

अर्थ—शार्ङ्गोयावनाल—रुफकारक, पिच्छिल, भारी, गीतल, मधुर, वीर्यवर्द्धक, बलकारक, पुष्टिकारक और त्रिदोषनाशक है ।

साजकनामानि ।

वर्जगीनालिकानालीनीलसस्यचसाजक ।

अग्रधान्यवर्जगीकातथानीलकणास्मृता ॥

अर्थ—वर्जरी, नालिका, नाली, नीलसस्य, साजक, अग्रधान्य, वर्जगीका, नीलकणा ।

संस्कृतभाषामें वजरी, साजक ।

हिन्दीभाषामें बाजरा ।

मराठीभाषामें बाजरी ।

गुजरातीभाषामें बाजरो ।

इंग्रेजीभाषामें स्पाइकडमिलेट् Spike millet

लैटिनभाषामें पेनीसीलेया, स्पाइकटा Penicellaria spicata

पेनीसेट, टाइफोडेय Pennisetum typhoidum

फारसीभाषामें गार्वसा ।

अरबीभाषामें जावम ।

अस्य गुणा ।

साजकोवातलोह्योवल्य कान्तिकरोमत ।

अग्निदीप्तिकरश्चोष्णोरुक्ष पित्तप्रकोपनः ॥

स्त्रीकामदोदुर्जरश्चपुस्त्वपुष्टिहरोमत । (नि० २०)

अर्थ-वाजरा-वादी, हृदयको हितकारी, यलकारी, फान्तिजनक, अग्निप्रदीपक, गरम, सूया, पित्तको कुपित करनेवाला, विषको नाशको यदानेवाला, देहमें पचनेवाला तथा पुरुषता और शुष्टिको हर्नेवाला है ।

अन्यथा ।

वर्जरीदुर्जगजेयाकफवातप्रणाशिनी ।

अथ-वाजरा-देहमें पचनेवाला और कफवातको हर्नेवाला है ।

धर्माभायनामानि ।

शमीजा.शिम्विज शिम्बीभवामृष्याश्ववेदला ।

अर्थ-शमीज, शिम्विज, शिम्बीभव, मृष्य, वेदल ।

धर्माभायनामानि ।

वेदलामधुरारक्षा कपाया.कट्टपाकिन ।

वातला.कफपित्तप्रावृद्धमृत्रमलाहिमाः ॥

ऋतेमुद्रमसृगभ्यामन्येत्वाध्मानकारका ।

अर्थ-शिम्बीधान्य (मूंग, मसूर, मोठ, उख, लोपिया, चने, अदरक, मटर, सुल्फी इत्यादि)-मधुर स्वे, कण्ठे, पचनेमें कटु, वातहारक, कफ-पित्तनाशक, मृत्रमल्लोपक, शीतल इनमें मूंग और मसूरको छोड़कर शेष सर्व आध्मानकारक हैं ।

अथवा ।

शिम्बीधान्यतुमधुरशीतलक्षकपायकम् । कट्टपाकेवातल
चमृत्रलंमलस्नम्भकृत ॥ मसृगमुद्रदितंगुनाध्मानका-
रकम् । तेषादिनाग्लक्षोपमेदपित्तकफापहम् ॥ (१० नि०)

अथ-शिम्बीधान्य मधुर शीतल रस, कपाय पाकमें कटु वादी, मृत्रजनक मलस्नम्भक इनमें मसूर और मूंगको छोड़कर शेष सब शिम्बी-धान्य भारी और आध्मानकारक हैं । इनका तेषादिक कर्मोंमें मन्दिता, मेघ, पित्त और कफका नाश होता है ।

मुद्रनामानि ।

मुद्रन्तसूपश्रेष्ठ स्यादणार्द्राश्चरमात्तम ।

भुक्तिप्रदोहरानन्द सुफलताजिभोजन ॥

अर्थ-मुद्ग, स्रपश्रेष्ठ, वर्णार्ह, रसोत्तम, भुक्तिप्रद, ह्यानन्द सुफल, वाजिभोजन ।

| | |
|-----------------|--------------------------------|
| सस्कृतभाषामें | मुद्ग । |
| हिन्दीभाषामें | मूग । |
| वगभाषामें | मुग |
| मराठीभाषामें | हिरवे मूग, पिवळे मूग । |
| गुजरातीभाषामें | मग लीला, काला कच्छी । |
| कर्णाटकीभाषामें | हेसयेरु । |
| तैलिङ्गीभाषामें | पेसलु । |
| पजाबीभाषामें | मूजि । |
| इंग्रेजीभाषामें | ग्रीन ग्रेन । Green gram |
| लैटिन्भाषामें | फेसीओलस मुगो । Phaseolus Muego |
| फारसीभाषामें | बुनुमाप । |
| अरबीभाषामें | मज । |

मुद्गगुणा ।

शीत कपायोमधुरोलघु स्यात्पैत्तास्रभृदोपहर सरश्च । विपा-
कतोऽसौकटुकप्रधानोमुद्गस्तथान्यःकथितोऽभिरम्य (हा०)

अर्थ-मूंग-शीतल, कपेली, मधुर, हल्की, पित्त और रक्तके दोषको दूर करनेवाली, सारक, विपाकमें कटु और रमणीक है ।

अन्यञ्च ।

कृष्णमुद्गामहामुद्गागौराहरितपीतका । श्वेतारक्तास्तुनि-
र्हिष्टालघव पूर्वपूर्वतः ॥ प्रधानाहरितास्तत्रवन्यमुद्गास्तुमु-
द्रवत् । मुद्ग कपायोमधुर कफपित्तास्रजिह्वः ॥ ग्राहीशी-
त-कटु-पाकेचक्षुष्योनातिवातलः ॥ (राज०नि०)

अर्थ-मूंग-अनेक प्रकारके होते हैं जैसे कृष्णमुद्ग, अरुणमुद्ग, गोरवर्णमुद्ग, हरितमुद्ग, पीतमुद्ग, श्वेतमुद्ग और रक्तवर्णमुद्ग इनमें पूर्वमे पूर्व मूंग लघु है अर्थात् रक्त मूंगसे सफेद मूंग, सफेद मूंगसे पीलेमूंग और पीले मूंगसे हरा मूंग हल्का है इत्यादि सर्व मूंगोंमें हरा मूंग प्रधान है । वनमूंग (मोठ) के गुण भी मूंगके समान हैं । मूंग-कपेली, मधुर, कफनाशक, रक्तपित्त-

निवारक, हृत्का, मलगेधक, शीतल, पचनेमें सहा, नेत्रोंमें दितकारी और अत्यन्त शान्तकारक नहीं है ।

अर्थ- ।

मुद्गोदुश्चोलेषुअर्हीरुफपित्तहगेहिम । स्वादुग्लपानिलो
नेत्र्योज्वरघोवनजन्तथा ॥ मुद्गोदुविषध्यामोहरित पी-
तकस्तथा । श्वेतोक्तश्चतेपांतुष्वर्ष प्रसालेषु स्मृत ॥ मुद्ग-
तेनपुन प्रोक्तोहरित प्रसंगेगुणे । चरकादिभिरप्युक्तएष-
वगुणाधिक ॥ (भा०प्र०)

अर्थ-मुद्ग-हृत्का, हृत्का, मलगेधक, कफपित्तनाशक, शीतल, स्वादि, अल्पवातकारक, नेत्रोंमें दितकारी और उष्णको दूर करे है । वनद्वेग (मोठ) के गुणभी मुद्गके समान हैं । मुद्ग अनेक मतारकी है जैसे श्याम, शीत, पीत, गन्ध, स्वाद । इनमें पाँचले २ धृग हल्के ६ मुद्गतेने ६ गे गेकी उत्तम पदार्थ और चरकादिकभी इसीप्रकार कहते हैं ।

अर्थ- ।

मुद्ग पित्तकफापहोत्रणहर कण्डामयमोलेषु पथ्योपातवि-
रक्तजन्तुपुतथानेत्रामयमरुता ॥ नेत्रा-मानकस्तथानिलह-
रोमन्दानलेभस्यते भक्तानामपिचोत्तम स्वर्गकरोमृताम-
यच्छेदन ॥

अर्थ-मुद्ग-पित्तकफनाशक, श्रगविनाशक, कण्डमोगनिवारक, हृत्की तथा वातारक्त, कृमिरोग और नेत्ररोगमें दितकारी है, आमानकारक नहीं, शान्तकारकभी नहीं, मन्दाग्रिको दूर करनेवाली, भोजनके उपरमी कथ्य, स्वादो मोठ करनेवाली और कृद्गोगको हरनेवाली है ।

हृत्कामुद्गनामि ।

हृत्कामुद्गस्तुवामन्तोमाधवश्चसुगहृज ।

अर्थ-हृत्कामुद्ग, वामन्त, माधव, सुगहृज ।

हृत्कामुद्गनामि ।

हृत्कामुद्गन्निदोषभोमपुगेनातनाशन ॥

लघुश्चदीपन पथ्योपलब्धीव्यांगपुष्टिद ।

अर्थ—कालीमूँग—त्रिदोषनाशक, मधुर, वातनाशक, हलकी, दीपन, पथ्य तथा चल, वीर्य और शरीरको पुष्टि देनेवाली है ।

हरिन्मुद्गनामानि ।

शारदस्तुहरिन्मुद्गोधूसरोऽन्यश्चशारद ।

अर्थ—शारद और हरिन्मुद्ग यह दो नाम हरिन्मुद्गके हैं, धूसर और शारद यह दूसरी होती है ।

हरिन्मुद्गगुणा ।

हरिन्मुद्ग कपायश्चमधुरकफपित्तहृत् ।

रक्तमूत्रामयघ्नश्चशीतलोलघुदीपनः ॥

अर्थ—हरिन्मूँग—कपेली, मधुर, कफपित्तनाशक तथा रुचिगविकार और मूत्ररोगको दूर करे है, शीतल, हलकी और दीपन है ।

धूसरमुद्गगुणा ।

तद्वच्चधूसरोमुद्गोरसवीर्यादिपुस्मृतः ।

कपायोमधुरोरुच्य पित्तवातविवन्धकृत ॥ (रा०नि०)

अर्थ—धूसर मूँगकी मूँग रसवीर्यादिकमें तो हरिन्मूँगकी समान है कपेली, मधुर, रुचिकारी तथा पित्त, वात और विरन्धकारक है ।

मकुष्ठनामानि ।

मकुष्ठकोमकुष्ठश्चवनमुद्गकृमीलक ।

अमृतोरण्यमुद्गश्चवल्लीमुद्गश्चकीर्तित ॥

अर्थ—मकुष्ठक, मकुष्ठ, वनमुद्ग, कृमीलक, अमृत, अरण्यमुद्ग, वल्लीमुद्ग, (मुकुष्ठ, मषष्ठ, राजमुद्ग, मयष्ठ, मकुष्ठक, मकुष्ठक, मकुष्ठ, वरक, निगृढक, कुलीनक, खण्डी, मुद्गष्टक, मुद्गष्ट, मयष्टक, मुकुष्ठ, मयृष्ट, मषष्ट, मयक, मयुष्टक, मयुष्ट)

संस्कृतभाषामें मकुष्ठ ।

हिन्दीभाषामें मोठ ।

वगभाषामें वनमूँग ।

मराठीभाषामें मटक्या ।

गुजरातीभाषामें मठ ।

कर्णाटकीभाषामें मुयु, हेसरभेट ।

तेलुगुभाषामें ककपेसाड्ड ।

इंग्रेजीमें एकोनैडेलिड किडनीविन । Acorio leaved Ficus ।

वैदिकभाषामें फेसी ओलम् Phaseolus

एकोनिदि फालीयम् । Aconitum

फारसीभाषामें मापहिदि ।

अथ मृगण ।

सरक्तपित्तकफवानहन्ताचोष्ण कपायामधुर प्रदिष्ट ।

ब्रह्मसुशीतोयुदकीलगुल्ममकुष्ठक सर्वगदामिदन्ति ॥

अर्थ-मोठ-रक्तपित्त, कफ और वातनाशक है, गरम, कपेरी, मधुर, मलरोधक, शीतल तथा शुष्कील, गुल्म और गेगादों दूर कर दे ।

अथ मृग ।

मकुष्ठकः कपाय स्यान्मधुरोरक्तपित्तजित् ।

ज्वरदाहहरः पथ्योरुचिर्त्तमर्बदोपजित् ॥ (रा० नि०)

अर्थ-मोठ-कपेरी, मधुर, रक्तपित्तनाशक ज्वरनाशक दाहहार, पथ्य, रुचिराग्न और तमर्बदोपनाशक है ।

अथ मृग ।

मकुष्ठोवातलोग्राहीकफपित्तदरोलघुः ।

वान्तिजिन्मधुरः पाके कृमिहृज्ज्वरनाशन ॥ (भा प्र.)

अर्थ-मोठ-वादी, मलगायक, कफपित्तनाशक, हलकी, बमननिराग, पचनमें मधुर, कृमिजनक और ज्वरनाशक है ।

अथ मृग ।

मुद्गश्च शीतलोग्राहीकफपित्तत्रयापहः ॥ (राजनिषण्ड)

अर्थ-मोठ शीतल, वादी तथा कफ, पित्त और शयको दूर कर दे ।

अथ मृगण ।

मकुष्ठमृषाऽल्पबल पाचनोदीपनालघुः ।

चक्षुष्योऽदृग्गोऽप्य पित्तश्लेष्मान्नगेननुत् ॥ (इ० गु०)

अर्थ-भायकी शाक-अल्पबलवाक, पाचक, शीपन, शुष्की, नेत्रोंकी रक्षा, शीतपदार्थक तथा पित्त, कफ और रुचिमें रोपाको दूर कर दे ।

माषकाभायिक ।

माषन्तुकुम्भिन्द्रम्याऽन्यदीर्घानुपाकुरः ।

मांसलश्चलद्वाश्चपिज्यश्चपितृभोजनः ॥

अर्थ-माप, कुरुबिन्द, धान्यवीर, वृषाकुरु, मांसल, चलद्वा, पिज्य, पितृभोजन (बीजरत्न, वली)

संस्कृतभाषामं माप ।

हिन्दीभाषामं उडद ।

वगभाषाम मापकलाय ।

मराठीभाषाम उडीद ।

गुजरातीभाषाम उडद ।

कर्णाटकीभाषाम उडु ।

तैलिगीभाषाम मिनुउडु ।

इंग्रेजीभाषाम किड्नीबीन । Kidney bean

लैटिन्भाषाम फेसीओलस रेडीरेटस । Phaseolus radiatus

फारसीभाषाम माप ।

अरबीभाषाम मापा ।

मापगुणाः ।

माप.स्निग्धोबहुमलकर शोषणःश्लेष्मकारी वीर्येऽण्णोद्भ-
दितिकुरुतेरक्तपित्तप्रकोपम् । हन्याद्वातंशुरुबलकरोरो-
चनोभक्ष्यमाणः स्वादुर्नित्यंश्रमसुखवतांसेवनीयोनरा-
णाम् ॥ (रा० नि०)

अर्थ-उडद-स्निग्ध, बहुमलकारक, शोषक, कफकारक, उष्णविर्य, शीघ्र रक्तपित्तको कुपित करनेवाला, वातनाशक, भारी, बलकारी, रुचि-
कारक, स्वादिष्ट तथा श्रम और सुखवान् मनुष्योंको सदैव सेवने योग्य है ।

अन्यञ्च ।

स्निग्धोऽथवृष्योमधुरश्चवल्ग्योमरुत्कफानांपरिवृंहणश्च ।

पाकेम्लकोष्णोविदितोद्विमश्चमापोऽथहृद्य कथितोनरैश्च ॥

अर्थ-उडद-स्निग्ध, वीर्यवर्द्धक, मधुर, बलकारक, वात और कफको घटानेवाला, पाकमें अम्ल, उष्ण, शीतल और हृदयको हितकारी है ।

अन्यञ्च ।

मापोगुरुर्भिन्नपुरीषसृजःस्निग्धोष्णवृष्योमधुरोऽनिलघ्न ।

सन्तर्पण स्तन्यकगेविशेषाद्वलम्भः शुक्रकफावहश्च ॥

अर्थ-उदर-भारी, मलमूत्रको निकालनेवाला, मिश्र, गरम, शीतपदार्थ, मधुर, वाताशुक्र, रुचिकारक, भक्षनाम दूधको जगनेवाला तथा विशेषकरके यल, शुक्र और कफको कटनेवाला है ।

कपायभावात्त्रपुरीषभेदीनमृत्रलोनेनरुफरयकर्ता ।

स्वादुर्विपाकेमधुनेऽलमाद्र'सन्तर्पण स्तन्यरुचिप्रदश्च ॥

अर्थ-उदर कपलेपनमे मलमूत्रको नहीं है और मूत्रजनकमी नहीं है और न कफको कटनेवाला है, पचनेमें स्वादु, मधुर, मिश्र, रुचिकारक, भक्षनाम दूध मगट कटनेवाला और रुचिकारक है ।

मपिच ।

माप स्निग्धोवलश्लेष्ममलपित्तकृ.मर ।

गुरूप्णोनिलहास्वादु शुक्रवृद्धिविरेककृत (वाग्म०)

अर्थ-उदर-स्निग्ध घनकारक, कटमाप, मन्त्रकारक, पित्तकारक, मापक, भारी, गरम, वातविनाशक, स्वादिष्ट, शुक्रजनक और दृक्कारक है ।

भगवत् ।

माप.माधान्न स्निग्ध.गोपणोष्ण.कफप्रद । वृष्यःपित्त-

कृ.पित्तकोपनोगेचकोशुक्र.॥यस्य सन्तर्पण'स्वादु.पुष्टि-

कृन्मृत्रशुक्रल । मलभेदकगेदुग्धकाहोमांसचर्द्धर.॥मेद-

वृद्धिकश्चैवश्वासश्चमनिवाण्ण. । पणिणामभवजलमर्दितन

विनाशयेत । वातचार्शनाशयनीत्येवमायैर्निर्दिष्टपित्तम् ॥(१०)

अर्थ-उदर-स्निग्ध, गोपण, गरम, कफकारक, शीतपदार्थ, पित्तकारक, पित्तको पुष्टि कटनेवाला, कटको उत्पन्न कटनेवाला, भारी, घनकारक, रुचिकारक, स्वादिष्ट, पुष्टिकारक मूत्रजनक, शुक्रकारक मन्त्रकारक, मांसचर्द्धक, मेदचर्द्धक तथा श्वास, श्वास, पणिणामगण, अग्निमान, वात और पचार्शनाशो दू को है ।

वाग्मप्रामाण्यम् ।

राजमापोमहामापक्षपलक्षपल' स्मृत ।

अर्थ-राजमाप, महामाप, वाप, वाप (वरुण, महावाप, दिव्यवाप,

नीलमाष, नृपमाष, नृपोन्नित, भित्तमाष, दीर्घबीज, निष्पाव, राजमाषक,
सुकुमार, दीर्घशिखी, शुवाभिजनक)



संस्कृतभाषामे

राजमाष ।

हिन्दीभाषामे

लोबिया ।

बगभाषामे

बरबटीमलाय, बोरा ।

मराठीभाषामे

चवळ्या (अळसुदे) ।

गुजरातीभाषामे

चोला ।

कर्णाटकीभाषामे

बरबटा, अलमदे ।

पंजाबीभाषामे

रैस ।

इंग्रेजीभाषामे

चाईनिज टोल्कोस । Chinese dolichos

लैटिनभाषामे

डोलिकोस मिनेनरीस । Dolichos sinensis

विगना फ्रॉटोसू । Vigna fruticulosa

फारसीभाषामे

लोबिया ।

अरबीभाषामे

फारिका ।

राजमाषगुणा ।

राजमाषोगुरु स्वादुस्तुवरस्तर्पणः सः । रुक्षोवातकगुरु-

न्य स्तन्योभूरिवलप्रदः ॥ श्वेतगक्तस्तथाकृष्णस्त्रिविधः स-
प्रकीर्तितः। योमहांस्तेषु भवतिसप्तोक्तोगुणाधिकः ॥ (भा. २.)

अर्थ-लोविया-भारी, स्वादिष्ट, कपेला, हृत्तिकाग्र, सारक, रुता,
वातकारक, रुचिजनक, स्तनोंमें दूध करनेवाला और पचकारक है। सतेद,
लाल और काला इन दोनोंमें लोविया हीन प्रकाशके हैं इनमें बड़ा लोविया
अधिक गुणवान् जानना।

अथ ।

गजमाप मरुच्य रुफशुक्राम्लपित्तकृत ।

मत्स्यादुर्वानलोरक्षकपायोविशदोगुरु ॥ (च० सु० म०)

अर्थ-लोविया-गारक, गौरागारक, कपेला गुणवान् अल्पविष
गारक, स्वादिष्ट, वातगारक, रुता, कपेला, शिष्ट भार भाग है।

अथ ।

रत्नोगुरुर्वदुशकृच्चलकृच्चशिम्बीधान्याधमस्त्वममिनागम
एषमिथ्या । गजमापनवगजपदप्रदत्त मापंविहायविधि-
नातददृष्टमेव ॥ (च० अ०)

अर्थ-‘गजमाप’ (लोविया)-जो कि, तुम रुता, भारी, बहुत मलको
करनेवाले, शिम्बीधान्याम अपम हो यह बात मिथ्या नहीं है इतरभी
विषाजाने तुमको और उर्दीको छोड़कर गजपद दिया यह प्राग्भक्त पत्र
नहीं हो क्या है ?

अथ संपुष्पा ।

गजमापभय सूप स्वादूरुक्षकपायक ।

ग्राहीगुरुर्वतकस्तन्यकृद्गुणिकारकः ॥ (दृष्टगुण)

अर्थ-लोवियाका हाड-स्वादिष्ट, भारी कपेला, मन्गेयर, भारी, वात-
गारक, स्तनोंमें दूध मगद करनेवाली और रुचिको उत्पन्न करनेवाली है।

विशेषावकाशः ।

निष्पात्रोगजशिम्बीम्यादल्लक श्वेतशिम्बिकः ।

अर्थ-विशेष गजशिम्बी, हाड, श्वेतशिम्बिकः ।

गजमापभय

विशेष ।

विशेषावकाशः

भयवात, भयवात, रक्तशिराको भीत ।

| | |
|----------------|---|
| वगभापामे | राजशिम्बीबीज, भट्टासु । |
| मगठीभापामे | कडवेवाल, पाढरे पावटे, तावडे पावटे । आँवरे । |
| गुजरातीभापामे | ओलिया । |
| कर्णाटकीभापामे | आवगे, तोरेआवगे । |
| तैलिदीभापामे | आनपचेट्टु । |
| लैटिनभापामे | लेबलेबलगेरीसु । Lablab Vulgaris |
| | निष्पावगुणा । |

निष्पावोमधुरोरुक्षोविपाकेऽम्लगुरुःसरः ।

कपायःस्तन्यपित्तास्रमूत्रवातविबन्धकृत् ॥

विदाह्युष्णोविषश्लेष्मशोथहृच्छुक्रनाशनः ॥ (भा०प्र०)

अर्थ-निष्पाव (भट्टासु)-मधुर, रुखा, पाकमें अम्ल, भारी, वातकारी, कुष्ठक दमतावर, कपेला, स्तनोंमें दूधको प्रगट करनेवाला तथा रक्तपित्त, मूत्र, वात और विवधकारक है, दाहजनक, गरम तथा विष, कफ, सूजन और शुक्रको हरेहै ।

अन्यथा ।

निष्पावोवातपित्तास्रस्तन्यमूत्रकरोगुरुः ।

सरोविदाहिदृक्छुक्रकफशोफविनाशन ॥ (वाग्भट)

अर्थ-निष्पाव-वात, पित्त, रुधिरविकार, स्तनोंमें दूध और मूत्रको उत्पन्न करेहै । भारी, सारक, दाहकारक तथा दृष्टि, शुक्र, कफ और सूजनको दूर करे है ।

अपिच ।

निष्पावोमधुरोरुक्षपाकेम्लःसारकोगुरुः ।

उष्णःशोपकरोवत्य पुष्टिकृत्तुवरोमतः ॥

विषदृष्टिहर प्रोक्तःपूर्ववैद्यैःकृपालुभिः । (र०नि०)

अर्थ-भट्टासु-मधुर, रुखा, पचनेमें अम्ल, सारक, भारी, गरम, सूजनको करनेवाला, वलकारक, पुष्टिकाक, कपेला तथा विष और दृष्टिको हरनेवाला है ।

अन्यथा ।

निष्पावस्तुवरोमेध्योदीपनोमधुरोरसे ।

कंठशुद्धिकरोरुच्योग्राहकोमुनिभिर्मत ॥

निष्पावमदशास्त्वन्येगुणाज्ञेयाधिकित्सकैः ।

अर्थ-संवेद और नील निष्पाव-रुच्ये संधाननर, दीपन, रम्य मसूर,
कंठशोधक रुचिकारक और प्राही इ शेष गुण निष्पावकी समता नाप्ने ।
रक्तनिष्पावगुणः ।

रक्तनिष्पावकोरुच्योमधुर भीनलोमुर ।

किञ्चित्कपायोऽत्यश्वातल.पुष्टिकृन्मतः ॥

आमानकृद्गान्त्वन्येनिष्पावमदशामना ।

अर्थ-लाल निष्पाव-रुचिकारक, मधुर, दीपन, भारी, विधि-रूपेण
यन्त्रादी, वातकारक, पुष्टिका-क, आघातनकारक और दुग्ध निष्पावकी
समान जानने ।

अर्शनिष्पावगुणः ।

नटीनिष्पावकस्निक्त कटुर्वातरोगोमुर ।

रक्तप्रद कफजरोरुचिकृन्नुपगोमतः ॥

विषटोपहृष्टश्चमुनिभिः परिकीर्तितः । (नि० २०)

अर्थ-नटीनिष्पाव-कटुभा, वायव्य, वातकारक, भारी रक्तकारक,
कफकारक, रुचिजनक कफभा और विषट नोसोको हर्मेकारक ।
रक्तप्रदगुणः ।

ममरोगगटालिखतुमद्वल्य पृथुर्गजक ।

मूर कल्याणर्गजश्चगुरोर्गोममूरक ॥

अर्थ-ममूर गमदादि, मद्र ग, प, र्ध रक, मर कल्याणर्गो मूरग, ममूर
(मद्रापर ममूर गीरित म, ममूरि म, ममूरग ह, ममूर,
ममूर, ममूर ममूरि, ममूरि इ या साद्वन्ता)

गमूरगमदादि ममूर ।

ममूरगमदादि ममूर ।

ममूरगमदादि ममूर, २ २ ।

ममूरगमदादि ममूर ।

ममूरगमदादि ममूर ।

ममूरगमदादि ममूर ।

| | |
|---------------|------------------------|
| तैलिगीभाषामे | मसूरपण्डु, चिरशनमल्ल । |
| तामिलीभाषामें | मिसुर, पुरपुर । |
| इथेजीभाषामे | लेंटिल । Lental |
| लैटिन्भाषामें | ईरवेलेन्स । Lravylens |
| फारसीभाषामें | बुनोसुरा । |
| अरबीभाषामे | अदस् । |

मसूरगुणा ।

मसूरोमधुर शीत सग्राही कफपित्तजित् ।

वातामयकरश्चेवमूत्रकृच्छ्रहरोलघुः ॥ (रा० नि०)

अर्थ—मसूर—मधुर, शीतल, मलरोधक, कफपित्तनाशक, वातरोगको करनेवाली, हल्की और मूत्रकृच्छ्र रोगको दूर करे है ।

अन्यश्च ।

रूक्षोविशोपीमधुरःप्रदिष्टःशूलार्तिगुल्मग्रहणीविकारान् ।

करोतिवातामयवर्द्धनश्चपित्तास्रसकृच्छ्रहरोमसूरः ॥ (हा. स.)

अर्थ—मसूर—रूखी, विणोपक, मधुर तथा शूल, गुल्म और सग्रहणीरोगको उत्पन्न करनेवाली है, वातरोगोंको बढ़ानेवाली तथा रक्तपित्त और मूत्रकृच्छ्र-रोगको हरनेवाली है ।

अन्यश्च ।

मासूरालघवोतिरूक्षविशदाश्चक्षुष्यमूत्रग्रहा.

श्लेष्मापित्तनिवर्हणारुचिकरावातव्यथाकारकाः ।

विष्टम्भजनयन्तिकोष्ठधमनकृच्छ्राश्मरीछेदकाः

सर्वेपित्तविकारजेषुविहिताहृद्याश्चमाधुर्यकाः ॥

अर्थ—मसूर—हल्की, अत्यन्तरूखी, विशद, नेत्रोंको हितकारी मूत्रग्रहना-शक, श्लेष्मपित्तनाशक, रुचिकारक, वातरोगकारक, विष्टम्भजनक, मलरो-धक, मूत्रकृच्छ्र, पथरी और सर्व प्रकारके पित्तविकारोंको दूर करे है हृदयको हितकारी और मधुर है ।

अपि च ।

मसूरोलेपनोवर्ण्योरूक्षोऽल्लमलोहिम ।

वाताध्मानकर किञ्चित्पित्तास्रकफहालघु ॥

कपायोमधुरोमेदोहताचासोप्रकीर्तित ।

तत्पर्णभाकतुवरंलघुतिकञ्चकीर्तितम् ॥

अर्थ-मसुरा टोप-बणको मुद्द करेणारा और त्याचे रोगांको हनेणारा हे, मसुर-हत्ती, मन्बदक, दातल, वाढकारक, किवित् आत्मा नकारक, स्तपिच और कानाशक, हलकी, बणेरी, मधुर, मेदनाशक हे । इमरे पचाका शाक-बणेला, हलका और कडवा हे ।

चणकनामानि ।

चणकोहरिमन्थ स्याद्वाजिमन्थश्चजीवनः ।

अर्थ-चणक, हरिमन्थ, वाजिमन्थ, जीवन (हरिमन्थक, हरिमन्थक, चण, मुगन्थ, कृष्णचणक, चान्मोष, वाजिमन्थ, कपुरी, चान्मोष, तन्मन्थिम्)

सरसुभाषामे

चणक ।

दिनीभाषामे

चने, चना, छोटा ।

वगभाषामे

छोटागाढ, मुद्द ।

मराठीभाषामे

हरमरे ।

गुजरातीभाषामे

चण्या ।

कन्नडभाषामे

कडले, बिडीपरुडळे ।

सिन्धीभाषामे

शलगाउ ।

ईंग्लिशभाषामे

माम । Gram

लॅटिनभाषामे

सिगरपुलिपिन । Cicer Aretum

पारसीभाषामे

नगूर ।

अरबीभाषामे

इमम ।

चककण्ठा ।

चणकःशीतलोऽशोरक्तपित्तकफापदः ।

लघु कपायोविष्टभीमानलकुष्ठनाशन ॥ (म.नि.)

अर्थ-चने-चनी, हने, रक्तानेणारक, कफराक, हलके, बणेरी, विष्टभीकाक, शोररभक और कुष्ठनाशन हे ।

चणक ।

चणकःशीतलोऽशोरक्तपित्तकफापदः ।

दीप्तिवर्णकरो बल्योरुच्यश्चाध्मानकारकः ॥ (रा० नि०)

अर्थ—चने—मधुर, रूखे, प्रमेहनाशक, वातपित्तकारक, दीपन, वर्णकारक, बलकारक, रुचिकारी और आध्मानको करनेवाले हैं ।

अपिच ।

रक्तेकफेपीनसकेतुकण्ठेगलामयेवातरुजेसपित्ते ।

शीतःप्रतिश्यायकृमीन्निहन्तिशुष्कस्तथार्द्रश्वणकःप्रशस्तः ।

(हा० स०)

अर्थ—सूखे तथा गीले चने—रुधिरविकार, कफ, पीनस, कण्ठरोग, गलरोग, वातरोग, पित्तरोग, प्रतिश्याय और कृमिगेमको दूर करे हैं और शीतल हैं ।

अन्यच्च ।

चणकोवातलःशीतःकफासृक्पित्तपुंस्त्वनुत् ॥ (रा० व०)

अर्थ—चर्न—बादी, शीतल तथा कफ, रक्तपित्त और पुरुषतानाशक हैं ।

अन्यच्च ।

चणकःशीतलोर्लक्षःपित्तरक्तकफापहः । लघुःकपायोविष्ट-
म्भीवातलोज्वरनाशनः ॥ सचाद्गारेणसभृष्टस्तैलभृष्टश्चत-
द्गुणाः । आर्द्रभृष्टोवलकरोरोचनश्चप्रकीर्तितः ॥ शुष्कभृ-
ष्टोतिरुक्षश्चवातकुष्ठप्रकोपनः । स्विन्नःपित्तकफहन्यात्सूपः
क्षोभकरोमत ॥ आर्द्रोतिकोमलोर्लक्ष्य पित्तशुक्रहरोहि-
मः । कपायोवातलो ग्राहीकफपित्तहगेलघु ॥ (भा० प्र०)

अर्थ—चने—शीतल, रूखे, रक्तपित्तनाशक, कफघ्न, हलके, कपेले, विष्टम्भ-
कारक, बादी और ज्वरनाशक हैं । वही चने अगारा तथा तेलम भुनेहुये
पूर्वाक्त गुणोंको करनेवाले हैं । गीले भुनेहुये चने—बलकारक और रोचक हैं ।
सूखे भुने चने अत्यन्त रूखे तथा वात और कोढ़को कुपित करनेवाले हैं ।
सीजेहुये चने—पित्त और कफनाशक हैं । चनेकी दाल—क्षोभको करनेवाली
है । कच्चे चने—अत्यन्तकोमल, रुचिकारक, पित्तनाशक, शुक्रनिवारक,
शीतल, कपेले, वातकारक, मलरोधक, कफपित्तनाशक और हलके हैं ।

अन्यच्च ।

आमश्चणःशीतलरुच्यकारीसन्तर्पणोदाहृतृपापहागी ।

गौल्योऽमरीशोपविनाशकारीरुपायैषत्कफवीर्यकारो (ग ६)

अर्थ-कफे-चने-शोत, रुचिकारक, कृतिजनक, दाहनाशक, कृपानि
वाहक, गौल्य, अमरीको दू करनेवाले, शोपनाशक, विधिचरित्र, कद
और वीर्यकारक है ।

अपि भृष्टचणगुणा ।

भृष्टस्तुचणकश्चोष्णोरुच्योरक्तकजाकर । लघुर्लघुः शुक्ल
श्चेतेजोवृद्धिकर स्तूत ॥ विनाजलेनचभृष्टाश्चातिग्राश्वपा-
तला । कुष्ठप्रवर्द्धना श्रोतागुणास्त्वन्ये तु पूर्ववत् ॥ (१० नि ६)

अर्थ-भुनेइसे चने-गम, नीचकारी, रक्तगंगाकार, रक्त, यककारक,
शुक्लजनक, शरीरका तेज देनेवाले तथा पर्माना, शक्तिवता, आम, पाठ और
द्रवका तादाते है । मृगे भुनेचने अग्न्य मृगे, पादो, कुष्ठरक्ष और गुण
पक्षिणें गमा जानने ।

कृष्णचणगुणा ।

कृष्णस्तुचणक शीतांमधुरशरमायन ।

बलकृच्छ्रासकानमःपित्तातीनापित्तहा ॥ (नि १०)

अर्थ-कफे चने-शीतल, मधुर, रमायन, पाशरक तथा शान, शान्ति,
पित्तातीना और पित्तको दूर करे है ।

पाशकारगुणा ।

चणकानादलचाम्लकिञ्चिदातप्रकोपनम् ।

मलमन्तम्भकरुच्यतर्पणचाम्निकारकम् ॥

कपलागजप्रोक्तपूर्वमेवै रूपाणुभि ॥ (१० नि १)

अर्थ-चनेका शाक-जल, मिश्रित आनकारक, मलमन्तक, रुचिजनक,
शोषकारक, अक्षिणक और रत्नाकार है ।

मन्त्रम् ।

मन्त्रेणयत्र पावत्याहुर्नरुपमातृकुम् ।

अमृमिष्टम्भजन इंपित्तनुहन्नशोषहत ॥ (भा ० ५०)

अर्थ-यत्र पानेका शाक-जल, अमृमिष्टाणि पानेवाला कद और
पाशकारक, मन्त्र, मिष्टभाजक, पित्तनाशक और शोषको मृष्टको
दुहाते ।

आढकीनामानि ।



अडहर.

आढकीतुवरीवर्यामृत्तालचमृतालकम् ।

काक्षीकरवीरभुजावृत्तबीजासुरापूजम् ॥

अर्थ—आढकी, तुवरी, वर्या, मृत्ताल, मृतालक, काक्षी, करवीरभुजा, वृत्तबीजा, सुरापूज (पीतपुष्पा, मृत्स्ना, तुवरिका, मृतालक, शणपुष्पिका)

संस्कृतभाषामें

आढकी ।

हिन्दीभाषामें

अडहर ।

वगभाषामें

अडहर, आइरि ।

मराठीभाषामें

तुरी ।

गुजरातीभाषामें

तुरदाल्य ।

कर्णाटकीभाषामें

कदलाकटु, तौगरी ।

तैलिंगीभाषामें

कादुल ।

इंग्रेजीभाषामें

पीजीअर्पा । Pigeon pea

लैटिनभाषामें

केजेनम इडिकम् । Cajanus indicus

फारसीभाषामें

शाखुल ।

आढकीगुणा ।

मृदुःकपायाचसरक्तपित्तवातकफहन्तिमुखव्रणञ्च ।

गुल्मज्वरारोचककासघ्निहृद्भोगदुर्नामहराकीत्यात । (हा.)

अर्थ—अडहर—कपेली तथा रक्तपित्त, वात, कफ, मुखव्रण, गुल्म, ज्वर, अरुचि, खासी, वमन, हृदयरोग और चवामीगर्भो टूटकरेहै ।

अथवा ।

तुर्व्यतिकपायाचमेद श्रेष्माणपित्तजित ।

विषन्वाध्मानकृत्स्वादु स्वादुपाकाल्पवानला ॥

शीतलावद्विषमृत्रालध्वारक्षाप्रकीर्तिता । (शो०नि०)

अर्थ-अटहर-अत्यन्त कपेसी, मेरु, रक्त और श्लेष्मपित्तनाशक है विष-
मकारक आत्मानकारक स्वादिष्ट, पचनेमें स्वादिष्ट किंकि गन्धकारक
शीतल, मल और मृत्रको पौषनेवाली, हल्की और करी है ।

अथवा ।

आढकीमधुराकिञ्चिद्वातलाचरुपायका । गुर्वीरुन्याप्राहि-

णीचरुक्षावर्ण्याचशीतला ॥ कफपित्तज्वरविपरक्तमृगुल्म-

वातनुव । अशोनाशकगमोक्तापृत्युक्ताचरातदा ॥ कफ-

पित्तहगलेपे मंकेमेदकफापहा । तुवर्गिदालिकापथ्याकि-

ञ्चिद्वातकरामता ॥ कृमिचिदोपशमनीपृत्युक्ताचिदोपदा ।

अर्थ-तापाग्न अटहर-मधुर किञ्चित् वातकारक कपेसी, भारी, ठीस
करी, मन्तेयक करी वणराग्न, शीतल तथा कटु, पिष्टमर, विष,
दधिरविकार गुन्म वात और पचनेवाली दूर करे और यदि मांस
वातका नाशकरे । इसका रस कायमे कटु और पिष्टका नाश होता है ।
इसका मेक कचनेमे मेद और कटु दूर होते हैं । इसकी दाह-पथ्य, किञ्चित्
वातकारक तथा कृमि और चिदोपदा नाशकरे और मीपुक्त विरो-
धनाशक है ।

अथवाकोशुल ।

श्वेतातुतुर्गुर्वीरानपित्तप्रकोपदा ।

अमृतपित्तजगमादिष्यपथ्या मानकारिणी ॥

अर्थ-श्वेद अटहर-भारी, वातपित्तप्रकोपक, अमृतपित्तकारक, मन्ते-
यक, कटु और आत्मानकारक है ।

अथवाकोशुल ।

रक्तानुतुर्गुर्वीरानपित्तप्रकोपदा ।

पित्तमन्तापादिनानागेगनाशक निमना ॥

अर्थ-लाल अडहर-रुचिकारक, बलकारक, पथ्य, ज्वरनाशक तथा पित्त और सन्ताप इत्यादि नानाप्रकारके रोगोंको दूर करेहै ।

कृष्णाढकीशुणा ।

कृष्णातुतुवरीबल्याचाग्निदीप्तिकरामता ।

पित्तदाहप्रशमनीऋषिभिः परिकीर्तिता ॥ (रत्नाकर)

अर्थ-काली अडहर-बलकारक, अग्निप्रदीपक, पित्त और दाहको शान्ति करनेवालीहै ।

फलायनामानि ।



मटर
(क)



छोटीमटर

कलायोमुण्डचणकोहरेणूरुणुकः स्मृत ॥

अर्थ-कलाय, मुण्डचणक, हरेणु, रेणुक, (सतीलक, हरेणु, खण्डिक,

त्रिपुट, अतिवर्तुल, शमन, नीलप, वज्री, मती, मतीन, हरेणु, मतीनर)

सकृत्तभाषामें कलाप ।

हिन्दीभाषामें मटर, गेगर ।

वगभाषामें बोटुण मटर, मटर, तेलोंडा मटर ।

मराठीभाषामें वाटाणे ।

गुजरातीभाषामें मटाणा ।

कर्णाटकीभाषामें बट्टरट्टे ।

तेलुगुभाषामें पेड्डुन्ने ।

इंग्रजीभाषामें ग्रील्डपी । *Grilled Peas*

हिन्दीभाषामें पाईस मेटाहरम । *Peas Met Harman*

अथ मृगा ।

कलाय कुरुतेऽतपित्तदाहकफापह ।

रुचिपुष्टिप्रद भीन कपायशामदोषजन ॥ (रा० नि०)

अर्थ-मटर वातकारक, पित्तनाशक, शूलशामक, वृद्धशामक, रुचिवा
रक, पुष्टिजनक भीन, कपेयी और आमशामक । वर दे ।

अथ मृगा ।

कलायोमधुर, स्वादु, पाकेरुसअभीनल ।

“शक्तदानकपित्तमोभिन्नविद्वोनिवातल” ॥ (भा० प्र०)

अर्थ-मटर-(गेगर)-मधुर, पचनेमें स्वादिष्ट मृगी, नीलप, रुचि
विकारनाशक, कफपित्तदाहक, मन्को निगान्धेवर्ती और वातरो वर
गर्ती है ।

अथ मृगा ।

विशित्तपायामधुरा प्रशिष्टाग्न्यभान्तिजनयन्नियत्या ।

विशित्तपातयिनिवृन्तिपित्तकलायकामुद्रसमानरुपा । (हि० म०)

अर्थ-मटर विशिष्टपेयी, मधुर शक्तिशाली पायि वरदेवती,
वगवर्ती, विशिष्ट वात और पित्तरो वर दे । यह मृगे वर दे
ममान रोवर्ती ।

विद्वोनिवातल ।

त्रिपुट मणिमोदिम्यात यन्तेननाअथ ॥

| | |
|-----------------|---|
| संस्कृतभाषामें | त्रिपुट, सण्डिक । |
| हिन्दीभाषामें | खेसारी, कसूर+कस्ता । |
| बंगभाषामें | खेसारिकलाय । |
| मराठीभाषामें | लाग, लाक । |
| गुजरातीभाषामें | मटर । |
| तैलिङ्गीभाषामें | लाक । |
| इंग्रेजीभाषामें | चिकिलिंगवेच । <i>Chuckling Vetch</i> |
| लैटिन्भाषामें | लेथिरस् सेटिवस् । <i>Lathyrus Sativus</i> |
| | पिस एवेन्स । <i>Pisum Arvens</i> |
| फारसीभाषामें | मासग, जलवान । |
| अरबीभाषामें | हबुल बकर, खलज । |
| | त्रिपुटगुणा । |

त्रिपुटोमधुरस्तिक्तस्तुवरोरूक्षणोभृशम् ।

कफपित्तहरोरुच्योग्राहकःशीतलस्तथा ॥

किन्तुखञ्जत्वपट्टे गुत्वकरोवातातिकोपन । (भा०प्र०)

अर्थ-त्रिपुट (खेसारी)-मधुर, कड़वा, कपेला, अत्यन्त रूखा, कफ-पित्तनाशक, रुचिकारक, मलमोचक, शीतर, अत्यन्त वातको कुपित करनेवाला और खजापन तथा लगडेपनको देनेवाला है ।

अथ च ।

रूक्षोविशोपीमधुर प्रदिष्टः स्याद्युक्तोऽस्थिगतवलिष्ठम् ।

शूलविबन्धभ्रमशोफकर्त्ता दाहार्शहृद्रोगविकारकारी ॥ (हा स)

अर्थ-त्रिपुट (कस्ता)-रूखा, शोथक, मधुर, हृद्दीकी नमोको बलवान करनेवाला तथा शूल, विबन्ध, भ्रम, सृजन, दाह, चवासीग और हृदय-रोगको उत्पन्न करेगा ।

अथ च ।

लाङ्गस्तुशीतलोरुच्योमधुरोवातकारक । गुरुश्चतुवरोरूक्ष

कफपित्तविनाशकः ॥ वृषभाणाहित प्रोक्त पर्णशाकातुवा-

तला । रुच्यापित्तकफानातुहननीपम्बिकीर्तिता ॥ (नि०र०)

अर्थ-त्रिपुट तथा लाक-खेसारी-शीतर, रुचिकारक, मधुर, वातकारक,

भारी, कपेली, रुखी, कफपित्तनाशक और बैलेंको हितकारी है । इसके पत्तोंका शाक-बादी, रुचिकारी तथा पित्त और कफनाशक है ।

पुष्टित्यनामानि ।

कुलित्थस्ताम्रवीजश्चश्वेतवीजःसितेतरः ॥

अर्थ-कुलित्थ, ताम्रवीज, श्वेतवीज, सितेतर (कालवृन्त, ताम्रवृन्त, कुलथिका, ताम्रवृन्त, ताम्रवीज, कुलथ)

संस्कृतभाषामें कुलित्थ ।

हिंदीभाषामें कुलथी ।

बगभाषामें कुलथी, फनाय ।

मराठीभाषामें कुळाय, इल्गे ।

गुजरातीभाषामें कलथी ।

कर्णाटकीभाषामें इडुबनेतीसी ।

तैलिंगीभाषामें तुलायुडु ।

इंग्रेजीभाषामें दुप्लावर्डेडोर्लाकोम् । 'Two flowered dolichos

लेटिन्भाषामें डोर्लाकोम् बाईफ्लोरस । Dolichos Biflorus

फारसीभाषामें किल्लत, मुखाईदी ।

अरबीभाषामें हबुलकिलत ।

कुलथगुणाः ।

कुलथस्तुकपायोष्णोरुश्रोवातकफापह ॥ (रा०नि०)

अर्थ-कुलथी-कपेली, गरम, सूखी तथा वात और कफनाशक है ।

अथवा ।

कुलथःकफवातघ्नोऽग्राक्षुष्णोवृहण कटुः ।

गुल्मशुक्राश्रममेदः श्वासकामप्रमेहजित ॥ (राज०)

अर्थ-कुलथी-कफवातनाशक, मल्लगेधन, गरम, पुष्टिकारक, शार्परी तथा गुल्म, शुन, पथरी भेद, श्वास, रोगी और प्रमेहको हर करे ।

अथवा ।

कुलथ कटुक पाकेकपाय-पित्तरक्तकृत । लघुविंदाही वीर्याष्ण श्वासकामकफानिलान् ॥ हन्तिहिक्काश्रमरीशु-
कदाढानाहान्मर्षान्मान । स्वेदसमाहकोमेदोज्वरकिमिह-
न पर ॥ (भावप्रकाश)

अर्थ—कुलथी—पाकमें कटु, कपेली, रक्तपित्तकारक, हलकी, दाहजनक, उष्णवीर्य तथा श्वास, खाँसी, कफ, वात, हिचकी, पथरी, शुक्र, दाह, आनाह, पीनस, भेद, ज्वर और कृमिरोगको दूर करे है । तथा एसीनेको रोकनेवाली है ।

अथ च ।

उष्णोजयेन्मारुतपीनसतुकासप्रतिश्यायविवन्धगुल्मान् ।
द्विक्कांसरक्तस्तुबलासपित्तनिहन्तिमेदश्चकुलत्थकोऽयम् ॥ (हा)

अर्थ—कुलथी—गरम, वात, पीनस, खाँसी, प्रतिश्याय, विवन्ध, गुल्म, हिचकी, रक्त, कफ, पित्त और मेदोरोगको दूर करे है ।

अन्यच्च ।

वीर्येचोष्णाःकुलत्थाःकफपवनहराःपित्तरक्तप्रदाश्च
पाकेम्लाःश्वासकासोदरहृदयशिरोवस्तिशूलापहाश्च ।
सूत्राघाताश्मरीघ्नानयनगदहराःशुक्रविच्छेदनाश्च
श्रेष्ठादुर्नामकुष्ठश्चयद्युगदयकृद्बलमनूनीगदेषु ॥

अर्थ—कुलथी—उष्णवीर्य, कफवातनाशक, रक्तपित्तजनक, पचनेमें, अम्ल तथा श्वास, खाँसी, उदररोग, हृदयरोग, शिरोरोग वस्तिशूल, सूत्राघात, अश्मरी (पथरी), नेत्ररोग, शुक्र, बवासीर, कोढ़, मुंजन, यकृत, गुल्म, और तूनीरोगको हरानेवाली है ।

अपिच ।

उष्णाःकुलत्थाःपाकेम्लाविपस्थावरजङ्गमम् ।

कासार्ष कफवातांश्चघ्नन्तिपित्तासदा परम् ॥ (वाग्भट)

अर्थ—कुलथी—गरम, पचनेमें अम्ल तथा स्थावरविष, जगमविष, खाँसी, बवासीर, कफ और वातका नाश करे है तथा रक्तपित्तको उत्पन्न करे है ।

तिलनामानि ।

तिलस्तुहोमधान्यस्यात्पवित्रपितृतर्पणः ।

पापघ्नपृतधान्यं च जटिलस्तुवनोद्भवः ॥

अर्थ—तिल, होमधान्य, पवित्र, पितृतर्पण, पापघ्न, पृतधान्य, जटिल, वनोद्भव (सैहफल, पूरफल, तैलफल)



संस्कृतभाषामं
हिन्दीभाषामं
वगभाषामं
मराठीभाषामं
गुजरातीभाषामं
कर्णाटकीभाषामं
तेलुगुभाषामं
तामिलीभाषामं
द्राविडीभाषामं
इंग्रेजीभाषामं
लैटिनभाषामं
फारसीभाषामं
अरबीभाषामं

तिल ।
तिर, कालेतिल, तिली ।
तिलगाछ ।
तीळ, काले तीळ, चोखे तीळ ।
तल ।
तुल ।
तोलुल, नखिनुने, तुलुद ।
वालेनेम ।
वागिकित्त ।
मिमेम नजर्मदित्त । *Myrmica nigriceps*
मिमेमन् इदिकम् । *Myrmica nigriceps*
तुलद ।
मिमामि ।
तिगुणा ।

तिलोऽसंकटुस्तिक्तो मधुरस्तुवर्गे गुरु । विपाके कटुक स्वा-
दु म्लिग्धोष्ण रुफपित्तकृत् ॥ बल्य-केऽथो हिमस्पर्शस्त्व-
न्य स्तन्योत्प्रेणो हितः । दन्त्योल्पमूत्रकृद्वादी वातघ्नोतिमति-
प्रदः ॥ कृष्ण श्रेष्ठतमस्तेषु शुक्लो मध्यमः स्मृतः । अन्ये
हीनतमः प्रोक्तास्तज्जैरक्तादयस्तिळाः ॥ (भा० प्र०)

अर्थ-तिल-चरणे, काले, मधुर, कपटे, भारी, पानेन चरणे, स्वाद,
क्रिम, उष्ण, रुफपित्तकारण, मूत्रक, कृष्ण, श्वेत, हीनतम, प्रोक्ता, तज्जैरक्ता, दयस्तिळाः,

त्वचाको हितकारी, स्तनोम दूध उत्पन्न करनेवाले व्रणरोगमे हितकारी, दाँतोंको हितकारक, अल्पमूत्रकारक, मलरोधक, वातविनाशक और बुद्धिको उत्पन्न करे हैं । सर्वतिलोमे काले तिल उत्तम है, सफेद तिल मध्यम है, यह वीर्यवर्द्धक है और रक्तआदि तिल हीनगुणवाले है ।

अथ च ।

“ईपत्कपायोमधुरःसत्तित्त सग्राहिक पित्तकरस्तथोष्णः ।
तिलोविपाकेमधुरोबलिष्ठःस्निग्धोव्रणलेपनपथ्यउक्तः ॥
दन्त्योऽग्निजननोल्पमूत्रस्तन्योथकेश्योनिलहागुरुश्च ।
तिलेषुसर्वेष्वसितप्रधानोमध्यसितोहीनतरास्तथान्ये ॥ ”
(आ स)

अर्थ—तिल—किञ्चित्कपेले, मधुर, कडवे, मलरोधक, पित्तकारक, गरम, पचनेमें मधुर, स्निग्ध, व्रणके लेपमें पथ्य, दाँतोंको हितकारी, अग्निजनक, अल्पमूत्रकारक, स्तनोंमें दूध उत्पन्न करनेवाले केशोंको हितकारी, वात-हारी और भारी है । सर्व तिलामे काले तिल प्रधान है, सफेद मध्यम और दूसरे अवम है ।

अथ पिण्याकगुणाः ।

पिण्याकमधुररुच्यतीक्ष्णनेत्रविकारकृत ।
मलावष्टम्भकरूक्षंकफवातप्रमेहनुत् ॥
पित्ताश्रवलपुष्टिश्चददातीतिभिषङ्मतम् । (नि०र०)

अर्थ—तिलांकी खल—मधुर, रुचिकारक, तीक्ष्ण, नेत्रविकारको करने-वाली, मलस्तम्भक, रूखी, कफ, वात और प्रमेहनाशक है, रक्तपित्त, घल और पुष्टिको देनेवाली है ।

अतसीनामानि ।

अतसीपिच्छिलादेवीमदगन्धामदोत्कटा ।
उमाक्षुमाहमवतीसुनीलानीलपुष्पिका ॥

अर्थ—अतसी, पिच्छिला, देवी, मदगन्धा, मदोत्कटा, उमा, शुमा, ईमवती, सुनीला, नीलपुष्पिका (चणका, क्षौत्री, रुद्रपत्नी, सुवर्चना, नीलपुष्पी, पार्वती, मण्डणा, तैलोत्तमा)



संस्कृतभाषामें

हिन्दीभाषामें

बगभाषामें

मराठीभाषामें

गुजरातीभाषामें

कर्णाटकीभाषामें

तैलङ्गीभाषामें

इंग्रजीभाषामें

लैटिनभाषामें

अतसी ।

अलसी, तिगी, मसीना ।

मसिना, तिसी ।

जयस, अछशी ।

अछशी ।

असगे ।

नल्लपगसिचेडु ।

कामन् फ्लेससीद् Common Flaxseed, Linseed

लीनीसेमीना । Lini Semen

लीनरसिदेसिम । Linnæa Usitatissima

फारसीभाषामें

अरबीभाषामें

तुरमेकतान ।

चजरुलकतान ।

अतसीगुणा ।

अतसीमदगन्धास्थान्मधुरानलकारिका ।

कफवातकरीचेपत्तिरुहकुष्ठनातनुत् ॥ (रा०नि०)

अर्थ-अल्गी-मदगन्धयुक्त, मधुर, धलकारक, किंचित् फलवातकारक,
पित्तनाशक तथा शूल और वातको दूर करे ।

अथवा ।

अतसीमधुरानित्ताम्रिग्धापाकेकद्वयम् ।

रुग्णाद्वकुष्ठवातमीकफपित्तविनाशिनी ॥ (भा.प्र.)

अर्थ—अलसी—मधुर, कडवी, स्निग्ध, पचनेमें चरपरी, भारी, गरम तथा दृष्टि, शुक्र, वात और कफ पित्तका नाश करनेवाली है ।

अन्यञ्च ।

अतसीशुक्रदृष्टिघ्नीस्निग्धावातास्रजिह्वरुः ॥ (म नि)

अर्थ—अलसी—शुक्रनाशक, दृष्टिनाशक, स्निग्ध, वातगुणविनाशक और भारी है ।

अपिच ।

अतसीमधुरास्निग्धागुर्वीचोष्णावलप्रदा ।

पाकेकट्वीचतित्ताचकफवातव्रणापहा ॥

पृष्ठशूलचशोथचपित्तशुक्रदृशंजयेत् ।

पर्णमस्याकासकफवातनुच्छ्वासहृत्तथा ॥ (नि०र०)

अर्थ—अलसी—मधुर, स्निग्ध, भारी, गरम, बलकारक, पचनेमें चरपरी, कडवी तथा कफ, वात, व्रण, पृष्ठशूल, सूजन, पित्त, शुक्र और दृष्टिका नाशकरेहै । इसके पत्ते—खॉसी, कफ, वात और आसको दूर करे हैं ।

सर्पपनामानि ।

सर्पप कटुकस्नेहोभूतघ्नोरक्षिताफल ।

उग्रगन्धोऽग्रहघ्नश्चतन्तुभोथकदम्बकः ॥

अर्थ—सर्पप, कटुकस्नेह, भूतघ्न, रक्षिताफल, उग्रगन्ध, ग्रहघ्न, तन्तुभ, कदम्बक (सरिपप, कदम्बद, विम्बद, कदम्ब, तन्तुक, कटुस्नेह, राजसवक) । गौरसर्पनामानि ।



तीक्ष्णकश्चदुराचपंगश्चोत्तः कुष्ठनाशनः ।

सिद्धप्रयोजनः सिद्धसाधनः सितसर्पपः ॥

अर्थ-तीक्ष्णक, दुराचप, गश्चोत्त, कुष्ठनाशन, सिद्धप्रयोजन, सिद्धसाधन, सितसर्पप (गौर, अनघ, सिद्धार्थ भूतनाशन, कटुमेह, मद्य, कण्डू, गजिकाफल, गुरु)

संस्कृतभाषामे

हिन्दीभाषामे

बंगभाषामे

मराठीभाषामे

गुजरातीभाषामे

कर्णाटकीभाषामे

तेलुगुभाषामे

इंग्रेजीभाषामे

लैटिन भाषामे

फारसीभाषामे

अरबीभाषामे

सर्पप, गौरसर्पप ।

सरसा, सपेदसरसों ।

सर्पि, सर्प, श्वेतसर्प ।

शिरस, श्वेतशिरस ।

शरश्व ।

चिल्लपसराने ।

पायाभभाष्ट ।

सिनापिसाल्वा । Sinapis alba

प्रसिद्धा केंपेसुद्रिम । Brasilia campocaris

सर्पप ।

उर्दुअर्थापद ।

सर्पपुष्पा ।

सर्पपस्तुरसेपाकेकटुहृद्य सतिक्तकः । तीक्ष्णोष्णः कफवातमो
रक्तपित्ताग्निवर्द्धनः ॥ रश्चोदरो जयेत्कण्डूकुष्ठकोष्ठकृमिप्रहान् ।
यथारक्तस्तथागौरः किन्तु गौगोवगेमत ॥ (भायप्रकाश)

अर्थ-सरसा रस और पात्रम-चरपी है, शिरस, कटु, तीक्ष्ण, गरम, कफवातनाशक, रक्तपित्तजनक, अग्निवर्द्धक तथा गलसपापा, कण्डू, कुष्ठ, कोद, कृमि और मरुकी पापाओं दूर करनेवाली है, छाल और सपेद सरसों समानही गुणवाली है, किन्तु तीसी मरुद समों रसकी अपेक्षा उत्तम है ।

अपघ्न ।

सर्पप कटुकस्तिक्तस्तीक्ष्णोष्णो मिदीपनः । विशिष्ट
पित्तलक्ष्मकपित्तकरो मतः ॥ रक्तवातकफकण्डूप्रशूल
कृमीजयेत् । महपीडांचपीडांचनाभयेदित्कीर्तिः ॥ (निः)

अर्थ—सरसों—चरपरी, कडवी, तीक्ष्ण, गरम, अग्निप्रदीपक, किञ्चित्
रूखी, पित्तकारक, रक्तपित्तजनक, रूक्ष तथा वात, कफ, कण्डू, कुष्ठ, शूल,
कृमि, ग्रहपीडा और पीडाको दूर करे है ।

सिद्धार्थगुणा ।

सिद्धार्थः कटुकस्तिक्तोरुच्योष्णो वातरक्तकृत् ।

ग्रहपीडार्शत्वग्दोषशोथव्रणविपापहः ॥

अर्थ—सफेद सरसों—चरपरी, कडवी, रुचिकारक, गरम, वातरक्तकारक
तथा ग्रहपीडा, बवासीर, त्वचाके दोष, मृजन, व्रण और विपका
नाश करे है ।

सपपशाकगुणा ।

पर्णशाकासराचाम्लापित्तातुवरागुरुः ।

स्वाद्वीचोष्णाचपट्वीचकफनाशकरीमता ॥ (नि० २०)

अर्थ—सरसोंके पत्तोंका शाक—सारक, अम्ल, पित्तकारक, कपेला, भारी,
स्वाद्विष्ट, गरम, खारी और कफहारी है ।

राजिकानामानि ।

राजीतुराजिकातीक्ष्णगन्धाक्षुन्निकासुरी ।

क्षवःक्षुताभिजनक क्रिमिक कृष्णसर्पपः ॥

अर्थ—राजी, राजिका, तीक्ष्णगन्धा, क्षुन्निका, आसुरी, क्षव, क्षुताभि-
जनक, कृमिक, कृष्णसर्पप (क्षुधाभिजनन, कृष्णिका, कटु, असुरी, काको-
दुम्बरिका, राक्तिक, रक्तसर्पप, अतितीक्ष्णा, मधुरिक, क्षवक, क्षुतक, क्षव,
ज्वलन्ती, ज्वलप्रभा)

राजसपपनामानि ।

राजक्षवक कृष्णातीक्ष्णफलाराजिकाराज्ञी ।

साकृष्णसर्पपाविज्ञेयाराजसर्पपाख्याच ॥

अर्थ—राजक्षवक, कृष्णा, तीक्ष्णफला, राजिका, राज्ञी, कृष्णसर्पपा,
राजसर्पप (कृष्णिका, सरी, शुष्क, व्यष्टक, कटुक, क्षव, क्षुताभिजनन,
क्षुधाभिजनन)



संस्कृतभाषामें

हिन्दीभाषामें

बगभाषामें

मराठीभाषामें

गुजरातीभाषामें

कर्णाटकीभाषामें

तैलिङ्गीभाषामें

इंग्रेजीभाषामें

लैटिनभाषामें

अरबीभाषामें

राजिका, राजसर्पपं ।

गई, लाई ।

राइसपें, कालसर्पें, राजसर्पां, राइसरीपा ।

मोहरी, रायी ।

राई जम्बुसरी अने देशी ।

सामिराई ।

वर्णाडु ।

मस्टर्ड सीडम् । Mustard Seeds

सिनापिस नाईया मोसेरा नाईया । Sinapis

nigra, Brassica Nigra

सरदल ।

राजिकासुजा ।

आसुरीकटुतिकोष्णावातप्रीहार्तिशूलनुद ।

दाहपित्तप्रदाहन्तिकफगुल्मकृमिव्रणान् ॥ (रा०नि०)

अर्थ-राई-चरपरी, कटवी, गरम, वात, श्लेष्मा और शूलनाशक है ।
 दाहजनक, पित्तकारक, तथा पक्व, गुल्म, और कृमिरोगको हरनेवाली है ।
 मन्त्रः ।

राजिकाकफपित्तप्रीतीक्ष्णोष्णाग्क्तपित्तहृत् ।

किञ्चिदक्षामिदं कण्टकुष्ठकोष्ठकृमीन्द्रेत् ॥

अतितीक्ष्णाविशेषेण तद्वन्तृष्णापि राजिका । (भा०५०)

अर्थ—राई—कफपित्तनाशक, तीक्ष्ण, गरम, रक्तपित्तकारक, किञ्चित्
रूखी, अग्निवर्द्धक तथा कण्डू, कुष्ठ, कोष्ठरोग और कृमिरोगको दूर करेहै ।
काली राईके भी गुण राईकी समान हैं, विशेषकरके अत्यन्त तीक्ष्ण है ।

राजसर्पपगुणा ।

राजसर्पपकश्चोष्णपित्तलोदाहकारकः ।

कटुस्तिक्तोगुल्मकुष्ठकण्डूघ्नरुजापहः ॥

वातशूलनाशयतीत्येवपूर्वेर्निवेदितम् ।

अर्थ—राजसर्पप—गरम, पित्तजनक, दाहकारक, चरपरी, कड़वी तथा
गुल्म, कुष्ठ, कण्डू, घ्न और वात शूलका नाश करेहै ।

राजिकापत्रशाकगुणा ।

राजिकापर्णशाकातुकट्टीचोष्णावलप्रदा ।

स्वाद्वीपित्तकरीजेयाकृमिवातकफापहा ॥

कण्ठरोगहराचोक्तापूर्वः सूत्रचिकित्सकैः ।- (नि० २०)

अर्थ—राईके पत्तोंका शाक—चरपरा, गरम, बलकारक, स्वादिष्ठ, पित्त-
कारक, कृमिनाशक, वातकफनाशक और कण्ठरोगको दूर करेहै ।

तृणधान्यनामानि ।

क्षुद्रधान्यकुधान्यचतृणधान्यमिति स्मृतम् ॥

अर्थ—क्षुद्रधान्य, कुधान्य, तृणधान्य ।

तृणधान्यगुणा ।

तृणधान्यमनुष्णस्यात्कपायंलघुलेखनम् ।

मधुरकटुकपाकेरुक्षचक्रेदशोपकम् ॥

वातकृद्द्विदकश्चपित्तरक्तकफापहम् । (भा० प्र०)

अर्थ—तृणधान्य—अनुष्ण, कपेले, हल्के, लेखन, मधुर, पचनेमें चरपरे,
रूखे, द्वेदशोपक, वातवर्द्धक, मलबन्धक तथा पित्तरक्त और कफनाशक है ।

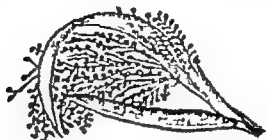
अन्यथा ।

तृणधान्यलघुस्वादुपाकेरुचलेखनम् । मलबन्धकरंरुक्ष

तुवरंमधुरंमतम् ॥ क्रेदशोपकरचोष्णवातलपित्तलतथा ॥

कफनाशकरचैवपूर्ववैरुदाहृतम् ॥ (नि० २०)

अर्थ-तृणधान्य-इलके स्वादिष्ठ, पाकमें कटु, लेखन, मलवधक, रुते, कपेले, मधुर, श्लेष्मशोषक, गरम, वादी, पित्तकारक और कफनाशक है ।
यगुनामानि ।



कंकनी.

स्त्रियांकगु प्रियगुद्वेकृष्णारक्तासितातथा ।
पीताचतुर्विधाकंगुस्तासर्पीतावरास्मृता ॥

अर्थ-कगु, प्रियगु (प्रियगु, कगु, कगुका, कंगुनीका, कंगुनी, चानक, पीततण्डुल) ।

| | |
|-----------------|-------------------------------------|
| संस्कृतभाषामें | कगु । |
| हिन्दीभाषामें | कगुनी, कागनी, कंगनी । |
| बंगभाषामें | कागुनी, कानिधान । |
| मराठीभाषामें | काग । |
| गुजरातीभाषामें | काग । |
| कर्णाटकीभाषामें | नवणे । |
| तेलुगुभाषामें | कोरुडु । |
| उडिन्भाषामें | पेनिक मिलियेस्म । Panicum Miliaceum |
| पागमीभाषामें | गल । |

कगनी-काली, लाल, सफेद और पीली इन भेदोंसे चार प्रकारकी है, इनमें पीली कगनी उत्तम है ।

यगुगुणा ।

कंगुस्तुनातसन्धानवातकृद्दृहणोगुक ।

रक्षाश्लेष्महरातीववाजिनांगुणकृद्भ्रम ॥ (भा०प०)

अर्थ-कंगनी-मग्नमन्धानक, वातकारक, पित्तकारक, भारी, कर्मी, कफनाशक और घोटोंके लिये अत्यन्त उपयोगी है ।

अन्यच्च ।

प्रियङ्गुर्भधुरोरुच्यः कपायः स्वादुशीतलः ।

वातकृत्पित्तदाहघ्नोरुक्षोभग्रास्थिसन्धिकृत् ॥

अर्थ—कंगनी—मधुर, रुचिकारक, कपेली, स्वादिष्ट, शीतल, वादी, पित्त और दाहनाशक, रूखी, भग्न और हड्डीको जोड़नेवाली है ।

अन्यच्च ।

कङ्गुः शीतोवातकरोरुक्षोवृष्यः कपायकः । धातुवृद्धिकरः

स्वादुर्गुरुश्वाश्वहितावहः ॥ भग्रास्थिसन्धानकरोगर्भपाते

हितावहः । कफपित्तहरश्चायकृष्णरक्ताच्छपीतकैः ॥ वर्ण-

श्चतुर्धासमतोगुणैश्चोत्तरतोधिक ॥

अर्थ—कंगनी—शीतल, वातकारक, रूखी, वृष्य, कपेली, धातुवर्द्धक, स्वादिष्ट, भारी, अश्वोंको हितकारी, भग्रास्थिसन्धानकारक, गर्भके गिरानेमें हितकारी, कफपित्तनाशक है, यह कृष्ण, रक्त, सुफेद और पीली इन भेदोंसे चारप्रकारकी है, इनमें एकसे एकके अधिक गुण हैं ।

चीनकनामानि ।

चीनकः काककगुश्च सुश्लक्ष्णः श्लक्ष्णकः स्मृतः ॥

अर्थ—चीनक, काककगु, सुश्लक्ष्ण, श्लक्ष्णक (कंगु) ।

संस्कृतभाषामें चीनक ।

हिंदीभाषामें चीना, चैना ।

बगभाषामें चिने ।

मराठीभाषामें राळे ।

गुजरातीभाषामें चीणो ।

कर्णाटकीभाषामें चीनक ।

इंग्रेजीभाषामें मीलेट । Millet

लैटिनभाषामें पेनिकमिलियेरी । Panicum Millari

फारसीभाषामें उरजान ।

अरबीभाषामें वारेगा ।

चीनयगुणाः ।

चीनकः कङ्गुमेदोऽस्ति सज्ञेयः कगुवद्गुणैः ॥ (भा प्र.)

अर्थ-चीनाधान वगनीका भेद है। इसकारण इसके मुणमी वगनीकी समान जानने।

नीवारनामानि ।



नीवारोरण्यधान्यस्यान्मुनिधान्यवृणोद्वयम् ॥

अर्थ-नीवार, अरण्यधान्य, मुनिधान्य, वृणोद्वय (वृणधान्य, वनव्रीहि, अरण्यजालि, प्रसाधिका)

संस्कृतभाषामें

नीवार ।

हिंदीभाषामें

तिली, सीनी, तीली ।

वगभाषामें

उदीधान्य ।

मराठीभाषामें

देवमात ।

गुजरातीभाषामें

वटी ।

कर्णाटकीभाषामें

ज्यरहुमेघे ।

तैलङ्गीभाषामें

निवारिवट्ट ।

लैटिनभाषामें

पेनिक इटालिक । *Panicum Italicum*

ग्रीष्मऋतुः ।

नीवारोमधुर स्निग्ध पवित्र पथ्यदोल्घुः ॥ (राजनिघण्टु)

अर्थ-नीवारधान्य-मधुर, स्निग्ध, पवित्र, पथ्य और इसके हैं ।

अन्यथा ।

नीवार शीतलोऽर्दीपित्तप्र कफघातकृत् ॥ (भा.प्र.)

अर्थ-नीवारधान्य-शीतल, मल्लोषक, पित्तनाशन तथा कफ और घातकारक है ।

अपिच ।

नीवार-श्लेष्मलोरुक्ष कपायोघातलोदिमः ।

लेखनोबद्धविण्मूत्रःस्वादु.पित्तहरोलघुः ॥ (शो नि.)

अर्थ—नीवारधान्य—कफकारी, रूखे, कपेले, वादी, शीतल, लेखन, मल और मूत्रको बाधनेवाले, स्वादिष्ट, पित्तनाशक और हलके हैं ।

घरकनामानि ।

वरक.स्थूलकगुश्चरूक्ष स्थूलप्रियगुः ।

अर्थ—वरक, स्थूलकङ्गु, रूक्ष, स्थूलप्रियगु (स्थूलकगू)

घरङ्गुणा ।

वरकोमधुरोरूक्ष.कपायोवातपित्तकृत् ॥ (रा०नि०)

अर्थ—वरक, (चीनाभेद)—मधुर, रूखे, कपाय और वातपित्तकारक है । यह कगनीकाही भेद है ।

संस्कृतभाषामें

हिन्दीभाषामें

बंगभाषामें

मराठीभाषामें

गुजरातीभाषामें

लैटिनभाषामें

वरक ।

चीनाभेद ।

चीनाविशेष ।

बन्धा ।

बन्धो ।

पेनिकमिलीयेरी कहते हैं ।

नत्तकनामानि ।



नर्त्तकोनृत्यकुण्डश्चभूचराचमलीयसः ।

कठिनोगुच्छकणिशोलञ्छनोबहुपत्रकः ॥

अर्थ—नर्त्तक, नृत्यकुण्ड, भूचरा, मलीयस, कठिन, गुच्छ, कणिश, लञ्छन, बहुपत्रक ।

संस्कृतभाषामें

हिन्दीभाषामें

मराठीभाषामें

नर्त्तक ।

नर्त्तक मृदुआ ।

नाचणी, नागली ।

| | |
|-----------------|--|
| गुजरातीभाषामें | नागली । |
| कर्णाटकीभाषामें | रपिगुचणे । |
| इंग्रेजीभाषामें | थ्रिकस्पाइक्ड एल्युमीन । Thrick Spiked Elenamc |
| लैटिनभाषामें | इल्युमाइन कारेकेना । Elenino Coracans |
| फारसीभाषामें | मदवा । |

अथ गुणाः ।

नर्तकस्तुवरस्तिक्तोमधुरस्तर्पणोलघुः । बल्यः शीतः पित्तहरश्चि-
दोषशमनोमतः ॥ रक्तदोषहरश्चैव मुनिभिः पूर्वमीरितः ॥ (नि र)

अर्थ-नर्तक-कपेले, कडवे, मधुर, वृत्तिकारक, हलके, मनकारक,
शीतल, पित्तनाशक, त्रिदोषनिवारक, और रुधिरके दोषोंको दूर करे है ।

श्यामाय नामाभिः ।

श्यामाक श्यामकः श्यामस्त्रिवीजः स्यादविप्रियः ।

सुकुमारो राजधान्य नृणवीजोत्तमश्च सः ॥

अर्थ-श्यामाक, श्यामक, श्याम, त्रिवीज, आविप्रिय, सुकुमार, राज
धान्य, नृणवीजोत्तम ।

| | |
|-----------------|--|
| संस्कृतभाषामें | श्यामाक । |
| हिन्दीभाषामें | समा । |
| बंगभाषामें | श्यामाधान । |
| मराठीभाषामें | सवि, कायली । |
| गुजरातीभाषामें | शामो । |
| कर्णाटकीभाषामें | सधे । |
| तैलुङ्गीभाषामें | श्यामाङ्ग । |
| लैटिनभाषामें | पेनिक फ्रुमेंटेशिय । Panicum Frumentaceum |
| फारसीभाषामें | ओपलित मेनार फ्रुमेंटेशिय । Oplis incens / frumentaceum |
| | श्यामाय । |

श्यामाय गुणाः ।

श्यामाकोमधुर मिग्ध कपायोलघुशीतलः ।

वातकृत्कफपित्तमममादीविषदोषनुत ॥ (रा० नि०)

अर्थ-समा-मधुर, मिग्ध, कपेला, हल्का, शीतल, वातकृत्क, कफ
विषनाशक, मन्त्रोपश और विषके दोषोंको दूर करे है ।

अन्यत्र ।

श्यामाकःशोपणोरूक्षोवातलःकफपित्तनुत् ॥ (भा प्र.)

अर्थ—समा—शोपक, रूखा, वादी और कफपित्तनाशक है ।

कोद्रवनामानि ।

कोद्रव कोरदूपःस्यादुद्दालोवनकोद्रवः ॥

अर्थ—कोद्रव, कोरदूप, (कुद्रव, कोरदूपक, कोरदुष्क, कोदार, कोदाल, कुदाल, मदनाग्रक, कोर्द्रव) उद्दाल और वनकोद्रव यह दो नाम वन-कोदोंके हैं ।

संस्कृतभाषामें कोद्रव ।

हिन्दीभाषामें कोदों ।

बंगभाषामें कोदोधान्य ।

मराठीभाषामें हरीक, कोद्र ।

गुजरातीभाषामें कोदरो, जगलीकोदरो ।

कर्णाटकीभाषामें हारक ।

तैलङ्गीभाषामें आलुवालु ।

इंग्रेजीभाषामें पकचर्ड पासपेल । Punctured Paspalum

लैटिन्भाषामें पासपेल स्क्रोबिटुलेस्यम् । Paspalum Scrobiculatum

औत्कलीभाषामें कोद्रु ।

कोद्रवगुणा* ।

कोद्रवोवातलोघ्राही हिमःपित्तकफापह* ।

उद्दालस्तुभवेदुष्णोघ्राहीवातकरोभृशम् ॥ (भा०प्र०)

अर्थ—कोदों—वातकारक, मलरोधक, शीतल और पित्तकफनाशक, वनकोदों—गरम, मलरोधक और वातकारक है ।

अन्यत्र ।

कोद्रवोमधुरस्तिक्त्रणिनांपथ्यकारक* ।

कफपित्तहरोरूक्षोमोहकृद्वातलोगुरु ॥

अर्थ—कोदों—मधुर, कड़वे, घणरोगवालोंको पथ्य, कफपित्तनाशक, रूखे, मोहकारक, वादी और भारी हैं ।

अन्यथा ।

कोरद्वपः परग्राहीस्पर्शशीतोविपापह ॥ (वाग्भट)

अर्थ-कोदों-अत्यन्त मलरोधक, स्पर्शमें शीतल और विपनाशक हैं ।

अन्यथा ।

रुक्षोग्राहीकोद्रवः स्याद्रक्तपित्तविशोधनः ।

नात्यन्तरक्तफकृत्प्रोक्तोरुच्यः स्वादुः प्रकीर्तित ॥ (हा सं.)

अर्थ-कोदों-रुखे, ग्राही, रक्तपित्तशोधक, अत्यन्त कफकारक नहीं, रुचिकारी और स्वादिष्ट हैं ।

अपिच ।

कोद्रवोवृद्धविण्मूत्रोवातलोलेखनोलघुः ।

विपपित्तकफामघोरुपायोग्क्तपित्तजित ॥

स्पर्शः शीत परग्राहीमधुरोरुक्षशीतल ॥

उद्दालकस्तुवीर्याण्णोलेखनोवातलोलघुः ।

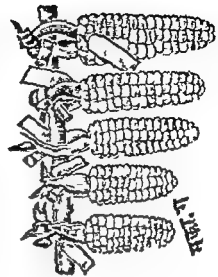
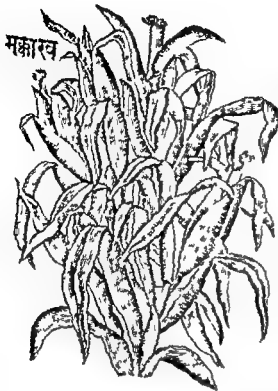
रुक्ष स्वादु कपायश्चक्ष्मेष्मजिद्वद्धमूत्रविद ॥ (शो०नि०)

अर्थ-कोदों-मलमूत्रवृद्धक, वातकारक, लेखन, हल्के, विपविनाशक, पित्तनिवारक, कफघ्न, आमनाशक, कपेले और रक्तपित्तको दूर करनेवाले, स्पर्शमें शीतल, अत्यन्तग्राही, मधुर, रुखे और शीतल हैं । वनकोदों-उष्णवीर्य, लेखन, यात्री, हल्के, रुखे, स्वादिष्ट, कपेले, कफनाशक और मलमूत्रवृद्धक हैं ।

एतिधान्यनामानि ।



मकाक



मकायस्तुमहाकायोकटिज.कांडज.स्मृतः ।
शिखालु सपुटांतस्थोयावनालसमोऽगुणैः ॥

अर्थ—मकाय, महाकाय, कटिज, कांडज, शिखालु, सपुटांतस्थ । इसके गुण ज्वारकी समान हैं ।

संस्कृतभाषामें

हिंदीभाषामें

मराठीभाषामें

गुजरातीभाषामें

तेलुगुभाषामें

इंग्रेजीभाषामें

लटिनभाषामें

मकाय, महाकाय ।

मफा, मुटे ।

मका ।

मकाई ।

जनपटल ।

इंडियनकोर्नमेस । Indian Corn Maize

शियामेस । Zam-Maize

अस्य गुणाः ।

महाकायस्तृप्तिकरोवातल कफपित्तहृत् ।

विष्टम्भजनकोरुक्ष कोमलोरुचिपुष्टिकृत् ॥

अर्थ—तृप्तिकारक, वादी, कफपित्तनाशक, विष्टम्भकारक और रूचि है ।
रूचिमफा—पुष्टि और रुचिको करनेवाली है ।

गवेषु कानामगुणाश्च ।

गवेषु कातुविद्विर्गनेषु कथितास्त्रियाम् ॥

अर्थ-गवेषुका, गवेषु (गवेदु, गवेदुका, कुन्त, कुद्रा, गोमिद्वि, गुन्द्रग्राप)

गवेषु कटुकास्वादीकाश्च कृत्कफनाशिनी ॥ (भा० प्र०)

अर्थ-गवेदुआ-कटु, स्वादिष्ट, शरीरको कृश करनेवाला और कफनाशक है ।

वरटानामानि ।

कुसुम्भवीजं वरटा सैव प्रोक्ता वरटिका ॥

सम्भूतभाषामें कसूमके बीजाको वरटा और वरटिका कहते हैं ।

हिन्दीभाषामें करं, कर ।

वगभाषामें कुसुमफल ।

मराठीभाषामें कटुषां ।

गुजरातीभाषामें कुसुम्भानाबी ।

फारसीभाषामें तुल्मयादना ।

अरबीभाषामें द्युल अस्फर ।

मस्या गुणाः ।

वरटामधुरास्त्रिधारक्तपित्तकफापहा ।

कपायाभीतलागुर्वीत्यादुर्वृष्यानिलापहा ॥ (भा० प्र०)

अर्थ-वरं-मधुर, त्रिध, रक्तपित्तनाशक, कफघ्न, कपेली, शीतल, भारी, स्वादिष्ट, वीर्यवर्द्धक और वातविनाशक है ।

चारुणामगुणाश्च ।

चारुक शरबीजस्यात्कव्यन्तेनद्रूणाअथ ।

चारुणामधुरोरुक्षोरक्तपित्तकफापहा ॥

शीतलोलबुवृष्यश्च कपायोवातकोपन । (भा० प्र०)

अर्थ-सरपसेके बीजाको चारुक कहते हैं । चारुक-मधुर, शीत, रक्त-पित्तनाशक, कफघ्न, शीतल, लघु, वृष्य, कपाय और वातको कुपित्त नष्ट है ।

चतुर्वर्गगुणाः ।

यत्रविशमवारुक्षाः कपाया कटुपाकिन ।

चट्टमूत्रा कफघ्नाश्च वातपित्तकग ननः ॥ (भा० प्र०)

अर्थ—वासके चावल—रूखे, कपेले, पचनेमें कटु, मूत्ररोधक, कफनाशक, वातपित्तकारक और सारक हैं । इसके गुण और नाम प्रथम तृणवर्गमें लिख चुके हैं ।

यवनालगुणा ।

यवनालोहिमं स्वादुर्लोहितः श्लेष्मपित्तजित् ।

अवृष्यस्तु वरोरूक्षः क्लेदकृत्कथितोलघुः (भा० प्र०)

अर्थ—पुनेरा—शीतल, स्वादिष्ठ, लाल, कफपित्तनाशक, अवृष्य, कपेला, रूखा, क्लेदकारक और हलका है ।

वृत्तनपुरातनादिभेदेन धान्यगुणा ।

धान्यं सर्वानवस्वादुगुरुश्लेष्मकरस्मृतम् । तत्तुवर्षोपितपथ्यं
यतोलघुतरहितम् ॥ वर्षोपितसर्वधान्यंगौरवपरिमुञ्चति ।
न तु त्यजति वीर्यं स्वं क्रमान्मुञ्चत्यतः परम् ॥ एते पुयवगो-
धूमतिलमापानवाहिता । पुराणा विरसारूक्षान तथा गुणका-
रिणः ॥ पुराणा वर्षद्वयादुपरिस्थिता यवादयो नवाः
स्वस्थान्प्रतिहिता पथ्याशिनां तु पुराणा हिताः ॥

अर्थ—सर्व नये धान्य—स्वादुष्ठ, भारी और कफको करनेवाले कहे हैं । एक वर्षके बीतजानेपर वह हलके होनेके कारण पथ्य होते हैं, वर्ष दिनके पीछे सर्वधान्य भारीपनको छोड़देते हैं किन्तु अपने २ वीर्यको नहीं त्यागते कमसे दो वर्षके पीछे वीर्यकोभी छोड़देते हैं । इनमें जौ, गेहूँ, तिल, उडद यह नयेही हितकारी होते हैं, पुराने चेरस, रूखे और गुणकारीभी नहीं हैं । यवादिक नवीन निरोगी मनुष्योंके लिये हितकारी कहे हैं । किन्तु पथ्य भोजन करनेवालोंको पुरानेही हितकारक कहे हैं ।

इति श्रीशाठिग्रामनिघण्टुभूषणे धान्यवर्ग समाप्त ॥ १० ॥

अथ शाकवर्गः ।

पत्रपुष्पफलनालकन्दंसस्वेदजतथा ।

शाकपद्मविधमुद्दिष्टगुरुविद्याद्यथोत्तरम् ॥

अर्थ-पत्र, पुष्प, फल, नाल, कद और मस्त्रेदज इन भेदोंमें शाक छः प्रकारका है इनमें एकमें दूसरा भारी जानना अर्थात् पत्रमें पुष्प, पुष्पमें फल, फलमें नाल, नालमें कद और कदमें मस्त्रेदज भारी है ।

शाकदोषः ।

प्रायः शाकानि सर्वाणि विष्टम्भीनि गुरुणि च । रूक्षातिवहुव-
चांसि सृष्टविष्मरुतानि च ॥ शाकभिनत्तिवपुरस्थिनिहन्ति
नेत्रवर्णविनाशयति रक्तमथापिशुक्रम् । प्रज्ञाजयचक्रु-
रुते पलितंच नूनं हन्ति स्मृतिं गतिमिति प्रवदन्ति तज्ज्ञा ॥
शाकेषु सर्वेषु वसति गेगास्ते हेतवो देहविनाशनाय । तस्माद्द-
धं शाकविवर्जनन्तु कुर्यात्तियाम्लेषु स एव दोषः ॥

अर्थ-दोष और गुण-भाष्य. सर्व प्रकारके शाक-विष्टम्भकारक, भारी, सूखे, यद्गमल करनेवाले तथा विष्टा और अधोगत वातका करनेवाले हैं । शाक-शरीर, दृढ़ी, नेत्र, रक्त, शुक्र और धुत्तिका नाश करे हैं । स्मरणशक्ति को हर्षे, गतिशक्ति को दूर करे हैं और विनाशमयकेरी घालोंका पवक करे हैं । सर्व प्रकारके शाकमें रोग रहते हैं और रोगही शरीरके नाश करनेके हेतु हैं, इस कारण धुत्तिमान् शाक भोजन करना छोड़देवे और जेतेही दोष अम्लद्रव्य अर्थात् ग्याईमें हैं, मो रसार्थी त्यागने योग्य हैं ।

शाकसर्वमन्त्रशुष्यचशुष्यशाकपचकम् ।

जीवन्तीनास्तु मत्स्याक्षीमेजनाद् पुनर्नवा ॥

अर्थ-गर्भप्रकारके शाक नेत्रोंको अहितकारी हैं, किन्तु जीवन्ती, वाग्जुष, मत्स्याक्षी, चोलाई और पुननवा यह पाँच शाक हितकारी हैं ।

तत्राद्या यस्तु दद्यात्तमासीति ।

वास्तूकान्तरुक्थस्यात्तारपत्रक्षशाकगटः ।

तदेव तु नृहत्पत्ररक्तस्याद्रीडवास्तूकम् ॥

अर्थ-वास्तूक, वास्तुच, शाकपत्र, शाकगट, (पाँचपत्र, शाकपत्र, शाक-
बीर, कटुल, पनापा, वास्तु वमुक, दित्मोषिका, शाकगट, गटशाक,
पत्ररक्ती) । दूसरा साल पचासा होता है उसके पचाप यह हैं गौरशाक
(गिल्ली, गिलिया, मुनी, अमर्तोहवा, मृदुचयी, शाकपत्र, शाकपत्री,
वाग्जुषी, मरदण और मोडवास्तु)

| | |
|-----------------|--|
| सस्कृतभाषामें | वास्तूक, गौडवास्तूक । |
| हिन्दीभाषामें | वयुआ, चिल्ली, वडा वयुआ । |
| वगभाषामें | वेतुया, वेतोशाक । |
| मराठीभाषामें | चाकवत, चिविल, चाकवताची भाजी । |
| गुजरातीभाषामें | टाको, चील । |
| कर्णाटकीभाषामें | चक्रवती, विलीपचिल्लीके । |
| इंग्रेजीभाषामें | व्हाईट गुजफूट White goose foot परपल गुजफूट Purple goose foot |
| लैटिनभाषामें | केनापाडप आलव Chenopodium Album के एट्रिप्सिसीस् । Che atripolis |
| फारसीभाषामें | मुसेलेसा सरमक । |
| अरबीभाषामें | रोक्कवतुल वजामेल कुतुफ । |

वास्तूकगुणा ।

वास्तूकोऽग्निकरोरसेचमधुर पित्तापहश्चक्षुष
स्निग्धोवातविनाशनःकृमिहर पित्तादिदोषापहः ।
वर्चोमूत्रविशोधनःप्रथमतःश्लेष्मामयानांतथा
शाकानामपिचोत्तमोलघुतर पथ्य सदाप्राणिनाम् ॥

अर्थ-वयुआ-जठराग्निजनक, मधुररसान्वित, पित्तनाशक, नेत्रोंको हितकारी, स्निग्ध, वातविनाशक, कृमिनाशक, पित्तादिदोषनाशक, मलमूत्र-विशोधक, शाकोंमें उत्तम और कफरोगवाले मनुष्योंको सदैव हितकारी है ।

अन्यथा ।

सक्षारःकृमिजिह्विदोषशमन सदीपनः पाचन-
श्चक्षुष्योमधुर सरोरुचिकरोविष्टम्भशूलापहः ।
वर्चोमूत्रविशोधन स्वरकर स्निग्धोविपाकेगुरु
वास्तूक सकलामयप्रशमनश्चिलीतदेवोत्तमा ॥

अर्थ-वयुआ-क्षारयुक्त, कृमिनाशक, विदोषनिवारक, दीपन, पाचन, नेत्रोंको हितकारी, मधुर, सारक, रुचिकारक, विष्टम्भनाशक, शूलनाशक, मलमूत्रशोधक, स्वरको उत्तम करनेवाला, स्निग्ध, पाकमें भारी और सर्व

प्रकारके रोगोंको शान्ति करनेवाला है । चिल्ली अर्थात् लाल ययुआ इससेभी उत्तम है ।

मन्त्रः ।

अर्शस्त्रिदोषारुचिजन्तुहारीविससनोबुद्धिवलामिकारी ।
क्षारोविपाकेकदुवास्तुक स्यात्तद्रचचिल्लीलघुपत्रयुक्ता ॥ (सुपेज)

अर्थ-ययुआ-यवामीर, त्रिदोष, अरुचि और कृमिनाशक है, विसंतन, बुद्धिजनक, घटकारक, जठराग्निवर्धक, शार विपाकमें कदु और चिल्लीके गुणभी इसीकी समान हैं ।

अपिच ।

वास्तुकद्वितयस्वादुक्षारपाकेकद्वदितम् ।

दीपनपाचनरुच्यलघुशुक्रबलप्रदम् ॥

सरपित्ताक्षणीहान्नकृमिदोषत्रयापहम् । (भा० प्र०)

अर्थ-दोनों प्रकारके ययुए-स्वादुष, शार, पाकमें कदु, दीपन, पाचन, रुचिकारक, इलके, शुक्रजनक, घटकारक, पुच्छेह, दस्तानर, रक्त, पित्त, घ्रीहा, रुधिरविकार, कृमि और त्रिदोषको दूर करे है ।

अप्यय ।

वास्तुकमधुरहृद्यवातपित्तार्गसंहितम् ॥ (भा० प्र०)

अर्थ-ययुआ-मधुर, हृद्यको हितकारी तथा वात, पित्त और यवाती-रोगवालोंको हितकारी है ।

पित्तगुणा ।

चिल्लीवास्तुकतुल्याचसक्षागश्लेष्मपित्तनुत् ।

प्रमेहमूत्रकृच्छ्रघ्नीपथ्याचरुचिकारीणी ॥ (रा० नि०)

अर्थ-चिल्ली अर्थात् लाल ययुआ-ययुएकी समानही गुणवाला है, शार, कफपित्तनाशक, प्रमेहनाशक, मूत्रकृच्छ्रनिवारक, पथ्य और रुचिकारक है । ययुआ जी और गेहूँके रोगमें अधिकतामें उत्पन्न होता है इसके पक्षोंमें रक्त पड़ता होता है और यह सर्वत्र प्रसिद्ध है ।

शालिग्रामनियन्त्ररूपणे ।

लोणालोणीचकथितावृहल्लोणीचोदिका ॥

अर्थ-लोणा, लोणी, वृहलोणी, चोदिका ।

मैसूरभाषामें लोणा, लोणी, वृहलोणी, चोदिका ।

| | |
|-----------------|--|
| हिंदीभाषामें | लोनी, नोनिया कुल्फा । |
| वगभाषामें | वडणुनी, क्षुदेणुनी, वनणुनी । |
| मराठीभाषामें | घोळ, लहान घोळ, मळेघोळ, रायघोळ । |
| गुजरातीभाषामें | लुणी शीणी, लुणी मोटी । |
| कर्णाटकीभाषामें | गोलि । |
| तैलिङ्गीभाषामें | अईलकुस । |
| तामिलीभाषामें | कोरिलकीरु । |
| इंग्रेजीभाषामें | पर्सेलेन । Purs lane |
| लैटिनभाषामें | पोर्चलेका ओलिरेसिया । Portulaca oleracea |
| फारसीभाषामें | खुरफा । |
| अरबीभाषामें | बहुतुलहुमका । |

लोणीगुणा ।

लोणीरूक्षागुरु कङ्घीवातश्लेष्महरीपटु ।

अशौघ्रीदीपनीचाम्लामन्दाग्निविपनाशिनी ॥

अर्थ—लोणी अर्थात् नोनियाका शाक—रूखा भारी, कटु, वातकफनाशक, खारी, अशरोगनाशक, दीपन, अम्ल, मन्दाग्नि और विपविनाशक है ।
घोळिवागुणा ।

घोलिकाम्लासराचोष्णावातकृत्कफपित्तहृत् ।

वाग्दोषव्रणगुल्मघ्नीश्वासकासप्रमेहनुत् ॥

पित्तलाम्लग्रहण्यर्शकुष्ठतीसारनाशिनी ।

अर्थ—घोलिका अर्थात् बड़ी नोनिया, कुल्फा—अम्ल, सारक, गरम, वातकारक, कफपित्तनाशक, वाणीके दोषको दूर करनेवाला, व्रणविनाशक, गुल्मनाशक, श्वासनिवारक, कासहारक, प्रमेहनाशक, पित्तजनक, अम्ल तथा सग्रहणी, बवासीर कुष्ठ और अतिसारको दूर करे ई ।

अथवा ।

घोलिकारुचिदापटीपित्तलाचाम्लिकामता ।

सराकफव चोष्णावातत्वग्दोषनाशिनी ॥

गुल्मव्रण स्रकासनेत्ररुद्धमेहशोथहा ।

अर्थ—नोनिया—रू चकारी, खारी, पित्तजनक, अम्ल, सारक, कफकारक,

गरम तथा वात, त्वचाके दोष, गुल्म, व्रण, श्वाभ, रसाक्षी, नेत्ररोग, ममेद और सूजनको दूर करनेवाली है ।

अन्यथा ।

राजपूर्वावोलिकातुरुक्षाचाम्लापटुःस्मृता ।

रुच्याकट्टीचगुर्वीचदीपिकाग्रे कफापहा ॥

वातचारशचाग्निमाद्यविपशुक्रंचनाशयेत् ॥

अर्थ—बड़ी लोणी—रूक्ष, अम्ल, रसारी, रुचिकारक, कटु, भारी, आग्नि-दीपक, कफनाशक तथा वात, यवाक्षीर, मन्दागि, विप और शुक्रका नाश करे है ।

धुद्रपोटिपातुणा ।

धुद्रवोलिकापित्तलासगकफकरीचकट्टीजीर्णजृतिहा ।

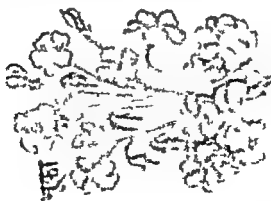
श्वामकासहागुल्मनागिनीमेहशोथहासागसायनी ॥

वातहामताचोष्णकारिणीचाम्लिकामतानेत्ररोगहा ।

चर्मदोषहाव्रणहरीमतापूर्वमेयकं मानिरूपिता ॥ (नि०२०)

अर्थ—छोटैपछोंके नोनिपाफा शाक—पित्तजनक, गारक, फरकारक, कटु, जीर्णसगनाशक और श्वाभ, रसारी, वायुगोला, ममेद और सूजनको दूर करनेवाला है, रसायन, वातरिनाशक, गरम, राह्य तथा नेत्ररोग, चर्म-पिकार और व्रणका विनाश करे है, नोनिपा और गुल्म पर दोनों मीठी और रेतीली तथा रसारी जमीनमें उत्पन्न होते है ।

शुक्रनामानि ।



शुभतुल्यकाम्बुकलिकृचंचाम्लानाम्बुकम् ।

दलाम्लमम्लशाकाख्यमम्लादिहिलमोचिका ॥

अर्थ—चुक, चुकवास्तुक, लिङ्गच, अम्लवास्तुक, दलाम्ल, अम्लशाकाख्य, अम्लहिलमोचिका (चुक्रिका, पत्राम्ला, रोचती, शतवेधनी) ।

| | |
|-----------------|--|
| संस्कृतभाषामें | चुक, चुक्रिका । |
| हिन्दीभाषामें | चूका, चूकाकाशाक । |
| वगभाषामें | चुकापालड । |
| मराठीभाषामें | भावटचुका, लघु व थोर । |
| गुजरातीभाषामें | चुको खाटी भाजी । |
| कर्णाटकीभाषामें | हुलिचकोत । |
| इंग्रेजीभाषामें | ब्लेडरड्याक । Bladdered Dock |
| लैटिनभाषामें | रुमेक्स वेसिकेरिपम् । Rumex vesicarius |
| फारसीभाषामें | तुरशक बडा तुर खुरासानी छोटी । |
| अरबीभाषामें | हुमाजबुकले हामेजा । |

अस्य गुणाः ।

चुक्रोग्निदीपनश्चोष्णोरुचिकारीलघुः स्मृतः । पित्तल'सार-
क'पथ्योद्दत्यम्लः शूलनाशकः ॥ गुल्माग्निमांघहृत्पीडा-
वद्धविदकामवातहा । स्वादुतृष्णावान्तिकफवातगुल्माप-
होमतः । वातचमुखवैरस्यनाशयेदितिकीर्तितः ॥ (नि० र०)

अर्थ—चूका अग्निदीपक, गरम, रुचिकारक, हलका, पित्तकारक, पथ्य, अत्यन्त अम्लशूलनाशक तथा गुल्म, अग्निमाघ, हृदयकी पीडा, मलवद्ध, आमवात, तृषा, वमन, कफवात, गुल्म, वात और मुखकी विरसताको दूर करे है तथा स्वादिष्ट है ।

अन्यत्र ।

चुक्रकदुर्ज्जरभेदिवातजित्पित्तलगुरु ॥ (राजवल्लभ)

अर्थ—चूका—दुर्जर अर्थात् कठिनतामे पचनेवाला, भेदक, वातनाशक, पित्तकारक और भारी है ।

मारिषनामानि ।

मारिषोवाप्पकोमार्प'श्वेतोरक्तश्वसस्मृतः ॥

दीर्घनालोरक्तपर्णोविन्दुपर्णश्चसस्मृतः ॥

अर्थ-मारिष, घाष्पक और मार्ष यह नाम मारिषके हैं, मरमा गणेश और लाल इन भेदोंसे दो प्रकारका है, मरमाही नाल यही होती है, पचे लाल होते हैं और पत्ताके ऊपर विन्दु होते हैं ।

| | |
|----------------|--|
| संस्कृतभाषामें | मारिष । |
| हिन्दीभाषामें | सफेद मरमा लाल मरमा, नवदा । |
| बंगभाषामें | श्वेतकौटान्तेरशाक, लाल कौटान्तेरशाक । |
| मराठीभाषामें | पोकलवाची भार्ता, माटाची भार्ता । |
| गुजरातीभाषामें | डाभो । |
| आत्वलीभाषामें | नेट्टाशाग । |
| तमिऴ्भाषामें | दुग्गम्पुरा । |
| लैटिन्भाषामें | एम्मेथम् टिक्लर । <i>Amranthia ten. o' n</i> |

मारिषगुणा ।

मारिषोमधुर शीतोविष्टम्भीपित्तनुद्गरु । वातश्लेष्मदुग्गोक्त-
पित्तनुद्दिपमाम्रिजित ॥ रक्तमाषोगुरुनातिसन्नारोमधुर मरः ।
श्लेष्मल कटुक पाकेस्त्रल्पदोषउदीरित ॥ (भा० प०)

अर्थ-मरमा-मधुर, शीत, विष्टम्भकाक, विषनागर, भारी, वातक-
प्रकारक, रक्तपित्तनिवारक और अम्रिका विषमत्ताको दूर करे है । छाउ
मरमा-अत्यन्त भारी नहीं, शार, मधुर, मासक, कटुकारक, पचनेमें उपयुक्त
और स्वल्पदोषयुक्त है ।

धनुष्य ।

मारिषोगेनक शीतोऽगुरुमेदस्त्रिदोषजित ॥ (ध० नि०)

अर्थ-मरमा-रुचिकारक, शीत, भारी तथा मेथुनाग और त्रिदोष-
नाशक है ।

तण्डुलीपनामानि ।

तण्डुलीयोमेवनादकाण्डेरस्तण्डुलेरक ।

भण्डीरस्तण्डुलीरीजोविषमभाल्पमारिष ॥

अर्थ-तण्डुलीय, मेवनाद, काण्डेर तण्डुलेरक, भण्डीर, तण्डुलीरीज,
विषम, अल्पमारिष (तण्डुलीय तण्डुली, तण्डुली तण्डुलीयक, भण्डीर,
पटुवीर्य, पनरवन, गुणाक, पञ्चमाक तण्डुलीयु मन्त्रिणरप, रीर,
तण्डुलीयमा)

वञ्चटनामानि ।

पानीयतण्डुलीययत्तकञ्चटमुदाहृतम् ॥

अर्थ पानीय तण्डुलीय, कञ्चट (मारिप जलज)

संस्कृतभाषामें तण्डुलीय, कञ्चट ।

हिंदीभाषामें चौलाईका शाक, जलचौलाई ।

वगभाषामें धुदेनटे, चापानटे, गोयाल, काचडादाम ।

मराठीभाषामें तादुळजा, चवळई ।

गुजरातीभाषामें ताजलजी ।

तैलिङ्गीभाषामें मोलाकुरा, कुईकोग ।

कर्णाटकीभाषामें किरुकुशारे ।

तामिलीभाषामें मुलुकिरह ।

द्राविडीभाषामें काण्डेमाट ।

इंग्रेजीभाषामें हरमेफ्रोडाईट एमेरंथ *Hermaphrodite Amaranth*

लैटिनभाषामें एमेरंथस् टेन्युईफोलियस् *Amaranthus Tenifolius*

फारसीभाषामें सुपेजमर्ज ।

अरबीभाषामें बुकलेयमानीय ।

तण्डुलीयगुणा ।

तण्डुलीयोलघु शीतोरुक्ष-पित्तकफास्त्रजित् ।

सृष्टमूत्रमलोरुच्योदीपनोविपहारकः ॥ (भावप्रकाश)

अर्थ—चौलाई—हलकी, शीतल, रूखी, पित्तकफनाशक, रक्तविकारविनाशक, मलमूत्रनिःसारक, रुचिकारक, दीपन और विपहारक है ।

अपघ्न ।

तण्डुलीयस्तुशिशिरोमधुरोविपनाशन ।

रुचिकृदीपन पथ्यपित्तदाहभ्रमापह ॥

अर्थ—चौलाई—शीतल, मधुर, विपनाशक, रुचिकारक, दीपन, पथ्य तथा पित्त, दाह और भ्रमको दूर करे है ।

अपिच ।

रसेविपाकेमधुरोऽतिशीतोरुक्षस्तृपारोचकनाशनश्च ।

सदाहपित्तरुधिरविषचविशेषतोहन्तिचतण्डुलीय ॥

अर्थ-चौलाई-रस और विषाक्षमें मधुर, अत्यन्त शीतल, रुग्ण तथा
 वृषा, अरुचि, दाह, पित्त, रुधिरविकार और विषका विनाश करे है।
 मध्यम ।

स्वादुपाकमसृक्पित्तविषघ्नतण्डुलीयकम् ।

अर्थ-चौलाई-स्वादुपाकी तथा रक्तपित्त और विषनाशक है ।

मध्यम पचगुणा ।

तण्डुलीयकदलहिममर्श पित्तग्नविषकासविनाशि ।

ग्राहकसमधुरचविषाकेदाहशोषशमनरुचिदायि ॥ (रा नि.)

अर्थ-चौलाईके पत्ते-छुनेमें शीतल, पित्तग्ननाशक, विषघ्न, वातनिवा-
 रक, मलरोधक, पचनेमें मधुर तथा दाह और शोषविनाशक है ।

मध्यम मलगुणा ।

तण्डुलीयकमूलस्यादुष्णशैष्मविनाशनम् ।

रजोरोधकग्नपित्तप्रदग्गसहम् ॥ (आ०स०)

अर्थ-चौलाईकी जड़-रुग्ण, रजनाशक रजरोधक तथा रक्तपित्त और
 मलरोगको दूर करनेवाली है ।

कषायगुणा ।

कञ्चदतिकरक्तपित्तानिलहृग्लघु । (भा०प्र०)

अर्थ-जलनौलाई-रुग्ण, हृग्ल तथा रक्तपित्त और दाहना-
 नाश करे है ।

वायुहृषयामानि ।



पालकचतुपलकयात्रामधुनभुषयिना ।

सुपत्राग्निरथपत्राचमामिणीग्राम्यनहमा ॥

अर्थ-पालङ्क्य, पलङ्क्या, मधुरा, क्षुरपत्रिका, सुपत्रा, त्रिघपत्रा ग्रामिणी, ग्राम्यवल्लभा (क्षुरिका, पालक्या, वास्तुकाकारा, क्षुरिका, चीरित-च्छदा, पालकी) ।

| | |
|-----------------|---|
| संस्कृतभाषाम | पालङ्क्य । |
| हिन्दीभाषामें | पालगका शाग । |
| वगभाषामें | पालशाक । |
| मराठीभाषामें | पालख, पोईशाक । |
| गुजरातीभाषामें | पालखनी भाजी । |
| कर्णाटकीभाषामें | पालक्य । |
| इंग्रेजीभाषामें | स्पाइनेज Spinage |
| लैटिन्भाषामें | स्पाइनेश्या ओल्लिरेश्या Spinasia Oleracea |
| फारसीभाषामें | इस्यनाख । |
| अरबीभाषामें | अस्यनाख । |

पालङ्क्यगुणा ।

पालङ्क्यावातलाशीताश्लेष्मलाभेदिनीगुरुः ।

विष्टम्भिनीमदश्वासपित्तरक्तविषापहा ॥ (भा० प्र०)

अर्थ-पालगका साग-वादी, शीतल, कफकारक, भेदक, भारी, विष्टम्भ-जनक तथा मद, श्वास, रक्तपित्त और विषका विनाश करेहै ।

अथ च ।

पालक्यमीपत्कटुकमधुरपथ्यशीतलम् ।

रक्तपित्तहरग्राहिज्ञेयसन्तर्पणपरम् ॥ (रा० नि०)

अर्थ-पालगका साग-किंचित् चरपरा, मधुर, पथ्य, शीतल, रक्तपित्त-नाशक, मलरोधक और वृत्तिकारक है ।

अन्य च ।

पालक्याभितिवर्णयन्ति सुधियोगुर्वीसरापिच्छिला ।

शीताश्लेष्मकरीचरक्तशमनीपित्तविषनाशयेत् ॥

अर्थ-पालगका साग-भारी, कुष्ठेक दस्तावर, पिच्छिल, शीतल, कफकारक, रुधिरके विकारोंको शान्त करनेवाला तथा पित्त और विषका नाश करे है ।

पुष्पवस्त्रनामानि ।

कुणज्वरः कुणजीचकुणजोरण्यवाम्नुकः ।

अर्थ-कुणज्वर, कुणजी, कुणज, अग्न्यवाम्नुक (जेप्रशाक, मुनाक, मञ्जरी, श्वेतमञ्जरी, अतिसारजनक, दुर्भिक्षवृद्धम) ।

मस्कृतभाषामें कुणज्वर ।

हिंदीभाषामें टेमुवा ।

वगभाषामें वनवेनुपा ।

मराठीभाषामें कुणजीर ।

गुजरातीभाषामें कणेशगे, कणेशी ।

कर्णाटकीभाषामें गोरनेयपलेय ।

लटिन्भाषामें एमेरेन्डम पोटिगोनोइडिम् । *Amaranthus*

Polygonum

कुणज्वरगुणाः ।

कुणज्वरविदोषमोमधुगेरुच्यदीपकः ।

ईषत्कपायः मंत्राहीपित्तश्लेष्मद्वगोलुः ॥ (रा० नि०)

अर्थ-कुणज्वर-विदोषनाशक, मधुर, रुचिकारक, दीपन, किंकिटपेक्षा, मलगेष्क, पित्तश्लेष्मनाशक और हलका है ।

विषय-कुणज्वरके धुप बर्षातमें उपन होतैहै, पत्रे चीलाईकी समान और घाल खेड तथा सालगरी निश्चयतैहै ।

वसोदर्यनामानि ।



उपोदकीफलम्यीनपिच्छापिच्छलच्छम ।

मोहिनीमदशाकश्चविशालावलिपोदकी ॥

अर्थ—उपोदकी, कलम्बी, पिच्छला, पिच्छलच्छदा, मोहिनी, मदशाक, विशाला, वलिपोदकी (उपोदिका, उपोदीका, उपोती, वृश्चिकमिया, अपो-दिका, पूतीका, पूतिका) ।

संस्कृतभाषामें

उपोदकी, पोदकी ।

हिंदीभाषामें

पोईका साग ।

बंगभाषामें

घुइशाक ।

मराठीभाषामें

मायाळ, लघु व थोर ।

गुजरातीभाषामें

पोथी ।

इंग्रेजीभाषामें

रेडमलबारनाइटशेड । Red Malbar Night shade

लैटिनभाषामें

बसेला रुभा Bassella Rubra

व० आल्बा । B Alba

उपोदकीगुणः ।

उपोदकीकपायोष्णाकटुकामधुराचसा ।

निद्रालस्यकरीरुच्याविष्टम्भश्लेष्मकारिणी ॥

अर्थ—पोईका शाक—कपेला, गरम, चरपरा, मधुर, निद्रा और आल, स्पर्शको करनेवाला, रुचिकारक, विष्टम्भजनक और कफकारक है ।

अन्यत्र ।

पोतकीशीतलास्निग्धाश्लेष्मलावातपित्तनुत् ।

अकण्ठचापिच्छलानिद्राशुक्रदारक्तपित्तनुत् ॥

बलदारुचिकृत्पथ्यावृहणीवृत्तिकारिणी ॥ (भा०प्र०)

अर्थ—पोईका शाक—शीतल, स्निग्ध, कफकारक, वातपित्तनाशक, कण्ठको आहितकारी, पिच्छल, निद्राजनक, शुक्रजनक, रक्तपित्तनाशक, बलवर्द्धक, रुचिकारक, पथ्य, पुष्टिकारक और वृत्तिजनक है ।

अन्यत्र ।

उपोदिकासरास्निग्धावल्याश्लेष्मकरीहिमा ।

स्वादुपाकरसावृष्यावातपित्तमदापहा ॥

अर्थ—पोईका शाक—कुठेक दस्तावर, स्निग्ध, बलकारक, कफकारक, शीतल, स्वादुपाकी, वृष्य तथा वात, पित्त और मूत्रनाशक है ।

अपिच ।

उपोदकीद्वितीयाचक्षुद्रान्यावनजातया ।

चतुर्थीमूलपोतीचगुण सर्वा समास्मृता ॥

अर्थ-पोई, लालपोई, छोटी पोई, वनपोई और मूलपोई इन सबके गुण पोईकी समान हैं ।

विवरण । पोईकी बेल घर बाहर सब स्थानोंमें उत्पन्न होजाती है । बेलका रंग सफेद और लाल होताहै, पत्ते गोल होते हैं और चीज टाल हाँते हैं ।

सहस्रमूलोक्तानि ।

काण्डपत्रीकोपपुष्पीवननीलसुमाशुभा ।

महत्त्वमूलिकाज्ञेयावर्षाकालीचमास्मृता ॥

अर्थ-काण्डपत्री, कोपपुष्पी, वननीलगुमा, शुभा, सहस्रमूलिका, वर्षाकाली ।

संस्कृतभाषामें

सहस्रमूर्त्ती ।

हिन्दीभाषामें

सहस्रमूर्त्ती ।

मराठीभाषामें

वेलिची भाज्या ।

गुजरातीभाषामें

गिपमूर्त्ती ।

इंग्रेजीभाषामें

सैटलवर्द । *Sapota Wood*

लैटिनभाषामें

कोमिलिया काम्युनाम । *Comella Cammaria*

अरबी गुमा ।

महत्त्वमूलिकास्त्रिग्वामधुरापित्तनाशिनी ।

क्रिशिद्रातकीवल्यामगचैवन्मात्रनी ॥

अर्थ-सहस्रमूर्त्ती-सिंहप, कपूर, विषनाशक, विभिन्न वाटरासक, पलवागक, सागर और समान हैं ।

अनुनासिक ।

चक्षुःश्रविज्ञानान्तरकलभीभीरुपनिता ।

चक्षुःश्रवणपत्रासुनाक दोनसम्भवः ॥

अर्थ-शुष्प, रिग्ना, चक्षु, कर्ण, भ्रू, श्रोत्रिका, चक्षु, श्रवण, सुनाक, दोनसम्भव (शिखा, शिखरी, दीनपत्रा)

महाचञ्चुनामानि ।

बृहच्चञ्चुविपागिस्यान्महाचञ्चुःसुचञ्चुका ।

स्थूलचञ्चुर्दीर्घपत्रीदिव्यगन्धाचसप्तधा ॥

अर्थ—बृहच्चञ्चु, विपागि, महाचञ्चु, सुचञ्चुका, स्थूलचञ्चु, दीर्घपत्री, दिव्यगन्धा ।

क्षुद्रचञ्चुनामानि ।

क्षुद्रचञ्चुस्तुचञ्चुःस्याञ्चचःशुनकचञ्चुका ।

त्वक्साराभेदनीक्षुद्राकटुकापट्टपत्रिका ॥

अर्थ—क्षुद्रचञ्चु, चञ्चु, चञ्चू, शुनकचञ्चुका, त्वक्सारा, भेदनी, क्षुद्रा, कटुका, पट्टपत्रिका ।

संस्कृतभाषामें

चञ्चु ।

हिंदीभाषामें

चञ्चु, चेनुना ।

वगभाषामें

चेचको ।

मराठीभाषामें

लघुचञ्चु, थोरचञ्चु ।

गुजरातीभाषामें

छुछ राजगरीनी भाजी ।

तैलिङ्गीभाषामें

चिन्तचेट्टु ।

लैटिन्भाषामें

कार्कोरम् एक्युटेंग्युलेरीम् Corchorus acutangularis

चञ्चुगुणा ।

चञ्चुस्तुमधुरातीक्ष्णाकपायामलशोषिणी ।

गुल्मोदरविवन्धाशोऽग्रहणीरोगहारिणी ॥

अर्थ—चञ्चु—मधुर, तीक्ष्ण, कपेला, मलशोषक तथा गुल्म, उदररोग, विवध, बवासीर और सग्रहणी रोगको दूर करे है ।

महाचञ्चुगुणा ।

महाचञ्चु कटूष्णाचकपायामलरोधिनी ।

गुल्मशूलोदराशोऽतिविपद्नीचरसायनी ॥

अर्थ—बड़ा चञ्चुका शाक—चरपरा, गरम, कपेला, मलरोधक, रसायन तथा गुल्म, शूल, उदररोग, बवासीर और विपका नाश करे है ।

क्षुद्रचञ्चुगुणा ।

क्षुद्रचञ्चुस्तुमधुराकटूष्णाचकपायिका ।

दीपनीगुल्मशूलार्श-शमनीचविवन्धकृत ॥ (ग.नि)

अर्थ-भुद्रचतु-मधुर, चरपरा, गरम, कपेला, विवन्धकारक तथा गुल्म, शूल और यशस्वीको दूर करे है ।

भयपण ।

चंचुःशीतासराक्यास्वादीदोषत्रयापहा ।

धातुपुष्टिकरीवल्यामेध्यापिच्छिलिकास्मृता ॥

अर्थ-चंचुका शाक-शीतल, सारक, रुचिकारक, स्वादिष्ट, त्रिदोष-नाशक, धातुवर्द्धक, पुष्टिकारक, उष्णकारक, मेधाजनक और विच्छिन्न है ।

चंचुषोत्रगुणा ।

चंचुबीजरूष्णचगुल्मशूलोदरार्तिजित् ।

विषत्पदोपकण्डूतिआगोर्दुष्टयिपापहम् ॥

अर्थ-चंचुके बीज-चरपरे, गरम, तथा गुल्म, पच उदरकी पीडा, विष, त्वशाके दोष, रुमती, भूमेया विष और दूर विषको दूर करे है ।

विवरण-चंचुनाके छोटे २ गुण होते हैं विषेपचक के यह बीजाग्रेमें होता है पूरा बीजा भाता है और पपी लगी है शरीर अनेक ताति है ।

तद्वाक्यनामानि ।

नाडीककालशाकश्चादशाकचरालकम् ।

अर्थ-नाडीक, कालशाक, आदशाक, चालक ।

भयपण ।

कालशाकसंस्कृत्यंशतकृत्कफोपहृत् ॥

वृत्त्यरुचिकर्मध्यरक्तपित्तहृदिमम् ॥ (भा० प०)

अर्थ-नाडीका शाक-दुष्टेक संसार, कौटकार्य, वायुकारक, कर्मा नाक गुणको दूर करनेवाला, पलकाय, रुचिजनक मेधादायक, सारि जनायक और शीतल है ।

वाक्यनाम पदनामनामानि ।

पट्टशाकन्नुनाडीकोनाडिशाकश्चमस्मृतः ।

अर्थ-पट्टशाक नाडीक, नाडीशाक (नाडीक, केदुर केपुरी, देव, विशोपा) ।

गोद्वयपणामि

पट्टशाक, नाडीशाक ।

| | |
|----------------|---|
| हिन्दीभाषामें | पटुआसाग । |
| वगभाषामें | पादशाक, कोसदारशाक, नालते । |
| मराठीभाषामें | नाडीशाक । |
| गुजरातीभाषामें | नालानी भाजी । |
| लैटिन्भाषामें | आइपोमिया रिप्टेन्स । <i>Ipomoea Reptans</i> अस्यगुणा । |

नाडीकशाकंद्विविधतित्तमधुरमेवच । रक्तपित्तहरंतित्तकृ-
मिकुष्ठविनाशनम् ॥ मधुरपिच्छिलशीतंविष्टम्भिकफवात-
कृत् । तच्छुष्कपत्रज्वरदोपनाशनविशेषतःपित्तकफज्व-
रापहम् । जलचतस्यापिचपित्तहारकंसुरोचनव्यञ्जनयो-
गकारकम् ॥ (रा०नि०)

अर्थ-नाडीक शाक-तित्त और मधुर इन भेदोंसे दो प्रकारका है, तथा
तित्त शाक-रक्तपित्तनाशक तथा कृमि और कुष्ठका नाश करे है । मधुर
शाक-पिच्छिल, शीतल, विष्टम्भजनक और कफवातकारक है । नाडीके
सूखे पत्ते-ज्वर और विशेषकरके पित्त, कफ, ज्वरनाशक हैं । नाडीका
जल-पित्तनिवारक, रोचन और व्यञ्जनमें उपयोगी है ।

अपघ्न ।

तच्छुष्कजलदोपघ्नपित्तश्लेष्मामवातनुत् ॥

अर्थ-नाडीके सूखे पत्ते-जलदोपनाशक, पित्त, कफ और आमवात-
विनाशक है ।

विवरण । नाडीकी बेल पानीमें होतीहै । इसकी डडी पोली और गाठ
दार होती हैं । पत्ते लम्बे लम्बे होतेहैं । अफीमके विषको दूर करनेके लिये
इसके पत्तोंका रस प्रयोग किया जाता है ।

कलम्बीनामानि ।

कलम्बीशतपर्वाचकथ्यन्तेतद्गुणाअथ ॥

अर्थ-कलम्बी, शतपर्वा (कडम्बी, कलम्बू, कलम्बिका)

| | |
|----------------|---------------------|
| संस्कृतभाषामें | कलम्बी । |
| हिन्दीभाषामें | कलमीशाक । |
| वगभाषामें | कलमी । |
| तैलिंगीभाषामें | तोमेवच्चालिचेट्टु । |

भरषा युता ।

कलम्बीस्तन्यदाप्रोक्तामधुराशुक्रहारिणी ॥ (भा०प०)

अर्घ्य-चन्द्रीशाक-स्वर्णोमं दूधको उत्पन्नकरनेवाला, मधुर और शीतजनक है ।

विवरण । कल्मीशाक प्राय सेतोंमें होताई ।

दिएमोयिदनामानि ।

हिलमोचीत्रिष्टुत्पणोविपन्नीहिलमोचिका ।

अर्थ-हिलमोची, त्रिवृत्पणी, विषमो, हिलमोचिका (हिलमोचि, रोन्नी, मोची, मत्स्याद्वी, हेलमो, मग्नी, मत्स्याशी, चम्राद्वी, जलम्राद्वी, म्राद्वी, शस्यग, आचारी)

संस्कृतभाषाम् इतिमाचिका ।

हिन्दीभाषामें

यगभाषामै दिव्येश्वर ।

वसु इन्द्रादी ।

भौतिक० दिगमिता ।

भारत सरकार

शोथकृष्टं रुफपित्तहृन्ते हिलमोचिका ॥ (भाष्यकाग)

अर्थ-होमोगिना अर्थात् इष्टइष्टा ज्ञात-सुखन, कौट, वन, निग
इत्यादी वर करे हैं ।

५-५४३ १

हिलमोर्चासगतिकाकुष्टमीरुफपित्तजित ।

वर्ध-इन्द्राग-गुणैव दस्तास, कदवा तथा गृहभोर चतुर्विधा
मात्रं ।

विवरण । यह आर्याजी समान होनीदि । शाय. अन्वये निवन्त्रे स्थानोपे
देखिजायी है । वृत्त छोटा छोटा नीच गणना सागरि ।

सुनिश्चयनपत्राणां प्रि ।

सित्तियार सित्तियारः स्वस्तिकः मुनिपण्णहः ।

श्रीवाङ्मय मृनिपत्र पर्णाङ्क दुर्दुष्ट शिल्पी ॥

कार्य-मिथिहार, मिथिहार, मन्त्रिक, मुनिपत्तन श्रीराज, गणिक, पार्श्व, कुंज, मिथि (विष्णु, मुनिपत्तन, मुनि, मुनिपत्तन, मिथिहार, मुनिपत्तन, मुनिपत्तन, श्रीराज, पार्श्व, कुंज, मुनिपत्तन, श्रीराज, मुनिपत्तन, मिथिहार)

| | |
|-----------------|---|
| संस्कृतभाषामें | सुनिपण्णक । |
| हिन्दीभाषामें | शिरिआरि, चौपतिया, उटिंगण, गुठवा । उटिंगणके बीज । |
| वगभाषामें | सुपुणीशाक, शुशुनीशाक । |
| मराठीभाषामें | कुरडू । |
| गुजरातीभाषामें | ओटीगण, ओटीगणनावी । खडकतिरा । |
| तैलिङ्गीभाषामें | सुनिपण्णमनेशाकमु । |
| औत्कलीभाषामें | तुनतुनिया । |
| लैटिनभाषामें | ब्लेफेरिस इड्युलीम् । <i>Blepharis Edulis</i> |
| फारसीभाषामें | अजरा, तुरुमेअजरा । |
| अरबीभाषामें | अजरा, बजहुलअजरा । |

अस्य गुणा ।

सुनिपण्णोहिमोग्राहीमोहदोषत्रयापहः ।

अविदाहीलघुःस्वादु कपायोत्क्षदीपनः ।

वृष्योरुच्योज्वरश्वासमेहकुष्ठभ्रमप्रणुत् ॥ (भा प्र)

अर्थ—सुनिपण्णक—शिरिआरि—चौपतियाका शाक—शीतल, मलरोधक, मोहनाशक, त्रिदोषनिवारक, अविदाही, हल्का, स्वादिष्ट, कपेला, रूखा, दीपन, वृष्य, रुचिकारक तथा ज्वर, श्वास, प्रमेह, कोढ़ और भ्रमको दूर करे है ।

अन्यथा ।

सुनिपण्णोलघुर्ग्राहीवृष्योन्निवृत्तिदोषहा ।

मेघारुचिप्रदोदाहज्वरहारीरसायन ॥ (शो०नि०)

अर्थ—चौपतियाका शाक—हल्का, ग्राही, वीर्यवर्द्धक, जठराग्निजनक, त्रिदोषनाशक, मेघाजनक, रुचिकारक, दाहनिवारक, ज्वरहारक और रसायन है ।

अस्य बीजगुणा ।

सुनिपण्णकबीजन्तुमूत्रकृच्छ्रनिवारणम् ।

अर्थ—उटिंगणके बीज—मूत्रकृच्छ्र रोगको दूर करे है ।

विवरण । सुनिपण्णक अर्थात् उटिंगणका छवा धूपकी समान सजल स्थानोंमें होताहै पत्ते चार और चागेरीकी समान होतेहैं उन चार पत्तोंके

धीचमेंगे कटीसी निकलती है उसमें दो पीज नपटे छगेदुये होते हैं ३४
पीज तालमगानेकी सहज चित्रने होते हैं ।

मृगयस्य पञ्चरात्रगुणा ।

पाचनलघुरुच्योष्णपत्रमूलकजनवम् ।

क्षेहसिद्धिदोषघ्नमसिद्धकफपित्तकृत ॥

अर्थ-ज्वीनमूलाके पत्ताका शाक-हल्का, रुचिकारी, गरम और पारक
है वही धी और तैलादिम सिद्धिया अर्थात् छांसाहृजा विदोषनाशक है
और असिद्ध अर्थात् कफा कफपित्तकाशक है ।

मृगयस्य पञ्चरात्रगुणा ।

काञ्चनपत्रशाकतुरुपायकटुकमधु ।

गडमालारक्तपित्तकुष्ठवार्ताश्रनाशयेत् ॥

अर्थ-चम्पाके पत्ताका शाक-कण्टा, चरपरा, मधुर तथा गडमाला,
रक्तपित्त, कुष्ठ और वातका विनाश करे है ।

मृगयस्य पञ्चरात्रगुणा ।

मोक्षपत्रस्वशाकन्तुतित्तचतुर्गमतम् ।

दीपनगुल्ममेहघ्नमुष्णवातरुफकिमीन् ॥

जयेत्प्लीहामग्रदणीमेहपाण्डुगुदामयान् ।

अर्थ-मोक्षपत्रके पत्ताका शाक-जट्टा, कपेला, दीपन, गरम तथा गुल्म
ममेद, वात, कफ, रुमि, प्लीहा, आम, संमरणी, मेह, पाण्डु और गुदके
रोगोंको दूर करे है ।

मृगयस्य पञ्चरात्रगुणा ।

कर्लीदीर्घपत्राचमध्यदण्डाम्बुनिका ।

अर्थ-काली, दीर्घपत्रा, मध्यदण्डा, अम्बुनिका ।

हिन्दीभाषामें कर्ली ।

मराठीभाषामें कुलीनी भात्री ।

गुजरातीभाषामें कर्लीनी भात्री ।

संस्कृतभाषामें कर्लीदीर्घपत्राचमध्यदण्डा ।

मृगयस्य पञ्चरात्रगुणा ।

पल्लीगीतलास्यादीमानलकफहृद्दकः ।

अर्थ—करली—शीतल, स्वादिष्ठ, वातजनक, कफकारक और भारी है ।

अन्यथा ।

करलीमधुरातिक्तावातलासारकामता ।

अर्थ—करलीके पत्तोंका शाक—मधुर, कडवा, वादी और सारक है ।

विवरण । करलीके धुप वर्षाऋतुमें उत्पन्न होतेहैं, पत्ते लम्बे और पत्तेके बीचमेंसे एक बाल निकलती है इसमें सफेद फूल होताहै इसका फल नीले रंगका होताहै और इसके पत्तोंका शाक करतेहैं ।

शतपुष्पापत्रशाकगुणा ।

शतपुष्पादलसोष्णमधुरगुल्मशूलजित् ।

वातघ्नीदीपनपथ्यपित्तकृद्गुचिदायकम् ॥

अर्थ—सोयेके पत्तोंका शाक—गरम, मधुर, गुल्मनाशक, शूलनिवारक, वातविनाशक, दीपन, पथ्य, पित्तजनक और रुचिकारक है ।

मेथिकापत्रशाकगुणा ।

मेथिकापत्रशाकातुतिक्तावातहरामता ।

रुचिकृद्दीपनीयाचर्किचित्पित्तप्रकोपनी ॥

अर्थ—मेथीके पत्तोंका शाक—कडवा, वातविनाशक, रुचिकारक, दीपन और कुछ २ पित्तको कुपित करेहै ।

राजिकापत्रशाकगुणा ।

कटूष्णराजिकापत्रकृमिवातकफापहम् ।

कण्ठामयहरस्वादुवह्निदीपनकारकम् ॥

अर्थ—राईके पत्तोंका शाक—चरपरा, गरम, स्वादिष्ठ, अग्निप्रदीपक तथा कृमि, वात, कफ और कण्ठरोगको दूर करेहै ।

सर्पपत्रशाकगुणा ।

सर्पपत्रमत्युष्णरक्तपित्तप्रकोपनम् ।

विदाहिकटुकंस्वादुशुक्रकृद्गुचिदायकम् (रा०नि०)

अर्थ—सरसोंके पत्तोंका शाक—अत्यन्त गरम, रक्तपित्तप्रकोपक, दाहजनक, चरपरा, स्वादिष्ठ, शुक्रजनक और रुचिकारक है ।

अन्यथा ।

कटुकसर्पपत्रशाकवहुमृत्रमलगुरु ।

अम्लपाकंविदाहिस्वादुष्णंस्त्रिदोषजित् ॥

सक्षारंलवणंतीक्ष्णंस्वादुशाकेषुनिन्दितम् । (भा०प्र०)

अर्थ-मरसोके पचोका शाक-चरपाग, यदुन्मूलकारक, मारी, अम्ल-पाकी, दाहजनक, गग्म, रुखा, त्रिदोषनाशक, क्षारयुक्त, स्वणरासुत, स्वादु और सर्वशाकमें निन्दित है ।

विष्टपत्रसारगुणा ।

शिशुपत्रभवशाकरुच्यवातकफापहम् ।

कटूष्णं दीपनपथ्यकृमिघ्नपाचनपरम् ॥

अर्थ-सैजिनेके पचोका शाक-रुचिकारक, वातकफनाशक, चरपाग, गग्म, दीपन, पथ्य, कृमिनाशक और परम पाचक है ।

दहमपत्रसारगुणा ।

दहमपत्रदोषमम्लवातकफापहम् ।

कण्टकासकृमिश्वासदद्रुकुष्ठप्रणुल्लुपु ॥

अर्थ-परमारके पचोका शाक-त्रोषनाशक, रुखा, वातकफनाशक तथा कण्ट, खोशी, कृमि, श्वास, दाह और कुष्ठनाशक है और इसका है ।

काममर्दनामानि ।

काममर्दोर्मिर्दश्चकासारिर्कर्कशस्तथा ।

अर्थ-काममर्द, अर्गमर्द, कासारि, कर्कश (कारकृत, शिर्द, कायमर्द, बाल, पत्र, जगण, दीपन, काममर्द) ।

मरुतभाषामे

काममर्द (क) ।

दिन्दीभाषामे

कर्कोशी ।

वैगभाषामे

कान्तामुन्दा ।

मगठीभाषामे

गानकाशिक्षा ।

गुजरातीभाषामे

कामोर्गी वैगमी तथा मोर्गे शार ।

बजादरीभाषामे

काममर्दी पगुल बगाद ।

हैन्दीभाषामे

गुग्गुलार्थ ।

हिन्दीभाषामे

मरुतभाषामे । ६०१ प्रमाणे ।

मैथिलभाषामे

काममर्द । ८००१२, १०००

काममर्द । ८००१२, १०००

अस्य पत्रगुणा ।

कासमर्द्दलरुच्यवृष्यकासविपार्शनुत् ॥

मधुरंकफवातघ्नपाचनकण्ठशोधनम् ।

विशेषतःकासहरपित्तघ्नग्राहकलघु ॥ (भा० प्र०)

अर्थ—कसाँदीके पत्तोंका शाक—रुचिकारक, वीर्यवर्द्धक, कासनाशक, विपन्न, बवासीरको दूर करनेवाला, मधुर, कफवातविनाशक, पाचक, कण्ठशोधक, विशेषकरके खासीको दूर करनेवाला, पित्तनाशक, ग्राही और हलका है ।

अन्यञ्च ।

कासमर्द्दःसत्तिकोष्णोमधुरःकफवातनुत् ।

अजीर्णकासपित्तघ्नपाचनकण्ठशोधन ॥ (रा० नि०)

अर्थ—कसाँदी—कड़वी, गरम, मधुर, कफवातनाशक, अजीर्णको हरनेवाली, खासीको दूर करनेवाली, पित्तनाशक, पाचक और कण्ठशोधक है ।

अन्यञ्च ।

कासमर्द्दोऽग्निदःस्वय्य स्वादुस्तित्कस्त्रिदोपजित ॥

अर्थ—कसाँदीका शाक—अग्निप्रदीपक, स्वरको उत्तम करनेवाला, स्वादिष्ट, कड़वा और त्रिदोषनाशक है ।

विवरण । कसाँदीके श्लेष प्रायः वाग और जगलमें बहुत होते हैं, पत्ते बराबर डडीपर लगे होते हैं, फूल पीला आता है, फली चपटी आती है ।

कौसुम्भशाकगुणाः ।

कौसुम्भशाकमधुरकटूष्णविण्मूत्रदोषापहरमदघ्नम् ।

दृष्टिप्रसादकुरुतेविशेषाद्दुचिप्रददीप्तिकरंचवह्ने ॥

अर्थ—कसूमके पत्तोंका शाक मधुर, चरपरा, गरम, मल और मूत्रके दोषोंको हरनेवाला, मदनाशक, दृष्टिको बढ़ानेवाला, रुचिकारक और अग्निको दीपन करे है ।

यथाभूशाकगुणा ।

वर्षाभूवसुकोपर्णकफमांथानिलापर्हा ।

शाकेरुक्षतरांशुल्मशीहृशूलापहारका ॥

अर्थ—घुननेवा और वसुके पत्तोंका शाक—रूखा तथा कफ, मन्दाग्नि, शुल्म, श्लाहा और शूलको निर्मूल करे है ।

गोजिह्वाकुष्ठमेहामृच्छ्रज्वरहरीलघु ।

गोजिह्वाकुष्ठमेहामृच्छ्रज्वरहरीलघु ॥ (भा० प्र०)

अर्थ-गोभीका शाक-कोट, प्रमेह, रुषिरविकार, मूत्ररुद्ध, रजानास-
ह तथा हलका है ।

पटोलपत्रमुषणा ।

पटोलपत्रपित्तघ्नदीपनपाचनलघु ।

स्निग्धवृष्यतथोष्णचज्वरकासकृमिप्रणुत ॥ (भाष्यप्रकाश)

अर्थ-परबलके पत्तारा शाक-पित्तनाशक, दीपन, पाचक, हलका,
स्निग्ध, वीर्यवृद्धक, गरम तथा उष्ण, गौरी और कृमिगैंगफो दूर करे है ।

गुहृचीपत्रमुषणा ।

गुहृचीपत्रमात्रेयसर्वज्वरहरलघु । कपायकटुतिक्तचत्वाहु-

पाकरसायनम् ॥ वल्यमुष्णचसमान्निदन्यादोषनयनृषाम् ।

दाहप्रमेहवातात्मकामलाकुष्ठपाण्डुता ॥ (भा० प्र०)

अर्थ-गिलोयके पत्तोंका शाक-अग्निप्रदीपक, मरं प्रसाधक रजको
हरनेवाला, हलका, शीतोष्ण, नाशक, कटुता, स्वादुपापी, रगामन, मन्ददंष्ट्र,
गरम, मन्त्रोपक, त्रिदोषनाशक, क्षान्तिदायक तथा दाह, प्रमेह, वातार्क
कामला, कोट और पाण्डुगैंगफो दूर करे है ।

परदशावमुषणा ।

परपटोदन्तिपित्तात्यज्वरतृष्णाकफभमान ।

समादीर्घातिलस्तिक्तोदाहनुदातलोत्तलघु ॥

अर्थ-पित्तपापदेवा शाक-अतिपित्त, ज्वर, तृष्णा, वर, भय और शरको
दूर करे है मादी, शीतल, कटुता, मारी और हरकरे है ।

मेहुण्डस्यदलनीक्षुण्डीपननेननहरंत ।

मेहुण्डस्यदलनीक्षुण्डीपननेननहरंत ।

आध्मानार्थिलिरागुरमशूलशोथोदगग्निन ॥

अर्थ-मेहुण्डके फलोंका शाक-शूल, आध्मान शोथ रोग तथा अग्नि
भार, निषा शूल, शूल मुष्ण और उदरगैंगफो दूर करे है ।

मयानाशाकमुषणा ।

मयानाशाकमात्रेयसर्वज्वरानकफप्रणुत ।

उष्णंकटुचतित्तचदीपनगुल्मशूलनुत् ॥

अर्थ—अजवायनके पत्तोंका शाक—जठराग्निकारक, रुचिकारक, वातकफ-नाशक, गरम, चरपरा, कडवा, दीपन, गुल्म और शूलको दूर करे है ।

द्रोणपुष्पीपत्रशाकगुणा ।

द्रोणपुष्पीदलंस्वादुरूक्षगुरुचपित्तकृत् ।

भेदकंकामलाशोथमेहज्वरहरकटु ॥

अर्थ—शूमाके पत्तोंका शाक—स्वादु, रूखा, भारी, पित्तजनक, भेदक तथा कामला, सूजन, प्रमेह और ज्वरका नाश करे है तथा चरपरा है ।

चणकपत्रशाकगुणा ।

रुच्यंचणकशाकस्याहुर्जरकफवातकृत् ।

अम्लविष्टम्भजनकपित्तनुदन्तशोथनुत् ॥

अर्थ—चनेके पत्तोंका शाक—हुँजर, कफवातकारक, खट्टा, विष्टम्भकारक, पित्तनाशक और दातोंकी सूजनको दूर करे है ।

कलायपत्रशाकगुणा ।

कलायशाकभेदिस्यालघुतित्तत्रिदोपजित् ।

अर्थ—मटरके पत्तोंका शाक—दस्तावर, हल्का, कडवा और त्रिदोषनाशक है ।

अथ पुष्पशाकम् ।

अगस्तिपुष्पगुणा ।

अगस्तिकुसुमंशीतंचातुर्थिकनिवारणम् ।

नक्ताध्यनाशनतित्तकपायंकटुपाकिच ॥

पीनसश्लेष्मपित्तघ्नवातघ्नमुनिभिर्मतम् ॥ (भावप्रकाश)

अर्थ—अगस्तिपाके फूलोंका शाक—शीतल, चातुर्थिक अर्थात् चाँयिपाको दूर करनेवाला, रतोंघेको हरनेवाला, कडवा, कसेला, कटुपाकी तथा श्लेष्म, पित्त और वातको विनाश करे है ।

जीवन्तीपुष्पशाकगुणा ।

जीवन्तीपुष्पजशाकतुवरमधुरंलघु ।

पथ्यंरुचिकरंवृष्यंकफपित्तविनाशनम् ॥

अर्थ-जीवन्तीके फूलोंका शाक-कसेला, मधुर, हलका, पथ्य, रुचिकारक, वृष्य और कफपित्तनाशक है ।

वदलीपुष्पगुणा ।

कदल्या कुसुमम्रिन्धमधुरतुवरंगुरु ।

वातपित्तहरशीरंरक्तपित्तक्षयप्रणुत ॥

अर्थ-केलेके फूलोंका शाक-सिन्ध, मधुर, कसेला, भारी, वातपित्तनाशक, शीतल तथा रक्तपित्त और क्षयरोगको क्षय करे है ।

शिशुपुष्पगुणा ।

शिश्रोःपुष्पन्तुकटुकतीक्ष्णोष्णस्नायुशोधकृत् ।

कृमिहृत्कफवातघ्नविट्त्रिधाहगुल्मजित् ॥

मधुशिश्रोस्त्वभिहितरक्तपित्तप्रसादनम् ।

अर्थ-सैंजिनके फूलोंका शाक-चरपरा, तीक्ष्ण, गरम, स्नायुओंमें घृतन करनेवाला, कृमिनाशक, कफवाननाशक तथा विट्त्रिधा और गुल्मको दूर करे है । मधुशिशुके फूलोंका शाक-नेत्रोंको दृढकारी और रक्तपित्त प्रसादक है ।

शाल्मलीपुष्पशाकगुणा ।

शाल्मलीपुष्पशाकन्तुघृतसन्धवमाधितम् । प्रदरनाशय-

त्येवदु माध्यचनसशय ॥ रसेपाकेचमधुरकपायशीतल-

गुरु । कफपित्ताम्रजिह्वाहिवातलचप्रकर्तितम् ॥

अर्थ-ची और सैधानिमिक डालकर बनाया हुआ शैमलके फूलोंका शाक दृग्साध्यप्रदरका नि मदेह नाश करे है । रस और पाकमें मधुर, कसेला, शीतल, भारी तथा कफ और रक्तपित्तका नाश करे है, मारी और यादी है ।

पद्मपुष्पगुणा ।

पद्मपुष्पगुणा ।

म त्ति ।

।

अर्थ-चरनाके फूलोंका शाक-मधुर, हलका, पथ्य, रुचिकारक, वृष्य और कफपित्तनाशक है ।

पद्म, पुष्प, शाक, गुणा, म, त्ति, ।

और आमवातरो

पुष्पशाक

अर्थ—महुवाके फूलोंका शाक—हृदयको हितकारी, वृत्तिकारक और पुष्टिजनक है ।

कोविदारादिपुष्पशाकगुणा ।

कोविदारकर्बुदारशणशाल्मलिपुष्पकम् ।

ग्राहिशार्कप्रशस्तचरत्तपित्तविशेषतः ॥

अर्थ—कचनार, सफेद कचनार, सन और सेमलके फूलोंका शाक—मलरोधक और रक्तपित्तरोगमें हितकारी है ।

अथ फलशाकम् ।

कूष्माण्डनामानि ।

कूष्माण्डस्यात्पुष्पफलपीतपुष्पवृहत्फलम् ।

अर्थ—कूष्माण्ड, पुष्पफल, पीतपुष्प, वृहत्फल (घृणावात, तिमिप, ग्राम्यकर्कटी, कूष्माण्डक, कर्कारु, शिखिवर्द्धक, कुम्भाण्ड, कूष्माण्डी, कर्कोटिका, कुम्भाडी, वृहत्फला, सुफला, कुञ्जफला, नागपुष्पफला) ।

| | |
|-----------------|---------------------------------------|
| संस्कृतभाषामें | कूष्माण्ड । |
| हिन्दीभाषामें | पेठा, कुम्हडा, कोहडा । |
| वगभाषामें | कुमडागाठ । |
| मराठीभाषामें | कोहोळा । |
| गुजरातीभाषामें | भुरु कोड्ड । |
| कर्णाटकीभाषामें | दारकोहोळा । |
| तैलिङ्गीभाषामें | पुलाहा, बर्डीका, गुम्मडि । |
| उडी० | कराडु, पानीकराडु । |
| इंग्रेजीभाषामें | पपकीन । Pumpkin |
| लैटिन्भाषामें | वेनीनकासा सेरिफेरा Benincasa Cerifera |
| फारसीभाषामें | मुराकुदु । |
| अरबीभाषामें | महदेवा । |

अस्य फलगुणा ।

मूत्राघातहरप्रमेहशमनकृच्छ्राश्मरीछेदनम् ।

विण्मूत्रग्लपनंतृपार्तिशमनजीर्णांगपुष्टिप्रदम् ।

वृष्यस्वादुतरत्वरोचकहरंवल्यचपित्तापहम् ॥

कूष्माण्डप्रवरवदन्तिभिषजोवल्लीफलानांपुनः ॥ (रा० नि०)

अर्थ—पेटा—मूत्राघात रोगको हरनेवाला, प्रमेहको शान्ति करनेवाला, मूत्रकृच्छ्र और पथरीका नाश करनेवाला, मल और मूत्र वृषाकी पीड़ाको शान्ति करनेवाला, जीर्ण शर्मावालोंको पुष्टि देनेवाला, वीर्यको बढ़ानेवाला, स्वादिष्ट, अरुचिको हरनेवाला, घटको करनेवाला, पित्तका नाश करनेवाला और सब घेल्वाले फलोंमें उत्तम है ।

अन्यथा ।

मूत्रावरोधशमनं बहुपित्तहारि कृच्छ्राश्मरीप्रशमनविनिह-
न्तिपित्तम् ॥ पथ्यसरोणितममुल्वणपित्तरोगे वृष्णाप-
हं त्रिषु ममतमुदाहरन्ति ॥ (सु०)

अर्थ—पेटा—मूत्रके रोधको दूर करनेवाला, अनेक प्रकारके पित्तोंको हरनेवाला, मूत्रकृच्छ्र और पथरीरोगको शान्ति करनेवाला, पित्तनाशक तथा रक्तपित्तरोगमें हितकारी, वृषानिवाहक है ।

अन्यथा ।

कूष्माण्डभेद्यभिष्यन्दिविष्टम्बिवातपित्तजित् । वस्तिशु-
द्धिकरवृष्यस्वादुपाकरमगुरु ॥ विशेषात्पित्तनुद्वालमध्य
चैव कफापहम् । पक्षलग्नसक्षारं दीपनं पाचनतथा ॥ सर्वं
दोषहरहृद्यपथ्यभेत्तो विकारनुत् ॥ (गो० नि०)

अर्थ—पेटा—भेदक, अभिष्यन्दी, विष्टम्बकारक, वातपित्तनाशक, वस्ति शोधक, वीर्यवर्द्धक, स्वादुपाकी और भारी है । कफा—पेटा—पित्तोपकारक है । मध्यम अवस्थाका पेटा—कफनाशक है । और यथा पेटा—हल्का, गरम, सागयुक्त दीपन, पाचन, पित्तोपनाशक, हृद्यको हितकारी, पथ्य और हृद्य (मन) के रोगनाशक है ।

अपिच ।

कूष्माण्डकफलवृष्यपुष्टिरुद्धातुवर्द्धकम् । वस्तिशुद्धिकरं व-
ल्यमतिस्वादुचर्मीतलम् ॥ गुरुक्षंसारकचहृद्यकफक

मतम् । मृत्राघातंप्रमेहश्चमूत्रकृच्छ्राश्मरीतृषाम् ॥ अरोच-
कवातपित्तपित्तरक्तरुजंतथा । वातरेतोविकारंचनाशयेदि-
तितन्मतम् ॥ तत्कोमलंचातिशीतदोषकृत्पित्तहारकम् ॥
तन्मध्यमंकफकरपक्वकिञ्चिच्चशीतलम् ॥ दीपकंचलघुस्वा-
दुक्षारवस्तेश्चशुद्धिदम् । सर्वदोषहरपथ्यपक्वमज्जाचमाधुरी ।
वस्तिशुद्धिकरीवृष्यापित्तनाशकरीमता ॥ (नि०२०)

अर्थ—पेठा—वीर्यवर्द्धक, पुष्टिकारक, धातुवर्द्धक, वस्तिशोधक, बलका-
रक, अत्यन्त स्वादिष्ठ, शीतल, भारी रूखा, सारक, हृदयको हितकारी,
कफकारक तथा मृत्राघात, प्रमेह मूत्रकृच्छ्र, पयरी, तृषा, अरुचि, वात-
पित्त, पित्त, रुधिरविकार, वात और शुरुके विकारको हरे है, कच्चा पेठा—
अत्यन्त शीतल, दोषकारक, पित्तकारक है । मध्यम अवस्थाका पेठा—कफ-
कारक और पक्का पेठा—किञ्चित् शीतल, दीपन, हलका, स्वादिष्ठ, खार
वस्तिशोधक, त्रिदोषनाशक और पथ्य है । पक्के पेठेकी मूँग-मधुर, वस्ति-
शोधक, वृष्य और पित्तनाशक है ।

विवरण । पेठा घरबाहर सब जगह बोयाजाता है और इसकी बेल
चलतीहै यह फल बड़ा और इसका रंग नीला होता है जब यह फल पकजाता
है तब इसके ऊपर सफेद रंगकी धूलसी जमजाती है ।

पीतकूष्माण्डनामानि ।

कूष्माण्डपीतपुष्पाचग्राम्यापीतफलाचसा ।

गुडयोगफलाचैवपीतकूष्माण्डइत्यपि ॥

अर्थ—कूष्माण्ड, पीतपुष्पा, ग्राम्या, पीतफला, गुडयोगफला, पीत-
कूष्माण्ड ।

संस्कृतभाषामें (डगरी) पीतकूष्माण्ड ।

हिन्दीमें लालपेठा, गोलकटू, भिलथाकटू, काशीफल, सफुरियाकुमार ।

बगभाषामें विलातिकुमडा ।

मराठीभाषामें तावडा भोंपळा ।

गुजरातीभाषामें पतकोलु, शाकरकोलु ।

कर्णाटकीभाषामें दगर ।

तेलङ्गीभाषामें तियागुवडिकाया ।

इंग्रेजीभाषामें
लैटिनभाषामें
फारसीभाषामें

दिगोर्ड । The gourd
कुर्कुबंटा मेसिमा । Cucurbita Mascima
वादरंग ।

पीतकृष्णान्डगुणा ।

अपरपीतकृष्णान्डगुरुपित्तकरंपरम् ।

अग्निमान्द्यकरस्वादुश्लेष्मघ्नवातकोपनम् ॥ (आ० सं०)

अर्थ-पीतकृष्णान्ड अर्थात् भिलया, लालकद्दू-भारी, पित्तजनक, मन्दा-
प्रिकारक, स्वादिष्ठ, कफनाशक और वातको कुपित करे है ।

विवरण-लाल कद्दू अर्थात् भिलयाकद्दू सर्वप्रयोग्य जाता है, इसकी पेटेकी
माफिक घेल चलती है, पत्ते बड़े, बड़े, पूल पीला और फल बहुत बड़े
बड़े लगते हैं ।

कृष्णान्डीनामगुणाश्च ।

कृष्णान्डीनुभृशंलघ्वीकर्कारुरपिकीर्तिता ।

कर्कारुर्ग्राहिणीशीतारक्तपित्तहरागुरु ॥

पक्वातिक्ताग्निजननीसक्षारकफवातनुत । (भा० प्र०)

अर्थ-कृष्णान्डी (कोहली) हल्की और इगकी कर्कारु भी कहते हैं,
कर्कारु-मलरोधक, शीतल, रक्तपित्तनाशक और भारी है, अग्निप्रदीपक,
क्षारयुक्त और कफवातनाशक है ।

अलावुनामानि ।

अलावु कथितातुम्बीद्विधादीर्घाचवर्तुला ।

अर्थ-अलावु, तुम्बी (अलावु, तुम्ब, तुम्बरु, तुम्बा, पिण्डरुन्ना,
मदायन्ना, भाटावु, एगवु, लावु, लावुका, तुम्बिका, तुम्बी, अटीवु,
तुम्बक) यह जो मजारका होता है एक लम्बा और दृढ़ गाल ।

मसूरभाषामें अलावु, तुम्बी ।

हिन्दीभाषामें कद्दू, तोम्बी, लम्बा लीआ, मदान्नीभा, रामतोम्बी ।

बंगभाषामें लाट, कद्दू ।

मराठीभाषामें दुप्पा मोंपडा ।

गुजरातीभाषामें दुर्घायुं, दुधन ।

कर्णाटकीभाषामें वरुणवर्णायि ।

तैलिगीभापामें
इग्रेजीभापामें
लैटिन्भापामें
फारसीभापामें
अरबीभापामें

तीयातुखडीकाया ।
व्हाइटगुर्ड । White gourd
कुकुर्विटा लाजिनेरिया । Cucurbita lagenaria
कुदुशिरिन् कुदुपदरोज ।
युक्तिनेडुकरा ।
अस्या गुणा ।

मिष्टतुम्बीफलहृद्यपित्तश्लेष्मापहंगुरु ।

वृष्यरुचिकरप्रोक्तं धातुपुष्टिविवर्द्धनम् ॥ (भा० प्र०)

अर्थ—तोम्बी कहू हृदयको हितकारी, पित्तकफनाशक, भारी, वीर्यवर्द्धक, रुचिकारक और धातु तथा पुष्टिवर्द्धक है ।

अन्यच्च ।

तुम्बीसुमधुरास्निग्धापित्तघ्नीगर्भपोपकृत् ।

वृष्यावातप्रदाचैव वलपुष्टिविवर्द्धिनी ॥ (रा० नि०)

अर्थ—तोम्बी—मधुर, स्निग्ध, पित्तनाशक, गर्भपोषक, वृष्य, वातजनक तथा बल और पुष्टिकारक है ।

अपिच ।

अलावृभेदनीगुर्वीपित्तघ्नीकफलाहिमा ।

अर्थ—कहू रामतोरई—भेदक, भारी, पित्तनाशक कफकारक और शीतल है ।

अन्यच्च ।

तुम्बीतुमधुरास्निग्धागर्भपोषणकारिणी । वृष्यावातप्रदाव-
ल्यापोष्टिकारुच्यशीतला ॥ मलस्तम्भकरीरूक्षाभेदकागु-
रुपित्तनुत् । काण्डमस्याश्चमधुरवातलकफकारकम् ॥ स्नि-
ग्धशीतभेदकचपित्तनाशकरजगु । (नि० र०)

अर्थ—तोम्बी—मधुर, स्निग्ध, गर्भको पोषण करनेवाली, वृष्य, वात-
जनक, बलकारक, पुष्टिजनक, रुचिकारक, शीतल, मलस्तम्भक, रूखी,
भेदक और पित्तनाशक है । इसकी बेलके काढ़—मधुर, यादी, कफकारक,
स्निग्ध, शीतल, भेदक और पित्तनाशक है ।

कटुतुम्बीनामानि ।

कटुतुम्बीपिण्डफलाराजपुत्रीनृपात्मजा ।

फलिनीतित्तुम्बीचतित्तकाकटुतित्तका ॥

अर्थ-कटुतुम्बी, पिण्डफला, राजपुत्री, नृपात्मजा, फलिनी, तित्तुम्बी, तित्तका, कटुतित्तका (लम्बा, इन्चाडु, कटुकालाशु, कटुफला, तुम्बिनी, बृहत्फला, दंतनीजा, तित्तचीजा, तुम्बिका, तुम्बी, महाफला, तुम्बीका, क्षत्रियवरा, कटुतुम्बिनी) ।

संस्कृतभाषामें कटुतुम्बी ।

हिन्दीभाषामें तितलोकी, कटवीतोम्बी ।

पगभाषामें तित्लाउ ।

मराठीभाषामें कटू भोंपळा ।

गुजरातीभाषामें कटवी तुवडी ।

कर्णाटकीभाषामें बहीसोरे ।

तेलुगूभाषामें चेतिमानव ।

इंग्रजीभाषामें घोदलगुदं । Bottle gourd

लैटिनभाषामें लेर्जिनेरिया वल्गेरिस । *Lagenaria Vulgaris*

ययुस्पर्षिरालेजिनेरिया । *Cucurbita Lagenaria*

फारसीभाषामें कटुदुतल्व ।

अरबीभाषामें कटुलमु ।

अस्या गुणा ।

कटुतुम्बीकटुस्तीक्ष्णावान्तिक्च्छ्वासवातजित् ।

कासघ्नीशोधनीशोफत्रणशूलविपापहा ॥ (रा०नि०)

अर्थ-कटवी ताम्बी-कटु, तीक्ष्ण, शान्तिवनक, श्वासको दृग्पतेशरी, वातनाशक, कामनिवारक, शोधक तथा सूजन, घण, शूल और विषनाशक है ।

अपघ्न ।

कटुतुम्बीहिमाहृद्यापित्तकामविपापहा ।

तित्ताकटुर्विपाकेचवातपित्तज्वरान्तकृत् ॥ (भा०प्र०)

अर्थ-कटवी तोम्बी-शीतल, हृत्पको दित्तकारी, कटवी, पथनेमें कट तथा पित्त, गर्मी, विष और वातपित्तज्वरको दूर करे ।

अस्या पञ्चगुणा ।

पर्णपाकेतुमधुमृजशोवनमुत्तमम् ।

पित्तशान्तिकरंप्रोक्तमृषिभिःसूक्ष्मदर्शिभिः ॥

अर्थ—कडवीतोम्बीके पत्ते—पाकमें मधुर, मूत्रशोधक और पित्तको शान्तिकर हैं ।

कासश्वासविपच्छर्दिज्वरातेंकफकर्षिते ।

प्रताम्यतिनरेचैववमनार्थतदिष्यते ॥

अर्थ—कडवीतोम्बी—खाँसी, श्वास, विप, वमन और जो मनुष्य ज्वरसे तथा कफसे पीडित हैं उनके लिये इसकी वमन देनी चाहिये ।

विवरण—कडवीतोम्बी और रामतोरईकी बेल एकसी होती है, फूलभी दोनोंपै सफेद आतेहैं, फलभी एकसे लगते हैं ।

कर्वटोनामानि ।

एर्वारुःकर्कटीप्रोक्ताकथ्यन्तेतद्गुणाथ ॥

अर्थ—एर्वारु, कर्कटी (लोमशी, व्यालपत्रा, बृहत्फला, व्यालपत्री, लोमशा, स्थूला, तोयफला, हस्तिदन्तफला, कर्कटी, छर्द्दोपनिका, पीनसा, मूत्रला, मूत्रफला, त्रपुपा, हस्तिपर्णी, लोमशकाण्डा, बहुकुन्दा, चिर्भटी, कर्कटाक्ष, शान्तनु, बाहुङ्गी, त्रपुपी, ईर्वारु, उर्वारु, ईर्वारु) ।

संस्कृतभाषामें

कर्कटी ।

हिन्दीभाषामें

ककडी ।

बंगभाषामें

कौकुड, बडकौकड ।

मराठीभाषामें

काकडी, बाहुक—काकडी ।

गुजरातीभाषामें

काकडी ।

कर्णाटकीभाषामें

क्येयसीत ।

तेलिङ्गीभाषामें

दोसकाया ।

इंग्रेजीभाषामें

ककवर । Cucumber

लैटिन्भाषामें

क्युक्युमिस सेटिवम् । Cucumis Sativus

फारसीभाषामें

ख्याटजाब+दरज ख्याटराज ।

अरबीभाषामें

किस्माकदम् ।

अस्या गुणाः ।

कर्कटीशीतलारूक्षाग्राहिणीमधुरागुरुः ।

रुच्यापित्तहरासामापक्वातृष्णाग्निपित्तकृत् ॥ (भा० प्र०)

अर्थ-ककड़ी-काकडी-शीतल, रुखी, मल्गोषक, मधुर, भारी, रुचिकारक और पित्तको दूर करे है । पपी ककड़ी-गम, अग्निवर्द्धक और पित्तकारक है ।

एवार्कपित्तहरसुशीतलंमूत्रामयममधुररुचिप्रदम् ।

सन्तापमूर्च्छापहरश्चतृप्तिदंवातप्रकोपायघनतुसेवितम् (रा.नि.)

अर्थ-ककड़ी-पित्तनाशक, शीतल, मूत्ररोगनाशक, मधुर, रुचिकारक सन्ताप और मूर्च्छाको दूर करनेवाली, तृप्तिजनक और अत्यन्त सेवन करनेसे वातको कुपित करे है ।

अन्वयः ।

कर्कट्यास्तुफलपक्वच्छित्पणाकृमार्तिनुत् ॥

अर्थ-पपी ककड़ी-वमन, तृप्ता और क्लान्तिको दूर करे है ।

अपिच ।

एवार्कतुमधुररुच्यरूक्षचशीतलम् । तृप्तिरुद्धाहकप्रोक्त-
मत्यन्तवातकारकम् ॥ गुरुवातज्वरकफकारकतापहारक-
म् । पित्तमूर्च्छामृत्रकृच्छ्रनाशयेदिति कीर्तितम् ॥ कोमले-
वार्कतितलघुस्वादितिमूत्रलम् । शीतरूक्षरक्तपित्तमृत्रकृ-
च्छ्रान्नदोषजित् ॥ तत्पक्वपित्तलचाग्निदीपनचतृपापदम् ।
उष्णं त्रिदोषशमनकृमदाहहरमतम् ॥ गृहेजीर्णतुतज्जेयमु-
ष्णपित्तकरमतम् । कफवायोर्नाशकरप्रोक्तमायुर्विदेर्जनं ॥

अर्थ-काकडी-मधुर, रुचिकारक, रुखी, शीतल, तृप्तिकारक, मल्गोषक, अत्यन्त घादी, भारी, वातहरकारक कफकारक, तापनाशक तथा पित्त, मूर्च्छा और मूत्ररोगनाश करे है । कोमल ककड़ी-दुर्लभा, कटवी, म्लान, अत्यन्त मृदुकारक, शीतल, रुखी है तथा रक्तपित्त, मृत्ररोग और अग्निवर्द्धक विकारोंको दूर करे है । पपी ककड़ी-पित्तजनक, अग्निप्रदीपक, तृप्तिकारक, गम, त्रिदोषनाशक, कृमिनाशक, दाहनिवारक है और जो पक्व रसविशुद्ध पक्वतासे ऐसी ककड़ी-गम पित्तकारक तथा वम और वातको नष्ट करे है ।

कर्कटीमधुरारुच्याशीनालक्ष्मीनमृत्रला । न्यनायाकटका

तिक्तापाचकाग्निप्रदीपनी ॥ अवृण्वाग्राहिणीप्रोक्तामूत्ररो-
धाश्मरीहरा । मूत्रकृच्छ्रवर्मिदाहश्रमंचैवविनाशयेत् ॥
सापक्कारक्तदोषस्यकारिण्युष्मावलप्रदा ॥

अर्थ—दूसरे प्रकारकी ककडी—मधुर, शीतल, रुचिजनक, हलकी, मूत्र-
जनक, इसकी त्वचा—कटु, तिक्त, पाचक, अग्निप्रदीपक, अवृण्वा, ग्राहिणी,
मूत्ररोध, पथरी, मूत्रकृच्छ्र, वमन, दाह और श्रमका नाश करे है । वही पकी
ककडी—रुधिरविकारकारक, गरम और बलकारक है ।

तृतीयाकर्कटीरुच्यामधुरावातकारिणी ।

शीतामूत्रप्रदागुर्वीकफकृदाहनाशिनी ॥

वर्मिपित्तभ्रममूत्रकृच्छ्रमूत्राश्मरीहरेत् ।

अर्थ—तीसरे प्रकारकी ककडी—रुचिकारक, मधुर, वातवर्द्धक, शीतल,
मूत्रजनक, भारी, कफकारी, दाहनाशक तथा वमन, पित्त, भ्रम, मूत्रकृच्छ्र,
मूत्ररोध, पथरीको दूर करे है ।

अरण्यकर्कटीगुणा ।

अरण्यकर्कटीचोष्णारसेतिक्ताचभेदिका ।

पाकेकट्वीकफकृमिपित्तकण्डूज्वरापहा ॥

अर्थ—वनककडी—गरम, तिक्तारसान्वित, भेदक, पाकमें कटु तथा कफ,
कृमि, पित्त, कण्डू और ज्वरको दूर करनेवाली है ।

तिक्तकर्कटीगुणा ।

तिक्तकर्कटिकाप्रोक्तारसेपाकेकटु स्मृता ।

तिक्तामूत्रकरीवान्तिकरिका मूत्रकृच्छ्रहा ।

आध्मानवातचाष्ठीलानाशयेदितिकीर्तिता ॥

अर्थ—कडवीककडी—रस और पाकमें कटु, तिक्त, मूत्रजनक, वमनकारक,
मूत्रकृच्छ्रहारक तथा आध्मान और अष्ठीलाको दूर करे है ।

चीनाकर्कटीगुणा ।

चीनाकर्कटिकाशीतामधुरारुचिदागुरु ।

कफवाततृप्तिकरीहृद्यापित्तरूपापहा ॥

दाहशोषहराप्रोक्तामुनिभिश्चरकादिभिः ।

अर्थ-चीनाककडी-शीतल, मधुर, रुचिकारक, भारी, कष्टकारी, वात-वटंक, तृप्तिजनक, हृदयको हितकारी, पित्तरोगनाशक तथा दाह और शोषको हरनेवाली है ।

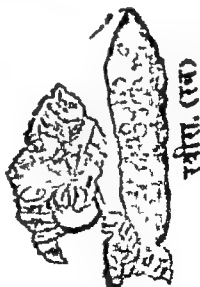
सर्वरक्तगुणा ।

सर्वाकर्कटिकागुर्विदुर्जरावातरक्तदा । अग्निमांद्यकरीप्रोक्ता
ऋषिभिःशास्त्रकोविदैः ॥ वर्षाशरदिचोत्पन्नानोहितानच
भक्षयेत् । हेमन्तजारुचिकरापित्तहाभक्षिताहिता ॥ सेवा-
र्धपक्वासप्रोक्तार्पिनसोत्पादनीमता । सम्यक्पक्वाचमधुराक-
फनाशकरीमता ॥ (नि०२०)

अर्थ-सर्वमकारकी ककडी-भारी, कठिनतागे पचनेवाली, वातरक्तको करनेवाली और मदाग्निको करनेवाली है । वर्षा और शरद ऋतुमें उत्पन्न होनेवाली ककडी हितकारक नहीं है और न भक्षणकरनी चाहिये । हेमन्त ऋतुमें होनेवाली ककडी-रुचिकारक, पित्तनाशक, भक्षणकरनेयोग्य और हितकारी है, अथवा की ककडी-पीनसको उत्पन्न करनेवाली है । अच्छे प्रकारसे पकी हुई ककडी-मधुर और कफनाशक है ।

विवरण-ककडीकी अनेक जाति हैं किन्तु सबप्रकारकी ककडियोंमें मीष्म ऋतुकी ककडी उत्तम है, ककडी सर्वत्र होती है ।

वपुषनामानि ।





त्रुपकण्टकिफलं सुधावाससुशीतलम् ।

अर्थ—त्रुपक, कण्टकिफल, सुधावासा, सुशीतल (पीतपुष्पा, काण्डाङ्ग, कण्डाङ्ग, त्रुपककर्कटी, बहुफला, कण्डाविलता, कोषफला, तुन्दिलफला, सुधावासा) ।

संस्कृतभाषाम्

हिन्दीभाषाम्

बंगभाषाम्

मराठीभाषाम्

गुजरातीभाषाम्

कर्णाटकीभाषाम्

तेलुगुभाषाम्

तामिलीभाषाम्

इंग्रेजीभाषाम्

लैटिनभाषाम्

फारसीभाषाम्

त्रुपक ।

खीरा, क्षीरा, वालमखीरा ।

दौशा ।

तवसें, कारुडी, खिंग ।

तासलि ।

तमयकायि ।

दोजकड्य ।

महेवेहरिकोदुणो ।

The Cucumber

(Cucumis - ovatus S N C Hardwicke)

शियारखुर्द ।

त्रुपकगुणाः ।

त्रुपकलघुनीलचनवतृदकुमदाहजित । स्वादुपित्तापहशीत
रक्तपित्तहरपरम् ॥ तत्पक्वमम्लमुष्णस्यात्पित्तलक्षणात्-

नुत । तद्धीजंमृत्रलशीतरुक्षंपित्तामृकच्छ्रजित् ॥ (भा०प्र)

अर्थ-नवीनखारा-हलका, नीला, स्वादिष्ठ, शीतल तथा तृषा, जम, दाह, पित्त और रक्तपित्तको दूर करेहै । पकाहुआ खीरा-खट्टा, गरम, पित्तकारक, कफघातनाशक है । इसके बीज-मूत्रजनक, शीतल, रुखे तथा रक्तपित्त और मूत्रकृच्छ्रको दूर करेहै ।

अन्यथा ।

म्यात्रपुपीफलरुच्यमधुरंशिरस्यगुरु ।

भ्रमपित्तविदाहार्तिवान्तिहृद्बहुमृत्रदम ॥ (ग०नि०)

अर्थ-खीरा-रुचिकारक, मधुर, शीतल, भारी, बहुमूत्रजनक तथा भ्रम, पित्त, दाहकी वेदना और वमनको दूर करेहै । खीरा सर्वत्र प्रतिष्ठ है ।

चिम्बिटनामानि ।

चिम्बिटेयेनुदुग्धचतथागोरक्षकर्कटी ।

अर्थ-चिम्बिट, घेनुदुग्ध, गोरक्षकर्कटी (मुचिषा, चित्रपत्ता, क्षेप्रचिम्बिटा, पाण्डुपत्ता, पथ्या, रोचनपत्र, चिम्बिषा, कर्कोचिम्बिटा) ।

मृगेष्वागनामानि ।

मृगाक्षीश्वेतपुष्पाचमृगेर्ज्वांरुमृगादनी । चित्रवल्लीबहुफला

कपिलाक्षीमृगंक्षणा ॥ चित्राचित्रफलापथ्याविचित्रामृगचि-

म्बिटा । मरुजाकुम्भमीदेनीजेयाचैकोनविंशति ॥

अर्थ-मृगाक्षी, श्वेतपुष्पा, मृगेर्ज्वां, मृगादनी, चित्रवल्ली, बहुफला, कपिलाक्षी, मृगंक्षणा, चित्रा, चित्रपत्र, पथ्या, विचित्रा, मृगचिम्बिटा, मरुजा, कुम्भसी, देनी (कदल्या, लघुचिम्बिटा) ।

गम्हृतभाषामं

चिम्बिट (श) मृगेर्ज्वां ।

दिन्दीभाषामं

कलशिया, गुरुमीट, भसुर, मेघ, पत्र, गोमगवरी ।

वंगभाषामं

वाकुट, गोमुक्, कुर्गी ।

मगदीभाषामं

विशुड, शैगड, टकमकै ।

गुगरीभाषामं

चिमडी, गनगरी, कोटीपी ।

तनद्रीभाषामं

गुडगगरु ।

इमेतीभाषामं

पुषिगेरपुष्पा ।

मिष्टिभाषामं

पत्रपुषिग मृषातोम ।

पपु०

शर्मागोत्रम् ।

चिर्भटगुणा ।

चिर्भटमधुररूक्षंगुरुपित्तकफापहम् ।

अनुष्णग्राहिविष्टम्भिपक्वमूष्णश्चपित्तलम् ॥

अर्थ—कचरिया, गुरुभीड़-मधुर, रूखी, भारी, पित्तकफनाशक, गरम नहीं, ग्राही और विष्टम्भकारक है । पक्षी कचरिया—गरम और पित्तकारक है ।

अन्यञ्च ।

वाल्येतिक्ताचिर्भटाकिञ्चिदम्ल गौल्योपेतादीपनीसाचपाके ।
शुष्कारूक्षाश्लेष्मवातारुचिघ्नी जाड्यघ्नीसारोचनीदीपनीच ॥

अर्थ—कच्ची कचरिया—कडवी, किञ्चित् अम्ल, गौल्य और पाकमें दीपन है । सूखी कचरिया—रूखी, करुणाशक, वातविनाशक, अरुचिनिवारक, जडतानाशक, रोचन और दीपन है ।

अन्यञ्च ।

चिर्भटःशीतलोग्राहीगुरुश्चमधुर स्मृतः । मलस्तम्भकर पि-
त्तमूत्रकृच्छ्राश्मरीहर ॥ दाहप्रमेहवातचशोपचैवविनाश-
येत् । तत्कोमलफलवातकोपनकफपित्तनुत् ॥ तत्पक्वपि-
त्तलंचोष्णमुनिभिः परिकीर्तितम् ।

अर्थ—कचरिया—शीतल, मलरोधक, भारी, मधुर, मलस्तम्भक तथा पित्त, मूत्रकृच्छ्र, पथरी, दाह, प्रमेह, वात और शोषका नाश करे है । कच्ची कचरिया—वातको कुपित करनेवाली, कफपित्तनाशक है । पक्षी कचरिया—पित्तकारक और गरम है ।

अपिच ।

समस्तचिर्भटवातकफकृत्स्वादुशीतलम् ॥

अर्थ—सर्वप्रकारकी कचरिया—वातकफकारक, स्वादिष्ठ और शीतल है ।

चिर्भटगुणगुणा ।

पुष्पश्चचिर्भटस्येवदोषत्रयकरस्मृतम् ।

अपक्वजीर्णकफकृत्पक्वकिञ्चिद्विशिष्यते (हा०स०)

अर्थ—कचरियाके फूल त्रिदोषकारक है, कच्चा अजीर्ण और कफ करे है और पक्का कुष्ठके विशेष होताहै ।

मृगाक्षीगुणा ।

मृगाक्षीकटुकातिक्तापाकेम्लावातनाशिनी ।

पित्तकृत्पीनसहरादीपनीरुचिकृत्पग । (स०नि०)

अर्थ-सैंध-चरपी, कटवी, पचनेमें सटी, वातनाशक, पित्तनाशक, पीनमोगहो दग्धग्नेशाली, दीपन और रुचिको करनेवाली है ।

अपिच ।

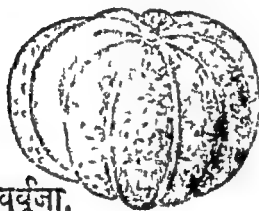
तिक्तसुतीव्रमधुग्वसाम्लजातापहपित्तविनाशनच ।

श्लेष्माकरोचनपाचनचकोठीवटंचाग्निऊनराणाम्(मुपे०)

अर्थ-सैंध-कटवी, तीव्र, मधुर, गटी, वातविनाशक, पित्तनाशक, कफकारक, रोचन, पाचन और मनुष्योंमें अग्निको दीपन कांई ।

विवरण । चिभंटा, फूल, सब, कचरिया इन सबकी येल् एकट्ठी तथा मधुनेकी समान होती है ।

सवृजनामानि ।



खट्वजा.

दशागुलतुम्वृजकव्यतेतद्वृणाअथ ॥

अर्थ-दशागुल दण्ड (कटुगन्ध, अमृताह, पादुका, मधुरता, पट्टेता, मृगशीर्ष, तित्ता, तित्ताप्या, मधुरावा, मृगेगहो, शत्रुगा) ।

संमृगभाषामें

दशागुल ।

दिग्भाषामें

सवृजना ।

देवभाषामें

सामुत, मधुजा ।

समरीभाषामें

सवृज ।

| | |
|-----------------|--------------------------------|
| गुजरातीभाषामें | तलिया शकरदेटी । |
| कर्णाटकीभाषामें | पढजसौते । |
| तैलिगीभाषामें | खरवूज । |
| इंग्रेजीभाषामें | मेलन् । Melon |
| लैटिन्भाषामें | कुक्कुमिस् मेलो । Cucumis Melo |
| फारसीभाषामें | खुरखुजा । |
| अरबीभाषामें | वित्तिख । |

अस्य गुणाः ।

खर्वूजमूत्रलवत्यकोष्ठशुद्धिकरगुरु । स्निग्धंस्वादुतरशीत
वृष्यं पित्तानिलापहम् ॥ तेषुयच्चांम्लमधुरसक्षारञ्चरसाद्भ-
वेत् । रक्तपित्तकरंतनुमूत्रकृच्छ्रकरंपरम् ॥

अर्थ—खर्वूजा—मूत्रकारक, बलकारक, कोठेको शुद्ध करनेवाला, भारी,
स्निग्ध, स्वादुतर, शीतल, वीर्यवर्द्धक तथा पित्त और वातको नष्ट करे है ।
इसमें जो खरबूजा रसमें सटा, मीठा और खारी होता है वह रक्तपित्तको
करनेवाला और मूत्रकृच्छ्ररोगको उत्पन्न करनेवाला होता है ।

अन्यथा ।

तिक्तवात्येतदनुमधुरकिञ्चिदम्लचपाके निष्पक्वचेत्तदमृ-
तसमंतर्पणपुष्टिदायि । वृष्यदाहश्रमविशमनंमूत्रवृद्धिचय-
त्ते पित्तोन्मादापहरकफदपड्भुजवीर्यकारि ॥ (रा० नि०)

अर्थ—कच्चा खर्वूजा—कड़वा, ईषत् मधुर और पाकमें किंचित् खटा है ।
यथा खर्वूजा—अमृतकी समान वृषिकारक, पुष्टिदायक, वृष्य, दाहको दूर
करनेवाला, श्रमको दहनेवाला, मूत्रवर्द्धक तथा पित्त और उन्मादका नाश
करनेवाला, कफकारक और वीर्यजनक है ।

अन्यथा ।

खर्वूजफलराजमुत्तमगुणपक्वंसवृहण त्रत्यस्वादुतरहिम
गुरुमहत्पित्तानिलात्तिहरेत् । स्निग्धमूत्रलमोदगमयहं
सौगन्धिमत्यादरात्रीत पाणियुगे दशागुलमतो नाम्ना कृतं
विष्णुना ॥ (सुषेण)

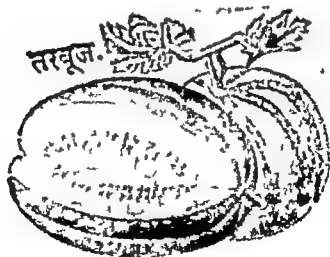
अर्थ—फलोंमें राजा, उत्तम हैं गुणजिनके पेमा पपा खायूना पुष्टिकारक चरुर्दक, स्वादुतर, शीतल भारी, पित्त और वातकी बेदनाको शान्तिकर-नेवाला, त्रिग्ध, मृदजनक, उदररोगको दूर करनेवाला और अत्यन्त सुग-धिवाना है। विष्णुने इसको अत्यन्त आदरमें दोनों हाथोंमें लिपा इसकारण इसका नाम दशागुल है।

अविष्टः ।

पक्वन्तुसर्वजतृप्तिकारकर्पोष्णिकमतम् । कफकृन्मूत्रलचल्य
कोष्ठशुद्धिकरगुरु ॥ स्निग्धसुस्वादुशीतचवृष्यदाहश्रमाप-
हम् । वातपित्तचण्डन्मादनाशयेदितितन्मतम् ॥ तत्क्रोमलम-
धुस्तिक्तकिञ्चिदम्लचतन्मतम् । तत्तृद्वचमधुरंरसेक्षारश्च
अम्लकम् ॥ रक्तपित्तमूत्रकृच्छ्रकृगेतीतिपुधाजगु । (स्तना०)

अंग-पद्मा रसपुञ्जा-हृत्पिङ्गक, पुष्टिजनक, कल्पकाङ्क, मृगशर्दक, घनकाङ्क, कोटिको शुद्ध करनेवाला, सिन्धु, मत्स्याद, शीतल, गृष्म तथा दाद, श्रम, वात, पित्त और उन्मादरोगका हर्त्रेवाला है। पद्मा रसपुञ्जा मधुर, कटुवा और विविध स्वाद है। पुगना खगृता-मधुर, क्षाररसान्वित, भस्म तथा रक्तपित्त और मृगशृङ्गारोगको उत्पन्न करनेवाला है। रसपुञ्जा कईप्रकारका होता है। चित्तु मीषमस्तुमें उत्पन्न होनेवाला सर्वमें श्रेष्ठ होता है।

यास्मिन्नामानि ।



राशिद्वयगरीजस्यात्वातिन्द्वयमुपर्जलम् ॥

रादिहृद्गरीजस्यात्वादिन्द्वमुपर्त्तुलम् ॥

अर्थ—कालिंग, कृष्णबीज, कालिंद, सुवर्चुल (मासफल, चित्रफल, चित्रवल्लिका, चित्र, मधुरफल, वृत्तफल, घृणाफल, मासल, अल्पप्रमाणक, सुखाश, राजतिनिष, लतापनस, नाटाम्र, मेढ, शीर्णवृन्त, बृहद्गोल, सुखवास, सेढ, गोडुम्ब, रक्तबीज, चेलान, मूत्रल) ।

| | |
|-----------------|---|
| सस्कृतभाषामें | कालिङ्ग, शीर्णवृन्त । |
| हिंदीभाषामें | तरबूज, सरदा तरबूज, लाल और कालेबीजांका, कालिंग । |
| वगभाषामें | तरमुज, चेलना । |
| मराठीभाषामें | कालिंगड । |
| गुजरातीभाषामें | तडनूच, कालिंगडू । |
| कर्णाटकीभाषामें | कौंडे । |
| तैलङ्गीभाषामें | तरबुजं पुच्चकाया । |
| औत्क० | तरपुज । |
| इंग्रेजीभाषामें | वाटरमेलन् । Water Melon |
| लैटिनभाषामें | साईट्रुलस् वल्गेरीस् । Citrullus Vulgaris |
| फारसीभाषामें | हिंदवाना । |
| अरबीभाषामें | वत्तिखहिदी । |

कालिङ्गगुणा ।

कालिङ्गग्राहिद्विपित्तशुकहृच्छीतलगुरु ।

पक्वन्तुसोष्णंसक्षारपित्तलरुफवातकृत् ॥ (भा० प्र०)

अर्थ—इच्छा तरबूज—मलरोधक, नेत्रपित्त और शुक्रको हरनेवाला, शीतल और भारी है, पक्वा तरबूज—गरम, क्षारयुक्त, पित्तजनक और कफवातनाशक है ।
अपिच ।

कालिङ्गोमधुर शीत पित्तदाहश्रमापह ।

वृष्य. सन्तर्पणोवलयोर्वीर्य्यपुष्टिविबर्द्धनः ॥ (रा० नि०)

अर्थ—तरबूज—मधुर, शीतल, पित्तनाशक, दाहनिवारक, श्रमनाशक, वृष्य, वसिकारक, वलयर्द्धक तथा वीर्य्य और पुष्टिवर्द्धक है ।

अन्यथा ।

शीर्णवृन्तकफरसभारमधुरलघु ।

अर्थ—तरबूज—कफकारक, क्षारयुक्त, मधुर और हल्का है ।

अपिच ।

चेलानगुरुविष्टम्भमधुरं वातपित्तशित ॥ (राजवल्लभ)

अर्थ-दूमे प्रकाशक तरपूज-भारी, विष्टम्भकाशक, मधुर और वातपित्त नाशक है ।

अपिच ।

कालिंगशीतलवत्यमधुरवृत्तिकारकम् । गुरुपुष्टिकरज्ञेय
मलस्तम्भकरतथा ॥ कफकृद्विपित्तप्रशुक्रधातोस्तुनाश-
कम् । तत्पक्वपित्तलक्षारचोष्णवातकफप्रणुत् ॥ "मजस्तु-
मधुरो वल्योरुचिकृद्वातुवर्द्धकः" । पर्णतिक्तवृद्धिकर
चैव प्रकाशितम् ॥ (नि० २०)

अर्थ-वशा-तरपूज शीत, वल्यकारक, मधुर, वृत्तिकारक, भारी, पुष्टि-
कारक, मलस्तम्भकर, कफकारक तथा दृष्टि, पित्त शुक्र और धातुनाश नाश
कर है । पक्व तरपूज-पित्तजनक, क्षारयुक्त, गरम और वातकफनाशक है ।
तरपूजकी मीठा-मधुर, चल्काशक, कनिजजनक और धातुवर्द्धक है । इसके
पत्ते-पत्रों में भी रक्तवर्द्धक है ।

विवरण । तरपूजके तीन प्रायः नदीके निकट और रेतीले होते हैं तरपूज
दो प्रकारका होता है एक फले पीताका दूसरा लाल पीलाका फले पीला
तरपूजका गूदा गुलाबी और पीले रंगका होता है और लाल पीला तरपूज
जला गूदा लाल गुलाबी और पीले भादि गूदा रंगका होता है इस दूसरे
तरपूजको पीप और माउके मदीनमें पोलते हैं काल्पुन और प्रेम धूप दोन
पुष्प आजाते हैं और वशात्र उपद्रव पत्र लगने हैं । दूसरे प्रकारके अर्थात्
फले पीले तरपूज कालिय मागमें होते हैं । किसी २ देशमें तरपूज
मंदिर होते हैं और शास्त्रमें १ मनपर्यन्त होता है ।

शालिग्रामनामानि ।

श्रीगान्धीस्वादुफलामुपुष्पाय तीर्त्तकास्यादपिर्पातपुष्पा ।

धागफलादीपफलामुकोशाप्रामाग्न स्यान्नयमज्ञेयम् ॥

अर्थ-काशी, स्वादुफला, मुकुता, कर्त्तरी, धानपुष्पा, धागफला,
दीपफला, सुरोषा, धामाग्न (शृंगेयना, गान्धी, शरणात्मिका,
शालिग्राम) ।

| | |
|-----------------|--|
| सस्कृतभाषामें | कोशातकी, धाराफला । |
| हिन्दीभाषामें | तोरई । |
| वगभाषामें | घोपालता । |
| मराठीभाषामें | शिराळी, टोडकी । |
| गुजरातीभाषामें | तुरीया यिसोडा । |
| कर्णाटकीभाषामें | धारवितगेई । |
| तेलङ्गीभाषामें | वीरकाया । |
| इंग्रेजीभाषामें | एक्युटेण्गलेडककम्बर । Acuteangled Cucumber |
| लैटिन्भाषामें | ल्युफाएक्युटेण्गुला । Luffa acutangula |
| | अभ्या गुणा । |

धाराकोशातकीस्निग्धामधुराकफपित्तनुत् ।

ईषद्धातकरीपथ्यारुचिकृद्वलवीर्यदा ॥ (रा०नि०)

अर्थ-तोरई-स्निग्ध, मधुर, कफपित्तनाशक, किंचित् वादी, पथ्य, रुचिकारक, बल और वीर्यको देनेवाली है ।

अन्यञ्च ।

पित्तानिलघ्नकफजिद्विपाकात्पथ्यज्वरेस्वादुरसोपपन्नम् ।

हुताशनोदीपनभेदकचकोशातकशाकवरवदन्ति ॥

अर्थ-तोरईयाँका शाक-पित्तवातनाशक, रुफहारक, ज्वरम पथ्य, स्वादुरसवाला अग्निको दीपन करनेवाला और शाकामें इसको श्रेष्ठ कहते हैं ।

अपिच ।

धाराकोशातकीशीतामधुराकफवातला ।

पित्तघ्नीदीपनीश्वासज्वरकामृमिप्रणुत् ॥ (भा०प्र०)

अर्थ-तोरई-शीतल, मधुर, कफकारक, वाती, पित्तनाशक, दीपन तथा श्वास, ज्वर, खासी और कृमिका नाश करे है ।

महाकोशातकीनामानि ।

महाकोशातकीप्रोक्ताहस्तिघोषामहाफला ।

धामार्गवोघोषकश्चहस्तिपर्णश्चमस्मृत ॥

अर्थ-महाकोशातकी, हस्तिघोषा, महाफला, धामार्गव, घोषक, हस्तिपर्ण (घृत्कोशातकी, हस्तिघोशातकी, ग्राम्यकोशातकी, गेभी, महत्पुष्पा, सपीतिका, हस्तिघोषातकी) ।

| | |
|-----------------|-----------------------------------|
| मसूत्रभाषामें | महाकोशातकी । |
| हिन्दीभाषामें | प्रियातोष, नेत्रुभा । |
| बंगभाषामें | हस्तिशोषा+धुन्दुल । |
| मराठीभाषामें | घोसाळी, घटशोसाळी, पारोशी । |
| गुजरातीभाषामें | गटरां । |
| कर्णाटकीभाषामें | भरतरे । |
| तैलुङ्गीभाषामें | पुडावीरकापा+एनुगवीर । |
| लैटिनभाषामें | ल्युफापेट्टा । <i>Luffapattat</i> |
| फारसीभाषामें | रिज्पार । |
| उडि० | तगटि । |

अन्य गुणा ।

महाकोशातकीस्निग्धासरापित्तानिलापहा । (म०नि०)

अर्थ-विषातोर्द, स्निग्ध, मारक तथा विष और वातका नाश करे ।

अन्यथा ।

महाकोशातकीस्निग्धास्तपित्तानिलापहा । (भा०प्र०)

अर्थ-विषातोर्द, घटी तोर्द-स्निग्ध, रक्तविषनाशक और वात विनाशक है ।

अन्यथा ।

हस्तिकोशातकीस्निग्धामधुराध्मानवातकृत् ।

धृष्याकृमिकरीचपत्रणमंगोपणीचसा ॥ (रा०नि०)

अर्थ-विषातोर्द, नेत्रुभा-गिग्ध, मधुर, आध्मानराग, वातरुचि, धृष्य कृमिजनक और पावको भग्नेशी है ।

निलये शातकीनामानि ।

लोपातस्यामृतच्छिद्राजालिनीमृतवेधना ।

क्षुब्धसुनिक्ताचण्डालीमृदगफलिकामता ॥

अर्थ-लोपातकी, कृमिच्छिद्रा, जालिनी, कृमिपना, क्षुब्ध, सुनिक्ता, चण्डाली, मृदगफलीका (मिर्गलोपातकी, निक्ता, क्षुब्धपत्रिणा, कृष्ण, सुलोपनी, रक्षा, कर्षणच्छिद्रा) ।



संस्कृतभाषामे
हिन्दीभाषामे
वगभाषामे
मराठीभाषामे
गुजरातीभाषामे

कर्णाटकीभाषामे
तेलुगुभाषामे
उडि०
इंग्रेजीभाषामे
लैटिनभाषामे
फारसीभाषामे

तिक्तकोशातकी ।

कडवी तोरई, जगलीतोरई, शिमनी ।

झिझा ।

कडूदोडकी, दीवाली, कट्टिशिराळी ।

शुमखडा कडवातें कडवी घीसोडी, वामार्गवते ।

कडवा तुरीया ।

फाहिरे ।

चेदुविकाया ।

जनी ।

विटरल्युफा ।

Bitter I ulfa

ल्युफाएमेरा ।

Ruffa unara

तुरीयेतल्ल ।

भक्ष्यगुणा ।

तिक्तकोशातकीशीताकिञ्चित्कट्टीकपायका । तिक्तापक्वा-
शयाध्मानमलामाशयशुद्धिकृत ॥ लघ्वीरूक्षावातकफपि-
त्तपाण्डुविपापहा । यकृतकुष्ठार्शशोथघ्नीकासोदरविनाशि-
नी ॥ कामलागुल्मशमनीफलचास्यास्तुभेदकम् । कटुति-
क्तचशीतञ्जस्निग्धहृद्यचदीपनम् ॥ कासागेचरुमेहघ्नज्व-
रकुष्ठकफापहम् । श्वासपित्तचवातञ्चनाशयेदितिकीर्तितम् ॥

अर्थ-कटवी तोरई-कटवी, चर्मा, कफपित्तनाशक, अदृश्य, पचनेमें फट्ट, मारक और वमनकारक है। इसके फल और चर्माओंके नाश देनेमें नागिरा और शिम्की पीटा दूर होती है।

भेषज।

तित्तकोशातकतित्तवातलकफपित्तजित।

अवृष्यंकटुकपाकेसारकान्तिकागकम॥

एतत्फलचवीजचनस्यान्नासाशिगेर्त्तिजित।(शो०नि०)

अर्थ-कटवी तोरई-कटवी, चर्मा, कफपित्तनाशक, अदृश्य, पचनेमें फट्ट, मारक और वमनकारक है। इसके फल और चर्माओंके नाश देनेमें नागिरा और शिम्की पीटा दूर होती है।

शिवरण-तोरई, त्रिपातोरई और कटवी तोरई का भेदोत्ते तनि मषागर्भा है, तथा तोरई मनेन गार्गी और घाग्युक्त तथा पीले रंगकी होती है। त्रिपातोरई नीलेगर्भा और लम्बे मोल तथा पीले रंगकी होती है। और कटवी तोरई मनेन गार्गी भगन्म घृष्ठाके उपर रगती है, पूरा पीले और पीन पाले होती है।

विनिष्टनामानि।

विनिष्ट श्वेतगानि न्यात्मुदीचोण्टकूलक।

अर्थ-विनिष्ट, श्वेतगानि, मुदीचो, मुद्गक (विपुष्ट, वैमृष्ट, पृष्टना, अदिप्या, श्रीचंग्या, नीनकवेष्टि।

गस्तुनभाषामे विनिष्ट+अदिप्या।

दिर्गभाषामे चयडा, त्रिपटा।

गमभाषामे विनिष्टा, विनिष्टा।

भार्थभाषामे रग्यागर्गी।

मुद्गगर्भाभाषामे पृष्टोर्त्ति।

पृष्टभाषामे पृष्टाकापा।

इमेभिषामे रोग्यात्। (१०८)।

भारिभाषामे विनिष्टोपि चयडा।

अस्य गुणा ।

चिचिण्डोवातपित्तघ्नोवृष्य.पथ्योरुचिप्रद ।

शोपिणेतिहित किञ्चिद्गुणैर्न्यून पटोलत. ॥

अर्थ-चिचिण्डा-वातपित्तनाशक, वलकारक, पथ्य, रुचिजनक, शोपरोगमें हितकारी और परबलोंसे गुणाम किञ्चित न्यून है ।

विवरण । चचेंडेकी बेल तोरईकी समान होती है, फल बड़े बड़े लम्बे साँपकी समान होते हैं ।

पटोलनामानि ।

स्वादौचस्वादुपूर्वासास्वादिष्टाजनवल्लभा ।

राजपूर्वासुशाकाचस्वादुपत्रफलाचसा ॥

अर्थ-स्वादुपटोल, स्वादु, स्वादिष्टा, जनवल्लभा, राजपृष्ठा, सुशाका, स्वादुपत्रफला (राजपटोल) ।

अस्य गुणा ।

पटोलपाचनहृद्यवृष्यलघ्वग्निदीपनम् । स्निग्धोष्णहन्ति-
कासास्त्रज्वरदोषत्रयकृमीन् ॥ पटोलस्यभवेन्मूलविरेचन-
कर सुखात् । नालश्लेष्महरपत्रपित्तहारिफलपुन ॥ दोष-
त्रयहरप्रोक्ततद्वृत्तिकपटोलिका । (भा० प्र०)

अर्थ-परबल-पाचक, हृदयको हितकारी, वृष्य, हल्का, अग्निप्रदीपक, स्निग्ध, गरम तथा ख़ाँसी, रुधिगविकार ज्वर, निदोष और कृमिका नाश करते हैं । परबलकी जड़ मुखपूर्वक विरेचन करनेवाली है । परबलकी नाल-कफनाशक है । पटोलके पत्ते-पित्तनाशक हैं । इसके फल-त्रिदोषनाशक है, कड़वे परबलके गुणभी इसीके समान हैं ।

भन्वश ।

पटोलीवलकृत्स्वादु पथ्यादीपनपाचनी । रुच्यापुष्टिकर्त्री
जेयावातपित्तज्वरापहा ॥ शोषत्रिदोषशमनीफलवृष्यरुचि-
प्रदम् । मधुरस्वादुपथ्यचपाचनलघुदीपकम् ॥ हृद्यस्निग्ध
चउष्णचकफरक्तत्रिदोषनुत । कासज्वरकृमीन्हन्तिपर्णव
पित्तनाशनम् । मूलरेचकप्रोक्तमल्लीचैवकफापहा ॥

| | |
|-----------------|---|
| संस्कृतभाषामें | पटोल, तिक्तपटोल । |
| हिन्दीभाषामें | कडवे परवल । |
| वगभाषामें | पलतालता । |
| मराठीभाषामें | कडुपडवल । |
| गुजरातीभाषामें | कडवापटोल, आख्यफुटामणा । |
| कर्णाटकीभाषामें | काहिपडवल । |
| तैलिङ्गीभाषामें | सेसपटूला-कोम्मुपटोल । |
| तामिलीभाषामें | कोम्बुपुडलै । |
| कानाडीभाषामें | मोरहडी । |
| लैटिनभाषामें | ट्रिकोसेन्थिस कुकुमेरिना । <i>Trichosanthis cucumerina</i> अस्य गुणा । |

पटोल-कटुतिक्तोष्ण सर पित्तवलासजित ।

कफकण्डूतिकुष्ठसृग्ज्वरदाहार्तिनाशनः ॥ (रा० नि०)

अर्थ-कडवे परवल-कटु, तिक्त, गरम, कुष्ठक दस्तावर तथा पित्त, बलास, कफ, कण्डू, कुष्ठ, रुधिरविकार, ज्वर और दाहकी वेदनाको दूर करनेवाले हैं ।

अन्यथा ।

पटोलकफपित्तास्रवणकुष्ठज्वरापहम् । विसर्पनयनव्याधि-
त्रिदोषगरनाशनम् ॥ पटोलपत्रं पित्तघनाडीतस्य कफापहम् ॥

फलतस्य त्रिदोषघ्नमलतस्य विरेचनम् ॥ (रा० व०)

अर्थ-कडवे परवल-कफ, रक्तपित्त, घ्नण कुष्ठ, ज्वर, विसर्प, नेत्ररोग, त्रिदोष और विषका विनाश करे हैं । पटोलपत्र-पित्तनाशक है । परवलकी नाडी-कफनाशक । इसके फल-त्रिदोषनाशक और इसकी जड़-दस्तावर है ।

अन्यथा ।

तिक्तापटोलीकटुकासारकोष्णाकटु स्मृता । भेदनीपाच-
नीचैव अग्निदीप्तिकरीपरा ॥ पित्तकफचकण्डूचकुष्ठरक्तवि-
कारकम् । ज्वरदाहतृषाकोष्ठरोगकृमिचनाशयेत ॥ फल-
मस्या-कटुस्तिक्तपाके स्वादुलघुस्मृतम् । दीपनपाचनवृ-
ध्यमललोमनकारकम् ॥ वातपित्तकफानातुयथास्थाने

निवेधकम् । साग्नकश्वासज्वरहृत्त्रिदोषकृमिनाशकम् ॥ पि-
त्तनाशकगुणमूलकफविनाशकम् । कफनाशकरवर्लीतिल
वातरुपापहम् ॥ (नि० २०)

अर्थ-रुद्धे पावले-चम्परे, साग्नक, गरम, कटु, भेदक, पात्रक, क्षयि
प्रतिपक्ष तथा, पित्त, कफ, कण्ट, कुष्ठ, रक्तविकार, ज्वर, दाह, गुषा, पित्त
रोग और कृमिरोगका नाश करे है । इसके पत्र-चम्परे, कटु, स्वादु
पात्री, हृत्के, दीपन, पाचन, वृष्य, मलअनुलोमक तथा वात, पित्त और
कफको घनान्ध्यानमें स्थापन करनेवाले, सारक तथा श्यान, उष्ण, त्रिगुण
और कृमिरोगका नाशकरे है । इसके पत्रे-पित्तनाशक । इसके जट-रुद्ध
नाशक । इसकी घेलकफनाशक और इसका तेल-वात और रुक्ताशक है ।

विपरण । पावले मधुर और कटुवे इन भेदोंसे जो प्रकारके होते हैं, वही
कटुवे पावले औषधिमें अभिरुतागे लियेजाते हैं । परस्परकी घेल प्राप
जगत्में होती है, पूर मये, पत्र नीले और पकनेपर लाल होजाते हैं ।

विधीनामानि ।

विम्बीरुक्तफलातुण्डीतुण्डिकेरीचविम्बिका ।

ओष्ठोपमफलाप्रोक्तापीलुपर्णीचकथ्यते ॥

अर्थ-विम्बी, रुक्तांग, तुण्डी, तुण्डिकेरी, विम्बिका, ओष्ठोपमफला,
पीलुपर्णी (ओष्ठो, कर्मवर्गी, तुण्डिकेरी, तुण्डिकेरी, तुण्डिकेरी,
तुण्डिकेरी, विम्बा, विम्बरु, विम्बना, रुक्तांगोपमा, गोष्ठी, गोष्ठी-
पत्र, छदिनी) ।

संस्तुतमापामे

विम्बी ।

दिन्दीभापामे

कर्मवर्गी ।

वगमापामे

हेलाङ्ग ।

मत्तडीभापामे

गोदुर्गोदगी, पांशुवर्गी ।

मुष्माभापामे

पोडादिटी ।

वर्णाभापामे

गोदुर्गोदगी, गोदुर्गोदगी ।

शामिभापामे

गोदु ।

दीर्घभापामे

गोदुर्गोदगी ।

विम्बिकाभापामे

विम्बिकाभापामे ।

अस्या गुणा ।

विम्बीफलंस्वादुशीतगुरुपित्तास्रवातजित् ।

स्तम्भनंलेखनंरुच्यविवधाध्मानकारकम् ॥

अर्थ—कन्दूरी—स्वादु, शीतल, भारी, रक्तपित्ताशक, वातविनाशक, स्तम्भन, लेखन, रुचिकारक तथा विवध और आध्मानकारक है ।

अन्यच्च ।

विम्बीफलस्वादुशीतस्तन्यकृत्कफपित्तजित् ।

हृदाहज्वरपित्तास्रकासश्वासक्षयापहम् ॥ (शो०नि०)

अर्थ—कन्दूरी—स्वादु, शीतल, स्तनोंमें दूध उत्पन्न करनेवाली, कफ-पित्ताशक तथा दाह, ज्वर, रक्तपित्त, खासी, श्वास और क्षयरोगका क्षय करे है ।

अथञ्च ।

विम्बिकामधुराशीताकफवान्तिकरामता।रक्तपित्तक्षयश्वा-
सकामलापित्तशोफकान्॥रक्तरुग्विषकासांश्चरक्तपित्तज्व-
रान्हरेत्।फलमस्यागुरुस्वादुशीतलंलेखनमतम्॥मलस्त-
म्भकरस्तन्यमुदरेवातसंचयम्।रुच्यपित्तरक्तदोषवाता-
ञ्छासचनाशयेत्।शोथवृद्धिदाहकासश्वासनाशकरमतम्।
पुष्पमस्याकण्डुपित्तकामलानाशकारकम्॥अस्या पर्णो-
द्भवाशाकाशीतलामधुरालघु।ग्राहकातुवरातिक्तापाके
कट्वीचवातला॥कफपित्तहराप्नेक्तापूर्ववैद्यवरैःस्फुटम्।
मूलमस्याहिममेहनाशनधातुवर्द्धकम्॥हस्तदाहहरभ्रान्ति-
वान्तिनाशकरमतम्।(इतिरत्नाकरे-)

अर्थ—कन्दूरी—मधुर, शीतल, कफकारक, वमनजनक तथा रक्तपित्त, क्षय, श्वास, कामला, पित्तकी सृजन, रुधिरविकार, विषदोष, खासी, रक्तपित्त और ज्वरको दूर करे है । इसके फल भारी, स्वादु, शीतल, लेखन, मलस्तम्भक, स्तन्यकारक, उदरमें वायुको संचितकरनेवाले, रुचिकारक तथा पित्त, रुधिरविकार, वात, श्वास, सृजन, वृद्धि, दाह, खासी और दमको दग्नेवाले है । इसके फूल—कण्ट, पित्त, कामलाको दूर करनेवाले हैं । इसके

पक्षोंका शाक-शीतल, मजुर, इल्का, मलगेधक, कमेला, पचनेमें, चायरा, घागी तथा याक और पिचका नाशको है । इसकी जड़-शीतल, प्रमेहनाशक, धातुवर्द्धक तथा हाथ पोंपोंकी डार, बान्ति और भ्रान्तिको शान्तिको है ।

तिक्तविम्बीनामानि ।

तिक्ततुण्डीतुक्तिकाख्याकट्टकाकट्टतुण्डिका ।

विम्बीचकट्टतिकादितुण्डीपर्यायगात्रमा ॥

अर्थ-तिक्ततुण्डी, तिक्तिकाख्या, कट्टका, कट्टतुण्डिका, तदुषिणी
तिक्तविम्बी, तुण्डीपर्यायगात्र ।

सहस्रत्मापामें

तिक्ततुण्डी ।

हिर्वाभापामें

कट्टकी पट्टरी ।

बगभापामें

कट्टतरा, तिक्तवन्त्रा, सेतु वेन्दुकी ।

मराठीभापामें

कट्ट साइली ।

गुजरातीभापामें

कट्टवी घोली ।

पंजाबीभापामें

वीततुन्दुक, कट्टोदे ।

हंदिभापामें

मिरेलेन्द्रादिपा । Cephalanthus Indica

पोरुसिनीपाष्येग ।

अस्या गुणा ।

कट्टतुण्डीकट्टन्तिकाकफपित्तविपापहा ।

अग्निकाशपित्तनीमदापथ्याचरेचनी ॥ (ग० नि०)

अर्थ-कट्टकी पट्टरी-चायरी, कट्टवी, मर्द, पथ्य, रोगन कर्मेशरी
तथा कट्ट, पिच, बिष, भङ्गी गौमी और रक्तपित्तको नष्ट कर्मेशरी है ।

अपघ्न ।

तिक्तविम्बीफलतिक्तनामकंवातकोपनम् ।

गोथरुग्नपित्तमंस्कुरुषपाण्डुहम् ॥ (नि० र०)

अथ कट्टकी पट्टरी-कट्टवी, समनचायक, वातको रुषित कर्मेशरी
तथा गोथरोग, बिष, पिच शयिविषाद, कट्ट और पान्थोगमर्द
कर्मेशरी है ।

अपघ्न ।

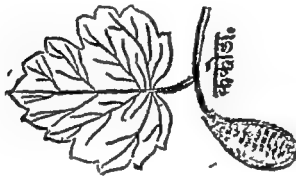
तिक्तविम्बीफलनामकंवातकोपनम् ।

पुरुषपित्तहरणीतमधुरमुपाकयोः ॥ (गौ० नि०)

अर्थ—कच्ची कडवी कन्दूरी—वमनकारक और कफनाशक है । पक्की कडवी कन्दूरी—पित्तनाशक, शीतल और रसपाकमें मधुर है ।

विवरण—कन्दूरी मधुर और कडवी इन भेदोंसे दो प्रकारकी होती है, तहा मधुर कन्दूरी प्रायः बागोंमें बौई जातीहै और कडवी कन्दूरी स्वयं वन तथा बोंसियोंमें उत्पन्न होजाती है इसकी बेल चटतीहै । पत्ते तीन अनीवाले होतेहैं । फूल सफेद, फल हरे और पकनेपर लाल होजाते हैं ।

व्याटकीनामानि ।



ककॉटकीपीतपुष्पीमहाजालीतिचोच्यते ।

अर्थ—ककॉटकी, पीतपुष्पी, महाजाली (पीतपुष्पा, महाजालिनिका, अवन्च्चा, बोधनाजालि, मनोना, मनम्बिनी) ।

| | |
|----------------|-------------------------|
| तत्कृतभाषाम | ककॉटकी । |
| हिंदीभाषाम | खेखता, ककॉडा । |
| बगभाषामें | फलशाकविशेष (काकरोल) । |
| मराठीभाषाम | काटली, कटौली । |
| गुजरातीभाषामें | कटौली । |
| लटिनभाषामें | मोमोंडिकाडापोईका । |
| सैलिहीभाषामें | अगोरकर । |
| म० | बेंपावल । |
| तु० | काड कुचाला । |
| ता० | इगारवलि । |
| फ० | मट्टरागाळ । |

अस्या गुणाः ।

ककॉटीमलहत्कुष्ठह्लासारुचिनाशिनी ।

कासश्वासज्वरान्दन्तिकटुपाकाचर्दीपनी ॥

अर्थ-कफोदा-मलको हग्नेवाला तथा कुष्ठ, हृत्तास, अरुचि, श्याम, रोगी और ज्वरको दूर करनेवाला, कटुपाकी और दीपन है ।

अथवा ।

कक्रोंटकीकटुष्णाचतित्ताविपविनाशिनी ।

वातघ्नीपित्तहृच्चैवदीपनीरुचिकारिणी ॥ (रा० नि०)

अर्थ-कफोदा-चरपरा, गरम, कटुता, विषगिनाशक वातनाशक, पित्त हारक, दीपन और रुचिकारक है ।

अथवा ।

कक्रोंटकीरुचिकराकट्ठीचाग्निप्रदीपनी । तित्कोष्णावातक-
फहृद्विपंपित्तविनाशयेत् ॥ फलमन्यास्तुमधुग्लघुपाके-क-
हुम्भृतम् । अग्निदीप्तिकगुल्मगुलपित्तत्रिदोषनुत् ॥ कफ-
कुष्ठकासमेहश्वासज्वरकिलामनुत् । लालामावारुचिर्वात-
किलामहृदयवन्था । नाशयेत्पर्णमस्याश्रुच्यवृष्यत्रि-
दोषनुत् । कृमिज्वरक्षयश्वासकासदिकार्शनाशनम् ॥ कटो
माशिकसयुक्त जीर्णगेणप्रशस्यते ॥ (नि० २०)

अर्थ-कक्रोंटकी-रुचिकारक, कटु, अग्निप्रदीपक, हित, गरम तथा वात, कफ, विष और पित्तका नाशक है । इसके फल-मधुर, लघु, पक्वमें कटु, अग्निप्रदीपक तथा गुल्म, शूल, विष, त्रिदोष, कफ, कुष्ठ रोगी, ममेह, श्याम, ज्वर, विनाश, वातनाशक, अरुचि, वात, पित्त और हृदयकी पीडाको दूरक है । इसके पत्र-रुचिकारक, रीत्यैवर्द्धक, त्रिदोषनाशक तथा कृमि, ज्वर, पथ श्याम रोगी, विषकी और कसमीरको दूरनेवाले हैं । इसका फल-मधुरे साथ मलकरागमें दितकारी है ।

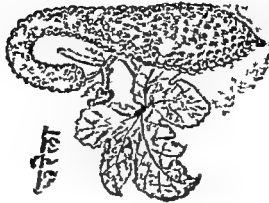
विरण । कक्रोंटकी पत्र प्रायः सारी और पादोंके उपर वैजलाहोई, पत्रके उपर कति दोहरे कधी अरण्यामें हो और पत्रनाश तथा पट्टनाहोई ।

कक्रोंटकीमात्र ।

कासमेहसहितमन्यादुमराण्डसुकाण्डकम् ।

अर्थ-कक्रोंटकी, कटुता, कटुता, कटुता, सुकाण्डक (कटु, कक्रोंटकी)

कारवेल्लीनामानि ।



कारवेल्लीवारिवल्लीबृहद्वल्ल्यापरास्मृता ।

अर्थ-कारवेल्ली, वारिवल्ली, बृहद्वल्ली (कक्का, करवल्ली, चिरिमत्र, कटि-
ट्टका, मूकमवल्ली, कण्टफला, पीतपुष्पा, अम्बुवल्कि, कटिल्लक, सुपवी,
राजवल्ली, शुपवी, ऊर्ध्वासित, तोयवल्ली, कण्डूर, काण्डकटुक, मुकाण्ड,
उग्रकाण्ड, नासासवेदन, पटु) ।

| | |
|-----------------|--|
| सस्कृतभाषामें | कारवेष्ट, कारवेल्ली । |
| हिन्दीभाषामें | करेला, कगेली । |
| बंगभाषामें | घडकरेलाउच्छे, छोटकरेलाउच्छे । |
| मराठीभाषामें | कारल, छुडकारली, लघुकागली । |
| गुजरातीभाषामें | कारेला, कडवा वेला । |
| कर्णाटकीभाषामें | हागल । |
| तेलङ्गीभाषामें | करिला, काकरकापा । |
| ओत्तलीभाषामें | शलग । |
| इंग्रेजीभाषामें | हेरीमोर्डिका । Hairy Mordca |
| स्पेनिशभाषामें | मोमोर्डिकाक्रेटिया । Memordica Chorata |
| | मो सिंबेलेगिया । M Cymbalaria |
| फारसीभाषामें | कारेलाह । |
| अरबीभाषामें | किस्ता, उलाहिमा । |
| | कारवेष्टगुणा । |

कारवेष्टहिमभेदिलघुतिक्तमवातलम् ।

ज्वरपित्तकफान्नघ्नपाण्डुमेहकृमीन्दरेत ॥

तद्वृणाकारवेष्टीत्यादिशेषादीपनीलधु । (भा.प्र.)

अर्थ-कण्टा-शीतल, भेदक, हल्का, फटका, वातसारक नहीं तथा ज्वर, पित्त, कफ, रुचिगविकार, पाण्डुरोग, प्रमेद और कृमिगणका नाशक है । कण्टाके गुणभी कण्टाके समान हैं विशेषकर पित्तनाशक और हल्की है ।

अथवा ।

कारवेष्टमवृष्यश्चोचनकफपित्तजित (रा०नि०)

अर्थ-कण्टा-अवृष्य, रुचिहारक तथा रुचि और पित्तका नाशक है ।

अथवा ।

[कारवेष्टश्चातम कफघ्न पित्तकारक ।

उष्णोरुचिकर प्रोक्तोरक्तदोषकरोत्तृणाम्] (हा०)

अर्थ-कण्टा-वाताविनाशक, कफनाशक पित्तहारक, गरम, रुचिहारक और रुचिके विनाशक करनेवाला है ।

अथवा ।

कारवेष्टं चातितिकमग्निदीप्तिकलधु । उष्णभीतभेदकं च
स्वादुपच्यसमीरितम् ॥ अरुचिचकफं वातगतदोषज्वरकृ-
मीनापित्तपाण्डुअकुष्ठअनाशयेदिति कीर्तितम् ॥ बृहदु-
क्तकारवेष्टकदुतित्तवदीपकम् । अवृष्यभेदकं स्वादुरुच्य
क्षारलघुस्मृतम् ॥ अवातलपित्तदग्गत्कफपाण्डुगोहृत ।
अगेचककफशामव्रणकामकृमोन्मथा ॥ कोष्ठकुष्ठज्वरघ्न
प्रमेदाध्माननाशनम् । कामलां नाशयत्येव गुणास्त्वन्येतुष-
र्धवत् ॥ जलजकारवेष्टस्यात्तित्तभेदकं मृतम् । रुफं कुष्ठ पा-
ण्डुगोहृमीन्पित्तअनाशयेत् ॥ वनजकारवेष्टन्तुदीपन ति-
क्तकमतम् । दृढवर्गश-कामप्रकफवातकृमीहरम् (ग्लावरे)

अर्थ-कण्टा-अथवा कण्टा, अग्निदीपक, हल्की गरम, शीतल, स्वादु, पच्य तथा भस्मि, कफ, रुचि, रुचिगविकार, ज्वर, कृमि, पित्त पाण्डुरोग और कुष्ठरोगको नष्ट करनेवाला है । कण्टा-कण्टा, पित्त, रुचि, अवृष्य, भेदक स्वादि, रुचिहारक गरम, हल्का, वातसारक नहीं, पित्तहारक तथा रुचिगविकार, पाण्डुरोग, अग्नि, कफ आदि प्रम

खाँसी, कृमि, कोठरोग, कुष्ठ, ज्वर, प्रमेह, आध्मान और कामला रोगको हरनेवाला है । और शेष गुण पूर्वकी नाई जानने । जलमें उत्पन्न होनेवाला करेला-कडवा, भेदक तथा कफ, कुष्ठ, पाण्डुरोग, कृमि और पित्तरोगका नाश करे है । बनकरेला-दीपन, कडवा, हृदयको हितकारी बया ज्वर, ववासीर, खाँसी और वातको दूरकरे है ।

डिण्डिगनामानि गुणाश्च ।

डिण्डिशोरोमशफलोमुनिनिर्मितइत्यपि ।

डिण्डिशोरुचिकृद्रेदीपित्तश्लेष्मापह'स्मृत' ॥

सुशीतोवातलोरुक्षोमूत्रलश्चाश्मरीहर' ॥ (भा० प्र०)

अर्थ-डिण्डिश, रोमशफल, मुनिनिर्मित । हि० डेंडश । डेंडश-रुचिकारक, भेदक, पित्तकफनाशक, शीतल, यादी, रूक्ष, मूत्रजनक और पयरीको दूर करे है ।

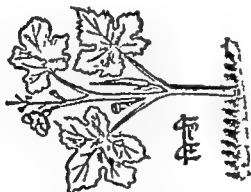
पिण्डारगुणा ।

पिण्डारंशीतलवलयपित्तघ्नरुचिकारकम् ।

पाकेलघुविशेषेणविपशान्तिकरस्मृतम् ॥ (भावप्रकाश)

अर्थ-पिण्डार-शीतल, वलकारक, पित्तनाशक, रुचिकारक, लघुपाकी और विशेषकरके विषको शान्ति करे है ।

भेण्डानामानि ।



भेण्डाभिण्डातिकाभिण्डोभिण्डक क्षेत्रसम्भव ।

चतुष्पदश्चतु पुण्ड्र'सुशाक पिच्छिल'स्मृत ॥

अर्थ-भेण्डा, भिण्डातिका, भिण्ड, भिण्डक, क्षेत्रसम्भव, चतुष्पद, चतु-पुण्ड, सुशाक, पिच्छिल (भिण्डातक, असपत्रक, कण्ठ, मृत्तवीन) ।

| | |
|-----------------|---|
| मसृष्टभाषामें | भिण्डी । |
| दिर्निभाषामें | भिण्डी । |
| वंगभाषामें | स्वनामरयातस्त्राफ वि० । |
| मगडीभाषामें | भेडे, गनभेडे । |
| गुजरातीभाषामें | भीटा । |
| कर्णाटकीभाषामें | बेंडे । |
| तेलुगुभाषामें | भेडकाया । |
| संस्कृतभाषामें | दिविग्लम् फलमुल्लेखम् । Hish-hus । पत्त । |
| काश्मीरीभाषामें | यामिया । |
| अरबीभाषामें | बुवा । |

भेण्डागुणा ।

करपर्णफलं रुच्यं पिच्छिलगुरुवातलम् । वृष्यं श्लेष्मकरं वल्य
शुक्रवृद्धिकरं परम् ॥ कासेमन्दानलेवातेपीनसेषु विनिर्दिष्टम् ।

अर्थ-भिण्डी-रुचिकारक, पिच्छिल, भारी, यादी, वृष्य, कफकारक,
पित्तकारक, शुक्रवृद्धि तथा रोगनाश, मन्दानि, वात और पीनगोगमें
अद्वितीय है ।

अप्य ।

भेण्डात्वम्लरसाद्योष्णाग्राहीचरुचिकारका ।

गजनामानिघण्टेन्द्रवृष्यापरास्मृता ॥ (नि० १०)

अर्थ-भिण्डी-अम्ल, गरम, मल्लोपक, रुचिकारक और वृष्य ।

गजनामानि ।



वार्त्ताकीकण्टवृन्ताकीकण्टालु कण्टपत्रिका । निद्रालुर्मा-
सलफलावृन्ताकीचमहोटिका ॥ चित्रफलाकण्टकिनीमह-
तीकट्फलाचसा । मिश्रवर्णफलानीलफलारक्तफला तथा ॥
शाकश्रेष्ठावृत्तफलानृपप्रियफलास्मृता ।

अर्थ—वार्त्ताकी, कण्टवृन्ताकी, कण्टालु, कण्टपत्रिका, निद्रालु, मासल-
फला, वृन्ताकी, महोटिका, चित्रफला, कण्टकिनी, महती, कट्फला, मिश्र-
वर्णफला, नीलफला, रक्तफला, शाकश्रेष्ठा, वृत्तफला, नृपप्रियफला (हिंगुली,
सिंही, भण्डाकी, दुष्प्रवर्षिणी, वार्त्ता, वार्त्ताकु, वातिकुण, वार्त्ताक, शाक
विल्व, राजकृष्णमाण्ड, महाग्रहती, शाकविल्वक, वार्त्तिक, वातिगम, वृन्ताक,
वङ्गण, अङ्गण, वेर, नीलवृषा, भाण्डिका, नीलकण्टका) ।

| | |
|-----------------|----------------------------------|
| संस्कृतभाषामें | वार्त्ताकु । |
| हिंदीभाषामें | बैंगन, भण्डा, भटा । |
| वगभाषामें | बेगुनगाठ । |
| मराठीभाषामें | वागे । |
| गुजरातीभाषामें | रिंगणा, रिंगणी । |
| कर्णाटकीभाषामें | वटने । |
| तैलङ्गीभाषामें | वकाया, वङ्गण्हेरिवगु । |
| औत्तलीभाषामें | वाइगुण । |
| तामिलीभाषामें | कुठिरेकड् । |
| इंग्रेजीभाषामें | ब्रिजल् । Bringle |
| लैटिनभाषामें | सोलैनमेलजीना । Solanum Melongena |
| फारसीभाषामें | बादगान् । |
| अरबीभाषामें | बादजान् । |

य साकृद्गुणा ।

वार्त्ताकीकटुकारुच्यामधुरापित्तनाशिनी ।

बलपुष्टिकरीदृद्यागुरुवातेपुनिन्दिता ॥ (रा० नि०)

अर्थ—बैंगन—कटु, रुचिकारक, मधुर, पित्तनाशक, बलकारक, पुष्टिजनक,
हृदयको हितकारी, भारी और वातरोगम निन्दित है ।

अपघ्न ।

निद्राकरं प्रीतिकरं गुरुस्यात्सवातलंकासविकारकारि ।

श्रेष्ठसुदीर्घकफवर्द्धनञ्चसन्धासकासारुचिवर्द्धनञ्च॥(श.)

अर्थ-पेगन-भिद्रानक, प्रीतिकारक, भारी, यार्दी, सौमिके विकाराको बग्नेवाला तथा कफ, श्वाग, सौमी और भरुचिको यद्दानेवाला है । मन्वा पेगन श्रेष्ठ होता है ।

भाष्य ।

अग्निप्रदामारुतनाशिनीचशुक्रप्रदाशोणितवर्द्धिनीच ।

हृदयामकामारुचिनाशिनीचवात्ताकुरेपागुणसप्तयुक्ता॥

अर्थ-पेगन-अग्निवर्द्धक, वातविनाशक, शुक्रजनक, शोणितवर्द्धक तथा हृदयाम, सौमी और भरुचिको दूरवानेवाला है ।

मावालाकफपित्तप्रीपकाससारपित्तला । सदाफलात्रिदोष-
भीरक्तपित्तप्रसादनी ॥ अद्धारपकावार्त्ताकु. किञ्चित्पित्तक-
गीमता । कफमेदोऽनिलहरासरालघुतरापरा ॥ (रा० ५०)

अर्थ-यथा पेगन-वृषपित्तनाशक और वशा पेगन-सागयुक्त और पित्त है । मन्वम पेगन-प्रिदोषनाशक और रक्तपित्तको निर्मूल करनेवाला है । अगारापे मुनादुआ पेगन [पेगनका भुक्ता]-किञ्चित् पित्तकारक, कफ, मेद और वातविनाशक है, मारक और लघुतरा है ।

भाष्य ।

वृन्ताककटुतिक्तमुष्णमधुरसारक्षुधादीपन हृदयं कल्पम-
पित्तलकफमरुन्निर्त्मर्वाकोत्तमम् ॥ सवागं कफवातहा-
रिचिरुद्धहेस्तुमदीपन तिक्तोष्णमधुरतथाकटुगन्धमाप-
शपित्तप्रदम् ॥ (त्रि०)

अर्थ-पेगन-वृ. तिक्त, गन्ध, मधुर, साग, क्षुधाको दीपनकारक, हृदयको दित्तार्गी, रक्तिकार्गी, अपित्त, वरवातनाशक और मरुमारमे उन्नम है । और किमी सागमे माप वृद्धवानाशक, रोगकारक, अग्निवर्द्धक, तिक्त, गन्ध, मधुर वदुमाशित और विविध रोगको दृष्टि करे है ।

भाष्य ।

वृन्ताकस्यादुर्नीक्षोष्णकटुपाकमपित्तटमाज्वग्वानला-
मभ्रगपनं शुक्ररूपम् ॥ तदालकफपित्तमंशुदपित्तकंगुल ।

वृन्ताकपित्तलकिञ्चिदङ्गारपरिपाचितम् ॥ कफमेदोनिला-
मन्नमत्यन्तलघुदीपनम् । तदेवहिगुरुस्निग्धंसतैललवणा-
म्वितम् ॥ अपरंश्चेतवृन्ताकंकुष्ठटाण्डसमंभवेत् । तदर्शः-
सुविशेषेणहितंहीनञ्चपूर्वतः ॥ (भा० प्र०)

अर्थ-वैगन-स्वादु, तीक्ष्ण, गरम, पाकमें फट्टा, अपित्तल, ज्वर, वात
और कफनाशक, दीपन, शुक्रजनक और हल्का है, कच्चा वैगन-कफपित्त-
नाशक, पक्का वैगन-पित्तकारक और भारी है । अगरोंपै भुनाहुआ वैगन
किंचित् पित्तकारक है तथा कफ, मेद और वातनाशक और अत्यन्त हल्का
तथा दीपन है वही अगरोंपै भुनाहुआ वैगन-तेल और लवणयुक्त, भारी
और स्निग्ध है । और दूसरा सफेद रंगका वैगन मुरगेकी अडेकी समान
होता है वह सफेद वैगन बवासीरवाले मनुष्योंको विशेष करके हितकारी है
और पहिले वैगनोंसे गुणोंमें हीन है । वैगन सर्वत्र प्रसिद्ध है ।

गोराणीनामानि ।

गोराणीदृढबीजाचनिशांध्यघ्नीचवाकुची ।

सुशाकावक्रशिम्बीचगोरक्षफलिनीस्मृता ॥

अर्थ-गोराणी, दृढबीजा, निशांध्यघ्नी, वाकुची, सुशाका, वक्रशिम्बी,
गोरक्षफलिनी ।

संस्कृतभाषामे

गोराणी ।

हिन्दीभाषामे

गवाकी फली ।

मराठीभाषामे

गोवारीच्या शगा, वावच्या ।

गुजरातीभाषामे

गुवार ।

तैलिङ्गीभाषामे

गोरचिकुडु ।

[alioulo

लैटिन्भाषामे

सांयेमोपसिम् सोरेलेपाइडिङ्ग । Cymopsis Pro

अस्या गुणाः ।

वाकुचिकाग्निम्विरूक्षावातलामधुरगुरु ।

सराकफकरीचाग्निदीपनीपित्तनाशिनी ॥ (नि० २०)

“पत्रमस्यानिशांध्यघ्नपित्तनाशकरपरम्” ।

अर्थ-गुवाकी फली-रूखी, यादी, मधुर, भारी, दस्तावर, कफकारक,

अग्निमर्दीयक और पिचतागक है । गुवारके पसे-रतोंधेको दूरवनेराने
और पिचको दग्नेवाले है ।

इतिनिष्पार्वीनामानि ।

निष्पावीग्रामजादि-स्यात्फलिनीनखपृष्ठीका ।

मण्डपाफलिकाशिर्षीज्ञेयागुच्छफलाचसा ॥

अर्थ-निष्पावी, ग्रामजा, पालेनी, नरपृष्ठीका, मण्डपा, शिर्षी,
गुच्छरत्ना (विनालफलिका, निष्पावि, निष्पिग) ।

शुभनिष्पार्वीनामानि ।

अन्यांगुलिफलाचैवनखनिष्पाविकाम्मृता ।

वृत्तनिष्पाविकाग्राम्यानखपुञ्जफलाचना ॥

अर्थ-अङ्गुलिफला, नखनिष्पाविका, वृत्तनिष्पाविका, ग्राम्या, नख
अङ्गुला, अङ्गना (पविक्कुरत्ना) ।

मंमृन्माषाम निष्पावी, नखलिफला ।

हिन्दीभाषामें गम, गर्वा ।

बगभाषामें योग, बगवटी ।

मराठीभाषामें पेंवटा, लगु पेवडा, खोर पेवडा, बातपापटी ।

गुजरातीभाषामें पालोले, पान्दी ।

तामिळीभाषामें मांथेरुंति ।

कन्नड़ीभाषामें गिरुंदु, अनुषुद ।

इंग्रजीभाषामें स्पॉन्गिडि रोडिकोस । *Spongy Red* ।

संस्कृतभाषामें रोमिकोग् लघुवत् । *Red on the* ।

आर्यभाषामें पिग ।

इतिनिष्पार्वीनामानि ॥

निष्पावीद्वौहस्त्रिभुजाकपायोमधुगोमसौ ।

कण्ठशुद्धिकर्मेभ्योदीपनोक्तिकारको ॥ (ग० नि०)

अर्थ-दोनों प्रकारकी (रंग और मोह) निष्पावी-बेवसी, मधु
कण्ठोपक, मेधागवत्, दीपन और कटिगारक है ।

अथवा ।

ग्रामजावनन्यागुग्गुगमधुगमना । मुनामियाकण्ठशु-

द्धिकारिणीग्राहिणीमता ॥ अग्निदीप्तिकरीचैवकफपित्तवि-
नाशका । बृहत्तुग्रामजारुच्यावातलाचाग्निदीपनी । मुख-
प्रियाचसंप्रोक्ताशाकज्ञानविशारदैः ॥ कृष्णातुग्रामजाक-
ण्ठ्यामेध्याचाग्निप्रदीपनी । तुवराचरसेमाध्वीरुच्याचग्रा-
हिणीमता ॥ प्रोक्ताद्भुलिफलावातकारिणीकफकारिणी ।
विपनाशकरीप्रोक्तागुणास्त्वन्येतुकृष्णवत् । पीतायास्त्व-
धिकाज्ञेयाः पूर्ववैद्यैर्विचारिभिः । (इति रत्नाकरे)

अर्थ—निष्पावी—वादी, रुचिकारक, कपेली, मधुर, मुखप्रिय, कण्ठको
शुद्ध करनेवाली, मलरोधक, अग्निप्रदीपक और कफ तथा पित्तविनाशक है ।
बड़ी निष्पावी—रुचिकारक, वादी, अग्निप्रदीपक और मुखप्रिय है । काली
निष्पावी—कण्ठको हितकारी, मेघाजनक, अग्निप्रदीपक, कपेली, मधुर,
रुचिकारक और मलरोधक है । सफेद निष्पावी—वादी, कफकारक, विपवि-
नाशक और शेष गुण काली निष्पावीकी समान जानने । पीली निष्पावीके
गुण सर्वनिष्पावियोंसे अधिक हैं ।

शिम्वीनामानि ।

असिशिम्वीखड्गशिम्वीशिवनीनीलशिम्विका ।

महाशिम्विवृहच्छिम्वीस्थूलशिम्वीचशिम्विका ॥

अर्थ—असिशिम्वी, खड्गशिम्वी, शिम्विनी, नीलशिम्विका, महाशिम्वी,
वृहच्छिम्वी, स्थूलशिम्वी, शिम्विका ।

कोट्टाशिम्वीनामानि ।

कोलशिम्वीकृष्णफलाखड्गासूकरपादिका ।

शिम्वीकुशिम्वीकुत्सासशिम्वीपुस्तकशिम्विका ॥

अर्थ—कोलशिम्वी, कृष्णफला, खड्गा, सूकरपादिका, शिम्वी, कुशिम्वी,
कुत्सासशिम्वी, पुस्तकशिम्विका (पटपकपादिका) ।

| | |
|----------------|----------------------------|
| संस्कृतभाषामें | खड्गशिम्वी, कोलशिम्वी । |
| हिन्दीभाषामें | सेम, सुअरामेम, गोजियामेम । |
| वगभाषामें | शेमगाछ । |
| मराठीभाषामें | खडसावळ, आवईची शिंग । |

मुनगतीभाषामें पण्योर्त्तिधा, सग्वारही ।
 तैय्यीभाषामें फारचिक्क ।
 ऐतिवभाषामें केनाबोर्त्तिधा ण् तिनोभिस ।
 Canaval a En Joma
 भरपीभाषामें गरापुण्योल ।
 द्रिगिधिसिन्धीयुना ।

शिम्विद्वयन्नमधुरसेपाकेहिमंगुरु ।

चल्यदादहरंप्रोक्तंश्लेष्मलंवातपित्तजित् ॥ (भा०प्र०)

अर्थ-शेनो मकारकी गेम-मधुर, पारमेंभी मधुर, शित्तल, भारी, म
 फारक, दादनागक, कल्लारक और वातपित्तको नीतनेवाली है ।

अप्य ।

कृष्णासर्ववर्लीचोष्णागुर्वोत्प्लवारुनिप्रदा ।

शुक्राग्निमांथजननीमलस्तम्भकरीमता ॥

तुवगमादकावातकफतुत्पित्तलामता । (नि०२०)

अर्थ-काली, घेम-गम, भारी, पन्कारक, रुचिकारक, शुक्लजनक,
 मन्दाग्निजनक, मलस्तम्भक, पक्की मन्कारक, वातजननागक और
 पित्तकारक है ।

अप्य ।

अमिश्रिन्मीनुमधुराकपायाश्लेष्मपित्तजित् ।

व्रणदोषापहनीननीलारुचिदीपनी ॥ (रा०नि०)

अर्थ-शेन-मधुर, पक्की, वातपित्तनाशक, व्रणके निवारणको दमेवाली,
 नील और रुचिकरी दीपन करनेवाली है ।

अ-तिव्योत्पन्न ।

कोलशिम्वीनमीग्मीगुर्धुष्णाकफपित्तहृत् ।

शुक्राग्निमांथहृद्व्यामनिहृद्विद्विगुरु ॥

अर्थ-शुभगम-दादनागक, भाग मम कल्लारक मधुर और
 भिक्की मधु कल्लारक, कृष्ण शीतलक मन्दापक और भारी है ।

अ-तिव्योत्पन्न ।

दक्षिणुष्णाग्नीगतापयंत्तपादिनाकपा ।

खट्वापादीवश्याकाकाकोलपालिकानवधा ॥

अर्थ-दधिपुष्पी, खट्वाङ्गी, खट्वा, पर्यंकपादिका, कृपा, खट्वापादी, वश्या, काकाकोलपालिका ।

| | |
|-----------------|---|
| संस्कृतभाषामें | दधिपुष्पी । |
| हिन्दीभाषामें | करियासेम, चमरियासेम । |
| बंगभाषामें | कट्टराशिम् । |
| मराठीभाषामें | गोडी कोंहळी । |
| गुजरातीभाषामें | अडदवेल्प-कागडोलिया । |
| कर्णाटकीभाषामें | कूगरी । |
| लैटिनभाषामें | मुकुनुनामोनोस्यरमा । <i>Mucuna Monosperma</i> अस्या गुणा । |

दधिपुष्पीकटुमधुराशिशिरासन्तापपित्तदोषघ्नी ।

वातामयदोषकरीगुरुस्तथारोचकघ्नीच ॥ (रा० नि०)

अर्थ-चमरियासेम-कटु, मधुर, शीतल, सन्तापनिवारक, पित्तनाशक, वातरोगकारक, भारी और अरुचिको हर्नेवाली है ।

अन्यत्र ।

दधिपुष्पीतुमधुराकट्वीशीतोष्णदामता । वृष्याहृद्यागुरु-
ज्ज्ञेयामलस्तम्भाग्निमाद्यकृत् ॥ रुचिशुक्रप्रदाप्रोक्तासन्ता-
पारोचकाञ्जयेत् । त्रिदोषशमनीप्रोक्तापूर्ववैद्यैर्मनीषिभिः ॥
गुरुहृद्यं बीजमस्यारुचिदस्तम्भकमतम् । कफाग्निमाद्य-
करणवातपित्तचनाशयेत् ॥ (नि० र०)

अर्थ-दधिपुष्पी-करियासेम-मधुर, कटु, शीतल, गरम, वृष्य, हृद्यकरो
हितकारी, भारी, मलस्तम्भक, मन्दाग्निकारक, रुचिकारक, शुक्रकारक,
सन्तापनाशक, अरुचिको दूर करनेवाली और त्रिदोषनाशक है । इसके
बीज-भागी, हृद्यको हितकारी, रुचिकारी, मलस्तम्भक, कफकारक,
अग्निमाद्यकारक तथा वात और पित्तको दूर करे ।

सौभाग्यनर्तिवीशुणा ।

सौभाग्यनफलस्वादुकपायकफपित्तनुत् ।

शूलकुष्ठक्षयश्वासगुल्महृदीपनपरम ॥ (भा० प्र०)

गुप्तगतीभाषामे

पयोद्विषा, तन्वाग्दी ।

सोडिगीभाषामे

कारचिकट ।

सैटिन्भाषामे

केनाथोन्विया ण्न् गित्तोभिम् ।

Canavalia Lm. fenatam

भरयीभाषामे

गताफुल्लगोट ।

द्विषिपशिःश्रीगुणा ।

गिम्बिद्वयश्चमधुग्गमेपाकेदिमगुरु ।

बल्यंदादहरप्रोक्तलेप्मलंवातपित्तजित् ॥ (भा०५०)

अर्थ-जेनो प्रकारकी मेम-मधुर, पारमेभी मधुर, शीतल, भारी, बल-
वारक, दाहनाशक, कण्ठारक और वातपित्तको जीतनेवाली है ।

अभ्यस्य ।

कृष्णासर्वैरलीचोष्णागुर्वीरत्वारुचिप्रदा ।

शुक्राग्निमांद्यजननीमलस्तम्भकर्मीमता ॥

तुवगमादकावातकफनुत्पित्तलामता । (नि०१०)

अर्थ-बाली, मेम-गरम, भारी, बलवारक, रुचिकारक, गुणजनक,
मलप्रित्तनश, मलस्तम्भक, कर्मेनी मलकारक, वातहरनाशक और
पित्तकारक है ।

अभ्यस्य ।

असिगिम्बीतुमधुगकपायाश्लेष्मपित्तजित् ।

व्रणदोषापदंवीनभीनलारुचिदीपनी ॥ (रा०नि०)

अर्थ-जेम-मधुर, कर्मेनी, कण्ठपित्तनाशक, व्रणों विसर्गोंको हटानेवाली,
शीतल और रुचिकारी दीपन कर्मेनी है ।

सोडिगिदीगुणा ।

लोन्गिम्बीममीग्भीगुर्गुष्णाकफपित्तहृत् ।

शुक्राग्निमांद्यरूक्ष्यारुचिरूढनिडगुरु ॥

अर्थ-शुभ्रगमेम दाहनाशक, भारी, गरम, कण्ठपित्तनशक, रुचि और
मलप्रित्तनश, कृष्ण रुचिकारक, मलमेमक और भारी है ।

द्विषिगुदीभाषामे ।

दधिपुष्पीनःश्रीगोमक्षपयंरूपादिकाहृषा ।

खट्वापादीवंश्याकाकांकोलपालिकानवधा ॥

अर्थ-दधिपुष्पी, खट्वाङ्गी, खट्वा, पर्यंकपादिका, कूपा, खट्वापादी, वश्या, काकाकोलपालिका ।

| | |
|-----------------|---|
| सस्कृतभाषामें | दधिपुष्पी । |
| हिन्दीभाषामें | करियासेम, चमरियासेम । |
| वगभाषामें | कट्टराशिम् । |
| मराठीभाषामें | गोडी कोंहळी । |
| गुजरातीभाषामें | अडदवेल्थ-कागडोलिया । |
| कर्णाटकीभाषामें | कूगरी । |
| लैटिनभाषामें | मुक्कुनामोनॉस्यरमा । <i>Mucana Monosperma</i> अस्या गुणा । |

दधिपुष्पीकटुमधुराशिशिरासन्तापपित्तदोषघ्नी ।

वातामयदोषकरीगुरुस्तथारोचकघ्नीच ॥ (रा०नि०)

अर्थ-चमरियासेम-कटु, मधुर, शीतल, सन्तापनिवारक, पित्तनाशक, वातरोगकारक, भारी और अरुचिको हरनेवाली है ।

अन्यज्ञ ।

दधिपुष्पीतुमधुराकट्वीशीतोष्णदामता । वृष्याहृद्यागुरु-
ज्ज्ञेयामलस्तम्भाग्निमाद्यकृत् ॥ रुचिशुक्रप्रदाप्रोक्तासन्ता-
पारोचकाञ्जयेत् । त्रिदोषशमनीप्रोक्तापूर्ववैद्यैर्मनीषिभिः ॥
गुरुहृद्यंबीजमस्यारुचिदंस्तम्भकमतम् । कफाग्निमाद्य-
करणंवातपित्तचनाशयेत् ॥ (नि०र०)

अर्थ-दधिपुष्पी-करियासेम-मधुर, कटु, शीतल, गरम, वृष्य, हृदयको हितकारी, भारी, मलस्तम्भक, मन्दाग्निकारक, रुचिकारक, शुक्रकारक, सन्तापनाशक, अरुचिको दूर करनेवाली और त्रिदोषनाशक है । इसके बीज-भारी, हृदयको हितकारी, रुचिकारी, मलस्तम्भक, कफकारक, अग्निमाद्यकारक तथा वात और पित्तको दूर करे है ।

सौभाजनशिषीगुणा ।

सौभाजनफलस्वादुकपायकफपित्तनुत् ।

शूलकुष्ठक्षयश्वासगुल्महृदीपनपरम् ॥ (भा०प्र०)

अर्थ-गोहवनेरी पत्नी-स्वादिष्ट, यपेती, करपित्तनाशक तथा शुभ,
पोट क्षय, श्वास और गुल्मको दूर करे है तथा दीपनई ।

दोष्टिदागामयुगाय ।

डोडिकाविपमुष्टिश्चडोडीत्यपिसुमुष्टिका ।

डोडिकापुष्टिदावृष्यारुच्यावदिप्रदालघुः ॥

हन्तिपित्तकफार्थासिकृमिगुल्मविषामयान् । (भा प्र.)

अर्थ-डोडिका, विपमुष्टि, डोडी, मुमुष्टिका । डोडी अर्थात् कंठभा-
गुष्टिनाशक, वीर्यवृद्धक, रुचिवाहक, अग्निजनक, हलकी तथा पित्त, कफ,
मयामीर, कृमि, गुल्म और विषके रोगको दूर करे है ।

मुनिस्मिर्मायुगा ।

मुनिभिर्भ्रीमगप्रोक्ताबुद्धिदारुचिदालघुः । पाकशालेतु

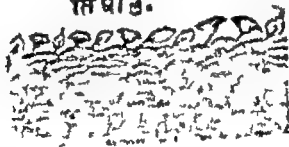
मधुरातिक्ताचैवस्मृतिप्रदा ॥ त्रिदोषशूलकफद्वत्पाण्डुरोग-

विपापनुत् । गोपगुल्मदग्गप्रोक्तामापकारुन्नुवातला ॥ (नि.र.)

अर्थ-अगतिपारी पत्नी मायक, बुद्धिदायक, हलकी, पक्वनेत्रं मधुरा,
कटुवी, स्मरणशक्तिवर्धक तथा त्रिदोष, शूल, कफ, पाण्डुरोग, विष, शोष
और गुल्मको हर्नेवाली है । बड़ी पत्नी इसे पत्नी-स्वामी और मादी करे है ।

अद्वाहनावाति ।

सिधादे.



अद्वाहनावातिप्रोक्तापित्तमिन्त्यपि ।

अर्थ-अद्वाहना, अद्वाहना, विराजना (जामुनि, मंगलिका, वीर्य-
वाह गुल्मनाशक, हलका आदिगुल्मक भोगदर, अद्वाहना अद्वाहना
अद्वाहना, अद्वाहना, अद्वाहना, अद्वाहना विराजना, अद्वाहना, विराजना,
विराजना, विराजना ॥

| | |
|-----------------|-------------------------------------|
| सस्कृतभाषामें | शृङ्गाटक । |
| हिन्दीभाषामें | सिंघाडे । |
| बगभाषामें | पाणिफल, सिंघाडे । |
| मराठीभाषामें | शिंगाडे । |
| गुजरातीभाषामें | शिगोडा । |
| कर्णाटकीभाषामें | सिंघाडे । |
| तैलिङ्गीभाषामें | परिकेगड्डु । |
| इंग्रेजीभाषामें | वाटरकेलट्राप । Water Caltrop |
| लैटिनभाषामें | ट्रापावाइस्याईनोस । Trapa Bispanosa |
| फारसीभाषामें | सुरजान् । |

अस्य गुणाः ।

शृङ्गाटकहिमस्वादुगुरुवृष्यकपायकम् ।

ग्राहिशुकानिलश्लेष्मप्रदपित्तासदाहनुत् ॥ (भा० प्र०)

अर्थ—सिंघाडे—शीतल, स्वादिष्ट, भारी, वीर्यवर्द्धक, कपेले, मलरोधक, शुक्रजनक, वातकारक, कफकारक तथा रक्तपित्त और दाहको दूर करे है ।

अन्यच्च ।

शृङ्गाटक शोणितपित्तहारीलघुःखरोवृष्यतमोविशेषात् ।

त्रिदोषतापश्रमशोफहारीरुचिप्रदोमेहनदाढ्यहेतुः ॥ (रा नि)

अर्थ—सिंघाडे—रक्तपित्तनाशक, हलके, खर, धृष्यतम, त्रिदोषनाशक, तापनिवारक, श्रमहारक, शोफनाशक, रुचिकारक और लिंगको दृढकर-नेवाले है ।

अन्यच्च ।

शृङ्गाटगुरुविष्टम्भिशीतलरक्तपित्तनुत् ॥ (रा० व०)

अर्थ—सिंघाडे—भारी, विष्टम्भकारक, शीतल और रक्तपित्तनाशक है ।

अपिच ।

शृङ्गाटकश्चातिवृष्योलघुर्ग्राहीरुचिप्रदः । शुक्रलोवातकफ-

कृद्गुरुमेहनदाढ्यकृत् ॥ तुवरोमधुरःशीतस्तर्पणःस्वादु-

पित्तजित् । दाहत्रिदोषमेहघ्नोरक्तदोषभ्रमापह । शोफस-

न्तापहाप्रोक्तः पूर्ववैद्यैर्महर्षिभिः ॥ (नि० र०)

अर्थ-निघाटे आपन्न गृह्य, इत्थे, मन्त्रोपक, रुचिकार, शुभप्रकार, वात और कफप्रती, भागी, लिंगको दृष्ट्यनेवाले, कपले, मधुर, शीतल, कृत्तिकार्य, स्वादिष्ट, पित्तनाशक तथा दाह, प्रिणोप, प्रमेद, रुधिररिण, भ्रम, मृजन और मन्त्रोपको दृष्ट्यनेवाले ई ।

विपरण-मिमांसेकी येन यहे २ सरोवरोंमें दोतीहें येनमें तीन पायागें
पन्न गते हैं वल्लके ऊपर तीन कादोकी समान अणो दोतीहें कल्लभो पर
मीग निवृत्तीहें उम मीगफे जाकादि पदार्थ बनाते हैं और उर्जा मीगमें
गुराफर उगवा घून बनातेहें उस घूनकीभी ओस पन्नु बनाई जाती है
इस प्रेक्षामें मिमांसेका घून पन्नादार होगया है ।

अथ नालशाकम् ।

मन्त्रसाहित्यम् ।

तीक्ष्णोष्णं सार्षपनालमातक्षेष्मवृणापहम् ।

कण्डकिमिहृदद्रकुष्ठमरुनिकारकम् ॥ (भा०प०)

अर्थ-गंगाकी नाव-साक्ष, गाम, कृषिवाक्य तथा बाग, शेष, गङ्गा, नदी, कृषि, नदी और कृषि नावको ।

गुरुभक्त्या तुलना ।

नालतुमूरणं रुच्यं कफनातद्वल्लघु ।

अर्घसांतुविशेषेणहिनंकामाग्निर्दीपनम् ॥ (म०पि०)

अर्थ-श्रीमद्भक्तिसिन्धु-श्रीगुरुगो, यह वाग्विनायक, इत्यर्थः वाग्विनायक भगवन् श्रीगुरुगो वाग्विनायक इति ।

अथ कन्दशाकम् ।

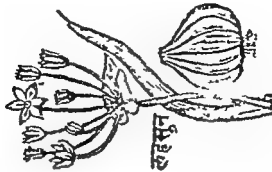
सुखदुःखसंज्ञाः ।

गन्धोनील्लुनोग्निष्टोम्येच्छतन्त्रोमद्योपयः ।

अथ नन्दो मत्तानन्दो मत्ताग्निर्विषमः ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १ ॥

वातारि, दीर्घपत्रक (रसुन गृक्षन, रसोनक, कटुकन्द, राहृच्छिष्ट, राहृत्सष्ट, भूतना उग्रगन्ध, यवनेष्ट) ।



| | |
|-----------------|-----------------------------|
| संस्कृतभाषामें | रसोन । |
| हिन्दीभाषामें | लसुन, लहसुन, कांदा । |
| बगभाषामें | लसुन । |
| मराठीभाषामें | पादरी लसुण, तावडी लसुण । |
| गुजरातीभाषामें | लसण । |
| कर्णाटकीभाषामें | बिलीपवेडुडी । |
| तैलिङ्गीभाषामें | तेलाउलीगाडा । |
| तामिलीभाषामें | वट्टइषण्डु । |
| इंग्रेजीभाषामें | गालिकरूट । Garlic root |
| लैटिनभाषामें | एलियमेटिव । Allium Sativum |
| फारसीभाषामें | सीर । |
| अरबीभाषामें | सुम ईस्कुर्दियून सुमलईयाग । |
| | अस्यगुणा । |

पञ्चभिश्चरसेर्युक्तोरसेनाम्लेनवर्जित । तस्माद्रसोनइत्यु-
क्तोद्रव्याणांगुणवेदिभिः ॥ कटुकश्चापिमूलेषुतिक्तः पत्रेषु
सस्थितः । नालेरुपायउद्दिष्टोनालाग्रेलवणं स्मृतः ॥ बीजे
तुमधुरं प्रोक्तोरसम्लहृणवेदिभिः । रसोनोवृहणोवृष्योस्नि-
ग्धोष्णपाचनः सः ॥ रसेपाकेचकटुकस्तीक्ष्णोमधुरको
मतः ॥ भग्नसन्धानकृत्कण्ठयोगुरुपित्तान्धवृद्धिदः ॥ बलव-
र्णकरोमेधाहितोनेत्र्योगसाधनः ॥ हृद्रोगजीर्णज्वरकुक्षिशूल-

विवन्धगुल्मारुचिकासोफान् ॥ दुर्नामकुष्ठानलसादज-
न्तुममीरणश्चानकफाश्रदन्ति । मद्यमांसंतयाम्लचर्चितल
शुनमेविनाम । व्यायाममातपरोपमनिर्नाम्पयोगुडम् ॥
रसोनमन्त्रपुरुषस्त्यजेदेतन्निरन्तरम् (भा० प्र०)

अर्थ-रहमन-पाच रसयुक्त ई और अन्तरम पक्के वर्णित ई शरासन
इसरो पक्कम ऊन अर्थात् रसोन कटोई । दुर्गती जटम चरपरा रग, पक्षोमे
पदया रग, नालमें कपोल रग, नालके अगले भागमें तवजरा और वीरोंमें
मधुर रग रहताई । लघुन-पूहण, गृह्य, मिथ, उष्ण, पाचक, मार्क, रग
और पाचमें चरपरा, तीक्ष्ण, मधुर, भक्षणान्नहारक, कटुको हितकारी,
भासी, रक्तपित्तको घटानेवाली, घनकारक वर्णको मुद्रकाशेवाली, मेवा
कारक नेत्रोंको हितकारी और रसायनई । तथा हृदयमेव, जीर्णभार,
कुष्ठिगुल, विषन्ध, गुल्म, अट्टि, रोगी, मृगन, चरार्ण, रोग, मद्यपि,
कृमि, पाण, श्याम और कटुको हननकारीई, रहमन मेवाकारनेवाले मनु-
ष्योंको मद्य, मांस और अन्त्र (रसार्ण) हितकारीई । व्यायाम (रुद्र,
कमारक), धूममें विरमा, प्राय करना, भाषण जपनीना, दूध और गुड का
लघुन भाषण करनेवाले मनुष्योंको निरन्तर रसायन खादिने ।

अर्थवत् ।

रसोनउष्ण कटुपिच्छिलश्रमिन्धोगुरु म्यादुर्गमोभरत्यः ।
गृह्य.सुमेधास्त्वग्गर्णकारीभग्नस्यमन्धानकर.सुतीक्ष्ण (ग.नि.)

अर्थ-लघुन-गाम, पाचनी, विरिक्त, मिथ भागी, स्वादिष्ट, मार्क
रक, रोगमें हटके, मेवाकारक रसको उत्तमकरनेवाली, वर्णको मुद्रकाशे-
वाली, भक्षणान्नहारक और तीक्ष्ण ई ।

अर्थवत् ।

रसोन सर्वांगप्रसन्ननिमग्नानकर.सर्वागृह्य.मिन्धोगुरु-
रग्निरामउष्णर । वपश्चासगुल्मभयनिवर्धकश्च-
मिदः । प्रमेदागो रुद्रश्चयधुद्रउक्तन्नाभिगिर ॥ प्रम-
न्नेमन्नागोभिरगुनपित्तप्रहृन्ने जगत्त्राधित्यमीपाय-
निपद्यप्रभमन ।

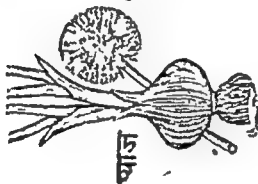
अर्थ—लहसन—शरीरमें सर्वप्रकारकी फैली हुई वातकी पीडाका नाश करनेवाली, सारक, वृष्य, स्निग्ध, भारी, अरुचिको दूर करनेवाली, खोंसीको हरनेवाली, ज्वरका नाश करनेवाली तथा कफ, श्वास और शुल्मका विनाश करनेवाली, केशोंको हितकारी, कृमिनाशक, प्रमेह, ववासीर, कोढ़ और मृजनको क्षय करनेवाली, गरम, भग्नसन्धानकारक, रक्तपित्तको कुपित करनेवाली, शूलको शान्ति करनेवाली और जराव्याधिका नाश करे है ।

पलाण्डुनामानि ।

पलाण्डुर्यवनेष्टश्चदुर्गन्धोमुखदूषक ।

अर्थ—पलाण्डु, यवनेष्ट, दुर्गन्ध, मुखदूषक (सुकन्दक, निकेतन, नीच-भोज्य, लोहितकन्द, तीक्ष्णकन्द, उष्ण, मुखदूषण, शूद्रप्रिय, दीपन, कृमिघ्न, मुखगन्धक, बहुपत्र, विश्वगन्ध, रोचन, पलाण्डु, सुकन्द, सुकन्दक, सुकुन्दक) ।

राजपलाण्डुनामानि ।



अन्योराजपलाण्डु स्याद्यवनेष्टोऽनृपाह्वय । राजप्रियोमहा-
कन्दोदीर्घपत्रश्चरोचक ॥ नृपेष्टोऽनृपकन्दश्चमहाकन्दोऽनृप-
प्रिय । रक्तकन्दश्चराजेष्टोनामान्यत्रत्रयोदश ॥

अर्थ—राजपलाण्डु, यवनेष्ट, नृपाह्वय, राजप्रिय, महाकन्द, दीर्घपत्र, रोचक, नृपेष्ट, नृपकन्द, महाकन्द, नृपप्रिय, रक्तकन्द, राजेष्ट ।

संस्कृतभाषामें पलाण्डु, राजपलाण्डु ।

हिन्दीभाषामें प्याज, लालप्याज ।

वगभाषामें प्याज, लालप्याज ।

मराठीभाषामें पांढराकाश, लालकाश, पातीचा काश ।

| | |
|-------------------|---------------------------------|
| दुग्धगर्भाभाषामे | दुग्धगर्भा । |
| कृष्णगर्भाभाषामे | लोहिणी उति-रूपिन उति । |
| शुद्धगर्भाभाषामे | नीरुद्धगर्भा । |
| ताम्रगर्भाभाषामे | वैश्वपम् । |
| इन्दुगर्भाभाषामे | यन्त्र भोषिन । (१ ॥ १५) ॥ १५० |
| दीप्तिगर्भाभाषामे | दीप्तिगर्भा । Alligat ५, १ |
| पद्मगर्भाभाषामे | पद्मा । |
| अर्धगर्भाभाषामे | यम् । |

यम् ।

पलाण्डु कटुकोवत्यः कफपित्तद्वेगुरु ।

वृष्यश्वेचन-स्निग्धोयान्तिदोषविनाशनः ॥ (ग० नि०)

अर्थ-पलाण्डु-कटुक-वत्यः, कफ-पित्त-द्वेगुरु, श्वेचन, स्निग्ध, यान्तिदोषविनाशनः, गुरु, श्वेचन, वृष्य, श्वेचन, श्वेचन और यम् । इत्येवम् ।

अथ ।

पलाण्डुर्वानाफलाशुक्ल शूलगुरुमनु । (ता० मं०)

अर्थ-पलाण्डु-वानाफलाशुक्ल, शूलगुरु, मनु, शूल और श्वेचन नाम । इत्येवम् ।

अथ ।

पलाण्डुस्तुष्टुपुत्रेययोग्मोनसद्विभोग्म ।

स्वादुपाकस्मेदुष्ण-कफरूक्षातिपित्तल ॥

हृन्नेत्रिलं वातशूलरूप्यकर्मगुरु । (भा० प०)

अर्थ-पलाण्डु-स्तुष्टुपुत्रेययोग्मोनसद्विभोग्म, स्वादु, पाक, स्मेदुष्ण, कफ, रूक्षाति, पित्तल, हृन्नेत्रिलं, वात, शूल, रूप्यकर्मगुरु । (भा० प०) ।

अथ ।

पलाण्डुर्नृपपुत्रेयान्तिदोषविनाशनः ।

पद्मगर्भापनभोजनरुनिद्राहृन्नाशना ॥

अर्थ-पलाण्डु-नृपपुत्रेयान्तिदोषविनाशनः, पद्मगर्भा, पन, भोजन, रुनिद्रा, हृन्नाशना । इत्येवम् ।

अन्यत्र ।

वक्ष्यतेनृपपलाण्डुलक्षणक्षारतीक्ष्णमधुरोरुचिप्रद. ।

कण्ठशोषशमनोऽतिदीपन-श्लेष्मपित्तशमनोऽतिवृहणः ॥

अर्थ—लालप्याज—क्षार, तीक्ष्ण, मधुर, रुचिकारक, कण्ठशोषको दूर करनेवाली, अन्यन्त दीपन, कफ पित्तनाशक और अत्यन्त वृहण है ।

पलाण्डुबीजगुणा ।

बीजपलाण्डोर्वृष्यस्यादन्तकीटप्रमेहजित् । (रत्नाकर)

अर्थ—प्याजके बीज—वृष्य तथा दातोंके कीड़े और प्रमेहको दूर करनेवाले हैं ।

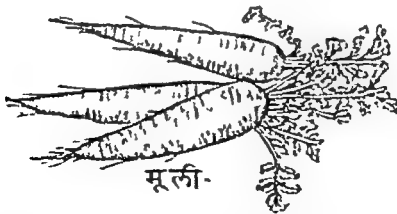
मूलकमामानि ।

मूलकहरिपर्णञ्चभूमिकाक्षारएवच ।

मीलकण्ठमहाकन्दंरुचिप्यहस्तिदन्तकम् ॥

अर्थ—मूलक, हरिपर्ण, भूमिकाक्षार, नीलकण्ठ, महाकन्द, रुचिप्य, हस्तिदन्तक (राजालुक, करुकन्दक, हस्तिदन्त, मूलाह, दीर्घमूलक, दीर्घपत्रक, मृत्क्षार, कदमूल, सित, शखमूल, रुचिर, दीर्घकन्दक, कुञ्जर, क्षारमूल, शिम्बी फल)

चाणक्यमूलकानामानि ।



मूली-

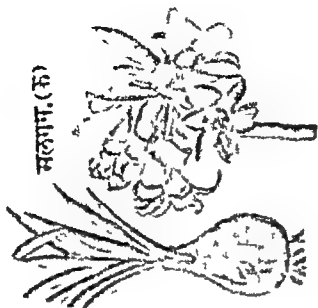
चाणक्यमूलकचान्यद्धानेयविष्णुगुप्तकम् ।

स्थूलमूलमहाकंदकौटिल्यमरुमम्भवम् ॥

शालामर्कटकमिश्रजेयंचैवनवाभिधम् ।

अर्ध-चायसपुलव, शनिप, विष्णुगुह, स्थुम्भ, मदासन्, वं, विष्णु,
महामन्त्र, शान्तिमन्त्र, मिश्र ।

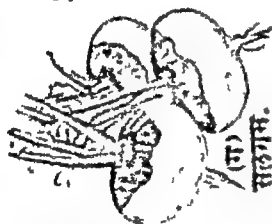
मलमम. (क)



मलमम.



(ग) मलमम.



मोक्षमामामे

मृत्त, शान्तिमन्त्र ।

विष्णुमामामे

मृत्त, मदीमृत्त, मृत्त, मृत्तमृत्त ।

मोक्षमामामे

मृत्त, मदीमृत्त ।

मोक्षमामामे

मृत्त ।

मोक्षमामामे

मृत्त, मदीमृत्त, मोक्षमामामे ।

मोक्षमामामे

मृत्त ।

मोक्षमामामे

मृत्तमृत्त ।

मोक्षमामामे

मृत्त । मदीमृत्त ।

मोक्षमामामे

मोक्षमामामे । मदीमृत्त ।

फारसीभाषामें

तुख तुरमतुख ।

अरबीभाषामें

फजल् वजरुल् ।

मूळकगुणा ।

मूलकतीक्ष्णमुष्णश्चकटूष्णग्राहिदीपनम् ।

दुर्नामगुल्महृद्भोगवातघ्नरुचिदंशुरु ॥

अर्थ—मूली—तीक्ष्ण, गरम, कटु, उष्ण ग्राही, दीपन तथा ववासीर, गुल्म, हृदयरोग और वातका नाश करे है रुचिकारी और भारी है ।

चाणक्यमूलकगुणा ।

चाणक्यमूलकसोष्णकटुकरुच्यदीपनम् ।

कफवातक्रिमीन्गुल्मनाशयेद्ब्राह्मकगुरु ॥ (रा०नि०)

अर्थ—बड़ीमूली—गरम, चरपरी, रुचिकारक, दीपन, कफवातनाशक, कृमिघ्न, गुल्मनाशक, ग्राही और भारी है ।

अन्यञ्च ।

लघुमूलकमुष्णस्याद्रुच्यलघुचपाचनम् । दोषत्रयहरस्व-
र्यज्वरश्वासविनाशनम् ॥ नासिकाकण्ठरोगघ्ननयनामय-
नाशनम् । महत्तदेवरुक्षोष्णगुरुदोषत्रयप्रदम् ॥ स्नेहसिद्ध
तदेवस्यादोषत्रयविनाशनम् । (भा०प्र०)

अर्थ—छोटी मूली—गरम, रुचिकारक, हलकी, पाचक, त्रिदोषनाशक, स्वरको शुद्ध करनेवाली तथा ज्वर, श्वास, नासिकारोग, कण्ठरोग और नेत्ररोगको दूर करे है । बड़ी मूली—रुखी, गरम, भारी, त्रिदोषनाशक । वही मूली तेलमें सिद्ध की हुई त्रिदोषनाशक होजाती है ।

अन्यञ्च ।

मूलकगुरुविष्टम्भितीक्ष्णमामत्रिदोषकृत् । तदेवस्नेहपक्वचे-
त्कफकृद्वातपित्तजित ॥ शुष्कत्रिदोषशमनशोथघ्नगरजि-
ह्वु । तत्पुष्पकफपित्तघ्नतत्फलकफवातजित ॥ (रा०प्र०)

अर्थ—रुखी मूली—भारी, विष्टम्भकारी, तीक्ष्ण और त्रिदोषजनक है । वही तेल घृतादिमें पकाई हुई—कफकारक और वातपित्तहारक होजाती है । मूली मूली—त्रिदोषनाशक, शोथनिवारक, विपनाशक और हलकी है । मूलीके फूल—कफ पित्तनाशक और मूलीकी पत्ती—कफवातनाशक है ।

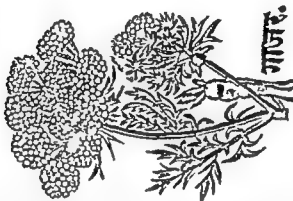
गृञ्जननामानि ।

गृञ्जनशिखिमूलचयवनेष्टचवर्तुलम् ।

ग्रन्थिमूलशिखाकन्दकन्दडिण्डीरमोदकम् ॥

अर्थ—गृञ्जन, शिखिमूल, यवनेष्ट, वर्तुल, ग्रन्थिमूल, शिखाकन्द, कद, डिण्डीरमोदक ।

पिण्डमूलनामानि ।



पिण्डमूलगजीडचपिण्डिकपिण्डमूलकम् ।

अर्थ—पिण्डमूल, गजीड, पिण्डिक, पिण्डमूलक ।

संस्कृतभाषामें गर्जर, गृञ्जन, पिण्डमूल ।

हिन्दीभाषामें गाजर, जगली गाजर, गोलमूली ।

वगभाषामें गाजर ।

मराठीभाषामें गाजर, रानगाजर ।

गुजरातीभाषामें गाजर, पतालुगाजर, अडवारगाजर ।

कर्णाटकीभाषामें सेठीमूल, चडिकेयलमूलगी ।

तेलिङ्गीभाषामें गृञ्जन ।

इंग्रेजीभाषामें क्यारोट Carrotroot कारटमीडस । Carrot-रूत

लैटिन्भाषामें डाक्सकेरोटा । Daucus carota

फारसीभाषामें जर्दक, गजर, गजरेदस्ति तुरमेजर्दक ।

अरबीभाषामें जजर, जजरेवीरं वजरुजजर ।

गजरगुणा ।

गाजरमधुरतीक्ष्णतित्कोष्णदीपनलघु ।

सग्राहिरक्तपित्ताग्नेयह्नीकफवातजित् ॥ (भा०प्र०)

| | |
|-----------------|--|
| संस्कृतभाषामें | शरण । |
| हिन्दीभाषामें | सूरन, जमीकन्द । |
| बगभाषामें | ओल । |
| मराठीभाषामें | गोडा । सुरण खाजेरा सुरण । |
| गुजरातीभाषामें | सूरण । |
| कर्णाटकीभाषामें | सूरण |
| तैलिङ्गीभाषामें | मचाकन्दा, दोलकन्दा । |
| तामिलीभाषामें | सूरण । |
| लैटिनभाषामें | एमोफोफेलस पेनिक्युलेटम । <i>Amorphophallus</i> |
| फारसीभाषामें | ओल । |

अस्य गुणाः ।

सूरणो दीपनो रुक्ष-कपायः कण्डुकृत्कटुः । विष्टम्भीविशदो
रुच्य-कफार्शः कृन्तनोलघुः ॥ विशेषादर्शसिपथ्यः घृहीहगु-
ल्मविनाशनः । सर्वेषां कन्दशाकानां सूरणः श्रेष्ठ उच्यते ॥
ददृणारक्तपित्तानां कुष्ठिनां न हितो हि स । सन्धानो योगसम्प्रा-
प्तमूरणो गुणवत्तमः ॥ (भा० प्र०)

अर्थ-सूरण-जमीकन्द-रूखा, कपेला, खुजलीको करनेवाला, चरपरा
विष्टम्भकारक, विशद, रुचिकारक, कफनाशक, बवासीरको दूर करनेवाला
हलका, विशेषकरके अशरोगवालोंको हितकारी है तथा घृहीदा और गुल्मरोग-
गोंका नाशकरे है यह दाद, रक्तपित्त और कुष्ठरोगवालोंको हितकारी नहीं
है इसका सन्धान अधिक गुणकारी है ।

अथ यच्च ।

सूरणश्च कटुरुच्यदीपन-पाचन-कृमिकफानिलापहः ।

श्वासकासवमनार्शसांहर-शूलगुल्मशमनोत्तदोषकृत् ॥

अर्थ-जमीकन्द-चरपरा, रुचिकारक, दीपन, पाचक, कृमिनाशक, कफनाशक
तथा श्वास, खासी, वमन, बवासीर, शूल और गुल्मरोगको दूर-
करे है तथा रुधिरके विकारोंको उत्पन्न करे है ।

सूरणो दीपनो रुच्य-रुफमो विशदोलघुः ।

विशेषादर्शमापथ्योग्राम्यकन्दस्तु दोषल ॥

अर्थ-तर्पण-शोधन, शक्तिशालक, वननाशक, विनाश, इत्यादि, विशेष
कारके परागित शोधनार्थको वन है और नगरका विनाशक शोधन
शोधनकर है ।

वनसूत्रनामादि ।

वन्नकन्द-सुमेन्द्र-स्याद्वन्योऽन्यश्चिन्नकन्दकः ।

अर्थ-वनकन्द सुमेन्द्र, मन्त्र विनकन्दर (वित्तसूत्र, वनकन्द भाव
सूत्र, वनन श्वितसूत्र, वनभोज) ।

अथवा सुता ।

तद्वन्योऽन्यकन्द कफत्र पित्तकन्दकः ।

अर्थ-अगती सुमेन्द्र सुमेन्द्र गमान है, वननाशक और
विनकन्द है ।

अथवा ।

वन्नसूत्रकोरुण्य-कट्टण-कृमिनाशनः ।

गुल्मशूलद्विदोषा मन्त्रागेनकदाङ्कः ॥ (रा. वि.)

अर्थ-वनसूत्र-शक्तिशालक, वननाश, कृमिनाशन गमन, सुमेन्द्रको
वन्नसूत्रको और अगतीको शोधन है ।

अथवा नामादि ।

रक्तस्तुनकपिण्डान्तरक्तान्तरक्तपिण्डकः ।

लोहितोरक्तकन्दश्चलोहितान्तरक्तपिण्डकः ॥

अर्थ-रक्त, रक्तान्तरक्त, रक्तान्तरक्त, रक्तान्तरक्त, रक्तान्तरक्त,
लोहितान्तरक्त ।

विनकन्दनामादि ।

शेन-पिण्डान्तक-पिण्डकन्दोऽगमभानन्दकः ।

कन्दमन्त्रिश्चपिण्डान्तरक्तपिण्डकः ॥

अर्थ-विनकन्द, विनकन्द, विनकन्द, विनकन्द, विनकन्द,
विनकन्द, विनकन्द ।

शेन-पिण्डान्तक-पिण्डकन्दोऽगमभानन्दकः ।

कन्दमन्त्रिश्चपिण्डान्तरक्तपिण्डकः ॥

शेन-पिण्डान्तक-पिण्डकन्दोऽगमभानन्दकः ।

| | |
|-----------------|--------------------------------------|
| मराठीभाषामें | लाल रताळें, पादर रताळ । |
| गुजरातीभाषामें | रताळ, शकरकन्द, श्वेताळ । |
| कर्णाटकीभाषामें | केपिनहेंडल, विलयहेंडल । |
| तेलिङ्गीभाषामें | चिरगेडु । |
| तामिलीभाषामें | यामस्कूल । |
| औत्क० | घराअडु । |
| इंग्रेजीभाषामें | स्वीटपोटेयो Sweet potato |
| लैटिन्भाषामें | बटाटास एम क्युलेटस Batatas Esculatus |
| | न एडुलीस B Edulis |
| फारसीभाषामें | जगदाक लाहोरी । |

रक्तालुगुणा ।

रक्तपिण्डालुक.शीतोमधुराम्ल.श्रमापहः ।

पित्तदाहापहोवृष्योवलपुष्टिकरोगुरु ॥

अर्थ-रक्ताळ-शीतल, मधुर, अम्ल, श्रमनाशक, पित्तनाशक, दाहनिवारक, वृष्य, बलकारक, पुष्टिजनक और भारी है ।

पिण्डा [श्वेता] लुर्मधुर शीतोमूत्रकृच्छ्रामयापहः ।

दाहशोषप्रमेहघ्नोवृष्यःसन्तर्पणोगुरु ॥ (रा० नि०)

अर्थ-पिंडालु-मधुर, शीतल, मूत्रकृच्छ्ररोगनाशक, दाहनिवारक, शोष-नाशक, प्रमेहको हरनेवाले, वीर्यवर्द्धक, वृष्टिकारक और भारी है ।

पिण्डालुककफरगुरुवातप्रकोपनम् ॥ (राजवल्लभ)

अर्थ-पिंडालु-कफकारक, भारी और वातको कुपित करनेवाले हैं ।

भालुषीगुणा ।

राजालुभेद सम्प्रोक्तश्चारुईतिनामतः ।

मलावष्टम्भकःस्निग्धोजडोवलकरोमतः ।

कफनाशकरश्चेतलेपकोरुचिप्रदः ॥ (नि० र०) ॥

अर्थ-रताळका भेद अरुई है । अरुई-मलस्तम्भक, स्निग्ध, जड, बलना-शक, कफनाशक और यह तेलमें पकाइइं रुचिराग्न है ।

गजकणादुजामानि ।

आलुकदीर्घनालञ्जतीक्ष्णकन्दसुकन्दकम् ।

महापद्मालोकनेवद्विभक्तिरुणं नतत्स्मृतम् ॥

अपि-भ्रातृव, शीतंताप, भीष्मपुत्र, सुवन्धव, मन्मथपुत्र, इतिह-॥

संस्कृतभाषामे गमकानां ।

द्विर्भाषातः
गुरुर्यो भावः ।

मगदीमापावे अग्राचा वांछा ।

गुप्तमार्गमादाम भउरी ।

तडिर्माभायाम साकडा ।

श्रीमन्महाभारतम् ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥

मिदिनापामे एवमिदिदम् । १८ ॥ ५७ ॥

आर्षाभाषामे

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

गजकृणातिवृत्तलोप्यान्तायात्तत्त्वात्तयेत्। गीत-प्रसङ्गस्य-
दुःपातिनस्यान्तुकन्दकः॥ पाण्डु-गो-रुर्मगुल्मप्रोक्षानाहो
दरापत्। अहण्य-गो-विकारमोक्षनसृग्णकन्दवत् ॥ (भा.न)

अर्थ-गणपति-न उवा, गमय कच्छरनासक नीलशङ्कर, शम्भु
वत् पादमे स्वास्त्रि तदा वा नृगेग, सुतन, हर्मि युग्म, पीडा, भागा,
नृगेग, मप्रहनी भीर वरागीश्वरी इ कश्चेता ई अथ दशगुणै
गमान ई ।

सुखासुखामर्शः ।

मुवात्तुमण्डपागेदीदीवेकन्दत्तु कन्दयः ।

स्थूलकन्दोमहापद्मं व्याख्येयं नमः ॥

अथ-सुताः सप्ततमोऽर्धः = सुताः, सुताः, सुताः, सुताः, सुताः, सुताः, सुताः।

मुक्तादुर न्यान्मयुग भिभिग पित्तनाभनः ।

कनिष्ठान्तर्यैवमात्रमोपकथापदः ॥

[illegible]

कासालुनामानि ।

कासालुःकासकन्दश्चकन्दालुश्चालुकश्चस ।

आलुर्विशालपत्रश्चपत्रालुश्चेतिसप्तधा ॥

अर्थ—कासालु, कासकन्द, कन्दालु, आलुक, आलु, विशालपत्र, पत्रालु ।

कासालुगुणा ।

कासालुरुग्रकण्डूतिविपश्लेष्मामयापह ।

अरोचकहरःस्वादुपथ्योदीपनकारक ॥ (रा० नि०)

अर्थ—कासालु—उग्र कण्डूका हरनेवाला, विपत्र, कफरोगनाशक, अरुचिको दूर करनेवाला, स्वादिष्ट, पथ्य और अग्निको दीपन करेहै ।

अन्यञ्च ।

कासालुककण्डुकरंमधुरपथ्यकारकम् ।

दीपनंरुचिदग्नीकफवातरुजापहम् ॥ (नि० र०)

अर्थ—कासालु—कण्डूको उत्पन्न करनेवाला, मधुर, पथ्यकारक, दीपन, रुचिकारक तथा कफ और वातरोगका नाश करनेवाला है ।

फोण्डालुनामानि ।

फोण्डालुर्लोहितालुश्चरक्तपत्रोमृदुच्छदः ॥

अर्थ—फोण्डालु, लोहितालु, रक्तपत्र, मृदुच्छद ।

फोण्डालुगुणा ।

फोण्डालु श्लेष्मवातघ्नकटूष्णोदीपनीयकः ॥

अर्थ—फोण्डालु—कफवातघ्नाशक, चर्मरोग, गरम और अग्निको दीपन करनेवाले हैं ।

पानीपालुनामानि ।

पानीपालुर्जलालुःस्यादन्तपालुरवालुक ।

अर्थ—पानीपालु, जलालु, अन्तपालु, जवालुक ।

पानीपालुगुणा ।

पानीपालुस्त्रिदोषघ्न सन्तर्पणकर परः ॥

अर्थ—पानीपालु—त्रिदोषनाशक और क्षुत्तिकारक है ।

महापत्रालुकचैवहस्त्रिकर्णचतत्सृष्टम् ॥

अर्थ-आहार, शीतनाम, तीक्ष्णरस, मुखरस, महापत्रादिक, इतिवर्जं ।

गन्धवर्णनामं गन्धवर्णनां ।

दिग्भिषाषां दिग्भिषां, आद ।

मार्गभिषाषां भद्राणां कदा ।

गुणवर्णनामं अन्तर्ग ।

तद्विर्गभिषाषां गान्धर्व ।

ईश्वरभिषाषां ईश्वरकेन्द्रकेन्द्रम् । विष्णु । शिव । ब्रह्मा ।

सौम्यभिषाषां सौम्य इतिवर्जम् । इति । इति ।

भार्यभिषाषां दुपाकन्धरा ।

रत्नवर्णनाम् ।

गन्धवर्णनात्तुनिकोष्ठात्तथावात्तुफा अयेनाभीतज्ज्वरद्विन्वा-
दु पाकेनस्यान्तु कन्दक ॥ पाण्डुशोभशूर्मागुल्मप्रीदानाहो-
द्वरापद अदण्यर्थाधिकारमोयनमृणकन्दवत् ॥ ((भा. व.))

अर्थ-गन्धवर्ण-रत्नवर्ण, गन्ध, वातवर्णनाम, शीतवर्णनाम, इतिवर्जं
कन्द वाक्ये आभिष तदा पाण्डुशोभ, शूर्मा, गुल्म, प्रीति, भद्राणां,
इतिवर्जं, सौम्य-भीम प्रशान्तिवर्जं दू कन्दवर्ण इति इतिवर्जं
समान इ ।

गुणवर्णनाम् ।

गुणानुमण्डपागेदोदीर्घकन्दस्तु कन्दक ।

स्वल्पकन्दोमहाकन्द स्थापकन्दधनमता ॥

अर्थ-गुणानु, महाकन्दो दीर्घकन्द मुखरस गुणवर्ण महाकन्दो
महाकन्द ।

गन्धवर्णनाम् ।

गुणानुम. स्यान्मधुर मिश्र. पित्तनाशनः ।

रतिरुद्रादृषेयदादभोदवृषापद ॥

अर्थ-गुणानु-मधुर, रतिरुद्रादृषेयदादभोदवृषापद इतिवर्जं
रति, रति रति इतिवर्जं इतिवर्जं इति ।

कासालुनामानि ।

कासालुःकासकन्दश्चकन्दालुश्चालुकश्चसः ।

आलुर्विशालपत्रश्चपत्रालुश्चेतिसप्तधा ॥

अर्थ-कासालु, कासकन्द, कन्दाळ, आळुक, आळ, विशालपत्र, पत्रालु ।

वासाळुगुणा ।

कासालुःउग्रकण्डूतिविपश्लेष्मामयापह ।

अरोचकहरःस्वादु पथ्योदीपनकारकः ॥(रा० नि०)

अर्थ-कासालु-उग्र कण्डूका हरनेवाला, विषत्र, कफरोगनाशक, अरुचिको दूर करनेवाला, स्वादिष्ट, पथ्य और अग्निको दीपन करेहै ।

अन्यद्वा ।

कासालुककण्डुकंमधुरंपथ्यकारकम् ।

दीपनरुचिदग्नेतकफवातरुजापहम् ॥ (नि० २०)

अर्थ-कासालु-कण्डूको उत्पन्न करनेवाला, मधुर, पथ्यकारक, दीपन, रुचिकारक तथा कफ और वातरोगका नाश करनेवाला है ।

फोण्डालुनामानि ।

फोण्डालुर्लोहितालुश्चरक्तपत्रोमृदुच्छदः ॥

अर्थ-फोण्डालु, लोहिताळ, रक्तपत्र, मृदुच्छद ।

फोण्डालुगुणा ।

फोण्डालु श्लेष्मवातघ्नःकटूष्णोदीपनीयकः ॥

अर्थ-फोण्डालु-कफवातविनाशक, चरपरे, गरम और अग्निको दीपन करनेवाले हैं ।

पानीयालुनामानि ।

पानीयालुर्जलालुःस्यादनूपालुर्वालुक ।

अर्थ-पानीयाळ, जलालु, अनूपालु, अवाळुक ।

पानीयालुगुणा ।

पानीयालुस्त्रिदोषघ्न सन्तर्पणकर परः ॥

अर्थ-पानीयाळ-त्रिदोषनाशक और वृत्तिकारक है ।

गीतासुत्रम् वि ।

नीलादृग्निहस्तु स्यात्कृष्णालुःश्यामलालुः ।

अर्थ- नीला, श्यामला, कृष्णालु, श्यामला ।

गीतासुत्रम् ।

नीलादुर्मधुरःश्रीतःपित्तदाहश्रमापदः ।

अर्थ-नीलाभात-मधुर, शीतता तथा पित्त, दाह और श्रमको दूर करे ।

शुभायुष्याणि ।

शुभायुष्यमहिषीकन्दोलुलायकन्दशुक्रकन्दश्च ।

मर्षाग्न्यापनयामीविषकन्दोनीलकन्दान्य ॥

अर्थ-शुभायुष्य-महिषीकन्द, दण्डकन्द, शुक्रकन्द, मर्षाग्न्या, श्यामाली, विषकन्द, नीलकन्द ।

शुभायुष्याणि ।

तद्वर्णोमहिषीकन्दःकन्दश्यामलापदः ।

मर्षाग्न्यापनयामीविषकन्दोनीलकन्दान्य ॥

अर्थ-नीलायुष्य-महिषीकन्द, कन्द श्यामलापदः, मर्षाग्न्यापनयामी, विषकन्दोनीलकन्दान्य ।

शुभायुष्याणि ।

तन्निर्गन्धोमहिषीकन्दःकन्दश्यामलापदः ।

मर्षाग्न्यापनयामीविषकन्दोनीलकन्दान्य ॥

मर्षाग्न्यापनयामीविषकन्दोनीलकन्दान्य ॥

अर्थ-नीलायुष्य-महिषीकन्द, कन्द श्यामलापदः, मर्षाग्न्यापनयामी, विषकन्दोनीलकन्दान्य ।

शुभायुष्याणि ।

तन्निर्गन्धोमहिषीकन्दःकन्दश्यामलापदः ।

मर्षाग्न्यापनयामीविषकन्दोनीलकन्दान्य ॥ (म. वि.)

अर्थ-नीलायुष्य-महिषीकन्द, कन्द श्यामलापदः, मर्षाग्न्यापनयामी, विषकन्दोनीलकन्दान्य ।

तन्निर्गन्धोमहिषीकन्दःकन्दश्यामलापदः ।

शोफकफरक्तदोषवातकुष्ठविसर्पकम् ॥

त्वग्दोषनाशयत्येवमुनिभिः परिकीर्तितम् । (नि० २०)

अर्थ—हस्तिकन्द—गरम, चरपरा, मधुर, भारी तथा सूजन, कफ, रुधिरविकार, वात, कोढ़, विसर्प और त्वचाके दोषोंको दूर करेह ।

कोलकन्दनामानि ।



कोलकन्दः कृमिघ्नश्च पञ्जलः पञ्जलः ।

पुटालः सुपुटश्चैव पुटकन्दश्च सप्तधा ॥

अर्थ—कोलकन्द, कृमिघ्न, पञ्जल, वस्त्रपञ्जल, पुटाल, सुपुट, पुटकन्द ।
कोलकन्दगुणाः ।

कोलकन्दः कटुश्चोष्णः कृमिदोषविनाशनः ।

वान्तिविच्छर्दिशमनो विपदोपनिवारणः ॥

अर्थ—कोलकन्द—चरपरा, गरम, कृमिगोगनाशक, वान्तिको शान्त करनेवाला, दुष्ट वान्तिको हरनेवाला और विषके विकारोंको दूर करनेवाला है ।
वागहीकन्दनामानि ।

वाराहीकन्द एवान्यैश्चर्मकागलुकोमतः ।

अनूपे स भवेद्देशे वगह इव लोमवान् ॥

अर्थ—वागहीकन्द, चर्मकारालुक, (विष्वग्मेनप्रिया, घृष्टि, घद्गकच्छा, वनमालिनी, गृष्टि, विल्वमूला, शूकरी, फोडरन्त्या, विष्वक्सेनकान्ता, वराही, कीमारी, त्रिनेत्रा, ब्रह्मपुत्री, मोडी, फन्या, माचवेष्टा गृष्टिका, शूककन्द, फोड, वनवासी, शुष्ठनाशन, चल्प, अमृत, महावीर्य, शम्बरकन्द, वराहकन्द, वीर, प्राग्नीकन्द, महोषध, सुन्दक, वृद्धि, व्याधिहन्ता, मागधी) ।

अर्थ-वाराहीकन्द-कडवा, चरपरा, वृष्य, बलकारक तथा विप, पित्त, कफ, कोढ़, प्रमेह और कृमिरोगको दूर करे है ।

अन्यच्च ।

वाराहकन्दश्चाशोभोवातगुल्मनिवारणः । (आ०)

अर्थ-वाराहीकन्द-बवासीर, वात और गुल्मरोगका नाश करनेवाला है ।

अपिच ।

**वाराहकन्दः कटुकस्तिक्तोवर्णश्चपित्तल । रसायनः शुक्र-
लश्चवृष्यश्चाग्निप्रदीपकः ॥ मधुरोष्णोवर्णकर स्वर्ग्यश्वा-
युर्विवर्द्धनः । कुष्ठमेहं त्रिदोषश्च कफवातकृर्मोस्तथा ॥**

मूत्रकृच्छ्रहर प्रोक्तो वैद्यैर्विद्याविशारदे । (नि० र०)

अर्थ-वाराहीकन्द-चरपरा, कडवा, बलकारक, पित्तजनक, रसायन, शुक्रजनक, वीर्यवर्द्धक, अग्निप्रदीपक, मधुर, गरम, वर्णकारक, स्वरको शुद्ध करनेवाला, आयुवर्द्धक तथा कोढ़, प्रमेह, त्रिदोष, कफ, वात, कृमि और मूत्रकृच्छ्र रोगको नाशकरे है ।

विवरण । वाराहीकन्दको कहीं गेंठी और कहीं अगीठी तथा सूअरकदभी कहते हैं । यह पृथिवीमें गुड़की भेलीकी समान होता है । पत्ते कटीले घड़े वड़े अनीदार होते हैं, इसपर सूअरकी समान घाल होते हैं ।

विष्णुवन्दनामानि ।

विष्णुकन्दो विष्णुगुप्तः सुपुष्टो बहुसम्पुटः ।

जलवासावृहत्कन्दो दीर्घवृत्तो हरिप्रियः ॥

अर्थ-विष्णुकन्द, विष्णुगुप्त, सुपुष्ट, बहुसम्पुट, जलवासा, वृहत्कन्द, दीर्घवृत्त, हरिप्रिय ।

विष्णुवन्दगुणा ।

विष्णुकन्दस्तु मधुर शिशिर पित्तनाशन ।

दाहशोफहरो रुच्य सन्तर्पणकर पर ॥ (रा० नि०)

अर्थ-विष्णुकन्द-मधुर, शीतल, पित्तनाशक, दाहनाशक, शोफहारक, रुचिकारक और वृत्तिकारक है ।

धरणीवन्दनामानि ।

धरणीधारणीयाचवीरपत्रीसुकन्दकः ।

कन्दालुर्वनकन्दश्चकन्दोदडकन्दक ॥

अर्थ-धरणी, धारणीया, वीरपत्रा, मुक्कन्दक, कन्दालु, वनकन्द, कन्दार, गण्डकन्दक ।

धरणीषदगुणा ।

मधुरोधरणीकन्दकफपित्तामयापह ।

वक्रदोषप्रथमनकुष्ठकण्टूतिनाशन ॥

अर्थ-धरणीकन्द-मधुर, कफपित्तरोगनाशक, गुणदोषको दूर करनेवाला तथा कोट और गुणदोषको हर्नेवाला है ।

मधुरोधरणीकन्दगुणा ।

नाकुलीसर्पगन्धाचसुगन्धारक्तयत्रिका ।

ईश्वरीनागगन्धानाप्यहिभुस्त्रयसातथा ॥

सर्पादर्नाभ्यालगन्धजयात्रेतिदशाह्वया ॥

अर्थ-नाकुली, सर्पगन्धा, सुगन्धा, रक्तयत्रिका, ईश्वरी, नागगन्धा, अहिभु, त्रयसा, सर्पादर्ना, व्यालगन्धा ।

गन्धागन्धनामात्रि ।

अन्यामहासुगन्धाचसुवहागन्धनाकुली । सर्पाक्षीफणिज्जी

चनकुलाद्यादिभुस्त्रयसा ॥ विपमर्दनीकाचादिमर्दनीजिप-

मर्दनी । महादिगन्धादिलताज्जेयान्याद्यादशाह्वया ॥

अर्थ-महासुगन्धा, सुवहा, गन्धनाकुली, सर्पाक्षी, फणिज्जी, चनकुला, विपमर्दनी, अहिमर्दनी, विपमर्दनी, महादिगन्धा, अदिमर्दनी ।

दिगन्धानाह्वयदगुणा ।

नाकुलीसुगन्धतिलकट्फणनविदोपजित ।

अनेकविपविधयनिकिञ्चिन्नेष्टद्वितीयकम ॥ (गर्वा ०)

अर्थ-नाकुली, सुगन्ध, तिलक, कट्फणन, विदोपजित, अनेक, विपविध, यनिकिञ्चिन्नेष्ट, द्वितीयकम ।

गन्धागन्धनामात्रि ।

अथमालागन्धनाद्यालकन्दकपतिवन्द्य ।

त्रिशिखदलाग्रन्थिदलाकन्दलताकीर्तितापोढा ॥

अर्थ-मालाकन्द, बलकन्द, पत्तिकन्द, त्रिशिखदला, ग्रन्थिदला, कन्दलता ।

मालाकन्दगुणा ।

मालाकन्दःसुतीक्ष्णःस्याद्गण्डमालाविनाशकः ।

दीपनोगुल्महारीचवातश्लेष्मापकर्षकृत् ॥

अर्थ-मालाकन्द-तीक्ष्ण, गण्डमालारोगको हरनेवाला, दीपन, गुल्म-नाशक तथा वात और कफका नाश करनेवाला है ।

विदारीकन्दनामानि ।

विदारिकास्वादुकन्दासिताशुक्लाशृगालिका । विदारीवृष्य-

कन्दाचविडालीवृष्यवल्लिका ॥ भूकूष्माण्डीस्वादुलताग-

जेष्टावारिवल्लभा । ज्ञेयाकन्दफलाचेतिमनुसख्याह्वयामता ॥

अर्थ-विदारिका, स्वादुकन्दा, सिता, शुक्ला, शृगालिका, विदारी, वृष्यकन्दा, विडाली, वृष्यवल्लिका, भूकूष्माण्डी, स्वादुलता, गजेष्टा, वारि-वल्लभा, कन्दफला ।

विदारीकन्दगुणा ।

विदारीमधुराशीतागुरु स्निग्धाक्षपित्तजित् ।

ज्ञेयाचकफकृत्पुष्टिवल्यावीर्य्यविवर्द्धिनी ॥

अर्थ-विदारीकन्द-विलारीकन्द-विलाईकन्द-मधुर, शीतल, भारी, स्निग्ध, रक्तपित्तनाशक, कफकारक, तथा पुष्टि, बल और वीर्यको बढ़ानेवाला है ।

क्षीरविदारीनामानि ।

अन्याक्षीरविदारीस्यादिक्षुगन्धेशुबल्ली । इक्षुबल्लीक्षीरक-

न्दक्षीरबल्लीपयस्विनी ॥ क्षीरशुक्लाक्षीरलतापय कन्दाप-

योलता । पयोविदारिकाचेतिविज्ञेयाद्वाद्वाह्वया ॥

अर्थ-क्षीरविदारी, इक्षुगन्धा, इक्षुबल्ली, इक्षुबल्ली, क्षीरकन्द, क्षीरबल्ली, पयस्विनी, क्षीरशुक्ला, क्षीरलता, पय कन्द, पयोलता, पयोविदारिका ।

क्षीरविदारीगुणा ।

ज्ञेयाक्षीरविदारीचमधुराम्लाकपायका ।

तित्ताचपित्तशूलग्रीमृत्रमेहामयापहा ॥

अर्थ-क्षीरविहारी-चर्षाविहारी-कटु मधुर, अम्ल, कमेठा, कडवा, पिचननाशक, शूलनिवारक तथा मृत्रगोग और प्रमेहगोगको दूर करे ।

क्षीरकन्दोद्विधाप्रोक्तोविनालस्तुमनालक ।

विनालोगोगहर्त्तास्याद्वय स्तम्भीसनालक ॥

अर्थ-क्षीरविहारी विना नाम्बाला और नाम्बाला इन भेदोंमें दो प्रकारका है, यहाँ विना नाम्बाला क्षीरकन्द-गोगनाशक और नालयुक्त-चपरत्तम्भीक है । विहागोकदके विशेष गुण दोष गुह्यस्यादि वगैरें देणो ।

चण्डालकन्दमुपा ।

प्रोक्तश्चण्डालकन्द स्यादेकपत्रोद्विपत्रक ।

त्रिपत्रोऽथचतु पत्र पञ्चपत्रश्चभेदत ॥

अर्थ-चण्डालकन्द-एकपत्र, द्विपत्र, त्रिपत्र, चतुःपत्र और पंचपत्र इन भेदोंमें पाँच प्रकारका है ।

चण्डालकन्दमुपा ।

चण्डालकन्दोमधुर कफपित्ताम्बुदोषजित ।

विपभृतादिदोषघ्नोविजैयश्चरमायन ॥

अर्थ-चण्डालकन्द-मधुर, कषण, रक्तपित्तनाशक, विपनिवारक, मृतादिपापार्भाषो हरनेवाला और रमायन है ।

मिलकन्दमुपा ।

अथतैलकन्दउक्तोऽत्रामरकन्दस्तिलकद्रितदलश्च ।

करवीरकन्दमज्जोन्नयन्मिलचित्रपत्रदोषघ्ण ॥

अर्थ-तैलकन्द, आमरकन्द, तिलादिमूलक करवीरकन्दगत, त्रिपत्रिपत्र पत्र ।

मिलकन्दमुपा ।

लोदुद्रापीतैलकन्दःकटुष्णोपातापरमारुहानीविपाणि ।

शोफघ्न स्याद्वध्वानीग्न्यग्नेवाग्नौदेहमिद्धिंरुते ॥

अर्थ-लोदुद्रा-लोदुद्रो वल्गु कर्मजला, कटु, कषण, गरम तथा शूल, मरुज्वर, विप और मृत्रगोग दूर करे, पाँचों बाँधनेवाला और लोदुद्रा देहको मिद्धकर्मजला है ।

त्रिपर्णीनामानि ।

त्रिपर्णिकावृहत्पत्रायाच्छिन्नग्रन्थिकाचसा ।

कन्दालुःकन्दवहुलाप्यम्लवल्लीद्रुमारुहा ॥

अर्थ—त्रिपर्णिका, वृहत्पत्रा, छिन्नग्रन्थिका, कन्दालु, कन्दवहुला, अम्लवल्ली, द्रुमारुहा ।

त्रिपर्णीगुणा ।

त्रिपर्णीमधुराशीताश्वासकासविनाशिनी ।

पित्तप्रकोपशमनीविषव्रणहरापरा ॥

अर्थ—त्रिपर्णिकन्द—मधुर, शीतल तथा श्वास, खाँसी, पित्त, विष, और व्रणका नाशकरनेवाला है ।

लक्ष्मणाकन्दनामानि ।

लक्ष्मणापुत्रकन्दाचपुत्रदानागिनीतथा ।

नागाह्वानागपत्रीचतुलिनीमक्षिकाचसा ॥

अस्रविन्दुच्छदाचैवसुकन्दादशधाह्वया ।

अर्थ—लक्ष्मणा, पुत्रकन्दा, पुत्रदा, नागिनी, नागाह्वा, नागपत्री, तुलिनी, मक्षिका, अस्रविन्दुच्छदा, सुकन्दा ।

अस्या गुणा ।

लक्ष्मणामधुराशीतास्त्रीवन्ध्यत्वविनाशिनी ।

रसायनकरीवल्यात्रिदोषशमनीपरा ॥

अर्थ—लक्ष्मणाकन्द—मधुर, शीतल, स्त्रीके वासपनेको हरनेवाला, रसायन, बलकारक और त्रिदोषको शान्ति करनेवाला है ।

हस्तजोडिनामगुणाश्च ।

हस्तपय्यायपूर्वस्तुजोडिर्वैद्यवरेऽस्मृत ।

करजोडिरितिख्यातोरसवद्धादिवध्यकृत् ॥

अर्थ—हस्तजोडि और करजोडि यह नाम हस्ताजुडी, हस्ताजुडीके हृत्थाजोडी—पारेआदिको बाधनेवाली और वशीकरण है ।

गुच्छाकन्दनामानि ।

गुच्छाकन्द स्तवकाकन्दोगुलच्छकन्दश्चविवण्डिकाभिः ।

अर्थ—गुच्छाकन्द, स्तवकाकन्द, गुलच्छकन्द, विवण्डिका ।

तिक्ताचपित्तशूलघ्नीमृत्रमेहामयापहा ॥

अर्थ-क्षीरविदारी-दुधविदारी-कटु मधुर, अम्ल, कसेला, कड़वा, पित्तनाशक, शूलनिवारक तथा मृत्ररोग और प्रमेहरोगको दूर करे है।

क्षीरकन्दोद्विधाप्रोक्तोविनालस्तुसनालकः ।

विनालोरोगहर्त्तास्याद्वय स्तम्भीसनालकः ॥

अर्थ-क्षीरविदारी विना नालवाला और नालयुक्त इन भेदोंसे दो प्रकारका है, तथा विना नालका क्षीरकन्द-रोगनाशक और नालयुक्त-वयस्तम्भक है। विदारीकन्दके विशेष गुण दोष शुद्धिआदि वर्गमें देखो।

चण्डालकन्दनामानि ।

प्रोक्तश्चण्डालकन्द स्यादेकपत्रोद्विपत्रकः ।

त्रिपत्रोऽथचतु पत्र पञ्चपत्रश्चभेदतः ॥

अर्थ-चण्डालकन्द-एकपत्र, द्विपत्र, त्रिपत्र, चतुपत्र और पञ्चपत्र इन भेदोंसे पांच प्रकारका है।

चण्डालकन्दगुणाः ।

चण्डालकन्दोमधुर कफपित्तास्रदोषजित् ।

विपभूतादिदोषघ्नोविज्ञेयश्चग्न्सायनः ॥

अर्थ-चण्डालकन्द-मधुर, कफघ्न, रक्तपित्तनाशक, विपनिवारक, मूत्रादिवाधाओंको हरनेवाला और रसायन है।

तैलकन्दनामानि ।

अथतैलकन्दलक्तोद्रावककन्दस्तिलाद्वितदलश्च ।

करवीरकन्दसज्जोज्ञेयस्तिलचित्रपत्रकोवाणः ॥

अर्थ-तैलकन्द, द्रावककन्द, तिलाद्वितदल, करवीरकन्दमग्न, तिलचित्र-पत्रकः ।

तैलकन्दगुणाः ।

लोहद्रावीतैलकन्द कटूष्णोवातापस्मारहारीविपारि ।

शोफघ्न स्याद्वयकारीरसस्थद्रागेवासौदेहसिद्धिधत्ते ॥

अर्थ-तैलकन्द-लोहको पतना करनेवाला, चरपरा, गरम तथा वात, वयस्मार, विप और मूत्रनली दूर करे, पारेको घाघनेवाला और तत्काल देहको निदक करनेवाला है।

त्रिपर्णानामानि ।

त्रिपर्णिकावृहत्पत्रायाच्छिन्नग्रन्थिकाचसा ।

कन्दालुःकन्दवहुलाप्यम्लवल्लीद्रुमारुहा ॥

अर्थ-त्रिपर्णिका, वृहत्पत्रा, छिन्नग्रन्थिका, कन्दालु, कन्दवहुला, अम्लवल्ली, द्रुमारुहा ।

त्रिपर्णागुणा ।

त्रिपर्णीमधुराशीताश्वासकासविनाशिनी ।

पित्तप्रकोपशमनीविषव्रणहरापरा ॥

अर्थ-त्रिपर्णिकन्द-मधुर, शीतल तथा श्वास, खाँसी, पित्त, विष, और व्रणका नाशकरनेवाला है ।

लक्ष्मणाकन्दनामानि ।

लक्ष्मणापुत्रकन्दाचपुत्रदानागिनीतथा ।

नागाह्वानागपत्रीचतुलिनीमक्षिकाचसा ॥

अस्रविन्दुच्छदाचैवसुकन्दादशधाह्वया ।

अर्थ-लक्ष्मणा, पुत्रकन्दा, पुत्रदा, नागिनी, नागाह्वा, नागपत्री, तुलिनी, मक्षिका, अस्रविन्दुच्छदा, सुकन्दा ।

अस्या गुणा ।

लक्ष्मणामधुराशीतास्त्रीवन्ध्यत्वविनाशिनी ।

रसायनकरीबल्यात्रिदोषशमनीपरा ॥

अर्थ-लक्ष्मणाकन्द-मधुर, शीतल, स्त्रीके वाङ्मनेको हरनेवाला, रसायन, बलकारक और त्रिदोषको शान्ति करनेवाला है ।

हस्तजोडिनामगुणाश्च ।

हस्तपर्यायपूर्वस्तुजोडिर्वैद्यवरेःस्मृतः ।

करजोडिरितिख्यातोऽस्रवद्धादिविषयकृत् ॥

अर्थ-हस्तजोडि और करजोडि यह नाम हस्ताजुडी, हत्थाजुडीके ह हत्थाजोडी-पारेआदिको घाघनेवाली और बशीकरण है ।

गुच्छाकन्दनामानि ।

गुच्छाह्वकन्द स्तवकाह्वकन्दोगुलच्छकन्दश्चविवण्टिकाभिधः ।

अर्थ-गुच्छाह्वकन्द, स्तवकाह्वकन्द, गुलच्छकन्द, विवण्टिका ।

गुलच्छदगुणा ।

गुलच्छकन्दोमधुरः सुशीतलो वृष्यप्रदस्तर्पणदाहनाशनः ॥

(राजनिघण्टु)

अर्थ-गुलच्छकन्द-मधुर, शीतल, वृष्य, वृषिकारक और दाहनाशक है ।

मानकन्दनामानि ।

मानकः स्यान्महापत्रः कथ्यन्ते तद्गुणा अथ ।

अर्थ-मानक, महापत्र, (स्यल्पस्र, विस्तीर्णपर्ण, माण, गृहच्छद, छत्रपत्र, माणक) ।

अस्य गुणा ।

माणकः शोथहृच्छीत पित्तरक्तहरोलघुः ॥ (भा० प्र०)

अर्थ-मानकन्द-सृजनको दूर करनेवाला, शीतल, रक्तपित्तनाशक और हल्का है ।

अथ श ।

माणकः स्वादुः शीतश्च गुरु शोथहरः कटुः ॥ (राजनि०)

अर्थ-मानकन्द-स्वादु, शीतल, भारी, सृजनको दूर करनेवाला और चरपरा है ।

शंखालुनामानि ।

शंखालुः शखसकाशो मध्वालुः स्यात्तुरोमशः ।

अर्थ-शंखालु, शखसकाश, मध्वालु, रोमश ।

काष्ठालुनामानि ।

काष्ठालुः स्वल्पकाष्ठचततः काष्ठालुकस्मृतम् ।

अर्थ-काष्ठालु, स्वल्पकाष्ठ, काष्ठालुक ।

सर्वविषादगुणा ।

आलुकः शीतलः सर्वविषमिभमधुररसम् ।

सृष्टमृत्रमलरूक्षदुर्जरक्तपित्तनुत् ॥

कफानिलकः वृष्यवर्त्यस्तन्यविवर्द्धनम् ॥ (म० नि०)

अर्थ-मार्गप्रकाशके आलु-शीतल, विषमकारक, मधुररसान्वित, मज्जु प्रकी करनेवाले, मूत्र, दुर्जर, रक्तपित्ताशक, कफघातकारक, वृष्य, वर्त्य और स्तनोर्मि वृध प्रकट करनेवाला है ।

राजाज्यादिगुणा ।

मधुराजालुकशीतमधुरवायुकारकम् । पाकेऋदुचविजेयरु-
चिददाहपित्तनुत् ॥ शोषतृदकफनुत्प्रोक्तमस्यकन्दस्तुशी-
तलः । आग्निमांघ्रमलस्तम्भकफकृत्पित्तनुत्परः ॥ रक्त-
राजालुककिञ्चिदुष्णं चाग्निप्रदीपकम् । कफवातहरचैवऋषि-
भिः परिकीर्तितम् ॥ श्वेतालुकिञ्चित्कटुकमुष्णवातकफा-
पहम् । कृष्णालुकतुमधुरशीतवीर्यश्रमापहम् ॥ पित्तदाह-
हरचैवऋषिभिः परिकीर्तितम् । कृष्णवनालुकरुच्यमहा-
सिद्धिकरपरम् ॥ मुखजाड्यहरप्रोक्तमुनिभिस्तत्त्वदर्शि-
भिः । वनालुकतृप्तिकरत्रिदोषशमनपरम् ॥ (नि० २०)

अर्थ—मधुर राजालु—शीतल, मधुर, वातकारक, पाकमं चरपरे,
रुचिकारक, दाहनाशक, पित्तनिवारक, शोषको दूर करनेवाले, टूपाको
हरनेवाले, कफनाशक । इसका कन्द—शीतल, मदाग्निकारक, मलस्तम्भक,
कफकारक और पित्तनाशक है । लालराजालु—किञ्चित् उष्ण, अग्निप्रदीपक
और कफ तथा वातको हरनेवाले है । सफेद आलु—किञ्चित् चरपरे, गरम,
वात कफनाशक है । कृष्णालुक—मधुर, शीतवीर्य, श्रमनाशक, पित्त और
दाहको हरनेवाले है । काले वनालु—रुचिकारक, महासिद्धिदायक, मुखकी
जडताको दूर करनेवाले है । वनालु—तृप्तिकारक और त्रिदोषको शान्ति
करनेवाले है ।

वसरुनामानि ।

गुण्डकन्द कसेरु स्यात्क्षुद्रमुस्ताकसेरुका ।

सूकरेष्ट सुगन्धिश्च सुगन्धोगन्धकन्दक ॥

अर्थ—गुण्डकन्द, कसेरु, क्षुद्रमुस्ता, कसेरुका, सूकरेष्ट, सुगन्धि, सुकन्द,
कसेरुक, (कसेरु, राजकसेरुक) ।

कसेरुद्विविधतत्तुमहद्राजकशेरुकम् ।

मुस्ताकृतिर्लघुम्याद्यत्तच्चिचोडमिति स्मृतम् ॥

अर्थ—कसेरु दो प्रकारके हैं एक कसेरु दृग्ग चिचोड । वहा बडे

कसेरु अर्थात् कसेरुको कसेरु कहते हैं और जिसका आकार मोथाके समान हो तथा हल्का हो उसको चिचोड कहते हैं ।

| | |
|--------------------|---|
| संस्कृतभाषामें | कसेरु । |
| हिंदीभाषामें | कसेरु । |
| बगभाषामें | केशुर । |
| मराठीभाषामें | कचरा, फुरडा । |
| कर्णाटकीभाषामें | सेकिनगडे । |
| तैलङ्गीभाषामें | इट्टिकोति । |
| लैटिनभाषामें | स्क्रिपस कैसुर । <i>Scirpus K3 4007</i> |
| द्विषिधरुखेदगुणा । | |

कसेरुकड्यशीतमधुरतुवरगुरु ।

पित्तशोणितदाहघ्ननयनामयनाशनम् ॥

ग्राहिशुक्रानिलश्लेष्मारुचिस्तन्यकरस्मृतम् । (भा० प्र०)

अर्थ—दोनों प्रकारके कसेरु—शीतल, मधुर, कसेले, भारी, रक्तपित्तनाशक, दाहनिवारक, नेत्ररोगको हरनेवाले, मलरोधक, शुक्रजनक, वातकाकारक, रुचिजनक और स्तनोंमें दूधको उत्पन्न करें हैं ।

प्रेमुरनामानि ।

केतुकाकेमुक केम्बुसुपत्रादलमालिनी ।

केलूट स्वल्पविटप स्वादुकन्दश्चपोलिनी ॥

अर्थ—केतुका, केमुक, केम्बु, सुपत्रा, दलमालिनी, केलूट, स्वल्पविटप, स्वादुकन्द, पोलिनी (केतुक, केतुनी, केतु, पेचिका, दलसारिणी, केतुक) ।

| | |
|-----------------|--|
| संस्कृतभाषामें | केमुक । |
| हिन्दीभाषामें | केरुआ । |
| बगभाषामें | केरुगाछ केलूपपपा । |
| मराठीभाषामें | कोर्पा । |
| गुजरातीभाषामें | कोरी । |
| इंग्रेजीभाषामें | केबेज । (Cabbage) |
| लैटिनभाषामें | कोस्टम स्पेइयोगम । <i>Costus speciosus</i> |
| पाग्लीभाषामें | कुन्नाम । |
| अरबीभाषामें | कदकम्प । |

अस्य गुणा ।

केमुक.कटुक.पाकेतिक्तग्राहिहिमलघुः ।

दीपनपाचनहृद्यंकफपित्तज्वरापहम् ॥

कुष्ठकासप्रमेहार्शनाशनवातलकटु । (भा०प्र०)

अर्थ—केमुक—पचनेमें कटु, कडवा, मलरोधक शीतल, हलका, दीपन, पाचक, हृदयको हितकारी, वातकारक, चरपरा तथा कफ, पित्त, ज्वर, कुष्ठ, खासी, प्रमेह और ववासीरको हरनेवाला है ।

अन्यथा ।

केलूटकतुमधुररूक्षमच्छचशीतलम् ॥

भेदकग्राहकरूच्यगुरुपित्तकफापहम् ।

वातनाशकरचैवकदेप्येतेगुणा.स्मृता. ॥ (नि०र०)

अर्थ—केमुक, मधुर, रूखा, स्वच्छ, शीतल, भेदक, मलरोधक, रुचि-कारक, भारी, पित्तकफनाशक, वातनाशक और कन्दके गुणभी इसकी समान जानने ।

शाल्मलीकन्दनामानि ।

शाल्मलीकन्दकश्चाथविज्जुलोवनवासक ।

वनवासोमलग्नश्चमलहन्तापडाह्वयः ॥

अर्थ—शाल्मलीकन्द, विज्जुल, वनवासक, वनवास, मलग्न, मलहन्ता ।

धाह्वयीकन्दगुणा ।

मधुर शाल्मलीकन्दोमलसग्रहरोधजित ।

शिरार.पित्तदाहार्तिगोपसन्तापनाशन. ॥ (रा०नि०)

अर्थ—शाल्मलीकन्द—ज्यातु सेमलकी मूली—मधुर, मलसग्रहके रुकनेको दूर करनेवाली, शीतल तथा पित्त, दाह, शोष और सन्तापको हरनेवाली है ।

षडग्रीवकन्दगुणा ।

कन्द कदल्यारूक्ष स्याद्वातलत्तुवरोगुरु । शीतोवल्योमधु.

केश्योरूच्योऽग्निमांशकारक ॥ कर्णशूलचाम्लपित्तदाहरत्तरु-

जतथा। सोमदोषरजोदोषकृमीन्कुष्ठचनाशयेत् ॥ (नि०र०)

अर्थ—केन्द्रीका कन्द—रूखा, वादी, कसेला, भारी, शीतल, चरपरा,

मधुर, केजोंको हितकारी, रुचिजनक, मदाग्निकारक तथा कर्णशूत्र, व्यर्थपित्त, दाह, रुधिरविकार, सोमदोष, रजोदोष, कृमि और कुष्ठ रोगका नाश करे है ।

अथ सस्वेदजशाकनामानि ।



उक्तसंस्वेदजशाकभूमिच्छन्नशिलीन्ध्रकम् ।
क्षितिगोमयकाष्ठेषुवृक्षादिपुतदुद्रवेत् ॥

अर्थ-सस्वेदजशाक, भूमिच्छन्न, शिलीन्ध्रक, (मूउन, पृथिवीकन्द, शिलीन्ध्र, कवच, भूमिच्छन्न, भूमिस्फोट, धराकुल, मृसुता, छन्न, छायाक, उच्छिन्नीन्ध्र, स्वेदज) यह मृत्तिका, गोबर, काष्ठ और वृक्षादिकोंमें उत्पन्न होता है।

ससृक्तभाषाम

सस्वेदजशाक ।

दिन्दीभाषामें

सायकी छत्री, जता, छताना ।

वगभाषामें

छातकुद, जता, भुँइछाति ।

भगर्डीभाषामें

मुद्गफोड अउम्बी ।

कोकणीभाषामें

कामिल ।

गुजरातीभाषामें

फुग्य मीदिडारी बली ।

इंग्रेजीभाषामें

मशरूम । Mushroom

तिग्निभाषामें

फेंगाई । Fungus

अस्य गुणा ।

सर्वसस्वेदजा शीता दोषला पिच्छिलाश्चते।गुर्वभ्यर्चतीसार-
ज्वरंलज्जामयप्रदा ॥ श्वेतगुभ्रस्थलीकाष्ठवरागोत्रजसम्भवाः ।
नानिदोषकरास्तेस्यु शेषास्तेभ्योविगर्हिताः ॥ (मा०प्र०)

अर्थ—सर्वप्रकारके सस्वेदजशाक—शीतल, दोषजनक, पिच्छिल, भारी तथा वमन, अतिसार, ज्वर और कफ रोगोंको उत्पन्न करें हैं । सफेद शुभ्र-स्थानमें उत्पन्न होनेवाले तथा काठ, वास और गाँवोंके स्थानोंमें उत्पन्न होनेवाले अत्यन्त दोषकारक नहीं हैं और ओष सर्व त्यागने योग्य हैं ।

अन्यत्त्व ।

शीतावल्यासुनेशानीगुरुभेदकरामधु । त्रिदोषकारिणीवृ-
ष्याकफदाचमताबुधैः ॥ भेदास्त्रयः समाख्याताः कृष्णोर-
क्तश्च पाण्डुर । कृष्णारसे च पाके च मधुरोष्णागुरुः स्मृता ॥
श्वेतातुपाककाले च गुर्वरिक्ताल्पदोषदा । (नि० २०)

अर्थ—सापकी छत्री शीतल, वृक्षकारक, भारी, भेदक, मधुर, त्रिदोष-जनक, वीर्यवर्द्धक और कफकारक है । यह कृष्ण, रक्त और पाण्डु इन भेदोंसे तीन प्रकारकी है । तहा कालेरगका मधुर, गरम और भारी है । सफेद पाकमें भारी और लाल अल्पदोषजनक है ।

इति श्रीशालिग्रामनिघण्टुभूषणे शाकवर्ग समाप्त ॥ ११ ॥

अथ वारिवर्गः ।

जलनामानि ।

पानीयसलिलनीरकीलालजलमम्बुच ।
आपोवार्वारिकतोयपयःपाथस्तथोदकम् ॥
जीवनवनमम्भोर्णोऽमृतवनरसोऽपिच ।

अर्थ—पानीय, सलिल, नीर, कीलाल, जल, अम्बु, आप, वार, वारि, तोय, पयस, पाथस, उदक, जीवन, वन, अम्भु, अर्णो, अमृत, वनरस (मेघमस, कमल, भुवन, कमन्ध, पुष्कर, मवतोमुरा, सलिल, मल, जल, क, अन्ध, कमन्ध, उद, दक, नार, शम्भर, अभ्रपुष्प, घृत, कृत्स्न, पर्ये, पाथ, यादो-निरास, जीवनीय, कुलीनस, कुलीन, पिप्पल, कुश, विष, काण्ड, सरर, सर, वृषीट, चद्रोगस, सदन, वसुर, व्योम, मम्भ, इरा, राज, तामर, वस्यल, स्पन्दन, मम्बल, जलपीय, सर, श्रुत, उज्ज, कामल, सोम, नारा, छय,

क्षोद, नभ, मधु, पुरीष, रेत, कश, जन्म, धृक्, वुत्, तुम्हा, कर्तुर, सुक्षेम, धरुण, मुरा, अरविन्दानि, धनुन्धतु, जामि, आयुधानि, क्षय, अदि, अक्षर, स्रोत, वृत्ती, रहस, रस, भेषज, सह, शव, पह, भोज, सुख, क्षत्र, आरया, शुभ, यादु, भूत, भविष्य, महत्, यश, मह, सर्णीक, स्पृष्टीक, सतीन, गहन, गभीर, गम्भलग, अन्न, हवि, सद्य, योनि, ऋत्स्ययोनि, सत्प, गयि, सत्, पूर्ण, सर्व, अक्षित, वर्द्धि, नाम, सर्पि, अप, पवित्र, इन्द्र, हेम, स्वसर्ग, सम्मर, अम्ब, वपु, अम्बु, तुप, शुक्र, तेज, दर्भ, जलाप, वज्र, नीलकण्ठमिय) इत्याद्यनेकनामानि सन्ति ।

संस्कृतभाषाम पानीय, सलिल ।

हिन्दीभाषामें जल, पानी ।

बंगभाषामें जल ।

मराठीभाषामें उदक, पाणी ।

गुजरातीभाषामें पाणी ।

कर्णाटकीभाषामें मुनीक ।

तेलुगुभाषामें नीरु ।

इंग्रेजीभाषामें वाटर । water

लैटिन्भाषामें एक्वा । Aqua

फारसीभाषामें आव ।

अरबीभाषामें माय ।

जटगुणा ।

पानीयश्रमनारानकुमहरमूर्च्छापिपासापह तन्द्राछर्दिनिमद्-
हृद्वलकरनिद्राहर्तर्पणम् । हृद्यगुप्तरसह्यजीर्णशमकनित्य-
हितरीतल लघ्वच्छरसकारणनिगदतेपीयूषवजीवनम् ॥

अर्थ-जल-पानी-श्रम, मूर्च्छा, प्यास, तन्द्रा, वमन, विषम्य और निद्राको दूर करे, बलकारक, एमिजनक, हृदयको हितकारी, गुप्तरसवाला, अजीर्णको दूरनेवाला निरन्तर हितकारी, गीतल, हल्का, स्वच्छ, गतांश कारण और अमृतकी समान सवसागिषोंका जीवन है ।

अथात सम्प्रवक्ष्यामिपानीयानिपृथक्पृथक् । शृणुत्तत्रस-
मासेनगुणान्गुणविपर्ययम् ॥ द्विनिधचोदकप्रोक्तमान्त-

रीक्षंत्यौद्रिदम् । आन्तरीक्षतुद्विविधगाङ्गसामुद्रिकंपयः ॥
गाङ्गसामुद्रविज्ञानकथयिष्यामिसाम्प्रतम् । धारितयेनपा-
त्रेणलक्ष्यतेतेनतद्विधम् ॥ धौतंशुद्धसितवस्त्रचतुर्हस्तप्रमा-
णकम् । दण्डास्त्रिहस्ताश्चत्वारश्चतुष्पणेपुवन्धयेत् । तस्मा-
त्परीक्ष्यतत्तोयशुद्धेरौप्यमयेऽथवा । कांस्यपात्रेसमुद्धृत्यप-
रीक्षेतभिषग्वर ॥ शुद्धकार्पासतूलवाश्वेतशाल्योदनस्यवा ।
पिण्डकातत्समाक्षिप्ताश्वेततायातिसापुनः ॥ श्वेतातुनिर्म-
लापिण्डीशुद्धश्चनिर्मलपयः । तद्गाङ्गसर्वदोषघ्नगृहीताङ्गसु-
भाजने ॥ तद्वारयेच्चमतिमान्वल्यमेध्यरसायनम् । श्रमक्ल-
मपिपासाघ्नकण्डूदोषनिवारणम् ॥ लघुमृच्छातृपाच्छर्दिमू-
त्रस्तम्भविनाशनम् ॥ गङ्गोदकस्यवृष्टिः स्याद्विवसेवाप्रह-
श्यते । आविलसमलनीलघनपीतमथापिच । सक्षारपि-
च्छिलचैवसामुद्रतन्निगद्यते ॥ सघनरुफकृच्चैवकण्डूक्षीप-
दकारकम् । सवातलचविज्ञेयरक्तदोषार्तिकारणम् ॥ (हा०स०)

धन्यञ्च ।

अर्थ—महाप आग्नेयजी हारीतसे कहते हुये कि, मैं अब पानियोंके भेद और गुण दोष कहताहूँ तु मुन । पानी आन्तरीक्ष और औद्रिद इन भेदोंसे दो प्रकारका कहा है तदा आन्तरीक्ष (आकाशका) पानीकेभी दो भेद हैं एक गाग अर्थात् गंगाका और दूसरा सामुद्रिक अर्थात् समुद्रका गंगा और समुद्रके जलके विज्ञानको कहताहूँ । जिस पात्रमें रखता हो उसी पात्रके अनुसार लक्षण प्रतीत होते हैं । जलपरीक्षा—धूल आता शुद्ध और सफेद वस्त्र चाग हाथ लेवे फिर तीन २ हाथ के दंडोंसे उस वस्त्रके चारों कोने बाध देवे इसके उपरान्त शुद्ध चांदीके घरतनमें अथवा कॉमीके घरतनमें उस जलकी परीक्षा करे तथा शुद्ध कपासकी रुई वा शालिचाय-लकि भातका पिण्ड बना उस जलमें डालदे जो सफेदपनेको मान होजावे और सफेद होकर वह पिण्ड निर्मल होजावे और वह जलभी शुद्ध और निर्मल होताव नो उसको गंगाका पानी जानना । वह गंगानल सर्वदोष-

नाशक है, उस जलको सुंदर पात्रमें घुडिमान् ग्रहण करे, वह गंगाका जल-बलकारक, मेघाजनक, रसायन, तथा श्रम, क्रम, व्यास, कण्डू, मूच्छा, तृषा, वमन और मूत्रस्तम्भको दूर करे है और हलका है । अथवा दिनमें जो वरमता है वह गगोदक है । कटुपतायुक्त, मलसयुक्त, नीला, घन, पीला, क्षारसहित और पिच्छिल हो ऐसे भेयके जलको सामुद्रिकजल जानना । समुद्रका जल-कफकारक, कण्डू और क्षीपद रोगको उत्पन्न करनेवाला, वादी और रुधिरके विकारोंको करता है ।

अन्यथा ।

पानीयमुनिभि प्रोक्तदिव्यभौममिति द्विधा । दिव्यंचतुर्विधं
प्रोक्तधागजकरकाभवम् ॥ तौ पारञ्च तथा हेमन्ते पुधारगुणा-
धिकम् । धाराभिः पतिततोयगृहीतस्फीतमाससा ॥ शिला-
यां वा सुधायां वा र्धोतायां पतितचतत । मौनपंगजतेताम्रे
स्फाटिके काचनिर्मिते ॥ भाजने मृण्मये वापि स्थापितधारमु-
च्यते । धारनीरत्रिदोषघ्नमनिर्द्वैश्वर्यसलघु ॥ मौम्यरमाय-
नवत्यतर्पणहादिजीवनम् । पाचनमतिकृन्मृच्छतिन्द्रादाह-
श्रमकृमान् ॥ तृष्णां हरति नात्यर्थं विशेषात् प्रावृषिस्थितम् ।
धारजलञ्च द्विविधगाङ्गसामुद्रभेदतः ॥ आकाशगंगासम्ब-
न्धिजलमादाय दिग्गजाः । मेघैरन्तर्गता वृष्टिः कुर्वन्तीति च-
मताम् ॥ गाङ्गमाश्रयुजेमासि प्रायो वर्षतिवारिदः । सर्वथा त-
ज्जलदेयतथैव चरके च ॥ स्थापिते हेमजे पात्रे राजते मृण्म-
येऽपि वा । शाल्यत्रयेन ससिक्तमवेदक्रेदिवर्णवतः ॥ तद्गाङ्ग-
मर्वदोषघ्नज्ञेयं सामुद्रमन्यथा । तत्तु मक्षारलवणं शुक्रदृष्टि-
लापहम् ॥ विम्वदोपलतीक्ष्णसर्वकर्मममाहितम् । सा-
३५१ । सिधुग ३५१ ॥ यतोगस्त्यस्य दि-
व्यपेरुदयात्मफलं जलम् । नि-
दोपलम् ॥ फलकारविषया

वर्षासुसविपतोयदिव्यमप्याश्विनविना । अनार्तवंप्रमुञ्चति
वारिवारिधरास्तुयत् ॥ तन्निदोपायसर्वेपादेहिनापरिकी-
र्तितम् ॥ (भा० प्र०)

अर्थ—मुनीश्वरोंने जल दो प्रकारका कहा है एक दिव्य और दूसरा भीम
तथा दिव्यजल—धाराज, करकाभव, तौपार और हेम इन भेदोंसे चार
प्रकारका है । इनमें धाराजल गुणोंमें अधिक है । धारारूपसे पतित हुये
जलको स्वच्छ वस्त्रमें डालने वह जल निर्मल वा धुलीझई शिलामें हो वा
स्वच्छ भूमिमें गिरा हुआहो, उसमेंसे सुवर्ण, रजत, ताम्र, स्फटिकमणि,
काच वा मृत्तिकाके पात्रमें भरलेना उमको धाराजल कहते हैं । धाराजल
निदोपनाशक, गुप्तरस, हल्का, शीतल, रसायन, बलकारक, वृत्तिजनक,
आनन्दजनक, जीवन, पाचक, बुद्धिवल्लक तथा मूर्च्छा, तन्द्रा, दाह, श्रम,
हृम और तृषाको दूर करे है । यह गुण शङ्खरुतुमें कहे हैं, किन्तु वर्षा-
ऋतुमें नहीं । धाराजल गाग और सामुद्र इन भेदोंसे दो प्रकारका है ।
पहिले आचार्योंने कहाहै कि, आकाशगगासम्बन्धी जलको दिग्गज
(दिशके हाथी) लेकर मेरुमें छिपे हुए प्रायः आश्विनके महीनेमें मेघ-
द्वारा वर्षातेहैं वह जल सर्वथा सर्वको देना चाहिये तैनेही चरकमेंभी कहाहै
परीक्षा । सुवर्ण तथा चादी अथवा मृत्तिकाके पात्रमें चावल डालकर जल
भरदेवे, जो वह चावल न बिगड और न उनका रंग बदले तो उसको
गगाजल जानना । यह गगाजल सर्वदोपनाशकहै । और जो वह चावल
सडजावें और रंग बदल जावें तो उम जलको सामुद्रजल जानना । यह
समुद्रजल सर्वदोपजनकहै । समुद्रजल—ग्वारी, निमकीन, शुक, दृष्टि और
बलविनाशकहै, दुर्गन्धयुक्त, दोषकारक तीक्ष्ण और सर्वक्रमोंमें यह अहित-
कारीहै । किन्तु आश्विनके महीनेमें जो समुद्रसम्बन्धी वर्षाका जलहै वह
गगाजलकी समान गुणकारक जानना । कारण यह है कि, आश्विनके
महीनेमें अगस्त्य ऋषिके उदय होनेमे सर्व जल—निर्मल, निविष, स्वादु,
शुक्लजनक और अदोषकारी होजातेहैं । क्योंकि वर्षाऋतुमें आकाशमें
विचरनेवाले साँपोंकी विपेली पवनसे दिव्यजलभी विषयुक्त होजातेहैं, किन्तु
आश्विनके महीनेमें विषयुक्त नहीं होते । जो जल अपनी ऋतुको छोडकर
और ऋतुओंमें घरसता है वह जल सर्वमनुष्योंके निदोष करनेवाला है ।

इतिद्विधोदकप्रोक्ततथावक्ष्येचतुर्विधम् । रात्रियृष्टिर्दिवावृ-

नाशक है, उस जलको सुदर पात्रमें धुदिमान् ग्रहण करे, वह गंगाका जल-बलकारक, मेधाजनक, रसायन, तथा ध्रुम, क्लृप्त, प्यास, कण्ट, मूर्च्छा, तृषा, वमन और मृत्रस्तम्भको दूर करे है और हलका है । अथवा दिनमें जो वगसता है वह गगोटक है । कलुषतायुक्त, मलसयुक्त नीला, घन, पीला, क्षामसहित और पिच्छिल हो ऐसे मेरुके जलको सामुद्रिकजल जानना । समुद्रका जल-कफकारक, कण्ट और श्मीपद रोगको उत्पन्न करनेवाला, वादी और रुधिरके विकारोंको करता है ।

अन्यथा ।

पानीयमुनिभिः प्रोक्तदिव्यभौममिति द्विधा । दिव्यंचतुर्विधं प्रोक्तधाराजकरकाभवम् ॥ तौ पारश्चतथाहैमन्तेषु धारगुणाधिकम् । धाराभिः पतिततोयगृहीतस्फीतवामसा ॥ शिलायां वासुधाया वा धातायां पतितंचतत । सौवर्णे राजते ताम्रे स्फाटिके काचनिर्मिते ॥ भाजने मृण्मये वापि स्थापितधारमुच्यते । धारनीरत्रिदोषघ्नमनिर्द्वैश्वरमलघु ॥ सौम्यरसायनत्रयतर्पणहादिजीवनम् । पाचनं मतिकृन्मृच्छतिन्द्रादाहश्रमकुमान् ॥ तृष्णां हरति नात्यर्थं विशेषात् प्रावृषिस्थितम् । धारजलञ्च द्विविधगाङ्गसामुद्रभेदतः ॥ आकाशगंगासम्बन्धिजलमादाय दिग्गजाः । मेवैरन्तरितावृष्टिं कुर्वन्तीति वचसताम् ॥ गाङ्गमाश्रयुजे मासि प्रायोवर्षतिवारिदः । मर्वथातज्जलदेयतथैव च केवच ॥ स्थापिते हेमजे पात्रे राजते मृण्मयेऽपि वा । शाल्यत्रयेन मसिक्तमवेदक्रेदिवर्णयत् ॥ तद्वाद्मर्वदोषघ्नज्ञेयसामुद्रमन्यथा । तत्तु सक्षारलवणं शुक्लदृष्टिजलापहम् ॥ वित्तञ्च दोषलतीक्ष्णं मर्वकर्म समाहितम् । सामुद्रत्वाश्विने मासि गुणैर्गाङ्गवदादिभेत् ॥ यतोगस्त्यस्य दिव्यपैरुदयात् सकलं जलम् । निर्मलनिर्विषस्वादुशुक्लं स्याददोषलम् ॥ फल्कारविषवातेन नागानां व्योमचारिणाम् ।

वर्षासुसविपतोयदिव्यमप्याश्विनविना । अनार्त्तवंप्रमुञ्चति
वारिवारिधरास्तुयत् ॥ तन्निदोपायसर्वेषां देहिनां परिकी-
र्तितम् ॥ (भा० प्र०)

अर्थ—मुनीश्वरोंने जल दो प्रकारका कहा है एक दिव्य और दूसरा भीम
तथा दिव्यजल—धाराज, करकाभव, तीपार और हैम इन भेदोंसे चार
प्रकारका है । इनमें धाराजल गुणोंमें अधिक है । धारारूपसे पतित हुये
जलको स्वच्छ वस्त्रमें छानले वह जल निर्मल वा धुलीहुई शिलामें हो वा
स्वच्छ भूमिमें गिरा हुआ हो, उसमेंसे सुवर्ण, रजत, ताम्र, स्फटिकमणि,
काच वा मृत्तिकाके पात्रोंमें भरलेना उसको धाराजल कहते हैं । धाराजल
त्रिदोषनाशक, गुमरस, हलका, शीतल, रसायन, बलकारक, वृत्तिजनक,
आनन्दजनक, जीवन, पाचक, बुद्धिबर्धक तथा मूर्च्छा, तन्द्रा, दाह, श्रम,
ह्रम और तृपाको दूर करे है । यह गुण शरदऋतुमें कहे हैं, किन्तु वर्षा-
ऋतुमें नहीं । धाराजल गाग और सामुद्र इन भेदोंसे दो प्रकारका है ।
पहिले आचार्योंने कहा है कि, आकाशगंगासम्बन्धी जलको दिग्गज
(दिशाके हाथी) लेकर मेघोंमें छिपे हुए प्राय आश्विनके महीनेमें मेघ-
द्वारा वर्षाते हैं वह जल सर्वथा सर्वको देना चाहिये तैमही चरकमभी कहा है
परीक्षा । सुवर्ण तथा चादी अथवा मृत्तिकाके पात्रोंमें चावल डालकर जल
भरदेवे, जो वह चावल न बिगड़े और न उनका रंग बदले तो उसको
गंगाजल जानना । यह गंगाजल सर्वदोषनाशक है । और जो वह चावल
सड़जावे और रंग बदल जावे तो उस जलको सामुद्रजल जानना । यह
समुद्रजल सर्वदोषजनक है । समुद्रजल—खारी, निमकीन, शुक्र, दृष्टि और
बलविनाशक है, दुर्गन्धयुक्त, दोषकारक तीक्ष्ण और सर्वकर्मोंमें यह अहित-
कारी है । किन्तु आश्विनके महीनेमें जो समुद्रसम्बन्धी वर्षाका जल है वह
गंगाजलकी समान गुणकारक जानना । कारण यह है कि, आश्विनके
महीनेमें अगस्त्य ऋषिके उदय होनेसे सर्व जल—निर्मल, निविप, स्वादु,
शुक्रजनक और अदोषकारी होजाते हैं । क्योंकि वर्षाऋतुमें आकाशमें
विचरनेवाले साँपोंकी विप्रेली पवनसे दिव्यजलभी विषयुक्त होजाते हैं, किन्तु
आश्विनके महीनेमें विषयुक्त नहीं होते । जो जल अपनी ऋतुको छोड़कर
और ऋतुओंमें बरसता है वह जल सर्वमनुष्योंके त्रिदोष करनेवाला है ।

इति द्विधोदकप्रोक्ततथावक्ष्ये चतुर्विधम् । रात्रि वृष्टिर्दिवा वृ-

ष्टिर्दुर्दिनासमयोद्भवा ॥ निशाजलकफकरंघनशीतगुणा-
त्मकम् । समुद्रतोयस्यसमविज्ञेयवातकोपनम् ॥ दिवासू-
र्याशुसततामेधावर्षन्ति यत्पय । तत्कफप्रपिपासाप्रलघु-
वातप्रकोपनम् ॥ दुर्दिनेवृष्टिसपातंवातोद्धृतसवातकम् ।
कफकृच्छ्रोपहननतर्पणदोषकोपनम् ॥ तथाश्रावणवृष्टिश्च
दोषरोपकरानृणाम् । कण्डूत्रिदोषजननपानीयनप्रशस्यते ॥
सवनं नाभसनीरश्छेप्मकृद्वातकोपनम् । शमनपित्तरोगाणां
मधुररक्तदोषहृत ॥ रूक्षपित्तकरचाम्लगुणरक्तविकारकृत ।
चित्रानक्षत्रसम्भूतपरशस्तंत्रिदोषहृत । कार्त्तिकीवृष्टिसम्भू-
तंम्वातिसम्पातशीतलम् ॥ नाशनचत्रिदोषाणां सर्वसस्यवि-
वर्द्धनम् । शीतलबलकृद्द्रव्यतृड्दाहज्वरनाशनम् ॥

अर्थ-रामप्रकार ऊपरका पानी दो प्रकारका कहा, अथ चार प्रकारका
कहेत है । रात्रिमें जो बरसता है, दिनमें जो बरसता है, दुर्दिनमें जो बरसता है,
और असमयमें जो बरसता है । रात्रिमें बपा हुआ जल-करकारक, घन,
शीतल गुणावाला, वातको कुपित करनेवाला और समुद्रके जलके समान है ।
दिनमें सूर्यकी किरणोंमें तथा द्रुपे में जो पानीको वर्षात है वह जल-
करनाशक, प्यारको करनेवाला, हल्का और गतको कुपित करता है ।
दुर्दिनमें बपा हुआ जल-वातन, कफकारक, शोषनाशक, वृत्तिकारक और
दोषोंको कुपित करे है । श्रावणमें महीनेकी वर्षाया पानी-मनुष्योंके दोषोंको
कुपित करनेवाला, कण्टजनक, त्रिदोषनाशक और यह जल उत्तम मही है ।
भाद्रके महीनेकी वर्षाया जल-करकारक, वातको कुपित करनेवाला,
पित्तरोगोंकी शान्ति करनेवाला, मधुर और कथिरके रिकामगी को है ।
आश्विनके महीनेकी वर्षाया जल-रूखा, पित्तजनक, बम्ल और कथिरके
विषयोंको उत्पन्न करे है । चित्रानक्षत्रमें बपाहुआ जल-त्रिदोषनाशक और
भस्मजन उत्तम होता है । कार्तिकमासकी वर्षाया जल-अति शीतल,
शोषनाशक, तमिषकारकी रोषियोंको घटानेवाला, शीतल, कफकारक,
नीरवर्द्धन तथा वृषा, शर और जलको करनेवाला है ।

धारयादिचतुर्विधजलस्य लक्षणम् ।

तथाधारचकारचत्तौपारहेममेवच ।

चतुर्विधसमुद्दिष्टतेपां वच्मिगुणागुणम् ॥

अर्थ-धार, कार, तौपार, हेम इन भेदासे जल चार प्रकारके है, अब इनके गुण और दापोंको कहताहू ।

धारचतुर्विधप्रोक्तवक्ष्येकारमहामते ।

श्रीमताचमहाप्राज्ञहितायरुजशान्तये ।

अर्थ-धारसत्तक जल चार प्रकारका कहा है अब कार जल श्रीमान् और बडे विद्वानोंके हितके लिये और रोगकी शान्तिके लिये कहताहू । -

अथ धारया ।

स्वर्नद्या शीतवातेनमेवविस्फूर्जसकुलम् । शीताम्बुवद्धका-
ठिन्यशिलाजातहिमेनतु ॥ पश्चात्सूर्य्यागुसन्तापात्किञ्चि-
द्विद्रवतेजलम् । वहन्तिमेवा सलिलशकलशीतलमतम् ॥

(हा०स०)

अर्थ-शीतलपवनसे स्वर्गगादि नदियोंका शीतल जल मेयके शब्दसे सकुलित हुआ कठिन होके पीछे शीतसे शिलारूप होजाताहै पश्चात् सूर्यकी किरणोंके सन्तापसे कुछेक द्रवीभूत (पतला) होजाताहै फिर मेय उसको खण्ड खण्डरूप (जालाकी) बगसाते है उन ओलोंका जल परम-शीतल होताहै ।

अभ्यष्ट ।

दिव्यवाय्वग्निमयोगात्सहता खात्पतन्तिया ।

पापाणखण्डवच्चापस्ता कारिक्तयोऽमृतोपमा ॥

अर्थ-दिव्य वायु और विजलीके मयोगसे तौदित हुआ जो नल आकाशसे शिलारूपसे गिरता है उसको 'करकाज' कहते ह ।

गणा ।

करकाजजलरुशविशदचगुरुस्थिरम् ।

दारुणशीतलमाद्रपित्तहृत्कफवातकृन् ॥ (भा०प्र०)

अर्थ-ओलोंका जल-रूपा, विगन्, भारी, स्थिर, दारुण, शीतल, गाढा पित्तनाशक और कफनाशक ह ।

अन्यथा ।

कारशीतगुणश्रमोपशमनरूक्षमरुच्छेप्मकृन्मूर्च्छामोहशि-
रोर्त्तिनाशनकरहिक्काविनिर्वारणम् । शोफीनां व्रणिनां च नो-
हितकरपित्तात्मकानां हितं शसन्ति प्रवरागुणे प्रतिकृतिं त-
स्मान्न दूरकृतम् ॥

अर्थ-ओलाका जल-शीतगुणान्वित, श्रमनाशक, रुखा, वातकफकारक
तथा मूर्च्छा, मोह, शिरकी पीडा और हिचकीको दूर करे है । सृजन, तथा
व्रणगेतियोंको अहित है और पित्तकी प्रवृत्तिवाले मनुष्योंको हितकारी है ।
यदि अत्युत्तम है इसमें अनेक गुण हैं इसका गुण इसको कदापि दूर नहीं
करना चाहिये । (हा० स०)

अथ सौषारगदानं गुणाश्च ।

अपिनद्या समुद्रान्तेष्वदिगपस्तदुद्भवा । ध्रुमावयवनिर्मु-
क्तास्तु पाराख्यास्तुता स्मृताः ॥ अपथ्याः प्राणिनां प्रायोभू-
रुहाणां च नोहिता । तुषाराम्बुहिमरूक्षस्याद्वातलमपित्त-
लम् ॥ कफोरुस्तम्भकठाग्रिमेहगण्डादि रोगानुत । (भा० प्र०)

अर्थ-नदीमें लफर समुद्रतक अग्रि है उससे उत्पन्न हुए जल धुर्ण्य अव-
यव हीन तुषार कदाहिं, वह तुषार प्राणियोंको और पृक्षाको अहितकारक
है । तुषारका जल-शीतल, रुखा, मर्दा, अपित्तल तथा कफ, उरुस्तम्भ,
कण्ड, प्रमेह और गलगण्डादि रोगोंको दूर करे है ।

अन्यथा ।

तौषारलघुशीतलं श्रमहृपित्तातिशयान्तिप्रदम् । दोषाणां श-
मनं जलातिहननं च मयि मयि ॥ कुष्ठश्लीषदचर्चिकावि-
पहरपामाविसर्पापहम् । शीणानाक्षतशोपिणां हितकरमसे-
व्यतेमानये ॥ (हा० स०)

अर्थ-तुषारका जल-दुलका, शीतल, श्रमनाशक, पित्तकी पीडाका
शान्तिकरनेवाला, शोषनिवारक, जलके रोगोंका हर्नेवाला, मामरागके
रोगोंका नाशकरनेवाला तथा कण्ड, कृपिद, मर्दाका विष, पामा और

विसर्परोगका नाश करेहै । तथा क्षीणमनुष्य, क्षतरोगवाले और शोष रोग-
वालोंको हितकारी है ।

अथ हिमजललक्षणम् ।

हिमवच्छिखरादिभ्योद्रवीभूयाभिवर्षति ।

यत्तदेवहिमहैमजलमाहुर्मनीषिण ॥ (भा०प्र०)

अर्थ—हिमके समान शीतल पर्वतोंसे जो वर्ष गलकर जल टपकताहै
उसको विद्वान् हिमजल कहतेहैं ।

हिमजलगुणा ।

हैमघनचमधुरश्चकफात्मकश्च मूर्च्छाश्रमार्तिशमनभ्रमना-
शनश्च । पित्तास्रजप्रशमनरुधिरक्षतघ्न शान्तिकरोतिहि-
मसम्भववारिसद्यः ॥ (हा०स०)

अर्थ—हिमजल—घन, मधुर, कफकारक तथा मूर्च्छा, श्रम, भ्रम,
रक्तपित्त, रुधिरके विकार और क्षतरोगका नाशकरेहै तथा शीघ्रही
शान्तिको करे है ।

अथ हिमजलम् ।

हिमन्तुशीतलरूक्षदारुणसूक्ष्ममित्यपि ।

नतद्वृषयतेवातनचपित्तनवाकफम् ॥ (भा०प्र०)

अर्थ—हिमजल—शीतल, रूखा, दारुण, सूक्ष्म और न यह वातको
दृषित करे, न पित्तको दृषित करे और न यह कफको दृषित करे है ।

अथ भौमजलम् ।

भौममम्भोनिगदितप्रथमत्रिविधं बुधे । जाङ्गलपरमानृपंत-
तस्साधारणक्रमात् ॥ अल्पोदकोऽल्पवृक्षश्चपित्तरक्तामया-
न्वितः । ज्ञातव्यो जाङ्गलो देशस्तत्रत्यजाङ्गलजलम् ॥
वह्नुर्वह्नुवृक्षश्चवातश्लेष्मामयान्वितः । देशोऽनृपडतिरन्या-
तआनृपतद्रवेजलम् ॥ मिश्रचिह्नस्तुयोदेश महिसाधार-
ण स्मृतः । तस्मिन्देशेयदुदकतत्तुमाधारणस्मृतम् ॥ जा-
ङ्गलसलिलरूक्षलग्नलघुपित्तनुतः । वह्निकृत्कफहृत्पथ्य
विकारान्हरतेवहन ॥ आनृपवार्यभिष्यन्दिस्वादुस्निग्ध

अन्यथा ।

कारशीतगुणश्रमोपशमनंरुक्षमरुच्छेप्मकृन्मृच्छामोहशि-
रोत्तिनाशनकरद्विक्वाविनिर्वारणम् । शोफीनांत्रणिनांचनो-
दितकरपित्तात्मकानाहित शसन्तिप्रवरागुणेःप्रतिकृति-
स्मान्नदूग्कृतम् ॥

अर्थ-ओलाह, जल-शीतगुणान्वित, श्रमनाशक, रुखा, वातकफकारक
तथा मृच्छा, मोह, शिखी पीडा और दिचकीको दूर करे है । सूजन, तथा
ग्रन्थोगियोंको अहित है और पित्तकी प्रकृतिवाले मनुष्योंको हितकारी है ।
यह अत्युत्तम है इसमें अनेक गुण हैं इसकारण इसको कदापि दूर नहीं
करना चाहिये । (श्लो १०)

अथ तौपारलक्षणं गुणान् ।

अपिनद्याःसमुद्रान्तेवद्विगपस्तदुद्भवाः । ध्रमावयवनिर्मु-
क्तास्तुपागन्यास्तुता स्मृताः ॥ अपथ्याःप्राणिनांप्रायोभू-
रुहाणांचनोदिता । तुपाराम्बुहिमरुक्षस्याढातलमपित्त-
लम् ॥ कफोरुस्तम्भकठाग्रिमहगण्डादिगेगनुत । (भा० प्र०)

अर्थ-नदीमें लेकर समुद्रतक अग्नि है उमगे उत्पन्न हुये जल पुष्पक अव-
यव हीन तुपाग कहाते हैं, वह तुपाग प्राणियोंको और वृक्षोंको अहितकारक
है । तुपागका जल-शीतल, रुखा, घाटी, अपिच्छल तथा वात, उदरतम्भ,
कण्ठ प्रमेह और गलगण्डादि रोगोंको दूर करे है ।

अन्यथा ।

तौपारलघुशीतलश्रमहपित्तातिशान्तिप्रदम् । दोषाणां-
मनजलार्तिहननसर्गमवघ्नपम् ॥ कुष्ठश्लीपदचर्चिकावि-
पहरपामाविसर्पापहम् । शीणानांशतशोपिणाहितकरमसे-
व्यतेमानवे ॥ (श्लो १०)

अर्थ-तुपागका जल-हीन, शीतल, श्रमनाशक, पित्तकी पीडाको
शान्ति प्रदानशाली, शोषनिवारक जलके रोगोंका हर्त्र, मयमहाप
रोगोंका नाशकर शीतल तथा घाटी, कफका विष, पामा और

विसर्प रोगका नाश करेहै । तथा क्षीणमनुष्य, क्षतरोगवाले और शोष रोग-
वालोंको हितकारी है ।

अथ हिमजललक्षणम् ।

हिमवच्छिखरादिभ्योद्रवीभूयाभिवर्षति ।

यत्तदेव हिमहैमजलमाहुर्मनीषिण ॥ (भा० प्र०)

अर्थ-हिमके समान शीतल पर्वतोंसे जो वर्षा गलकर जल टपकताहै
उसको विद्वान् हिमजल कहतेहैं ।

हिमजलगुणा ।

हैमघनचमधुरश्चकफात्मकश्च मूर्च्छाश्रमार्तिशमनभ्रमना-
शनश्च । पित्तास्रजप्रशमनं रुधिरक्षतघ्न शान्तिकरोति हि-
मसम्भववारिसद्य ॥ (हा० स०)

अर्थ-हिमजल-घन, मधुर, कफकारक तथा मूर्च्छा, श्रम, भ्रम,
रक्तपित्त, रुधिरके विकार और क्षतरोगका नाशकरेहै तथा शीघ्रही
शान्तिको करे है ।

अथ यक्षः ।

हिमन्तुशीतलरूक्षदारुणसूक्ष्ममित्यपि ।

नतद्रूपयते वातनचपित्तनवाकफम् ॥ (भा० प्र०)

अर्थ-हिमजल-शीतल, रूखा, दारुण, सूक्ष्म और न यह वातको
द्रुपित करे, न पित्तको द्रुपित करे और न यह कफको द्रुपित करे है ।

अथ भौमजलम् ।

भौममम्भोनिगदितप्रथमत्रिविधबुधैः । जाङ्गलपरमानृपत-
तस्साधारणक्रमात् ॥ अल्पोदकोऽल्पवृक्षश्चपित्तरक्तामया-
न्वितः । जातव्यो जागलोदेशस्तत्रत्यजाङ्गलजलम् ॥
बह्वबुर्जहृवृक्षश्चातलेष्मामयान्वितः । देशोऽनृपइतिख्या-
तआनृपतद्रवेजलम् ॥ मिश्रचिह्नस्तुयोदेश सहिसाधार-
ण स्मृतः । तस्मिन्देगेयदुदकतत्तुसाधारणं स्मृतम् ॥ जा-
ङ्गलमलिलरूक्षलवणलघुपित्तनुतः । वह्निकृत्कफहृत्पथ्य
विकारान्हरतेऽहम् ॥ आनृपवार्यभिष्यन्दिस्वादुस्निग्ध

वनगुरु । वह्निल्लत्कफकृद्ध्यविकागन्धुतेवहृन्॥साधा-
रणन्तुमधुरदीपनशीतललघु । तृष्णादाहमदच्छर्दितथा
दोषत्रयप्रणुत ॥

अर्थ-भूमिजल अर्थात् पृथ्वीका जल-जागल, आनूप और माधारण इन भेदोंमें तीन प्रकारका है । जिस देशमें अल्पजल और थोड़े वृक्ष हों और जहां प्रायः प्राणी पित्त तथा रुधिरके रोगवाले अधिक हों उस देशको जागलदेश कहते हैं और उस देशके जलको जांगल जल कहते हैं । जिस देशमें बहुत जल और बहुत वृक्ष हों और जहांके जीव अधिकतर वात फल रोगवाले हों उस देशको आनूप देश कहते हैं और उस देशके जलको आनूप कहते हैं । जिस देशमें जगल और आनूप दोनों लक्षण मिश्रित हों रोगभी मिश्रित हों उस देशको साधारण कहते हैं और उस देशके जलको साधारण जल कहते हैं । जागलजल-खा, निमकीन, हल्का, पित्तनाशक, नटगामि-जनक, कफनाशक, पथ्य और अनेक प्रकारके विकारोंको हरनेवाला है । आनूपजल-अभिष्यन्ति, स्वादिष्ठ, खिगध, घन, भारी, जठराग्निनाशक, वृष्य और अनेक प्रकारके विकारोंको करे है । साधारणजल-मधुर, दीपन, शीतल, हल्का तथा क्षुधा दाह, मद, वमन और शिथिलका नाश करे है ।

अथाष्टविध जगन् ।

धारपृथिव्यापतितपयस्तुतत्रैवजातगुणभेदभिन्नम् ।
नानाविधैर्भेदगुणैश्चसम्यग्जातजलचाष्टविधमवन्ति ॥
नद्योद्भिदप्रस्रवणचर्चोडयकौपतडागंमगसोद्भवञ्च ।
वाप्योद्भवतप्रवदन्तिधीरानीरममासेनवदामिचात्र ॥ (हा स.)

अर्थ-धारनामगला जल पृथिवीमें पतित हुआ तदा गुणोंके भेदोंसे भिन्न होजाता है फिर अनेक प्रकारके भेद और गुणोंमें आठ प्रकारका होता है । नाट्य (नदीका), उद्भिन् (जो पृथ्वीका तोड़कर बहता है उसका जल) प्रस्रवण, चर्चोडयका, वृषका, तडागरा, मगरा और वापका इन भेदोंमें आठ प्रकारका कहा है ।

नदीजलम् ।

नयानदस्यवानीरनायेयमिति कीर्तितम् ।

नादेयमुदकरूक्षवातलघुदीपनम् ॥

अनभिष्यन्दिविशदकटुककफपित्तनुत ॥ (भा० प्र०)

अर्थ—नदी और नदके जलको नादेय ऐसा कहते हैं नदीका जल—रूखा, वादी, हलका, दीपन, अनभिष्यन्दि, विशद, चरपरा तथा कफ पित्तका नाश करे है ।

अन्यच्च ।

यच्छ्रीमताञ्चैवमहीपतीनांसेव्यतथायोग्यतमप्रदिष्टम् ।

नादेयतोयमधुरतथालघुरुक्षतथोष्णशमनञ्चवायो ॥

सन्दीपनसस्यविनाशनञ्चहिमागमेवाशिशिरेनिषेव्यम् ।

बलप्रदपथ्यकरनराणाप्रदिष्टमेतत्तुसदाभिपग्भि ॥ (हा स)

अर्थ—नदीका जल—लक्ष्मीवान् और राजाओंको अतियोग्य कहा है मधुर, हलका, रूखा, गरम, वातको शान्ति करनेवाला, अग्निप्रदीपक, खेतीका नाश करनेवाला, बलकारक और पथ्य है, यह जल शीतरूतुके आगममें तथा शिशिर ऋतुमें सेवन करना चाहिये ।

नद्य शीघ्रवहालघ्व्यः सर्वायाश्चामलोदका ।

गुर्यः शैवलसछन्नामदगा कलुपाश्चयाः ॥

अर्थ—शीघ्र बहनेवाली नदियाका जल—हलका और निर्मल होता है । और मंदबहनेवाली नदियोंका जल भारी, काईसे ढका हुआ और कटुपता-युक्त होता है ।

नदीसरस्तडागस्थेकूपप्रस्रवणादिजे ।

उदकेदेशभेदेनगुणान्दोषाश्चलक्षयेत् ॥

अर्थ—नदी—सरोवर, तालाव, कूआ, झरना इनके जलमें देशभेदके द्वारा गुण और दोष जानन ।

अथ गगाजलगुणाः ।

स्वादुपाकरमशीतत्रिदोषशमनतथा ।

पवित्रमतिपथ्यञ्चगाङ्गावारिमनोहरम् ॥

अर्थ—गगाजल—स्वादुपाकी, शीतल, त्रिदोषकी शान्ति करनेवाला, पवित्र, अत्यन्त पथ्य और मनोहर है ।

यमुनाजलगुणा ।

गाङ्गातिकश्चिद्भूतस्त्वाडुपित्तापहपरम् ।

वातलवह्निजननंरूक्षंचयामुनजलम् ॥

अर्थ-यमुनाका जल गंगाजलसे किंचित भारीहै, स्वादिष्ठ, पित्तनाशक, वातजनक, जठराग्निजनक और रुखा है ।

नर्मदाजलगुणा ।

अथस्वच्छप्रशस्तश्शीतललघुलेखनम् ।

पित्तलेप्पप्रशमननार्मदसर्वरोगनुत ॥

अर्थ-नर्मदानदीका जल-निर्मल, शीतल, हल्का, लेखन, पित्त और कफकी शान्ति करनेवाला और सर्वप्रकारके दोषोंका नाश करे है ।

गोदावरीजलगुणा ।

कण्डुकुष्ठप्रशमनवह्निसदीपनपरम् ।

पाचनवातपित्तप्रवाग्गोदावरीभवम् ॥

अर्थ-गोदावरी नदीका जल-कण्डू, कुष्ठ और वातपित्तनाशक, अग्नि प्रदीपक और पाचक है ।

कावेरीनदीजलगुणा ।

कावेरीमलिलपथ्यवातघ्नचलवर्णकृत ।

आग्नेयमतिशीतश्चद्रुकुष्ठविनाशकृत ॥

अर्थ-कावेरीनदीका जल-पथ्य, वातविनाशक, वन्धकारक, वर्णहीन मुदर करनेवाला, जठराग्निको बढ़ानेवाला, अत्यन्त शीतल तथा दाह और कुष्ठका नाश करे है ।

कृष्णवेणीजलगुणा ।

रूक्षचशीतलवारियातरक्तप्रकोपनम् ।

अर्थ-कृष्णवेणीका जल-रूखा, शीतल और वातप्रकोप उत्पिष्टकर है । पूर्वदेशोद्भवानद्यःपूर्वावातकफप्रदा । पश्चिमा पित्तला म-
र्वा कफवातविनाशना ॥ पश्चिमोदधिगात्रीमहायात्राम-
लोदका । पथ्या समामात्तानद्योऽपिपरीनास्ततोऽन्यथा ॥अर्थ-पूर्वदेशकी सर्वनदी-वातकफप्रदा । पश्चिमदेशकी गङ्गा-पित्त
लाश और कफवातविनाशक है । पश्चिमोदधिगात्रीमहायात्री नदीका

जल और शीघ्र वहनेवाली नदियोंका जल निर्मल है । नदीका जल अल्पही पथ्य होता है और अधिक सेवन करना अहितकारक है ।

नादेयसंप्रवक्ष्यामिसमुद्रगामिस्रोतसाम् । ससैकतामपापा-
णाद्विविधाचाम्बुवाहिनी ॥ सदावहावाघनवारिकोष्णामरु-
त्कफानाशमनञ्चतस्या । नीरवसन्तेहितकृद्विशेषान्नदीभ-
वनेवहिमागमेच ॥ घनविमलशिलानांस्फालनाज्जातफेन
वहलसजलवीचीच्छन्नसक्षोभदृप्तम् । ननुसुखमयशीतना-
तिचोष्णंघनञ्च हरतिपवनपित्तश्लेष्मकृद्धारिसम्यक् ॥
नवनविमलतोयसैकतायाः प्रवाहो नचभवतिलघुत्वश्रेष्म
कृद्भ्रन्तिपित्तम् । भवतिमधुरमेवकिञ्चिदुष्णकपायभवति
पवनकारीशोपमूच्छानिहन्ति ॥ हिमवत्प्रभवानद्य पुण्या
देवर्षिसेविता । घनपापाणसिकतावाहिनीविमलोदका ॥
हन्तिवातकफतोयश्रमशोपविनाशनम् । किञ्चित्करोति
वापित्तत्रिदोषशमनजलम् ॥ पारिभद्रभवायाश्चविन्ध्य-
सिन्धुभवाश्चया । शिरोहृद्दोगकुष्ठानाताहेतु श्लेष्मपदस्यच ॥
मलयप्रभवानद्य शीततोया सुधोषमाः । प्रतिपित्तंचवातच
शोषभ्रमश्रमापहा ॥ गगासरस्वतीशोणायमुनासरयश्च ।
वेणाशरावतीनीलाउत्तरापूर्ववाहिनी ॥ हिमवत्प्रभवाद्येता
हिमसघातशीतला । समाः सर्वगुणैर्नद्योवातश्लेष्महगन्तृणा-
म् ॥ आसांनवशतेर्युक्तागङ्गाप्रोक्तामनीपिभिः । तथाचर्म-
ण्वतीवेन्नवतीपारावतीतथा ॥ क्षिप्रामहापदीपीतामुत्सक-
न्यामनस्विनी । शेवतीचैवगोलिन्य सिन्धुयुक्ता समुद्रगा
वातपित्तहरनीरत्रिदोषघ्नमतपरम । श्रमग्लानिहरवृष्यमुत्त-
रगानुगामिच ॥ तार्पणीगोपतिगोलोमीगोमतीमलिलामही ।
मरुस्वतीयुतानद्योनर्मदापश्चिमानुगा ॥ आसाजलघन

शीतपित्तप्रकफकृत्तया । शीतदोषहं हृद्यकण्डुकुष्ठविना-
शनम् ॥ पश्चिमाद्रिममुद्रनागोतमीपुण्यभावना । आमा
शीतजलवापिकफवातविकारकृत् ॥ पित्तदशमनवत्यमृत्र-
दोषविकारकृत् । पूर्णापयस्विनीवेनाप्रणीताचवगनना ॥
द्रोणागोवर्द्धनोयान्यागोतम्यानुगताडमाः । आसांजलघन
नानिवातश्लेष्मविकारकृत् ॥ पूर्वसमुद्रगाश्चवनद्योनयशते-
र्युता । कावेरीतीक्ष्णान्ताचभीमाचैवपयस्विनी ॥ निभाष-
रीविशालाचगोवन्दनीमदनम्बमा । पार्वतीचापगनगोदक्षि-
णादिग्गमाडमा ॥ प्रत्येकशोनयशतेर्युताडमा पृथक्पृथक् ।
सर्वासांपरिसस्याचगनानाचैकविगति ॥ क्रोशेक्रोशेभवे-
त्कुल्यायोजनेयोजनेनदी । द्वियोजनाचपिज्ञेयामहानीगवु-
धेर्नदी ॥ (शा० न०)

अर्थ-आग्नेयजी कहते हैं कि, जब समुद्रमें जानेवाली नदियाँ बहती हैं,
रेतेवाली और पत्थरवाली इन भेदासे नदी को प्रकारकी है । मध्य प्रदेश-
वाली नदी-वनजन्मवाली, गरम, वात और कफकी शान्ति करनेवाली है
उनका जड़ विशेष कफक वसनक्रान्त दितकारी है और दिक्कतमें पूर्वमें
दितकारी नहीं है । यव और निमल ऐसे पत्थरवाली नदी हैं । जल तेजयुक्त
और तमंगारे शोभने योग्य होनाता है सुख, शान्त, अत्यन्त उष्ण नहीं,
हल्का, वन वात विघ्ननाशक और कफको कर्ता है । वायु रेतेवाली नदि
योंका जल-वन नहीं, निमल हल्का भी नहीं कफकारक, विघ्ननाशक,
सुख, विधित् भोग्य, स्पष्टता, वातनाशक तथा मृच्छा और शोषको दूर
करे है । दिक्कतमें पतन उ पतन दूर नदी पवित्र है दूर और श्रद्धिपूर्ण पर्व
मोचित है, भारी पर्व और नाट्यकके युक्त बहोवाली है और उनका
जल-निर्मल, वातवदनाशक, श्रमनिशान, शोषनाशक, विधित् विघ्नना
शक तथा पित्त और प्रियापको शान्ति करे है । पार्वती, विशालाच और
शालिग्रामवर्तमें उत्पन्न हुई नदियाँ जल-निर्मल, हृद्ययोग्य, पय और
भगवत्पदयोग्यका कारण है । पय प्रदेशमें उत्पन्न हुई नदियाँ जल-

शीतल, अमृतके समान तथा वात, पित्त, शोष, भ्रम और भ्रमका नाश करे है । गंगा, सरस्वती, शोण, यमुना, सरयू, शची, वेणा, शरावती और नीला तथा उत्तर और पूर्वको बहनेवाली, हिमालय पर्वतसे उत्पन्न हुई और हिमके सघातसे शीतल हुई यह सर्वनदी गुणोंमें समान और मनुष्योंके वात तथा कफको हरनेवाली है । इनमें ९०० नौसौ नदियाँयुक्त गंगा कही है । तथा चर्मण्वती, वेत्रवती, पारावती, क्षिप्रा, महापदी, पीता, मुत्तका, मनस्विनी, शेवती, शैबलिनी और सिन्धु यह सर्वनदी समुद्रमें जानेवाली हैं । इन सर्वनदियोंका जल—वातपित्तनाशक, त्रिदोषनाशक, भ्रमहारक, ग्लानिनिवारक, वीर्यवर्द्धक और उत्तर दिशासे आता है तापी, गोपती, गोलोमी, गोमती, सलिला, मही, सरस्वती और नर्मदा यह नव पश्चिमसे बहती हैं इनका जल—घन, शीतल, पित्तनाशक, कफकारक, वातविकारविनाशक, हृदयको हितकारी तथा कण्ठ और कुष्ठका नाश करे है । पश्चिमके पर्वतसे उत्पन्न हुई गोतमी और पुष्पभावा आदि नदियोंका जल—शीतल कफ और वातके विकाराको करे है । पित्तज दोषोंको शान्ति करे है, चल्कारक और मूत्रदोषको उत्पन्न करे है । पूर्णा, पयस्विनी, वजा, प्रणीता, वरानना, द्रोणा, गोवर्द्धनी आदि नदी गोतमी नदीका अनुगमन करती हैं । इनका जल—अत्यन्त घन नहीं है तथा वात और कफके दोषोंको उत्पन्न करे है । पूर्वके समुद्रम गमन करनेवाली ९०० नदी है । कावेरी वीरकान्ता, भीमा, पयस्विनी, विभावरी, विशाला, गोवन्दनी, मदनस्वता और पार्वती आदि नदी दक्षिण दिशाको गमन करनेवाली है । एक २ नदी ९०० नदीयुक्त है और सर्वहिन्दोस्थानकी नदियोंकी संख्या २१०० है । कोशकोशमें कुलपा होती है, योजन २ म नदी होती है और बाह्य २ योजनमें महाजलवाली नदी जाती है जिसको नद कहते हैं ।

और्द्धिदभूमिशुणा ।

भूमिः पञ्चविधा ज्ञेया कृष्णारक्तासिता तथा । पीतानीलाभवे-
च्चान्यागुणास्तासां प्रकीर्तिता ॥ सा कृष्णामधुराक्षरा कपा-
यापीतवर्णिनी । रक्तासा तु भवेत्तिका मधुराम्लासिता स्मृता ॥
नीला सकटुका ज्ञेया भूमिभागा जलविदुः । सवनमधुरनीर-
कृष्णभूमिपरिस्तुतम् ॥ पीतास्थितकपायचरक्ताया शारमा-
धुरम् । सिताया ह्यम्लमधुरभूमिभागेन लक्षयेत् ॥ (हा० स०)

अर्थ-पृथिवी-काली, लाल, सफेद, पीली और नीली इन भेदोंमें पांच प्रकारकी है, अब उनके गुण कहते हैं, काली पृथिवी मधुर और रसारी है । पीले रंगकी पृथिवी-कपेला है । लाल पृथिवी कड़वी है । सफेद पृथिवी-मधुर और खट्टी है । और नीली पृथिवी चरपरी है । ऐसेही पृथिवीके भागका पानी कहा है । काली पृथिवीका जल-घन और मधुर होता है । पीली पृथिवीका पानी-कपेला होता है । लाल भूमिका जल-रसारी और मधुर होता है । सफेद भूमिका जल-अम्ल और मधुर होता है ऐसे पृथिवीके भागसे जलको लक्षित करे, प्रायः पृथिवीके समान जलका स्वाद होता है ।

औद्भिदजलद्वाराण गुणाश्च ।

विदार्यभूमिनिम्नायामद्वत्याधारयास्त्रयेत् । तत्तोयमौद्भिद
नामवदन्तीतिमहर्षय ॥ औद्भिदवारिपित्तप्रसविदाद्यति-
शीतलम् । प्रीणनमधुगन्धत्वमीषद्रातकरलघु ॥ (भासप्रकाश)

अर्थ-पृथिवीको काटकर जो नीचे बड़ी घागने जल बहना है उस जलको औद्भिद जल कहते हैं, औद्भिदजल-पित्तनाशक अपिदारी, अत्यन्त शीतल, प्राणन, मधुर, घटकारक, किंचित् वातकारक और हलका है ।

अथ प्रसादनजलस्य कृताणं गुणाश्च ।

शैलमानुषवद्वाग्निप्रवाहोनिर्झरोऽक्षः । मतुप्रवणश्चापि
तत्रत्यनेर्झरजलम् ॥ नेर्झरुचिकृत्रीकफप्रदीपनलघु ।
मधुरकटुपाकचवातलम्प्यादपित्तलम् ॥

अर्थ-पर्वतमें जो जल बहता है उसको निर्झर, झर और प्रवण कहते हैं, हिन्दीमें झरनेका जल कहते हैं झरनेका जल-शरीरकारक, कफनाशक, दीपन, हलका, मधुर, कटुपाकी, वातजनक और अपिचय है ।

अथ चौदपस्य कृताणं गुणाश्च ।

शिलार्काणाम्बयश्चभ्रनीलाञ्जनसमोदकम् । लताधितानसं-
छन्नचौण्डयमित्यभिधीयते ॥ अश्मादिभिग्नद्वयत्तत्रौ-
ञ्ज्यमितिवापरे । तत्रत्यमुदकचौञ्ज्यमुनिगिस्तदुदाहन-
म् ॥ चौञ्ज्यवद्विकरनीगद्विकफहलघु । मधुरपित्तलघु-
च्यपाचननिगदम्भृतम् ॥

अर्थ-जो गड्ढा चारों ओरसे शिलाओंकरके व्याप्त हो और जिसका जल नील अजनकी समान निर्मलहो और जिसके ऊपर लता छारहीहों उसको चौण्डय कहते हैं । कोई आचार्य कहतेहैं कि, जो पत्थर आदिसे न बाधाहो उसको चौञ्ज्य कहते हैं । उसके जलको चौञ्ज्य जल कहतेहैं । चौण्डयका जल-जठराग्निजनक, रूखा, कफनाशक, हल्का, मधुर, पित्तनाशक, रुचिकारक, पाचक और विशद है ।

अथ कौपस्य लक्षण गुणाश्च ।

भूमौखातोल्पविस्तारोगम्भीरोमण्डलकृति । वद्धोऽवद्ध
सकूपःस्यात्तदम्भःकौपमुच्यते ॥ कौपंजलयदिस्वादुत्रि-
दोपघ्नहितलघु । तत्क्षारंकफवातघ्नदीपनपित्तकृत्पर ॥ (भा०प्र)

अर्थ-भूमिमें थोडा चौडा गहरा गोल गड्ढा खोदकर ईटपत्थरामे घनाले वा कच्चाही रहनेदेवे उसको कूप कहतेहैं और उसके जलको कौपजल कहतेहैं, कुयेका जल यदि स्वादिष्ठ हो तो त्रिदोषनाशक, पथ्य और जो हल्का होता है और खागी होय तो कफवातनाशक, दीपन और पित्तकारक होताहै ।

अन्यच्च ।

कफघ्नकूपपानीयक्षारपित्तकरलघु । (ग०नि०)

अर्थ-औरभी कुयेका जल-कफनाशक, खारी, पित्तकारक और हल्का है ।

तडागजलस्य लक्षण गुणाश्च ।

प्रशस्तोभूमिभागस्थोबहुसवत्सरोपितः । जलाशयस्तडा-
ग स्यात्ताडागतज्जलस्मृतम् ॥ ताडागमुदकस्वादुकपाय
कटुपाकिच । वातलवद्धविण्मूत्रमसृक्पित्तकफापहम् ॥

अर्थ-उत्तम भूमिके भागमें बहुतवर्षोंके पुगने जलाशयको तडाग कहतेहैं, उसके जलको ताडागजल कहतेहैं । तालवका जल स्वादिष्ठ, कपेला, कटु पाकी, वातवर्द्धक, मल और मूत्रको योंधनेवाला तथा रक्तपित्त और कफका नाश करे है ।

सारसलक्षणं गुणाश्च ।

नद्याःशैलादिरुद्धायायत्रसश्रित्यतिष्ठति । तत्सरोजलसं-
च्छन्नतदम्भसारसस्मृतम् ॥ सारससलिलवत्यवृष्णाग्रम-
धुलघु । रोचनतुवररूक्षवद्धमूत्रमलस्मृतम् ॥

अर्थ-जहा नदी पहाडआदिसे रुककर टहर जावे उसको सर करवे, उसके जलको सारस कहते हैं। सरका जल-बलकारक, सुपानाशक, मधुर, हल्का, रोचन, कपेला, सूखा तथा मल और मूत्रको बांधनेवाला है।

वाप्यवृक्षण गुणाश्च ।

पापाणैरिष्टकाभिर्व्वान्द्रूपोऽवहूत्तर । ससोपानो भवेद्वा-
पीतजलवाप्यमुच्यते ॥ वाप्यवाग्गियद्विषारपित्तकृत्कफवा-
तहत । तदेवमिष्टकफकृद्वातपित्तहरभवत् ॥

अर्थ-पत्थर अथवा ईंटोंसे जो बड़ा जुआ बनाया जावे और उसमें सोपान अर्थात् सीढ़ीमी लगाईजावे उसको वापी (वापटी) कहते हैं और इसके जलको वाप्य कहते हैं। वापटीका वागी जो खारी होय वो पित्तघातक और कफघातकारक जानना। और जो मीठा होय वो कफकारक और वातपित्तघातक जानना।

वाप्यवृक्षण गुणाश्च ।

अल्पसर पल्वलस्थायत्रचन्द्रर्भगेरवा ।

नतिष्ठतिजलकिञ्चित्तत्रन्यवाग्गिपाल्वलम् ॥

पाल्वलवाग्यभिप्पन्दिगुरुस्वादुत्रिदोषकृत ।

अर्थ-छोट नालको पल्लव कहते हैं, इसमें श्रावण तथा वर्षामें जल रहता है फिर सूखजाता है, इसके जलको पाल्वल कहते हैं। पल्लव अर्थात् चन्द्रपात्रा जल-अभिष्यन्दी, भारी, स्वादु और त्रिदोषकारक है।

विकिरितप्रकाशण गुणाश्च ।

नद्यादिनिकटेभूमिर्वाभिवेद्वालुकामयी । उद्गन्धनेन नायतु
तजलविस्त्रिनिदु ॥ विकिशीतलस्वच्छनिर्दोषलपुचस्मृ-
तम् । तुवरस्वादुपित्तघ्नारतपित्तलमनाह ॥

अर्थ-नदीके निकटकी या पर्विरी वा उधुत हातदि उगमें गहटा तीर-पर जो जलका निकलने है उग जडको विस्त्रि (चारका) कहते हैं। विस्त्रि (चारका) जल-शीतल, निमज, निर्वाह, हृत्कार, कपेला, हलादि और विस्त्रिजल है और जो खारी होय वो विस्त्रिजल जानना।

विस्त्रिजल गुणाश्च ।

फेदारसेनमुद्दिष्टकगन्धलस्मृतम् ।

कैदारवार्यभिष्यन्दिमधुरगुरुदोषकृत् ॥

अर्थ—कैदार खेतको कहते हैं और उसके जलको कैदार कहते हैं । कैदारका जल—अभिष्यन्दि, मधुर, भारी और दोषकारी है ।

वृष्टिजललक्षणगुणाश्च ।

वार्षिकंतदहर्षृष्टभूमिस्थमहितजलम् ।

त्रिरात्रमुपितन्तत्तुप्रसन्नममृतोपमम् ॥ (भा० ५०)

अर्थ—जो वृष्टिका जल उसी दिन वर्षा हो और भूमिस्थित हो वह जल अहितकारी है और जो वही जल तीन रात्रि रखारह तो स्वच्छ और अमृतकी समान होजाता है ।

क्षारजलगुणा ।

क्षारोदकपित्तलं स्यात्सरचाग्निप्रदीपनम् ।

कफवातहरचैव प्रोक्तं पूर्वचिकित्सके ॥

अर्थ—खारीजल—पित्तकारक, सारक, अग्निप्रदीपक तथा कफ और वातका विनाश करे है ।

समुद्रजलगुणा ।

सामुद्रदोषजनकदाहकरक्तदोषकृत् ।

अग्निमांश्चक्षीपदचत्वग्दोषश्च कफजयेत् ॥ (वै० नि०)

अर्थ—समुद्रका पानी—दोषजनक, दाहकारक, रक्तके विकारोंको करने-वाला तथा मदाग्नि, क्षीपद, त्वचाके दोष और कफका नाश करे है ।

सर्वद्रुतुसम्पन्निजलगुणा ।

वारिसाधारणवृष्यदीपनमधुरलघु ॥

अर्थ—साधारण जल—वीर्यवर्द्धक, दीपन, मधुर और हलका है ।

वार्षिकजलगुणा ।

गुर्वभिष्यन्दिपानीयवार्षिकमधुरसरम् ।

अर्थ—वर्षाद्रुतुका जल—भारी, श्लेष्मकारक, मधुर और सारक है ।

क्षारदीपजलगुणा ।

शारदञ्चानभिष्यन्दिलघुतत्परिकीर्तितम् ।

अर्थ—शारदद्रुतुका जल—अनाभिष्यदि अर्थात् श्लेष्महीन और हलका है ।

हेमन्तिजलगुणा ।

हेमन्तिकंजलस्निग्धवृष्यवत्यद्वितगुरु ।

अर्थ-हेमन्तऋतुका जल-स्निग्ध, वृष्य, घटकारक, दितकारी और भारी है ।

शैशिरजलगुणा ।

शैशिरकफवातघ्नकिञ्चिद्धेमन्तिकाह्वयु ।

अर्थ-शैशिरऋतुका जल-कफ वातनाशक और हेमन्तिक जलसे किञ्चित् हल्का है ।

पारुन्तिजलगुणा ।

कपायमधुरंरुक्षविद्याद्वासतिकजलम् ।

अर्थ-पारुन्तऋतुका जल-कफला, मधुर, और रुखा होता है ।

ग्रीष्मकमजगुणा ।

ग्रीष्मकश्चानभिप्यन्दिजलमित्येपनिश्चयः॥ (रा०प०)

अर्थ-ग्रीष्मऋतुका जल-हेतुर्दित होता है ।

ऋतुगणनगुणा ।

हेमन्तेसागसतोयताडागयादितस्मृतम् । हेमन्तेविहिततोय
शिशिरेऽपिप्रशम्यते ॥ वसन्तग्रीष्मयोःकोपनाप्यवानेक्षर
जलम् । नादेयवारिनादेयवमन्तग्रीष्मयोरुधेः॥ विषयद्वन-
वृक्षाणापत्राद्यैर्दृष्टितंयतः । औद्रिदवान्तरिक्षवाकोपनाप्रा
वृष्टिस्मृतम्॥ शन्तशरदिनादेयनीरमशूदकपरम्॥ (भा०प्र०)

अर्थ-हेमन्तऋतुमें गगेवर और घाटाववा जल पीना दितकारी है, जो
जल हेमन्तऋतुमें दितकारी कहा है वह जल शिशिर ऋतुमेंभी दितकारी है
वसन्त और ग्रीष्मऋतुमें पुष्पिका, पावटीका और प्रग्नेश जल पीना
चाहिये, वसन्त और ग्रीष्मऋतुमें नदीका जल नहीं देना चाहिये । कारण
यह है कि, इसऋतुमें पतझट होता है इसमें उन पत्ताओं पर नदीका जल
विषयी समान दूषित होताथा है । वर्षाऋतुमें औद्रिद वा अन्तर्गिरजल
अपरा शुभका जल पीना चाहिये और शरदऋतुमें नदीका जल अपरा
भेदक सेवन करना चाहिये ।

अन्यच्च ।

शरदिस्वच्छमुदयादगस्त्यस्याखिलहितम् ॥

अर्थ—शरदऋतुमें अगस्त्यऋषिके उदय होनेसे सर्व जल निर्मल और हितकारी होजाते हैं ।

अन्यच्च ।

पौषेवारिसरोजातंमाघेतत्तुतडागजम् । फाल्गुनेकूपसम्भूत
चैत्रेचौण्ड्यहितंमतम् ॥ वैशाखेनैर्झरनीरज्येष्ठेशस्ततथो
द्भिदम् । आपाटेशस्यतेकौपंश्रावणेदिव्यमेवच ॥ भाद्रेको
पपयःशस्तमाश्विनेचौज्यमेवच । कार्तिकेमार्गशीपंचजल
मात्रप्रशस्यते ॥ (वृद्धसुश्रुतात्)

अर्थ—पौषके महीनेमें सरोवरका जल, माघके महीनेमें तलावका, फाल्गुनके महीनेमें कुयेका, चैत्रके महीनेमें चौण्ड्यका, वैशाखके महीनेमें झरनेका, जेठके महीनेमें उद्भिदका, आपाठके महीनेमें कुयेका, श्रावणके महीनेमें दिव्योदक, भादोके, महीनेमें कुएका, आश्विनके महीनेमें चोज्य और कार्तिक तथा मार्गशीर्षके महीनेमें सर्व जल सेवन करने चाहिये ।

तथाचतुर्विधतोयवक्ष्यामिशृणुकांविद ।

पापोदकरोगोदकमशूदकारोग्योदकां ॥

अर्थ—आत्रेयजी कहने लगे कि अब जलको—पापोदक—रोगोदक—अशूदक और आरोग्योदक इन भेदोंसे चार प्रकारसे कहता हूँ हे हागीत ! सुन ।

पापोदक ।

पापपापोदकचैवकरोत्येवमरोचकम् । विष्टायुक्तग्राहिनीरं
कुमिकीटसमाकुलम् ॥ समलनीलशैवालपापन्तुनर्दितचय-
त् । स्नानेपानेनतच्छस्तनराणावाहयेषुच ॥ स्नानेनत्वग्भ-
वात्रोगान्कण्डूकुष्ठविसर्पकृत् । पानेनकफगुल्मानांकृमीणा
वरसम्भवान् ॥ करोतिविविधात्रोगांस्तस्मात्तत्परिवर्जयेत् ॥

अर्थ—पापोदक अर्थात् पापीपानी—अरुचिकारक है । विष्टायुक्त जल—मलरोषक है । कृमि, कीट, मछ और नीलीकाई आदिके मिले-झूटे जलको पापोदक कहते हैं । यह पापोदक—मनुष्य और घोड़ोंको स्नान और पीनेमें

अहितकारी है । और इस जलमे स्नान करनेसे त्वचाके रोग, कण्डू, शुष्ठ और मिसर्प रोग उत्पन्न होता है । और इस जलको पान करनेसे-कफ, गुल्म और कृमिप्रभृति नानाप्रकारके रोग उत्पन्न होते हैं । इस कारण यह पापीजल कदापि नहीं पीना चाहिये ।

रोगोदग्मम् ।

बहुवृक्षलताकुञ्जैः श्याकूपोऽथवासरः । अन्ययञ्चेदघोऽप्ये-
वकृमिशोभालसंयुतम् ॥ क्लिन्नंसपिच्छिलं कृष्णवृक्षमूलाश्रि-
तं भवेत् । बहुवृक्षपर्णयुक्तदुर्गन्धमूत्रगन्धवत् ॥ रोगोदकं वि-
जानीयात्करोति विपमान्गदान् । शूलकुष्ठचकण्डचसेनिते-
न करोति हि ॥ विण्मूत्रतृणनीलिकाविषयुततप्तवनफेनिलं
दन्तप्राप्तमनार्त्तबहिसजलदुर्गन्धिगेवालजम् । नानाजी-
वविमिश्रितं गुरुतरं पर्णोष्णपट्टाविल चन्द्राकांशुसुगोपितं
न च पिबेन्न रसदादोपलम् ॥ गुल्मप्लीहाशः पाण्डुश्च जलं ना-
पिजलोदग्मम् ।

अर्थ-बहुतमे वृक्ष और बहुतसी बेलोंके समूहकी छायामें फूला वा गरो-
वर हो और उसमें पानी गड़ब भरता गड़ता हो वह जल कृमि, शिवायुक्त हो,
हेदितहो, पिच्छिलहो, काले रंगका हो, पृक्षाकी जड़ोंके आश्रितहो
और बहुत पृक्षाके पत्तोंसे युक्त हो, दुर्गन्धित हो मूत्रकी समा-
गन्धवाला हो उसको रोगोदक कहते हैं-यह रोगोदक अर्थात् रोगी पानी-
विषमरोग, शूल, शुष्ठ और कण्डूरोगको उत्पन्न करता है । तथा जा ज-
विषा, मूत्र, तृण, फाड़ और विषमहित हो, गरमहो, घनहो, देरी
हो, दांताको पकड़ताहो, अगन्धम वर्षाहो, दुर्गन्धितयुक्तहो, शिवायुक्तहो,
अनेक प्रकारके जीवोंसे मिश्रितहो, अधिकतर भागीहो, पथ, जीर सब
उमे मिलाहो और मिश्रण चन्द्रमा और सूर्यकी किरणें नहीं पड़ती हों वह
जल्दी रोगोदक जानना, यह जल्दी नहीं पीना चाहिये । यह सर्वज्ञानम
दोषजनक है तथा गुल्म, प्लीहा, पार्श्व, पाण्डु और जलोदर रोगको
उत्पन्न करता है ।

आराधनम् ।

दिनाशुर्वाशुसन्ततसामोचन्द्राशुशीतलम् ।

अशूदकमितिख्यातसर्वरोगनिवारकम् ॥

कफमेदोनिलघ्नचदीपनंवस्तिशोधनम् ।

श्वासकासहरनीरचक्षुष्यनेत्ररोगहृत् ॥

अर्थ—जो जल—दिनमें सूर्यकी किरणोंसे तप्त होता है और रात्रिमें चन्द्रमाकी किरणोंसे शीतल होता है वह जल अशूदक नामसे विख्यात है । अशूदक सर्वरोगनिवारक है, कफ, मेद और वातविनाशक है । दीपन, वस्तिशोधक श्वास और खाँसीको हरनेवाला, नेत्रोंको हितकारी और नेत्ररोगनाशक है ।

आरोग्योदकम् ।

पादशेषन्तुक्थिततच्चारोग्यजलंविदुः । कासश्वासहरंपथ्य
मारुतचापकर्षति ॥ सद्योज्वरहरत्याशुसमेद-कफनाशनम् ।
प्रतिश्यायपाचयतिशूलगुल्मार्शनाशनम् । दीपनञ्छुताश-
स्यपाण्डुशोथोदरापहम् । अजीर्णञ्चजरत्याशुपीतमुष्णो-
दकनिशि ॥ (हारीतसंहिता,)

अर्थ—जो जल—अग्निपर ओटानेसे चौथाई भाग वाकी रहजाय वह आरोग्योदक है । आरोग्योदक—खाँसी और श्वासको हरनेवाला, पथ्य, वातविनाशक, नवीन ज्वरको शीघ्र हरनेवाला तथा मेद, कफ, प्रतिश्याय, शूल, गुल्म और घवासीरको दूर करे है । अग्निप्रदीपक और पाण्डुरोग, सूजन, उदररोग तथा रात्रिमें पियाहुआ गरमजल अजीर्णको दूर करे है ।

जलग्रहणवाल् ।

भौमानामम्भसाप्रायोग्रहणप्रातरिष्यते ।

शीतत्वनिर्मलत्वचयतस्तेपांमतोगुण ॥

अर्थ—भूमिसम्बन्धी जल प्रातःकालही ग्रहण करना चाहिये, कारण यह है कि जलमें मुख्य गुण शीतलता और निर्मलता है, सो यह दोनों गुण प्रातःकालही होते हैं ।

शीतजलगुणा ।

शीताम्बुमदमूर्च्छाघ्नछर्दिपित्तज्वरापहम् ।

श्रमकुमृत्पादाहमदात्ययविपापहम् ॥

अर्थ-शीतजल-मद, मूच्छां, वमन, पित्तज्वर, श्रम, रुम, वृषा, दाह, मदात्यय और विषका नाशकरे हैं ।

उष्णोदकदशगुणांश ।

क्वाथ्यमानन्तुयत्तोयनिष्फेनंनिर्मलीकृतम् । भवत्यर्द्धवि-
शिष्टन्तुतदुष्णोदकमुच्यते ॥ उष्णोदकंसदापथ्यकास-
ज्वरविग्रन्धनुत् ॥ कफवातामदोषघ्नदीपनवस्तिशोधनम् ॥
तत्पादहीनवातघ्नमर्द्धहीनन्तुपित्तजित् । कफघ्नपादशो-
पन्तुपानीयलघुदीपनम् ॥ (राज०)

अर्थ-क्वाथ्यमानजलको अग्नि देते २ जय वह निष्फेन और निर्मल होकर
अद्विष्टोप रहनाय तब उस जलको उष्ण जल कहते हैं । उष्ण जल मर्दय
पथ्य, तथा काम, ज्वर, विग्रन्ध, कफ, वात और आमदोषनाशक है, दीपन
और वस्तिशोधक है । उष्ण जलका जय जलते २ एकपाद कम होजाये
तब वह जल वातविनाशक होजाता है और जय जलते २ आधा घापी
रहनाय तब वह जल पित्तनाशक होजाता है और जय जलते २ एकरी
भाग शेष रहनाय तब वह जल फरुनाशक, हल्का और अग्निमदीपक
होनामाई ।

अथवा ।

अष्टमेनाराशेपेणचतुर्थेनार्द्धकेनच । अथवाक्वाथनेचैवमि-
द्धमुष्णोदकवदेत् ॥ श्लेष्मामवातमेदोघ्नवस्तिशोधनदीप-
नम् । कासश्वासज्वरान्दन्तिपीतमुष्णोदकनिधि ॥

अर्थ-जो जल-आगते २ आठवां भाग शेष रहगया हो, उसको वा
आगते २ चौथा भाग शेष रहगयाहो उसको अथवा आगते २ आधा
रहगया हो उसको तथा केवल आगतेहोवेही जलको उष्णोदक कहते हैं ।
उष्णजल रात्रिमें पिघाइया-कर, आमवात और मेन्सोगनाशक है । वरिष्ठ
शोधक, दीपन तथा शार्मी भाग और अग्नि होनेवाला है ।

अथवाश्लेष्मामवातमेद

हेमन्तेनिशिगेपादहीनपादस्थितमर्धा ।

न्यात्पानीयनरत्कालेप्रीप्मेनार्द्धांगपिनम् ॥

इच्छन्ति बहुदोषत्वाप्रावृष्यष्टावशेषितम् ।

अर्थ—उष्णजल हेमन्त और शिशिर ऋतुमें चतुर्थांशहीन, वसन्तऋतुमें चतुर्थांश शेष, शरत् और ग्रीष्मऋतुमें अर्द्धशेष और वर्षाऋतुमें जल बहुत दोषयुक्त होता है, इसकारण इस ऋतुमें उष्णजलको, औदाते २ जव आठवा भाग शेष रहजाय तब व्यवहारमें लाना चाहिये ।

अन्यथा ।

त्रिपादशेषसलिलग्रीष्मेशरदिशस्यते ।

हिमेऽर्द्धशेषशिशिरे तथा वर्षावसन्तयोः ।

अर्थ—कोई वैद्य ऐसा कहते हैं कि, उष्णजल ग्रीष्म और शरदऋतुमें तीन पादशेष रहनेपर और हिमऋतु, शिशिरऋतु वर्षा और वसन्त ऋतुमें अर्द्धशेष रहनेपर सेवन करना चाहिये ।

षष्ठ्युपितजलगुणा ।

दिवा शृतश्च यत्तोयरात्रौ तद्गुरुताव्रजेत् । रात्रौ शृतदिवा चा-

पिगुरुत्वमधिगच्छति ॥ रात्रौ तप्तश्च शीतश्च न पेयदिवसे ज-

नैः । दिवा तप्तश्च शीतश्च न पेयनिशिसर्वदा ॥

अर्थ—दिनका औटाया हुआ पानी रात्रिमें भारीपनको प्राप्त हो जाता है और रात्रिका औटाया जल दिनमें भारीपनको प्राप्त हो जाता है । रात्रिमें औटाकर जो जल शीतल होजाय वह जल दिनमें नहीं पीना चाहिये और जो जल दिनमें औटाकर शीतल होजाय वह जल रात्रिमें नहीं पीना चाहिये ।

शृतशीतजलगुणा ।

शृतशीतत्रिदोषप्रयदन्तर्वाष्पशीतलम् ॥

अर्थ—जो जल औटाकर अपने आप ढके हुए वासनमें शीतल हुआ हो वह जल त्रिदोषनाशक है ।

अन्यथा ।

शृतशीतनचस्निग्धनरूक्षचतदेव हि ।

न च श्लेष्मकरतद्धिनचवायुप्रकोपयेत् ॥

अर्थ—शृतशीत अर्थात् जो औटाकर ठंडा होगया हो वह जल स्निग्ध नहीं है, न रूखा है, न कफकारक और न वायुको उत्पित करे ।

अथवा ।

स्वच्छसज्जनचित्तवल्लघुतया नाप्यार्त्तवच्छीतलं पुत्रालि-
गनवत्तथैवमधुरं बालस्यसंजल्पवत् । पथ्यदीपनपाचन
लघुतरं सश्वासकासापहं हिक्काध्माननवज्वरंपि शमनश्ले-
ष्मापहश्वासजित् ॥ संशुद्धीवरवस्तिशुद्धिकरणं हृत्पार्श्वशु-
लापह । गुल्मारोचकपीनसेनिगदितशीतोष्णमेतज्जलम् ॥

अर्थ-शतशीतजल-स्वच्छ, सज्जनके चित्तकी समान निर्मल हलका,
शीतल पुत्रके आलिंगनकी समान मधुर, पथ्य, दीपन, पाचन, लघुतर
तथाश्वासयुक्त, खासी, दिक्की, अफारा, नरीन ज्वर, कफ और आसको दूर
करे दे । शुद्ध, वास्तिशोधक, हृदयरोग, पार्श्वकी पीडा और शूलको दूर
करे दे । और गुल्म, अरुचि, और पीनतरोगमें हितकारी है ।

अपिच ।

पित्तोत्तरेपित्तरोगपित्तामृक्कफपित्तयोः । मूर्च्छाद्यर्हिज्य-
ग्देहादेवृष्णातीऽसारपीडिते ॥ घातुभयेविपात्तंचसन्निपाते
विरोपत । अस्तविग्रन्धरोगेचशृतशीतजलसदा ॥

अर्थ-शतशीतजल-कफ, वात और पित्तरोगमें, रक्तपित्त और कफ
पित्तमें, मूर्च्छा, वमन, उवर, दाह, वृषा, अतिताप, घातुभय, विपात
पीडित रोगोंमें, सन्निपात रोगमें और विरोप करने में पित्त रोगमें
हितकारी है ।

अपिच ।

द्विपाचितजलपीतविपतुल्यमदाचरेत् ।

अर्थ-आटाकर शीतल त्रिपेदुमे जलको दुधाग गरम नहीं करना चाहिए ।
यथावि, गरम जलको दुधाग गरम करने के पान करनेसे विपकी ममान
अपराध करता है ।

उक्तप्रकरणे ।

मदात्ययेमदादेचरक्तपित्ततथोर्ध्वगे ।

रक्तमेहेविशेषणनाष्णतोऽप्रशस्यते ॥ (हा० मं०)

अर्थ-गरम जल-दुधाग, दाह, रक्तपित्त, ऊर्ध्वग, और रक्तमेह
रोगमें अधिककारी है ।

शीतल प्रकृतिपेध ।

पार्श्वशूलेप्रतिश्यायेवातरोगेगलग्रहे।आध्मानेस्तिमितेकोष्ठे
सद्यःशुद्धौनवज्वरे ॥ अरुचिग्रहणीगुल्मश्वासकासेषुविद्र-
वौ । द्विक्वायास्नेहपानेचशीताम्बुपरिवर्जयेत् ॥ (भा प्र)

अर्थ-शीतलजल पसवाडेकी पीडा, प्रतिश्याय, वातरोग, गलग्रह,
आध्मान, वदकोष्ठ, जो तत्काल जुछाव ले चुकाहो, नवीनज्वर, अरुचि
सग्रहणी, गुल्म, श्वास, खासी, विद्रधि, हिचकीरोग और स्नेहपानमें
त्याज्य है ।

अल्पजलपानविषय ।

अरोचकेप्रतिश्यायेमन्देऽग्नौश्वयथोक्षये । मुखेप्रसेकेजठरेकु
ष्ठनत्रामयेज्वरे॥व्रणेचमधुमेहेचपिवेत्पानीयमल्पकम् । (भा प्र)

अर्थ-अरुचि, प्रतिश्याय, मन्दाग्नि, सूजन, क्षय, मुखप्रसेक, उदररोग,
कुष्ठ, नेत्ररोग, ज्वर, ग्रण, और मधुमेह रोगवाले मनुष्यको अल्प जल
पीना चाहिये ।

गुल्माशौग्रहणीक्षयेपुजठरेमदानलेध्मानके शोफेपाण्डुगल-
ग्रहेव्रणगदमेहेचनेत्रामये । वातारुच्यतिसारकेकफयुतेकुष्ठे
प्रतिश्यायके चोष्णवारिसुशीतलशृतहिमस्वल्पप्रदेयजलम् ॥

अर्थ-गुल्म, अर्श, सग्रहणी, क्षय, उदररोग, मन्दाग्नि, आध्मान, सूजन,
पाण्डु, गलग्रह, ग्रण, प्रमेह, नेत्ररोग, वात, अरुचि, अतिसार, कफ, कुष्ठ
और प्रतिश्याय रोगमें उष्ण, शीतल अथवा शृतशीतल जल अल्प पीना चाहिये
जलपानविधि ।

अत्यम्बुपानान्नविपच्यतेऽन्नमनम्बुपानाच्चसएवदोष ।

तस्मान्नरोवह्निविवर्द्धनायमुहुर्मुहुर्वारिपिवेदभूरि ॥

अर्थ-बहुत जल पीनेसे भोजनका परिपाक नहीं होता और बिलगुल
जल न पीनेसेभी अन्न नहीं पचताहै, इस कारण मनुष्य जठराग्निके बढ़ानेके
लिये बारबार ठहर २ कर अल्प जल पीवे ।

अजीर्णेभेपजवारिजीर्णेवारिवलप्रदम् ।

भोजनेचामृतवारिरात्रौवारिविषप्रदम् ॥

अर्थ-अनीणं अवस्थामें जल जोषधीकी समान है अर्थात् औषधीकी तुल्य गुण कहें । जीणं अर्थात् भोजनके पचजानेमें नल बलको देनेवाला है । भोजनमें जल अमृतकी समान गुण करे है और रात्रिमें जल विषके गहम दोषनकर है ।

अपघ्न ।

पिपेद्वटमहत्ताणियावन्नास्तमितोरवि ।

अस्तगतेदिवानाथेविन्दुरेकोवटायते ॥

अर्थ-जबतक सूर्य अस्त नहीं होय तबतक चाहे हजारों घंटे जल पियें किन्तु जब सूर्य अस्त होनाय तब एक विन्दुभी जल नहीं पीना चाहिये अर्थात् एक विन्दु जलभी घटकी समान हो जाता है ।

ग्रीष्मेशदिपातव्यस्वेच्छयासलिलंनरैः ।

अन्यदास्वरूपमेवेतद्धातश्लेष्मभयात्पिबेत् ॥

अर्थ-ग्रीष्म और शरदऋतुमें नल स्वेच्छया अर्थात् गिरनी अपनी इच्छा हो उतनाही पीना चाहिये और शेष ऋतुओंमें रात तक के भयमे अन्य जल पीना चाहिये ।

आर्द्राजलवह्निविनाशकारिपश्चात्तदतेकफवृद्धयच ।

मध्येतुपीतसमतासुखचतस्याभियोगोभिमत् सद्गुच ॥

अर्थ-भोजनकी मध्यम अवस्थामें जल पीनेमें मदाग्नि होता है, भोजनके अन्तमें जल पीनेसे कफ बढ़ता है और भोजनके मध्यमें जल पीनेमें जठराग्निप्रसन्न होता है ।

भुक्तान्तःपरत शस्तंपीतवारिगुणान्मकम् । अध्वश्रान्तंक्षु-

धाकान्तेशोषकोधातुगेषुच ॥ विषमामनोपपिष्टेचपीतवारि-

रुजाकरम् । तस्मात्प्रसन्नमनमिषानीयमन्दमानरेत् ॥

आर्द्रापीत्वादहत्यग्निमध्यपीत्वारिनाशनम् । तदन्तेचजल-

पीत्वातजलदुर्जरभवेत् ॥ भोजनार्द्राजलपीत्वाचामिसादः

कृशाह्वना । अन्तेरग्निनिष्कूलत्वमूर्ध्वमामाशयात्कफम् ॥

(हा०स०)

अर्थ—भोजनके मध्यमें पीया हुआ पानी गुणकारक है । मार्गसे थका हुआ और भूखसे व्याकुल हुआ तथा शोक और क्रोधसे पीड़ित हुआ और विषम आसनपर बैठा हुआ ऐसा मनुष्य पानीको पीवे तो रोगकी उत्पत्ति होती है । इसकारण प्रसन्न मनसे अल्प पानी पीवे । भोजनकी आदिमें पिया हुआ पानी मदाग्निको करता है, भोजनके मध्यमें पिया हुआ पानी रसायन है और भोजनके अन्तमें पिया हुआ पानी दुर्जर होजाता है । भोजनकी आदिमें जल पीनेसे मदाग्नि और शरीरमें कृशता होती है और भोजनके अन्तमें पानी पीनेसे—स्थूलता और आमाशयके ऊपर कफ उत्पन्न होता है ।

पानीयंपानीयशरदिवसन्तेचपानीयम् ।

नादेयनादेयंशरदिवसन्तेचनादेयम् ॥

अर्थ—शरद और वसन्त ऋतुमें पानी पीना चाहिये किन्तु नद और नदीका पानी शरद और वसन्त ऋतुमें नहीं पीना चाहिये । कारण यह है कि, उक्त समयमें जल दूषित होकर दोषोंको दूषित करे है ।

जलपानावश्यकता ।

**पानीयप्राणिनांप्राणास्तदायत्तहिजीवनम् । तस्मात्सर्वा-
स्ववस्थासुकैश्चिद्वावारिवार्यते ॥ अत्रेनापि विनाजन्तु प्रा-
णान्धारयतेचिरम् । तोयाभावेपिपासार्तःक्षणात्प्राणैर्विमु-
च्यते ॥ तृपितो मोहमायातिमोहात्प्राणान्विमुञ्चति । तस्मा-
त्प्राणस्य रक्षार्थं वारिदेयपिपासवे ॥**

अर्थ—जल जीवोंका प्राणस्वरूप है इस कारण जीवन जलके आधीन है, अतएव मनुष्योंको किसी अवस्थामें भी जल त्याग नहीं करना चाहिये । अन्नके बिना प्राणी बहुत काल पर्यन्त जीते रहते हैं, परन्तु जलके बिना तो क्षणभरमेंही प्राणोंको त्यागदेते हैं । तृपासे पीड़ित मनुष्यके मोह उत्पन्न होता है और मोहसे प्राणाका नाश होता है । अतएव प्राणोंकी रक्षाके लिये प्यासे मनुष्यको जल देना चाहिये ।

प्रशस्तजलप्राणा ।

अगन्धमव्यक्तरससुशीततर्पनाशनम् ।

अच्छलबुचहृद्यचतोयगुणवदुच्यते ॥

अर्थ-दुर्गधरीन, अव्यक्तस्म, शीतल, वृणानाशक, स्वच्छ, हृन्का और हृदयको हितकारी ऐसा जन्म उत्तम कहा है ।

निन्दितगन्धम् ।

पिच्छिलकृमिलक्षितपणेशेवालकहमे । विवर्णनिरससा-
द्रं दुर्गधनहितजलम् ॥ कलुषाच्छत्रमम्भोजपणनीलीतृणा-
दिभिः । सुदुर्दर्शममस्पृष्टसारचान्द्रमसां शुभिः ॥ अनात्त-
नवार्पिकन्तुप्रथमतश्चभूमिगम् । व्यापन्नपरिहर्तव्यं सर्वदो-
षप्रकोपनम् ॥ तत्कुर्व्यात्स्नानपानाभ्यां तृष्णाध्मानोदरज्व-
रान् । कासाग्निमान्द्याभिष्यन्दि कण्डूगण्डादिकास्तथा ॥

अर्थ-पिच्छिल, कृमिभुक्त, पत्ते, काई और फींसे पिंगडादृशा, घुगे-
रगका, घुगेम्बादका, गादा, दुर्गधवान्, कलुषतायुक्त पुर्नके पत्तोंमें, पीछीमें
और तृणाले दकादृशा, घुरीमृमिका जिनका स्पर्श घुगदो, जिनपर घुरप
और चन्द्रमार्गी किरणें न पड़तीं, विना गमयका, जो वर्षाकर मयमरी
सूमिमें भरादो और पिंगडादृवा पेया जड कभीभी काममें नहीं लेना
चाहिये । यह जल अहितकारी और गर्भदोषोंको कृषित करे । इस जन्म
स्नान और पान करनेमें तृषा, आध्मान, उदररोग, ज्वर, रोगी मर्दाप्र,
अभिष्यन्द, कण्डू और गरुगण्डादि रोग उत्पन्न होते हैं ।

पुष्टाद्विदोषोपशमम् ।

निन्दितचापिपानीयकथितसूर्य्यतापितम् । ताम्रसुवर्णरज-
तपापाणनिकतांशुदम् ॥ भृशमन्ताप्यनिर्वाप्यसप्तधामा-
धिततथा । कर्षरजातीपुत्रागपाटलादिसुनामिनम् ॥ शुचि-
माद्रपटन्नाविधुद्रजन्तुविनर्जितम् । स्वच्छकनकमुक्ताद्यै
शुद्धं न्यादोपवर्जितम् ॥ पर्णमूलविषमन्त्रियमुक्ताकनकगो-
चले । गोमेदेनचवस्त्रेणकुर्व्यादुप्रसाधनम् ॥

अर्थ-दुष्टाद्विदोषोंको शोधनकर्त्री शीत-द्रव्यम दूष्टाद्विदोषोंको शोधनकर्त्री, छिद्र
पूरणें करे, पीछे मृत्त रजत, सोह, कण्डू और पाटलो नाम के
गोचर उक्त जन्ममें पुनः निन्दित जन्म सिद्धीके जन्म पापम भोजन उक्तमें

कपूर, चमेली, पुत्राग और पाटलादिके फूलोंसे तथा खस आदि सुगंधित वस्तुओंसे सुगंधित करे फिर श्वेत निर्मलवस्त्रमें छानलेवे । जिससे कि, उसमें छोटे २ जन्तु न रहें तथा स्वर्ण मुक्तादिसे शुद्ध किया हुआ जल निर्दोष होजाता है । पर्णमूल, कमलकी गाठ, मोती, स्वर्ण, सिवार, गोमेद और वस्त्रादिसे जलको शुद्ध करना चाहिये ।

सुवासितजलगुणा ।

सुवासितंजलगुणैः पूतशुक्लेनवाससा ।

नवेमृद्भाजनेन्यस्तमाङ्गल्यरुचिकृत्परम् ॥

अर्थ-सुगंधित पुष्पादिकासे सुवासित कियाहुवा श्वेतवस्त्रमें छानाहुवा और नवीन मृत्तिकापात्रमें रखाहुवा ऐसा जल मंगलजनक और रुचिकारक है ।

पीतजलपाकविधि ।

आमजलंजीर्यतियामयुग्माद्यामैकमात्राच्छृतशीतलच ।

तदर्द्धमात्रेणशृतंकदुग्गणपयःप्रपाकेविधिरेपउक्तः ॥

अर्थ-कच्चा जल पियाहुवा दो पहरमें पचताहै, औराकर शीतल किया जल एक पहरमें पचता है और गरम जल १॥ डेढ़ घटेमें पचता है इस प्रकार जलपाककी विधि कही है ।

इति श्रीशालिग्रामनिःशुद्धमूषण चारिकर्ग समाप्त ॥ १२ ॥

अथ दुग्धवर्गः ।

दुग्धक्षीरपयस्तन्यपीयूषबालजीवनम् ॥

अर्थ-दुग्ध, क्षीर, पय, स्तन्य, पीयूष, बालजीवन (ऊधस्य, अमृत, दोहज, अवदोह, दोहापनय)

स० दुग्ध ।

हि० दूध ।

य० दूध ।

म० दूध ।

गु० दूध ।

फ० दाड ।

ते० पाड ।

इ० मिल्क । Milk

ले० लैक्टस । Lactus

फा० शीरे ।

अ० एबुल ।

शुद्धगुणा ।

दुग्धसुमधुरमिग्वंवातपित्तहरंसरम् । सद्यःशुक्रकरंशीतंसा-
त्म्यसर्वशरीरिणाम् ॥ जीवनवृंहणं प्रत्यमेध्यवाजीकरपरम् ।
वयःस्थापनमायुष्यंसन्धिकारिरसायनम् । विरेकान्तिव-
स्तीनांतुल्यमोजोविवर्द्धनम् । जीर्णज्वरे मनोरोगेशोपमूर्च्छा-
भ्रमेपुत्र ॥ ग्रहण्यापाण्डुरोगे च दाहवृषिहृदामये ॥ शूलो-
दावर्तगुल्मेपुवस्तिरोगगुदांकुरे ॥ रक्तपित्तातिसारेचयोनि-
रोगश्रमकुमे । गर्भभावेचसततहितमुनिवरेः स्मृतम् ॥
बालवृद्धक्षतक्षीणाः शुद्धव्यवायुकृशाश्चये । तेभ्यः सदातिश-
यितहितमेतदुदाहृतम् ॥ निदाहीन्यत्रपानानिचानिभुङ्गेहि
मानव । तद्विदाहप्रशान्त्यर्थं भोजनान्तेपयः पिबेत् ॥ (भा० प्र०)

अर्ध-दूध-मधुर, मिग्ध, वातपित्ताशय रुद्धेक दस्तावर, तन्नाम
वीर्यजनक, शीत, सर्वप्राणिपाकी आत्मा, जीवन, वृद्धि, वक्रकारक,
मेध्य, वाचीकरण, अरग्यास्थापक, आयुष्यकारक, गणिकता और ग्राह्य
है । ओजके घटनेमें विरेचन, वमन और शस्तिको समान गुण को है, तथा
जीणज्वर, मनोरोग, शोष, मूर्च्छा, भ्रम, समग्रणी, पाण्डुरोग, दाह, दूषा, दृढ-
योग, शूल, उदावर्त, गुल्मरोग, वस्तिरोग, गुदादुर, रक्तपित्त, भगिमा,
योनिरोग, श्रम, ज्वर और गर्भभावम निरन्तर दितकारी है । जो पान, गृह,
क्षतक्षीण, भूरे और मैथुन करनेमें क्षीण होगये है उनको दूध गर्भ अधिकार
दितकारी है । मनुष्य जो दाहज्वर अन्न और पानको लेता करते है
उनके दाहको शांतिपानके लिये भोजनके अन्तमें दूध धारण करना
चाहिये ।

अन्वयः ।

वीर्यस्वादुग्धमिग्वमोजस्यधातुवर्द्धनम् ।

वातपित्तहरवृष्यरूपमलशीतलगुरु ॥ (राजवज्रम्)

जीर्णज्वरेऽपेक्षणीर्जीरस्यादमृतापमम् ।

तदेन्नरुणेपीनपिपवर्द्धन्तिमानवम् ॥ (वे०)

अर्थ—दूध—स्वादुरसान्वित, स्निग्ध, औजस्य, और धातुवर्द्धक, वात-पित्तनाशक, वृष्य, कफकारक, शीतल और भारी है । दूध—जीर्णज्वर और कफके क्षीण होनेमें अमृतकी समान गुणकारी है और वही दूध नरुण-ज्वरमें पीना विषकी समान मनुष्यको मार डालता है ।

गोमहिषीछागलाविकगजतुरगखरोष्ट्रमानुपस्त्रीणाम् ।

क्षीरादिकगुणदोषौवक्ष्येनुक्रमतोयथायोग्यम् ॥

अर्थ—गाय, भैंस, बकरी, भेड़, हथिनी, घोड़ी, गधी, ऊँटनी, और स्त्रियोंके दूधके गुण और दोषोंको यथाक्रमसे कहताहूँ ।

गोदुग्धगुणा ।

वेनोऽप्यस्यान्मधुरसुशीतरसायनस्निग्धमलगुरुस्यात् ।

भ्रमश्रमप्रविपहृत्सरंचकफावहशुक्रकरंहिवर्ण्यम् ॥

अर्थ—गायका दूध—मधुर, शीतल, रसायन, स्निग्ध, भारी, भ्रमनाशक, श्रमहारक, विपविनाशक, सारक, कफकारक, शुरुजनक और वर्णको सुदर करेहै ।

अथश ।

गव्यक्षीरपथ्यमत्यतरुच्यस्वादुस्निग्धपित्तवातामयघ्नम् ।

कातिप्रज्ञाबुद्धिमेधाङ्गपुष्टिधत्तेस्पृष्टवीर्यवृद्धिविधत्ते ॥

अर्थ—गायका दूध—पथ्य, अत्यन्त रुचिकारी, स्वादिष्ट, स्निग्ध, पित्त और वातरोगनाशक, कान्तिजनक तथा प्रज्ञा, बुद्धि, मेधा, अङ्गम पुष्टि और वीर्यको बढ़ावे है ।

अथश ।

गोक्षीरजीवनवलयरक्तपित्तानिलापहम् ।

आयुष्यपुस्त्वकृत्पथ्यमेध्यवृष्यरसायनम् ॥

अर्थ—गायका दूध—जीवन, बलकारक, रक्तपित्तनाशक, वातनाशक आयु और पुरुषतावर्द्धक, पथ्य, मेधाजनक, वृष्य और रसायन है ।

अपिच ।

गव्यदुग्धविशेषेणमधुररसपाकयोः । शीतलंस्तन्यकृत्स्नि-

ग्धवातपित्तास्रनाशनम् ॥ दोषधातुमलस्रोत किञ्चित्क्लेद-

करगुरु । जरासमस्तरोगाणांशान्तिकृत्सेविनासदा॥(भा प्र.)

स्वयं-गायका दूध-विशेष करके रस और पाकमें मधुर, शीघ्र, स्तनमें दूध उत्पन्न करनेवाला, वातनाशक, रक्तपित्तनाशक, दोष, धातु, मल, मोत और किञ्चित् हृदयकारक है, भारी और सदैव सेवन करनेवाले मनुष्योंके जग तथा सर्वरोगोंको शान्ति करनेवाला है ।

शरीरविशेष गुणविशेष ।

कृष्णायागोर्भवेद्दुग्धवातहारीगुणाधिकम् ।

पीतायाहरतेपित्तं तथावातहरभवेत् ॥

श्लेष्मलंगुरुशुक्लायारक्तचित्राचवातहृत् ॥

अर्थ-कालीगायका दूध-वातनाशक और अधिक गुणवाला है । पीली गायका दूध-पित्तनाशक और वातविनाशक है । शक्तेद गायका दूध-कफकारक और भारी है । लाल और चित्ररूपी गायका दूध-वातनाशक है ।

विवत्मान्वाल्नत्सायाः पयोदोषलभीरितम् ।

अर्थ-जिन गायका पछडा नहीं है अथवा जिनका छोटा पछडा है उनका दूध दोषकारक है ।

धनेनोगोदुग्धगुणः ।

वृष्कयिण्यास्त्रिदोषघ्नतर्पणत्रलकृत्पयः ।

अर्थ-धानी गायका दूध-त्रिदोषनाशक, कृत्तिकारक, और पछडहर्क है ।

शरीरविशेष गुणविशेष ।

जाद्वलानृपश्लेपुचरन्तीनां पयोत्तरम् ।

पयोगुरुतरस्त्रेहोयथाहारप्रवर्तते ॥

अर्थ-जो गाय जागल, अनृप और पयतामें चरती है उनका दूध पयोक्रममें भारी जानता । अथवा जागल देशकी चरनेवालोंमें अनृप देशकी गायका, और अनृप देशकी चरनेवालोंमें पयताम चरनेवाली गायोंका दूध भारी है और अथवा यदि आहार चरती है वैसेही आहारके अनुसार पय निरचता है ।

आहारविशेष गुणविशेष ।

स्वल्पान्नभक्षणाज्जातभीरुगुरुकृत्प्रदम् ।

तत्तुल्यपनृप्यमुम्यानां गुणदायकम् ॥

पञ्चालनृपकापीसत्रीजजातगुणैर्दिनम् । (भा० प्र०)

अर्थ—जो गाय अल्प अन्न आहार करती हैं उनका दूध—भारी कफकारक, वर्णको सुंदर करनेवाला, परमवृष्य, और आरोग्य, मनुष्योंको गुणदायक है । जो प्याल चरीकी कुट्टी, घास और जिनोले खाती हैं उनका दूध अत्यन्त हितकारक है ।

अयस्याविशेषगुणा ।

तरुणीनांगवांदुग्धमधुरचरसायनम् । त्रिदोषशमनचैववृद्धायादुर्वलमतम् ॥ सगर्भाया समुद्दिष्टत्रिमासोर्ध्वचपित्तलम् । क्षारचमधुरचैवमतवैशोपकारणम् ॥ प्रथमचप्रसूतायानिःसारगुणहीनकम् । नूतनप्रसूतगोर्दुग्धरूक्षंदाहकरं मतम् ॥ रक्तदोषस्यजनकपित्तलचमतबुधैः । चिरप्रसूतादुग्धंतुमधुरदाहकपटु ॥ (निघण्टुरत्नाकरे)

अर्थ—तरुणी गायका दूध—मधुर, रसायन और त्रिदोषनाशक है । वृद्ध-गायका दूध—दुर्बल है । जिस गायको ग्वावन हुवे तीन महीने बीत गये हों उस गायका दूध—पित्तकारक, खारी, मधुर और शोषकारक है । जो गाय पहिलीवार व्याई है उसका दूध—सारहीन और गुणोंमें हीन है । जो गाय नवीन व्याई है उसका दूध—रूखा, दाहकारक, रक्तको कुपित करनेवाला और पित्तकारक है । जिस गायको व्याये हुवे बहुत दिन बीत गये हैं उसका दूध—मधुर, दाहकारक और निमकीन है ।

अथ च गोदुग्धानां प्रशस्तामशस्तभेदाः ।

शस्तवत्सैकवर्णायाधवलीकृष्णयोरपि ।

इक्ष्वादामापपर्णाद्यारुर्ध्वशृङ्गाचयाभवेत् ॥

तासांगवाहितक्षीरशृतवाशृतमेववा ॥

अर्थ—जिन गायका रंग बउठेके रंगसे मिलता है उन गायोंका दूध तथा काली और सफेद गायका दूध प्रशसायोग्य है । जो गाय इक्ष्व और अपर्णा आदिको खाती हैं और जिन गायके माँग उपरको उठे हैं उन गायोंका दूध पक अयरा नपक हितकारी है ।

गोदुग्धप्रहणयाश्च निषेधः ।

गव्यप्रत्युपसिद्धीरगुरुविष्टम्भिदुर्जरम् ।

तस्मादभ्युदितेमुच्येयामयामार्द्धमेववा ॥

समुत्तार्यततो ग्राह्यं तत्पथ्यदीपनलघु ॥ (राजसहस्र.)

अर्थ-गायका दूध प्रातःकालमें-भारी, मिष्टमकारी और दुर्जर होता है । अतएव, मृत्पंके उदय होनेपर एक प्रहर अथवा अर्द्ध प्रहर समय स्थगित होजानेपर गायका दूध ग्रहण करना चाहिये । इसप्रकार ग्रहण करनेमें वह दूध-पथ्य, दीपन और दल्का है ।

महिषोदुग्धगुणः ।

स्त्रिगुणमरुच्छीतकरचतन्द्रानिद्राकरगुण्यतमश्रमघ्नम् ।

बलप्रदं पुष्टिकर्कफघ्नमजीवनमाहिषमुच्यते पथः ॥ (हा० स०)

अर्थ-भैरवा दूध-स्त्रिगुण, वायुकारक, शीतजनक चन्द्रा और निद्राको करनेवाला, वीर्यरक्षक, श्रमनाशक, पाक्कारक, पुष्टिकारक और कफको दलन करने वाला ।

अथ यः ।

माहिषवबलर्णामिनिद्राशुक्रकफप्रघ्नम् । तीक्ष्णामिगमन

म्यादुरसेपाकेचपुष्टिम् ॥ न्यायामश्रान्तदं हस्यश्रमघ्नम्-

निलापदम् । निष्कामस्यातिगृह्यस्त्रीपुङ्गवप्रदायकम् ॥

बलेनतरुणस्यापि विशेषात्कामदायकम् । (सुषेण)

अर्थ-भैरवा दूध-बलकारक, वर्णको शुद्ध करनेवाला, अग्निजनक, निद्राकारक, शुक्रजनक, कफकारी, तीक्ष्ण अग्निवी शक्ति करनेवाला, राम और पाकमें मधुर पुष्टिकारक, तथा गिनका जेद कमरत करनेमें सकलपा है । ताके श्रमको दूर करे है, श्रमनाशक, वायुविनाश और शिथिल, पुष्ट, स्त्री और तरुणादिकके काम उपकरोनेवाला है ।

अथ यः ।

मान्तिपंमधुरगन्वात्स्निग्धशुक्रकरगुरु ।

निद्राश्रममभिप्यन्दिधुशान्तिरुगकहिमम् ॥ (भावविभ.)

अर्थ-योगका दूध-गायक दूधकी भैरवा मधुर है, स्त्रिगुण, शुद्धजनक, भारी, निद्राकारी, अभिप्यन्दिधुशान्ति करनेवाला और शिथिल है ।

छागीदुग्धगुणा ।

छागकपायमधुरश्शीतग्राहिलघुपित्तक्षयापहारे ।

कासज्वराणारुधिरातिसारेहितपयश्छागलजत्रिदोषजित् (हा)

अर्थ-चकरीका दूध-कपेला, मधुर, शीतल, मलरोधक, हल्का तथा पित्त, क्षय, खासी, ज्वर और रक्तातिसारमें हितकारी तथा त्रिदोषनाशक है ।

छागीनामल्पकायत्वात्कटुतिक्तनिपेवणात् ।

नात्यम्बुपानाद्व्यायामात्सर्वदोषहरपय ॥

दीपनलघुसग्राहिश्वासकासास्रपित्तनुत् । (सुश्रुत)

अर्थ-चकरियाकी छोटी देह होतीहै और चम्परी और कडवी बनस्पतियोंको चरतीहै । जल बहुत कम पीतीहै और दिनभर जगलमें विचरती फिरतीहै इसीसे चकरियोंका दूध सर्वदोषनाशक, दीपन, हल्का, मलरोधक तथा श्वास, खासी और रक्तपित्तको दूर करेहै ।

मेथीदुग्धगुणा ।

आविकलवणस्वादुस्निग्धोष्णचाश्मरीप्रणुत् ।

अहृद्यतर्पणवृष्यशुकपित्तकफप्रदम् ॥

गुरुकासेऽनिलोद्भूतेकेवलेचानिलेवरे । (भा०प्र०)

अर्थ-भेडका दूध-निमकीन, स्वादिष्ट, स्निग्ध, गरम, पयरीको दूर करनेवाला, हृद्यको अहितकारी, वृषिकारक, वृष्य तथा शुक, पित्त और कफकारक है । भारी तथा वातकी खासी और केवल वातरोगमें हितकारी है ।

अन्यथा ।

औरभ्रमधुररूक्षमुष्णवातकफापहम् ।

नशस्तरक्तपित्तीनावातिकानाहितभवेत् ॥

अर्थ-भेडका दूध-मधुर, रूखा, गरम, वातकफनाशक, रक्तपित्तोग-वालोंको हितकारी नहीं है । केवल वातरोगवालोंको हितकारी है ।

मृगीदुग्धगुणा ।

मृगीनांजांगलस्थानामजाक्षीरमुणपयः । (भा०प्र०)

अर्थ-नगलदेशकी मृगीया दूध-चकरीके दूधकी समान गुणवाला है ।

मन्त्रोद्घातः ।

रुद्रोष्णवडवाक्षीरत्रयशोषानिलापहम् ।

अम्लपटुलघुम्बादुसर्वमेकशफनथा ॥ (भा० प्र०)

अर्थ-घोटीका दूध-रूखा, गरम, पचकारक, शोषनाशक, वातविनाशक, अम्ल, रसारी, हल्का, स्वादिष्ट है । इसी प्रकार और पित्तने पचानुमाने पशु है उन गवका दूध घोटीके दूधकी समान जानना ।

उद्घोद्घातः ।

रुद्रतथोष्णलघुणंकफस्यनिवाग्णवातविकारहारि ।

लघुप्रशस्तकटुककृमीणांशोषार्शसामोष्णयोऽनुकलम् ॥ (हा. म.)

अर्थ-उन्नीका दूध-रूखा, गरम, नमकीन, गरनिवारक, वातहार, हल्का, अम्ल, वातना तथा कृमि, सूजन और पचातीवही दूर करे है ।

अथ

औष्टुदुग्धलघुम्बादुलघुण दीपनतथा ।

कृमिकुष्ठकफानाहशोथोदरहरसम् ॥ (भा० प्र०)

अर्थ-उन्नीका दूध-रूखा, स्वादिष्ट, निमगीन, दीपन, शाण तथा कृमि कुष्ठ कफ, आनाह, सूजन और उदरोगको दूर करे है ।

हस्तिमे दुग्धनता ।

घृदणहस्तिनीदुग्धनधुप्यन्धिरताकरम् ।

क्षिरानमधुगृप्यकपायानुरन्ध्रगुरु ॥

अर्थ-हस्तिनीका दूध घृदणारक नेत्रोंको दिव्यारी, दिव्यताकरक, क्षिर, मधु, क्षीरकटक, क्षिरि कपाय और मारी है ।

मन्त्रोद्घातः ।

गर्दभ्यान्नुस्मृनदुग्धमधुप्रलकारकम् । रुक्षनाम्नदीपन

चघुष्टिमात्रसम्मतम् ॥ पच्यरुचिप्रदंक्षारकवानविनाश-

नम् । बालरोगादामनधामनेविनाशयेत् ॥

अर्थ-गर्दभका दूध-मधु, पचकारक, रुखा, अम्ल, दीपन, घुष्टिमात्र, पच्य, रुचिप्रद, क्षारक, वानविनाश-नम् । बालरोगादामनधामनेविनाशयेत् ।

श्रोदुग्धगुणा ।

सजीवनवृहणमेवसात्म्यसन्तर्पणनेत्ररूजापहच ।

पित्तस्यरक्तस्यचनाशनचनारीपयःस्नेहनमेवशस्तम् ॥

अर्थ—स्त्रीका दूध—सजीवन, पुष्टिकारक, पथ्य, सात्म्य, वृष्टिकारक, नेत्ररोगनाशक, पित्तनाशक, रुधिरके विकारोंको हरनेवाला और स्नेहयुक्त है।
अन्यथा ।

प्रोक्ततुमानुपीदुग्धमधुरशीतलघु । चक्षुष्यतुवरपथ्यदी-
पनपाचकंमतम् ॥ धातुवृद्धिकररुच्यजीवनस्नेहनतथा । रक्त-
पित्तेचनस्यार्थनेत्रशूलेक्षिपूरणे ॥ उत्तमनेत्ररोगघ्नमभिघातवि-
नाशकम् ॥ वातपित्तनाशयतीत्येवमुक्तचिकित्सकैः ॥ (नि०र०)

अर्थ—स्त्रीका दूध—मधुर, शीतल, हल्का, नेत्रोंको हितकारी, कपेला, पथ्य, दीपन, पाचक, धातुवर्द्धक, रुचिकारक, जीवन और स्नेहयुक्त है । तथा रक्तपित्तपर इसका नाश देना और नेत्रके फूलेपर इसको आराम भरना उत्तम है, नेत्ररोगनाशक, अभिघातविनाशक, वात और पित्तका नाश करे है ।

दुग्धस्य सात्म्यासात्म्यविधि ।

अल्पाम्बुपानव्यायामात्कटुतिक्ताशनेलघु । पिण्याकाम्ला-
शिनीनातुगुर्वभिष्यदिशीतलम् ॥ क्षीणानादुर्वलानाञ्चत-
थाजीर्णज्वरादिते । दीप्ताग्निमानतन्द्राणाश्रमशोषविकारि-
णाम् ॥ व्यवयिनामल्परेतःश्वसिनाविषमाग्निनाम् । त-
थाचराजयक्ष्माणाक्षीरपानविधीयते ॥ नगस्तलवणैर्युक्तशी-
र्गचाम्लेनवापुन । करोतिकुष्ठत्वग्दोषतस्मान्नैवहितमतम् ॥

(हा०स०)

अर्थ—जो मनुष्य—अल्पजल पीते है, कमरत करते है तथा चमरे और फडे पदार्थ खाते है उनके लिये दूध हल्का है । और जो मनुष्य तिलोंकी पिष्टी खाते है और अम्लरसका सेवन करते है उनके लिये दूध भारी, अभिष्यन्दि और शीतल है । क्षीण, दुर्बल, जीर्णरोगी पीडित, जिनकी जठराग्नि दीपन है, तन्द्राहीन, श्रमवाल, शोषयुक्त, मैत्रुन करनेवाले

क्षोणीर्येवाले, भासयुक्त, विषम, अग्रियुक्त और गणपदमारोगवान् मनुष्योंको दूधका भक्षण करना चाहिये । त्वणयुक्त अथवा अमृतयुक्त दूधका पीना श्रेष्ठ नहीं है । यह फांट और त्वचाके रोगोंको उत्पन्न करता है इस कारण यह अहितकारी है ।

आमंक्षीरमभिष्यन्दिगुरुश्लेष्मामवर्द्धनम् ।

जेयसर्पमपथ्यतद्व्यमाहिषवर्जितम् ॥

नारीक्षीरत्वाममेवहितननुशृतहितम् ॥

अर्थ-गाय और भक्षणके दूधको छोड़कर प्रायः सर्व दूध अभिष्यन्दी, भारी, फफूरी और अपथ्य होते हैं किन्तु स्त्रीका दूध कच्चाही हितकारी होता है और पका नहीं होता ।

धारोष्णदिपुष्पगुणा ।

धारोष्णगोपयोऽल्पलघुशीतमुवाममम् । दीपनननिदोष

मृतद्वाराभिशिरत्यजंत ॥ धारोष्णशम्यतेगव्यंवागशीत

तुमाहिषम् । शृतोष्णमानिकपथ्यशृतशीतमजापय ॥

शृतोष्णरुफनातमशृतशीततुपित्तनुत । अर्धादकक्षीरशु

ष्टमामालघुतम्पय ॥ जलेनरहितंदुग्धमतिपक्वयथायथा ।

तथातथागुरुन्निग्धवृष्यत्रलनिवर्द्धनम् ॥ (भा० प०)

अर्थ-धारोष्ण (दूधके समान जो उष्ण होता है)-गायका दूध यन्कारी, दृढका, शीतल, अमृतका समान दीपन और त्रिदोषनाशक है । जो गायके दूधकी मात्रा शीतल होगई हो तो रसाग्ने मोक्ष है । गायका दूध-धारोष्ण प्रशस्तायाय है । भक्षणका दूध-धारोष्ण उत्तम होता है । भक्षणका दूध गरमागरम हितकर है और यद्यपि दूध भाग कर शीतल किया हुआ हितकारी होता है । शृतोष्ण अर्धाक्ष और शीतल गरम किये दूध कनकातनाशक और शीतल शीतल किये दूध दूध विनाशक होते हैं । भाषा पानी मिश्रण के पत्रका दूध दूध कथे दूधकी अपेक्षा दृढका है । जलेन रहितं दूध दूध दूधका है दूध दूधकी अधिक भारी, शीतल, सुखदायक और चरुकर होता है ।

प्रमाणान्तरादुक्तम् ।

शतानन्त्रगुणाभिर्याद्यायामाकन्धात्तथा । प्राभातिकेन-

दाप्रायोप्रादोपाद्गुरुशीतलम् ॥ दिवाकरकराघाताध्याया-
मानलसेवनात् । प्राभातिकाचुप्रादोपलघुवातकफापहम् ॥

अर्थ—रात्रिमें चन्द्रगुणकी अधिकतासे तथा व्यायाम न करनेसे प्रातः-
कालका दूध प्रायः सायंकालके दूधसे भारी और शीतल होता है । दिनमें
धूपके लगनेसे तथा व्यायामकी गरमीके सेवन करनेसे सायंकालका दूध
प्रातःकालके दूधसे हलका और वात तथा कफको दूर करे है ।

समयविशेषे दुग्धसेवनगुणाः ।

वृष्यवृहणमग्निदीपनकर पूर्वाह्नकालेपयो मध्याह्नेतु बला-
वहकफहर पित्तापहदीपनम् । बालेवृद्धिकर क्षयक्षयकरवृ-
द्धेपुरेतोवह रात्रौपथ्यमनेकदोषशमन क्षीरसदासेव्यते ॥
वदन्तिपेयनिशिकेवलपयोभोज्यनतेनेहसहोदनादिकम् ।
भवत्यजीर्णनशयीतशर्वरीक्षीरस्यपानस्यनशेषमुत्सृजेत् ॥
दीप्तानलेकृशेषुसिबालेवृद्धेपय प्रिये।मतहिततमदुग्धंसद्य
शुक्रकरपरम् ॥ भुक्तायेवहुतीव्रचडविदलायेचाम्लतिका-
रसारूक्षाःक्षारविदाहशोषककरायेचातिनापप्रदा । कापा-
या कटुरूक्षदुर्जरतरा ससेव्यमानाहठात्तत्सर्वंवलकृत्करो-
तितरसादुग्धनिशासेवितम् ॥

अर्थ—पूर्वाह्नकाल (मध्यम प्रहर) में पिया हुआ दूध—वीर्यवृद्धि देनेवाला,
पुष्टिको करनेवाला और अग्निको दीपन करे है । मध्याह्नकालमें पियाहुवा
दूध—बलकारक, कफनाशक, पित्तहारक, अग्निप्रदीपक, बालकाको बढ़ाने-
वाला, कई रोगका क्षयकरनेवाला और वृद्ध मनुष्योंके वीर्यको देनेवाला है ।
और रात्रिके समयमें दूध पिया हुवा अनेक दोषोंकी शान्ति करता है, पथ्यह,
इसकारण दूध नित्य सेवन करना चाहिये । कोई वैद्य ऐसा कहते हैं कि,
रातमें केवल दूधही पीना चाहिये, उसके साथ चावल आदिक न खाने
चाहिये, क्योंकि रात्रिमें भात आदि भोजन करनेसे अजीर्ण होतात है और
निद्रा नहीं आता है, तथा पीत दूधको चाकी न छोड़े । जिनकी जठराग्नि
दीप्त है और जिनका शरीर कृश है, बालक, वृद्ध और जिनको दूध प्यारा है

उनके लिये दूध अत्यन्त हितकारी है और तत्काल शुभको उत्पन्न करे। जो मनुष्य अत्यन्त सीय तथा अनेक दोषोंको कुपित करनेवाले विश्लेषो राते है और जो मनुष्य-अम्ल, कड़वे, रुखे, खारी, टाड़जनक, शोषकारक, तापजनक, कपेले, चर्परे, रुखे और दुर्गंध पदार्थोंसे भोजन करते है उन मनुष्यों को यदि ये भोजन किया हुआ दूध पानको देनेवाला है।

निर्दुग्धम् ।

विषण्विरसचाम्लदुर्गन्धग्रन्थिलपथ । वर्जयेदम्ललण्डणयुक्तं
कुष्ठादिकृद्यत ॥ क्षीरमुदूर्तत्रितयोपितयदतप्तमेतद्रिहृति
प्रयाति । पष्टुदोषकुरुतेतदूर्ध्वविषोपमस्यादुपितदशा-
नाम ॥

अर्थ-जो दूध घुरे रसका, घुरे स्वादवाला, रसदा दुर्गन्धित और गांठदार हो उसको नहीं पीना चाहिये, तथा रसाई और नमकके पदार्थोंके साथभी दूध नहीं सेवन करना चाहिये। तीन गुरुतक रसका हुआ कषा दूध विकारको प्राप्त होता है। अर्थात् विषद्विषादि, छे मुदूर्तक रसका हुआ दूध अनेक प्रकारके दोषोंको उत्पन्न करता है और दण मुदूर्तक रसका हुआ दूध विषकी समान होता है।

अथ ।

मुदूर्तपनकादूर्ध्वतीर्गभजतिविक्रियाम् । तदेवद्विगुणकाले
विषमद्वन्तिमानवम् ॥ अफथितदशपटिकाफथितद्विगुणा-
स्ताश्चपय पथ्यम् । कांष्णचम्बरसादयंयावत्तावत्पय'प्रा-
थ्यम् ॥ तस्माच्छृण्वान्पय'शृतपयस्तात्कालिकपिमेव ॥

अर्थ-जो दूध मुदूर्त पश्चात् शिवा भोजना हुआ दूध शिवाको प्राप्त होता है और यदि दण मुदूर्तके बाद शिवाकी ममात्र मनुष्यको प्राप्त होता है। कषा दूध दण पश्चात् और औरा हुआ दूध पान पश्चात् कानेयोग्य और पथ्य होता है ऐसा मतान्त है। मशोष्ण और पयत्रक रसदुग्ध दोष जनक दूध पानयोग्य होता है इत्यादि और औरा हुआ भक्ष्य शिवा भोजन हुआ भक्ष्यका दूध पीना चाहिये।

क्षीरकालपायनम् ।

गीर्णं पौष्टिकं क्षीणं क्षीरम्यादमृनोपमम् । तदेव नरुणोपीन

विषवद्वन्तिमानवम् ॥ चतुर्थभागसलिलनिधाययत्नाद्य-
दावर्त्तितमुत्तमतत् । सर्वाभयघ्नवलपुष्टिकारिवीर्यप्रदक्षीर-
मतिप्रशस्तम् ॥ येषांनसात्म्यक्षीरेणपीतचाध्मानकारकम् ।
तेषामर्द्धजलदत्वानागरपिप्पलीयुतम् ॥ आवर्त्तयेत्क्षीरशे-
पतत्पीत्वासुखमाप्नुयात् । गव्यपूर्वाह्नकालेस्यादपराह्णे तु
माहिपम् ॥ क्षीरसशर्करपथ्ययद्वासात्म्यचसर्वदा । स्निग्ध
शीतगुरुक्षीरसर्वकालनसेवयेत् ॥ दीप्ताग्नि कुरुतेमदमन्दा-
ग्निनष्टमेवच । नित्यतीव्राग्निनांसेव्यसुपक्वमाहिपपय ॥
पुण्यन्तिधातवःसर्वेवलपुष्टिविवर्द्धनम् । खण्डेनसहितदुग्ध
कफकृत्पवनापहम् ॥ सितासितोपलायुक्तंशुकलत्रिमला-
पहम् । सगुडमृत्रकृच्छ्रघ्नपित्तश्लेष्मकरमतम् ॥

अर्थ—दूध—जीर्णज्वर, कफ और निर्मलताम अमृतकी समान है और
वही दूध नये ज्वरमें पिया हुआ विषकी समान मनुष्यको मार देवे। दूधम
चोया भाग पानी मिलाकर औंटावे जब वह पानी जल जाय तब सेवन करे, वह
दूध श्रेष्ठ, सर्वरोगनाशक, बलवर्द्धक, पुष्टिकारक, वीर्यजनक और अत्यन्त प्रशस्त
योग्य है। जिनको दूध नहीं पचता है और जिनके दूध पीनेसे अफाग हो जाता है
उनको चाहिये कि दूधम आधा भाग पानी डालकर, एक तोला माठ और
एक तोला पीपल डालेवे फिर औंटावे, जब पानी जल जाय तब उतारकर
खूब लोट पोटा करे। तदनन्तर सेवन करनेसे पच जाता है और सुगु उत्पन्न
होता है। गायका दूध पूर्वाह्नकालमें और भैरवका दूध अपराह्नकालमें पीना
चाहिये। शर्करायुक्त और गरम किया हुआ दूध सर्व कालमें श्रेष्ठ है।
स्निग्ध, शीतल, गाढ़ा ऐसा दूध सर्व कालमें सेवन नहीं करना चाहिये।
पका हुआ भैरवका दूध—दीप्ताग्निको मद करे और मन्दाग्निको नष्ट करे।
इस कारण सदैव तीव्राग्निवाले मनुष्यको पीना चाहिये और मदाग्निवाले
मनुष्यको कभी भी नहीं पीना चाहिये, सब धातुओंको पुष्टि करे और घल
तया पुष्टिवर्द्धक है, खाड़युक्त दूध—कफकारक और वातविनाशक है, मिश्रीके
साथ दूध—शुकजनक और त्रिदोषनाशक है, गुडके साथ दूध—मृत्रच्छनाशक
और पित्तश्लेष्मकारक है।

समुपिपत्तौ गच्छति ।

क्षीरपय्युपितसर्वगुरुविष्टम्भिदुर्जगम् ।

अर्थ-सर्व प्रकारके घासी दूध-भारी, विष्टम्भकारी और दुग्धमे पवते है ।
पीयूषपिण्डाशरीरगाराद्विष्टम्भोदनात् दशानामिष्टम्भम् ।

क्षीरतत्कालमृतायाचनपीयूषमुच्यते । नष्टदुग्धस्यपक्षम्य
पिण्ड'प्रोक्त' किलाटक ॥ अपक्षमेयन्नष्टक्षीरशाकहितत्प-
यः । दध्नातक्रेणवानष्टदुग्धवद्वसुनाममा ॥ दध्नाचनमहि-
तंतकपिण्ड सञ्च्यते । नष्टदुग्धं भवेत्त्रीरमोदज्यवटोऽत्र-
वीत ॥ पीयूषचकिलाटक्षीरशाकनधनच।तकपिण्ड इमे
वृष्यावृहणामलजर्जना ॥ गुग्गुलुं स्फुप्मलाद्व्याजानपित्तवि-
नाशना । दीप्ताग्नीनामिनिद्राणां विद्रव्यां चागिष्टजिना ॥

मुखशोषतृपादाहस्तपित्तज्वरप्रणुत् ।

लघुर्मलकगुरुच्योमोद स्यात्स्मितायुतः ॥

अर्थ-गुग्गुली व्याहृ दुर्गाम भेगा, त्रिके गाटे दूधको पीयूष (सीम)
करते है । जो दूध, अग्निमे जलकर पिण्डों पेय नय उगरो किन्ना (मारा,
तोपा) करते है । बिना औरमेरी ओ कषा दूध का रूप उगरो औरगाक
(क्या दूध) करते है । जो दूध नहीं क्षयता मटेके पक्षमे नष्ट दध्नाचन
निर उम दही वा छाछमे रहे दूध दूधको सीम करके पीयूष उगरो गर्मी
निकाल करने नय उमका पिण्ड होजाय और जनरा उममे जल और न रहे
नय उगरो छत्रविष्ट करने है । पक्षे दूध घासीके जरवदेओ मोद पक्षे ।
पक्षे दूध, क्षीरगा और मरुपक्षे पक्षमे वीर्यमोदक, वृक्षमय,
सर्वद्वेष्ट भारी, कचकारी, दूधको दित्तकारी और वाताद्वेष्टको दूर करे है ।
जिनको जग्याग्नि दीप्त है जिनका मित्र नहीं भासी है और जिनको विद्र-
विषाग है नय मनुष्योंको यह पक्षमेदिनकारी है । पीयूषमे मादमा
(दूधे दूध) के घासीका रसिष्ट सुगन्धोप गुहा, मरु रसिष्ट और मरु
नष्ट होकर मरु पक्षमे मादमा और दध्नाचन है ।

क्षीरपय्युपितसर्वगुरुविष्टम्भिदुर्जगम् ।

नन्तानिष्टामुर्जीनाप्यापित्तान्दधनुः ।

तर्पणीवृंहणीस्निग्धावलासवलशुक्रदा ॥

अर्थ—दूधकी मलाई—भारी, शीतल, वीर्यवर्द्धक, रक्तपित्तनाशक, दाह-निवारक, तृप्तिकारक, पुष्टिजनक, स्निग्ध तथा कफ, बल और शुक्रको करेहै ।

चण्डातक्षीरगुणा ।

क्षीरगव्यमथाजवाकोष्णदण्डाहतपिवेत् ।

लघुवृष्यज्वरहरवातपित्तकफापहम् N

अर्थ—गाय तथा चकरीके दूधको अल्प उष्ण करके रईसे मथकर पीवे वह मथाहुआ दूध हलका, वीर्यवर्द्धक, ज्वरनाशक तथा वात पित्त और कफको नष्ट करेहै ।

गोदुग्धादिभयकेनगुणा ।

गोदुग्धप्रभवकिवाद्यागीदुग्धसमुद्भवम् । भवेत्फेनत्रिदोषघ्न

रोचनं बलवर्द्धनम् ॥ वह्निवृद्धिकरवृष्यसद्यस्तृप्तिकरलघु ।

अतिसारेऽग्निमान्द्ये च ज्वरे जीर्णे प्रशस्यते ॥ (भा० प्र०)

अर्थ—गायके दूधके झाग अथवा चकरीके दूधके झाग—त्रिदोषनाशक, रुचिकारक, बलवर्द्धक, अग्निवर्द्धक, वीर्यवर्द्धक, तत्काल तृप्तिकारक, हल्के तथा अतिसार, मन्दाग्नि और जीर्णज्वरम हितकारी है ।

पयसः केवलस्यापि पदार्थावलघृष्यदा ।

हिता सुगन्धिनः पुष्टिधातुवृद्धिकराग्निदा ॥ (नि० र०)

अर्थ—पेडे—चरफी, खडी इत्यादि शुद्ध दूधके बने हुये पदार्थ—बलकारक, वीर्यवर्द्धक, हितकारी, सुगन्धिजनक तथा पुष्टि, धातु और अग्निवर्द्धक है ।

इति धीशाष्टिप्रामाण्यदुग्धभूषणे दृग्धर्मा समाप्त ॥ १० ॥

अथ दधिवर्गः ।

दधिपयस्यमगल्यविरलचदधिद्रप्सम् ।

अर्थ—दधि, पयस्य, मगल्य, विरल, दधिद्रप्स, (घनेतर, क्षीरज, भीरोद्धव, दिग्ध, तक्रजन्म, साम्लक)

| | |
|----------------|----------------------------|
| सकृत्तभाषामे | दधि । |
| हिंडीभाषामे | दही । |
| घगभाषामे | दही । |
| मराठीभाषामे | दही । |
| गुजरातीभाषामे | दही । |
| कर्जाटकीभाषामे | मगद । |
| वैदिगीभाषामे | वेदगु । |
| इम्रेनीभाषामे | कद्दूदमिल्ल । (Cup'd Milk) |
| पाग्रीभाषामे | योग । |
| अग्रीभाषामे | तुंगगल । |
| | साधारणविशेष । |

पाकेऽम्लमुष्णदधिदीपनचमिग्वरुपायसस्तगुरुस्यात् ।

सग्राहिपित्तान्कफप्रदस्यान्मेद प्रदेशोफरुन्प्रसिद्धम् ॥

अर्थ-दही-तमनेमे दही, मगद, दीपन, पिता, कपेदा, भागी, मन्त्री
घन, स्तारितकाय, कदगाय, मेज्जनक, भीम सुजनको दहीको दही ।
मन्त्र ।

दध्यम्लमुष्णतपोपशमनसग्राहिमृजावद उत्पशोफक-
फार्त्यरुन्पशमनवद्वेशशान्तिप्रदम् । कानश्चामसर्पान-
मेपुत्रिपमेगीनज्वरस्याद्रिने ग्लोत्रेककृक्कोतिमतनशु-
क्लस्यवृद्धिपगम् ॥ (ग०वि०)

अर्थ-दही-भस्म भागे, वाते विरागो दही कानेशा मन्त्रा १८,
मृजानक, मृजानक शोषनायक, कदगाय, अग्निकिराग, भीमको
जाति कानेशा मन्त्रा १८, भाग, दीपन विषमद भीम दीपनको
दहीको दही भीम मन्त्रिका मन्त्रा सुजनको दही ।
अग्नय ।

दध्युष्णदीपनचमिग्वरुपायानुस्मरुम् । पाकेऽम्लग्राहिपित्ता-
नशोऽन्मेदकफप्रदम् ॥ मृजानुत्तुप्रतिभ्यापेगीनरेविप-
मन्त्रो । ग्रीवामेऽग्रीकाभेगस्यतेऽलकट्टेनम् ॥ (ग०वि०)

अर्थ—दही—गरम, दीपन, स्निग्ध, कुष्ठक कपेला, भारी, पाकमें अम्ल, मलरोधक तथा रक्तपित्त, मूजन, भेट और कफको करे है । मूत्रकृच्छ्र, प्रतिश्याय, शीत, विषमज्वर, अतिसार, अरुचि और कृशतामें दही हितकारी है तथा बलवर्द्धक है ।

अन्यञ्च ।

• दधिस्वाद्विदह्यस्नेहनरोचनगुरु ।

पाकेऽम्लमुष्णवातघ्नमाङ्गल्यवृद्धणपरम् ॥ (राजवल्लभ)

अर्थ—दही—स्वाद्विष, अग्निजनक, हृद्यको हितकारी, स्निग्ध, रुचिकारी, भारी, पाकमें अम्ल, गरम, वातनाशक, भगलकारक और पुष्टिकारक है ।

दधिभेदा ।

आदौमदततः स्वादुस्वाद्वलचतत परम् ।

अम्लचतुर्थमत्यम्लपचमदधिपञ्चधा ॥

अर्थ—प्रथम मन्द, फिर मधुर, फिर मधुरखट्टा, उसके उपरान्त खट्टा और फिर अत्यन्त खट्टा ऐसे दही पाचप्रकारका होता है ।

मन्दादीना लक्षणानि गुणाश्च ।

मन्ददुग्धवदव्यक्तरसकिञ्चिद्वनभवेत् । मन्दस्यात्सृष्टवि-
ण्मूत्रंदोषत्रयविदाहकृत् ॥ यत्सम्यग्धनतायातव्यक्तस्वा-
दुरसभवेत् । अव्यक्ताम्लरसतत्तुस्वादुविज्ञैरुदाहृतम् ॥
स्वादुस्यादत्यभिप्यन्दिबृष्यमेदकफावहम् ॥ वातघ्नमधु-
रपाकेरक्तपित्तप्रसादनम् ॥ स्वाद्वम्लसान्द्रमधुरकपाया-
नुरसभवेत् । स्वाद्वम्लस्यगुणाज्ञेयाः सामान्यदधिवज-
ने ॥ यत्तिरोहितमाधुर्यव्यक्ताम्लत्वंतदम्लकम् । अम्ल-
न्तुदीपनपथ्यग्निलेष्मविवर्द्धनम् ॥ तदत्यम्लदन्तरोमह-
र्षकण्ठादिदाहकृत् अत्यम्लदीपनग्नपित्तपुष्टिकरपर-
म् ॥ (भा० प्र०)

अर्थ—जो दूध कुष्ठक जमकर गाढ़ा पड़गयाहो और निमग मधुर अम्लादिक किसी प्रकारका स्वाद न माहूम हो उस दहीको मन्द कहते हैं ।

मंद दही-मादप्रको पम्पेवाग तथा विशेष और ग्राहको को है । जो तमक गादा दोगया हो और जियम स्वादुग मादम हो तथा अम्यम मगद न हो उसको ग्राद दही जानना । स्वादु दही अम्यन्त अभिष्यन्ती, रीत्यवट्टक, मंदुतनक, फलकारी, वातनाशक, पचनेमें मधुर और ग्राहि लको सुचित कोई । जो दधि अम्य और मधुर दोनों समुक्त हो माद तथा पुंछर कोछा हो उसको स्वादम्य दही कहते हैं । स्वादम्य दही कि दुग मामान्य दही की समान मानने । जिग दही की मधुना नाग होकर गहा होगया हो उस दही को अम्य दही कहते हैं, अम्य दही-रहित, ग्राहिम और फलकार है । जो दही अम्यन्त गहा हो, दुर्गन्धो गटे को, पिगके सागेमे रोमान होओ और कष्टान्तिमें ग्राहको उत्पन्न को उस दही को अम्यमदुधि कहते हैं । सम्यग्दही-रहित, रुचिगविकार, वात और विषको को है ।

मधुरभक्षयेज्येनान्यम्लवर्जयेत्सदा ।

ममुन्दधिगेगममत्यम्लगेगताग्यम् ॥

अर्थ-मधुर दधि गहना नादिमे और अम्यन्त गहा दही नहीं खाना चाहिये । ताग मंद है कि, मधुर दही गेगनाम्य और अम्यन्त गहा दही गेगताग है ।

मम्यदधिगुणः ।

दग्निगयमनिपवित्रातिमिगं च दीपनमलकृत् ।

मधुमगेव रुहाग्निग्राहि चवानामयमन्त्रः ॥ (ग० नि०)

अर्थ-गायका दही-अम्यन्त पवित्र, दीपन, क्षिप्त, दीपना, फलकार, मधुर, अम्य दही हवनगाना, मधुमवक और वातगेगनाम्य है ।

मम्यन्तः ।

गम्यद पुत्तमं मत्यपाफे म्वाधु रुनिप्रदम् ।

पनिवदीपनमिग्यधुष्टिहृत्पचनापहम् ॥

उक्तं दध्रामगेषाणां मध्यमं यगुणा विरम्य । (भावप्रकाश)

अर्थ-गायका दही-उत्तम, फलकार, पचनेमें स्वादिग रुचिकारक, दीपन, दीपन, क्षिप्त, रुचिग म्द और वातविनाशक है । सर्व रीतिमें मम्यन्त दही-मुक्तमे मय । अम्य है ।

नगेगं दीनमकामकृन्ते भान्नम्यगेगद्विपमम्येन ।

दुर्नामरोगग्रहणीगदेचगव्यप्रशस्तंदधिसर्वदैव ॥

अर्थ-गायका दही-अरुचि, पीनस, खासी, मूत्रकृच्छ्र, शीबज्वर विपम-ज्वर, बवासीर और सग्रहणीरोगम हितकारी है ।

माहिपदधिसुस्निग्धश्लेष्मलवातपित्तनुत् ।

स्वादुपाकमभिष्यन्दिवृष्यगुर्वसदूपणम् ॥

अर्थ-भैसका दही-स्निग्ध, कफकारक, वातपित्तनाशक, स्वादुपाकी, अभिष्यन्दि, वीर्यवर्द्धक, भारी और रुधिरको दूषित करेहै ।

अन्यच्च ।

घनमाहिपमुद्दिष्टमधुररक्तदोषकृत ।

कफशोफहरस्वस्थपित्तकृद्वातकोपनम् ॥ (हा०स०)

अर्थ-भैसका दही-गाढा, मधुर, रुधिरको दूषित करनेवाला, कफनाशक, स्वस्थ, पित्तकारक और वातको कुपित करेहै ।

अपिच ।

महिष्यास्तुदधिप्रोक्तंरक्तपित्तप्रसादनम् । वृष्यस्निग्धचमधुर
शोधनकफकारकम् ॥ गुर्वभिष्यंदिवल्यस्याच्छुक्लचप्रका-
र्त्तितम् । पित्तवातश्रमचेवनाशयेदितिकीर्त्तितम् ॥ (नि०र०)

अर्थ-भैसका दही-रक्तपित्तको कुपित करनेवाला, वीर्यवर्द्धक, स्निग्ध, मधुर, शोधन, कफकारक, भारी, अभिष्यन्दी, बलकारक, शुक्रजनक तथा पित्त, वात और श्रमको दूर करे है ।

आजदधिगुणाः ।

दध्याजकफपित्तनाशनकरपातघ्नमुष्णतथा दुर्नामश्वसनेचका-
सिनिहितचाग्रेष्वसदीपनम् । वृष्यवृहणकान्तिद्वलकरसर्वा-
मयध्वसन आमाराप्वतिसारकेनिगदितपथ्यसदाप्राणिनाम् ॥

अर्थ-उकरीका दही-कफपित्तनाशक, वातविनाशक, गरम, वीर्यवर्द्धक, पुष्टिकारक, कान्तिकारक, बलवर्द्धक, सर्वरोगनाशक, अग्निप्रदीपक तथा बवासीर, श्वास, खासी, जाम, अन्न और अतिसान्मोगको दूर करेहै और सदैव मनुष्योंको पश्य है ।

अन्यथा ।

आजदधिभवेचोष्णक्षयवातविनाशनम् । दुर्नामश्वासकासे-

पुद्गलमग्निप्रदीपनम् ॥ विपाकेमधुरवृष्यरक्तपित्तप्रमादन-
म । अन्नप्राभातिकं प्रोक्तवानपित्तनिर्हरणम् ॥ (अ० शा०)

अर्थ-चर्याका दर्श-गग्म, क्षय वातनाशक, पदार्थ, भात और
मौलीमें दितकारी, अग्निप्रदीपक, पालने में मधुर, वीर्यवर्द्धक, अ-
पित्तप्रमादा और प्राणकाठका चर्याका दर्श-भेद और वात-पित्त-
निवारक है ।

अथवा ।

दध्याजकफवानमेलपूष्णनेत्ररोपनिव ।

दुर्नामश्चामकामघ्नरुच्यदीपनपाचनम् ॥ (रा० नि०)

अर्थ-चर्याका दर्श-कफनाशक, हृत्का, नेत्रविनाशक चर्याका
रसो हृत्का, आमनाशक काफला, रुचिकारक, शीघ्र और पाचनक है ।

आमिहृदधिमुष्ण ।

कोपनकफवानानां दुर्नामा चामिहृदधिदीपनी यन्तुचक्षुष्यं पा-
ण्डुहृत्वापि वातुलम् ॥ रुक्षमुष्णरूपाय न्यादत्यभिष्यन्दिदोष-
लम् । अग्नेपाकेन मधुरं कषायं तु प्रवर्द्धनम् ॥ (अ० शा०)

अर्थ-भेदका दर्श कफ, वात और प्रसारीकरो पुद्गल चर्याका
रसो हृत्का दर्शन चर्याका नेत्रको दितकारी, पाण्डुमेकरो उत्पन्न
चर्याका, पानी, रुखा, मधुर, रुचिकारक, अन्न अग्निवर्द्धक, शीघ्र और
रस और पाचने मधुर, कषाय और रुचिकारक चर्याका है ।

अथवा ।

आमिहृदधिमुष्णिकफापित्तहृत्गुरु ।

प्रतिचरुक्तानि न पश्यन्तोपाणापदम् ॥ (रा० नि०)

अर्थ-भेदका दर्श-पित्त, चर्याका रस और वात और रुक्षमुष्ण
रस हृत्का मुष्ण और प्रसारीकरो हृत्का है ।

हृत्का रसो विमुष्ण ।

हस्तिनीदतिव्याप्यं पूष्णपित्तमुल्लभमनर्वात्रदम् ।

नीतिदगालुप्लानुगदमपीरुवर्द्धनं प्रदमुत्तम् ॥

अर्थ-हृत्का रसो हृत्का हृत्का रस चर्याका रस, रुचिकारक, शीघ्र
रस अग्निवर्द्धक चर्याका, रुचिकारक और पाचनक है ।

अन्यञ्च ।

हस्तिन्यादधिवीर्योष्णकपायकफवातनुत् ।

अर्थ—हथिनीका दही—उष्णवीर्य, कमेला और कफ तथा वातनाशक है ।

अश्वीदधिगुणा ।

अश्वीदधिस्यान्मधुरकपायकफार्तिमूर्च्छामयहारिरूक्षम् ।

वाताल्पददीपनकारिनेत्रदोषापहतत्कथितपृथिव्याम् ॥

अर्थ—घोड़ीका दही—मधुर, कसेला, कफकी वेदना और मूर्च्छारोगको दूर करनेवाला, रूखा, अल्पवातकारक, दीपन और नेत्रोंके विकारोंको हरनेवाला है ।

अन्यञ्च ।

वाजिजसमधुरवलवर्णस्वेददाहमुपयातिगुरुत्वम् ।

दीपनीयमतिदोषलसदाचाक्षुपदधिमरुत्प्रकोपिच ॥

अर्थ—घोड़ीका दही—मधुर, बलकारक, वर्णकारक, पसीनेको लानेवाला, दाहजनक, भारी, अग्निप्रदीपक, अत्यन्त दोषकारक, नेत्रोंको हितकारी और वातको कुपित करेहै ।

गर्दभीदधिगुणा ।

गर्दभीदधिरूक्षोष्णलघुदीपनपाचनम् ।

मधुराम्लरसरुच्यवातदोषविनाशनम् ॥ (रा०नि०)

अर्थ—गर्घीका दही—रूखा, गरम, हल्का, दीपन, पाचन, मधुर, अम्ल, रुचिकारी और वातके दोषोंको दूर करे है ।

उष्ट्रीदधिगुणा ।

वातार्शकुष्ठक्रिमिनाशनचऔष्ट्रविपाकेकटुतिक्तकच ।

सक्षारमम्लकृमिकोष्ठनाशनवलयञ्चसन्तर्पणमाशुकारि ॥

अर्थ—उष्ट्रीका दही—वादीकी बवासीर, कोढ़, कृमि और कोढ़के रोगको दूर करे है । पाकमें, कटु, तिक्त, क्षार, अम्ल, बलकारक और तत्काल वृत्तिकारक है ।

अन्यञ्च ।

विपाकेकटुसक्षारगुरुभेद्यौष्ट्रिकदधि ।

वातमर्शांसिकुष्ठानिकृमीन्हृत्युदरं परम् ॥ (हा०स०)

अर्थ-उर्वाका दर्श-यत्नेन कटु, तारक, भारी, भेदक तथा वात, मूत्र, कृमि और उदरोगों से है ।

मानुषीदधिगुणा ।

स्निग्धविपाकेमधुरयल्यसन्तर्पणहिनम् ।

चक्षुष्यग्राहिदोषघ्नदधिनाय्यागुणोत्तमम् ॥ (हा० न०)

अर्थ-शोका दर्श-स्निग्ध, पचनेमें मधुर, घातकारक, एतिजनक, रस्य नेत्रोंको दृष्टकारी, मन्त्रोपक, वातादिदोषनाशक और अधिक गुणवान् है ।

ग्राहिदधिगुणा ।

वार्षिकपित्तकृद्वातगमनरुफकोषनम् ।

गुल्मार्श-कुष्ठरोगेचरक्तपित्तेनगम्यते ॥

अर्थ-वर्षाकृत्वा दर्श-विषहाटक, वातनिवारक, घट्टरो दुर्बल वा नेत्राणा तथा गुन्म, वरामाग, कुष्ठ और रक्तपित्तोगमें द्रिक्कारी मन्त्र है ।

घातकीदधिगुणा ।

गारदधिगु-र्मलरक्तपित्तविपदंनम् ।

शोफवृण्णाज्वरात्तर्नांरुगेतिविषमज्वरम् ॥

अर्थ-शोफकृत्वा दर्श-भारी, तद्वा, रक्तविषादक, तथा मन्त्र, कृत्वा और ज्वरमें पीडित मनुष्योंके विषमज्वरों उत्पन्न करे ।

देनिककदधिगुणा ।

गुरुघिग्धंमुमधुग्वफकृद्वातवर्द्धनम् ।

गृप्यमेध्यनर्दमन्तपुष्टिदंतुष्टिद्विदम् ॥

अर्थ-देनिककृत्वा दर्श-भारी, शिथिल, मधुर, घातकारक, घट्टरुद्धक रोगनाशक, मेधाधारक, पुष्टिगमक और दुर्बलक है ।

शोफिकदधिगुणा ।

गृप्ययल्यसन्पित्तश्रमन्यापहरणम् ।

शैशिमयननाम्लपिच्छलगुणोपनम् ।

अर्थ-शैशिमकृत्वा दर्श-शैत्यरुद्धक, घातकारक, विषादक, घट्टरुद्धक, मन्त्र, तद्वा, शोफ और भारी है ।

वर्षाकृत्वाधुगुणा ।

गान्धेयधुग्विधिविद्वन्मन्त्रात्मकम् ।

वलकृद्धीर्यकृत्प्रोक्तवसन्तेनप्रशश्यते ॥

अर्थ—वसन्तऋतुका दही—वादी, मधुर, स्निग्ध, किंचित् खटा, कफकारी, वलकारक, वीर्यवर्द्धक, वसन्तऋतुमें दही श्रेष्ठ नहीं है ।

त्रैष्मिकदधिगुणा ।

लघुचाम्लभवेद्रीष्मेचात्युष्णरक्तपित्तकृत् ।

शोषभ्रमपिपासाकृदधिप्रोक्तनत्रैष्मिके ॥ (हारीतसं०)

अर्थ—ग्रीष्मऋतुका दही—हल्का, खटा, अत्यन्त गरम, रक्तपित्तकारक तथा शोष, भ्रम और प्यासको करनेवाला है इस ऋतुका दही उत्तम नहीं है ।

पक्वदुग्धभवदधिगुणा ।

पक्वदुग्धभवंरुच्यदधिस्लिग्धगुणोत्तमम् ।

पित्तानिलापहंसर्वधात्वग्निवलवर्द्धनम् ॥

अर्थ—औटायें हुवे दूधका दही—रुचिकारक, स्निग्ध, गुणोंमें श्रेष्ठ, पित्त-वातनाशक तथा सम्पूर्णधातु, अग्नि और बलको वढ़ावे है ।

नि सारदधिगुणा ।

असारदधिसग्राहिशीतलवातललघु ।

विष्टम्भिदीपनंरुच्यग्रहणीरोगनाशनम् ॥

अर्थ—जिस दहीका मक्खन निकाल लिया हो फिर उसको जमादिया हो ऐसा असार, दही—मलरोधक, शीतल, वातकारक, हल्का, विष्टम्भकारक, दीपन, रुचिकारी, और सग्रहणीरोगको दूर करे है ।

गालितदधिगुणा ।

गालितंदधिसुस्निग्धवातघ्नकफकृद्गुरु ।

वलपुष्टिकररुच्यमधुरनातिपित्तकृत् ॥ (भा०प्र०)

अर्थ—छानाहुआ और निचोड़ाहुआ दही—स्निग्ध, वातनाशक, कफकारक, भारी, बलकारक, पुष्टिजनक, रुचिकारक, मधुर और अत्यन्त पित्तका रक नहीं है ।

सितायुक्तदधिगुणा ।

सितायुक्तदधिप्रोक्तपित्तदाहतृपाहरम् ।

रक्तदोषहरंचैवमुनिभिः परिकीर्तितम् ॥

अर्थ-चीनीयुक्त दही-पित्त, दाह, तृषा और रुधिरके विकारों
दूर करे है ।

गुडयुक्तदधिगुणा ।

गुडयुक्तदधिप्रोक्तंतर्पणं धातुवर्द्धकम् ।

गुरुवातहरंचैव मुनिभिः परिकीर्तितम् । (नि० २०)

अर्थ-गुडामिश्रित दही-वृत्तिकारक, धातुवर्द्धक, भारी और वात
विनाशक है ।

दधिभक्षणनिषिद्धता ।

ननक्तदधिभुज्जीतनचाप्यवृत्तशर्करम् ।

गुल्म-नासुद्रसूपनाक्षौद्रं नोष्णमामलकैर्विना ॥ (सु० स०)

अर्थ-वर्षाकाल में दही नहीं खाना चाहिये तथा घृतरहित दही मिश्री
सुधु और आमलेके बिना तथा उष्ण दही नहीं खाना चाहिये ।

वासन्तेषु प्रायशो दधिगर्हितम् ।

शारददधिगुर्वम्लरक्तैर्वर्षासु दधि शस्यते ॥ (सु० स०)

शोफतृष्णाज्वरार्तानां कर्माणि प्राप्य अपकारी है और हेमन्त दिवस

अर्थ-शारदकाल में दही-भारी, खट्टा, रक्तपि
और ज्वरसे पीडित मनुष्योंके विषमज्वरको उत्पन्न करे ।

हेमन्तदधिगुणा ।

गुरुस्निग्धं सुमधुरकफकृडलवर्द्धनम् ।

वृष्यं मेध्यं च हेमन्तं पुष्टिदत्तुष्टिवृद्धिदम् ॥

अर्थ-हेमन्तकाल में दही-भारी, स्निग्ध, मधुर, कफकारक, यन्त्रदक,
वृष्य, मेधाकारक, पुष्टिदायक और सुष्टिवर्द्धक है ।

शेतिरमुनिः

श्रमना-

वलकृद्धीर्यकृत्प्रोक्तवसन्तेनप्रशभ्यते ॥

अर्थ-वसन्तऋतुका दही-बादी, मधुर, स्निग्ध, किंचित् खटा, कफनाशक, वलकारक, वीर्यवर्द्धक, वसन्तऋतुमें दही श्रेष्ठ नहीं है ।

श्रेष्ठमिवदधिगुणा ।

लघुचाम्लभवेद्वीष्मेचात्युष्णंरक्तपित्तकृत् ।

शोषभ्रमपिपासाकृदधिप्रोक्तनग्रेष्मिके ॥ (द्वाविंशतमं)

अर्थ-ग्रीष्मऋतुका दही-हल्का, खटा, अत्यन्त गरम, रक्तपित्तकारक तथा शोष, भ्रम और प्यासको करनेवाला है इस ऋतुका दही उत्तम नहीं है ।

पक्वदुग्धभवदधिगुणा ।

पक्वदुग्धभवंरुच्यंदधिमिश्रित्वगुणोत्तमम् ।

पित्तानिलापहसर्ववातप्रिवलवर्द्धनम् ॥

(क),
नन्दजनक
राला और शी-

अर्थ-अंदाये हुवे दूधका दही-रुचिका क, मिश्रित
पित्तनाशक तथा सम्पूर्णवात, अग्नि और वृद्धको लाध ।

निःकार्श्यायाम्मलदधिकूर्चिका ।

असारदधिसमाहिता ॥ (रा० १०)

असारदधिसमाहिता ॥ (रा० १०)

अर्थ-गरम दूधमें दूधसे लाधा भाग पानी मिलाके फिर उसमें खटा दही हो मिलावे उसको दधिकूर्चिका कहते हैं । दधिकूर्चिका वातनाशक, रूग्णी, रक्तमलरोधक और कठिनतासे पचनेवाली है ।

इति श्रीनागप्राम निघण्टुभूषणे दधिवर्गो नामाप्त ॥ १४ ॥

अथ तक्रवर्गः ।

तक्रदण्डाहतघोलगोरसकटुरद्रवः ।

मथितकटुरचाम्लमलिनभग्नसन्धिकम् ॥

अर्थ-तक्र, दण्डाहत, घोल, गोरस, कटुर, द्रव, मथित, कटुर, अम्ल,

बलकृद्दीर्घकृत्प्रोक्तवसन्तेनप्रशस्यते ॥

अर्थ—वसन्तऋतुका दही—वादी, मधुर, स्निग्ध, किंचित् खट्टा, कफकारी, बलकारक, वीर्यवर्द्धक, वसन्तऋतुमें दही श्रेष्ठ नहीं है ।

ग्रीष्मिकदधिगुणा ।

लघुचाम्लंभवेद्वीष्मेचात्युष्णरक्तपित्तकृत् ।

शोषभ्रमपिपासाकृद्दधिप्रोक्तनग्रीष्मिके ॥ (हारीतस०)

अर्थ—ग्रीष्मऋतुका दही—हलका, खट्टा, अत्यन्त गरम, रक्तपित्तकारक तथा शोष, भ्रम और प्यासको करनेवाला है इस ऋतुका दही उत्तम नहीं है ।

पक्वदुग्धभवदधिगुणा ।

पक्वदुग्धभवरुच्यदधिक्षिग्धगुणोत्तमम् ।

॥ रिक,

पित्तानिलापहसर्वधात्वग्निबलवर्द्धनम् ॥

नन्दजनक

अर्थ—औटायें हुये दूधका दही—रुचिकारक, स्निग्ध वातनाशक तथा सम्पूर्णधातु, अग्नि और बलको

निवारदधिगुणा ।

असारदधिसयादिशीतलघुम्लदधिकूर्चिका ।

चित्तिदीप्तान्तरुक्षादुर्जरादधिकूर्चिका ॥ (रा०व०)

अर्थ—गरम दूधमें दूधसे आधा भाग पानी मिला ले फिर उसमें खट्टा दही हो भलालेवे उसको दधिकूर्चिका कहते हैं । दधिकूर्चिका वातनाशक, रुग्णी, रक्मलरोधक और कठिनासे पचनेवाली है ।

इति श्रीशास्त्रिणाम निम्बदुग्धपत्रे दधिवर्ग समाप्त ॥ १४ ॥

अथ तक्रवर्गः ।

तक्रदण्डाहतघोलगोरसकटुरद्रव ।

मथितकटुरचाम्लमलिनभग्नसन्धिकम् ॥

अर्थ—तक्र, दण्डाहत, घोल, गोरस, कटुर, द्रव, मथित, कटुर,

मलिन, भग्नसन्धिक (गोरमज, कालशेष, विलोडित, अरिष्ट, उदभित्, प्रमथित, अम्बर, कटुर, घल, केवल, छच्छिका) ।

संस्कृतभाषामें तक्र ।

हिन्दीभाषामें छाउ मटा ।

वगभाषामें घोल ।

मराठीभाषामें ताक ।

गुजरातीभाषामें ठास, घोलवु ।

कर्णाटकीभाषामें मज्जिगे ।

तैलिङ्गीभाषामें चला ।

इंग्रेजीभाषामें १ बटरमिल्क २ हे । Butter Milk Wey

फारसीभाषामें मस्त, मठा ।

अरबीभाषामें हमीज ।

तक्रभेदा ।

तेषां नामानि भिन्नानि लक्षणानि समानि च । घोलन्तु मथितं-
तक्रमुदश्चिच्छच्छिकापि च ॥ ससारनिर्जलघोलं मथितत्त्वस-
रोदकम् । तक्रपादजलप्रोक्तमुदश्चित्त्वर्द्धवारिकम् ॥ छच्छि-
कासारहीना स्यात्स्वच्छा प्रचुरवारिका ॥

अर्थ-घोल, मथित, तक्र, उदभित् और छच्छिका इन भेदोंमें तक्र पाच प्रकारका है । जो तक्र मलाई सहित मया गया हो और पानी जिसमें न पड़ा हो उसको घोल कहते हैं और जिसमेंसे मलाई निकाल ली हो बिना पानी डाले मया गया हो, उसको मथित कहते हैं । जिसमें तीन भाग दही हो और एक भाग पानी गेरकर मया गया हो, उसको तक्र (मटा) कहते हैं । जिसमें आधा दही और आधा पानी पड़ा हो उसको उदभित् कहते हैं और जिसमें अर्धघुन्घ पानी पड़ा हो उसको सारहीन स्वच्छ छच्छिका (छाउ) कहते हैं ।

पठेषां गुणा ।

वातपित्तहरघोलमथितकफपित्तनुत । तक्रं ग्राहिकपायाम्ल
स्वादुपाकरसलघु ॥ वीर्योष्णदीपनवृष्यप्रीणनवातनाश-
नम् । मृदण्यादिमतापथ्यभवेत्सग्राहिलाघवात् ॥ किञ्चित्स्वा-

दुविपाकित्वात्रचपित्तप्रकोपनम् । अम्लोष्णदीपनवृष्यप्री-
णनवातनाशनम् ॥ कपायोष्णविकाशित्वाद्रौक्ष्याच्चापिक-
फापहम् । नतक्रसेवीव्यथतेकदाचित्रतक्रदग्धाः प्रभवन्तिरो-
गा ॥ यथासुराणाममृतसुखायतथानराणां भुवितक्रमाहुः ।
उदश्वित्कफकृद्बल्यश्रमघ्नपरममतम् ॥ छच्छिकाशीतला ।
लघ्वीपित्तश्रमतृपाहरी । वातनुत्कफनुत्सातुदीपनीलव-
णान्विता ॥ (भा० प्र०)

अर्थ—तहाँ—घोल—वातपित्तनाशक है । मथित—कफपित्तनाशक है ।
तक्र—मलरोधक, कसेला, खट्टा, पचनेमें स्वादु, रसमेंभी स्वादु, हलका,
उष्णवीर्य, अग्निप्रदीपक, वीर्यवर्द्धक, तृप्ति करनेवाला, वातनाशक और
समग्रहणी अतीसारादि रोगोंमें पथ्य है । तक्र हलका होनेसे ग्राही, स्वादु-
पाकी होनेसे पित्तको कुपित नहीं करता । अम्ल, उष्ण, दीपन, वृष्य,
प्रीणन, वातनाशक, कपाय, उष्ण, विकाशि, और रूक्ष होनेसे कफका नाश
करे है । तक्रका पान करनेवाला मनुष्य कभी रोगी नहीं होता, तक्रमें भस्म
किये हुवे रोग फिर कभी नहीं होते । जैसे स्वर्गलोकमें देवताओंको अमृत
है वैसेही मृत्युलोकमें प्राणिपोंको तक्र है । उदश्वित्—कफकारक, बलवर्द्धक
और श्रमनाशक है । छच्छिका (छाछ)—शीतल, हलकी, पित्तनाशक,
श्रमहारक, तृपानिवारक और लवणके साथ छाछ वातनाशक, कफहारक
और अग्निको दीपन करे है ।

अन्यत्र ।

घोलमारुतपित्तहारिमथितवातापहश्लेष्महृत्
पित्तश्लेष्मविनाशयुदश्विदधिकतक्रत्रिदोषापहम् ।
मन्दाग्नावरुचौतथैवनितरामन्येपुरोगेष्वपि
श्रेष्ठतक्रमिदवदन्तिमुनयस्तेनोत्तमप्राणिनाम् ॥

अर्थ—घोल—वातपित्तनाशक, मथित—वात और कफनाशक है । उद-
श्वित्—पित्त और कफनाशक है । और तक्र—त्रिदोषनाशक है, तथा मन्दाग्नि,
अरुचि और अन्यरोगोंमें भी हितकारी है ।

तक्रत्रिदोषशमनस्वादुपाकरसलघु ।

वीर्योष्णमूत्रकृच्छ्रग्रंथपायमम्लमग्निदम् ॥

अर्थ-तत्र-त्रिदोषनाशक, स्वादुपाकी, स्वादुरसान्वित, हल्का, उष्णरीत्य, मूत्रकृच्छ्ररोगनिवारक, कसेला, खट्टा और जठराग्निजनक है ।

अम्लेनवातमधुरेणपित्तकफकपायेणनिवृन्तिसद्यः ।

अर्थ-तत्र-अम्लपनसे वातका, मधुरपनसे पित्तका और कफलेपनसे कफका नाश करे है । इस प्रकार तत्र त्रिदोषनाशक है ।

भन्वद्य ।

तक्रस्वादुकपायमम्लकरसभक्ष्यलघूष्णंहित

गुल्मार्शःपरिणामशूलशमनछर्दिप्रसेकापहम् ।

तृष्णारोचकशोफमेदगरजिच्छेप्मानिलग्रंथ

सेव्यमूत्रगदापहज्वरहरस्नेहोत्थपीडापहम् ॥

अर्थ-तत्र-स्वादिष्ट, कसेला, खट्टा, भक्ष्ययोग्य, हल्का, गरम, हित-जनक तथा गुल्म, चत्रासीर, परिणामशूल, वमन, प्रसेक, तृषा, अरुचि, सूजन, मेद, विष, कफ, पात, मूत्ररोग, उग्र और स्नेहसे उत्पन्न दुर्गंधीलाको दूर करे है ।

भन्वद्य ।

आमातिसारेचविषचिकायावातज्वरेपाण्डुपुकामलायाम् ।

प्रमेहगुल्मोदरवातशूले नित्यपिवेत्तकमरोचकेच ॥

अर्थ-तत्र-आमातिसार, विषचिका, वातज्वर, पाण्डुरोग, कामला, प्रमेह, गुल्म, उदररोग, वातशूल और अरुचिमें सर्वत्र पीना चाहिये ।

तथाचत्रिविधतक्रकथ्यतेमृणुपुत्रक । यथायोगेनतत्सम्य-

कथ्यतेयेपुरोगिषु ॥ समुद्धृतपृततक्रमर्द्धोद्धृतपृतत्रयत् ।

अनुद्धृतपृतत्रान्यदित्येतत्रिविधमतम् ॥ पूर्वलघुचपथ्यच-

त्रिदोषशमनपरम् । तत परवृथ्यतरक्रमेणसमुदीरितम् ॥

अनुद्धृतपृतसान्द्रगुरुविद्यात्कफात्मकम् । चलप्रदन्तुक्षी-

णानामामशोफातिसारकृत् ॥ (हा०स०)

अर्थ-आग्नेयत्री करनेको कि, तत्र तीन प्रकारका है सो मैं कहता हूँ । हे पुत्र । सुन, यह वन तीन रोगोंमें दित्यारी है सो दित्यारी । मृत्तकी,

अल्पघृतयुक्त और घृतसयुक्त ऐसे तक्र तीन प्रकारका है । तहा, घृतहान अर्थात् जिस तक्रमसे घी निकाललियाहो ऐसा तक्र हल्का, पथ्य और त्रिदोषनाशक है । अल्पघृतसयुक्त अर्थात् जिसमेंसे थोडा घी निकाललियाहो ऐसा तक्र वीर्यवर्द्धक और घृतसयुक्त अर्थात् जिसमेंसे घी नहीं निकालाहो ऐसा तक्र-गाढा, भारी, कफकारक, क्षीणमनुष्योंको बल देनेवाला तथा आम, मूजन और अतिसारको दूर करे है ।

तत्पुनर्मधुरश्लेष्मप्रकोपनकरपरम् ।

वातघ्नपित्तशमनमम्लन्तुपित्तकृत्सदा ॥

अर्थ-मीठातक्र-कफकारक, वातनाशक और पित्तको शान्ति करे है । और खट्टा तक्र-सदैव पित्तकारक है ।

पृष्ठापृष्ठतक्रगुणाः ।

तक्रमामकफकोष्टेहन्तिकण्ठेकरोति च ।

पीनसश्वासकासेषुपक्वमेवप्रयुज्यते ॥ (अ०)

अर्थ-कच्चा तक्र-कोष्ठके कफको दूर करे और कण्ठमें कफको करे है । इसकारण पीनस, श्वास और खासीमें तो पकाही तक्र देना चाहिये ।

दोषविशेषे व्याधिविशेषे च तक्रविशेषाः ।

वातेऽम्लशस्यतेतक्रशुण्ठीसैन्धवसयुतम् ॥ पित्तेस्वादुसि-
तायुक्तसव्योपमधिकेकफे हिगुजीरयुतघोलसैन्धवेनसु-
सयुतम् । भवेदतीववातघ्नमर्शोतीसारहृत्परम् ॥ सुरुच्य
पुष्टिदवल्यवस्तिशूलविनाशनम् । मूत्रकृच्छ्रेतुसगुडपाण्डु-
रोगेसचित्रकम् ॥

अर्थ-वातरोगमें-सोंठ और सैन्धवलवणका चूर्ण मिलाकर खट्टातक्र पीना चाहिये । पित्तरोगमें दूरा मिलाकर मीठातक्र पीना । अधिक कफम त्रिकुटेका चूर्ण डालकर पीना चाहिये । घोल-हींग, जीरा और सैन्धवलव-
णयुक्त अत्यन्त वातनाशक है । तथा बवासीर और अतिसारको दूर करे है रुचिकारक पुष्टिजनक, बलकारक और वस्तिशूलको निर्मूल करे है । घोल-मूत्रकृच्छरोगमें गुडके साथ पीना चाहिये और पाण्डुरोगमें चीतेके साथ पीना चाहिये ।

तक्रसेधननिमित्तानि ।

शीतकालेऽग्निमान्द्येचतथावातामयेषु च । अरुचौस्रोतसां
रोधतक्रस्यादमृतोपमम् ॥ तत्तुहन्तिगरच्छर्दिप्रसेकविप-
मज्वरान् । पाण्डुमेदोग्रहण्यर्शोमूत्रग्रहभगन्दरान् ॥ मेहं
गुल्ममतीसारशूलप्लीहोदरारुची । श्वित्रकोष्ठगतव्याधी-
न्कुष्ठशोथतृपाकृमीन् ॥

अर्थ-शीतकाल, मन्दाग्नि, वातरोग, अरुचि और छिद्रोंके रोधमें तक्र
अमृतकी समान गुणकारक है । यह विप, वमन, प्रसेक, विपमज्वर, पाण्डुरोग,
मेदरोग, सग्रहणी, चवासीर, मूत्रकृच्छ्र, भगदर, प्रमेह, गुल्म, अतिसार,
शूलरोग, प्लीहा, उदररोग, अरुचि, श्वित्रकुष्ठ, कोष्ठरोग, कोद, सूजा, तृपा
और कृमिरोगको हरे है ।

अन्यथा ।

शीतकालेऽग्निमान्द्येचकफोत्पेज्वामयेषु च ।

मार्गावरोधेकुष्ठेचवायोतक्रप्रशस्यते ॥

अर्थ-शीतकाल, मन्दाग्नि, कफसे उत्पन्न हुये रोग, मार्ग चलनेकी थका-
वट, कुष्ठ और वातके रोगोंमें तक्र हितकारी है ।

रोगविशेषे तक्रनिषेध ।

नैवतक्रक्षतेदद्यान्नोष्णकालेनदुर्बले ।

नमृच्छाभ्रमदाहेषुनरोगेरक्तपित्तके ॥ (भा० प्र०)

अर्थ-क्षतरोग, उष्णकाल, दुर्बलता, मृच्छा, भ्रम, दाह और रक्तपित्त
रोगमें तक्र देना नहीं चाहिये ।

गन्धादीनां तक्राणां विशिष्टगुणा ।

यान्युक्तानिदधीन्यष्टौतद्वृणंतक्रमादिशेत् । (भा० प्र०)

अर्थ-परिले जो आठ प्रकारके दही करे हैं उनहीके समान उन द्रव्योंके
सत्त्वोंके गुण जानने ।

गोतप्रगुणा ।

गन्धं त्रिदोषशमनं पथ्ये श्रेष्ठं तदुच्यते ।

दीपनरुचिहृन्मेध्यमर्शोदरविकारजित् ॥

अर्थ—गायका तक्र अर्थात् मट्टा—त्रिदोषनिवारक, पथ्योंमें उत्तम, दीपन रुचिकारक, मेधाजनक, तथा बवासीर और उदरके विकारोंको दूर करे है ।

महिषीतक्रगुणा ।

माहिषकफकृत्किञ्चिद्वनशोफकरंनृणाम् ।

शस्तप्लीहाशोग्रहणीदोषेऽतीसारिणामपि ॥

अर्थ—भैसका तक्र—कफकारक, कुछ २ गाढा, मनुष्योंके सृजनको करनेवाला तथा प्लीहा, बवासीर, सग्रहणी और अतिसाररोगमें हितकारी है ।

छागीतक्रगुणा ।

छागललघुसस्त्रिगधत्रिदोषशमनपरम् ।

गुल्मार्शोग्रहणीशूलपाण्ड्यामयविनाशनम् ॥ (हा०स०)

अर्थ—बकरीका तक्र—हलका, स्त्रिगध, त्रिदोषनिवारक तथा गुल्म, बवासीर, सग्रहणी, शूल, और पाण्डुरोगको दूर करे है ।

आधिकतक्रगुणा ।

आवितक्रमपथ्यस्यादम्लदुर्गंधकारकम् ।

दीपनकटुकचोष्णलेखनलघुपित्तकृत् ॥

रक्तदोषकरचैवकफवातविनाशनम् ।

अर्थ—भेडका मट्टा—अपथ्य, खट्टा, दुर्गन्धकारी, दीपन, चरपरा, गरम, लेखन, हलका, पित्तकारक, रुधिरके विकारोंको करनेवाला और कफवात-विनाशक है ।

हस्तिनीतक्रगुणा ।

हस्तिन्यास्तुस्मृततक्रमग्निमांशकरगुरु ।

उष्णचतुर्वर्तेजोवर्द्धककफवातहम् ॥

अर्थ—हथिनीका तक्र—मन्दाग्निकारक, भारी, गरम, कसेला, तेजवर्द्धक और कफ वातनाशक है ।

अश्वीतक्रगुणा ।

अश्वीतक्रतुत्तुवरकिञ्चिद्वातकरंमतम् ।

अग्निदीप्तिकररूक्षनेऽयमृच्छाकफापहम् ॥

अर्थ—घोड़ीका तक्र—कसेला, किञ्चिद्वातकारक, अग्निप्रदीपक, रूखा, नेत्रोंको हितकारी तथा मृच्छा और कफका विनाश करे है ।

उष्टीतकगुणा ।

औष्टतकतुविरमगुरुद्वयंचदोषलम् ।

पीनसश्वासकासेपुशस्तमुक्तमनीषिभि ॥

अर्थ-उष्टनीका तक्र-त्रेस्वाङ्ग, भारी, हृदयको हितकारी, दोषजनक तथा पीनस, श्वास और गोंमीम हितकारी है ।

गर्दभोतकगुणा ।

गर्दभ्यास्तुस्मृतंतक्रमधुरदीपनमतम् ।

रूक्षमम्लकरचोष्णवातनाशकरपरम् ॥

अर्थ-गर्दभीका तक्र-मधुर, दीपन, रूखा, खट्टा, गरम और वातनाशक

स्त्रीतकगुणा ।

स्त्रीतकग्राहकचाम्लचक्षुप्यतर्पणगुरु ।

पाकेचमधुरं बल्यं त्रिदोषस्य च नाशकम् ॥ (रत्नाकर)

अर्थ-स्त्रीका तक्र-मलरोधक, खट्टा, नेत्रोंको हितकारी, रुसिकारक, भारी, पाकमें मधुर, घटकारक और त्रिदोषनाशक है ।

इति श्रीशालिग्रामनिष्पद्भूषणे नमः समाप्त ॥ १५ ॥

अथ नवनीतवर्गः ।

ब्रह्मणसरजसारनवनीतनवोद्धृतम् ॥

[अर्थ-ब्रह्मण सरज, गार, नवनीत, नवोद्धृत, (मन्यज, देवप्रसीन
[क], दधिसार, नवनी, वडम्बुद, दधिज ।)

| | |
|----------------|-------------------|
| संस्कृतभाषामें | नरनीत । |
| हिन्दीभाषामें | नरनी, नोनी, मखन । |
| बंगभाषामें | नरनी, मारान । |
| मराठीभाषामें | लोणी । |
| गुजरातीभाषामें | मारण । |
| पंजाबीभाषामें | पेन्गी । |
| तैलुङ्गभाषामें | पेसा । |

इथेजीभापामें

बटर । Butter

लैटिक्भापामें

बुटिगम् । Butyrum

फारसीभापामें

मसका ।

अरबीभापामें

जुवद ।

साधारणनवनीतगुणा ।

शीतवर्णबलावह सुमधुरवृष्यच सग्राहक वातघ्नकफका-
रकरुचिकरसर्वाङ्गशूलापहम् । कासघ्नश्रमनाशनसुखक-
रकान्तिप्रदं पुष्टिदं चक्षुष्यं नवनीतमुद्धतनव गोःसर्वदो-
पापहम् (रा०नि०)

अर्थ-नवीन (ताजी) नवनीत-शीतल, वर्णको सुदूर करनेवाला, बल-
कारक, मधुर, वीर्यवर्द्धक, मलरोधक, वातनाशक, कफकारक, रुचिका-
रक, शरीरके सर्व प्रकारके शूलोंको हरनेवाला, खोंसीको दूर करनेवाला,
श्रमनाशक, सुखकारक, कान्तिजनक, पुष्टिकारक, नेत्रोंको हितकारी और
सर्वदोषोंको दूर करे है ।

अन्यञ्च ।

शीतं बलाढ्यमधुराम्लवृष्यश्लेष्मावहपित्तमरुत्प्रणाशम् ।
शोफक्षयक्षीणकृशोतिवृद्धवालेपुपथ्यनवनीतमुक्तम् ॥
(द्रव्यगुणदीपिका)

अर्थ-नवनीत-माखन-शीतल, बलकारक, मधुर, खट्टा, वीर्यवर्द्धक,
श्लेष्मकारक, पित्तवातनाशक तथा शोफरोगी, क्षयरोगी, क्षीण, अत्यन्त
कृश, वृद्ध और बालकाको हितकारी है ।

अपिच ।

नवनीतनवग्राहिहृद्यंचोल्बणदीपकम् । क्षयारुच्यर्दितप्री-
हग्रहण्यशौविकारनुत ॥ चक्षुष्यशिशिरस्निग्धवृष्यजीवन-
वृंहणम् । क्षीणेद्रवहिमग्राहिरक्तपित्ताक्षिरोगनुत ॥ स्मृतिवा-
य्वग्निशुक्रांज कफमेदोविवर्द्धनम् । वातपित्तकफोन्मादशो-
फालक्ष्मीज्वरापहम् ॥ सर्वदोषापहशीतमधुरं रसपाकयोः । हा स

अर्थ-नवीन नौनी-ग्राही, हृद्यको हितकारी, अग्निको दीपन करनेवाला,

क्षयनाशक, अरुचिको हरनेवाला, लकुवा वायुको दूर करनेवाला, घ्राहका नाश करनेवाला, सग्रहणीको हरनेवाला, बवासीरको नष्ट करनेवाला, नेत्रोंको हितकारी, शीतल, स्निग्ध, वृष्य, प्राणरक्षक, पुष्टिकारक, क्षीणमनुष्यको हितकारी, शीतवीर्य, मलरोधक, रक्तपित्तनाशक, नेत्ररोगनिवारक, स्मरणशक्तिको बढानेवाला, वातवर्द्धक, वीर्यकारक, अग्निजनक, ओजवर्द्धक, कफकारक मेदजनक तथा वात, पित्त, कफ, उन्माद, सूजन, अलक्ष्मी, उदर और सर्वदोषनाशक है तथा पाक और रसमें मधुर है ।

गण्पाघनीतगुणा ।

नवनीतहितगव्यवृष्यवर्णवलाभिकृत् ।

सग्राहिवातपित्तासृक्क्षयाशोर्दितकासजित् ।

तद्धितबालकेवृद्धेविरोपादमृतशिशोः ॥

अर्थ-गायका माखन-हितकारी, वीर्यवर्द्धक, वणकारक, बलकारक, अग्निप्रदीपक, ग्राही, तथा वात, पित्त, रुधिरविकार, क्षय, बवासीर, एफवा और रोंसीको दूर करे है । बालक और वृद्धोंको हितकारी और विशेषकरके यह माग्यन बालकोंको अमृतके समान गुणकारक है ।

महिषानपनीतगुणा ।

माहिषनवनीतन्तुकपायमधुररसम् ।

शीतवृष्यप्रदवल्ग्रमाहिपित्तमनुन्दरम् ॥ (रा नि)

अर्थ-भैरवा माग्यन-कमेल, मधुररसान्वित, शीतल, वीर्यवर्द्धक, बलकारक, ग्राही, पित्तनाशक, और मुन्द (थोड़ा) को देता है ।

भग्यपा ।

नवनीतमहिष्यास्तुवातश्लेष्मकरगुरु ।

दाहपित्तश्रमहर्मेदःशुक्रविवर्द्धनम् ॥ (भा० प्र०)

अर्थ-भैरवा नीली-वातकफकारक, भारी, दाह, पित्त और श्रमनाशक, मेदजनक तथा शुक्रवर्द्धक है ।

गव्यनामाहिषनापिनवनीतनवोद्धतम् ।

शस्यतेनालवृद्धस्यलरुद्धातुवर्द्धनम् ॥

अर्थ-गाय भयवा भैरवा माग्यन-नीलीनी श्रेष्ठ होता है, बाल और वृद्धोंको हितकारी, वणकारक और धानुवर्द्धक है ।

छागोनवनीतगुणा ।

नवनीतमजायास्तुमधुरतुवरलघु । चक्षुष्यदीपनवल्ग्रहित-
कृत्क्षयकासनुत् ॥ गुल्मप्रमेहंशूलश्चकण्डूनेत्ररुजज्वरम् ।
पाण्डुचश्चित्रकुष्ठं च नाशयेदितिकीर्तितम् ॥ (नि० १०)

अर्थ-बकरीका नौनी-मधुर, कसेला, नेत्रोंको हितकारी, दीपन, बल-
कारक, हितकारक तथा क्षय, खाँसी, गुल्म, प्रमेह शूल, कण्डु, नेत्ररोग,
ज्वर, पाण्डुरोग और चित्रकुष्ठको नष्ट करे है ।

आयिकनवनीतगुणा ।

नवनीतस्मृतचाव्यापाकेशीतंसरलघु । योनिशूलकफेवाते-
शोफे चार्शसिचोदरे ॥ जठराग्नौ सदाशस्तंकृमिज्वरकरपर-
म् । कण्डूवांतिचारुचिचकरोतीतिबुधाजगुः ॥ (नि० २०)

अर्थ-भेडका माखन-पाकमें शीतल, कुठेक दस्तावर, हलका तथा
योनिशूल, कफ, वात, सूजन, बवासीर, उदररोग और जठराग्निमें श्रेष्ठ है ।
कृमिकारक, ज्वर जनक तथा कण्डु, बमन और अरुचिको उत्पन्न करे है ।

हस्तिनीनवनीतगुणा ।

हस्तिन्यानवनीततुवरदीपनंलघु ।

तिक्तमलस्तम्भकरकृमिपित्तरुफापहम् ॥ (नि २)

अर्थ-हथिनीका माखन-कसेला, दीपन, हलका, कड़वा, मलस्तम्भक,
तथा कृमि, पित्त और कफनाशक है ।

अश्वीनवनीतगुणा ।

अश्विन्यानवनीतन्तुवरकटुकमतम् ।

अचक्षुष्यस्मृतचोष्णकफवातविनाशनम् ॥ (नि० २०)

अर्थ-घोड़ीका माखन-कसेला, चरपरा, नेत्रोंको अहितकारी, गरम,
तथा कफ और वातविनाशक है ।

गर्दभानवनीतगुणा ।

गर्दभ्यानवनीतन्तुवल्ग्रचतुवरमतम् ।

उष्णचदीपनचैवकफं वातविनाशयेत् ॥

मूत्रदोषनाशयतीत्येवमाचार्यभाषितम् ॥ (नि० २०)

अर्थ-गधीका माखन-बल्कागक, कसेला, गरम, दीपन तथा का,
वात और मूत्रदोषनाशक है ।

उष्णवर्णीतगुणा ।

उष्णीजंनवनीतन्तुपाकेशीतलघुस्मृतम् ।

अग्निदीप्तिकरंचवन्नघ्नकृमिनाशनम् ॥ (नि० २०)

अर्थ-ऊँचीका मखन-पाकमें शीतल, हल्का, अग्निदीपक, घ्ननाशक
और कृमिनाशक है ।

स्निग्धवर्णीतगुणा ।

स्त्रीजन्यनवनीततुपाकेलघुरुचिप्रदम् ।

चक्षुष्यदीपनंचैवसर्वरोगान्विपहरेत् ॥ (नि० २०)

अर्थ-स्त्रीका नवनीत-पाकमें लघु, रुचिकागक, नेत्रोंको दितकारी,
अग्निप्रदीपक, सर्वप्रकारके रोग और विपनाशक है ।

दुग्धजन्यवर्णीतगुणा ।

दुग्धोत्थनवनीतन्तुचक्षुष्यरक्तपित्तनुत् ।

वृष्यउल्लयमतिस्निग्धमधुग्राहिणीतलम् ॥ (भा० ५०)

अर्थ-दूधमेंसे निकालाहुवा नौनी-नेत्रोंको दितकारी, रक्तापेघनाशक,
वीर्यवर्द्धक, घटकारक, अत्यन्त स्निग्ध, मधुर, मन्त्रोषक और शीतल है ।

नवीनवर्णीतगुणा ।

नवनीतमिदनवमेवहितहिमशुक्रबलानलकांतिकरम् ।

ग्रहणात्मकमर्दितपित्तमरुद्धजक्षतजक्षयकामहम् ॥

अर्थ-नवीन अर्थात् ताजा मागन-हितकारी, शीतल, शुक्रजनक,
घटकारक, अग्निप्रदीपक, कान्तिकारक तथा सप्तदशी, सडुवा, पित्त, वात,
गुल्मेग, क्षतमेग, क्षयमेग और रोगोंको दूर करे है ।

मार्षीरूपवर्णीतगुणा ।

सक्षारकट्टकाम्लत्वाच्छर्दर्यं कुष्ठकारकम् ॥

श्लेष्मलगुरुमेदम्यनवनीतनिस्तनम् ॥ (भा० ५०)

अर्थ-सुगन्ध नौनी-सारी, चर्षका, शर्करा, चमनकारक, यथाभीष्टो
उदरन करनेवाला, कुष्ठकारक, मृदुकारी, भारी और मेदरो करे है ।

इति शालिग्रामनिष्पद्भूषणे २४-अध्यायः समाप्तः ॥ १६ ॥

अथ घृतवर्गः ।



घृतमाज्यहवि सर्पिं पुरोडाश्नवनीतकम् ।

पवित्रवह्निभोग्यचतेजसचाभिधारकम् ॥

अर्थ-घृत, आज्य, हवि, सर्पिं, पुरोडाश्, नवनीतक पवित्र, वह्निभोग्य, तेजस, अभिधारक (आज, तोयद, पीय, अमृत, अडिगार, होम्य, आयु, नवनीतज, भोजनार्ह जीवन ।

संस्कृतभाषामें

घृत ।

हिन्दीभाषामें

घि, घृत, घी ।

बगभाषामें

घि, घृत ।

मराठीभाषामें

तूप ।

गुजरातीभाषामें

घी ।

तेलिङ्गीभाषामें

नेई ।

इंग्रेजीभाषामें

क्लेरीफाईड बटर । Clarified Butter

लैटिनभाषामें

बुटीरम्, डेप्युरेटम् । Butyrum Depuratum

फारसीभाषामें

रोघनेजर्द ।

अरबीभाषामें

समन्, दुहनुल्शकर ।

घृतगुणा ।

घृतन्तुसौम्यशीतवीर्यमृदुमधुरममृतमल्पाभिप्यन्दिस्नेह
नमुदावर्त्तान्मादापस्मारशूलज्वरानाहवातपित्तप्रशमनम-
ग्निदीपनस्मृतिमतिमेधाकान्तिस्वरलावण्यसौकुमार्योज-
स्तेजोबलकरमायुष्यवृष्यमेध्यवय स्थापनगुरुचक्षुष्यश्ले-
ष्माभिवर्द्धनपापालक्ष्मीप्रशमनविपहररक्षोघ्नश्च । (सुश्रुत)

अर्थ-घी-सौम्य, शीतवीर्य, कोमल, मधुर, अमृतकी समान गुणकारी,
अल्प अभिप्यन्दी, क्षिण्ण और उदावर्त्त, उन्माद, अपस्मार, शूल, ज्वर,
आनाह, वात तथा पित्तको दूर करनेवाला अग्निदीपक तथा स्मरणशक्ति,
मति, मेधा, कान्ति, स्वर, लावण्यता, सुकुमारता, ओज, तेज और बलको
करनेवाला है, आयुको बढ़ानेवाला, वीर्यको बढ़ानेवाला, मेध्य, अवस्थाको

स्थापन करनेवाला, भारी, नेत्रोंको हितकारी, कफकारी, पाप और अलक्ष्मीको शान्ति करनेवाला, विषविनाशक, और गक्षतबाधाको हरनेवाला है ।

अन्यथा ।

घृतशीतरसेपाकेमधुरजीवनमतम् । श्रेष्ठेषुचोत्तमंवृष्यका-
न्तिकृद्धातुवर्द्धकम् ॥ कंठ्यस्वय्यचेन्द्रियाणात्तृप्तिकृद्दे-
कंमतम् । व्रण्यवयस्थापकचभेदकचमृदुस्मृतम् ॥ चक्षुष्य-
कफकृत्प्रोक्तमग्निदीप्तिकरगुरु । बुद्धिमैधास्मृतिप्रजातैर्जो-
जोबलपुष्टिकृत् ॥ सौकुमार्यस्यमेदस्यलावण्यन्यचवर्द्धक-
म् । श्लेष्मकृद्बालवृद्धानांहितकृद्गुनिदमतम् । सिग्धरसाय-
नचैवशतक्षीणेहितमतम् ॥ विसर्पंचाम्निदग्धचशस्त्रक्षीणे-
हितमतम् ॥ अजीर्णोन्मादशूलानि क्षुदावर्तयत्यथा ।
आनाहरक्तपित्तचनातपित्तव्रणतथा ॥ रक्तदोषक्षतदाह
योनिनेत्रश्रुतीरुजम । दद्रुशिरोरुजशोथत्रिदोषचैवनाश
येत् ॥ निरामवातज्वरिणाहितंचामेविपोषमम् । (नि० २०)

अर्थ-धी-रसमें शीतल, पाकमें मधुर, प्राणरक्षक, श्रेष्ठमें उत्तम, वृष्य,
कान्तिकारक, घातुवर्द्धक, कण्ठको हितकारी, रसको शुद्ध करनेवाला,
इन्द्रियोंकी तृप्ति करनेवाला, भेदक, घावको भरनेवाला, अवयवस्थापक,
मृदु, नेत्रोंको हितकारी, कफकारक, अग्निमर्दीपक, भारी तथा बुद्धि, मैधा,
स्मरणशक्ति, प्रज्ञा, तेज, भोज, पात्र और पुष्टि करनेवाला तथा सुकुमारता,
मेद, लावण्यता और श्लेष्मको घटानेवाला है और यान् तथा गूढोंको
हितकारी, रुचिकारी, श्लिष्य, स्थापन, सक्षय, विगर्ष, अग्निदग्धव्रण, शम्भ-
शन और क्षीणतामें हितकारी है । तथा अजीर्ण, उन्माद, शूल, उदावर्ण,
पाप, आनादवात, रक्तपित्त, वातपित्त, व्रण, रुधिररिक्त, क्षत, दाह,
योनिरोग, नेत्ररोग, कर्णरोग, दाह, शिरोरोग, घात और त्रिदोषको दूर
करे है । तथा निराम वातज्वरान्ते मनुष्यको हितकारी और आमन्त्रण
विषयी गमान दोषकारी है ।

अन्यच्च ।

ओजस्तेजोभिवृद्धिजनयति सुखदकान्तिकृत्सम्यगुक्त पा-
पालक्ष्मीश्रमघ्न श्वसनकसनहाऽजीर्णजातज्वरघ्नम् । शूलो-
दावर्त्तरोगग्रहणिमदरुज नाशयत्याशुपीडा पित्तघ्नवातना-
शि स्वरकरमगदक्षुद्धमेचैवसेव्यम् ॥ चक्षुष्यवृष्यमायुःस्मृ-
तिधृतिकरणराजयक्ष्माविनाश रूक्षक्षीणेचपथ्य वलिपलि-
तहरसामदोषप्रकोपे । भूतोन्मादप्रमत्तेवहुतिभिरकरेकृच्छ्र-
पस्माररोगेसर्वेषांसर्वदैवप्रथितगुणगणसाधुपथ्यघृतंस्यात् ।

अर्थ-धी-ओज और तेजको बढ़ानेवाला, सुखको उत्पन्न करनेवाला,
कान्तिजनक, पाप, अलक्ष्मी, श्रम, श्वास, खाँसी, अजीर्णसे उत्पन्न हुवा
ज्वर, शूल, उदावर्त्तरोग, सग्रहणी और मदरोगका नाश करे है, पीडानाशक
पित्तनिवारक, वातविनाशक, स्वरको सुदर करनेवाला, तथा क्षुधा और भ्रम
रोगमें सेवन करना चाहिये । नेत्रोंको हितकारी, वीर्यको बढ़ानेवाला तथा
आयु, स्मरणशक्ति और धारणाशक्तिको करनेवाला है । राजयक्ष्मा रोगका
नाशकरनेवाला, रूक्ष और क्षीणमनुष्यको हितकारी, बलीपलितविनाशक
तथा आमदोष, भूतोन्माद, प्रमत्त, बहुतिभिर, मूत्रकृच्छ्र और अपस्मार
रोगमें सब मनुष्योंको सर्वकालम पथ्यहै ।

गव्यघृतगुणाः ।

धीकान्तिस्मृतिदायकबलकरमेधाप्रदपुष्टिकृडातश्चेष्मह-
रश्रमोपशमनपित्तापहृद्द्विजितम् । वह्नेर्वृद्धिकरविपाकमधु-
रवृष्य वपुःस्थैर्य्यद गव्यंहव्यतमघृतवहुगुण भोग्यभ-
वेद्राग्यतः ॥ (रा०नि०)

अर्थ-गायका धी बुद्धि, कान्ति और स्मरणशक्तिदायक, बलकारक,
मेधाजनक, पुष्टिकायक, वातश्चेष्महारक, श्रमनिवारक, पित्तनाशक, हृदयको
हितकारी, अग्निप्रदीपक, पचनेमें मधुर, वीर्य्यवर्द्धक, शरीरको स्थिरतादायक,
हव्यतम, बहुगुणयुक्त और यह भाग्यमेही प्राप्तहोता है ।

अथ ।

सर्पिर्गवांचाप्यमृतविषघ्नचाक्षुष्यमारोग्यकरचवृष्यम् ।

रसायनचेदमतीवमेध्यस्नेहोत्तमागांविपुधाःस्तुवन्ति ॥

अर्थ-गायका घी-अमृतकी समान गुणकारी, विषविनाशक, नेत्रोंको आरोग्य करनेवाला, बौर्यवर्द्धक, रसायन, मेघाननर और सर्व स्नेहाम उत्तम है ।

माहिषघृतगुणा ।

सर्पिर्माहिषमुत्तमधृतिकरसोऽख्यप्रदकान्तिरुद्धातल्लेष्मनि-
चर्हणवलकरवर्णप्रदानेशमम् । दुर्नामग्रहणीविकारशम-
नमन्दानलोदीपन चक्षुष्यनवगव्यतःपरमिददृद्यमनोहा-
रिच ॥ (१०२९)

अर्थ-भैंसका घी-उत्तम, धृतिकारक, गुणकारक, कान्तिजनक, वातारे-
ष्मनिवाग्क, यलकाग्क, वर्णप्रदायक, चपातीर और समझणीको दूरेशान्त,
मन्दाग्रिको दीपन करनेवाला, नेत्रोंको हितकारी नरानगायके घीमे परम
रूपरो हितकारी और मनोहारी है ।

भयघ्न ।

माहिषघृतंस्वादुपित्तक्तानिलापहम् ।

शीतल्लेष्मलघृप्यगुरुस्वादुविपच्यते ॥

अर्थ-भैंसका घी-स्वादु, रक्तपित्तनाशक, वातविनाशक, शीतल,
कफचाग्क, बौर्यवर्द्धक, भारी और स्वादुपाकी है ।

रागीघृतगुणा ।

आजमाज्यकरोत्यग्निचक्षुष्यवलवर्द्धनम् ।

श्वासकासेभयेचापिहितपाकेभवेत्कटु ॥

कफाशोगजयदमाणानाशनंपरिकीर्तितम् ।

अर्थ-यज्ञिका घी-अग्निजनक, नेत्रोंको हितकारी, बौर्यवर्द्धक, श्वास,
शोमी और क्षय रोगमें हितकारी, पाचमें कटु तथा कफ और शतपन्मा
रोगको दूर करे है ।

मेघीघृतगुणा ।

पाकेलघ्वाभिरुसर्पि सर्वनेगनिपापदम् ।

हृदिकनेतिचाम्ब्रनिनाभमरीशार्त्तपदम् ॥ (१०३०)

अर्थ-भेडका घी-पाकम लघु, सर्वरोगविनाशक, विषनाशक, हृदियोंको चढ़ानेवाला, तथा पथरी और शर्कराको दूर करे है ।

अन्यथा ।

पाकेलघ्वाविकसर्पिर्नवंपित्तप्रकोपनम् ।

योनिदोषेकफेवातेशोफेकम्पेचतद्वितम् ॥ (रा० नि०)

अर्थ-भेडका घी-लघुपाकी, पित्तप्रकोपक, तथा योनिदोष, कफ, वात, सूजन और कम्पमें हितकारी है ।

हस्तिनीघृतगुणा ।

हस्तिन्यास्तुघृततित्तलघुवैतुवरमतम् ।

अग्निदीप्तिकरप्रोक्तकुष्ठक्रिमिविनाशनम् ॥

मलमूत्रस्तम्भकरंकफपित्तविनाशनम् ।

विपरक्तविकारंचनाशयेदिति कीर्तितम् ॥ (नि० २०)

अर्थ-हथिनीका घी-कडवा, हलका, कपेला, अग्निप्रदीपक, कुष्ठ और कृमिविनाशक, मलमूत्रस्तम्भक, कफ पित्तनाशक, विष और रुधिरके विकारोंको हरे है ।

भस्वाघृतगुणा ।

वृद्धिकरोतिदेहाग्नेर्लघुपाकेविपापहम् ।

तर्पणनेत्ररोगघ्नदाहनुद्भवाघृतम् ॥

अर्थ-घोड़ीका घी-देह और अग्निको बढ़ानेवाला, लघुपाकी, विषविनाशक, वृत्तिकारक, नेत्ररोगनिवारक और दाहहारक है ।

अन्यथा ।

अश्वीघृततुमधुरकिञ्चिच्चाग्निप्रदीपकम् ।

तुवरकटुकचैवमलमूत्रावरोधकम् ॥

किञ्चिच्चातलचोष्णंपाककालेलघुस्मृतम् ।

गुरुचकफमूर्च्छानां नाशनं परममतम् ।

अर्थ-घोड़ीका घी-मधुर, किञ्चित् अग्निप्रदीपक, कपेला, चम्परा, मलमूत्ररोधक, किञ्चित् वातकारक, गरम, लघुपाकी, भारी तथा वक्त और मूर्च्छाको हरनेवाला है ।

गर्दभापृतगुणा ।

गर्दभ्यास्तुपृतवल्यंबुद्धिदंवात्मकमतम् ।

अग्निदीप्तिकरंचोष्णवीर्यपाकेलघुस्मृतम् ॥

कपायग्लानिदं प्रोक्तमूत्रदोषकफापहम् ॥

अर्थ-गर्दभा का घी-बलकारक, बुद्धिदायक, वमनकारक, अग्निमदीपक, उष्णवीर्य, लघुपाकी कपेला, ग्लानिको देनेवाला तथा मूत्रविकार और कफनाशक है ।

मधुरपशुपृतगुणा ।

मधुररक्तपित्तघ्नलघुपाकेचदीपनम् ।

सर्वमेकशफसर्पि कपायकफनाशनम् ॥

अर्थ-एक खुरगवाले सर्वपशुभोंका घी-मधुर, रक्तपित्तनाशक, लघुपाकी दीपन, कपेला और कफनाशक है ।

उर्ध्वपृतगुणा ।

औष्ठपृतचाग्निदीप्तिकारकचपटुस्मृतम् । पाककालेचकटु-
कविपार्श्वकृमिनाशनम् ॥ शोथवातकफचैव कोष्ठशीर्षितयो-
दरमाकुष्ठगुल्मोन्मादमोहमूच्छापस्मारजृतिहम् ॥ (नि० २०)

अर्थ-उर्ध्वका घी-अग्निमदीपक, जमरीन, पचनेमें चरपरा, विषवि नाशक, चर्वागीरको दग्नेवाला, कृमिनाशक तथा सुजन, वात, कफ, कोष्ठ शीर्ष, उदरगोच, गुष्ठ, गुल्म, उन्माद, मोह, मूछा, अपस्मार और ज्वरको दूर करे है ।

सोपृतगुणा ।

कफेऽनिलेयोनिदोषे गेप्यन्येषु तद्वितम् ।

चक्षुष्यमाहु स्त्रीणां च मर्षि स्यादमृतोपमम् ॥ (हा० नि०)

अर्थ-सीका घी-कफ, वात, योनिदोष और अन्य रोगोंमें दितकारी है । नेत्रोंमें दितकारी और अमृतरी समान गुणकारी है ।

अग्न्यपा ।

स्त्रीपृतनृचिदनेत्र्यपाकेलघ्वग्निदीपनम् ।

वातपित्तकफमेहनिषचैव विनाशयति ॥ (नि० २०)

अर्थ-स्त्रीका घी-रुचिकारक, नेत्रोंको हितकारी, लघुपाकी, अग्निप्रदी-
पक तथा वात, पित्त, कफ, प्रमेह और विषविनाशक है ।

उष्ट्रीणां चापिनारीणां गर्दभीनां पयांसि च ।

घृते काय्ये पुयोज्यानि घृतये पां न विद्यते ॥

अर्थ-जहा-ऊटनी, स्त्री और गधीका घृत न मिलताहो तहा उनका
दूधही प्रयोगमें लेना चाहिये ।

हैयगवीनघृतगुणा ।

हैयगवीनचक्षुष्यरुच्यं चाग्निप्रदीपकम् ।

बल्यवृष्यधातुकरविशेषाज्वरनाशकम् ॥

अर्थ-हैयगवीन-नेत्रोंको हितकारी, रुचिकारी, अग्निप्रदीपक, बलकारक,
वीर्यवर्द्धक, धातुकारक और विशेषकरके ज्वरनाशक है ।

बुधोद्भवघृतगुणा ।

घृतन्दुग्धभवग्राहिशीतलनेत्ररोगनुत् ।

निहन्ति पित्तदाहास्रमदमूर्च्छाभ्रमानिलान् ॥

अर्थ-दूधमेंसे निकाला हुआ घी-मलरोधक, शीतल, नेत्ररोगनाशक तथा
पित्त, दाह, रुधिरविकार, मद, मूर्च्छा, भ्रम और वायुको दूर करे है ।

शतधीतघृतगुणा ।

शतधीतघृतप्रोक्तदाहमोहज्वरापहम् ।

अर्थ-सीबार घुला हुआ घी-दाह, मोह और ज्वरनाशक है ।

नूतनघृतगुणा ।

नूतनतुघृततृप्तिकारकदुर्वलेहितम् ।

भोजने स्वादुदप्रोक्तनेत्रपाण्डुरुजापहम् ॥

अर्थ-नवीन घी-तृप्तिकारक, दुर्वल मनुष्यको हितकारी, भोजनमें स्वाद-
दायक, नेत्रोंको हितकारी, और पाण्डुरोगनाशक है ।

पुराणघृतम् ।

सर्पिः पुराणतिमिरप्रतिश्यायामकासजित् । मूर्च्छाकुष्ठविपो-
न्मादग्रहापस्मारनाशनम् ॥ उग्रगन्धं पुराणस्याद्दशवर्षस्थि-
तघृतम् । लाक्षारसनिभशोतप्रपुराणमत परम् ॥ यथाय-
थाभवेज्जीर्णगुणवत्स्यात्तथापरम् । (रा० व०)

अर्थ-पुराना घी-तिमिररोग, प्रतिश्याय, जाम और सौंतीको दूर करे
तथा मूर्च्छा, कुष्ठ, विष, उन्माद, ग्रहकी पीडा, और भृंगीरोगनाशक है ।
दश वर्षका रखा हुआ और उग्र गन्धवाला तथा लारके रगकी समान लाल
रगका ऐसेही घीको पुराना घृत कहते हैं । दश वर्षसे अधिक रखे हुए
घीको प्रशुगना घृत कहते हैं । घी जितना २ अधिक पुराना होता है उतना २
ही अधिक गुणवान् जानना ।

मत्ता-तर ।

वर्षादूर्ध्वभवेदाज्यपुराणतत्रिदोपनुत् । मूर्च्छाकुष्ठविषोन्मा-
दापस्मारतिमिरापहम् ॥ यथायथाऽखिलसपि पुराणमधि-
कभवेत् । तथातथागुणे स्वे-स्वेरधिकतदुदाहृतम् ॥ (भा ५)

अर्थ-भार्वगश्चने एक वर्ष भीत जानेपर घीको पुराना कहाँ है । वह पुराना
घी-त्रिदोषनाशक, तथा मूर्च्छा, कुष्ठ, विष, उन्माद, अपस्मार और तिमिर-
रोगनाशक है । घी जितने २ अधिक पुराने होते जाते हैं वेसे २ ही जो
जो गुण जित २ घीमें होते हैं उन २ गुणाको अधिक करते हैं ।

नृननप्रतयिषया ।

योजयेन्नवमं वाज्यं भोजने तर्पणे श्रमे ।

बलक्षये पाण्डुरोगे कामलानेत्ररोगयो ॥

अर्थ-भोजन, तर्पण, श्रम, पन्थाय, पाण्डुरोग, कामला और नेत्ररोगम
नवीनही घृत देना चाहिये ।

ज्वरे विग्रन्धे च विप्रचिकायामरोचने वा शमिते तथाग्नी । पानात्य-
येनापि मदात्ययेनाशस्तनसर्पिर्वहुमन्यते सुधीः ॥ (हा० सं०)

अर्थ-ज्वर, विग्रन्ध, विप्रचिका, अंगारक, मदाग्नि, पानात्यय और
मदात्ययभोगमें बहुत घी नहीं देना चाहिये ।

भाष्य ।

शतवर्षमहस्रवास्थितकाम्भमिति स्मृतम् ।

एकादशशताय च महाघृतमिति स्मृतम् ॥

अर्थ-श्री वर्षके पुराने अथवा एक महस्र वर्षके पुराने घृतको काम्भ
कहते हैं और दशके उपगन्तके घृतको महाघृत कहते हैं ।

इति शालियामनिघण्टुप्रणणे प्रथमः ॥ १० ॥

अथ मूत्रवर्गः ।

स्रवणमेहनमूत्रप्रस्रावप्रस्रवतथा ।

अर्थ-स्रवण, मेहन, मूत्र, प्रस्राव, प्रस्रव (गुह्यानिष्यन्द, स्रव) ।

सस्कृतभाषामें मूत्र ।

हिन्दीभाषामें मूत, पेशाब ।

वगभाषामें - मुत, चोना, प्रस्राव ।

मराठीभाषामें मूत, मूत्र ।

गुजरातीभाषामें - मुतर ।

कर्णाटकीभाषामें मूत्र, आकलगोत ।

तैलङ्गीभाषामें उच्चा ।

इंग्रेजीभाषामें युरीन ।

लैटिनभाषामें युरिना ।

मूत्रगोजाविमाहिष्यगजाश्वोष्ट्रखरोद्भवम् ।

मूत्रमानुपजञ्चान्यत्समासेनगुणाञ्जृणु ॥

अर्थ-आत्रेयजी कहने लगे कि-गाय, चकरी भेड, भेस, हाथी, घोडा, ऊट और मनुष्य इनके मूत्रके गुण सक्षेपसे कहताहूँ, तू सुन ।

गोमूत्रगुणा ।

तीक्ष्णचोष्णक्षारमेवकपायगौल्यमेध्यश्लेष्मवातनिहन्ति ।

भेद्यारक्तपित्तशांतिकरोतिगुल्मानाहोन्माददोषापहच ॥

कण्डूकिलासमलशूलमुखाक्षिरोगान् गुल्मामवातगुदमारु-

तमूत्ररोधान् । कासंसकुष्ठजठरकृमिकोपजालं गोमूत्रमेक-

मपिपीतमहोनिहन्ति ॥

अर्थ-गोमूत्र-गायका पेशाब-तीक्ष्ण, गरम, खारी, कपेला, गौल्य, मेघाजनक, कफवातनाशक, भेदक, रक्तपित्तको शान्त करनेवाला, तथा गुल्म, आनाह और उन्माददोषनाशक है । तथा किलास, मल, शूल, मुखरोग, नेत्ररोग, गुल्म, आमवात, गुदरोग, मूत्ररोध, खोंसी, कोद, उदररोग, और कृमिके समूहको नाशकरे है ।

अपक्ष ।

गवामृत्रकपायस्यात्कटुतिक्तलघुस्मृतम् । क्षारचोष्णचती-
क्ष्णचपाचनंचाग्निदीपनम् ॥ भेदकपित्तलमेध्यकिञ्चिच्चम-
धुरसरम् । लेखनबुद्धिदप्रोक्तकफवातविनाशनम् ॥ कुष्ठ
गुल्मचोदरञ्चपाण्डुरोगकिलासकम् । शूलचार्श्वकण्डूच-
श्वासंचामंज्वरतथा ॥ आनाहवातकासंचमलस्तम्भश्शो-
थकम् । मुखश्लिरोगत्वग्रोगकामिन्याश्चातिसारकम् ॥
मूत्ररोधनाशयतिह्येतच्चैवगुणाधिकम् । (२० नि०)

अर्थ-गामरा मूत्र-कपेला, चरपरा, कटुता, हृत्ता, गारी, गरम,
तीक्ष्ण, पाचन, अग्निप्रदीपक, भेदक, पिच्छमारक, मेघाज्वा, शिथिल
मधुर, सारक, लेखन, बुद्धिदायक तथा कफ वात, कोष्ठ, गुल्म, उदररोग,
पाण्डुरोग, किल्बास, शूल, घरागीर गुजनी, श्वास, आम, ज्वर, आनाहवात
त्वारी, मलस्तम्भ, मूत्रन, मुखरोग, नेत्ररोग, त्वग्रोग रोग, शिपारा अति
मार और मूत्ररोधको दूर करे । यह गुणोंमें अधिक है ।

शालिग्रामगुणा ।

आजमृत्रतीक्ष्णमुष्णकपाययोज्यपानेशूलगुल्मार्तिनाशम् ।
कासेश्वासकामलापाण्डुरोगेद्यशोरोगेश्चेष्टमेतद्वदन्ति(हा.स.)

अर्थ-यस्त्रीका मूत्र-तीक्ष्ण, गरम, कपेला, तथा शूल, गुल्म, रोगी,
श्वास, कामला, पाण्डुरोग, और घरागीरको दग्नेसालाह ।

शालिग्रामगुणा ।

सक्षारकटुकतीक्ष्णमृत्रवातघ्नमाविरुम् ।

दुर्नामोदरशूलघ्नकुष्ठमेहविशोधनम् ॥

अर्थ-भेदका मूत्र-क्षारयुक्त, चरपरा, तीक्ष्ण, वातनाशक तथा घरागीर,
उदररोग, शूल, कुष्ठ और ममेरको दूरकरे ।

शालिग्रामगुणा ।

क्षारसतितकटुककपायप्रभेदिवातस्यशमकृतेति ।

पित्तप्रकोपबुक्तेमदानकुष्ठार्शपाण्डूदरशूलनाशनम् ॥

अर्थ-भगवा मूत्र-गारी, कटुता, गरम, कपेला, भेदक, वातना

शान्तिकरनेवाला, पित्तको सदैव कुपित करनेवाला, तथा कुष्ठ, ववासीर, पाण्डुरोग, उदररोग और शूलनाशक है ।

गजमूत्रगुणा ।

सतिक्तलवणंभेदिवातघ्नकफकोपनम् ।

क्षारमण्डलकुष्ठानानाशनगजमूत्रकम् ॥

अर्थ—हाथीका मूत्र—कड़वा, नमकीन, वातनाशक, कफको कुपितकरने-वाला, खारी और मण्डलकुष्ठको नष्टकरे है ।

अग्नीमूत्रगुणा ।

छर्दिकासकफहरंकृमिकुष्ठविनाशनम् ।

दीपनकटुतीक्ष्णोष्णवातश्लेष्मविकारनुत् ॥ (हा०स०)

अर्थ—बोड़ीका मूत्र—वमन, खँसी, कफ, कृमि, कोढ़, वात और कफनाशक है, दीपन, चरपरा, तीक्ष्ण और गरम है ॥

गदंभीमूत्रगुणा ।

खरमूत्रकटूष्णचक्षारतीक्ष्णकफापहम् ।

महावातापहभूतकम्पोन्मादहरपरम् ॥ (रा०नि०)

अर्थ—गयीकामूत्र—चरपरा, गरम, खारी, तीक्ष्ण, कफनाशक तथा महा-वात, भूत, कम्प और उन्मादको दूर करे है ।

भीष्टमूत्रगुणा ।

औष्टकफहररूक्षकृमिदद्रुविनाशनम् ।

श्रेष्ठकुष्ठोदरोन्मादशोपार्श्वकृमिवातनुत् ॥

अर्थ—ऊटनीका मूत्र—कफनाशक, रूखा, कृमि और दद्रुनिवारक है, श्रेष्ठ तथा कुष्ठ, उन्माद, शोष, ववासीर, कृमि और वातनाशक है ।

मानुषमूत्रगुणा ।

मानुषक्षारकटुकमधुरलघुचोच्यते । चक्षुरोगहरवत्यदीप-
नकफनाशनम् ॥ असूतायाचनमूत्रप्रसूतायाद्रवलघु । न-
किं गुणविशेषः स्यात्समतापाकवीर्ययोः ॥

अर्थ—खीका मूत्र—खारी, चरपरा, मधुर हल्का, नेत्ररोगनाशक, चक्षुर-रक, दीपन और कफनाशक है । अप्रसूतायाका मूत्र गाढ़ा, हंताहं, प्रसूता खीका मूत्र—पतला, हल्का और अप्रसूताके, मूत्रमे कुछ विशेष गुणवाला नहीं है और पाक तथा वीर्यमे भी समानही है ।

गोजाविमहिषाणातुस्त्रीणामृत्रप्रशस्यते ।

खरोष्ट्रेभनराश्वानांपुसामृत्रहितमतम् ॥

अर्थ-गौ, बकरी, भेड़, भैंस इन्हींमें श्रियोंका मूत्र, उत्तम होता है और गधा, उष्ट्र, हाथी, मनुष्य इन्हींमें पुरुषका मूत्र उत्तम होता है ।

मूत्रविशेषगुणा ।

सौरभेयकमृत्रन्तुवनसान्द्रप्रशस्यते । तच्चवृषणहीनाना-
किञ्चिद्व्युत्तरस्मृतम् ॥ वृषमृत्रञ्चशोफघ्नं कृमिदोषविना-
शनम् । कामलाग्रहणीपाण्डुनाशनञ्चाग्निदीपनम् ॥ अर्जा-
गविगतमृत्रपानेशस्तभिषग्वर । आविक्रमादिपक्षाश्वत्ते-
लपाकेविधीयते ॥ गजमृत्रप्रलेपश्चकण्डूद्वद्रुविमर्पणम् ।
काग्भगरमृत्रमातेलेनस्यविधायकम् । औष्ट्रगोजाविनाञ्च
गजद्वयमहिषीमृत्रवर्गसरोत्थ तित्कतीक्ष्णलघृष्णमलव-
णमुगसपित्तलभेदिरक्षम् ॥ हृद्यंरुच्यकृमिघ्नहुतवदजन-
नकुष्ठमेदोविनाश गुल्मानाहार्गशूलानिलकफविपजि-
च्छोफपाण्डुदग्धम् ॥ सपेप्सपिचमृत्रेषुगोमृत्रगुणतोधिक-
म् । अतोविशेषात्कथनेमृत्रगोमृत्रमुच्यते । प्रीतिदग्ध्यास-
कामशोथवर्जोऽग्रहापहम् । शूलगुल्मरुजानाहकामलापा-
ण्डुगोहृत ॥ मानुषविपजिन्मृत्रंविषय्यामहरचतन । न-
स्यंचौष्ट्रपानेतुगर्वाचाव्या प्रशस्तकम् ॥ तैलयोगेगर्दभ-
स्यवन्त्यश्वमहिपन्नथा । दद्रुकण्डूविमर्षणालेपनेऽस्ति-
मूत्रकम् ॥

अर्थ-वृषका मूत्र-गाढा, गान्धर्वा और श्रेष्ठ होता है और बकरी का मूत्रहीन
अथवा अधिपाका मूत्र-कुष्ठेय दग्धता होता है । पैलका मूत्र-मूत्रवरो, मूत्र
पानेशना, कृमिघ्ननाशक तथा कामला, गण्डरोग इन्हीं का हार देता है और
अग्निवर्धक है । बकरीका मूत्र और गजका मूत्र पानेय उत्तम है, और
मूत्र, भैंसेका मूत्र और घोड़ेका मूत्र लेनपाकमें द्रव्यार्थ है । हाथीके मूत्रका

लेप कण्टू, दद्रु और विमर्षरोगनाशक है । उटका मृत और गधेका मृत-तेलमें और नस्पम उत्तम है, उट, गाय, बकरी, भेड़, हाथी, घोडा भैंस और गधेका मूत्र यह सर्व मूत्रवर्ग कड़वा, तीक्ष्ण, हलका, गरम लवणरसान्वित, पित्तकारक, भेदक, रूखा, हृदयको हितकारी रुचिजनक कृमिनाशक, क्षुधाको बढ़ानेवाला, कुष्ठ और भेदरोगनाशक तथा गुल्म आनाह, ववासीर, शूल, वात, कफ, विष, मूजन, पाण्डु और उदररोगको दूर करे है । सर्वप्रकारके मूत्रमें गोमूत्र गुणोंमें अधिक है । अतएव जहां कहीं मूत्रशब्द आवे वहापर गोमूत्र समझना चाहिये । गोमूत्र-धूँहा, उदररोग, श्वास खाँसी, मूजन, मलरोध, शूल, गुल्म, अफारा, कामला और पाण्डुरोगको दूर करे है । मनुष्यका मूत्र-विषविनाशक और विषृचिका रोगको नष्ट करे है, नासमें उटका मूत्र उत्तम है, पानमें गोमूत्र श्रेष्ठ है । तैलयोगमें गर्दभका मूत्र, वस्तिकर्ममें, घोडे और भैंसका तथा दाद, खुजली और विसर्पके लेपमें हाथीका मूत्र लेना चाहिये ।

इति श्रीशाट्टिप्रामनिचण्डुभूषणे मूत्रवर्ग समाप्त ॥ १८ ॥

अथ तैलवर्गः ।

तिलादिस्निग्धवस्तुनास्नेहस्तैलमुदाहृतम् ।

अर्थ-तिलादिक स्निग्धवस्तुओंके स्नेहको तैल कहतेहैं (अभ्यञ्जन, चक्ष्ण, तिलज, स्नेह) ।

| | |
|-----------------|-------------------|
| सत्कृतभाषामें | तैल । |
| हिन्दीभाषामें | तैल । |
| बगभाषामें | तैल, तेल । |
| मराठीभाषामें | तैल । |
| गुजरातीभाषामें | तैल । |
| कर्णाटकीभाषामें | तैल । |
| तैलिङ्गीभाषामें | मुने । |
| ड्रगेजीभाषामें | आइल । Oil |
| लैटिन्भाषामें | ऑइलयम् । Oleum |
| फारसीभाषामें | रोगन, गोगनेरुजद । |
| अरबीभाषामें | दोहनुमिमसिग । |

तेलवातहरसर्वविशेषात्तिलसम्भवम् ।

अर्थ-सर्व प्रकारके तेल वातनाशक हैं और विशेष करके तिलका तेल वातको हरे दे ।

तिक्तैलगुणा ।

कपायानुरसस्वादुसूक्ष्ममुष्णव्यायिच ।-

पित्तकृद्धातशमनंश्लेष्मरोगादिवर्द्धनम् ॥

अल्परुचिकरमेध्यकण्डूकुष्ठविकारनुत् । वृष्यश्रमापहजेय
तिलतेलंविदुर्बुधा ॥ छिन्नभिन्नेच्युतेष्टृष्टेभग्नाग्निदाहकेऽपि
च । वाताभिष्यन्दिस्फुटनेचाभ्यङ्गेतिलतेलकम् ॥ व्यालश्व-
सर्पभेकानाविषेभ्यङ्गावगाहने । पानेवस्तोत्रलामेचतिलते-
लविधीयते ॥ तिलतेलनिधेयस्यात्सर्पगंगानिरारणे । (हा० सं०)

अर्थ-तिलका तेल-कपेला, स्वादिष्ट, रुक्ष गन्ध, व्यायिच, पित्तकारक,
वातनिवारक, फफूँआदि रोगघटक, अल्परुचिकारक, भोजनजनक, रुग्णोंको
हरनेवाला, फोड़को दृढ़ करनेवाला, बरसपेसद्वय, भयनाशक, छिन्न भग्नादि
रोग आदिके लगनेमें कटे हुएमें बरछी आदिके कटे हुएमें, गिरजानेमें जो
चोट लगजाती है, उसमें पिगनेमें, पत्थर आदिके गूढ़नेमें छिलगानेमें,
हाड आदिके टूटनेमें, अग्निते जन्मानेमें, वाताभिष्यन्दिमें, सूँनेमें,
भेटिया, पुत्ता, मेढक और सपके विषमें, मालिस, छान, बस्तिरुक्क और
बलासुरोगमें तिलका तेल द्रव्यकारी है और सर्वरोगोंको हर करनेके लिये
तिलका तेल देना चाहिये ।

तिलतेलमलकगेतिकेशान्मधुरतिक्तकपायमुष्णतीक्ष्णम् ।

चलकृत्कफवातजंतुग्वर्जणकण्डूतिद्वचकान्तिदायि ॥

(राजनिषण्डु)

अर्थ-तिक्तका तेल-केशोंको उत्तम करनेवाला, मधुर, तिक्त, कपाय, उष्ण,
गन्ध, तीक्ष्ण, पित्तकारक तथा रुक्ष, वात, कृमि, रुग्णों, श्व, कट्ट इनको
दूर करनेवाला और कान्तिको देनेवाला है ।

तिलतेलगुरुन्येय्व्यलवर्णकरंसरम् । वृष्यविकाशिविशद
मधुररसपाकयोः ॥ सूक्ष्मकपायानुरसतिक्तंयानकफापदम् ।

वीर्य्योष्णतुहिमंस्पर्शंवृंहणंरक्तपित्तकृत् ॥लेखनवद्धविण्मू-
त्रगर्भाशयविशोधनम् । दीपनंबुद्धिदमेध्यव्यवायित्रणमेह-
नुत् । श्रोत्रयोनिशिरःशूलनाशनंलघुताकरम् ॥त्वच्यके-
श्यञ्चक्षुष्यमभ्यङ्गेभोजनेऽन्यथा । छिन्नभिन्नच्युतोत्पिष्ट-
मथितक्षतपिच्चिते ॥ भग्नस्फुटितविद्धाग्निदग्धाविशिष्टदा-
रिते । तथाभिहतनिर्भुग्नमृगव्याघ्रादिविक्षते ॥वस्तौपानेन्न-
सस्कारेनस्येकर्णाक्षिपूरणे । सेकाभ्यङ्गावगाहेपुतिलतेलं
प्रशस्यते ॥ (भावमिश्र)

अर्थ-तिलका तेल-भारी, स्थिरताकारक, धूलकारक, वर्णको सुदर करनेवाला, सारक, वृष्य, विकाशी, विगंड, रस और पाकर्म, मधुर सूक्ष्म, कपेला, कडवा, वातकफनाशक, उष्णवीर्य्य, स्पर्शमें शीतल, पुष्टिकारक, रक्तपित्तकारक, लेखन, मलमूत्रगोधक, गर्भाशयविशोधक, दीपन, बुद्धिदा-
यक, मेधाजनक, व्यवायि, त्रण और प्रमेहनाशक, कान, योनि और गिरके
शूलको दूर करनेवाला, लघुताकारक, त्वचाको हितकारी, केशोंको सुदर करने-
वाला, नेत्रोंको हितकारी यह गुण तेलके मलनेके हैं । खानेमें यह गुण नहीं हैं और
गुण इनसे उलटे हैं । छिन्न भिन्न, गिरजाना, पिस्रजाना, मसलजाना, घाव,
पिचजाना, टूटजाना, फटजाना, विधजाना, आगसे जलजाना, स्यानसे
उत्तरजाना, चिरजाना, चोट लगनी, देहा होजाना, मृग और व्याघ्रादिसे
घायल होजानेपर, वस्तिकर्म, पान, भन्नसस्कार (तेलसे छाकना) नास-
कर्म, कान और आखोंमें भरना, सेक, मर्दन और अवगाहनमें तिलका तेल
हितकारी है ।

नास्तितेलात्परकिञ्चिदौषधमारुतापहम् ।

तैलसयोगसस्कारात्सर्वरोगापहस्मृतम् ॥

अर्थ-तेलकी समान और कोई दूसरी वातनाशक, औषधि नहीं है और,
द्रव्योंके सयोगसे संस्कृत (पक्का) तेल सर्वरोगनाशक है ।

घृताच्छ्रेष्ठतमंतैलमर्दनेनचभोजने ।

घृतमब्दात्परपक्वहीनवीर्य्यप्रजायते ॥

तैलपक्वमपक्ववाचिरस्थायिगुणाधिकम् ।

अर्थ-तेल-घृततो गुणाम् अत्यन्त श्रेष्ठ है । यह मर्दन करनेमें है, भाजन करनेमें नहीं है । धी प्रकथन चीतजानेपर पका हुआ हीनवैष्य होजाता है परन्तु तेल तो पकाहुवा वा बिनापका जितना जितना उपादे प्रुगना होगा उतनाही अधिकगुणवाला होता है ।

नपित्तगेगेनचशोणितेचपथ्येमहावातविकारसधे ।

तिलोद्भवतेलमुदाहरतिवाताश्रितान्हन्तिमस्तदोषान् ॥

अर्थ-तिलोका तेज-पित्तरोग और रक्तगोगम पथ्य नहीं है मदावात-रोगके समुद्रमें पथ्य है और सर्वप्रकारके वातगोगोंका नाशक है ।

सर्वपथ्यगुणा ।

कटूष्णमार्पपतेलरक्तपित्तप्रदूषणम् ।

कफशुकानिलहृक्कण्डूकृमिविनाशनम् ॥ (राज० नि०)

अर्थ-गरगाया तेल-गरपग गरम रक्तपित्तकारक तथा भक्त, शुक्र, वात खुनकी और कृमिनाशक है ।

अपथ्य ।

दीपनमार्पपतेलकटुपाकिमरेलघु ।

लेखनस्पर्शशीघ्र्यांणतीक्ष्णपित्तास्रदूषकम् ॥

कफमेदोऽनिलाऽर्शोनशिर कर्णामयापहम् ।

कण्टकोष्टकृमिश्वित्रकुष्ठदुष्टवृषणप्रणुत ॥ (भा० प्र०)

अर्थ-गरगोंका तेज-दीपन पानेमें गरपग गरम स्पर्श और शीघ्रम उष्ण तीक्ष्ण, रक्तपित्तको प्रक्षोषित करनेवाला तथा कफ मेदोग, वात वगैरार्श, गिररोग कणगोग रक्त कोष्ठ कृमि श्वित्रकुष्ठ, दुष्ट और दूष्ट प्रणुतको नष्ट करनेवाला है ।

अपथ्य ।

कटुतिक्ततथाग्रात्त्रिचोणस्यात्कफनातनुत ।

कृमिकण्डूशोधनस्यात्पित्तहृत्नार्पपमृनुत ॥

कर्णगेगेष्टमिरोगेनश्वावानामयेषुच ।

कण्डूकुष्ठामयेनेनरूपमेदोगदेपुच ॥

प्रशस्यसार्पपञ्चैव रोगाणाञ्च विभावयेत् ।

वस्तिकर्मणि नोशस्तं पित्तदाहकरं महत् ॥ (हा०स०)

अर्थ—सरसांका तेल—चरपरा, कडवा, मलरोधक, गरम कफनाशक कृमि और कण्डूनिवारक, पित्तजनक तथा कर्णरोग, कृमिरोग वातरोग, कण्डू, कुष्ठ, कफ और मेदरोगमें हितकारी है, वस्तिकर्ममें उत्तम नहीं है और पित्त दाहकारक है ।

राजिकातैलगुणा ।

श्वेतायाश्चैव रक्तायाराजिकायास्तु तैलकम् ।

केश्यच तित्तकटुकमृत्रकृच्छ्रकरमतम् ॥

त्वग्दोषवातदोषचपूयचैव विनाशयेत् ।

गुणास्त्वन्ये सर्पपानां तैलतुल्या इतीरितम् ॥ (नि०र०)

अर्थ—लाल वा काली राईका तेल—केशाको हितकारी, कडवा, चरपरा, मृत्रकृच्छ्रजनक तथा त्वचाके दोष, वातविकार और पूय (राध) को हरें है । दोष गुण सरसाके तेलकी समान जानने ।

तुयरीतैलगुणा ।

तीक्ष्णोष्णतुवरीतैललघुग्राहिकफास्त्रजित् ।

वह्नि कृद्विपहृत्कण्डूकुष्ठकोष्ठकृमिप्रणुत् ॥

मेदोदोषापहचापि व्रणशोथहरपरम् ॥ (भा०प्र०)

अर्थ—तोरीका तेल—तीक्ष्ण, गरम, हल्का, मलरोधक, कफनाशक, रक्तविकारनिवारक, अग्निप्रदीपक, विषविनाशक तथा रुजली, कोढ़, कोष्ठ, कृमि, मेदोदोष, व्रण और सूजनको हरणकरे है ।

अतसीतैलगुणा ।

अतसीप्रभवतैलवनमधुरपिच्छिलम् ।

विपाके कटुचोष्णञ्च वातश्लेष्मनिवारणम् ॥ (हा०स०)

अर्थ—अतसीका तेल—गदा, मधुर, पिच्छिल, विपाककालमें कटु, उष्ण, वात और कफनाशक है ।

अन्यथा ।

मधुरत्नतसीतैलपिच्छिलचानिलापहम् ।

मदगन्धिकपायञ्चकफकासापहारकम् ॥ (रा० नि०)

अर्थ—अतसीका तेल—पिच्छिल, वातविनाशक, मदगन्धिपुक्त, कपेला तथा कफ और खोंगीको दूर करे है ।

अथवा ।

उमातेलंचवातघ्नंश्चादूष्णंवलकृद्गुरु ।

कटुपाकमचक्षुष्यंत्वग्दोषकफपित्तकृत् ॥ (शो० नि०)

अर्थ—अतसीका तेल—वातविनाशक स्वादिष्ठ, पटकारी, भारी, कटुपाकी, नेत्रोंको हितकारी नहीं तथा त्वग्दोष, कफ और पित्तकारक है ।

अथवा ।

अतसीतेलमाग्नेयंस्निग्धोष्णंरुफपित्तकृत् । कटुपाकमचक्षु-
प्यवल्यंवातहरगुरु ॥ मलकृद्सत स्वादुग्राहित्वग्दोषहृद्-
णम् । वस्तोपानेतथाभ्रक्षेनम्येकर्णस्यपूरणे ॥ अनुपान-
विधौचापिप्रयोज्यवातशान्तये ॥ (भा० प्र०)

अर्थ—अतसीका तेल—आग्नेयक, स्निग्ध, गरम, कफ पित्तकारक, कटुपाकी, नेत्रोंको अहितकारी, मज्जकारी, वातहारी, भारी, मज्जकारक, रसमें स्वादु, मलगेघक, त्वग्दोष, विषाग और प्रणको दहनवाग तथा वसिष्ठ कर्म्म, पात, मदन, नास, कर्णपूरण और अनुपानविधिमें वातशान्ति करनेके लिये देना चाहिये ।

अथवा ।

कुसुम्भतेलमुष्णन्तुविपाकेकटुकंगुरु ।

विनाहकविशेषेणमर्चदोषप्रकापनम् ॥ (हा० त०)

अर्थ—कुसुम्भका तेल—गरम, पचनेमें चरपाता, भारी, विशेषकरके दाहपाक और गर्भनीपाती एवम् कानेवाग है ।

अथवा ।

कुसुम्भतेलमम्लम्यादुष्णंगुरुविनाहिन ।

चक्षुर्भ्यामहितवत्यंरक्तपित्तकफप्रदम् ॥ (भा० प्र०)

अर्थ—कुसुम्भका तेल—म्ल, अम्ल, भारी, दाहजनक, नेत्रोंको अहितकारी, पटकारी तथा रक्तपित्त और कफकारक है ।

अपिच ।

कुसुम्भतेलं वलदक्षारं कटुविदाहकृत । अचक्षुष्यगुरुस्तीक्ष्ण-
मुष्णं विदस्तम्भकारकम् ॥ रक्तपित्तकरचाम्लं त्रिदोषाणां च का-
रकम् ॥ कृमिवातहरं प्रोक्तं पूर्वाचार्यैर्महर्षिभिः ॥ (नि० २०)

अर्थ—कसूमका तेल—वलवर्द्धक खारी, चरपरा, दाहजनक, नेत्राको
अहितकारी, भारी, तीक्ष्ण, गरम, मलस्तम्भक, रक्तपित्तकारक, खट्टा,
त्रिदोषजनक तथा कृमि और वातविनाशक है ।

गोधूमादितैलगुणा ।

गोधूमया वनालव्रीहियवाद्यखिलधान्यजतैलम् ।

वातकफपित्तशमनं कण्डूकुष्ठादिहारिचक्षुष्यम् ॥ (रा० नि०)

अर्थ—गेहू, ज्वार, व्रीहिधान्य और यवादिकों का तेल—वात, कफ, पित्त
निवारक, नेत्राको हितकारी तथा कण्डू और कुष्ठादिरोगनाशक है ।

एरण्डतैलगुणा ।

एरण्डतैलकृमिनाशनच सर्वत्र शूलघ्नमरुत्प्रणाशनम् ।

कुष्ठापहचापिरसायनच पित्तप्रकोपानलशोधनच ॥

अर्थ—एरण्डका तेल—कृमिनाशक, सर्व प्रकारके शूलोंको निर्मूल करने
वाला, वातविनाशक, कुष्ठनाशक, रसायन, पित्तको क्षुपित करनेवाला और
अग्निशोधक है ।

अन्यथा ।

एरण्डतैलतीक्ष्णोष्णदीपनपिच्छिलगुरु । वृष्यत्वच्यव-

यस्थापि मेधाकान्तिप्रदम् ॥ कपायानुरससूक्ष्मं योनि

शुक्रविशोधनम् । विस्त्रस्वादुरसेपाके सति तत्कटुकसरम् ॥

विषमज्वरहृद्रोगपृष्ठगुह्यादिशूलनुत् । हतिवातोदरानाह

गुल्माष्ठीलाकटिग्रहान् ॥ वातशोणितविद्वन्धनधर्मशोया-

मविद्रधीन् । आमवातगजेन्द्रस्य शरीरवनचारिणः ॥ एक

एव निहताय मेरण्डमेहकेसरी । (भा० प्र०)

अर्थ—अण्डका तेल—या अडीका तेल—तीक्ष्ण, गरम, दीपन, पिच्छिल,
भारी, वीर्यवर्द्धक, त्वचाको हितकारी अवस्थास्थापक, मेधाजनक, कान्ति

कारक, बलदायक, कपेला, गृह्य, योनि और शुक्रशोधक, आमगन्धि-
वाता, रस और पाकमें स्वादिष्ट कडवा चरपरा, कुछ कुछ तरताव तथा
विषमस्वर हृदयरोग, पीठ और गुदास्थानका शूल, वात, उदररोग, आनाह,
गुल्म, अघ्नीलिका कमरका दर्द, वातरक्त, मलमद्ध, वर्ध्म (यद्) गूजन,
आम और विद्रव्यरोगको नष्ट करे। शरीररूपी धनमें विचग्नेवाले आमवा-
तरूपी मत्त हार्थिके मारनेको यह एकही अजीवा तेलरूपी मिह है।

अथ यथा ।

एरण्डतेलमधुरगुरुश्लेष्माभिर्वर्दनम् । वातासृग्गुल्महृद्रोग
जीर्णज्वरहरपरम् ॥ हृदस्तिपार्श्वजानूरुन्निकृष्टास्थिशू-
लिनाम् । आनाहाघ्नीलवातासृक्प्लीहोदावर्तशूलिनाम् ॥
हितंवातामयश्वासग्रन्थिन्नभ्रविकाग्निनाम् ॥ (राज० ति०)

अर्थ-जड़ीका तेल-मधुर, भारी, श्लेष्मादंश तथा वातरक्त, गुल्म,
हृदयरोग और जीर्णज्वरको दूर करे। तथा हृत्त, पार्श्व, जानु,
ऊरु, शिर, पृष्ठ और अस्थिग्रन्थिवाले मनुष्योंको एवं आनाह, अघ्नील,
वातरक्त, प्लीहा, उदावर्त, शूल, वातरोग आग मन्थि और भ्रमरोगवाले
मनुष्योंको हितकारी है।

परं जलेष्णुना ।

कारजकटुकपाकेकटूष्णमनिलापहम् ।
कुष्ठशीर्षगदाशोममेदगुक्कप्रमेहजित् ॥
अधोर्ध्वहृणश्लेष्मकृमिनिध्वमनलघु ।

मक्षिकादशकीटादिनाशनमणरोपणम् ॥ (शो० ति०)

अर्थ-कारजका तेल-पचनम चरपरा मर्म, वातनाशक तथा क्षौ-
र्शीर्षका, वशाशील मे पुक, ममेद नष्ट और उच्छिन्न, कृमि,
मक्षिका और शकीटा पीडात विषको दूर करे। हृण और मणरो
नाशकारी है।

अथ यथा ।

कारजतेलनित्तम्यादुष्णान्नमण्डूकम् । नैत्रगंगनिर्वाञ्चना-
नकुष्ठान्तथा ॥ एण्डगुल्ममुदावर्तयोनिदोषननाशयेत् ।
अशोमलेपनाच्चनानात्वन्दोषनाशनम् ॥ (ति० २०)

अर्थ-करजका तेल-कडवा, गरम, त्रणको भरनेवाला तथा नेत्ररोग, विचर्ची, वात, कोढ़, त्रण, कण्डू, गुल्म, उदावर्त, योनिविकार, चवासीर और ऐष करनेसे नानाप्रकारके त्वचाके दोषोंको दूर करे है

द्वितीयतैलगुणा ।

इंगुद्यास्तुस्मृततैलस्निग्धशीतचकान्तिदम् ।

मधुरंकफकृद्वल्यंचक्षुष्यधातुवर्द्धकम् ॥

केशवृद्धिकरचैवपित्तनाशकरमतम् । (नि०२०)

अर्थ-हिगोदका तेल-स्निग्ध, शीतल, कान्तिजनक, मधुर, कफकारक, बलकारक, नेत्रोंको हितकारी धातुवर्द्धक, केशवर्द्धक और पित्तनाशक है ।

निम्बतैलगुणा ।

निम्बतैलकिञ्चिदुष्णंतिक्तकृमिकफापहम् ।

कुष्ठव्रणवातपित्तपित्तचार्शज्वरतथा ॥

शोफोदररक्तरुजकफपित्तज्वराजयेत् ॥ (नि०२०)

अर्थ-नीमका तेल-किञ्चित्, गरम, कडवा तथा कृमि, कफ, कोढ़, घाव, वातपित्त, पित्त, चवासीर, ज्वर, सूजन, उदररोग, रुधिररोग, कफ और पित्तज्वरनाशक है ।

शिशुतैलगुणा ।

शिशुतैलचकटुकंचोष्णमुक्तचपिच्छिलम् ।

त्वग्दोषंचव्रणवातंकफकण्डूश्चनाशयेत् ॥

शोथनाशकरंचैवमुनिभिपरिकीर्तितम् ॥ (नि०२०)

अर्थ-सैजिनेका तेल-चरपरा, गरम, पिच्छिल, तथा त्वचाके दोष, व्रण, वात, कफ, कण्डू और सूजनको दूर करे है ।

ज्योतिष्मतीतैलगुणा ।

ज्योतिष्मत्या स्मृततैलवामकतिक्तकमतम् । अत्युष्णंसार-

कंतीक्ष्णपित्तलस्मृतिबुद्धिदम् ॥ मेधाकरंलेखनंचरसायन-

करमतम् । अग्निदीप्तिकरवातत्रिदोषचरुफजयेत् ॥ (नि०२०)

अर्थ-मालकागुनीका तेल-वमनकारक, कडवा, अत्यन्त गरम, सारक, तीक्ष्ण, पित्तजनक, स्मरणशक्ति और बुद्धिदायक, मेधाकारक, लेखन, रसायन, अग्निप्रदीपक, वात, त्रिदोष और कफनाशक है ।

विभीतकतैलगुणा ।

अक्षतैलंस्वादुशीतवृष्यंक्वेश्यंगुरुस्मृतम् ।

कान्तिप्रदं कफकरं वातं पित्तचनाशयेत् ॥ (नि० २०)

अर्थ-घट्टेका तैल-स्वादु, शीत, वीर्यवर्द्धक, केशोंको हितकारी, भार्ग, कान्तिजनक, कफकारी तथा वात और पित्तहारी है ।

हरीतकीतैलगुणा ।

हरीतक्या स्मृततैलशीतलंतुवरमधु ।

कटुपथ्यं सर्वरोगनानात्वरदोषनाशनम् ॥ (नि० २०)

अर्थ-हरीतका तैल-शीतल, कपेला, मधुर, चरपरा पथ्य तथा तुवरमका-
रके रोग और नानाप्रकारके रोगोंको दूर करे है ।

कोशाग्रतैलगुणा ।

कोशाग्रतैलतिकस्थादम्लवत्यचमाधुरम् ।

पथ्यरुचिकचपाचकचमरमतम् ॥

कुमिकुष्ठप्रणानां चनाशकपरिहर्तितम् । (नि० २०)

अर्थ-कोशाग्रकी गुटीकी तैल-वाडरा, गुटी, पक्कातक मधुर, पथ्य,
रुचिपात्र, पाचक, मार्क तथा कुमि, कुष्ठ और मगरा दूर करे है ।

मृगतैलगुणा ।

मीनां गुतैलमात्रे पशमनवायुनाशनम् । स्यंदनशूलहृन्चोम

ज्वरग्रहफणुत्परम् ॥ आमवाते तथा भ्राने ज्वरे च शिरमोग-

टे । दन्तरोगे च भ्राने च द्वेपेयं परियुज्यते ॥ (जा० २०)

अर्थ-मृगतैल तैल-मात्रेकी शालिग्राम, शालिग्राम मृदु
अपात पर्यायी लनिगना, ज्वरनाशक, उमरना और पथ्य है । दन्तरोग
तथा आमवात, भ्रान्ति, ज्वर, शिरोग, दन्तरोग और मगरीगमें प्रयुक्त
तैल देना चाहिये ।

अथ ॥

कपुर्गतैल कटुकं चोष्णपित्तहरमतम् ।

॥ (नि० २०)

अर्थ-कपुर्गतैल तैल-कटुक, चोष्ण, पित्तहार, मरमतम्
तैलको दन्तरोगनाशक

घृणुषादितैलगुणा ।

त्रपुसैर्वारुकूष्माण्डचारवीजादितैलकम् ।

केश्यंकफप्रदशीतमधुरगुरुचस्मृतम् ॥

वांतिकृद्वातपित्तस्यनाशनपरिकीर्तितम् ।

अर्थ—खीरे, ककडी, पेठा और चिरोजी आदिका तेल—केशाको हितकारी, कफकारी, शीतल, मधुर, भारी यमनकारक और पित्तनाशक है ।

भल्लातकतैलगुणा ।

भल्लाततैलकटुकस्वादुचोष्णंचपित्तलम् । तिक्ततीक्ष्णंचतु-
वरमूर्ध्वाधोमार्गशोधकम् ॥ त्रिदोषचक्रीन्मेहमेदशुक्ररु-
फन्तथा । अर्शवातचकुष्ठञ्चकण्डूंचेवविनाशयेत् ॥ गुणा-
स्तुम्बरकस्यापितैलस्यैतेषुधै स्मृताः ।

अर्थ—भिलावेका तेल—चरपरा, स्वादिष्ठ, गरम, पित्तकारक, कडवा, तीक्ष्ण, कपेला, अधोर्ध्व दोषको शोधनेवाला तथा त्रिदोष कृमि, प्रमेद, शुक्र, कफ, बवासीर, वात, जोड़ और खुजलीको दूर करेहै तुम्बुरुके तेलके गुणभी इसीकी समान जानने ।

त्रिवृत्तैलगुणा ।

त्रिवृत्तैलतुशीतस्याद्वातपित्तकफापहम् ।

अर्थ—निसीयके बीजोंका तेल—शीतल और वात-पित्त-कफनाशक है ।

देवदारुतैलगुणा ।

तैलन्तुदेवदारोस्तुकटुतिक्तकपायकम् ।

व्रणशुद्धिकरवातकृमिकुष्ठविनाशकम् ॥

अर्थ—देवदारुका तेल—चरपरा, कडवा, कपेला, व्रणशोधक तथा वात, कृमि और कुष्ठनाशक है ।

रालतैलगुणा ।

सर्जतैलतुविस्फोटकुष्ठदद्रुविनाशकम् ।

कृमीन्कफचवातचनाशयेदितिकीर्तितम् ॥

अर्थ—रालका तेल—विस्फोट, कुष्ठ, दद्रु, कृमि, कफ और वातविनाशक है ।

भाघतेलगुणा ।

आम्रबीजभवतेलसुगधिमधुरंयतम् ।

रूक्षकिञ्चित्पित्तलंचतित्तचविशदंमतम् ॥

कफवातहरचैवमुनिभि परिकीर्तितम् ।

अर्थ-आम्रकी गुठलीका तेल-सुगधि, मधुर, रूखा, किञ्चित् पिचका-
रक, कटवा, विनाद और कफवातनाशक है ।

मधुरतेलगुणा ।

मधुकतेलमधुरपिच्छिलंतुवर्गमतम् ।

कफपित्तज्वरचवदाहपित्तचनाशयेत् ॥

पलाशपाटलायास्तुतेलस्यैतेगुणामता ।

अर्थ-मधुरका तेल-मधुर, पिच्छिल, कपिला तथा श्वेत, पिच, ज्वर,
दाह और पिचको दूर करे । पलाश और पाटलके तेलके गुणभी इसीके
समान जानने ।

मण्डातेलगुणा ।

वन्दाकतेलमधुरगुरु कटुरसमतम् ।

अर्थ-वन्दाका तेल-मधुर, भारी और कटुरमान्वित है ।

भरोलतेलगुणा ।

अकोलतेलवातघ्नमभ्यङ्गात्त्वग्रुजापहम् ।

कफनागकंप्रोक्तं पुनर्नेधर्महर्षिभिः ॥

अर्थ-भरोलका तेल-वातनाशक इसको मलनेमें त्वचाके रोग दूर होते
हैं और कफनाशक है ।

दन्त्यातेलगुणा ।

दन्त्यास्तेलम्व्रादुनेभ्यंलेपनात्तमर्षकुष्ठदम् ।

वातदप्राशनेनेचपित्तम्यामस्यनाशकम् ॥

अर्थ-दन्तीका तेल-स्वादु, वेणुको दित्तकारी, त्वरानेन सर्वव्याधे-
शुद्धीको मटकरे है, र्पनेमें वातको हरे और पित्तनाशक है ।

पुत्रजीविभवेतेलगुणा ।

पुत्रजीविभवेतेलकफवातविनाशकम् ।

अर्थ-पुत्रजापोताका तेल-कफवातविनाशक है ।

त्रायमाणतैलगुणा ।

त्रायमाणभवतैलसर्वव्याधिविनाशकृत् ।

अर्थ-त्रायमाणका तेल-मर्बोगनाशक है ।

शखिनीतैलगुणा ।

शखिनीसम्भवतैलतीक्ष्णतित्तकटुस्मृतम् । रक्तपित्तकर
चैवसारकंचमतलघु ॥ कृमिकुष्ठार्शमेहघ्नंकफवातहरपरम् ।
शुकमेदहरप्रोक्तपूर्वैर्वैद्योत्तमैःपुरा ॥ (इ०२०)

अर्थ-शखिनीका तेल-तीक्ष्ण, कडवा, चरपरा, रक्तपित्तकारक, सारक,
हलका तथा कृमि, कोढ़, बवासीर, प्रमेह, कफवात, शुक और मेदनाशक है ।

पुन्नागतैलगुणा ।

पुन्नागतैलकटुकसरतित्तचलेखनम् ।

पित्तलवातरक्तघ्नदाहनाशकरमतम् ॥

अर्थ-पुन्नागका तेल-चरपरा, सारक, कडवा, लेखन, पित्तकारक,
वातरक्तनाशक और दाहको दूर करे है ।

कपित्थतैलगुणा ।

कपित्थतलतुवरस्वादुचासुविपापहम् ।

अर्थ-कैयके बीजोंका तेल-कपेला, स्वादिष्ट और मूत्रके विषको हरे है ।

खसखसतैलगुणा ।

खसबीजस्यतैलन्तुबल्यवृष्यगुरुस्मृतम् ।

स्वादुशीतकफकरवातनाशकरमतम् ॥

अर्थ-खसखसका तेल-बलकारक, वीर्यवर्द्धक, भारी, स्वादिष्ट, शीतल,
कफकारक और वातविनाशक है ।

नारिकेलतैलगुणा ।

नारिकेलभवतैलरसेपात्रे मधुस्मृतम् ।

बल्यकेश्यवातहरमुष्णनेत्ररुजापहम् ॥

अर्थ-नारिकेलका तेल-रस और पाकम मधुर, बलकारक, केशोंको
हितकारी, वातनाशक, गरम और नेत्ररोगनाशक है ।

पीलुतैलगुणा ।

पीलुतैलसरचोष्णकुष्ठवातक्षतापहम् । शोथपित्तरुजकण्डू

गण्डमालांविनाशयेत् ॥ अत्रवृद्धिरक्तदोषनाशयेदितिचस्मृ-
तम् । अम्लयेतसतैलस्याप्येतएवगुणामता ॥

अर्थ-पीडका तेज-सारक, गरम तथा कोट, वात, क्षत, सूजन, पित्तगण,
रक्त, गडमाला, अत्रवृद्धि और रुधिरके दोषोंको दूर करे। अमलयेतके
तेलके गुणभी इसीके समान जानने ।

विशेषाद्विज्ञेयम् ।

शिशपागरुगण्डीरनिर्गुण्डीसरलादिजम् ।

तेलतुत्तुवरतित्तकटुकवातरक्तजिव ॥

विपकण्डूवातकफकुष्ठदुष्टवणाजयेत् ।

अर्थ-गीतां, अगर, गण्डीर, निर्गुण्डी और सरलादिजता तेल-कपेता,
कटुता, चरपग तथा बाजराक, शिव, सुजली, वात, कफ, कुष्ठ और दुष्टव-
णको नष्ट करे ।

पृथ्वीकादीनिगुणा ।

पृथ्वीकानीपजीमूतदस्तिकर्णार्कमूलजम् । काम्पिल्लकचते-
लन्तुनीक्ष्णपाकेकटुस्मृतम् ॥ मरमुष्णचतित्तचलबुक्कुष्ठ
कफापहम् । मेहमूर्च्छामदकृमिनाशनपरममतम् ॥ (रत्नाकर)

अर्थ-पृथ्वीका (द्विगुपत्रा) जीमूत (द्वादशी) गुनी, दस्तिकर्ण,
पटाग, नीप (कटुष) और कर्णालका तेज-क्षिण, पानेय चरपता,
सायक, गरम, कटुता, दग्धा तथा कोट, कफ, प्रमेह, मूर्च्छा मद और
कृमिको दूर करे ।

तैलस्वयोनिगुणहृद्वाग्भटेनासिलमनम् ।

अत गपस्यतैलस्वगुगाजेया स्वयोनियत ॥

अर्थ-वाग्भटे गरं तेज स्वयोनि अगार विम २ मापार्भते मं २ तेज
रास्य होनाई यह उगीके समान गुणको है ऐसा कहा है इसीमे जो तेज इस
स्वयमे नहीं बदे मये उनके गुण अपनी २ योनिके समान जानने ।

स्वयगादनगुणैरगुणा ।

स्येदोऽनगादनेयुक्त भर्गरेवलमाहरेत् ।

गिगुगुगेगेमृपेधननीमिश्रनपेत् ॥

अर्थ-प्रथम तेलको मलकर पीठे जलसे स्नानकरे इसप्रकार करनेसे शरीरमें बल बढ़ता है तथा शिरामुस, रोमकूप और घमनीनाडियोंके द्वारा उत्तिकारक है । शिरावितैद्यमहंनगुण ।

नित्यस्नेहार्द्रशिरस शिरःशूलनजायते । नखालित्यनपालित्यनकेशाः प्रपतन्ति च ॥ दृढमूलाश्चकृष्णाश्चभवन्ति च घनायताः । इन्द्रियाणि प्रसीदन्ति सुदृग्भवतिलोचनम् ॥

अर्थ-जो मनुष्य प्रतिदिन मस्तकमें तेल मलतेहैं, उनके शिरशूल नहीं उत्पन्न होता है तथा केशोंकी अल्पता, पकता और केश नहीं पतन होतेहैं और दृढ मूलसहित, काले और सघन केश होजातेहैं तथा इन्द्रियोंमें प्रसन्नता और नेत्रोंमें सुदृश्यता उत्पन्न होता है ।

कणतैलपूरणगुणा ।

कर्णप्रपूरणान्नित्यनमन्यानहनुग्रहाः ।

नोच्चे श्रुतिर्नैवाधिष्यन्नकर्णे वातजारुज ॥ (राजवल्लभ)

अर्थ-जो मनुष्य कर्णमें नित्यप्रति तेल डालतेहैं-उनके मन्यास्तम्भ, हनुग्रह, कानसम्बन्धी ऊँचा सुनना आदि दुःसाध्यरोग, बधिरता और कानमें वातादिरोग उत्पन्न नहीं होते हैं ।

मर्दनेतैलगुणा ।

“घृतादप्यगुणगुरु”

अर्थ-शरीरमें मलनेसे तेलमें घीझी अपेक्षा आठ गुण अधिकहै ।

तेलनसेवयेद्दीमान्यस्य रुस्यचयद्रवेत् ।

विपसात्प्यगुणत्वाच्चयोगे तन्न प्रयोजयेत् ॥

अर्थ-बुद्धिमान् पुरुषको चाहिये कि जिस तिलके द्रिये हुये तेलको सेवन नहीं करे और उसमें विषकी समानता होनेसे बिना विचारे किमी योगमें भी प्रयोग नहीं करे ।

इति श्रीशार्ङ्गिग्रामनिःशुभ्रप्रेम तेन्यर्ग सनाम ॥ १८ ॥

अथ अर्कवर्गः ।

अथातः सप्रवक्ष्यामिकेवलार्कगुणप्रिये ।

अर्थ-इसके उपरान्त केवल अर्कके गुण कहता हूँ ।

हरीतक्यपर्वगुणा ।

हरीतक्याः शूलकृच्छ्रकामलानाहनाशन ।

अर्थ-हरदका अर्क-शूल, मूत्रकृच्छ्र, ताम्रग और आनाह रोगनाशक है ।

विभीतक्यपर्वगुणा ।

विभीतकस्य तृदृग्द्विस्फकासविनाशन ।

अर्थ-बहेडेका अर्क-शुषा, वमन, कफ और खोंसीको हरे है ।

आमलक्यपर्वगुणा ।

आमलक्यास्त्रिदोषासपित्तमोहविनाशयेत् ।

अर्थ-आमलेका अर्क-त्रिदोष, रक्तपित्त और मोहनाशक है ।

नागराजगुणा ।

गुण्ठ्याविबन्धामवातशूलश्चान्नलामहत ।

अर्थ-गाठका अर्क-मलमदता, आमवात, शूल, आत और पचनाशक है ।

आद्रकगुणा ।

आद्रकस्य ज्वरं दाहं हरेद्रुच्यग्निदीप्तिरुत् ।

अर्थ-अद्रकका अर्क-ज्वर और दाहको हरे है, अग्निका अग्निप्रदीपक है ।

पिप्पल्यागुणा ।

पिप्पल्या श्यामकामामवाताग्निज्वरशूलहत ।

अर्थ-पीपलका अर्क-श्याम, शोभी, आमवात, पचागीर, ज्वर और शूलको नष्ट करे है ।

मरीचकगुणा ।

मरीचकः श्यामकृमीन्दरेत्सर्पान्गदानपि ।

अर्थ-पालीमिर्चका अर्क-श्याम, कृमि और अन्त्याय शर सर्पोंको नाश करे है ।

विषचीगुणागुणा ।

मन्थिकस्य प्रीदगुल्मकफजानहर पर ।

अर्थ-वीपराचूतका अर्क-प्रीदा, गुल्म, कफ और ज्वरनाशक है ।

चरकगुणा ।

चरकास्त्यन्तरुचिरुद्विदोषाद्दृढजापद ।

अर्थ-चरकका अर्क-अप रक्षा रक्षा और विषेचका चरु रोगनाशक है ।

गजपिपल्यवर्गगुणा ।

अर्कस्तुगजपिपल्यावातश्लेष्माग्निमान्द्यनुत् ।

अर्थ-गजपीपलका अर्क-वात, कफ और मदाग्निनाशक है ।

चित्रकाश्वगुणा ।

चित्रकस्याग्निवृत्कासग्रहणीकफशोपहा ।

अर्थ-चीतेका अर्क-अग्निजनक तथा खोंमी, सग्रहणी, कफ और शोपको हरे है ।

यमान्यवर्गगुणा ।

यमान्यापाचनोरुच्योदीपनः शुक्रशूलहृत् ।

अर्थ-अजवायनका अर्क-पाचक, रुचिकारक, दीपन तथा शुक्र और शूलनाशक है ।

अजमोदवर्गगुणा ।

अजमोदोद्भवोवातकफहावस्तिशोधन ।

अर्थ-अजमोदका अर्क-वात कफनाशक और वस्तिशोधक है ।

पारसीकयमान्यवर्गगुणा ।

पारसीकयमान्यास्तुग्राहीपाचकमादकः ।

अर्थ-खुरासानी अजवायनका अर्क-मलरोचक, पाचक और मदकारक है ।

जीरकवर्गगुणा ।

जीरकस्यतुसग्राहीगर्भाशयविशुद्धिकृत् ।

अर्थ-जीरका अर्क-ग्राही और गर्भाशयशोधक है ।

कृष्णजीरकवर्गगुणा ।

कृष्णजीरस्यचक्षुष्योगुल्मच्छर्द्यनिसारजित ।

अर्थ-कालेजीरका अर्क-नेत्रोंको हितकारी तथा गुल्म, यमन और अतिसारको दूरकरे है ।

कारवीर्यवर्गगुणा ।

कारव्यावलकृच्चाकोज्वरघ्न पाचनसर ।

अर्थ-कलोजीका अर्क चल्काङ्क, ज्वरनाशक, पाचक और तारक है ।

धान्यवर्गगुणा ।

धान्यकस्यतृपादाहवमिश्वासत्रिदोषजित ।

अर्थ-धान्येका अर्क-तृपा, दाह, यमन, श्वास और त्रिदोषनाशक है ।

हरीतक्यर्कगुणा ।

हरीतक्याःशूलकृच्छ्रकामलानाहनाशनः ।

अर्थ-हरडका अर्क-शूल, मूत्रकृच्छ्र, कामला और आनाह रोगनाशक है ।
विभीतक्यर्कगुणा ।

विभीतकस्यतृद्वर्द्धिकफकासविनाशनः ।

अर्थ-बहेडेका अर्क-तृषा, वमन, कफ और खोंसीको हरे है ।
आमलक्यर्कगुणा ।

आमलक्यास्त्रिदोषासपित्तमोहविनाशयेत् ।

अर्थ-आमलेका अर्क-त्रिदोष, रक्तपित्त और मोहनाशक है ।
नागरावगुणा ।

शुण्ठ्याविवन्धामवातशूलश्वासवलासहत् ।

अर्थ-साठका अर्क-मलबद्धता, आमवात, शूल, श्वास और कफनाशक है ।
आर्द्रकावगुणा ।

आर्द्रकस्यज्वरंदाहरेद्रुच्यग्निदीप्तिकृत् ।

अर्थ-अदरकका अर्क-ज्वर और दाहको हरे है, रुचिकारक अग्निप्रदीपक है ।
पिप्पल्यावगुणा ।

पिप्पल्याःश्वासकासामवाताशौज्वरशूलहृत् ।

अर्थ-पीपलका अर्क-श्वास, खोंसी, आमवात, बवासीर, ज्वर और शूलको नष्ट करे है ।
मरीचावगुणा ।

मरीचकःश्वासकृमीन्हरेत्सर्वान्गदानपि ।

अर्थ-कालीमिर्चका अर्क-श्वास, कृमि और अन्यान्य सर्व रोगोंको नाश करे है ।
पिप्पलीमृच्छावगुणाः ।

ग्रन्थिकस्यप्लीहगुल्मकफवातहर पर ।

अर्थ-पीपरामूलका अर्क-प्लीहा, गुल्म, कफ और वातविनाशक है ।
चठपावगुणा ।

चव्याकोऽत्यन्तरुचिकृद्विशोषाद्दजापहः ।

अर्थ-चव्यका अर्क-अत्यन्तरुचिकारक और विशेषकरके गुदरोगनाशक है ।

गजपिप्लवर्गगुणा ।

अर्कस्तुगजपिप्लव्यावातश्लेष्माग्निमान्द्यनुत् ।

अर्थ-गजपीप्लका अर्क-वात, कफ और मदाग्निनाशक है ।

चित्रकार्गुणा ।

चित्रकस्याग्निमृत्कासग्रहणीकफशोपहा ।

अर्थ-चीतेका अर्क-अग्निजनक तथा खाँसी, संग्रहणी, कफ और शोपको हरे है ।

यमान्मर्कगुणा ।

यमान्यापाचनोरुच्योदीपन शुक्रशूलहृत् ।

अर्थ-अजवायनका अर्क-पाचक, रुचिकारक, दीपन तथा शुक्र और शूलनाशक है ।

अजमोदार्गुणा ।

अजमोदोद्भवोवातकफहावस्तिशोधनः ।

अर्थ-अजमोदका अर्क-वात कफनाशक और वस्तिशोधक है ।

पारसीकयमान्मर्कगुणा ।

पारसीकयमान्यास्तुग्राहीपाचकमादकः ।

अर्थ-खुरासानी अजवायनका अर्क-मलरोधक, पाचक और मदकारक है ।

जीरकावर्गगुणा ।

जीरकस्यतुसग्राहीगर्भाशयविशुद्धिकृत् ।

अर्थ-जीरका अर्क-ग्राही और गभाशयशोधक है ।

कृष्णजीरकावर्गगुणा ।

कृष्णजीरस्यचक्षुष्योगुल्मच्छर्द्यतिसारजित् ।

अर्थ-कालेजीरका अर्क-नेत्राको हितकारी तथा गुल्म, यमन और अतिसारको दूरकरे है ।

कारव्यावर्गगुणा ।

कारव्यावलकृच्चाकोज्वरघ्नपाचनसारः ।

अर्थ-कलाजीका अर्क घटकारक, ज्वरनाशक, पाचक और सारक है ।

धान्यकार्गुणा ।

धान्यकस्यतृपादाहवमिश्रामत्रिदोषजित् ।

अर्थ-धान्यका अर्क-तृपा, दाह, यमन, आम और त्रिदोषनाशक है ।

शतपुष्पाङ्गुणा ।

मिश्राज्वरानिलश्लेष्मव्रणशूलाक्षिरोगहृत् ।

अर्थ-सौंफका अर्क-ज्वर, वात, कफ, व्रण, शूल और नेत्ररोगनाशक है ।
मिश्रेपाङ्गुणा ।

मिश्रेयायावह्निमान्द्ययोनिशूलकृमीन्हरेत् ।

अर्थ-सोयेका अर्क-मन्दाग्नि, योनिशूल और कृमिनाशक है ।
ज्वालामरिचार्कगुणा ।

ज्वालामरीचकस्यापस्मारभूतत्रिदोषनुत् ।

अर्थ-लालमिर्चका अर्क-अपस्मार, भूत व त्रिदोषनाशक है ।
मेथिकार्कगुणा ।

मेथिकाया श्लेष्मवातज्वरामकफनाशनः ।

अर्थ-मेथीका अर्क-श्लेष्म, वात, ज्वर, आम और कफनाशक है ।
घनमेथिकार्कगुणा ।

वनमेथ्या सर्वरोगान्हरेत्कुञ्जराजिनाम् ।

अर्थ-वनमेथीका अर्क-हाथी और घोड़ोंके सर्व रोगोंको हरे है ।
चन्द्रसूरार्कगुणा ।

चन्द्रसूरस्यद्विक्कासृग्वातहृत्पुष्टिवर्द्धनः ।

अर्थ-हालोका अर्क-डुचकी, रुधिरविकार और वातनाशक है तथा पुष्टिवर्द्धक है ।
हिंग्वर्कगुणा ।

हिङ्गुन पाचनोरुच्यकृमिशूलोदरापह ।

अर्थ-हिंगका अर्क-पाचन, रुचिकारक तथा कृमि, शूल और उदररोग-निवारक है ।
वचार्कगुणा ।

वचायावह्निवमिकृद्विबन्धाध्मानशूलहृत् ।

अर्थ-वचाका अर्क-अग्निजनक, वमनकारक तथा विषघ्न, आध्मान और शूलको हरे है ।
पारसीकवचायगुणा ।

पारसीकवचायास्तुभूतोन्मादवलंहरेत् ।

अर्थ-खुरासानी वचका अर्क-भूतोन्माद और बलनाशक है ।

कुलिजनार्कगुणा ।

कुलिजनस्यस्वरकृद्धत्कण्ठमुखशोधनः ।

अर्थ-कुलिजनका अर्क-स्वको शुद्ध करनेवाला तथा कण्ठ और मुख-शोधक है ।

स्थूलग्रन्थिवचाकगुणा ।

स्थूलग्रन्थिवचस्यार्कविशेषात्कफकासहृत् ।

अर्थ-स्थूलग्रन्थिवचका अर्क-विशेष करके कफनाशक है ।

द्वीपांतरवचाकगुणा ।

द्वीपान्तरवचायास्तुहरेच्छूलफिरङ्गकम् ।

अर्थ-चोपचीनीका अर्क-शूल और फिरंगरोगनाशक है ।

हृत्पुपार्कगुणा ।

हृत्पुपायाहरेत्प्लीहविपमोहश्चदारुणम् ।

अर्थ-हाजवेरका-अर्क-प्लीहा, विप और दारुणमूर्च्छाको हरे है ।

क्षुद्रवपुपार्कगुणा ।

वपुपायासमीराशोग्रहणीगुल्मशूलहृत् ।

अर्थ-छोटेहाजवेरका अर्क-वात, ववासीर, समग्रहणी गुल्म और शूल-नाशक है ।

विडद्रावगुणा ।

विडङ्गस्योदरश्लेष्मकृमिवातविवन्धनुत् ।

अर्थ-वायविडगका अर्क-उदगोग कफ, कृमि, वात और विषघ नाशक है ।

तुम्बुरोर्गुणगुणा ।

तुम्बुरोर्गुरुताश्वासप्लीहागुल्मकृमिन्हरेत् ।

अर्थ-तुम्बुरुका अर्क-शरीरका भारीपन, श्वास, प्लीहा, गुल्म और कृमिको दूर करे है ।

वशलोचनार्कगुणा ।

वशलोचनजस्तृष्णाक्षयश्वासज्वरान्हरेत् ।

अर्थ-वशलोचनका अर्क-तृष्णा, क्षय, श्वास और ज्वरको हरे है ।

समुद्रफेनार्कगुणा ।

समुद्रफेनजशीतोरेचकःकफहृत्परः ।

अर्थ-समुद्रफेनका अर्क-शीतल, दस्तावर और कफनाशक है ।

जीवकावगुणा ।

जीवकोत्थ शुक्रकफचलकृच्छीतलःसमः ।

अर्थ-जीवका अर्क-शुक्र, कफ और बलकारक और समशीतल है ।

ऋषभकार्कगुणा ।

आर्षभःपित्तदाहासकासवातक्षयापहः ।

अर्थ-ऋषभका अर्क-पित्त दाह, रुधिरविकार, खाँसी, वात और क्षयको क्षयकरे है ।

मेदावगुणा ।

सुनामेदोद्भवार्कस्तुदृश्यःस्तन्यकफावहः ।

अर्थ-मेदका अर्क-नेत्रोंको हितकारी, स्तनोंमें दूध करनेवाला और कफकारी है ।

महामेदावगुणा ।

महामेदोद्भव शीतोरक्तवातज्वरप्रणुत् ।

अर्थ-महामेदाका अर्क-शीतल तथा वात, रक्त और ज्वरनाशक है ।

काकोल्यवगुणा ।

काकोल्याशुक्रलशीतोपित्तशोषज्वरापहः ।

अर्थ-काकोलीका अर्क-शुक्रजनक, शीतल तथा पित्त, शोष और ज्वरनाशक है ।

क्षीरकाकोल्यवगुणा ।

क्षीरकाकोलिकाजातोवृहणोदाहवातहा ।

अर्थ-क्षीरकाकोलीका अर्क-पुष्टिकारक तथा दाह और वातविनाशक है ।

ऋद्ध्यावगुणा ।

ऋद्ध्यावत्यस्त्रिदोषत्रोरक्तपित्तविनाशकः ।

अर्थ-ऋद्धिका अर्क-बलकारी, त्रिदोषनाशक और रक्तपित्तनाशक है ।

वृद्ध्यावगुणा ।

वृद्ध्यावर्भगतशीतक्षतकासक्षयापहः ।

अर्थ-वृद्धिका अर्क-शीतल तथा क्षत खाँसी और क्षयरोगनाशक है ।

मधुरार्कगुणा ।

मधुराया केशकरःस्वर्ग्यपित्तानिलाम्रजित् ।

अर्थ-मधुरीका अर्क-केशोंको उत्पन्न करनेवाला, स्वर्गको उत्तम करने-वाला तथा पित्त, वात और रुधिरके विकाराको हरे है ।

जलमधुयष्ट्यगुणा ।

जलयष्ट्याविपच्छर्दितृष्णाग्लानिक्षयापहः ।

अर्थ—जलमुलेठीका अर्क—विष, वमन, तृषा, ग्लानि और क्षयरोगनाशक है ।

काम्पिल्लावगुणा ।

काम्पिल्लस्यविरेकीस्यान्मेहनस्यविकारनुत् ।

अर्थ—कवीलेका अर्क—विरेचक और मूत्रविकारनिवारक है ।

आरग्वधाकगुणा ।

आरग्वधस्यपित्तास्रवातोदावर्त्तशूलहृत् ।

कण्डूमेहश्वासकासकृमिकुष्ठज्वरापहः ॥

अर्थ—अमलतासका अर्क—रक्तपित्त, वात, उदावर्त्त, शूल, कण्डू, प्रमेह, श्वास, खोंसी, कृमि, कोढ़ और ज्वरनाशक है ।

भूनिम्बाकगुणा ।

भूनिम्बस्यतृपाकुष्ठज्वरघ्नकृमिप्रणुत् ।

अर्थ—चिरामतेका अर्क—तृषा, कोढ़, ज्वर, घ्न और कृमिनाशक है ।

वत्साकगुणा ।

भद्रमानस्तुपित्तास्रकृमिवीसर्पकुष्ठनुत् ।

अर्थ—इन्द्रजाका अर्क—रक्तपित्त, कृमि, विसर्प और कुष्ठको नष्ट करे है ।

मदनफलाकगुणा ।

मदनोत्थश्छर्द्दनेनचतुर्थज्वरकादिहृत् ।

अर्थ—मैनफलका अर्क—वमनकारक और चातुर्थिक (चौथिया) ज्वरनिवारक है ।

रास्नाकगुणा ।

रास्नोद्भवःसमीरास्रवातशूलोदरापहः ।

अर्थ—रान्नाका अर्क—वातरक्त, वातशूल और उदररोगनाशक है ।

नागभिन्नावगुणा ।

नागभिन्नोद्भवाभोगीलूताद्यासुविकारहृत् ।

अर्थ—नाकुलीका अर्क—सर्प, मकड़ी और मृसे आदिके विषको हरे है ।

माचिकाकगुणा ।

माचिकाजस्तुपित्तास्रपक्वातीसारहालघुः ।

अर्थ—मोइयेका अर्क—हृत्का, रक्तापेत्त और पक्वातिसारनाशक है ।

तेजस्विन्यकगुणा ।

तेजस्विन्याःश्वासकासकफहृद्बृह्मिदीपनः ।

अर्थ-तेजवलका अर्क-श्वास, खोंसी और कफनाशक है तथा अग्निप्रदीपक है ।

ज्योतिष्मत्याकगुणा ।

ज्योतिष्मत्यावान्तिकरोवह्निबुद्धिस्मृतिप्रदः ।

अर्थ-मालकागुनीका अर्क-वमनकारक तथा अग्नि, बुद्धि और स्मरण शक्तिवर्द्धक है ।

कुष्ठकगुणा ।

कुष्ठस्यहन्तिवातास्रकासकुष्ठमरुत्कफान् ।

अर्थ-कूठका अर्क-वातगन्ध, खोंसी, कोढ़, वात और कफनाशक है ।

पौष्करकगुणा ।

पौष्करस्यारुचिश्वासान्विशेषात्पार्श्वशूलनुत् ।

अर्थ-पोहकमूलका अर्क-अरुचि, श्वास और विशेषकरके पसबाढेकी पीडाको दूर करे है ।

हैमाह्वारकगुणा ।

हैमाह्वारकवान्तिकरः कण्डूविनाशनः ।

अर्थ-स्वर्णक्षीरीका अर्क-विरेचक, वमनकारक और कण्डूनाशक है ।

शृङ्गीरकगुणा ।

शृङ्गीरहरेदूर्ध्ववातहिकान्तृष्णाक्षयज्वरान् ।

अर्थ-काकडांशिगीका अर्क-ऊर्ध्ववात, हिचकी, तृषा, क्षय और ज्वरनाशक है ।

कदफलोत्थकगुणा ।

कदफलोत्थःश्वासकासप्रमेहाशोऽरुचिहरेत् ।

अर्थ-कायफलका अर्क-श्वास, खोंसी, प्रमेह, चवासीर और अरुचिको दूर करे है ।

भांगर्याकगुणा ।

भांगर्याहरेत्कफश्वासपीनसज्वरमारुतान् ।

अर्थ-भारगीका अर्क-कफ, श्वास, पीनस, ज्वर और वातविनाशक है ।

पापाणभेद्यर्कगुणा ।

पापाणभेदजोयोनिरोगहृत्क्षयसगुल्महा ।

अर्थ-पापाणभेदका अर्क-योनिरोग, श्वास और गुल्मनाशक है ।

धातक्यर्कगुणा ।

धातकीजस्तृपासारविषकीटविसर्पजित् ।

अर्थ-धातके फलोंका अर्क-तृषा, अतिसार, विष, कृमि और विसर्प-रोगनाशक है ।

समद्वाक्यगुणा ।

माज्जिष्ठजोविषश्लेष्मरक्तातीसारकुष्ठहा ।

अर्थ-मजीठका अर्क-विष, श्लेष्म, रक्तातिसार और कुष्ठनाशक है ।

कुसुम्भार्कगुणा ।

कुसुम्भजोवर्णकरोरक्तपित्तकफापह ।

अर्थ-कुसुमका अर्क-वर्णको सुदूर कानेवाला तथा रक्तपित्त और कफनाशक है ।

लाक्षार्कगुणा ।

लाक्षज कृमिवीसर्पव्रणोरक्षतकुष्ठहा ।

अर्थ-लासका अर्क-कृमि, विसर्प, व्रण, उग्नक्षत और कुष्ठनाशक है ।

हरिद्राक्यगुणा ।

हरिद्रायामेहशोथत्वग्दोषव्रणपाण्डुनुत् ।

अर्थ-हलदीका अर्क-प्रमेह, सूजन, त्वचाके दोष, व्रण और पाण्डुरोग-नाशक है ।

भारण्यहरिद्राक्यगुणा ।

आरण्यकहरिद्राया कुष्ठवातास्रनाशनः ।

अर्थ-चनहलदीका अर्क-कोढ़, वात और रक्तविकारविनाशक है ।

कर्पूरहरिद्राक्यगुणा ।

कर्पूरकहरिद्रायाःसर्वकण्डूविनाशनः ।

अर्थ-कर्पूरहलदीका अर्क-सर्वप्रकारके कण्डूनाशक है ।

दारुहरिद्राक्यगुणा ।

दारुविशेषतोलेपान्नेत्रकर्णस्यरोगनुत् ।

अर्थ-दारुहलदीका अर्क-विशेष करके लेप करनेसे नेत्ररोग और कर्ण-रोगको हर्दे ।

रसाञ्जनार्कगुणा ।

रसाञ्जनोद्भवोनेत्रविकारव्रणदोषनुत् ।

अर्थ-रसाञ्जन अर्थात् रसातका अर्थ-नेत्रविकार और व्रणदोषनिवारक है ।

भवलगुणाङ्गगुणा ।

वाकुच्याःकृमिविष्टम्भपाण्डुशोफकफापह ।

अर्थ-वापचीका अर्क-कृमि, विष्टम्भ, पाण्डु, सृजन और कफनाशक है ।

चक्षुःशोफगुणा ।

प्रपुन्नाटस्यहन्त्येवकण्डूदद्रुविपानिलान् ।

अर्थ-चक्कडका अर्क-खुजली, दाद विष और वातविनाशक है ।

अतिविषाकगुणा ।

विषजोदीप्तिकार्यर्क कफपित्तातिसारहा ।

अर्थ-अतीमका अर्क अग्निप्रदीपक तथा कफ, पित्त और अतिसारनाशक है ।

लोधाङ्गगुणा ।

लोध्रज गीतलोघ्राहीचक्षुष्य कफपित्तनुत् ।

अर्थ-लोवका अर्क-गीतल, मलरोधक, नेत्रोंको हितकारी तथा कफ और पित्तनाशक है ।

बृहत्पत्राङ्गगुणा ।

बृहत्पत्रोद्भवोनेत्र्योज्वरातीसारशोथहृत् ।

अर्थ-पठानीलोवका अर्क-नेत्रोंको हितकारी, ज्वर, अतिसार और सृजनको हरे है ।

भल्लातकाङ्गगुणा ।

भल्लातकोद्भवोहृन्प्राज्ज्वरोदरकृमिव्रणान् ।

अर्थ-भिलावेका अर्क-ज्वर, उदररोग, कृमि और व्रणनाशक है ।

शुक्रन्यङ्गगुणा ।

शुक्रच्यादीपन श्वासकासपाण्डुज्वरापह ।

अर्थ-गिलोयका अर्क-दीपन तथा श्वास, खाँसी, पाण्डुगोग और ज्वरको हर्ने है ।

विचित्राङ्गगुणा ।

वेत्त्व श्लेष्महरोत्रल्योलघुरुष्णश्चपाचन ।

अर्थ-वेलका अर्क-यपनाशक, बलवाग्क, दलका, गरम और पाचक है ।

काभ्येकगुणा ।

गाम्भारीजोभ्रान्तितृण्णाशूलाशोविपदाहनुत ।

अर्थ-कुम्भेरका अर्क-भ्रान्ति, तृणा, शूल, चवामीर, विप और दाह-नाशक है ।

पाटलावेगुणा ।

पाटल्याच्छर्दिशोफासृग्णादाहारुचिहरेत् ।

अर्थ-पाटलका अर्क-वमन, सृजन, र्विग्विकार, तृणा, दाह और अरुचिनिवारक है ।

अग्निमन्थावेगुणा ।

अग्निमन्थोद्रवःशोफकृमिपाण्डुबलासनुत ।

अर्थ-अरणीका अर्क-सृजन, कृमि, पाण्डु, और कफनाशक है ।

श्वोनायावेगुणा ।

श्वोनाकजस्तुगुल्मार्श कृमिहृद्बुचिदीप्तिकृत् ।

अर्थ-श्वोनाकका अर्क-गुल्म, चवामीर और कृमिनाशक और रुचिदीपक है ।

शालिपण्यावेगुणा ।

शालिपण्याःक्षतकृमिज्वरच्छर्दितिसारहा ।

अर्थ-शालिपर्णाका अर्क-क्षतगण, कृमि, ज्वर, वमन और अतिसार निवारक है ।

पृश्निपण्यावेगुणा ।

पृश्निपण्याज्वरश्वासरक्ततिसारदाहहृत् ।

अर्थ-पिटरनका अर्क-ज्वर, श्वास, रक्ततिसार और दाहनाशक है ।

वृक्षपण्यावेगुणा ।

वार्त्ताक्याज्वरवैरस्यमलागेचकशूलहा ।

अर्थ-वृद्धती अर्थात् कटार्कका अर्क-ज्वर, मुखकी विरमता, मलद्रोष, अरुचि और शूलनाशक है ।

श्वेनपण्यावेगुणा ।

कण्टकार्यागर्भकर पाचनःकफकासहा ।

अर्थ-सपेठ कटेरीका अर्क-गर्भकारक, पाचन तथा कफ और खाँसीको दूर करे है ।

कण्टकायकगुणा ।

कण्टकाय्यादीपनश्चश्लेष्मशोफरुजापहः ।

अर्थ-कटेरीका अर्क-अग्निप्रदीपक तथा श्लेष्म और सृजनको दूर करे है ।
गोधुरावगुणा ।

गोधुरस्याश्मरीमेहकृच्छ्रहृद्दोगवातहा ।

अर्थ-गोधुरका अर्क-पथरी, ममेह, मूत्रकृच्छ्र, हृदयरोग, और वात-विनाशक है ।

जीवन्त्यावगुणा ।

जीवन्त्या सारहृन्नेत्र्योदोषत्रितयनाशनः ।

अर्थ-जीवन्तीका अर्क-नेत्रोंको हितकारी तथा त्रिदोष और अतिसार-नाशक है ।

मुद्रपण्यवगुणा ।

मुद्रपण्याःशोफदाहग्रहण्यशोऽतिसारहृत् ।

अर्थ-मुगवनका अर्क-सृजन, दाह, संग्रहणी और अतिसारनिवारक है ।
मापपण्यवगुणा ।

मापपण्यां शुक्रकरोवातपित्तज्वरास्रजित् ।

अर्थ-मपवनका अर्क-शुक्रजनक तथा वात पित्त और रुधिरके दोषोंको दूर करे है ।

श्वत्तरण्डावगुणा ।

पञ्चागुलोद्भव शूलगिरःपीडोदरापहः ।

अर्थ-सफेद अण्डका अर्क-शूल, शिरकी पीडा और उदररोगनाशक है ।
रक्तैरण्डावगुणा ।

रुबुकोत्थोद्भवःश्वासकासकुष्ठाममारुतान् ।

अर्थ-लाल अण्डका अर्क-श्वास, खाँसी, कोष्ठ और आमवातनाशक है ।
मन्दारवगुणा ।

मन्दारजोवातकुष्ठकण्डूव्रणविपापहः ।

अर्थ-मन्दारका अर्क-वात, कुष्ठ, कण्डू, व्रण और विषविनाशक है ।
अकर्मवगुणा ।

अकर्मकं प्लीहगुल्मार्गःश्लेष्मोदरकृमिन्हरेत् ।

अर्थ-आकका अर्क-प्लीहा, गुल्म, चवामीर, श्लेष्म, उदररोग और कृमिनाशक है ।

वज्रयकगुणा ।

वज्रीजोलेपतोहन्याद्वणशोफोदरव्रणान् ।

अर्थ—वज्री (एकप्रकारका सेड्ड) का अर्क—लेपसे व्रण, सूजन और उदरोगनाशक है ।

सातलावगुणा ।

सातलोत्थ.कफानाहपित्तोदावर्त्तशोफहा ।

अर्थ—सातलाका अर्क—कफ, आनाह, पित्त, उदावर्त्त और सूजनको हरे है ।

लागल्यकगुणा ।

लाङ्गल्यालेपतोहन्याच्छोफाशोव्रणरोगहृत् ।

अर्थ—कलिहारीके अर्कका लेप करनेसे सूजन, ववासीर और व्रणको हरे है ।

वेतकरवीराकगुणा ।

करवीरोद्भवोनेत्रशोफकुष्ठव्रणापहः ।

अर्थ—सफेद कनेरका अर्क—नेत्ररोग, सूजन, कोढ़ और व्रणाविनाशक है ।

रक्तकरवीराकगुणा ।

चण्डातोत्थस्तुविषहृद्भक्षणेलेपनेसुहृत् ।

अर्थ—लाल कनेरका अर्क—भक्षण करनेमें विषनाशक और लेप करनेमें विशेष उपकारी है ।

धनूरबीजावगुणा ।

धनूरजोहरेछेपायूकाकृमिविषादिकम् ।

अर्थ—धतूरेका अर्क—लेपकरनेसे यूका, कृमि और विषदोषनाशक है ।

वासावगुणा ।

वासोद्भवोज्वरच्छर्दिमेहकुष्ठक्षयापहः ।

अर्थ—अडूसेका अर्क—ज्वर, वमन, प्रमेह, कोढ़ और क्षयरोगनाशक है ।

पपटावगुणा ।

पार्पटोहन्तिपित्तास्रभ्रमतृष्णारुफज्वरान् ।

अर्थ—पित्तपापडेका अर्क—रक्तपित्त, भ्रम, तृषा, कफ और ज्वरको हरे है ।

निम्बावगुणा ।

निम्बज श्रमतृदकासज्वगरुचिवमिप्रणुत् ।

अर्थ—नीमका अर्क—श्रम, तृषा, खाँसी, ज्वर, अरुचि और वमननिवारक है ।

गण्डमालाविनाशयेत् ॥ अंत्रवृद्धिरक्तदोषनाशयेदिति च स्मृतम् । अम्लवेतसतैलस्याप्येतएवगुणामता. ॥

अर्थ-पीलुका तेल-सारक, गरम तथा कोढ़, वात, क्षत, सूजन, पित्तरोग, कण्डू, गटमाला, अंत्रवृद्धि और रुधिरके दोषोंको दूर करेहै अमलवेतके तेलके गुणभी इसीके समान जानने ।

विशेषादितैलगुणा ।

शिशपागरुगण्डीरनिर्गुण्डीमरलादिजम् ।

तैलतुतुवरतित्तकटुकवातरक्तजित् ॥

विपकण्डूवातकफकुष्ठदुष्टप्रणाशयेत् ।

अर्थ-सीसां, अगर, गण्डीर, निर्गुण्डी और सरलादिकका तेल-कपेला, कडवा, चरपरा तथा वातरक्त, विप, खुजली, वात, कफ, कुष्ठ और दुष्टप्रणाको नष्ट करे है ।

पृथ्वीवादि तैलगुणा ।

पृथ्वीकानीपजीमूतहस्तिकर्णार्कमूलजम् । काम्पिष्ठकचैतै-
लन्तुतीक्ष्णपाकेकदुस्मृतम् ॥ सरमुष्णचतित्तचलघुकुष्ठ

कफापहम् । मेहमूर्च्छामदकृमिनाशनपरममतम् ॥ (रत्नाकर)

अर्थ-पृथ्वीका (हिंगुपत्री) जीमूत (देवदाली) मूली, हस्तिकर्ण, पलाश, नीप (कदम्ब) और कर्णालिका तेल-तीक्ष्ण, पचनेमें चरपरा, सारक, गरम, कडवा, हलका तथा कोढ़, कफ, प्रमेह, मूर्च्छा, मद और कृमिको दूर करे है ।

तैलं स्वयोनिगुणद्वद्वाग्भटेनाखिलमतम् ।

अतः शेषस्य तैलस्य गुणा ज्ञेया स्वयोनिवत् ॥

अर्थ-वाग्भटेने सर्व तैल स्वयोनि अर्थात् जिस २ औपधासे जो २ तैल उत्पन्न होताहै वह उमीके समान गुणकरे है ऐसा कहा है इसीमे जो तैल इस ग्रन्थमें नहीं कहे गये उनके गुण अपनी २ योनिके समान जानने ।

अथ गाहनयुक्ततैलगुणा ।

घेहोऽवगाहनेयुक्तः शरीरेऽवलमाहरेत् ।

शिगमुच्चैरोमकूपैर्धमनीभिश्च तर्पयेत् ॥

अर्थ—प्रथम तेलको मलकर पीछे जलसे स्नानकरे इसप्रकार करनेसे शरीरमें बल बढ़ता है तथा गिरामुस, रोमकूप और घमनीनाडियोंके द्वारा वृत्तिकारक है । शिरचितैलमहंनगुणः ।

नित्यस्नेहार्द्रशिरसः शिरः शूलनजायते । नखालित्यनपालित्यनकेशाः प्रपतन्ति च ॥ दृढमूलाश्च कृष्णाश्च भवन्ति च घनायता । इन्द्रियाणि प्रसीदन्ति सुदृग्भवति लोचनम् ॥

अर्थ—जो मनुष्य प्रतिदिन प्रस्तकमें तेल मलत है, उनके शिरःशूल नहीं उत्पन्न होता है तथा केशोंकी अल्पता, पकता और केश नहीं पतन होते हैं और दृढ मूलसहित, काले और सत्रन केश होजात हैं तथा इन्द्रियोंमें प्रसन्नता और नेत्रोंमें सुदृश्यता उत्पन्न होता है ।

घणतैलपरणगुणाः ।

कर्णप्रपूरणान्नित्यं न मन्यानहनुग्रहाः ।

नोच्चे श्रुतिर्नैवाधिर्यं न कर्णे वातजारुजः ॥ (राजरत्नम्)

अर्थ—जो मनुष्य कर्णमें नित्यप्रति तेल डालते हैं—उनके मन्यास्तम्भ, हनुग्रह, कानसम्बन्धी ऊँचा मुनना आदि दुः माध्यराग, चधिरेता और कानमें वातादि रोग उत्पन्न नहीं होते हैं ।

महंनेतैलगुणाः ।

“घृतादष्टगुणगुरु”

अर्थ—शरीरमें मलनेसे तेलमें घीकी अपेक्षा आठ गुण अधिक है ।

तैलनसेवयेद्दीमान्यस्य रुस्यचयद्रवेत् ।

विपसात्म्यगुणत्वाच्च योगे तन्न प्रयोजयेत् ॥

अर्थ—बुद्धिमान् पुरुषको चाहिये कि जिस तिसके दिये हुये तेलको सेवन नहीं करे और उसमें विषकी समानता होनेसे बिना विचारे किसी योगमें भी प्रयोग नहीं करे ।

इति श्रीशार्ङ्गिन्नामनिःशुद्धभूषणे तैलार्णवः समाप्तः ॥ १८ ॥

अथ अर्कवर्गः ।

अथातः मप्रवक्ष्यामि केवलार्कगुणप्रिये ।

अर्थ—इसके उपरान्त केवल अर्कके गुण कहना हूँ ।

गण्डमालांविनाशयेत् ॥ अत्रवृद्धिरक्तदोषनाशयेदितिचस्मृ-
तम् । अम्लवेतसतैलस्याप्येतएवगुणामता ॥

अर्थ-पीछुका तेल-सारक, गरम तथा कोढ़, वात, क्षत, सूजन, पित्तरोग, कण्डू, गडमाला, अत्रवृद्धि और रुधिरके दोषोंको दूर करेंगे अमलवेतके तेलके गुणभी इसीके समान जानने ।

शिशपादितैलगुणा ।

शिशपागरुगण्डीरनिर्गुण्डीसरलादिजम् ।

तैलतुतुवरतित्तकटुकवातरक्तजित् ॥

विपकण्डूवातकफकुष्ठदुष्टघ्नाञ्जयेत् ।

अर्थ-सीसां, अगर, गण्डीर, निर्गुण्डी और सरलादिकका तेल-कपेला, कड़वा, चरपरा तथा वातरक्त, वि०, खुजली, वात, कफ, कुष्ठ और दुष्टघ्नको नष्ट करे है ।

पृथ्वीयादितैलगुणा ।

पृथ्वीकानीपजीमूतहस्तिकर्णार्कमूलजम् । काम्पिल्लकचतै-
लन्तुतीक्ष्णपाकेकटुस्मृतम् ॥ सरमुष्णचतित्तचलघुकुष्ठ
कफापहम् । मेहमूर्च्छामदकृमिनाशनं परममतम् ॥ (रत्नाकर)

अर्थ-पृथ्वीका (हिंगुपत्री) जीमूत (देवदाली) मूली, हस्तिकर्ण, पलाश, नीप (कट्फ) और कर्बालेका तेल-तीक्ष्ण, पचनेमें चरपरा, सारक, गरम, कड़वा, हलका तथा कोढ़, कफ, प्रमेह, मूर्च्छा, मद और कृमिको दूर करे है ।

तैलस्वयोनिगुणद्वग्भाग्भटेनाखिलमतम् ।

अत रोपस्यतैलस्यगुगाजेया स्वयोनिवत् ॥

अर्थ-वाग्भट्टने सर्व तेल स्वयोनि अर्थात् जिस २ औषधीसे जो २ तेल उत्पन्न होताहै वह उसीके समान गुणकरे है ऐसा कहा है इसीसे जो तेल इस ग्रन्थमें नहीं कहे गये उनके गुण अपनी २ योनिके समान जानने ।

भयगाहनयुक्ततैलगुणा ।

स्नेहोऽवगाहनेयुक्तः शरीरेवलमाहरेत् ।

शिरामुखेरोमकूपैर्धमनीभिश्चतर्पयेत् ॥

अर्थ—प्रथम तेलको मलकर पीछे जलसे स्नानकरे इसप्रकार करनेसे शरीरमें बल बढ़ता है तथा शिरामुस, रोमकूप और धमनीनाडियोंके द्वारा वृत्तिकारक है ।

शिरचितैदमर्दनगुणः ।

नित्यस्नेहार्द्रशिरस शिर शूलनजायते । नखालित्यनपालित्यनकेशाः प्रपतन्ति च ॥ दृढमूलाश्च कृष्णाश्च भवन्ति च घनायताः । इन्द्रियाणि प्रसीदन्ति सुदृग्भवतिलोचनम् ॥

अर्थ—जो मनुष्य प्रतिदिन मस्तकमें तेल मलते हैं, उनके शिरगूल नहीं उत्पन्न होता है तथा केशोंकी अल्पता, पकता और केश नहीं पतन होते हैं और दृढ मूलसहित, काले और सघन केश होजाते हैं तथा इन्द्रियोंमें प्रसन्नता और नेत्रोंमें सुदृश्यता उत्पन्न होता है ।

घणतेलपूरणगुणाः ।

कर्णप्रपूरणान्नित्यनमन्यानहनुग्रहाः ।

नोच्चे श्रुतिनेवाधिर्यनकर्णेवातजारुज ॥ (राजरत्नम्)

अर्थ—जो मनुष्य कर्णमें नित्यप्रति तेल डालते हैं—उनके मन्यास्तम्भ, हनुग्रह, कानसम्बन्धी ऊँचा सुनना आदि दुःसाध्यरोग, बधिरता और कानमें वातादिरोग उत्पन्न नहीं होते हैं ।

मर्दनेतैलगुणाः ।

“घृतादष्टगुणगुरु”

अर्थ—शरीरमें मलनेसे तेलमें घीकी अपेक्षा आठ गुण अधिक है ।

तेलनसेवयेद्धीमान्यस्य रुस्यचयद्रवेत् ।

विपसात्म्यगुणत्वाच्च योगे तन्न प्रयोजयेत् ॥

अर्थ—बुद्धिमान् पुरुषको चाहिये कि जिस तिसके दिये हुये तेलको सेवन नहीं करे और ठगमें विपकी समानता होनेसे बिना विचारे किसी योगमें भी प्रयोग नहीं करे ।

इति श्रीशास्त्रिप्रामनिन्दुभूषणे तेजस्य स्नातः ॥ १८ ॥

अथ अर्कवर्गः ।

अथात मप्रवक्ष्यामि केवलार्कगुणप्रिये ।

अर्थ—इसके उपरान्त केवल अर्कके गुण कहता हूँ ।

हरीतक्यकगुणा ।

हरीतक्याःशूलकृच्छ्रकामलानाहनाशनः ।

अर्थ-हरडका अर्क-शूल, मूत्रकृच्छ्र, कामला और आनाह रोगनाशक है ।
विभीतक्यकगुणा ।

विभीतकस्यतृच्छर्दिकफकासविनाशनः ।

अर्थ-बहेडेका अर्क-तृषा, वमन, कफ और खाँसीको हरे है ।
आमलक्यकगुणा ।

आमलक्यास्त्रिदोषापित्तमोहविनाशयेत् ।

अर्थ-आमलेका अर्क-त्रिदोष, रक्तपित्त और मोहनाशक है ।
नागराकगुणाः ।

शुण्ठ्याविवन्धामवातशूलश्वासबलासहत् ।

अर्थ-साँठका अर्क-मलचद्वता, आमवात, शूल, श्वास और कफनाशक है ।
आद्रकाकगुणा ।

आद्रकस्यज्वरदाहंहरेद्रुच्यग्निदीप्तिकृत् ।

अर्थ-अदरकका अर्क-ज्वर और दाहको हरे है, रुचिकारक अग्निप्रदीपक है ।
पिप्पल्याकगुणा ।

पिप्पल्याःश्वासकासामवाताशौज्वरशूलहृत् ।

अर्थ-पीपलका अर्क-श्वास, खाँसी, आमवात, बवासीर, ज्वर और शूलको नष्ट करे है ।
मरीचकगुणा ।

मरीचकश्वासकृमीन्हरेत्सर्वान्गदानपि ।

अर्थ-कालीमिर्चका अर्क-श्वास, कृमि और अन्यान्य सब रोगोंको नाश करे है ।
पिप्पलीकगुणा ।

प्रन्थिकस्यप्लीहगुल्मकफवातहर पर ।

अर्थ-पीपलामूलका अर्क-प्लीहा, गुल्म, कफ और वातविनाशक है ।
चव्याकगुणा ।

चव्याकोऽत्यन्तरुचिकृद्धिरोपाहृदजापह ।

अर्थ-चप्पका अर्क-अत्यन्तरुचिकारक और विषेपकरके गुदरोगनाशकर है ।

गजपिप्लवर्गगुणा ।

अर्कस्तुगजपिप्लव्यावातश्लेष्माग्निमान्द्यनुत् ।

अर्थ—गजपीप्लका अर्क—वात, कफ और मदाग्निनाशक है ।

चित्रकावगुणा ।

चित्रकस्याग्निवृत्तासग्रहणीकफशोपहा ।

अर्थ—चीतेका अर्क—अग्निजनक तथा खोंसी, सग्रहणी, कफ और शोपको हरे है ।

यमान्यकगुणा ।

यमान्या पाचनोरुच्योदीपनं शुक्रशूलहृत् ।

अर्थ—अजवायनका अर्क—पाचक, रुचिकारक, दीपन तथा शुक्र और शूलनाशक है ।

अजमोदावगुणा ।

अजमोदोद्वोवातकफहावस्तिशोधनः ।

अर्थ—अजमोदका अर्क—वात कफनाशक और वस्तिशोधक है ।

पारसीयमान्यकगुणा ।

पारसीकयमान्यास्तुग्राहीपाचकमादकं ।

अर्थ—खुरासानी अजवायनका अर्क—मलरोधक, पाचक और मदकारक है ।

जीरकावगुणा ।

जीरकस्यतुसग्राहीगर्भाशयविशुद्धिकृत् ।

अर्थ—जीरेका अर्क—ग्राही और गर्भाशयशोधक है ।

कृष्णजीरकावगुणा ।

कृष्णजीरस्यचक्षुष्योगुल्मच्छर्द्यतिसारजित् ।

अर्थ—कालेजीरेका अर्क—नेत्रोंको हितकारी तथा गुल्म, यमन और अतिसारको दूरकरे है ।

धारवीर्जावगुणा ।

कारव्यावलकृच्छार्कोज्वरघ्न पाचनं सरः ।

अर्थ—कलौंजीका अर्क—वल्कारक, ज्वरनाशक, पाचक और सारक है ।

धान्यकगुणा ।

धान्यकस्यतृपादाहवमिश्वासत्रिदोषजित् ।

अर्थ—धान्येका अर्क—तृपा, दाह, यमन, श्वास और त्रिदोषनाशक है ।

शतपुष्पाङ्गुणा ।

मिश्याज्वरानिलश्लेष्मव्रणशूलक्षिरोगहृत् ।

अर्थ-सौंफका अर्क-ज्वर, वात, कफ, व्रण, शूल और नेत्ररोगनाशक है ।

मिश्रेपाङ्गुणा ।

मिश्रेयायावह्निमान्द्ययोनिशूलकृमीन्हरेत् ।

अर्थ-सोयेका अर्क-मन्दाग्नि, योनिशूल और कृमिनाशक है ।

ज्वालामरिचार्कगुणा ।

ज्वालामरीचकस्यापस्मारभृतत्रिदोषनुत् ।

अर्थ-लालमिर्चका अर्क-अपस्मार, भृत व त्रिदोषनाशक है ।

मेथिकाङ्गुणा ।

मेथिकाया श्लेष्मवातज्वरामकफनाशन ।

अर्थ-मेथीका अर्क-श्लेष्म, वात, ज्वर, आम और कफनाशक है ।

वनमेथिषाङ्गुणा ।

वनमेथ्या सर्वरोगान्हरेत्कुञ्जरवाजिनाम् ।

अर्थ-वनमेथीका अर्क-हाथी और घोड़ोंके मवं गेमांको हरे है ।

चन्द्रसूर्यगुणा ।

चन्द्रसूरस्यद्विकासृग्वातहृत्पुष्टिवर्द्धन ।

अर्थ-हालोका अर्क-इचकी, रुधिरविकार और वातनाशक है तथा पुष्टिवर्द्धक है ।

हिंगुगुणा ।

हिङ्गुन पाचनोरुच्यःकृमिशूलोदरापह ।

अर्थ-हिंगका अर्क-पाचन, रुचिकागक तथा कृमि, शूल और उदररोग-निवारक है ।

वचार्कगुणा ।

वचायावह्निवमिकृद्विबन्धाध्मानशूलहृत् ।

अर्थ-वचाका अर्क-अग्निजनक, वमनकारक तथा विषघ, आध्मान और शूलको हरे है ।

पारसीकवचाङ्गुणा ।

पारसीकवचायास्तुभूतोन्मादबलंहरेत् ।

अर्थ-परासानी वचाका अर्क-भूतोन्माद और बलनाशक है ।

कुलिजनार्कगुणा ।

कुलिजनस्यस्वरकृद्धत्कण्ठमुखशोधनः ।

अर्थ—कुलिजनका अर्क—स्वरको शुद्ध करनेवाला तथा कण्ठ और मुख-शोधक है ।

स्थूलग्रन्थिवचान्गुणा ।

स्थूलग्रन्थिवचस्यार्कविशेषात्कफकासहृत् ।

अर्थ—स्थूलग्रन्थिवचका अर्क—विशेष करके कफनाशक है ।

द्वीपान्तरवचायगुणा ।

द्वीपान्तरवचायास्तुहरेच्छूलफिरङ्गकम् ।

अर्थ—चोपचीनीका अर्क—शूल और फिरंगरोगनाशक है ।

हृत्पुपार्कगुणा ।

हृत्पुपायाहरेत्प्रीहविपमोहञ्चदारुणम् ।

अर्थ—हाऊवेरका—अर्क—प्रीहा, विप और दारुणमूर्च्छाको हरेहै ।

क्षुद्रवपुपायगुणा ।

वपुपायाऽसमीराशोग्रहणीगुल्मशूलहृत् ।

अर्थ—छोट्टेहाऊवेरका अर्क—वात, घवासीर, समहणी गुल्म और शूल-नाशक है ।

विडङ्गायगुणा ।

विडङ्गस्योदरश्लेष्मकृमिवातविवन्धनुत् ।

अर्थ—वायविडङ्गका अर्क—उदरोग, कफ, कृमि, वात और विवध नाशक है ।

तुम्बुरोरुगुणा ।

तुम्बुरोर्गुरुताश्वासप्रीहागुल्मकृमीन्हरेत् ।

अर्थ—तुम्बुरुका अर्क—शरीरका भारीपन, श्वास, प्रीहा, गुल्म और कृमिको दूर करे है ।

वशलोचनार्कगुणा ।

वंशलोचनजस्तृष्णाक्षयश्वासज्वरान्हरेत् ।

अर्थ—वशलोचनका अर्क—तृष्णा, क्षय, श्वास और ज्वरको हरेहै ।

समुद्रफेनार्कगुणा ।

समुद्रफेनज'शीतोरेचक कफहृत्पर' ।

अर्थ—समुद्रफेनका अर्क—शीतल, दस्तार और कफनाशक है ।

जीवकाङ्गुणा ।

जीवकोत्थ शुक्रकफवलकृच्छीतलःसमः ।

अर्थ-जीवका अर्क-शुक्र, कफ और वलकारक और समशीतल है ।

ऋषभरात्रिगुणा ।

आर्षभपित्तदाहासकासवातक्षयापहः ।

अर्थ-ऋषभकका अर्क-पित्त दाह, रुधिरविकार, सौंसी, वात और क्षयको क्षयकरे है ।

मेढ्रावगुणा ।

सुनामेदोद्भवार्कस्तुदृश्यःस्तन्यःकफावहः ।

अर्थ-मेदका अर्क-नेत्रोंको हितकारी, स्तनामें दूध करनेवाला और कफकारी है ।

महामदाङ्गुणा ।

महामेदोद्भव शीतोक्तवातज्वरप्रणुत ।

अर्थ-महामेदाका अर्क-शीतल तथा वात, रक्त और ज्वरनाशक है ।

काकोलीपङ्गुणा ।

काकोल्या शुक्रलःशीतोपित्तशोषज्वरापहः ।

अर्थ-काकोलीका अर्क-शुक्रननक, शीतल तथा पित्त, शोष और ज्वरनाशक है ।

क्षीरकाकोलीपङ्गुणा ।

क्षीरकाकोलिकाजातोवृहणोदाहवातहा ।

अर्थ-क्षीरकाकोलीका अर्क-पुष्टिकारक तथा दाह और वातविनाशक है ।

ऋद्ध्यावर्गगुणा ।

ऋद्ध्यावर्गस्रिदोषभोरक्तपित्तविनाशकः ।

अर्थ-ऋद्धिका अर्क-घलकारी, त्रिदोषनाशक और रक्तपित्तनाशक है ।

वृद्ध्यावर्गगुणा ।

वृद्ध्यावर्गगत शीतःक्षतकामक्षयापहः ।

अर्थ-वृद्धिका अर्क-शीतल तथा क्षत रोगोंमें और क्षयरोगनाशक है ।

मधुपङ्गुणा ।

मधुपङ्गुणा केशकरःस्वर्ग्य पित्तानिलास्रजित् ।

अर्थ-मधुपङ्गुणा अर्क-नेत्रोंको उत्तम करनेवाला, स्वरको उत्तम करनेवाला तथा पित्त, वात और रुधिरके विकाराको हरे है ।

जलमधुयष्टचक्रगुणा ।

जलयष्ट्याविषच्छर्दितृष्णाग्लानिक्षयापहः ।

अर्थ—जलमुलेठीका अर्क—विष, वमन, तृषा, ग्लानि और क्षयरोगनाशक है ।

काम्पिष्ठावर्गगुणा ।

काम्पिष्ठस्यविरेकीस्यान्मेहनस्यविकारनुत् ।

अर्थ—कवीलेका अर्क—विरेचक और मूत्रविकारनिवारक है ।

आरग्वधार्चगुणा ।

आरग्वधस्यपित्तास्रवातोदावर्तशूलहृत् ।

कण्डूमेहश्वासकासकृमिकुष्ठज्वरापहः ॥

अर्थ—अमलतासका अर्क—रक्तपित्त, वात, उदावर्त, शूल, कण्डू, प्रमेह, श्वास, रोंसी, कृमि, कोढ़ और ज्वरनाशक है ।

भूनिम्बार्चगुणा ।

भूनिम्बस्यतृपाकुष्ठज्वरघ्नकृमिप्रणुत् ।

अर्थ—चिरायतेका अर्क—तृषा, कोढ़, ज्वर, घ्न और कृमिनाशक है ।

वत्सावर्गगुणा ।

भद्रमानस्तुपित्तास्रकृमिवीसर्पकुष्ठनुत् ।

अर्थ—इन्द्रजीका अर्क—रक्तपित्त, कृमि, विसर्प और कुष्ठको नष्ट करे है ।

मदनपट्टावर्गगुणा ।

मदनोत्थश्छर्दनेनचतुर्थज्वरकादिहृत् ।

अर्थ—मैनुफल्का अर्क—वमनकारक और चातुर्थिक (चौथिया) ज्वरनिवारक है ।

रास्नावर्गगुणा ।

रास्नोद्भवःसमीरास्रवातशूलोदरापहः ।

अर्थ—रास्नाका अर्क—वातरक्त, वातशूल और उदररोगनाशक है ।

नागभिद्रावर्गगुणा ।

नागभिद्रोद्भवाभोगीलूताद्यासुविकारहृत् ।

अर्थ—नाकुलीका अर्क—सर्प, मकड़ी और मूसे आदिके विषको हरे है ।

माचिकावर्गगुणा ।

माचिकाजस्तुपित्तास्रपकातीसारहालघुः ।

अर्थ—मोईयेका अर्क—हृत्का, रक्तपित्त और पक्षातिसारनाशक है ।

तेजस्विन्यर्गुणा ।

तेजस्विन्याश्वासकासकफहृद्भिदीपनः ।

अर्थ-तेजबलका अर्क-श्याम, खोँसी और कफनाशक है तथा अग्निप्रदीपक है ।

ज्योतिष्मत्याङ्गुणा ।

ज्योतिष्मत्यावान्तिकगेवह्निबुद्धिस्मृतिप्रदः ।

अर्थ-भालकायुनीका अर्क-वमनकारक तथा अग्नि, बुद्धि और स्मरण शक्तिवर्धक है ।

कुष्ठार्गुणा ।

कुष्ठस्यहन्तिवातातृकासकुष्ठमरुत्कफान् ।

अर्थ-कूठका अर्क-वातारक्त, खोँसी, कोढ़, वात और कफनाशक है ।

पौष्करार्गुणा ।

पौष्करस्यारुचिश्वासान्विशेषात्पार्श्वशूलनुत् ।

अर्थ-पोद्दारमूलका अर्क-अरुचि, श्याम और विशेषकरके पमवाड़ेकी पीडाको दूर करे है ।

क्षीरिण्यङ्गुणा ।

हेमाङ्गीयारेकवान्तिकरकण्डूविनाशनः ।

अर्थ-स्वर्णक्षीरीका अर्क-विरेचक, वमनकारक और कण्डूनाशक है ।

शृङ्गपर्णङ्गुणा ।

शृङ्गीहरेदूर्ध्वातहिकातृष्णाक्षयज्वरान् ।

अर्थ-काकडाँडिगीका अर्क-उध्ववात, दिचकी, तृषा, क्षय और ज्वरनाशक है ।

कदम्बङ्गुणा ।

कदम्बलोत्थश्वासकासप्रमेहार्शोऽरुचिहरेत् ।

अर्थ-कापपलका अर्क-श्याम, खोँसी, प्रमेह, यवासीर और अरुचिको दूर करे है ।

भाङ्ग्यङ्गुणा ।

भाङ्ग्यहरेत्कफश्वासपीनसज्वरमारुतान् ।

अर्थ-भारलीका अर्क-कफ, श्याम, पीनस, ज्वर और वातविनाशक है ।

पापाणभेदयत्तुणा ।

पापाणभेदजोयोनिरोगहृच्छ्वासगुल्महा ।

अर्थ-पापाणभेदका अर्क-योनिरोग, श्वास और गुल्मनाशक है ।

धातक्यर्गगुणा ।

धातकीजस्तृपासारविषकीटविसर्पजित् ।

अर्थ-वायके फूलोंका अर्क-तृपा, जितिसार, विष, कृमि और विसर्प-रोगनाशक है ।

समद्राकगुणा ।

माज्जिष्टजोविपश्लेष्मरक्तातीसारकुष्ठहा ।

अर्थ-मजीठका अर्क-विष, श्लेष्म, रक्तातिसार और कुष्ठनाशक है ।

कुसुम्भार्कगुणा ।

कुसुम्भजोवर्णकरोरक्तपित्तकफापह ।

अर्थ-कसूमका अर्क-वर्णको सुदर करनेवाला तथा रक्तपित्त और कफनाशक है ।

लाक्षाकगुणा ।

लाक्षाजःकृमिवीसर्पत्रणोरक्षतकुष्ठहा ।

अर्थ-लासका अर्क-कृमि, विसर्प, घृण, उरक्षत और कुष्ठनाशक है ।

हरिद्रार्कगुणा ।

हरिद्रायामेहशोथत्वग्दोषत्रणपाण्डुनुत् ।

अर्थ-हलदीका अर्क-प्रमेह, सृजन, त्वचाके दोष, त्रण और पाण्डुरोग-नाशक है ।

आरण्यहरिद्रार्कगुणा ।

आरण्यकहरिद्राया कुष्ठवातासनाशन ।

अर्थ-वनहलदीका अर्क-कोष्ठ, वात और रक्तविकारविनाशक है ।

कर्पूरहरिद्रार्कगुणा ।

कर्पूरकहरिद्रायाःसर्वकण्डूविनाशन ।

अर्थ-कपूरहलदीका अर्क-सर्वप्रकारके कण्डूनाशक है ।

दारुहरिद्रार्कगुणा ।

दारुव्याविशेषतोलैपात्रैककर्णस्यरोगनुत् ।

अर्थ-दारुहलदीका अर्क-विशेष कर्णके छेप करनेमें नेत्ररोग और कर्ण-रोगको हरे ।

रसाञ्जनार्कगुणा ।

रसाञ्जनोद्भवोनेत्रविकारघ्नोपनुत् ।

अर्थ-रसाञ्जन अर्थात् रसातका अर्थ-नेत्रविकार और घण्टोपनिवारक है ।
अयस्सुजार्कगुणा ।

वाकुच्याःकृमिविष्टम्भपाण्डुशोफकफापहः ।

अर्थ-वायुर्वाका अर्क-कृमि, विष्टम्भ, पाण्डु, सूजन और कफनाशक है ।
चक्रमहाशङ्कगुणा ।

प्रपुष्पाटस्यहन्त्येवकण्डूदद्रुविपानिलान् ।

अर्थ-चक्रवडका अर्क-खुजली, टाढ़ विष और वातविनाशक है ।
भतिविषार्कगुणा ।

विषजोदीप्तिकार्य्यर्कःकफपित्तातिसारहा ।

अर्थ-अतीमका अर्क अभिप्रदीपक तथा कफ, पित्त और अतिसारनाशक है ।
लोधागुणा ।

लोभजःशीतलोभाहीचक्षुष्यःकफपित्तनुत् ।

अर्थ-लोधका अर्क-शीतल, मललोपक, नेत्रोंको हितकारी तथा कफ और पित्तनाशक है ।
घृत्स्वकार्कगुणा ।

बृहत्पत्रोद्भवोनेत्र्योज्वगतीसारशोथहृत् ।

अर्थ-पठानीलोधका अर्थ-नेत्रोंको हितकारी, ज्वर, अतिगार और सूजनको हर्तृ है ।
महातरार्कगुणा ।

भल्लातकोद्भवोहन्त्याज्ज्वरोदरकृमिघणान् ।

अर्थ-भिल्लावेका अर्थ-ज्वर, उदररोग, कृमि और घणनाशक है ।
गङ्गुच्यार्कगुणा ।

गुङ्गुच्यादीपनश्वासकासपाण्डुज्वरापहः ।

अर्थ-गिलोयका अर्थ-दीपन तथा श्वास, रसोमी, पाण्डुरोग और ज्वरको हर्तृ है ।
चिन्तामण्युणा ।

चैत्रश्चैष्महरोमल्योलबुक्तणश्चपाचनः ।

अर्थ-चैत्रका अर्थ-पाचनाशक, चैत्राग्न्य, हृत्का, गरम और पाचक है ।

काग्मर्त्यकगुणा ।

गाम्भारीजोभ्रान्तिवृष्णाशूलाशोविषदाहनुत ।

अर्थ-कुम्भेरका अर्क-भ्रान्ति, वृषा, शूल, ववामीर, विष और दाह-
नाशक है ।

पाटलावर्गगुणा ।

पाटल्याश्छर्दिशोफासतृष्णादाहारुचीहरेत् ।

अर्थ-पाटलका अर्क-वमन, सूजन, म्विगविकार, वृषा, दाह और
अरुचिनिवारक है ।

अग्निमन्थावर्गगुणा ।

अग्निमन्थोद्रव शोफकृमिपाण्डुवलासनुत ।

अर्थ-अरणीका अर्क-सूजन, कृमि, पाण्डु, और कफनाशक है ।

श्वोनाकावर्गगुणा ।

श्वोनाकजस्तुगुल्मार्श कृमिहृद्गुचिदीप्तिकृत् ।

अर्थ-श्वोनाकका अर्क-गुल्म, ववामीर और कृमिनाशक और
रुचिदीपक है ।

शालिपण्यावर्गगुणा ।

शालिपण्याक्षतकृमिज्वरच्छर्द्यतिसारहा ।

अर्थ-शालिपण्याका अर्क-क्षतगोग, कृमि, ज्वर, वमन और अतिसार
निवारक है ।

पृथिनपण्यावर्गगुणा ।

पृथिनपण्याज्वरश्वासरक्तातीसारदाहहृत् ।

अर्थ-पिठवनका अर्क-ज्वर, श्वास, रक्तातिसार और दाहनाशक है ।

पृथ्व्यावर्गगुणा ।

वार्त्ताक्याज्वरवैरस्यमलारोचकशूलहा ।

अर्थ-वृहती अर्थात् कट्राईका अर्क-ज्वर, मुग्धता विग्नता, मन्त्रोप,
अरुचि और शूलनाशक है ।

कण्टकावर्गगुणा ।

कण्टकावर्गगर्भकरपाचन कफकासहा ।

अर्थ-सफेद कटेरीका अर्क-गर्भकारक, पाचन तथा कफ और रोगोंको
दूर करे है ।

उण्टकायकगुणा ।

कण्टकार्यादीपनश्चश्लेष्मशोफरुजापहः ।

अर्थ-कटेरीका अर्क-अग्निप्रदीपक तथा श्लेष्म और सृजनको दूर करे है ।
गाधुरायगुणा ।

गोधुरस्याश्मरीमेहकृच्छ्रहृद्दोगवातहा ।

अर्थ-गोधुरका अर्क-पथरी, प्रमेह, मृत्रकृच्छ्र, हृदयरोग, और वात विनाशक है ।

जीवन्त्यावगुणा ।

जीवन्त्यासारहृन्नेत्रोदोषत्रितयनाशनः ।

अर्थ-जीवन्तीका अर्क-नेत्रोंको हितकारी तथा त्रिदोष और अतिगारनाशक है ।

मुद्रपण्यगुणा ।

मुद्रपण्याःशोफदाहग्रहण्यशोऽतिसारहृत् ।

अर्थ-मुगवनका अर्क-सृजन, दाह, स्रग्ग्रहणी और अतिसारनिवारक है ।

मापपण्यगुणा ।

मापपण्याःशुक्रकरोवातपित्तज्वरास्रजित् ।

अर्थ-मपवनका अर्क-शुक्रजनक तथा वात पित्त और रुधिरके दोषोंको दूर करे है ।

स्वतरण्डावगुणा ।

पञ्चागुलोद्भव गूलशिरपीडोदरापहः ।

अर्थ-सफेद अण्डका अर्क-गूल, शिरकी पीडा और उदररोगनाशक है ।
स्वतरण्डागुणा ।

रुबुकात्थोद्भवश्वासकासकुष्ठाममारुतान् ।

अर्थ-लाल अदका अर्क-श्वास, खाँसी, कोद और आमवातनाशक है ।
मन्दागुणा ।

मन्दारजोवातकुष्ठकण्डूव्रणविपापहः ।

अर्थ-मन्दारका अर्क-वात, कुष्ठ, कण्डू, व्रण और विषविनाशक है ।
मन्दागुणा ।

अकर्क्यर्कः प्रहृद्युल्मार्शश्चैष्मोदरकृमीन्हरेत् ।

अर्थ-आफना अर्क-झीरा, गुन्म, यवासार, श्लेष्म, उदररोग और कृमिनाशक है ।

वज्रपक्वगुणा ।

वज्रीजोलेपतोहन्याद्व्रणशोफोदरव्रणान् ।

अर्थ—वज्री (एकप्रकारका सेडुड) का अर्क-लेपसे व्रण, सूजन और उदररोगनाशक है ।

सातलाकगुणा ।

सातलोत्थ.कफानाहपित्तोदावर्त्तशोफहा ।

अर्थ—सातलाका अर्क-कफ, आनाह, पित्त, उदावर्त्त और सूजनको हरे है ।

हांगल्पकगुणा ।

लाङ्गल्यालेपतोहन्याच्छोफाशोत्रणरोगहृत् ।

अर्थ—कलिहारीके अर्कका लेप करनेसे सूजन, बवासीर और व्रणको हरेहै ।

चेतकरवीराकगुणा ।

करवीरोद्भवोनेत्रशोफकुष्ठव्रणापह. ।

अर्थ—सफेद कनेरका अर्क-नेत्ररोग, सूजन, कोढ़ और व्रणाविनाशक है ।

रक्तकरवीराकगुणा ।

चण्डातोत्थस्तुविषहृद्भक्षणेलेपनेसुहृत् ।

अर्थ—लाल कनेरका अर्क-भक्षण करनेमें विषनाशक और लेप करनेमें विशेष उपकारी है ।

धनूरबीजाकगुणा ।

धनूरजोहरेलेपायूकाकृमिविपादिकम् ।

अर्थ—धनूरेका अर्क-लेपकरनेसे यूका, कृमि और विषदोषनाशक है ।

वासाकगुणा ।

वासोद्भवोज्वरच्छर्दिमेहकुष्ठक्षयापह ।

अर्थ—अडूसेका अर्क-ज्वर, वमन, प्रमेह, कोढ़ और क्षयरोगनाशक है ।

पर्पटाकगुणा ।

पार्पटोहन्तिपित्तास्रभ्रमतृष्णाकफज्वरान् ।

अर्थ—पित्तपापडेका अर्क-रक्तपित्त, भ्रम, तृषा, कफ और ज्वरको हरे है ।

निम्बजकगुणा ।

निम्बज श्रमतृदकासज्वरारुचिवमिप्रणुत् ।

अर्थ—नीमका अर्क-श्रम, तृषा, खाँसी, ज्वर, अरुचि और वमनको हरे है ।

कण्टकायकगुणा ।

कण्टकार्यादीपनश्चश्लेष्मशोफरुजापहः ।

अर्थ-कटेरीका अर्क-अग्निप्रदीपक तथा श्लेष्म और सृजनको दूर करे है ।

गोधुरारगुणा ।

गोधुरस्याश्मरीमेहकृच्छ्रहृद्गवातहा ।

अर्थ-गोधुरका अर्क-पयरी, प्रमेह, मूत्रकृच्छ्र, हृदयरोग और वात विनाशक है ।

जीवन्त्यागुणा ।

जीवन्त्या सारहृन्नेत्र्योदोषत्रितयनाशनः ।

अर्थ-जीवन्तीका अर्क-नेत्राको हितकारी तथा त्रिदोष और अतिसारनाशक है ।

मुद्रपण्यगुणा ।

मुद्रपण्याःशोफदाहग्रहण्यशोऽतिसारहृत् ।

अर्थ-मुगवनका अर्क-सृजन, दाह, समहणी और अतिसारनिवारक है ।

मापपण्यगुणा ।

मापपण्यां शुक्रकरोवातपित्तज्वरास्रजित् ।

अर्थ-मपवनका अर्क-शुक्रजनक तथा वात पित्त और रुधिरके दोषोंको दूर करे है ।

पञ्चागुलोद्भवगुणा ।

पञ्चागुलोद्भव गलधिरपीडोदरापहः ।

अर्थ-सफेद अण्डका अर्क-शल, शिरकी पीडा और उदररोगनाशक है ।

रुक्मिण्यगुणा ।

रुक्मिण्योद्भवश्वासकासकुष्ठाममारुतान् ।

अर्थ-लाल अण्डका अर्क-भाग, खौसी, कोठ और आमवातनाशक है ।

मन्दारगुणा ।

मन्दारजोवातकुष्ठकण्डूव्रणविषापहः ।

अर्थ-मन्दारका अर्क-वात, कुष्ठ, कण्डू, व्रण और विषविनाशक है ।

अक्यकगुणा ।

अक्यकं पीडगुल्मार्थं श्लेष्मोदरकृमिन्दरेत् ।

अर्थ-आयका अर्क-पीडा, गुल्म, यवासीर, श्लेष्म, उदररोग और कृमिनाशक है ।

वज्रपकं गुणा ।

वज्रीजोलेपतोहन्याद्रणशोफोदरव्रणान् ।

अर्थ-वज्री (एकप्रकारका सेडुड) का अर्क-लेपसे व्रण, सूजन और उदररोगनाशक है ।

सातलाकगुणा ।

सातलोत्थ.कफानाहपित्तोदावर्त्तशोफहा ।

अर्थ-सातलाका अर्क-कफ, आनाह, पित्त, उदावर्त्त और सूजनको हरे है ।

लागल्यकगुणा ।

लागल्यालेपतोहन्याच्छोफाशौवणरोगहृत् ।

अर्थ-कलिहारीके अर्कका लेप करनेसे सूजन, बवासीर और व्रणको हरेहै ।

श्वेतकरवीराकगुणा ।

करवीरोद्भवोनेत्रशोफकुष्ठव्रणापह. ।

अर्थ-सफेद कनेरका अर्क-नेत्ररोग, सूजन, कोढ़ और व्रणाविनाशक है ।

रक्तकरवीराकगुणा ।

चण्डातोत्थस्तुविपहृक्षणेलेपनेसुहृत् ।

अर्थ-लाल कनेरका अर्क-भक्षण करनेमें विपनाशक और लेप करनेमें विशेष उपकारी है ।

धतूरोज।कगुणा ।

धतूरोजोहरेलेपायूकाकृमिविपादिकम् ।

अर्थ-धतूरेका अर्क-लेपकरनेसे यूका, कृमि और विपदोपनाशक है ।

वासाकगुणा ।

वासोद्भवोज्वरच्छर्दिमेहकुष्ठक्षयापह ।

अर्थ-अडुसेका अर्क-ज्वर, वमन, प्रमेह, कोढ़ और क्षयरोगनाशक है ।

पप्टाकगुणा ।

पार्पटोहन्तिपित्तास्रभ्रमतृण्णाकफज्वरान् ।

अर्थ-पित्तपापडेका अर्क-रक्तापित्त, भ्रम, तृषा, कफ और ज्वरको हरे है ।

निम्बाकगुणा ।

निम्बज श्रमतृदकासज्वरारुचिवमिप्रणुत् ।

अर्थ-नीमका अर्क-श्रम, तृषा, त्रोंमी, ज्वर, अरुचि और वमननिवारक है ।

महानिम्बार्कगुणा ।

महानिम्बोद्भवोगुल्ममूषिकाविपनाशनः ।

अर्थ-वकायननीमका अर्क गुल्म और मूषिके विपको हरे है ।

पारिभद्रावंगुणा ।

पारिभद्रोऽनिलश्लेष्मशोफमेदकृमिप्रणुत ।

अर्थ-फरहदका अर्क-वात, श्लेष्म, शोफ, मेद और कृमिविनाशक है ।

काञ्चनारवंगुणा ।

काञ्चनारोगण्डमालागुदभ्रशत्रणापहः ।

अर्थ-कचनारका अर्क-गण्डमाला, गुदभ्रश और म्रणविनाशक है ।

कोविदारवंगुणा ।

कोविदारस्तुपित्ताक्षप्रदरक्षयकासहा ।

अर्थ-लालकचनारका अर्क-पित्त, रुधिरविकार, क्षय और रोंगीको हरे है ।

रक्तशोभाक्षनावंगुणा ।

शोभाक्षनाकौरुचिकृच्छुकलोग्राहिदीपनः ।

अर्थ-लालसंजिनेका अर्क-रुचिकारक, गुरुजनक, मलगेधक और दीपन है ।

श्वेतशोभाक्षनावंगुणा ।

मधुशिग्रुद्भवोहन्याद्विद्रधिश्चययुक्कमीनः ।

अर्थ-मधुशिग्रु वा सपेद संजिनेका अर्क-विद्रधि, मूजन और कृमिगं
गनाशक है ।

शिग्रुजार्कगुणा ।

शिग्रुजोविपहृन्नेत्र्यस्तस्थनस्याच्छिरोर्तिहृत् ।

अर्थ-सामान्यसंजिनेका अर्क-नेत्राको हितकारी, विपविनाशक और
हृत्सका नासलेनेसे शिग्रुकी पीडा दूर होती है ।

गिरिकर्ण्यवंगुणा ।

गिरिकर्ण्याः कर्णशूलशोफत्रणविषापहः ।

अर्थ-कोपलीका अर्क-कर्णशूल, मूजन, म्रण और विपविनाशक है ।

सिन्धुवारवंगुणा ।

सिन्धुवारोद्भवोहन्तिशूलशोफाममारुतान् ।

अर्थ-समहादका अर्क-शूल, मूजन और आमसतताशक है ।

निगुण्डवंगुणा ।

निगुण्डवर्कहरेजन्तुव्रणकुष्ठारुचिलघु ।

अर्थ-निगुण्डीका अर्क-हलका तथा कृमि, व्रण, कोढ़ और अरुचिनाशक है ।
घुटजावगुणा ।

कौटजोदीपनः शीत कफतृणामकुष्ठजित् ।

अर्थ-कुडेका अर्क-दीपन, शीतल तथा कफ, तृपा, आम और कुष्ठनाशक है ।
वरञ्जावगुणा ।

कारञ्जः कफगुल्मार्शो व्रणकृमिरुजापह ।

अर्थ-करजका अर्क-कफ, गुल्म, ववासीर, व्रण और कृमिरोगनाशक है ।
घृतकरञ्जावगुणा ।

घृतकारञ्जकोभेदी वातार्शः कृमिकुष्ठजित् ।

अर्थ-घृतकरजका अर्क-भेदक तथा वात, ववासीर, कृमि और कुष्ठनाशक है ।
वरञ्जावगुणा ।

काञ्जोवान्तिवातार्शः कृमिकुष्ठप्रमेहजित् ।

अर्थ-करञ्जयेका अर्क-वमन, वात, ववासीर, कृमि, कोढ़ और प्रमेहनाशक है ।
ध्वेतगुञ्जावगुणा ।

उच्चटार्क केशकरो वातपित्तकफापह ।

अर्थ-सफेद घुघुचीका अर्क-केशाको उत्पन्न करनेवाला तथा वात, पित्त और कफनाशक है ।
रत्नगुञ्जावगुणा ।

गुञ्जाया हरतेश्वासमुखशोषश्रमज्वरान् ।

अर्थ-घुघुचीका अर्क-श्वास, मुखशोष, श्रम और ज्वरनाशक है ।
शङ्खगिम्पवगुणा ।

कपिकच्छूद्रवो वृष्यो वृहणो वाजिकर्मकृत् ।

अर्थ-काष्ठिका अर्क-वीर्यवर्द्धक, पुष्टिकारक और वाजीकरण है ।
मांसरोहिण्यवगुणा ।

मांसरोहिण्युद्रवस्तु वृष्यो दोषत्रयापह ।

अर्थ-मांसरोहिणीका अर्क-वीर्यवर्द्धक और त्रिदोषनाशक है ।
चिह्नरावगुणा ।

चेह कुर्व्याद्धातुपुष्टितत्फलमाग्रे जनान् ।

महानिम्बार्कगुणा ।

महानिम्बोद्भवोगुल्ममृषिकाविपनाशनः ।

अर्थ-वकायननीमका अर्क गुल्म और मूषके विषको हरे है ।

पारिभद्रार्कगुणा ।

पारिभद्रोऽनिलश्लेष्मशोफमेदकृमिप्रणुत ।

अर्थ-फरहदका अर्क-चात, श्लेष्म, शोफ, मेद और कृमिविनाशक है ।

काञ्चनारार्कगुणा ।

काञ्चनारोगण्डमालागुदभ्रशत्रणापह ।

अर्थ-कचनारका अर्क-गण्डमाला, गुदभ्रश और ग्रन्थिविनाशक है ।

कोविदारार्कगुणा ।

कोविदारस्तुपित्तास्रप्रदरक्षयकामहा ।

अर्थ-लालकचनारका अर्क-पित्त, रुधिरविकार, क्षय और रोंमीको हरे है ।

रत्नशोभाञ्जनार्कगुणा ।

शोभाञ्जनार्कचिकृच्छुकलोग्राहिदीपनः ।

अर्थ-लालसंजिनेका अर्क-रुचिकारक, शुक्रजनक, मल्लोपक और दीपन है ।

श्वेतशोभाञ्जनार्कगुणा ।

मधुशिशृद्रवोदहन्याद्विद्रधिश्चयधुकृमीन् ।

अर्थ-मधुशिशु वा मषेद संजिनेका अर्क-विद्रधि, सूजन और कृमिरो-
गनाशक है ।

शिशुजार्कगुणा ।

शिशुजोविपहृन्नेत्र्यस्तस्यनस्याच्छिरोतिहृत् ।

अर्थ-सामान्यसंजिनेका अर्क-नेत्रोंको हितकारी, विषविनाशक और
इसका नासलेनेसे शिरकी पीडा दूर होती है ।

गिरिकर्णार्कगुणा ।

गिरिकर्णार्ककर्णशूलशोफव्रणविपापहः ।

अर्थ-कोपलीका अर्क-कर्णशूल, सूजन, व्रण और विषविनाशक है ।

सिन्धुवारार्कगुणा ।

सिन्धुवारोद्भवोदन्तिशूलशोफाममारुतान् ।

अर्थ-सम्राट्टका अर्क-शूल, सूजन और आमवातनाशक है ।

निगुण्डार्कगुणा ।

निगुण्डार्ककोहरेजन्तुव्रणकुष्ठारुचिलघु ।

अर्थ-निर्गुण्डीका अर्क-हलका तथा कृमि, व्रण, कोढ़ और अरुचिनाशक है ।
घृतज्वायगुणा ।

कौटजोदीपन शीत कफतृष्णामकुष्ठजित् ।

अर्थ-कुडेका अर्क-दीपन, शीतल तथा कफ, तृषा, आम और कुष्ठनाशक है ।
वरज्वायगुणा ।

कारज कफगुल्मार्शोव्रणकृमिरुजापह ।

अर्थ-करजका अर्क-कफ, गुल्म, ववासीर, व्रण और कृमिरेगनाशक है ।
घृतवरज्वायगुणा ।

घृतकारजकोभेदीवातार्श कृमिकुष्ठजित् ।

अर्थ-घृतकरजका अर्क-भेदक तथा वात, ववासीर, कृमि और कुष्ठनाशक है ।
वरज्वायगुणा ।

कारजोवान्तिवातार्श कृमिकुष्ठप्रमेहजित् ।

अर्थ-करजयेका अर्क-वमन, वात, ववासीर, कृमि, कोढ़ और प्रमेहनाशक है ।
धेतगुञ्जायगुणा ।

उच्चटार्क केशकरोवातपित्तकफापह ।

अर्थ-सपेद घुघुचीका अर्क-केशोंको उत्पन्न करनेवाला तथा वात, पित्त और कफनाशक है ।
रक्तगुञ्जायगुणा ।

गुञ्जायाहस्तेवासमुखशोपश्रमज्वगन् ।

अर्थ-घुघुचीका अर्क-शाम, मुखशोप, श्रम और ज्वरनाशक है ।
श्वशिम्यगुणा ।

कपिकच्छृद्रवोप्योवृहणोवाजिकर्मकृत् ।

अर्थ-काछका अर्क-वीर्यवर्द्धक, पुष्टिकारक और वाजीकरण है ।
मांमरोहिण्यगुणा ।

मांमरोहिण्युद्रवस्तुवृष्योदोषत्रयापह ।

अर्थ-मांमरोहिणीका अर्क-वीर्यवर्द्धक और त्रिदोषनाशक है ।
विहारायगुणा ।

चैत कुप्याद्वातुपुष्टितत्फलमाग्येनान् ।

अर्थ-चिह्नकका अंक-धातुपुष्टिकारक और इसका फल प्राणनाशक है ।
चेतसाकं गुणा ।

वेतसोहरतेदाहशोथार्शोयोनिरुग्नणान् ।

अर्थ-वेतका अंक-दाह, सूजन, ववासीर, योनिरोग और घ्रणविनाशक है ।
जलवेतसाकं गुणा ।

जलवेतसजोग्राहीशीतोवातप्रकोपनः ।

अर्थ-जलवेतका अंक-मलगोधक, शीतल और वातप्रकोपक है ।
हिज्जलाकं गुणा ।

हिज्जलार्कस्तुहरतेचराचरविपस्फुटम् ।

अर्थ-समुद्रफलका अंक-स्थावर और जगम दोनों प्रकारके विपोंको हरेंहे ।
भद्राटारगुणा ।

अद्भोटकस्यशूलामशोथग्रहविपापह ।

अर्थ-अकोलका अंक-शूल, आम, सूजन, भगप्रद और विपविनाशक है ।
कालारगुणा ।

बलाकांग्राहिवाताम्रपित्तासक्तनाशनः ।

अर्थ-तिरदीका अंक-मलरोधक, वातरक्त, रक्तपित्त और क्षतनाशक है ।
भतिष्यगुणा ।

अतिपूर्वाबलार्कस्तुमृच्छामोहहर परः ।

अर्थ-कार्याका अंक-मृच्छा और मोहनाशक है ।
लक्ष्मणामूलगुणा ।

लक्ष्मणार्कस्तुयासेवेद्वन्ध्यापिलभतेसुतम् ।

अर्थ-लक्ष्मणाके अंकको वाश स्त्रीभी सेवन करे तो पुत्रवाली होती है ।
भगवत्पद्मगुणा ।

स्वर्णबल्लया शिर्षापीडात्रिदोषान्दुग्धदः ।

अर्थ-स्वर्णबल्लयाका अंक-शिर्षा पीडा और त्रिदोषनाशक है तथा दुग्धदायक है ।
वापाद्वयगुणा ।

कार्पास्यर्कं कर्णमन्थ कर्णगेगान्विनाशयेत् ।

अर्थ-कपासका अर्थ-कानमें अलनेसे कानके रोगोंको हरेंहे ।

वशाङ्कगुणा ।

वशजःकफपित्तघ्न कुष्ठघ्नोव्रणशोपजित् ।

अर्थ—वाँसका अर्क—कफ, पित्त, कोढ़, व्रण और शोपनिवारक है ।

नलाङ्कगुणा ।

नलाकोवस्तियोन्यर्त्तिदाहपित्तविसर्पहृत् ।

अर्थ—नलका अर्क—वाँस्तिर्की पीडा, योनिर्की पीडा, दाह, पित्त और विसर्पेरोगेनाशक है ।

पाण्ड्यङ्कगुणा ।

पाण्ड्योजयेज्ज्वरच्छर्दिकुष्ठार्तीसारहृद्भुज ।

अर्थ—पाण्ड्यङ्कका अर्क—ज्वर, वमन, कोढ़, अतिसार और हृदयरोगनाशक है ।

शरपुष्पाङ्कगुणा ।

शरपुष्पोद्भवःप्लीहगुल्मघ्नविपापह ।

अर्थ—सरफोंकेका अर्क—प्लीहा, गुल्म, घ्न और विपनाशक है ।

दुरालभाङ्कगुणा ।

यवासजोमदभ्रान्तिपित्तहृत्कुष्ठकासहृत् ।

अर्थ—जवासेका अर्क—मत्तता, भ्रम, पित्त, कोढ़ और खाँसीको हरे है ।

मुण्ड्यङ्कगुणा ।

मुण्डीजोऽत्यन्तबलकृत्प्लीहमोहानिलार्त्तिजित् ।

अर्थ—मुण्डीका अर्क—अत्यन्त बलकाङ्क तथा प्लीहा, मोह और वातरो-
गनाशक है ।

अपामार्गाङ्कगुणा ।

अपामार्गभवश्छर्दिकफमेदोऽनिलापह ।

अर्थ—चिरचिटेका अर्क—वमन, कफ, मेद और वातविनाशक है ।

रक्तापामार्गाङ्कगुणा ।

आरक्तापामार्गभवोधातुस्तम्भनकारक ।

अर्थ—लालचिर्गचिटेका अर्क—धातुस्तम्भक है ।

कोकिलाङ्कगुणा ।

कोकिलाक्षभवःश्रीघ्नसेकाच्छोथनिवारयेत् ।

अर्थ—तालमखानेका अर्क—सेक कर्नेसे शोफको हरे है ।

अर्थ-चिह्नकका अर्क-धातुपुष्टिकारक और इसका पल प्राणनाशक है ।
वेतसार्वगुणा ।

वेतसोहरतेदाहशोथाशोयोनिरुग्त्रणान् ।

अर्थ-वेतका अर्क-दाह, सूजन, चवासीर, योनिरोग और घ्रणविनाशक है ।
जलवेतसार्वगुणा ।

जलवेतसजोग्राहीभीतोवातप्रकोपन ।

अर्थ-जलवेतका अर्क-मलरोधक, शीतल और वातप्रकोपक है ।
हिजलायगुणा ।

हिजलार्कन्तुहरतेचराचरविपस्फुटम् ।

अर्थ-समुद्रफलका अर्क-स्थायर और जगम दोनों मकारके विपाको दूरेंद ।
भङ्गोदारगुणा ।

अङ्गोटकस्यशूलामशोथग्रहविपापह ।

अर्थ-अकोलका अर्क-शूल, आम, सूजन, अगमह और विपयिनाशक है ।
बलायगुणा ।

बलाकोग्राहिवातामपित्तामक्षतनाशन ।

अर्थ-रिगडीका अर्क-मलरोधक, वातरक्त, रक्तपित्त और क्षतनाशक है ।
भतिशयगुणा ।

अतिपूर्वाबलार्कन्तुमृच्छामोहहरःपरः ।

अर्थ-कर्पिका अर्क-मून्डा और मोहनाशक है ।
हृदयगुणा ।

लक्ष्मणार्कन्तुयामेवेद्वन्ध्यापिलभतेसुतम् ।

अर्थ-लक्ष्मणाके अर्कको बाँझ श्रीभी मेवन करे तो पुत्रवाली होती है ।
स्वययद्गुणा ।

स्वर्णवल्लया शिर पीडात्रिदोषान्दहन्तिदुग्धद ।

अर्थ-स्वर्णश्लोका अर्क-शिरसी पीडा और त्रिदोषनाशक है तथा दुग्धनाशक है ।
वायाम्पयगुणा ।

कार्पास्यर्क कर्णसम्य कर्णरोगान्विनाशयेत् ।

अर्थ-नयामका अर्क-कानम दाहनेने कानके रोगोंको दूरेंद ।

वशावर्गगुणा ।

वंशजःकफपित्तघ्न कुष्ठघ्नोव्रणशोपजित् ।

अर्थ-वाँसका अर्क-कफ, पित्त, कोढ़, व्रण और शोपनिवारक है ।

नलावर्गगुणा ।

नलाकोवस्तियोन्यर्त्तिदाहपित्तविसर्पहृत् ।

अर्थ-नलका अर्क-वस्तिकी पीड़ा, योनिर्की पीड़ा, दाह, पित्त और विसर्पे रोगनाशक है ।

पाण्ड्यवर्गगुणा ।

पाण्ड्योजयेज्ज्वरच्छर्दिकुष्ठातीसारहृद्भुजः ।

अर्थ-पाण्ड्यरका अर्क-ज्वर, वमन, कोढ़, अतिसार और हृदयरोगनाशक है ।

शरपुरावर्गगुणा ।

शरपुरखोद्भवप्लीहगुल्मव्रणविपापह ।

अर्थ-सरफोकेका अर्क-प्लीहा, गुल्म, व्रण और विपनाशक है ।

दुरालभावर्गगुणा ।

यवासजोमदभ्रान्तिपित्तहृत्कुष्ठकासहृत् ।

अर्थ-जवासेका अर्क-मत्तता, भ्रम, पित्त, कोढ़ और खाँसीको हरे है ।

मुण्डवर्गगुणा ।

मुण्डीजोऽत्यन्तवलकृत्प्लीहमोहानिलार्त्तिजित् ।

अर्थ-मुण्डीका अर्क-अत्यन्त बलकारक तथा प्लीहा, मोह और वातरोगनाशक है ।

अपामार्गवर्गगुणा ।

अपामार्गभवश्छर्दिकफमेदोऽनिलापह ।

अर्थ-चिरचिटेका अर्क-वमन, कफ, मेद और वातविनाशक है ।

रक्तापामार्गवर्गगुणा ।

आरक्तापामार्गभवोधातुस्तम्भनकारक ।

अर्थ-लालचिरचिटेका अर्क-धातुस्तम्भक है ।

कोकिलवर्गगुणा ।

कोकिलाक्षभवभीघ्नसेकाच्छोथनिवारयेत् ।

अर्थ-तालमसानेका अर्क-सेक करनेमें शोषको हरे है ।

अस्थिमहारिकान्वगुणा ।

अस्थिसहारिकायास्तुभग्नसधानकृत्स्थिरः ।

अर्थ-अस्थिमहाराकाका अर्क-दृष्टेदुष्ट हाडाको जोडनेवाला है ।

कुमारिकायगुणा ।

कुमारिकायाग्रन्थ्यग्निदग्धविस्फोटकाजयेत् ।

अर्थ-घीकुआरका अर्क-ग्रन्थि, अग्निदग्ध और विस्फोटनकारक है ।

पुनर्नवायगुणा ।

पुनर्नवाया श्वेताया मर्वनेत्रामयापह ।

अर्थ-विपस्वपेका अर्क-सर्वप्रकाशक नेत्ररोगनाशक है ।

पुनर्नवायगुणा ।

पुनर्नवायाग्नायाग्राहीपित्तान्नाशन ।

अर्थ-साठिका अर्क-मरुगोधक और ग्लिपितनाशक है ।

प्रमारिण्यायगुणा ।

प्रमारिण्यावातहरोरुप्य मन्वानकृत्तरः ।

अर्थ-पमरनरा अर्क-वातविनाशक, वृष्य, प्रणनाशक और मारक है ।

गारिवायायगुणा ।

गारिवायावह्निमांशकासामयविनाशन ।

अर्थ-सरिबनका अर्क-अग्निमान्द्य और कामरोगनाशक है ।

भृङ्गराजगुणा ।

भृङ्गराजम्यदन्त्योर्ध्वकं केश्योरुच्य शिरोर्त्तिहा ।

अर्थ-भंगरेका अर्क-दाताको दितकारी, केशोंको मुदरफरनेवाला, रुचिकारक और शिरोरोगनाशक है ।

शणपुष्पगुणा ।

शणपुष्पीलतायास्तुह्यर्कपित्तरुफान्तक ।

अर्थ-शणपुष्पी, पणनरा अर्क-पित्त और रुफनाशक है ।

त्रायन्त्यर्कगुणा ।

त्रायन्त्यर्क शूलमिषमिलेपिज्वस्नाशन ।

अर्थ-त्रायमाणका अर्क-शूल, त्रिष और त्रिषपरश्मनाशक है ।

मृर्जामेहद्वोगकण्डगुणा ।

मृर्जामेहद्वोगकण्डगुणा ।

अर्थ-मूवाका अर्क-प्रमेह, हृदयरोग, कण्डू, कुष्ठ और ज्वररोगनाशक है ।
काकमाच्यकगुणा ।

काकमाच्यानेत्रहितश्छर्दिहृद्रोगनाशनः ।

अर्थ-मकोयका अर्क-नेत्रोंको हितकारी तथा वमन और हृदयरोगनाशक है ।
काकनासाकगुणा ।

काकनासाभवोवाम्य शोफार्श्वित्रकुष्ठहृत् ।

अर्थ-काकनासा (कौआठोड़ी) का अर्क वमनकारक तथा सूजन बवा-
सीर और श्वित्रकुष्ठनाशक है ।

काकजघाकगुणा ।

काकजघोद्भवोहन्याज्ज्वरकण्डूविपक्रिमीन् ।

अर्थ-काकजघा (मसी) का अर्क-ज्वर, कण्डू, विष और कृमिरोगनाशक है ।
नागाह्वाकगुणा ।

नागाह्वायाहरेच्छूलयोनिदोषवमिक्रिमीन् ।

अर्थ-नागबला गगेरनका अर्क-शूलरोग, योनिदोष, वमन और
कृमिरोगनाशक है ।

मेपशृग्याकगुणा ।

मेपशृग्याःश्वासकासव्रणश्लेष्माभिश्चूलहा ।

अर्थ-मेडाशिगीका अर्क-श्वास, खाँसी, व्रण, कफ, नेत्ररोग और
शूलनाशक है ।

हसपद्याकगुणा ।

हसपद्याहन्तिलूताम्भृतरक्तव्रणान्विषम् ।

अर्थ-हसपदीका अर्क-मकड़ीका विष, मृतोन्माद, रक्तव्रण और
अन्यप्रकारके विषोंको हरे है ।

सोमवल्ल्याकगुणा ।

सोमवल्ल्यास्त्रिदोषघ्न क्षीरकृच्चरसायनः ।

अर्थ-सोमलताका अर्क-त्रिदोषनाशक, क्षीरजनक और रसायन है ।

आकाशवल्ल्याकगुणा ।

आकाशवल्ल्याःशीतोष्णं पित्तश्लेष्मामनाशनः ।

अर्थ-आकाशवेल्का अर्क-शीतल तथा पित्त, कफ और आमनाशक है ।

पातालगरुडाङ्गुणा ।

पातालगरुडीजोऽर्कं वृष्यो वातगदापह ।

अर्थ-ठिगहिंटेका अर्क-वीर्यवर्द्धक और वातगनाशक है ।

चदाकाङ्गुणा ।

वन्दावृक्षोद्भवोऽर्कस्तु विषगक्षोत्रणापह ।

अर्थ-चदाका अर्क-विषदोष, गक्षमनाचा और ग्रणविनाशक है ।

वटपत्राङ्गुणा ।

वटपत्रभवश्चोष्णो यौनिमृत्रगदापहः ।

अर्थ-वटपत्रीका अर्क-गम तथा यौनिगेम और मृत्ररोगनाशक है ।

हिङ्गुपत्राङ्गुणा ।

हिङ्गुपत्र्याविबन्धाशौश्लेष्मगुल्मानिलापह ।

अर्थ-हिङ्गुपत्रीका अर्क-विबन्ध, घवासीर, श्लेष्म, गुल्म और वातरोगनाशक है ।

वशपत्राङ्गुणा ।

वशपत्र्या पाचनोष्णो हृद्दन्तिगदसघहत ।

अर्थ-वशपत्रीका अर्क-पाचन, गम तथा हृदयरोग और वस्तिरोगनाशक है ।

मत्स्याक्ष्यङ्गुणा ।

मत्स्याक्ष्यर्को ग्राहिशीत कुष्ठपित्तकफान्वजित् ।

अर्थ-मत्सेडीका अर्क-मलगेधक, शीतल तथा कोद, पिष्ट, कफ और रुधिरके दोषोंको हरे है ।

सर्पाक्ष्यङ्गुणा ।

सर्पाक्ष्यारोपण सर्पवृश्चिकादिविपापह ।

अर्थ-गंडिनीका अर्क-ग्रणको भरनेवाला तथा सर्प और वृश्चिकादिके विषको हरनेवाला है ।

शरपुष्पाङ्गुणा ।

शरपुष्पाविपहर कान्तिस्मृतिप्रलाभिद ।

अर्थ-शरपुष्पीका अर्क-विषनाशक तथा कान्ति, स्मरणशक्ति, यत् और क्षप्रिणाशक है ।

अर्कपुष्पाङ्गुणा ।

अर्कपुष्पाकृमिश्लेष्ममैदपित्तविकारहा ।

अर्थ-अर्कपुष्पीका अर्क-कृमि, श्लेष्म, प्रमेह और पित्तरोगनाशक है ।
लज्जालुकारिगुणा ।

लज्जालुकायाभगरुयक्तपित्तातिसारहृत् ।

अर्थ-लज्जालुका अर्क-योनिरोग, रक्तपित्त और अतिसाररोगनिवारक है ।
अलम्बुपायगुणा ।

अलम्बुपासम्भवोऽर्क कृमिपित्तकफापहः ।

अर्थ-अलम्बुया (लज्जालुमेढ) का अर्क-कृमि, पित्त और कफनाशक है ।
दुग्धिकारिगुणा ।

दुग्धिकाया कफकरोवृण्य स्तम्भीकृमिप्रणुत् ।

अर्थ-दुग्घीका अर्क-कफकारक, वृण्य, स्तम्भक और कृमिनाशक है ।
भूम्यामल्यकारिगुणा ।

भूम्यामल्या कासतृपाकफपाण्डुक्षतापहः ।

अर्थ-भुईआमलेका अर्क-खाँसी, तृपा, रुफ, पाण्डु और क्षतमेगनाशक है ।
घ्रातयकगुणा ।

ब्राह्म्याबुद्धिप्रदश्चार्क पण्मासाभ्यासतः कविः ।

अर्थ-ब्राह्मीका अर्क-बुद्धिवर्द्धक, इसको छः महीने सेवन करनेसे कवि होजाता है ।

ब्रह्ममण्डूकजगुणा ।

ब्रह्ममण्डूकजःपाण्डुविपशोफज्वरान्हरेत् ।

अर्थ-ब्रह्ममण्डूकीका अर्क-पाण्डु, विप, सूजन और ज्वरनाशक है ।
द्रोणपुष्पयकगुणा ।

द्रोणपुष्प्याज्वरश्वासकामलाशोफजन्तुहृत् ।

अर्थ-द्रोणपुष्पीका अर्क-ज्वर, श्वास, कामला, सूजन और कृमिरोगनाशक है ।
सूर्यमुख्यकगुणा ।

सूर्यमुख्यद्रव स्फोटयोनिरुक्कृमिपाण्डुहा ।

अर्थ-सूर्यमुखीका अर्क-विस्फोट, योनिरोग, कृमि और पाण्डुरोगनाशक है ।
वन्ध्याकर्णिकगुणा ।

वन्ध्याकर्णिकीजातःसर्पदशत्रणापहः ।

अर्थ-वाँसककोडेका अर्क-सर्पविष और मणविनाशक है ।

मार्कण्डिकायुग्मा ।

मार्कण्डिकायादुर्गधविपगुल्मोदरापहः ।

अर्थ-मार्कण्डिका (एक प्रकारका ककोडा) का अर्क-दुर्गध, विप, गुल्म और उदररोगनाशक है ।

देवदाल्यायुग्मा ।

देवदाल्या शूलगुल्मश्लेष्माशोवातजित्सरः ।

अर्थ-देवदालीका अर्क-शूल, गुल्म, श्लेष्म, बवासीर और वातनाशक है तथा दमतावर है ।

धमरायुग्मा ।

ग्राहीधनूरजःशीतोवह्निकृद्वणदाहहा ।

अर्थ-धनूरेका अर्क-मलरोधक, शीतल, अग्निजनक तथा घ्न और दाहनाशक है ।

गोजिह्वायुग्मा ।

गोजिह्वायामेहकासव्रणसारज्वरापहः ।

अर्थ-गोभीका अर्क-मेह, रसोती, व्रण, अतिमार और ज्वरनाशक है ।

नागपुण्ड्रायुग्मा ।

नागपुण्ड्र्या सर्वविपसर्वग्रहनिवारणः ।

अर्थ-नागदमनीका अर्क-सर्वप्रकारके विप और सर्वप्रकारके ग्रहदोष-निवारक है ।

वैल्वतयुग्मा ।

वैल्वतय्यामूत्रघाताभरीद्योन्यनिलार्तिजित् ।

अर्थ-वैल्वतीका अर्क-मूत्राघात, पथरी, मोनिरोग और वातविनाशक है ।

छिन्न्यायुग्मा ।

छिन्न्यावह्निकृदर्थःकुष्ठकृमिप्रणुतः ।

अर्थ-नाकाछिन्नारा अर्क-अग्निजनक, रुचिजनक तथा बवासीर, फोटा और कृमिनाशक है ।

कुण्डरायुग्मा ।

कुण्डरोज्वररक्तंमुखशोषं कफहरतः ।

अर्थ-कुण्डरीका अर्क-ज्वर, रुधिरविकार, मुखशोष और कफनाशक है ।

सुदर्शनाकगुणा ।

सुदर्शनाकश्चात्युष्णः कफशोफास्रवातजित् । (इ० लङ्कानाथः)

अर्थ—सुदर्शनका अर्क—अत्यन्त गरम तथा कफ, सूजन, रुधिरविकार और वातनाशक है ।

इति श्रीशालिग्रामनिघण्टुभूषणऋक्वर्ग समाप्त ॥ १८ ॥

अथ मधुवर्गः ।



मधुनामानि ।

माक्षिकमधुचक्षौद्रपवित्रकुसुमासवम् ।

भृङ्गवातसारघचपित्र्यपुष्परसोद्भवम् ॥

अर्थ—माक्षिक, मधु, क्षौद्र, पवित्र, कुसुमासव, भृङ्गवात, सारघ, पित्र्य, पुष्परसोद्भव (माक्षिक, पुष्पासव, पुष्परसाद्वय, माध्वीक, वरटीवात मकरन्दरस) ।

संस्कृतभाषामें

मधु, माक्षिक ।

हिन्दीभाषामें

मधु, सहत ।

बगभाषामें

मधु, मी ।

मराठीभाषामें

मध ।

गुजरातीभाषामें

मध ।

कर्णाटकीभाषामें

जेनतुप्प ।

तैलिङ्गीभाषामें

तेनी ।

इंग्रेजीभाषामें

हनी । Honey

लैटिनभाषामें

मेल । Mel

फारसीभाषामें

शहद, अगर्मीन ।

अरबीभाषामें

असदुल् नहल् ।

मधुसामान्यगुणा ।

शीतकपायमधुरलघुस्यात्सन्दीपनलेहनमेवशस्तम् ।

सशोधनवात्रणशोधनश्मरोपणहृद्यतमश्मत्प्लवम् ॥

त्रिदोषनाशकुरुतेचपुष्टिकासन्धेवाश्नतजेचउद्यम् ।

हिक्काभ्रमेशोषणपीनसानारक्तप्रमेहेश्वसनेतिसारे ॥
 रक्तातिसारेचमरक्तपित्तेतृणमोहहृत्पार्श्वगदेऽपिशस्तः ।
 नेत्रामयेवाग्रहणीगदेवाविप्रेप्रशस्तमधुघ्नल्पवातलम् ॥
 (इतिहारीवसहितायाम्)

अर्थ-मधु (सहित)-शीतल, कण्ठला, मथुर, इलका, अग्निप्रदीपक, चाटनेमें उत्तम, सशोधक, घणको शोधनेवाला, घावको भरनेवाला, हृदयको दितकारी, चलकारी, त्रिदोषहारी, पुष्टिकारी तथा रोंसीमें, क्षयमें, क्षतमें, छर्दीमें, हिक्कागोगमें, भ्रममें, शोषमें, पीनसरोगमें, रक्तप्रमेहमें, श्वासमें, अतिसारमें, रक्तातिमारमें, रक्तपित्तमें, वृणामें, मोहमें, हृदयरोगमें, पार्श्वकी वेदनामें, नेत्ररोगमें समग्रणीमें और विप्ररोगमें दितकारी है और कुठेरु बातकारक है ।

अन्यथा ।

मधुशीतलपुस्वादुरुक्षस्त्वय्यत्रग्राहकम् । चक्षुष्यलेसनचा-
 ग्निदीपकव्रणशोधकम् ॥ नाडीशुद्धिकरसूक्ष्मगोपणमृदुव-
 र्णकृत । मेधाकरचविशदवृष्यरुचिकरमतम् ॥ आनन्दकृ-
 चतुवर्चाल्पवातप्रदमतम् । कुष्ठार्शकासपित्तप्रंरक्तदोषक-
 फापहम् ॥ मेहकिमिमदग्लानितृण्णावान्त्यतिसारनुदावाह
 क्षतंश्रयमेदक्षयहिक्कात्रिदोषकम् ॥ आध्मानपातचविषमल-
 वन्धचनाशयेत् । सर्वमेतद्वृणानांतुगोपणशोधकमतम् ॥
 अस्थिसन्धानकृत्तनुतप्तश्रविषवन्मतम् । उष्णद्रव्येश्वो-
 णकालेभक्षिततापदायकम् ॥ (नि० १०)

अर्थ-मधु-शीतल, व्यापिष्ठ, रुखा, मथुरको शुद्धकरनेवाला, मारी, नेत्रोंको दितकारी, क्षेयन, अग्निप्रदीपक, घणशोधक, नाडीको शुद्धकरने वाला, क्षय, शोषण, मृदु, वर्णशोधक, मेधाजनक, विशद, वृष्य, रुचिराकर, आनन्दजनक, कण्ठला, अल्पवातकारक, तथा फोटा, यवार्गर, रोंसी विष, रुधिररिफार, शक, प्रमेह, वृमि, मद्, ग्लानि, वृषा, वमन, अतिसार, दाह, शक्तक्षय मेह, क्षय, हिक्का, त्रिदोष, आध्मान, पात विष और मज्जक

तानाशक है । सर्वप्रकारके मधु-त्रणोंको भरनेवाले, शोधनेवाले, दूदेहाडोंको जोड़नेवाले हैं, यह गरम कियाहुवा, अथवा उष्णकालमें उष्ण द्रव्योंके साथ खाया हुवा विषके समान सन्तापको करता है ।

मधुजातिभेदाः ।

पौत्तिकभ्रामरक्षौद्रमाक्षिकछात्रमेवच ।

आर्घ्यमौदालकदालमित्यष्टौमधुजातयः ।

अर्थ-पौत्तिक, भ्रामर, क्षौद्र, माक्षिक, छात्र, आर्घ्य औदालक और दाल यह आठ मधुकी जाति हैं ।

एतेषां लक्षणानि ।

पिगलामक्षिकान्नेयामहत्यल्पाचसाद्विधा । महतीपुत्तिका-
नाम्नीस्वल्पाक्षुद्रेतिकथ्यते ॥ मध्यमामक्षिकानीलामक्षिके-
त्यभिधीयते । पुत्तिकाभ्रमरक्षुद्रामक्षिकासम्भवमधु ॥ पौ-
त्तिकादुच्यतेछात्रवरटीछत्रसम्भवम् । तपोवनेजरत्कारोरा-
र्घ्यमधुतरूद्रवम् । औदालकन्तुवल्मीककारिकीटविनि-
र्मितम् । दालमित्यभिनिर्दिष्टवृक्षकोटरकीटजम् ॥

अर्थ-पिगलवर्ण मक्खी बृहत् और क्षुद्र इन भेदोंसे दोप्रकारकी है, तथा बृहत्मक्खी पुत्तिका और क्षुद्र मक्खी क्षुद्रानामसे कही जाती है । मध्यम आकारवाली नीले रंगकी मक्खी मक्षिकानामसे कही जाती है । पुत्तिका, भ्रमर, क्षुद्रा और मक्षिका नामवाली मक्खियोंसे पौत्तिकादि चार प्रकारके मधुकी उत्पत्ति होती है अर्थात् पुत्तिकानामवाली मक्खीसे पौत्तिक, भ्रमर नाम मक्खीसे भ्रामर, क्षुद्रासे क्षौद्र और मक्षिकासे माक्षिक नामवाले मधुकी उत्पत्ति होती है । वरटी नामवाले जो कीड़े हैं उनके छत्तोंसे उत्पन्न हुवा जो मधु उसको छात्र, जिस वनमें जरत्कारु ऋषिने तप किया है उसमें जो मधुबेके वृक्ष हैं उन वृक्षोंमेंसे जो उत्पन्न हुवा मधु उसको आर्घ्य, वल्मीककारी कीड़ोंके घनाये हुये मधुको औदालक और वृक्षाकी कोटरोंमें जो कीड़े रहते हैं उनके मधुको दाल कहते हैं ।

एतेषां लक्षणानि ।

माक्षिकतैलवर्णम्यादृष्टतवर्णन्तुपौत्तिकम् ।

क्षौद्रं कपिलवर्णं स्याच्छ्वेतं भ्रामरमुच्यते ॥

अर्थ-माक्षिक मधु तेलवर्ण, पौत्तिक घृतवर्ण, क्षौद्र मधु कपिलरंगका और भ्रामर मधु सफेद रंगका होता है ।

एतेषां गुणाः ।

पौत्तिकतेषु वीर्य्योष्णकपायानुरसान्वयात् । वातासृक्पित्त-
कृद्रेदिविदाहिमदकृन्मधु ॥ पेच्छित्यात्स्वादुभयस्त्वाद्भ्रा-
मरगुरुकीर्तितम् । क्षौद्रविशेषतो ज्ञेयशीतलघुलेखनम् ॥
तस्माच्छुतररूक्षं माक्षिकं प्रवरस्मृतम् । श्वासादिपुचरोगेषु
प्रशस्ततद्विशेषतः ॥ छात्रश्चित्रक्रिमिहरं रक्तपित्तहरं गुरु ।
आघ्र्यं च क्षुप्यमायुष्यकफपित्तामवातजित् ॥ औहालकक-
पायोष्णकटुकुष्ठविपापहम् । दालकफहररूक्षदीपनछर्दि-
मेहनुत् ॥

अर्थ-पौत्तिकमधु-उष्णवीर्य्य, किंचित्कपेला, यातवर्द्धक, रक्तपिचज-
नक, भेदक, मदकारक और मधुर है । भ्रामरमधु पिच्छिल, स्वादिष्ठ और
भारी है । क्षौद्रमधु-अतिशयशीतल, हल्का और ऐरण है । माक्षिकमधु-
अत्यन्त हल्का, रुखा, सब मधुओंमें श्रेष्ठ और श्वासादिरोगोंमें हितकारी
है । छात्रमधु-श्चित्र (कोद) कृमि और रक्तपिचरोगनाशक तथा भारी है ।
आघ्र्यमधु-नैर्त्रांको हितकारी, आयुवर्द्धक, तथा कफपित्त और भ्रामराव-
रोगनाशक है । औहालकमधु-कपेला, गरम, चरपण, कोद और विष-
विनाशक है । दालमधु-कफनाशक, रुखा, दीपन, वमन और प्रमेहनाशक है ।

अथ पुराणमधुगुणाः ।

वृहणीयमधुनववातश्लेष्महरपणम् ।

पुराणं लघुमग्राहिनिर्दोषस्थौल्यनाशनम् ॥ (रा० ५)

अर्थ-वृहणीयमधु-पुष्टिकाशक और वातकफनाशक है । पुराणा मधु,
हल्का, मधुरोषक, दोषरहित और स्थूलतानाशक है ।

मधुन शर्करायाश्च गुडस्यापि विभेषतः ।

एकमवत्सरं तनुपुण्यत्वं स्मृतं बुधैः ॥ (भावप्रसाग)

अर्थ—मधु, खाड और गुड यह तीनों एक वर्ष व्यतीत होनेपर पुराने गिने जाते हैं ऐसा भावमिश्रने कहा है ।

पक्वापक्वमधुगुणा ।

दोषत्रयहरपक्वमाममम्लत्रिदोषकृत् ॥ (रा० व०)

अर्थ—पक्वामधु—त्रिदोषनाशक और कच्चा मधु—खट्टा और त्रिदोषजनक है ।
मधुन शीतस्वगुणाधिक्यम् ।

विपपुष्पादपिरससविपाभ्रमरादयः । गृहीत्वामधुकुर्वन्तित-
च्छीतगुणवन्मधु ॥ विपान्वयात्तदुष्णान्तुद्रव्येणोष्णेनवास-
ह । उष्णार्तस्योष्णकालेचस्मृतविपसममधु ॥ (भा० प्र०)

अर्थ—विपैले भ्रमरादिक विपैले फूलोंसे रसको इकट्ठा करके शहत बनाते हैं, वह शहत शीतल रहनेपर गुणदायक होता है, विपयुक्त रहनेसे यह मधु उष्ण किया अनेक अवगुणकारक है, ऐसीही उष्णकालमें, अथवा उष्णद्रव्यके साथ वा उष्णतासे पीडित मनुष्योंको मधु विपकी समान अहितकारी है ।

सिक्थकनामानि ।

मयनतुमधूच्छिष्टमधुशेषचसिक्थकम् ।

मध्वाधारोमदनकमधूपितमपिस्मृतम् ॥

अर्थ—मयन, मधूच्छिष्ट, मधुशेष, सिक्थक, मध्वाधार, मदनक, मधूपित, (सिक्थ, शिक्थ, शिक्थक, मधुज, मधुसम्भव, मादन, काच, विपस, उच्छिष्ट, मोदन, माक्षिकामल, क्षौद्रेय, पीतराग, त्रिगध, माक्षिकज, क्षौद्रन, द्रावक, माक्षिकाश्रय, मधूतियत)

स० मधूच्छिष्ट ।

हि० मोम ।

व० मोम ।

म० भेण ।

गु० मिण ।

मोतदर, मैनामु ।

इ० एलोवेस ।

हं० सिराआल्वा ।

फा० मोमेजट ।

अ० शया ।

भरय गुणा ।

मदनमृदुसुसिग्धभूतघ्नव्रणरोपणम् ।

भग्नसन्धानकृद्वातकुष्ठवीसर्परक्तजित् ॥ (भावप्रकाश)

अर्थ-मोम-कोमल, स्निग्ध, भूतवाधाको हरनेवाला, ग्रणको भरनेवाला, भग्नसन्धानकारक तथा वात विमर्ष और रुधिरके विकारोंको हरें ।

अन्यथा ।

सिक्थकपिच्छिलस्वादुकटुस्निग्धंमृदुस्मृतम् । अस्थिसधि-
करत्रण्यवातकुष्ठविसर्पनुत् ॥ रक्तदोषंवातरक्तभूतदोषच
नाशयेत् । स्फुटितस्याङ्गलेपेनत्वचःसधिकरंमतम् ॥

अर्थ-मोम-पिच्छिल, स्वादिष्ठ, कटु, स्निग्ध, नरम, अस्थिसन्धानकारक, ग्रणको हितकारी, तथा वात, कोष्ठ, विसर्प, रुधिरविकार, वातरक्त, भूतवाधा और लेप करनेमें फटी हुई त्वचाको आराम करे हैं ।

इति श्रीशालिग्रामनिष्ठुभृषण मधुपर्क समाप्त ॥ १९ ॥

अथ इक्षुवर्गः ।

इक्षुनामानि ।

इक्षुदीर्घच्छदःप्रोक्तस्तथाभूरिरसोऽपिच ।

गुडमूलोऽसिपत्रश्चतथामधुतृणःस्मृतः ॥

अर्थ-इक्षु, दीर्घच्छद, भूरिग्न, गुडमूल, अतिपत्र, मधुतृण, (मधुपट्टि विपुलरस, गुडदारु, ग्गादु, कोशकार, इक्षुर, अतिपत्रक, पयोधर, फर्माटर, वन, फान्दार, मुहुमाक, अधिपत्र, पृष्य, गुटतृण, मृत्युपृष्य, गुडद, गण्डीदी, खट्वपत्रक, गुटकाष्ठ, तृणाधिप)



ससृतभाषामे

हिन्दीभाषामे

रंगभाषामे

मराठीभाषामे

प्रदरार्थभाषामे

इक्षु ।

ईर, गन्ना, गाडा, पोंडा, उग्र ।

भार, पुण्ड ।

उग्र ।

डोर्दी, डोर्दीनु मूल ।

कर्णाटकीभाषामें
तैलिङ्गीभाषामें
इंग्रेजीभाषामें
लैटिन्भाषामें

कबु, कब्बिनमेरु ।
चिरकु ।
इयुगरकेन । Sugar Cane
सेफर आल्ब । Saccharum Officinarum
सेफर आफिसीनेर ।
नेशकर ।
कम्बुस शफर ।
इक्षुसाधारणगुणा ।

फारसीभाषामें
अरबीभाषामें

इक्ष्वोरक्तपित्तघावल्यावृष्या.कफप्रदाः ।

विपाकेमधुराःस्निग्धागुरवोमूत्रलाहिमाः ॥

अर्थ—ईख-रक्तपित्तनाशक, बलकारक, वीर्यवर्द्धक, कफकारी, पचनेमें मधुर, स्निग्ध, भारी, मूत्रजनक और शीतल है ।
स्तिक्षुगुणा ।

स्निग्धश्चसन्तर्पणवृहणश्चसजीवन.स्वादुरस.श्रमघ्न. ।

वृष्यश्चपित्तास्रशमनयेच्चह्यतर्विदाहीकफकृत्सितेक्षु. ॥

अर्थ—सफेद ईख-स्निग्ध, वृषिकारक, पुष्टिकारक, सजीवन, स्वादिष्ट, श्रमनाशक, वृष्य, रक्तपित्तको शान्ति करनेवाली, शरीरके भीतरकी दाहको हरनेवाली और कफकारक है ।

कृष्णक्षुगुणा ।

तद्वत्सुकृष्णोहिभवेद्वृणैश्चवृष्योभवेत्तर्पणदाहहता ।

सक्षारकिञ्चिन्मधुरोरसेनशोपापहर्त्तात्रिणशोफकर्त्ता ॥ (हा०स०)

अर्थ—काली ईख—ब काले गन्ने—गुणोंमें सफेद ईखकी समान है, वीर्यवर्द्धक, वृषिकारक, दाहनिवारक, क्षारयुक्त, मधुररसान्वित, शोपनाशक और घण तथा शोफजनक है ।

रक्तेक्षुगुणा ।

रक्तेक्षु शीतल पाकेमधुरोमृदुवृष्यक. । बलकान्तिप्रदश्चै-
वधातुवृद्धिकरोगुरु ॥ तुवरःपित्तदाहघ्नोधातविस्फोटना-
शक । मूत्राघातमूत्रकृच्छ्ररक्तदोषचनाशयेत् ॥ (नि०र०)

अर्थ-लालईख-शीतल, पाकमें मधुर, मृदु, वीर्यवर्द्धक, यन्त्रकारक, कान्तिजनक, धातुवर्द्धक, भारी, कपेली तथा पिच, दाह, वात, पित्तको, मूत्राघात, मूत्ररुच्छ और रुधिरके विकारोंको दूरकरे।

इधुभेदा ।

पौ १ भीरुकश्चापिवशकः शतपोरकः । कान्तारस्ताप-
धुश्चकाण्डेधु सूचिपत्रकः ॥ नेपालोदीर्घपत्रश्चनीलपो-
रोऽथकोशकृत् । इत्येताजातयस्तेपांकथयामिगुणानपि ॥

अर्थ-पौण्ड्रक, भीरुक, वशक, शतपोरक, कान्तार, तापश्रेणु, काण्डेधु, सूचिपत्र, नेपाल, दीर्घपत्र, नीलपोर, कोशकृत्, यह ईखकी जातें हैं। अब इनके गुणोंको कहता हूँ ।

पौण्ड्रकभीरुययोगुणा ।

वातपित्तप्रशमनोमधुरो रसपाकयोः ।

तीव्रवृहणोऽल्पः पौण्ड्रको भीरुकस्तथा ॥

अर्थ-पौण्ड्रक और भीरुकनामवाली ईख-वातपित्तनाशक, रस और पाकमें मधुर, शीतल, पुष्टिकारक और यलवर्द्धक है ।

वातप्रशमनगुणा ।

कोशकारोगुरुः शीतो रक्तपित्तशयापहः ।

अर्थ-कोशकारनामवाला गन्ना-भारी, शीतल तथा रक्तपित्त और शय-रोगनाशक है ।

कान्तारधुगुणा ।

कान्तारेक्षुर्गुरुवृष्य श्लेष्मलोऽवृहणः सरः ।

अर्थ-कान्तारनामवाला गन्ना-भारी, वृष्य, कस्तूरी, पुष्टिकारक और सारक ।

दीर्घपोरान्तपत्रगुणा ।

र्घपोर मुकटिन मक्षारोवशकः स्मृतः ।

अर्थ-दीर्घपोरवाली ईख-कटिन और वंशक ईख-सारयुक्त है ।

शतपोरयगुणा ।

शतपर्वाभ्रं त्रिकित्कोशकारगुणान्वितः ।

त्रिनेपात्किञ्चिदुष्णश्चमक्षारः पचनापहः ॥

अर्थ-शतपोरक नामवाली ईख-किञ्चित् कोशकारईखकी समान गुण-वाली है, विशेषता यह है कि, किञ्चित् गरम, क्षार और वातनाशक है ।

मनोगुप्तागुणा ।

मनोगुप्तावातहारीतृष्णामयविनाशिनी ।

सुशीतामधुरातीवरक्तपित्तविनाशिनी ॥

अर्थ-मनोगुप्तानामवाली ईख-वातविनाशक, तृषारोगनाशक, शीतल अत्यन्त मधुर और रक्तपित्तविनाशक है ।

तापसेक्षुगुणा ।

तापसेक्षुर्भवेन्मृद्वीमधुराश्लेष्मकोपना ।

तर्पणीरुचिकृच्चापिवृष्याचवलकारिणी ।

अर्थ-तापसेक्षु-नरम, मधुर, श्लेष्मप्रकोपक, तृप्तिकारक, रुचिजनक, वीर्यवर्द्धक और बलकारक है ।

काण्डेक्षुगुणा ।

एवगुणैस्तुकाण्डेक्षु सतुवातप्रकोपनः ।

अर्थ-काण्डेक्षुके गुण तापसेक्षुकी समान हैं और विशेषकरके वातको कुपित करे है ।

सूचीपत्रनैपालीदीर्घपत्रनीलपोराणागुणा ।

सूचीपत्रोनीलपोरोनैपालोदीर्घपत्रकः ।

वातलाःकफपित्तघ्नाःसकपायाविदाहिनः ॥

अर्थ-सूचीपत्र नीलपोर-नैपाल और दीर्घपत्र यह चारोंप्रकारकी ईख-वादी, कफपित्तनाशक, कपेली और दाहजनक है ।

इक्षुमूलादिगुणा ।

इक्षुमूलोतिमधुरोमध्यमधुरएवच ।

ग्रन्थीत्वच्यग्रभागेचविज्ञेयोलवणोरसः ॥

अर्थ-ईखके मूलमें मधुररस और मध्यभागमेंभी मधुररस तथा ग्रन्थि, त्वचा और अग्रभागम लवणरस रहता है ।

वालप्रपापृक्षेक्षुगुणा ।

वालइक्षु कफकुर्यान्मेदोमेहकरश्चस ।

युवातुवातहृत्स्वादुरीपत्तीक्ष्णश्चपित्तनुत ॥

रक्तपित्तहरोवृद्धः क्षतहृद्बलवीर्यकृत ।

अर्थ-बाल अर्थात् बच्ची ईख-कफकारी, मेदजनक प्रमेहकारक, युवा अर्थात् कुछ २ पफी और कुछ २ कच्ची ईख-वातनाशक, स्वादिष्ट, किम्बित् तीक्ष्ण और पित्तनाशक है । वृद्ध अर्थात् पफी ईख-रक्तपित्तनाशक, क्षत-निवारक और यन्त्रवीर्यकारक है ।

दन्तनिष्पीडितधुगुणा ।

दन्तनिष्पीडितस्येश्वरस्य पित्तास्रनाशनः ।

शर्करासमवीर्यः स्यादविदाहीकफप्रदः ॥

अर्थ-दोँतोंसे चूसी हुई ईखका रस-रक्तपित्तनाशक, शर्कराफी समान वीर्यवाला, दाहरहित और कफकारी है ।

अन्यथा ।

वृष्यः शीतोत्पित्तं शमयति मधुगेवृंहणं श्लेष्मकारी त्रिगुणो
हृद्यः स्रग्ध्रमशमनपटुर्मृत्रवृद्धिकरोति । मेदोवृद्धिं विहन्या
च्छमयति च मलतर्पणश्चैन्द्रियाणां दन्तेर्निष्पीडयसाक्षाद-
मृतमयरसो भक्षयेदिक्षुदण्डः ॥

अर्थ-दोँतोंसे चूसी हुई ईखका रस-शीतल, रक्तपित्तनिवारक, मधुर, पुष्टिकारी, कफकारक, त्रिगुण, हृत्पको हितकारी, सारक, श्रमरो हरने-वाला, नमकीन, मूत्रवर्द्धक, मेदवृद्धिको शान्ति करनेवाला, विदोषनाशक, इन्द्रियोंको सुप्ति करनेवाला और अमृतोपम है ।

अपिच ।

दन्तेर्निष्पीडितं सौरुचिकृद्गुरुश्च मन्तर्पणोऽलकरः कफहृ-
न्मूत्रमग्नः । विष्टम्भकृच्च रुधिरस्य तथेव पित्तदोषं निहन्ति
सकलवमनश्च गोपम ॥

अर्थ-दोँतोंसे चूसी हुई ईखका रस-रुचिकारी, भारी, सुविशारी, यष्ट-कारी, कफकारी, श्रमहारी, विष्टम्भकारी, रुधिरके दोषाफी दूर करनेवाला, पित्तको हरनेवाला वमननिवारक और गोपदायक है ।

अन्यनिष्पीडितधुगुणा ।

मूलाग्रजन्तुजग्धादिपीडनान्मलसकरात् ।

किञ्चित्कालं विधृत्वा च विकृतिं याति यान्त्रिकः ॥

तस्माद्विदाही विष्टम्भी गुरुः स्याद्यान्त्रिको रसः ।

अर्थ—ईखकी जड़ और अगला भाग जो कीड़ोंसे खाया हुआ होता है और गाँठ ये सब कोलुमें पेली गई हों उनके मेल आदिके मिलनेसे तथा कुछ अधिक समय तक रख रखनेसे वह कोलुका पिला हुआ रस विगड़-जाता है अर्थात् खट्टा हो जाता है वह दूषित रस—दाहजनक, मलवर्द्धक, और भारी होता है ।

पथ्युषितेधुरसगुणा ।

रसः पथ्युषितो दुष्टो ह्यम्लो वातापहो गुरुः ।

कफपित्तकरः शोषी भेदनश्चातिमूत्रलः ।

अर्थ—ईखका बासी रस—अच्छा नहीं होता, खट्टा, वातनाशक, भारी, कफपित्तकारक, शोषजनक भेदक और मूत्रजनक है ।

इक्षुपकरसगुणा ।

पक्वोरसो गुरुः स्निग्धः सुतीक्ष्णः कफवातनुत् ।

गुल्मानाहप्रशमनो किञ्चित्पित्तकरः स्मृतः ॥ (भा० प्र०)

अर्थ—ईखका पक्का अर्थात् अग्नियै औठाया हुआ रस—भारी, स्निग्ध, तीक्ष्ण, कफवातनाशक, गुल्म और अफारेको हरनेवाला और कुछेक पित्तकारक है ।

इक्षुविशेषगुणा ।

भक्षितो भोजनात्पूर्वंचक्षुः पित्तस्य शामकः ।

भोजनोत्तरकाले च भक्षितो वातकोपनः ॥

भोजने भक्षितश्चासावतिजाड्यकरो मतः । (नि० र०)

अर्थ—भोजनसे पहिले भक्षण करी दुई ईख—पित्तनिवारक है । भोजनसे पीछे खाई दुई ईख वातको कुपित करे है और भोजनके मध्यमें खाई दुई ईख अत्यन्त जडताकारक है ।

इक्षुरसविभागगुणा ।

इक्षोर्विकारास्तृड्दाहमृच्छापित्तासनाशना ।

गुरवो मधुरा चल्याः स्निग्धा वातहरा सरा ॥

वृष्यामोहहराः शीतावृहणाविपहारिणः ।

अर्थ-इधुविकार अर्थात् ईरके रगके ग्नाये दुये पटायं-वृषा, दाह, मूच्छा, रक्तापित्त, वात, मोह और विषको हरै है, भारी, मधुर, घटकारक, स्निग्ध, सारक, वीर्यवर्द्धक, शीतल, और पुष्टिकारक है ।

पाणितद्वक्षणगुणाभा ।

इक्षोरसस्तु य पक्व किञ्चिद्वाढोऽवहुद्रवः । सप्वेधुविकारेषु स्यात्-
त' पाणितसंज्ञया ॥ पाणितं गुर्वभिप्यदिवृहणं कफशुक्रकृत ।
वातपित्तश्रमान्हन्ति मूत्रवस्तिविशोधनम् ॥ (भा० प्र०)

अर्थ-इच्छेक गाढा और बहुत पतला ऐसे पकायेदुये ईरके रगको पाणित कहते हैं पाणित-भारी, अभिष्यन्दी, पुष्टिकारक, कफकारी, शुक्रजनक, तथा वात, पित्त, श्रम, इनको दूर करे है और मूत्र तथा वस्तिशोधक है ।

मत्स्यण्डीद्वक्षणगुणाभा ।

इक्षोरसोयः सपक्वोऽवन किञ्चिद्भवान्वितः । मन्दयत्सपन्दते-
स्मात्तन्मत्स्यण्डीनिगद्यते ॥ मत्स्यण्डी भेदिनी रत्याल-
घ्वीपित्तानिलापहा । मधुरावृहणीवृष्यारक्तदोषापहामता ॥

अर्थ-ईरका रग जो पकायाहुवा गाढा कुछ पतला और थोडा पिरनता है इमेलिये इसको मत्स्यण्डी कहते हैं । मत्स्यण्डी-भेदक, घटकारक, हल्की, वातपित्तनाशक, मधुर, पुष्टिकारक, वीर्यवर्द्धक और रुधिरके गोणोंको हरै है ।

गुटनामानि ।

गुड स्यादधुसारस्तु मधुरो रमपाकजः ।

शिशुप्रिय मितादि स्यादरुणोरमज स्मृतः ॥

अर्थ-गुड, इधुगार, मधुर, रमपाकज, शिशुप्रिय, मितादि अरुण, रमज, (रसद्वी, द्रवज, मिद, मोदक, अमृतसारज, इधुगाराय, गण्डोल, मधुपी जक, गुल, स्वादुगण्ड, स्वादु) ।

गुडद्वक्षणम् ।

इक्षोरसोयः सपक्वो जायते लोष्टवहृदः ।

मगुडोर्गोडदं गेहृतमत्स्यद्वयेव गुडो मतः ॥ (भा. मि०)

अर्थ—ईखके रसको पकाकर मट्टीके डेलेकी समान दृढ़ करलेवे । उसको गुड कहते हैं । किन्तु गौडदेशमें मत्स्यण्डीको गुड कहतेहैं ।

संस्कृतभाषामें गुड ।

हिन्दीभाषामें गुड ।

बगभाषामें गुड ।

मराठीभाषामें गूळ ।

गुजरातीभाषामें गोल ।

कर्णाटकीभाषामें होसवेछद हेलरु, जुनोहलेयवेळ ।

तैलिङ्गीभाषामें वेल्हामु ।

इंग्रेजीभाषामें ट्रीकलमोलासीस । Treacle-Molasses

फारसीभाषामें कदेसिया ।

अरबीभाषामें कदेअस्वद ।

गुडगुणा ।

गुडोवृष्योगुरुस्निग्धोवातघ्नोमूत्रशोधनः ।

नातिपित्तकरोमेद कफक्रिमिबलप्रद (राजवल्लभ)

अर्थ—गुड—वीर्यवर्द्धक, भारी, स्निग्ध, वातनाशक, मूत्रशोधक, अत्यन्त पित्तकारक नहीं तथा मेद, कफ, कृमि और बलकारक है ।

पुरातनगुडगुणा ।

पित्तघ्नःपवनापहोरुचिकरोद्द्विदोषापहः ।

सयोगेनविशेषतोऽज्वरहरःसन्तापशान्तिप्रदः ।

विण्मूत्रामयनाशनोग्निजनन कण्डूप्रमेहान्तकृत्

स्निग्धःस्वादुरसोलघु श्रमहर पथ्य पुराणोगुडः॥ (रा नि.)

अर्थ—गुणता गुड—पित्तनाशक, वातविनाशक, रुचिकारक, हृदयको हितकारी, त्रिदोषनाशक और फिसीके साथ विशेष करके ज्वरनाशक, सन्तापको शान्ति करनेवाला, मल और मूत्ररोगनाशक, अग्निप्रदीपक, कण्डूनाशक, प्रमेहनिवारक, स्निग्ध, स्वादुरसान्वित, हल्का, श्रमनाशक और पथ्य है ।

नूतनगुणगुणा ।

गुडोनव कफधासकृमिकारोग्निमान्दरुताश्चेष्माणमाशुचि-

निहन्तिसदाद्र्केणपित्तंनिहन्तिचतदेवहरीतकीभिः । शुण्ड्या
समहरतिवातमशेषमित्यंदोषत्रयक्षयकराचनमोगुडाय । (भा.प्र.)

अर्थ—नर्बानगुड—कफ, श्लाम, और कृमिको उत्पन्न करेई तथा मश
मिजनक है । मर्दव अदग्गवके माय सेवन कियाहुवा गुड—कफको हरताई,
हरडेके साथ सेवन कियाहुवा गुड—पित्तको दूर करताई और साठके माय
सायाहुवा गुड—सर्व वातके दोषोंको नष्ट करताई अतएव है त्रिदोषविनाशक
गुड । तुमको नमस्कार है ।

अप्यथ ।

वृत्रोगुडोमधु-शार्गेगुरुश्लोष्णश्चसमतः । रक्तरुक्पित्तदोषा-
णामहितोमूत्रशोधनः ॥ वृष्यः स्निग्धः स्रग्ः प्रोक्तः कृमि-
मेदकरो मतः । शुक्रमज्जामांसरक्तकारकश्चाग्निदीपनः ॥
पित्तलोभेदकोवातश्लामकासकफापहः । सशुद्धोरक्तकफ-
कृत्स्वादु स्निग्धश्चवातहा । मलमूत्रेयथामार्गप्रवर्तयतिचां-
जसा । सचकहायनोरुच्यः पथ्यश्चाग्निप्रदीपकः ॥ मूत्रवि-
ष्टाशुद्धिरुगेष्ट्य स्वादुश्चर्पाष्टिकः । रमायनोलघुः स्निग्धो
वृष्योमेदश्चमापहः ॥ त्रिदोषपाण्डुसन्तापपित्तजातापहो
मतः । सयोगेनज्वरहररुच्यवद्जीर्णालघुः स्मृतः ॥ सर्वदोष-
हर श्रेष्ठ पुराणेषुचलत्तमः । अरिष्टादिपुयोज्य म्यादूर्ध्वही-
नगुणः स्मृतः ॥ (नि० १०)

अर्थ—नर्बानगुड—मधुर, रागी, भारी, गरम, रक्तीर्णी और पित्तगै-
रिषोंको अहितकारी है, मूत्रशोधक, वीर्यवर्द्धक, भिक्षुता, शुष्ठ गुष्ठ
दग्गावर कृमिकारक, भेदनकर, शुद्ध, मज्जा, मांस और रक्तकारक
है, अग्निप्रदीपक, पित्तजनक, भेदक तथा वात, श्लाम, रोगी और
वज्रनाशन है, गुडकिया हुवा गुड—रक्तकारक, रक्तकारी, स्वादिष्ट, भिक्षुता,
वातनाशक और मज्जामूत्रको यथामार्ग प्रवर्तनेवाला है, पथ्यपंका पुगता गुड
रुक्मिकारक पथ्य, अग्निप्रदीपक मूत्र और मलको गुड करनेवाला, हृदयको
दिककारी, स्वाग्नि, शुष्टिकारक, रमायन, दृष्यता, स्निग्ध, वृष्य तथा प्रमेद,

श्रम, त्रिदोष, पाण्डु, सन्ताप, पित्त और वातनाशक है, और कितीके सयोगसे ज्वरनाशक है, तीनवर्षका पुराना गुड-हलका, सर्वदोषनाशक, उत्तम, सर्वप्रकारके पुराने गुडोंमें श्रेष्ठ है, इसको अरिष्टादिकोंमें डालना चाहिये । तीन वर्षसे अधिक पुराना गुड हीनगुणवाला होजाताहै ।

गुदामयेकामलशोपमेहेगुल्मामयेपाण्डुहलीमकेच ।

वातेसपित्तासृजिराजरोगेरुचिप्रदोरोगहरोगुरुः स्यात् ॥

कासेशोपेगुड श्रेष्ठश्चान्यत्रापिहितोमतः ।

योगयुक्तोविशेषेणहितोगुणगणालयः ॥ (हा०स०)

अर्थ-गुड-गुदारोग, कामलारोग, शोष, प्रमेह, गुल्मरोग, पाण्डुरोग, हलीमक, वात, रक्तपित्त और राजरोगको हरदे तथा रुचिको उत्पन्न करेहै । कास और श्वासरोगमें गुड हितकारीहै । और अन्यान्य रोगोंमेंभी हितकारक है और किसी अनुपानके साथ नानाप्रकारके गेहोंको हरनेवाला है ।

खण्डनामानि ।

खण्डेरसोद्भवाशुक्लासुपिष्टापाण्डुरातथा ॥

अर्थ-खण्ड, रसोद्भवा, शुक्ला, सुपिष्टा, पाण्डुरा, (पशुलका) ।

संस्कृतभाषामें खण्ड ।

हिन्दीभाषामें खाड ।

बगभाषामें खौड ।

मराठीभाषामें साखर ।

गुजरातीभाषामें खाड ।

कर्णाटकीभाषामें मालखड ।

तैलिगीभाषामें पाचदारा ।

इंग्रेजीभाषामें श्युगर । Sugar

लैटिन्भाषामें साकोरम । Saccharum

फारसीभाषामें शर्कर ।

अरबीभाषामें शर्कर ।

गण्डगुणा ।

वातपित्तहरशीतस्निग्धवर्त्यंमुखप्रियम् ।

चक्षुष्यश्लेष्मकृच्चोक्तखडवृष्यतममतम् ॥

निहन्ति सदा र्द्रकेण पित्तनिहन्ति च तदेव हरीतकीभिः । शुण्ड्या
समहरति वातमशेषमित्यदोषत्रयक्षयकराय नमो गुडाय । (भा.प्र.)

अर्थ-नर्वाणगुड-कफ, आम, और कृमिको उत्पन्न करेई तथा मदा
प्रिजनक है । मर्दव अदररुके साथ सेवन कियाहुवा गुड-कफको हस्ताई,
हरदवे साथ सेवन कियाहुवा गुड-पित्तको दूर करताई और सौंठके साथ
खायाहुवा गुड-मवं वातके दोषोंको नष्ट करताई अतएव हे त्रिदोषविनाशक
गुड ! तुमको नमस्कार है ।

अन्यथा ।

नूत्रोगुडो मधु क्षाणुगुरुश्चोष्णश्च समतः । रक्तरुचिपित्तदोषा-
णामहितो मूत्रशोधनः ॥ वृष्यः स्निग्धः सरः प्रोक्तः कृमि-
मेदकरो मतः । शुक्रमज्जामांसरक्तकारकश्चाग्निदीपनः ॥
पित्तलोभेदको वातश्वासकासरुफापहः । सशुद्धोरक्तकफ-
कृत्स्वादु स्निग्धश्च वातहा । मलमृत्रेयथामार्गप्रवर्तयति चा-
जसा । मचैकहायनोरुच्यः पथ्यश्चाग्निप्रदीपकः ॥ मूत्रवि-
ष्टाशुद्धिकरोऽप्य स्वादुश्चर्पोष्टिकः । रमायनोलघुः स्निग्धो
वृष्यो मेहश्रमापहः ॥ त्रिदोषपाण्डुसन्तापपित्तरातापहो
मतः । सयोगेन ज्वरहृद्गुह्यवद्जीर्णालघु स्मृतः ॥ सर्वदोष-
हरः श्रेष्ठ पुगणे पुत्रवत्तमः । अरिष्टादिपुयोज्यः स्याद्दूर्ध्वदी-
नगुणः स्मृतः ॥ (नि० २०)

अर्थ-नर्वाणगुड-मधुर, गारी, भारी, गम्य, रक्तरोमी और पित्तमे-
गियोंको अहितकारी है, मूत्रशोधक, वरिष्यवर्द्धक, विषना, शुद्ध शुद्ध
दस्तावर कृमिकारक, मेदजनक, शुक्र, मज्जा, मांस और रक्तकारक
है, अग्निप्रदीपक, पित्तजनक, भेदक तथा वात, आम, रोगी और
वरनाशक है, शुद्धनिरा हुआ गुड-रक्तकारक, कफकारी, स्वाग्नि, विषना,
वातनाशक और मन्मथको यथामार्ग प्रवर्तयति है, मकरपंरा पुगना गुड
रुचिकारक पथ्य, अग्निप्रदीपक मूत्र और मन्थो गुड वरनाशक, हृद्मरो
दिहकारी, ग्राहिण, शुष्टिकाण, रमाया, इतहा, विना, वृष्य तथा श्रमद,

ध्रम, त्रिदोष, पाण्डु, सन्ताप, पित्त और वातनाशक है, और किसीके सयोगसे ज्वरनाशक है, तीनवर्षका पुराना गुड-हलका, सर्वदोषनाशक, उत्तम, सर्वप्रकारके पुराने गुडोंमें श्रेष्ठ है, इसको अरिष्टादिकोंमें डालना चाहिये । तीन वर्षसे अधिक पुराना गुड हीनगुणवाला होजाताहै ।

गुदामयेकामलशोपमेहेगुल्मामयेपाण्डुहलीमकेच ।

वातेसपित्तासृजिराजरोगेरुचिप्रदोरोगहरोगुरु स्यात् ॥

कासेशोपेगुडःश्रेष्ठश्चान्यत्रापिहितोमतः ।

योगयुक्तोविशेषेणहितोगुणगणालयः ॥ (हा०स०)

अर्थ-गुड-गुदरोग, कामलरोग, शोष, प्रमेह, गुल्मरोग, पाण्डुरोग, हलीमक, वात, रक्तापित्त और राजरोगको हंरहे तथा रुचिको उत्पन्न करेहै । कास और श्वासरोगमें गुड हितकारीहै । और अन्यान्य रोगोंमेंभी हितकारक है और किसी अनुपानके साथ नानाप्रकारके रोगोंको हरनेवाला है ।

खण्डनामानि ।

खण्डेरसोज्ज्वाशुक्लासुपिष्टापाण्डुरातथा ॥

अर्थ-खण्ड, रसोद्भवा, शुक्ला, सुपिष्टा, पाण्डुरा, (पशुल्का) ।

| | |
|-----------------|---------------------|
| संस्कृतभाषामें | खण्ड । |
| हिन्दीभाषामें | खाड । |
| बगभाषामें | खॉड । |
| मराठीभाषामें | साखर । |
| गुजरातीभाषामें | खाड । |
| कर्णाटकीभाषामें | मालखड । |
| तैलिङ्गीभाषामें | पाचदारा । |
| इंग्रेजीभाषामें | इयुगर । Sugar |
| लैटिन्भाषामें | साकोरम् । Saccharum |
| फारसीभाषामें | शकर । |
| अरबीभाषामें | शकर । |

खण्डगुणाः ।

वातपित्तहरशीतस्निग्धवल्गुमुखप्रियम् ।

चक्षुष्यश्चेष्मकृच्चोत्तरखडवृष्यतममतम् ॥

अर्थ-खाद वातपित्ताशक, शीतल, स्निग्ध, यलकारक, मुराभिय,
नेत्रोंको दितकारी, कफकारी और वीर्यवर्द्धक है ।

अथवा ।

वातनिवारयतिपित्तमपाकरोति तृष्णांछिनत्तिविनिहन्ति
चमोहमृच्छाम् ॥ शोषविवट्टयतितर्पयतीन्द्रियाणि शीत-
सदासमधुरःखलुगुडखण्डः ॥

अर्थ-खाद-वातनिवारक, पित्तहारक, तृषानाशक, मोह, मूर्च्छा और
शोषको दग्नेवाली, इन्द्रियोंको सम करनेवाली, शीतल और मधुर है ।

गुडखण्डगुणः ।

गुडखण्डश्चमधुरःसितश्चवातपित्तहा ।
किञ्चिच्छीतगुणोपेतोवत्योवृष्योरुचिप्रदः ॥

अर्थ-गुडकी खाद अर्थात् शर्करा-मधुर, मरेद, वातपित्ताशक, किञ्चित्
शीतगुणयुक्त, यलकारक, वीर्यवर्द्धक और रुचिकार

गुडखण्डगुणः ।

शर्करामीनाण्डीशुक्रासिताचवालुपला ॥ अतिचा-
अहिच्छत्रासिकताशुद्धाशुभ्रासितोपला ॥

अर्थ-शर्करा, मीनाण्डी शुक्रा, सिता, वातकारमजा । अहिच्छत्रा,
सिकता, शुभ्रा, शुद्धा, मितोपला, (शुद्धोपला, शर्करा, भेता, मरस्यण्डिका,
गर्दोदवा) ।

ससृक्भाषामे

शर्करा ।

हिन्दीभाषामे

सुरा, मिथी, बनारस, कंद ।

यंगभाषामे

गिनी, मिछी ।

मराठीभाषामे

पिठीगातर, खटीगातर ।

गुजगतीभाषामे

शाकर ।

पणार्थभाषामे

गुडगुडागुणी ।

सैयद्दीभाषामे

फार्मिषांशादरा ।

हिन्दीभाषामे

सुरासिद्ध शुभ्रापेटी Purified Su. & Carby

सिद्धिभाषामे

मादरम्य सुगिहिकिम् । Sarcaraum Purified. ॥

फार्मीभाषामे

सर्दीगातर नवात ।

अर्थभाषामे

मरु अमिद ।

शर्करागुणा ।

शर्कराशीतवीर्याचविपाकेमधुरासरा ।

दाहतृदछर्दिमूच्छासकृमिकोपविनाशिनी ॥ (गणनि०)

अर्थ—शर्करा (बूरा), शीतवीर्य, विपाकमें मधुर, सारक तथा दाह, तृपा, वमन, मूच्छा, रुधिरविकार और कृमिरोगको नष्ट करेहै ।

मूच्छामोहतृपास्यशोषशमनीदाहज्वरध्वसिनी श्वासच्छर्दिमदात्ययकृमहरीद्व्याचसन्तर्पणी । क्षीणेरेतसिपावकेच विपमेक्षीणेक्षतेदुर्वलेदुर्वतेपिचरक्तपित्तजगदेसेव्यासदाशर्करा ॥ इक्षुजेषुविकारेपुसर्वेष्वपिमनोहरा । समस्तरोगशमनीतवराजारव्यशर्करा ॥ (सुषेणदेव)

अर्थ—मिश्री—मूच्छा, मोह और तृपाके शोषको शान्ति करनेवाली, दाहज्वरनाशक, श्वास, वमन, मदात्यय और कृमको हरनेवाली, हृदयको हितकारी, तृप्तिकारक तथा क्षीणवीर्य, विपमामि, क्षीण, क्षत, दुर्वल, वातरक्त और रक्तपित्तरोगमें सदैव सेवन करनी चाहिये । सर्व प्रकारके इक्षुविकारोंमें तवराजशर्कराश्रेष्ठ और सर्व प्रकारके रोगोंको शान्ति करनेवाली है ।

अथ च ।

शर्करामधुराशीतावल्यावृष्यासरामता । स्निग्धाकफकरी चेवक्षयकासतृपाजयेत् ॥ विपदोपमदश्वासमोहमूच्छावमि तथा । अतिसाररक्तदोषपित्तवातकृमीस्तथा ॥ भ्रान्तिदाहश्रमचारशनाशयेदितिकीर्त्तिता । यथायथाचर्धातास्यात्तयागुणकरीमता ॥ खण्डोपलाचचक्षुष्यास्निग्धाधातुविवर्द्धिनी । मुखप्रियाचमधुराशीतावृष्यावलप्रदा ॥ सरेन्द्रियतृप्तिकरीलघ्वीतृष्णाविनाशिनी । क्षतक्षयरक्तपित्तमोहमूच्छाकफतथा ॥ वातपित्तचदाहचशोषचैवविनाशयेत् । पाण्डूक्षुजाशर्करातुस्निग्धाहितकरीमता ॥ वृष्याक्षतक्षयचैव क्षयचैवारुचिजयेत् । वशेषुसम्भवावल्याचक्षुष्याधातुव-

द्विनी॥रूक्षाचमधुगचैवश्यामैश्शूणांवलप्रदा । श्रमघ्नी-
पर्णीरुच्यारसेश्रूणाचशीतला ॥ स्निग्धाकान्तिकरीप्रोक्ता
रक्तेक्षोपित्तनाशिनी । (नि र.)

अर्थ-शर्करा-शृंग-चीनी-मधुर, शीतल, यलकारक, वीर्यवर्द्धक,
सागक, स्निग्ध, कफकारक, तथा क्षय, रोगी, शृणा, विषविकार, मन्,
श्याम, मोह, मृच्छा, वमन, अतिसार, रुचिगविकार, पित्त, वात, कृमि,
भ्रम, दाह, श्रम और बवागिरको दूर करे है । यह जितनी २ अधिक
मफे होगी उतनी २ ही अधिक गुणवाली है । मिथी व मन्द-नेत्राको
दितकारी, स्निग्ध, धातुवर्द्धक, मुरमिष, मधुर, शीतल, वीर्यवर्द्धक,
यलकारक, सागक, इन्द्रियाको मृत करनेवाली, हठकी, शृणानाशक तथा
क्षय, क्षय, रक्तपित्त, मोह, मृच्छा, कफ, वात, पित्त, दाह और शोषको
हरनेवाली है । पुण्डकादि ईरोंकी-शृंग-स्निग्ध, दितकारी, वीर्यवर्द्धक,
क्षयक्षय, क्षय और अरुचिको हरे है । वज्रक नामवाली इसकी राह-वर्-
कारी, नेत्रोंको दितकारी, धातुवर्द्धक रोगी और मधुर है । काली ईरकी
चीनी-यलकारक, श्रमनाशक, कृमिनाशक, रुचिजनक है । ग्नेधुनामवाली
ईरकी चीनी-शीतल, स्निग्ध और कान्तिकरक है । छाईरकी-शृंग-
पित्तनाशक है ।

लम्बापार्श्वानामुत्तराश्रमेमद्वयादिनागुणवर्णमाह ।

लम्बीकापाणितगुडगण्डमत्स्याण्डकामिता ।

निर्मलालववोज्ञेया शीतवीर्यायथोत्तरम ॥

यथायथेषानिर्मल्यगुणवत्स्यात्तथातथा । (ग० य०)

अर्थ-लम्बीका (गीम), पाणित (गव), गुड, ग्राह, चीनी और
मिथी यह क्रमसे निर्मल है, इसकी और शीतवीर्य है अर्थात् गीमसे गव,
गवसे गुड, गुडसे ग्राह, ग्राहसे चीनी और चीनीसे मिथी-निर्मल,
इसकी और शीतवीर्य है इन्म जो जो अधिक निर्मल होता है उस उनही
अधिक गुण जानने ।

यन्मनाद्यथैवमात्राभिः ।

यावन्तर्लाहिमोन्पत्रादिमान्निहिमभर्कन ।

धुद्रगर्भिकाधुद्रागुडजाजलनिन्दुजा ॥

अर्थ—यावनाली, हिमोत्पन्ना, हिमानी, हिमशर्करा, क्षुद्रशर्करिका, क्षुद्रा, गुडजा, जलनिन्दुजा ।

तद्वृणा ।

क्षुद्रातुशर्कराकिञ्चिदुष्णातिक्तातिपिच्छिला ।

स्निग्धाचमधुरारुच्यासरादाहविनाशिनी ॥

वातपित्तरक्तदोषनाशयेदितिकीर्तिता । (नि०२०)

अर्थ—यावनालशर्करा (सीरेखिस्त)—किञ्चित् गरम, कडवी, अत्यन्त-पिच्छिल, स्निग्ध, मधुर, रुचिकारक, मारक, दाहनाशक तथा वात, पित्त और रक्तके दोषोंको हरे है ।

यवासशर्करागुणा ।

यवासशर्कराशीतारसेस्वाद्दीकपायका ।

वृष्यातिक्ताचमधुराभ्रमपित्ततृपांजयेत् । (रा०नि०)

अर्थ—यवासशर्करा (तुरजवीन)—शीतल, स्वादिष्ट, कपेली, वीर्यवर्द्धक, कडवी, मधुर तथा भ्रम, पित्त और तृपानाशक है ।

भयञ्च ।

यवासशर्कराज्ञेयावृहणीपित्तहारिणी । ज्वरहृदीपनीशीतारच-
नीचपुरातनी ॥ नाय्याश्चापन्नसत्त्वायादुर्बलम्यतथारिशो ।
रैचनार्थप्रयोज्येयक्षीणस्यस्थविरस्यच ॥ (आ०म०)

अर्थ—यवासशर्करा (तुरजवीन)—पुष्टिकारक, पित्तनाशक, ज्वरदागक, अग्निप्रदीपक, शीतल और यह पुरानी दस्तावेज है । गर्भवती स्त्री, दुर्बल बालक, क्षीण और वृद्धमनुष्याको इसमें दस्तकराने चाहिये ।

मधुशर्करागुणा ।

मधुजाशर्करावल्यागुर्वीवृष्याचशीतला । मधुरातर्पणीरू-
क्षातुवराडेदकातथा ॥ पाकेस्वाद्दीवमिदाहपित्तचअतिसार-
कम् । रक्तपित्ततृपांपित्तफचेवविनाशयेत् ॥ (नि०२०)

अर्थ—मधुकी ग्लाड—बलकारक, भारी, वीर्यवर्द्धक, शीतल, मधुर, तृप्तिकारक, रुच्य, कपेली, छेदक, पत्रोंमें स्वादिष्ट तथा वमन, दाह, पित्त, अतिसार, रक्तपित्त, तृपा, पित्त और कफको दूर करे है ।

पुष्पधरागुणा ।

पुष्पोद्वाशर्करातुस्वाढीहृद्याचर्शीतला । गुर्वापित्तरक्तदो-
पनाशयेदितिकीर्त्तिता ॥ यावन्त्य शर्कराः प्रोक्ताः सर्वादाह-
प्रणाशनाः । रक्तपित्तप्रशमनाश्छर्दिमूर्च्छातृपापहाः ॥

अर्थ-पुष्पशर्करा अर्थात् फूलमे घनाइई चिनी-स्वादिस, हृद्यको
हितकारी, शीतल, भारी, पित्त और कफिके विकारोंको हरे ई । पित्तकी
प्रकारकी चीनी इ वे सर्व प्रकारकी आहनाशक, रक्तपित्तको नाशित करने
वाली तथा घमन, मूर्च्छा और तृषाको हरनेवाली हैं ।

इति श्रीशार्ङ्गभानिष्ठभूषण पुष्प गुणः ॥ २० ॥

अथ सन्धानवर्गः ।

शान्तिवर्गनामानि ।

काञ्जिककञ्जिककाञ्जीकुण्डलकुण्डगोलकम् ।

धान्यमूलधान्ययोनि कुलमापकुलमाभिषुतम् ॥

अर्थ-काञ्जिक, कञ्जिक, काञ्जी, कुण्डल, कुण्डगोलक, धान्यमूल,
धान्ययोनि कुलमाप, कुलमाभिषुत, (आगनाश, गीवीर, कुलमाप,
अभिषुत, आवृत्तिगोम, धान्याम, कुशक गिद्धन, गिद्धमश्व, काञ्जिक
काञ्जिका, भक्तगारे, तुषारपु, मन्धान, गुहाम, महाग, तुषोन्क,
पुन्युक, धानुत्र, उपाद, रक्षोप, मुर्यागम्, पद्मवारि, रीर, अभिषव,
अग्लनाम्) ।

शान्तिवर्गसंगुणाध ।

सधितधान्यमण्डादिकाञ्जिककल्यतेजने । काञ्जिकमंदि-
तीक्ष्णोष्णरोचनपाचनलघु ॥ दाहज्वरहरम्पान्पानाश-
तकफापहम् । मापाद्विषयैक्यंनुक्रियतेनृणाधिरम् ॥
लघुवातहरनृगेचनपाचनपम् । शूलार्जणधिरन्धामना-
गनेवन्तिशोथनम् ॥ (भा०प्र०)

अथ-धान्याधिकारे मोहको कुछ दिनों भग रहना देर उमरों कीतो

कहते हैं काजी-भेटक, तीक्ष्ण, गरम, रोचन, पाचक, हल्की शरीरमें लगानेसे दाह और ज्वरको दूर करे और पानिसे वातकफको हरे है। उट्ट आठिके घडोंको बनाईहुई काजी अधिक गुणवाली है हल्की, वातनाशक, रोचन, पाचन, तथा शूल, अजीर्ण, विवन्ध और आमनाशक और वस्ति-शोधक है।

निषेध ।

शोपेमूर्च्छाज्वरार्तानाभ्रमकेदुर्विपादिते । कुष्ठानारक्तपित्तानांकाजिकनप्रशस्यते ॥ पाण्डुरोगेराजयक्ष्मण्यथशोफातुरेषुच । क्षतक्षीणेपरिश्वातेमन्दज्वरनिपीडिते ॥ नरेनैव हितप्रोक्तकाजिकदोषकारकम् ॥ (हारी० स०)

अर्थ-शोप, मूर्च्छा, ज्वरसे पीडित, भ्रम, विषसे पीडित, कुष्ठ, रक्तपित्त, पाण्डुरोग, राजयक्ष्मा, सृजनने पीडित, क्षतक्षीण, मार्गचन्द्रेसे यकृतपे और मन्दज्वरसे पीडित मनुष्योंको काजी हितकारी नहीं किन्तु दोषकारी है।
काजिकविशेषगुणा ।

शूलवातार्दितानान्तुतथाजीर्णविवन्धिनाम् ।

श्रेष्ठप्रोक्ततथाम्लश्चगुणाधिक्यनरेषुच ॥ (हारी० स०)

अर्थ-शूल और वातसे पीडित तथा अजीर्ण और विवन्ध रोगवाले रोगियाको काजी अत्युत्तम है और अनेक गुण करे है।

अन्यथा ।

नूतनमृन्मयकुम्भकट्टैलेनलेपयेत । निर्मलचजलतस्मिन्नाजिकाजाजिसेन्धवम् ॥ हिंगुविश्वानिशाचेवओदनवंशपल्लवा । ओदनस्यकुलित्थानांजलवटकखांडवम् ॥ सर्वतस्मिन्निधायाथमुद्रादत्वादिनत्रयम् । रक्षयित्वाततोवस्त्रेगालितकाजिकमतम् ॥ तद्रेदकवस्तिशुद्धिकरमुष्णचतीक्ष्णकम् । रुच्यमम्लपाचकचलधुलेपेचदाहकम् ॥ ज्वरनाशकं प्रोक्ततत्पीतकफवातहम् । शूलशोथभ्रमदाहंमूर्च्छापित्तज्वरतथा ॥ अजीर्णाध्मानविदस्तम्भानामनाशकरमतम् ॥

काञ्चिकेमस्थिताश्चैवयट्कारुचिदामता ॥ श्रीता रुफक-
गदाहशूलार्जीर्णविनाशका । नेत्ररोगेदितानोक्ताऋषिभिः
पाककोविदे । (इति रत्नाकरे)

अर्थ-प्रथम कोरा मट्टीका गदा लेकर उसके भीतर तथा ऊपर तेनका
लेप करके फिर उसमें निर्मल स्वच्छ जल भर देव उस नलम गद्द, जीरा,
मधानांन, हींग, गोठ, दलई, भात, यातके कोमल पत्ते, कुल्फीके भातका
जल और चटोके टुकड़े यह सब पदार्थ डालकर गुप्त वद् करके तीनदि-
नसक घट किया रखता रहने दवे इसके उपरान्त उसको सोलहर बरमे
छानले उसको कांजी कहते हैं । वह कांजी-भेक, यमिठगोधर, गरम,
तीक्ष्ण, रुचिकारक, सटी, पाचक, दलई, इसका लेप करनेसे-दाह और
ज्वर दूर होता है और यह पानिसे कफ, वात, शूल, सूजन, भ्रम, दाह,
मूर्च्छा, पिच्छज्वर, अजीर्ण, आध्मान और मलस्तम्भको दूर करे है ।
कांजीमें पेटदुष्ट, बड़े-रुचिपाक, दीप्त, कफकारी, दाह, शूल और
अजीर्णनाशक है और नम्रोगोगाम दितकारी नदी है ।

तुपोदकयनेरामे गुणाध ।

तुपोदकयनेरामे सतुपे शकलीकृतं ।

तुपाम्बुदीपनरूपपाण्डुकिमिगदापदम ॥

तीक्ष्णोष्णपाचनपित्तारक्तकृदस्तिशूलनुत ॥ (भा० प्र०)

अर्थ-पत्री तुपसहित जवाको पुष्कर भिजोदे जय उसमें गदापा होताप
तय वह तुपोदक हाजाता है । तुपोदक-दीपन, रुदमरो दितकारी, पाण्डु
और कृमिगोगरो दूर करे तीक्ष्ण, गरम, पाचक तथा रक्तपित्तनाशक और
यमिठकी पीडाको दूर है ।

भगवत् ।

तुपोदकं जातपित्तहन्तु रक्तपित्तकृम्यभेदकम् ।

त्रिपाचनम्याजगणकिमिग्रमजीर्णहन्तृ रुदुकचपाक ॥ (हा० प्र०)

अर्थ-तुपोदक-यातविनाशक, रक्तपित्तनाशक, दग्धनाश, पाचक, कृमि
भक्षणको भक्षण करता है कृमिनाशक, अजीर्णनाशक और वरमेमें गदपा दे ।

शरीरवाजागवि ।

मोक्षार्कमुप्रीनम्यवोत्यंगोऽममम्भयम् ।

यवाम्लजतुपोत्थचतुपोदकञ्चापिकीर्तितम् ॥

अर्थ-साँवीरक, सुवीराम्ल, यवोत्थ, गोधूमसम्भव, यवाम्लज तुपोत्थ, तुपोदक ।

अस्य वृद्धाण गुणाश्च ।

सौवीरन्तुयवेरामे पक्कैर्वानिस्तुपैःकृतम् । गोधूमेरपिसौवीरमाचार्य्याःकेचिद्वचिरे ॥ सौवीरन्तुग्रहण्यर्शं कफघ्नंभेदि दीपनम् । उदावर्त्ताद्भ्रमर्दास्थिशूलानाहपुशस्यते ॥ (भा० प्र०)

अर्थ-कच्चे वा पके जौआँके तुर अलग कारदेवे, फिर उसकी काजी बनावे उस काजीको सौवीर कहते हैं । कोई वंश कहते हैं कि, कच्चे अथवा पके गेहूँसे सौवीर बनाई जाती है । साँवीर-सम्रहणी, बवासीर और कफनाशक है, दस्तावर, दीपन तथा उदावर्त्त, अगका टूटना, अस्थियोंमें पीडा और अफारेमें हितकारी है ।

अथञ्च ।

सौवीरकंचाम्लरसकेश्यमस्तकदोपजित ।

जराशैथिल्यहरणवत्यसन्तर्पणपरम् ॥ (रा० नि०)

अर्थ-साँवीर-खट्टी केगाँको हितकारी, मस्तक रोगनाशक, जरा और शिथिलताको दग्नेवाली, बलकारी और वृत्तिकारक है ।

आरनालकृद्दणगुणाश्च ।

आरनालंतुगोधूमेरामे स्यान्निस्तुपीकृतैः ।

पक्कैर्वासधितेस्तत्तुसौवीरमदृशगुणे ॥ (भा० प्र०)

अर्थ-बिना तुरके कच्चे गेहूँको भिजोकर आरनाल नामवाली काजी बनाई जाती है । वा पके गेहूँसे बनाईहुईकोभी आरनाल कहते हैं । आरनालके गुण सौवीरकी समान जानने ।

आरनालकगुणा ।

जातयवाम्लकटुकविपाफेवातामयश्लेष्महरसरक्तम् ।

पित्तप्रकोपकुरुतेसभेदिविदूषणपित्तगदामृजञ्च ॥

अर्थ-जाँगे बनाईहुई काजी-पचनेमें कटु, वातनाशक, कफनिवारक, रक्त और पित्तको कुपित करनेवाली, दस्तावर और रक्तपित्तको दूषित करे है ।

सन्दीपनशूलहररुचिप्रदगोधूमजातकथितकपायम् ।

मन्दीपनस्याजरणंरुफमसमीरदोपंदरतेततोऽपि॥ (हा०स०)

अर्थ-गेहूँसे बनाई हुई काजी-अम्रिको दीपन करनेवाली, गुमको हाने वाली, रुचिको करनेवाली, कपेली, भोजनको भस्म करनेवाली, कफनाशक और वातके विकारोंको हरे है ।

धान्याम्लद्वाराण गुणाध ।

धान्याम्लंशालिचूर्णञ्चकोद्ववादिकृतभवेत् ।

धान्याम्लधान्ययोनित्वात्प्रीणनंलघुदीपनम् ॥

अरुचावातगेगेपुसवेवस्थापनंपुच ।

अर्थ-शालिधानोंके चूर्ण अथवा बाँदासे चूनेसे जो काजी बनाई जाती है उसको धान्याम्ल कहते हैं । धान्याम्ल-प्रीणन, हल्की, अम्रिमर्दीपन तथा सर्वप्रकारके वातगेग और अरुचिरोगमें देनी चाहिये ।

शिण्डाकीद्वाराण गुणाध ।

शिण्डाकीराजिकायुक्तंस्यान्मृलकदलद्रव्ये ।

सर्पपन्थगैर्वापिशालिपिष्टकसंयुतेः ॥

शिण्डाकीगेचनीगुग्गीपित्तश्लेष्मकरीस्मृता ॥

अर्थ-मृगके पर्णोंके रसमें गाई दाहक जो काजी बनती है उसको शिण्डाकी कहते हैं । अथवा गरमाके रसमें शालिधानोंका चूर्ण दाहक जो काजी बनाई जाती है उसकाभी शिण्डाकी कहते हैं । शिण्डाकी-शोणकाशक भारी और पित्तकफकारी है ।

शुगद्रव्येण गुणाध ।

कन्दमूलफलादीनिसन्नेहलवणानिच । यत्रद्रव्येऽभिपृयन्ते

तच्छुक्तमभिधीयते ॥ शुक्तकफमतीक्ष्णोष्णगेचनंपाचनं

लघु । पाण्डुकिमिदंरुक्मभेदकरकपित्तहृत् ॥

अर्थ-सद्गुण और कन्दादिकमें जोन और तण दाहक जो द्रव्य बनाया जाता है उसको शुक्त भव्यान् मिका कहते हैं । मिका-पचानक, तीक्ष्ण, गरम, गेचन, पाचक, हल्का पाण्डु और कृमिगेननाशक, रुग्ण दृग्गार और रक्तविशेषक है ।

कन्दमूलफलादीनिसन्नेहलवणानिच ।

कन्दमूलफलादयत्तच्छुचिजेयमामुतम् ।

तद्रुच्यपाचनवातहरलघुविशेषतः ॥

अर्थ—कद, मूल फलादिकोंमें राई आदिका चूर्ण डालकर जो द्रव्य बनाया जाता है उसको आचार कहते हैं । आचार—रुचिकारक, पाचक, वातनाशक और विशेषकरके हल्का है ।

मद्यनामानि ।

मदिराप्रसवाहालाचपलाचहलिप्रिया ।

अमृतावीरामेधावीमाधवीकापिशायनी ॥

अर्थ—मदिग, प्रसवा हाला, चपला, हलिप्रिया, अमृता, वीग, मेधावी, माधवी, कापिशायनी (सुरा, मद्य, परिश्रुता, वरुणात्मना, गन्धोत्तमा, इरा, कादम्बरी, परिश्रुता, कश्यप, प्रसन्नेरा, माणिका, कपिश्री, गन्धमादिनी, कत्तोय, मद, कपिशिका, वारुणी, मत्ता, सीता, कामिनीप्रिया, मद्गन्धा, माध्वीक, मधु, सन्धान, आसव, मदनी, सुप्रतिमा, मनोज्ञा, विधाता, मादनी, हली, गुणारिष्ट, सरक, मधुलिका, मदोत्कश, महानन्दा, सीधु, मैरेय, वनवल्लभा, कारण, तत्त्व, मदिष्ठा, परिप्लुता, कल्प, साधुरसा, शुण्डा, हारहूर, माढीक, मदना, देवमृष्टा, कापिश, अन्धिजा, कल्पा, मधूल) ।

| | |
|-----------------|---------------------------|
| संस्कृतभाषाम | मदिरा, मद्य । |
| वगभाषाम | मदिग, मद् । |
| गुजरातीभाषामें | दारू । |
| मराठीभाषामें | मद्य, दारू । |
| हिंदीभाषामें | मदिरा, (दे) दारू, सगव । |
| कर्णाटकीभाषाम | शरे, साराइ । |
| तैलिङ्गीभाषामें | क्लड्ड । |
| अ० | वाइन । |
| फारसीभाषाम | शराब । |

साधारणमदिरागुणः ।

मद्यसाधारणमूक्षमसारकदाहककटु । सुन्वादुतित्तचरसे पाकेम्लचलधुस्मृतम् ॥ अग्निदीप्तिकररुच्यहृद्यचोष्णकपायकम् । तीक्ष्णविकासिचमतमूत्रलतुष्टिकृन्मतम् ॥ मलोत्सर्गकरनाडीवस्तिशुद्धिकरमतम् । वल्यपुष्टिक

स्वयंप्रतिभाकारकमतम् ॥ आरोग्यकारकवर्णरक्तदृष्ट-
कारकम् । आनाहचक्रफवातशूलचैवविनाशयेत् ॥ विप-
शोकार्त्तपुरुषेस्त्वल्पाग्नौचहिनावहम् । सात्त्विकेऽपुरुषेऽपीत
गीतहास्यादिकारकम् ॥ राजसेर्भक्षितचेत्स्यात्माहसादि-
कर्ममतम् । तामसेर्भक्षिततच्चनिद्रालस्यादिकारकम् ॥ बल
कालचमनात्वापीनतदमृतोपमम् । अन्यथाभक्षितचेत्स्या-
द्विषवच्चापकारकम् ॥ अतीवमादकनच्चदुर्गंधिनिर्गन्धगुरु ।
कृमिजुष्टचातितीक्ष्णवनमृदुचदाहकम् ॥ दुष्टभाण्डस्थितं
वृत्रममृद्वमपिचिकणम् । उष्णमुष्णपदार्थस्तुमिश्रितमलि-
ततथा ॥ तीक्ष्णैर्द्रव्यैर्युततच्चनष्टलीयान्नरक्षितम् । स्त्रीद्वि-
जैर्नैवतद्वाद्यगुच्छिन्नंशकन्यत ॥ (नि० ७८०)

अर्थ-आधारण मदिग-मृदम, उष्ट हुष्ट दृष्टावर, दाहजनक, वायवी,
स्नायु, कटरी, रग और पाकम मृष्टी, इष्टी, अग्निरो दीपन कर्माशानी,
रुचिको उत्पन्न करनेवाली, दृष्टको दित्तवाली, गरम, कपेटी, रीत्या,
विकार्या, मृष्टकारक, तुष्टिकारक, मृष्टको निरात्मेशानी, नाडी और
वर्तितको शुद्ध करनेवाली, मृष्टदर्शक, पुष्टिकारक, मृष्टको शुद्ध करनेवाली,
प्रभावा उत्पन्न करनेवाली, आरोग्यताको देनेवाली, वर्णको शुद्ध करनेवाली,
रुचिको दृष्टित करनेवाली तथा आनाद रक्त, वात और शूलनाशक है
विषात विद्वद्भूषे, शीतले पीदित इषे और मृदाप्रवाले मनुष्यको
दित्तवाली है सावित्र मनुष्य इमको पीनमे गीत और दाहपादिको वा है
गोमृष्टयुक्त पुरुषोंको यह पीदुद माहमादि गुणोंको तृप्ति करे है और
ममोमृष्टयुक्त पुरुषोंको पीदुद मित्रा और आत्म्यको करनेवाली है मम और
पाकवा विनाश करके यह पीदुद अमृष्टकी ममान गुण वा है भयम प्रवा
मेवन पीदुद विषात ममान म वायवी कर है और भाषन नमीटी, दुर्गन्ध-
युक्त, विषम, भारी, पीदुपदीष्टा, भयम रीत्या, नाडी, मृदु, दाहक युक्त
मृष्टमम रक्षणी है, नरान, अग्निव, विषनी, गरम, गरम कदापि विषी
है, रीत्या और रीत्या दृष्टोमे विष, दुर्गन्ध ममिया रक्षणी है रीत्या

चाहिये । और स्त्री तथा ब्राह्मण तो इसको कभी भी नहीं पीवें कारण यह है कि, इसके पीनेसे बुद्धि भ्रष्ट होजाती है ।

अरिष्टलक्षण गुणाश्च ।

पक्वापधाम्बुसिद्धयन्मद्यतत्स्यादरिष्टकम् ।

अरिष्टलघुपाकेनसर्वतश्चगुणाधिकम् ॥

अरिष्टस्यगुणाज्ञेयावीजद्रव्यगुणैःसमा ।

अर्थ—जो पकी आपधियोंके काढ़से मदिरा बनाई जाती है उसको अरिष्ट कहते हैं । अरिष्टनामवाली मदिरा लघुपाकी होनेसे सर्वप्रकारकी मदिराओंसे गुणाम अधिक है । अरिष्ट जिस २ वस्तुसे बनता है उसी २ वस्तुके समान उस अरिष्टके गुण जानने ।

अन्यच्च ।

अरिष्टदीपनहृद्यतुवरपाचनलघु । सरचकटुकचैवपित्तवात-
कफापहम् ॥ कुष्ठगुल्मार्शशोषघ्नशोफसग्रहणीहरम् । पा-
ण्डुग्रीहांचोदरचज्वरशूलकृमीन्कृमम् ॥ आनाहनाशयेत्प्रो-
क्तसर्वमद्यैर्गुणाधिकम् ॥

अर्थ—अरिष्ट—दीपन, हृद्यको हितकारी, कपली, पाचक, हल्की, सारक, चरगरी तथा पित्त, वात, कफ, कोढ़, गुल्म, बवासीर, शोष, सूजन, समग्रहणी, पाण्डुरोग, ग्रीहा, उदररोग, ज्वर, ग्रह, कृमि, मृम और अफारेको दूर करनेवाली है तथा सर्वमद्योंमें अधिक गुणवाली है ।

सुरालक्षण गुणाश्च ।

शालिपष्टिकपिष्टादिवृत्तमद्यसुरास्मृता ।

सुरागुर्वीवलन्तन्यपुष्टिमेद कफप्रदा ॥

ग्राहिणीशोथगुल्मार्शग्रहणीमूत्रकृच्छ्रनुत् ।

अर्थ—शालि और साठीधानाकी पीठीसे जो मदिरा बनाईजातीहै उसको सुरा कहते हैं, सुरा—भारी, बलकारक, स्तनोंमें दूधको उत्पन्नकरनेवाली, पुष्टिकारक, कफजनक, मलरोधक तथा सूजन, गुल्म, बवासीर, मद्यग्रहणी और मूत्रकृच्छ्ररोगनाशक है ।

घारुणीलक्षण गुणाश्च ।

पुनर्नवागिलापिष्टैर्वारुणीविहितामता ।

मंहितेस्तालग्नर्त्तुरस्यसापिवाक्यो ॥

मुगवद्वारुणीलघ्वीपीनसाध्मानशूलनुत ।

अर्थ-पुनर्वर्षको मित्रपर पीनका जो मदिग बनाई जाती है उसको वारुणी कहते हैं । किसीके मतसे ताल और गज्जमदिके रसमें जो मदिग बनाई जाती है उनको वारुणी कहते हैं । वारुणी मदिगके गुण मुगकी समान है विशेष करके हल्की तथा पीन, आध्मा और शूलको निवृत्त करे है ।

अथ

वारुणीपीष्टिकीहृद्यातीक्ष्णादुग्धप्रदामता । लघ्वीचक्षुष्म-
लाशूलकासवातिविषन्वहा ॥ आध्मानपीनसन्धासमुत्कृ-
च्छ्रचनाशयेत् । गुल्मचार्शनाशयतीत्येवमुक्तचिकित्सके ॥

अर्थ-वारुणीमदिग-पुष्टिकारण, हृदयको शिवागी, तीक्ष्ण रसमान, हल्की, पचदागी तथा शूल, गोंमी, श्मश, विषन्व, अतिस, पीनस, श्वास, मुक्कृच्छ्र, गुल्म और चर्वागीको हर्षे है ।

श्रीसुप्रसन्न गुणाय ।

इक्षो पक्कैरमेमिद्ध सीधुःपक्कमश्रमः । आमर्त्तैर्ययःसी-
धु सचशीतरसःस्मृत ॥ सीधुःपक्कम श्रेष्ठः सगमिचल-
र्णकृत् । वातपित्तकरः मद्य म्नेहनागेचनोहरेत् । विषन्वमे-
द शोफार्शः शोफोदरकफामथान ॥ तस्मादल्पगुणः शीतर-
स संलेखनः स्मृतः ।

अर्थ-पक्कैरमे इक्षो रसमें जो मदिग बनाई जाती है उसको सीधु कहते हैं और जो पक्के इक्षो रसमें मदिग बनाई जाती है उसको सीधुनामवाणी मदिग-श्रेष्ठ, श्मश, अतिस, श्मश और रसको रसमान, तस्मात् वातपित्तकारण, मित्र, मोदक तथा विषन्व, मेद शूल, चर्वागी, शोफोदर और चर्वागीको हर्षे है । सीधुनामवाणी मदिग सीधुने कुछ अल्पगुणवाणी और लेखन है ।

अथ

सीधु कषायाम्बुमाधुगेयामन्दीपनोमेदमलापमर्दः ।

आमातिसारानिलपित्तशूलश्लेष्मामयाशोयहणीगदघ्नः (हा स)

अर्थ—सीधुनामवाली मदिरा—कपेली, खट्टी, अग्निप्रदीपक, भेट और मलको हग्नेवाली तथा आमातिमार, वात, पित्त, शूल, कफरोग, बवासीर और सग्रहणीको दूर करनेवाली है ।

गौडीमदिरागुणा ।

तीक्ष्णोष्णामधुरागौडीवातघ्नीवलपित्तकृत् ।

कान्तिवृत्तिकरीपथ्यावह्निकामप्रदीपनी ॥ (आ०स०)

अर्थ—गौडी अर्थात् गुडादिसे बनाई मदिरा—तीक्ष्ण, गरम, मधुर, वात-नाशक तथा बल, पित्त, कान्ति और वृत्तिकारक, पथ्य, अग्नि और कामको प्रदीपन करनेवाली है ।

अन्यच्च ।

गौडीकपायामधुराम्लशीतासन्दीपनीशूलमलापहन्त्री ।

हृद्यात्रिदोषशमयत्यजीर्णपाण्डुमयार्शःश्वसनान्निहन्तिहा सं

अर्थ—गौडी मदिरा—कपेली, मधुर, खट्टी, शीतल, अग्निप्रदीपक, शूल और मलको हग्नेवाली, हृदयको हितकारी त्रिदोषनाशक तथा अजीर्ण, पाण्डुरोग, बवासीर और श्वासविनाशक है ।

माध्वीकमद्यगुणा ।

माध्वीसुरातुमधुराकिञ्चिदुष्णाकपायका । तीक्ष्णालघ्वी

चहृद्याचरुक्षाचच्छेदनीमता ॥ पित्तंवातचपाण्डुञ्चकाम-

लांचप्रमेहकम् । गुल्मंचार्शं प्रतिश्यायविपंकुष्ठञ्चनाशयेत् ॥

अर्थ—माध्वीनामवाली मदिरा—मधुर, किञ्चित् गरम, कपेली, तीक्ष्ण, हलकी, हृदयको हितकारी, रूखी, छेदक तथा पित्त, वात, पाण्डुरोग, कामला प्रमेह, गुल्म, बवासीर, प्रतिश्याय, विष और कुष्ठको नष्ट करे है ।

अन्यच्च ।

माध्वीकशीतलाम्लमधुरमपितथास्यात्कपायोष्णकञ्च

हृन्त्यात्पित्तमयार्शःश्वसनमपितथाचातिसागप्रमेहान् ॥

शूलानाहोपमर्दजरयतिसकलदीपयत्यग्निसात्पथ्य

तस्माद्वातामवातवमनमपितथाहन्तिमर्वाश्चरोगान् ॥

अर्थ-माछीक मदिग-शीतल, गट्टी, मधुर, फणेली, गम तथा रिम-
रोग, घदामीर, श्वात, अतिशय, प्रमेद, शूल और आनादबो दूरा करो दे,
मयं वस्तुओंको पावनकग्नेशाली, अग्निको दीपन कग्नेशाली तथा वात,
आमवात और वमनको हरनेशाली है तथा गाम्ग्य है ।

पैष्टीमद्यगुणः ।

पैष्टीमन्दीपनीरुच्यारुफकृद्धातनाशिनी ।

पित्तलापाण्डुरोगार्णाकारिणीरुद्धामता ॥ (हा० स०)

अर्थ-पैष्टी मदिग-अग्निको दीपन कग्नेशाली, अग्निको करीशाली,
फणकारी, वातनाशक, पित्तकारक और पाण्डुरोगको उदय करे दे ।

अप्यतः ।

पैष्टीसुगतुमधुगतीक्ष्णाम्लकटुकागुरु ।

दीपनीस्तन्यकरुफदामेहपुष्टिकर्मता ॥ (नि० १०)

अर्थ-पैष्टी मदिग-मधुर, तीक्ष्ण, गट्टी, चरपी, भारी, दीपन, स्तनां
दूधको कग्नेशाली, फणकारी तथा प्रमेद और पुष्टिरो कग्नेशाली है ।

इष्टप्रभमद्यगुणः ।

मद्यतुचैक्षवशीतमदकृच्चनमोरितम् ॥

यवमद्यस्तम्भकंचरुक्षचैवतुदीपकम् ॥

मोदकचाग्निजनकं वृष्यवातकफापहम् ।

अर्थ-पैक्षव मदिग शीतल, मन्दाग्य और जोरती मदिग मन्दाग्य,
शीत, अग्निप्रदीपक, मोदकारक, अग्निकारक, वीर्यवर्द्धक और वातकद-
नाशक है ।

मद्यतुचैक्षवमद्यगुणः ।

मद्यतुचैक्षवमद्यगुणतल्लगुरुमोदनम् ।

वृष्यवृष्यनृष्यचतृष्णामन्नापनाशकम् ॥

अर्थ-मद्यतुचैक्षव मदिग-शीतल, भारी, मोदन, मन्दाग्य, दूध
वर्द्धक शीतशाली तथा वृष्य और मन्नापनाशक है ।

इष्टप्रभमद्यगुणः ।

द्राभासुगतुमधुगतीक्ष्णाम्लकटुकागुरु । विशदानीपनी-

ध्वीकिञ्चिदुष्णावलप्रदा ॥ पुष्टिकृच्छेखनीवर्ण्याशुकलाच
सरामता । किञ्चित्पित्तकरीमृद्गीवातलाशोपमेदनुत् ॥ क्लेद
पाण्डुंकफचार्शकृमीन्मेहंचकामलाम् । रक्तपित्तचकुष्ठच
नाशयेदितिकीर्त्तिता ॥ विपमंचज्वरचैवरक्तार्शश्चैवनाशयेत् ।

अर्थ—दाखोंकी मदिरा—श्रेष्ठ, मधुर, स्निग्ध, रुचिकाग्क, विशद, अग्नि-
प्रदीपक, हलकी, किञ्चित् गरम, चलकारक, पुष्टिकारक, लेखन, वर्णको
सुदर करनेवाली, शुक्रजनक, सारक, किञ्चित् पित्तकारक, मृदु, वातकारक
तथा शोष, मेद, हेद, पाण्डुरोग, कफ, घवासीर, कृमि, प्रमेह, कामलारोग,
रक्तपित्त, कोठ, विपमज्वर और खूनीववासीरको हरण करे है ।

खजूरमद्यगुणा ।

खजूरमद्यशीतस्याद्बुच्यवातकरगुरु ।

अर्थ—खजूरकी मदिरा—शीतल, रुचिकारक, वादी और भारी है ।

तालमद्यगुणा ।

श्लेष्मदोपकरावृण्वावातलाश्लेष्मवर्द्धिनी ।

कासहृत्तासविध्वंसकरणातालमड्डिका ॥ (हा स०)

अर्थ—ताड़की मदिरा—कफकारी, वीर्यवर्द्धक, वादी, श्लेष्मवर्द्धक तथा
ग्वामी और हृत्तासको हरे है ।

आसवस्यगुणाश्च ।

यदपक्वोपधाम्बुभ्यासिद्धमद्यसआसवः ।

आसवस्यगुणाज्ञेयावीजद्रव्यगुणेषमा ॥

अर्थ—जो कच्ची औषधियोंके पानीसे मदिरा बनाई जातई उसको आसव
कहते हैं । आसवके गुण जिन २ बीज और द्रव्योंसे बह बनाया जाता है
उसी उसीके अनुसार जानने ।

सुरासवगुणा ।

सुरासवस्तीव्रमदोवातघ्नोवदनप्रिय ॥ (चरक०)

अर्थ—सुरागव—तीव्रमदकारक, वातनाशक और मुखप्रिय है ।

अपघ्न ।

सुरासव मेहन स्याद्गुरुर्वत्यश्चदीपन ।

ग्राहक पुष्टिदुग्धरक्तमासरुफप्रदः ॥

मेदः कृद्वहणीगुल्ममृत्रावातार्शोफहतः । (नि०२०)

अर्थ-सुरासव-स्नेहन, मारी, पचकारी, टीपन, मलगेमक, पुष्टिकारक तथा दूध रुधिर, मांस, कफ और मेदको हरे हरे तथा संप्रदहणी, गुल्म मृत्रावात, यशमोर और सूजनको हरे हरे ।

गुडासवगुणाः ।

गुडासव कटुस्तिक्तोऽल्पश्चाग्निप्रदीपनः ।

सुस्वादुर्मृत्रलोपण्योऽह्णस्तर्पणोमृदुः ॥

सृष्टविद्वक्श्वेप्रोक्तोमुनिभिः सूक्ष्मदर्शिभिः ।

अर्थ-गुडासव-चापरी, कड़वा, पचकारक अग्निप्रदीपक, स्वादिष्ट, सूजनरु रोगों को गुदा करनेवाली, पुष्टिकारक, रुधिरहारी, मृदु और मयको करनेवाली है ।

गुडासवगुणाः ।

मध्वासवोऽल्पस्तृष्णोऽमधुगन्धुवरोमतः ।

छेदीरसः प्रतिश्यायकुष्ठमेहविनाशनः ॥

अर्थ-मध्वासव-दुल्हकी, तीक्ष्ण, मयुर, कण्ठी, छेदक, कटरी तथा प्रतिश्याय, फोड और ममेहविनाशक है ।

द्राक्षासवगुणाः ।

द्राक्षामय कफकारिणक्तपित्तार्शकुष्ठहा ।

अर्थ-द्राक्षासव-कफकारक तथा रक्तपित्त, यशमोर और पुष्पनाशक है ।

शर्करासवगुणाः ।

शर्करायाश्चामवस्तुपाचकोऽग्निप्रदीपनः ।

रोचनश्चालघु स्त्रादुर्मुष्योऽस्तिचिरागदा ॥

वातशोषनाशयनीत्ययमात्रार्थभाषितम् ।

अर्थ-शर्करासव-वातक अग्निप्रदीपक, रोचन, हलकी, स्वादिष्ट, वीर्य बढ़ाने वाला चिरागदा तथा वात और शोषनाशन है ।

जाम्बवासवगुणाः ।

जाम्बवस्त्यान्तराशपितुर्गोम्राहकोमतः ।

वातशोषनकारिणमुनिभिः समुदाहृतः ॥

अर्थ-जाम्बवासव-रूपेली, मलरोधक और वातको कुपित करे है ।

भैरेयमद्यगुणा ।

भैरेयकतुमद्यस्यादृष्यधातुविवर्द्धकम् । सरतृत्तिकरचैवगु-
रुतीव्रमदप्रदम् ॥ मुखप्रियंचमधुरकटुप्रोक्तकफप्रदम् । व-
लवर्द्धनकृच्चैवमेदोवातकृमीञ्जयेत् ॥

अर्थ-भैरेयमादिरा-वीर्यवर्द्धक, धातुवर्द्धक, सारक, तृत्तिकारक भारी,
तीक्ष्णमदकारक, मुखप्रिय, मधुर, चरपरी, कफकारक, वलवर्द्धक तथा भेद,
वात और कृमिको दूर करे है ।

नवीनमद्यगुणा ।

नूतनमद्यस्मृतशीतवातलपित्तलतथा ।

त्रिदोषजनकदाहिकफकृद्धिशदगुरु ।

अहृद्यचसरचैवदुर्गधिवृहणमतम् ॥

अर्थ-नवीनमादिरा-शीतल, वातकारक, पित्तकारक, त्रिदोषजनक,
दाहकारक, कफकारक, विगद, भारी, हृदयको अहितकारी, सारक, दुर्गध-
युक्त और पुष्टिकारक है ।

प्राचीनमद्यगुणा ।

जीर्णमद्यभ्रामकस्यादीपनरुचिकृल्लघु । सुगधिवृष्यहृद्यच
स्रोतसांचविशोधकम् ॥ लवणेनविनासर्वरसैर्युक्तकफापहम् ।
वातकृमीन्सर्वरोगान्नाशयेदितिकीर्तितम् ॥ (नि०२०)

अर्थ-पुरानीमादिरा-भ्रमकारक, अग्निप्रदीपक, रुचिकारक, हलकी,
सुगधियुक्त, वीर्यवर्द्धक, हृदयको हितकारी, स्रोतोंको शुद्ध करनेवाली,
लवणरसको छोड़कर सर्वरसोंकरके युक्त कफनाशक तथा वात, कृमि और
सर्वरोगको हरे है ।

विधियुक्तमद्यगुणा ।

विधिनामात्रयाकालेहितैरन्नेर्यथावलम् । प्रहृष्टोऽपिपेन्म-
द्यतस्यस्यादमृततथा ॥ किन्तुमद्यस्वभावेनयथेवान्नतथा
स्मृतम् । अयुक्तियुक्तरोगाययुक्तियुक्तयथाऽमृतम् ॥

अर्थ-मद्यपानकी विधिसे मात्राके मापिक नमयपर दिवतनक, अन्नाके

ग्राहकः पुष्टिकृद्गुग्धरक्तमांसकफप्रदः ॥

मेदः कृद्धहणी गुल्ममृजाघाताग्नेशोफप्रतः । (नि० २०)

अर्थ-मुरासव-स्नेहन, भारी, चलकारी, दीपन, मलरोधक, पुष्टिकारक तथा दुध, रुधिर मांस, कफ और मेदको हरे है तथा ममरुणा, गुल्म, मृजाघात, यवामीर और मूजनको हरे है ।

गुडासवगुणा ।

गुडासवः कटुस्तिक्तो वल्यश्चाग्निप्रदीपनः ।

सुस्वादुर्मृत्रलोवण्यो बृहणस्तर्पणो मृदुः ॥

सृष्टविद्वक्श्च वेप्रोक्तो मुनिभिः सूक्ष्मदर्शिभिः ।

अर्थ-गुडासव-चरपरी, कडवी, चलकारक, अग्निप्रदीपक, स्वादिष्ट, मूत्रजनक, वर्णको सुंदर करनेवाली, पुष्टिकारक, तृप्तिकारी, मृदु और मलको करनेवाली है ।

मध्यासवगुणा ।

मध्वासवो लघुस्तीक्ष्णो मधुरस्तु वरो मतः ।

छेदीरुक्षः प्रतिश्यायकुष्ठमेहविनाशनः ॥

अर्थ-मध्वासव-हल्की, तीक्ष्ण, मधुर, कपेली, छेदक, सूखी तथा प्रतिश्याय, कोष्ठ और प्रमेहविनाशक है ।

द्राक्षासवगुणा ।

द्राक्षासवः कफकारी रक्तपित्तार्शकुष्ठहा ।

अर्थ-द्राक्षासव-कफकारक तथा रक्तपित्त, यवासीर और कुष्ठनाशक है ।

शर्करासवगुणा ।

शर्करायाश्वासवस्तुपाचकोऽग्निप्रदीपनः ।

रोचनश्च लघुः स्वादुर्वृष्यो वन्ति विकारहा ॥

वातं गोपनाशयतीत्येवमाचार्य्यभाषितम् ।

अर्थ-शर्करासव-पाचक, अग्निप्रदीपक, रोचन, हल्की, स्वादिष्ट, वीर्य्य वर्धक, वातविनाशक तथा वात और गोपनाशक है ।

जाम्बवस्यासवगुणा ।

जाम्बवस्यासवश्चापितुवरो ग्राहको मतः ।

वातरोपनकारी च मुनिभिः समुदाहृतः ॥

अर्थ—जाम्बवासव—कपेली, मलरोधक और वातको कुपित करे है ।

मेरेयमद्यगुणा ।

मेरेयकतुमद्यस्यादृष्यधातुविवर्द्धकम् । सरंतृप्तिकरचैवगु-
रुतीव्रमदप्रदम् ॥ मुखप्रियचमधुरकटुप्रोक्तकफप्रदम् । व-
लवर्द्धनकृच्चैवमेदोवातकृमीञ्जयेत् ॥

अर्थ—मेरेयमदिरा—वीर्यवर्द्धक, धातुवर्द्धक, सारक, तृप्तिकारक भारी, तीक्ष्णमदकारक, मुखप्रिय, मधुर, चरपरी, कफकारक, वलवर्द्धक तथा मेद, वात और कृमिको दूर करे है ।

नवीनमद्यगुणा ।

नूतनमद्यस्मृतशीतवातलपित्तलतथा ।

त्रिदोषजनकदाहिकफकृद्धिशदगुरु ।

अहृद्यचसरचैवदुर्गंधिवृहणमतम् ॥

अर्थ—नवीनमदिरा—शीतल, वातकारक, पित्तकारक, त्रिदोषजनक, दाहकारक, कफकारक, विगड, भारी, हृद्यको अहितकारी, सारक, दुर्गंध-युक्त और पुष्टिकारक है ।

मार्धानमद्यगुणा ।

जीर्णमद्यभ्रामकस्यादीपनरुचिकूलधु । सुगधिवृष्यहृद्यच
स्रोतसांचविशोधकम् ॥ लवणेनविनासर्वरसैर्युक्तकफापहम् ।
वातकृमीन्सर्वरोगान्नाशयेदितिकीर्तितम् ॥ (नि०२०)

अर्थ—पुरानीमदिरा—भ्रमकारक, अग्निप्रदीपक, रुचिकारक, हल्की, सुगधियुक्त, वीर्यवर्द्धक, हृद्यको दितकारी, स्रोताको शुद्ध करनेवाली, लवणरसको छोड़कर सर्वरसोंफरके युक्त कफनाशक तथा वात, कृमि और सर्वरोगको हरे है ।

विधियुक्तमद्यपानगुणा ।

विधिनामात्रयाकालेहितैरेत्यथावलम् । प्रहृष्टोय पिवेन्म-
द्यतस्यस्यादमृततथा ॥ किन्तुमद्यस्वभावेनयथेवाग्रंतथा
स्मृतम् । अयुक्तियुक्तरोगाययुक्तियुक्ततथाऽमृतम् ॥

अर्थ—मद्यपानकी विधिमे मात्राके मापिक ममयप हितवनन, अत्राके

साथ बलाबलको देखके हर्षसहित जो मनुष्य मदिराकी पीता है उसके मद्य अमृतके समान गुण करे है, मद्य स्वभावसेही अन्नकी समान गुणकारक है, परन्तु अविधिमे जो पीवे है उसके रोगोंको करे है और विधिके साथ जो पीवे है उसके अमृतकी महान् गुणोंको करे है ।

सुराप्रयोगविधि ।

कृशानारक्तमूत्राणाग्रहण्यशौविकारिणाम् ।

सुराप्रशस्तावातघ्नीस्तन्यरक्तक्षयेषुच ॥

अर्थ—कृशशरीरवाले, रुधिर, मूत्र, सप्रहणी और अशरोगवाले मनुष्याको मदिरा, विशेष दितकारी है, मुगको पीनेसे वातरोग, स्तन्य और रक्तक्षयरोग दूर होता है ।

मतांतर ।

पूणैकपायपित्तचयोगयुक्तासुराहिता । बहुदोषहराचैवश्ले-
ष्मरोगेविशेषतः ॥ श्रमज्वरातुग्शेषेशोषपाण्ड्यामयक्षये ॥
मते क्लेदपस्मारेचपक्ष्मणाध्रमेषुच ॥ श्रान्तेनाविपपी-
तेवामर्षदष्टेजलोदरे । रक्तपित्ततथाश्वासेवारुणीनहिता
मता ॥ (हा०स०)

अर्थ—कपेलेपनमे युक्त हुवा पित्त जब पूण हैवे तब योगमे युक्त मदिरा दितकारक है वातपेणोंकी दग्नेवाली और विशेषकरके कपके रोगोंको नष्ट करे है परिश्रम, ज्वरसे पीडित, शोष, शोष पाण्डुरोग, क्षय, युट्टिकायचना, अपस्मार, पलकोंका भ्रम, श्रान्त और जिसने विष पीलिया है उसको, नर्पक काटेमे, जलोदग्मे, रक्तपित्त और श्वासरोगमे मदिरा दितकारी नहीं है ।

अथ मद्यानां गन्धनाशनापायः ।

मुस्तैलवालगदजीरकधान्यकैला यक्षर्वयन्सदसिवाचम-
भिव्यनक्ति । स्वाभाविकमुखजमुज्जतिप्रतिगंध गन्ध
चमद्यलशुनादिभवचनून् ॥ (भा०प्र०)

अर्थ—जागरमोया, स्रुजना, वृद्ध, शीरा, धनिया और इत्यादीकी परत कावे जो गमांम पीले है उनकी स्वाभाविक मुखको दुर्गंध दूर होती है

और मद्य लशुनादिकी भी दुर्गन्ध दूर होती है यदि मद्यके विशेष गुणदोष और प्रकार देखनेकी इच्छा होय तो "भषज्यभास्कर" में देखो ।

इति श्रीदशालिप्रामनिग्रहभूषणे सप्तमोऽर्ग समाप्त ॥ २१ ॥

अथ संख्यावर्गः ।

शास्त्रद्वयम् ।

एक.पर्पटक.श्रेष्ठ.पित्तज्वरविनाशन ।

अर्थ-एक पित्तपापडाही पित्तज्वरका दूर करता है ।

स्वर्जिकायायशूकश्चक्षारद्वयमुदाहृतम् ।

मिलितवृत्तगुणकृद्धिशेषाद्भूतमहत्परम् ॥

अर्थ—सजी और जवाहार दोनों मिलेहुएको "क्षारद्वय" कहते हैं यद् मिलेभी अपने २ गुणोंको करे ह और विशेषकरके गुल्मरोगको हरे ह ।

टिषद्वयम् ।

पिप्पलीमर्गिचरूपम् ।

अर्थ-पीपल और कार्लामिर्च इनको "ठिकदुक" कहते हैं।

क्षारजयम् ।

स्वर्जिकाचयवक्षारष्टकणक्षारएवच । क्षारत्रयसमाख्यात
त्रिक्षारःसचकथ्यते ॥ तत्तित्तंवलशुक्रामकान्तिश्लोदग-
पहम् । वातगुल्मंकफचैवनाशयेदितिकीर्तितम् ॥

अर्थ-सर्जी, जवाखार और मुहागो यह "क्षामग्रय" अथवा प्रिक्षाम ग्रहे जाते हैं, क्षामग्रय-कडवे तथा चल्, शुक्र, आम, कान्ति ग्रह और उदर रोगको हरे हैं और वात, ग्लम तथा कफको नष्ट करे हैं।

लक्षणत्रयम् ।

सधवचविडचैवरुचकचेतिविश्रुतम् । लवणत्रयमाख्याततच्च
त्रिलवणतथा ॥ वीर्योष्णदीपनतीक्ष्णकफघ्नपित्तवर्द्धनम् ॥

अर्थ-संधानान, विरियागचर, और संचरलवण यह तीनों मिडेहुण लवणत्रय वा त्रिलवण कहलाते हैं । लवणत्रय-उष्णवीर्य, दोषन, तीक्ष्ण, कफनाशक और पित्तको घटानेवाले हैं ।

त्रिकटु ।

पिप्पलीमारिचंशुण्ठीत्रयमेतद्विमिश्रितम् । त्रिकटुत्र्युपण
व्योषंकटुत्रिकमुदाहृतम् ॥ त्र्युपणदीपनंहन्तिश्वासकास
गलामयान् । गुल्ममेहकफस्थौल्यमेद-श्लीपदपीनसान् ॥

अर्थ-पीपल, मिर्च और सांठ इन तीनों औषधी एकत्र मिलीहुँको-
त्रिकटु, त्र्युपण, व्योष और कटुत्रिक (कटुप्रय, पञ्चत्रिक) कहते हैं ।
त्रिकुटा-अग्निप्रदीपक तथा श्वास, खाँसी, गररोग, गुल्म, प्रमेह, कफ,
स्थूलता, मेद, श्लीषद और पीनसरोगको दूर करे हैं ।

वृषणा ।

पिप्पलीपिप्पलीमूलविश्वमेतद्विभि समै ।

कट्टपणाचविज्ञेयात्रुघ्नैरुपणवद्गुणै ॥

अर्थ-पीपल, पीपलामूल और सांठ यह तीनों समान मिलीहुँ वृषणा
कहलाती हैं इसके गुण त्रिकुटाके समान जानने ।

त्रिकटा ।

पथ्याविभीतधात्रीणांफलेभ्यात्रिफलासमै ।

फलत्रिकश्चत्रिफलासावराचप्रकीर्तिता ।

अर्थ-हरद, बहेडा और आमला यह तीनों समान मिलेहुँको त्रिकटा,
फलत्रिक, वरा (त्रिकली, फलप्रय, पल) कहते हैं ।

मतासरे ।

एकाद्वीतकीयोज्याद्वौचयोज्याविभीतकी ।

चत्वार्य्यामलकान्येवत्रिफलेपाप्रकीर्तिता ॥

अर्थ-और चारोंके मतमें-एक हरद, दो बहेडे और चार आमले
मिलेहुँको त्रिफला कहते हैं ।

गुणा ।

त्रिफलाकफपित्तनीमिहकुटहरीसरा ।

चक्षुष्यादीपनीरुच्यात्रिपमज्जरनाग्निनी ॥

अर्थ-त्रिफला-कफपित्तनाशक, प्रमेहको दूर करता, क्षुधनिवारक, ग्रासक,
नेत्राक्तों दित्तकारक, अग्निप्रदीपक, रुचिको करेवाला तथा विषमज्जरनाशक है ।

अन्यच्च ।

त्रिफलामुखरोगघ्नीगलगण्डव्रणापहा । वयसःस्थापकावृ-
ज्यासराहद्यावलप्रदा ॥ हन्तिनाडीव्रणंकण्डूमेधास्मृतिप्र-
सादिनी । रसायन्यस्रमेदोजिद्रोषणीक्लेदनाशिनी ॥

अर्थ—और भी त्रिफला—मुखरोगनाशक, गलगण्डरोगनिवारक, व्रण-
विनाशक, अवस्थास्थापक, वीर्यवर्द्धक, कठकुष्ठ दस्तावर, हृदयको हित-
कारी, बलवर्द्धक, नाडीव्रण, और कण्डुरोगनाशक है, मेधा और स्मरण-
शक्तिको बढ़ानेवाली, रसायन, रुधिरविकार और मेदरोगको हरनेवाली,
व्रणको भग्नेवाली और हेमनाशक है ।

मधुरत्रिफला ।

द्राक्षाकाशमर्य्यखर्जरीफलानिमिलितानितु । मधुरत्रिफला
ज्ञेयामधुरादिफलत्रयम् ॥ मधुरत्रिफलःवृज्याविशदामधु-
रामता । वातुवृद्धिकरीप्रोक्ताकफवातविनाशिनी ॥

अर्थ—दारु, कुम्भेर और खजूर यह तीनों मिली हुई त्रिफला कहलाती है
अथवा मधुर फलत्रय मधुरत्रिफला—वीर्यवर्द्धक, विषह, मधुर, धातुवर्द्धक
और कफवातविनाशक है ।

सुगन्धत्रिफला ।

जातीफलतथेलाचलवगफलमेवच ।

सुगन्धत्रिफलाप्रोक्तातृतीयचफलत्रिकम् ॥

अर्थ—जामफल, इलायची और लंग इन तीनोंको सुगन्धत्रिफला और
सुगन्धफलत्रिक कहते हैं ।

मतांतर ।

जातीफलपूगफललवगलतिकाफलम् ।

सुगन्धत्रिफलाज्ञेयासुरिभिस्त्रिफलास्मृता ॥

अर्थ—और किसीके मतमें जामफल, मुषाग और लंग इन तीनोंको
सुगन्धत्रिफला कहा है ।

गुणा ।

सुगन्धित्रिफलावृज्यामुखशुद्धिकरीमता ।

हृद्यारुचिकराचैवकफस्थचविनाशिनी ॥

अर्थ-सुगधिप्रफला-वीर्यवर्द्धक, मुखको शुद्धकरनेवाली रक्तको हित-
कारी, रुचिकारक और कफको हरे है ।

त्रिसुगन्धि ।

त्वक्पत्रकैलात्रिसुगन्धिमेतत्प्रकीर्तितं वातरुपापहारी ।

वृष्यविपन्नचमनागपुष्पज्ञेयचतुर्जातकमेतदेव ॥

अर्थ-शालचीनी, तेजपत्र और इलायची इनको त्रिसुगधि कहते हैं-त्रिसु-
गधि वात और कफनाशक, वीर्यवर्द्धक और विषविनाशक है । और इन
तीनोंमें नागकेशर मिठीहूँको चतुर्जातक कहते हैं ।

अप्यथा ।

त्वग्गैलापत्रकैस्तुल्यैस्त्रिसुगन्धविजातकम् । नागकेशरसंयु-
क्तचातुर्जातकमुच्यते ॥ तद्व्यपाचनरूक्षतीक्ष्णोष्णमुखग-
न्धरत्न । लघुपित्ताग्निकृद्वर्ण्यकफवातविपापहम् ॥

अर्थ-शालचीनी, इलायची और पत्रज, यह तीनों समान २ मिले हुए को
“विजातक” कहते हैं और इन्हीं नागकेशर मिला दीजाय तो “चातुर्जातक”
कहते हैं । त्रिसुगधि और चातुर्जातक पाचक, रुचि, तीक्ष्ण, गरम, मुखकी
दुर्गन्धको हरनेवाले, हल्के, पित्तजनक, अग्निकारक, वणको मुदर करनेवाले
तथा कफ, वात और विषविनाशक है ।

अपिच ।

विजातपित्तलक्ष्णमुच्यन्नाग्निप्रदीपनम् । तीक्ष्णोष्णल-
घुवर्ण्यकटुद्रव्यवलप्रदम् ॥ रमायनकफवातविपश्चामचपी-
नसम् । स्वर्भेदचकासचमुखदोषचनावयेत ॥

अर्थ-विजात-त्रिसुगधि-पित्तकारक, रुचि, रुचिकारक, अग्निप्रदीपक
तीक्ष्ण, गरम, हल्के वर्णको मुख परनेवाले, चरपरे, वीर्यवर्द्धक, मनसायक,
रमायन तथा कफ, वात, विष, भ्राम, पीनस, स्वग्भन्, रौक्ता और मुखमें
दोषोंको हरे है ।

मधुरमम् ।

घृतगुडमाक्षिकंचत्रिज्ञेयमधुत्रयम् ।

विद्यात्रिमधुरत्वेन प्रोक्तं त्रिमधुरनिकम् ॥

अर्थ-घी, गुड और शहत यह तीना मिले हुएको मधुरत्रय, त्रिमधुर, मधुरत्रिक कहते हैं ।

मतान्तरे ।

सितावृतमाक्षिकवाविज्ञेयमधुरत्रिकम् ।

मधुरत्रितयचाग्निदीपनकान्तिकारकम् ॥

विषदोषं रक्तपित्ततृष्णांचैव विनाशयेत् ।

अर्थ-और कोई कहते हैं कि, चीनी, घी और शहत यह तीना मिले हुए मधुरत्रय कहलाते हैं । मधुरत्रय-अग्निप्रदीपक, कान्तिकारक तथा विषविकार, रक्तपित्त और तृष्णाको दूर करे ।

त्रिसमम् ।

हरीतकीचशुण्ठीचगुडचैकत्रमिश्रितम् ।

त्रिसमं भाष्यते सुज्ञैरथवापि समत्रिकम् ॥

अर्थ-हरड, सांठ और गुड यह तीनों एकत्र मिले हुएको "त्रिसम" कहते हैं वा "समत्रिक" कहते हैं ।

मतान्तरे ।

हरीतकीचशुण्ठीचगुडचैकत्रयोजितम् ।

समत्रयरुचिकरचक्षुष्यमलशोधनम् ॥

वातपित्तनाशयतीत्येवमाचार्य्यभाषितम् ।

अर्थ-और किसीके मतसे हरड, सांठ और गिलोय यह तीनों मिली हुई "त्रिसम" कहलाती है । त्रिसम-रुचिकारक, नेत्राको हितकारी, मलशोधक तथा वात और पित्तनाशक है ।

त्रिकार्षिका ।

नागरातिविषामुस्तात्रयमेतत्रिकार्षिकम् ।

त्रिकार्षिकज्वरशोथपित्तवातभ्रमतथा ॥

आमशूलमतीसारग्रहणींच विनाशयेत् ।

अर्थ-सांठ, अतीस और नागरमोथा यह तीनों मिले हुए "त्रिकार्षिक" कहलाते हैं त्रिकार्षिक-ज्वर, सूजन, पित्त, वात, भ्रम, आम, शूल, अतीसार और समग्रहणीको हरे हैं ।

त्रिसिता ।

गुडोत्पन्नाचमधुजाहिमोत्येतित्रिधासिता । सितागुडोत्था
सस्नेहावृष्याक्षीणक्षतेहिता ॥ मधुजाशर्करावल्यागुर्वीवृष्या
चशीतला । हिमोत्थाशर्कराकिञ्चिदुष्णातिक्ताचपिच्छला ॥

अर्थ-ईखकी चीनी, शहतकी चीनी और ज्वारकी खांड यह तीनों
"त्रिसिता" कहलाती हैं । तदा ईखकी चीनी-स्नेहयुक्त, वीर्यवर्द्धक और
क्षीण तथा क्षतवाले मनुष्योंको दितकारी है । शहतकी खांड-बलकारक,
भारी, वीर्यवर्द्धक और शीतल है । ज्वारकी खांड-किञ्चित्त गरम, कटनी
और पिच्छल है ।

त्रिकण्टकम् ।

गुण्ठीगुडूचीदु स्पर्शात्रिकण्टकमितिस्मृतम् ।

त्रिकण्टकानाकाथ स्यात्पित्तज्वरविनाशन ॥

नेत्ररोगवमिचैवमस्तकम्यरुजतथा ॥

अर्थ-गाँठ, गिलोय और जवासा यह तीनों मिलेहुएकी "त्रिकण्टक"
कहते हैं । त्रिकण्टकाका काढा-पित्तज्वर, नेत्ररोग, वमन और मस्तकम्यरोगको
दूर करे है ।

कण्टकत्रितयम् ।

दुस्पर्शावृहतीद्व्यग्निदमनीतिसमांशकम् ।

कण्टकत्रितयप्रोक्तत्रिदोषभ्रमनाशनम् ॥

ज्वरपित्तचक्षिकाचतन्द्रालापचनाशयेत् ।

अर्थ-जरागा, बड़ीकण्ठी और अग्निदमनी यह तीनों बराबर मिली हुई
"कण्टकत्रितय" कहलाती है । कण्टकत्रितय-त्रिदोष, भ्रम, ज्वर, पित्त,
दुर्चर्मा, तन्द्रा और आलापको हरे है ।

कण्टकारोपम् ।

त्रिकण्टकशुक्रावृहतीकण्टकारीत्रयस्मृतम् ।

कण्टकारीत्रयतन्द्राप्रलापभ्रमनाशनम् ॥

पित्तज्वरत्रिदोषचनाशयेदितिकीर्त्तिनम् ।

अर्थ-गोखरु, कण्ठी और जवाह इन तीनों कात्र मिलीहुईको "कण्टका
रोपम्" कहते हैं । कण्टकारीत्रय-तन्द्रा, प्रलाप, भ्रम, पित्तज्वर, त्रिदोष
हनको दूर करे है ।

त्रिलोहम् ।

स्वर्णरूप्यतथाताम्रत्रिलोहमितिकीर्तितम् ।

त्रिलोहस्यगुणाः प्रोक्ता पचलोहसमाबुधे ॥

अर्थ—सोना, चादी और तावा यह “त्रिलोह” कहलाते हैं त्रिलोहेके गुण पचलोहेके समान जानने ।

भञ्जनत्रयम् ।

पुष्पाञ्जनचकालाख्यरसाञ्जनमितित्रयम् ।

अञ्जनत्रयमेतद्धिनेत्रयो परमहितम् ॥

अर्थ—पुष्पाञ्जन, कालाञ्जन और रसाञ्जन यह भञ्जनत्रय कहे जाते हैं, भञ्जनत्रय—नेत्रोंको परमहितकारी है ।

अपोपविपात्रयम् ।

निर्विपातिविपाचैवलाङ्गल्युपविपात्रयम् ।

विपात्रयविपघ्नं च ज्वरातीसारनाशनम् ॥

अर्थ—निर्विषी, अतीस और कटिहारी यह तीनों उपविष कहलाते हैं । उपविपात्रय विपनाशक और ज्वरातिमारविनाशक है ।

चतुरूपणम् ।

अपूपणसकणामूलकथितचतुरूपणम् ।

व्योपस्ययेगुणा प्रोक्ता ह्यधिकाश्चतुरूपणे ॥

अर्थ—त्रिकुटेमें पीपलामूल मिलानेसे चतुरूपण कहा जाता है चतुरूपणके गुण त्रिकुटेसे कुठेक ज्यादा हैं ।

चातुर्जातकम् ।

त्रिगधमेलात्वक्पत्रैश्चातुर्जातसकेसरम् ।

त्रिगधचचतुर्जातरूक्षोष्णलघुपित्तजित् ॥

वर्णरुचिकरतीक्ष्णविपश्मेष्मामयाञ्जयेत् ॥

अर्थ—इलायची, दालचीनी, पत्रज और नागफेन यह चारों मिले हुए को चातुर्जातक कहते हैं । त्रिगुध तया चातुर्जातक रूखा, गरम, हल्का, पित्तनाशक, वर्णको सुंदर करनेवाला, रुचिकारक, तीक्ष्ण, विष और कपड़े गको नष्ट करे है ।

यद्व्यजुजातयम् ।

एलात्वक्पत्रमारिचचतुर्जातकटुस्मृतम् ।

चतुर्जातचकटुकचातुर्जातिसमगुणैः ॥

अर्थ-इलायची, दालचीनी, तेजपात और कालीमिर्च इनको कटुचतुर्जातक कहते हैं, कटुचतुर्जातक चरपरा और गुण चानुर्जातककी समान जानने ।

चातुर्भद्रकम् ।

नागरातिविषामुस्तात्रयमेतत्रिकार्पिकम् । गुडूचीमयुतचै-
वचातुर्भद्रकमुच्यते ॥ चातुर्भद्रपाचकंस्याज्ज्वरजीर्णज्व-
रपहम् । त्रिदोषकण्ठरुक्छोथारुचिशूलामनाशनम् ॥

अर्थ-गाढ, अतीस, नागरमोया और गिलेय इन चारों एकत्र मिले हुएको चातुर्भद्रक कहते हैं चातुर्भद्रक-पाचक तथा ज्वर, जीर्णज्वर त्रिदोष, कण्ठरोग, सूजन, अरुचि, शूल और आमनाशक है ।

चतुर्धातुम् ।

मेथिकाचन्द्रशूरश्चकालाजाजीयचानिका । एतच्चतुष्टययु-
क्तचतुर्धातुमुदाहृतम् ॥ तत्रूर्णभक्षितनित्यनिहन्तिपचना-
मयान् । अजीर्णशूलमाध्मानपार्श्वशूलकटिव्यथाम् ॥

अर्थ-मेथी, हाली, कलाजी और अजनायन इन चारों एकत्र मिले हुएको चतुर्धातु कहते हैं । इसका घृणं नित्य सेवन करनेसे पातर्ग, अजीर्ण, शूल, आध्मान, पार्श्वशूल और कटिव्यथाको दूर करे है ।

चातुर्विधगणः ।

आमलस्यभयाकृष्णाचित्रकंचममममम् ।

सामान्यरोगहताचचातुर्विकगण स्मृतः ॥

अर्थ-आमला, हरद, पीपल और चीता इन चारों एकत्र मिले हुएको चातुर्विकगण कहते हैं यह अजीर्णोदगागनाशक है ।

चतुष्टयमुष्टयम् ।

महाशलाचातिबलाशलाशलातथा ।

बलाचतुष्टयभीतमधुग्वलकान्तिकृत ॥

स्निग्धग्राहिसर्परासपित्तान्नशतनाशनम् ।

अर्थ—सहदेई, कधी, खिरंटी और गगेरन इन चारों एकत्र मिलीहुईको वलाचतुष्टय कहतेहैं, वलाचतुष्टय—शीतल, मधुर, बलवर्द्धक, कातिजनक, स्निग्ध, मलरोधक तथा वातरक्त, रक्तपित्त और उर क्षतगोगनाशक है ।

कटुग्रन्थिचतुष्टयम् ।

कटुग्रन्थिचतुष्टयकतुष्टुण्ठीलशुनमाद्रकम् ।

पिप्पलीमूलसयुक्तंवातव्याधिहरपरम् ॥

अर्थ—सांठ, लहसुन, अदरक और पीपरामूल यह चारों एकत्र मिलेहुएको कटुग्रन्थिचतुष्टय कहतेहैं । कटुग्रन्थिचतुष्टय—वातरोगनाशक है ।

चतुस्समम् ।

जातीफलत्रिदशपुष्पसमन्वितञ्जीरञ्चटङ्कणयुतचरकेन
चोक्तम् । चूर्णानिमाक्षिकसितासहितातिलीढाआमाति-
सारमखिलगुरुहन्तिशूलम् ॥

अर्थ—जायफल, लोंग, जीरा और मुहागा इन चारोंको चतुस्सम कहतेहैं । इस चतुस्समका चूर्ण बनाकर उसमें मिश्री और सहत मिलाकर सेवन करनेसे आमातिसार और शूलरोग नष्टहोताहै ।

पचकोलम् ।

पिप्पलीपिप्पलीमूलचव्यचित्रकनागरम् ।

एकत्रमिश्रितैरेभिः पचकोलकमुच्यते ॥

अर्थ—पीपल, पीपरामूल, चव्य, चीता और सांठ यह पाचों एकत्र मिलेहुए पचकोल कहे जातेहैं ।

पचकोलरसेपाकेकटुकरुचिकृन्मतम् ।

तीक्ष्णोष्णपाचनश्रेष्ठदीपनंकफवातनुत ॥

गुल्मप्लीहोदरानाहशूलघ्नपित्तकोपनम् ।

अर्थ—पचकोल—रम और पाकम चरपग, रुचिकारक, तीक्ष्ण गरम, पाचक, दीपन, कफवातनाशक तथा गुल्म, प्लीहा, उदररोग, आनाह और शूलनाशक है और पित्तको कुपित करे है ।

द्वितीयपचकोलम् ।

पथ्याजमोदारुचकमत्युग्रविश्वभेषजम् ।

समभागानिचेतानिद्वितीयपचकोलकम् ॥

पंचकोलं द्वितीयं तु पाचकं दीपनं स्मृतम् ।

अर्थ-हरद, अजमोदा, संचलनोन, हाँग और सोंठ यह सब औषधी बराबर मिली हुई द्वितीय पचकोल कहलाती है । द्वितीय पचकोल पाचक और अग्निप्रदीपक है ।

पचत्रयम् ।

वटीवटोदुम्बरवेतसानामश्वत्थवृक्षेण समन्वितानाम् ।

त्वक्पचकपचमहीरुहाणामिति वृण्वन् श्वयथुममेतत् ॥

अर्थ-वट, नटीवट, गूलर, बेत और पीपल इन पाचोंकी छाल एकत्र मिली हुईको पचत्वक कहते हैं-यह वृणावेनाशक और सूजनको हर करे ।

मत्तान्तरम् ।

न्यग्रोधोदुम्बरश्वत्थपारीपत्रक्षपादपा ।

पंचैते क्षीरिणो वृक्षास्ते पाचकपचवलकलम् ॥

त्वक्पचकहिमन्नाहिमणशोफपिसर्पजित् ।

अर्थ-किर्गिके मतमे-वट, गूलर, पीपल, पारिमपीपल और पागर इन पाचों क्षीरिवृक्षाकी एकत्र मिली हुई छालको पचत्वक या पचान्क कहते हैं, त्वक्पचक-शीतल, मलरोधक तथा व्रण, छान और विगपरोगको नष्ट करे ।

पचपादयाम् ।

पल्लवाक्षीग्वृक्षाणाहिता पित्तातिसागिणाम् ।

कपायास्तम्भनारक्षा फलतेषां तु वातकृतम् ॥

अर्थ-पचाक्षीग्वृक्षाओं के पत्तोंको पचपादर कहते हैं यह पित्तपच पित्तातिगारवाने रोगियोंकी दितकारी है, कपाय, स्तम्भक, रक्षा और उन वृक्षाके फल वातकारक है ।

अपचम् ।

पचक्षीरिदुपत्रतुशीतस्वादुचतितकम् ।

दिलेखनकफनातनुत् ॥ वातरक्तं मलस्तम्भमाध्मानं चाति-

सारकम् । नाशयेत्पित्तगेगचलधुप्रोक्तमनीपिभिः ॥ तेषां

फलतुचिष्टम्भिग्राहकगुरुवृषम् । अम्लचमधुग्वृष्यरक्त-

पित्तविनाशनम् ॥ कफवातचहृष्टासशोपवातंचगुल्मकम् ।
अरुचिश्वासकासोचनाशयेदिति कीर्तितम् ॥ पक्वगुणाधि-
कं ज्ञेयमिति पूर्वैर्निरूपितम् ॥

अर्थ—पचक्षीरी वृक्षाके पत्ते—शीतल, स्वादिष्ठ, कडवे, कपेले, रतम्भक, ग्राही, लेखन, कफवातनाशक तथा वातरक्त, मलस्तम्भ, आध्मान, अतिसार और पित्तरोगको नष्ट करे हैं और हल्के ह, इनके फल—विष्टम्भकारक, मलरोधक, भारी, कपेले, खट्टे, मधुर, वीर्यवर्द्धक तथा रक्त, पित्त, कफ, वात, हृष्टास, शोप, वातगुल्म, अरुचि, श्वास और खाँसीको नष्ट करे हैं, इनके पक्के फल—अधिक गुणवाले हैं ।

पचांगम् ।

त्वक्पत्रफलमूलानि पुष्पाण्येकस्य शाखिनः ।

पंचाङ्गमिति बोद्धव्यं प्राज्ञैरेकत्र मिश्रितम् ॥

अर्थ—एकवृक्षके पत्र, फल, मूल, छाल और फूल इन सब एकत्र मिले हुए को पचांग कहते हैं ।

निम्बपचांगम् ।

निम्बस्य पुष्पफलत्वक्पत्रमूलचपचकम् ।

पचनिम्बमिति ख्यात सर्वकुष्ठहरपरम् ॥

अर्थ—नीमके—फूल, फल, छाल, पत्ते और मूल इन सब एकत्र मिले, हुआ को पचनिम्ब कहते हैं, पचनिम्ब—सर्वकुष्ठरोगनाशक है ।

अस्पगुणा ।

पचनिम्बन्तुतुवरतिक्तशीतमधुस्मृतम् । लघुज्वरहरकुष्ठ
पित्तनाशकरमतम् ॥ वातरक्तचकण्डूतिदाहमेहविपज्वरम् ।
वातचनाशयेदेतदिति पूर्वैर्निरूपितम् ॥

अर्थ—पचनिम्ब—कपेले, कडवे, शीतल, मधुर, हल्के तथा ज्वर, कोष्ठ-पित्त, वातरक्त चकण्डू, दाह, मेह, विप, ज्वर, और वातको दूर करे हैं ।

अपित्र ।

निम्बवृक्षस्य पचाङ्गरक्तदोषहरपरम् ।

पित्तकण्डूव्रणकुष्ठदाहचैव विनाशयेत् ॥

अर्थ-पचनिरव अर्थात् निम्बपत्राग-रुधिरके दोपोंको हरनेवाला तथा पित्त, कण्ट, मण, कोद और दाहको दूर करे है ।

क्षारपत्रकम् ।

पलाशमूलकक्षारौयवक्षारः सुवर्चिका ।

तिलनालोद्भवक्षार क्षारसंयुक्तपञ्चकम् ॥

क्षारपञ्चकगुल्मार्शोग्रहणीकृमिनाशनः ।

अर्थ-दाकका रस, मूलीका रस, जरागार, सजी और तिलोंकी नालका रस यह पाँचों मिलेहुए क्षारपत्रक कहलाते हैं क्षारपत्रक-गुल्म, बवासीर, मग्नहणी और कृमिरोगनाशक है ।

लवणपत्रकम् ।

सैन्धवरुचकचैवविडमोद्भिदमेवच । सामुद्रेणसमायुक्तक्षेय
लवणपत्रकम् ॥ लवणानांपञ्चकतुशोपणचरुनिप्रदम् । म-
लानुलोमरुदाहिनेऽत्रवानफकहरेत् ॥ शूलचनाशयत्येवमु-
क्तपृथ्वर्मनीपिभिः ।

अर्थ-सैन्धानोन, सचल अर्थात् कालानोन, विडमास्तग्नोन, ओद्भिद और समुद्रनोन यह पाँचों मिलेहुए लवणपत्रक कहलाते हैं । लवणपत्रक-शोषण, रुचिराग्न, मग्नको अनुलोमन करनेवाले दाहजनक, नेत्रोंको अहितकारी तथा पान, फफू और शूलको नष्ट करे है ।

पुष्पपत्रकम् ।

शालिपर्णापृश्निपर्णावार्त्ताकीकण्टकारिका । गोलुरःपञ्च-
भिश्चैते कनिष्ठपञ्चमूलकम् ॥ पञ्चमूलमिदद्रस्वंगृहणरत्न-
वर्द्धनम् । कषायतित्तकंनानिशीतोष्णमर्षदोषजित् ॥

अर्थ-शालिपर्णा (मालवन), पृश्निपर्णी (पिटवन), कर्गूर, गङ्गेई और गोलुर यह पाँचों मिलेहुए पुष्पपत्रक कहलाते हैं । पुष्पपत्रक-पुष्टिकारक, पित्तना, कटाह, १ अल्पतः शीतल और न अल्पतः गरम और यह प्रसारक रोगोंका दूर करे है ।

महत्पत्रकम् ।

त्रिलोचनोनाकगम्भारीपाटलागणिकारिका । पतन्महत्प-

अमूलसज्जकंसमुदाहृतम् ॥ पचमूलमहत्तित्तकपायकफ
वातनुत । मधुरश्वासकासघ्नमुष्णलघ्वग्निदीपनम् ॥

अर्थ—बेल, स्पोनापाठा, कुम्भेर, पाटल और अगणी यह पाचा एकत्र मिलेहुए महत्पचमूल कहें जातेहैं । महत्पचमूल कडवा, कपेला, कफवात-नाशक, मधुर, श्वास और खाँसीको हरनेवाला, गरम, हल्का और अग्निप्रदीपक है ।

मध्यमपचमूलम् ।

बलापुनर्नवाशूर्पपर्णावेरण्डमेवच । एकत्रयोजितेनैवस्यान्म-
ध्यपचमूलकम् ॥ मध्यमपचमूलन्तुवृष्यवातकफापहम् ।
किञ्चित्पित्तकरप्रोक्तपूर्वाचार्यैश्चसूरिभिः ॥

अर्थ—खिरटी, पुनर्नवा (साँठ) मुगवन, मपवन और अड इन पाचा एकत्रमिले हुओंको मध्यमपचमूल कहतेहैं । मध्यमपचमूल—वीर्यवर्द्धक, वातकफनाशक और किञ्चित् पित्तकारक है ।

चलाख्यपचमूलम् ।

निशामृतामेपशृङ्गीगोपवल्लीविदारिका । एतासाचैवमूल-
न्तुबलाख्यदोपनाशकम् ॥ बलाख्यपचमूलन्तुभेदकचप्र-
कीर्तितम् । शोफज्वराणाशमनपूर्वाचार्यैरिहोदितम् ॥

अर्थ—हलदी, गिलोय, मेढ्रांगी, मागिवा और विदारीकद इन पाचाने मूलको चलाख्यपचमूल कहतेहैं । बलाख्यपचमूल—भेदक, तथा मजन और ज्वरको शांति करेहै ।

जीवनपचमूलम् ।

जीवकर्पभर्कावीरजीवन्तीचशतावरी । जीवनीयमिदं प्रोक्तं
चतुर्थपचमूलकम् ॥ जीवनपचकवृष्यचक्षुष्यधातुवर्द्धक-
म् । अल्पदाहकफपित्तज्वरतृष्णाश्चनाशयेत् ॥

अर्थ—जीवरु, कर्पभक, घडीशतावर, जीवन्ती और शतावर इन सब एकत्र मिलीहुईको जीवनीयपचमूल कहतेहैं । जीवनीयपचमूल—वीर्यवर्द्धक, नेत्रोंको हितकारी, धातुवर्द्धक, यन्त्रकारक, तथा टाढ़, कफ, पित्त, ज्वर आरुणाको दूर करेहै ।

अर्थ-पचनिम्ब अर्थात् निम्बपत्राग-रुधिरके दोषोंको दग्धनेवाला तथा पित्त, ऋण, व्रण, कोष्ठ और दाहको दूर करे है ।

शारपचक्रम् ।

पलाशमूलकक्षारीयवक्षार'सुवर्चिका ।

तिलनालोद्भवक्षार शारसयुक्तपञ्चरुम् ॥

क्षारपञ्चरुगुल्माशोयहृणीकृमिनाशन' ।

अर्थ-द्राक्षका खार, मूलीका खार, जवाखार, सजी और तिलोंकी नालका खार यह पांचा मिलेरूप शारपचक्र कहलाते हैं शारपचक्र-गुल्म, ववासीर, समग्रहणी और कृमिरोगनाशक है ।

लवणपचक्रम् ।

सैन्धवरुचकचैवविडमोद्भिदमेवच । सामुद्रेणसमायुक्तजेयं

लवणपचक्रम् ॥ लवणानापञ्चकतु-शोषणचरुचिप्रदम् । म-

लानुलोमकदाहिनेत्र्ययानरुफहरेत् ॥ शूलचनाशयत्येवमु-

क्तपूर्वमर्मीपिभि ।

अर्थ-सैन्धानोन, सचल अर्थात् कालानोन, विरिषागंरगोन, मोद्भिद और समुद्रनोन यह पांचों मिलेरूप लवणपचक्र कहलाते हैं । लवणपचक्र-शोषण, रुचिकारक, मन्को अनुलोमन करनेवाले ग्राहजनक, नेत्राणों अहितकारी तथा यात, कफ और शूलको नष्ट करे है ।

रूपचक्रम् ।

शालिपर्णीपृथ्विपर्णीयार्त्तकीकण्टकारिका । गोक्षुर-पञ्च-

भिश्चने'कनिष्ठपञ्चमूलकम् ॥ पञ्चमूलमिदंस्त्रैवृद्धणवल-

वर्द्धनम् । कपायतिकरुनातिशीतोष्णमर्मदोषजित् ॥

अर्थ-शालिपर्णी (शालग्राम), पृथ्विपर्णी (पिटवन), कण्ट, कर्पूरी और गोक्षुर यह पांचा मिलेरूप रूपचक्र कहलाते हैं । रूपचक्र-गुल्म-पुष्टिपाप, मन्वदंश, कपिला, कट्या, न अत्यन्त शीतल और न अत्यन्त गरम और गरमपापों सेपापा दूर करे है ।

महान्तकम् ।

मिल्यभ्योनाकगम्भागीपाटलागणिकारिका । एतन्महान्त-

गुल्म, घ्रण और आमको दूर करे है तथा वीर्यवर्द्धक है ।

पथमहाविषाणि ।

गौरपापाणकश्चैवतालकश्चमन.शिला । वत्सनाभस्यसर्प-
स्यमहापञ्चविषाणिच ॥ महाविषाणिपञ्चैवमादकानितथा
पुनः । सद्य.प्राणहराण्येवशुद्धानिह्यमृतंजगु. ॥

अर्थ—शखिया, हरिताल, मनाशिल, वत्सभाव और सर्पका विष यह पाच महाविष है । पचमहाविष—मदकारक और तत्काल प्राणोंको हर्नेवाले हैं यही शुद्ध किये हुए और युक्तिके मात्र सेवन किये हुए अमृतके समान गुणकारक है ।

पथापविषाणि ।

अर्कक्षीरसुहीक्षीरतथालाङ्गलिकापिच । धत्तूरकोहयारिश्च
पञ्चैवोपविषाणिच ॥ उपपूर्वपञ्चविषमादकप्राणहारकम् ।
शोधिततत्तुवलदवीर्य्यवृद्धिकरपरम् ॥

अर्थ—आकका दूध, शूहका दूध, कलिहारी, धतूरा और कनेर यह पाच उपविष कहे जाते हैं । पचउपविष—मदकारक, प्राणहारक यही शुद्ध किये हुवे—मलकारक और वीर्य्यवर्द्धक है ।

पथगव्यम् ।

गोमूत्रगोमयक्षीरदधिसर्पिस्तथैवच । समयोजितमेकत्रपच-
गव्यमितिस्मृतम् ॥ पञ्चगव्यदेहशुद्धिकरकफविनाशनम् ।
अजीर्णापस्मृतिज्वरभूतबाधाञ्चनाशयेत् ॥

अर्थ—गायका मूत्र, गोबर, दूध, दही और घी यह पाचों परामर एकत्र मिलेरूपको पथगव्य कहलाते हैं । पथगव्य—देहशोधक, कफनाशक तथा अजीर्ण, अपस्मार, ज्वर और भूतबाधाको दूर करे है ।

पथमादिषम् ।

माहिपाम्बुदधिभीरसाभिवारचतद्रम् ।

तत्पञ्चमाहिपज्ञेयतद्रच्छागलपञ्चकम् ॥

अर्थ—भगका मूत्र, गोबर, दही दूध और घी इनको पचमारिष कहते हैं इसी प्रकार छागलपञ्चक जानना ।

वृणपचमूलम् ।

शरेक्षुदर्भकाशानानलस्यमूलमेवच ।

सौश्रुतश्चरकंचैवतृणाख्यंपञ्चमूलकम् ॥ (तु०)

अर्थ-शर, ईख, दाभ, कौस और नल इन पाँचोंके मूलको वृणपचमूल कहते हैं इसीप्रकार सुश्रुत और चरकमें भी कहा है ।

अन्वयः ।

कुशकाशशरोदर्भक्षुश्चेतितृणोद्रवम् ।

पञ्चतृणमिदस्यातंतृणजपञ्चमूलकम् ॥ (च०)

अर्थ-कुशा, कौस, सरपता, दाभ और ईख इन पाँचोंके मूलको वृणपचमूल कहते हैं ऐसा चरकदत्तमें लिखा है ।

अन्वयः ।

शालीक्षुकुराकाशेऽस्याच्छण्डेणतृणपञ्चकम् ।

एषामूलतृपादाहपित्तासृदमूत्रसङ्गहतम् ॥

अर्थ-शालि, ईख, कुश, कौस और सरपता इन पाँचोंके मूलको वृणपचमूल कहते हैं ऐसा वैद्यकनिग्रन्थमें लिखा है । वृणपचमूल-तृपा, दाद, रक्तपित्त और मूत्रके रुक्नेपं। दूर करे है ।

अस्य गुणाः ।

तृणानापचमूलन्तुपित्तज्वगतृपापहम् ।

रक्तदोषाम्लपित्तजस्त्रीरोगरक्तपित्तकम् ॥

प्रमेहनाशयेदेतदितिसुजेर्निष्पितम् ।

अर्थ-तृणपचमूल-पित्तज्वर, तृपा, रक्तपित्त, क्षयपित्त, मीरिग, रक्तपित्त और प्रमेहरोगको हरे है ।

गोशुरादिपक्षमात्मम् ।

गोक्षुरावदगीचैट्ठवारुणीकासमर्दिका । गोक्षुराद्यंपञ्चमूलं

शिरीषेणनमन्वितम् ॥ गोक्षुरादिकपञ्चानामूलकुष्ठार्शना-

शनम् । वृष्यंघ्रातकफगुल्मत्रणचामक्षनाशयेत् ॥

अर्थ-गोक्षुर, बर्ग, इन्द्रावज, वर्गीश और शिरीष इन पाँचोंके मूलको गोक्षुरादिपचमूल कहते हैं । गोक्षुरादिपचमूल-कुष्ठ, यक्ष्मीर, पात, शफ,

पच्यगणः ।

पृष्टिपर्णीवृहत्यौचविदारीगोक्षुरस्तथा ।
गणानांपचकप्रोक्तप्रीहानाहप्रमेहजित् ॥
भगन्दरपाण्डुरोगकुष्ठशूलोदरजयेत् ।

अर्थ-पिठवन, कटेरी, कटाई, विदारीकद और गोखरू यह पाचों एकत्र मिलेहुये पच्यगण कहलाते हैं । पच्यगण-प्रीहा, आनाह, प्रमेह, भगन्दर, पाण्डुरोग, कुष्ठ, शूल और उदररोगको दूर करे है ।

पचसप्तमम् ।

शुण्ठीहरीतकीकृष्णात्रिवृत्सौवर्चलतथा ।
इतिपचसप्तमं नाम चूर्णज्वरहरपरम् ॥

अर्थ-साँठ, हरड, पीपल, निमोय और कालानोन इन पाचाको सम-भाग मिलेहुये पचसप्तम कहे जाते हैं, पचसप्तमका चूर्ण-ज्वरनाशक है ।

द्वितीयपचसप्तमम् ।

आमलसैन्धवचित्रकपथ्यापिप्पलिचूर्णमिदज्वरहारि ।

अर्थ-आमली, सैधानोन, चीता, हरड और पीपल यहभी पचसप्तम कहेजाते हैं इनका चूर्णभी ज्वरनाशक है ।

पञ्चाभृङ्गः ।

पुनर्नवादारुशुण्ठीमिद्वार्थान्छिद्युमेवच ।
पिष्ट्वाचैवारनालेनप्रलेप सर्वशोथहा ॥

अर्थ-पुनर्नवा, दारुहलदी, साठ सरसों, सईजना इन पाचाको काजीमें पीसकर लेप करनेसे सबप्रकारकी सूजन दूर होती है ।

पञ्चाभृङ्गः ।

देवदालीशमीभृङ्गीनिर्गुण्डीसतमालक ।

पञ्चभृङ्गभव काथोरोगिम्नानेप्रशस्यते ॥

अर्थ-देवदाली, शमी (छोकर), अतीस, निर्गुण्डी और नमाल इन पाचाके पत्तोंके काटेमें गेगीके टिये खानकगाना उत्तम है ।

पचमयम् ।

गोजाविकामहिपीणामृत्रगर्दभकस्यच ।

पचमृत्रकटूष्णज्वरोवनवृष्यमीरितम् ॥

सुगन्धपचकम् ।

कुकुमागरुकर्पूरकस्तूरीचन्दनानिच ।

महासुगन्धमित्युक्तोनामतोयक्षकर्मम् ॥

अर्थ-केशर, अगर, कपूर, कस्तूरी और चन्दन यह पाचों मगधर पचक मिलेरुणको यक्षकर्म और सुगन्धपचक कहलाते हैं ।

स्याद्यक्षकर्म-शीत सुगन्धि कान्तिदायक ।

त्वग्दोषंचशिरोरोगविपंचेवविनाशयेत् ॥

अर्थ-यक्षकर्म-शीतल, सुगन्धिजनक, कान्तिकारक तथा त्वग्दोष रोग, शिरोरोग और विपके विकारोंको हरे हैं ।

सुगन्धपचकंशीतरक्तपित्तकफाजयेत् ।

पीनसमुखदोर्गन्ध्यहररक्तरुजजयेत् ॥

अर्थ-सुगन्धपचक-शीतल, रक्तपित्तनाशक, कफदायक तथा पीनस, मुखकी दुगन्धता और रुधिरके विकारोंको हरे हैं ।

अमृतपचकम् ।

क्रोलाडिमवृक्षाम्लबुक्रिकाचाम्लवेतस । पञ्चाम्लक-

ममुद्दिष्टःसचोक्तश्चाम्लपचक ॥ फलाम्लपचकंरुच्यक-

फकृत्कामकारकम् । तिक्तजाड्यकरचैवविष्टम्भशूलवा-

तनुत् । शुक्रगुल्मार्शसांनाशकरोपीतिबुधाजगु ॥

अर्थ-वेर, अनार, रिपापिठ, गूषा और अमृतवेत यह अमृतपचक हैं । अमृतपचक-गूदे, रुचिकारी, कफ और गीलीको दूरकर पचनेवाले, कड़वे, जड़ताकारक तथा विष्टम्भ, शूल, पाठ, गुल्म, गुन्म और पक्षाघातको हरे हैं ।

द्विर्लपचकम् ।

वीजपूरकजम्बीरनारंगंचाम्लवेतसम् । फलपञ्चाम्लक-

ग्यातस्तितीक्ष्णमदितपर ॥ फलाम्लपचकचान्यन्धोफ-

कृन्मदकारकम् । विष्टम्भशूलगुल्मार्श शुक्रयातयिनाशनम् ॥

अर्थ-विजोगनीषु, पद्मार्थनीषु, नारंगी, अमृतवेत और इमली यह द्विर्लपचक हैं । द्विर्लपचक-शीतल, रुचिकारी, कफ और गीलीको दूरकर पचनेवाले, कड़वे, जड़ताकारक तथा विष्टम्भ, शूल, गुल्म, पक्षाघात, गुल्म और वातविनाशक हैं ।

अशौघपंचकसर्वाशानाञ्चैवविनाशनम् ॥

अर्थ-जमीकद, जगलीजमीकद, चित्रन्दकद अत्यम्पणी और मालाकद यह पचमृगण कहलाते हैं । पचमृगण-सर्वप्रकारके अशौघनाशक है ।

पञ्चपित्तानि ।

वाराहछागमहिषमत्स्यमायुगपित्तकम् ।

पञ्चपित्तमितिल्यात सर्वेष्वेवहि कर्मसु ॥

अर्थ-मुजर, चकरा, भैंस, मडली और मोर इनके पित्तको पञ्चपित्त कहते हैं । इनको सर्व कर्मोंमें प्रयोग करना चाहिये ।

औषधीपचामृतम् ।

गुडूचीमुशलीशुण्ठीत्रिकण्टकशतावरी । तत्पञ्चकत्वौष-
धीजपञ्चामृतमुदीरितम् ॥ पञ्चामृतत्वौषधीजंतुष्टिपुष्टि-
लप्रदम् । वीर्यवृद्धिकरचैवप्रोक्तपूर्वमनीषिभि ॥

अर्थ-गिलोय, मुशली, सांठ, गोखरू और शतावर इन पांचों औषधी एकत्र मिलीहुईको औषधीपचामृता कहते हैं । औषधीपचामृत-तुष्टिकारक, पुष्टिकारक, बलवर्द्धक और वीर्यवर्द्धक है ।

पञ्चामृतम् ।

दुग्धसशर्करचैवघृतदधितथामधु ।

पञ्चामृतमिदंप्रोक्तविवेयमर्वकर्मसु ॥

अर्थ-दूध, मिश्री, घी, दही और शहत इन पांचा मिलेहुये पदार्थोंको पञ्चामृत कहते हैं । यह पञ्चामृत सर्व कर्मोंमें प्रयोग करना चाहिये ।

पटुरसा ।

रसाःस्वादम्ललवणतित्तोपणकपायका । पटुद्रव्यमाश्रि-
ताञ्चैवतद्रसपदकमुच्यते ॥ मधुरादिरसा पटुचाग्निदीप्ति-
करामता । पौष्टिकालववञ्चैववातनाशकरामता ॥

अर्थ-मधुर, अम्ल, लवण, तिक्त, कटु और कषाय इन छेह रसोंको पदम कहते हैं । यह मधुरादि पदरा-अग्निप्रदीपक, पुष्टिकारक, लघु और वातविनाशक है ।

क्षारपटुम् ।

क्षाराणितिललाङ्गल्योमापापामार्गयोस्तथा ।

अर्थ-गाय, वक्त्रा, भेद, भेग और गधा इन पाचोंके मूत्रको पचमूत्र कहते हैं । पचमूत्र-चम्परा, गरम, शोषन और घृण्य है ।

पचवीजम् ।

राजिकाचाजमोदाचर्जीरकखसवीजकम् । कुरेराह्वयुतत्रैव
पचवीजमुदाहृतम् ॥ मेथीज्योतिष्मतीरीजयवानीस्थूल
जीरकम् । इक्षुरेणुमुमयुक्तद्वितीयपचवीजकम् ॥ पञ्चवीजम-
हणिकाकण्डूतित्राग्निमान्द्यकम् । वातशोफकफचैवविपूचीं
श्वासकामकम् ॥ शीतरोगचामशूलनाशयेदितिकीर्तितम् ॥

अर्थ-गई, अजमाट, जीरा, खसखसके दाने और अजवायन यह सब
एकत्र मिलहुये पचवीज कहलाते हैं । मेथी, मालकांगनी, अजवायन,
कडीरु और नाटमराना यह सब एकत्र मिलहुये द्वितीयपचवीज कहलाते
हैं । पंचवीज-मंत्राणी, कण्ट, मदारि, वात, गुचन, कक, विपुचिका, भारा,
रोमी शीतरोग, और चामशूल इन सब रोगोंको हरे हैं ।

पचमिर्गोषधय ।

तैलकन्द.सुधाकन्द कोडकन्दोरुदन्तिका । मत्स्याक्षीस-
हिता पचसिर्दोषत्र प्रकीर्तिता ॥ सिद्धानां चोपधीनातु-
पंचकरोगनाशनम् । रूमस्थभस्मकरणे प्रोक्तप्रर्वगिपचयः ॥

अर्थ-तैलकड, सुधाकड कोडकड रुदन्ती और मत्स्याक्षीस
और सिहिता एकत्र मिलकर पचमिर्दोषणी कहलाती है । सिर्दोषणी और
पचयों भस्म करनेवाला और अनेक प्रकारके रोगोंको नाश करनेवाला है ।

पचमिर्गोषधय ।

कनकहीरकनीलपद्मगन्धमौक्तिकम् ।

पञ्चगव्यमिदं प्रोक्तमृषिभिः पूर्वदग्धिभिः ॥

अर्थ-गोमूत्र, दही, मीठम पदार्थग और मोती इन पाँचोंको पचमूत्र
कहते हैं ।

पचमिर्गोषधय ।

श्वेतशवनजश्वेतिजट्टमृतीयक ।

अत्यमृदुगोमाशक्यमृग्यः पचवाम्भृन ॥

प्रभातेमैथुननिद्रासद्य प्राणहराणिपद ॥

अर्थ—सड़ाहुवा माग, वृद्धा स्त्री, भादोंकी घूप, तरुणदही, प्रभातकालमें मैथुन और निद्रा यह उ' वस्तु तत्काल प्राणोंको हरनेवालीहैं ।

प्राणहरपदम् ।

सद्योमांसवरंचान्नवालास्त्रीक्षीरभोजनम् ।

घृतमुष्णोदकेस्नानंसद्य प्राणकराणिपद ॥

अर्थ—ताजा मांस, नवीन अन्न, चाला स्त्री, क्षीरका भोजन, घृतयुक्त भोजन और गरमजलमें स्नान करना यह छे वस्तु तत्काल प्राणोंको करनेवाली ह ।

सप्तोपविषाणि ।

**अर्कक्षीरस्तुहीक्षीरलांगलीकरवीरक । गुआहिफेनोधतूरः
सप्तोपविषजातयः ॥ सप्तोपविषवर्गोयसवरःपरिकीर्त्ति-
तः । अयुक्त्यासेवितश्चायमारयत्येवनिश्चितम् ॥**

अर्थ—आकका दूध, थूहरका दूध, कलिदारी, कनेर, चोंटली, अफीम और घतूरा यह मात उपविषकी जाति हैं । सप्तउपविष वर्ग—अत्यन्त श्रेष्ठ है और अनेक कार्योंमें लिया जाताहै । यह अयुक्तिके साथ सेवन कियाहुवा मनुष्यको मार देवे है ।

शरीरस्थसप्तधातवः ।

रसासृद्धमांसमेदोऽस्थिमज्जाशुक्राणिधातवः ।

अर्थ—रस, रधिर, मांस, मेदा, अस्थि, मज्जा और शुक्र यह शरीरमें रहनेवाली मात धातुह ।

सुष्णादिमप्तधातवः ।

**स्वर्णरूप्यश्चताम्रश्चरज्जयशदमेवच । सीसलोहश्चमत्तेधा-
तवोगिरिसम्भवाः ॥ वलीपलितखालित्यकाश्चर्यावत्यज्व-
रामयान् । निवार्य्यदेहदधतिनृणांतद्घातवोमताः ॥**

अर्थ—सोना, रूपा, तांबा, राग, जस्त, सीसा और लोहा यह परतगे उत्पन्न होनेवाली मात धातु है । यह सातधातु—देहमें बलिका पचना, विनाममय चालोंका धवल होजाना, मस्तकमेंसे चालोंका गिरजाना, कृशता, निर्बलता, वृद्धावस्था और रोगोंको दूर करके देहको धारण करती है इसी-कारण इनका धातु षट्मं है ।

मौष्ककंकोटजं चैव शारपट्टकं विनिर्दिशेत् ॥

शारपट्टं वातगर्भगुल्मरक्तज्वरपहम् ।

अर्थ-तिलोकी नालका शार, कलिहागीका शार, उदका शार, चिगचिटेका शार, मोखेका शार और कुडेका शार इन-साथको शारपट्टक कहते हैं । शारपट्टक-वात, गर्भ, गुल्म और रुधिरके विकारोंको हरे ।

पट्टपणम् ।

पञ्चकोलसमरिचं पट्टपणमिति स्मृतम् ।

पञ्चकोलगुणतत्तुल्यसमुष्णं विपापहम् ॥

अर्थ-पञ्चकोलमें काली मिर्च मिलानेसे पट्टपण कहा जाता है । पट्टपणके गुण पञ्चकोलके समान जानने । पञ्चकोल-रूग्ण, गरम और विषविनाशक है ।

सुगन्धपट्टकम् ।

जातीफलं लवङ्गशर्करापूर्णा गन्धवालाकम् ।

सुगन्धपट्टमेतद्विषककोलमुदाहृतम् ॥

सुगन्धपट्टकरुचिकृद्द्व्यंदाहविनाशकम् ।

अर्थ-जायफल, लाग, कपूर, सुपारी, सुगन्धवाला और बरोठ यह सब एकत्र मिली हुई औषधियोंका सुगन्धपट्टक कहा जाता है । सुगन्धपट्टक-रुचिरारक हृदयको हितकारक और दाहविनाशक है ।

महासुगन्धपट्टकम् ।

कालागरुचकम्तूरीकर्पूरश्चेतचदनम् । ककोलचाहिगन्धाच्च
महादिपट्टसुगन्धकम् ॥ महासुगन्धपट्टकतुष्ट्यं चैव सुगन्धि-
कृतम् । भूतघातांकफदाहनाशयेदिति हीतम् ॥

अर्थ-काली अगर, चम्तूरी, कपूर, मन्दारचन्दन, सीतामपीनी और नरुन्धक यह सब एकत्र मिले हुए महासुगन्धपट्टक कहा जाता है । महासुगन्धपट्टक-वीर्यवर्धक, सुगन्धिकारक तथा भूतघाता, कफ और दाहको हरे ।

शालिग्रामपट्टकम् ।

प्रतिमामंघ्रियो वृद्धाशालार्कग्न्यर्णदधि ।

प्रभातेमैथुननिद्रासद्यःप्राणहराणिपद ॥

अर्थ—मडाहुवा माम, वृद्धा स्त्री, भादोंकी धूप, तरुणदही, प्रभातकालम मैथुन और निद्रा यह छ' वस्तु तत्काल प्राणोंको हरनेवाली हैं ।

प्राणहरपद्व्यम् ।

सद्योमांसवरचान्नवालास्त्रीक्षीरभोजनम् ।

घृतमुष्णोदकेस्नानसद्यःप्राणकराणिपद ॥

अर्थ—ताजा माम, नवीन अन्न, चाला स्त्री, क्षीरका भोजन, घृतयुक्त भोजन और गरमजलमे स्नान करना यह छ' वस्तु तत्काल प्राणोंको करनेवाली ह ।

सप्तोपविषाणि ।

**अर्कक्षीरस्तुहीक्षीरलागलीकरवीरकः । गुग्गाहिफेनोधतू-
रःसप्तोपविषजातय ॥ सप्तोपविषवर्गोयसवरःपरिकीर्त्ति-
त । अयुक्त्यासेवितश्चायमारयत्येवनिश्चितम् ॥**

अर्थ—आकका दूध, थूहरका दूध, कलिहारी, कनेर, चांदली, अफीम और घटुग यह मात उपविषकी जाति हैं । सप्तउपविष वर्ग—अत्यन्त श्रेष्ठ है और अनेक काग्योंम लिया जाताहै । यह अयुक्तिके साथ सेवन कियाहुवा मनुष्यको मार देवे है ।

शरीरस्थसप्तधातवः ।

रसासृद्मासमेदोऽस्थिमज्जाशुक्राणिधातवः ।

अर्थ—रस, रधिर, मास, मेदा, अस्थि, मज्जा और शुक्र यह शरीरमें रहनेवाली सात धातु हैं ।

सुवर्णादिमसप्तधातवः ।

**स्वर्णरूप्यश्चतस्रश्चरङ्गयशदमेवच । सीसलोहश्चमत्तेया-
तवोगिरिसम्भवाः ॥ बलीपलितखालित्यकाश्यावल्यज्व-
रामयान् । निवार्य्यदेहदधतिनृणांतद्धातवोमता ॥**

अर्थ—सोना, रूपा, तावा, राग, जस्त, सीसा और लोहा यह पर्वतसे उत्पन्न होनेवाली मात धातु हैं । यह सातधातु—देहमें बलिका पडना, विनासमय वालोंका धवल होजाना, मस्तकमेंसे बालोंका गिरना, कृशता, निर्वलता, वृद्धावस्था और रोगोंको दूर करके देहको धारण करती हैं इमी-कारण इनको धातु कहत हैं ।

शरीरस्वधातुद्रवधातव ।

स्तन्यं रजो वसास्वेदोदन्ताः केशास्तथैव च ।

ओजश्च सप्तधातूनां क्रमात्सप्तोपधातवः ॥

अर्थ-दूध, रज, वसा (चर्बी), स्वेद (पसीना), दात, केश और ओज यह क्रमसे सातधातुओंकी उपधातु हैं अर्थात् रमसे दूध, रक्तमे रीता रज, मांसमे चर्बी, मेदागे पसीना, अग्निमे दात, मज्जामे केश और शुक्रमे ओज उत्पन्न होता है ।

सप्तोपधातवः ।

स्वर्णजस्वर्णमाक्षीकन्तारजतारमाशिकम् । तुत्यताम्रभवजं
यककुष्ठवङ्गसम्भवम् ॥ रसकोजमदाजातोनागात्सिन्दूर-
सम्भवः । लोहाजातलोहकिट्टमेतमसप्तोपधातवः ॥

अर्थ-स्वर्णमे सुवर्णमारी, रूपेमे रूपामारी, ताँबेमे नीलायोया, मंगमे फकुष्ठ, जस्तमे गगगिया, शीसेमे सिंदूर और लोहेमे लोहकिट्ट उत्पन्न होती है इसप्रकार यह सातधातुओंकी सात उपधातु हैं ।

सप्तवर्णजम् ।

ब्राह्मदाडिमवर्जैर्मर्दिताम्बुसशकैरम् ।

लाजानृणममध्वाज्यममन्तर्पणममृतम् ॥

अर्थ-दाण्य, भनाग, रज्जूर यह तीनों चर्माके मर्यमम मिलेदूये और इनमे खीन्नीका घृणं मिलादूया तथा घी और दाह्य गरित यह सप्तवर्णज पदाजाता है ।

मन्तर्पणम् ।

ब्राह्मदाडिमवर्जैर्मर्दिताम्बुसशकैरान्विता ।

समध्वाज्यचपित्तममन्तर्पणमुदाहृतम् ॥

अर्थ-किमीके मतमे दाण्य, भनाग, रज्जूर, केला, शर्करा, मधु और घी यह पित्तनाशक और मन्तर्पण है ।

मन्तर्पणम् ॥

काथ मत्तविधश्चोक्तपाचन शोथनाशन । कुण्डनशमन-
श्वेददीपनस्तर्पणस्तथा ॥ शोषकश्चैरुभेदन्तुगुणान्तस्य

ब्रवीमि ते । अर्द्धांशपाचनश्चोक्तो गव्यश कोष्ठशुद्धिकृत् ॥
चतुर्थांशो घर्मकारित्वष्टाशो रोगनाशन । पष्ठांशश्चाग्नि-
जनकः षोडशांशस्तु शोषणः ॥ पञ्चमाशस्तृप्तिकारी मुनि-
भिः परिकीर्तितः ॥

अर्थ-काय सात प्रकारका होता है, जैमे-पाचन १ शोधन २ हेडन ३
शमन ४ दीपन ५ तपण ६ शोषक ७ तथा जो काढेका जल जलकर आधा
रह गया हो उसको अर्द्धांश कहते हैं । अर्द्धांश काय पाचन है । जिसका
पानी जलकर बारहवाँ भाग शेष रह जाय उसको गव्यश कहते हैं । गव्यश
काय कोठेको शुद्धि करे है जिस काढेका जल जलकर चोथा भाग बाकी
रह जाय उसको चतुर्थांश कहते हैं । चतुर्थांश काढा-पसीनेको लानेवाला है
जिस काढेका जल जलकर आठवाँ भाग शेष रह जाय उसको अष्टांश
कहते हैं । अष्टांश काय रोगनाशक है । जिसका जल जलकर छठा भाग
बाकी रहा हो उसको पष्ठांश कहते हैं । पष्ठांश काय अग्निजनक है । जिसका
पानी जलकर सोलहवाँ भाग बाकी रह जाय उसको षोडशांश कहते हैं ।
षोडशांश काय शोषक । और जिस काढेका जल जलकर पाचवाँ भाग
बाकी रह जाय उसको पञ्चमाश कहते हैं पञ्चमाश काढा तृप्तिकारक है ।

सप्तोपरधानि ।

वेकात सूर्यकान्तश्च चन्द्रकान्तस्तथैव च ।

कर्पूरक स्फाटिकश्च पेरुजाग्यश्च काचक ॥

सप्तोपरवर्णितामण्योलोकविश्रुताः ॥

अर्थ-वेकात, सूर्यकात, चन्द्रकान्त, कर्पूर, स्फटिक, पेरुजा और काच
यह सात उपरल है ।

अष्टधातवः ।

हिरण्यरजतकास्यताम्रमीमकमेव च ।

रङ्गमायसरैत्यष्टधातवोऽष्टौ प्रकीर्तिताः ॥

अर्थ-सोना, चाँदी, कासा, ताँबा, मीसा, गग, लोहा और पीतले यह
आठ धातु हैं ।

मता उरे ।

सुवर्णरजताम्रलोहकुप्यञ्चपादम् ।

वंगञ्चसीसकञ्चैवअष्टौदेवसुसम्भवा ॥

अर्थ-और किमीके मतमे सोना, चांदी, ताँपा, लोहा, जस्त, पारा गंग, और सीसा यह आठ धातु देवासे उत्पन्न हैं ।

अष्टविधचिकित्सा ।

शल्यशालाक्यकायश्चतश्चावालचिकित्सितम् ।

अगदविपतन्त्रञ्चभूतविद्यारसायनम् ॥

वाजीकरणमेवेतिचिकित्साष्टविधास्मृता ।

अर्थ-शल्य, शालाक्य, काय, घालनिषिरता, अगद विपतन्त्र, भूतविद्या, रसायन और वाजीकरण ऐसे चिकित्सा आठ प्रकारकी हैं ।

अष्टगणा ।

कर्पूरचदनमुस्ताकुङ्कुमदेवदारुच ।

गेचनाकेसगंभीरगंधाष्टकमुदाहृतम् ॥

अर्थ-कपूर, चन्दन, नागमोया, केसर, देवदारु, गोरोजन, नागकेसर और रतन यह आठ अष्टक अष्टगण हैं ।

अष्टगणा ।

जीवकर्पभर्कामेदेकाकोल्यावृद्धिकृद्धिके । अष्टगोण्डभि-

र्द्रव्यैः कथितश्चक्रादिभि ॥ अष्टगोण्डिमस्त्र्यादुष्टदण्ड-

कलोगुरु । भग्नमन्वानकृद्वल्यशरीरवल्लवर्द्धन ॥ वात

पित्ताम्वृद्धांशकृद्वल्यमेहक्षयप्रणुत ॥

अर्थ-जीवक, अमरक, मेदा, महामेदा, वृद्धि कृद्धि, काकोली और शीरकाकोली यह आठ जीवकी एकत्र मिली हुई अष्टगोण्ड की जाती है । अष्टगोण्ड-शोणक, स्त्राग्नि, वृद्धिकाक, दुष्कपनक, भारी, भग्नमन्वानकाक, पलकाक, शरीरवर्द्धक, वल्लवर्द्धन, पदमेकाका तथा शरीर, पित्त, कृद्धिनिवर्द्धक, वृद्धा, दाह, ज्वर, रमेय और शरीरमेकाका की जाती है ।

अष्टमगणतिनिधय ।

मेदाभावेअश्वगन्धामहामेदेचशारिवा ।

जीवकर्पभकाभावेगुडूचीवशलोचना ॥

ऋद्ध्यभावेवलादेयावृद्ध्यभावेमहावला ।

अर्थ—मेदाके अभावमें असगंध, महामेदाके अभावमें शारिवा, जीवकके अभावमें गिलोय, ऋपभकके अभावमें वशलोचन, ऋद्धिके अभावमें रिंगेदी और वृद्धिके अभावमें सहदेवी देनी चाहिये ।

अष्टमगणधृतम् ।

वचाकुष्ठतथाब्राह्मीसिद्धार्थकमतापिच । सारिवासेन्धवश्चैव
पिप्पलीधृतमष्टमम् ॥ सिद्धधृतमिदमेध्यपिवेत्प्रतिदिने
दिने । दृढस्मृतिःकुमाराणांपिवतामष्टमङ्गलम् ॥

अर्थ—वच, कूठ, ब्राह्मी, सरसों, सारिवा, संधव, पीपल और घी इन सबके द्वारा सिद्ध कियेहुये घृतको अष्टमगणधृत कहते हैं इस घीको जो बालक प्रतिदिन पीतेहैं उनकी मेधाकी वृद्धि होती है और स्मरणशक्ति दृढ होजाती है ।

नवधातव ।

हेमतारारनागश्वताम्रवज्जेचतीक्ष्णकम् ।

कांस्यकैकान्तलोहश्वधातवोनवकीर्तिता ॥

अर्थ—सोना, चादी, पीतल, सीसा, तौया, रंग, लोहा कौंसा और कान्तलोह यह नवधातु हैं ।

नवरात्रानि ।

माणिक्यमुक्ताफलविद्रुमाणिताक्ष्यंचपुष्पभिदुरचनीलम् ।

गोमेदजचाथविद्रकचक्रमेणगन्तानिनवग्रहाणाम् ॥

अर्थ—माणिक्य, मोती, मृगा, पन्ना, पुष्कराज, हीरा, नील, गोमेद और विद्रुय यह क्रमसे नवग्रहोंके नवरत्न हैं ।

सारदशमम् ।

शिशुमूलकपलाशचुक्रिकाचित्रकार्द्रकसनिम्बसम्भवं ।

इक्षुशैखरिगमोचिकोद्वेक्षारपूर्वदशकप्रकीर्तितम् ॥

मतान्तरे ।

सुवर्णरजतताम्रलोहकुप्यञ्चपारदम् ।

वगञ्चसीसकञ्चैवअष्टौदेवसुसम्भवाः ॥

अर्थ-और किसीके मतसे सोना, चादी, तावा, लोहा, जस्त, पारा रांग, और सीमा यह आठ धातु देवोंसे उत्पन्न हैं ।

अष्टविधचिकित्सा ।

शल्यशालाक्यकायश्चतथावालचिकित्सितम् ।

अगदंविपतन्त्रञ्चभूतविद्यारसायनम् ॥

वाजीकरणमेवेतिचिकित्साष्टविधास्मृता ।

अर्थ-शल्य, शालाक्य, काय, चालचिकित्सा, अगद विपतत्र, भूतविद्या, रसायन और वाजीकरण ऐसे चिकित्सा आठ प्रकारकी हैं ।

अष्टगधा ।

कर्पूरचदनमुस्ताकुङ्कुमदेवदारुच ।

रोचनाकेसरोशीरगधाष्टकमुदाहृतम् ॥

अर्थ-कर्पूर, चदन, नागरमोथा, केसर, देवदारु, गोरोचन, नागकेसर और खस यह गवाष्टक अर्थात् अष्टगध हैं ।

अष्टवर्गा ।

जीवकर्पभक्तौमेदेकाकोल्यौवृद्धिऋद्धिके । अष्टवर्गोऽष्टभि-
र्द्रव्यैःकथितश्चरकादिभिः ॥ अष्टवर्गोहिमस्वादुर्वृंहण शु-
क्रलोगुरुः । भग्नसन्धानकृद्भल्य शरीरचलवर्द्धन ॥ वात
पित्तासत्तृड्दाहज्वरमेहक्षयप्रणुत् ॥

अर्थ-जीवक, ऋपभक्त, मेदा, महामेदा, वृद्धि ऋद्धि, काकोली और क्षीरकाकोली यह आठ औषधी एकत्र मिली हुई अष्टवर्ग कही जाती है । अष्टवर्ग-शीतल, स्वादिष्ट, पुष्टिकारक, शुक्रजनक, भारी, भग्नसन्धानकारक, चलकारक, शरीरवर्द्धक वल्गुको बढानेवाला तथा वात, पित्त, रुधिरविकार, वृषा, दाह, ज्वर, प्रमेह और क्षयरोगको दूर करे है ।

अष्टवर्गप्रतिनिधयः ।

मेदाभावेअश्वगन्धामहामेदेचशारिवा ।

जीवकर्पभकाभावेगुडूचीवशलोचना ॥

ऋद्धयभावेवलादेयावृद्धयभावेमहावला ।

अर्थ—मेदाके अभावमें असगंध, महामेदाके अभावमें शारिवा, जीवकके अभावमें गिलोय, ऋपभकके अभावमें वशलोचन, ऋद्धिके अभावमें खिरेदी और वृद्धिके अभावमें सहदेवी देनी चाहिये ।

अष्टमगलघृतम् ।

वचाकुष्ठतथाब्राह्मीसिद्धार्थकमतापिच । सारिवासेन्धवश्चैव
पिप्पलीघृतमष्टमम् ॥ सिद्धघृतमिदमेध्यपिवेत्प्रतिदिने
दिने । दृढस्मृति-कुमाराणांपिवतामष्टमङ्गलम् ॥

अर्थ—वच, कूठ, ब्राह्मी, सरसों, सारिवा, संधव, पीपल और घी इन सबके द्वारा सिद्ध कियेहुये घृतको अष्टमगलघृत कहते हैं इस घीको जो बालक प्रतिदिन पीतेहैं उनकी मेधाकी वृद्धि होती है और स्मरणशक्ति दृढ होजाती है ।

नवधातवः ।

हेमतारारनागश्चताम्रवङ्गेचतीक्ष्णकम् ।

कांस्यकंकान्तलोहश्चधातवोनवकीर्त्तिताः ॥

अर्थ—सोना, चादी, पीतल, सीसा, तँवा, गंग, लोहा, कौंसा और कान्तलोह यह नवधातु हैं ।

नवप्रस्थानि ।

माणिक्यमुक्ताफलविद्रुमाणिताक्ष्यंचपुष्पभिदुरचनीलम् ।

गोमेदजचाथविदूरकचक्रमेणरत्नानिनवग्रहाणाम् ॥

अर्थ—माणिक, मोती, मृगा, पद्मा, पुसरराज, हीरा, नील, गोमेद और विदूर्य यह नवप्रस्थानि नवरात हैं ।

शारदष्टकम् ।

शिशुमूलकपलाशचुक्रिकाचित्रकार्द्रकसनिम्बसम्भवेः ।

इक्षुशेखरिक्मोन्फोद्भवे शारपूर्वदशकप्रकीर्त्तितम् ॥

अर्थ-सर्हिजना, मूली, ढाक, हमली, चीता, अदरख, नीम, ईख, चिर-
चिटा और केला इन दश वृक्षोंके क्षारको क्षारदशक कहतेहैं ।

दशागधूप ।

मधुमुस्तधृतगधोगुग्गुलागरुशैलजम् ।

सरलःसिद्धसिद्धार्थदशांगोधूपउच्यते ॥

अर्थ-शहत, नागरमोथा, घी, गधक, गुग्गुल, अगर, भूरिठरीला, धूपसरल,
शिलारस और सरसो इन सबको एकत्र कर दशागधूप बनाई जाती है ।

दशमूलम् ।

उभाभ्यांपचमूलाभ्यांदशमूलमुदाहृतम् ।

दशमूलंत्रिदोषघ्नंश्वासकासशिरोरुजः ॥

तन्द्राशोथज्वरानाहपार्श्वपीडा रुचीर्हरेत् ॥

अर्थ-लघु और घृह्यपचमूल दोनोंको मिलाकर दशमूल होताहै दशमूल-
त्रिदोषनाशक तथा श्वास, खाँसा, शिगेरोग, तन्द्रा, सृजन, ज्वर, आनाह,
पसलियोंकी पीडा और अरुचिको दूर करे है ।

दशमूत्रम् ।

हस्तिमहिषोष्ट्रगवाजमेपाश्वगर्दभमानुपमानुपी-

णांदशानांमूत्रम् ।

अर्थ-हाथी, भैस, ऊट, गाय, बकरी, भेड, घोडा, गर्दभ, मनुष्य और
खी इन दश प्राणियोंके मूत्रको दशमूत्र कहतेहैं ।

इति श्रीशालिग्रामपदयगिरचिने निघण्टुमूपणे सप्त्यारगं समाप्त ॥ २२ ॥

॥ इति पूर्वार्थ समाप्तम् ॥



॥ श्रीः ॥

शालियामनिघण्टुभूषणे ।

उत्तरार्द्धम् ।

मगलाचरणम् ।

स्वात्मस्थित सर्वगतः समस्तव्यापारवेदीविनिवृत्तसग ।
प्रवृद्धकालोऽप्यजरोवरेण्य पायादपायात्पुरुषः पुराणः ॥

अनूपोदिवर्गः ।

देशस्तुत्रिविधोज्ञेयो ह्यनूपो जांगलस्तथा ।

साधारणो विशेषेण ज्ञातव्यास्ते मनीषिभिः ।

अर्थ-अनूप, जांगल और साधारण इन भेदों से देश तीन प्रकारके हैं सो वह देश बुद्धिमानों करके जानना चाहिये ।

अनूपदेशका लक्षण ।

नदीपल्लवशेलाढ्य फुल्लोत्पलकुलैर्युतः । हससारसका-
ण्डचक्रवाकादिसेवित ॥ शशवराहमहिपरुरुगेहिकुलाकु-
ल । प्रभृतद्रुमपुष्पाढ्यो नीलसस्यफलान्वित ॥ अनेक
गालिकेदारकदलीक्षुविभूषित । अनूपदेशो ज्ञातव्यो ज्ञात-
श्चेप्समयार्त्तिमान् ॥

अर्थ-जिममें नदी, तटैया और पर्वत अधिक हैं तथा जो पूर्य कम
और कुमुदाके समूहमें मयुक्त होय, हम, मारु, जलमूर्गी और चरवा
पक्षिया फाके सेवित हैं, खगोल, सूचर, भैया, हंस और गोटि इनके
समूहमें आकुल होय बहुतसे घृक्ष और पुष्पोंमें युक्त होय हरी रंग और
पत्रोंमें परिपूर्ण होय और जो अनेक प्रकारके शास्त्रिधानोंके गेताये हैं
और इक्ष्वादिपक्षियोंमें युग्माभित होय, अर्थात् यह सब जियमें सब दृगको
अनूपदेश कहते हैं । अनूपदेश-वात और वर्षके योगोंको उत्तम कहते हैं ।

अन्यच्च ।

बहुतरशुभनद्यश्चारुपानीयपुष्टास्सरससरउपेताशाद्वलासा-
रमूमिः । हरितकुशजलानांशालिकेदाररम्यादिनकरकर-
दीप्तिवाञ्छतेयत्रलोकः ॥ गुरुमधुररसाढ्याभातिचेक्षुः सदा-
र्द्राविविधजनितवर्णाः शालिगोधूमयूषा । मधुररसविभु-
त्तयामानवानांप्रकोपीभवतिकफसमीर'स्यात्तदानूपदेशः ॥

अर्थ-जिसमें निर्मल और मनोहर जलवाली बहुतसी नदी होय तथा जिस देशकी पृथ्वी हरीद्वय और रसवाले वृक्षोंसे आच्छादित होरही हो, हरी कुशा और जलसे भरेहुए हैं शालिग्रानोंके खेत, उन खेतोंसे विभूषित होरही हैं भूमि जिसकी और जिस देशके लोक सूर्यकी किरणोंकी अभिलाषा करते हैं, जहा भारी मधुर रसान्वित और निरतर हरी ईख होती है, जहा नानाप्रकारके रंगके शालिग्राम और गोधूमादि होते हैं और जहा मधुर रसको भक्षण करनेसे कफ और वात कुपित होते हैं, उस देशको अनूपदेश कहते हैं । हिन्दी-खादर, तराई ।

जागलदेशलक्षणम् ।

आकाशशुभ्रउच्चश्चस्वल्पपानीयपादपः । शमीकरीरवि-
त्वार्कपीलुकर्कन्धुसंकुलः ॥ हरिणैर्णक्षपृषतगोर्णखुरस-
कुलः । सुस्वादुफलवान्देशोवातलो जांगलः स्मृतः ॥

अर्थ-जो देश आकाशके समान स्वच्छ और ऊँचाहो जिसमें अल्पजलहो, बहुत थोड़े वृक्ष होंय और शमी, करील, बेल, आक, पीलु और घेरी जिसमें अधिकतामें होंय तथा हरिण, एण, गीठ, चीता, रोस और गर्दभादि, पशुओंसे जो देश भराहुआहो जिसमें स्वादिष्ट फल उत्पन्नहो उस देशको जागलदेश कहते हैं, जागलदेश-वातकारक है ।

अन्यच्च ।

खरपरुपविशाला पर्वता कण्टकीर्णादिशिदिशिमृगतृष्णा-
भूरुहा शीर्णपर्णा ॥ अतिखररविग्भमीपाशुसम्पूर्णभू-
मि सरसिरसविहीन'कूपकारम्भकर्ष ॥ तदनुविरमस-
स्याहारिणो गोमहिष्य प्रभवति गममाशेरूक्षभावश्चम-

म्यक् ॥ पुनरपि हिमवाहशालिसस्यनचेशुर्भवति रुधिरपि-
त्तकोपमाशुह्युपैति ॥

अर्थ—जिसमें तीक्ष्ण और कठोर पहाड़ स्थित हैं तथा कटकमें व्याप्त होरही है दिशा जिमकी, जिसमें विनाही जलके भृगोंको जल प्रतीत होवे, जहा फटेहुये पत्तोंवाले वृक्ष अधिकतर होते हैं, जहाँ सूर्यकी धूपमें अत्यन्त गरम हुए रेतमें पृथ्वी परिपूर्ण होरही है, जहाँ सरोवर और कुआँका पानी नीरस होकर सूखता जाता है, जहाँ नीमधान खानेमें हार्यी, गाय, भैंस, इत्यादि पशु अधिक प्रसन्न नहीं होते, जहाँ रस और मामम रूपता उत्पन्न होती है, जहाँ शीतल पवन, शालिधानोंके खेत और इग्व नहीं होती है और जहाँ रक्त और पित्त कुपित होता है उसको जागलदेश कहते हैं । हिन्दी—कँटर खुस्कदेश ।

साधारणदेशका लक्षण ।

उभयगुणयुतवानातिरूक्षं नस्निग्धं नचखरबहुलचेच्चाभित
कण्टकाढ्यम् ॥ भवति च जलकीर्णनातिशीतनचोष्णं सम-
प्रकृतिसमेतविद्धिसाधारणञ्च ॥

अर्थ—जहाँ अनूप और जांगल इन दोनों देशोंके लक्षण मिलते हैं, जहाँ न तो अत्यन्त रूक्षता होवे और न अधिक स्निग्धता होवे, जहाँ तेज और काटे अधिक न होवें, जो चारों ओर पानीसे भर ग्राहों जिसमें न अत्यन्त शीत होवे और न अत्यन्त गरमी होवे समान प्रकृतिवाला हो उसको साधारण देश कहते हैं ।

अन्यथा ।

यत्र द्वयोरपि च लक्षणयोर्निवेशो गोधूममापचणकाभिधया-
वनलिः ॥ यो राजितः सममलोजनसौख्यदायी साधारणः
सगदितोखिलवेद्यराजैः ॥

अर्थ—जिसमें अनूप और जांगल दोनों देशोंके लक्षण मिलते हों, जहाँ गेहूँ, उड़द, चन और ज्वार उत्पन्न होते हों और जिसमें मग्दी, गरमी समान हो उसको साधारण देश कहते हैं ।

अथ क्षेत्रभेदाः ।

क्षेत्रभेदप्रवक्ष्यामि गिर्वेनाख्यातमंजमा ।

ब्राह्मक्षेत्रचवैश्यायशौद्रं चेति यथा क्रमात् ॥

अर्थ-अब महादेवके कहे हुए क्षेत्रभेदको करता हूँ-ब्राह्मक्षेत्र, क्षात्रक्षेत्र, वैश्यक्षेत्र और शौद्रक्षेत्र इन भेदोंमें क्षेत्र चार प्रकारका है सो यथाक्रमसे जानना ।

ब्राह्मक्षेत्रका लक्षण ।

प्रायोदर्भपलाशवारिचट्टुलयत्रार्जुनामृत्तिका ।

क्षेत्रतत्प्रथमद्विजातिसुखदद्रव्यतदुत्थभवेत् ॥

अर्थ-जिसमें कुशा और पलाशके वृक्ष अधिक हों, जो क्षेत्र जलसे परिपूर्ण हो, जहाँकी मृत्तिका सफेद हो उम क्षेत्रको ब्राह्मक्षेत्र कहते हैं । ब्राह्मक्षेत्रके उत्पन्न हुए द्रव्य ब्राह्मणोंको सुखदेनेवाले हैं ।

क्षात्रक्षेत्र ।

ताम्रभूमिवलयविभूधरयन्मृगेन्द्रमुखसकुलकुलम् ।

घोरघोषिखदिगादिदुर्गमक्षात्रमेतदुदितपिनाकिना ॥

अर्थ-जिसका रंग ताम्रवर्ण हो, और जो पर्वत, सिंह और मृगादिकाके समूहसे सयुक्त हो तथा भयकर शब्द करनेवाले पशु पक्षी और तैर आदिके वृक्षांसे परिपूर्ण हो उमको 'शक्र' ने क्षत्रियक्षेत्र कहा है ।

वैश्यक्षेत्र ।

शातकुम्भनिभभूमिभाम्बरस्वर्णरेणुनिर्चितनिधानवत् ।

सिद्धकिन्नरसुपर्वसेवितवेश्यमाख्यदिदमिन्दुशेखरः ॥

अर्थ-जिसका रंग सोनेकी समान पीतवर्ण हो । जिसकी मृत्तिकामें सुवर्णके कणसे मिले हों, एवं सिद्ध, किन्नर और देवादिकों करके जो सेवित हो उसको 'शक्र' ने वैश्यक्षेत्र कहा है ।

शूद्रक्षेत्र ।

श्यामस्थलाढ्यत्रहुसस्यभृतिदलसन्तृणैर्वज्रुलवृक्षवृद्धिदम् ।

धान्योद्भवैर्कर्पकलोकहर्षदजगादशौद्रजगतौ वृषध्वजः ॥

अर्थ-जिस पृथ्वीका रंग श्यामवर्ण हो, जिसमें नाना प्रकारकी घास उत्पन्न होती हों, जहाँ तृण और वन्यके पेड़ बहुत हों, तथा जो नाना प्रकारके धान्योंके उत्पन्न होनेमें किसानोंको आनन्द देनेवाला हो उम पृथ्वीको शूद्रध्वज (शंकर) ने शूद्रक्षेत्र कहा है ।

चतुर्विधोद्भेदद्रव्यगुणा ।

द्रव्यक्षेत्रादुदितमनघत्राहृत सिद्धिदायिक्षेत्रादुत्थवलिपलि-
तजिद्धिश्वरोगापहारि ॥ वैश्याज्जातप्रभवतितराधातुलोहा-
दिसिद्धीशोद्भादेतज्जनितमखिलव्याधिविद्रावकद्राक् ॥

अर्थ-ब्राह्मणक्षेत्रमे उत्पन्न हुए द्रव्य सिद्धिदायकहैं । क्षत्रियक्षेत्रसे उत्पन्न-
हुए द्रव्य वलि और पलित तथा समारके रोगोंको हरनेवाले होते हैं । वैश्य
क्षेत्रसे उत्पन्न हुए द्रव्य धातु और लोहादिकी सिद्धिमें लिपेजाते हैं और
शूद्रक्षेत्रसे उत्पन्न हुए द्रव्य सबप्रकारके रोगोंको हरनेवाले हैं । इन उपरोक्त
ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र इन चारों क्षेत्रोंसे उत्पन्न हुये द्रव्य क्रमसे
ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्रोंको हितकारीहैं ।

अन्येष्वक्षेत्रभेदाः ।

ब्रह्माशक्त किन्नरेशस्तथाभूरित्येतेपादेवताः स्युः क्रमेण ।

प्रोक्तास्तत्रप्रागुमावलभेनप्रत्येकतेपचभृतानिवक्ष्ये ॥

अर्थ-ब्रह्मा, इन्द्र, कुबेर और पृथ्वी यह ऊपर कहेहुए ब्राह्मादि क्षेत्राके
क्रमसे देवता हैं ऐसा शिवने कहा है यह प्रत्येक क्षेत्र पचभृतांसे पाच प्रका-
रका है उसको कहताहूँ ।

पार्थिवक्षेत्र ।

पीतस्फुरदलयशर्करिलाश्मरम्यपीतयदुत्तममृगचतुरक्ष
भृतम् । प्रायश्चपीतकुसुमान्वितवीरुदादितत्पार्थिवकटि-
नमुद्यदशेषतस्तु ॥

अर्थ-जो क्षेत्र पीलेरंगके गोले कण और पाषाणोंसे शोभित हो तथा
जिस क्षेत्रकी पृथ्वीका रंगभी पीतवर्णहो और जिस क्षेत्रमें घृक्ष लताभी
पीले फूलवाले हों तथा जिसकी मृमि कठिन हो उसको पार्थिवक्षेत्र कहते हैं ।

आप्यक्षेत्र ।

अर्द्धचन्द्राकृतिश्चेतकमलाभट्टपचितम् ।

नदीनदजलाकीर्णमाप्यतत्क्षेत्रमुच्यते ॥

अर्थ-जो क्षेत्र अर्द्धचन्द्राका हो, जिसका वण मणेरूपके समान हो
और जो पाषाणोंमें समुक्त हो, नदी नदादि जलागणोंमें व्याप्त हो उसको
आप्यक्षेत्र जानना ।

तैजसक्षेत्र ।

खदिरादिद्रुमाकीर्णभृरिचित्रकवेणुकम् ।

त्रिकोणरक्तपापाणक्षेत्रतेजसमुत्तमम् ॥

अर्थ-जो क्षेत्र खदिरादिकके वृक्षोंसे परिपूर्ण हो, जिसमें अनेक चीतेके और बाँसके वृक्षहों, जिसका आकार त्रिकोना हो और जिसमें लाल पापाण हों उसको तैजसक्षेत्र कहते हैं ॥

वायवीयक्षेत्र ।

धूम्रस्थलधूम्रदृपत्परीतंपदकोणकतूर्णमृगावकीर्णम् ।

शाकैस्तृणैरचितरूक्षवृक्षकप्रकारयेत्तत्खलुवायवीयम् ॥

अर्थ-जिस क्षेत्रका रंग धूसर हो तथा जो धूँएँके रंगके पाषाणासे सयुक्त हो और जिसके छःकोने हों जिनमें मृगादिपशु, शाक और दृण अधिकतासे हों और जिसमें रूखे वृक्ष हों उस क्षेत्रको वायवीय क्षेत्र कहते हैं ।

आन्तर्गिक्षेत्र ।

नानावर्णवर्तुलतत्प्रशस्तप्राय शुभ्रपर्वताकीर्णमुच्चै ।

यच्चस्थानपावनदेवतानाग्राहक्षेत्रत्रीक्षणस्त्वांतरिक्षम् ॥

अर्थ-जिस क्षेत्रका रंग नानाप्रकारका हो, जो क्षेत्र गोलहो, तथा जो श्वेतपर्वतामे आकीर्ण और उँचा होवे और जिसमें देवतादि वास करते हैं उसको महादेवने आन्तरिक्षक्षेत्र कहा है ।

पंचविधक्षेत्रोद्भवद्रव्यगुणा ।

द्रव्यव्याधिहरवलातिशयकृत्स्वाद्बुस्थिरपार्थिवं
स्यादाप्यकटुककपायमखिलशीतंचपित्तापहम् ।

यत्तिलवणचदीप्यमरुचिचोष्णचतुर्जम

वायव्यतुहिमोष्णमम्लमवलम्ब्यान्नाभसनीरसम् ॥

अर्थ-पार्थिवक्षेत्रमे उत्पन्न होनेवाले द्रव्य-रोगनाशक, अत्यंत बलकारक, स्वादिष्ठ और स्थिर होते हैं । आप्यक्षेत्रमे उत्पन्न होनेवाले द्रव्य चपरे, कपेले, शीतल और पित्तनाशक होते हैं । तैजस क्षेत्रके उत्पन्न होनेवाले द्रव्य-फडवे, नमकीन, अमिको दीपन करनेवाले, वातनाशक और गरम होते हैं । और

वायवीय क्षेत्रमें उत्पन्न होनेवाले द्रव्य-शीतल, गरम, खट्टे और अवलकारक होते हैं । और आतमिक्ष क्षेत्रमें उत्पन्न होनेवाले सब द्रव्य नीरम होते हैं ।
पाचक्षेत्रविदेवता ।

ब्रह्माविष्णुश्रुद्रोस्मादीश्वरोथसदाशिवः ।

इत्येता क्रमतःपच क्षेत्रभूतादिदेवता ॥

अर्थ-ब्रह्मा, विष्णु, रुद्र, ईश्वर और सदाशिव ये क्रमसे पाँच क्षेत्रोंके पाँच देवता हैं ।

वृक्षोत्पत्तिः ।

**जित्वाजवादरिसुसेन्यमिहाजहारवीर पुरायुधिसुधाकलश
गरुत्मान् ॥ कीर्णैस्तदाभुवि सुधाशकलै किलासीवृक्षादि-
कसकलमस्य सुधांशुरीशः ॥**

अर्थ-पूर्वकालमें जिसममय चलवान् गरुडजीने सबदेवसेनाको सभामें जीतकर अमृतके कलशको शीघ्रतासे छीनाया उससमय जो अमृतकी धूँट कलशमेंसे पृथ्वीके भागोंमें गिरीं उन्हीं धूँटोंमें यह सब वृक्षादिक उत्पन्न हुए, और इन सबका स्वामी चन्द्रमा हुआ ।

वृक्षावेवाद्यनादिभेदः ।

**तत्रोत्पन्नास्तृत्तमेक्षेत्रभागेविप्रीयादौविष्टुपोयत्रयत्र । क्षोणी-
जादिद्रव्यभूयप्रपन्नास्तास्ताःसजाविभ्रतेतत्रभूय ॥ एव
क्षेत्रानुगुण्येनतजाविप्रादिवर्णिन । यदित्रालक्षणवक्ष्या-
म्यमोहायमनीषिणाम् ॥**

अर्थ-ब्राह्मणादिक्षेत्राम उत्पन्न हुए द्रव्य-ब्राह्मण, क्षत्रियक्षेत्रोंमें उत्पन्न हुए द्रव्य-क्षत्रिय, वैश्यक्षेत्रोंमें उत्पन्न हुए द्रव्य-वैश्य और शूद्रक्षेत्रोंमें उत्पन्न हुए द्रव्य-शूद्र कहलाते हैं । ऐसे प्रत्येक क्षेत्रके अनुसार वृक्षोंके ब्राह्मणादि भेद उनमें वैद्यको बड़ाचित्त भ्रम न होतुं इसकागण उनमें वक्ष्य करता हूँ ।

तत्तत्तमानि ।

**किमलयकुसुमप्रकाण्डशाखादिपुविशदेपुवदतिविप्रमेनान् ।
नरपतिमतिलोहितेपुवैश्व कनकनिभेषुसितेतरेषुजद्रम् ॥**

अर्थ-निसके पत्र, पुष्प, दण्डी और शाखादि बड़े ह्राय, उसको ब्राह्मण-जातिका वृक्ष कहते हैं । जिसके पत्र पुष्प प्रकाण्ड और शाखादि लाल

होवें उसको क्षत्रियजातिका वृक्ष जानना । और जिसके पत्र पुष्पादि पीले होवें उसको वैश्य तथा जिसके काले होवें उसको शूद्रजातिका जानना ।

ब्राह्मणादिवृक्षोपयोगेनकीविधि ।

विप्रादिजातिसंभृतान्विप्रादिष्वेवयोजयेत् ।

गुणाढ्यानपिवृक्षादीन्प्रातिलोभ्यनचाचरेत् ॥

अर्थ-ब्राह्मणजातिके वृक्ष ब्राह्मणोंको देवै, क्षत्रियजातिके क्षत्रियोंको, वैश्यजातिके वैश्योंको और शूद्रजातिके शूद्रोंको देवै । अधिक गुणवाले वृक्षोंकोभी प्रतिलोम (उल्टा) न करै, अर्थात् ब्राह्मणजातिके वृक्षोंको क्षत्रियादिकोंको, और क्षत्रियादिके वृक्षोंको ब्राह्मणवैश्यादिकोंको शूद्र-ब्राह्मण-और क्षत्रियको और शूद्रजातिके वृक्षोंको ब्राह्मणादिकों न देवै ।

अथौषधिनिर्णयस्तुविधि ।

किंचिदोषप्रशमनकिञ्छातुप्रदूषणम् ।

स्वस्थवृत्तौमतकिञ्चित्रिविधद्रव्यमुच्यते ॥

अर्थ-कोई औषधि वातादिक दोषोंको शान्तकरनेवाली कोई रसादिक धातुओंको दूषित करनेवाली और कोई औषधि नीरोग प्राणियोंको हितकारक है, ऐसे इस ससारमें जितने द्रव्य हैं वह सब तीन प्रकारके जानने ।

तत्रिविधं यथा ।

द्रव्यतुत्रिविधप्रोक्तजाड्मौद्गिदपार्थिवम् ।

अर्थ-फिर वही द्रव्य जगम आद्रिद और पार्थिव इन भेदोंसे तीन-प्रकारके हैं ।

जगमद्रव्य ।

मधूनिगोरसापित्तवसामज्जासृगामिषम् ।

विष्णूत्रधर्मरेतोस्थिस्रायुशृगसुरानखा ॥

जगमेभ्यप्रयुज्यन्तेकेशालोमानिरोचना ।

अर्थ-शहत, गोरम, पित्त, चर्मा, मज्जा, रुधिर, मांस, विष्टा, मूत्र, त्वचा, वीर्य, हृद्दी, नसें, रस, स्राव, मूत्र, केज, रोम और गोरोचन (गोलोचन) ये पशु मनुष्य और पक्ष्यादि चलते हुए जीवोंसे उत्पन्न द्रव्य व्यवहारमें आते हैं इनको जगमद्रव्य कहते हैं ।

पथिवद्रव्यम् ।

सुवर्णसमलाः पचलोहाः ससिकतासुधामन शिलाले ।

मणयोलवणगेरिकांजनेभौममौपधमुद्दिष्टम् ॥

अर्थ—सोना, चाँदी, तामा, जस्त, राग, सीसा, लोहा, शिलाजीत, बालू, सोनामाखी, स्वपरिया, मुर्दासिंग, मनगिर, हरिताल, हीरादि नखरत्न, उपरत्न, सधवादिलवण, गेरू, सरियामट्टी, कसीस, सुर्मा इत्यादि पौषध अर्थात् ये औषधी पृथ्वीकी खानोंमसे निकलताह इसकारण इनको भौम औषध कहते हैं ।

औद्भिद्रव्यम् ।

वनस्पतिवीरुधश्च वानस्पत्यस्तथौपधि ।

फलेर्वनस्पति पुष्पैर्वानस्पत्य फलेरपि ॥

ओषध्य फलपाकांताः प्रतानेवीरुधस्मृतः ।

अर्थ—धरतीको फोडकर जो द्रव्य निकले उसको औद्भिद्रव्य कहतेहैं और उस औद्भिद्रव्यकी चार जाति हैं, वनस्पति १ वीरुध २ वानस्पत्य ३ और ओषधि ४ जिनमें बिना फलकेही फल लग उनको वनस्पति तथा पादप कहते हैं, जैसे—बड, पीपल इत्यादि । और जिनमें फल लगकर फल आतेहैं उनको वानस्पत्य तथा शाखी कहतेहैं । जैसे—आम, जामुन इत्यादि । और जो फल आनेके पश्चात् सग्यजातेहैं उनको ओषधि कहतेहैं । जैसे—गेहूँ, जौ आदि । और जिनकी बेल चलती है उनको वीरुध कहते हैं ।

अथवा ।

ओषध्य पचधाख्यातालतागुल्माश्च शाखिन । पादपाः प्रसराश्चेतिते पांवक्ष्यामिलक्षणम् ॥ गुट्टच्याद्यालताः प्रोक्ताः गुल्माः पर्पटकादयः । आम्राद्याः शाखिनो ज्ञेया वट्याः वत्थादिपादपाः ॥ कटकार्यादिका सर्वा प्रसराडतिकीर्तिताः ।

अर्थ—लता, गुल्म, शाखि, पादप और प्रसर, इन भेदोंमें ओषधि पाँच प्रकारकी है सो उनके लक्षण कहताहूँ गिलोय, पान, गोमवली, अपराजिता, स्वर्णवली इत्यादि वीरुध अर्थात् लताह । पित्तपापडा आदि गुल्म जानने, आम आदि शाखी जानने, बटपीपल इत्यादि पादप जानने, कटेरी आदि प्रसर जाननी ।

अथ वृक्षादीनां पुस्तपादिकथनम् ।

स्त्रीतापुस्ताक्लीवताचद्रुमादौ ज्ञेयायुक्त्यालक्षणतद्ब्रूयामि ।

अर्थ-वृक्षादिकोमें स्त्री, पुरुष और नपुंसक, ये तीन भेद हैं, उनके लक्षण आगे कहता हूँ ।

स्निग्धदीर्घपेलवचित्तहारिपुष्पाद्यंचेत्स्त्रीमतासाभिपग्भिः ।

अर्थ-जिनके पुष्प फलादिक स्निग्ध, दीर्घ, कोमल और मनोहर हों, वह स्त्रीजातिके वृक्ष जानने ।

नोदीर्घानातिह्रस्वा किसलयसुमनस्कधकाण्डादयश्चेत्

स्थूलाः पारुष्यभाजस्तद्दहनिगदिता पुरुषावेव वर्य्ये ॥

अर्थ-जिनके पल्लव, पुष्प, स्कन्द, काण्ड आदि न तो अत्यन्त दीर्घ हों और न अत्यन्त ह्रस्व हों तथा स्थूल और दृढ़ हों उनको पुरुषजातिके वृक्ष जानने ।

पुसोवध्वाश्चलिंगमिलतिचयदिवाक्लीवतासाभिधेया

स्वस्वस्वेनियुक्तगदिजनफलदभेजंतत्कृतंच ॥

अर्थ-जिनमें पुरुष और स्त्री दोनोंके लक्षण मिलते हों उनको नपुंसकजातिके वृक्ष जानना स्त्रीजातिके वृक्ष स्त्रियाँको, पुरुषजातिके पुरुषोंको और नपुंसकजातिके नपुंसकोंको देने चाहिये, इसप्रकार करनेसे रोगियोंको फलकी प्राप्ति होती है ।

द्रव्यपुमान्स्यादखिलस्यजतोरारोग्यदत्तद्वलवर्द्धनञ्च ।

स्त्रीदुर्बलास्वल्पगुणागुणाढ्याः स्त्रीष्वेव नक्वापि नपुंसकस्यात् ।

अर्थ-सर्व पुरुषजातिकी औषधि-आरोग्यताजनक और बलको बढ़ानेवाली है, स्त्रीजातिकी औषधि दुर्बल और अल्पगुणवाली तथा स्त्रियोंको अधिकगुण करनेवाली है और नपुंसकजातिकी औषधि किसीकोभी हितकारी नहीं है ऐसा निघण्टुचूडामणिमें लिखा है ।

वृक्षादीनां क्षुत्पिपासादिकथनम् ।

क्षुत्पिपासाचनिद्राचवृक्षादिष्वपिलक्ष्यते ।

मृज्जलादानतस्त्वाद्येपर्णसकोचतौ तिता ॥

अर्थ-भूख, पिपास और निद्रा यह वृक्षादिकोंमेंभी पाई जाती है, क्योंकि

वृक्ष मिट्टी खाते, और पानी पीते हैं जो उनको मिट्टी और पानी न मिले तो वह नष्ट हो जाते हैं अर्थात् सूखजाते हैं रातको वृक्षोंके पत्ते सकुचजाते और फिर सबरेको खिलनाते हैं, इसकारण वृक्षादिकोंमें निद्रा पाई जाती है ।

पृ. शादीनापचभूतात्मकत्वव्ययनम् ।

यत्काठिन्यसाक्षितिर्योद्धवाभस्तेजस्तूष्णावर्द्धतेयत्सवात ।

यद्यच्छिद्रतन्मभःस्थावराणामित्येतेपापचभूतात्मकत्वम् ॥

अर्थ—वृक्षोंमेंभी मनुष्योंकी तरह पचभूत रहते हैं वृक्षोंमें कठिनता पृथ्वीका भाग है, गीलापन जलका भाग है, उष्णता अग्निका अंश है, वृक्षोंकी वृद्धि वायुका विभाग है और वृक्षोंमें जो छिद्र होते हैं वह आकाशका अंश है ।

पृक्षादीना परोपकार ।

मूलत्वक्सारनिर्यासनाडिस्वरसप्लवा ।

क्षारा क्षीरफलपुष्पभस्मतेलानिकटका ॥

पत्राणिशुगा कदाश्चप्ररोहाश्चोपकारका ।

अर्थ—मूल, त्वक, सार, निर्यास, नाड, स्वरस, प्लव, क्षार, क्षीर, फल, पुष्प, भस्म, तेल, कटक, पत्र, अक्षुर और कद यह सब वृक्षोंके अंग उपकार करनेवाले हैं इसकारण वृक्ष परोपकारी हैं, मनुष्य तो कोई परोपकारी होते हैं परन्तु वृक्ष तो माय सगरी परोपकारी होते हैं अतएव जो मनुष्य परोपकारी नहीं होते वह वृक्षादिकासे भी जड़ है । (इ० भो० रा०) अब अग्नेयी मतसे वृक्षोंका विधेय विवरण लिखते हैं । सब वृक्ष स्त्री और पुरुष इन भेदासे दो प्रकारके हैं, वृक्षाके पुष्प नरु हैं, फल सतान हैं वृक्षोंके सन्तान भी स्त्रीवृक्ष और पुरुषवृक्षके संयोगमें होती है ऐसा इग्नेजी ग्रन्थोंमें लिखा है किन्तु सस्फुटके ग्रन्थोंमें नहीं । एकदल और द्विदल इन भेदासे वृक्षकी दो जातियाँ हैं, एकदल जातीके वृक्षमें उत्पन्न होतेही एक पत्ता निकलता है उसमें खड़ी हुई एक शिरा होतीहै और तिछी शिराय अधिक नहीं होनी, एकदल अतर्वर्द्धक है । इसकी उत्पत्ति फण्डूलादिके भीतरमें होती है, और इसमें शाखा नहीं होती । द्विदल वृक्षमें उत्पन्न होनेके समय प्रथम दो पत्र निकलते हैं इन पत्तोंमें तिछी नमें अर्थात् शिराय अधिकतामें होती है, इसमें उत्पत्तिक्रिया डालियोंमें अक्षुराने फूटनेमें होती है और फलमेंभी बहुधा

वायी जाती है। एकदलको इंग्रेजीमें "मोनिकोटीलीडोनस" और द्विदलको "फाईकोट लेडोनस" कहते हैं। अतर्वर्द्धकको "एंडोजीनस" और बाह्य-वर्द्धकको "एफजोजीनस" कहते हैं। एकदल वृक्ष, केला, नारियल, ज्वार, चाजरा इत्यादि धान्य जानने। द्विदल वृक्षोंके बीजोंकी दो दालें होती हैं। एकदल जातीके वृक्षकी दो दालें नहीं होती। येही वृक्ष स्त्री पुरुषकी भाँति सगमसे फलरूपी सतानको उत्पन्न करते हैं, जैसी सतान वृक्षोंसे उत्पन्न होती है, तैसी पशु पक्षी अथवा मनुष्योंसे नहीं होती, जैसे एकवृक्षसे कोंड बीज उत्पन्न होतेहैं, तैसेही पत्ते, कद्द, मूल, डदलादिसेभी वृक्ष उत्पन्न होतेहैं। वृक्ष जिसप्रकार नरनारीसे सतानको उत्पन्न करते हैं सो कहते हैं। जब वृक्ष अपनी उमरमें आता है, तब उसकी डडीके अग्रभागमें कोपलपर पुष्पोंका वेश्म दिखाई देता है उसको इंग्रेजीमें "केलीफ" कहते हैं। उस केलीफकी कली नीले रंगकी होती है, डाकके फूलकी काली होती है जब वह कली उमरमें आवे तो वेश्मको उघाडकर प्रफुल्लित हो बाहर फूल रूप दिखाई देतीहै। उसमें कोपभी होता है और पखडी अलग २ दिखाई देती है। पुष्पकोशको इंग्रेजीमें "कोरोला" कहते हैं कमलादि पुष्पोंमें वेश्म नहीं होता, उन फूलोंमें ऊपरकी पखडियें खेरी और नीले रंगकी होती हैं इसको रोलाके भीतर नरनारी रूपसे तनु होते हैं उसमें नरतनुको इंग्रेजीमें "ष्टेमन" कहते हैं और नारी तनुको "पिष्टल" कहते हैं नर तनुओंके ऊपर रजसी लगी रहती है-जिसे सस्कृतमें पराग अथवा पुष्परज कहते हैं। अंग्रेजीमें "पोलन" कहते हैं। नारीतनु खुल्ल होता है, उगका मुख खुला हुआ होता है जिसको योनि कहते हैं, अंग्रेजीमें "ष्टिग्मा" कहते हैं, नारीतनु जिस स्थानसे उत्पन्न होते हैं उनको गर्भाशय कहते हैं अंग्रेजीमें "ओवरी" और लैटिनमें "डिस्क" कहते हैं। शिग्मा व ओवरीके मध्य जो मार्ग होता है उसको इंग्रेजीमें "स्टाइल" कहते हैं स्टाइलमें छोटे २ वीर्यकण होते हैं जिनको इंग्रेजीमें "फोहिला" कहते हैं। नरकेशरमें जो पुष्परज होतीहै वह पवनके द्वारा उडकर शिग्माके भीतर जाय वहासे ओवरीके भीतर जाकर गर्भव्यावती है, यह नरकेशर वह नारीकेशर एक २ पुष्पमेंभी होती है और पृथक् पुष्पमेंभी होती है उसका संयोग पवनसे अथवा पतंगादि जीवोंसेभी होताहै, पतंगादि नरकेशरवाले पुष्पोंमें जाकर नारीकेशरवाले पुष्पोंमें जातेहैं व उनके शरीरमें लगाहुवा पुष्परज नारीकेशरके मुखमें जाकर गर्भ धधनका कारण होता है।

इसप्रकार बहुत दूसरेभी सयोग होजाता है एकवर्गके वृक्ष समीप होनेसे दूसरे नरपुष्पका रज नारीतनुओंमें जानेसे सकर जातिके वृक्ष उत्पन्न होतेहैं । इसप्रकार एक जातिके नरनारी आदि मिश्रितवर्गकी प्रथम सज्ञा इग्रेजीमें "रेनस्युलेसी" लिखी है । इसप्रकार सर्व वर्ग बाँधे हैं । तैसेही वृक्षोंके पत्तोंके द्वारा वृक्षोंके गुण शोधक नामोंसे वृक्षोंके नाम लेटिनभाषामें लिखेगये हैं । उदाहरण दीफोलिया अर्थात् तीन पत्तोंका "गडक बुधिआइ" अर्थात् "राक्षसपुष्पका" "गोतेलग्राण्ड फ्लोरा" बड़े फूलका "मलदीफ्लोरा" छोटे फूलका, "यूनीफ्लोरा" छोटे फूलका, "थिसिलिफ्लोरा" डटल आदिका नाम कल्पित किया है । वृक्षवृक्षमें स्त्री पुरुष जातिके पृथक् २ फूल हों तो उन्हें अग्रेजीमें "मोनोप्यस" कहते हैं अलग २ वृक्षोंमें नरनारी जातिके पुष्प हों तो उन्हें इग्रेजीमें "डारप्यस" कहते हैं । एकवृक्षमें हो अथवा अलग २ वृक्षोंमें नरनारी जातिके पुष्प हों तो उन्हें इग्रेजीमें "डारप्यस" कहते हैं । एकवृक्षमें हो अथवा अलग २ वृक्षोंमें हो तो इन दोनोंको "पोलीगोम्मा" कहते हैं । अपुष्प भुषको "क्रिपटोगोम्मा" कहते हैं ।

अथ नक्षत्रवृक्षाः ।

अथवक्ष्यामिनक्षत्रवृक्षानागमलक्षितान् ।

पूज्यानायुष्यदाश्चैववर्द्धनात्पालनादपि ॥

विपद्बुधात्रीतरुहेमदुग्धाजम्बूस्तथारसादिरकृष्णवशा ।

अश्वत्थनागौचवटःपलाशाःपृक्षस्तथामृष्टतरु क्रमेण ॥

विल्वार्जुनौचैवविककतोथमकेमरा शम्बरसर्जवज्रला ।

सपानसार्काश्चशमीकदम्बास्तथाग्रनिम्बौमधुकद्रुम क्रमात्

अमीनक्षत्रदेवत्यावृक्षाः स्युः सप्तविंशतिः ।

अश्विन्यादिक्रमादेपामेपानक्षत्रपद्धतिः ॥

यस्त्वेतेपामामजन्मर्शभाजामर्त्यं कुर्याद्विपजादीन्मदाय ।

तस्यायुष्यं श्रीरुलत्रचपुत्रनश्यत्येषा वर्द्धतेवर्द्धनाद्यैः ॥

अर्थ-अथ नक्षत्रोंके वृक्षोंके नाम और लक्षण कहता हूँ जो अपने जन्मके नक्षत्रोंके वृक्षोंको पूजता है, मीनता है और पाउता है उसने आयुकी वृद्धि होती है । नक्षत्रवृक्षनाम-१ अश्विनी-रुच्य २ भरणी-आमला ३ कृत्तिका-

वाधी जाती है। एकदलको इंग्रेजीमें "मोनिकोटीलीडोनस" और द्विदलको "फाईकोट लेडोनस" कहते हैं। अतर्वर्द्धकको "एडोजीनस" और बाह्य वर्द्धकको "एफजोजीनस" कहते हैं। एकदल वृक्ष, केला, नारियल, ज्वार, बाजरा इत्यादि धान्य जानने। द्विदल वृक्षांके बीजोंकी दो दालें होती हैं। एकदल जातीके वृक्षकी दो दालें नहीं होती। येही वृक्ष स्त्री पुरुषकी भाँति सगमसे फलरूपी सतानको उत्पन्न करते हैं, जैसी सतान वृक्षांसे उत्पन्न होती है, तैसी पशु पक्षी अथवा मनुष्योंसे नहीं होती, जैसे एकवृक्षसे करोड़ बीज उत्पन्न होते हैं, तैसेही पत्ते, कद्द, मूल, उदलादिसेभी वृक्ष उत्पन्न होते हैं। वृक्ष जिसप्रकार नरनारीसे सतानको उत्पन्न करते हैं सो कहते हैं। जब वृक्ष अपनी उमरमें आता है, तब उसकी डडीके अग्रभागमें कोपलपर पुष्पोंका वेश्म दिखाई देता है उसको इंग्रेजीमें "केलीफ" कहते हैं। उस केलीफकी कली नीले रंगकी होती है, ढाकके फूलकी काली होती है जब वह कली उमरमें आवे तो वेश्मको उग्राडकर प्रफुल्लित हो बाहर फूलरूप दिखाई देती है। उसमें कोपभी होता है और पखडी अलग २ दिखाई देती है। पुष्पकोशको इंग्रेजीमें "कोगेला" कहते हैं कमलादि पुष्पाम वेश्म नहीं होता, उन फूलोंमें उपरकी पखडियें खरेरी और नीले रंगकी होती हैं इसको रोलाके भीतर नरनारी रूपसे तनु होते हैं उसमें नरतनुको इंग्रेजीमें "ट्रेमन" कहते हैं और नारी तनुको "पिष्टल" कहते हैं नर तनुआंके ऊपर रजसी लगी रहती है-जिसे सस्कृतमें पराग अथवा पुष्परज कहते हैं। अंग्रेजीमें "पोलन" कहते हैं। नारीतनु खुफल होता है, उमका मुख खुला हुवा होता है जिसको योनि कहते हैं, अंग्रेजीमें "ष्टिग्मा" कहते हैं, नारीतनु जिस स्थानसे उत्पन्न होते हैं उनको गर्भाशय कहते हैं अंग्रेजीमें "ओवरी" और लैटिनमें "डिस्क" कहते हैं। श्तिग्मा व ओवरिके मध्य जो मार्ग होता है उसको इंग्रेजीमें "स्टाइल" कहते हैं स्टाइलम छोटे २ वीर्यफण होते हैं जिनको इंग्रेजीमें "फोहिला" कहते हैं। नरकेशरमें जो पुष्परज होती है वह पवनके द्वारा उडकर श्तिग्माके भीतर जाय वहासे ओवरिके भीतर जाकर गर्भवाँधती है, यह नरकेशर वह नारीकेशर एक २ पुष्पमेंभी होती है और पृथक् पुष्पमेंभी होती है उसका संयोग पवनसे अथवा पतंगादि जीवोंसेभी होता है, पतंगादि नरकेशरवाले पुष्पोंमें जाकर नारीकेशरवाले फूलोंमें जाते हैं व उनके शरीरमें लगाहुवा पुष्परज नारीकेशरके मुखमें जाकर गर्भ चधनका कारण होता है।

इसप्रकार बहुत दूरसेभी सयोग होजाता है एकवर्गके वृक्ष समीप होनेसे दूसरे नपुष्पका रज नारीतनुओंमें जानेसे सकर जातिके वृक्ष उत्पन्न होतेहैं । इसप्रकार एक जातिके नरनारी आदि मिश्रितवर्गकी प्रथम सज्ञा इंग्रेजीमें "रेनक्युलेसी" लिखी है । इसप्रकार सर्व वर्ग बाँधे हैं । तेसेही वृक्षोंके पत्तोंके द्वारा वृक्षोंके गुण शोधक नामोंसे वृक्षोंके नाम लेटिनभाषामें लिखेगये हैं । उदाहरण दीकोलिया अर्थात् तीन पत्ताका "राइक दुर्धियाई" अर्थात् "राइकदुर्धका" "गोतेलग्राण्ड फ्लोरा" बड़े फूलका "मलटीफ्लोरा" छोटे फूलका, "यूनीफ्लोरा" ठोटे फूलका, "थिसिलिफ्लोरा" डटल आदिका नाम कल्पित किया है । वृक्षवृक्षम स्त्री पुरुष जातिके पृथक् २ फूल हों तो उन्हें इंग्रेजीमें "मोनोप्यस" कहते हैं अलग २ वृक्षोंमें नरनारी जातिके पुष्प हों तो उन्हें इंग्रेजीमें "डायप्यस" कहते हैं । एकवृक्षमें हो अथवा अलग २ वृक्षोंमें नरनारी जातिके पुष्प हों तो उन्हें इंग्रेजीमें "डायप्यस" कहते हैं । एकवृक्षम हो अथवा अलग २ वृक्षम हो तो इन दोनोंको "पोलीगोम्मा" कहते हैं । अपुष्प धुपको "क्रिपटोगोम्मा" कहते हैं ।

अथ नक्षत्रवृक्षाः ।

अथवक्ष्यामिनक्षत्रवृक्षानागमलक्षितान् ।

पृज्यानायुष्यदाश्चैववर्द्धनात्पालनादपि ॥

विपद्बुधात्रीतरुहेमदुग्धाजम्बूस्तथाखादिरकृष्णवशा ।

अश्वत्थनागौचवट पलाशाःपृक्षस्तथाम्वष्टतरुःक्रमेण ॥

विल्वार्जुनौचैवविककतोथसकेसराःशम्भ्वग्मर्जवज्जला ।

सपानसार्काश्चशमीकदम्बास्तथाग्रनिम्बौमधुकद्रुमःक्रमात्

अमीनक्षत्रदेवत्यावृक्षाःस्युःसप्तविंशतिः ।

अश्विन्यादिक्रमादेपामेपानक्षत्रपद्धतिः ॥

यस्त्वेतेपामामजन्मर्क्षभाजामर्त्यं कुर्याद्रेपजादीन्मदाधः ।

तस्यायुष्यं श्रीःफलत्रयपुत्रनश्यत्येपां वर्द्धतेवर्द्धनाद्यैः ॥

अर्थ-अथ नक्षत्रोंके वृक्षोंके नाम और लक्षण कहता हूँ जो अपने जन्मके नक्षत्रके वृक्षको पूजताहै, सींचता है और पायता है उसके आयुकी वृद्धि होती है । नक्षत्रवृक्षनाम-१ अश्विनी-हुचला २ भरणी-जामला ३ वृश्चिक-

गूलर, स्वर्णक्षीरी-सत्यानासी ४ रोहिणी-जामून ५ मृगशिर-चैर ६
 आर्द्रा-कृष्णागर ७ पुनर्वसु-जॉस ८ पुष्य-पीपल ९ आश्लेषा-नागकेशर
 १० मघा-चड ११ पूर्वा-ढाक १२ उत्तरा-पाखर १३ हस्त-पाठ
 १४ चित्रा-बेल १५ स्वाती-अर्जुन १६ विशाखा-विककत (रामबनूर)
 १७ अनुराधा-पुन्नागवृक्ष १८ ज्येष्ठा-लोघ १९ मूल-साल २० पूर्वाषाढ-
 जलवंत २१ उत्तराषाढ-पनस २२ श्रवण-आक २३ धनिष्ठा-शमी २४
 शततारका-कदम्ब २५ पूर्वाभाद्रपदा-आम २६ उत्तराभाद्रपदा-नीम २७
 रेवती-महुवेका वृक्ष । जो मनुष्य मदान्ध होके अपने जन्मनक्षत्रके वृक्षको
 औषधादिके काममें लाता है, उसकी आयु, लक्ष्मी, स्त्री और पुत्रादिक
 नष्ट हो जाते हैं और जन्मनक्षत्रके वृक्षको जल आदिके द्वारा बढानेसे आयु-
 आदिकी वृद्धि होती है ।

आग्नेयाविंध्यशैलाद्याः सौम्योहिमगिरिः स्मृत । अतस्तदोषधा
 निस्त्युरनुरूपाणि हेतुभिः ॥ अन्येष्वपि प्ररोहति वनेष्वपवनेषु च ।

अर्थ-विंध्यादिक पर्वत उष्ण हैं और हिमालय पर्वत शीतल हैं । इसका-
 रण विंध्यादिककी औषधि उष्णवीर्य और हिमालयपर्वतकी औषधि
 शीतवीर्य होती है । पर्वतोंके अतिरिक्त वन उपवनादिकमें भी उत्पन्नहोने
 वाली औषधि अपने क्षेत्रोंके अनुसार वीर्यवान् होती है ।

औषधियें छेनम मूलतत्त्वविचार ।

भेषज्यंसल्लघुमृदुचरेमूलभेद्व्यंगलमे शुकेन्द्रीज्येविदिचदिव-
 सेचापितेपारवेश्व ॥ शुद्धेरिप्फेद्युनमृतिगृहेसत्तिथानोजनेभे ।

अर्थ-लघु चर और मूलनक्षत्रोंमें, शुक्रवार, चंद्रवार, गुरुवार, बुधवार
 और सूर्य यह द्विस्वभालग्र [मिथुन, कर्क, धन, मीन] में हो और शुक्रादि
 वारांम लग्नसे १२-७-८ गृह पापोंसे हीन होय तो ऐसे शुभकालमें औष-
 धिकी ग्रहणकरना देना और बनाना श्रेष्ठ है ।

औषधिलेनकी विधि ।

यतध्वमुत्खातशुचिप्रदेशजाद्विजेनकालादिकतत्त्ववेदिना ।

यथाययंचौषधयोगुणोत्तराप्रत्याहरतेयमगोचरानपि ॥

अर्थ-प्रथम पृथ्वीको झाड़ बुढ़ाकर साफकरके कालादितत्त्वको
 जाननेवाला ग्राहण, औषधिका कौनसा अंग लिया जायगा इसकी विचार
 कर परेतादिकोंमें भी छिपी हुई औषधियोंको ग्रहण करे ।

औपधिग्रहणमन्त्रा ।

स्वमारण्येच एकान्ते प्रभाते मन्त्रयुक्तिः । सग्राह्यमौपधसि-
द्धनोचेद्भवतिकाष्ठवत् ॥ ॐ नमस्तेऽमृतसम्भवे रसवीर्य-
विवर्द्धिनि । वलमायुश्च मे देहि पापान्मेजहि दूरत ॥ येन त्वा-
खनते ब्रह्मा येन त्वा खनते भृगु । येन वेन्द्रोऽथ वरुणस्तेन त्वा-
मुपचक्रमे ॥ तेनाह खनयिष्यामि मन्त्रपूतेन पाणिना । ॐ
आतप्ते ते मा त्रियते ते जो वीर्याऽन्यथा भवेत् ॥ अत्रैव तिष्ठ क-
ल्याणि मम कार्यं करीभव ॥ मम कार्यं भूते सिद्धेत तत् स्वर्गं
गमिष्यसि । ॐ ह्रीं चण्डेन्द्रोऽस्वहा ॥ अनेन मन्त्रेणानुस-
युतमातपे त्रिदिनं शुष्कनिहितवीर्यं धृग्भवेत् । अर्कपुण्या-
यां सर्वा औपध्य उत्पाद्यन्ते ॥

अर्थ—स्वभावसे वनके एकान्त स्थानमें प्रभातके समय जाकर मन्त्रयुक्तिसे औपधको ग्रहण करे तो कार्यकी सिद्धि होती है, नहीं तो औपधि काटके समान जाननी । “ॐ नमस्तेऽमृतसम्भवे” इत्यादि । इस मन्त्रो पढ़कर औपधिको उखाड़ लेवे और जो मन्त्र पुण्यादिक लेने होय तो वही इसी मन्त्रको पढ़कर लेवे, फिर उस औपधिको लेकर तीन दिन भूपर मुखान्दे इस प्रकार करनेसे औपधि अत्यन्त वीर्यको धारण करनेवाली होजाती है प्रायः पुण्यार्कयोगमें मन्त्र प्रकारकी औपधि उखाड़ी जाती है ।

औपधिउखाटनेकी विधि ।

गृहीयात्तानि मुमना शुचि प्रातः सुवासरे । आदित्यसम्मुखो-
मानी नमस्कृत्य शिवहृदि ॥ माघाग्नधराद्रव्यगृहीयादु-
त्तराश्रितम् ।

अर्थ—औपधि लानेके लिये प्रातः काल उठकर स्नान आदिगं शुद्ध हो शुभदिन वनमें जाकर सूर्यके सम्मुख उपस्थित हो मानको धारण कर शिवको हृदयमें नमस्कार कर माघाग्न धराद्रव्य भूमिमें उत्पन्न हुए, ऐसी औप-
धिको उत्तर दिशाकी ओरकों मुखरके उखाड़े ।

शुद्ध औपधि ।

वल्मीककुत्सिताऽनूपश्मशानोपमार्गजा ।

जन्तुवह्निहिमव्याप्तानौपन्धकार्यसाधिका ॥

अर्थ-चाँनी, बुरीजमीन, अनृपदेश (खादर) इमशानभूमि, ऊपर जमीनमें और मार्गमें उत्पन्न होतीवाली औषधि और जो कीड़ोंकी खाई हुईहो, अग्निसे दग्ध हुईहो, जिसको सरदी लगीहो, लूकीमारी, ऐसी औषधि कार्यको सिद्ध करनेवाली नहीं होती, इसकारण इनको नहीं लेवे ।

औषधमग्नह अथवा रखनेकी विधि ।

धूमवर्षानिलक्लेदैःसर्वर्तुष्वनभिद्रुते ।

ग्राहयित्वागृहेन्यस्येद्विधिर्नौपधसग्रहम् ॥

अर्थ-धुँआ, वर्षा, पवन और मरदी इनसे रहित तथा जिसमें किसी प्रकारसे किसी तरहका विकार उत्पन्न न हो ऐसे उत्तम स्थानमें औषधियोंको भलेप्रकारसे रखे ।

ह्योतमृद्रांडफलकशकुबिन्यस्तभेषजम् ।

प्रशस्तायादिशिशुर्वाभेषजागारमिष्यते ॥

अर्थ-कपडेकी थैलियोंमें, वा टुकडाम मिट्टीकी हाडियोंमें इमरत वानामें, मटकियोंमें, मल्लोंमें, मलसियोंमें, सकोरोंमें, कड़ोरोंमें, प्यालोंमें, शीशियोंमें, चोतलाम, शीशोंमें, डिब्बोंमें, डिब्बियोंमें तरुतोंमें, अलवारियोंमें, कीलोंमें, खुटीमें और भेखोंमें औषधी रखनी चाहिये और जिसमें राय औषधि रखीहो वह औषधी मंदिर अर्थात् औषधालय पूर्व अथवा उत्तरदिशा तथा उत्तम स्थानमें बनना चाहिये ।

अतिस्थूलजटाया स्युस्तासां ग्राह्यास्त्वचोऽध्रुवम् । गृहीयात्सूक्ष्ममूलानिसकलान्यपिबुद्धिमान् ॥ महान्तियेपामूलानिकाष्ठगर्भाणिसर्वत । तेषांतुवत्फलग्राह्याद्वस्वमूलानिसर्वशः ॥ न्यग्रोधादेस्त्वचोग्राह्या सारस्याङ्गीजकादित । तालीसादेस्तुपत्राणिफलम्यात्रिफलादितः ॥ कचिन्मूलकचित्कद कचित्पत्रकचित्फलम् । कचित्पुष्पकचित्सर्वकचित्सार कचित्त्वचः ॥ चित्रकसूगणनिम्बोवामाचत्रिफलाक्रमात् । धातकीकटकारीचखदिर क्षीरपादपः ॥

अर्थ—लम्बी और स्थूल जड़वाले वृक्षकी छाल लेंवे, ठोटीजड़वाले वृक्षका गर्वांग लेवे, जिनकी जड़ बड़ी और चारों ओर छाल लिपट रही है उनका बकर लेवे, ठोटी जड़वाले वृक्षोंका पचाग लेवे, बड़ इत्यादि वृक्षोंकी छाल लेनी चाहिये, विजयमारादिका सार तालिशादिके पत्र और त्रिफलादिके फल लेने चाहिये । किसीका मूल, किसीका कन्द, किसीके पत्ते, किसीका फल, किसीका फूल, किसीका पचाग, किसीका सार और किसी वृक्षकी छाल लेनी चाहिये । चिंतकी छाल, सूरणका कन्द, नीम और अड़से आदिके पत्र, त्रिफलेके फल, धायके फूल, कटेरी इत्यादिका पचाग, खदिरादिकोंका सार और दूधवाले वृक्षोंकी छाल लेनीयोग्य है ।

क्वचिन्निवस्यगृहीयात्पत्राभावेत्वचामपि ।

वालफलतुवित्वस्यपक्वमारग्वधस्यच ॥

अर्थ—कहीं नीमके पत्ते न मिल तो वहाँ छालभी लेलेंवे, धेलका कच्चा फल और अमलतासादिका पक्का फल लेना चाहिये ।

अगेनुक्तेजटाग्राह्याभागेऽनुक्तेऽखिलसमम् ।

प्रात्रेऽनुक्तेमृद पात्रकालेऽनुक्तेत्वहर्मुखम् ॥

अर्थ—जहाँ औषधिका कोई जग नहीं कहा होय वहाँ औषधिकी जड़ लेनी चाहिये, जहाँ तोल नहीं कही हुई होय वहाँ मद्य औषधि समानभाग लेवे, जहाँ घामन नहीं कहा होय वहाँ मदीका वागन लेंवे, जहाँ फाल नहीं कहा होय वहाँ प्रातः काल ममसना ।

**नवान्येवहियोज्यानिद्रव्याण्यखिलकर्मसु । विनाविडगङ्गा-
ण्णाभ्यागुडधान्याज्यमाक्षिके ॥ पुगणतुप्रशस्तम्यात्तावृ-
लकाजिकतथा । शुष्कनवीनद्रव्यतुयोज्यसकलकर्मसु ॥
आर्द्रतुद्विगुणयुज्यादेपसर्वत्रनिश्चयः । गुडचीकुटजोवामा-
कृष्माडश्चशतावरी ॥ अश्वगधासहचर शतपुष्पाप्रसारिणी ।
प्रयोक्तव्याः सदेवाद्राद्विगुणानैवकारयेत् ॥ वामानिवपटोल-
केतकवलाकृष्मांडकेदीवर्गी वर्षाभृकुटजाश्वकन्दसहिता
साष्टतिगधामृता ॥ ऐन्द्रीनागवलाकुण्टकपुराक्षत्रामृतास-**

वर्दा सार्द्राएवतुनक्चिद्रुद्रिगुणिताःकार्येणुयोज्याबुधैः ॥
घृततैलचपानीयंकपायव्यजनादिकम् । पक्त्वाशीतीकृतं
चोष्णतत्सर्वस्याद्विषोपमम् ॥

अर्थ-मत्र कर्मोमे सम्पूर्ण औषधि नवीन लेनी चाहिये, किन्तु वायविडंग, पीपल, गुड, धान्य, घी और मधु, ये सब पुराने लेवे, अर्थात् नवीन न लेवे । पान और काँजी पुरानी लेनी चाहिये सूखा और नवीनद्रव्य सब कार्यामें लेवे, गीली औषधी मात्रासे द्विगुनी लेवे, ये सर्वत्र निश्चय है । असगंध, पिपावाँमा, साँफ और पसर ये औषधी नित्य गीली लेवे, किन्तु द्विगुणी कडाचित् न लेवे । बाँसा, नाम, पटोलपत्र, केतकी, खिरंटी, पेठा, नीलिकमल, शतावरी, साठ, इन्द्रजौ, कन्द, पसरन, गिलोय, इन्द्रायण, गगेरन, पिपा बाँसा, साँफ और आमले ये सब द्रव्य गीले होनेपरभी बेच द्विगुणे न डाले घी, तैल, जल, काथ और भोजनकी वस्तु इन सबको एकवार पकाकर टटे होनेपर फिर गरम न करे यदि गरम करे तो विषकी समान अपकारी होजाते हैं ।

द्रव्यलक्षण ।

सूक्ष्मास्थिमांसलापथ्यासर्वकर्मणिपूजिता । क्षिताम्भसि
निमज्जेद्याभल्लातक्यस्तथोत्तमा ॥ वराहमूर्द्धवत्कदोवारा-
हीकदमजक । मौर्वचलतुकाचाभंसेन्धवंस्फटिकप्रभम् ॥
सुवर्णच्छविकजेयस्वर्णमाक्षिकमुत्तमम् । इद्रपुष्पप्रतीका-
शामनोद्वाचोत्तमामता ॥ श्रेष्ठशिलाजतुजेयप्रक्षिप्तनविशी-
र्यते । तोयपुष्पंकांस्यपात्रेप्रतानेनविवर्द्धते ॥ कर्पूरस्तुवर्-
स्त्रिग्वएलासूक्ष्मफलावरा । श्वेतचदनमत्यन्तसुगन्धिगुरु-
पूजितम् ॥ रक्तचन्दनमत्यतलोद्धितप्रवरमतम् । काकतु-
ण्डनिभ स्त्रिग्वोगुरु श्रेष्ठोऽगुरुर्मत ॥ सुगन्धिलघुलक्ष्ण
सुरदारुनरमतम् । सरलस्त्रिग्वमत्यर्थसुगन्धिचगुणानहम् ॥
अतिपीताप्रशस्तातुजेयादारुनिभावुधै । जातीफलगुरु
स्त्रिग्वसमशुभ्रांतरवरम् ॥ मृद्रीकासोत्तमाज्ञेयायास्यादो-

स्तनसन्निभा । करमर्दफलाकारामध्यमासाप्रकीर्तिता ।
खडतुविमलश्रेष्ठचंद्रकांतसमप्रभम् ॥ गव्याज्यसदृशरु-
च्यगधमधुतरंमतम् ॥

अर्थ—खड छोटी और बहुत गुदेवाली श्रेष्ठ होती है । जलमें डालनेमें हृवजावे वह भिलावा श्रेष्ठ होता है । बाराहके मस्तककी समान बाराहीकट उत्तम होता है । काँचकी समान कालानोन उत्तम होता है । स्फटिकमणिकी समान निर्मल और प्रभावाला संधानोन उत्तम होता है । सोनामाखी सोनेकी समान पीली उत्तम होती है । मैनशिल इद्रपुष्पकी सदृश श्रेष्ठ होती है । जां गिरनेसे नहीं फटे तथा जलसे भरेहुये काँसीके वासनमें गरनेसे तारसे तारसे छोड़े वह शिलाजीत उत्तम होता है । कपूर चिकना और कपेला उत्तम होता है । इलायची छोटे फलवाली उत्तम होती है । सफेद चंदन अत्यंत सुगंधिवाला और भारी उत्तम होता है । लाल चंदन अत्यन्त लाल श्रेष्ठ होता है । अगर काँवेके मुखकी समान स्निग्ध और भारी उत्तम होती है । देवदारु सुगंधिवाला, हलकी ओर रूखी अच्छी होती है । सरल अत्यन्त चिकनी और सुगंधित उत्तम होती है । टारुहलदी अत्यंत पीली उत्तम होती है । जामफल भारी, चिकना, गोल और जो तोंडनेसे भीतरसे सफेद निकले वह उत्तम होता है । दाग्य गौके स्तनोंकी आकृतिवाली श्रेष्ठ होती है और कोंढेकी फलकी समान आकारवाली दास मध्यम जाननी । खाड—चंद्रकांतकी समान धवल और निर्मल उत्तम होती है । शहत गायकं धीक समान रुचिकाग्य और सुगंधिवाला उत्तम होता है ।

स्वभावश्च श्रेष्ठः ।

शालीनालोहित शालि पष्टिकेपुचपष्टिका । शूकधान्येष्व-
पियवोगोधूम प्रवरोमत ॥ शिम्बीधान्यवरोमुद्रोमसूरश्वा-
ढकीतथा । रसेपुमधुरः श्रेष्ठोलवणेपुचसेधव । दाडिमामल-
कद्राभाखर्जूरचपरूपकम् । राजादनमातुलगफलवगेपुश-
स्यते ॥ पत्रशाकेपुवास्तूकजीवन्तीपोतिकावरा । पटोल
फलशाकेपुरुदशाकेपुसूरणम् ॥ एणः कुरगहरिणोजाग-
लेपुप्रशस्यते । पक्षिणानित्तिरिर्लावोवरोमत्स्येपुरोहित ॥ ह-

रिणस्ताम्रवर्णः स्यादेणः कृष्णतयामतः । कुरगस्ताम्रउ-
द्दिष्टो हरिणः कृत्तिको महान् ॥ जलेषु दिव्यदुग्धेषु गव्यमा-
ज्येषु गोभवम् । तैलेषु तिलजतैलमेक्ष्वेषु सिताहिता ॥

अर्थ-शालिग्रामोमें लालशालिग्राम, पट्टिकग्रामोमें साँठीग्राम, शूक-
ग्रामोमें जो और गेहूँ, शिम्बीग्रामोमें मूँग, मसूर और अरहर रसोमें मधुर
रस, लवणोमें सेग्रामोमें, फलोंमें अनार, आमला, दाख, खजूर, फालसा,
खिरनी और विजोरा, पत्रशाकोमें-बहुआ, जीवन्ती, पोईका साग, फल-
शाकोमें परवल, कदशाकोमें जमीकद, जगली जीवोमें काला, लाल और
चितकनरा हिरन, पक्षियोंमें तीतर और लवा, मछलियोंमें रोहू, जलोमें
दिव्यजल, दूधोमें गायका दूध, घृतोमें गायका घी, तेलोंमें तिलका तेल
और इक्षुविकारोंमें मिथ्री उत्तम है । तामेके रंगके हिरनको हिरन कहते हैं,
काले रंगके हिरनको एण और कुछेक लाल हिरनको कुरग कहते हैं ।

स्वभाष्ये अथेष्ट (पुरे) ।

शिम्बीपुमापान् ग्रीष्मतौ लवणेष्वापरत्यजेत् । फलेषु लकु-
चशाके सर्पपाणाहितमतम् ॥ गोमासग्राम्यमासेषु न हितम्
हिपीवसा । मेपीपयः कुसुम्भस्य तैलत्याज्यचफाणितम् ॥

अर्थ-शिम्बीग्रामोमें उडद, ऋतुओमें ग्रीष्मऋतु, निमकोमें सारिनोन,
फलोंमें बडहर, सागोमें सरमाका साग, ग्राम्यमासोमें गायका मास,
चर्षियोंमें भैंसकी चर्षा, दूधोमें भडका दूध, तेलोंमें कुसुम्भका तेल और
इक्षुविकारोंमें गव त्यागने योग्य है ।

उपयोगविद्वद् ।

शाकाम्लफलपिण्याककुलत्थलवणामिषे ।

करीरदधिमासेश्च प्रायः क्षीरं विरुध्यते ॥

अर्थ-शाक, खट्टफल, तिलाकी रस, कुलथी, निमक, मछली, घाँगे
कट्टे, दही और मासके साथ दूध भक्षण करना निषेध है ।

प्राणहारी च हारीतो हरिद्रालवणे कृतः ।

अर्थ-हल्दी और निमकके साथ हारिद्रा पक्षीका मास खाता विपक्षी
ममान है ।

रुवोस्तेलेनसभृष्टविषमायूरमाहिपम् ॥

अर्थ—अडेके तेलमें भुनाहुआ मोरका मांस और भैंसका मांस विषकी समान अपकारी है ।

वराहवसयाभृष्टावलाकातुहरत्यसूत्र ।

अर्थ—सुरकी चरबीसे भुनाहुआ बलाका पक्षीका मांस भक्षण करनेसे जीघ्रही प्राण नष्ट होते हैं ।

सयुक्तासेववारुण्याकुल्मापेश्वविरुध्यते ।

अर्थ—बलाका पक्षीका मांस मदिराके साथ अथवा कुल्मापके साथ भक्षण करना सयोगविरुद्ध है ।

अर्विकुसुम्भशाकेनमत्स्यतैले.कणात्यजेत् ।

अर्थ—भेड़का मांस कसूमके सागके साथ तथा मछलीके तेलके साथ पीपल नहीं खानी चाहिये ।

मापैरिक्षुविकारांश्चकांजिकैस्तिलशङ्कुली ।

अर्थ—उडदोंके मांस इक्षुविकार (गुड, खाड़, घूरा, मिश्री इत्यादि) और काजीके साथ तिलशङ्कुली खानी निषेध है ।

कपोत सार्पपेभृष्टोघृतकांस्येदशाहगम् ।

अर्थ—सरसांके तेलमें भुनाहुआ कघृतरका मांस नहीं खाना चाहिये और कासीके पात्रमें दण दिनका रखवाहुआ घी खाना निषेध है ।

विषघृतसमक्षौद्रंमधुनागगनाम्बुच ।

अर्थ—बगवत भाग शहत और घी मिलाकर पीनेमें तथा महतके साथ मेघके जलको पीनेसे विषकी समान अपकार करे है ।

मूलकमापयूपेणमधुनानचभक्षयेत् ।

अर्थ—उडदोंके यूपके साथ अथवा मधुके साथ मूली नहीं खानी चाहिये ।

नारिकेलजलेनापिकर्पूरनैवभक्षयेत् ॥

अर्थ—नारियलके जल (दूध) के साथ कपूर भक्षण करना अनुचित है ।

एकत्रसर्वमांसानिविरुध्यन्तेपरस्परम् ॥

अर्थ—सर्वप्रकारके मांस एकत्र मिलाकर खाने नहीं चाहिये अथात् एक प्राणीके मांसके साथ दूसरे प्राणीका मांस मिलाकर नहीं खावे ।

आपधी छेनेमे खेवेत ।

लवणसैन्धवंप्रोक्तंचदनरक्तचन्दनम् । चूर्णलेहासवस्नेहाः
साध्याधवलचन्दनैः ॥ कपायलेपयो प्रायोयुज्यते रक्तचन्द-
नम् । अन्तःसमार्जने ज्ञेया ह्यजमोदायवानिका ॥ वहिः समा-
र्जने सैव विज्ञातव्या जमोदिका । पयः सर्पिः प्रयोगेषु गव्यमेव
हि गृह्यते ॥ शकृद्रसो गोमयको गोत्रगोमूत्रमुच्यते ।

अर्थ-जहा लवण लिखा है वहा सैन्धवलवण लेना चाहिये और चन्दनके
स्थानमें लालचन्दन लेवै, परतु चूरण अवलेह-आसव और तेल, इनम सफेद
चन्दन डालै, काढा और लेपादिकमें लाल चन्दन लेवै, अत समार्जन (जो
भक्षण करनेसे उदरको शुद्ध करे) आपधियोंमें अजमोदके जगह अजवायन
लेनी चाहिये और वहिः मम्मार्जन (जो शरीरके ऊपर लगानेसे शरीरको
शुद्ध करे) आपधियोंमें अजमोदकी जगह अजमोदही डालै, जहा केवल
दुग्ध और घृत लिखा है वहा गायका दूध घी लेवै, जहा शकृद्रस (गोय-
रका रस) लिखा है वहा गायके गोमयका रस लेवै, जहा केवल मूत्र लिखा
है वहा गोमूत्र लेना चाहिये ।

प्रतिनिधि ।

चित्रकाऽभावतीदन्तीक्षार शिखरिजोऽथवा । अभावे धन्व-
यासस्य प्रक्षेप्या तु दुरालभा ॥ तगरस्याप्यभावे तु कुष्ठन्दद्या
द्रिपग्वर । मूर्वाभावे त्वचा ग्राह्या जिगिनी प्रभवानुधैः ॥ अ-
हिंसाया अभावे तु मानकन्द प्रकीर्तितः । लक्ष्मणाया अभा-
वे तु नीलकण्ठशिखामता ॥ वकुलाऽभावतो देयकहारोत्पलप-
कजम् । नीलोत्पलस्याभावे तु कुमुददेयमिष्यते ॥ जातीपु-
ष्पनयत्रास्तिलवगतत्रदीयते । अर्कपर्णादिपयसो ह्यभावे-
तद्रसो मतः । पौष्कराभावतः कुष्ठन्तथा लांगल्यभावतः ।
स्थौण्येयकस्याभावे तु भिषग्भिर्दीयते गदः ॥ चविका गजपि-
प्पल्यो पिप्पली मूलवत्स्मृते । अभावे सोमराज्यास्तु प्रपु-

घ्राटफलमतम् ॥ यद्दिनस्याद्धारुनिशातदादेयानिशाबुधे ।
 रसांजनस्याभावेतुसम्यग्दावीप्रयुज्यते ॥ सौराष्ट्राभावतोदे-
 यास्फटिकातद्गुणाजने । तालीसपत्रिकाभावेस्वर्णतालीप्र-
 शस्यते ॥ भाङ्ग्यभावेतुतालीसकटकारीजटाऽथवा ।
 रुचकाभावतोदद्याल्लवणपांशुपूर्वकम् ॥ अभावेमधुयष्ट्या-
 स्तुधातर्कीचप्रयोजयेत् । अम्लवेतसकाभावेचुकदातव्य-
 मिष्यते ॥ द्राक्षायद्दिनलभ्येतप्रदेयकाश्मरीफलम् । तयो-
 रभावेकुसुमबंधकस्यमतबुधे ॥ लवगकुसुमदेयनखस्याभा-
 वतः पुनः । कस्तूर्यभावेककोलक्षेपणीयविदुर्बुधा ॥ क-
 कोलस्याप्यभावेतुजातीपुष्पप्रदीयते । सुगधिसुस्तकदेय-
 कर्पूराभावतोबुधे ॥ कर्पूराभावतोदेयग्रन्थिपर्णविशेषतः ।
 कुकुमाभावतोदद्यात्कुसुम्भकुसुमनवम् ॥ श्रीखण्डचन्द-
 नाभावेकर्पूरेयमिष्यते । अभावेत्वेतयौर्वैद्य प्रक्षिपेद्रक्तच-
 न्दनम् ॥ रक्तचन्दनकाभावेनवोशीरविदुर्बुधा । मुस्ताचा-
 तिविषाभावेशिवाभावेशिवामता ॥ अभावेनागपुष्पस्यप-
 त्तकेशरमिष्यते । मेदाजीवककाकोलीऋद्धिद्वन्द्वेऽपिवाऽ-
 मति ॥ वरीविदार्यश्वगधावाराहीश्चक्रमात्क्षिपेत् । वाराह्या-
 श्वतथाभावेचर्मकारालुकोमत ॥ वराहीकदमजस्तुपश्चि
 मेगृष्टिसज्जक । वाराहीकदण्वान्यश्चर्मकागलुकोमत ॥
 अनूपमभवेदेशेवराहइवलोमवान् ॥ भल्लातकासहत्वेतुरक्त-
 चन्दनमिष्यते । भल्लाताभावतश्चित्रनलश्चेक्षोरभावतः ॥ सुव-
 र्णाभावतः स्वर्णमाक्षिकप्रक्षिपेद्बुध । श्वेततुमाक्षिकजेयबुधे-
 र्जतवद्भ्रुवम् । माक्षिकस्याप्यभावेतुप्रदद्यात्स्वर्णगौरिकम् ।
 सुवर्णमथवारीप्यमृतयत्रनलभ्यते ॥ तत्रकान्तेनकर्माणिभि-

पक्षुर्व्याद्विचक्षण । कान्ताभावेतीक्ष्णलोहयोजयेद्वेद्यसत्तमः ॥
 अभावेमौक्तिकस्यापिमुक्ताशुक्तिप्रयोजयेत् । मधुयत्रनल-
 भ्येततत्रजीर्णगुडोमतः ॥ मत्स्यंढ्यभावतोदद्युर्भिपजःसि-
 तशर्कराम् । असभवेसितायास्तुबुधैःखड्गप्रयुज्यते ॥ क्षीरा-
 भावेरसोमौद्रोमासूरोवाप्रदीयते । अत्रप्रोक्तानि वस्तुनियानि-
 तेषु चतेषु च ॥ योज्यमेकतराभावेपरवैधेन जानता ।

अर्थ—चीतेके अभावमें दन्ती अथवा चिरांचिटेका खार, घमासेके अभावमें जवासा, तगरके अभावमें कूठ, मूर्वाके अभावमें जिगनीकी डाल, अहिहाके अभावमें मानकन्द, लक्ष्मणाकन्दके अभावमें मयूरशिखा, मौलिसिरीके अभावमें कुमुद लालकुमुद और कमल, नीलेकमलके अभावमें कुमुद (नीलोफर), जायफलके अभावमें लौंग, आक इत्यादिके दूधके अभावमें आकआदिके पत्तोंका रस, पुष्करमूल और कलिहारीके अभावमें कूठ और थूनेरके अभावमें कूठ, जिस स्थानमें पीपरा मूल न होय वहा चव्य और गजपीपल, वापचीके अभावमें चकवडके बीज, दारूहल्दीके अभावमें हल्दी, रसातके अभावमें दारूहल्दी, गोपीचन्दनके अभावमें फिटकरी, तालीसपत्रके अभावमें स्वर्णतालीश, भारगीके अभावमें तालीसपत्र वा फटेगीकी जड़, कालेनोनके अभावमें पाशु लवण लैव, मुलैठीके अभावमें धापके पत्र, अमलवेतके अभावमें चूका, दाखके अभावमें कुभेरका फल, दाख और कुभेरके अभावमें दुपैरियाका फूल, नखद्रव्यके अभावमें लौंग, कस्तूरीके अभावमें शीतलचीनी, शीतलचीनीके अभावमें जायफल और कपूरके अभावमें सुगधमोया वा गटि वन, केसरके अभावमें कसूमके नवीन फूल, श्रीखण्डचन्दनके अभावमें कपूर, केसर और चन्दनके अभावमें लालचन्दन, लालचन्दनके अभावमें नवीन रस, अतीसके अभावमें नागरमोया, हगडके अभावमें आवला, नागकेसरके अभावमें कमलवेसर, मेदा और महामेदाके अभावमें शतावर, जीवक और ऋषभकके अभावमें विलाईकन्द, काकोली और क्षीरकाकोलीके अभावमें अमगध, ऋद्धि और वृद्धिके अभावमें वाराहीकन्द, और वागहीकन्दके अभावमें चर्मकारभाटू लैव वाराही यदकी पश्चिममें गृष्टि यदते हैं । चर्मकार-भाटूभी वाराहीकाही भेदहै ये राजल स्थानोंमें उत्पन्न होते हैं इसके ऊपर सुभरके रोम ममान रोम होते हैं, मिलावके अभावमें लालचन्दन या

चीता, ईखके अभावमें नल, सोनेके अभावमें सोनामाखी, चादीके अभावमें रूपामाखी, सोनामाखी और रूपामाखीके अभावमें स्वर्णमेरु सोने और रूपेकी भस्मके अभावमें कान्तलोहकी भस्म, कान्तलोहके अभावमें तीक्ष्णलोह, मोतीके अभावमें मोतीकी सीप, सहतके अभावमें पुराना गुद, मिश्रीके अभावमें सफेद चीनी सफेद चीनीके अभावमें सफेद खॉड और दूधके अभावमें भृगका अथवा मसूरका रस लेवे । यहा कहीहुई प्रतिनिधि एकके अभावमें उसकी दूसरी वस्तु मिलानी चाहिये ।

रसवीर्यविपाकाद्यै समद्रव्यविचिन्त्यच । युज्याद्विविधमन्यच्चद्रव्याणांतुरसादिवत् ॥ योगेयदप्रधानस्यात्तन्म्यप्रतिनिधिर्मत । यत्तुप्रधानतस्यापिसदृशनैवगृह्यते ॥ व्याधेर्युक्तयद्रव्यगणोक्तमपितत्त्यजेत । अनुक्तमपियुक्तयद्योजयेत्तद्रसादिवत् ॥

अर्थ—किसी योगका कोई द्रव्य न मिले तथा जिसकी प्रतिनिधि नहीं कही है तो उस औषधिके वीर्य और विपाकादिके तुल्य वैद्य अन्य औषधिको समझकर प्रयोगमें डाले । इस प्रतिनिधिकेही ऊपर न रहे । जो औषधि प्रयोगमें अग्रधान है उसकी प्रतिनिधि दूसरी औषधि डाले, और जो प्रधान है अर्थात् मुख्य औषधि है उसकी प्रतिनिधि दूसरी औषधि न लेवे, जैसे कि, मरिचादिगुट्टिकाम पीपल जवाखागादि अग्रधान औषधि हैं इनके बदलेमें दूसरी प्रतिनिधि भेजे किन्तु प्रधान मरिचके अभावमें प्रतिनिधि न लेवे, जो प्रयोगमें कहीहुई औषधि रोगमें अपकारी है उसको उस योगमसे निकालदेवे और जो औषधि रोगको दूर करनेवाली है, किन्तु वह उस योगमें नहीं है तोभी रसादिवत् वैद्य उस योगमें मिलादेवे ।

द्रव्याणांतुरसादिवत् ।

रसवीर्यविपाकश्चज्ञातव्यास्तेतियन्नत ।

रसस्तुमधुरादि स्याद्वीर्यकायसमर्थता ॥

परिणामेगुणाढ्यत्वविपाकइतिसंज्ञितम् ।

अर्थ—द्रव्यामें रस, वीर्य और विपाक इनको यत्नपूर्वक जानना चाहिये, मधुरादिको रस कहते हैं, जो कायमें समर्थता करे उसको वीर्य और जो अन्तमें गुणोंको करे उसको विपाक कहते हैं ॥

पक्कुर्याद्विचक्षणः। कान्ताभावेतीक्ष्णलोहयोजयेद्देवसत्तमः॥
 अभावेमौक्तिकस्यापि मुक्ताशुक्तिप्रयोजयेत् । मधुयन्नल-
 भ्येततत्र जीर्णगुडोमतः ॥ मत्स्यड्यभावतोदद्युर्भिपजःसि-
 तशर्कराम् । असंभवेसितायास्तु बुधैः खंडप्रयुज्यते ॥ क्षीरा-
 भावेरसोमोद्गोमासूरोवाप्रदीयते । अत्र प्रोक्तानि वस्तूनि या-
 नितेषु चतेषु च ॥ योज्यमेकतराभावे परवैधेन जानता ।

अर्थ-चीतेके अभावमें दन्ती अथवा चिरचिटेका खार, धमामेके अभावमें जवासा, तगरके अभावमें कूठ, मूर्वाके अभावमें जिगनीकी ठाल, अहिंसाके अभावमें मानकन्द, लक्ष्मणाकन्दके अभावमें मयूरशिरा, मौलशिराके अभावमें कुमुद लालकुमुद और कमल, नीलेकमलके अभावमें कुमुद (नीलोपर), जायफलके अभावमें लोंग, आक इत्यादिके दूधके अभावमें आकआदिके पत्तोंका रस, पुष्कर्मूल और कलिहारीके अभावमें कूठ और धूनेरके अभावमें कूठ, जिस स्थानमें पीपगमूल न होय वहा चव्य और गजपीपल, वापचीके अभावमें चकवडके बीज, दारुहलदीके अभावमें हलदी, रसीतके अभावमें दारुहलदी, गोपीचन्दनके अभावमें फिटकरी, तालीसपत्रके अभावमें स्वणतालीश, भार्गवके अभावमें तालीसपत्र वा कटेरीकी जड़, कालेनोनके अभावमें पाशु त्वण लेंवे, मुलैठीके अभावमें घाघके फूल, अमरवैतके अभावमें चूका, दाखके अभावमें कुभेरका फल, दाख और कुभेरके अभावमें दुपैरियाका फूल, नखद्रव्यके अभावमें लोंग, कस्तूरीके अभावमें शीतलचीनी, शीतलचीनीके अभावमें जायफल और कपूरके अभावमें मुगधमोथा वा गठि वन, केसरके अभावमें कसमके नवीन फूल, श्रीखडचन्दनके अभावमें कपूर, केसर और चन्दनके अभावमें लालचन्दन, लालचन्दनके अभावमें नवीन रसत, अतीसके अभावमें नागमोथा, हरटके अभावमें आवला, नागकेसरके अभावमें कमलकेसर, मेदा और मशामेदाके अभावमें शतावर, जीरक और श्लेष-भकके अभावमें विलाईकन्द, काकोली और क्षीरकाकोलीके अभावमें असगध, श्लष्टि और श्लष्टिके अभावमें वागहीनन्द, और वागहीनन्दके अभावमें चर्मकारआलू लेंवे वाराही कदको पश्चिममें गृष्टि कहते हैं । चर्मकार-आलूभी वागहीकाही भेड़हरे मजल स्थानोंमें उत्पन्न होते हैं इसके ऊपर सुभके रोम समान रोम होते हैं, भिलावके अभावमें लालचन्दन या

चीता, ईखके अभावमें नल, सोनेके अभावमें सोनामाखी, चादीके अभावमें रूपामाखी, सोनामाखी और रूपामाखीके अभावमें स्वर्णमेरु सोने और रूपेकी भस्मके अभावमें कान्तलोहकी भस्म, कान्तलोहके अभावमें तीक्ष्ण-लोह, मोतीके अभावमें मोतीकी सीप, सहतेके अभावमें पुराना गुद, मिश्रीके अभावमें सफेद चीनी सफेद चीनीके अभावमें मफेद खोंड और दूधके अभावमें भृगका अथवा मसूरका रस लेवे । यहा कहीहुई प्रतिनिधि एकके अभावमें उसकी दूसरी वस्तु मिलानी चाहिये ।

रसवीर्यविपाकाद्यैः समद्रव्यविचिन्त्यच । युज्याद्विविधम-
न्यच्चद्रव्याणातुरसादिवत् ॥ योगेयदप्रधानस्यात्तन्म्यप्रति-
निधिर्मतः । यत्तुप्रधानतस्यापिसदृशनेवगृह्यते ॥ व्याधेर-
युक्तयद्रव्यगणोक्तमपितत्त्यजेत । अनुक्तमपियुक्तयद्योजये-
त्तद्रसादिवत् ॥

अर्थ-किसी योगका कोई द्रव्य न मिले तथा जिसकी प्रतिनिधि नहीं कही है तो उस औषधिके वीर्य और विपाकादिके तुल्य बंध अन्य औषधिको समझकर प्रयोगमें डाले । इस प्रतिनिधिकेही ऊपर न रहे । जो औषधि प्रयोगमें अप्रधान है उसकी प्रतिनिधि दूसरी औषधि डाले, और जो प्रधान है अर्थात् मुख्य औषधि है उसकी प्रतिनिधि दूसरी औषधि न लेवे, जैसे कि, मरिचादिशुद्धिकाम पीपल जवागवागदि अप्रधान औषधि हैं इनके घटलेमें दूसरी प्रतिनिधि मेरे किन्तु प्रधान मरिचके अभावमें प्रतिनिधि न लेवे, जो प्रयोगमें कहीहुई औषधि रोगमें अपकारी है उसको उम योगमेंसे निकालदेवे और जो औषधि रोगको दूर करनेवाली है, किन्तु वह उम योगमें नहीं है तोभी रसादिवत् बंध उस योगमें मिलादेवे ।

द्रव्यांतगतयदापा ।

रसवीर्यविपाकश्चज्ञातव्यास्तेतियत्नत ।

रसस्तुमधुरादि स्याद्वीर्यकायसमर्थता ॥

परिणामेगुणाद्व्यत्वंविपाकइतिसज्जितम् ।

अर्थ-द्रव्योंमें रस, वीर्य और विपाक इनको यत्नपूर्वक जानना चाहिये, मधुरादिको रस कहते हैं, जो कार्यमें समर्थता करे उसको वीर्य और जो अन्तमें गुणोंको करे उसको विपाक कहते हैं ॥

द्रव्यैरसोगुणोवीर्यविपाकशक्तिरेवच । पदार्थाः पचतिष्ठति
स्वस्वकुर्वन्तिकर्मच ॥ रसाः स्वाद्वम्ललवणतिक्तोषणकपाय-
का ॥ पद्द्रव्यमाश्रितास्तेचयथापूर्वबलावहाः । तत्राद्यामारु-
तघ्नतित्रयस्तिक्तादयः कफम् । कपायतिक्तमधुराः पित्तमन्ये
तु कुर्वते ॥ ये रसा वातशमना भवति यदि ते पुर्वे । रौक्ष्यलाघव-
शैत्यानि न ते हन्युः समीरणम् ॥ ये रसाः पित्तशमना भवति य-
दि ते पुर्वे । तीक्ष्णोष्णलघुता चैव न ते तत्कर्मकारिणः ॥ ये रसाः
श्लेष्मशमना भवति यदि ते पुर्वे । स्नेहगौरवशैत्यानि न ते ह-
न्युः कफतदा ॥

अर्थ-रस गुण, वीर्य, विपाक और शक्ति ये पांच पदार्थ द्रव्यम रह-
ते हैं और ये अपने २ कार्योंको करते हैं, स्वादु, अम्ल, लवण, तिक्त, कटु
और कपेला ये छ. रस द्रव्योंम रहते हैं, और इनमें एकसे दूसरा यलहीन
है अर्थात् स्वादुरससे अम्लरस, अम्लरससे लवणरस, लवणरससे तिक्तरस,
तिक्तरससे चरपगरस और चरपगसे कपेलारस निर्बल है। स्वादु, अम्ल, और लवण
ये तीनों रस वातनाशक हैं और तिक्त, कटु, कपेला ये तीनों रस कफको
हरते हैं तथा कपेला, तिक्त और मधुररस पित्तको शमन करते हैं, शेषक
अम्ल, कटु और कपाय ये तीनों रस पित्तकारक हैं जो रस वातको
दूर करनेवाले हैं, किन्तु उनमें रुक्षता, लघुता और शीतलता ये
तीनों गुण होवें तो वह कदापि वातको दूर नहीं करसके । जो रस पित्तको
शान्त करनेवाले हैं जो उनमें तीक्ष्णता, उष्णता और लघुता ये तीना गुण
होवें तो वह पित्तको नष्ट नहीं करसके ऐसेही जो रस कफको शमन करनेवाले
हैं यदि उनमें स्निग्धता, गुरुता और शीतलता ये तीनों गुण होवें तो कदापि
कफको दूर नहीं करसके ।

क्षार कपाय पवनप्रकोपी मधुरोऽथ तिक्त कफकोपनश्च ।

कटुम्लकापित्तविकारकारिणो कटुम्लका वातशमोऽप्रदिष्टौ ॥

पित्तस्य नाशी मधुर सतिक्तः कटुकपायोऽशमनो कफस्य ।

अन्योन्यमेतच्छमनवदन्ति परस्परदोषविवृद्धिमन्तः ॥

अर्थ—लवण और कपेला रस वातको कुपित करेहै, मधुर और कडवा रस कफको कुपित करनेवालाहै, चरपरा और खट्टारस पित्तको कुपित करताहै और वातको शमन करताहै, मधुर और कडुवा रस पित्तको दूर करे है, चरपरा और कपेलारस कफको शमन करेहै और परस्पर दोषाको बढ़ाने-वाले परस्परमें मिलेहुए दोष शमन करते हैं ।

मधुरःश्लेष्मलःप्रायोजीर्णाच्छालियवाहते । प्रायोम्लपित्त-
जनकदाडिमामलकाहते ॥ अपव्यलवणप्रायश्चक्षुपोन्यत्र
सैधवात्तित्तकटुकभूयिष्ठमवृष्यवातकोपनम् ॥ ऋतेमृ-
तापटोलीभ्याशुण्ठीशुष्काद्रसोनतः । कपायःप्रायश शी-
तःस्तभनश्चाभयांविना ॥

अर्थ—पुराने चावल, जौ, गेहूँ, मूँग, सहत, मिश्री और जगली जीवोंके मासको छोड़कर जितने मधुर रसवाले पदार्थ हैं सब पित्तको करतेहैं, सैधव लवणको छोड़करके सम्पूर्ण लवण अपथ्य और नेत्राको अहितकारीहै गिलाय और परबलके सिवाय जितने कडवे पदार्थ हैं सब अवृष्य, वातको कुपित करनेवाले हैं, साठ, अदरस और लशुनको छोड़कर जितने चर्पे पदार्थ हैं अवृष्य और वातको कुपित करनेवाले हैं, हरडको छोड़कर जितने कपेले पदार्थ हैं प्रायः सबही शीतल और स्तम्भक हैं ।

मधुररसघणनम् ।

मधुरगौल्यमित्यादुरिक्ष्वादौचसलक्ष्यते ॥ स्वादु स्तन्यर-
सौजसाचबलकृद्दीर्यप्रदस्तृप्तिद प्राहृद्यारसनांकरोतितद-
नुश्लेष्मप्रकोपप्रदः । पित्तानांदमनः श्रमोपशमनोवृष्योन-
राणाहित क्षीणानांक्षतपाण्डुनेत्रविरुजांहंताभवेन्माधुर ॥

अर्थ—मधुर, गौल्य (गोल, रसज्येष्ठ, शुल्म, स्वादु, मधूलक) ये सब मधुररसके पर्याय हैं, मधुररस इक्ष्वादिकमें रहताहै, मधुररस स्तनामें दूधको घटानेवाला, बल पुष्टिको करनेवाला, वीर्यजनक, हृदयको और जिह्वा में तृप्तिको करनेवाला, किंचित् कफको कुपित करनेवाला, पित्तको दमन करनेवाला, श्रमको शमन करनेवाला तथा क्षीण, क्षत, पाण्डु और नेत्ररो-गवाले मनुष्योंको हितकारीहै ।

मधुरःपिच्छिलःशीतोधातुस्तन्यवलप्रदः ।

चक्षुष्योवातपित्तघ्नःकुर्यात्स्थौल्यमलकृमीन् ॥

अर्थ-मधुररस-पिच्छिल, शीतल, धातु, स्तनोमं दूध और चल्को बढ़ानेवाला, नेत्रोंको हितकारी, वातपित्तनाशक तथा स्थूलता, मल और कृमिको करनेवाला है ।

मधुरस्तुरसश्चिनोतिकेशान्वपुषःस्थौल्यवलौजवीर्यदायी ।

अतिसेवनतःप्रमेहशैत्यजडतामांघ्रमुखान्करोतिदोषान् ॥

अर्थ-मधुररस-केशोंको सुन्दर करनेवाला, शरीरको स्थिरता देनेवाला तथा बल, भोज, वीर्यको देनेवाला है, यदि इसको अधिक सेवन किया जाय तो शीतलता, जडता, मन्दाग्नि, मुरारोग और प्रमेहादि रोगोंको उत्पन्न करे है ।

अथवा ।

सोऽतियुक्तोज्वरश्वासगलगडादिरोगकृत् । (रा० व०)

अर्थ-यदि इसको अधिक सेवन किया जाय तो ज्वर, श्वास, गलगदादि रोगोंको उत्पन्न करता है ।

अम्लरसयणनम् ।

अम्लस्तुचिचाजवीरमातुलुगफलादिषु ।

अम्लोष्णोतर्बहिःशीतोरुच्यःपित्तकफाक्षदः ॥

विवधानाहृष्टिघ्नोदन्ताक्षिभ्रूनिःकोचकः ।

अर्थ-अम्लरस-इमली, जम्बीर और मातुलुगादि फलोंमें होता है, अम्ल-रस-गरम, बाहर अर्थात् स्पर्श करनेसे शीतल, रुचिकारक, पित्त, कफ और रुधिरको क्षुपित करनेवाला तथा विवध, आनाह और दृष्टि को नष्ट करनेवाला और दाँत, नेत्र, भ्रूओंको मृदुचानेवाला है ।

अथवा ।

अम्लामिधःप्रीतिकरोरुचिप्रदःप्रपाचनोयमृदुताचयच्छति ।

भ्रांतिचकुष्ठकफपांडुतांचकाश्रयचकासकुरुतेतिसंवितः ॥

अर्थ-अम्लरस-प्रीतिकारक, रुचिजनक, पाचक और मृदुताको करनेवाला है, इसको अधिक सेवन किया जाय तो भ्रान्ति, कुष्ठ कफ, पाण्डुता और शृणुताको पैदा है ।

अथ च ।

सोऽतियुक्तो भ्रमकुर्यात्तृड्दाहतिमिरज्वरान् ।

कण्डूपाण्डुत्ववीसर्पशोथविस्फोटकुष्ठकृत ॥ (भा० प्र०)

अर्थ—इसका अधिक सेवन किया जाय तो भ्रम, तृषा, दाह, तिमिर, ज्वर, कण्डू पाण्डुता, वीसर्प, शोथ, विस्फोट और कुष्ठरोगको उत्पन्न करे।

लवणरसखणनम् ।

लवणस्तुवर प्रोक्त संधवादिपुट्टश्यते ।

लवणः शोधनोरुच्यपाचनः कफपित्तहा ॥

पुस्त्ववातहरः कायशैथिल्यमृदुकारक ।

अर्थ—लवणरस संधवादिक पदार्थोंमें देखा जाता है, लवणरस—शोधन, रुचिकारक, पाचक, कफपित्तनाशक, पुरुषतानाशक, वातहारक तथा शरीरमें शिथिलता और मृदुताको करनेवाला है ।

अथ च ।

लवणोरुचिकृद्रसोनितांतपचन स्वादुकरश्चसारकश्च ।

अतिसेवनतो जरांचपित्तशितिमानचददातिकुष्ठकारी ॥

अर्थ—लवणरस—रुचिकारक, पाचक, स्वादिष्ट, सारक है इसको अधिक सेवन करे तो जरा, पित्त और कोष्ठको करे।

अथ च ।

सोतियुक्तो क्षिपाकासपित्तकोष्ठक्षतादिकृत् ।

वलीपलितखालित्यकुष्ठवीसर्पतृदप्रद ॥

अर्थ—इसको अधिक सेवन करनेमें नेत्रपाक, रक्तपित्त, फोड और क्षता-दि रोग उत्पन्न होते हैं, शरीरमें वलीका पड़ना, कोष्ठ, विमर्ष और तृषा यह सब उत्पन्न होते हैं ।

तिनरसखणनम् ।

तिक्तन्तुपिचुमन्दादौ च तन्मास्वाद्यते रस ।

मधुरपिच्छिलःशीतोवातुस्तन्यवल्ग्रदः ।

चतुष्योवातपित्तघ्नःकुर्यात्स्थित्यमलकृमीन् ॥

अर्थ-मधुर-न-पिच्छिल, शीतल, घटु, स्निग्ध, दृढ और कर्म, चतुष्योवात निवर्तक, पित्तघ्न, कृमिनाशक तथा मृदुला यह सब गुणों को करनेवाला है ।

मधुरस्तुसस्त्रितोतिकेयान्वपुषःस्थित्यवलो जर्वायवर्धनी ।

अतिसेवनतप्रेमेहगत्यंजडतामांघ्रमुज्जान्करोतिदोषान् ॥

अर्थ-मधुर-न-केयोंको सुन्दर करनेवाला, इति को स्थिरता देनेवाला तथा वन जोड़, बाँझोंको देनेवाला है यदि इसको अधिक सेवन किया जाय तो ईर्ष्या, लज्जा, मत्सर, दुर्भाव और प्रेमादि गुणोंको उत्पन्न करे है ।

अन्वयः ।

सोऽतिमुक्तोज्ज्वलसगलगडादिगोघृष । (ग० ३०)

अर्थ-यदि इसको अधिक सेवन किया जाय तो ज्वर, मृदु, मलिनतादि गुणोंको उत्पन्न करे है ।

अन्वयसम्बन्धः ।

अम्लन्तुर्विवाजंवरमातुलुंगफलादिषु ।

अम्लोष्णोत्तर्वहिःशीतोन्च पित्तकफान्दः ॥

विवंधानाहृष्टिनादंनानिभूतिकोवकः ।

अर्थ-अम्ल-न-उष्ण, शीतल और मातुलुंगदि फलोंमें होता है, अम्ल-रस-गन्ध, बाह्य अर्थात् स्पर्श करनेमें होता है, त्रिचक्रे, त्रिदोष, कफ और क्षीपको कुचिह्न करनेवाला, तथा विषय, अम्ल और हृष्टि को नष्ट करनेवाला और दंष्ट्र, नेत्र और को नकुलनेवाला है ।

अन्वयः ।

अम्लभिषग्धातिवगेनचिदप्रवाचनोऽमृदुतांनयच्छति ।

धातिवकुटंकरपांडुतांनकार्थवकानंकुम्भेतिसेवितः ॥

अर्थ-अम्ल-न-शोथिगन्ध, शीतल, बाह्य और मृदुता को करनेवाला है, इसको अधिक सेवन किया जाय तो आग्नि, कुटंकर, कफ, चतुर्गुण और क्षमता को करे है ।

अथ च ।

सोऽतियुक्तो भ्रमकुर्यात्तृद्विदाहतिमिरज्वरान् ।

कण्डूपाण्डुत्ववीसर्पशोथविस्फोटकुष्ठकृत् ॥ (भा० प्र०)

अर्थ—इसका अधिक भेदन किया जाय तो भ्रम, वृषा, दाह, तिमिर, ज्वर, कण्डू पाण्डुता, वीसर्प, शोथ, विस्फोट और कुष्ठरोगको उत्पन्न करे।

द्वयणरसवर्णनम् ।

लवणस्तुवरः प्रोक्तः सधवादिपुट्टश्यते ।

लवणः शोधनोरुच्यः पाचनः कफपित्तहा ॥

पुस्त्ववातहरः कायशैथिल्यमृदुकारकः ।

अर्थ—लवणरस सधवादिक पदार्थोंमें देखा जाता है, लवणरस—शोधन, रुचिकारक, पाचक, कफपित्तनाशक, पुरुषतानाशक, वातहारक तथा शरीरमें शिथिलता और मृदुताको करनेवाला है ।

अथ च ।

लवणोरुचिकृद्रसोनितातपचन स्वादुकरश्चसारकश्च ।

अतिसेवनतो जरांचपित्तशितिमानचददातिकुष्ठकारी ॥

अर्थ—लवणरस—रुचिकारक, पाचक, स्वादिष्ठ, मारक है इसको अधिक सेवन करे तो जरा, पित्त और कोढ़को करे।

अथ च ।

मोतियुक्तोक्षिपाकासपित्तकोष्ठशतादिकृत् ।

वलीपलितखालित्यकुष्ठवीसर्पतृदप्रद ॥

अर्थ—इसको अधिक भेदन करनेमें नेत्रपाक, रक्तपित्त, फोड़ और क्षतादि रोग उत्पन्न होते हैं, शरीरमें बलीका पड़ना, फोड़, विगपे और वृषा यह सब उत्पन्न होते हैं ।

तिक्तारसवर्णनम् ।

तिक्तन्तुपिबुमन्दादौ व्यक्तमास्वाद्यते रसः ।

अर्थ-कडवारस-जीम चिगायताटेमें रहता है तथा यह रस प्रायः
शुभ और वेत्ता होता है ।

तिक्त.पित्तकफापहोज्वरहर.कुष्ठादिदोषापह.शीतोत्तगदा-
पह श्रमहरोरुच्योनसंक्लेदन. जिह्वाकंठविशोधनोभवति
तद्वाहापहोरोचनो वक्रोह्लासकर प्रकुष्ठकथितोनिम्बादिके
स्वादधृक् ॥

अर्थ-कडवारस-पित्त और कफको हरनेवाला, ज्वरको दूर करनेवाला,
कुष्ठादि रोगोंको नष्ट करनेवाला, शीतल, रुधिरके विकारोंको दूर करनेवाला,
श्रमनाशक, रुचिकारक, हृदयकारक, जिह्वा और कंठको शुद्ध करनेवाला,
दाहनाशक, रोचन और मुखको प्रसन्न करनेवाला है ।

अन्यथा ।

तिक्त शीतस्तृषामूर्च्छाज्वरपित्तकफाजयेत । कृमिकुष्ठवि-
पोत्क्लेददाहरक्तगदापह. ॥ रुच्य.स्वयमरोचिष्णु कठस्त-
न्यविशोधन. वातलोऽग्निकरोनासाशोषणोरक्षणोलघु. ॥
सोऽतिशुक्त शिरःशूलमन्यास्तम्भश्रमार्तिकृत । कम्पमू-
र्च्छातृषाकारीचलशुक्रक्षयप्रद. ॥

अर्थ-कडवारस-शीतल, तृषा, मूर्च्छा, ज्वर, पित्त, कफ, कृमि, कंद,
रिप, उत्तेज, दाह रुधिरविकार इनको दूर करे है, स्वयं अरुचिकाय
होनेपर भी अरुचिवाले मनुष्योंको रुचिको उत्पन्न करे है, पेट और मूत्रके
दुषको शोधे है, वातकारक, अग्निप्रदीपक, नासाको सुगमनेवाला, रुग्ण
और हल्का है । कडवारसको अधिक सेवन करनेसे-शिरःशूल, मन्यास्तम्भ,
धम, कम्प, मूर्च्छा और तृषाभोग उत्पन्न होता है तथा चर्मा और शुक्रका
नाश होता है ।

यदुरसपर्वणम् ।

कटुन्तुपिप्पलीमूलेमर्चिचादौमलद्व्यते ॥ नेत्रभाववहोमुख
विदहतेकर्णासिज्वालोद्ग्रहन् बीभत्सकुरुनेश्रमविदधतेरुध-

श्वतीक्ष्णोभृशम् । अग्निश्चोत्पथतेक्षतविदहतेक्षीणस्य श-
स्तोनच वातवर्द्धयतेकफप्रहरतेरौद्रः कटुर्योरस ॥

अर्थ—चरपरारस—पीपलामूल और मिरचादिम रहता है । चरपरारस—
नेत्रांमें पानी टपकावे, मुखको जलावे, कानोंमें झलझलाहट करे, नेत्रोंमें
ज्वाला उत्पन्न करे, भयकरपनेको प्रगट करे, रूखा, तीक्ष्ण, अग्निको उत्पन्न
करे, क्षतको दहन करनेवाला, क्षीण मनुष्योंको अहितकारी वातको
बढानेवाला, कफको हरनेवाला और रौद्रस्वरूप है ।

अन्यच्च ।

कटुरुष्णश्चतीक्ष्णश्चविशदोवातपित्तकृत् । श्लेष्महृल्लघुराग्ने-
यः कृमिकण्डूविपापह ॥ रूक्षस्तन्यहरश्चापिमेदःस्थौल्या-
पकर्षणः । अश्रुदोनासिकास्याक्षिजिह्वाग्रोद्वेगकोमत ॥ दी-
पनपाचनोरुच्योनासिकाशोपणोभृशम् । क्लेदमेदोवसा-
मज्जाशकृन्मूत्रोपशोपणः ॥ स्रोतप्रकाशकोरुक्षोमेध्योव-
चोविवन्धकृत् । सोतियुक्तोभ्रान्तिदाहमुखताल्बोष्ठशोप-
कृत् ॥ कठादिपीडामृच्छांतर्दाहदोवलकान्तिहृत् ।

अर्थ—चरपरारस—गरम, तीक्ष्ण, विशद, वातपित्तकारक, कफनाशक,
हृल्ला, आग्नेय, कृमिनाशक, खुजलीको हरनेवाला, विषके विकारोंको दूर
करनेवाला, रूखा, रतनाम दूधको मुखानेवाला, मेदा और स्थूलताको
हरनेवाला, आँसुओंको उत्पन्न करनेवाला, नासिका, मुर, नेत्र और जिह्वाको
उद्वेग करनेवाला, दीपन, पाचन, रुचिकारक, नासिकाको मुखानेवाला,
क्लेद, मेद, वसा, मज्जा, विषा और मूत्रको मुखानेवाला, स्रोताको प्रकाशित
करनेवाला, रूखा मेधाजनक और मलगेधक है । इसको अधिक सेवन
करनेसे भ्रान्ति और दाह उत्पन्न होता है । तथा मुर, तादृ, ओष्ठ यह सूखजाते
हैं कटुम पीडा उत्पन्न होवे अतर्दाह होवे, तथा मल और कान्ति नष्ट होवे ।

वपायरमुपणनम् ।

कपायस्तुवर प्रोक्तः सतुपूगीफलादिषु ।

अर्थ-कपाय, तुवर (त्वर, कुवर) यह कपायरसके पर्याय हैं । कपायरस सुपारी आदि पदार्थोंमें होता है ।

कपायोरोपणोग्राहीस्तम्भनःशोधनोहिमः ।

कफशोणितपित्तघ्नोजिह्वाजाड्यकरोलघुः ॥

अर्थ-कपेलारम-घ्रणको भरनेवाला, मलको रोकनेवाला, स्तम्भन, शीतल तथा कफ, रक्तपित्तको दूर करनेवाला, जिह्वामें जड़ताको करने वाला और हल्का है ।

मतान्तरम् ।

कपाय.शोषणःस्तम्भीघ्रणपाकार्तिनाशनः ।

कफशोणितपित्तघ्नोरुक्ष.शीतोयुरुस्तथा ॥

अर्थ-कपेला रस-शोषण, स्तम्भक, घ्रणपाककी पीड़ाको दूर करने वाला कफनाशक, रुधिरके विकारोंको दूर करनेवाला, पित्तनिवारक, रुग्ण, शीतल और भारी है ।

भन्यते ।

कपायनामानिरुणद्धिशोफवर्णतनोर्दीपनपाचनश्च ।

सत्त्वापहोर्सांशितिलत्वकारीनिपेवित.पाण्डुकरोनिगात्रम् ॥

अर्थ-कपेलारम-सूजनको घरे, वर्णको धिगाडदेवे, दीपन, पाचन, सामर्थ्यको नष्ट करे, शिथिलताको उत्पन्न करे और रक्तको अधिक सेवन कियाजाय तो शरीरमें पाण्डुता उत्पन्न होती है ।

अथ दृग्दृश्यः ।

कटु कपायश्चकफापहारिणोमाधुर्य्यतिकाग्रपिपित्तनाशना ।

कटुम्लमज्जाचरसोमरुद्धगवित्थचट्ठन्द्मोमकलामयापहो ॥

अर्थ-चरपरा और कपेलारम-कफको, मरु और कटुप्राय पित्तको, चरपरा और सट्टाग्र वातको दूर करे है, इसप्रकार दो दो रस मिलाने से सर्वप्रकारके रोगोंको दरे हैं । इस छ रसोंमें एक मिलनेसे अनेक रोगोंको दरे मो कहते हैं ।

मिश्रितरसवे ६३ भेद ।

मधुरोम्लकटुस्तिक्तकटुस्तुवरइत्यपि ।

क्रमादन्योन्यसकीर्णानानात्वंयातिपडूसा ॥

अर्थ—मधुर, अम्ल, चरपरा, कड़वा, नमकीन और कपेला यह छ रस एक दूसरेके साथ मिलनेसे नानाप्रकारके भेदोंको प्राप्त होतेहैं और उनके गुणभी पृथक् २ होजाते हैं, वह सब नीचे लिखते हैं ।

सामान्येनात्रनिर्दिष्टागुणाः पडूससम्भवा । रसानायोगत-
स्तुस्यादन्यएवगुणोदयः ॥ सयोगाद्विपतांयातिसममाज्ये-
नमाक्षिकम् । अमृततुविपयातिसर्पदष्टस्यवैयथा ॥

अर्थ—ये सामान्यतासे छ रसोंके गुण कहे हैं, किन्तु रसोंके मिलनेसे उनमें और औरही गुण उत्पन्न होजातेहैं, जैसे—घृतमें बराबर भाग सहित मिलानेसे विष होजाता है जिसप्रकार अमृतरूप जो दुग्धादि पदार्थ हैं वे साँपके डसनेसे विषरूप होजाते हैं ।

रसानांसयोगाः सप्तपचाशद्भवन्ति ।

कल्पनात्तुत्रिपष्टिधाभवन्ति ॥

अर्थ—रसोंके सयोग सत्तावन ५७ हैं और कल्पना करके प्रसिद्ध ६३ जानने ।

सद्यथा ।

षट्पचका षट्पृथग्रसाः स्युश्चतुर्द्विकोपचदशप्रकारो ।

भेदास्त्रिकाविंशतिरेकमेवद्रव्यपडास्वादमितित्रिपष्टिः ॥

अर्थ—पाँच पाँच रसोंके मिलनेसे छः भेद होतेहैं, और छः अलग अलग रस हैं और चार चार रसोंके मिलनेसे षट्त्रिंश भेद होते हैं और दोदोके मिलनेसेभी षट्त्रिंशभेद होतेहैं और तीनतीन रसोंके सयोगसेभी बीस भेद होते हैं और छहोरसोंका स्वादवाला एक ऐसे प्रसिद्ध ६३ भेद कहे हैं ।

दोदोके सयोगसे १५

चारचारके सयोगसे १५

तीनतीनके सयोगसे २०

पाचपाचके सयोगसे ६

पृथक् २ रस ६

एक छहामिलनेसे १

इस प्रकार सब मिलकर ६३ भेद होते हैं ।

अब इनको समझनेके लिये नीचे कोष्टक लिखा है ।

रसोंके ६३ भेद जाननेके लिये नीचे यत्र लिखते हैं ।

| | | |
|-------------------------|-------------------------|-------------------------|
| १ मयुराम्बु | २ मयुरउदगी | ३ मयुरतिकी |
| ४ मयुरकटुकी | ५ मयुरकपायी | ६ अम्बुदगी |
| ७ अम्बुतिकी | ८ अम्बुकटुकी | ९ अम्बुकपायी |
| १० उदगीतिकी | ११ उदगीकटुकी | १२ उदगीकपायी |
| १३ तिककटुकी | १४ तिककपायी | १५ कटुकपायी |
| १६ मयुराम्बुदगी | १७ मयुराम्बुतिकी | १८ मयुराम्बुकटुकी |
| १९ मयुराम्बुकपायी | २० मयुरउदगीतिकी | २१ मयुरउदगीकटुकी |
| २२ मयुरउदगीकपायी | २३ मयुरतिककटुकी | २४ मयुरतिककपायी |
| २५ मयुरकटुकपायी | २६ अम्बुउदगीतिकी | २७ अम्बुउदगीकटुकी |
| २८ अम्बुउदगीकपायी | २९ अम्बुतिककटुकी | ३० अम्बुतिककपायी |
| ३१ अम्बुकटुकपायी | ३२ उदगीतिककटुकी | ३३ उदगीतिककपायी |
| ३४ उदगीकटुकपायी | ३५ तिककटुकपायी | ३६ मयुराम्बुदगीतिकी |
| ३७ मयुराम्बुदगीकटुकी | ३८ मयुराम्बुदगीकपायी | ३९ मयुरउदगीतिककटुकी |
| ४० मयुरउदगीतिककपायी | ४१ मयुरउदगीकटुकपायी | ४२ मयुरतिककटुकपायी |
| ४३ मयुराम्बुतिककटुकी | ४४ मयुराम्बुतिककपायी | ४५ मयुराम्बुकटुकपायी |
| ४६ अम्बुउदगीतिककटुकी | ४७ अम्बुउदगीकटुकपायी | ४८ अम्बुतिककटुकपायी |
| ४९ अम्बुउदगीतिककपायी | ५० उदगीतिककटुकपायी | ५१ मयुराम्बुदगीतिककटुकी |
| ५२ मयुराम्बुदगीतिककपायी | ५३ मयुराम्बुदगीकटुकपायी | ५४ मयुराम्बुतिककटुकपायी |
| ५५ मयुरउदगीतिककटुकपायी | ५६ अम्बुउदगीतिककटुकपायी | ५७ मयुराम्बुदगीतिककटुकी |
| ५८ मयुर | ५९ अम्बु | ६० उदगी |
| ६१ तिक | ६२ कटु | ६३ कपायी |

मित्ररसो ।

अन्योन्यमधुराम्लौलवणाम्लौकटुतिक्तकौचरसौ ।

कटुलवणौचस्यातामित्ररसेतिक्तलवणौच ॥

अर्थ—मधुर और अम्लरस आपसमें मित्र हैं लवण और अम्लरस मित्र है, कटु और तिक्तरस मित्र है, कटु और लवणरस मित्र है, तिक्त और लवणरस मित्र हैं ।

परस्परविरुद्धरसौ ।

लवणमधुरौविरुद्धावथकटुमधुरौचतिक्तमधुरौच

साधारण.कपायःसर्वत्रसमानतांधत्ते ॥

अर्थ—लवण और मधुररस परस्पर शत्रु अर्थात् विरुद्ध हैं, कटु और मधुररस विरुद्ध हैं, तिक्त और मधुररस भी विरुद्ध है, और कपेला रस साधारण है ये सबके साथ साधारणपनेसे बर्ताव करे है ।

अथ गुणा ।

गुरुलघुस्तथास्निग्धोरुक्षस्तीक्ष्णइतिक्रमात् । भूतभो-

वारिवातानांवह्नेरेतेगुणा स्मृताः ॥ गुरुवातहरपुष्टिश्लेष्म-

कृच्चिरपाकिच । लघुपथ्यपरप्रोक्तकफघ्नीघ्नपाकिच ॥

स्निग्धवातहरश्लेष्मकारिवृष्यवलावहम् । रुक्षसमीरणक-

रपरकफहरमतम् । तीक्ष्णपित्तकरप्रायोलेखनकफवातनुत् ॥

अर्थ—गुरु, लघु, स्निग्ध, रुक्ष और तीक्ष्ण, ये क्रमसे भूमि, आकाश, जल, वायु और अग्निके गुण हैं । तथा गुरुपदार्थ वातनाशक कफ और पुष्टिकारक और ढेरमें पचें है । लघुपदार्थ अत्यंत पथ्य, कफनाशक और शीघ्र पचें है । स्निग्धपदार्थ वातहारक, कफहारक, वीर्य और बलको बढ़ाव दे । रुक्षपदार्थ वातकारक और कफहारक है । तीक्ष्णपदार्थ लेपन और कफवातनाशक है ।

सुश्रुतेतुगुणाएतेविंशेतिर्नात्रदर्शिताः ।

अर्थ—इसीप्रकार सुश्रुतमें भी बीस गुण कहें हैं, वह यहाँ ग्रन्थ बढनेके भयसे नहीं लिखाये ।

१ शोथोन्मिनामभ्रमन्तीक्ष्णगुरुपुष्टिभित्तिरुक्षपथ्यपरश्लेष्मकृच्चिरपाकिच ।
मधुरम्लरसवर्तिनाम् ।

॥ अथ गुणमस्तावादीपनादयोगुणा ॥

पचेन्नामवह्निकृद्यदीपनतद्यथामिसिः । पचत्यामंनवह्निं च
 कुर्याद्यत्तद्धिपाचनम् ॥ नागकेशरवद्विद्याचित्रोदीपनपा-
 चन । नशोधयतियदोपान्समानोदीरयत्यपि ॥ समीक-
 रोतिविपमान्शमनतद्यथाऽमृता । कृत्वापाकमलानां च
 भित्त्वावधमधोनयेत् ॥ तच्चानुलोमनज्ञेययथाप्रोक्ताहरी-
 तकी । पक्तव्ययदपक्त्वेवशिलष्टंकोष्ठेमलादिकम् ॥ नय-
 त्यथ स्रसनंतद्यथास्यात्कृतमालकम् । मलादिकमवद्भ-
 यद्भद्रवापिंडितमलैः ॥ भित्त्वाऽध पातयतियद्भेदनकटु-
 कीयथा । विपक्तयदपक्वामलादिद्रवतानयेत् ॥ रेचयत्य-
 पितज्ज्ञेयरेचनत्रिवृतायथा । अपक्वंपित्तलेष्माणं बलाद्-
 ध्वनयेत्तुयत् ॥ वमनतद्धिविज्ञेयमदनस्यफल्यथा । स्था-
 नाद्वहिर्नयेदूर्ध्वमधोवामलसचयम् ॥ देहसशोधनतत्स्याद्दे-
 वदालीफलं यथा । दीपनपाचनयत्स्यादुष्णत्वादवशोपकृ-
 त ॥ ग्राहीतच्चयथाशुठीजीरकगजपिप्पली । गेक्ष्याच्छे-
 त्यात्कपायत्वाल्लघुपाकाच्चयद्भवेत् ॥ वातकृत्स्तभनत-
 त्स्याद्यथावत्सकटुटुको । श्लिष्टान्कफादिकान्दोषानुन्म-
 लयतियद्बलात् ॥ छेदनतद्यथाक्षारामरिचानिगिलाजतु ।
 धातुन्मलान्वादेहस्यविशोष्योल्लेसयेच्चयत् ॥ लेखनंतद्य-
 थाक्षौद्रनीर्गमुष्णवचायवा । यस्माद्भ्रूयाद्भवेत्स्त्रीपुंषोवा-
 जिकरहितत ॥ यथाश्मगंधामुसलीशर्कराचशतावरी ।
 यस्माच्छुक्रस्यवृद्धि स्याच्छुक्रलर्हिनदुच्यते ॥ यथानाग-
 वलाद्या स्युर्वीजचक्रपिकृच्छुजम् । दुग्धमापाश्रमल्ललात
 फलमज्जामलानिच ॥ एतानिजनकानिन्मृरेचकानिचरंत-
 म । प्रपत्तिनीघ्रीशुकस्यरेचनंवृद्धतीफलम् ॥ जातीफल

स्तम्भकस्यात्कालिगक्षयकारिच । रसायनतुतज्ज्ञेयंयजरा
व्याधिनाशनम् ॥ यथाहरीतकीदतीगुग्गुलुश्चरिलाजतु ।
पूर्वव्याप्याखिलकायतत पाकचगच्छति ॥ व्यवधितग्रथा
भंगाफेनचाहिसमुद्रवम् । सधिवधास्तुरिथिलान्य करोति
विकारितत् ॥ विशोष्योजश्चधातुभ्योयथाक्रमुककोद्रवो ।
बुद्धिलुपतियद्रव्यमदकारितदुच्यते ॥ तमोगुणप्रधानंचय-
थामद्यसुरादिकम् । व्यवधिचविकाशिस्याच्छ्लेष्मच्छेदिम-
दावहम् ॥ आग्नेयजीवितहरयोगवाहिस्मृतविषम् ॥ निज
वीर्येणयद्रव्यस्रोतोभ्योदोषसंचयम् । निरस्यतिप्रमाथिस्या-
त्तद्यथामरिचवचा ॥ पैच्छित्याद्रौरवाद्रव्यरुद्धारसवहा-
शिरा । धत्तेयद्रौरवतत्स्यादभिष्यदियथादधि ॥ विदाहि
द्रव्यमुद्गारमम्लकुर्यात्तथातृषाम् । हृदिदाहचजनयेत्पाक
गच्छतितच्चिरात् ॥ गृह्णातियोगवाहिद्रव्यसमर्गिवस्तुगुणा-
न् । पच्यमानयथैतन्मधुजलतेलाज्यमूतलोहादिः ॥

अर्थ-अब प्रसंगवश दीपनपाचनादि गुणोंके लक्षण कहते हैं । जो पदार्थ
आम (कच्चे) को पकावे नहीं परन्तु अग्निको प्रदीप्त करे वह दीपन कहा-
ता है जैसे कि-माफ । जो पदार्थ कच्चेको पकावे परन्तु अग्निको दीपन नहीं
करे उसको पाचन कहते हैं । जैसे कि-जागकेशर । जो अग्निको दीपन
करता है और कच्चेको पकाता है उसको दीपन पाचन कहते हैं । जैसे कि-चीता ।
जो पदार्थ तीना दोषोंको शुद्ध नहीं करता अर्थात् ऊचे तथा नीचे मार्गमें
नहीं लेजासक्ता समान दोषोंको घटाता नहीं और विषम दुष्ट दोषोंको सम
करता है वह पदार्थ शमन कहाता है । जैसे कि, गिलोय । जो पदार्थ पथे
वातपित्त और कफको पकाकर वायुके बन्धनको भेदन करके नीचे लेजा-
ता है अर्थात् मलको गिरादेता है वह पदार्थ अनुशमन कहता है जैसे
कि-हृड । जो पदार्थ कोठेय चिपटे दुष्ट पकानेयोग्य मल, कफ और पित्त
उनको बिना पकायेही नीचे लेजाय वह भसन कहाता है जैसे कि-अमरताम ।
जो वातादि दोषोंके धंधेदुष्टे मल मूत्रको अलग अलग कण्ठके गुदद्वारमे

बाहर निकालें उसको भेदन कहते हैं । जैसे कि, कुटकी । जो पदार्थ अधपके
 अथवा कच्चे मलको द्रवरूप (पतला) करें और नीचेको गहर यह पदार्थ
 रेचन कहाता है जैसे कि-निसोय । जो पदार्थ कच्चे पित्त, कफ तथा अन्नके
 समूहको मुखके मार्गसे बाहर निकाले वह पदार्थ वमन कहाता है जैसे कि,
 मैनफल । जो पदार्थ मलके समूहको अपने स्थानसे बाहर निकाले अथवा
 नीचे या ऊपर लेजाय वह पदार्थ देहशोधन कहाता है जैसे कि-देवदाली ।
 जो पदार्थ अग्निको दीपन करनेवाला, कच्चेको पकानेवाला और गरम होनेसे
 द्रवतास्त्व (गलियन) को सुरानेवाला है वह द्रव्यमाही कहाता है जैसे
 कि-सोंठ, जीरा और गजपीपल जो पदार्थ रुद्ध, शीतल, कपेला और लघु-
 पाकी होनेसे वायुको उलटा करनेवाला होय वह पदार्थ स्तम्भन कहाता है
 जैसे कि, कुडा और सोनापाठा । यह नीचे जानेवाले मलादिकको रोककर
 रखता है इसलिये स्तम्भक कहाता है । जो पदार्थ शरीरमें चिपटे हुए कफा-
 दिकदोषोंको बलात्कारमे उलाढाले वह पदार्थ छेदन कहाता है जैसे कि-
 जवाखार, आदिखार, कार्लीमिश्र और शिलाजीत । जो पदार्थ देहके
 धातुओंको अथवा मलको सुराकर दूर करे वह पदार्थ-लेपन है जैसे
 कि, मधु, उष्णजल, वच और इन्द्रजी । जिस द्रव्यके प्रयोग करनेसे शरीर
 साथ रक्तोका उत्साह होय वह द्रव्यवाजीकरण कहाता है जैसे कि-जग
 गन्ध, मुसली, मिश्री (चीनी) और शतावर । जिस द्रव्यमे वीर्यकी वृद्धि
 होय वह द्रव्य शुभल कहाता है जैसे कि, नागपला आदि और काले
 चीन । दूध, उडद, भिलावैकी मींग और आमले ये अपने गमावते,
 शीघ्रही रसादिकको उपन करके वीर्यका प्रकट करते हैं और वीर्यकी
 अधिपना होनेपर उमकी वृद्धि करते हैं । शरीरको प्रसन्ननेवाली, गन्धिका
 पत्र वीर्यका रेचक जायद्वय वीर्यका स्तम्भन करनेवाला और नरुज
 (इन्द्रजी) वीर्यका क्षय करते हैं । शरीर ममण कीर्त्तन, दगन, मंभापण
 स्वयं, नुम्वन, आलिंगन और मैथुन यह सम्पूर्ण क्रियाएँ या पक्षी
 क्रिया वीर्यका प्रसन्नने (निशालने) वाली हैं । जो पदार्थ जरा और
 व्याधिना नाश करनेवाला होय वह पदार्थ ग्मापन कहाता है जैसे कि,
 दण्ड, देवी, गूगल और दिनज्जीत । जो पदार्थ प्रथम सम्पूर्ण शरीरमें
 स्थान होकर पश्चात् पाक आस्थाको प्राप्त होय वह पदार्थ व्यसयो कहाता है
 जैसे कि, भाग और अक्षीम । अन्यद्रव्य परिपाकको प्राप्त होकर अपना

गुण करतेहैं और व्यवयी द्रव्य तो कचेही अपने गुणोंसे सम्पूर्ण शरीरमें व्याप्त होकर पीछे पकतेहैं । जो द्रव्य सम्पूर्ण शरीरमें रहनेवाले वीर्यमेंसे ओजको सुखाकर शरीरकी सन्धियोंके बधनाको शिथिल करतेहैं । उनको विकाशी जानना, जैसे सुपारी और कोदों । जो द्रव्य अधिक तमोगुणवाला और बुद्धिका नाश करनेवाला होय वह मदकारी अर्थात् मादक द्रव्य कहाताहैं जैसे कि, मदिरा आदिका जो पदार्थ व्यवयी, विकाशी, कफ नष्ट करनेवाला, मद करनेवाला, अम्रिका अधिक अशयुक्त, प्राणनाशक और योगवाही होय वह पदार्थ विष कहाताहैं जैसे कि, वत्सनाभ और शलुक आदि । वत्सनाभ आदि द्रव्य सम्पूर्ण शरीरमें व्याप्त होकर पकते हैं इसलिये व्यवयी हैं । ओजको सुखाकर संधियोंके बधनाका शिथिल करनेवालेहैं इसलिये विकाशी हैं । तमोगुणका भाग अधिक होनेस बुद्धिका नाश करके मद करनेवालाहै, अम्रिका अधिक अशयुक्तहैं और जिस पदार्थके साथ मिलकर उसके गुणाको ग्रहण करनेवाला होनेस योगवाहीर्भाहैं । जो द्रव्य अपनी शक्तिसे स्रोतोंसे दोषोंके समूहको निकाले वह द्रव्य प्रमाथी कहाताहैं जैसे कि, मिरच और बच । जो पदार्थ रमका बहानेवाली शिगाओंको पिन्डिल और भारीपनस रोककर शरीरमें भारीपन करताहैं वह पदार्थ अभिप्यन्दी कहाताहैं जैसे कि, दही । जिस द्रव्यके खानेमें खट्टा उकार भावें, व्यास लगे, दृढ्यम दाह होय वह पदार्थ विदाही कहाताहैं, इस द्रव्यका पाक बहुत देरसे होताहै । जो द्रव्य अपने माय मिली हुई वस्तुआके गुणोंको ग्रहण करे वह पदार्थ योगवाही कहाताहैं जैसे कि, सहस्र, तेज, घी, पारा और लोहा आदि ।

अथ वीर्यम् ।

मृदुतीक्ष्णगुरुस्निग्धलघुस्रोष्णशीतलम् ।

वीर्यमष्टविधप्राहुः शीतोष्णाद्विविधपरं ॥

अर्थ—मृदु, तीक्ष्ण, गुरु, स्निग्ध, लघु, रुक्ष, उष्ण और शीतल इन भेदोंसे वीर्य आठ प्रकारका है और किमी विद्याक मतमें उष्ण और शीत इन भेदोंसे वीर्य दो प्रकारका है ।

उष्णशीतोर्वीर्ययोगुणानाह ।

उष्ण पित्तकरोऽल्पोवातश्लेष्महनेरुधु ।

शीतलः पित्तहानत्यः कफवातकरोऽगुरु ॥

अर्थ-उष्णवीर्य-पित्तकारक, वलवर्द्धक, वातकफनाशक और हलका है ।
शीतवीर्य-पित्तनाशक, बलकारक, कफकारक और भारी है ।

अथ च ।

यच्छीतवीर्यगुरुपित्तहारिद्रव्यनृणांवातकरंतदुक्तम् ।

यदुष्णवीर्यलघुवातहारिश्लेष्मापहपित्तकरचतत्स्यात् ॥

अर्थ-जो द्रव्य शीतवीर्य है वह सब भारी, पित्तहारी और वातको करनेवाले है, जो द्रव्य उष्णवीर्य है वह सब हलके, वातविनाशक, कफनाशक और पित्तको उत्पन्न करे हैं ।

रसानांवीर्यभेदमाह ।

रसा कटुम्ललवणाउष्णवीर्यायथोत्तरम् ।

तिक्तकषायमधुराशीतवीर्यायथोत्तरम् ॥

अर्थ-कटु, अम्ल और लवण यह तीनों रस यथाक्रमसे उष्णवीर्य हैं अर्थात् चरपर रससे सड़ा रस और रांटे रससे लवण रस अधिक उष्णवीर्य है, तिक्त, कषाय और मधुर यह तीनों रस यथाक्रमसे शीतवीर्य हैं अर्थात् तिक्त रसमें कपेरा रस और कपेले रसमें मधुर रस अधिक शीतवीर्य है ।

अथ विपाकः ।

जाठरेणाग्निनायोगाद्यदुदेतिरमातरम् । रसानां परिणामान्तेसविपाकइति स्मृत ॥ विपाकस्तु त्रिधा प्रोक्तः स्याद्भ्रूल-
कटुकात्मकः । मिष्टपटुश्च मधुरोद्भ्रूलो म्लं पच्यतरसः ॥
कषायकटुतिक्तानापाकः स्यात्प्रायशः कटुः । श्लेष्मकृन्म-
धुरपाकांवातपित्तहरो मतः ॥ अम्लस्तु कुरुते पित्तवातश्ले-
ष्मगदापहः । कटुः करोति पवनकफपित्तचनाशयेत ॥ वि-
शेषपरसतो विपाकानां निदर्शितः ।

अर्थ-जठराग्निरूपके जो रस उत्पन्न हो और फिर उम रसमें पवनपर जो परिणाम होता है उसको 'विपाक' कहते हैं । विपाक तीन प्रकारका है, मधुर, तमपीन और अम्ल, मधुर और अम्ल रसवाले पदार्थोंका विपाक मधुर हो जाता है, अम्ल पदार्थोंका अम्ल होता है तथा कटु, तिक्त और कषेय रसोंका विपाक कषेय हो जाता है, मधुर विपाकवाले द्रव्य पचने पर उत्पन्न

करे ह और वातपित्तको दूर करे ह । अम्लविपाकवाले द्रव्य पित्तको उत्पन्न करे ह और वातकफको हरे ह । और कटुविपाकवाले द्रव्य वातको उत्पन्न करे ह और कफपित्तको दूर करे ह । विषेपकके यह विपाक रसोंसे दर्शाया है ।

प्रभाव ।

रसादिसाम्येयत्कर्मविराष्टतत्प्रभावजम् । दन्तीग्माद्यैस्तु-
ल्यापिचित्रकस्यविरेचनी ॥ मधुकस्यचमृद्धीकाधृतक्षीर-
स्यदीपनम् । प्रभावस्तुयथाधात्रीलकुचस्यरसादिभिः ॥
समापिकुरुतेदोषत्रितयस्यविनाशनम् । कचित्तुकेवलद्रव्य
कर्मकुर्यात्प्रभावत । ज्वरहन्तिरिगेवद्धासहदेवीजटायथा ॥

अर्थ—औषधीके रस, गुण, वीर्य और विपाकमें जो गुण होव उनमें अलग अपने प्रभावसे जिस गुणको करे उसका नाम प्रभाव है, जैसे दन्ती और चीता दोनों रस वीर्यविपाकादिमें समानभी है, किन्तु दन्ती रेचक है और चीता नहीं, इसको प्रभाव कहतेह । जैसे महुआ और दाख रसादिकमें समान है, पर दाख दस्तावर है । दूध और घी रसादिकमें समान है, परन्तु घी अग्निको दीपन करेह । आमला और नडहर गुणाम तुल्य है, किन्तु आमला त्रिदोषनाशक है कहीं कहीं केवल द्रव्य प्रभावमेही कार्य करता है, जैसे सहदेवीकी जड़को मस्तकमें घाघनमें ज्वर दूर होताह, ये प्रभावज गुण जानने ।

॥ श्रीशास्त्रानिर्दिष्टदुष्प्रयोजनानि समाप्त ॥ - १ ॥

अथ मिश्रवर्गः ।

ब्राह्मेमुहूर्ते उत्तिष्ठेत्सुस्थोरक्षार्थमायुषः ।

शरीरचिन्तानिर्वर्त्यमेव कर्म समाचरेत् ॥

अर्थ—मुख्य मनुष्य आयुर्ही रक्षाने लिये ब्राह्ममुहूर्तमें उठे, फिर शरीर सम्बन्धीय चिन्ता (मलमूत्रादित्याग) में निर्वर्त्य अर्थात् निवृत्त इति को कर्मवाले कार्योंको विचार ।

स्वभावतः प्रवृत्तानां मलादीनां जिजीविषुः ।

न वेगान्धारयेद्धीरः कामादीनान्तु धारयेत् ॥

अर्थ-जीवनकी इच्छा करनेवाले धीर मनुष्यको चाहिये कि, स्वभावसे आयुद्रुपे मलमृतादिके वेगको धारण नहीं करे, क्योंकि इनको धारण करनेसे अनेक प्रकारके विकार उत्पन्न होकर नानाप्रकारके रोगोंको उत्पन्न करते हैं और जो धारण करे तो कामादिके वेगोंको धारण करे, क्योंकि कामादिके वेगोंको धारण करनेसे ससारके रोगोंसे छूटकर उत्तम भुक्त (मोक्ष) का प्राप्त होता है ।

पाण्डमलमागणां शौचगुणा ।

मेध्यपवित्रमायुष्यमलक्ष्मीकविनाशनम् ।

पादयोर्मलमार्गाणां शौचाधानमभीक्ष्णम् ॥

अर्थ-दोनों पाँव और मलके मार्ग यदि साफ रखने चाहिये, क्योंकि इनको साफ रखनेसे मेधाकी वृद्धि होती है, पवित्रता उत्पन्न होती है, आयु बढ़ता है और अलक्ष्मीका नाश होता है ।

अथ पातगुणाः ।

कासश्वासातिसारज्वरवमथुक्टीकोष्ठकुष्ठप्रकाशनं मूत्रा-
वातोदरार्शश्च यथुगलगिरः कर्णनासाक्षिरोगान् । यंचान्ये
वातपित्तक्षयजकफकृताव्याधयः सन्ति जन्तोस्तोस्तान्-
भ्यासयोगादपनयति पयः पीतमन्ते निशाया ॥

अर्थ-जो मनुष्य प्रतिदिन प्रभातके समय उठकर जलपान करते हैं उनके श्वासा, श्वास, अतिसार, ज्वर, वमन, पादरोग, कोष्ठरोग, अनेक प्रकारके कुष्ठरोग, मूत्राग्न, उदररोग, घरासीर, मूत्रन, गल, मरुक्क, कर्ण, नासिका और नेत्ररोगादि तथा वात, पित्त, क्षय और कफके उत्पन्न हुए सर्वप्रकारके रोग दूर हो जाते हैं ।

नासिकपानं जलपानगुणाः ।

विगतघननिशीथे प्रातरुत्थाय नित्यं पिबति स्फुटनगोघोषा-
णरन्ध्रेण वारि । स भवति मणिपूणे श्वधुपाताद्वैतुल्यो जलिप-
लितविदीनः सर्वरोगैर्निमुक्तः ॥

अर्थ—जो मनुष्य मेघरहित रात्रिके अन्तमें नित्य नासिकाके द्वारा जल पीते हैं, वे मनुष्य पूर्ण बुद्धिमान्, गरुडके समान नेत्रोंवाले और बलीपालित-रहित होजाते हैं तथा सब रोगासे छूटजाते हैं ।

दन्तधावनविधि ।

प्रातर्भक्षाचमृद्वग्रकपायकटुतिक्तकम् ।

भक्षयेदन्तधवनन्दन्तमांसान्यवाधयन् ॥

अर्थ—प्रातःकालमें कपाय, कटु और तिक्तसवाले घृशोंके कोमल अग्रभागको लेकर उसके द्वारा इस प्रकार दन्तोंन करे कि, जिससे मसूदे न उल्लिनायें ।

मत्तरम् ।

केप्यत्रकरवीरार्ककरञ्जवकुलासनान् ।

दन्तकाष्ठार्थमन्येतुसर्वान्कटकिनोविदुः ॥

अर्थ—कोई कोई वैद्य कनेर, आक, फरज, मौलसिरी और सालकी लकड़ीके द्वारा दन्तोंन करना चाहिये ऐसा कहते हैं । और कोई कोई सर्व प्रकारके काँटोंवाले घृशोंकी दन्तोंन करनी चाहिये ऐसा कहते हैं ।

निषिद्धं यथा ।

गुवाकतालहिन्तालखजूरैःकेतकीमते ।

नारिकेलेनताड्याचनकुर्व्यादन्तधावनम् ॥

अर्थ—सुपारी, ताल, हिन्ताल, खजूर, केतकी, नारियल और ताड़ी (पत्रघृक्ष) इन सब घृशोंकी दन्तोंन नहीं करनी चाहिये ।

दन्तधावने दिङ्निगम ।

मृत्यु स्यादक्षिणास्येनपश्चिमाम्येनचामयः ।

पूर्वास्येनोत्तरास्येनसम्पदोदन्तधावनात् ॥

अर्थ—दक्षिणकी ओर मुख करके दन्तोंन करनेसे मृत्यु, पश्चिमकी ओर मुखकरके दन्तोंन करनेसे रोग और पूर्ण तथा उत्तरकी ओर मुखकरके दन्तोंन करनेसे सम्पदाकी वृद्धि होती है ।

दन्तवामृष्यद्वारनिषिद्धताना ।

अर्द्धतीकर्णशूलीचदन्तरोगीनवज्वरी ।

शोपीकासीचमूर्च्छात्तौदन्तकाष्ठविवर्जयेत् ॥

अर्थ-अद्वितीरोगी, जिसके कानमें शूलहो, दन्तरोगी, नवीन ज्वरवाला, शीघ्ररोगवाला, कासरोगी और मृच्छारोगवाले मनुष्योंको दर्शन नहीं करनी चाहिये ।

जिह्वालक्षणगुणा ।

जिह्वानिलेखनरोप्यसोवर्णताम्रमायसम् । तन्मलापहरश-
स्तंमृदुश्चक्ष्णदशांगुलम् ॥ निहन्तिवक्रवैरस्यजिह्वादन्ता-
श्रितामयम् । आरोग्यरुचिमाधत्तेसद्योदन्तविशोधनम् ॥

अर्थ-चादो, मोना, तावा अथवा लोहा इनकी नरम और निर्मल दशांगुल लंबी जीभी घनाका उसके द्वारा जिह्वाको चिर्ने, इगप्रकार कानों मुखकी विरमता, सबप्रकारके जिह्वा और दन्तोग नाश होते हैं । आरोग्य और रुचिकी वृद्धि होती है दन्त शुद्ध होजाते हैं ।

चक्षुष्यायमधिपः ।

दन्तमृध्वमधोवृद्धाश्रित मिञ्चेचलोचने ।

तोयपूर्णमुखस्तेनदृष्टिराशुप्रसीदति ।

अर्थ-प्रथम तारोंके ऊपर और अधोभाग वितरित फिर मुखमें जा भरकर उग जलमें नत्राकी मीच इसमें नेत्राम प्रतन्वता उत्पन्न होती है ।

गण्डपगुणा ।

गण्डपमपिकुर्वीतशीतेनपयन्नामुह । कफतृष्णामलहर
मुखांत शुद्धिकारकम् ॥ सुखोष्णोदकगण्डप कफारुचिम-
लापह । दंतजाड्यहरश्चापिमुखलाववकारक ॥ विषमृ-
च्छामदार्तानां गोपिणारक्तपित्तिनाम । बुपिताशिमलक्षी
णरूक्षाणां मनशस्यते ॥

अर्थ-तन्मन्तर के पानीमें हल्के तेल, इममें रस, घृषा और मुखका मल दूर होजाता है एव भीतरमें मुरा शुद्ध होजाता है उष्णजलके द्वारा शुद्ध करनेमें कफ, अद्विती, मय और दाँताकी जड़ता दूर होता है । विष, मृच्छा और मद्यमें व्याप्त रुधिर, मोष रोगवाले, मत्तपित्तगामी, जिह्मगामी, जिह्मका मय शीघ्र रोगपादों और स्तोमरोगवाले मनुष्योंका मदावि मग्न पानीके द्वारा शुद्ध नहीं करने चाहिये ।

मुखप्रक्षालनश्रीतपयसारक्तपित्तजित् ।

मुखस्यपिडिका-
शोपनीलिकाव्यगनाशनम् ॥ कुर्याद्वापिकदुष्णेनपयसा-
स्यविशोधनम् । कफवातहरस्निग्धमुखशोपविनाशनम् ॥

अर्थ—शीतलजलके द्वारा मुखको धोनेसे रक्तपित्त, मुखकी पिडिका, मुखशोप, नीलिका और व्यग (झाई) दूर होती है । कुछ कुछ गरम जलसे मुखको शुद्ध कर इससे कफ वात दूर होकर स्निग्धता उत्पन्न होती है और मुखशोप दूर होता है ।

अजनधारणगुणानां ।

नेत्रमजनसयोगाद्रवत्यमलतारकम् ।

दृष्टिर्निराकुलाभातिनिर्मलश्चन्द्रमायथा ॥

अर्थ—नेत्रोंमें अजन लगानेसे नेत्र निर्मल तारेयुक्त होजाते हैं अर्थात् आँखा के तारे साफ होजाते हैं, दृष्टि स्थिर और चन्द्रमाके समान निर्मल होजाती है ।

रात्रौजागरित श्रान्तश्छर्दितोभुक्तवास्तथा ।

ज्वरातुर शिर स्नात रुदाचिन्नतदाचरेत् ॥

अर्थ—रातमें जागाहो, थकाहुआहो जिसको वमन हुईहो, ज्वरमें व्याकुल और जिसने शिरसे स्नान कियाहो, इतने मनुष्योंको कदापि अजन नहीं लगाना चाहिये ।

परतगुणाः ।

ककतीकान्तिजननीकण्डूनीमूर्द्धरोगजित् ।

केशप्रसादनीकेऽपार्गजोजन्तुमलापहा ॥

अर्थ—ककती—कपी, कया आदिमें पाँकोंको काटना कान्तिजननी, कण्डूरोगको हर्नेवाला, शिगमोगको दूर करनेवाला तथा रज, चुपे और केशोंके मलके दूर करेह, वेगारों घटानेवाली और केशोंको हितकारी है ।

उष्णीषधारणगुणाः ।

उष्णीषगिरसाधार्यप्रभातेलगुनित्यम् ।

केभ्यश्चक्षुष्यमायुष्यरजःशीतोष्णवारणम् ॥

अर्थ-प्रतिदिन प्रभातके समय भारीक वस्त्रकी हल्की पगड़ी धागण करे पगड़ी-वालेंको हितकारी, नेत्रोंको हितकारी तथा धूल, शीत और गरमीको दूर करती है ।

मधुनगादिच्छेदनशुभा ।

पञ्चरात्रान्नखश्मश्रुकेशरोमाणि कर्त्तव्यम् ।

पौष्टिकवल्गुमायुष्यं शौचरूपविराजनम् ॥

केशश्मश्रुनखादीनां कृन्तनमप्रसादनम् ।

अर्थ-पाच पाच दिनके पश्चात् नख, डाढ़ी, केश और रोमोंको कटवाताह अर्थात् हजामत बनवाताह । घाल, डाढ़ी, मूँछ और नखान्की कत्तरनसे शरीर कानिबान होता है, पुष्टि, वन और आयुकी वृद्धि होती है तथा इससे पवित्रता और सुन्दरता उत्पन्न होती है ।

उत्पाटयेत्तुलोमानि नासायानकदाचन ।

तदुत्पाटनतोदृष्टेर्दर्विल्यत्वग्याभवेत् ।

अर्थ-नाकके घालोंका कदापि न उखाड़े, क्योंकि नाकके घाल उखाड़नेमें दृष्टि कम होजाती है ।

प्रभातदृश्याः ।

वेद्य पुरोहितो मन्त्री देवज्ञोऽत्र चतुर्थकः ।

प्रभातकाले द्रष्टव्या नित्यस्वश्रियमिच्छता ॥

अर्थ-ऐश्वर्यकी इच्छा करनेवाले मनुष्याको प्रतिदिन प्रभातके समय वेद्य, पुरोहित, मन्त्री और देवज्ञ (सिद्धान्तवेत्ताऽथोत्तिर्षी) का दर्शन करना चाहिये ।

अग्निसेवनशुभा ।

अग्निर्वातकफस्तम्भशीतनेपधुनाशन ।

आमाभिष्यन्दशमनोरक्तपित्तप्रकोपन ॥

अर्थ-अग्निसेवन करनेसे वात, कफ, स्तम्भ, शीत और वृष्य तथा आम और अभिष्यन् नागणों आम होनेह तथा रक्तपित्त उपित्त होताहै ।

पूजहिमशुभा ।

धूम पित्तानिलोद्व्यान्विष्याय कफानिलो ।

अर्थ-धूमको सेवन करनेसे पित्त और वायुकी वृद्धि होती है और हिमको सेवन करनेसे कफ और वात बढ़ती है ।

शिशिरगुणा ।

शिशिरशीतलरूक्षवृष्यवातप्रकोपनम् ।

अर्थ-शिशिर अर्थात् ओस-शीतल, रूखा, घातुवर्द्धक और वातको कुपित करनेवाली है ।

कुम्भटिगुणा ।

रूक्षातमोगुणप्रायाकुञ्जटि'कफपित्तला ॥

अर्थ-कुञ्जटिका (कोल, कुहर, कुहासा) रूखा, तमोगुणयुक्त और कफपित्तकारक है ।

छत्रगुणानाह ।

छत्रवर्षातपरजोवातावश्यायनाशनम् ।

वर्ष्यदृष्टिकरवत्यगुण्यावरणशकरम् ॥

अथ-छत्र-छाता वा उग्री-वर्षा, धूप, धूल, वायु और ओसको दूर करे है तथा वर्ष और दृष्टिको बढ़ानेवाली, घलकारक, मंगलजनक, पिशा-चादि बाधाको दूर करनेवाली और मनुष्योंका आवरण है ।

वृष्टिगुणानाह ।

वृष्टिर्निष्यदिनीशीतानिद्राश्लेष्मवलप्रदा ॥

मलापहारिणीवायुदायिनीवह्निवारिणी ॥

अर्थ-वर्षा-कफादिकको टपकानेवाली, शीतल, निद्रा, श्लेष्म और बलको बढ़ानेवाली है, मलनाशक, वायुवर्द्धक और मन्दाग्निकारक है ।

आतपगुणानाह ।

आतप.कटुकोरूक्ष स्वेदमूर्च्छातृषावह् ।

दाहवैषण्यजननोनेत्ररोगप्रकोपनः ॥

अर्थ-सूर्यकी धूप-चमपी, रूखी तथा पसीना, मूर्च्छा, दाह, विषण्ता और नेत्ररोगोंको उत्पन्न करे है ।

छायागुणानाह ।

छायादाहश्रमस्वेदहगमधुरशीतला ॥

अर्थ-छाया-दाह, श्रम और पसीनेको दूर करनेवाली है तथा मधुर और शीतल है ।

अर्थ-प्रतिदिन मभातके समय चारीक वस्त्रको हल्की पगड़ी धारण करे पगड़ी-वालेंको दितकारी, नेत्रोंको दितकारी तथा धूल, शीत और गर्मीको दूर करती है ।

भभ्रुनखादि-चेदनमुपा ।

पञ्चरात्रात्रखभ्रुकेशरोमाणिकर्त्तव्यम् ।

पौष्टिकवल्गुमायुष्यशौचरूपविराजनम् ॥

केशभ्रुनखादीनाकृन्तनसंप्रसादनम् ।

अर्थ-पाच पाच दिनके पश्चात् नख, डरी, ब्रु और रोमोंको कट-वातारन अर्थात् हजामत मनवातारन । घाल, डरी, भूँछ और नखादिको कटानेसे शरीर काठिबान् होता है, पुष्टि, घन और आयुकी वृद्धि होती है तथा इससे पवित्रता और सुन्दरता उत्पन्न होती है ।

उत्पाटयेत्तुलोमानिनासायानकदाचन ।

तदुत्पाटनतोदृष्टेर्दोषत्वग्याभवेत् ।

अर्थ-नासके घालोंको कदापि न उखाड़े, क्योंकि नाकके घाल उखाड़नेसे दृष्टि कम होजाती है ।

मभातद्रष्टव्यम् ।

वेद्यपुरोहितोमत्रीदेवजोऽत्रचतुर्यकम् ।

प्रभातकालेद्रष्टव्यानित्यस्वश्रियमिच्छता ॥

अर्थ-वेदभण्डी इच्छा करनेवाले मनुष्योंको प्रतिदिन मभातके समय वेद्य, पुरोहित, मत्री और देवज (मित्रातरेवाभ्योतिषी) का दर्शन करना चाहिये ।

अग्निपूजनमुपा ।

अग्निर्वातकफस्तम्भगीतोऽप्यनुनाशनम् ।

आमाभिष्यन्दभग्नोदरकपित्तप्रक्षोषणम् ॥

अर्थ-अग्निको गेहन करनेसे वात, कफ, स्तम्भ, शूल और कट्य तथा आम और अभिष्यन्द नाशनी आम शोथे है तथा कपित्त वृद्धि होती है ।

धूमनिग्रहणम् ।

धूमपित्तानिलोद्वर्गदग्नायः कफानिलौ ।

अर्थ—धूमको सेवन करनेसे पित्त और वायुकी वृद्धि होती है और हिमको सेवन करनेसे कफ और वात बढ़ती है ।

शिशिरगुणा ।

शिशिरशीतलरूक्षवृष्यवातप्रकोपनम् ।

अर्थ—शिशिर अर्थात् ओस—शीतल, रूखी, घातुवर्द्धक और वातको कुपित करनेवाली है ।

कुण्डलटिगुणा ।

रूक्षातमोगुणप्रायाकुज्झटिकफपित्तला ॥

अर्थ—कुज्झटिका (कोल, कुहर, कुहासा) रूखा, तमोगुणयुक्त और कफपित्तकारक है ।

छत्रगुणानाद ।

छत्रवर्षातपरजोवातावश्यायनाशनम् ।

वर्ण्यदृष्टिकरबल्यगुस्यावरणशकरम् ॥

अर्थ—छत्र—छाता वा छत्री—वर्षा, घूष, धूल, वायु और ओसको दूर करे है तथा वर्ण और दृष्टिको नष्ट करनेवाली, बलकारक, मृगलजनक, पिशाचादि बाधाको दूर करनेवाली और मनुष्याका आवरण है ।

वृष्टिगुणानाद ।

वृष्टिर्निष्यदिनीशीतानिद्राश्लेष्मबलप्रदा ॥

मलापहारिणीवायुदायिनीवह्निवारिणी ॥

अर्थ—वर्षा—कफादिकको टपकानेवाली, शीतल, निद्रा, श्लेष्म और बलको बढ़ानेवाली है, मलनाशक, वायुवर्द्धक और मन्दतिप्रकारक है ।

भातवगुणानाद ।

आतप.कटुकोरूक्ष स्वेदमूर्च्छातृपावह. ।

दाहवैवर्ण्यजननोनेत्ररोगप्रकोपन ॥

अर्थ—सूर्यकी घूष—चरपरी, रूखी तथा पसीना, मूर्च्छा, दाह, विवर्णता और नेत्ररोगोंको उत्पन्न करे है ।

छायागुणानाद ।

छायादाहश्रमस्वेदह्रगमधुरशीतला ॥

अर्थ—छाया—दाह, श्रम और पसीनेको दूर करनेवाली है तथा मधुर और शीतल है ।

अथवा ।

द्यायातमोऽस्रपित्तात्तिनिहन्त्यास्त्रिगधशीतला ।

विशेषतोवटच्छायात्रलवर्णप्रसादनी ॥

अर्थ-छाया-वट, रुधिरविकार और पित्तकी पीड़ाको शांत करे है त्रिगध और शीतल है विशेषकरके वटकी छाया घटकारक तथा वर्णको प्रसन्न करनेवाली है ।

यष्टिधारणगुणानाह ।

स्खलतः सप्रतिष्ठानशृणाञ्च निरोधनम् ।

अवष्टम्भनमायुष्यभयघ्नदण्डधारणम् ॥

अर्थ-शरीरका धारण करना-हस्तादिनष्ट प्रतिष्ठापक और शत्रुविरोधक है तथा अष्टमंजन और भयनाशक है ।

अथवा ।

यष्टिधारणमुत्साहस्थैर्यष्टिभवीर्यकृत ।

रक्ष नर्पादिभयजिद्विगेपात्स्थानि गन्तव्यम् ॥

अर्थ-शरीरका धारण-उत्साह, स्थिरता, विष्टम्भ और वीर्यशक्ति उत्पन्न करे और नष्ट तथा अपादिकके भयको दूर करे, यष्टि पुनर्निर्माण दित्तकारी है ।

अथ व्यायामगुणाः ।

व्यायामो हिसदापव्योऽलिनां स्त्रिगधभोजिनाम् । सचशीति
वसन्ते च ते पापव्यतमो मतः ॥ सर्वेष्वृतपुसर्वदिमर्त्यगत्महि-
तार्थिभिः । अत उद्धेनचरुर्त्तव्यो व्यायामो हततोऽन्यथा ॥
कुर्वाणललाटेऽपि वायान्दार्भ प्रवर्त्तते । अत उद्धेनविजानी-
याद्यावदुन्नाममेव ॥ लाघवकर्ममामव्यर्थैर्यज्ञैश्च न हि-
पुनः । दोषक्षयोऽपि त्रिगधव्यायामादुपजायते ॥ व्याया-
मवृत्तोनित्यनिरुद्धमपि भोजनम् । विदग्धमपि दग्धमपि-
दोषपरिपश्यते ॥ न च व्यायाममद्वयमन्यत्स्वोल्यापकृष-
णम् । न च व्यायामिनमर्त्यमर्दयन्तः स्युः शलात ॥ न च न-
मदमाकर्म्यजसामप्रविगच्छति । व्यायामदुष्पणानान्यप-

व्यामुद्रति तस्य च ॥ व्याधयो नोपसर्पन्ति न ते यमिवोरगाः ।
वयो बलशरीरचदेशकालमथापि च ॥ समीक्ष्य कुर्याद्व्या-
यामयुक्त्या शक्त्या च बुद्धिमान् । रक्तपित्तीक्ष्णी शोषी का-
सीश्वासी क्षतातुरः ॥ भुक्तवान्घ्नीपुचक्षीणो व्यायामं परिवर्ज-
येत् । वातपित्तामयी बालो वृद्धो जीर्णो च तत्त्यजेत् ॥ अति-
व्यायामतः कासो रक्तपित्तप्रतानकः । श्रमः क्रमः क्षयस्तृ-
ष्णा ज्वरश्छर्दिश्च जायते ॥

अर्थ—स्निग्धपदार्थ भक्षण करनेवाले और बलवान् मनुष्योंके लिये व्यायाम (कसरत) करना शीत और बसन्तऋतुमें ही हितकारी है परन्तु अपना हित चाहनेवाले मनुष्य सब ऋतुआमें आधी शक्तिके अनुसार कसरत करे इससे अधिक कसरतका करना मनुष्योंको नष्ट करदेता है । आधी शक्ति उसको कहते हैं जिसमें कोख, माथा और गर्दनसे पसीना निकलने लगे और श्वास शीघ्र आने जाने लगे । कसरत करनेसे शरीरमें लघुता, कार्यम सामर्थ्य, स्थिरता और हेशसहिष्णुता (हेशका सहनेना) उत्पन्न होती है । दोष (वातपित्तादि) क्षय होते हैं, अग्नि बढती है, नित्य कमरत करनेवाले मनुष्य विरुद्ध वस्तु, विद्वयार्जीर्णकारक पदार्थ, अथवा उत्तम पदार्थ, जो कुठभी खाले वह सब दोषरहित होकर पक्व जाता है, स्थूलताका नाश करनेके लिये कसरतकी समान दूसरी कोई वस्तु नहीं है । शत्रुलोग कमरत करनेवाले मनुष्यपर एकाएकी चढ़ाई नहीं करसक्ते तथा उस मनुष्यको अचानक घुटापा नहीं आसक्ता । जिस प्रकार सपोंका समूह गरुडपर चढ़ाई नहीं करसक्ता उसी प्रकार रोगोंका समूहभी उग पुरुषपर जितने कमरत करके अपना शरीर मुराया है आक्रमण नहीं करसक्ता, बुद्धिमान् मनुष्योंको चाहिये कि आयु, बल, शरीर, देश, पाल इन युक्ति और शक्तियोंका भलीभाँति विचारकर कमरत करे रक्तपित्त, क्षय, शोष, रोंमी, श्वास और प्रगरागी और भुक्तान् तथा मयुन करनेसे क्षीण होगये अग निनके यह सब कमरत न करे । वातपित्तरोमी, मालक (सोल्द वर्षपर्यन्त) घृष्टा (मत्तर वर्षमे पीले), अर्जीर्णगेमी इन सब मनुष्योंको कमरत नहीं करनी चाहिये । अन्यत्र कमरत करनेसे रक्तपित्त, रोंमी, श्रम, थकावट, क्षय, प्यास, ज्वर बमनादि रोग उत्पन्न होते हैं ।

व्यामुद्रति तस्य च ॥ व्याधयो नोपसर्पन्ति तेन ते यमिवोरगाः ।
वयो वलशरीरचदेशकालमथापि च ॥ समीक्ष्य कुर्याद्व्या-
यामयुक्त्या शक्त्या च बुद्धिमान् । रक्तपित्तीक्ष्णीशोषीका-
सीश्वासीक्षतातुरः ॥ भुक्तवान्घ्नीपुचक्षीणो व्यायामं परिवर्ज-
येत् । वातपित्तामयीवालो बृद्धो जीर्णचित्तं त्यजेत् ॥ अति-
व्यायामतः कासोरक्तपित्तप्रतानकः । श्रमः क्लमः क्षयस्तृ-
ष्णाज्वरश्छर्दिश्च जायते ॥

अर्थ—स्निग्धपदार्थ भक्षण करनेवाले और बलवान् मनुष्योंके लिये व्यायाम (कसरत) करना शीत और बसन्तऋतुमें ही हितकारी है परन्तु अपना हित चाहनेवाले मनुष्य सब ऋतुओंमें आधी शक्तिके अनुसार कसरत करे इससे अधिक कसरतका करना मनुष्याको नष्ट करदेता है । आधी शक्ति उमरको कहते हैं जिसमें कोर, माया और गर्दनसे पसीना निकलने लगे और श्वास शीघ्र आने जाने लगे । कमरत करनेसे शरीरमें लघुता, कार्यम सामर्थ्य, म्यग्ता और श्लेष्माहिष्णुता (श्लेष्मा कहलें) उत्पन्न होती है । दोष (वातपित्तादि) क्षय होते हैं, भ्रमि घटती है, नित्य कमरत करनेवाले मनुष्य विरुद्ध वस्तु, विदग्धाजीर्णकारक पदार्थ, अथवा उत्तम पदार्थ, जो कुठभी खाले वह सब दोषरहित होकर पक्क जाता है, स्थूलताका नाश करनेके लिये कसरतकी समान दूसरी कोई वस्तु नहीं है । शत्रुलोक कमरत करनेवाले मनुष्यपर एकाएकी चढ़ाई नहीं करसके तथा उन मनुष्यको अचानक बुढ़ापा नहीं आसक्ता । जिस प्रकार गधोंका गर्भ गरुडपर चढ़ाई नहीं करसक्ता उसी प्रकार रोगोंका समूहभी उन पुरुषपर जिनमें कमरत करके अपना शरीर सुरक्षित है आक्रमण नहीं करसक्ता, बुद्धिमान् मनुष्याको चाहिये कि आयु, बल, शरीर, देश, कार्य इन युक्ति और शक्तियोंका भलीभाँति विचारकर कमरत की रक्तपित्त, क्षय, शोष, रौमी, श्याम और प्रणरोगी और भुक्तवान् तथा मधुन करनेमें क्षीण होगये अग जिनके यह सब कमरत नहीं । वातपित्तरोगी, सालरु (सोलर वर्षर्षन्त) घृष्ट (सत्तर वर्षमें पीछे), अजीर्णरोगी इन सब मनुष्याको कमरत नहीं करने चाहिये । अत्यत कमरत करनेमें रक्तपित्त, रौमी श्रम, थकावट, क्षय, व्यास, उदरवयनादि रोग उत्पन्न होते हैं ।

भगवत् ।

आयातमोऽस्रपित्तात्तिनिहन्यात्स्निग्धशीतला ।

विशेषतोवटच्छायावलवर्णप्रसादनी ॥

अर्थ-छाया-राम, रुचिगवित्ता और पित्तकी पीडाको शान्त कर दे
स्निग्ध और शीतल है विशेषकरके वटरी छाया चलताकर तथा वर्णको
प्रसन्न करनेवाली है ।

यष्टिधारणमुत्साहस्येयमिष्टम्भरीर्यकृत ।

स्फुरलतमप्रतिष्ठानशरणाधिविरोधनम् ।

अवष्टम्भनमायुष्यभयघ्नदण्डधारणम् ॥

अर्थ-लाठीका धारण करना-संश्लेषद प्रतिष्ठान और शत्रुविरोधक
है तथा स्फुरलत और भयघ्नक है ।

भगवत् ।

यष्टिधारणमुत्साहस्येयमिष्टम्भरीर्यकृत ।

गक्ष मर्षादिभयजिह्विषेपात्स्वाविरेमतम् ॥

अर्थ-लाठीका धारण-उत्साह, श्रियाणा, विष्टम्भ और रीत्येव । उत्पन्न करने
है और गाल तथा मर्षादिभय भयको दूर करे, पर प्रदायक दित्तकारी है ।

भगवत् ।

व्यायामोदिसदाप्योऽस्त्रिणांस्निग्धभोजिनाम् । सनशीते

वमन्तेचतेपापव्यतमोमन ॥ सर्वेष्वपुनर्वर्द्धित्यंगतमहि-

तार्थिभिः । अत यद्वैतचर्त-नोव्यायामोदित्ततोऽन्यथा ॥

कुसोललाट्येयीनायायदायम प्रवर्तते । अत यद्वैतचर्त-नो-

यायामदु-अनमेवच ॥ लाववकर्ममामर्थ्यस्थे र्द्वैतमदि-

पुता । दोषनयोमिष्टिश्च व्यायामादुपजाते ॥ व्याया-

मंरुपेनोनिन्यत्रिष्टमपिभोजनम् । विदग्धमपिद्वयानि-

दोषपरिपच्यते ॥ नच व्यायाममहमन्यत्स्योत्यापरप-

णम् । ननव्यायामिनंमर्त्यमर्दयन्त्यंगोऽस्त्रिणां ॥ ननेनं

गदमाकम्यारामनमिच्छति । व्यायामदुष्णगात्रन्यप-

व्यामुद्धर्तितस्यच॥व्याधयो नोपसर्पन्ति तेन ते यमिवोरगाः ।
वयो बलं शरीरं च देशकालमथापि च ॥ समीक्ष्य कुर्याद्व्या-
यामयुक्त्या शक्त्या च बुद्धिमान् । रक्तपित्तीक्ष्णीशोषीका-
सीश्वासीक्षतातुरः ॥ भुक्तवान् स्त्रीषु च क्षीणो व्यायामपरिवर्ज-
येत् । वातपित्तामयी शालो बृद्धो जीर्णं च तत्त्यजेत् ॥ अति-
व्यायामतः कासोरक्तपित्तप्रतानकः । श्रमः कृमः क्षयस्तृ-
ष्णाज्वरश्छर्दिश्च जायते ॥

अर्ध-स्त्रिगणपदार्थ भक्षण करनेवाले और बलवान् मनुष्यों के लिये व्यायाम (कसरत) करना शीत और बसन्तऋतुमें ही हितकारी है परन्तु अपना हित चाहनेवाले मनुष्य सब ऋतुभाम आधी शक्तिके अनुसार कसरत करे इससे अधिक कसरतका करना मनुष्याको नष्ट करदेता है । आधी शक्ति उसको कहते हैं जिसमें कोख, माया और गर्दनसे पसीना निकलने लगे और श्वास शीघ्र आने जाने लगे । कसरत करनेमें शरीरमें लघुता, कार्यमम, मारम्य, म्यग्ता और श्लेष्मसहिष्णुता (श्लेष्मका सहनेना) उत्पन्न होती है । दोष (वातपित्तादि) क्षय होते हैं, अग्नि बढ़ती है, नित्य कसरत करनेवाले मनुष्य विरुद्ध वस्तु, विदग्धाजीर्णकारक पदार्थ, अव्यय उत्तम पदार्थ, जो कुछभी सारल वह सब दोषरहित होकर एक जाती है, स्थूलताका नाश करनेके लिये कसरतकी समान दृग्गी कोई वस्तु नहीं है । शत्रुलोक कसरत करनेवाले मनुष्यपर एकापकी चढ़ाई नहीं करसकते तथा उस मनुष्यको अचानक बुझापा नहीं आसकता । जिस प्रकार सपोंका समूह गन्धपर चढ़ाई नहीं करसकता उसी प्रकार रोगाका समूहभी उस पुरुषपर जितने कसरत कावे अपना शरीर सुस्वाया है आनन्दमय नहीं करसकता, बुद्धिमान् मनुष्योंको चाहिये कि आयु, बल, शरीर, देश, काल इन युक्ति और शक्तिपाका भलीभाँतिसे विचारकर कसरत रीति रक्तपित्त, क्षय, शोष, रौमि, श्वास और प्रणमोंगी और भुक्तवान् तथा मधुन करनेमें क्षीण होगये अग जिनके यह सब कसरत न करे । दानपित्तमोगी, माल्ट (सोलह वर्षपर्यन्त) बृद्ध (गसरत वयसे पीछे), अजीर्णरोगी इन सब मनुष्याको कसरत नहीं करनी चाहिये । अत्यन्त कसरत करनेमें रक्तपित्त, रौमि श्रम, थकावट, क्षय, प्यास, उग्र वयनादिभोग उत्पन्न होते हैं ।

अथ ।

द्यायातमोऽश्वपित्तात्तिनिहन्यात्स्निग्धशीतला ।

विशेषतोऽटच्छायात्रलवर्णप्रसादनी ॥

अर्थ-छाया-तम, रुधिरविकार और पित्तकी पीडाको शान्त कर दे
मिथ्य और शीतल है विशेषकरके घटकी छाया यष्टकारक तथा वर्णको
प्रमत्त करनेवाली है ।

यष्टिभारगुणात् ।

स्खलत सप्रतिष्ठानशत्रूणाञ्चविरोधनम् ।

अवष्टम्भनमायुष्यभयघ्नदण्डधारणम् ॥

अर्थ-छायाका घातन शत्रु-सत्त्वोत्पद विघातक और शत्रुविनाशक
है तथा अन्तरिक जीव भयनाशक है ।

अथ ।

यष्टिधारणमुत्साहस्थैर्यष्टिष्टम्भनीर्यकृत ।

रक्ष मर्षादिभयजिह्विगेपान्स्थानिग्मतम् ॥

अर्थ-छायाका घातन-उत्साह, स्विता, विष्टम्भ और रक्षिक है । उत्पन्न कर
है और रक्षा तथा मर्षादिभय जह्विगेपान्स्थानिग्मतम् है ।

अथ व्यायामगुणा ।

व्यायामोदिसदापथ्योऽलिनास्निग्धमोजिनाम् । नचशीतं
प्रमन्तेनतेपापव्यतमोमतः ॥ सर्वेष्वृतुषु सर्वे हि मर्त्ये गता हि-
तार्थिभिः । शक्त्यद्वैतचरुते नोऽन्यायामोहत्यतोऽन्यथा ॥
कुनौललाटेऽग्रीवायावदायमं प्रवर्तते । शक्त्यद्वैतविजानी-
याद्यावदुच्छाममं वच ॥ लाप्ररुर्मनामर्थ्यस्थैर्यष्टिभारगु-
णुना । शेषतयोमिष्टिश्च व्यायामादुपजायते ॥ व्यायाम-
मंशुर्वतो निव्यतिरुद्धमपि भोजनम् । विदग्धमपि त्वग्धानि-
दोषपरिपन्चते ॥ नच व्यायाममदृग्मन्यन्मर्थ्योऽत्याप रूप-
णम् । नच व्यायामिनमर्त्यमर्दयन्त्यग्योऽल्लाव ॥ नचैन-
मन्माकम्यजगाममभिगच्छति । व्यायामादुष्णगात्रमप-

व्यामुद्धर्तितस्यच॥व्याधयो नोपसर्पन्ति न ते यमिवो रगाः ।
वयो बलं शरीरचदेशकालमथापि च ॥ समीक्ष्य कुर्याद्व्या-
यामयुक्त्या शक्त्या च बुद्धिमान् । रक्तपित्तीक्ष्णशोषी का-
सीश्वासीक्षतातुरः ॥ भुक्तवान् स्त्रीषु च क्षीणो व्यायामपरिवर्ज-
येत् । वातपित्तामयी बालो वृद्धो जीर्णो च तत्त्यजेत् ॥ अति-
व्यायामतः कासोरक्तपित्तप्रतानकः । श्रमं क्लमं क्षयस्तृ-
ष्णाज्वरश्छर्दिश्च जायते ॥

अर्थ—स्निग्धपदार्थ भक्षण करनेवाले और बलवान् मनुष्योंके लिये व्यायाम (कसरत) करना शीत और बसन्त ऋतुमें ही हितकारी है परन्तु अपना हित चाहनेवाले मनुष्य मय ऋतुभामें आधी शक्तिके अनुसार कसरत करें इससे अधिक कसरतका करना मनुष्योंको नष्ट कर्देता है । आधी शक्ति उमको कहते हैं जिसमें कोर, माया और गर्दनमें पसीना निकलने लगे और श्वास शीघ्र आने जाने लगे । कमरत करनेसे शरीरमें लघुता, कार्यमें सामर्थ्य, म्यग्ता और ज़ेगसहिष्णुता (ज़ेगका सहनेना) उत्पन्न होती है । दोष (वातपित्तादि) क्षय होते हैं, अग्नि घटती है, नित्य कसरत करनेवाले मनुष्य विरुद्ध वस्तु, विदग्धाजीर्णकाग्ना पदार्थ, अथवा उत्तम पदार्थ, जो कुछभी खाले वह सब दोषरहित होकर पत्र जाती है, स्थूलताका नाश करनेके लिये कसरतकी समान दूरी कोई वस्तु नहीं है । शत्रुलोक कमरत करनेवाले मनुष्यपर प्रकाणकी चढ़ाई नहीं करसक्ते तथा उस मनुष्यको अचानक बुढ़ापा नहीं आसक्ता । नित्य प्रकार सषोंका ममूह गन्धपर चढ़ाई नहीं करसक्ता उमी प्रकार रोगोंका समूहभी उस पुरुषपर ज़िम्मे कमरत करके अपना शरीर सुखायाई आक्रमण नहीं करसक्ता, बुद्धिमान् मनुष्योंको चाहिये कि, आयु, बल, शरीर, देश, धर्म इन युक्ति और शक्तियोंका भलीभाँतिसे विचारकर कमरत की रक्षापिच, क्षय, शोष, रोगी, श्वास और प्रगरोगी और भुक्तवान् तथा मधुन करनेसे क्षीण होगये अग निनके यह सब कसरत न करें । श्वपित्तभोगी, बालक (सोलह वर्षपर्यन्त) वृद्ध (ग्यारह वर्षमें पीछे), अजीर्णभोगी इन सब मनुष्योंको कमरत नहीं करनी चाहिये । अथवा कमरत करनेसे रक्तपित्त, रोगी, श्रम, थकावट, क्षय, प्यास, ज्वर वगैरानिर्गम उत्पन्न होते हैं ।

अपि ।

सामर्थ्यसकलक्रियासुलघुतामगेषुदीप्तिपगममैः पाटवमि-
न्द्रियेषुलघुतांटेदपरमेदस । उत्साहमनस शरीरदृढतांशा-
न्तिबलाद्व्यापदां व्यायामः शिरसि वसन्तसमये कुर्याद्विमेमे-
वनम् ॥ वातामय पित्तरुजान्धितश्चवालोतिवृद्धोतिवृद्धोति-
जीर्णः । मन्दानल स्निग्धरसात्रज्या व्यायामकालेषु विव-
र्जनीया ॥ स्थात्यां यथानावरणाननायां नवद्वितायान-
चसाधुपाकः । अनाप्तनिद्रस्य तथानरेन्द्रव्यायामहीन-
म्यनवात्रपाकः ॥

अर्थ-व्यायाम (कसरत) का कतना तब कारणीय मानध्य, शरीरम
हृत्पापन, देहम प्रकाश, अमिरो दीपन, इन्द्रियोमें सुधुता, मेदाका नाश,
मनमें उत्साह, शरीरमें दृढता दृष्टोर्दी शान्ति और बलको को है ।
व्यायाम-गिरिश और वसन्तकालमें करनी चाहिये । रात और पित्तगर्मा,
पाण्ड, अत्यंत पृष्ठ, अत्यंत कृश और अधिक और दुर्ग मन्दापिवाला और
स्निग्ध भोजन न करनेवाला, इन सबको व्यायाम नहीं करनी चाहिये ।
जिन प्रकार पट्टोईके मुग्धा पाय नहीं रहते तथा उगको कर्णोंमें
नहीं गान्धेसे अन्य अन्धेप्रमाणों नहीं रहता है उनी प्रकार हे गमन ।
निद्रा और व्यायाम रक्षितता अन्य अस्ते प्रकार नहीं रहता है ।

मामदनमुत्तमाह ।

नवाहनश्रमद्वयव्यनिद्रामुगप्रदम् ।

मासाशुक्त्वक्प्रमत्तत्त्वकुर्याद्वातरुपापहम् ॥

अर्थ-शरीरको मदन करना-श्रमनाशक, पाण्डोको पृष्ठ करने वाला,
निद्रा और मुग्धाको देखना, पाण्ड, स्निग्ध और रक्षितता जिन प्रकार
तथा पदवत्तानाशक है ।

शरीरव्यवस्थामुत्तमाह ।

उत्तर्पणदृष्टिरेणुजोषनिनाशनम् ।

तेजनव्यग्नस्त्यागं शिरस्यविरेचनम् ॥

अर्थ-शरीरको घिसनेसे दृष्टि बढ़ती है तथा कण्ठ और कोष्ठरोग दूर होता है, त्वचामें स्थित जो अग्नि उसके तेजकी वृद्धि होती है और गिरा-ओंमें सुखकी वृद्धि होती है ।

पथभ्रमणगुणमाह ।

अध्वामेदकफस्थौल्यसौकुमार्यविनाशन ।

अर्थ-पथभ्रमण करनेसे मेद, कफ, स्थूलता और सुकुमारता नष्ट होती है ।

अतिभ्रमणगुणा ।

यत्तुचक्रमणनातिदेहपीडाकरंभवेत् ।

तदायुर्वलमेधाग्निप्रदमिन्द्रियबोधनम् ॥

अर्थ-जिस भ्रमण करनेसे शरीरमें छान्ति उत्पन्न न होवे उस भ्रमणसे आयु, बल, मेधा और अग्निकी वृद्धि होती है और इन्द्रियोंमें प्रफुल्लता उत्पन्न होती है ।

पादुवाधारणगुणा ।

पादत्रधारणवृष्यमोजस्यंचक्षुषोर्हितम् ।

सुखप्रचारमायुष्यवत्यपादरुजापहम् ॥

अर्थ-पादुकाधारण अर्थात् जूतेके पहिरनेसे वीर्य और ओजकी वृद्धि होती है, नेत्रोंको हितकारी, गमनके समय सुखकारी, आयु और बलवर्द्धक तथा पाँवोंकी पीडाको दूर करे है ।

अधारणेदोषापथा ।

पादाभ्यामनुपानद्र्यान्तृणांचक्रमणसदा ।

अनारोग्यमनायुष्यमिन्द्रियप्रमदृष्टिकृत् ॥

अर्थ-सर्वदा विनाजूतेके भ्रमणसे अर्थात् नगे पाँवों फिरनेसे आरोग्यता, आयु, इन्द्रिय और दृष्टिशक्ति नाश होती है ।

हस्त्यादिगमनगुणा ।

हस्त्यश्वरथदोलाद्यैर्भ्रमणवातकोपनम् ।

स्थितीकरणमगानां प्लववह्निविवर्द्धनम् ॥

अर्थ-हस्ती, अश्व, रथ और डोराआदिमें घटकर भ्रमण करनेसे वात एवम्ब होता है, तम्पूजना स्थिर होते हैं, बल बढ़ता है और जटगाग्नि बढ़ती है ।

विश्रामगुणा ।

विश्रामोऽलकृत्स्वेदश्रमनुत्सास्यदःशुभः ॥

अर्थ-विश्राम अर्थात् आराम करना-बन्धकारक तथा स्वेद, श्रम इनको दूर करनेवाला और सुस्थता तथा भगलजनक है ।

पादप्रक्षालनगुणा ।

पादप्रक्षालनप्रादमलगेश्रमापहम् ।

दृष्टिप्रसादनवृष्यगोक्ष्यप्रप्रीतिवर्द्धनम् ॥

अर्थ-पौवाको धोनेसे पैरोंका भ्रूल, पैरोंका रोग और श्रम दूर होता है, दृष्टिजातिको भगल करे है, वीर्यवर्द्धक, स्तनपानाशक और प्रीतिवर्द्धक है ।

नगपातगुणानाद ।

प्राग्वातोमधुरक्षारोवह्निमाद्यकरोयुक्त । घोरस्यगोत्रवोष्णा-
शाम्निकरोष्णोपवीषुच ॥ भग्नेऽपीष्टक्षताद्येषुन्यावभय-
धुगेगकृत् । सन्निपातज्वरश्वासत्वग्दोषाशोविपक्विमीन् ॥
शोषयेदामवातश्चैनमवातकारक ॥

अर्थ-पूर्वदिशाकी परत अर्थात् पुग्वाइं द्या-मधुर, स्थायी, मृदाप्रिवारक, भारी, औषधि और जलम विरुद्धता, गुग्गुला और उष्णता करनेवाली, भग और शक्तादि रोगोंमें दित्वायी, नामासाय, मृदान, मांसपाचक, श्याम, रक्ताके विकार, मरामार्ग, शिष, कृमि और आमवातादि रोगोंको मराने वाली और भगको मध्यम करे है ।

तथापि ।

शीतोऽतिमाधुर्य्यगुण प्रयुक्तोवातप्रकोपीऽलकृद्विशेषात् ।

वाताधिकानां गणशोफिनांच प्राचीप्रवृत्तपवनोनशस्तः ॥

अर्थ-पूर्वदिशाकी परत-शीतल, अत्यंत मधुरतायुक्त, वातको दृष्टि करनेवाली, कलकारक यह वायु तिनके शरीरमें वात अधिकतर होने तथा पण शोफोपाशोको अदित्वायी है ।

अतएवपदप्रगुणा ।

निश्चितमनितोमधुरान्वास्यात्तफःसमीगेद्रवगेगकामी ।

सुशीतलशोफसमाविणानां शन्नोनचाग्नेयममीग्यक्ष ।

अर्थ-अग्रिकोणकी पवन-कुण्ड २ कडवी, मधुरसान्वित, कफ और वातसे उत्पन्न हुये रोगोंको करनेवाली, शीतल और सृजन युक्त ध्रुवोंको अहितकारी है ।

दक्षिणमास्तगुणा ।

दाक्षिणोमारुतोवलयश्चक्षुष्यः सस्यधातकः । मधुरश्चविदा-
हीचकपायान्तरसोलघु ॥ रक्तपित्तप्रशमनो नचमारुतको-
पनः । गण्डूपदादिकीटानाजनकः प्राणकारकः ॥

अर्थ-दक्षिणदिशाकी पवन-उलकाङ्क, नेत्रोंको हितकारी, खेतीका नाश करनेवाली, मधुर, दाहजनक, अन्न और पानीमें कपेटे रसको उत्पन्न कर देनेवाली, हल्की, रक्तपित्तनाशक, परन्तु वातको कुपित करनेवाली नहीं है, गण्डूपदादि कीटोंको उत्पन्न करनेवाली और आयुवर्द्धक है ।

ग्रथान्तरः ।

तिक्तकपायो मधुरोतिमन्दः सुगन्धसशीतगुणैः प्रकृष्टः ।
वदन्ति सङ्गामलयानिलेति प्रकृष्टरामाजनचित्तहारी ॥
मनोभवस्थप्रक्रमेरुत्स्यात्कफोद्भवः सम्भवति प्रचारः ।
नचातिशीतो न तथोष्णः को वा शुभश्च याम्यां प्रभवः समीरः ॥

अर्थ-दक्षिण दिशाकी पवन-कडवी, कपेली, मधु, अत्यन्त मन्द, सुगन्ध, शीतल, मलयानिलसङ्ग अर्थात् मलयाचलकी पवनियोंके चित्तको हरनेवाली, कामदेवको दीपन करनेवाली, कफमें उत्पन्न हुये रोगोंको करने वाली, न अत्यन्त शीतल, न अत्यन्त उष्ण और शुभ है ।

त्रैलोक्यमास्तगुणा ।

रुश्रोष्णवातप्रशमः समीरः कटुम्लपित्तासृजिदोपकारी ॥
प्रणोपणो देहवलयस्य वातः कफान्वितो नैकैः समीरः ॥

अर्थ-नैऋत्यकोणकी पवन-सूरी, गरम, वातको शीत करनेवाली, चर्परी, सटी, पित्त और शोधको, कुपित करनेवाली, मनुष्योंके देहके चलायों शोषणकर्ता और कर्मयुक्त है ।

पश्चिमपवनगुणा ।

पश्चिमोऽग्निवपुर्वर्णवलयारोग्यनिवर्द्धनः । कपायशोषण-
स्वप्यांगे च नो विशदोलघुः ॥ अपालघुत्वैश्च शोथैश्चैव म-

ल्यकारक । सर्वद्रव्येष्वभिव्यक्तप्रभावरमनीर्यकृत् ॥ प्र
णमरोपणस्त्वच्योदाहशोथनृपापह ॥

अर्थ-पश्चिमदिशाकी पवन-अग्नि, शक्ति, वण, बल और आगेव्यक्ताको प्रदानेवाली है, कपेरी, गोपण, स्वर्गों सुषामनेवाली, रुचिकारक, विभक्त, इच्छा, निर्मल जन्म लभ्यता भेनवर्णना, शीतलता और निर्मलताकारक है, सर्वद्रव्योंमें व्यक्तप्रभाव रम और रीत्यजनक है प्रणको सुषामनेवाली, स्वर्गको सुन्दर करनेवाली तथा शक्ति, शक्ति और वृषाको देनेवाली है ।

वायव्यगणगुणाः ।

वायव्यजातोमरुत-प्रशस्त कृपायमंशुष्कगुणप्रमत्तः ।

करोतिवानस्यप्रभनगणाशस्तोननिधोवृणशोफिनाश्च ॥

अर्थ-वायव्यगणकी पवन-श्रेष्ठ, कपेरी और शुष्कगुणवाली है, मनुष्योंको पवनके वन कारती है, प्रणमणवालोंको दितकारी है, निश्चित नहीं है ।

उत्तरागणगुणाः ।

औत्तरोमारुत मिथ्योमृदुर्मधुगणश्च । कृपायान्नरमःशीतः ।

सर्वद्रोपप्रकोपन ॥ शीतलतविपार्त्तानां हितोदाहृतृपापहः ।

अर्थ-उत्तरदिशाकी पवन-मिथ्य, मृदु, मधुर, अम और उत्तम कृपायमको उत्पन्न करनेवाली, शीतल, शीतलताको प्रदित करनेवाली तथा शीत, शीत और विषम पीडित मनुष्योंको दितकारी शक्ति और वृषाको देनेवाली है ।

प्रशास्त्रगुणाः ।

स्वादु कृपायश्चकप्ररोपीवायु कुनेरस्यदिग-प्रवृत्तः ।

करोतिमेवागमनंजलस्यगीनोनचोष्णोननिन्द्यपः ॥

अर्थ-उत्तर दिशाकी पवन-स्वादु, कपेरी, शीतल कृति करनेवाली तथा मेघोंको लानेवाली शीतल, न मिथ्य और न अम है ।

वायव्यगणगुणाः ।

शीतोनिगोह्य कृपायान्नोपकरोतिचैतानदिग-प्रवृत्तः ।

शान्तश्चास्योष्णशोषकामक्षयेनश्वाश्रमविनाग्निनाश्च ॥

अर्थ-ईशान त्रिशाकी पवन-शीतल अत्यन्तगौल्य, कफवातको कुपित करनेवाली तथा-त्रण, सूजन, रोंमी, क्षय और श्वासरोगवालोंको हितकारक नहीं है ।

नीहाराद्विस्तृप्त-युग्मा ।

शीताधिकःसनीहार सविद्युत्स्तनयित्नुवान् ॥

अर्थ-तुपा जयवा वर्क-विजरी औ- मेसयुक्त पवन-अत्यन्त शीतल है ।

विष्वग्वायुगुणा ।

विष्वग्वायुरनायुष्य प्राणिनानेकदोषकृत ।

सर्वर्तुलिङ्गकोहन्ताहृद्योत्पातपुरःसरः ॥

अर्थ-विष्वग्वायु अर्थात् घूमताहुआ बहूला प्राणियोंकी आयुनाशक, त्रिदोषकोपक, समस्ततुओंका लक्षणकारक, प्राणनाशक और हृद्यम उद्देग उत्पन्न करे है ।

व्यजनानिलगुणा ।

मूर्च्छास्वेदतृपादाहश्रमघ्नोव्यजनानिलः ॥

अर्थ-पसेकी पवन-मूर्च्छा, पसीना, रुपा, दाह और श्रमनाशक है ।

तालपत्रकम्भायादलम्यव्यजनोहिम ।

**स्यादाद्र्त्वात्कफकोपन ॥ निद्राकरःप्रीतिकर शोकरोग-
विकारहा । दाहपित्तश्रमशान्तिनाशनोभ्रमशान्तिकृत ॥**

अर्थ-ताडके पत्ते और केलेके पत्तोंके पड़ेकी पवन-शीतल, मधुर, अत्यन्त श्रमनाशक, आरंभपनने करनेवाली इति कर्मेवाली निद्राजनक, प्रीतिकारक, रोगशोकादिको दूर करनेवाली तथा दाह, पित्त, श्रमशान्ति, शान्ति और भ्रमशो दूर करनेवाली है ।

अप्य ।

तालवृन्तभवोवातस्त्रिदोषामनोऽप्युः ॥

अर्थ-ताडके पड़ेकी पवन-त्रिदोषनाशक औ- हृद्यकी है ।

वगव्यजनजोवातोऽप्युः ॥

वगव्यजनजोवातोऽप्युः ॥

अर्थ-बोंगके पड़ेकी पवन-हृद्यी, तन्म और दाहपित्तकारक है ।

अर्थ—शिशिरऋतुमें पूर्वकी पवन उत्तम है, वसतऋतुमें दक्षिणकी पवन, ग्रीष्मऋतुमें नैऋत्यकोणकी पवन, वर्षाऋतुमें पश्चिमकी पवन और शरदऋतुमें वायव्यकोणकी पवन उत्तम है । शिशिर और वसतऋतुमें उत्तरकी पवनभी श्रेष्ठ है । दिनके तीसरे पहरको वर्षाऋतु, अर्धरात्रि शरदऋतु, आधीरातके पश्चात्को शिशिरऋतु, सूर्योदयके समयको हेमन्तऋतु, दुपहरके समयको ग्रीष्मऋतु और दिनके पूर्वभागको वसन्तऋतु कहते हैं ।

अभ्यगगुणा ।

वातव्याधिहरतिकुरुतेसर्वगात्रेषुपुष्टिदृष्टिमन्दामपिवित्तु-
तेवैनतेयोपमांच । निद्रांसौख्यजनयतिजराहतिशक्तिवि-
धत्तेयत्तेकातिकनकसदृशीनित्यमभ्यगयोगात् ॥

अर्थ—सदैव शरीरमें तेलको मलनेसे वातरोग दूर होता है, सम्पूर्ण अंग पुष्ट होता है, गरुडके समान दृष्टि होजाती है, निद्रा और मुरा उत्पन्न होता है, बुढ़ापा दूर होता है, शरीरमें शक्ति उत्पन्न होती है और सुवर्णके समान वर्ण होजाता है ।

पादाभ्यगगुणा ।

पादाभ्यगोऽथनिद्राकृच्छक्षुष्यपादरोगहा । चक्षुषिप्रतिरध्रेढे-
शिरेपादगतेनृणाम् ॥ अतश्चक्षुःप्रसादार्थपादाभ्यगममाचरेत् ।

अर्थ—पावोंमें तेलको मलना—निद्राजनक नेत्रोंको दितकारी, पावोंके रोगोंको हरनेवाला है । नेत्रोंके दोना छिद्रोंमें जो दो शिग हैं वद दोना शिग पावोंमें लगीहुई है इसकारण पावोंमें तेलको मलना नेत्रोंको दितकारी है अतएव नेत्रोंका दित चाहनेवाले मनुष्य सदैव पावोंमें तेलका मर्दन करें ।

अभ्यगवर्जितजना ।

वज्र्यांऽभ्यग कफप्रस्तम्नानसशुद्धाजीर्णिभि ॥

अर्थ—कफग्रस्त, स्नानादिमें शुद्ध हुवा और अजीर्णरोगवाले मनुष्यको तैलादिका मर्दन करना निषेध है ।

अभ्यगाहनयुक्तगुणा ।

स्नेहोऽवगाहनेयुक्त शरीरेवलमाहरेत् ॥

अर्थ—शरीरमें तेलको मलकर तैलमें टपकर स्नानरूपसे शरीरमें घट उत्पन्न होता है ।

सिद्धमद्वयजिवि ।

गिन्नामुत्तरोमहूपैर्वमनीभिश्चतर्पयेत् ॥

अर्थ-शालिग्राम इन प्रकारसे स्तनको मन्त्रे कि, जिगसे पाप्मोंकी जड़म
सेमकूपाम और शिगओंमें देव भवेन होजाय ।

विरचितोद्भवमगुणा ।

नित्यमेकाद्रिगिरि गिर झूलनजायतेनशालित्वनपादि-
त्यनशेषाप्रपतन्तिच॥दृढमूलाश्चकृष्णाश्चभवन्तिचवना
यता । इन्द्रियाणिप्रसीदन्तिमुदग्भवतिलोचनम् ॥

अर्थ-जो मनुष्य रोजरोज स्तन शिगको मन्त्रेदे, उनको गिरमें झूलनेम
कहापि उत्तम नहीं होता है, तथा केमोंकी अन्वना परता और वेग
पतित नहीं होते ह और वेग दृढमूल, कृष्ण और अपाङ्ग मपन
होजाते हैं इन्द्रियोंमें मगत्रता और नेत्रोंमें सुदृश्यता उत्पन्न होती है ।

तत्पतेऽप्यगुणा ।

कर्णप्रपूरणान्नित्यनमन्यानहनुमदा ।

नोने श्रुतिर्नवाधिव्यनकणयानजाम्नाः ॥

अर्थ-जो मनुष्य प्रतिदिन जानामें देव जानते हैं उनको मन्त्रागम्य,
इनुमद, अज्ञा गुणा, पापिता और वातमें उत्पन्न हुए कर्मोंसे तर्ही होवे ।

उद्भवमगुणा ।

उदत्तनवातहरकफमंदोनिलापदम् । स्थिरीकरणमगाना-
त्वकप्रसादकम्परम् ॥ उदत्तनदोर्निद्राद्यैःकण्डूवैगर्ण्यगैश्च-
जित । तिलेनोदत्तनं कण्डूगैश्चत्वन्दोषनाशनम् ॥

अर्थ-हेरगानेके पक्षाव उत्पन्न कर्मा, वातमेग, कफ, मंद और
कण्डूवैगर्ण्यगैश्च, इन्द्रियोंमें शिगता और रक्ताने भिन्नेता कर्मे, दोर्नि-
द्राद्यैः कण्डू उत्पन्न कर्मे कण्डू, विरमेता और शिगता मान होजाते
और तिलोंके द्वारा उत्पन्न कर्मों-गुणों, कर्मापन और रक्ताने विकार
होते हैं ।

उद्भव ।

न्यादुदत्तनमंगानिपनकमंदकफालम्बयिग ।

अर्थ-उच्यते-शरीरमे कान्तिजनकं तथा मेद, कफ और आलस्यको दूर करे है ।

मुखप्रलेपगुणा ।

मुखलेपादृढचक्षु पीनोगडस्तथाननम् ।

कान्तमव्यगपिडकभवेत्कमलसन्निभम् ॥

अर्थ-मुखपर लेप करनेसे नेत्र पुष्ट होतेहैं, कपोल दृढ होतेहैं और मुख कान्तिमयुक्त साँई और मुहासे रहित तथा कमलके समान निर्मल होजाताहै ।

अथ स्नानगुणमाह ।

स्नानपवित्रमायुष्यश्रमस्वेदमलापहम् ।

शरीरबलसन्धानकेश्यमोजस्करपरम् ॥

अर्थ-स्नान करनेसे शरीरमें पवित्रता उत्पन्न होताहै, आयुकी वृद्धि होतीहै तथा परिश्रम, पसीना और मेल दूर होता है, उल घटताहै, बेशोंकी और तेजकी वृद्धि होती है ।

उष्णाम्बुनास्नानगुणमाह ।

उष्णाम्बुनाधःकायस्यपरिपेकःसुखावह । तेनैवतृप्तमाङ्ग-
स्यबलघ्नकेशचक्षुषो ॥ विनिहन्ति गिर स्नानतृष्णाताल्ला-
स्यशोषणम् । मलोष्णपिडिकाकण्डूशरीरोरोगांश्चपित्तजान् ॥

अर्थ-उष्णजलमे आधे शरीरकी घोनेमे मुखकी वृद्धि होताहै और गरम पानीके द्वारा शिंसे स्नान करनेसे केशोंका और नेत्रोंका बल कम होताहै तथा तृष्णा, तादुशोष, मुखशोष, कुपितमल (वातपित्त और यक्ष्मा कुपित होना) शरीरकी गरमी, पिडिका, कण्डू, मन्तकुरोग और पित्तमे उत्पन्न हुए रोग दूर होतेहैं ।

तथाप्य ।

नैर्मल्यवपुषःकरोतिकुरुतेनिष्पापमृत्तिपरा पुण्यवर्द्धयति
त्वचरचयतेवर्णप्रभाकोमलाम् । कंडूहन्तिरतिश्रमवि-
घटयत्यगेषुर्माख्यप्रदं शुक्रोजोऽलवर्द्धनंरतिकस्नानमु-
खोष्णाम्भमा ॥

अर्थ-मुखवर्धन उष्णजलमे स्नान करनेसे-शरीर निमज होता है, पाप

तेलमर्दनविधि ।

शिखामुखैरोमकूपैर्वमनीभिश्चतर्पयेत् ॥

अर्थ-शरीरमें इस प्रकारसे तेलकों मले कि, जिससे बालोंकी जड़में रोमकूपामें और शिराओंमें तेल प्रवेश होजाय ।

धिरक्षितेष्टमदनगुणा ।

नित्यंस्नेहार्द्रशिरसः शिरः शूलनजायते । नखालित्यनपालित्यनकेशाः प्रपतन्ति च ॥ दृढमूलाश्च कृष्णाश्च भवन्ति च धनयताः । इन्द्रियाणि प्रसीदन्ति सुदृग्भवतिलोचनम् ॥

अर्थ-जो मनुष्य रोजरोज तेलसे शिरोंको मलतेहैं, उनके शिरमें शूलरोग कदापि उत्पन्न नहीं होता है, तथा केशोंकी अल्पता पकता और केश पतित नहीं होते हैं और केश दृढमूलयुक्त, कृष्ण और अत्यन्त सघन होजाते हैं इन्द्रियोंमें प्रसन्नता और नेत्रोंमें सुदृश्यता उत्पन्न होती है ।

कणतैलप्ररणागुणा ।

कर्णप्रपूरणान्नित्यनमन्यानहनुग्रहाः ।

नोच्चैः श्रुतिर्नवाधिर्यनकणवातजारुजः ॥

अर्थ-जो मनुष्य प्रतिदिन कानोंमें तेल डालते हैं उनके मन्यास्तम्भ, हनुमह, उच्चा सुनना, बधिरता और वातसे उत्पन्न हुए कर्णरोग नहीं होतेहैं ।

उद्वर्त्तनगुणा ।

उद्वर्त्तनवातहरकफमेदो निलापहम् । स्थिरीकरणमगाना-
त्वक्प्रसादकरपरम् ॥ उद्वर्त्तनहरिद्राद्यैः कण्डूवैवर्ण्यरौक्ष्य-
जित् । तिलेनोद्वर्त्तनकण्डूरोक्ष्यत्वग्दोषनाशनम् ॥

अर्थ-तेल लगानेके पश्चात् उद्वर्त्तन करना, वातरोग, कफ, मेद और वायुको दूर करेहै, शरीरमें स्थिरता और त्वचानें निर्मलता करेहै, हरिद्रा-दिषके द्वारा उद्वर्त्तन करनेसे-कण्डू, विवर्णता और रुक्षता नाश होती है और तिलके द्वारा उद्वर्त्तन करनेसे-शुजर्मी, रूखापन और त्वचाके विकार नष्ट होते हैं ।

अमशः ।

स्यादुद्वर्त्तनमगकातिजनकमेदः कफालस्यजित् ।

अर्थ-उपदन्-शरीरमें कान्तिननक तथा भेद, कफ और आलस्यको दूर करे है ।

मुखप्रदपगुणा ।

मुखलेपादृढचक्षु पीनोगडस्तथाननम् ।

कान्तमव्यगपिडकभवेत्कमलसन्निभम् ॥

अर्थ-मुखपर लेप करनेसे नेत्र पुष्ट होतेहैं, कपोल दृढ होतेहैं और मुख कान्तिसयुक्त सौँह और मुद्रासे रहित तथा कमलके समान निर्मल होजाताहै ।

अथ स्नानगुणमाह ।

स्नानपवित्रमायुष्यश्रमस्वेदमलापहम् ।

शरीरबलसन्धानकेश्यमोजस्करपरम् ॥

अर्थ-स्नान करनेसे शरीरमें पवित्रता उत्पन्न होतीहै, आयुकी वृद्धि होतीहै तथा परिश्रम, पसीना और मूल दूर होता है, बल बढ़ताहै, केशाकी और तेजकी वृद्धि होती है ।

उष्णाम्बुनास्नानगुणमाह ।

उष्णाम्बुनाधःकायस्यपरिपेकःसुखावहः । तेनैवतृप्तमाङ्ग-
स्यबलमकेशचक्षुषो ॥ विनिहन्तिगिर स्नानतृष्णातात्वा-
स्यशोषणम् । मलोष्णपिडिकाकण्डूशिरोरोगांश्चपित्तजान् ॥

अर्थ-उष्णजलसे आधे शरीरको धोनेसे मुखकी वृद्धि होतीहै और गरम पानीके द्वारा शरीरमें स्नान करनेसे केशोंका और नेत्रोंका बल कम होताहै तथा तृष्णा, तादृशोष, मुखशोष, कुपितमल (वातपित्त और कफका कुपित होना) शरीरकी गरमी, पिडिका, कण्डू, मस्तकुरोग और पित्तने उत्पन्न हुए रोग दूर होतेहैं ।

तथाच ।

नेर्मल्यवपुषःकरोतिकुरुतेनिष्पापमूर्तिपरा पुण्यवर्द्धयति
त्वचरचयतेवर्णप्रभाकोमलाम् । कङ्कहन्तिरतिश्रमवि-
घटयत्यगेषुर्माख्यप्रद शुक्रोजोबलवर्द्धनरतिकरस्नानसु-
खोष्णाम्मा ॥

अर्थ-सुखमयदिन उष्णजलसे स्नान करनेसे-शरीर निर्मल होता है, पाप

दूर होताहै, पुष्पकी वृद्धि होतीहै, त्वचाका रंग उत्तम होताहै, वर्ण, कान्ति और कोमलता उत्पन्न होतीहै, खुजली दूर होतीहै, रक्तिका श्रमनाश होताहै, अंगोंमें सुख उत्पन्न होताहै, वीर्य, ओज और जलकी वृद्धि होतीहै और शक्ति उत्पन्न होतीहै ।

अथविशेषणस्नानगुणमाह ।

मधुकामलकैः स्नानपित्तघ्नतिमिरापहम् ।

स्नानवचाघनैरिष्टश्लेष्मघ्नतिमिरापहम् ॥

स्नानकृष्णतिलैश्चापिचक्षुष्यमनिलापहम् ।

अर्थ-सुलैठी और आमलेको मलकर स्नान करनेसे पित्त और तिमिररोग दूर होताहै, वचा और नागरमोथेको मलकर स्नान करनेसे कफ और तिमिर-रोग नाश होताहै, काले तिलोंको मलके स्नान करनेसे नेत्रोंकी दृष्टि बढती है और वायु नष्ट होताहै ।

स्नानरूपविशेषगुणमाह ।

अस्नातस्यशरीरस्यउष्मासर्वांगगोचरम् ।

स्नानेनेकत्वमायातितेनदीप्यतिपावकः ॥

अर्थ-नहीं स्नानकरनेसे-अग्न्याशयमें स्थित अग्नि सर्वांगमें फैल जातीहै, वही अग्नि स्नानके द्वारा एकत्रितहोकर मनुष्योंकी अग्नि दीपन होतीहै ।

स्नाननिषिद्धजना ।

स्नानमर्दितनेत्रास्यकर्णरोगातिसारिषु ।

आध्मानपीनसाजीर्णभुक्तवत्सुचगर्हितम् ॥

अर्थ-अर्दित, नेत्र, मुख और कर्णरोगमें, अतीसार, आध्मान, पीनता, अजीर्णादि रोगोंमें तथा भोजनके अन्तम स्नान करना निषेध है ।

शरीरमार्जनगुणा ।

दौर्गन्ध्यगौरवकण्डूकच्छूमलमरोचकम् ।

स्वेदघ्नीभत्सताहन्तिशरीरपरिमार्जनम् ॥

अर्थ-बन्धादिकसे शरीरको मार्जन करनेसे-दुर्गन्धता, भारीपन, खुजली कच्छू, मल, अरुचि, पसीना और घृणा दूर होतीहै ।

यन्त्रधारणगुणा ।

कौशेयौर्णिकवस्त्रचरक्तवस्त्रतथैवच । वातश्लेष्महरतृक्षी-

तकाले विधारयेत् ॥ मेध्यं सुशीतपित्तघ्नकपायवस्त्रमुच्यते ।
तद्धारयेदुष्णकाले तत्रापिलघुशस्यते ॥ शुक्रतु शुभदवस्त्र
शीतातपनिवारणम् । न चोष्णनचवाशीततत्तुवर्पासुधारयेत् ।
यशस्य काम्यमायुष्यश्रीमदानन्दवर्द्धनम् । त्वच्यवशीकर
रुच्यनवनिर्मलमम्बरम् ॥ कदापिन जनैः सद्भिर्धार्य्यमलि-
नमम्बरम् । तत्तुकण्डूकृमिकरग्लान्यलक्ष्मीकरं परम् ॥

अर्थ-रेशमी, उनी और लाल रंगके वस्त्र-वात और कफको दूर करे हैं
इस कारण इनको शीतकालमें पहिरना चाहिये । लाल, पीले आदि मिश्रित
रंगके वारीक वस्त्र पवित्र, शीतल और पित्तको दूर करे हैं इनको ग्रीष्म-
कालमें पहिरे इनमें जहातक होसके बहुत पहिने पहिरे । सफेद वस्त्र-मग-
लकारक, शीत और घूपको दूर करनेवाले हैं । न यह गरम हो और न यह
शीतल है इस कारण वर्षाऋतुमें धारण करना चाहिये । नवीन और निर्मल
वस्त्र-यशको देनेवाले, कामदेवको बढ़ानेवाले, आयुको बढ़ानेवाले, लक्ष्मीको
देनेवाले, आनन्दवर्द्धक, त्वचाको उत्तम करनेवाले वशीकरण और रुचिका-
रक हैं । श्रेष्ठ पुरुष कभीभी मलिन अर्थात् मैले वस्त्राको नहीं पहिने, क्योंकि
इनको पहिनेसे-खुजली, कृमिरोग, ग्लानि और अलक्ष्मी अर्थात् दरिद्रता
आती है ।

रत्नाभरणधारणगुणा ।

धन्यमाङ्गल्यमायुष्यं श्रीमद्व्यसनसूदनम् ।

हर्षणकाम्यमौजस्य रत्नाभरणधारणम् ॥

अर्थ-रत्नाभरणका धारण-धन, मंगल, आयु और लक्ष्मीवर्द्धक है ।
व्यसननाशक तथा हर्ष, काम और ओजवर्द्धक है ।

शुचिदेरचनगुणा ।

स्वर्ग्ययशस्यमायुष्यमलक्ष्मीकविनाशनम् ।

धनधान्यकरनित्यगुरुदेवद्विजार्जनम् ॥

अर्थ-शुद्ध और देवादिका पूजन-स्वर्ग, यश और आयुको देनेवाला है ।
अलक्ष्मीनाशक तथा धन और धान्यवर्द्धक है ।

दर्पणगुणा ।

दर्पणश्रीमदायुष्यपापोपशमनं परम् ।

अर्थ-दर्पणमें मुख देखनेसे-लक्ष्मी और आयुकी वृद्धि होती है तथा पापका नाश होता है ।

अनुलेपनगुणा ।

प्रीत्योजोवर्द्धनवृष्यस्वेददौर्गन्ध्यनाशनम् ।

तन्द्रातापोपशमनश्रमघ्नमनुलेपनम् ॥

अर्थ-शरीरमें सुगन्धादिवस्तुओंका लेप करनेसे-हर्ष, ओज और वीर्यकी वृद्धि होती है तथा पसीना, दुर्गन्ध, तन्द्रा, ताप और श्रम दूर होता है ।

अन्यथा ।

अनुलेपस्तृपामूच्छादुर्गन्धस्वेददाहजित् ।

सौभाग्यतेजस्त्वग्वर्णप्रीत्योजोबलवर्द्धनः ॥

सस्नानानर्हलोकानामनुलेपोऽपिनोहितः ॥

अर्थ-चदनादिका लगाना, तृपा, मूच्छा, दुर्गन्ध, पसीना और दाहको दूर करे है, सौभाग्य, तेज, त्वचाका वर्ण, प्रीति, ओज और बलवर्द्धक है जिनको स्नान करना निषेध है उनको चदनादिकाभी लगाना निषेध है ।

पुष्पादिधारणगुणा ।

सुगन्धिपुष्पपत्राणांधारणकातिकारणम् ।

पापरक्षोग्रहहरकामदश्रीविवर्द्धनम् ॥

अर्थ-सुगन्धित पुष्पपत्रादिका धारण-कातिजनक, पाप, राक्षस और ग्रहाधाको दूरकरनेवाला, कामोदीपन और लक्ष्मीको बढ़ावाला है ।

भोजनादौलवणाद्रेकादिभक्षणगुणा ।

भोजनाग्रेसदापथ्यजिह्वाकठविशोधनम् । अग्निसदीपनहृद्य

लवणार्द्रकभक्षणम् ॥ आयुर्धृतेगुडेरोगोमृत्युलीनोविदाहि-

पु । आगोयकटुतिकेपुबलमांसेपय सुच ॥

अर्थ-भोजनसे पहिले मधवामिकको ताप भद्रवका खाना सदैव पथपद, जिह्वा और कंठको शुद्ध करे, हृदयको हितकारी और अग्निप्रदीपक है । भोजनसे पहिले घृतभक्षण करनेसे आयुकी वृद्धि होती है, गुड स्नानसे रोग उत्पन्न होते है, दाहजनक पदार्थ खानेसे मृत्यु होती है, कटु और तिक्तवस्तुके पदार्थ खानेसे आरोग्यता उत्पन्न होती है, मांस और दूध खानेसे बलकी वृद्धि होती है ।

क्रमादन्नादीना गुणाधिक्यमाह ।

अन्नादष्टगुणंपिष्टपिष्टादष्टगुणपयः ।

पयसोऽष्टगुणमांसमांसादष्टगुणघृतम् ॥

घृतादष्टगुणतेलमर्दनान्नतुभक्षणात् ।

अर्थ—अन्न, पिष्टक, दुग्ध, मांस, घृत इनके उत्तरोत्तर आठगुण अधिक हैं अर्थात् अन्नसे आठगुण अधिक पिष्टीम है, पिष्टीसे आठगुण अधिक दुग्धम है, दुग्धसे आठ गुण अधिक मांसमें है, और मांससे आठगुण अधिक घृत खानेमें हैं और घीकी अपेक्षा आठगुण अधिक तेलमें हैं, परन्तु तेलमें आठ गुण अधिक मर्दन करनेमें है खानेमें नहीं ।

आहारगुणा ।

आहार प्रीणन-सद्योबलकृदेहधारकः ।

अर्थ—आहार-वृत्तिकारक, तत्काल बलजाक और देहकी रक्षा करनेवाला है ।

आहारे द्विद्वनिगम ।

आयुष्यप्रादुर्मुखोभुक्तेयशस्यदक्षिणामुखः ।

श्रियप्रत्यङ्मुखोभुक्तेऋतुभुक्तेह्युदङ्मुखः ॥

अर्थ—पूर्वकी ओर मुखकरके आहार करनेसे आयुकी वृद्धि, दक्षिणकी ओर मुखकरके आहार करनेसे यशकी प्राप्ति और पश्चिमकी ओर मुखकरके आहार करनेसे संपदाकी प्राप्ति होतीहै । उत्तरकी ओर मुख करके आहार करनेसे सत्यकी प्राप्ति होतीहै । इसकागण उत्तरकी ओर मुख करके आहार करे ।

भक्षणविषयेअन्नानीनांपरिमाणमाह ।

कुशावन्नेनभार्गोद्वावेकपानेनपूरयेत् ।

वायो सचरणार्थञ्चतुर्थमवशेषयेत् ॥

अर्थ—आहारके समय—उत्तरके दो भाग अन्नसे भरे, एकभाग पीनकी वस्तुओंसे भरे और वाकीका एकभाग वायुके विपरनेके लिये रहने देंगे ।

आचमनगुणा ।

दन्तान्तरगतञ्चान्नशोचनेवाहरेच्छने ।

कुर्यादनिर्गततद्विमुखस्यानिष्टगधताम् ॥

अर्थ-भाजन करनेके समय जो अन्न दौंताम घुसजाता है, वह अन्न आचमनके द्वारा धीरे धीरे निकालदेवे, जो आचमनक द्वारा दौंतासे अन्न बाहर नहीं निकालते उनके मुखमें दुर्गंध आने लगती है ।

भोजनान्ते कृतव्यता ।

भुक्कापाणितलघृष्टाचक्षुषोर्यदिदीयते ।

अचिरेणैवतद्वारितिमिराणिव्यपोहति ॥

अर्थ-भोजनके अन्तमें हाथमें हाथ घिसकर नेत्रोंमें लगानेसे वह जल नेत्रोंके तिमिररोगको दूर करे ।

भुक्काचम्यकरवामदत्त्वाकुक्षीतत'पठेत् । भुक्तमाहेन्द्रहस्ते-
नवैश्वानरमुखेन च ॥ गंडूरस्यचकठेनसमुद्रस्यचवह्निना ।
वातापिर्भक्षितोयेनपीतोयेनमहोदधि ॥ यन्मयाखादितपी-
ततदगस्त्योजरिण्यति ।

अर्थ-भोजन करनेके पश्चात् आचमन करके कोखमें वामहाथ धरके "भुक्त माहेन्द्र, इत्यादि" इस मन्त्रको पढ़े तो भोजन शीघ्र जीर्ण होजाता है ।

सुखासीनः क्षणतिष्ठेद्यावन्नलभते सुखम् ।

अर्थ-फिर थोड़ी देरतक आराम करे जब तक सुख न हो ।

भुक्कापादशतंगत्वावामपाश्वंणसंविशेत् ।

एवञ्चाधोगतंचान्नसुखंतिष्ठतिजीर्यति ॥

अर्थ-भोजन करनेके पश्चात् सौ कदम धीरे धीरे चले, फिर घोंद करवटेमें सोरहे तो अन्न पाकस्यानमें जाकर जीर्ण होजाता है ।

भोजनान्त उच्येष्टान्निगुणा ।

भुक्तोपविशतस्तुन्दशयानस्यवपुर्भवेत् ।

आयुश्चक्रममाणस्यमृत्युर्धावतिधावत् ॥

अर्थ-भोजनके अन्तमें उपवेशन अथवा शयन करनेसे स्थूलताकी वृद्धि, धीरे धीरे चलनेमें आयुकी वृद्धि और दीर्घनेमें मृत्यु होती है ।

ताम्बूलगुणा ।

ताम्बूलकटुतिक्तमुष्णमधुरसागकपायान्वित

वातघ्नकृमिनाशनकफहरदुःखम्यविच्छेदनम् ।
स्त्रीसम्भाषणभूषणधृतिकरकामाग्निसंदीपन
ताम्बूलेनिहितास्त्रयोदशगुणाःस्वर्गपितेदुर्लभाः ॥

अर्थ-पात-चर्परा, कटवा, गरम, क्षारगुणयुक्त, मधुर, कपेला, वात
विनाशक, कृमिनाशक कफहारक, दुःखाको दूर करनेवाला, स्त्रीसम्भाषणके
विषय आभूषण, वाग्गशक्ती और कामको बढ़ानेवाला है यह १३ गुण
पानमें विद्यमान हैं सो स्वर्गमभी दुर्लभ है ।

पूगफलगुणा ।

शुष्कमग्निकरपूगकपायमधुरपरम् ।
पक्वन्तुवातलरूक्षभेदनकफनाशनम् ॥
गुर्वभिष्यदिमधुरतोयधृग्वह्निनाशनम् ।

अर्थ-सूखी सुपारी-अग्निवर्द्धक, कपेली और मधुरयुक्त है । पक्वी
सुपारी-वातवर्द्धक, रूखी, भेदक और कफनाशक । कच्चीसुपारी-भारी,
हृदजनक, मधुर और मदाग्निकारक है ।

ताम्बूलपत्रगुणा ।

ताम्बूलपत्रतीक्ष्णोष्णकटुवातकफापहम् ।
पित्तकृत्स्नसन्तुष्यवह्निवृद्धिस्तिशोधनम् ॥

अर्थ-ताम्बूलपत्र तीक्ष्ण, गरम, चर्परा वात-रूक्षनाशक पित्तकारक,
स्वसन, पीर्यवर्द्धक अग्निजनक और वस्तिशोधक है ।

पर्णमृत्पात्रगुणा ।

पर्णमूलेभवेद्द्रव्याधि पर्णाग्निपापसम्भव ।
जीर्णपर्णहरदायुःशिरावह्निविनाशयेत् ॥

अर्थ-पानकी जड़की रानेमे-गानाप्रकारक रोग उत्पन्न होता है, पानके
अप्रभागीको भक्षण करनेमे पाप उत्पन्न होता है और जीर्णपानको भक्षण
करनेमे आयु क्षीण होती है और शिरा अग्निना विनाश करती है ।

चूर्णगुणा ।

चूर्णममीरणक्षेममेदोहरमुदाहृतम् ।

अर्थ-चूना-बाल, दूध और मेन्नागर है ।

गन्धचूर्णगुणा ।

शखचूर्णकटुक्षारमुष्णकृमिहरपरम् ।

अर्थ-शखका चूना-चरपरा, क्षार, गन्ध और कृमिनाशक है ।

खदिरगुणा ।

खदिर कुष्ठवीसर्पमेहपित्तकफापह ।

अर्थ-कत्था-कोठ, वीसर्प, प्रमेह, पित्त और कफनाशक है ।

एलागुणा ।

एलामूत्रविवन्धघ्नीतृदछर्दिकफवातजित् ।

अर्थ-इलायची-मूत्रविवन्धनाशक तथा तृषा, वमन, कफ और वातनाशक है ।

लवणगुणा ।

आध्मानानाहशूलम्लवगपाचनलघु ।

अर्थ-लौंग-अफारा, आनाह और शूलनाशक है, पाचक और हल्की है ।

जातीफलगुणा ।

जातीफलतृपाछर्दिशूलघ्नवातपित्तजित् ।

अर्थ-जायफल-तृषा, वमन, शूल और वातपित्तनाशक है ।

जातीकोषगुणा ।

जातीकोपोलघुस्तृष्णातोददोर्गन्ध्यजिन्मतः ।

अर्थ-जावित्री-हल्की-तृषा, वेदना और दुर्गन्धको दूर करे है ।

कपूरगुणा ।

कपूरशीतलपाकेचक्षुष्यंकफनाशनम् ।

पक्ककपूरतप्रादुरपक्वगुणवत्तरम् ॥

अर्थ-कपूर-पचनेमें शीतल, नेत्रोंकी हितकारी और कफनाशक है । पके कपूरसे कच्चा कपूर अधिकगुणवाला है ।

पुष्पस्य बाह्यमप्यादिभेदेन गुणमाह ।

आदौपूगविषवोर्द्वितीयेभेदिदुर्जरम् ।

तृतीयादिपुषातव्यसुधातुल्यरसायनम् ॥

अर्थ-बच्चीमुषारी-विषके समान अहितकारी है, मध्यम आग्न्यार्की मुषारी-भेदक और दुर्जर है और मूषी मुषारी-अमृतकी समान हितकारी

और रसायन है, इसकारण प्रथम और द्वितीय अवस्थाकी सुपारीको त्यागकर तृतीय अर्थात् शुष्कसुपारी भक्षण करनी चाहिये ॥

ताम्बूलभक्षणनिषेध ।

ताम्बूलमहितप्रोक्तशरीररूक्षदुर्बले ।

ज्वरास्यशोषेपित्तास्रमदमूर्च्छाक्षिरोगिषु ॥

अर्थ—रूक्ष, दुर्बल, ज्वर, मुखशोष, रक्तपित्त, मद, मूर्च्छा और नेत्ररोगवाले मनुष्योंको ताम्बूल भक्षण करना नहीं चाहिये ।

ताम्बूलस्यानुपयोगगुणा ।

ताम्बूलानुपयोगात्स्याच्छेष्मापित्तानिलान्वित

देहदृक्केशदन्ताग्निश्रोत्रवर्णवलक्ष्य ॥

अर्थ—ताम्बूल नहीं खानेसे मनुष्योंके कर्क-पित्त और वातका कोष होता है तथा देह, नेत्र, केश, दन्त, अग्नि, कर्ण, वर्ण और बलआदिका नाश होता है ।

अध्ययनाङ्गिगुणा ।

सतताध्ययनवादःपुस्तत्रविलोकनम् ।

सद्विद्याचार्यसेवाचबुद्धिमैधाकरोगण ॥

अर्थ—निरन्तर शास्त्रका अध्ययन—श्रान्तिार्थ, उत्तमशास्त्रोंका दर्शन, गद्विद्याका ग्रहण और गुरुकी सेवा यह मन मनुष्याकी बुद्धि और भेधाको बढ़ाते हैं ।

बुद्धिगुणमात्र ।

शुश्रूषाश्रवणचैवग्रहणधारणतथा ।

उहापोहोर्थविज्ञानतत्त्वज्ञानचर्चागुणा ॥

अर्थ—गुरुजनोकी शुश्रूषा, गुरुके वाक्योंको श्रवण करना, गुरुके वचनाको ग्रहण और धारण करना तथा तर्कना मीमांसातत्त्वक ज्ञान और ईश्वरविषयका ज्ञान यह उ० बुद्धिके गुण हैं ।

सत्यासायाङ्गिगुणा ।

सद्योर्मांसनवान्नचन्नालाक्षीर्माभोजनम् ।

घृतमुष्णोदकचैवमद्य प्राणरूपाणिपद ॥

अर्थ—संसारका मांस—नवीनयज्ञ—पालाशी भांगभोजन—घृत और दूध—जल, ये छ तत्काल प्राणजनक हैं ।

प्रतिमासाङ्गिगुणा ।

प्रतिमांसस्त्रियोवृद्धावालार्कस्तरुणदधि ।

प्रभातेमैथुननिद्रासद्यः प्राणहराणिपद ॥

अर्थ-दुर्गाधितमांस-वृद्धास्त्री भादों-और कारकी धूप-पाच दिनका दही-प्रभातके समय मैथुन और निद्रा ये छ' तत्काल प्राणनाशक है ।

चपोभेदे नारीणा वालादिवयनम् ।

वालेतिगीयतेनारीयावत्पोडशवत्सरम् । तस्मात्परतुतरु-
णीयावत्स्यात्रिशतंभवेत् ॥ ततः ऊर्ध्वं भवेत्प्रौढायावत्पचा-
शतपुनः । वृद्धातत परजेयासुरतोत्सववर्जिता ॥

अर्थ-सोलहवर्षकी स्त्रीको वाला, सोलह वर्षके बाद तीस वर्षतककी तरुणी, तीस वर्षसे पचास वर्षतककीको प्रौढा और पचास वर्षसे अधिक उमरवालीको वृद्धा कहते हैं । वृद्धनारी रतिक्रियामें वर्जित है ।

वालादिस्त्रीसखगुणा ।

वालातुप्राणदाप्रोक्तातरुणीप्राणधारिणी ।

प्रौढाकरोतिवृद्धत्ववृद्धामरणमादिशेत् ॥

अर्थ-वालास्त्रीके साथ मैथुन करनेसे बलकी वृद्धि होती है, तरुणी स्त्रीके साथ मैथुन करनेसे बलकी रक्षा होती है, प्रौढा स्त्रीके साथ मैथुन करनेमें वृद्धता आती है और वृद्धास्त्रीके साथ मैथुन करनेमें मृत्यु होती है ।

वालादिभद्र मैथुनकालनिर्णयः ।

निदावशग्दोर्वालाप्रौढावर्षावसतयोः ।

हेमन्तेरिशिगरेयोग्यानवृद्धाकापिरास्यते ॥

अर्थ-श्रीष्म और शरदऋतुमें वालास्त्रीके साथ, वर्षा और वसन्तऋतुमें प्रौढास्त्रीके साथ, हेमन्त और शिशिरऋतुमें तरुणीके साथ मैथुन कर, किन्तु वृद्धास्त्रीके साथ किसी ऋतुमें मैथुन न कर ।

मैथुननिषेधः ।

नत्तंचपोडशाद्वर्षात्मसत्या परतो न च ।

आयुष्कामो न स्त्रीभि संयोगकर्तुमर्हति ॥

अर्थ-आयुकी अभिप्राया करनेवाले मनुष्य सोलहवर्षमें कम गतर वर्षमें अधिक आयुवाणी स्त्रीमें मैथुन नहीं करे ।

मधुनकालनिणयः ।

त्रिभिस्त्रिभिरहोभिश्चसेवेतप्रमदानरः ।

सवेष्टुतुपुत्रीष्मेतुपक्षान्मासाद्रजेद्धुः ॥

अर्थ—बुद्धिमान् मनुष्य वर्षा, शरद, हेमन्त, वसन्त और शीत ऋतुमें तीन दिनके बाद मधुन करे और ग्रीष्मऋतुमें पंद्रह दिन अथवा एक महीनेके अंतरसे मधुन करे ।

अतिमधुनशुणाः ।

ग्लानिकम्पोरुर्दोर्वल्यधात्विन्द्रियवलक्षयः ।

क्षयवृद्ध्युपदशाद्याजायन्तेऽतिव्यवायतः ॥

अर्थ—अत्यन्त मधुन करनेवाले मनुष्योंके शरीरमें ग्लानि, कम्प घुटनोंमें दुर्बलता होती है । घातु, इन्द्रियजल इनका क्षय होता है और राजयश्मा वृद्धि तथा उपदशादिरोग उत्पन्न होते हैं ।

मन्तानोऽपत्तिराद्यनिर्दिष्टाश्च ।

पचपञ्चाशतो नारीसप्तसप्ततित पुमान् ।

द्वावेतौ न प्रसूयेते प्रसूयेते व्यतिक्रमात् ॥

अर्थ—पचपन वर्षकी स्त्री और सतत्तर वर्षका पुरुष, ये दोनों सन्तानको उत्पन्न नहीं करसक्ते, कारण यह है कि, पचपन वर्षकी स्त्रीके रजस और सतत्तर वर्ष आयुवाले पुरुषके वीर्यमें सन्तानको उत्पन्न करनेवाली शक्ति नष्ट होनाती है, परन्तु पचपन वर्षसे कमकी स्त्री और सतत्तर वर्षमें कमका पुरुष सन्तान उत्पत्ति करसक्ते हैं ।

सुरशय्याशनसेव्यनिद्रापुष्टिप्रदम् ।

सुखशय्याशनसेव्यनिद्रापुष्टिप्रदम् ।

श्रमानिलहृग्वृष्यविपरीतमतोन्यथा ॥

अर्थ—सुरशय्या और उत्तमद्रव्यका भोजन—निद्रा, पुष्टि और योग्यता बढ़ाते हैं, श्रम और बातनाशक तथा वीर्यजनक हैं और इनमें विपरीत शय्या और विपरीत भोजन विपरीतगुणकारक हैं ।

भूमिशय्यागुणाः ।

भूशय्याऽनिलपित्तमीदृणीशुक्रवर्द्धिनी ।

अर्थ—पृथ्वीमें सोना—वात और पित्तनाशक, पुष्टिकारक और शुक्रवर्द्धक है ।

सद्व्यापटव्ययोग्यगुणा ।

खट्वातुवातलाप्रोक्तापटोरुक्षोऽतिवातलः ।

अर्थ-खाटपर सोनेमे वात बढती है और पटशय्यापे सोनेसे रुक्षता और वात बढती है ।

ज्योत्स्नागुणा ।

ज्योत्स्नाकपायमधुरादाहासृक्पित्तनाशिनी ।

अर्थ-ज्योत्स्ना (चादनी) कसेली और मधुर, तथा दाह और सृक्पित्त नाशक है ।

अन्धकारगुणा ।

तमोभयावहतिक्तदृष्टितेजोवरोधनम् ।

अर्थ-अन्धकार-भयकारक, कडवा, दृष्टिशक्ति और तेजको रोकनेवाला है ।
मेथुनगुणा ।

व्यवायोधात्वपचयकुरुतेरत्यपत्यदः ।

अर्थ-मेथुन-धातुनाशक, रति और सन्तान देनेवाला है ।

अतिमेथुनगुणा ।

अतिव्यवायाजायन्तेश्वासकासज्वरादयः ।

अर्थ-अत्यत मेथुन करनेमे-श्वास, कास और ज्वरादि रोग उत्पन्न होते हैं ।

मेथुनावरणगुणा ।

असेवनान्मेहमेदोयन्थिरग्नेश्चमार्दवम् ।

अर्थ-मेथुन नहीं करनेसे-मेह, मेद, ग्रान्थि और मन्थि उत्पन्न होती है ।
परिमितमेथुनगुणा ।

स्मृतिमेधायुगरोगयपुष्टीन्द्रियशोचलं ।

अधिकानाशुजरसोभवन्तिस्त्रीपुमयताः ॥

अर्थ-नियमानुसार मेथुन करनेमे-स्मरणशक्ति, अभ्यासशक्ति, आयु, आरोग्य, पुष्टि, इन्द्रियशक्ति, यश और उल इनकी वृद्धि होती है और नियमानुसार मेथुन करनेवाला मनुष्य स्त्रीपुंमयताको नहीं प्राप्त होता है ।

निद्रागुणा ।

निद्रातुसेविताकालेधातुपाम्यमतन्द्रिताम् ।

पुष्टिर्वर्णवलोत्साहानग्निदीप्तिकरोति च ॥

अर्थ-नियमानुसार निद्रा लेनेसे-धातुकी समता, तन्द्रानाश, पुष्टि, वषो, बल, उत्साह और अग्नि दीपन होता है ।

रात्रिजागरदिवास्वप्नयोगुणा ।

रात्रौ जागरणरूक्षस्निग्धप्रस्वपनदिवा ।

कफमेदोविषाक्तानारात्रौ जागरणहितम् ॥

दिवास्वप्नचतृदहूलङ्घिकाजीर्णातिसारिणाम् ।

अर्थ-रात्रिमें जागनेसे शरीरमें रूक्षताकी वृद्धि और दिनमें सोनेसे शरीरमें स्निग्धताकी वृद्धि होती है, इस कारण दिनमें सोना और रात्रिमें जागना अनुचित है । किन्तु कफ, मेद और विषप्रस्तरोणिमोंको रात्रिमें जागना हितकारक है, तथा वृष्णा, शूल, हिष्णा, अजीर्ण और अतिमारसोगवालाको दिनमें सोना हितकारक है ।

दिवावायदिवारात्रौ निद्रासात्मीकृतातुये ।

नतेपास्वपतांदोपो जाग्रतावाविधीयते ॥

अर्थ-जिनको दिनमें निद्रा लेनेका और रात्रिमें जागनेका अभ्यास है उनको दिनमें निद्रा और रात्रिमें जागनाही उचित है ।

इमं तथिष्टिरवृत्त्यम् ।

शीतेशीतानिलस्पर्शसरुद्धोवल्लिनावली । पक्ताभवति हेम-
न्तेमात्राद्रव्यगुरुक्षम ॥ सयदानेन्धनयुक्तलभते देहजतदा ।
रसनिहत्यतोवायुः शीत शीते प्रकुप्यति ॥ तस्मात्तु पारम-
येस्निग्धाम्ललवणात्रसान् । उदकानूपमामानामेध्यानामु-
पयोजयेत् ॥ विलेशयानामासानि प्रमहानां भूतानि च । भ-
क्षयेन्मदिरासीधुमधुचानुपिमेव ॥ गोममानिक्षुविकृतीर्व-
सातैलनर्वादनम् । हेमन्तेऽभ्यस्यतस्तोयमुष्णञ्चायुर्नहीय-
ते ॥ अभ्यगोत्सादनमृध्नितैलजेन्ताकमातपम् । भजेद्दृमि-
गृहञ्चोष्णमुष्णगर्भगृहतथा ॥ शीते सुसंवृतं सेव्ययानगयन-
मामनम् । प्रावागाजिनकोशेयप्रवेणीकुथकास्तृतम् ॥ गुरु-

ष्णवासादिग्धाङ्गो गुरुणाऽगुरुणा सदा । शयने प्रमदां पीना
 विशालोपचितस्तनीम् ॥ आलिग्यागुरुदिग्धाङ्गी सुप्या-
 त्समदमन्मथ । प्रकामञ्च निषेवेतमैथुनशिशिरागमे ॥ व-
 र्जयेदन्नपानानिलघृनिवातलानि च । प्रवातप्रमिताहारमुद-
 मन्थहिमागमे ॥ हेमन्तेशिशिरे तुल्येशिशिरेऽल्पं विशेषण-
 म् । रौक्ष्यमादानजशीतं मेघमारुतवर्षजम् ॥ तस्माद्द्वैमन्ति-
 कः सर्व शिशिरे विधिरिष्यते । निवातमुष्णन्त्वधिकशिशि-
 रे गृहमाश्रयेत् ॥ कटुतिक्तकपायाणि वातलानिलघृनि च ।
 वर्जयेदन्नपानानिशिशिरे शीतलानि च ॥

अर्थ-हेमन्त ऋतुमें शीतल पवनके चलनेसे मनुष्यके शरीरकी उष्णता
 घटकर नहीं निकलती इस कारण इस ऋतुमें चलवान् मनुष्योंकी पाचकाग्नि
 अत्यन्त प्रबल होकर बहुत भोजन और भारी पदार्थोंको पचानेको समर्थ
 हो जाती है, ऐसे ही जो प्रबल अग्नि उचित नियमसे पकानेकी वस्तु न पावे
 तो वह शरीरकी रस धातुका क्षय करना आरम्भ करती है, रसक्षयके हेतुसे
 शीतल वायु कुपित होनेके कारण, इस ऋतुमें त्रिग्ध, द्रव्य, अम्ल और नमकीन
 पदार्थ, पवित्र जल, अन्नप देशके जीवोंका मांस और प्रसहजातिके जीवोंका
 मांस भक्षण करे तथा सीधुनामक मादिराको पीकर फिर सहित पीवे हेमन्त
 ऋतुमें दुध, इत्रुषिकार, वसा, तेल और नवीन चावलाका भात
 भक्षण करना चाहिये । हेमन्त ऋतुमें गरम करके जू पीवे, इससे मनुष्यों
 की आयु नष्ट नहीं होती है । इस ऋतुमें अभ्यग, उत्सादन (हलदी आदिका
 मलना) जेन्तारु (एक प्रकारका स्वेद) आदिका व्यवहार है । इनके
 अथवा नृत्तिकाके वनद्रव्य उष्ण गृहमें अथवा उष्ण गर्भगृहमें वागवतना
 चाहिये । इस ऋतुमें कन्नल, चर्म (पोम्तीन आदि) रेशमीन मवेशी
 और विविध कन्नलआदिसे भर्त्ताभाति ढकी हुई मवारी (लम्बाणि) गेज
 और आमनकी व्यवहार करे । सदैव मोटा और गरम कपड़ा पहिने,
 अंगको चिमकर गाढा लेप करे । शयन करनेके समय मट पीकर कामयुक्त
 चिन्तसे मोटी चाबी, उठेहुवे स्तनवाली, अगर आग्नि गुगान्धिमं विगरे
 नगरिम लगनी है, घेमी सलणी नीने माय सेटकर जागिन कर और

इच्छानुसारं भैद्युन कग्के किं सोरहै । इस ऋतुमें हल्के, वातपट्टक भोजन और पानीय अर्थात् पीनेके द्रव्य, प्रचल वायु, अल्प आहार और उद्गमन्य (जलम घोले इवे सन्नू) त्यागदेवे । हेमन्त और शिशिर ऋतु दोनों समानेह, अतः केवल इतनाहीहै कि, शिशिर ऋतुमें जाटान जात (इस ऋतुमें सूर्यके द्वारा शरीरके चिकने पदार्थ ग्रहण किये जातेहैं) स्नानपन, भैद्यवायु और वर्षासे उत्पन्न हुवा ग्रीन अधिक होताहै, इसकारण हेमन्त कालके आचार व्यवहार शिशिर कालमें आचरण करे । इस ऋतुमें वायु-गदित उष्ण गृहमें रहना चाहिये और चरपरे कडवे, फसेले रगवाले द्रव्य, वातको बढ़ानेवाले द्रव्य, हल्के द्रव्य और ठडे स्नानके पदार्थ और पीनेके द्रव्य त्यागदेवे ।

यमन्तवृत्तम् ।

हेमन्तेनिचित-श्लेष्मादिनकृद्वाभिरीरित- । कायाम्निवा व-
तेरोगास्तत प्रकुरुतेवहन् ॥ तस्माद्धसन्तेरुर्माणि वमना-
दीनिकाग्येत् । गुर्वम्लस्निग्धमधुरदिवास्वप्नश्चवर्जयेत् ॥
व्यायामोद्धर्तनधूमकवलग्रहमजनम् । सुखाम्बुनाश्वाचवि-
धिशीलयेन्कुसुमागमे ॥ चन्दनागुरुदिग्धाङ्गोयवगोधूम-
भोजन । शारभशाशमेणयमासलायकपिजलम् ॥ भक्षये-
न्निगदसीधुपित्रेन्माध्वीकमेववा । वमन्तेऽनुभवेत्स्त्रीणांका-
जनानाचयोपनम् ॥

अर्थ-हेमन्तऋतुमें सजिन हुवा कक सूर्यकी तीक्ष्ण किरणोंसे च-
मान होकर देहकी अभिको भट करता है इसकारण वसन्त ऋतुमें बहुत
प्रकारके रोग उत्पन्न होतेहैं, अतएव वसन्तऋतुमें स्नान, दूध करनेकी
वमनादि क्रियाकरे । इसऋतुमें भारी, गूदी, तथा मधुर स्वादाली वस्तु और
स्निग्ध मोना छोड़देवे । व्यायाम, उत्थान, घूमपान, वदग्रहण (जंगल
आदिके रमके फुले करना) आंगोम अन्न लगाना, तृष्ठेक गन्ध-रोग
शीचादि क्रियाकरना, यव, गोधूम, शरभशा मास, रसगो-मस मास
हिमश मास, श्वेता मास, और चातकका मास भक्षण करना, और
सीधु तथा माध्वीक नामक मन्को पीना ठीकहै इसऋतुमें चनाकी और
मिषाके पानकी सुदृढता घटती है ।

ग्रीष्मऋत्यम् ।

मयूखैर्जगतःसारग्रीष्मेपेपीयतेरवि । स्वादुशीतद्रव्यस्नि-
ग्धमन्नपानतदाहितम् ॥ शीतसशर्करमन्थजाङ्गलान्मृगप-
क्षिण । घृतपयःसशाल्यन्नभजन्यग्रीष्मेनसीदति ॥ मद्यम-
ल्पनवापेयमथवासुबहूदकमूलवणाम्लकटूष्णानिव्याया-
मञ्चान्नवर्जयेत् । दिवाशीतगृहेनिद्रानिशिचन्द्रांशुशीतले ॥
भजेच्चन्दनदिग्धाङ्ग प्रवातेहर्म्यमस्तके । व्यजने पाणिस-
स्पर्शेश्चन्दनोदकशीतले ॥ सेव्यमानोभजेतास्यामुक्ताम-
णिविभूषितः । काननानिचशीतानिजलानिकुसुमानिच ॥
ग्रीष्मकालेनिपेवेतमैथुनाद्विरतीनरः ।

अर्थ-ग्रीष्मऋतुमें सूर्यकी किरणोंसे पृथ्वीके सर्व स्निग्ध पदार्थ सूख जातेहैं इसकारण इस ऋतुमें स्वादिष्ठ, शीतलद्रव्य और स्निग्धगुणवाले भोजन और पीनेके द्रव्योंका व्यवहार करना चाहिये । इसऋतुमें घूरा मिलाडुवा तक्र, जगली पशु और जगली पक्षियोंका मांस, साठोंके चावलोंका भात खावे दूध पीवे, जिनको मदिरा पीनेका अभ्यासहै वह थोड़ीसी या बहुतसा जल मिला डुइ मदिरा पीवें परन्तु जिनको मदिरा पीनेका अभ्यास नहीं है, उनको इस ऋतुमें मदिरापान अयोग्यहै ग्रीष्मऋतुमें लवण, सटे और चमपेरे रसके पदार्थ, उष्णवस्तु और व्यायाम (कसरत) करनी छोड़ दें । गरीममें चन्दन लगाकर दिनके समय हवादार शीतल घरमें और रात्रिके समय पवन और चंद्रमाकी किरणोंसे संयुक्त छतपर शयन करे । जय दुपहरको मचलसूर्यकी गरमीसे शरीर तप्तहोजाय तो चन्दनके जलको परंपर छिड़-ककर शीतल वयागसे और दागदासियोंका हान्य होनेसे, सावधान होनेके पीछे मणिमुक्ता धारणकर आराम करना चाहिये । फिर मैथुनसे निरंतर शीतल पुष्पवाटिका, शीतलजल और शीतल सुर्ग-धन्युक्त पुष्पोंका व्यवहार करे ।

गर्भाऋत्यम् ।

आदानदुर्वलेदेहेपक्ताभवतिदुर्वलः । मवर्षास्वनिलादीनां
दूषणेर्वाध्यतेपुनः ॥ भृवाप्पान्मेवनिस्पन्दात्पाकादम्ल-

जलस्य च। वर्षास्वयिवलेक्षीणे कुप्यन्ति पवनादयः ॥ तस्मात्साधारण सर्वो विधिर्वर्षासु चेप्यते । उदमन्थदिवा स्वप्नमवश्यायनदीजलम् ॥ व्यायाममातपञ्चैव व्यवायञ्चात्र वर्जयेत् । पानभोजनसंस्कारान्प्रायश्चित्तान्वितान्भजेत् । व्यक्ताम्ललवणस्नेहवातवर्षाकुलेऽहनि ॥ विशेषशीते भोक्तव्यवर्षास्वनिलशान्तये । अग्निसरक्षणवतायवगोधूमशालयः ॥ पुराणा जागले मांसैर्भोज्यायूषैश्च संस्कृतेः । पिवेत् क्षौद्रान्वितचाल्पमाध्वीकारिष्टमम्बुवा ॥ माहेन्द्रतप्तशीतवार्कपसारसमेव वा । प्रघर्षोद्धर्तनस्नानगन्धमाल्यपरोभवेत् ॥ लघुशुद्धाम्बरस्थानभजेदक्लेदिवार्पिकम् ।

अर्थ—आदान कालमें देहकी दुर्बलताके हेतुसे अग्निभी दुर्बल होजाती है, यह दुर्बलाग्नि वर्षाकालमें वातादि दोषाकारके अधिक दुर्बल होजाती है इस क्रतुमें पृथ्वीमेंगे वाफ उठती है, मेघ गरजते हैं जलका अम्ल पकजाता है और अग्निका बल न्यून होनेसे त्रिदोष कुपित होते हैं इस कारण इस क्रतुमें साधारण विधिका आचरण करना चाहिये वर्षाकालमें मटेमें जल मिलाकर पीना, दिनमें सोना, हिम और नदीके जलको सेवन करना, कसगन्त करना, घुषम बैठना और मैथुन करना, यह सब छोड़ना चाहिये इस क्रतुमें पानी और भोजनमें सहत मिलाकर सेवन करना चाहिये और वर्षायुक्त दिनमें अत्यन्त शीत होय तो वायुको शान्त करनेके लिये अम्ल और लवण रस तथा स्नेहयुक्त द्रव्य भक्षण करे । अग्निकी रक्षा करनेको पुगने जी, गेहूँ, मार्वीके चावल और जगली पशुओंके मांसका भक्षण, शोधित घृत, मधुयुक्त योडीसी माध्वीक मदिग अथवा अरिष्ट पान करे भयजल वा तप्तशीत जल (जो जल गरम होकर शीत किया होय,) या कृपञ्ज या गगेवरका जल पान करे, इस क्रतुमें शरीरका घर्षण, उपवन, स्नान, चन्दनादि सुगन्धित द्रव्य और पुष्पोंकी मालाका धारण, हलके और शुद्धवस्त्र पहना और श्लेष्मदित स्थानमें बाम करना चाहिये ।

शरदऋषयम् ।

वर्षाशीतोचितांगानामहसैर्जार्करश्मिभिः । तप्तानामाचित

पित्तंप्रायः शरदिकुप्यति ॥ तत्रान्नपानं मधुरं लघुशान्तसत्तित्त-
कम् । पित्तप्रशमनसेव्यमात्रयासुप्रकांक्षितैः ॥ लावान्क-
पिञ्जलानेणानुरभ्राञ्छरभाञ्छशान् । शालीन्यवांश्चगोधु-
मान्सेव्यानाहुर्धनात्यये ॥ तित्तस्य सर्पिषः पानविरेकोरक्त-
मोक्षणम् । धराधरात्यये कार्यमातपम्यचवर्जनम् ॥ वसा-
तैलमवश्यायमौदकानृपमामिषम् । क्षारदधिदिवास्वप्न-
प्राग्वातश्चात्रवर्जयेत् ॥ दिवासुर्यांशुसंतप्तनिशिचद्राशुशी-
तलम् । कालेनपक्वं निर्दोषमगस्त्येनाविपीकृतम् ॥ हसो-
दकमिति ग्यातशारदविमलजलम् । स्नानपानावगाहेषु
शस्यते तद्यथा मृतम् ॥ शारदानिचमाल्यानिनासांसिविम-
लानिच । शरत्काले प्रशस्यते प्रदोषे चन्दुरश्मयः ॥

अर्थ-वर्षाकालमें उस कालका शीतसे सचित हुआ पित्त शरद् ऋतुमें
सूर्यकी किरणोंसे सतापितहो (अनुपधरूपसे वात और पित्तभी कुपित
होते हैं) कुपित होता है इसकारण पित्तको शमन करनेके लिये धुधानुर
मनुष्य मधुर, शीतल, हलका और कड़वा अन्य तथा पीनेके द्रव्य यथाचित
मात्राके अनुसार सेवन करें और लवा, कपिञ्ज (सफेद तीतर,) एण
(कालाहरीण) भेदा, शरभ और सरगोसभादि जीवोंका मांस, सोंडीके
चाबूतोंका भात और जी, गेहूँ साबु । पित्तको शान्त करनेके लिये तित्त
मयुक्त घृत (पचतित्त घृतादि,) पीना चाहिये जो तित्त घृतके पीनेमें पित्त
शान्त न होवे तो जुलाबकी औषधियोंको सेवनकर पित्तको शान्त करें ।
फिर इससेभी शान्त न होवे तो रक्तमोक्षण (पस्त) कराना चाहिये ।
इस ऋतुमें शरीरको धूप न लगने दे, तथा वसा (चरबी) तेल, हिम, जल
और अनुपदेशके जीवोंका मांस, राग, दही, दिनका सोना और मचल
पृवट्टिशाकी वायुका मेवन छोड़ देना चाहिये । वर्षाके समय मेघ वर्षनेमें
जल नहीं होता है । यह इस जलके साथ विपेले पदार्थ मिलता है
और जलवा अम्ल पकताता है जय शरद् ऋतुमें यह जल स्वभावमें
पकतावे और अगस्त्यके उद्गममें विपरिहित होजाय तब उसको लेकर

गारेडिन सूर्यकी धूपमें और रातभर चंद्रमाकी किरणोंमें रखकर शीतल करे इसजलको 'हमोदक' कहते हैं । अगत् ऋतुमें स्नान, पान और कुट्टा करनेको हसोदकही श्रेष्ठ है तथा अमृतको समान है, इस ऋतुमें पुष्पोंकी माला तथा निर्मल वस्त्राको धारण करना चाहिये और प्रदोष (रात्रि) कालमें चंद्रमाकी किरणोंको सेवन करना चाहिये ।

अथ अथकृत्यंशवर्णनम् ।

चन्द्रान्वयेमाधुरवेश्यवर्यआहादगोत्रोद्विजवृन्दसेवी । दा-
न्तः सुशील शिवभक्तियुक्तोविद्यानिधि सर्वकलाप्रवीणः ॥
आसीत्पुराधर्मविदांवारिष्ठः श्रीबालमुकुन्दः करुणाकरश्च ।
यस्यप्रतापीबहुपुण्यकारीवभूवगोवर्द्धनदासपुत्रः ॥ हरिय-
शराजोहरिजनभक्त सुजनसुधर्मीविदितसुपुत्रः । गोपाल-
दामस्तनयोवभूवयोमेश्वरस्तस्यकुलेमहात्मा ॥ विज्ञान-
युक्त प्रथितप्रबोधो महाजन सर्वगुणेकसिन्धुः । तस्यसुत
पुरुषोत्तमदासोबुद्धियुत कथितोगुणरीलः ॥ कोविदरत्न-
महाजनसेवीसजनसगरतोविनयीच । मोतीरामइतिख्यात-
स्तनयस्तन्मध्यामिकः ॥ तत्सुत पद्मनेत्रोभूत्समृद्धोधार्मि-
कोवशीलघनश्यामदासनामातस्यपुत्रोगुणाग्रणीः । सीताग-
मश्चविख्यातस्तस्यपुत्रः प्रतावान् । विनिर्मितोयस्यविशाल-
कूपः प्रवर्ततेपट्टरगजमध्ये । अशीतिहस्तरयमुखविलोक्यम-
तिर्भवत्येवमुदीर्घिकायाः ॥ नतत्समोन्यः कूपोस्तिमुगदा-
वादपत्तने । अद्भुतोदर्शनीयश्चकीर्तिर्जागर्तिभूतले ॥ तस्यपु-
त्रास्त्रयश्रेष्ठादित्सुखरायमहर्द्धिमानः । मध्यमोरामजीगमो-
हरिभक्तोमहाशयः ॥ कनीयान्सत्यवान्वाग्म्यानंदरूपश्च-
विश्रुतः । तस्यपुत्रोमहानम्र शालिग्रामोव्यजायत ॥ तेनासौ-
निर्मितोग्रन्थोभिपजानासुखावहः । सर्वलोकोपकायजा-

नायचशुभाशुभम्॥शाकेवसुक्षितिवसुक्षितिसम्मितेव्देआ-
पादशुक्रविमलातिथिपञ्चदश्याम् । वारेभृगोसमगमत्प-
रिपूर्णतां वै ग्रन्थोनिवण्डुरिरभूषणनामधेयः ॥

अर्थ-चन्द्रवशीय माधुरवैश्य महाश्रेष्ठ आह्लादगोत्रमें अनेक सज्जन हुए, उनमें ब्राह्मणोंके सेवक, परमचतुर, सुशील, शिवभक्तियुक्त, विद्यानिधान, सर्वगुणोप प्रवीण, धर्मसज्जनोमें श्रेष्ठ, करुणासिन्धु श्रीबालमुकुन्दजी पहिले हुए, जिनके चडे प्रतापी और पुण्यकारी गोवर्धनदासजी हुए, उनके हरिभक्तोंके भक्त हरियशराय हुए, जो चडे महात्मा और मनुष्योंमें धर्मात्मा विख्यात हुए उनके महायोगेश्वर गोपालदासजी पुत्र हुए जो चडे विज्ञानी सब बातोंके जाननेवाले, महापुरुष, सम्पूर्ण गुणोंके सागर थे उनके गुत महाबुद्धिमान्, गुणज्ञ और शीलवान्, पढ़ितांमें रत्न, महात्माओंके सेवक, सज्जनोंकी संगतिमें रहनेवाले, नीतिवान् पुरुषोत्तमदास हुए उनके महाधर्मात्मा मोतीरामजी हुए उनके पुत्र धर्मपरायण और जितेन्द्रिय कमलनयन हुये, उनके पुत्र गुणियोंमें अग्रगण्य श्रीघनश्यामदास हुए, उनके पुत्र नसारामें विख्यात और महाप्रतापी सीतारामजी हुए, जिन्होंने पदपरगजमें बद्ध बड़ा कुआ घनाया, जिसके ८० हाथके मुरका विस्तार देकर यह जान पड़ता है कि, यह कोई घड़ा सगेवर है मुरादावादमें इस कुप्की समान दूसरा कुवा नहीं है, यह एक अद्भुत और देखने योग्य वस्तु है, जिसकी आज प्रशंसा हो रही (यह चौंटे कुबेके नामसे प्रसिद्ध) है उन सीतारामजीके महाबुद्धिमान् तीन पुत्र हुए, जिनमें ज्येष्ठ दिलेराम, मध्यम रामजीदाम, जो चडे हरिभक्त और महायशस्वी थे और छोटे सत्यवान् आनन्दरूप खुसालराय विख्यात हुए उनका पुत्र महानम्र में शालिग्राम

१ आनन्दरूप जो सुभाषरायनाम पिताहूए उनका वृत्तान्त यह है, सन् १८६० में एक मौसमी नामक स्थान भर्ती चतुर्गिनी मनारसिग मुगलशाहपर चढ़ आया, उस समय चौधरी सुभाषराय जो कि, बड़े तस्फी और प्रसारार मुगल बादमें मुख्य थे उन्होंने चतुर्गिनी प्रसार भोजन मण्डल में राखे और जहाँ-जहाँ गये दाता, पात इत्यादि सामानों पढ़े-पाठे और लोगोंके घरमें बचाया उस समय में शिवा आनन्दगढ़वासी १० बरसी अगम्य थी, उन्होंने भी बहुत कुछ मिष्टान्न आदि सामान मौसमीको भेंट का, हम समय में मिताजीके लोक कान में कि, आपने भी सुभाषकी सन्तान की मुझसे इस सुभाषरायको उठ दिजिये उस मौसमी नामी सुभाषराय कहने लगे, इस वजह से सुभाषरायनाम पिता हुए ।

हुआ मैंने वैद्योंको ३ सुख देनेवाला सर्व सत्कारके उपकारके लिये और शुभाशुभके जाननेके लिये यह ग्रन्थ बनाया है इसके १८१८ आपाठ सुदी पूर्णमासी शुक्रवारको यह "निघण्टुमृगण" समाप्त हुआ ॥

इति श्रीमायुरपैश्वर्यशोद्धवमसिमुत्तुङ्गग्रानिनिशाग्रिप्रामनेश्वर
शाठिप्रामनिघण्टुभूषणे उत्तरार्द्ध मिश्रवर्गं समाप्त ॥ २ ॥

शुभमस्तु ।

समाप्तोऽयं ग्रन्थः ।



श्रीहरिः ।

अथ परिशिष्टभागः ।

मायाफलनामानि ।

मायाफलमाइफलचमाइकाछिद्राफलमायिचपंचनामकम् ।

अर्थ-मायाफल, माइफल, माइका, छिद्राफल और मायि (मायुक, केसरजन, शिशुभेषज)

सस्कृतभाषामें

मायाफल ।

हिन्दीभाषामें

माजूफल ।

बगभाषामें

माइफल ।

गुजरातीभाषामें

माया ।

मराठीभाषामें

मायफळ ।

इंग्रेजीभाषामें

गालनट । Gallant

लैटिन्भाषामें

ककम् इन्फेन्सोरिया । Quercus infectoria

फारसीभाषामें

माजुम् ।

अरबीभाषामें

आप्ता समरतुल तुफा ।

मायाफलगुणा ।

मायुकशीतलरूक्षकपायलघुदीपनम् ।

विपाकेकटुकग्राहिकफपित्तहरपरम् ॥ (शौ०नि०)

अर्थ-माजूफल-शीतल, रूखा, कमेला, हलका, अग्निप्रदीपक, पचनम् चरपग, मलरोधक और कफपित्तनाशक है ।

भण्यम् ।

उष्णमायफलप्रोक्तन्तीदृशोऽथिल्यनाशकम् ।

प्रशस्तवातहृत्प्रोक्तपूवन्वण्टकारके ॥ (नि०२०)

अर्थ-माजूफल-गरम, वाहण, शिथिलतानाशक, प्रशस्त और वात-विनाशक है ।

भण्यम् ।

मायाफलंवातहरकटुष्णकथैथिल्यसकोचककेशकाण्ड्यदम् ।

अर्थ-माजूफल-वातनाशक, चरपग, गरम, शिथिलताको नैकुचिन करनेवाला और केशोंको काग करनेवाला है । (रा० नि०)

विवरण । माजूके वृक्ष वनोंमें होते हैं, आकृति सरूकी समान होती है, इसके फलोंमें मकरीकी समान नीले रंगके कीड़े घुमजाते हैं और उन फलोंका रस निकालकर फलोंको खुषल कर देते हैं उसमें अपने चबे रखते हैं, जिसप्रकार अडेमें जीव बढ़ताहै उसीप्रकार इसमें जीव बढ़ताहै, पूर्ण होनेपर निकल जाताहै, इसकारण सब फल काणे होते हैं जो फल काणे नहीं होते उनमें मरादुआ जीव निकलता है । यह वास्तवमें फल नहीं होता किन्तु वृक्षमेंही फलसे दीखतेहैं इसकारण इनकी छाल और बीज नहीं होते ।

समुद्रफलनामानि ।

समुद्रनामप्रथमपश्चात्फलमुदाहरेत् ।

समुद्रफलमित्यादिनामवाच्यभिपश्ये ॥

अर्थ—समुद्रफल, (अब्धिफल, उदधिफल, सिन्धुफल, अम्बुधिफल) इत्यादि ।

| | |
|-----------------|----------------------------|
| संस्कृतभाषाम | समुद्रफल । |
| हिन्दीभाषामें | समुद्रफल । |
| मराठीभाषामें | समुद्रफल । |
| गुजरातीभाषाम | समुद्रफल । |
| कर्णाटकीभाषाम | समुद्रफलकाया । |
| तेलिङ्गीभाषामें | व्यागचेट्टु । |
| हैदिन्भाषामें | व्यागटोनिया प्कयुंङ्गुला । |

Parringtonia Acutangula

व्या० रेसिमोसा । B racemo १

समुद्रफलगुणाः ।

फलसमुद्रस्यकटूष्णकारिवातापहभूतनिरोधकारि ।

त्रिदोषदावानलदोषहारिकफामयभ्रान्तिविरोधकारि । (रा०)

अर्थ—समुद्रफल—चरपग, गग्ग, वातविनाशक, भूतवाधाको दूर करने-वाला, त्रिदोष, दावानलदोष, कफरोग और भ्रान्तिको हरनेवाला है ।

अपघ्न ।

समुद्रस्यफलचोष्णतिक्तचैवत्रिदोषजित । वातचभूतनाथां
चकफभ्रान्तिशिरोरुजम् ॥ दोषदावानलस्यचनाशयेदि-
तिकीर्तिनम् । जलेनपृष्ठापीतचेत्कृमिनाशकरपरम् ॥ नि० २०)

अर्थ-समुद्रफल-गरम, कड़वा, त्रिदोषनाशक तथा वात, भूतवाधा, कफ, भ्रान्ति, शिरोरोग और दावानलाख्य दोषाको दूर करे है । इसको जलमें घिसकर पीनेसे कृमिरोग दूर होता है ।

विवरण । इसके वृक्ष कोंकणदेशकी ओर अधिकतासे होते हैं, इस वृक्षपर डोरे आते हैं उन डोरोंमेंसे तीन धागवाले पट्टी इलायचीके समान पट निकलते हैं । उनको समुद्रफल कहते हैं ।

ब्रह्मदण्डीनामानि ।



ब्रह्मदण्डचजदण्डीचकण्टपत्रफलाचसा ॥

अर्थ-ब्रह्मदंडी, अजदंडी, कण्टपत्रफला ।

संस्कृतभाषामें

ब्रह्मदण्डी ।

हिन्दीभाषामें

ब्रह्मदंडी, (उटकरगारा) ।

वगभाषामें

छागलदोंडी, वामनदोंडी ।

मराठीभाषामें

ब्रह्मदंडी ।

गुजरातीभाषामें

ब्रह्मदंडी, तन्कगे ।

कर्णाटकीभाषामें

ब्रह्मदंडी ।

इंग्रेजीभाषामें

थिस्टल । Thistle

लैटिनभाषामें

थिचोलीपीमूलेवर्गिना । *Tricholapais glaberrima*

ब्रह्मदण्डीगुणः ।

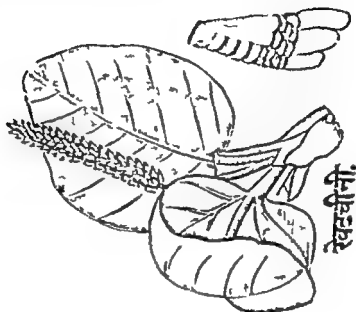
ब्रह्मदंडीभेददुष्णातित्कारुफणिनाशनी ।

वातरोगश्चोफचनागयेदितिकीर्त्तिता ॥ (नि०२०)

अर्थ-ब्रह्मदंडी-गरम, कड़वा, कानाशक तथा वातरोग और सुजनको दूर करे है ।

विवरण । इसका क्षुप होता है, इसके पत्ते और फलोंपर काटे होते हैं यह प्रायः जगलमें अधिकतामें होती है ।

रेवट्चीनीनामानि ।



रेवट्चीनीचपीताचगधिनीपीतमृलिका ।

अर्थ—रेवट्चीनी, पीता, गधिनी पीतमृलिका (पीतमृली) ।

सस्कृतभाषामें पीतमृली ।

हिन्दीभाषामें रेवत (२) चीनी ।

वगभाषामें रेवचीनी ।

मराठीभाषामें रेवाचीनी ।

इंग्रेजीभाषामें रुबब ।

लैटिनभाषामें रेडगेटिक्स ।

फारसीभाषामें रेबन ।

अरबीभाषामें गवन ।

रेवट्चीनीगुणा ।

रेवट्चीनीरुदुस्तिक्तावल्यासामृदुग्रेचनी ॥

दन्त्यजीर्णमतीमाग्वह्निमाद्यमगेचक्रम ॥

विदसगर्भीनपित्तचदुष्टव्रणविगेहिणी ।

अर्थ-रेवटचीनी-चरपरी, कडवी, बलकारक, मृदुचेची तथा अनीज, जेतिमाग, मदाग्नि, अरुचि, विद्वध, शीतपित्त नीर दुष्टमणको दूर करे हे ।
 विवरण । रेवटचीनीका क्षुप होताहे, जड अर्थात् कद पीले रंगका होताहे इमीको रेवटचीनी कहते हैं । इसके सत्तको उमारे देवन कहते हैं ।

चाहनामानि ।



चाहतुचविकाचाहाद्वितीयातृणपत्रिका । जायतेदक्षिणेद-
 गेसाचाहेतिप्रकीर्तिता ॥ निर्गुण्डीपत्रवत्पत्रापरङ्गीपादि-
 हागता । अपरातृणचाहेतितृणरूपासुराष्ट्रजा ॥

अर्थ-चाह, चविका, चाहा । यह नाम चाहके हैं । हमारे प्रकारकी चाहके नाम उष्णपत्रिकादि है । चाह दक्षिणदेशमें उत्पन्न होती है, चाह हमनामसे सर्वत्र प्रसिद्ध है । इसके पत्ते निर्गुण्डीके पत्तोंकी समान होते हैं और यह दूसरे टीपसे आई है अर्थात् पहिले हिन्दुस्थानमें नहीं होतीथी । और एक तृणचाह होती है जिसको मग्नतमें तृणचाह, तृणरूपा और मुगष्टजा कहते हैं ।

संस्कृतभाषामें

चाह ।

हिन्दीभाषामें

चा ।

बगभाषामें

चाह ।

मराठीभाषामें

चहा ।

गुजरातीभाषामें

चा ।

ईरानीभाषामें

टी । Tea

लैटिनभाषामें

यिपार्चिनेनलीग । Tea ।

पार्सीभाषामें

चागाताई ।

चाहगुणाः ।

तीक्ष्णोष्णातुवराचाहादीपनीपाचनीलघु । कफपित्तहरी
चैव किंचिद्वातप्रकोपिनी ॥ द्वितीयातृणरूपाया सुसुगंधासु-
रापूजा । ज्वरघ्नीपाचनी हृद्या कफकासनिवर्हणी ॥

अर्थ—चाह—तीक्ष्ण, गरम, कपेली, अग्निको दीपन करनेवाली पाचक, हल्की, कफपित्तनाशक और कुष्ठेक वातको कुपित करनेवाली है । दूसरी तृणरूप, सुगंधित और सुराप्रादेशमें जो उत्पन्न होती है वह तृणचाह ज्वरना-
शक, पाचक, हृदयको हितकारी तथा कफ और खोंत्सीको दूर करे है ।

विवरण । चाहा पहिले चीन आदि देशोंसे आतीथी किन्तु अब भारतके अनेक भागोंमें चाहकी खेती अधिकतासे होनेलगी है । हमारे भारतवासि-
योंको भी देखादेखी चाहका अधिक शौक बढ़ने लगा है ।

तमासुनामानि ।



तमासु क्षारपत्राचकृमिघ्नीधृम्रपत्रिका ।

| | | | |
|---------------|--------------|-----------|---|
| अर्थ—तमासु, | क्षारपत्रा | कृमिघ्नी, | धृम्रपत्रिका (बघभृङ्गी, ताम्ररुद्रिक) |
| तस्मैतभाषामे | क्षारपत्रा । | | |
| हिन्दीभाषामे | तमासु । | | |
| बगभाषामे | तमासु । | | |
| मराठीभाषामे | तमासु । | | |
| गुजरातीभाषामे | तमासु । | | |

इम्रेजीभाषामें
लैटिनभाषामें
फारसीभाषामें
अरबीभाषामें

इण्डियनटोबाको । Indian tobacco
निकोटिनाटोबाक । Nicotiana glauca
तम्बाक ।
तम्बाक ।

तमासुगुणा ।

तमासु.पित्तलस्तीक्ष्णश्चोष्णोवस्तिविशोधनः । मदकृद्भा-
मकस्तिक्तोदृष्टिमाद्यकरः सरः ॥ वामक कटुकोरुच्योवा-
तस्यानुविलोमकः । कफकासश्वासवातकोष्ठवातकृमीजयेत ॥
दतशुकदृष्टिरुजोलिभायूकादिकान्गदान् । वृश्चिका-
दिविपशोथनाशयेदितिकीर्तितः ॥

अर्थ-तमासु-पित्तकारक, तीक्ष्ण, गरम, वस्तिशोधक, मदकारक,
भ्रमकारक, कटुवा, दृष्टिको मद अर्थात् कम कम्बेवाला, मारक, वमनका-
रक, चरपरा, रुचिकारक, वातानुलोमक तथा कफ, खैसी, श्वास, वात,
कोष्ठवात, कृमिगोग, दतरोग, शुक्रगोष, दृष्टिगोग, लीख, ज्वर, वृश्चिकाआदिका
विष और सूजनको दूर करेई ।

विवरण । तमासुके छुप सर्वे देशोंमें होते हैं ।

इषट्गोष्ठनामानि ।

इषट्गोलन्निग्धनीजं श्लक्ष्णजीरश्चकीर्तितः ॥

अर्थ-इषट्गोल, निग्धनीज, श्लक्ष्णजीर (निग्धनीरक, श्लक्ष्णजीरक)

संस्कृतभाषामें

इषट्गोल ।

हिंदीभाषामें

इमवगोल ।

मराठीभाषामें

इसवगोल ।

गुजरातीभाषामें

उयमुजीर ।

तैलङ्गीभाषामें

इषगुल ।

इंग्रेजीभाषामें

इषगुलसीड । Isidrin Seed

लैटिनभाषामें

प्लेन्टैगोइषगुल । Plantago major

फारसीभाषामें

इषगुल ।

अरबीभाषामें

यजगुलना ।

इषट्गोलगुणा ।

इषट्गोलपरवृष्यमधुरमादिशीतलम् ।

पिच्छिलतुवरकिंचिद्धातकृत्कफपित्तहृत् ॥

रक्तातीसारास्रपित्तनाशयेदितिकीर्तितम् ।

अर्थ-ईसबगोल-अत्यन्तपुष्टिकारक, मधुर, मलरोधक, शीतल, पिच्छिल, कपेला, किंचित् वातकारक, रुफपित्तविनाशक, रक्तातिसार और रक्त-पित्तनाशक है ।

विवरण । ईसबगोल खेतामें बोयाजाताहै इसके धुप होतेह, ईसबगोल किसीप्राचीन ग्रंथमें नहीं लिखा केवल मोरेश्वरकृत वैद्यामृत और निघटुस-ग्रहमें लिखाहै मालूम होताहै कि, यह ग्रंथमें यूनानी चिकित्साकी पुस्तका-मेंसे अनुभव करके लिखागयाहै ।

सुधामूलीनामानि ।

अमृताजीवनीजीवासुधामूल्यमृतोद्भवा ।

प्राणदाप्राणभृत्प्रोक्तावीरकदामतावुधे ॥

अर्थ-अमृता, जीवनी, जीवा, सुधामूली, अमृतोद्भवा, प्राणदा, प्राण-भृत् और वीरकदा ।

संस्कृतभाषामें

सुधामूली ।

हिन्दीभाषामें

मालमिश्री ।

मराठीभाषामें

सालमिश्री ।

सुधामूलीगुणा ।

दीपनीतुसुधामूलीशुककृद्वलवर्द्धनी । रक्तदोषहरीहृद्राकाम-
सजननीपरः ॥ रसायनीपगृप्यावय स्थापुष्टिदामता । (आ.स.)

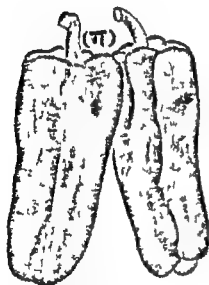
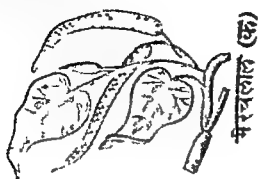
अर्थ-सालमिश्री-अग्निप्रदीपक, शुकजनक, रक्तकारक, रक्तदोष-निवारक, हृदयको हितकारी, कामदेवको उत्पन्न करनेवाली, रसायन, अत्यन्त वीर्यवर्द्धक, अवस्थाग्राहक और पुष्टिकारक है ।

विवरण । सालमिश्री हिमाचल और तिब्बत आदि पर्वतापर उत्पन्न होती है कन्द सफेदरंगका होताहै । दूसरी मालमिश्री काबुल-मलर घुग्गा आदि देशोंमें जाती है । और अनेक धूल आदि, प्याज, लहसुन, अरबी आदि कड़ोंके द्राग कृत्रिम मालमिश्री बनाकर बेचते हैं ।

रसमरिचनामानि ।

कटुवीरोज्ज्वलातीक्ष्णातीव्रशक्त्यजडेतथा ॥

अर्थ-कटुवीर्य, उज्ज्वला, तीक्ष्णा, तीव्रशक्ति, अजडा (कुमग्नि, रक्तमग्नि)



सल्लतभाषामं

दिन्दीभाषामं

वगभाषामं

मगदीभाषामं

भौरक्षीभाषामं

मैत्रीभाषामं

उद्विभाषामं

पाग्मीभाषामं

फट्बारा ।

लालमिग्न ।

रुक्माग्न, शाल् ।

लालमिग्नी ।

नोकोमग्नि ।

कायनपेष ।

काष्ठाग्निरास ।

विन्दुभिः सुत ।

षडुवीरागुणा ।

कटुवीराग्निजननीबलासघ्नीचदाहिनी । हन्त्यजीर्णविप्रची-
ञ्चव्रणक्लिन्नसुदारुणम् । तन्द्रामोहप्रलापञ्चस्वरभेदमरोचकम् ॥

अर्थ—लालमिर्च-अग्निप्रदीपक, बलासनाशक, दाहजनक, तथा अजीर्ण,
विपूचिका, दारुण और क्लिन्न व्रण, तन्द्रा, मोह, प्रलाप, स्वरभेद और
अरुचिको दूर करेहै ।

विवरण । लालमिर्चके धुप मकोयके धुपके समान होते हैं, पूरु सुफेद
रंगके आते हैं फल अपक्व अवस्थाम हरे और पकनेपर पीले होकर छाल
होजाते हैं । मिर्च छोटी बड़ी देसी, देशान्तरीय अनेक प्रकारकी होती है ।

वनकुलत्थनामानि ।

कुलत्थादृक्प्रसादाचप्रोक्तारण्यकुलत्थिका ।

कुलानीलोचनहिताचक्षुष्याकुम्भकारिका ॥

अर्थ—कुलत्था, दृक्प्रसादा, अरण्यकुलत्थिका, कुलानी, लोचनहिता,
चक्षुष्या, कुम्भकारिणी (कुलत्थिका, कुलमाप, कुरुविल्वक, काननोत्था,
चिपिटा)

संस्कृतभाषामें

हिन्दीभाषामें

वगभाषामें

मराठीभाषामें

गुजरातीभाषामें

कर्णाटकीभाषामें

इंग्रेजीभाषामें

लैटिनभाषामें

फारसीभाषामें

अरबीभाषामें

कुलत्था ।

वनकुलथी, चाथु ।

वनकुलथी ।

गनरुद्धीय, रानदुलगे ।

चमेडय, भारयनुभरण ।

कण्णमुट्कीनर्वाज ।

फोरलीवट्केशिया । Four leaved casia

केशियाएवसम् । Cassiaebus

चइमक ।

चइमसून वइर्माज ।

अम्य गुणा ।

वन्योद्भवःकुलित्थस्तुकट्टुस्तित्तश्चभीतल । व्रणरोपणका-
नीचचक्षुष्योऽर्शविनाशक ॥ कफशूलविपस्फोटकंहृदि-
काविनाशक । नेत्ररोगमलस्तम्भमाध्मानचविनाशयेत् ॥

(नि० २०)

अर्थ-चाधु (कुलित्य)-चरपगी, कद्वी, शीतल, वणको भरनेवाली, नेत्रोंको हितकारी, चवासीरको दूर करनेवाली तथा कफ, शूल, विष, रफोट, कण्टू, दिका, नेत्ररोग, मलस्तम्भ और आध्मान रोगोंको हरनेवाली है।

विवरण । बनकुल्यीके धुप वनमें होते हैं । पूल कोमलके समान लगते हैं इसके ऊपर फली आती है इससे प्रकारकी बनकुल्यीका धुप छत्तासा होता है।
महाराष्ट्रीनामानि ।



महाराष्ट्र्यांचराष्ट्रीचतीक्ष्णामरहट्टिकामता ॥

अर्थ-महाराष्ट्री, राष्ट्री, तीक्ष्ण, मरहट्टिका ।

संस्कृतभाषामें महाराष्ट्री ।

हिन्दीभाषामें मरेटी ।

मराठीभाषामें मराठी ।

गुजरातीभाषामें मरेटी ।

इंग्रेजीभाषामें पेनरोयल Pennyroyal

लैटिनभाषामें मेन्वाप्युलेजिय MenthaPulegium

फारसीभाषामें याबुनेगाउ ।

अरबीभाषामें उकहोवान ।

महाराष्ट्रीगुणाः ।

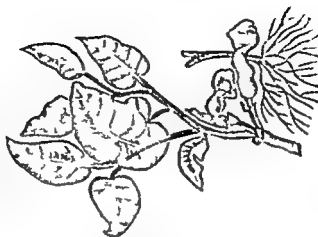
महाराष्ट्रीकटुस्तीक्ष्णासोष्णावातकफातिहृत् ॥ (गो० नि०)

अर्थ-मरेटी-चरपगी, तीक्ष्ण, गरम तथा वात और कफकी पीडाको दूर करे ।

विवरण । मरेटीके पत्रे धुप होते हैं, पत्रे मुड़मके समान और इनमें पानी तथा प्यास रोगके दारु लगते हैं यह अस्वफले के समान होता है ।

कीटमारीनामानि ।

कीडामारी



कीटारि. कीटमारीचभृगीकीटकहातथा ॥

अर्थ—कीटारि, कीटमारी भृगी, कीटकहा ।

संस्कृतभाषामें कीटमारी ।

हिन्दीभाषामें कीडामारी ।

मराठीभाषामें किडामार ।

गुजरातीभाषामें कीडामारी ।

तैलिङ्गीभाषामें गीरीदागुदापा ।

इंग्रेजीभाषामें बेफ्टीपेटेडयर्थवर्ट Bractenb Birthwort

लैटिनभाषामें एरिष्टोलोचियामेकटीका Aristolochia bractea

अस्या गुणा ।

वातश्लेष्मज्वरहरासध्यस्थितिप्रसारिणी ॥

अर्थ—कीडामारी—वातकफज्वरनाशक, तथा सधि और अस्थियोंको फैलानेवाली है ।

विवरण । कीटमारीके धुप होतेहैं विशेष करके खेतोंमें उत्पन्न होजातीहैं, इसपर डोरे आतेहैं, वह डोरे कच्ची अवस्थामें हरे रंग और रेखायुक्त होतेहैं । पक्वनेपर उनमेंसे अपने आप फटकर काले रंगके बीज निकलतेहैं ।

खपेंदशानामानि ।

सर्पदंष्ट्रापीतपुष्पागुच्छपत्राविपापहा ॥

अर्थ—सर्पदंष्ट्रा, पीतपुष्पा, गुच्छपत्रा, विपापहा ।



सस्कृतभाषामें
हिन्दीभाषामें
मराठीभाषामें
गुजरातीभाषामें
इंग्रजीभाषामें
लैटिनभाषामें
फारसीभाषामें
अरबीभाषामें

सर्पदण्ड ।
सिताव ।
सबाप ।
सताय ।
कोमनरु Commourne
रुटाग्रैविपोलेन्स Ruta Graveolens
इस्पद ।
हम्मल ।

उपेन्द्रशुक्ला ।

सर्पदण्डसराचोष्णातिकाकफविनाशिनी ।

वातनाशकरीप्रोक्ताविचारज्ञेयविकित्सके ॥ (नि० २०)

अर्थ-सिताव-गायक, गरम, कटवी, कफनाशक और वातको हरने-वाली है ।

विवरण । सितावके शुष्क भाग पुष्पवाटिका और घरगमलोंमें मनुष्य लगाते हैं । सिबाप निघण्टुरत्नाकरके और फिती प्रार्थना ग्रंथमें सिताव नहीं है ।

उपेन्द्रनामानि ।

उष्णकटोथकण्डालु कम्मादनएवमः ॥

अर्थ-उष्णकण्ठ, कण्ठाद, कम्मादन (उत्कण्ठ, कण्ठन, शृगान, शुनका धन, सीदणाग्र, पृष्ठगुच्छ, मुराईककनापद, उत्कटोत्ताट)

संस्कृतभाषामें

उष्णकट ।

| | |
|-----------------|---------------------------------------|
| हिंदीभाषामें | ऊँटकटीरा । |
| मराठीभाषामें | उटकटाग, उताटी । |
| गुजरातीभाषामें | उत्कटो, झूलियो । |
| इंग्रेजीभाषामें | थिस्टल । Thistle |
| लैटिनभाषामें | एकिनोप्स एकीनटम् । Echinops echinatus |
| | अस्या गुणा । |

उत्कण्टकः कटुस्तिक्तः कफवातहरोलघुः ।

तन्मूलपानतः स्त्रीणां शीघ्रप्रसवकारकः ॥ (शो०नि०)

अर्थ—ऊँटकटीरा—चरपरा, कडवा, कफवातनाशक, हल्का, इसकी जड़को जलमें पीसकर पानिसे स्त्रियोंके शीघ्रप्रसव होजाता है ।
अन्यथा ।

उत्कटारुचिदाचोष्णातिक्तावृष्याप्युदाहृता । मूत्रकृच्छ्रपित्त-
वातमेहतृष्णाचहृद्गुजम् ॥ विस्फोटकनाशयति वीजमस्यास्तु
शीतलम् । वृष्यतृप्तिपरंचैव मधुरचप्रकीर्तितम् ॥ (नि०र०)

अर्थ—ऊँटकटीरा—रुचिकारक, गरम, कडवा, वीर्यवर्द्धक तथा मूत्रकृच्छ्र, पित्तवात, प्रमेह, तृषा, रूयरोग और विस्फोटकको दूर करे है । इसके वीज—शीतल, वीर्यवर्द्धक, तृप्तिकारक और मधुर है ।

विवरण । ऊँटकटीके थुप होते हैं, इसके पत्ते और फलोंमें फाटे होते हैं । इसकी डालियोंमें तीक्ष्ण अणिवाले काटेयुक्त डोरे लगने हैं । हमारे देशमें कोई कोई अजान वैद्य सत्यानासी कटीकोही ऊँटकटीरा गाते हैं ।

मधुरगन्धनामानि ।

तिमिर-कोकदत्ताचट्टिवृन्तो नखरजकः ।

अर्थ—तिमिर, कोकदत्ता, द्विवृन्त, नखरजक (मोदरा, गगगभां, रजका, नखरजिनी, मुगधपुष्पा, रागागी, यवनेष्टा) ।

| | |
|----------------|---------|
| गसूतभाषामें | नखरजक । |
| हिंदीभाषामें | मेहदी । |
| बंगभाषामें | मेदी । |
| मराठीभाषामें | मेंदी । |
| गुजरातीभाषामें | मेर्ग । |

तैलिङ्गीभाषामें
इंग्रेजीभाषामें
लैटिन्भाषामें
फारसीभाषामें
अरबीभाषामें

गोरंम् ।
हेना । Henna
लैसोनिया आल्बा । *L. assonia alba*
हिना ।
हिनाजकान काफ़ल्युन ।
अम्पा गुणा ।

रक्तरगादाहहनीवान्तिकृच्छ्रेष्मकुष्ठहा ॥
बीजमस्याग्राहकंतुशोपकंचप्रकीर्तितम् ॥
भूतग्रहाणांदोषचज्वरचैवविनाशयेत् ।

अर्थ-मेदी-दाहनाशक, वमनकारक, कफ और फोड़को दूर करे है ।
इसके बीज-मल्होषक, शोषक तथा भूतघाता, मद्दोष और ज्वरको
दूर करे है ।

विवरण । मेदीके वृक्ष चागोंम घोएजाते है, पत्ते छोटे छोटे होते है,
मेदीके फूल मौरकी समान, छोटे सफेदरंगके और सुगंधियुक्त होते है इसके
पत्तोंको पीसकर हाथपावपर लगानेसे लाल होजाते है तथा गरमी और
हाथपावादिकी दाह दूर होजाती है । कितनेक देशी वैद्य इसके बीजोंको
रेणुका कहते है ।

अधपुष्पीनामानि ।

अंधपुष्पीचरोमालुगोलोमीदार्विकापिच ।
अधोमुखाधेनुजिह्वाअधःपुष्पीचसप्तधा ॥

अर्थ-अधपुष्पी, रोमाड, गालोमी, दार्विका, अधोमुखा, धेनुजिह्वा,
अध पुष्पी (अवाधपुष्पी, मुरसा, गधपुष्पिका)

संस्कृतभाषामें
हिंदीभाषामें
बंगभाषामें
मराठीभाषामें
गुजरातीभाषामें
सिंधिभाषामें

अधपुष्पी ।
अपादुली, आपादुली ।
धोरदुली ।
पायरी ।
उपादुली ।
ट्रांसोपेस्मादिक । *Transopescma*

अस्या गुणा ।

अन्धपुष्पीचक्षुष्यागृहगर्भापकर्षिणी ॥

अर्थ-अधातुली-नेत्रांको हितकारी और गृहगर्भको अपकर्षण करनेवाली है ।

विवरण-अधातुलीका क्षुप हाता है उसकी डडी कुछ लालीलिये होती है, पत्ते लम्बे गोल और गेमयुक्त होते हैं, फल असमानी रंगका और नीचेको रहता है ।

दण्डोत्पलनामानि ।

दण्डोत्पलसहदेवाविषमज्वरनाशिनी । दण्डोत्पलात्रिधा प्रोक्तापुष्पवर्णप्रभेदतः । गोवन्दनीदेवसहापीतदण्डोत्पल स्मृतम् । रक्तदण्डोत्पलाप्राहुर्विश्वदेवातथापरा ॥ श्वेतदण्डोत्पलप्रोक्तदण्डोत्पलाचदेविका ।

अर्थ-दण्डोत्पला, सहदेवा और विषमज्वरनाशिनी यह साधारण दण्डोत्पलके नाम हैं । दण्डोत्पल पुष्पोंके भेदसे तीनप्रकारका है । पीत, रक्त और श्वेत, गोवन्दनी, देवमहा, (गधवल्ली, सहदेवी, महा) यह पीलेदण्डोत्पलके नाम हैं । विश्वदेवा, (सहदेवा) यह लालदण्डोत्पलके नाम हैं । दण्डोत्पला, देविका यह सफेद दण्डोत्पलके नाम हैं ।

संस्कृतभाषामें

सहदेवा, दण्डोत्पला ।

हिन्दीभाषामें

दण्डोत्पल तीनप्रकारका ।

बगभाषामें

डानिपोलाडानकुर्नी, दंडवल्ता ।

मराठीभाषामें

ओमारी ।

गुजरातीभाषामें

मेटरडी । (Acoratum (Cassia))

लैटिनभाषामें

बरनोनियामार्ड निगिया Vernonia Cinerea

त्रिविधपुष्पापहगुणा ।

दण्डोत्पलक्षयश्वासकासजिह्वद्विदीपनम् ॥

अर्थ-तीनों प्रकारके दण्डोत्पल-क्षय, श्वास और रागीकों दूर करे द तथा अग्निको दीपन करे हैं ।

विवरण । दण्डोत्पलके क्षुप प्राय अनुप रेशमें होते हैं, कुछ मरेड, पीला, लाल और किसी किसीके बालेगुलाभी जाते हैं, पत्ते अनुपुर्णानी

तेलिङ्गीभाषामें
इमेजीभाषामें
ऐटिन्भाषामें
फारसीभाषामें
अरबीभाषामें

गोरट्म ।
हेना । Henna
लॅसोनिया आन्वा । *Lansonia alba*
हिना ।
हिजाजकान काफलयुन ।
अम्पा गुणा ।

रक्तरगादाहहंजीवान्तिकृच्छ्रेष्मकुष्ठहा ॥
बीजमस्याग्राहकतुशोपकचप्रकीर्तितम् ॥
भूतग्रहाणांदोषंचज्वरचैवविनाशयेत् ।

अर्थ-मेनी-दाहनाशक, वमनकारक, कफ और कोष्ठको दूर करे है ।
इसके बीज-मलरोधक, शोषक तथा भूतपाधा, ग्रहदोष और ज्वरको
दूर करे है ।

विवरण । मेदीके पृष्ठ बागोंमें चोपनाते हैं, पंच छोटे छोटे होते हैं,
मेदीके पृष्ठ मौसकी समान, छोटे मकेदगके और सुगंधियुक्त होते हैं इसके
पत्तोंको पीसकर हाथपावपर लगानेसे लाल होजाते हैं तथा गरमी और
हाथपावादिकी दाह दूर होजाती है । कितनेक देगी बिघ इसके बीजाको
रेणुका कहते हैं ।

अथपुष्पीनामानि ।

अथपुष्पीचरोमालुगोलोमीदार्विकापिच ।
अथोमुरावेनुजिह्वाअथ पुष्पीचसप्तधा ॥

अर्थ-अथपुष्पी, रोमाद्रु, गोलोमी, दार्विका, अपोमुरा, वेनुजिह्वा,
अथपुष्पी (अथपुष्पी, मुरा, मंथपुष्पिका)

गंरुतभाषामें अथपुष्पी ।
हिन्दीभाषामें अथाहूनी, आथाहूनी ।
बंगभाषामें चोगुली ।
मराठीभाषामें पादरी ।
गुजरातीभाषामें उपाहूनी ।
ऐटिन्भाषामें ट्राकीदेम्माहिक ।

7-10-11-12-13-14-15-16-17-18-19-20-21-22-23-24-25-26-27-28-29-30-31-32-33-34-35-36-37-38-39-40-41-42-43-44-45-46-47-48-49-50-51-52-53-54-55-56-57-58-59-60-61-62-63-64-65-66-67-68-69-70-71-72-73-74-75-76-77-78-79-80-81-82-83-84-85-86-87-88-89-90-91-92-93-94-95-96-97-98-99-100-101-102-103-104-105-106-107-108-109-110-111-112-113-114-115-116-117-118-119-120-121-122-123-124-125-126-127-128-129-130-131-132-133-134-135-136-137-138-139-140-141-142-143-144-145-146-147-148-149-150-151-152-153-154-155-156-157-158-159-160-161-162-163-164-165-166-167-168-169-170-171-172-173-174-175-176-177-178-179-180-181-182-183-184-185-186-187-188-189-190-191-192-193-194-195-196-197-198-199-200-201-202-203-204-205-206-207-208-209-210-211-212-213-214-215-216-217-218-219-220-221-222-223-224-225-226-227-228-229-230-231-232-233-234-235-236-237-238-239-240-241-242-243-244-245-246-247-248-249-250-251-252-253-254-255-256-257-258-259-260-261-262-263-264-265-266-267-268-269-270-271-272-273-274-275-276-277-278-279-280-281-282-283-284-285-286-287-288-289-290-291-292-293-294-295-296-297-298-299-300-301-302-303-304-305-306-307-308-309-310-311-312-313-314-315-316-317-318-319-320-321-322-323-324-325-326-327-328-329-330-331-332-333-334-335-336-337-338-339-340-341-342-343-344-345-346-347-348-349-350-351-352-353-354-355-356-357-358-359-360-361-362-363-364-365-366-367-368-369-370-371-372-373-374-375-376-377-378-379-380-381-382-383-384-385-386-387-388-389-390-391-392-393-394-395-396-397-398-399-400-401-402-403-404-405-406-407-408-409-410-411-412-413-414-415-416-417-418-419-420-421-422-423-424-425-426-427-428-429-430-431-432-433-434-435-436-437-438-439-440-441-442-443-444-445-446-447-448-449-450-451-452-453-454-455-456-457-458-459-460-461-462-463-464-465-466-467-468-469-470-471-472-473-474-475-476-477-478-479-480-481-482-483-484-485-486-487-488-489-490-491-492-493-494-495-496-497-498-499-500-501-502-503-504-505-506-507-508-509-510-511-512-513-514-515-516-517-518-519-520-521-522-523-524-525-526-527-528-529-530-531-532-533-534-535-536-537-538-539-540-541-542-543-544-545-546-547-548-549-550-551-552-553-554-555-556-557-558-559-560-561-562-563-564-565-566-567-568-569-570-571-572-573-574-575-576-577-578-579-580-581-582-583-584-585-586-587-588-589-590-591-592-593-594-595-596-597-598-599-600-601-602-603-604-605-606-607-608-609-610-611-612-613-614-615-616-617-618-619-620-621-622-623-624-625-626-627-628-629-630-631-632-633-634-635-636-637-638-639-640-641-642-643-644-645-646-647-648-649-650-651-652-653-654-655-656-657-658-659-660-661-662-663-664-665-666-667-668-669-670-671-672-673-674-675-676-677-678-679-680-681-682-683-684-685-686-687-688-689-690-691-692-693-694-695-696-697-698-699-700-701-702-703-704-705-706-707-708-709-710-711-712-713-714-715-716-717-718-719-720-721-722-723-724-725-726-727-728-729-730-731-732-733-734-735-736-737-738-739-740-741-742-743-744-745-746-747-748-749-750-751-752-753-754-755-756-757-758-759-760-761-762-763-764-765-766-767-768-769-770-771-772-773-774-775-776-777-778-779-780-781-782-783-784-785-786-787-788-789-790-791-792-793-794-795-796-797-798-799-800-801-802-803-804-805-806-807-808-809-810-811-812-813-814-815-816-817-818-819-820-821-822-823-824-825-826-827-828-829-830-831-832-833-834-835-836-837-838-839-840-841-842-843-844-845-846-847-848-849-850-851-852-853-854-855-856-857-858-859-860-861-862-863-864-865-866-867-868-869-870-871-872-873-874-875-876-877-878-879-880-881-882-883-884-885-886-887-888-889-890-891-892-893-894-895-896-897-898-899-900-901-902-903-904-905-906-907-908-909-910-911-912-913-914-915-916-917-918-919-920-921-922-923-924-925-926-927-928-929-930-931-932-933-934-935-936-937-938-939-940-941-942-943-944-945-946-947-948-949-950-951-952-953-954-955-956-957-958-959-960-961-962-963-964-965-966-967-968-969-970-971-972-973-974-975-976-977-978-979-980-981-982-983-984-985-986-987-988-989-990-991-992-993-994-995-996-997-998-999-1000

अम्पा गुणा ।

अन्धपुष्पीचक्षुष्यागृहगर्भापकर्षिणी ॥

अर्थ—अघाहूली—नेत्रोंको हितकारी और गृहगर्भको अपकर्षण करनेवाली है ।

विवरण—अघाहूलीका क्षुप होता है उसकी ढडी कुठ लालीतिथे होती है, पत्ते लम्बे गोल और रोमयुक्त होते हैं, फल असमानी रंगका और नीचेको रहता है ।

दण्डोत्पलनामानि ।

दण्डोत्पलेसहदेवाविपमज्वरनाशिनी । दण्डोत्पलात्रिधा प्रोक्तापुष्पवर्णप्रभेदत । गोवन्दनीदेवसहापीतदण्डोत्पल स्मृतम् । रक्तदण्डोत्पलाप्राहुर्विश्वदेवातथापरा ॥ श्वेतदण्डोत्पलप्रोक्तदण्डोत्पलाचदेविका ।

अर्थ—दण्डोत्पला, सहदेवा और विपमज्वरनाशिनी यह साधारण दण्डोत्पलके नाम हैं । दण्डोत्पल पुष्पोंके भेदत तीनप्रकारका है । पीत, रक्त और श्वेत, गोवन्दनी, देवसहा, (गधवल्ली, सहदेवी, सहा) यह पीलेदण्डोत्पलके नाम हैं । विश्वदेवा, (सहदेवा) यह लालदण्डोत्पलके नाम हैं । दण्डोत्पला, देविका यह सफेद दण्डोत्पलके नाम हैं ।

संस्कृतभाषामें

सहदेवा, दण्डोत्पला ।

हिन्दीभाषामें

दण्डोत्पल तीनप्रकारका ।

बगभाषामें

दानिपोलादानकुनी, दडकन्म ।

मराठीभाषामें

ओसारी ।

गुजरातीभाषामें

शेदरदी । (Ageratum (Convolvulus)

लैटिनभाषामें

बरनोनियासाई निरिया Verbaena Cineraria

त्रिविधदण्डोत्पलगुणा ।

दण्डोत्पलक्षयश्वासकासजिद्वह्निदीपनम् ॥

अर्थ—तीनों प्रकारके दण्डोत्पल—क्षय, श्वास और सौमीको दूर करे दे तथा अग्निको दीपन करे है ।

विवरण । दण्डोत्पलके क्षुप माय' अनूप टेजमें होते हैं, पत्त सफेद, पीला, लाल और किमी किमी फालेगकार्मी आताहै, पत्ते रानतुर्नीकी

समान होवे, दण्डोत्पटकी दोषी घनाकर शिरसे धारण करनेसे उबर
दूर होता है ।

रुद तो नामानि ।

स्याद्बुद्धीवत्तोयासजीवन्यमृतस्रवा ।

गेमाचिकामहामांसीचणपत्रीमधुस्रवा ॥

अर्थ-रुदती, स्रवतोया, सजीवनी, अमृतस्रवा, रोमाचिका, महामांसी
चणपत्री, मधुस्रवा (मुघास्रवा)

संस्कृतभाषामें रुदन्ती ।

हिन्दीभाषामें लाणा (पु) रुदन्ती, रुद्रवन्ती ।

मराठीभाषामें रुदन्ती, ।

गुजरातीभाषामें पलियो ।

कर्णाटकीभाषामें अउगुणि ।

तैमिऴभाषामें केमाकेटिका *Chemaketa*

रुद तो गुणा ।

रुदन्तीकटुतिक्तोष्णाक्षयक्रिमिविनाशिनी ।

रक्तपित्तकफश्वासमेहहारीरसायनी ॥ (रा० नि०)

अर्थ-रुदन्ती-चरपी चट्टी, गरम, रसायन तथा क्षय, क्रिमि, रक्त
पित्त, कफ, श्वास और ममेहनाशक है ।

भयस्य ।

रुदन्तीवह्निकृद्द्रुप्रापित्तभीचरसायनी ॥ (रा० य०)

अर्थ-रुदन्ती-अग्निजनक, वीर्यवर्द्धक, पित्तनाशक और रसायन है ।

विरण । रुदन्तीके पट्टे छोटें २ भुप होते हैं, यह श्व मांस रागे
भूमि और जम्बे समीप उत्पन्न होते हैं, पृथ्वीपर पैर जाते हैं, पक्षे चोंते
पक्षीकी समान होते हैं इससे ओम पट्टेमें जम्बे पिट्ठ टपकते हैं उन
जम्बे पिट्ठभासे नीचेकी पृथ्वी भागी रहती है इसकारण इसको
रुदती कहते हैं ।

चिरपोटा नामानि ।

चिरपोटादीर्वपत्राकुंतलीतिक्तरामना ॥

अर्थ-चिरपोटा, दीर्घपत्रा, कुन्ती, तिनका (पनेरी, रसदरी,
रताना, सरकाणी)

| | |
|----------------|---|
| संस्कृतभाषामें | चिरपोटा । |
| हिंदीभाषामें | पनसोखा, पटकोना, चिरपोटन (१०) |
| मराठीभाषामें | चिरपोटाणी । |
| गुजरातीभाषामें | पपोंटी । |
| लैटिनभाषामें | फार्सेलिस् मिनीमा Physalis Minima P India |
| अरबीभाषामें | काकनुज । |
| अरबीभाषामें | हवुल्लुहवुल्ल्याहुदहवुल्लकाकद । |
| | अस्या गुणाः । |

चिरपोटाहिमारूक्षाभेदिनीश्वासकासजित् ।

अर्थ—पनसोखा—शीतल, रूखा, भेदक तथा श्वास और खँसीको दूर करे है ।

अप्यञ्च ।

पपोंटीपानलेपाभ्यांरक्तविद्राविणीशुक्लम् ।

तस्या पक्वफलपित्तश्लेष्मलज्वरकारिच ॥

अर्थ—चिरपोटेके पत्ताको पीसकर लेप करनेमें रक्तद्रावण होता है, इसके पक्के फल पित्त, कफ और ज्वरको उत्पन्न करनेवाले हैं ।

विवरण । इसके क्षुप होते हैं, इसमें बड़े २ चोदने लगते हैं उनके भीतर सफेद रंगके फल होते हैं वह फल कभी अवस्थाम कटवे और परभेष खट्टे तथा मीठे होजाते हैं ।

पुरण्डिकानामानि ।

कुरण्डिकाक्षेत्रभूपाकुरण्टीक्षेत्रनागिनी ॥

अर्थ—कुरण्डिका, क्षेत्रभूपा, कुरटी, क्षेत्रनागिनी (पिच्छ, तटुरण्ड)

| | |
|----------------|---|
| संस्कृतभाषामें | कुरण्डिका । |
| हिन्दीभाषामें | कुरडवृष (दाडमारि० दे०) |
| मराठीभाषामें | एधुकुरण्डिका, थोरकुरण्डना । |
| गुजरातीभाषामें | नानोआगियो, मोरोआगियो । |
| लैटिनभाषामें | एमानिपावेसिकेटोरिया । <i>Ammania Ve cato 19</i> |
| | परण्डिकागुणाः । |

**कुरण्डिकासरारूच्यागुर्वोचाग्निप्रदीपनी । नागिनीकफना-
तानांविद्येन्तुपरिकीर्तिता ॥ वृहत्कुरण्डिकाभीतापाकेमा-**

ध्वीकटुः स्मृता । तित्ताक्षराचरुश्चाचसगवृष्याजडामता ॥
वातलापित्तलावस्तोवातकारिकफापहा । रक्तदोषमृत्रकृ-
च्छूनागयेदितिकीर्त्तिता ॥ (नि० २०)

अर्थ-कुरद-मारक, रुचिकारक, भारी अग्निप्रदीपक तथा कफ और वातको दूर करे है । यडा कुरद-शीतल पचनेमें मधुर, चरपरा वज्रा, क्षार, रुखा, सागक, वीर्यवर्द्धक, जड, वातकागक, पित्तजनक, वस्तिमें वातकग्नेवाला तथा कफ, रुधिरविकार और मृत्रकृच्छको दूर करे है ।

विवरण । कुरण्ड प्रायः उग्यादर रेतवागोंमें अधिकतासे होता है पून सुफेदरगका जाता है ।

कुम्भिकागामानि ।

कुम्भिकावारिपर्णीचवारिमृलीखमूलिका ।

आकाशमृलीकुतृणकुमुदाजलवल्कलम् ।

अर्थ-कुम्भिका, वारिपर्णी, वारिमृली, मृत्तिका, आकाशमृली, कुतृण, कुमुदा, जलवल्कल (श्वेतपर्णी, अशकुम्भी, पानीपपृष्ठज, कुम्भी, वारिमृली, सली, पर्णी, पृथ्वी, वारिपर्णिका, दलादर, वारिकर्ण) ।

मरुतभाषामं कुम्भिका, वारिपर्णी ।

दिन्दीभाषामं जलकुम्भी, कुम्भी (ताई) ।

वगभाषामं पाना, दोकापाना ।

मराठीभाषामं जलमटरी

गुजरातीभाषामं जलकुम्भी ।

कर्णाटकीभाषामं हायल ।

तमिऴ्नीभाषामं तुम्बिर ।

कम्भिकागामानि ।

वारिपर्णीहिमातिका लघ्वीस्वाद्धीसगकटु ।

दोषत्रयहरीरक्षाशोणितज्वरशोपकृन् ॥

अर्थ-जलकुम्भी-शीतल, कशी, हलसी, स्वादिष्ट, मारक, गण्डी विशेषनाशक करके तथा रुधिरविकार और अगको दूर करे है ।

विवरण । जलकुम्भी जयात कां प्रायः यदे-जो मय ठागोंमें जडवे उपा हो चले मयवी परी होती है ।

शैवालनम्मानि ।

शैवालजलनीलीस्याच्छैवलजलजचतृत् ॥

अर्थ-शैवाल, जलनीली, शैवल, जलज, (शेषान, शैवाल, शिवल, शेषाल, जलनीलिका, जलनील, अम्बुचामर, जलकुन्तल, मजुल, सैवाल, शैवाल, वारिचामर सलिलकुण्डल, हठपणा, अम्बुताल, जलशूक, जल-
धन, अरक, जलकेश, कावार, जलपृष्ठजा)

संस्कृतभाषामें शैवाल ।

हिन्दीभाषामें सिवार ।

बंगभाषामें शैओपाला ।

मराठीभाषामें शैवाल ।

गुजरातीभाषामें शैवाल, लील ।

तैलिङ्गीभाषामें नामु ।

कर्णाटकीभाषामें हावल ।

लैटिन्भाषामें सिरेटोफाईल सचमसें । *Scaratophyllum Submersum*

फारसीभाषामें पशमेदरा, जामगृक, जवाल ।

अरबीभाषामें तुहलन ।

शैवालगुणाः ।

शैवालशीतलस्निग्धसन्तापव्रणनाशनम् ॥

अर्थ-सिवार-शीतल, स्निग्ध तथा सन्ताप और व्रणको दूर करे है ।

अभ्यध ।

शैवाल शीतल स्निग्धस्तिक स्वादुर्लघु पटु ।

सर.सन्तापव्रणजिज्वरपित्तत्रिदोषहा ।

रक्तदोषस्यशमनोविज्ञेयश्चचिकित्सकैः ॥

अर्थ-सिवार-शीतल, स्निग्ध, कटुवी, स्वादिष्ट, दृक्की, नमकीन, मारक, तथा सन्ताप, व्रण, ज्वर, पित्त, त्रिदोष और कृमिके विकारको दूर करे है ।

विवरण । सिवारभी चलेके उपर बालोंमें आच्छादित रहता है । यह पईरु प्रकारकी होती है सिवार इस देशमें, चीनी भाषाकामें विशेष करने काममें लीजाता है ।

आयुर्वेदपर्यायानामानि ।

अत्यम्लपर्णीतीक्ष्णाचकण्डूगवलिमूरणा ।

वल्लीरुखडादिश्वनस्थारण्यवासिनी ॥

अर्थ-अत्यल्पपणा, तीक्ष्णता, कण्टक, घट्टिपण, कसबपणा, घनपणा, अल्पव्याप्तिनी ।

संस्कृतभाषामै

अत्यम्लपणी ।

हिन्दीभाषामें

गमचना (सदृजा)

मराठीभाषामें

कदमद्वर्षी, आवश्येल ।

गुजरातीभाषामें

स्नात स्नातवैल्य ।

वर्णाटकीभाषामें

दंगोली ।

लैटिनभाषाम

वाइटीम पडाफाईला *Vitis pentaphylla*

अस्या गुणाः ।

अत्यम्लपर्णीतीक्ष्णाम्लाग्नीदशुलविनाशिनी ।

वातहृदीपनीरुच्यागुल्मश्लेष्मामयापहा ॥ (रा०नि०)

अध-अत्यम्बुषणी-तीक्ष्ण, अम्ल, अपिफो दीपन करनेवाला, रुचिदा-
रक, तथा हृदि, शूल, वात, शुल्म और कफ इन रोगोंको दूर करे है ।

विवरण—घट्टी बेल होती है, इसे जिमीकन की समान एक उंदी में पों
 पाँच होवद, एक कत्तोंकी समान नुमकोंमें छगते हैं इस बेलके पचे टडी
 सब रसदी होती है ।

मद्याह्नामामि ।

मखात्रं पञ्चवीजाभयानीयफलमित्यपि ॥

अर्थ-मत्तान्न, पद्मयीनाभ, पानीयम् ।

मंस्कृतभाषामि

महाराज ।

हिंसायायै

मराना :

यथाभाषाया

मरुताना :

मराठीभाषामें

ममराजे ।

गुजरातीभाषामें

महाना ।

●

महिलाविद्यया ।

हृदिनापदम

सुदगेनगेर । । ३८ । ५

अथवा अथवा अथवा

मग्यान्नपद्मरीजस्यगुणैस्तुल्यमितिदिशेत् ॥ (भा०५०)

अर्थ-मरवानेके गुण कमलगट्टेकी समान है ।

विवरण-मरवाने कमलगट्टाको भूतकर बनाये जानेद् इस कारण इसके गुण कमलगट्टेकी समान जानने ।

मर्यादवर्णनामानि ।



मर्यादवेल

मर्यादामारवलीचसागरामन्मथापिच ।

युग्मपत्रारक्तपुष्पातथासागरमेखला ॥

अर्थ-मर्यादा, मारवली, सागरा, मन्मथा, युग्मपत्रा, रक्तपुष्पा, सागरमेखला ।

संस्कृतभाषाम

हिंदीभाषाम

दक्षिणीभाषाम

बंगभाषाम

कोकणीभाषामें

गुजरातीभाषाम

तैत्तिन्भाषाम

मर्यादावृत्ता ।

मरजादवेल ।

दोषार्चवृत्ता ।

छगलपुरी (३१०) ।

मर्यादावेल ।

मरजादवेन्य ।

आइपोमिया लिनेव ।

अथ गुणा ।

मर्यादवलिकाभीताग्राहिणीसाग्वागुरु ।

पाककालेचोपणान्याद्वातलग्नर्भक्षिणी ॥

विषुचिकांचशूलचवान्तिचामचनागयेत । (नि०२०)

वल्लीकरवडादिश्ववनस्थारण्यवासिनी ॥

अर्थ-अत्यम्लपर्णी, तीक्ष्णा, कण्डूरा, वलिसूरणा, करवडवल्ली, वनस्था, अरण्यवासिनी ।

संस्कृतभाषामें

अत्यम्लपर्णी ।

हिन्दीभाषामें

रामचना (खटुआ)

मराठीभाषामें

कडमडवल्ली, आवटवेल ।

गुजरातीभाषामें

खाट खटूवेल्य ।

कर्णाटकीभाषामें

हेगगोली ।

लैटिन्भाषामें

वाईटीस पेडाफाईला Vitis pentaphylla

अस्या गुणा ।

अत्यम्लपर्णीतीक्ष्णाम्लाष्टीहशूलविनाशिनी ।

वातहृद्दीपनीरुच्यागुल्मश्लेष्मामयापहा ॥ (रा० नि०)

अर्थ-अत्यम्लपर्णी-तीक्ष्ण, अम्ल, अग्निको दीपन करनेवाली, रुचिका-रक, तथा छीहा, शूल, वात, गुल्म और कफ इन रोगोंको दूर करे है ।

विवरण-बड़ी वेल होती है, पत्ते जिमीकदकी समान एक डडीमें पाँच पाँच होते हैं, फल करोदेकी समान झुमकोंमें लगते हैं इस वेलके पत्ते डडी सब खट्टी होती है ।

मद्यक्षनामानि ।

मखान्नपद्मवीजभयानीयफलमित्यपि ॥

अर्थ-मखान्न, पद्मवीजभ, पानीयफल ।

संस्कृतभाषामें

मखान्न ।

हिन्दीभाषामें

मखाना ।

बंगभाषामें

मखाना ।

मराठीभाषामें

मखाणे ।

गुजरातीभाषामें

मखाना ।

दे०

गीलागिच ।

लैटिन्भाषामें

युर्यलोफेरोक्स । Lurychi ferox

मद्यक्षगुणा ।

मखान्नपद्मवीजस्यगुणैस्तुल्यविनिर्दिशेत् ॥ (भा० प्र०)

अर्थ-मखानेके गुण कमलगट्टेकी समान ह ।

विवरण-मखाने कमलगट्टाको भृनकर बनाये जातेह इस कारण इसके गुण कमलगट्टेकी समान जानने ।

मर्यादगल्लीनामानि ।



मर्यादवेल

मर्यादामाग्वल्लीचसागगमन्मथापिच ।

युग्मपत्रारक्तपुष्पातथासागरमेखला ॥

अर्थ-मर्यादा, मारवली, मागग मन्मथा, युग्मपत्रा, रक्तपुष्पा, सागरमेखला ।

संस्कृतभाषाम

हिंदीभाषाम

दक्षिणीभाषाम

बगभाषाम

फोवणीभाषाम

गुजरातीभाषाम

तटिन्भाषाम

मर्यादावेल ।

मरजादवेल ।

दोपार्चलता ।

छगल'दुर्गा'दा० ।

मर्यादवेल ।

मर्यादवेन्य ।

आइपोमिया विलोय । Ipomoea villosa

अर्थ गुणा ।

मर्यादवेलिकाभीताग्राहिणीनागकागुरु ।

पाककालेचोपणास्याद्वातलागर्भकपिणी ॥

विषचिकाचशूलचान्तिचामचनाशयेत । (नि०२०)

अर्थ-मरजादवेले-शीतल, मलरोधक, सारक, भारी, पचनेमें चरपरी, वातकारक, गर्भको अपकर्षण करनेवाली तथा विपूचिका, शूल, वमन, और आमको दूर करे है।

विषगुण । मर्यादवेले प्रायः अनूपदेशमें अर्थात् नदीके निकट अधिकतासे होतीहै, इसके पत्ते अमन्तकवृक्षकी समान दो दो एकत्र होते हैं, फूल लाल होता है।

झिल्लनामानि ।

झिल्लोरक्तापहोनीलःसुझिल्लोमृदुपत्रकः ॥

अर्थ-झिल्ल, रक्तापह, नील, सुझिल्ल, मृदुपत्रक ।

संस्कृतभाषामे झिल्ल ।

हिन्दीभाषामे झिल्ल ।

मराठीभाषामे मुरकुट ।

गुजरातीभाषामे झिल्ल्य ।

लैटिनभाषामे इडिगोफोरा पोसिफ्लोरा । *Indigofera prusiflora*
अस्य गुणा ।

झिल्लोवातासकंहन्तिशितवीर्य्योमिदीपनः ।

अर्थ-झिल्ल वातरक्तको दूर करनेवाला, शीतल और शक्तिको दीपन करनेवाला है।

विवरण-झिल्लका धुप होता है, इसकी छाल लाल रंगकी होती है, पत्ते बहुत छोटे होते हैं, फूल लाल होता है, फली छोटी होतीहै।

एकवीरनामानि ।

एकवीरोमहावीरःसकृद्भीरःसुवीरकः ।

एकादिवीर्य्यपूर्य्यायीवीरश्चपङ्क्तिधाह्वयः ॥

अर्थ-एकवीर, महावीर, सकृद्भीर, सुवीरक, एकादिवीर्य्यपूर्य्यायी, वीर ।

संस्कृतभाषामे एकवीर ।

हिन्दीभाषामे एकवीर ।

मराठीभाषामे अमाणा ।

गुजरातीभाषामे एकलकटो ।

कर्णाटकीभाषामे गडुविष ।

लैटिनभाषामे ब्रायोडेलियामोण्टेना । *Briodelia montana*

पञ्चवीरगुणा ।

एकवीरगुणमृतातिकाचात्युष्णावातहामता ।

पञ्चावातपृष्ठकटीशूलचैवविनाशयेत् ॥ (नि०२०)

अर्थ—एकवीर वृक्ष—कडवा, अत्यन्त गरम, वातनाशक तथा पञ्चावात, पृष्ठ और कटिशूलको दूर करेहै ।

विवरण—एकवीरके जगलमें बड़े उड़े वृक्ष होते हैं, इनमें बटा, मोटा और अलग २ एक एक काँटा होताहै, पत्ते पातलकी तमान होते हैं, फल छोटे छोटे और झुमराम लगते हैं ।

पञ्चारीनामानि ।

कथारीकथरीकथादुर्धर्पातीक्ष्णकण्टका ।

तीक्ष्णगधाङ्गगधादु प्रवेशाष्टाभिधा ॥

अर्थ—कथारी, कथरी, कथा, दुर्धर्पा, तीक्ष्णकण्टका, तीक्ष्णगधा, ऋगधा, दृ प्रवेशा (अहिंसा, जालि, गृध्रनारी, कथारिका, कृष्णर्मा, वक्रकटकी, कन्या, कपाङ्गुलिका, अमलपत्रा, गुच्छगुल्मिका)

| | |
|----------------|-------------------|
| सस्कृतभाषामें | कथारी । |
| हिन्दीभाषामें | कथारी, कतार । |
| मराठीभाषामें | कथा । |
| गुजरातीभाषामें | कथार । |
| कणाडकीभाषामें | कतार । |
| तमिलभाषामें | कथारीग विविधगथा । |

भक्ष्या गुणा ।

कथारीदीपनीरुच्याकट्टणातिकाहामता ।

रक्तदोषकफवातग्रन्थिगोचरनाशयेत् ॥

स्नायुगोचरशोफचनाशयेदितिरुत्तिता । (नि०२०)

अर्थ—कथारी—अग्निदोषक रक्तितारक पापरी, गरम, कटकी तथा रुक्षविदार, वात वात, प्रक्षिप्त, स्नायुगोचर और गोचरनाशक २० द्रव्य है ।

विवरण । कथारी तीन चार पातलकी मोटाई पर रंग हरी होतीहै उसमें पत्ते गाढ़ होतेहैं, फल मुट्ठी बड़े और मुट्ठी के समान होतेहैं, फल छोटे छोटे पत्रों के समान होतेहैं ।

आरिनामानि ।

आरि मदानिकोदालाजेयाखदिरपत्रिका ॥

अर्थ-आरि मग्निका, उमाला, और सान्निपत्रिका (पालिखदिर, स्वादिखदिर) ।

| | |
|--------------|--------------------------------------|
| संस्कृतभाषाम | आरि । |
| हिंदीभाषामे | आरि खेरनेल । |
| मगधीभाषामें | आरि वेल्पाखेर आगरी । |
| कणाटकीभाषाम | मीगुगी । |
| गुजरातीभाषाम | खेरवेल्पा । |
| लैटिनभाषाम | एकड्यापिनेटा । <i>Aecia pennis</i> । |

अस्या गुणा ।

आरि कषायकटुकातिकारक्तात्तिपित्तजित ।

त्रिदोषघ्नीरसेपाकेचाम्लोष्णानिलकासहा ॥ (रा० नि०)

अर्थ-आरि-कपली, चरणी, कडवी रस और पाकमें अम्ल गरम, तथा रविरविकार, पित्त, त्रिदोषघात और खासीको दूर करे है ।

विवरण । आरिकी बेल होती है, इससे-काटे होंते हैं, पत्ते छोटे छोटे खैरकी समान होते हैं, फली चपटी नीली रंगकी होती है, फूल तन्तु-युक्त कीककें फूलकी समान होते हैं ।

भ्रमरच्छलीनामानि ।

भृगाह्वाभ्रमगाह्वाचक्षीगुर्भृगमूलिका ।

उग्रगधाचभृगत्वक्छलीभ्रमरछल्लिका ॥

अर्थ-भृगाह्वा, भ्रमराह्वा, क्षीगु, भृगमूलिका, उग्रगधा, भृगत्वक्, छली भ्रमरछल्लिका ।

| | |
|----------------|---|
| संस्कृतभाषामें | भ्रमरछली । |
| हिंदीभाषामे | भ्रमरछली । |
| मगधीभाषामें | भ्रमरसाली । |
| गुजरातीभाषामें | भ्रमरछल्ल । |
| कणाटकीभाषामें | उग्रगधे । |
| लैटिनभाषामें | हाइमानोडिक्टिय ग्रामेलस <i>Hymanodictyon</i> Avel (१०३६) |

भस्या गुणा ।

भृगाद्वाकटकाचोष्णातिक्कारुच्याग्निदीपनी ।

कण्ड्याचसर्वदोषघ्नीप्रोक्तापूर्वभिषग्वरे ॥ (नि० २०)

अर्थ-भमरउली-चरपगी, गरम, कड़वी, रुचिकाग्र, अग्निसौ शीपन करनेवाली कण्डको हितकारी और सर्वदोषनाशक है ।

विवरण । भ्रमर, शालीक वृक्ष वटे २ जगलमें होतेह पक्ष यागामके समान होतेह, फली अत्यन्त पतली आर्ताह इमकी रङ्गी मरुत रंगरी और अत्यन्त श्रेष्ठ पोर्ताह प्राय इमकी लकरीक तलवारके म्यान बनाये जातेह ।

अजगधानामानि ।

तिलवन.



अजगधावस्तगधावगुप्पासुगधिका ।

कावरीवर्गरागंधालुगीपृतिमय्रिका ॥

अर्थ-अजगधा, वस्तगधा, गुप्पा, सुगधिका, कावरी, मर्चगंधा लुगी, पृतिमय्रिका, (अविगधा, अविगधिका, ज्ञाप्रगर्भा, माद्री)

| | |
|----------------|------------------|
| ससृष्टभाषामे | अजगधा । |
| दिनीभाषामे | तिलवन । |
| भगटीभाषामे | कानरोटी । |
| गुनगतीभाषामे | मन्वर्णा । |
| कर्णाटीभाषामे | नीलवणी । |
| सलक्ष्मीभाषामे | वामिंग, अनगधि । |
| मन्ना | रावेरा, पावरा । |
| सलक्ष्मीभाषामे | जिनेन्टीपनिपराणि |

जिनेन्टीपनिपराणि

अजगधागुणा ।

अजगधाकटूष्णास्याद्वातगुल्मोदरापहा ।

कर्णव्रणार्तिशूलघ्नीपीताचेदंजनेहिता ॥ (रा० नि०)

अर्थ-तिलवन-चरपरी, गरम, तथा रात, गुल्म, उदररोग, कर्णरोग, व्रण और शूलको दूर करे है । इसमें पीली तिलवन अजनमें हितकारी है ।

विवरण । तिलवन वनभाग जंगल आदिमें होता है यह दो प्रकारकी है, एकपर सफेद फूल और दूसरीपर नीलपीत मिश्रित रंगके फूल आते हैं दोनोंमें फली आती है बीज काले रंगके निकलते हैं ।

वृद्धदारुनामानि ।

वृद्धदारुकआवेगीजन्तुकोदीर्घवलरी ।

वृद्धा कोटरपुष्पीस्यादजात्रीछगलांत्रिका ॥

अर्थ-वृद्धदारुक, आवेगी, जन्तुक, दीर्घवलरी, वृद्ध, कोटरपुष्पी, अजानी, उगलांत्रिका (ऋक्षगधा, छगलानी, जुग, ऋष्यछगलांत्रा, उगला अत्री, जुगा, उगली, जुगक, श्याम, वृष्यगधा, दीर्घवालका, उगलांत्रिका वृद्धकोटरपुष्पी)

जीर्णदारुनामानि ।

जीर्णदारुर्द्वितीयास्याजीर्णाफजीसुषुप्पिका ।

अजगसूक्ष्मपत्राचविज्ञेयाचपडाह्वया ॥

अर्थ-जीर्णदारु, जीर्णा, फजी, सुषुप्पिका, अजरा और सूक्ष्मपत्रा ।

संस्कृतभाषामें

वृद्धदारु, जीर्णदारु ।

हिन्दीभाषामें

विधारा, कालाविधारा ।

वगभाषामें

वितारक, बीजतारक, विटडक ।

मराठीभाषामें

श्वेतवरवारा ।

गुजरातीभाषामें

वरघागे ।

लैटिनभाषामें

रोरियानेटेलोइ डन्नि । Roriana telox (Des)

कर्णाटकीभाषामें

एरडुमुष्टे ।

तैमिळीभाषामें

चद्रपुडी ।

द्विविधवृद्धदारुगुणा ।

वृद्धदारुद्वयंगौल्यपिच्छिलकफवातहृत् ।

वल्थकासामदोषघ्नद्वितीयस्वल्पवीर्य्यदम् ॥ (रा० नि०)

अर्थ—दोना विधारे—गौल्य, पिच्छिल, कफघातनाशक, वल्कारक, तथा खौंसी और आमदोषको दूर करे ह । इनमें दूसरा विधारा अल्पवीर्य्यमान है ।
अथ च ।

साधारणोवृद्धदारुःकटुस्तिक्त कपायक । रसायनांणो
मधुरोमेध्य.स्वर्ग्य सरोमिद । ॥ कान्तिधातुकगेवल्थो-
च्य.पुष्टिकरोलघुः । उपदशपाडुरोगक्षयकासप्रमेहकम् ॥
वातगुक्तचामवातवातशोफकफजयेत् । (नि० १०)

अर्थ—विधारा—चरपरा, कडवा, कपेला, रसायन, गन्ध, मधुर, ममान
नक, स्वरको शुद्ध करनेवाला, सारक, अग्निप्रदीपक, कान्तिजनक, धातु-
नक, वल्कारक, रुचिकारक, पुष्टिको करनेवाला, हल्का (तथा उपदश
पाडुरोग, क्षय, खौंसी, प्रमेह, वातगुक्त, चामवात, वात, मूजन और कफका
दूर करनेवाला है ।

विवरण—विधारा समुद्र शोपकी समान जानपडता है यथाकि, समुद्रशोप
और विधारेके पृष्ठ, पत्ते, बेल, काण्ड आदिमें कुछभी अन्तर नहीं देखना ।
इसी कारण कितनेक वैद्य विधारा और समुद्रशोपको एक ही मानते हैं ।
विधारा दो प्रकारका होता है एक वृद्धदारु, दूसरा जीणदारु, जीणदारुको
फजी कहते हैं फजीके गुणशोप आगे लिखे हैं ।

समुद्रशोपगुणा ।

समुद्रशोपःसम्प्रोक्तोवातलोभाहकामन ।

अतिपित्तकरश्चैवकफकृच्चमतोयुधे ॥ (नि० १०)

अर्थ—समुद्रशोप—वातकारक, घ्राही, अत्यन्त, पित्तनाशक और यकृत
उत्पन्नकरनेवाला है ।

समुद्रपुष्पगुणा ।

समुद्रपुष्पतुवरमधुगुणितलमनम् ।

रक्तदोषकफपित्तकामलाचविनाशयेत् ॥

गर्भिणीकष्टमनमुनिभिःपरिकीर्तितम् ।

अर्थ-समुद्रफूल-कपेला, मधुर, शीतल तथा रुधिरविकार, कफ, पित्त, कामला और गाँभिणीके कष्टको दूर करे है, समुद्रशोष और समुद्रफूल यह दोना विधाकेका ही भेद है ।

पञ्जिवानामगुणाश्च ।

फज्यातुफजिकापञ्चाहजात्रीचापराजिता । फजीतुशीत-
लावृष्याग्राहकातुवराकटुः ॥ उपणामधुराबल्यास्निग्धा
कफकगगुरु । विष्टम्भकारिणीवातपित्तहृद्रोगकसहा ॥
कुशामदोपशमनी इतिपूर्वभिषग्वरा । (नि०२०)

अर्थ-फजी-शीतल, वीर्यवर्द्धक, मलरोधक, कपेली, चरपरी, गरम, मधुर, नलकारक, स्निग्ध, कफकारक, भारी, विष्टम्भकारक तथा वात, पित्त, हृदयगोग, खाँसी, ज्वर और आमदोषको दूर करे है ।

विवरण । फजीकी बेल सेतकी बागपर लगादेते हैं, फल समुद्रशोषकी समान होते हैं, पत्तेभी समुद्र शोषकी समान किन्तु कुछ छोटे होतेहैं इसके पत्तेके पत्तेडे बनाते हैं ।

| | |
|----------------|--|
| मस्कृतभाषामें | फजी, फजिका, पञ्चा, अजात्री, अयगाजिता । |
| हिन्दीभाषामें | फजी । |
| मराठीभाषामें | फाजी । |
| गुजरातीभाषामें | फाग्य । |
| एडिन्नभाषामें | हिविया ओर्नेटा । |

वेष्टतरुनामानि ।

वेष्टतरुर्दीर्घमूलोवीगद्गुर्वहुवारकः ॥

अर्थ-वेष्टतरु, दीर्घमूल, वीगद्गु, बहुवारक । (शुधाकुशलसज्ञक, वीगवृक्ष, कृच्छ्राणि)

| | |
|-----------------|-----------------------|
| मस्कृतभाषामें | वेष्टतरु । |
| हिन्दीभाषामें | वरवेल, बिल्वान्तर |
| मराठीभाषामें | वेष्टवृग । |
| तमिलभाषामें | वेणुतुरुचेट्टु । |
| कर्णाटकीभाषामें | ओड्ड । |
| तामिलीभाषामें | विहात्तर । |
| एडिन्नभाषामें | डेस्मान्थस मिनेरियस । |

अस्य गुणा ।

वेष्टतरुस्तुकटुकःपथ्यश्चोष्णोऽग्निदीपन । रसेपाकेचतित्त
स्याद्वाहकोवातरोगहा ॥ मृत्रकृच्छ्राश्रमगीसधिग्लानोयोनि-
रोगहा । मृत्रावातस्यशमनऋषिभिः परिकीर्तित ॥ (नि० २०)

अर्थ—वेष्टतरु—चरपरा, पथ्य, गरम, अग्निप्रदीपक, रस और पाकमें कटवा,
मलरोधक, वातरोगनाशक तथा मूत्रकृच्छ्र, पथरी, मधिशूल, योनिरोग और
मृत्रावातरोगको दूर करे है ।

विवरण । वेष्टतरुको वृक्ष मार्गवाडेशमें तथा नर्मदानत्री और चर्ममप्यती
आदि नदियोंके तटपर होते हैं, इसपर काटे होतेहैं, पत्ते ऊंरुके समान ऊँटे
होते हैं, फूल पाचों रंगके आते हैं ।

कषटनामानि ।

कर्कट कर्कट कर्क शुद्रधात्रीसम स्मृत ।

शुद्रामलकसज्जश्चोक्त कर्कफलश्चपद ॥

अर्थ—कर्कट, कर्कट, कर्क, शुद्रधात्री, शुद्रामलकसज्ज, कर्कफल, (गागे
रुक, कर्कटक, मृगलेडक, तोदन कृन्दन, मृगविग्महज)

मसृतभाषामें

कर्कटफल ।

हिन्दीभाषामें

गागेरुवा, काठआमला ।

वगभाषाम

काठ आमला ।

मराठीभाषाम

कुटका काकणा ।

गुजरातीभाषाम

कपडा ।

कर्णाटकीभाषाम

वालिंगे ।

तैमिन्माषाम

गेरुगा पिनेडा ।

अस्य गुणा ।

तोदनग्राहकचाम्ललघुष्णचाग्निदीपकम् । पित्तलचफल
चास्या पक्वन्तुमधुरमतम् ॥ क्षिग्धचतुर्वर्गोक्तकफवातह
स्मृतम् । गागेरुकतुवर्गमम्लचोष्णगुरुस्मृतम् ॥ रक्तपि-
त्तकफकरसारकवातहारकम् । पक्वगागेरुकफलरुचिश्च
गुरुस्मृतम् ॥ वातरक्तहृत्पित्तनाशकंमुनयोजगु ॥ (नि० २०)

अर्थ-काठजामला-मलरोधक, खट्टा, हल्का, गरम, अग्निप्रदीपक और पित्तकारक है । इसके पक्के फल-मधुर, स्निग्ध, कपेले और कफवातनाशक हैं दूसरे प्रकारका काठजामला-कपेला, खट्टा, गरम, भारी, रक्तपित्तकारक, कफकारक, मारक, वातविनाशक है । इसके पक्के फल-रुचिकारी, भारी, वातरक्तहारी और पित्तको नष्ट करनेवाले हैं ।

विवरण । काठजामलेके वृक्ष प्रायः पर्वतोंपर अधिकतासे होते हैं, पत्त पत्तिवार होते हैं, फल आमलेकी समान बहुत छोटे २ होते हैं ।

त्रिकिणीनामानि ।

किकिणीव्याघ्रघटीचगोविदीकटुकन्दरी ॥

अर्थ-किकिणी, व्याघ्रघटी, गोविदी, कटुकदरी, (ग्रन्थिल, व्याघ्रपाद, वत्तल, व्याघ्रनखी, कृशागी, कटुकलता, कारभा, तापसप्रिया)

संस्कृतभाषाम

किकिणी ।

हिंदीभाषाम

किकिणी ।

मराठीभाषामें

वाघटी ।

गुजरातीभाषामें

वागाटी ।

इंग्रेजीभाषामें

थोर्नीकैपरब्रश । Thorny caperbrush

लैटिनभाषामें

केपेरिग्न होरिडा । Capparis Acorrida

अस्या गुण ।

किकिणीतुवरातिकापित्तश्लेष्महराहिमा ।

तत्फलवातलत्वामपक्वस्वादुत्रिदोषजित् ॥ (म० नि०)

अर्थ-किकिणी-कपेली, कडवी, पित्तकफनाशक और शीतल है । इसके कच्चे फल-वादी और पक्के फल त्रिदोषनाशक हैं ।

अन्पच ।

व्याघ्रघटापित्तलोण्णारुच्याविषकफापहा ।

फलचास्यास्तुतिकोण्णविषूचीकफवातजित् ।

त्रिदोषहारिणीप्रोक्तावेद्यशास्त्रविशारदे ॥ (नि० २०)

अर्थ-किकिणी-पित्तकारक, गरम, रुचिकारक तथा विष और कफनाशक है । इसके पत्र-कटु, गरम तथा विषूचिक, कफ, वात और त्रिदोषनाशक है ।

विवरण । किकिणीके वृक्ष वन और पर्वतोंपर होते हैं । इस वृक्षपर
वेरीके समान नाके काटे होते हैं, फल लम्बे गोल और बीचमें गांठदार
होते हैं फलका मध्यमभाग द्विगोटकी समान होता है ।

गोरक्षानामानि ।

गोरक्षीसर्पदडीचदीर्घदडीमुदटिका ।

चित्रलागधवहुलागोपालीपचपर्णिका ॥

अर्थ—गोरक्षी, सर्पदडी, दीर्घदडी, मुदटिका, चित्रला, गधचूला,
गोपाली, पचपर्णिका ।

संस्कृतभाषामें

गोरक्षी ।

हिन्दीभाषामें

गोरखइमली ।

मराठीभाषामें

गोरखचिंच ।

गुजरातीभाषामें

रखडो ।

लैटिनभाषामें

एडन्सोनिया डिजिटेट ।

अरबीभाषामें

हवहयु ।

भस्वा गुणा ।

गोरक्षीमधुगतिकागिरादाहपित्तनुत् ।

विस्फोटवान्त्यतीसारज्वरदोषविनाशिनी ॥ (ग० नि०)

अर्थ—गोरखइमली—मधुर, फटवी, शीतल तथा दाह, पित्त, विस्फोट,
वमन, अर्नाकार और ज्वरको दूर करे है ।

विवरण । इसका बड़ा वृक्ष होता है एक छण्टीमें मेमलकी समान पांच
२ पत्त होते हैं, फूल बड़ा और सफेद कमलकी समान होता है, फल लंबी
अथवा तारकी समान आते हैं ।

पातालतुम्बानामानि ।

गर्तालावुचभृतुर्म्बीदेवीवल्मीकसम्भवा ।

दिव्यतुर्म्बीनागतुर्म्बीशक्रचापसमुद्रवा ॥

अर्थ—गर्तालावु भृतुर्म्बी, देवी, वल्मीकसम्भवा, दिव्यतुर्म्बी, नागतुर्म्बी
शक्रचापसमुद्रवा ।

संस्कृतभाषामें

पातालतुम्बी ।

हिन्दीभाषामें

पातालतुम्बी ।

गुजरातीभाषामं

पातालतुम्बडी ।

मराठीभाषामं

नागतुम्बी ।

लैटिन्भाषामं

वोविम्टास्पिसिम् । *Bovista sp. cicles*

भृतुम्बीगुणा ।

भृतुम्बीकटकातिक्ताविषदोषविनाशिनी । प्रसूतिकादोषस-
म्भूतातिसारहरापरा ॥ दतबंधज्वरशोथसस्वेदंसप्रलाप-
कम् । जयेदात्मप्रभावेण ह्यचित्त्वावस्तुशक्त्य ॥

अर्थ-भृतुम्बी-चरपरी, कडवी, विषदोषविनाशक तथा प्रसूतके समयका
अतिसार, दाँतोंकी जड़ता और सृजन, स्वेद तथा प्रलापयुक्त ज्वरको
दूर करे है ।

विवरण । पातालतुम्बी खेताम और कैरोंमें होतीहै इसपर बहुत बारीक
और पीले रंगके छँट्टिवाले विच्छूके डकके समान काटे होते हैं, फाड़ेके
बीचम तोम्बीकी समान पातालतुम्बी होती है । इसमें अनेक चैमत्कारिक
गुणहैं जो कि, अन्य औषधियाम नहीं देखे जाते ।

हेरघनामानि ।

हेरम्बः खरपत्रः स्यात्कटकीदतधावन ।

अर्थ-हेरम्ब, खरपत्र, कटकी, दतधावन ।

संस्कृतभाषामं

हेग्मन् ।

हिंदीभाषामं

देरव-बज्रदती ।

मराठीभाषामं

दातूणी, हेग्मवृक्ष ।

गुजरातीभाषामं

बज्रदती ।

लैटिन्भाषामं

एपिकापंस आर्गिण्टेन्सीम । *J. purpurea Orientalis*,

अस्य गुणा ।

हेरम्बवृक्षः कफहावातनाशकरो मतः ।

हेरम्बवृक्षमूलंतु प्रोक्तं वांतिकग्नुने ॥

अर्थ-हेरम्बवृक्ष-कफनाशक और वातको दूर करे है । हेरम्ब वृक्षकी
जड़ वमनकारक है ।

विवरण । इसका बड़ा वृक्ष होताहै, पत्त बर्गकी समान होतेहैं, इसकी
दतोन करते हैं ।

वृश्चिकानामानि ।

वृश्चिकानखपणीचपिच्छिलाप्यलिपत्रिका ।

अर्थ-वृश्चिका, नखपणी, पिच्छिला, अलिपत्रिका (दुम्पशा, धूम्रपुष्पा, दहना, नरुदधिष्का, सर्पदण्डी, विपत्री, सूतवल्गुभा)

सस्कृतभाषामें वृश्चिका ।

हिन्दीभाषामें विठवाचाम ।

बगभाषामें विटुयी ।

मराठीभाषामें आग्या, विचवा ।

कर्णाडीभाषामें इगुल, मामसा, होत्रगोत्रे ।

तामिलीभाषामें कायचोरी ।

तैलिंगीभाषामें दुलगाद ।

तु० पञ्जीरगी ।

मल० कोसादुवा ।

गुजरातीभाषामें खाजवणी ।

लैटिनभाषामें जिरार्डिनिया हिरगोफाईला *Gyrardina heterophylla*

अस्या गुणा ।

वृश्चिकापिच्छिलाम्लास्यादन्नवृद्ध्यादिदोषनुत् ॥ (रा०नि०)

अर्थ विठवा-पिच्छिल, खट्टी और अन्नवृद्ध्यादि दोषनाशक है ।

अथवा ।

वृश्चिकालीतुबल्यास्यात्तिक्ताकटीविघ्ननुत् ।

हृद्याचोष्णावन्तिशुद्धिकारिणीरक्तपित्तहा ॥

अरोचकनाशयतीत्येवमाहुर्मनीषिण ।

अर्थ-विठवा-त्रलकारक, कडवी, चर्मपी, विघ्ननाशक, हृदयको हितकारी, गरम, वन्तिशोधक, रक्तपित्त और अरोचको दूरकरे ।

विवरण । विठवा कईप्रकारका होताहै, इसके बेल धुप और घृत होतेहैं । इसपर कोंछकी समान रंगा होताहै ।

तुरगनामानि ।

तुवर सागरोद्भूत कुष्ठहाऽलम्कापह ॥

अर्थ-तुवर, सागराद्भूत, कुष्ठहा, अलम्कापह ।

| | |
|----------------|---|
| सस्कृतभाषामें | तुवर । |
| हिंदीभाषामें | तवरक । |
| मराठीभाषामें | तीमर । |
| गुजरातीभाषामें | तवरिया चेगिया । |
| लैटिनभाषामें | एविमिनीया टामेटासा <i>Avicennia tomentosa</i> |

तुवरगुणा ।

तुवरस्तुवरश्रोणोरसेपाकेचतित्तक ।

कफघ्नकृमीमेहकुष्ठज्वरविनाशन. ॥

आनाहमर्शशोफचनाशयेदितितेजगु । (नि०२०)

अर्थ—तुवर-कपेला, गरम, रसमें और पचनेमें रुडवा, तथा कफ घ्न, कृमि, प्रमेह, ज्वर, आनाह, ववासीर और सूजनको दूर करे है ।

विवरण । इसके पृष्ठ समुद्र और नदियोंके तट पर होते हैं, फल इमलीके समान होते हैं इसके फलको पशुओंको देनेसे दूध अधिक बढ़ जाता है ।

एरण्डचिर्भिटनामानि ।



अण्डरपर्वज .

एरण्डचिर्भिटोवृक्षश्चिर्भिटानलिकादृशः ।

वातकुम्भफलः प्रोक्तः न चैवमधुर्दृष्टी ॥

अर्थ-एरण्डचींभटवृक्षको चींभटा और नलिकादल कहते हैं । इसके फलोंको वातकुम्भफल और मयुकर्कटी कहते हैं ।

| | |
|-----------------|-----------------------------|
| सस्कृतभाषामें | वातकुम्भ । |
| हिन्दीभाषामें | अटखरबूजा पोपैया । |
| मराठीभाषामें | पोपैया । |
| गुजरातीभाषामें | पोपयो, एरडकाकडी, साडचीभडी । |
| तैलिङ्गीभाषामें | पोपटचेट्टु । |
| इंग्रेजीभाषामें | पेपो । Papaw |
| लैटिन्भाषामें | केरिकापापैया । Caricapapaya |
| कर्णाटकीभाषामें | पप्पलसु । |
| तुकीम | वप्पागाई । |
| तैलिङ्गीभाषामें | वोप्पड । |
| मल० | पप्पायम् |
| तामिलीभाषामें | पप्पाई । |

अस्य गुणा ।

वातकुम्भफलश्लिष्णुवातप्रकोपनम् ।

तत्पक्वमधुररुच्यपित्तनाशकरगुरु ॥

अर्थ-अडखरबूजा-मलगेधक, कफ और वातको कुपित करे, पक्षा अण्डखरबूजा-मधुर, रुचिकारक, पित्तनाशक और भारी है ।

अथ च ।

मध्वेरण्डफलपक्वकिचित्तिक्तश्चमाधुरम् ।

वृष्यंकफकरहृद्गमुन्मादस्यविनाशकम् ॥

वर्ध्मरोगहरचेवस्निग्धंवातविनाशनम् ।

अर्थ-पक्ष अडखरबूजा-किंचित्, कडवा, मधुर, वीर्यवर्द्धक, कफ-कारो, हृदयको हितकारी, उन्मादरोगको हर्नेवाला, वर्ध्मरोगको विनष्ट करनेवाला, स्निग्ध और वातविनाशक है ।

विवरण । अटखरबूजेके वृक्ष प्रायः अड़के समान होते हैं । वलिक यह अटखरही भेद है । पत्तभी अड़केमें होते हैं किन्तु यह वृक्ष बहुत लम्बे और सीधे होते हैं । पल बटे ८ लम्बे और गोल तीन चार पकत्र लगते हैं ।

क्षुद्रवादानामगुणाश्च ।

वदाम-क्षुद्रसजस्तुक्षुद्रबीजोम्लमाधुर ।

तुवरोग्राहिपित्तघ्न-शिथिर कफशुक्रकृत् ॥

अर्थ-क्षुद्रवादाम और क्षुद्रबीज यह दो नाम देशी वादामके हैं ।

देशीवादानाम-खट्टा, मधुर, कपेला, मलगोचक, पित्तनाशक, शीतल, कफ तथा शुक्रको करे है ।

विवरण । देशीवादानामके वृक्ष प्रायः वाग और वन सर्वत्र होते हैं, पत्ते बराबर शाखाओंमें दोनों ओर होते हैं, फल अपक अवस्थामें हरे और खानेमें कपेले तथा खट्टे होते हैं और पकजानेपर लाल तथा मधुर होजाते हैं ।

संस्कृतभाषामें

क्षुद्रवादानाम ।

वगभाषामें

क्षुद्रवादानाम ।

हिन्दीभाषामें

देशीवादानाम ।

मराठीभाषामें

हिरवा वदानाम ।

गुजरातीभाषामें

वदानाम लाली ।

कर्णाटकीभाषामें

नतवड ।

तैलुगुभाषामें

वदम ।

इंग्रेजीभाषामें

आमण्ड । *Almond*

लैटिनभाषामें

टर्मिनेलियाकेडपा । *Terminalia catappa*

काम्बोजीनामगुणाश्च ।

कावोजिन्यांचकाम्बोजीबहुपुष्पावहुप्रजा ।

काम्बोजीग्राहिणीवातशोफरक्तविभेदकृत् ॥

अर्थ-कावोजी, जैनी, कावोजी, बहुपुष्पा और बहुप्रजा यह काम्बोजीके संस्कृत नाम हैं ।

काम्बोजी-मलगोचक तथा वात, सूजन और रुधिरके विकाराका हर्तृ करे है ।

विवरण । इसका बड़ा वृक्ष होता है, पत्ते आमलेके पत्ताकी समान होते हैं, इसकी शाखा लम्बी लम्बी होती है फल गोल और अपक अवस्थामें हरे होते हैं और पकनेपर काल होजाते हैं ।

| | |
|---------------|---|
| संस्कृतभाषाम् | काम्बोजी । |
| हिन्दीभाषाम् | कम्बोई । |
| वगभाषाम् | काम्बोजी । |
| मराठीभाषाम् | चिफली । |
| गुजरातीभाषाम् | खेडा कम्बोई । |
| लटिन्भाषाम् | फाइलेन्यस मल्ट्रीफ्लेग्स । <i>Phyllanthus Multiflorus</i> |
| | फाइलेन्यस रेक्टिकुलेटस । <i>Phyllanthus Recticulatus</i> |

अथ निर्विषं नामानि ।

निर्विषापविषाचेवविषिषाविषहापरा ।

विषहन्त्रीविषाभावाह्यविषाविषवैरिणी ॥ (रा० नि०)

अर्थ-निर्विषा, अपविषा, विविषा, विषहा, विषहन्त्री, विषाभावा, अपिषा और विषवैरिणी यह निर्विषीके नाम हैं ।

| | |
|----------------|--|
| संस्कृतभाषाम् | निर्विषी । |
| हिन्दीभाषाम् | निर्विषीघास । |
| वगभाषाम् | निर्विषीघास । |
| मराठीभाषाम् | निर्विषी कचन्या सारख झाड असतें । |
| गुजरातीभाषाम् | निर्विषी । |
| कर्णाटकीभाषाम् | निर्विषी । |
| फारसीभाषाम् | जडवार । |
| लटिन्भाषाम् | डेलफिनिय डिनुदेट <i>Delphinium Deundatum</i> |

भस्या गुणा ।

निर्विषीकटुकाशीताव्रणरोपणकारिणी ।

कफवातरक्तदोषविषचेवविनाशयेत् ॥

अर्थ-निर्विषी-कटु, शीतल, व्रणको भरनेवाली तथा कफ, वात, रुधिर-विकार और विषको नष्ट करे है ।

विवरण । निर्विषी नाम मोथेकी समान होती है यह प्रायः हिमालय, मल्पाचल, काश्मीर और केदार आदि पर्वतोंपर अधिकतासे उत्पन्न होती

है, इसका कद अतीसक्ती समान होता है यह साप विच्छृ आदि अनेक प्रकारके विषोंको दूर करे है ।

अथ नागजिह्वानामगुणाश्च ।

नाहौचनागजिह्वाख्यातित्तपत्राक्षितौक्षुपः ।

कृमिहृत्क्षारकर्माचतथामभिजक स्मृतः ॥

अर्थ—नाहु, नागजिह्वा, तित्तपत्रा, क्षितौक्षुप, कृमिहृत्, क्षारकर्मा और मभिजक यह नागजिह्वाके नाम हैं ।

सस्कृतभाषामें नागजिह्वा ।

हिन्दीभाषामें ठोटा किरायता ।

वगभाषामें नागजिह्वा ।

मराठीभाषामें तानवडीच झाट ।

गुजरातीभाषामें मामेजबो ।

लैटिनभाषामें हिपियन् औरिएण्टल् । *Hipian orientale*

गुण—नागजिह्वा (ठोटा किरायता)—कटु, अत्यन्त तिक्त तथा कृमिदोष, वातरोग और ज्वरको दूर करे है ।

विवरण । ठोटे किरायतेके प्राय, चौमासेमें अनेक क्षुप उत्पन्न होजाते हैं, पत्ते अगुलीकी समान लम्बे और पतले २ होते हैं, फल छोटे छोटे गोल आते हैं ।

अथ माकन्दीनामानि ।

माकन्दीवहुमूलाचमादिनीगंधमूलिका । एकविंशतिमूली चश्यामलागिरिकन्दका ॥ मायिनीगिरिवर्याचगिरिमध्या गिरिप्रिया । वराहेष्टागिरिमतीवर्त्ताचतुर्दशाभिधा ॥ (रा० नि०)

अर्थ—माकन्दी, बहुमूला, मादिनी, गंधमूलिका, एकविंशतिमूली, श्यामला, गिरिकन्दका, मायिनी, गिरिवर्या, गिरिमध्या, गिरिप्रिया, वराहेष्टा, गिरिमती और वर्त्ता यह नाम हैं ।

सस्कृतभाषामें माकन्दी ।

हिन्दीभाषामें माइमूल ।

वगभाषामें माद्राणी ।

मराठीभाषामें मायमूले माईनी—मोगिनी—मायिणी ।

गुजरातीभाषामें
कर्णाटकीभाषामें
लैटिनभाषामें

गरमर ।
मागिणी ।
कोलेन्सबोर्वेटम् । Colens Bor Brutus
अस्या गुणा ।

माकन्दीमधुरातिक्ताकटुकादीपनीपरा ।

रुच्याल्पवातकृत्पथ्याजठरामयनाशिनी ॥

अर्थ—माकन्दी—मधुर, तिक्त, कटु, अग्निप्रदीपक, रुचिकारक, अल्प-
वातकारक, पथ्य और उदररोगको दूर करे है ।

अन्यञ्च ।

मायिनीतिक्तकातीक्ष्णामधुगग्निप्रदीपनी । रुच्यावलकरी
चैवप्लीहवातकफान्नजयेत् ॥ गुल्मोदरानाहशीतज्वरनाश-
करीमता । कन्दस्तुपाकेमधुरोनिकाशीपाण्डुशोफजित् ॥
कृमिप्लीहापाण्डुगुल्मसग्रहण्युदरार्णजित् ॥ (नि०२०)

अर्थ—माई—तिक्त, तीक्ष्ण, मधुर, अग्निप्रदीपक, रुचिकारक, बलकारक
तथा प्लीहा, वात, कफ, गुल्म, उदररोग, आनाह और शीतज्वरको नष्ट
करेहै । इसका कन्द—पाकममधुर, विकाशी तथा पांडुरोग और सृजनको
दूर करेहै तथा कृमि, प्लीहा, पांडु, गुल्म, सग्रहणी उदररोग और यवा-
सीरको दूर करेहै ।

विवरण । माकदी—सेत और वागामें घोई जाती है, इसके शुष्प होतेहैं,
नीचे अगुलीकी समान जड़ होती है, इसकी डडी और फली दोनोंपा
शाक बनातेहैं ।

हृत्पुष्पनामगुणाश्च ।

शुल्लपुष्पेज्वलत्पुष्प-कृच्छ्रहालधुवृक्षक ।

पीतपुष्प पक्तिपत्रस्तथालज्जालुक मृत ॥

शुल्लपुष्प स्पृष्टमृत्रोमृत्रकृच्छ्रहर पर ।

अर्थ—शुल्लपुष्प, ज्वलत्पुष्प, कृच्छ्रा, लज्जालुक, पीतपुष्प, पक्तिपत्र
और लज्जालुक यह ममृत नाम है ।

सस्पृष्टभाषामें
वेगभाषामें

जन्तुपुष्प ।
सलई ।

मराठीभाषामें शरै ।

गुजरातीभाषामें शरै ।

लैटिनभाषामें वाईजोफिटमेन्सेटिवम । *Biophytum Sensationum*

गुण-जलपुष्प-मूत्रजनक और मूत्रकृच्छ्ररोगको दूर करेहै ।

विवरण । इसका छोटा धुप होताहै, फूल पीला आताहै, लजावतीकी समान इसके पत्तेभी मनुष्यके स्पर्शसे तत्काल सिकुड़ जातेहैं ।

अथ ओखराडीनामगुणाश्च ।

ओखराड्यांभिस्सटाचतडागमृत्तिकोद्भवा ।

भिस्सटाभस्मतेलेनसयुतामरिचैर्युता ॥

मस्तकेपरितोलेपाट्टणान्दन्तिचिरोत्थितान् ।

अर्थ-ओखराडी भिस्मटा और तडागमृत्तिकोद्भवा यह नामहै ।

संस्कृतभाषामें ओखराडी ।

वगभाषामें ओपड ।

मराठीभाषामें ओखराड ।

गुजरातीभाषामें ओखराडय ।

लैटिनभाषामें मोल्युगोहिटी । *Molla Gohrita*

गुण-इसकी भस्म बनाकर तेल और कालीमिरचाके घृणके साथ मिलाकर शिरपर लेप करनेसे बहुत दिनोंके घ्रण दूर होजाते हैं ।

विवरण । इसके छत्ते होतेहैं, विशेषकरके जिस नदी या तालाबका जल सूख जाताहै उसमें यह अधिकतासे होताहै, इसमें बीज अधिक होतेहैं, यह अनेक प्रकारके रोगामें अनुपान विशेषके साथ प्रयोग किया जाताहै, मूत्रके रुकनेपर अथवा मूत्रकृच्छ्रमें यह अत्यन्त हितकारीहै, इसको पींगक शिरपर लगानेसे शिरकी खुजली, दाद, शोष और घ्रण दूर होजातेहैं ।

आयुर्नामगुणाश्च ।

आयुक् पिबुलोझायुरफलोबहुयन्धिक ।

आयुक् कटुकन्तिकमूत्रकृच्छ्रविनाशक ॥

अर्थ-आयुक्, पिबुल, आयु अफर और बहुयन्धिक यह आयुर्नाम है ।

संस्कृतभाषामें आयुक् ।

| | |
|----------------|-------------------------|
| हिन्दीभाषामें | झाऊका वृक्ष । |
| वगभाषामें | झाऊगाछ । |
| मराठीभाषामें | झावू, तिलव्यावृक्षभेद । |
| गुजरातीभाषामें | झावू । |

विवरण—झाऊके वृक्ष—प्रायः नदियोंकी रेतीमें होतेहैं, पत्ते सरुकी समान होतेहैं, किन्तु सरुकी माफिक लम्बे और सीधे नहीं होते, पेड झादेदार होतेहैं, इसकी लकड़ी बहुत गाढदार और दृढ होतीहै, इसमें छोटे २ अनेक फल होतेहैं ।

राजाद्रिनामगुणाव्य ।

राजाद्रिः स्याद्राजगिरिर्जातव्याराजशाकिनी ॥

| | |
|-----------------|---|
| संस्कृतभाषामें | राजाद्रि, राजगिरि और राजशाकिनी यह नाम हैं । |
| हिंदीभाषामें | कलगाघास । |
| वगभाषामें | राजशाक, कलईशाक । |
| मराठीभाषामें | गजगिरा । |
| गुजरातीभाषामें | राजगरो । |
| कर्णाटकीभाषामें | डोलगेदो निण्डु । |
| फारसीभाषामें | अगोशा । |
| अरबीभाषामें | हमाहम । |

गुणा ।

लघुराजगिरिः प्रोक्तः कफकृत्सारको गुरुः । निद्रालस्यकर
पथ्य सारकश्चेति शीतल ॥ मलावष्टम्भकरणोरुचिदोति-
गुरु स्मृतः । पित्तनाशकरश्चैव रुषिभिः परिकीर्तितः ॥

अर्थ—छोटा राजगिरि—कफकारक, नारक, भारी, निद्रा और आलस्यको उत्पन्न करनेवाला, पथ्य, सारक, अत्यन्त शीतल, मलावष्टम्भकारक, रुचिकारी, भारी और पित्तनाशक है ।

विवरण । इससे बड़े २ क्षुप होतेहैं, इसकी डट्टी मोटी होतीहै, इसके फल पत्तोंका शाक बनातेहैं इससे बीजाका पत्तादार करतहैं ।

समपुरी (गोशातकी) नामानि ।

लघुकोशातकी ग्राम्या सप्तपुत्री स्मृता बुधे ॥

अर्थ—लघुकोशातकी, ग्राम्या और सप्तपुत्री यह नाम हैं ।

संस्कृतभाषामें
हिन्दीभाषामें
वगभाषामें
मराठीभाषामें
गुजरातीभाषामें

सप्तपुत्री ।
सतपुत्रीतोरई ।
सातपुत्री ।
सातपुत्री ।
झुमखडा ।
अस्या गुणा ।

सप्तपुत्रीशीतलास्याद्ध्यापाकेकटुःस्मृता ।

स्निग्धापित्तविपकासज्वरवातश्चनाशयेत् ॥

अर्थ—सतपुत्रीतोरई—शीतल, हृदयको हितकारी, पचनेमें कटु, स्निग्ध तथा पित्त, विष, खोंसी, अवर और वातको नष्ट करे है ।

विवरण । सतपुत्री तोरईकी बेलभी तोरईकी समान होतीहै, पत्तेभी तोरईकी समान होतेहैं, फल कन्दूरीमें कुछ मोटे और परबलकी समान गुच्छाम सात सात लगतेहैं ।

वनप्सा नामानि ।

वनप्सासूक्ष्मपत्राचनीलपुष्पाज्वगपहा ॥

अर्थ—वनप्सा, सूक्ष्मपत्रा, नीलपुष्पा और ज्वगपहा यह शूलवनप्साके नाम हैं ।

संस्कृतभाषामें
हिन्दीभाषामें
वगभाषामें
मराठीभाषामें
गुजरातीभाषामें

वनप्सा, पुष्पवनप्सा ।
शूलवनप्सा ।
वानप्सा ।
वनप्सा ।
वनप्सा ।
अस्या गुणा ।

वनप्साकटुतिक्तोष्णाशीतज्वरनिवारणी ।

कासश्वासहरात्रल्यावातपित्तकृपापहा ॥

अर्थ—वनप्सा—कटु, तिक्त, गरम, शीतज्वरनाशक, खोंसी और श्वासको हरनेवाली और त्रिदोषको दूर करे ।

विवरण । वनप्सा प्रायः पर्वतापर होतीहै, इसके धुप छोटे २ कालापन लिये कुछ हरे अवयव धूमर रंगके होतेहैं, कूल मपेद और नीलेरंगके होतेहैं । बित्तनेक वैद्य प्रायमानको वनप्सा कहते हैं सो प्रायमानलता और वाण्यापी कुछभी आकृति नहीं मिलती ।

आलुकनामगुणाश्च ।

आलुकं स्वादुकन्दश्च म्लेच्छकन्दसुकन्दकम् ।

अर्थ—आलुक, स्वादुकन्द, म्लेच्छकन्द और सुकन्दक यह आलुके संस्कृत नाम हैं ।

संस्कृतभाषामे

आलुक ।

हिंदीभाषामे

आलू ।

ब०-गु-म०

सर्वभाषाओंमें प्रायः “आलू” इसी नामसे प्रसिद्ध है ।

इंग्रेजीभाषामे

पुटैटो । Potato

अस्य गुणाः ।

आलुकस्निग्धमुष्णध्रुवप्यवातकफापहम् ।

दीपनं रुचिदं हृद्यं मधुरग्राहि शोथनुत् ॥

अर्थ—आलू—स्निग्ध, गरम, वृष्य, वातकफनाशक, अग्निप्रदीपक, रुचिकारक, हृद्यको हितकारी, मधुर, मलरोधक और सूजनको दूर करे ।

विवरण—आलू अर्वाचीन कंद है, इसको हिन्दोस्तानमें आये हुए, अनुमान एकसौ बीस १२० वर्षसे अधिक नहीं हुए, पहले अमेरिकामें होता था पश्चात् यह यूरोप आदि देशोंमें आया अब सम्पूर्ण भारतवर्षमें आलू की खेती अधिकतासे होती है, यह मषेद और लाल इन भेदोंसे दो प्रकारका है । पर्वतोंपर आलू बहुत बड़ा और अधिक स्वादिष्ट होता है ।

अथ पुष्पगोभीनामानि ।

पुष्पगोभीस्वादुशाकामध्यपुष्पावृहद्वला ॥

अर्थ—पुष्पगोभी, स्वादुशाका, मध्यपुष्पा, वृहद्वला (पीतपुष्पा और पुष्पशाका) यह नाम पुष्पगोभीके हैं ।

संस्कृतभाषामे

पुष्पगोभी ।

हिंदीभाषामे

फूलगोभी, गोभीका पत्र, गोभी ।

बंगभाषामे

गोभी ।

मराठीभाषामे

गोभी ।

इंग्रेजीभाषामे

कालीफ्लावर । Cauliflower

अस्य गुणाः ।

पुष्पगोभीगुरुस्वादी वातघ्नोपश्लेष्मणी ।

मधुरग्राहिणी वल्ल्यावह्निमांसकर्षिण्यमना ॥

अर्थ-फूलगोभी-भारी, स्वादिष्ट, वात और शोथको मद्धापित करनेवाली मधुर, मलरोधक, वलकारक और अग्निको मन्दकरोहै ।

पद्मगोभीगुणा ।

पत्रगोभीसरारुच्यावातलामधुरगुरु ।

अर्थ-पत्रगोभी-सारक, रुचिकारक, वातकारक, मधुर और भारीहै ।

ग्रन्थिगोभीगुणा ।

ग्रन्थिगोभीमहावल्यादुर्जराग्राहिशीतला ।

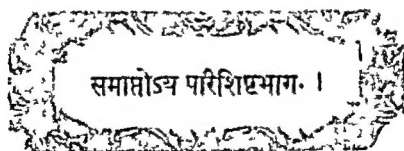
अर्थ-गाठगोभी-अत्यन्त वलकारक, बहुत देरमें पचनेवाली, मलरोधक और शीतल है ।

विवरण । गोभी पहले यूरोप आदि अन्य देशमें होतीथी किन्तु अब समस्त हिन्दोस्तानमें होनेलगीहै । अनुमान गोभीको हिन्दोस्तानमें आये साठ ६० वर्षसे अधिक नहीं हुए । पहले जब गोभी भारतमें आई थी तब इसको बहुत कम मनुष्य खाते थे, बहुतसे मनुष्य इसको प्रथम प्याज, सलजमकी माफिक घृणाकी दृष्टिसे देखते थे किन्तु अब गोभी उत्तम शाकामें गिनी जाती है ।

फूलगोभी, मृत्रगोभी (वटगोभी, करम कला) और गाठगोभी इन भेदोंसे यह तीन प्रकारकी होतीहै ।

रति र्भक्ष्यालिङ्गातिध्वन्युपगमे परिशिष्टभाग समाप्त ।

श्रीशंकरः । शुभमस्तु । कल्याणमस्तु ।



पुस्तक मिलनेका ठिकाना-

‘खेमराज श्रीकृष्णदास,

“श्रीवेङ्कटेश्वर” स्टीम्-प्रेस-बम्बई

